पालि-हिन्दी शब्दकोश

(प्रथम भाग, द्वितीय खण्ड)

(आ - ईहित)



नव नालन्दा महाविहार
मानित विश्वविद्यालय
नालन्दा (बिहार)

बुद्ध महापरिनिर्वाणाब्द 2552 2009 ई.

पालि-हिन्दी शब्दकोश

पालि-हिन्दी शब्दकोश

[प्रथम भाग, द्वितीय खण्ड]

[आ – ईहित]

प्रधान सम्पादक

डॉ० रवीन्द्र पंथ

सम्पादक–मण्डल

डॉ० उमा शंकर व्यास

डॉ० मौलिचन्द प्रसाद



नव नालन्दा महाविहार

मानित विश्वविद्यालय

नालन्दा (बिहार)

बुद्धमहापरिनिर्वाणाब्द 2552 2009 ई.

मूल्य : 800.00 रुपये

आइ.एस.बी.एन. 81-88242-16-0
978-81-88242-16-1

प्रकाशक
निदेशक, नव नालन्दा महाविहार, मानित विश्वविद्यालय, नालन्दा 803111, बिहार (भारत)
(संस्कृति विभाग, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्तशासी संस्थान)
फोन : 06112-281672
फैक्स : 06112-281505

मुद्रक : पैरागोन इंटरप्राईजिज, नई दिल्ली, 110002, फोन 011–23280295

Pāli-Hindī Dictionary

[Vol. 1, Part II]

[ā – īhita]

Chief Editor

Ravindra Panth

Board of Editors

Dr. Uma Shankar Vyas

Dr. Maulichand Prasad



Nava Nalanda Mahavihara

Deemed University

Nalanda (Bihar)

2552 Mahāparinirvāṇa year of the Buddha 2009

Price : Rs. 800.00

ISBN 81-88242-16-0
978-81-88242-16-1

Published by
The Director, Nava Nalanda Mahavihara, Deemed University, Nalanda 803111, Bihar, India
An autonomous institute under the Ministry of Culture, Government of India
Phone : 06112-281672
Fax : 06112-281505

Printed by Paragon Enterprises, New Dehi 110002, Phone 011-23280295

नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा
के
संस्थापक-निदेशक स्व. भिक्खु जगदीश काश्यप
की
स्मृति में
उनके जन्म-शताब्दी-समारोह के अवसर पर
सादर समर्पित

Dedicated to
Most Ven. Late Bhikkhu Jagdish Kashyap
the founder Director of
Nava Nalanda Mahavihara,
Nalanada
on the Occasion of his
Birth Centenary Celebration

R.L. BHATIA
Governor, Bihar



RAJ BHAVAN
PATNA-800 022
Date: February 12, 2009

MESSAGE

I am extremely delighted to know that the second part of the first volume of *Pali-Hindi Dictionary* is going to be published by Nava Nalanda Mahavihara, Nalanda.

I hope, this dictionary will be very useful for the students, researchers and teachers of Pali, Buddhist studies and others.

I wish success of the publication of Dictionary and believe that it will further enrich the lexicon of our national language Hindi.

(R.L. Bhatia)

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

प्रस्तावना

पालि-हिन्दी शब्दकोश के प्रथम भाग, प्रथम खण्ड का औपचारिक रूप से विमोचन भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम डा॰ ए॰ पी॰ जे॰ अब्दुल कलाम द्वारा कुशीनगर में 2 मई, 2007 को भगवान् बुद्ध के 2550वें महापरिनिर्वाण महोत्सव के समापन–समारोह के अवसर पर किया गया था तथा इसे विद्वानों एवं जनसामान्य के सम्मुख प्रस्तुत किया जा चुका है। हमें विश्वास है कि हिन्दी भाषा में पालि–शब्दकोश के संकलन के प्रथम गम्भीर प्रयास के रूप में सुधीजनों तथा ज्ञान–पिपासु सामान्य जनों ने इसे अपनी स्वीकृति अवश्य प्रदान की होगी। अब प्रथम भाग का द्वितीय खण्ड विद्वज्जनों तथा बुद्धवचनामृत के पान में अभिरत जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है।

प्रस्तुत शब्दकोश पालि–शब्दों तथा उनके अर्थों की सुदीर्घ शृंखलामात्र नहीं है जैसा कि संभवतः इस के साधारण शीर्षक से ध्वनित होता है। वस्तुतः किसी भी भारतीय भाषा में पालि–शब्दकोश–संरचना के वर्तमान काल तक के इतिहास में पहली बार इसके साहित्य में किसी शब्दविशेष के वास्तविक प्रयोग के आधार पर उस शब्द के अर्थ का निर्धारण करने का प्रयास इस शब्दकोश में किया गया है। इसकी अट्ठकथाओं एवं टीकाओं के निर्वचनों के आलोक में अधिकतर शब्दों की व्युत्पत्ति तथा उन के एकाधिक अर्थों का निर्वचन करते हुए उस शब्द के प्रयोग के सन्दर्भ–स्थलों के अंकन के साथ–साथ मूल पालि–स्रोतों से अनेक उद्धरण देने के प्रयास भी किए गए हैं।

इस शब्दकोश में दिए गए पालि–उद्धरण मुख्य रूप से म्यां–मां के छट्ठसंगायन संस्करण पर आधारित विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी (महाराष्ट्र) द्वारा प्रकाशित पालि–वाङ्मय के संस्करणों से यथावत् लिए गए हैं। अतः हम विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी के प्रति हार्दिक कृतज्ञताभाव व्यक्त करते हैं। जिन यशस्वी अट्ठकथाकारों एवं टीकाकारों के निर्वचनों के आधार पर इस शब्दकोश में शब्दों का अर्थविनिश्चय किया जा सका है, उनके प्रति हम हार्दिक श्रद्धाभाव प्रकट करते हैं। आधुनिक शब्दकोशों के सुधी सम्पादकों तथा मरम्मरट्ठ–बुद्धसासन–समिति द्वारा प्रकाशित "तिपिटक पालि–म्यामाभिधान" नामक शब्दकोश के सम्पादक भदन्त उ॰ पञ्ञिस्सराभिवंस के प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं। स्व॰ भदन्त जगदीश काश्यप एवं पूज्य सत्यनारायण गोयनका जी के प्रति विनम्र श्रद्धाभाव व्यक्त करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। इन का प्रेरक व्यक्तित्व एवं धर्मचर्या ही इस शब्दकोश के प्रणयन का प्रमुख प्रेरणास्रोत है।

महाविहार की नियन्त्री परिषद् के अध्यक्ष–सह–कुलाधिपति बिहार के महामहिम राज्यपाल महोदय इस परियोजना की सफल परिणति में प्रेरणास्रोत हैं। हम उनके प्रति कृतज्ञता अभिव्यक्त करते हैं। इस शब्दकोश की परियोजना को मूर्त स्वरूप प्रदान करने में भारत सरकार के संस्कृति एवं पर्यटन विभाग ने उदारता एवं तत्परता

के साथ अनुदान स्वीकृत किया है। विभाग के सम्माननीय मन्त्री, सचिव एवं अन्य पदाधिकारियों के प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं।

इस शब्दकोश के प्रथम भाग के प्रथम खण्ड के सम्पादकमण्डल के सदस्य डा॰ सुकोमल चौधुरी तथा डा॰ ब्रज मोहन पाण्डेय 'नलिन' के प्रति हम हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। इस खण्ड के संकलन में भी हमें इन विद्वानों से प्रेरणा प्राप्त हुई है। स्व॰ श्यामदेव द्विवेदी ने इस खण्ड की पाण्डुलिपि के कुछ अंशों का संशोधन कर एवं विषयवस्तु को व्यवस्थित कर के हमें अनुगृहीत किया है। उनके प्रति हम सम्मान प्रकट करते हैं। नव नालन्दा महाविहार के रजिस्ट्रार डा॰ एस॰ पी॰ सिन्हा ने इस परियोजना के कार्यान्वयन में तत्परतापूर्वक अमूल्य सहयोग दिया है। उन्हें धन्यवाद दिये बिना हम अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं समझेंगे।

इस खण्ड की पाण्डुलिपि तैयार करने में शोधसहायक स्व॰ मुरारी मोहन कुमार सिन्हा, डा॰ चिरंजीव कुमार आर्य, डा॰ विश्वजीत प्रसाद सिंह, श्री सच्चिदानन्द सिंह, भिक्षु प्रज्ञापाल और श्री विनोदानन्द झा का योगदान है, जिसके लिए उन्हें साधुवाद देना अनिवार्य है। श्री राजेश कुमार जायसवाल ने पाण्डुलिपि का कम्प्यूटर टंकण पूर्ण निष्ठा एवं मनोयोग के साथ किया है। इसके लिए हम उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं। पैरागॉन इण्टरप्राइजेज, नई दिल्ली के संचालक भी स्वच्छ, सुन्दर मुद्रण एवं गेट–अप के लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

स्खलन पर दुर्जन हंसते हैं पर सज्जन समाधान करते हैं। आशा है, सुधी पाठक इसकी न्यूनताओं को बतलाते हुए अपना बहुमूल्य सुझाव देकर हमें अनुगृहीत करेंगे ताकि आगामी खण्डों में उन सुझावों के अनुरूप अपेक्षित सुधार किया जा सके।

नव नालन्दा महाविहार
(मानित विश्वविद्यालय), नालन्दा
बुद्धाब्द – 2552
ई॰ सन॰ दिसम्बर 2008

रवीन्द्र पंथ
निदेशक और प्रधान सम्पादक
एवं
सम्पादकमण्डल

Namo Tassa Bhagavato Arahato Sammāsambuddhassa

Preface

The first part of the first volume of Pali-Hindi Dictionary was released by the former President of India, H.E. Dr. A.P.J. Abdul Kalam on the occasion of the concluding function of the historic 2550th Mahaparinirvana celebration of Lord Buddha at Kusinagar on 2nd of May 2007. It is already in the market. Scholars of Pāli and Buddhism as well as the common readers welcomed it as the first serious attempt for the compilation of a Pāli-Hindi Dictionary. We feel immense pleasure in placing the second part of it before the world of scholars as well as those common readers who have deep interest in understanding the words of the Buddha.

This dictionary is not simply a long string of Pali words and their meanings, as its unassuming name might suggest. Attempt is made here for the first time in the history of Pali lexicography to extract the meaning of a word from its actual usage in literature. Thus it explains the grammatical formation of each word and its various shades of meaning, enumerates the place of its occurance and provides copious citations from original Pali texts.

The Pali extracts quoted herein have been taken from Vipassana Visodhana Vinyasa, Igatpuri (Maharastra) edition, based fully on the Chaṭha-Saṅgāyana recension of Pali Canonical books and their commentaries. We have taken these extracts without any alteration irrespective of the merits and demerits of these readings.

We express once again our sincere gratitude to the great exegetes of the Pāli scriptural texts who are the principal sources for the etymologies and meanings of words entered herein. We are also thankful to the compilers of modern Dictionaries as well as to the editor of the Tipiṭaka Pāli MYĀNMĀBHIDHĀNA. We express our sense of high respect to Late Ven. Jagadīsh Kaśyapa and honourable Sri Satyanārain Goenkā who remain to be the source of inspiration for the compilation of this Dictionary.

His Excellency the Governor of Bihar, who is also the Chancellor of Mahavihara, has taken personal interest in the compilation of it. We are grateful to His Excellency.

The Minister, the Secretary of Culture & Tourism, Govt. of India, have liberally sanctioned grants to materialize this project. We are thankful to them.

We thank Prof. Sukomal Chaudhurī and Dr. Braj Mohan Pāndey 'Nalin', members of the editorial board of the Volume I, Part I of it. They inspired us for the compilation of this part also. Late Shyāmdeo Dwivedī corrected and rearranged the matter of a portion of it. We express high regards for him. Dr. S.P. Sinha, Registrar, Nava Nālandā Mahāvihāra has proffered valuable co-operation. We deem it fit to thank him.

The manuscript of this part was prepared by Late Murārī Mohan Kumār Sinha, Dr. Chirañjeev Kumār Ārya, Dr. Vishwajit Prasad Singh, Bhikshu Prajñāpāl and Shri Vinodānanda Jhā. Thanks are

due to them. Shri Rājesh Kumār Jaiswal did the computer-typing of the complete manuscript for which he deserves our thanks. Paragon Enterprises, New Delhi too is worthy of thanks for its fine printing and attractive get-up.

Fools laugh at blundering but wise men set it right. We hope, learned scholars and vigilant readers will intimate us its shortcomings so that we may avail of their suggestions in the volumes to come.

Nava Nālandā Mahāvihāra,
(Deemed University), Nalanda
Buddha Era – 2552
Christian Era – January, 2009

Dr. R. Panth
Director and Chief Editor
&
Members of the Editorial Board

शब्दकोश देखने के लिए आवश्यक निर्देश

1. शब्दों का क्रम-विन्यसन पालि-व्याकरणों में उल्लिखित देवनागरी वर्णमाला के अकारादि वर्णों के क्रम के अनुरूप किया गया है।

2. ह्रस्व-स्वर-परवर्ती अनुस्वार-(निग्गहीत) युक्त शब्द का विन्यसन ह्रस्व स्वर से प्रारम्भ होने वाले शब्दों के तुरन्त बाद में किया गया है, जैसे कि अकारादि शब्दों का प्रारम्भ '**अ**' शब्द के साथ किया गया है तथा इनके उपरान्त परवर्ती अनुस्वार-युक्त '**अंस**' आदि का विन्यसन हुआ है।

3. संज्ञा-शब्दों का प्रातिपदिक-रूप रख कर उसके आगे **पु.** या **स्त्री.** या **नपुं.** लिखकर उसके विशिष्ट लिंग को दर्शाया गया है, जैसे कि **अंस** के तुरन्त बाद **पु.** लिखकर आगे उसके **अंसं**, **अंसेन** एवं **अंसे** आदि रूप उल्लिखित किये गये हैं।

4. विशेषण-शब्दों का प्रातिपदिक रूप रखकर उसके आगे **त्रि.** लिख दिया गया है, जैसे कि **अंसव, अकक्कस, अक्खात, त्रि.** आदि।

5. क्रियाविशेषण के रूप में व्यवहृत निपातों के आगे **क्रि. वि.** लिखा गया है तथा संज्ञा अथवा विशेषणों से व्युत्पन्न क्रियाविशेषणों को उस संज्ञा अथवा विशेषण के ही अन्तर्गत दर्शाया गया है जैसे, '**पर**' के अन्तर्गत **परं** या **परेन** अथवा '**समीप**' के अन्तर्गत **समीपं** या **समीपे** को रखकर **क्रि. वि.** लिख दिया गया है।

6. किसी भी एक शब्द के अलग-अलग अर्थों को अरबिक क्रमांक देकर दर्शाया गया है तथा उद्धरणों के उल्लेख में भी अरबिक अंकों का ही प्रयोग किया गया है। जैसे – '**अधिवत्थ**' में (पृ. 231) **1.क., 1.ख.** इत्यादि और **दी. नि. 2.76; म. नि. 2.251** इत्यादि।

7. उद्धरणों के लिए विपश्यना-विशोधन-विन्यास, इगतपुरी के वर्ष 1993 से 1998 तक मुद्रित संस्करण को ही प्रमुख आधार बनाया गया है क्योंकि इसी संस्करण में पालि-तिपिटक, अट्ठकथाएँ तथा अधिकतर मूलटीकाएँ एवं अनुटीकाएँ उपलब्ध हैं। इसी संस्करण के सन्दर्भ का अंकन सम्बद्ध उद्धरण के तुरन्त बाद किया गया है। जैसे – *'अधिवुत्थं खो मे ... अम्बपालिया गणिकाय भत्तं',* दी. नि. 2.76।

8. वि. वि. वि. इगतपुरी के संस्करण में सन्दर्भ उपलब्ध न रहने की स्थिति में केवल रोमन, नालन्दा अथवा अन्य उपलब्ध संस्करण के सन्दर्भ का ही अंकन उद्धरण के उपरान्त कर दिया गया है। उदाहरणार्थ *महावंस, दीपवंस, चूळवंस, दाठावंस, गन्धवंस, सासनवंस, सद्धम्मोपायन, मोग्गल्लान-व्याकरण, कच्चायन-व्याकरण, सद्दनीति, अभिधानप्पदीपिका* आदि ग्रन्थों के उद्धरण अन्य उपलब्ध संस्करणों से दिये गये हैं।

9. वि. वि. वि. एवं रोमन संस्करणों के बीच उपलब्ध पाठान्तर को संकेताक्षर **पाठा.** लिखकर सूचित किया गया है, जैसे कि '**अञ्जन**' के अन्तर्गत '**अञ्जनारहो**' का **पाठा. अच्चनारहो।**

10. गद्यभाग से गृहीत उद्धरणों के सन्दर्भाङ्कों में सम्बद्ध संस्करणों की पृष्ठ संख्या दी गयी है परन्तु *थेरगाथा, थेरीगाथा, धम्मपद, सुत्तनिपात, दीपवंस, महावंस, खुद्दकपाठ, उदान, चूळवंस, सद्धम्मोपायन, अभिधानप्पदीपिका, सद्धम्मसंगहो, अभिधम्मावतार, नामरूपपरिच्छेद, परमत्थ-विनिच्छय, सच्चसङ्खेप, खुद्द-सिक्खा, विनयविनिच्छय, उत्तरविनिच्छय, गंधवंस, जिनचरित, जिनालंकार, अनागतवंस, तेलकटाहगाथा, थूपवंस, दाठावंस, वुत्तोदय, सुबोधालंकार, सच्चसंगहो* जैसे गाथा-संग्रहों के उद्धरणों के सन्दर्भाङ्कों में गाथा-

संख्या का उल्लेख हुआ है। *सुत्तनिपात* के गद्यभाग के सन्दर्भों का सङ्केत **पृ॰** का उल्लेख कर तथा गाथाओं का संकेत गाथा-संख्या द्वारा किया गया है।

11. जातक की गाथाओं एवं अट्ठकथा दोनों से गृहीत उद्धरणों के सन्दर्भ जातक-अट्ठकथा की पृष्ठ-संख्या द्वारा सङ्केतित किये गये हैं।

12. विनय एवं अभिधम्म के विषिष्ट पारिभाषिक शब्दों के निहितार्थ के स्पष्टीकरण हेतु यत्र-तत्र संक्षिप्त टिप्पणियाँ दी गयीं हैं।

13. पालि-शब्दों के संस्कृत-समानान्तर कोष्ठक [ ] के अन्तर्गत सङ्केतित कर दिये गये हैं।

14. प्रायः मूल-शब्दों की संक्षिप्त व्युत्पत्ति शब्द के उपरान्त ही दे दी गयी है।

15. मूल-शब्द से व्युत्पन्न उस शब्द के विविध प्रयोगों को प्रायः **(क)** उसी मूलषब्द के अन्तर्गत पड़ी रेखा **–** के पश्चात् रखा गया है, जैसे कि **भगवन्तु** के **भगवा, भगवता, भगवति** आदि विभिन्न विभक्तियों के पदों को मूल प्रातिपदिक **भगवन्तु** के ही अन्तर्गत रखा गया है. **(ख)** समस्त-पदों को मूल-शब्द के ही अन्तर्गत पड़ी रेखा – के पश्चात् रखा गया है, जैसे कि बोधि के अन्तर्गत – **रुक्ख, 'बोधिरुक्ख'** का सूचक है।

16. विभिन्न धातुओं से निष्पन्न क्रियारूपों को सम्बद्ध धातु के वर्तमान काल के प्रथम पुरुष एकवचन के रूप के ही अन्तर्गत रखा गया है, जैसे कि **√गम् (जाना)** धातु से व्युत्पन्न विविध कालों, भावों एवं कृत्प्रत्ययान्त रूपों को **'गच्छति'** शीर्षक के अन्तर्गत रखा गया है। यत्र-तत्र कुछ क्रिया-रूपों को स्वतन्त्र प्रविष्टि के अन्तर्गत भी रखा गया है।

17. उपसर्गयुक्त धातुओं के रूप पृथक्रूप से उपसर्ग के आदिवर्ण की क्रम-स्थिति के अनुरूप विन्यस्त किये गये हैं।

18. उद्धरणों को **तिरछे (Italics) टंकण** में प्रस्तुत किया गया है।

19. संकेतसूची **'क'** के अन्तर्गत व्याकरण आदि के विषिष्ट पारिभाषिक शब्दों के सङ्केताक्षर उल्लिखित हैं जबकि संकेत-सूची **'ख'** में सन्दर्भ-ग्रन्थों के नामों के सङ्केतक प्रस्तुत किये गये है।

20. पालि-साहित्य में उल्लिखित उपाख्यानों, प्रयुक्त छन्दों, अलङ्कारों, विषिष्ट पारिभाषिक शब्दों एवं भौगोलिक शब्दों आदि के सामान्य व्याख्यानों को शब्दकोष के अन्त में विभिन्न परिषिष्टों के रूप में जोड़ दिये जाने की योजना है।

21. शब्दकोश के शब्द-व्युत्पत्तिपरक संक्षिप्त निर्देशों में हिन्दी-भाषी पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए हिन्दी-व्याकरणों में गृहीत पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया गया है। जैसे कि **बुद्धो** के व्युत्पत्ति-परक निर्वचन में **प्र॰ वि॰, ए॰ व॰** तथा **गच्छति** के लिए **वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰** लिखा गया है। पारिभाषिक शब्दों की संकेताक्षर-सूची में व्याकरण के इन पारिभाषिक शब्दों के पालि-समानान्तर भी दे दिए गए है।

22. यद्यपि आधुनिक हिन्दी-लेखन में परसवर्ण के स्थान पर प्रायः अनुस्वार का ही प्रयोग होने की प्रवृत्ति बनती है परन्तु शब्दकोश के हिन्दी-निर्वचनों में दोनों का प्रयोग हुआ है।

23. **चन्द्रविन्दु** के स्थान पर **अनुस्वार** का ही प्रयोग हुआ है।

शब्दकोश में प्रयुक्त संकेतक-चिह्न

= एक से अधिक सम्बद्ध उद्धरणों के बीच पूर्ण समानता का सूचक चिह्न.

≠ सम्बद्ध उद्धरणों के बीच आंशिक समानता का सूचक चिह्न.

- समास के पूर्वपद में व्याख्येय शब्द की स्थिति को सूचित करने वाला तथा प्रत्येक उद्धरण के पूर्व में दिया हुआ चिह्न.

–॰ सम्बद्ध शब्द की समास के उत्तरपद में विद्यमानता सूचक चिह्न.

... सम्बद्ध उद्धरण की अपरिसमाप्ति का सङ्केतक चिह्न.

√ धातु का चिह्न.

+ योग-सूचक चिह्न.

( ) लघु-कोष्टक का चिह्न, जिसमें सम्बद्ध शब्द की व्युत्पत्ति, समानान्तर अथवा पाठान्तर आदि अन्तर्निविष्ट किये गये हैं.

[ ] बृहत्-कोष्टक का चिह्न जिसमें व्याख्येय पालि-शब्द का समानान्तर संस्कृत अथवा बौद्धसंस्कृत शब्द अन्तर्निविष्ट कर प्रस्तुत किये गये हैं.

• विवेच्य शब्द के विवेचन के अन्त में प्रयुक्त पूर्ण-विराम-चिह्न.

शब्दकोश में पालि-शब्दों के लिए प्रयुक्त देवनागरी वर्णमाला का स्वरूप

स्वरः— अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ

मात्राः— ा, ि, ी, ु, ू, े, ो

व्यञ्जनः— क, ख, ग, घ, ङ

(अ-सहित) च, छ, ज, झ, ञ

ट, ठ, ड, ढ, ण

त, थ, द, ध, न

प, फ, ब, भ, म

य, र, ल, व, स, ह, ळ, अं(निग्गहीत)

प्रस्तुत कोश में प्रयुक्त वर्ण-क्रम

कच्चायन-व्याकरण में 8 स्वरों एवं 33 व्यञ्जनों सहित कुल 41 वर्णों का उल्लेख है। शब्दकोश में इसी प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है। यहां ल के बाद ळ का प्रयोग दिया गया है, जो पश्चिमी विद्वानों के क्रम का अनुकरण है। इस शब्दकोश के प्रथम खण्ड में इस क्रम-विन्यास का अनुसरण नहीं हो सका है। इस त्रुटि का परिमार्जन इस खण्ड में तथा आगे के खण्डों में किया जा रहा है।

शब्दों का वर्णानुरूप क्रम-विन्यास निम्नलिखित रूप में किया गया है

अ, अं, आ, इ, इं, ई, उ, उं, ऊ, ए, ओ

संकेत-सूची

क. व्याकरण-संबंधी पारिभाषिक शब्द

संकेत सूची	*पारिभाषिक-शब्द*	*पालि पारिभाषिक-शब्द*	*रोमन (अंग्रेजी) पारिभाषिक-शब्द*
अ॰	अव्यय	अव्यय	Indeclinable
अक॰ क्रि॰	अकर्मक क्रिया	अकम्मक क्रिया	Intransitive Verb
अद्य॰	अद्यतन भूत	अज्जतनी विभत्ति	Aorist
अन्त॰	अन्तर्गत		Included
अनद्य॰	अनद्यतन-भूत	हीयत्तनी विभत्ति	Imperfect
अनि॰	अनियमित		Irregular
अनु॰	अनुज्ञा (लोट्)	पञ्चमी विभत्ति	Imperative mood
अप॰	अपपाठ	अपपाठो	Corrupt reading
अव्ययी॰ स॰	अव्ययीभाव-समास	अव्ययीभाव-समासो	Adverbial compound
अ॰ मा॰	अर्धमागधी	अड्ढमागधी	Ardha-māgadhī
अलु॰ स॰	अलुक्-समास	अलुत्त-समासो	Non-obsolete compound
आग॰	आगम	आगमो	Augmentation
आत्मने॰	आत्मनेपद	अत्तनोपद	Middle Conjugation
आलं॰ प्र॰	आलंकारिक प्रयोग		Figurative use
आ॰ श॰	आदत्त शब्द		Borrowed Word
इच्छा॰	इच्छार्थक (सनन्त)	इच्छित	Desiderative
इत॰ द्व॰	इतरेतर द्वन्द्व	इतरीतर द्वन्द्व	Individual Copulative or Aggregative Compound
उ॰ प॰	उत्तर-पद	उत्तर पद	Later Member (of a compound)
उ॰ पु॰	उत्तम पुरुष	उत्तम-पुरिस	First Person
उप॰	उपसर्ग	उपसग्ग	Prefix
उप॰ स॰	उपपद-समास	उपपद-समास	
ऊ॰ द्रष्ट॰	ऊपर द्रष्टव्य		See above
ए॰ व॰	एक-वचन	एकवचन	Singular Number
औप॰	औपचारिक		Formal
क॰	कर्ता	कत्तुकारक	Agent, Nominative case
क॰ ना॰	कर्तृनाम	कत्तरि नाम	Agent noun
कर्तृ॰ वा॰	कर्तृ-वाच्य	कत्तुकारक	Active Voice
कर्म॰ वा॰	कर्म वाच्य	कम्मकारक	Passive Voice
कर्म॰ स॰	कर्मधारय समास	कम्मधारय-समास	Adjectival compound
कार॰	कारक	कारक	Case
काला॰	कालातिपत्ति	कालातिपत्ति	Conditional
क्रि॰ प॰	क्रिया-पद	आख्यातपद	Verbal formation
क्रि॰ ना॰	क्रिया-नाम	आख्यातपद	Verbal noun
क्रि॰ रू॰	क्रिया-रूप	क्रिया रूप	Verbal form
क्रि॰ वि॰	क्रिया-विशेषण	क्रिया विसेसन	Adverb
कृद॰	कृदन्त	कितकनाम	Primary derivative
गा॰	गाथा	गाथा	Verse
च॰ वि॰	चतुर्थी विभक्ति	चतुत्थी विभत्ति	Dative
टि॰	टिप्पणी		Foot Note
टी॰	टीका	टीका	Commentary

त०	तद्धित	तद्धित	Secondary Derivative
तदे०	तदेव	तदेव	*Ibid.*, As above
तत्पु०	तत्पुरुष	तप्पुरिस	Determinative Compound
त० भ०	तद्भव		Derived from Sanskrit
त० स०	तत्सम		Similar to Sanskrit
तुल०	तुलनीय	तुलनीय	To be compared
तुल० वि०	तुलनात्मक विशेषण		Adjectives of Comparison
तृ० वि०	तृतीया विभक्ति	ततिया-विभत्ति	Instrumental case
त्रि०	त्रिलिङ्ग	तिलिङ्गक	Adjective
द्व० स०	द्वन्द्व-समास	द्वन्द-समास	Couplative compound co-ordinate compound
द्रष्ट०	द्रष्टव्य	दट्ठब्ब	See
द्वि० व०	द्विवचन		Dual number
द्वि० वि०	द्वितीया विभक्ति	दुतिया-विभत्ति	Accusative
द्वि० स०	द्विगु-समास	दिगु-समास	Numerical compound
न० तत्पु०	नञ्-तत्पुरुष-समास	न-तप्पुरिस	Negative
न० ब०	नञ् बहुव्रीहि	न बहुब्बीहि	Negative adjectival compound
नपुं०	नपुंसक-लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	Neuter Gender
ना० धा०	नामधातु	नामधातु	Denominative
ना० प०	नामपद	नामपद	Substantive noun
ना० रू०	नामरूप	नामरूप	Declension
निपा०	निपात	निपात	Particle
निमि० कृ०	निमित्तार्थक कृदन्त	निमित्तत्थक कितक	Dative Infinitives
निषे०	निषेधार्थक	निसेधपरिदीपक	Negative
नी०	नीचे		Below
प०	पद	पद	Derived form
पर० प०	परस्मैपद	परस्सपद	Active Form
प० वि०	पञ्चमी विभत्ति	पञ्चमी-विभत्ति	Ablative
परो०	परोक्ष	परोक्खा-विभत्ति	Perfect Tense
पाठा०	पाठान्तर	पाठन्तर	Variant reading
पारि०	पारिभाषिक	पारिभासिक	Technical
पु०	पुंलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	Masculine Gender
पू० का० कृ०	पूर्व-कालिक कृदन्त	पुब्बकालिक-कितक	Absolutive
पूर० सं०	पूरणार्थक संख्या	पूरणत्थक	Ordinals
पू० स०	पूर्व-सर्ग		Prefix
पृ०	पृष्ठ	पिट्ठ	Page
प्रति रू०	प्रतिरूपक	पटिरूपक	Counterpart
प्र० पु०	प्रथम-पुरुष	पठम-पुरिस	Third Person
प्र० वि०	प्रथमा-विभक्ति	पठमा विभत्ति	Nominative
प्रा० भा० आ० भा०	प्राचीन भारतीय आर्य भाषा		Old Indo-Aryan Language
प्रा० स०	प्रादि समास		
प्रेर०	प्रेरणार्थक	कारित	Causative
ब० स०	बहुव्रीहि-समास	बहुब्बीहि-समास	Relative or Attributive Compound
ब० व०	बहुवचन	अनेकवचन	Plural Number
बौ० सं०	बौद्ध संस्कृत		Buddhist Hybrid Sanskrit
भवि०	भविष्यत्काल	अनागता विभत्ति, भविस्सन्ती विभत्ति	Future Tense
भाव०	भाववाचक संज्ञा	भाववाचक सञ्ञा	Abstract Noun

भा॰ वा॰	भाववाच्य	भावकारक	Passive Voice (Intransitive Verbs)
भूत॰	भूतकाल	अतीतकाल	Past Tense
भू॰ क॰ कृ॰	भूतकालिक कर्मणि कृदन्त		Past Passive Participle
भू॰ ग॰	भ्वादिगण	भूवादिगण	First Conjugation
म॰ पु॰	मध्यम पुरुष	मज्झिमपुरिस	Second Person
म॰ भा॰ आ॰ भा॰	मध्य भारतीय आर्यभाषा		Middle Indo-Aryan Language
मा॰	मात्रिका	मातिका	Matrix
मि॰ सा॰	मिथ्या-सादृश्य		False analogy
ला॰ अ॰	लाक्षणिक अर्थ		Secondary Meaning
ला॰ प्र॰	लाक्षणिक प्रयोग		Secondary Usage
लि॰	लिङ्ग	लिङ्ग	Gender
लु॰	लुप्त	लुत्त	Elided
व॰	वचन	वचन	Number
वर्त॰	वर्तमान-काल	पच्चुप्पन्ना विभत्ति	Present Tense
वर्त॰ कृ॰	वर्तमानकालिक कृदन्त	वत्तमानकालिक कत्तरि कित्तक	Present Participle (Active)
वि॰	विभक्ति	विभत्ति	Case-affixes
वि॰ अ॰	विशेष. अर्थ		Special meaning
विधि॰	विधिलिङ्	सत्तमी-विभत्ति	Optative or Potential mood
विप॰	विपरीतार्थक		Antonym
वि॰ प्र॰	विविध-प्रयोग		Different Usages
विलो॰	विलोम		Opposite
विशे॰	विशेषण	विसेसन	Adjective
व्य॰ सं॰	व्यक्तिवाचक संज्ञा		Personal Name
व्यु॰	व्युत्पन्न / व्युत्पत्ति	निप्फन्न	Derived
व्यु॰ अ॰	व्युत्पत्तिपरक अर्थ		Etymological meaning
व्यु॰ रू॰	व्युत्पन्न रूप		Derived form
वै॰	वैदिक	वेदिक	Vedic
श॰	शब्दशः	सद्दसो	Literally
शा॰ अ॰	शाब्दिक अर्थ		Literal meaning
ष॰ वि॰	षष्ठी विभक्ति	छट्ठी-विभत्ति	Genitive Case
सं॰	संस्कृत	सक्कत	Sanskrit
सं॰ कृ॰	संभाव्य कृदन्त		Potential Passive Participle
संपा॰	संपादित	संसोधित	Edited
संबो॰	संबोधन	आलपन	Vocative Case
संस्क॰	संस्करण		Edition
सं॰ रू॰	संक्षिप्त-रूप	सङ्खित्त-रूप	Abbreviated Form
स॰	समास	समास	Compound
सक॰ क्रि॰	सकर्मक क्रिया	सकम्मक क्रिया	Transitive Verb
सत्त्व॰	सत्त्वनाम		Substantive noun
सप्त॰ वि॰	सप्तमी विभक्ति	सत्तमी-विभत्ति	Locative case
समा॰	समानान्तर		Parallel
समाना॰	समानार्थक	तुल्लत्थक	Synonym
समा॰ द्व॰	समाहार-द्वन्द्व समास	समाहारद्वन्द समास	Aggregative Co-ordinate compound
स॰ उ॰ प॰	समास-उत्तर-पद	समासुत्तरपद	Later member of a compound
स॰ प॰	समस्त-पद	समासपद	Compound-word
स॰ पू॰ प॰	समास-पूर्वपद	समासपुब्बपद	First member of a compound
सर्व॰	सर्वनाम	सब्बनाम	Pronoun

स्त्री॰	स्त्रीलिङ्ग	इत्थिलिङ्ग	Feminine gender
स्था॰	स्थानापन्न		Substitute

ख. सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

संकेत सूची	*ग्रन्थों के नाम*	*प्रकाशन*	*सन्*
अ॰ नि॰	*अङ्गुत्तर-निकाय*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
अट्ठ॰	*अट्ठकथा*		
अना॰ वं॰	*अनागत वंस*	जॅ॰ पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1886
अनु॰ टी॰	*अनुटीका*		
अप॰	*अपदान*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
अभि॰ अव॰	*अभिधम्मावतार*	पालि परिवेण, पटपड़गंज, दिल्ली	1987
		वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
अभि॰ टी॰	*अभिनवटीका*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
अभि॰ ध॰ वि॰	*अभिधम्मत्थविभाविनी*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
अभि॰ ध॰ स॰	*अभिधम्मत्थसङ्गहो*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
अभि॰ प॰	*अभिधानप्पदीपिका*	बौद्धभारती, वाराणसी	1981
अभि॰ प॰ सू॰	*अभिधानप्पदीपिका सूची*	बौद्धभारती, वाराणसी	1981
अभि॰ पि॰	*अभिधम्म पिटक*		
अमर॰	*अमरकोष*	चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी	2001
अर्थ॰ वि॰	*अर्थविनिश्चय सूत्र*	काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना	1971
अव॰ श॰	*अवदानशतक*	मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा	1958
अष्टा॰	*अष्टाध्यायी*	मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, भाग 1, 2	1962
इतिवु॰	*इतिवुत्तक*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
उत्त॰ वि॰	*उत्तरविनिच्छय*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
उदा॰	*उदान*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
उप॰ प॰	*उपरिपण्णास*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
एकक्ख॰	एकक्खरकोस *(अभिधानप्पदीपिका)*	बौद्धभारती, वाराणसी	1981
कङ्खा॰ टी॰	*कङ्खावितरणी-टीका (पातिमोक्ख-टीका)*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
कथा॰	*कथावत्थु*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
क॰ व॰	*कच्चायन वण्णना*	जॅ॰ रा॰ ए॰ सो॰ ऑफ बंगाल, कलकत्ता	1910–12
क॰ वु॰	*कच्चायन-वुत्ति*	जॅ॰ रा॰ ए॰ सो॰ ऑफ बंगाल, कलकत्ता, पृ॰ 1 से 339	1871
क॰ व्या॰	*कच्चायन-व्याकरण*	तारा पब्लिकेशन्स, कमच्छा, वाराणसी	1981
खु॰ पा॰	*खुद्दकपाठ*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
खु॰ सि॰	*खुद्दसिक्खा*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
ग॰ वं॰	*गन्धवंस*	पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1896
चरिया॰	*चरियापिटक*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
चूळनि॰	*चूळनिद्देस*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
चूळव॰	*चूळवग्ग*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
चू॰ वं॰	*चूलवंस*	पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1980
छ॰ सं॰	*छट्ठसंगायन*	म्यां-मा	
जॅ॰ पा॰ टे॰ सो॰	*जॅर्नल ऑफ पालि टेक्स्ट सोसाइटी*	लंदन	
जा॰	*जातक*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
जि॰ च॰	*जिनचरित*	जॅ॰ पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1904–05

जिना॰	*जिनालंकार*	जॅ॰ पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1894
ति॰ प॰	*तिकपट्ठान*	पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1996
तेल॰	*तेलकटाहगाथा*	जॅ॰ पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1884
		महाबोधि सभा, सारनाथ	1948
थू॰ वं॰	*थूपवंस*	पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1935
		रा॰ ए॰ सो॰ ऑफ बंगाल, कलकत्ता	1945
थेरगा॰	*थेरगाथा*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
थेरीगा॰	*थेरीगाथा*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
दा॰ वं॰	*दाठावंस*	टरुम्बनर एण्ड कम्पनी, लुड्गेट हिल, लन्दन	1874
दिव्या॰	*दिव्यावदान*	मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा	1959
दी॰ नि॰	*दीघनिकाय*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
दी॰ वं॰	*दीपवंस*	काशी विद्यापीठ, वाराणसी	1996
ध॰ प॰	*धम्मपद*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
ध॰ स॰	*धम्मसङ्गणि*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
धातु॰	*धातुकथा*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
धा॰ पा॰	*धातुपाठ (पालि-महाव्याकरण)*	मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी	2000
धा॰ मं॰	*धातुमञ्जूसा (क॰ व्या॰)*	तारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी	1962
ना॰ रू॰ प॰	*नामरूप परिच्छेद*	पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1913–14
		पालि परिवेण, पटपड़गंज, दिल्ली	1988
ना॰	*नालन्दा-संस्करण*	नालन्दा	1956
नेत्ति॰	*नेत्तिप्पकरण*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
प॰ प॰ अट्ठ॰	*पञ्चप्पकरण अट्ठकथा*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
प॰ म॰	*पज्जमधु*	जॅ॰ पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1887
पटि॰ म॰	*पटिसम्भिदामग्ग*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
पट्ठा॰	*पट्ठान*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
पर॰ वि॰	*परमत्थ-विनिच्छय*	पालि परिवेण, पटपड़गंज, दिल्ली	1992
		वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
परि॰	*परिवार*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
पा॰ इ॰ डि॰	*पालि-इंग्लिश डिक्शनरी*	मुंशीराम मनोहरलाल, दिल्ली	2001
पाचि॰	*पाचित्तिय*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
पाति॰	*पातिमोक्ख*		
पारा॰	*पाराजिक*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
पु॰ टी॰	*पुराणटीका* (अभि॰ अव॰)	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
पु॰ प॰	*पुग्गलपञ्ञत्ति*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
पे॰ व॰	*पेतवत्थु*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
पेटको॰	*पेटकोपदेस*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
बाला॰	*बालावतार*	बौद्धभारती, वाराणसी	1996
बु॰ वं॰	*बुद्धवंस*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
म॰ नि॰	*मज्झिमनिकाय*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
म॰ प॰	*मज्झिमपण्णास* (म॰ नि॰)	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
म॰ बो॰ वं॰	*महाबोधिवंस*	पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन	1891
म॰ भा॰	*महाभाष्य,* भाग 1–2	डेक्कन एज्युकेशन सोसाइटी, पुणे	1952
म॰ व॰	*महावस्तु*	पेरिस,	1882–97
		मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा	1970
म॰ वं॰	*महावंस*	काशी विद्यापीठ, वाराणसी	1996
म॰ वं॰ टी॰	*महावंसटीका*	नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा	1971
महाटी॰	*महाटीका (विसुद्धि॰)*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
महानि॰	*महानिद्देस*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998

महाभा॰	*महाभारत,* भाग 1–19	भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पुणे	1958
महाव॰	*महावग्ग*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
मि॰ प॰	*मिलिन्दपञ्ह*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
मू॰ टी॰	*मूलटीका*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
मू॰ प॰	*मूलपण्णास (म॰ नि॰)*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
मू॰ सि॰	*मूलसिक्खा*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
मो॰ प॰ प॰	*मोग्गल्लान-पञ्जिका-पदीप (पालि-महाव्याकरण)*	मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी	2000
मो॰ वु॰	*मोग्गल्लान-वुत्ति (पालि-महाव्याकरण)*	मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी	2000
मो॰ व्या॰	*मोग्गल्लान व्याकरण*	विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर	1985
यम॰	*यमक*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
रा॰ ए॰ सो॰ ब॰	रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल	कोलकता	
रो॰	*रोमन*	पालि टेक्स्ट सोसाइटी, लन्दन	
रू॰ सि॰	*रूपसिद्धि*	कोलम्बो (सिं)	1915
रूपा॰ वि॰	*रूपारूपविभाग*	पालि परिवेण पटपड़गंज, दिल्ली	1987
ललित॰	*ललितविस्तर*	मिथिला विद्यापीठ, दरभंगा	1958
लीन॰ (दी॰ नि॰ टी॰)	*लीनत्थप्पकासना*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
वजिर॰ टी॰	*वजिरबुद्धि-टीका*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
वि॰ पि॰	*विनय पिटक*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
वि॰ व॰	*विमानवत्थु*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
वि॰ वि॰ टी॰	*विमति-विनोदनी-टीका*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
वि॰ सङ्ग॰ अट्ठ॰	*विनय-सङ्गह-अट्ठकथा*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
विन॰ वि॰	*विनयविनिच्छय*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
विन॰ वि॰ टी॰	*विनयविनिच्छय-टीका*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
विभ॰	*विभङ्ग*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
वि॰ वि॰ वि॰	*विपश्यना-विशोधन-विन्यास*	इगतपुरी	
विसुद्धि॰	*विसुद्धिमग्गो*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
वुत्तो॰	*वुत्तोदय (रिसर्च वोल्यूम भाग 1)*	नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा	1960
स॰ नि॰	*संयुत्तनिकाय*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
सच्च॰	*सच्चसङ्खेप*	जॅ॰ पा॰ टे॰ सो॰, लन्दन, पृ॰ 1–25 तक	1917–19
सद्द॰	*सद्दनीति* भाग 1, 2, 3, 4 (रो॰)	ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, लन्दन	1928
सद्धम्म॰	*सद्धम्मसङ्गहो*	नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा	1981
सद्धम्मो॰	*सद्धम्मोपायन*	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	1983
सद्धर्म॰	*सद्धर्मपुण्डरीक-सूत्र*	मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा	1960
सा॰ वं॰	*सासनवंस*	नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा	1961
सा॰ सं॰	*सारसङ्गहो*	कोलम्बो (सिं)	1914
सारत्थ॰ टी॰	*सारत्थदीपनी-टीका*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
सार॰ प॰ टी॰	*सारत्थपकासनी-टीका*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
सि॰	*सिआमी संस्करण*		
सिं॰	*सिंहली संस्करण*		
सु॰ नि॰	*सुत्तनिपात*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
सु॰ पि॰	*सुत्तपिटक*	वि॰ वि॰ वि॰, इगतपुरी	1998
सुबोधा॰	*सुबोधालङ्कार*	लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली	1973
हत्थ॰ व॰ (सिंहली)	हत्थवनगल्लविहारवंस	सिलोन (श्रीलङ्का)	1900

आ[1] वर्णमाला का एक स्वर, कण्ठस्थानीय 'अ' स्वर का दीर्घ मात्रा वाला रूप, व्याकरण में 'सुस्पष्ट' पहचान कराने की दृष्टि से 'आकार' के रूप में भी प्रयुक्त – *आ ई ऊ ए ओ इति दीघा नाम*, क॰ व्या॰ 5.

आ[2] अ॰, पदपूरणार्थक निपा॰, विशिष्ट अर्थ का बोधक न होकर वचनों के अलङ्करणमात्र के लिए प्रयुक्त – *तत्थ यदानंमञ्ञतीति यं आ नं मञ्ञतीति पदच्छेदो, आ ति निपातमत्तं*, सद्द॰ 3.891.

आ[3] अ॰, उप॰ [आ], क्रि॰ प॰ अथवा ना॰ प॰ से पूर्व में अनेक अर्थों को सूचित करने वाला एक उप॰, प्रमुख सङ्केतित अर्थ – *आसद्दो'भिमुखीभावे उद्धकम्मे तथे'व च, मरियादाभिविधिसु परिस्सजन-पत्तिसु, इच्छायं आदिकम्मे च निवासे गहणे पि च, अव्हाने च समीपादिअत्थेसु पि पवत्तति*, सद्द॰ 3.880; *निवासाव्हानगहणकिच्छेसत्थनिवत्तिसु, अप्पसादासिसरणपतिट्ठाविम्हयादिसु*, अभि॰ प॰ 1181; **क.** अभिमुखीभाव, किसी की ओर उन्मुख होना, उपस्थिति – *किं नु खो महासमणो नागच्छतीति?* महाव॰ 33; *दहरस्स युविनो चापि, आगमो च न विज्जति*, जा॰ अट्ठ॰ 4.95; **ख.** ऊर्ध्वकर्म, ऊपर की ओर – *तुरिता पब्बतमारुहुं*, सु॰ नि॰ 1020; *आरुहन्तो पुनप्पुनं*, सद्धम्मो॰ 188; *तस्स किर महापथविया एकयोजनतिगावुतप्पमाणं नभं पूरेत्वा आरोहनकालो* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.79-80; **ग.** मर्यादा, पृथक्करणीय या उपसंहारक सीमा, तक, जहां तक है वहां तक – *तेसु येन केनचि परितित्तो आकण्ठप्पमाणं भुञ्जित्वा ठितो*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.71; *आ पब्बता खेत्तं*, सद्द॰ 3.703; जब तक कि – *तत्थ अनिप्फन्नताति महाराज, याव अत्तनो इच्छितं न निप्फज्जति, ताव पण्डितो अधिवासेय्य*, जा॰ अट्ठ॰ 6.211; **घ.** अभिविधि, आरम्भिक सीमा, 'से', 'को लेकर', 'में से', 'से दूर' (प॰ वि॰ में अन्त होने वाले ना॰ प॰ के साथ वियोजक निपा॰ के रूप में) – *आकुमारं यसो कच्चायनस्स*, सद्द॰ 3.880; *आ सहस्सेहि पञ्चहीति*, जा॰ अट्ठ॰ 7.37; *आपुत्तपुत्तेहि पमोदथव्होति*, जा॰ अट्ठ॰ 4.146; *आपुत्तपुत्तेहीति याव पुत्तानम्पि पुत्तेहि पमोदथ* ..., तदे॰; **ङ.** अधिकता, पूर्णता **ङ.1.** लिपटाव की पूर्णता – *एतं आलिङ्गन्तो विय गाळ्हं पीळेत्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.271; **ङ.2.** प्राप्ति की पूर्णता, पूरी तरह – *अहञ्चम्हि आपत्तिं आपन्नो*, महाव॰ 219; **ङ.3.** इच्छा की पूर्णता – *यं सङ्घो आकङ्खति विहारं वा* ..., महाव॰ 134; **ङ. 4.** प्रारम्भ या आदिकर्म की पूर्णता – *सो वीरियं आरभति अप्पत्तस्स पत्तिया* ..., अ॰ नि॰ 3(1).154; **ङ.5.** आमन्त्रण या अभिमुखीभाव की पूर्णता – *याव आमन्तये आती, मित्ते च सुहदज्जने*, जा॰ अट्ठ॰ 7.157; **ङ.6.** वास की पूर्णता – *सम्बाधो घरावासो रजोपथो*, दी॰ नि॰ 1.55; **ङ.7.** निकटता या समीपता की पूर्णता – *बोधिसत्तो नातिदूरे नाच्चासन्ने गच्छन्तो* ..., जा॰ अट्ठ॰ 2.127; **ङ.8.** कुछ-कुछ, थोड़ा-थोड़ा – *भुसो किरियं धारेतीति आधारो*, सद्द॰ 3.709; आकळारो, मो॰ व्या॰ 3.13; *निवासाव्हानगहणकिच्छेसत्थनिवत्तिसु*, अभि॰ प॰ 1181.

आकङ्ख पु॰, [आकांक्ष], आकांक्षा करने वाला, प्रयास कर रहा, उत्सुक – ... *इमे चत्तारो धम्मे आकङ्खन्तेन नत्थञ्ञं किञ्चि कातब्बं*, अ॰ नि॰ टी॰ 3.318; पाठा॰ *आकङ्खन्तेन*, *आकङ्खक्खाकङ्ख कङ्खागङ्गाखागहक*, जिना॰ 101; – **सुत्त** नपुं॰, अ॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, अ॰ नि॰ 3(2).109-110; – **वग्ग** पु॰, अ॰ नि॰ के दसक निपात का आठवां वर्ग, अ॰ नि॰ 3(2).109-125; अ॰ नि॰ टी॰ 3.315-321.

आकङ्खति आ + √कङ्ख का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आकांक्षति / आकांक्षते], लालसा करता है, चाहता है, कामना करता है, अपेक्षा करता है, जरूरत महसूस करता है – *यं सङ्घो आकङ्खति विहारं वा अड्ढयोगं वा पासादं वा हम्मियं वा गुहं वा*, महाव॰ 134-35; – **ते** उपरिवत्, आत्मने॰ – *सीसंन्हातो चयं पोसो, पुप्फमाकङ्खते यदि*, अप॰ 1.408; – **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सचे आकङ्खसि, निसीदा'ति*, म॰ नि॰ 2.372; *तस्सत्थो – "पुच्छ यदि आकङ्खसि, न मे पञ्हविस्सज्जने भारो अत्थि"*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).171; – **ङ्खामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञतित्थियपुब्बो इमस्मिं धम्मविनये आकङ्खामि उपसम्पदं*, महाव॰ 88; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *बुद्धा पन ... हेट्ठा वा उपरि वा यं यं ठानं आकङ्खन्ति, तं सब्बं सरन्तियेव*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.120; – **थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सचे आकङ्खथ, भुञ्जथ, नो चे तुम्हे भुञ्जिस्सथ*, म॰ नि॰ 1.17; *सचे आकङ्खथाति यदि इच्छथ*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).101; – **कङ्खं** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धम्मविञ्ञाणमाकङ्खं, तं भजेथ तथाविधं*, थेरगा॰ 1033; – **ङ्खन्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमे चत्तारो धम्मे आकङ्खन्तेन नत्थञ्ञं किञ्चि कातब्बं*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).167; – **न्ता** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *गिहीनं उपनामेन्ति, आकङ्खन्ता बहुत्तरं*, थेरगा॰ 937; – **मानो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकङ्खमानोति इच्छमानो*, पारा॰ 391; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकङ्खमानेन भिक्खुना पटिग्गहेतब्बानि*, पारा॰ 352; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰

व॰ – *इति आकङ्खमानस्स, सद्धम्मस्स चिरट्ठितिं*, उदा॰ अट्ठ॰ 2; – **नानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पुञ्ञं आकङ्खमानानं, सङ्घो वे यजतं मुखन्ति*, सु॰ नि॰ 574; – **ङ्खेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सचे आकङ्खेय्य भुञ्जेय्य, नो चे आकङ्खेय्य अप्पहरिते वा छड्डेय्य*, महाव॰ 209; *आकङ्खेय्य चेति इदं कस्मा आरद्धं? सीलानिसंसदस्सनत्थं*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).165; – **ङ्खिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यं वितक्कं आकङ्खिस्सति तं वितक्कं वितक्केस्सति*, म॰ नि॰ 1.172; – **स्ससि** उपरिवत्, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सो त्वं, वच्छ, यावदेव आकङ्खिस्ससि* – ..., म॰ नि॰ 2.172; – **ङ्खित** त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰ [आकांक्षित], इच्छित, अभीष्ट, चाहा गया – *यं ... इच्छितं, यं आकङ्खितं, यं अधिप्पेतं, यं अभिपत्थितं* ..., दी॰ नि॰ 1.105.

आकङ्खप्पटिबद्ध त्रि॰, [आकांक्षाप्रतिबद्ध], **शा॰ अ॰** आकांक्षा या कामना के साथ जुड़ा हुआ, इच्छा या कामना का विषयीभूत, **ला॰ अ॰** जवनचित्त द्वारा जाना गया, आलम्बन के प्रति रुचि उत्पन्न होने के अनन्तर चित्त द्वारा गृहीत – **द्धा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तस्स मे ते धम्मा ... आकङ्खपटिबद्धा* ..., पटि॰ म॰ 166; *आकङ्खपटिबद्धाति रुचिआयत्ता*, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.74; *सब्बे धम्मा ... आकङ्खप्पटिबद्धा* ..., पटि॰ म॰ 368; *आकङ्खप्पटिबद्धाति रुचिआयत्ता, आवज्जनानन्तरं जवनञाणेन जानातीति अत्थो*, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.237.

आकङ्खना स्त्री॰ [आकांक्षा], इच्छा, कामना – *सति अज्झत्तविक्खेपा, कङ्खना बहिद्धाविक्खेपपत्थना*, पटि॰ म॰ 158; *अज्झत्तं विक्खेपो अज्झत्तविक्खेपो, तस्स आकङ्खना अज्झत्तविक्खेपाकङ्खना*, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.67.

आकङ्खा स्त्री॰ [आकांक्षा], इच्छा, रुचि – *आकङ्खा रुचि वुत्ता*, अभि॰ प॰ 163.

आकङ्खितपमाणिक त्रि॰, ब॰ स॰ [आकांक्षितप्रामाणिक], इच्छित प्रमाण वाला, मनचाही लम्बाई चौड़ाई वाला – *पच्चत्थरणमुखचोळा, आकङ्खितप्पमाणिका*, खु॰ सि॰ 42; *तेन वुत्तं"आकङ्खितप्पमाणिका"ति इच्छितप्पमाणिकाति अत्थो*, खु॰ सि॰ पु॰ टी॰ 92.

आकङ्खिय त्रि॰, [आकांक्ष्य], आकांक्षा करने योग्य, चाह करने योग्य – *इमिना दुतियेन आकङ्खियेन धम्मेन समन्नागतो होति*, पेटको॰ 255.

आकङ्खियन्ति आ +√कङ्ख से व्यु॰, आकंखा के ना॰ धा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰ ब॰ व॰, आकांक्षा या इच्छा, जैसा करते हैं – *ये केचि अरहन्ता इन्द्रियभावनं आकङ्खियन्ति*, पेटको॰ 295.

आकङ्खी त्रि॰ [आकांक्षी], कामना या आकांक्षा करने वाला – *तस्मा सम्पदमाकङ्खी, सम्पन्नत्थूध पुग्गलो*, अ॰ नि॰ 3(1).71; *इमिना दुतियेन आकङ्खियेन धम्मेन समन्नागतो होति*, पेटको॰ 255.

आकङ्खेय्यसुत्त नपुं॰, म॰ नि॰ का छठा सुत्त, म॰ नि॰ 1.41-45; – **वण्णना** स्त्री॰, इस नाम वाले सुत्त की अट्ठकथा या व्याख्या, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).163-174.

आकड्ढति आ +√कड्ढ का वर्त॰, प्र॰ पु॰ ए॰ व॰ [आकर्षति], **शा॰ अ॰1.** खींचता है या घसीटता है, पकड़ता है या बलपूर्वक ग्रहण करता है – *येन येनत्थिका होति, तं तं आकड्ढतियेवाति अत्थो*, जा॰ अट्ठ॰ 1.399; *आमसति ... आकड्ढति पतिकड्ढति* ..., पारा॰ 175; – **ड्ढित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *तं गीवायं डंसमानं हनुकट्ठिकेन आकड्ढित्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.256; – **ड्ढितब्बे** त्रि॰, सं॰ कृ॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा हि सत्तहि युगेहि आकड्ढितब्बे सकटे* ..., ध॰ स॰ अट्ठ॰ 128; **ला॰ अ॰1.** सम्पादित या उत्पन्न करता है, खींच कर ले आता है – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – ... *उपेत्वा उद्धच्चसहगतं, सेसानि एकादसेव पटिसन्धिं आकड्ढन्ति* ..., ध॰ स॰ अट्ठ॰ 300; – ति वर्त॰, प्र॰पु॰, ए॰व॰ – *यो च, महाराज, वातो यञ्च पित्तं ... सकं सकं वेदनं आकड्ढति*, मि॰ प॰ 138; – **ड्ढेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आकड्ढेय्याति अत्तनो अभिमुखं कड्ढेय्य*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).169; **शा॰ अ॰2.** अपनी ओर खींचता है – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तथा हि गावो नववुट्ठे देवे भूमियं घायित्वा घायित्वा आकासाभिमुखा हुत्वा वातं आकड्ढन्ति*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 348; – **न्तो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तदा हि भगवा आकासगङ्गं ओतारेन्तो विय पथवोजं आकड्ढन्तो विय* ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.19; *आवट्टतीति ... अत्तनो सरीरं इतो चितो आकड्ढन्तो आवट्टति*, उदा॰ अट्ठ॰ 93; **ला॰ अ॰ 2.** चूसता है, निचोड़ लेता है, आत्मसात् कर लेता है – **ड्ढित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *तेपि बोधिसत्तस्स नळेन आकड्ढित्वा पानीयं पिवनकाले सब्बे तीरे निसिन्नाव पिविंसु*, जा॰ अट्ठ॰ 1.173; **शा॰ अ॰ 3.** बलपूर्वक या जबर्दस्ती घसीटता है, बलपूर्वक अपनी ओर खींचता है – **ड्ढन्ते** वर्त॰ कृ॰, पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तंसदिसे पन द्वे निरयपाले संसवके नाम गूथनिरये पक्खिपितुं आकड्ढन्ते परिस्सित्वा* ..., वि॰ व॰ अट्ठ॰ 190; ... *मद्दिं जटासु गहेत्वा आकड्ढित्वा भूमियं उत्तानकं पातेत्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 7.309; **शा॰ अ॰ 4.** खींचकर बाहर निकालता है, निचोड़ता है – **ड्ढाहि** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰

— *"तया दट्ठट्ठानतो त्वञ्ञेव मुखेन विसं आकड्डाही"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.298; — **ड्डितुं** निमि॰ कृ॰ — *बाळिसिको तं आकड्डितुं असक्कोन्तो चिन्तेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.460; **ला॰ अ॰ 3.** तात्पर्य या सारार्थ निकालता है, निष्कर्ष निकालता है — **ड्डित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ — *पञ्चहि निकायेहि अत्थञ्च कारणञ्च आकड्डित्वा ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.302; **शा॰ अ॰ 5.** हटा देता है, दूर कर देता है — **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ — *अवकस्सन्तीति परिसं आकड्डन्ति विजटेन्ति एकमन्तं उस्सारेन्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.308; — **ड्डेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ — *तासं चे, आवुसो, नळकलापीनं एकं आकड्डेय्य, एका पपतेय्य,* स॰ नि॰ 1(2).100; **ला॰ अ॰ 4.** आकर्षित या मोहित कर लेता है, प्रभाव डाल देता है, मन को जीत लेता है — **ड्डिस्सन्ति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ — ... *अम्हे येनिच्छिकं यदिच्छकं यावदिच्छकं आकड्डिस्सन्ति परिकड्डिस्सन्ति,* पाचि॰ 191; — **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ — ... *अत्तनो रूपसिरिया लोकस्स लोचनानि आकड्डेन्तो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.228; **ला॰ अ॰ 5.** (धनुष को) झुकाता है, तानता है या खींचता है — **ड्डि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ — *सो पटिच्छन्ने ठत्वा धनुं आरोपेत्वा खुरप्पं सन्नय्हित्वा आकड्डि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.299; — **ड्डित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ — ... *धनुं आरोपेत्वा आकड्डित्वा तज्जेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.290; **ला॰ अ॰ 6.** लकीर खींचता है — **मानो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ — *एवं इमेहि कारणेहि महामग्गे सोळस लेखा आकड्डमानो निसीदि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.87, पाठा॰ कड्डमानो; **ला॰ अ॰ 7.** ऐंठ देता है, निचोड़ता है (वाद में) उखाड़ देता है — **ड्डित्वान** पू॰ का॰ कृ॰ — *आकड्डित्वान इसयो, चोदयिस्सन्ति तं सदा,* अप॰ 1.65; — **ड्डिस्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ — *एवमेवाहं समणं गोतमं वादेन वादं आकड्डिस्सामि ...,* म॰ नि॰ 1.294.

आकड्डन नपुं॰, आ +√कड्ड से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आकर्षण], अपनी ओर बलपूर्वक खींचना, बल के साथ घसीटना (धनुष को) खींचना या , झुकाना — *कड्ड आकड्डने,* सद्द॰ 2.357; *आकड्डनट्ठेन सीघसोता सरिता वियाति सरिता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 390; *"अयं अतिधावती"ति आकड्डनं वा नत्थि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.305; — **समत्थता** स्त्री॰, भाव॰ [आकर्षण-समर्थता], अपनी ओर खींच लेने की क्षमता — *विरूळ्हेति कम्मं जवापेत्वा पटिसन्धिआकड्डनसमत्थताय निब्बत्तमूले जाते,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.62.

आकड्डनक त्रि॰, [आकर्षणक], खींचकर पास ले आने वाला, घसीट कर ले आने वाला, बलपूर्वक खीचने वाला — **कं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ — *ओहारिनन्ति चतूसु अपायेसु आकड्डनकं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.130.

आकड्डनपरिकड्डन नपुं॰, द्व॰ स॰ [आकर्षण-परिकर्षण], खींचातानी, विभेद, फूट — *सप्पपोतको विय च आकड्डनपरिकड्डनओधूननिद्धूननादिना उपक्कमेन अधिमत्तं दुक्खमनुभवति,* विसुद्धि॰ 2.127; *अभिमुखं कड्डनं आकड्डनं, परितो समन्ततो कड्डनं परिकड्डनं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.186; *तस्स माता लभति आकड्डनपरिकड्डनं गाहं सामिनो उपनयनं कातु'न्ति,* मि॰ प॰ 153.

आकड्डनभाव पु॰, [आकर्षणभाव], अपनी ओर खींचकर ले आने की दशा, प्रबल शक्ति — **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ — ... *कतकम्मस्स आकड्डनभावं ञत्वा न अपगच्छि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.38.

आकड्डनयन्त नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आकर्षणयन्त्र], (जल आदि को) खींच कर ले आने वाला उपकरण या यन्त्र — *करकटको वुच्चति गोणे वा योजेत्वा हत्थेहि वा गहेत्वा दीघवरत्तादीहि आकड्डनयन्तं,* चूळव॰ अट्ठ॰ 52.

आकड्डनविकड्डन नपुं॰, द्व॰ स॰ [आकर्षणविकर्षण], अपनी ओर खींचना और चारों ओर ढकेल देना, खींचातानी, खींचाखींची — *सारम्भा जायतेति अहं त्वन्ति आकड्डनविकड्डनं करोन्तस्स ... कोधो जायति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.25; *इमम्पि ... यत्थ ... वधबन्धनआकड्डनविकड्डनादीहि महादुक्खं अनुभवमानं पस्सतियेव,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).351.

आकड्डना स्त्री॰, [आकर्षण, नपुं॰], खींच कर ले आना — *आकड्डना नाम आविञ्छना,* पारा॰ 174.

आकड्डापेति आ +√कड्ड के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आकर्षयति], खिंचवाता है, अन्दर से बाहर निकलवाता है — **मि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ — *दट्ठसप्पं आवाहेत्वा दट्ठट्ठानतो तेनेव विसं आकड्डापेमी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.297; — **हि** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ — *सप्पं आवाहेत्वा विसं आकड्डापेही'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.297-98.

आकड्डित त्रि॰, आ +√कड्ड का भू॰ क॰ कृ॰ [आकृष्ट], **शा॰ अ॰ 1.** वह, जिसे खींचकर लाया गया है — *मातुञ्च अङ्कस्मिमहं निसिन्नो, आकड्डितो सहसा तेहि देव,* जा॰ अट्ठ॰ 4.408; *पण्डुरज्जं गहेत्वान ततो आकड्डितेहि पि,* चू॰ वं॰ 78.76; **शा॰ अ॰ 2.** वह (धनुष), जिसे खींचा गया है या झुकाया गया है — *आकड्डजियस्स धनुदण्डस्स विय ... अन्तोवङ्कपादता,* दी॰ नि॰ टी॰ (लीन॰) 3.98; *विकासितानि आकड्डिता,* जा॰ अट्ठ॰ 7.48; **ला॰ अ॰** वह, जिसे नष्ट कर दिया गया है, अभिभूत, पराभूत — ... *वातवेगेन आकड्डिता नस्सिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 3.223.

आकड्डीयति / आकड्डियति आ +√कड्ड के कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आकृष्यते], खींचा जाता है, खींच कर या घसीट कर ले जाया जाता है – *न तत्थ सुखाभिसङ्गेन आकड्डीयति,* ध. स. अट्ठ. 219; *तत्थ संहीरतीति विपस्सनाय अभावतो तण्हादिट्ठीहि आकड्डियति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.176; – **ड्डियन्तस्स** वर्त. कृ., पु., ष. वि., ए. व. – *वंसनाळस्स ... साखाजटाजटितस्स आकड्डियन्तस्स गरुकं होति आगमनं दन्धं,* मि. प. 113; – **ड्डियमानं** वर्त. कृ., आत्मने., पु., द्वि. वि., ए. व. – *विकस्समानन्ति अत्तानं आकड्डियमानं तत्थ निरये पस्सिस्ससि,* जा. अट्ठ. 7.136; – **ना** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अनापत्ति मनुस्सेहि आकड्डीयमाना गच्छति,* पाचि. 301; *आकड्डियमाना गच्छतीति अड्डकारकमनुस्सेहि सयं वा आगन्त्वा दूतं पेसेत्वा ... गच्छति,* पाचि. अट्ठ. 170.

आकड्ढेति आ +√कड्ढ का वर्त., प्र. पु., ए. व., अपनी ओर खींचता है, मोहित करता है, लुभाता है, निचोड़कर बाहर की ओर खींच लेता है – **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – ... *लोकस्स लोचनानि आकड्ढन्तो नगरं ... पापुणि,* जा. अट्ठ. 2.228; – **य्युं** विधि., प्र. पु., ब. व. – *न लब्भा तया पब्बजितुन्ति बाहायम्पि गहेत्वा आकड्ढेय्युं,* पारा. अट्ठ. 1.156.

आकण्ठतो अ., प. वि., प्रतिरू. निपा. [आकण्ठतः], कण्ठपर्यन्त, गले तक, भरपेट – *आकण्ठतो वत पिवेय्य मरीचि तोयं,* तेल. 58.

आकण्ठप्पमाणं अ., क्रि. वि. [आकण्ठप्रमाणं], उपरिवत् – *तेसु येन केनचि परितित्तो आकण्ठप्पमाणं भुञ्जित्वा ठितो,* अ. नि. अट्ठ. 3.71.

आकति स्त्री., [आकृति], एक छन्द का नाम, जिस में निबद्ध रचना के प्रत्येक पाद में बाईस वर्ण रहते हैं तथा जिस का एकमात्र प्रभेद भद्दक (भद्रक) कहलाता है – *भा नरना रनाथ च गुरुद्दसक्कं विरमा हिभद्दकमिदं,* वुत्तो. 105.

आकतिगण पु., केवल व्याकरण के सन्दर्भ में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द [आकृतिगण], व्याकरण के किसी विशेष नियम द्वारा व्युत्पादित या रचित उदाहरणों में से कुछ का समूह – *गावी, गो; आकतिगणोयं,* मो. व्या. 3.27; *पिसोदरादीनं सद्दानं आकतिगणभावतो वुत्तं "पिसोदरादिपक्खेपलक्खणं गहेत्वा"ति,* सारत्थ. टी. 1.264.

आकप्प पु., [आकल्प], वेशभूषा, अलंकरण, सजावट, बाहरी आकार, बाह्य शारीरिक चेष्टा, हाव-भाव, बरताव, व्यवहार, चाल-ढाल – *आकप्पो वेसो नेपच्छं,* अभि. प. 282; *आकप्पोति गमनादिआकारो,* ध. स. अट्ठ. 353; **1.** वेशभूषा, सजावट, परिधान, बाहरी चालढाल – **प्पो** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *इमस्स चीवरग्गहणं पत्तग्गहणं सरकुति आकप्पो च एवरूपो नाम होतु,* ध. स. अट्ठ. 17; – **प्पेन** तृ. वि., ए. व. – *आकप्पेन, भिक्खवे, पुरिसो इत्थिं बन्धति,* अ. नि. 3(1).38; *आकप्पेनाति निवासनपारुपनादिना विधानेन,* अ. नि. अट्ठ. 3.216; – **प्पं** द्वि. वि., ए. व. – *आकप्पं सरकुत्तिं वा, न रञ्ञो सदिसमाचरे,* जा. अट्ठ. 7.187; **2.** बरताव, व्यवहार, आचरण – *अनाकप्पसम्पन्नाति न आकप्पेन सम्पन्ना, समणसारुप्पाचारविरहिताति अत्थो,* महाव. अट्ठ. 247; *"हत्थपादमुखसण्ठानेहि च आकप्पेन च मातापुत्ता एकसदिसायेवा"ति आहंसु,* जा. अट्ठ. 1.280; **3.** रीति-रिवाज, तौर-तरीका – *किंछन्दा किमधिप्पाया, किमाकप्पा भविस्सरे,* थेरगा. 950; *आकप्पाति च वेसगहणादिवासितचारित्तवन्तोति अत्थो,* थेरगा. अट्ठ. 2.305; **4.** अभिप्राय, प्रवृत्ति, इच्छा – *सत्थापि ... मनुस्सलोकं आगमनत्थाय आकप्पं दस्सेसि,* अ. नि. अट्ठ. 1.102.

आकप्पकुत्त पु., [आकल्पक्लृप्त], हाव-भाव, चेष्टा, उत्तम आकार-प्रकार – *अथ ने ब्राह्मणगामतो निक्खम्म दासगामद्वारेन गच्छन्ते आकप्पकुत्तवसेन दासगामवासिनो सञ्जानिंसु,* अ. नि. अट्ठ. 1.142.

आकप्पसम्पत्ति स्त्री., तत्पु. स. [आकल्पसम्पत्ति], भव्य आकृति, उत्तम स्वरूप – **त्तिं** द्वि. वि., ए. व. – ... *पुनदिवसे आकप्पसम्पत्तिं कत्वा भिक्खाचारवत्तेन नगरं पाविसि,* जा. अट्ठ. 1.311.

आकप्पसम्पदा स्त्री., तत्पु. स. [आकल्पसम्पत्], उपरिवत् – *आकप्पसम्पदा ... परिवारसम्पदा ...,* अ. नि. 1(1).53; *आकप्पसम्पदाति चीवरग्गहणादिनो आकप्पस्स सम्पत्ति,* अ. नि. अट्ठ. 1.368.

आकप्पसम्पन्न त्रि., तत्पु. स. [आकल्पसम्पन्न], सुन्दर वेशभूषा को धारण करने वाला, उत्तम हावभाव या शारीरिक चेष्टाओं से विभूषित, उत्तम आचरण वाला – *दुल्लभो, भिक्खवे, वुड्ढपब्बजितो निपुणो, दुल्लभो आकप्पसम्पन्नो,* अ. नि. 2(1).72; *न आकप्पसम्पन्नो होति न वत्तसम्पन्नो,* अ. नि. 2(1).242; *आकप्पसम्पन्नोति समणाकप्पेन सम्पन्नो,* अ. नि. अट्ठ. 3.85; *सो सट्ठिवस्सिकत्थेरो विय आकप्पसम्पन्नो ...,* जा. अट्ठ. 4.304.

आकम्पयन्ति आ +√कम्प के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ [आकम्पयन्ति], हिलाते हैं, चञ्चल बना देते हैं – *नाकम्पयन्ति सकलापि च लोकधम्मा, चित्तं सदापगतपापकिलेससल्लं,* तेल॰ 95; – **म्पित** त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰ [आकम्पित], हिला दिया गया, चञ्चल या अस्थिर बना दिया गया – *पब्बता समनादिंसु, मही पकम्पिता अहु,* जा॰ अट्ठ॰ 7.372, पाठा॰ पकम्पिता.

आकर पु॰, [आकर], **शा॰ अ॰** खान, खदान – *आकरो रतनुप्पादनाय,* मि॰ प॰ 322; *'सुवण्णायतनं-रजतायतनं'न्तिआदीसु आकरो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 186; *गुणानं आकरो वीरो,* अप॰ 2.161; **ला॰ अ॰ 1.** उत्पत्ति-स्थल, उद्भव-स्थल – ... *एवरूपानं पण्डितानं आकरस्स उड्डानट्ठानभूतस्स* ..., जा॰ अट्ठ॰ 6.290; **ला॰ अ॰ 2.** क्षेत्र, किसी वस्तु में समृद्ध क्षेत्र – *चक्खु फस्सायतनन्ति सुवण्णादीनं सुवण्णादिआकरो विय ... इमेहि सत्तहि विञ्ञाणेहि सहजातानं सत्तन्नं फस्सानं समुट्ठानट्ठेन आकरोति आयतनं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.157; स॰ उ॰ प॰ के रूप में इत्था॰, कमला॰, गन्था॰, गुणा॰, इरिता॰, धना॰, पमुखा॰, मकरा॰, मोक्खा॰, रतना॰, सब्बा॰, सुवण्णा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आकरट्ठ पु॰, तत्पु॰ स॰ [आकरार्थ], खान या खदान का अर्थ, उत्पत्ति-स्थान का आशय – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *फस्सायतनानीति विपाकफस्सानं आकरट्ठेन आयतनानि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.156.

आकरुप्पन्न त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आकरोत्पन्न], खान में उत्पन्न, खदान से प्राप्त – **न्नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततो आकरुप्पन्नं, ततो यंकिञ्चि,* ..., वि॰ व॰ अट्ठ॰ 10.

आकळार त्रि॰, [आकडार], थोड़े से या कुछ कुछ भूरे रंग वाला – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईसकं उण्हं कदुण्हं, पनायको, ... आकळारो, आबद्धो,* मो॰ व्या॰ 3.13.

आकस्स / आकास पु॰, [आकर्ष], **शा॰ अ॰** अपनी ओर खींचने वाला चुम्बक, **ला॰ अ॰** तृष्णा – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तण्हा हि रूपादीनं आकासनतो "आकासो"ति वुच्चति,* महानि॰ अट्ठ॰ 353; पाठा॰ आकासो.

आकस्सन नपुं॰, [आकर्षण], अपनी ओर खींचना, खिंचाव – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰, उपरिवत्.

आकस्सति / आकासति आ +√कस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आकर्षति], अवकृष्ट करता है, अपनी ओर खींचता है, अपने पास खींच कर ले जाता है – *याय तण्हाय रूपं आकस्सति समाकस्सति गण्हाति परामसति ... तंकारणा आकासं वुच्चति तण्हा,* महानि॰ 319; *"आकासती"ति "आकस्सती"ति च दुविधो पाठो,* महानि॰ अट्ठ॰ 353.

आकार[1] पु॰, [आकार], वर्णमाला में दीर्घ मात्रा वाला 'आ' स्वर, प्रायः व्याकरणविवेचनों के सन्दर्भ में प्रयुक्त – *अ एव अकारो, एवं आकारो, ... लकारो,* क॰ व्या॰ 606; *अन्तोकरणत्थो हि अयं आकारो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).66; – **लोप** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आकारलोप], 'आ' स्वर का लोप – **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पदातवेति पआदातवे, सन्धिवसेन आकारलोपो वेदितब्बो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.188.

आकार[2] पु॰, आ +√कर से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आकार], **शा॰ अ॰** अच्छी तरह से करना, **ला॰ अ॰ 1.** संकेत, इशारा, निशानी, चेहरे का रंग-ढंग, जिस से मनुष्य के भीतरी विचारों तथा मनोवृत्ति का पता लग सके, मानसिक भावों को प्रकाशित करने वाली शारीरिक चेष्टा या हाव-भाव – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकारो त्विङ्गितं इङ्गो,* अभि॰ प॰ 764; – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं हत्थादीनं आकारो चक्खुविञ्ञेय्यो होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 128; *तस्साकारं विदित्वान, तत्थाहोसि कुतूहलं,* म॰ वं॰ 30.23; ... *थेरं पुनप्पुनं ववत्थापनत्थाय आकारमकासि,* म॰ वं॰ टी॰ 495 (ना॰) – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थं ठितं भागिनेय्यं, आकारेन निवेदयि,* म॰ वं॰ 31.51; ... *एकेन कायविकारेन जानापयी ति अत्थो,* म॰ वं॰ टी॰ 527 (ना॰); **ला॰ अ॰ 2.** लक्षण, खास पहचान कराने वाला चिह्न, विशेषता, प्रभेदक तथ्य, गुण – **तो** प॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आकारतो च वोकारतो च आसयज्झासयस्स अधिमुत्तिसमन्नागतानं,* पेटको॰ 190; – **रा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ते हि ते, गहपति, आकारा, ते लिङ्गा, ते निमित्ता यथा तं गहपतिस्सा'ति,* म॰ नि॰ 2.24; ... *गिहिब्यञ्जनानि तस्स गिहिभावं पाकटं करोन्तीति आकारा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.28; ... *आकारा वुच्चन्ति वेदनादीनं अञ्ञमञ्ञं असदिससभावा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.81; – **रेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *येहि आकारेहि येहि लिङ्गेहि येहि निमित्तेहि पाराजिकस्स धम्मस्स अज्झापत्ति होति, तेहि आकारेहि तेहि लिङ्गेहि तेहि निमित्तेहि* ..., चूळव॰ 402; *येहि ... एत्थ मग्गेनमग्गपटिपादनादीसु आकारादिसञ्ञा वेदितब्बा,* चूळव॰ अट्ठ॰ 123; **ला॰ अ॰ 3.** रूप, शक्ल-सूरत, आकृति, मुखाकृति, चेहरा, आकार – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकारो कारणे वुत्तो सण्ठाने इङ्गितेपि च,* अभि॰ प॰ 981; *धम्मसंवेगवसेनापि अयमाकारो लब्भतेव,* उदा॰ अट्ठ॰ 3. ; – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पीठसप्पी ... रञ्ञो आकारं ञत्वा*

... *पतिट्ठापेसि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 247; *तस्मिं पन गेहे गेहसामिनी इत्थि सद्धा पसन्ना थेरस्स आकारं सल्लक्खेत्वा ...,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 21; **ला. अ. 4**. अवस्था, स्थिति, दशा, प्रकृति – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मिं वारे अक्कन्तपदानञ्च धनुदण्डस्स च जियाय च सरस्स च आकारं परिग्गण्हेय्य,* विसुद्धि॰ 1.145; *आकारन्ति धनुजियासरानं गहिताकारं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.164; – **रा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सूदेन विय च आकारा परिग्गहेतब्बा,* विसुद्धि॰ 1.145; – **रे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एवमयम्पि अधिगतक्खणे भोजनादयो आकारे गहेत्वा ... होति,* विसुद्धि॰ 1.145; *पुब्बे झानस्स अधिगतक्खणे किच्चसाधके भोजनादिगते आकारे,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.165; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जीरणताति इमिना आकारतो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).224; **ला. अ. 5**. कारण, हेतु, प्रयोजन, अभिप्राय – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकारो कारणे वुत्तो सण्ठाने इङ्गितेपि च,* अभि॰ प॰ 981; – **रा** ब॰ व॰ – *के पनायस्मतो आकारा, के अन्वया, येनायस्मा एवं वदेसि,* म॰ नि॰ 1.400; *आकाराति कारणानि, अन्वयाति अनुबुद्धियो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).280; ... *अञ्ञा सब्बापि पजा इमस्स कतस्स आकारमत्तम्पि न जञ्ञा न जानिस्सन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.212; **ला. अ. 6**. तरीका, प्रभेद, साधन, धर्मोपदेश की पद्धति या प्रकार (परियाय), अनुव्यञ्जन – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकारो जानितब्बोति सङ्घो आकारतो जानितब्बो,* परि॰ 316; *सो च एवं भद्दको आकारो न सम्मा अप्पणिहितत्तनो पुब्बे अकतपुञ्ञस्स वा होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).9; – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *"अक्कोच्छिम"न्ति आदिकं आकारं ये उपनय्हन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.432; *नानुब्यञ्जनग्गाहीति किलेसानं अनुअनुब्यञ्जनतो ... हत्थपादसितहसितकथितविलोकितादिभेदं आकारं न गण्हाति,* विसुद्धि॰ 1.20; – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बञ्ञुभासितम्पि पटिक्खिपित्वा सस्सतो लोको इदमेव सच्चं मोघमञ्ञन्ति इमिना आकारेन अभिनिविसतीति इदंसच्चाभिनिवेसो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 401; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आणुप्पादनादिनो आकारस्स दस्सनत्थं ...,* विसुद्धि॰ 1.262; – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भगवता धम्मं देसितं आजानामी'तिआदीसु आकारे,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).5; – **रा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *येसं ते येव सद्धादयो आकारा सुन्दरा, ते स्वाकारा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.176; – **रानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इमेसञ्हि चतुन्नम्पि आकारानं अञ्ञतरम्पि करोन्तेन गहितंयेव होति सरणगमनं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.17; – **रेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तथट्ठादीसु द्वादससु आकारेसु विसुं विसुं एकेन सङ्गहो ... एकसङ्गहता,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.39; – **रेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *रूपं अरूपस्स ... एकादसहि आकारेहि पच्चयो होति,* अभि॰ अव॰ 176; *दसहाकारेहि मनसिकारकोसल्लं इच्छितब्ब'न्ति,* विभ॰ अट्ठ॰ 53; **ला. अ. 7**. पक्ष, तथ्य, संघटक अंग, अन्तर्निविष्ट भाग – **रा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ये पञ्ञास आकारा सासने निद्दिट्ठा,* पेटको॰ 193; **क**. ज्ञान-दर्शन के उदय में हेतुभूत बारह तथ्य – **रानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *द्वादसन्नं आकारानं वसेन उप्पन्नञाणसङ्खातं दस्सनं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.327; **ख**. प्रज्ञा, चित्त, स्मृति आदि के प्रभेद – **रेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *यजमानस्स सोळसहाकारेहि चित्तं सन्दस्सेसि,* दी॰ नि॰ 1.123; *'सत्तरसहाकारेहि, महाराज, सति उप्पज्जती'ति,* मि॰ प॰ 86; **ग**. प्रतीत्यसमुत्पाद के बीस आकार या अङ्ग – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *वीसताकारं तिसन्धिं पटिच्चसमुप्पादं सब्बाकारतो जानाति,* विसुद्धि॰ 1.192; *आकारतो ति सरूपतो अवुत्तापि तस्मिं तस्मिं सङ्गहे आकिरीयन्ति अविज्जासङ्खारादिग्गहणेहि पकासीयन्तीति आकारा, अतीतहेतुआदीनं वा पकारा आकारा, ततो आकारतो, विसतिविधा होन्ति अतीतहेतुपञ्चकादिभेदतो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.210; **घ**. शरीर के बत्तीस भाग – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अज्झत्तकेसादिको द्वत्तिंसाकारो कायो वुत्तो,* उदा॰ अट्ठ॰ 153; **ङ**. धातुओं के बयालीस आकार – **रेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *द्वा चत्तालीसाय आकारेहि एवं वित्थारेन धातुयो सभावतो उपलक्खयन्तो ...,* नेत्ति॰ 63; **च**. इन्द्रियों के चौसठ प्रकार – **रेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चतुसट्ठिया आकारेहि ... खये ञाणं,* पटि॰ म॰ 3; *चतुसट्ठिया आकारेहीति अट्ठसु मग्गफलेसु एकेकस्मिं अट्ठन्नं – अट्ठन्नं इन्द्रियानं वसेन चतुसट्ठिया आकारेहि,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.45; **8**. विभाग, खण्ड, अंग, संशोधन, छ प्रकार के व्यञ्जनपदों (अक्खर, पद, व्यञ्जन, आकार, निरुत्ति एवं निद्देस) में एक – *तेसं नो, भन्ते, आयस्मता महाकच्चानेन इमेहि आकारेहि इमेहि पदेहि इमेहि ब्यञ्जनेहि अत्थो विभत्तो'ति,* म॰ नि॰ 1.162; *इमेहि आकारेहीति इमेहि कारणेहि पपञ्चुप्पत्तिया पाटियेक्ककारणेहि चेव वट्टविवट्टकारणेहि च,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).392; – **अकोविद** त्रि॰, कारण एवं अकारण का ज्ञान न रखने वाला – **दो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वत्थुं विपत्तिं आपत्तिं, निदानं आकारकोविदो पुब्बापरं न जानाति,* परि॰ 313; *तत्थ आकारअकोविदोति कारणाकारणे अकोविदो,*

परि॰ अट्ठ॰ 211; – **रत्थ** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आकारार्थ], आकार, स्वरूप या नमूना का अर्थ, 'इस स्वरूप का', 'इस तरह का' अर्थ – **त्थो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो पन एवन्ति च मेति च वुच्चमानो आकारत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 13; – **थेन॰** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ आकारत्थेन एवं सद्देन एतमत्थं दीपेति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.28; – **त्थे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकारत्थे पकारत्थे विभागत्थे तेहि आकारादीहि वज्जिते ... होति,* सद्द॰ 3.804; – **कोविद** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आकारकोविद], कारणों या प्रयोजनों को जानने वाला – *निदानं आकारं कोविदो, पुब्बापरं च न जानाति,* परि॰ 313; पाठा॰ आकारकोविदो – **दस्सन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आकारदर्शन], आकार-प्रकार या स्वरूप का सङ्केत, प्रकार या पद्धति को दिखलाना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदञ्हि उद्दिसनेन ... पेतानं अत्तनो ञातीनं थोमनाकारदस्सनं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 23; – **दस्सनक** त्रि॰, आकार या स्वरूप को दिखलाने वाला, आकार या स्वभाव का संकेतक – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *कामस्सादसंयुत्ताकारदस्सनका अभिनया,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.141; – **नानत्त** नपुं॰, भाव॰ [आकारनानात्व], आकार या स्वरूप की अनेकता या विविधरूपता – **त्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकारनानत्तेन पन वेनेय्यवसेन च उपचयो ... नत्थि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 359; – **त्तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकारनानत्ततो पन वेनेय्यवसेन च "उपचयो सन्तती"ति उद्देसदेसना कता,* विसुद्धि॰ 2.76; *"आकारनानत्ततो"ति जातिरूपस्स पवत्तिआकारभेदतोति अत्थो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.96; – *वुत्तमाकारनानत्ता, वेनेय्यानं वसेन वा,* अभि॰ अव॰ 90; – **निदस्सन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आकारनिदर्शन], आकार या स्वरूप का प्रकाशन, उदाहरण का संकेत – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *एत्थ आकारत्थेन एवं सद्देन दातब्बाकारनिदस्सनं कतं होति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 165; – **निद्देस** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आकारनिर्देश], स्वरूप, आकार-प्रकार अथवा पद्धति का विवेचन – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेनस्साय आकारनिद्देसो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.10; *तस्स नानाकारनिद्देसो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.29; – **निरोध** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आकारनिरोध], जन्म की कारणभूत (इच्छा आदि) मानसिक प्रवृत्तियों का निरोध या समाप्ति – **धा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकारनिरोधा दण्डनिरोधो,* पेटको॰ 239; – **पञ्ञत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आकारप्रज्ञप्ति], आकार-प्रकार का संकेत या संसूचन – **त्ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवन्ति हि अयमाकारपञ्ञत्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.29; – **परिच्छेद** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आकारपरिच्छेद], दशाओं या अवस्थाओं का निश्चायन अथवा परिसीमन, अवस्थाओं का निर्धारण – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इतिपीति इमिना तेसं पण्डितादिआकारपरिच्छेदं दस्सेति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.142; – **परिवितक्क** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आकारपरिवितर्क], कारणों के विषय में अनुचिन्तन, अवस्था या दशा के विषय में सोच-विचार – **क्को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *या तथाभूतस्स खन्ति रुचि पेक्खना आकारपरिवितक्को दिट्ठिनिज्झायना अभिप्पसन्ना,* पेटको॰ 255; – **क्केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मा आकारपरिवितक्केन,* अ॰ नि॰ 1(1).217; *मा आकारपरिविक्केनाति सुन्दरमिदं कारणन्ति एवं कारणपरिवितक्केनपि मा गण्हित्थ,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.176; – **क्का** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञत्र अनुस्सवा अञ्ञत्र आकारपरिवितक्का ...,* म॰ नि॰ 3.21; – **पवत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आकारप्रवृत्ति], अवस्थाओं का प्रकाशन, स॰ प॰ के अन्त॰ – *लक्खणादितो पनेत्थ हिताकारप्पवत्तिलक्खणा मेत्ता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 237; – **पुच्छा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आकारपृच्छा], आकार-प्रकारों या अवस्थाओं के विषय में प्रश्न – **च्छा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकारपुच्छाति गिहिलिङ्गे वा तित्थियलिङ्गे वा पब्बजितलिङ्गे वा,* परि॰ 325; – **भावनिद्देस** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आकारभावनिर्देश], आकार-प्रकारों तथा भावों के विषय में कथन या इनका विवेचन – **सा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मञ्ञना मञ्ञितत्तन्ति आकारभावनिद्देसा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 397; – **वचन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आकारवचन], रूप की अवस्थाओं को कहने वाला शब्द – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पठमं लक्खणवचनं, दुतियं आकारवचनं,* विसुद्धि॰ 1.340; – **विकार** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आकारविकार], रूप या इसकी अवस्थाओं में आने वाला विकार – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकारविकारो कायविञ्ञत्ति,* विसुद्धि॰ 2.75; *चित्तसमुट्ठानाय ... रूपकायं ... भवितुं समत्थो एको आकारविकारो अत्थि, अयं विञ्ञत्ति नाम,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 128; – **सङ्खात** त्रि॰, ब॰ स॰ [आकारसंख्यात], आकार नाम वाला, आकार नाम से प्रसिद्ध – **तेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एतेहि पन वीसतिया आकारसङ्खातेहि अरेहि वीसतिआकारारन्ति वेदितब्बं,* विसुद्धि॰ 2.212; – **सण्ठान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आकारसंस्थान], आकार और इसका ढांचा – **ना** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यस्मा विनापि आकारसण्ठाना आरम्मणस्स ... पाकटं होति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.260; – **समूह** पु॰, [आकारसमूह], अनेक अवस्थाओं या लक्षणों का समूह स॰

प॰ के अन्त॰ – *अथ खो कायानुपस्सी अनिच्चदुक्खानत्तअसुभाकारसमूहानुपस्सीयेवाति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प॰) 1(1).253; – **सम्पत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आकारसम्पत्ति], विशिष्ट प्रकार के लक्षणों या अवस्थाओं की प्राप्ति अथवा स्थिति – **या** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेनस्स अनुब्यञ्जनसम्पत्तिया आकारसम्पत्तिया च अभावं दस्सेति,* उदा॰ अट्ठ॰ 299; – **सहित** त्रि॰, अनेक विशेषताओं से युक्त – **तं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं वा तस्सा आकारसहितं वचनं अनुस्सरन्तो,* उदा॰ अट्ठ॰ 138; – **राभिहित** त्रि॰, आकार या स्वरूप द्वारा अभिव्यक्त – *आकाराभिहितस्स निब्बचनं निरुत्ति,* महानि॰ अट्ठ॰ 3; – **रार** पु॰, [आकारार], आकार रूपी अर या चक्रनाभि – *वीसति आकारारं* विसुद्धि॰ 2.212.

आकारण नपुं॰, स्वरूप, चिह्न, कारण, हल्का फुल्का चिह्न – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकारणेन जानामि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.260; *आकारणेन जानामीति तस्मा इमिना कारणेन जानामि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.261.

आकारवती स्त्री॰, [आकारवती], कारण वाली, सहेतुका, सकारणा – *"नत्थि खो नो, भन्ते, कोचि मनापो सत्था यस्मिं नो आकारवती सद्धा पटिलद्धा"ति,* म॰ नि॰ 2.71; *तत्थ आकारवतीति कारणवती सहेतुका,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.84; *अयं वुच्चति, आकारवती सद्धा दस्सनमूलिका,* म॰ नि॰ 1.402; *आकारवतीति कारणं परियेसित्वा गहितत्ता सकारणा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).282.

आकास[1] पु॰ / नपुं॰ [आकाश, आ +√काश् से व्यु॰, प्रभा से, प्रदीप्त क्षेत्र], **1. क. व्युत्पत्तिपरक अर्थ, 1.** ऐसा क्षेत्र, जिस में न हल चलाया जा सके, न खरोंचा जा सके – *आकासोति नभं, तं हि न कस्सतीति आकासो, कसितुं विलेखितुं न सक्को ति अत्थो,* सद्द॰ 2.442; **2.** वह क्षेत्र, जिसे न जोता जा सके, न तोड़ा जा सके, न काटा जा सके – *न कस्सति न निकस्सति, कसितुं छिन्दितुं भिन्दितुं वा न सक्काति आकासो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.69; **3.** वह, जिसे घात-प्रतिघात रहित होने के कारण खींचा या घसीटा न जा सके – *अप्पटिघट्टनट्ठेन न कस्सतीति आकासो,* विभ॰ अट्ठ॰ 66; **1. ख. परम्परा में प्राप्त शा॰ अ॰, 1.** पु॰, आसमान, आच्छादनरहित अथवा न ढकी हुई खुली जगह, वायु के प्रवाहित होने का पथ, तारापथ, सुरपथ, आदित्यपथ, नभमण्डल, शून्य या खाली क्षेत्र, गगन – *अन्तलिक्खं खमादिच्चपथो'ब्भं गगनाम्बरं वेहासो चानिलपथो आकासो निथियं नभं, देवो वेहायसो तारापथो सुरपथो अघं,* अभि॰ प॰ 45-46; *आकासो अम्बरं अब्भं अन्तलिक्खं अघं नभं वेहासो गगनं देवो खं आदिच्चपथो पि च, तारापथो च नक्खत्तपथो रविपथो पि च, वेहायसं वायुपथो अपथो अनिलञ्जसं,* सद्द॰ 2.442; तुल॰ अमर॰ 1.2.1-3; **1. ग. प्रयोग – सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथापि, राहुल, आकासो न कत्थचि पतिट्ठितो,* म॰ नि॰ 2.94; *यथाहं आकासो व अब्यापज्जमानो ...,* सु॰ नि॰ 1071; – **सं**[1] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकासमेव किर नेसं छदनं अहोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.124; – **सं**[2] पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकासं वा अङ्गुलिया निद्दिसन्तेन ... होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.87; – **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तापसो आकासेन चरितुकामो तं गहेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.85; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'आकासस्स पञ्च अङ्गानि गहेतब्बानी'ति यं वदेसि,* मि॰ प॰ 356; – **सा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मञ्ञमाना गारवजाता आकासा ओरुय्ह पथवियं अट्ठासि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.39; – **तो** उपरिवत् – ... *कत्वा पस्समाना आकासतो ओतरित्वा भूमियं ठत्वाति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.60; – **से / म्हि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नानापुप्फं गहेत्वान, आकासम्हि समोकिरिं,* अप॰ 1.111; **1. घ.** आकाश के तीन प्रभेदों के लिए परिच्छेदा॰, करिणुग्घाटिमा॰ तथा अजटा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰ – *तत्थ तिविधो आकासो परिच्छेदाकासो, कसिणुग्घाटिमाकासो, अजटाकासो,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 189-90; **1. ङ.** आकाश अनन्त है अथवा पर्यवसानरहित है – ... *अनन्तो आकासो'ति आकासानञ्चायतनूपगो,* दी॰ नि॰ 1.30; **1. च.** आकाश अतिविशाल या महान् है – *आकासो महन्तो, सो एकोयेव,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.346-47; **1. छ.** आकाश अस्पृष्ट अथवा स्पर्श न किए जाने योग्य है – *यथा आकासो अफुट्ठाकासो,* अप॰ अट्ठ॰ 1.300; **1. ज.** आकाश समेटा नहीं जा सकता – *संवत्तेय्यपि चे, महाराज, आकासो किलञ्जमिव,* मि॰ प॰ 266; **1. झ.** आकाश अनिदर्शन या रूप-रहित है – *अयञ्हि आकासो अरूपी अनिदस्सनो,* म॰ नि॰ 1.180; **1. ञ.** आकाश एवं निर्वाण, दोनों अकर्मज, अहेतुज एवं असंस्कृत धर्म हैं – *आकासो अकम्मजो अहेतुजो अनुतुजो'ति,* मि॰ प॰ 250; *आकासो असङ्खतो, निब्बानं असङ्खतन्ति ?,* कथा॰ 274; **2.** कुछ विचारकों द्वारा पांचवें महाभूत के रूप में परिकल्पित तत्त्व – *आकासं इन्द्रियानि सङ्कमन्ति,* म॰ नि॰ 2.192; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अजटा॰, कण्णच्छिद्दा॰, कसिणुग्घातिमा॰, जलदा॰, थलजला॰, तुच्छा॰, निस्सटा॰, परिच्छिन्ना॰, परिच्छेदा॰, सम्बुद्धसासना॰, सुनीला॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; **3.** नपुं॰, काल्पनिक खेलपट्टी को मन में रखकर

खेला जाने वाला चौसर या चौपड़ का खेल, केवल मुख से मोहरों को खेलपट्टी पर चलाने की बात कहते हुए खेला जा रहा जुए का खेल – *आकासन्ति अट्ठपददसपदेसु विय आकासेयेव कीळनं,* दी. नि. अट्ठ. 1.78; *आकासेपीति अट्ठपददसपदेसु विय आकासेयेव कीळन्ति,* पारा. अट्ठ. 2.185; *आकासेयेव कीळन्तीति "अयं सारी असुकपदं मया नीता, अयं असुकपद"न्ति, केवलं मुखेनेव वदन्ता आकासेयेव जूतं कीळन्ति,* सारत्थ. टी. 2.330.

आकास² पु., [आकर्ष], इच्छा, लोभ, आसक्ति, (रूप आदि की ओर मन को खींचने वाली) तृष्णा – *आकासं न सितो सिया,* सु. नि. 950; *तण्हा हि रूपादीनं आकासनतो आकासो'ति वुच्चति,* सु. नि. अट्ठ. 2.259.

आकासकथा स्त्री. [आकाशकथा], आकाश-विषयक विवेचन, आकाश के सम्बन्ध में विवाद – *इदानि आकासकथा नाम होति,* प. प. अट्ठ. 189.

आकासकसिण पु./नपुं. [बौ. सं. आकाशकृत्स्न], ध्यान-प्रक्रिया में चित्त को एकाग्र करने हेतु निर्दिष्ट कर्मस्थानों में से एक, चित्त के आलम्बन के रूप में आकाश का एक सीमित अंश या खण्ड, परिच्छिन्न आकाश तथा इसे आलम्बन बनाकर किया जा रहा ध्यान – *यञ्च आकासकसिणं यञ्च विञ्ञाणकसिणं, अयं विपस्सना,* नेत्ति. 74; *आकासकसिणं भावेति,* अ. नि. 1(1).56; *आकासकसिणन्ति परिच्छेदाकासो, तदारम्मणञ्च झानं,* पटि. म. अट्ठ. 1.69; *आकासकसिणन्ति पन कसिणुग्घाटिमाकासम्पि, तं आरम्मणं कत्वा पवत्तक्खन्धापि, भित्तिच्छिद्दादीसु अञ्ञतरस्मिं गहेतब्बनिमित्तपरिच्छेदाकासम्पि, तं आरम्मणं कत्वा उप्पन्नं चतुक्कपञ्चकज्झानम्पि वुच्चति,* ध. स. अट्ठ. 231; – **समापत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [बौ. सं. आकाशकृत्स्नसमापत्ति], आकाश-कसिण को आलम्बन बनाने वाले चतुर्थ ध्यान की प्राप्ति – ... *पकतिया आकासकसिणसमापत्तिया लाभी होति,* पटि. म. 378; *आकासकसिणसमापत्तियाति परिच्छेदाकासकसिणे उप्पादिताय चतुत्थज्झानसमापत्तिया,* पटि. म. अट्ठ. 2.250; स. उ. प. के रूप में परिच्छेदा. के अन्त. द्रष्ट..

आकासगङ्गा स्त्री., [आकाशगङ्गा], **क.** देव-नदी, स्वर्ग से बहने वाली एक नदी, **ख.** हिमालय के अनोतत्त नामक सरोवर से दक्षिण की ओर बहने वाली नदी, **ग.** आकाश में बहते हुए पुनः पृथ्वी पर उतर कर बहने वाली गङ्गा नदी – *मन्दाकिनी तथाकासगङ्गा सुरनदीप्पथ,* अभि. प. 27; *आकासेन सट्ठि योजनानि गतट्ठाने "आकासगङ्गा"ति वुच्चति,* सु. नि. अट्ठ. 2.146; – **य** ष. वि., ए. व. – *सततितिन्तके ति धुवतिन्तके ... सट्ठियोजनिकाय आकासगङ्गाय पतितट्ठाने* ..., म. वं. टी. 476(ना.); – **ङ्गतो** प. वि., ए. व. – *आकासगङ्गतो भस्समानं उदकं विय निरन्तरं कथं पवत्तेति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).151; – **ङ्गं** द्वि. वि., ए. व. – *तदा हि भगवा आकासगङ्गं ओतारेन्तो विय पथवोजं आकड्ढन्तो विय* ..., दी. नि. अट्ठ. 3.141; – **गतिसोभा** स्त्री., तत्पु. स. [आकाशगङ्गागतिशोभा], आकाश से उतर रही गङ्गा के प्रवाह की शोभा – **भं** द्वि. वि., ए. व. – ... *आकासगङ्गागतिसोभं अभिभवमाना* ..., म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.158; – **पतितट्ठान** नपुं., [आकाशगङ्गापतनस्थान], गङ्गा नदी के आकाश से धरती पर गिरने का स्थान – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *आकासगङ्गापतितट्ठाने सततितिन्तके,* म. वं. 29.5; *अनोतत्तदहतो निक्खन्ताय सट्ठियोजनिकाय आकासगङ्गाय पतितट्ठाने,* म. वं. टी. 476(ना.); **2.** स्त्री., व्य. सं., श्रीलङ्का के राजा पराक्रमबाहु (प्रथम) द्वारा बारहवीं सदी में बनवाई गई एक नहर या मातिका – *आकासगङ्गानामाय मातिकाय महन्तिया,* चू. वं. 79.25.

आकासगत 1. त्रि., [आकाशगत], आकाश की ओर गया हुआ, आकाश में स्थित, अत्यधिक फैला हुआ या खुला हुआ – **तं¹** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आकासट्ठं नाम भण्डं आकासगतं होति,* पारा. 55; – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *आकासट्ठा आकासगता,* अप. अट्ठ. 1.112; – **तं²** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *हत्थेन पन गहेत्वा अन्तोवत्थुस्मिम्पि आकासगतं करोन्तस्स पाराजिकमेव,* पारा. अट्ठ. 1.259; – **ते** पु., द्वि. वि., ब. व. – *चत्तारो पादे आकासगते कत्वा* ..., म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).36; – **तेसु** सप्त. वि., ब. व. – *चतूसु पादेसु आकासगतेसु गमनं पच्छिज्जति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).37; – **विञ्ञाण** नपुं., कर्म. स. [आकाशगतविज्ञान], आकाश की अनन्तता को अपना आलम्बन बनाने वाला अरूपध्यान का चित्त – *आकासगतविञ्ञाणं, दुतियारुप्पचक्खुना,* अभि. अव. 1017; **2.** नपुं., आकाश, आकाश या अन्तरिक्ष में अन्तर्भूत कोई भी तत्त्व – *यो आकासो आकासगतं अघं अघगतं,* ध. स. 637; *आकासोव आकासगतं, खेळगतादि विय, आकासोति वा गतन्ति 'आकासगतं',* ध. स. अट्ठ. 358.

आकासगति स्त्री., [आकाशगति], आकाश में गमन, आसमान में उड़ान – **तिं** द्वि. वि., ए. व. – *जहिंसु आकासगतिं विहङ्गमा,* दाठा. 1.45(रो.).

आकासगब्भ पु., तत्पु. स. [आकाशगर्भ], आकाश के भीतर, आकाशमार्ग – **ब्भे** सप्त. वि., ए. व. – *आकासधातुया आकासगब्भे गच्छं गच्छन्तो* ..., अप. अट्ठ. 1.240.

आकासगमन नपुं., तत्पु. स. [आकाशगमन], 1. आकाश में चलना, आकाश में उड़ान भरना – *पक्खिनो आकासगमनं विजहिंसु,* उदा. अट्ठ. 119; 2. हाथी को मरवाने की एक चाल – *तस्स आकासगमनं नाम कारणं करोही'ति,* मि. प. 192.

आकासगामी त्रि., [आकाशगामिन्], आकाश में गमन करने वाला, अन्तरिक्ष में विचरने वाला – **नं** पुं., ष. वि., ब. व. – *अघगामिनन्ति आकासगामीनं,* स. नि. अट्ठ. 1.114.

आकासगोत्त पु., 1. राजगृह का एक चिकित्सक – **त्तो** प्र. वि., ए. व. – *अद्दसा खो आकासगोत्तो वेज्जो भगवन्तं दूरतोव आगच्छन्तं,* महाव. 292; 2. त्रि., आकाश गोत्र वाले एक ब्राह्मण का गोत्र-नाम – *"सञ्जयो, महाराज, ब्राह्मणो आकासगोत्तो"ति,* म. नि. 2.335.

आकासङ्गण नपुं., तत्पु. स. [आकाशाङ्गण], खुला आंगन, खुली जगह – **णे** सप्त. वि., ए. व. – *यत्थ उपरिच्छदनं परिक्खेपो वा नत्थि, तादिसे आकासङ्गणे,* उदा. अट्ठ. 198.

आकासचर त्रि., [आकाशचर], आसमान में चलने वाला, आसमान में विचरने वाला – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *चक्करतनं पुरक्खत्वा आकासचरो,* बु. वं. अट्ठ. 235.

आकासचारिक त्रि., आकाश या अन्तरिक्ष में गमन करने में सक्षम – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *एको आकासचारिको तापसो,* जा. अट्ठ. 1.329; – **देव** पु., आकाश में गमन करने में सक्षम देवता – **वा** प्र. वि., ब. व. – *वलाहकनामके देवकाये उप्पन्ना आकासचारिकदेवा,* स. नि. अट्ठ. 2.315.

आकासचारी त्रि., [आकाशचारिन्], उपरिवत् – **री** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *निब्बत्ति आकासचारी सीघजवो उपरि कूटागारसण्ठानो,* वि. व. अट्ठ. 6; – **रिनो** ब. व. – *आकासचारिनो मयन्ति,* जा. अट्ठ. 5.370; – **नी** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *जातदिवसेयेव ... आकासचारिनी करेणुका* ..., जा. अट्ठ. 7.234.

आकासचेतिय नपुं., तत्पु. स. [आकाशचैत्य], पवर्त-शिखर या बहुत ऊंचाई पर बना हुआ चैत्य – *पब्बतसिखरे कतचेतियं "आकासचेतिय"न्ति वुत्तं,* विसुद्धि. महाटी. 1. 157; *आकासे नगमुद्धनि कतं चेतियं आकासचेतियं,* म. वं. टी. 393(रो.); – **यङ्गण** पु., तत्पु. स. [आकाशचैत्याङ्गण], ऊंचे पर्वत शिखर पर स्थित चैत्य का आंगन – **णो** प्र. वि., ए. व. – *तस्स आकासचेतियस्स अङ्गणो बालुकपरिच्छेदो आकासचेतियङ्गणो* ..., म. वं. टी. 393 (रो.); – **णे** सप्त. वि., ए. व. – *आकासचेतियङ्गणे सुखेन आरोहनत्थाय,* तदे..

आकासच्छदन त्रि., ब. स. [आकाशाच्छादनक], केवल आकाश के आच्छादन वाला, पूरी तरह से खुला हुआ, ऐसा आवास, जिसकी छत केवल आकाश है – **नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आकासं छदनमस्साति आकासच्छदनं,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.203; *घटिकारस्स कुम्भकारस्स आवेसनं सब्बं तेमासं आकासच्छदनं अट्ठासि, न देवोतिवस्सी'ति,* मि. प. 210.

आकासज्झासय त्रि., ब. स. [आकाशाध्याशय], आकाश की आवश्यकता को अनुभव करने वाला, आकाश की इच्छा रखने वाला – **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *एवमेव घानम्पि आकासज्झासयं वातूपनिस्सयगन्धगोचरं,* ध. स. अट्ठ. 348.

आकासट्ठ त्रि., [आकाशस्थ], आकाश या दिव्य लोकों में स्थित, आकाश या अन्तरिक्ष से जुड़ा हुआ, ऊपर की ओर स्थित – **ट्ठा** पु., प्र. वि., ब. व. – *आकासट्ठाति आकासे विमानादीसु ठिता,* बु. वं. अट्ठ. 50; – **ट्ठं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आकासट्ठं नाम भण्डं आकासगतं होति,* पारा. 55; – **ट्ठा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *एसा पन, महाराज, पपटिका न भूमट्ठा न आकासट्ठा,* मि. प. 176; – **ट्ठानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *पथविगतानि च ते रतनानि आकासट्ठानि च सयमेव उपगच्छिस्सन्ति,* मि. प. 265 – **क** त्रि., उपरिवत् – **ट्ठका** पु., प्र. वि., ब. व. – *तेसं हत्थतो आकासट्ठका देवा गहेत्वा साधुकीळितं कीळिंसु,* स. नि. अट्ठ. 1.249; *आकासट्ठकभूमट्ठकरतनानि सकतेजोभासितानि अहेसुं,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.136.

आकासकट्ठदेवता / आकासट्ठदेवता स्त्री., कर्म. स. [आकाशस्थदेवता], स्वर्ग में रहने वाला देवता, दिव्य लोकों में स्थित दैवी प्राणी – **ता**[1] प्र. वि., ए. व. – *बोधिसत्तो आकासट्ठदेवता अहोसि,* जा. अट्ठ. 1.476; – **ता**[2] प्र. वि., ब. व. – *तासं देवतानं आकासट्ठदेवता मित्ता होन्ति,* खु. पा. अट्ठ. 96; ... *पथविट्ठकनागा च आकासट्ठकदेवता च,* अ. नि. अट्ठ. 2.33; – **नं** ष. वि., ब. व. – *आकासट्ठकदेवतानं ताव मनुस्सगन्धो योजनसते ठितानं आबाधं करोति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).309.

आकासट्ठकविमान नपुं., कर्म. स. [आकाशस्थविमान], आकाश में स्थित प्रासाद या भवन, दिव्य भवन या आवास, दैवी वाहन – **नं** द्वि. वि., ए. व. – ... *बीरणिया देवधीताय*

आकासट्ठकविमानं दिस्वा, जा॰ अट्ठ॰ 6.139; – **ना** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आकासट्ठकविमाना इमेति वदति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.149; – **नानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इदानि पन आकासट्ठकविमानानि पस्सन्तेन ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.149.

आकासतल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आकाशतल], किसी भव्य भवन या महल की सबसे ऊपरी छत, किसी भी भवन की चपटी छत – **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकासतलं आगन्त्वा महाद्वाराभिमुखोव अहोसि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.275; – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राजमहेसी गरुभाय आकासतले रञ्ञा ... निसिन्ना होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.230; *सूरियो ... उट्ठाय आकासतले ठितं चन्दं उल्लोकेत्वा ... गतो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.275.

आकासति आ +√कास का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आकाशते], चमकता है, उज्ज्वल या सुन्दर दिखाई देता है, प्रकाशित होता है, प्रदीप्त होता है – *'आकासती'ति 'आकस्सती'ति च दुविधो पाठो,* महानि॰ अट्ठ॰ 353; – **न्तं**[1] **/ मानं** वर्त॰ कृ॰, परस्मै॰/आत्मने॰ – *ब्रहा वाळमिगाकिण्णं आकासन्तंव दिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.106; *आकासन्तन्ति आकासमानं, पकासमानन्ति अत्थो,* तदे॰; – **न्तं**[2] आकास+अन्त के योग से व्यु॰ [आकाशान्त], आकाश का छोर – *आकासन्तंवाति एतं वनं आकासस्स अन्तो विय हुत्वा दिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.106.

आकासत्त नपुं॰, भाव॰ [आकाशत्व], खालीपन, रिक्तता, अभाव – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकासत्तं, अभावत्तन्ति उपचरितभेद सामञ्ञं,* मो॰ व्या॰ 4.59.

आकासधातु स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [आकाशधातु], **1.** धर्मों के बहुविध विभाजन में छ धातुओं में से एक धातु के रूप में स्वीकृत आकाश-तत्त्व, रूप नामक धर्म का परिच्छेदक-तत्त्व – *"छ धातुयो – पथवीधातु, आपोधातु, तेजोधातु, वायोधातु, आकासधातु, विञ्ञाणधातु",* दी॰ नि॰ 3.196; *आकासधातूति असम्फुट्ठधातु,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.156; – *लक्खणादितो पन रूपपरिच्छेदलक्खणा आकासधातु,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 358; *आकासधातु परिच्छेदरूपं नाम,* अभि॰ ध॰ स॰ 42; *न कस्सतीति अकासो, अकासोयेव आकासो, निज्जीवट्ठेन धातु चाति आकासधातु,* अभि॰ वि॰ टी॰ 177; *चक्खायतनं ... आकासधातु ... पञ्चवीसति रूपकोट्ठासाति न जानाति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.351; **या** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकासधातुया असम्फुट्ठलक्खणं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.87; **2.** आकाश, अन्तरिक्ष, आसमान – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गच्छं आकासधातुयाति आकासेन गच्छन्तो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.17; – **निद्देस** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आकाशधातुनिर्देश], आकाशधातु के विषय में व्याख्यान – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकासधातुनिद्देसे न कस्सति, न निकस्सति, कसितुं वा छिन्दितुं वा भिन्दितुं वा न सक्काति आकासो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 358; – **निस्सित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आकाशधातुनिःश्रित], आकाश-धातु पर आधारित सम्पूर्ण उपादारूप – *आकासधातुं न अत्ततो उपगच्छि न च आकासधातुनिस्सितं अत्तानं,* म॰ नि॰ 3.80; *आकासधातुनिस्सितपदे पन अविनिब्भोगवसेन सब्बम्पि भूतुपादारूपं आकासधातुनिस्सितं नाम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.64-65.

आकासन नपुं॰, आ +√कस से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आकर्षण], अपनी ओर खींच कर ले आना – *तण्हा हि रूपादीनं आकासनतो आकासो'ति वुच्चति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.259.

आकासनभगत त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आकाशनभगत], आसमान में चल रहा, आकाश में उड़ रहा, आकाश-नामक नभमण्डल में जा रहा – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दिसोदिसं ओकिरन्ति, आकासनभगता मरू* बु॰ वं॰ 2.50; *आकासनभगताति आकाससङ्खाते नभसि गता,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 102.

आकासनिमित्त नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आकाशनिमित्त], आकाश का चिह्न या आलम्बन – **गोचर** त्रि॰, ब॰ स॰, आकाश को अपना आलम्बन बनाने वाला (प्रथम अरूपध्यान का चित्त) – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... आकासनिमित्तगोचरे विञ्ञाणे चित्तं उपसंहरतो,* विसुद्धि॰ 1.315; *आकासनिमित्तं गोचरो एतस्साति आकासनिमित्तगोचरं, तस्मिं आकासनिमित्तगोचरे पठमारुप्पविञ्ञाणे,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.366.

आकासनिस्सित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आकाशनिःश्रित], आकाश पर आश्रित, आकाश के सहारे विद्यमान – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ये आकासनिस्सिता पाणा ते नं खादेय्युं,* स॰ नि॰ 1(2).88; *आकासनिस्सिताति डंसमकसकाककुललादयो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.97.

आकासन्त पु॰, तत्पु॰ स॰ [आकाशान्त], आकाश का छोर, आकाश का एक शिरा, संसार का अन्तिम छोर – **न्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ब्रहा वाळमिगाकिण्णं, आकासन्तंव दिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.106; *आकासन्तंवाति एतं वनं आकासस्स अन्तो विय हुत्वा दिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.106.

आकासपदुम नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आकाशपद्म], एक पुष्पयुक्त पौधा – **मा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ओगताकासपदुमा, महिया पुप्फमुग्गतं,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 175.

आकासफुट त्रि., तत्पु. स. [आकाशस्पृष्ट], **शा. अ.**, आकाश को स्पर्श कर रहा, आसमान को छू चुका, **ला. अ.**, आकाश को अपना आलम्बन बना चुका – **टे** नपुं. सप्त. वि., ए. व. – *आकासफुटे विञ्ञाणे विञ्ञाणञ्चायतनचित्तं अप्पेति*, विसुद्धि. 1.321; *आकासफुटे विञ्ञाणेति कसिणुग्घाटिमाकासं फरित्वा पवत्ते पठमारूप्पविञ्ञाणे आरम्मणभूते* ..., विसुद्धि. महाटी. 1.376.

आकासभूत त्रि., [आकाशभूत], आकाश के समान अनाच्छादित, आसमान की भांति खुला हुआ, बाधा-रहित, बे-रोक-टोक – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *आकासभूता तेपज्ज, धुवं बुद्धो भविस्ससि*, बु. वं. 2.105; *आकासभूताति ते कुट्टकवाटपब्बता आवरणं तिरोकरणं कातुं असक्कोन्ता, अजटाकासभूताति अत्थो*, बु. वं. अट्ठ. 116.

आकासमण्डल नपुं., [आकाशमण्डल], **शा. अ.**, नभमण्डल, आकाश का घेरा, **ला. अ.**, आकाश को आलम्बन बनाकर किए जा रहे आकाशकसिण-ध्यान में देखा गया आकाशमण्डल – **लं** प्र. वि., ए. व. – *पटिभागनिमित्तमाकासमण्डलमेव हुत्वा उपट्ठाति, वड्ढियमानञ्च वड्ढति*, विसुद्धि. 1.167.

आकासवासी त्रि., [आकाशवासिन्], आकाश में बसने वाला, अन्तरिक्ष में रहने वाला – **सिनो** पु., प्र. वि., ब. व. – *ओसधीतिणवासी च, ये च आकासवासिनो*, अप. 2.98.

आकासविञ्ञाण नपुं., कर्म. स. [आकाशविज्ञान], आकाश-विषयक चित्त, आकाश को आलम्बन बनाने वाला अरूपध्यान का चित्त – **णं** द्वि. वि., ए. व. – *तं पनाकासविञ्ञाणं, अकत्वा मनसा पुन*, अभि. अव. 1011.

आकाससदिस त्रि., [आकाशसदृक्], आकाश जैसा (विस्तृत, अनाच्छादित या अलिप्त) – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *यससा वित्थतो वीरो, आकाससदिसो, मुनि*, अप. 2.160; **सेन** तृ वि., ए. व. – *आकाससमेनाति अलग्गनट्ठेन चेव अपलिबुद्धट्ठेन च आकाससदिसेन*, अ. नि. अट्ठ. 3.104.

आकाससन्निस्सय पु., तत्पु. स. [आकाशसन्निःश्रय], आकाश का स्पष्ट आधार, – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *तत्थ'आकाससन्निस्सित'न्ति आकाससन्निस्सयं लद्धाव उप्पज्जति* ..., ध. स. अट्ठ. 318.

आकाससन्निस्सित त्रि., [आकाशसन्निःश्रित], आकाश पर आधारित, आकाश पर आश्रित (स्रोत-विज्ञान) – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *एवमेव सोतं तम्पे बिलज्झासयं आकाससन्निस्सितं कण्णच्छिद्दकूपकेयेव अज्झासयं करोति*, ध. स. अट्ठ. 348; ..., *आकाससन्निस्सितं, मनसिकारहेतुकं चतूहि पच्चयेहि उप्पज्जति सोतविञ्ञाणं*, ध. स. अट्ठ. 318.

आकाससम त्रि., [आकाशसम], आकाश के समान (अलिप्त, व्यापक, अप्रतिबाधित) – **मं**, नपुं., प्र. वि., ए. व. – *तदाकाससमं चित्तं, अज्झत्तं सुसमाहितं*, थेरगा. 1159; – **मेन** तृ. वि., ए. व. – *आकाससमेनाति अलग्गनट्ठेन चेव अपलिबुद्धट्ठेन च आकाससदिसेन*, अ. नि. अट्ठ. 3.104; ... *"तदारम्मणञ्च सब्बावन्तं लोकं आकाससमेन चेतसा विपुलेन ... अब्याबज्झेन फरित्वा विहरिस्सामा"ति*, म. नि. 1.180; – **चित्त** त्रि., ब. स. [आकाशसमचित्त], आकाश के समान स्वच्छ एवं निर्मल मन वाला – **स्स** पु. ष. वि., ए. व. – *आकाससमचित्तस्स, निप्पपञ्चस्स झायिनो*, अप. 1.250; – **मानस** त्रि., ब. स., आकाश के समान (स्वच्छ एवं आलम्बन-रहित) चित्त वाला – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *निप्पपञ्चो निरालम्बो, आकाससममानसो*, अप. 2.16.

आकाससुत्त नपुं., स. नि. के अनेक सुत्तों का शीर्षक, स. नि. 2(2).214; 215; 3(1).60.

आकासातिक्कम पु., तत्पु. स. [आकाशातिक्रम], (आलम्बन रूप में) आकाश का अतिक्रमण, आकाश को पार कर जाना – **तो** प. वि., ए. व. – *एतासु हि* ..., *आकासातिक्कमतो दुतिया*, ध. स. अट्ठ. 253.

आकासानञ्च नपुं., आकास + अनन्त + य, अथवा आकास + आनञ्च के योग से व्यु. [आकासानन्त्य], आकाश की अनन्तता, अन्तरहित या सीमारहित आकाश – **ञ्चं** प्र. वि., ए. व. – *आकासानन्तोयेव आकासानञ्चं*, पटि. म. अट्ठ. 1.78; *आकासं अनन्तं आकासानन्तं, आकासानन्तमेव आकासानञ्चं*, ध. स. अट्ठ. 248; *आकासञ्च तं अनन्तञ्चाति आकासानन्तं* ... *आकासानन्तमेव आकासानञ्चं, सकत्थे भावपच्चयवसेन*, अभि. वि. टी. 93.

आकासानञ्चायतन नपुं., तत्पु. स., आकास + आनञ्च + आयतन के योग से व्यु. [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतन], 1. आकाश की अनन्तता का वह क्षेत्र, जो चार अरूप ध्यानों में प्रथम अरूप ध्यान वाले चित्त का आलम्बन रहता है, 2. अरूप ब्रह्मलोकों में प्रथम का नाम, क्योंकि इसमें निवास करने वाले प्राणियों को आकाश की अनन्तता का बोध हो जाता है अथवा वे प्रथम अरूप ध्यान को भावित किए हुए होते हैं, 3. नौ अनुपुब्बविहारों / समापत्तियों के बीच पांचवां अनुपुब्बविहार तथा विविध विमोक्षों में से एक – **नं** प्र. वि., ए. व. – *आकासानञ्चायतनं ... अनन्तं, आकासं अनन्तं*

आकासानन्तं आकासानन्तमेव आकासानञ्चं, तं आकासानञ्चं अधिट्ठानट्ठेन आयतनमस्स ससम्पयुत्तधम्मस्स झानस्स देवानं देवायतनमिवाति आकासानञ्चायतनं, विसुद्धि॰ 1.321; *अयं आकासानञ्चायतनकम्मट्ठाने वित्थारकथा,* विसुद्धि॰ 1.321; **4**. आकाश की अनन्तता का क्षेत्र (आकिञ्चञ्ञायतन) अरूपध्यान भी है और अरूपध्यान की भावना करने वाले चित्त का आलम्बन भी – *आकासानञ्चायतनं समतिक्कम्माति पुब्बे वुत्तनयेन झानम्पि आकासानञ्चायतनं आरम्मणम्पि ...,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.143; *सब्बसो रूपसञ्ञानं समतिक्कमा ... नानत्तसञ्ञानं अमनसिकारा 'अनन्तो आकासो'ति, आकासानञ्चायतनं उपसम्पज्ज विहरति,* दी॰ नि॰ 1.163-64; **5**. आकाशानन्त्यायतन-ध्यान को प्राप्त योगी के चित्त में समस्त रूप संज्ञाएं निरुद्ध हो जाती हैं – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकासानञ्चायतनं समापन्नस्स रूपसञ्ञा निरुद्धा होति,* अ॰ नि॰ 3(1).218; **6**. क्या आकासानञ्चायतन असंस्कृत धर्म है ? – *आकासानञ्चायतनं असङ्खतं,* कथा॰ 271; *आकासानञ्चायतनं ... कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च,* अभि॰ अव॰ 104; **7**. आकाशानन्त्यायन के सम्बन्ध में अनेक मिथ्यादृष्टियां हैं – *आकासानञ्चायतनं समापन्नस्स सतो रूपसहगता सञ्ञामनसिकारा विसेसाय संवत्तन्तीति न युज्जति देसना,* नेत्ति॰ 24; *आकासानञ्चायतनं आकासानञ्चायतनतो सञ्जानाति, ... सञ्ञत्वा ... मञ्ञति, ... अपरिञ्ञातं तस्सा'ति वदामि,* म॰ नि॰ 1.3; – **कम्मट्ठान** नपुं॰, विसुद्धि॰ के एक खण्ड-विशेष का शीर्षक, विसुद्धि॰ 1.316-321; – **किरियचित्त** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आकाशानन्त्यायतनक्रियाचित्त], आकाश की अनन्तता को आलम्बन बनाने वाला अरूपभूमि का क्रियाचित्त – *आकासानञ्चायतनकिरियचित्तं, ..., इमानि चत्तारिपि अरूपावचरकिरियचित्तानि नाम,* अभि॰ ध॰ स॰ 5; – **कुसलचित्त** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आकाशानन्त्यायतनकुशलचित्त], आकाश की अनन्तता को आलम्बन बनाने वाले अरूप भूमि के चार कुशलचित्तों में प्रथम चित्त – *आकासानञ्चायतनकुसलचित्तं, ... इमानि चत्तारिपि अरूपावचरकुसलचित्तानि नाम,* अभि॰ ध॰ स॰ 5; *अथ वा आकासानञ्चं आयतनं अस्साति आकासानञ्चायतनं, झानं तेन सम्पयुत्तं कुसलचित्तं आकासानञ्चायतनकुसलचित्तं,* अभि॰ ध॰ वि॰ टी॰ 93; – **कुसलवेदना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आकाशानन्त्यायतनकुशलवेदना], आकाश की अनन्तता को आलम्बन बनाने वाले अरूपध्यान के प्रथम चित्त में उदित कुशल वेदना – *आकासानञ्चायतनकुसलवेदना सुखुमा आकासानञ्चायतनकुसलवेदना ओळारिका ...,* विभ॰ अट्ठ॰ 16; – **खन्ध** पु॰, [बौ॰ सं॰ आकाशानन्त्यायतनस्कन्ध], स्कन्ध या राशि के रूप में आकाशानन्त्य-नामक प्रथम अरूपध्यान अथवा इस ध्यान वाला चित्त – **न्धे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकासानञ्चायतनखन्धे विपस्सन्तस्स विपस्सनुपेक्खा आरम्मणवसेन आकासानञ्चायतननिस्सिता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप.प.) 3.198; – **चित्त** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आकाशानन्त्यायतनचित्त], अरूपध्यान का वह चित्त, जो आकाश की अनन्तता को अपना आलम्बन बनाता है – *तस्सेवं ... पथवीकसिणादीसु रूपावचरचित्तं विय आकासे आकासानञ्चायतनचित्तं अप्पेति,* विसुद्धि॰ 1.317; – **ज्झान** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आकाशानन्त्यायतनध्यान], वह अरूपध्यान, जिसमें आकाश की अनन्तता पर चित्त को एकाग्र किया जाता है – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वुत्तप्पकारेन हि आकासानञ्चायतनज्झानेन सम्पयुत्तं पठमं विञ्ञाणञ्चायतनादीहि दुतियततियचतुत्थानि,* विसुद्धि॰ 2.80; – **धातु** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आकाशानन्त्यायतनधातु], ध्यान के आलम्बन के रूप में अनन्त आकाश (नामक तत्त्व) – ..., *आकासानञ्चायतनधातु, ... सत्त धातुयो'ति, आकासानञ्चायतनमेव आकासानञ्चायतनधातु,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.118; – **निस्सित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आकाशानन्त्यायतननिःश्रित], आकाशानन्त्य-नामक ध्यान अथवा इस ध्यान के आलम्बन पर आश्रित – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपेक्खा नानत्ता नानत्तसिता, ..., उपेक्खा एकत्ता एकत्तसिता, उपेक्खा ... आकासानञ्चायतननिस्सिता,* म॰ नि॰ 3.268; *यस्मा पन द्वे वा तीणि वा आकासानञ्चायतनानि वा विञ्ञाणञ्चायतनादीनि वा नत्थि, तस्मा एकत्तं एकत्तसितं विभजन्तो अत्थि, भिक्खवे, उपेक्खा आकासानञ्चायतननिस्सितातिआदिमाह,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप.प.) 3.198; – **भव** पु॰, कर्म॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आकाशानन्त्यायतनभव], आकाशानन्त्यायतन-ध्यान-चित्त के विपाक के रूप में प्राप्त इसी नाम वाला भव (जन्म, अस्तित्व) – *आकासानञ्चायतनूपगोतिआदीसु पन आकासानञ्चायतनभवं उपगतोति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.103; – **भूमि** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आकाशानन्त्यायतनभूमि], अरूपावचर-भूमि का एक प्रभेद, अरूपध्यान की भावना कर रहे चित्त की वह अवस्था, जिसमें आकाश की अनन्तता पर चित्त को एकाग्र किया जाता है – *आकासानञ्चायतनभूमि*

विञ्ञाणञ्चायतनभूमि ... चेति अरूपभूमि चतुब्बिधा होति, अभि. ध. स. 32; – **विपाकचित्त** नपुं., तत्पु. स. [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनविपाकचित्त], वह चित्त, जो आकाश की अनन्तता को अपना आलम्बन बनाकर की गई ध्यानभावना के विपाक के रूप में उदित होता है, अरूपभूमि के चार प्रकार के विपाकचित्तों में प्रथम – *आकासानञ्चायतनविपाकचित्तं, ... इमानि चत्तारिपि अरूपावचरविपाकचित्तानि नाम,* अभि. ध. स. 5; – **सञ्ञा** स्त्री., तत्पु. स. [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनसंज्ञा], आकाश की अनन्तता पर ध्यान करते हुए प्राप्त होने वाला संज्ञा-ज्ञान – **ञ्ञं** द्वि. वि., ए. व. – ... *पथवीसञ्ञं, आकासानञ्चायतनसञ्ञं पटिच्च मनसि करोति एकत्तं, तस्स आकासानञ्चायतनसञ्ञाय चित्तं पक्खन्दति पसीदति सन्तिट्ठति अधिमुच्चति,* म. नि. 3.149; – **य** तृ. वि., ए. व. – *आकासानञ्चायतनसञ्ञाय पथवीसञ्ञं ...,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.112; – **सञ्ञी** त्रि., [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनसंज्ञिन्], आकाश की अनन्तता के विषय में संज्ञा-ज्ञान को प्राप्त कर चुका – **ञ्ञी** पु., प्र. वि., ए. व. – *तथारूपो समाधिपटिलाभो यथा ... न आकासानञ्चायतने आकासानञ्चायतनसञ्ञी अस्स,* अ. नि. 3(2).6; – **समापत्ताधिमुत्त** त्रि., तत्पु. स. [आकाशानन्त्यायतनसमापत्त्यधिमुक्त], आकाशानन्त्यायतन नामक अरूप ध्यान की प्राप्ति के निमित्त स्वयं को पूरी तरह से लगाया हुआ – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *चतुत्थज्झानाधिमुत्तोआकासानञ्चायतनसमापत्ताधिमुत्तो ... धिमुत्तं,* चूळनि. 154; – **समापत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनसमापत्ति], **1.** प्रथम अरूपध्यान की प्राप्ति, आकाश की अनन्तता पर चित्त की समता एवं एकाग्रता की प्राप्ति – *अयम्पि खो आकासानञ्चायतनसमापत्ति अभिसङ्खता अभिसञ्चेतयिता,* म. नि. 2.15; *आकासानञ्चायतनमेव समापत्ति आकासानञ्चायतनसमापत्ति,* पटि. म. अट्ठ. 1.78; **2.** नौ प्रकार की समाधि-चर्याओं अथवा ध्यानाभ्यासों में आठवीं – *नवहि समाधिचरियाहीति ... आकासानञ्चायतनसमापत्ति ... समाधिचरिया,* पटि. म. 91; – **समापत्तिपटिलाभत्थ** पु., तत्पु. स. [आकाशानन्त्यायतनप्रतिलाभार्थ], आकाशानन्त्यायतन नामक अरूपध्यान की प्राप्ति का प्रयोजन – **त्थाय** च. वि., ए. व. – *सो ... अनङ्गणे ... आकासानञ्चायतनसमापत्तिपटिलाभत्थाय चित्तं अभिनीहरति अभिनिन्नामेति आरुप्पमग्गसङ्गीति,* महानि. 204; – **समापत्तिविमोक्ख** पु., तत्पु. स. [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनसमापत्तिविमोक्ष], आकाशानन्त्यायतन नामक अरूप ध्यान की प्राप्ति से मिलने वाला विमोक्ष – *अयं आकासानञ्चायतनसमापत्तिविमोक्खो,* पटि. म. 225; – **सहगत** त्रि., तत्पु. स. [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनसहगत], आकाशानन्त्यायतन नामक अरूपध्यान से युक्त या परिपूर्ण – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – ... *आकासानञ्चायतनसहगता सञ्ञामनसिकारा समुदाचरन्ति,* अ. नि. 3(1).248; – **सुखुमसच्चसञ्ञी** त्रि., [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनसूक्ष्मसत्यसंज्ञिन्], आकाशानन्त्यायतन नामक अरूपध्यान में सूक्ष्म सत्य का संज्ञा-ज्ञान प्राप्त किया हुआ – **ञ्ञी** पु., प्र. वि., ए. व. – *आकासानञ्चायतनसुखुमसच्चसञ्ञीयेव तस्मिं समये होति,* दी. नि. 1.164.

आकासानञ्चायतनूपग त्रि., [बौ. सं. आकाशानन्त्यायतनोपग], आकाशानन्त्यायतन नामक प्रथम अरूपध्यान के विपाक के बल से अरूपी ब्रह्मलोक में उत्पन्न (देव) – **गो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अञ्ञो अत्ता ... "अनन्तो आकासो"ति आकासानञ्चायतनूपगो,* दी. नि. 1.30; *आकासानञ्चायतनूपगोतिआदीसु पन आकासानञ्चायतनभवं उपगतोति, एवमत्थो वेदितब्बो,* दी. नि. अट्ठ. 1.103; – **गं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अत्थि आकासानञ्चायतनूपगं कम्मन्ति? आमन्ता,* कथा. 272; – **गा** पु., प्र. वि., ब. व. – *आकासानञ्चायतनूपगा देवा दीघायुका चिरट्ठितिका सुखबहुला'ति,* म. नि. 3.146; *अत्थि आकासानञ्चायतनूपगा सत्ताति,* कथा. 272; *आकासानञ्चायतनं उपगच्छन्तीति आकासानञ्चायतनूपगा,* अभि. ध. वि. टी. 153; – **गे** पु. द्वि. वि., ब. व. – *हेट्ठतो आकासानञ्चायतनूपगे देवे परियन्तं करित्वा उपरितो नेवसञ्ञानासञ्ञायतनूपगे देवे अन्तोकरित्वा यं एतस्मिं ...,* पटि. म. 77; *आकासानञ्चायतनूपगेति आकासानञ्चायतनसङ्खातं भवं उपगते,* पटि. म. अट्ठ. 1.245; – **गानं** पु. ष. वि., ब. व. – ... *आकासानञ्चायतनूपगानं देवानं सहब्यतं उपपज्जति,* अ. नि. 1(1).301; *आकासानञ्चायतनूपगानं, भिक्खवे, देवानं वीसतिं कप्पसहस्सानि आयुप्पमाणं,* अ. नि. 1(1).301.

आकासानन्त पु./नपुं., कर्म. स. [अनन्ताकाश], अनन्त आकाश, आकाश के तीन प्रभेदों में कसिणुग्घाटिमाकाश

नामक प्रभेद, दस कसिणों में से एक – *आकासञ्च तं अनन्तञ्चाति आकासानन्तं, कसिणुग्घाटिमाकासो,* अभि॰ ध॰ वि॰ टी॰ 93; *आकासो अनन्तो आकासानन्तो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.77.

आकासानिलप्पभेद त्रि॰, ब॰ स॰ [आकाशानिलप्रभेद], आकाश एवं वायु के प्रभेदों वाला (शब्द) – **दो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकासानिलप्पभेदो देहनिस्सितो चित्तजसद्दो येव वण्णत्तमुपगतो सद्दो,* सद्द॰ 3.603-04.

आकासाभिमुख त्रि॰, [आकाशाभिमुख], आकाश की ओर अभिमुख, आसमान की ओर देख रहा – **खो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथा हि गावो नववुट्ठे देवे भूमिं घायित्वा घायित्वा आकासाभिमुखो हुत्वा वातं आकड्ढन्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.109.

आकासारम्मण त्रि॰, ब॰ स॰ [आकाशालम्बनक], वह ध्यान भावना, जिसमें चित्त का आलम्बन आकाश रहता हो – **णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आकासारम्मणं आकासानञ्चायतनं,* विसुद्धि॰ 1.330.

आकासुक्खिपिय पु॰, व्य॰ सं॰, एक स्थविर का नाम, जो आकाश की ओर पुष्पों को फेंक देता था – *इत्थं सुदं आयस्मा आकासुक्खिपियो थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप॰ 1.244.

आकासुपनिस्सय पु॰, तत्पु॰ स॰ [आकाशोपनिःश्रय], शब्द के आधार या आश्रय के रूप में आकाश, आकाश का आश्रय – *सोतायतनं निस्साय इट्ठसम्मतं सद्दायतनं आलम्बित्वा आकासुपनिस्सयं लभित्वा मनोधातावज्जनानन्तरं एव उप्पज्जति ... सोतविञ्ञाणं,* रूपा॰ 153, 155 (रो॰).

आकिञ्च नपुं॰, संभवतः आकिञ्ञ का अप॰, अकिंचनता की मनोदशा, अरूपध्यान का तृतीय चरण – **ञ्चं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकिञ्चं नेवसञ्ञञ्च, समापज्जि यथक्कमं,* अप॰ 2.209.

आकिञ्चञ्ञ 1. नपुं॰, भाव॰ [आकिञ्चन्य], **शा॰ अ॰,** कुछ भी शेष न रहने की अवस्था, अकिंचनता, समस्त धनसम्पत्ति से रहित होना – **ञ्ञं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकिञ्चञ्ञं पत्थयानो, ब्राह्मणो मन्तपारगू,* सु॰ नि॰ 982; *आकिञ्चञ्ञन्ति अकिञ्चनभावं परिग्गहूपकरणविवेकन्ति वुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.271; **ला॰ अ॰ 1.** अरूपावचर-ध्यान की तीसरी अवस्था, जिसमें ध्यान करने वाले साधक का चित्त अधिक सूक्ष्म हो जाता है तथा उसे अनन्त आकाश एवं अनन्त विज्ञान के रूपरहित आलम्बन स्थूल प्रतीत होने लगते हैं, इस अवस्था में साधक 'नहीं हैं', 'नहीं हैं', 'शून्य है, शून्य है', 'खाली है, खाली है', इस प्रकार की अनुपश्यना करते हुए अनन्त-विज्ञान के विषय में 'कुछ नहीं है' या 'नत्थि किञ्चि' की भावना करता है। दूसरे शब्दों में 'विञ्ञाणञ्चायतन' के विज्ञान का अभाव है, अन्तर्धान है तथा कुछ भी नहीं है, यह देखता है। इस ध्यान में उपेक्षा एवं एकाग्रता, ये दो ध्यानाङ्ग ही रहते हैं – *एत्थ पन नास्स किञ्चनन्ति अकिञ्चनं ... अकिञ्चनस्स भावो आकिञ्चञ्ञं, आकासानञ्चायतनविञ्ञाणापगमस्सेतं अधिवचनं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 250; *तत्थ आकिञ्चञ्ञायतनं किञ्चनं आरम्मणं अस्स नत्थीति आकिञ्चञ्ञं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).249; *नास्स पठमारुप्पस्स किञ्चनं अप्पमतकं अन्तमसो भङ्गमत्तम्पि अवसिट्ठं अत्थीति अकिञ्चनं तस्स भावो आकिञ्चञ्ञं, पठमारुप्पविञ्ञाणाभावो,* अभि॰, ध॰ वि॰ टी॰ 93; *नत्थि किञ्चीति नत्थि नत्थि, सुञ्ञं सुञ्ञं, विवित्तं विवित्तन्ति एवं मनसिकरोन्तोति वुत्तं होति,* विसुद्धि॰ 1.324; **ला॰ अ॰ 2.** निर्वाण, जिसमें किसी भी प्रकार के क्लेश चित्त में शेष नहीं रह जाते, चार आर्यमार्ग एवं आर्यफल – *निब्बानम्पि आकिञ्चञ्ञं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.137; *मग्गफलानि ... किलेसानं नत्थिताय आकिञ्चञ्ञानि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).249; **2.** त्रि॰, अकिंचनता के साथ जुड़ा हुआ, किसी भी प्रकार के आलम्बनों से रहित, क्लेशरहित, बाधारहित – **ञ्ञा**¹ स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकिञ्चञ्ञा चेतोविमुत्ति,* म॰ नि॰ 1.378; *आरम्मणकिञ्चनस्स अभावतो आकिञ्चञ्ञा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).248; – **ञ्ञं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यदेव तत्थ सच्चं तदभिञ्ञाय आकिञ्चञ्ञंयेव पटिपदं पटिपन्नो होति,* अ॰ नि॰ 1(2).205; *आकिञ्चञ्ञंयेव पटिपदन्ति किञ्चनभावविरहितं निप्पलिबोधं निग्गहणमेव पटिपदं ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.358; – **ञ्ञा**² प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आकिञ्चञ्ञा चेतोविमुत्तियो,* म॰ नि॰ 1.379; *आकिञ्चञ्ञा चेतोविमुत्तियो नाम नव धम्मा आकिञ्चञ्ञायतनञ्च मग्गफलानि च,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1.(1)249; – **चेतोविमुत्ति** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [आकिञ्चन्यचेतोविमुक्ति], चार लोकोत्तर मार्ग, चार आर्यफल एवं आकिञ्चन्यायतन नामक अरूपध्यान की अवस्था वाले कुल नौ धर्म – *आकिञ्चञ्ञा चेतोविमुत्तियो नाम नव धम्मा आकिञ्चञ्ञायतनं मग्गफलानि च,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.136; पाठा॰ आकिञ्चञ्ञ, चेतोविमुत्ति; – **सम्भव** पु॰,

तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतनसंभव], आकिंचन्य के आलम्बन को उत्पन्न करने वाला कर्माभिसंस्कार – **वो** प्र. वि., ए. व. – *आकिञ्चञ्ञासम्भवोति वुच्चति आकिञ्चञ्ञायतनसंवत्तनिको कम्माभिसङ्खारो,* चूळनि. 155; – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *आकिञ्चञ्ञसम्भवं ञत्वा,* ..., सु. नि. 1121; *आकिञ्चञ्ञसम्भवं ञत्वाति आकिञ्चञ्ञायतनजनकं कम्माभिसङ्खारं ञत्वा 'किन्ति पलिबोधो' अय'न्ति,* सु. नि. अट्ठ. 2.293.

आकिञ्चञ्ञसुत्त नपुं., स. नि. के दो सुत्तों का शीर्षक, स. नि. 2(1).234; 2(2).261.

आकिञ्चञ्ञाभिनिवेस त्रि., ब. स. [आकिञ्चन्याभिनिवेश], अकिंचनभाव में अथवा शून्यता में चित्त की प्रवृत्ति या झुकाव रखने वाला – **सा** पु., प्र. वि., ब. व. – *अकिञ्चनभावे निग्गहणभावे चित्तं एतेसं अभिनिविसतीति आकिञ्चञ्ञाभिनिवेसा,* अ. नि. अट्ठ. 3.122.

आकिञ्चञ्ञायतन नपुं., [बौ. सं. आकिञ्चन्यायतन], 1. अरूपध्यान के चार आलम्बनों में तीसरा आलम्बन, जिसमें अनन्त विज्ञान के अकिंचनभाव को चित्त का आलम्बन बनाया जाता है, 2. अकिंचनभाव कर्मस्थान वाला तीसरा अरूपध्यान – **नं**[1] प्र. वि., ए. व. ... *एत्थ पन नास्स किञ्चनन्ति अकिञ्चनं, ... अकिञ्चनस्स भावो आकिञ्चञ्ञं, आकासानञ्चायतनविञ्ञाणापगमस्सेतं अधिवचनं, तं आकिञ्चञ्ञं अधिट्ठानट्ठेन आयतनमस्स झानस्स ... आकिञ्चञ्ञायतनं,* विसुद्धि. 1.324; *नत्थि किञ्ची'ति आकिञ्चञ्ञायतनं नेय्य'न्ति,* म. नि. 1.372; – **नं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *सब्बसो विञ्ञाणञ्चायतनं समतिक्कम्म 'नत्थि किञ्ची'ति आकिञ्चञ्ञायतनं उपसम्पज्ज विहरेय्य,* म. नि. 1.52; *आकिञ्चञ्ञायतनं ... आकिञ्चञ्ञायतनपरियोसाना सत्त समापत्तियो मं जानापेसि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).75; – *सञ्ञग्गन्ति आकिञ्चञ्ञायतनं वुच्चति, कस्मा? लोकियानं किच्चकारकसमापत्तीनं अग्गत्ता, आकिञ्चञ्ञायतनसमापत्तियञ्हि ठत्वा नेवसञ्ञानासञ्ञायतनम्पि निरोधम्पि समापज्जन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 1.277; *आकिञ्चञ्ञायतनन्ति इदमस्स चतुब्बिधमारम्मणं,* अभि. अव. 6; *चतुत्थस्स झानस्स विपाको, आकासानञ्चायतनं आकिञ्चञ्ञायतनं कुसलतो च विपाकतो च किरियतो च, इमे धम्मा नवत्तब्बारम्मणा'ति हि वुत्तं,* अभि. अव. 104; **स्स** ष. वि., ए. व. – *आकिञ्चञ्ञायतनस्स लाभिं ... समुदाचरन्ति,* पटि. म. 32; – **कम्मट्ठान** नपुं., तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतनकर्मस्थान], अकिंचनता का कर्मस्थान, कर्मस्थान या आलम्बन के रूप में विज्ञान का अकिंचन-भाव – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *अयं आकिञ्चञ्ञायतनकम्मट्ठाने वित्थारकथा,* विसुद्धि. 1.324.

आकिञ्चञ्ञायतनकिरियाचित्त नपुं., तत्पु. सं. [बौ. सं. आकिञ्चन्यायतनक्रियाचित्त], अरूपावचर भूमि के चार प्रकार के क्रियाचित्तों में अकिंचनभाव को ध्यान का आलम्बन बनाने वाला तथा विपाक उत्पन्न न करने वाला तृतीय चित्त – *आकासानञ्चायतनकिरियचित्तं, विञ्ञाणञ्चायतनकिरियचित्तं आकिञ्चञ्ञायतनकिरियचित्तं, नेवसञ्ञानासञ्ञायतनकिरियचित्तञ्चेति इमानि चत्तारिपि अरूपावचरकिरियचित्तानि नाम,* अभि. ध. स. 5.

आकिञ्चञ्ञायतनकुसलचित्त नपुं., तत्पु. स. [बौ. सं. आकिञ्चन्यायतनकुशलचित्त], अरूपावचर भूमि का तीसरा कुशलचित्त, जिसका आलम्बन अकिंचनभाव होता है – **त्तं** प्र. वि., ए. व. – *आकासानञ्चायतनकुसलचित्तं, विञ्ञाणञ्चायतनकुसलचित्तं, आकिञ्चञ्ञायतनकुसलचित्तं नेवसञ्ञानासञ्ञायतनकुसलचित्तञ्चेति इमानि चत्तारिपि अरूपावचरकुसलचित्तानि नाम,* अभि. ध. स. 5.

आकिञ्चञ्ञायतनचित्त नपुं., कर्म. स. [आकिञ्चन्यायतनचित्त], अरूपावचरभूमि का तृतीय चित्त – **त्तं** प्र. वि., ए. व. – *महग्गतविञ्ञाणस्स सुञ्ञविवित्तनत्थिभावे आकिञ्चञ्ञायतनचित्तं अप्पेति,* विसुद्धि. 1.323.

आकिञ्चञ्ञायतनधातु स्त्री., [बौ. सं. आकिञ्चञ्ञायतनधातु], धातु के रूप में अकिंचनभाव का क्षेत्र – *यायं, भिक्खु, आकिञ्चञ्ञायतनधातु – अयं धातु विञ्ञाणञ्चायतनं पटिच्च पञ्ञायति,* स. नि. 1(2).132.

आकिञ्चञ्ञायतननिस्सित त्रि., तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतननिःश्रित], अकिंचनभाव पर आश्रित या उस से सम्बद्ध – ता स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अत्थि, भिक्खवे, उपेक्खा आकासानञ्चायतननिस्सिता ... अत्थि आकिञ्चिञ्ञायतननिस्सिता,* म. नि. 3.268.

आकिञ्चञ्ञायतनपटिसंयुत्त त्रि., तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतनप्रतिसंयुक्त], उपरिवत् – **त्ताय** स्त्री., ष. वि., ए. व. – *आकिञ्चञ्ञायतनपटिसंयुत्ताय च पन कथाय कच्छमानाय न सुस्सूसति,* म. नि. 3.40.

आकिञ्चञ्ञायतनभव पु., तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतनभव], चार प्रकार के अरूपी ब्रह्मलोकों में जन्म, अरूपध्यान के चार चित्तों के विपाक के बल से चार अरूपी ब्रह्माओं के रूप में जन्मग्रहण – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *तत्थ झानं निब्बत्तेत्वा आकिञ्चञ्ञायतनभवं उपगता आकिञ्चञ्ञायतनूपगा,* चूळनि. अट्ठ. 56.

आकिञ्चञ्ञायतनभूमि स्त्री., तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतनभूमि], अरूपावचर ध्यान की चार भूमियों में से तृतीय, ध्यानयुक्त चित्त की वह अवस्था, जिसमें अनन्त आकाश एवं अनन्त विज्ञान के अकिंचन-भाव या शून्यता की भावना की जाती है – *आकासानञ्चायतनभूमि विञ्ञाणञ्चायतनभूमि आकिञ्चञ्ञायतनभूमि नेवसञ्ञानासञ्ञायतनभूमि चेति अरूपभूमि चतुब्बिधा होति,* अभि. ध. स. 32.

आकिञ्चञ्ञायतनलाभी त्रि., [आकिञ्चन्यायतनलाभिन्], अरूपध्यान में अकिंचनभाव की विपश्यना करने वाला – **नो** पु., ष. वि., ए. व. – *नत्थि किञ्चीति पस्सतोति विञ्ञाणाभावविपस्सनेन 'नत्थि किञ्ची'ति पस्सतो, आकिञ्चञ्ञायतनलाभिनोति वुत्तं होति,* सु. नि. अट्ठ. 2.293.

आकिञ्चञ्ञायतनसंयोजन नपुं., तत्पु. स./कर्म. स. [आकिञ्चन्यायतनसंयोजन], संयोजन या बन्धन के रूप में अकिंचनभाव का कर्मस्थान, अकिंचनभाव का मानसिक बन्धन – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *'आकिञ्चञ्ञायतनसंयोजनेन हि खो विसंयुत्तो, नेवसञ्ञानासञ्ञायतननाधिमुत्तो पुरिसपुग्गलो'ति,* म. नि. 3.41.

आकिञ्चञ्ञायतनसंवत्तनिक त्रि., [आकिञ्चन्यायतनसंवर्तनिक], अकिंचन भाव के आयतन या आलम्बन की ओर ले जाने वाला (कर्म का अभिसंस्करण) – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *आकिञ्चञ्ञासम्भवोति वुच्चति आकिञ्चञ्ञायतनसंवत्तनिको कम्माभिसङ्खारो,* चूळनि. 155.

आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञा स्त्री., तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतनसंज्ञा], आकिंचन्य के विषय में (उपादानयुक्त) संज्ञा-ज्ञान – *या च आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञा ... एस सक्कायो यावता सक्कायो,* म. नि. 3.49; *नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं समापन्नस्स आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञा निरुद्धा होति,* स. नि. 2(2).213; – **ञ्ञं** द्वि. वि., ए. व. – *आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञं पटिच्च मनसि करोति एकत्तं,* म. नि. 3.150; ... *नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसञ्ञाय आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञं,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.112; – **य** – सप्त. वि., ए. व. – ... *तस्स आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञाय ... आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञाया'ति पजानाति,* म. नि. 3.150; – **सहगत** त्रि., तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतनसंज्ञासहगत], आकिंचन्य के आलम्बन की संज्ञा से युक्त **तं** नपुं., प्र. वि., ए. वि. – *यस्मिं समये ... विञ्ञाणञ्चायतनं समतिक्कम्म आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना ...,* ध. स. 267, 503, 581; *तस्मिं आकिञ्चञ्ञायतनं पवत्ताय सञ्ञाय सहगतन्ति आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञासहगतं,* ध. स. अट्ठ. 250.

आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञी त्रि., [आकिञ्चन्यायतनसंज्ञिन्], आकिंचन्य के आयतन या ध्यान के प्रति संज्ञा-ज्ञान रखने वाला – *न आकिञ्चञ्ञायतने आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञी अस्स,* अ. नि. 3(2).6; 8; 287.

आकिञ्चञ्ञायतनसप्पाय त्रि., ब. स. [बौ. सं. आकिञ्चन्यायतनसाम्प्रेय], आकिञ्चन्यायतन नामक अरूपध्यान की प्राप्ति में हितकर या उपयुक्त – **या** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अयं, भिक्खवे, दुतिया आकिञ्चञ्ञायतनसप्पाया पटिपदा अक्खायति,* म. नि. 3.47.

आकिञ्चञ्ञायतनसमापत्ति स्त्री., तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतनसमापत्ति], **शा. अ.**, आकिंचन्य के आयतन अथवा कर्मस्थान की प्राप्ति, **ला. अ.**, नौ प्रकार की समापत्तियों या समाधिचर्याओं में से एक – *नवहि समाधिचरियाहीति ... पठमं झानं ... चतुत्थं झानं समाधिचरिया, ... आकिञ्चञ्ञायतनसमापत्ति ... समाधिचरिया,* पटि. म. 91; *आकिञ्चञ्ञायतनसमापत्ति विञ्ञाणञ्चायतनसञ्ञाय वुट्ठाति,* पटि. म. 222; – **त्तिं** द्वि. वि., ए. व. – *आकिञ्चञ्ञायतनसमापत्तिं ... पटिलाभत्थाय वितक्को च विचारो च पीति च सुखञ्च ..,* पटि. म. 223; – **या**[1] प. वि., ए. व. – *आकिञ्चञ्ञायतनसमापत्तिया वुट्ठहित्वा नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं समापज्जि,* दी. नि. 2.116; – **या**[2] ष. वि., ए. व. – ... *आकिञ्चञ्ञायतनसमापत्तिया ... इमे बहिद्धावुट्ठानपटिप्पस्सद्धी चत्तारो विमोक्खा,* पटि. म. 224; – **विमोक्ख** पु., तत्पु. स. [आकिञ्चन्यायतनसमापत्तिविमोक्ष], आकिंचन्य आलम्बन वाले अरूप-ध्यान की प्राप्ति से मिलने वाला विमोक्ष, 68 प्रकार के विमोक्षों में एक, **क्खो**, प्र. वि., ए. व. – *अपि च अट्ठसट्ठि विमोक्खा ... आकिञ्चायतनसमापत्ति*

विमोक्खो, नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसमापत्ति विमोक्खो, पटि॰ म॰ 221; – **लाभी** त्रि॰, आकिंचन्य आलम्बन वाले तृतीय अरूप-ध्यान की प्राप्ति का लाभ पाने वाला – **भी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकिञ्चञ्ञायतनसमापत्तिलाभी आचरियो'ति,* आह, जा॰ अट्ठ॰ 1.388-89.

आकिञ्चञ्ञायतनसहगत त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आकिञ्चन्यायतनसहगत], आकिंचन्य के आयतन या आधार से युक्त, आकिंचन्य के आलम्बन वाला (जवनसंज्ञा एवं आवज्जनचित्त) – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आकिञ्चञ्ञायतनसहगता सञ्ञामनसिकारा समुदाचरन्ति,* पटि॰ म॰ 32.

आकिञ्चञ्ञायतनसुखुमसच्चसञ्ञा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, अकिंचनता के कर्मस्थान में अन्तर्निहित सूक्ष्म सत्य का ज्ञान – *आकिञ्चञ्ञायतनसुखुमसच्चसञ्ञा तस्मिं समये होति,* दी॰ नि॰ 1.164.

आकिञ्चञ्ञायतनाधिमुत्त त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आकिञ्चन्यायतनाधिमुक्त], अकिंचन-भाव के ध्यानालम्बन या ध्यान की ओर पूरी तरह से स्वयं को लगाया हुआ, आकिंचन्य के आयतन की प्राप्ति हेतु समर्पित – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *इधेकच्चो पुरिसपुग्गलो आकिञ्चञ्ञायतनाधिमुत्तो अस्स, आकिञ्चञ्ञायतनाधिमुत्तस्स खो, सुनक्खत्त, पुरिसपुग्गलस्स तप्पतिरूपी चेव कथा सण्ठाति,* म॰ नि॰ 3.40.

आकिञ्चञ्ञायतनूपग त्रि॰, [बौ॰ सं॰ आकिञ्चन्यायतनोपग], तृतीय अरूप-ध्यान की अवस्था में पहुंचा हुआ, अनन्त-विज्ञान के आलम्बन का अतिक्रमण कर 'कुछ भी नहीं है' अथवा 'शून्य है' की अनुपश्यना करने वाला – **गो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञो अत्ता सब्बसो विञ्ञाणञ्चायतनं समतिक्कम्म 'नत्थि किञ्ची'ति आकिञ्चञ्ञायतनूपगो,* दी॰ नि॰ 1.30; – **गा** ब॰ व॰ – *अत्थावुसो, आकिञ्चञ्ञायतनूपगा देवा, इदं सञ्ञानं अग्गं,* अ॰ नि॰ 1(2).187; – **गं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *यं तंसंवत्तनिकं विञ्ञाणं अस्स आकिञ्चञ्ञायतनूपगं,* म॰ नि॰ 3.47.

आकिञ्चञ्ञायतनूपपत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आकिञ्चन्यायतनोपपत्ति], आकिंचन्य के आयतन या आलम्बन बनाने वाले तृतीय अरूप-ध्यान के विपाक के प्रभाव से अरूपी ब्रह्मलोक में उत्पत्ति या जन्म – **या** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नायं धम्मो निब्बिदाय ... संवत्तति, यावदेव आकिञ्चञ्ञायतनूपपत्तिया'ति,* म॰ नि॰ 1.224; *यावदेव आकिञ्चञ्ञायतनूपपत्तियाति याव सट्ठिकप्पसहस्सायुपरिमाणे आकिञ्चञ्ञायतनभवे उपपत्ति, तावदेव संवत्तति, न ततो उद्धं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).75.

आकिञ्चञ्ञाभिनिवेस त्रि॰, ब॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आकिञ्चन्याभिनिवेश], अकिंचनभाव की ओर सुदृढ़ झुकाव या प्रवृत्ति रखने वाला – **सा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आकिञ्चञ्ञाभिनिवेसा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.122.

आकिञ्चञ्ञासमापत्तिक त्रि॰, ब॰ स॰, आकिंचन्य ध्यान की प्राप्ति-स्वरूप उदित होने वाली, चतुर्थ अरूप-ध्यान की अनेक हानियों (आदीनवों) में एक – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकिञ्चञ्ञासमापत्तिका ते धम्मानुसमापत्तिका एतिस्सा च भूमियं सातानं बालपुथुज्जनानं अनेकविधानि दिट्ठिगतानि उप्पज्जन्ति,* पेटको॰ 266.

आकिण्ण त्रि॰, आ +√किर का भू॰ क॰ कृ॰ [आकीर्ण], **शा॰ अ॰** 1. अत्यधिक भरा हुआ, खचाखच भरा हुआ, प्रचुर, परिपूर्ण, समृद्ध, संकुल, 2. बिखरा हुआ, फैला हुआ, विपुल, छितराया हुआ, **ला॰ अ॰,** संभ्रमग्रस्त, अव्यवस्थित, शिथिल, अपवित्र, भीड़-भाड़ के साथ – *संकिण्णाकिण्ण सङ्कुला,* अभि॰ प॰ 720; – **ण्णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विपुलम्पि हि "आकिण्ण"न्ति वुच्चति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.101; *एणेय्यपसदाकिण्णन्ति एणेय्यमिगेहि च पसदमिगेहि च आकिण्णं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.309; – **ण्णा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आकिण्णाति परिपुण्णा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.264; – **ण्णं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आकिण्णं संकिलिट्ठं वाचं न भणेय्य,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.202; – **ण्णानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आकिण्णानीति पक्खित्तानि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.99; – **ण्णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *गामन्ते विहरति आकिण्णो भिक्खूहि ...,* स॰ नि॰ 2(2).40; *भगवा एतरहि आकिण्णो विहरति ... विहरामि देवपुत्तेहि,* अ॰ नि॰ 1(1).314; *आकिण्णो दुक्खं न फासु विहरति,* उदा॰ 114; – **ण्णे** नपुं॰ सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'वने वाळमिगाकिण्णे, कच्चि हिंसा न विज्जती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.315; *एणेय्यपसदाकिण्णं, नागसंसेवितं वनं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.308; – **कम्मन्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [आकीर्णकर्मान्त], अपरिशुद्ध कर्म करने वाला, दारुण कर्म करने वाला – **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं आकिण्णकम्मन्तो, कस्मा एसो न वुच्चती'ति,* स॰ नि॰ 1(1).237; *आकिण्णकम्मन्तोति एवं अपरिसुद्धकम्मन्तो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.262; *तत्थ आकिण्णकम्मन्तोति कक्खळकम्मन्तो दारुणकम्मन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.270; – **जनमनुस्स** त्रि॰,

तत्पु॰ स॰ [जनमनुष्याकीर्ण], लोगों की भीड़ से भरा हुआ – ... *आकिण्णजनमनुस्सं पुथुखत्तियब्राह्मणवेस्ससुद्दं* ..., मि॰ प॰ 2; – **तण्डुल** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [तण्डुलाकीर्ण], चावलों से भरपूर – **ले** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महति ... उदकसम्पुण्णे आकिण्णतण्डुले हेट्ठतो अग्गि ... सन्तापेति,* मि॰ प॰ 124; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [आकीर्णत्व], भरपूर होना, भरपूर होने की अवस्था – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकिण्णत्ता विहारस्स वुस्समानस्स तस्स सा,* म॰ वं॰ 19.77; – **दोस** त्रि॰, ब॰ स॰ [आकीर्णदोष], दोषों से भरा हुआ – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो सचे आकिण्णदोसोव होति, आयतिं संवरे न तिट्ठति,* महाव॰ अट्ठ॰ 280; – **मनुस्स** त्रि॰, ब॰ स॰ [आकीर्णमनुष्य / मनुष्याकीर्ण], मनुष्यों से भरा हुआ, भीड़-भाड़ वाला – **स्सानि** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *फीतानि आकिण्णमनुस्सानि सम्पन्नबलवाहनानि तीणि नगरानि पस्सामि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.152; – **यक्ख** त्रि॰, ब॰ स॰ [आकीर्णयक्ष / यक्षाकीर्ण], यक्षों से भरा हुआ – **क्खा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *देवानं आळकमन्दा ... फीता च बहुजना च आकिण्णयक्खा च सुभिक्खा च,* दी॰ नि॰ 2.110-11; – **लुद्द** त्रि॰, ब॰ स॰ [आकीर्णलुब्ध / लुब्धाकीर्ण], लोभियों, लम्पटों या दुष्टजनों से भरा हुआ, अत्यधिक पापी – **द्दो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकिण्णलुद्दो पुरिसो, धातिचेलंव मक्खितो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.270; *आकिण्णलुद्दोति बहुपापो गाळ्हपापो वा* ..., स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.262; – **लोम** त्रि॰, ब॰ स॰ [आकीर्णलोम], अत्यधिक घने या उलझे हुए बालों वाला – **मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'आकिण्णलोमं खो ते, भगिनी'ति,* पारा॰ 193; *आकिण्णलोमन्ति जटितलोमं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.123; – **वरलक्खण** त्रि॰, ब॰ स॰ [आकीर्णवरलक्षण / वरलक्षणाकीर्ण], उत्तम लक्षणों से युक्त – **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पिण्डाय अभिहारेसि, आकिण्णवरलक्खणो,* सु॰ नि॰ 410; *आकिण्णवरलक्खणोति सरीरे आकिरित्वा विय ठपितवरलक्खणो विपुलवरलक्खणो वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.101; – **वालिका** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [आकीर्णवालुका], अत्यधिक या प्रचुर मात्रा में बिखेरी हुई बालू – **य** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महाचेतियतले आकिण्णवालिकाय बहुतरा भिक्खू अरहत्तं पत्ता'ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.216; – **विहार** पु॰, तत्पु॰ स॰, भीड़-भाड़ में आनन्द लेते हुए रहना – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ सङ्गणिकविहारो होति आकिण्णविहारो,* अ॰ नि॰ 1(2).97; 98; – **विहारता** स्त्री॰, भाव॰, भीड़-भाड़ के बीच रहने की प्रवृत्ति – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो ताय आकिण्णविहारताय उक्कण्ठितो ... विहरामि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.35.

आकिरण नपुं॰, आ +√किर से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आकिरण], चारों ओर बिखेर देना, इधर-उधर छितरा देना, फैला देना – *वङ्क आकिरने,* सद्द॰ 2.534.

आकिरति आ +√किर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आकिरति], **1.** चारों ओर फैला देता है, बिखेर देता है, ऊपर की ओर छितरा देता है, **2.** भर देता है, ढेर लगा देता है – *कबळे कबळे सूपं आकिरति,* मि॰ प॰ 217; *सो इमस्मिं सासने कचवरं आकिरति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.310; – **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *रजमाकिरसी अहिताय, सन्ते गरहसि किब्बिसकारी,* सु॰ नि॰ 670; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – ... *देवता दिब्बं ओजं पत्ते आकिरन्ति,* मि॰ प॰ 217; – **ते** वर्त॰, आत्मने॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *भिय्यो आकिरते रजं,* स॰ नि॰ 1(1).58; *आकिरते रजन्ति अतिरेकं उपरि किलेसरजं आकिरति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.97; ... **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञस्स भाजने आकिरन्तो ओमसति,* पाचि॰ 258; – **न्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *उदके आकिरन्ते अल्लत्तं वा पल्लवितहरितभावो वा न भवेय्य,* मि॰ प॰ 151; ... *पिण्डपातं ..., आकिरन्तोपि अतिक्कन्तोपि न जानन्ति,* पाचि॰ 256; – **न्ती** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *पत्ते आकिरन्ती हत्थानञ्च ... अग्गहेसि,* पारा॰ 16; – **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *वालुकं आहरित्वा इमस्मिं ठाने आकिरतु,* उदा॰ अट्ठ॰ 22; – **र** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *इध मे पत्ते आकिरा'ति,* पारा॰ 16; – **थ** ब॰ व॰ – *इध न आकिरथा'ति आकिरितब्बं,* पाचि॰ अट्ठ॰ 109; – **रेय्युं** विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *एकस्मा सकटतो रतनं गहेत्वा एकस्मिं सकटे आकिरेय्युं,* मि॰ प॰ 224; – **रि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *साधूति सो पटिस्सुत्वा, दानं विपुलमाकिरि,* पे॰ व॰ 176; – **रिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पुराणपुलिनं वालुकं छड्डेत्वा सुद्धं पण्डरं पुलिनं आकिरिं सन्थरिं,* अप॰ अट्ठ॰ 2.39; – **रिंसु** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *न सब्बधञ्ञानिपि आकिरिंसु,* पे॰ व॰ 456; – **रित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – ... *पादपंसूनि गहेत्वा उपरिमुद्धनि आकिरित्वा* ..., चूळव॰ 335; – **तब्बा** सं॰ कृ॰, स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पच्छिं पन गहेत्वा सलाका पीठके आकिरितब्बा,* चूळव॰ अट्ठ॰ 101; – **तब्बं** सं॰ कृ॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इध न आकिरथा'ति आकिरितब्बं,* पाचि॰ अट्ठ॰ 109.

आकिरितत्त नपुं॰, आ +√किर के भू॰ क॰ कृ॰ का भाव॰ [आकीर्णत्व], भरपूर होना, पूर्ण रूप से भरा हुआ होना –

त्ता प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मिं सकटे धञ्ञस्स पन आकिरितत्ता धञ्ञसकटन्ति जनो वोहरति,* मि॰ प॰ 169.

आकिरियन्ति आ +√किर के कर्म॰ वा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ [आकीर्यन्ते], चारों ओर से भर दिए जाते हैं, परिव्याप्त कर दिए जाते हैं, प्रकाशित किए जाते हैं – *तस्मिं तस्मिं सङ्खे आकिरीयन्ति अविज्जासङ्खारादिग्गहणेहि पकासीयन्तीति आकारा,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.210; ... *अतीतादीसु तत्थ तत्थ आकिरियन्तीति आकारा,* अभि॰ ध॰ वि॰ टी॰ 210; *ते हि अञ्ञमञ्ञविधुरेन वेदयितारूपेन आकिरियन्ति पञ्ञायन्तीति आकाराति वुच्चन्ति,* दी॰ नि॰ टी॰ (लीन॰) 2.89.

आकुच्छ / आगुण्ड पु॰, गोह – *गोधा कुण्डोप्यथो कण्ण जलूका,* अभि॰ प॰ 622; पाठा॰ आकुच्च; – **च्छा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आकुच्छा पचलाका च,* जा॰ अट्ठ॰ 7.306; *आकुच्छाति गोधा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.307.

आकुट्ठ त्रि॰, आ +√कुस का भू॰ क॰ कृ॰ [आक्रुष्ट], निन्दित, डांटा या फटकारा गया – *एवं सीलितो, रक्खितो, खन्तो, आकुट्ठो, रुट्ठो, ... अमतो,* मो॰ व्या॰ 5.60.

आकुमारं अ॰, [आकुमारं], कुमार अवस्था तक, कौमार्य–अवस्था–पर्यन्त – *अभिविधिम्हि आकुमारं यसो कच्चायनस्स,* सद्द॰ 3.880.

आकुल त्रि॰, [आकुल], **1.** भरा हुआ, परिपूर्ण, खचित, प्रभावित, प्रभाव से ग्रस्त, स॰ प॰ के अन्त॰ – **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *संसिब्बितछब्बिधजालामालाकुला समन्ता,* मि॰ प॰ 149; *एको किर पुरिसो चण्डसोताय वाळमच्छाकुलाय नदिया पारं गन्तुकामो ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.350; **2.** घबराया हुआ, विक्षुब्ध, उद्विग्न, बेचैन, विपत्ति में फंसा हुआ, व्याकुल – **लं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुजा थोकं आकुलं विय हुत्वा ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.239; *यथा पन आकुलं तन्तं कञ्जियं दत्वा कोच्छेन पहटं तत्थ तत्थ गुळकजातं होति गण्ठिबद्धं* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.84; *तस्मिं सलाकग्गं आकुलं करोन्ते* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.129.

आकुलक त्रि॰, आकुल से व्यु॰, व्याकुल, बेचैन – *धम्मस्स ... एवमयं पजा तन्ताकुलकजाता कुलगण्ठिकजाता ... नातिवत्तति,* दी॰ नि॰ 2.43.

आकुलता स्त्री॰, आकुल का भाव॰ [आकुलता], व्याकुलता, बेचैनी, विपत्ति – **य** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं चण्डमीनाकुलताय आकड्ढित्वा अनयब्यसनं पापेति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.273.

आकुलभाव पु॰, तत्पु॰ स॰ [आकुलभाव], घबराहट, व्याकुलता, भौंचक्कापन – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दिसाडाहोति ... दिसाकालुसियं अग्गिसिखधूमसिखादीहि आकुलभावो विय,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.84.

आकुलयन्तो आकुल के ना॰ धा॰ का वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, भरता सा हुआ, विखराता सा हुआ – *आलोळयमानो वालिकाकचवरानि आकुलयन्तो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.118.

आकुलब्याकुल त्रि॰, [आकुलव्याकुल], बुरी तरह से घबराया हुआ या बेचैन – **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एवं सत्ता इमाय तण्हाय परियोनद्धा आकुलब्याकुला न सक्कोन्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.382; *तत्थ ... एवमादिद्वत्तिंसकुलप्पभेदा किमयो आकुलब्याकुला ... निवसन्ति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 44.

आकुलसमाकुल त्रि॰, आपस में एक दूसरे से उलझे हुए, बुरी तरह से फंसे हुए – **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *एते पुप्फूपगफलूपगरुक्खा अञ्ञमञ्ञं सङ्घट्टसाखताय परिणामिता आकुलसमाकुला,* जा॰ अट्ठ॰ 7.161.

आकुलाकुल त्रि॰, बुरी तरह से बेचैन या घबराहट से पीड़ित – **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बोधिसत्तो ... विसञ्ञिभूतो आकुलाकुलो तुरिततुरितो ... यजि,* मि॰ प॰ 208; – **ला** ब॰ व॰ – *महावाता ... आकुलाकुला वायन्ति ... विनमन्ति,* मि॰ प॰ 124.

आकोटक पु॰, देवों या देवपुत्रों का एक वर्ग-विशेष – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ खो ... देवपुत्ता असमो च सहलि च नीको च आकोटको च ... येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु,* स॰ नि॰ 1(1).80; *पच्चभासीति अयं आकोटको इमेसं नग्गनिस्सिरिकानं* ..., स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.113.

आकोटन[1] नपुं॰, आ +√कुट से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, कूटना, पीटना, खटखटाना, दबाना, प्रहार करना – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकोटितपच्चाकोटितानीति एकस्मिं पस्से पाणिना वा मुग्गरेन वा आकोटनेन आकोटितानि ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.211; *तस्स आकोटनेन सद्दो निब्बत्तित्वा यथागतिगमनपथमत्थकं गच्छति,* मि॰ प॰ 281; ... *पथवियं आकोटनवसेन सम्पलिमट्ठं,* स॰ नि॰ 3.51; – **क्खम** त्रि॰, कूटने-पीटने को सहन करने में सक्षम – **मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मक्कटच्छापको रङ्गक्खमो हि खो, नो आकोटनक्खमो, नो विमज्जनक्खमो'ति,* म॰ नि॰ 2.54; *आकोट्टनक्खमोति सविञ्ञाणकस्स ताव आकोट्टनफलके ठपेत्वा कुच्छियं आकोटितस्स कुच्छि भिज्जति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.68; – **फलक** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, कूटने-पीटने के लिए प्रयुक्त तख्ता या फलक – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकोट्टनक्खमोति सविञ्ञाणकस्स ताव*

आकोटनफलके ठपेत्वा ... भिज्जति, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.68.

आकोटन[2] त्रि॰, कूटने-पीटने वाला, कुटाई-पिटाई करने वाला, उत्पीड़क – **नी** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्ञा आकोटनी राज, तत्थ अत्ताव सारथि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.142; ... *सिन्धवे आकोटेत्वा निवारणपतोदयट्ठि विय पञ्ञा आकोटनी होतु,* जा॰ अट्ठ॰ 7.144.

आकोटना स्त्री॰, पीटना, प्रहार करना – ... *यथा, महाराज, आकोटना, एवं वितक्को दट्ठब्बो,* मि॰ प॰ 64.

आकोटापेति आ +√कुट्ट के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, पिटवाता है, बजवाता है – *अञ्ञातिकाय ... पुराणचीवरं धोवापेति रजापेति आकोटापेति,* पारा॰ 316; – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰ प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *युद्धभेरिं आकोटापेन्तो तं ठानं अगमासि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.319; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – ... *बलिभेरिं आकोटापेत्वा युद्धाय गतो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.138; – **पेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यो पन भिक्खु अञ्ञातिकाय भिक्खुनिया पुराणचीवरं धोवापेय्य वा रजापेय्य वा आकोटापेय्य वा, निस्सग्गियं पाचित्तिय'न्ति,* पारा॰ 316.

आकोटित त्रि॰, आ +√कुट्ट का भू॰ क॰ कृ॰, पीटा गया, कूटा गया, प्रहार किया गया, खटखटाया गया – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कंसथालं आकोटितं पच्छा अनुरवति अनुसन्दहति,* मि॰ प॰ 64; ... *चन्दफलके वा सारफलके वा आकोटितं विसमाणिं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).403; *आकोटितञ्चेव परिवत्तेत्वा पुनप्पुनं आकोटितञ्च,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.68; – **तानि** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, (लिङ्ग का विपर्यय) – ... *तत्थ यानि तानि रुक्खानि दळ्हानि सारवन्तानि तानि कुठारिपासेन आकोटितानि कक्खळं पटिनदन्ति,* अ॰ नि॰ 3(1).18; *वासिया आकोटितखीररुक्खो विय अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.290; – **पच्चाकोटित** त्रि॰, बार बार पीटा गया या पछाड़ा गया (वस्त्र) – **तानि** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *भगवतो मातुच्छापुत्तो आकोटितपच्चाकोटितानि चीवरानि पारुपित्वा ...,* स॰ नि॰ 1(2).254.

आकोटेति / आकोट्टेति आ +√कुट्ट के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [बौ॰ सं॰ आकोटयति], **1.** कूटता है, पीटता है, प्रहार करता है, चोट पहुंचाता है, रौंदता है – *सत्तमयुगे ... आदाय सब्बपुरिमतो पट्ठाय पतोदलट्ठिया गोणे आकोटेति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 128; – **न्ति** ब॰ व॰ – *ब्राह्मणो च ... अञ्ञमञ्ञं आकोटेन्ति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 47; – **यन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकोटयन्तो ते नेति, सिविराजस्स पेक्खतो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.318; 326; – **न्ती** वर्त॰ कृ॰, स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथेका ... आदाय यट्ठिया भूमिं आकोटेन्ती आगच्छि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.251; – **टियमानो** कर्म॰ वा॰ वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रुक्खो ... छिद्दावछिद्दो वाते पहरन्ते आकोटियमानो विय अट्ठासि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.434; – **हि** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आकोटेहीति आणापेति,* पारा॰ 316; – **थ** ब॰ व॰ – *पाणिना आकोटेथ ... लेड्डुना ... दण्डेन ... सत्थेन ... ओधुनाथ सन्धुनाथ निद्धुनाथ,* दी॰ नि॰ 2.250; – **य्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यो आकोटेय्य, आपत्ति दुक्कटस्सा'ति,* चूळव॰ 259; – **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *इमं भिक्खुं आकोटेसी'ति,* चूळव॰ 358; *आकोटेसीति उक्खित्तं फरसुं निग्गहेतुं असक्कोन्तो मनुस्सानं ... छिन्दि,* पाचि॰ अट्ठ॰ 22; – **सुं** ब॰ व॰ – *पाणिना आकोटेसुं ... ओधुनिंसु सन्धुनिंसु निद्धुनिंसु,* दी॰ नि॰ 2.250; – **तुं** निमि॰ कृ॰ – *पाणिना आकोटेतुन्ति,* महाव॰ 377; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *चोरा इमे, नयिमे भिक्खू'ति – आकोटेत्वा पक्कमिंसु,* चूळव॰ 360; – **त्वान** उपरिवत् – *आकोटयित्वानाति अप्पोठेत्वा,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 269; – **तब्बो** सं॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न च तेन सामणेरो आकोटेतब्बो,* चूळव॰ 259; **2.** खटखटा कर (द्वार के साथ) – ... *द्वारं आकोटेत्वा कुटुम्बिकस्स गेहं अगमासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.233; **3.** ठोक-बजाकर (मिट्टी के बर्तनों के पक्केपन की जांच के लिए) – *यथा पक्कभाजनेसु कुम्भकारो भिन्नछिन्नजज्जरानि पवाहेत्वा एकतो कत्वा सुपक्कानेव आकोटेत्वा आकोटेत्वा गण्हाति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.122.

आकोमारं अ॰ [आकौमारं], बच्चों तक, कुमारों तक – *आ कोमारा यसो कच्चायनस्स आकोमारं,* सद्द॰ 3.749.

आखु पु॰, [आखु], बिल खोदने वाला चूहा – *मूसिको त्वाखु उन्दुरो,* अभि॰ प॰ 618.

आखेटक पु॰, [आखेटक], शिकारी – *खेटति, आखेटको खेटो 'उक्खेटितो', समुक्खेटितो'पि,* सद्द॰ 2.352.

आख्या स्त्री॰, [आख्या], नाम, संज्ञा – *सञ्ञाख्याव्हा समञ्ञा चाभिधानं नाममव्हयो,* अभि॰ प॰ 114.

आख्यात / अक्खात त्रि॰, [आख्यात], **शा॰ अ॰**, सुप्रसिद्ध, विख्यात, कहा गया, उपदिष्ट – *भासितं लपितं वुत्ताभिहिताख्यातजप्पिता,* अभि॰ प॰ 755; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, – **स्वा॰**, भली-भांति कहा गया, सम्यक् प्रकार से उपदिष्ट – **ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *होति यथा तं स्वाक्खाते धम्मविनये सुप्पवेदिते ...,* म॰ नि॰ 1.97; **ला॰**

अ., (व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में), क्रिया, काल, पुरुष, वचन एवं वाच्य के अर्थों को प्रकाशित करने वाला पद, क्रियापद – *किरियं अक्खायती आख्यातं किरियापदं*, सद्द॰ 3.811; *'किरियं आख्याति कथेती ति आख्यातं'*, सद्द॰ 2.326; – **तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं अभिहितकत्ता आख्यातेन कथितत्ता*, सद्द॰ 3.691; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *क्रियाभिधानता एवं आख्यातस्सेव लक्खणं*, सद्द॰ 1.25; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आख्याततो च नामपदतो च वचनस्स ... सेकारागमो होति*, सद्द॰ 3.842; – **ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *स्यादयो नामे, त्यादयो आख्याते*, सद्द॰ 3.642; – **सु** ब॰ व॰ – *अविभत्तिकनिद्देसो नामिकेसूपलब्भति, नाख्यातेसू ति विञ्ञेय्यं*, सद्द॰ 1.15.

आख्यातकण्ड पु॰, रू॰ सि॰ के छठे अध्याय का शीर्षक (ए॰ ग्रूनवेडेल द्वारा संपादित तथा 1883 ई॰ में बर्लिन से प्रकाशित).

आख्यातकप्प पु॰, **1.** क॰ व्या॰ के छठे अध्याय का शीर्षक, इसमें 408 से 525 तक संख्या वाले सूत्र अन्तर्भूत हैं; **2.** सद्द॰ के पच्चीसवें परिच्छेद का शीर्षक, सद्द॰ 3.811-844; – **स्मिं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो पनाख्यातकप्पस्मिं वित्थारेनागमिस्सतीति*, सद्द॰ 1.3.

आख्यातञ्ञू त्रि॰, [आख्यातज्ञ], आख्यात या क्रिया के प्रयोगों में कुशल – **हि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *धीरेहि आख्यातञ्ञूहि लक्खितं*, सद्द॰ 1.25.

आख्यातत्त नपुं॰, भाव॰ [आख्यातत्व], आख्यात होना, क्रियासूचक पद होना – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एत्था पि आख्यातत्तं विगच्छति*, सद्द॰ 3.831; – **त्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गहादितो यथारहं आख्यातत्ते नामत्ते च प्प-ण्हा*, सद्द॰ 3.825.

आख्यातपच्चय पु॰, तत्पु॰ स॰ [आख्यातप्रत्यय], क्रि॰ रू॰ बनाने वाले ति, न्ति आदि प्रत्यय तथा भू-आदि-गणों के विकरण-प्रत्यय – **या** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तत्रा पि आख्यातपच्चया दुविधा विकरणपच्चय-नोविकरणपच्चयवसेन*, सद्द॰ 1.2.

आख्यातपद नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आख्यातपद], क्रिया, काल, पुरुष, वचन एवं वाच्य के अर्थों को कहने वाला क्रियापद – **दं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *फुसति वेदयति विजानाती'ति एवमादिकं किरियापधानं आख्यातपदं*, नेत्ति॰ अट्ठ॰ 163; ... *विहरतीति एत्थ वीति उपसग्गपदं, हरतीति आख्यातपदन्ति* ..., म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प॰) 1(1).5; – **देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ पठमपुरिसो आख्यातपदेन तुल्याधिकरणे* ..., सद्द॰ 1.21.

आख्यातभाव पु॰, आख्यात का भाव॰ [आख्यातभाव], क्रियापद होने की अवस्था – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञासिकोण्डञ्ञो ति नामं, एत्थ हि आख्यातभावो अन्तरधायति*, सद्द॰ 3.831.

आख्यातविभत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आख्यातविभक्ति], क्रिया के कालों, पुरुषों, वचनों आदि को विभाजित करके प्रकाशित करने वाले प्रत्यय या विभक्ति-चिह्न, ति, न्ति आदि आख्यात-प्रत्यय – **यो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *दसधा आख्यातविभत्तियो ठपिता*, सद्द॰ 1.56.

आख्यातसद्द पु॰, तत्पु॰ स॰ [आख्यातशब्द], धातुओं से निष्पन्न तथा क्रिया आदि को कहने वाला शब्द – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भू धातुतो निप्फन्नाख्यातसद्दस्स नेव विसेसकरो*, सद्द॰ 1.4.

आख्यातसागर पु॰, तत्पु॰ स॰ [आख्यातसागर], क्रिया-पदों का सागर, अत्यधिक संख्या में क्रियापदों से परिपूर्ण – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आख्यातसागरमथज्जतनीतरङ्गं*, क॰ व्या॰ 3.1.

आख्याति आ +√ख्या का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आख्याति], कहता है, घोषणा करता है, विज्ञापित करता है – *तत्थ किरियं अक्खायतीति आख्यातं किरियापदं*, सद्द॰ 3.811; पाठा॰ अक्खायतीति.

आख्यातिक त्रि॰, [आख्यातिक], कालों, वाच्यों एवं पुरुषों का आख्यान या कथन करने वाला (क्रियापद) – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किरियालक्खणं आख्यातिकं अलिङ्गभेदं इति*, सद्द॰ 1.27; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्र आख्यातिकस्स किरियालक्खणत्तसूचिका त्यादयो विभत्तियो*, सद्द॰ 1.13; – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथा प्याख्यातिके तस्स तब्बोहारो निरुत्तियं*, सद्द॰ 1.21; – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कत्थचाख्यातिका होन्ति कत्थचि पन नामिका*, सद्द॰ 1.181.

आख्यातिकपद नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आख्यातिकपद], क्रियापद, कालों, वाच्यों एवं पुरुषों का अर्थ कहने वाला 'गच्छति' आदि पद – **दं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *चाख्यातिकपदं तिकारकं*, सद्द॰ 1.10; *आख्यातिकपदं नाम ... सकम्मकम्मकं* ..., सद्द॰ 1.12; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं ... आदिसु कत्थचि पनाख्यातिकपदतो*, सद्द॰ 2.511; – **दे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आख्यातिकपदे भावकारकवोहारो निरुत्तिनयं निस्साय गतो*, सद्द॰ 1.10; – **दानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तस्मा ञातीति आदीनि आख्यातिकपदानि दिट्ठानि येव*

होन्ति नयवसेन, सद्द॰ 2.351; – **दानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *असम्बन्धनीयत्ता आख्यातिकपदानं,* सद्द॰ 1.7.

आख्यान नपुं॰, आ +√ख्या से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आख्यान], कथन, विज्ञापन, संसूचन, उद्घोषणा – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चेतना सञ्ञानं आख्यानं कथनं,* सद्द॰ 2.542; *तं खो पनाति इत्थम्भूताख्यानत्थे उपयोगवचनं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.147.

आख्यानिका स्त्री॰, [आख्यानिका], ग्यारह वर्णमात्रा वाला एक अर्धसमवृत्त छन्द, जिसके प्रथम एवं तृतीय पादों में दो तगण, एक जगण तथा दो गुरु वर्ण हों तथा द्वितीय एवं चतुर्थ पादों में एक जगण, एक तगण, फिर एक जगण तथा दो गुरु वर्ण हों – *आख्यानिका ता विसमे जगा गो जता जगा गो तु समेथ पादे,* वुत्तो॰ 111.

आख्यायिका स्त्री॰, [आख्यायिका], कहानी, कथा, ऐतिहासिक कथा – *आख्यायिकोपलद्धत्था पबन्धकप्पना कथा,* अभि॰ प॰ 113.

आगच्छति आ +√गम का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आगच्छति], **शा॰ अ॰,** आता है, आ पहुंचता है, समीप में आ जाता है, वापस लौट कर आ जाता है – *किं नु खो महासमणो नागच्छतीति ?,* महाव॰ 33; – **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *कुतो च त्वं, भिक्खु, आगच्छसी'ति,* पारा॰ 227; दी॰ नि॰ 2.254; – **च्छामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *'नाहं, भन्ते, पादेनागच्छामि, रथेनाहं आगतोस्मी'ति,* मि॰ प॰ 23; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *नो चे आगच्छन्ति, अज्ज मे उपोसथोति अधिट्ठातब्बो,* महाव॰ 157; – **च्छाम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *याव मयं आगच्छाम, ताव ... इधेव वसाति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.3; – **च्छ / च्छाहि** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *'तं जीविता वोरोपेत्वा इमिना मग्गेन आगच्छा'ति,* चूळव॰ 329; *आगच्छाहीति वत्तब्बो,* महाव॰ 120; – **तु** प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"यस्सायस्मतो अत्थो सो आगच्छतू'ति,* महाव॰ 100, 117; *यो तस्स भगवतो धम्मं रोचेसि सो आगच्छतू'ति,* चूळव॰ 340; – **थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *'ते जीविता वोरोपेत्वा इमिना मग्गेन आगच्छथा'ति,* चूळव॰ 329; *"मम पच्छतो आगच्छथा'ति पुरतो अहोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.404; – **च्छेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *इध पुरिसो आगच्छेय्य उक्खित्तासिको,* म॰ नि॰ 2.46; – **च्छेय्यासि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *'त्वं तत्थ आगच्छेय्यासी'ति सङ्केतं कत्वा अगमासि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.359; – **च्छेय्यं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *गन्त्वा ... धम्मस्स सुणित्वा आगच्छेय्य'न्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.63; – **च्छेय्युं** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *ते विवदमाना तव सन्तिके आगच्छेय्युं,* मि॰ प॰ 46; – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अञ्ञतरो पुरिसो तस्स सकटसत्थस्स पिट्ठितो पिट्ठितो आगच्छन्तो येन आळारो कालामो तेनुपसङ्कमि,* दी॰ नि॰ 2.99; *सो एकदिवसं न्हानतित्थं न्हत्वा नत्वा आगच्छन्तो* ..., ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.3; – **न्तं** उपरिवत्, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अद्दसंसु खो ... दूरतोव आगच्छन्तं,* महाव॰ 12; – **न्तिया** उपरिवत्, स्त्री॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चण्डकाली ... भिक्खुनिया आगच्छन्तिया* ..., पाचि॰ 308; – **मानं** वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *धम्मं देसेन्तो तं आगच्छमानं अद्दस* ..., ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.392; – **माना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आगच्छमाना च ते भिक्खू अत्तनोव इद्धिया आगच्छिंसु,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.83; – **आगा / आग / आगमा / आगमि / आगच्छि / आगञ्छि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, वह आया, वापस आया, समीप में पहुंचा – *अनक्कितो ततो आगा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.142; *आगाति अम्हाकं गेहं आगतो,* तदे॰; *कुम्भीरो राजगहिको, सोपागा समितिं वनं,* दी॰ नि॰ 2.188; *यदा च सरसम्पन्नो, मोरो बावेरुमागमा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.108; *"अत्थाय वत मे बुद्धो, वासायाळविमागमा,* सु॰ नि॰ 193; *"सङ्घिपित्वान तं मग्गं, खिप्पं सावत्थिमागमी'ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.12; *अत्थाय वत मे अज्ज, इधागच्छि रथेसभो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.336; *आगञ्छि ते सन्तिके नागराजा,* सु॰ नि॰ 381; – **आगा / आगमा / आगमि** अद्य॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *समुग्गहीतेसु पमोहमागा,* सु॰ नि॰ 847; *इधागमा ब्रह्मे तदिङ्घ ब्रूही'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.303; *मा त्वं नलाटेन मच्चुं गहेत्वा आगमि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.219; – **आगमं / आगमासिं / आगमिं / आगच्छिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *कट्ठी वेचिकिच्छी आगमं,* सु॰ नि॰ 515 *ओघातिगं पुट्ठुमकाममागमं,* सु॰ नि॰ 1102; *अकाममागमन्ति निक्कामं भगवन्तं पुच्छितुं आगतोम्हि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.290; ... नयिमं लोकं पुनागमासिं, अ॰ नि॰ 2(2).227; एकाहं धारयित्वान, भवनं पुनरागमिं, अप॰ 2.99; तम्हा काया चवित्वान, आगच्छिं तिदसं पुरं, अप॰ 1.286; – **आगू / आगुं / आगमुं / आगमंसु / आगच्छुं / आगच्छिंसु** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *यामुना धतरट्ठा च, आगू नागा यसस्सिनो,* दी॰ नि॰ 2.190; *अथागुं नागसा नागा,* तदे॰; *अथागमुं सोळस भोजपुत्ता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.166; *अथागमुन्ति ... मम सन्तिकं आगता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.167-168; *सट्ठिसहस्सा राजानो ... सन्तिकं आगमंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 7.273; *सब्बे जना समागम्म, आगच्छुं मम सन्तिकं,* अप॰ 2.45; ... *"मयं मागण्डियाय आतका'ति*

आगच्छिंसु, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.127; – **आगमित्थ** अद्य॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *"रोहिनि, कस्मा नागमित्था"ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.174; (वचन-विपर्यय); – **आगम्ह / आगम्हा / आगमम्ह / आगमिम्ह** अद्य॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *यं तं सरणमागम्ह, इतो अट्ठमि चक्खुम,* सु॰ नि॰ 575; *न रक्खसीनं वसमागमिम्हसे,* जा॰ अट्ठ॰ 1.449; – **मिस्सति / मेस्सति / च्छिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यो इमाहि चतूहि दिसाहि आगमिस्सति समणो वा ...,* दी॰ नि॰ 1.89; *जातकापिस्स 'पच्छतो आगमिस्सती'ति सञ्जाय यानं पाजेन्ता गमिंसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.354; *सो च मया भगवा निमन्तितो इमिना मग्गेन आगच्छिस्सती'ति,* चूळव॰ 286; – **स्ससि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *मञ्ञे ओक्कन्तसत्तं ... माताय आगमिस्ससि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.252; – **मिस्सं / च्छिस्सामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *न चापि ते अस्सममागमिस्सं,* पारा॰ 226; *तेन सद्धिं आगच्छिस्सामि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.9; *पत्तचीवरं पटिच्छापेत्वा आगच्छिस्सामी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.408; – **मिस्सन्ति / च्छिस्सन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सचेपि एत्तो भिय्यो, आगमिस्सन्ति इत्थियो,* स॰ नि॰ 1(1).215; *कथञ्हि नाम भदन्ता मया पहिते न आगच्छिस्सन्ति,* महाव॰ 183; – **मिस्साम / च्छिस्साम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *मयं पच्छतो सणिकं आगमिस्सामा'ति ... अहोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.354; – **न्तुं / च्छितुं** निमि॰ कृ॰ – *अचेलो ... मम सम्मुखीभावं आगन्तुं ...,* दी॰ नि॰ 3.9; *न इमं पदेसं अरहति आगच्छितुन्ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.140; – **आगम्म / आगन्त्वा / आगन्त्वान** पू॰ का॰ कृ॰ – *दिवा च आगन्त्वा अतिवेलचारी,* स॰ नि॰ 1(1).232; *... येन मे आगन्त्वा आरोचेय्याथ,* दी॰ नि॰ 2.240; *गामा अरञ्ञमागम्म, ततो गेहं उपाविसिं,* थेरगा॰ 34; *द्वारबाहासु तिट्ठन्ति, आगन्त्वान सकं घरं,* खु॰ पा॰ 7.1; – **गन्तब्ब / गमनीय** सं॰ कृ॰ – *न, भिक्खवे, एकतो आगन्तब्बं,* महाव॰ 120; *आगमनियेन कथिते पन सुञ्ञतो वा फस्सो ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.137; **ला॰ अ॰,** (किसी स्थिति को या अवस्था को) प्राप्त करता है, घटित होता है, जन्म को प्राप्त करता है, आ पहुंचता है – *यं अञ्ञतरो सत्तो तम्हा काया चवित्वा इत्थत्तं आगच्छति,* दी॰ नि॰ 1.16; ... *मे तं भयभेरवं आगच्छति,* म॰ नि॰ 1.27; *पुरा मं सो धम्मो आगच्छति अनिट्ठो अकन्तो अमनापो ...,* अ॰ नि॰ 2(1).96; – **ते** उपरिवत्, आत्मने॰ – *पुरा आगच्छते एतं, अनागतं महब्भयं,* थेरगा॰ 978; – **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सचे त्वं सत्तरत्तेन नागच्छसि ममन्तिके,* जा॰ अट्ठ॰ 6.252; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *ततो चुता इत्थत्तं आगच्छन्ति,* अ॰ नि॰ 2(1).28; – **थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *देवानमागच्छथ पारिचरियं,* दी॰ नि॰ 2.201; – **च्छेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *न च, वत, नो जाति आगच्छेय्या'ति,* म॰ नि॰ 3.299; – **मेय्यासि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यत्थ पपतेय्यासि तत्थेव मरणं आगमेय्यासि,* स॰ नि॰ 3(2).427; – **च्छेय्युं** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *"न च वत नो सोकपरिदेवदुक्खदोमनस्सुपायासधम्मा आगच्छेय्यु"न्ति,* दी॰ नि॰ 2.230; – **माना** वर्त॰ कृ॰, स्त्री॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आगच्छमाना कस्स आगता'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.139; – **गमा / गमासि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – ..., *मा कञ्चि पापमागमा'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.121; *मा कञ्चि पापमागमा ति एतेसु कञ्चि एकं सत्तम्पि पापं लामकं दुक्खं मा आगमा, मा आगच्छतु, मा पापुणातु ...,* तदे॰; *ततो चुताहं वेदेह, वज्जीसु कुलमागमा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.126; *"तस्मा अहंपोसथं पालयामि, रागो ममं मा पुनरागमासी"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.294; *धातुयो दुक्खतो दिस्वा, मा जातिं पुनरागमि,* थेरीगा॰ 14; – **गमिम्ह** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *पुनो सब्बे मनुस्सत्तं, अगमिम्ह ततो चुता,* अप॰ 2.117; पाठा॰ अगमिम्ह – **गमिस्सति / गच्छिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आगमिस्सति मे पापं, आगमिस्सति मे भयं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.370; ... *भयन्ति चित्तुत्रासभयम्पि मे आगमिस्सति, न सक्का नागन्तुं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.370; *एकच्चो"मनापा नु खो मे यागु आगच्छिस्सति मनापं अन्तरखज्जक"न्ति वा तण्हापरितस्सनाय परितस्सति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.276; – **मिस्सन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *"इमस्सापि मे अत्तभावस्स एवमेव जराब्याधिमरणानि आगमिस्सन्ती"ति अत्तभावं अनिच्चतो पस्सि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.64; – **न्तुं** निमि॰ कृ॰ – *भयन्ति चित्तुत्रासभयम्पि मे आगमिस्सति, न सक्का नागन्तुं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.370; – **न्त्वा / न्त्वान** पू॰ का॰ कृ॰ – *देवलोका इधागन्त्वा, मातुकुच्छिं उपागते,* अप॰ 1.359; *आगन्त्वान मनुस्सत्तं, सोणो नाम भविस्सति,* अप॰ 1.93.

आगत[1] **शा॰ अ॰ 1.** त्रि॰, आ +√गम का भू॰ क॰ कृ॰ [आगत], वह, जो कहीं पर आ चुका है या पहुंच चुका है, पहुंचा हुआ, आ चुका, रास्ता पार कर चुका – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कतमेन त्वं, महासमण, मग्गेन आगतो,* महाव॰ 35; *त्यस्सु यदा मं जानन्ति, सक्को'देवानमागतो,* दी॰ नि॰ 2.212; *अप्पकिलमथेन च अहं, भन्ते, अद्धानं आगतो,* चूळव॰ 24; *सोहं सक्को सहस्सक्खो, आगतोस्मि*

तवन्तिके, जा॰ अट्ठ॰ 4.288; **शा॰ अ॰ 2.** नपुं॰, आगमन, आना – **तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"आगच्छन्तु भिक्खू, इच्छामि भिक्खूनं आगत"न्ति,* महाव॰ 187; *तत्थ स्वागतन्ति सुआगमनं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.162; – **कारण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आगमनकारण], आगमन का कारण – ... *अत्तनो आगतकारणं कथेत्वा ...,* मि॰ प॰ 16; – **नन्दन** त्रि॰, वह, जिसका आगमन आनन्ददायक हो – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तादिसो त्वं आगतनन्दनो गमनसोचनो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.162; – **पटिपाटी** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, आगमन का क्रम – **टिया** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"कथं नु खो चीवर पटिवीसो दातब्बो, आगतपटिपाटिया नु खो उदाहु यथा वुड्ड"न्ति,* महाव॰ 370; – **वेला** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आगमनवेला], आ पहुंचने का समय – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं सन्तेपि यथा बोधिमण्डे मारो आगतवेलायमेव निवत्तो ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.283; स॰ उ॰ प॰ के रूप में द्रष्ट॰, सा॰, स्वा॰, दुरा॰, अदुरा॰ के अन्त॰; **शा॰ अ॰ 3.** त्रि॰, वापस आया हुआ, प्रत्यावर्तित – **तो** पु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"सोहं एतादिसं हित्वा, पुञ्ञायम्हि इधागतो ...",* जा॰ अट्ठ॰ 4.321; – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चिरप्पवासिं पुरिसं, दूरतो सोत्थिमागतं,* ध॰ प॰ 219; **ला॰ अ॰ 1.** यहां पर विद्यमान, इस समय तक यहां पर पहुंचा हुआ, किसी विशेष स्थिति या दशा में पड़ा हुआ, अपने ऊपर आ पड़ा – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वे पुग्गला बाला – यो च अनागतं भारं वहति, यो च आगतं भारं न वहति,* परि॰ 240; *आगतं भारं न वहतीति थेरो थेरकिच्चं न करोति,* परि॰ अट्ठ॰ 163; *थेरो समानो ... आगतं भारं न वहति नाम,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.56; – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आगतो इमं सद्धम्म'न्ति,* म॰ नि॰ 1.59; *अधुनागतो इमं धम्मविनयं ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.54; – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कथं पनिमे विहङ्गा, तव हत्थत्तमागता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.3; **ला॰ अ॰ 2.** पुनर्जन्म को प्राप्त – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यस्स मग्गं न जानासि, आगतस्स गतस्स वा,* थेरगा॰ 127; 128; – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दीपङ्करस्स ... पादमूले ... अभिनीहारसमिद्धितो पभुति तथागतो ... अमुञ्चन्तोयेव आगतो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).120; *अथ किञ्चरहि इधागतो ?,* स॰ नि॰ 1(1).176; **ला॰ अ॰ 3.** किसी पर आ पड़ा, घटित, किसी के द्वारा प्राप्त किया गया – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तप्पक्खतो हि भयमागतं ममं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.73; ... *इच्चस्स एवमागतं होति,* म॰ नि॰ 3.339; – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आगच्छमाना कस्स आगता'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.139; स॰ उ॰ प॰ के रूप में उञ्छापत्ता॰ एवं उरस्मा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; **ला॰ अ॰ 4.** परम्परा से चला आ रहा, पारम्परिक, समुद्घाटित या प्रकाशित, कण्ठस्थ किया हुआ, समझ में आया हुआ, पूर्ण रूप से जाना हुआ – **तानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तीणि पिटकानि सह पटिसम्भिदाहियेव आगतानि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.141; – **तं** ए॰ व॰ – *इमस्स नेव सुत्तं आगतं होति, नो सुत्तविभङ्गो,* चूळव॰ 208; *तस्स पब्बज्जाविधानं पाळियं आगतमेव,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.236; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अधुना॰, अभिनवा॰, काला॰, देसा॰, अन्वया॰, कुलवंसा॰, परम्परा॰, अनुक्कमा॰, सुत्ता॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **ठान** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आगतस्थान], परम्परा में प्राप्त स्थल या सन्दर्भ – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ते भिक्खू देसनाय नेव आगतट्ठानं, न गतट्ठानं अद्दसंसु,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.229; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"चतूसु मग्गेसु ञाण"न्ति आगतट्ठाने मग्गो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).59.

आगतपाक पु॰, [आगतपाक], एक दानदाता, जो आने वाले अतिथियों को उनकी रुचि के अनुसार भोजनों का दान दिया करता था – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एको अत्तनो दानग्गे आगतागतजनं पुच्छित्वा यागुखज्जकादीसु यस्स यं पटिभाति, तस्स तं अदासि, तस्स तेनेव कारणेन आगतपाकोति नामं जातं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.194-95.

आगतपुब्ब त्रि॰, ब॰ स॰ [आगतपूर्व], वह स्थान, जहां कोई पहले भी आ चुका है, पूर्वकाल में देखा जा चुका स्थान – **ब्बा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आगतपुब्बा नु खो, भन्ते, तेन अय्येन सावत्थी'ति ?,* महाव॰ 384.

आगतफल त्रि॰, ब॰ स॰ [आगतफल], वह, जिसने पहले ही फल का लाभ पा लिया है, फल को प्राप्त कर चुका / चुकी, आर्यफल को प्राप्त कर चुका – **ला** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सद्धेय्यवचसा नाम आगतफला अभिसमेताविनी विञ्ञातसासना,* पारा॰ 294; *तत्थ आगतं फलं अस्साति आगतफला पटिलद्धसोतापत्तिफलाति अत्थो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.195; – **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो सो, महानाम, अरियसावको आगतफलो विञ्ञातसासनो,* अ॰ नि॰ 2(2).6; *अरियफलं अस्स आगतन्ति आगतफलो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.91.

आगतमग्गाभिमुख त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आगतमार्गाभिमुख], जिस मार्ग से होकर आया है उसी की ओर मुड़ा हुआ, पार

किए हुए मार्ग की ओर अभिमुख – **खं** पु., द्वि. वि., ए. व. – ... *रथं निवत्तापेत्वा आगतमग्गाभिमुखं कत्वा* ..., जा. अट्ठ. 7.367; – **खी** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *सा इत्थिमायाकुसलताय तापसं अनुपसङ्कमित्वा आगतमग्गाभिमुखी पायासि,* जा. अट्ठ. 5.152; – **नि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – ... *रथसहस्सानि आगतमग्गाभिमुखानेव ठपापेत्वा* ..., जा. अट्ठ. 7.365.

आगतविस त्रि., ब. स. [आगतविष], तीव्र विष वाला (सर्प), चार प्रकार के तेज विष वाले सर्पों या उनके समान मनुष्यों में से एक, जिसका विष तुरन्त आ जाता है या चढ़ जाता है परन्तु लम्बे समय तक पीड़ित नहीं करता – **सं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *तत्थ आसीविसम्पि मं सन्तन्ति मं आगतविसं समानं,* जा. अट्ठ. 2.200; – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आगतविसो न घोरविसो, घोरविसो न आगतविसो, आगतविसो च घोरविसो च, नेवागतविसो न घोरविसो, ... चत्तारो आसीविसा,* अ. नि. 1(2).127; ... *आसीविसो ताव यस्स विसं आसुं आगच्छति सीघं फरति, घोरं पन न होति, चिरकालं न पीळेति* – अयं आगतविसो नो घोरविसो ..., प. प. अट्ठ. 74; *दसमे आगतविसो न घोरविसोति यस्स विसं आगच्छति, घोरं पन न होति, चिरकालं न पीळेति,* अ. नि. अट्ठ. 2.323.

आगतागम त्रि., ब. स. [आगतागम], आगमों का पूर्ण ज्ञान पा चुका व्यक्ति, आगमों में पूर्णरूप से निष्णात – **मो** पु., प्र. वि., ए. व. – *"एसो खो, महाराज, उपासको बहुस्सुतो आगतागमो कामेसु वीतरागो"* ति, पाचि. 209; – **मा** ब. व. – *आगतागमाति दीघादीसु यो कोचि आगमो आगतो एतेसन्ति आगतागमा,* अ. नि. अट्ठ. 3.121; ... *पञ्च निकाया पञ्च आगमा नाम, एतेसु आगमेसु येसं एकोपि आगमो आगतो पगुणो पवत्तितो, ते आगतागमा नाम,* अ. नि. अट्ठ. 2.89; ... *बहुस्सुता आगतागमा धम्मधरा विनयधरा मातिकाधरा* ..., दी. नि. 2.95.

आगति स्त्री., सदा गति के साथ ही प्रयुक्त [आगति], **शा. अ.**, आगमन, आने की क्रिया – **तिं** द्वि. वि., ए. व. – ... *न च नेसं जानाम आगतिं वा गतिं वा,* म. नि. 1.211; *आगतिं वा गतिं वाति इमिना नाम ठानेन आगच्छन्ति, अमुत्र गच्छन्तीति इदं नेसं न जानाम,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).65; **ला. अ.**, पुनर्जन्म, भवचक्र में आगमन (मृत्यु अर्थ वाले गति के साथ) – ..., *अङ्गीरसस्स गतिं आगतिं वा,* पे. व. 279; *सो मं अवेदी गतिमागतिञ्च,* जा. अट्ठ. 4.295; *सो मं अवेदीति सो मम इदानि गन्तब्बट्ठानञ्च गतट्ठानञ्च ... सब्बं मं ... कथेसीति अत्थो,* जा. अट्ठ. 4.296; – **ति** प्र. वि., ए. व. – *अथ खो यावता सत्तानं आगति गति चुति उपपत्ति सब्बेसं सत्तानं जराधम्मं जीरति,* अ. नि. 2(1).51; *नतिया असति आगतिगति न होति,* म. नि. 3.319; – **गति** स्त्री., द्व. स. [आगतिगति], **शा. अ.**, आगमन एवं गमन, **ला. अ.**, जन्म एवं मृत्यु – **ति** प्र. वि., ए. व. – *नतिया असति आगतिगति न होति,* उदा. 165; *आगतिगति न होतीति पटिसन्धिवसेन इध आगति आगमनं चुतिवसेन गति इतो परलोकगमनं पेच्चभावो न होति न पवत्तति,* उदा. अट्ठ. 323; – **या** सप्त. वि., ए. व. – *आगतिगतिया असति चुतूपपातो न होति,* उदा. 165.

आगद / आगदन पु. / नपुं., आ +√गद से व्यु., क्रि. ना. [आगद], स्पष्ट रूप से बोला गया वचन, वाणी, कथन, तथागत शब्द के आठ प्रकार के निर्वचनों में से छट्ठे निर्वचन के सन्दर्भ में प्रयुक्त – **दो** पु., प्र. वि., ए. व. – *गदत्थो हेत्थ गतसद्दो, एवं तथवादिताय तथागतो, अपि च आगदनं आगदो, वचनन्ति अत्थो,* दी. नि. अट्ठ. 1.62; *यञ्च तथेव होति, तस्स गदनतो च "तथागतो"ति वुच्चति,* खु. पा. अट्ठ. 155; **टि.** – अट्ठ. के अनुसार तथागत के उ. प. में प्रयुक्त 'गत' शब्द 'गद' का अर्थ प्रकाशित करता है, फलस्वरूप जो धर्म वस्तुतः जैसा है, उसे उसी रूप में बोलने वाला ही 'तथागत' (तथागद) कहलाता है.

आगन्तब्बता / आगन्तब्बट्ठानता स्त्री., निब्बान के सन्दर्भ में प्रयुक्त, आ +√गम के सं. कृ. का भाव. [आगन्तव्यत्व, नपुं. / आगन्तव्यस्थानत्व, नपुं.], **शा. अ.**, आगमन-योग्य दशा में होना, **ला. अ.**, संसार में आने योग्य अर्थात् जन्म ग्रहण करने योग्य रहना – **य** तृ. वि., ए. व. – *एवं तस्मिम्पि आयतने निब्बाने कुतोचि आगतिं आगमनं नेव वदामि आगन्तब्बट्ठानताय अभावतो,* उदा. अट्ठ. 318; *तम्पि आयतनं गामन्तरतो गामन्तरं विय न आगन्तब्बताय न आगति,* उदा. अट्ठ. 318.

आगन्ता आ +√गम का क. ना., पु., प्र. वि., ए. व. [आगन्ता], **शा. अ.**, आगे आने वाला, आ पहुंचने वाला – **ता** पु., प्र. वि., ए. व. – *इदानि सो इधागन्त्वा, अतिथी युत्तसेवको,* जा. अट्ठ. 2.345; अप. आगन्त्वा; *इदानि कतिपाहस्सेव सो ... इध अतिथि हुत्वा आगतो भविस्सति,* तदे.; **ला. अ.**, पुनः आने वाला, पुनर्जन्म ग्रहण करने वाला – *बह्मा आगन्ता इत्थत्तं, यदि वा अनागन्ता*

इत्थत्त'न्ति, म॰ नि॰ 2.339; – **रो** ब॰ व॰ – ... *देवा अनागन्तारो इत्थत्तं,* म॰ नि॰ 2.338.

आगन्तु पु॰, केवल गाथाओं में ही प्राप्त, प्रायः आगन्तुक शब्द द्वारा व्याख्यात, **क.** नया-नया आने वाला, अपरिचित, अतिथि – *पुमे अतिथि आगन्तु, पाहुना वेसिकाप्यथ,* अभि॰ प॰ 424; – **न्तुं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं यो सं निरंकत्वा, आगन्तुं कुरुते पियं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.355; ... *यो सकं पोराणं अज्झत्तिकं जनं नीहरित्वा पहाय ... आगन्तुकं पियं करोति* ..., जा॰ अट्ठ॰ 3.356; **ख.** बाहरी, स्थूल, आकस्मिक – **ना** पु॰/नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आगन्तुना दुक्खसुखेन फुट्ठो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.186; *आगन्तुनाति न अज्झत्तिकेन,* तदे॰.

आगन्तुक त्रि॰, आगन्तु से व्यु॰ [आगन्तुक], **शा॰ अ॰,** अकस्मात् या अपने आप आ पहुंचने वाला, बिना बुलाए आने वाला, भूला भटका – *एकस्मि आगन्तुकमनुस्सानं वसनट्ठानं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.159; **ला॰ अ॰1.** नवागन्तुक अपरिचित, अतिथि, अभ्यागत – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अथस्स ... गतस्स "आगन्तुका लद्धसक्कारा युज्झिस्सन्ती"ति पोराणकयोधा न युज्झिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 3.354; *अतिथि नो ते होन्तीति ते अम्हाकं आगन्तुका, नवका पाहुनका होन्तीति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.232; *दुविधा हि आगन्तुका अतिथि अब्भागतोति,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 18; – **कागार/घर** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आगन्तुकागार], अतिथियों या यात्रियों के ठहरने का स्थान, यात्री-निवास, मुसाफिर-खाना, धर्मशाला – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथापि, भिक्खवे, आगन्तुकागारं,* स॰ नि॰ 2(2).215; *आगन्तुकागारन्ति पुञ्ञत्थिकेहि नगरमज्झे कतं आगन्तुकघरं, यत्थ राजराजमहामत्तेहिपि सक्का होति निवासं उपगन्तुं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.173; – **दण्डक** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आगन्तुकदण्डक], यात्रियों का डण्डा या छड़ी, चलने-फिरने के समय प्रयुक्त छड़ी – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *महापातिप्पमाणं पुप्फं आगन्तुकदण्डके ठपेत्वा छत्तं विय गहेत्वा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.170; – **पुरिस** पु॰, कर्म॰ स॰ [अगन्तुकपुरुष], अकस्मात् आ गया पुरुष, पथिक, राहगीर – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा च आगन्तुकपुरिसो अगतपुब्बं पदेसं गतो ...,* विभ॰ अट्ठ॰ 22; *तं पुब्बे उप्पन्नानं आवज्जनादीनं गेहभूते चक्खुद्वारे आगन्तुकपुरिसो विय होति,* विभ॰ अट्ठ॰ 337; – **भाव** पु॰, [आगन्तुकभाव], अकस्मात् आ जाने की अवस्था, अपने आप पहुंच जाना – ... *एवं 'आगन्तुकभाववसेन' असम्मोहसम्पजञ्ञं वेदितब्बं,* विभ॰ अट्ठ॰ 337; स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.224; **ला॰ अ॰ 2.** (विनय के विशेष सन्दर्भ में) किसी विहार में आ पहुंचने वाला वह भिक्षु जो दूसरी सीमा में रहता है, तथा जो आवासिक, नेवासिक या गामिक भिक्षु नहीं है – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आगन्त्वा गच्छती ति आगन्तुको (भिक्खु),* क॰ व्या॰ 571; – **का** ब॰ व॰ – *आगन्तुका भिक्खू उज्झायन्ति खिय्यन्ति विपाचेन्ति,* महाव॰ 147, 148; *ते आगन्तुका भिक्खू नेवासिकेहि भिक्खूहि सद्धिं पटिसम्मोदमाना ...,* म॰ नि॰ 2.129; – **कस्स** पु॰, च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आगन्तुकस्स दानं देति, गमिकस्स दानं देति, गिलानस्स दानं देति ...,* अ॰ नि॰ 2(1).36; – **कानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *आवासिका भिक्खू पस्सन्ति आगन्तुकानं ...,* महाव॰ 173; – **किलमथो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, तत्पु॰ स॰ [आगन्तुकक्लमथ], मार्ग से चल कर आने में प्राप्त कष्ट या थकावट – *यो खो इमेसं आगन्तुकानं भिक्खूनं आगन्तुककिलमथो सो पटिप्पस्सद्धो,* महाव॰ 407; – **थेर** पु॰, कर्म॰ स॰ [आगन्तुकस्थविर], दूसरी सीमा से आने वाला अर्थात् उस विहार में निवास न करने वाला स्थविर – **रानं** च॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ते आगन्तुकथेरानं ओवादे ठत्वा सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं पापुणन्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.161; – **दान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आगन्तुकदान], विहार के बाहर से आने वाले भिक्षुओं को दिया जाने वाला दान – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राजगहवासिनो द्वेपि तयोपि बहूपि एकतो हुत्वा आगन्तुकदानं अदंसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.46; पे॰ व॰ अट्ठ॰ 46; – **नानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सत्तमे आतिथेय्यानीति आगन्तुकदानानि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.62; – **पटिसन्थार** पु॰, तत्पु॰ स॰, आने वाले भिक्षु या अतिथि का सौहार्दपूर्ण स्वागत – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आगन्तुकं पन भिक्खुं दिस्वा आगन्तुकपटिसन्थारो कातब्बोव,* विसुद्धि॰ 1.180; – **भत्त** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, विहार में बाहर से आए हुए भिक्षुओं के लिए दान में दिया गया भोजन – **त्तं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन पन पिण्डपातिकेन "सङ्घभत्तं, उद्देसभत्तं ... आगन्तुकभत्तं ... वारकभत्त"न्ति एतानि चुद्दस भत्तानि न सादितब्बानि,* विसुद्धि॰ 1.63; – **त्तं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्छामहं, भन्ते, सङ्घस्स यावजीवं वस्सिकसाटिकं दातुं, आगन्तुकभत्तं दातुं, गमिकभत्तं दातुं,* महाव॰ 382; *'अधिवासेन्तु मे, भन्ते, थेरा स्वातनाय आगन्तुकभत्त'न्ति,* चूळव॰ 35; – **महाथेर** पु॰, कर्म॰ स॰ [आगन्तुकमहास्थविर], विहार में बाहर से आया हुआ महास्थविर, बाहर से आया हुआ वरिष्ठ सम्माननीय भिक्षु – **रा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आवासिका मयं एत्थुप्पन्नं लाभं न लभाम, निच्चं आगन्तुकमहाथेराव लभन्ति,* चूळव॰

अट्ठ. 65; – **वत्त** नपुं., कर्म. स. [आगन्तुकव्रत], बाहर से आने वाले भिक्षुओं के आचरण के लिए निर्धारित विनय-नियम – **त्तं** प्र. वि., ए. व. – *वस्सावासे पन अत्थि आगन्तुकवत्तं, अत्थि आवासिकवत्तं,* चूळव. अट्ठ. 67; *इदं आगन्तुकवत्तं नाम जानितब्बं,* जा. अट्ठ. 3.426; – **विसय** पु., कर्म. स. [आगन्तुकविषय], आनुषङ्गिक या गौण रूप से उपस्थित विषय, आचरण में अव्यवहृत विषय – **येन** तृ. वि., ए. व. – *एवमेव आचिण्णविसये तस्स रागं आगन्तुकविसयेन नीहरित्वा ...,* उदा. अट्ठ. 139; – **साला** स्त्री., तत्पु. स. [आगन्तुकशाला], बाहर से आने वालों या राहगीरों के विश्राम के लिए निर्मित आवास, पान्थ-निवास, धर्मशाला, मुसाफिर-खाना – **यो** द्वि. वि., ब. व. – *आगन्तुकानमत्थाय आरामे द्वादसापि च तिंसागन्तुकसालायो द्वे सतं चेव कारयि,* चू. वं. 79.20; *तथागन्तुकसालायो एकपञ्ञासमेव च,* चू. वं. 79.22; *तथागन्तुकसालायो सत्तासीतिं अकारयि,* चू. वं. 79.63; **ला. अ. 3.** त्रि., बाह्य, अतिरिक्त, आकस्मिक, प्रासङ्गिक या गौणरूप से प्राप्त – **केहि** पु., तृ. वि., ब. व. – *पभस्सरमिदं, भिक्खवे, चित्तं, तञ्च खो आगन्तुकेहि उपक्किलेसेहि उपक्किलिट्ठं,* अ. नि. 1(1).13; – **कथा** स्त्री., कर्म. स. [आगन्तुककथा], प्रसङ्ग-प्राप्त विषय या मुख्य विषय से हटकर कही जा रही कोई दूसरी बात, अप्रासङ्गिक बात – **थं** द्वि. वि., ए. व. – *बहिद्धा कथं अपनामेस्सतीति बहिद्धा अञ्ञं आगन्तुककथं आहरन्तो पुरिमकथं अपनामेस्सति,* अ. नि. अट्ठ. 2.174; *एवं आगन्तुककथावसेन बहिद्धा कथं अपनामेतीति वेदितब्बं,* अ. नि. अट्ठ. 2.181; – **पट्ट** पु., कर्म स., चीवर को सुसज्जित करने हेतु ऊपर से लगाई गई पट्टी – **ट्टं** द्वि. वि., ए. व. – *चीवरमण्डनत्थाय नानासुत्तकेहि सतपदीसदिसं सिब्बन्ता आगन्तुकपट्टं ठपेन्ति,* पारा. अट्ठ. 1.232; – **भवङ्ग** नपुं., कर्म. स. [आगन्तुकभवाङ्ग], भवङ्गचित्त का एक प्रभेद, कामावचरभूमि के तृतीय कुशलचित्त के जवन-क्षण का असदृश विपाकचित्त – **ङ्गं** प्र. वि., ए. व. – *पटिसन्धिचित्तेन असदिसत्ता 'आगन्तुकभवङ्ग'न्ति च पुरिमनयेनेव 'तदारम्मण'न्ति च,* ध. स. अट्ठ. 308; *इदम्पि वुत्तनयेनेव, 'आगन्तुकभवङ्गं' 'तदारम्मण'न्ति च द्वे नामानि लभति,* तदे.; *सन्धिया असमानत्ता, द्वे नामानिस्स लब्भरे, "आगन्तुकभवङ्ग"न्ति, "तदारम्मणक"न्ति च,* अभि. अव. 394; **विशेष अर्थ** द्रष्ट. भवङ्ग के अन्त.; – **मल** पु., कर्म. स. [आगन्तुकमल], बाहर से आ जाने वाला मैल, ऊपरी मैल – **लेहि** तृ. वि., ब. व. – *वत्थस्स आगन्तुकमलेहि किलिट्ठभावो विय चित्तस्स रागादिमलेहि संकिलिट्ठभावो,* उदा. अट्ठ. 231; – **रज** पु./नपुं., कर्म. स. [आगन्तुकरजस्], बाहर से आई हुई धूल या गन्दगी, बाहर से आई हुई मलिनता – **जं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *रजन्ति आगन्तुकरजं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).379; *रजोति आगन्तुकरजं,* बु. वं. अट्ठ. 127.

आगन्तुकता स्त्री., भाव., आगन्तुक होने की अवस्था – **य** तृ. वि., ए. व. – ... *पच्चयवेकल्लताय आगन्तुकताय च रूपं न समुट्ठापेति,* विभ. अट्ठ. 22; ... *आगन्तुकन्ति अत्तनो आगन्तुकतायपि रूपं न समुट्ठापेति,* विभ. अट्ठ. 22; – **सुत्त** नपुं., स.नि. 3(1) के बलकरणीयवग्गो के 11वें सुत्त का शीर्षक, स.नि. 3.(1), 62-63.

आगन्त्वा द्रष्ट. आगच्छति के अन्त.

आगम पु., [आगम], **शा. अ.** आगमन, आ पहुंचना, प्राप्ति, उपलब्धि, पहुंच – **मो** प्र. वि., ए. व. – *"दहरस्स युविनो चापि, आगमो च न विज्जति,* जा. अट्ठ. 4.95; *चरेय्य खीरमत्तोव, नत्थि मच्चुस्स आगमो'ति,* स. नि. 1(1).128; *नत्थि ततोनिदानं पापं, नत्थि पापस्स आगमो,* दी. नि. 1.46; म. नि. 2.194; *ताहि सद्धिं रमन्तानं कथं दुक्खागमो सिया,* सद्धम्मो. 249; – **माय** च. वि., ए. व. – *तस्मा न सङ्के मरणागमाया'ति,* जा. अट्ठ. 7.20; *तत्थ मरणागमायाति मरणस्स आगमाय,* तदे.; *सचे च जञ्ञा अविसय्हमत्तनो, न ते हि मय्हं सुखागमाय,* जा. अट्ठ. 4.202; **विशेष अर्थ क.** वापस लौटाना, प्रत्यावर्तन, ऋण की वापसी, कर्ज का भुगतान – **मो** प्र. वि., ए. व. – *न पण्डिता तस्मिं इणं ददन्ति, न हि आगमो होति तथाविधम्हा,* जा. अट्ठ. 7.135; – **मं** द्वि. वि., ए. व. – *अक्कोसति यथाकामं, आगमञ्चस्स इच्छति,* जा. अट्ठ. 6.206; – **मे** सप्त. वि., ए. व. – *यदि पनाय्या आगमे जुण्हे वस्सं उपगच्छेय्युन्ति,* महाव. 182; **विशेष अर्थ ख.** जन्म, उत्पत्ति, मूल, किसी विशिष्ट धार्मिक परम्परा से सम्बद्ध शास्त्र या शाखा, परम्परागत धर्म-ग्रन्थ या सिद्धान्त, परम्परा, धार्मिक विषयों का ज्ञान, शास्त्र कुशलता – ... *न आगमो पुच्छितब्बो,* परि. 311; *न आगमोति "दीघभाणकोसि त्वं मज्झिमभाणको"ति एवं आगमो न पुच्छितब्बो,* परि. अट्ठ. 209; *अनुस्सवा वुड्ढतो आगमा वा,* जा. अट्ठ. 4.399; *को दीघरत्तं सिप्पाचरियकुलं पयिरुपासित्वा आगमतो पयोगतो च हत्थिसिप्पादीसु किं सिप्पं सिक्खि,* उदा. अट्ठ. 165; ... *आगमो नाम अन्तमसो*

ओपम्मवग्गमत्तस्सपि बुद्धवचनस्स परियापुणनं, विसुद्धि॰ 2.69; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अप्पा॰, तक्का॰, विदिता॰, सुगता॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **धर** त्रि॰, [बौ॰ सं॰ आगमधर], केवल आगमों (शास्त्रों या पिटकों) का विशेषज्ञ – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"सीलवा लज्जी कुक्कुच्चको बहुस्सुतो आगमधरो वंसानुरक्खको"ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.228; – **रा** ब॰ व॰ – *अथागमधरा थेरा दीपे'स्मिं विरला इति,* चू॰ वं॰ 84.26; **विशेष अर्थ ग.** धर्म-ग्रन्थ, पिटक, पांच निकाय – **मो / मा** प्र॰ वि॰, ए॰/ब॰ व॰ – *आगतागमाति एको निकायो एको आगमो नाम ... पञ्च निकाया पञ्च आगमा नाम ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.89; *आगतागमाति दीघादीसु यो कोचि आगमो आगतो एतेसन्ति आगतागमा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.121; *आगमने तु दीघादिनिकायस्मिं च आगमो,* अभि॰ प॰ 951; स॰ उ॰ प॰ के रूप में द्रष्ट॰, आगता॰, अङ्गुत्तरा॰, मज्झिमा॰ के अन्त॰; – **मट्ठकथा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, निकायों पर लिखी गई अट्ठकथा – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आगमट्ठकथायं पन "असद्धिये न कम्पतीति सद्धाबल"न्ति आदि वुत्तं,* सद्द॰ 2.438; – **सु** ब॰ व॰ – *अत्थं पकासयिस्सामि, आगमट्ठकथासुपि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 3; – **पिटक** नपुं॰, सुत्तपिटक का ही अन्य नाम, पांच निकायों अथवा आगमों का संग्रहभूत पिटक – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आगमपिटकं नाम अकंसु सुत्तसम्मतं,* दी॰ वं॰ 4.21; *आगमपिटकं सब्बं सिक्खापेसि निरन्तरं,* दी॰ वं॰ 7.30; **विशेष अर्थ घ.** व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में, अतिरिक्त अक्षर का समावेश – *तेसु वुद्धि-लोपागम-विकार-विपरीतादेसा च,* सद्द॰ 3.808; *यवमदनतरळा चागमा,* क॰ व्या॰ 35; *गो सरे पुथस्सागमो क्वचि,* क॰ व्या॰ 42; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अनुनासिका॰, आदि॰, उत्तरा॰, मज्झा॰, वण्णा॰, सनिग्गहीता॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आगमन नपुं॰, आ +√गम से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आगमन]. **शा. अ.** आना, बाहर से वापस आ जाना, आ पहुंचना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महत्थियं आगमनं अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.143; *भवतं इदं इधागमनं स्वागतमेव,* जा॰ अट्ठ॰ 5.345; *तुम्हाकं ... आगमनं पच्चासीसन्ती'ति आह,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.38; **क.** इध (यहां पर) के साथ अनेक स्थलों पर प्रयुक्त, यहां पर आगमन, यहां पर आना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थिकवतो खो पन ते अम्बट्ठ, इधागमनं अहोसि,* दी॰ नि॰ 1.79; ... *ताव बहुकिच्चस्स बहुकरणीयस्स यदिदं इधागमन'न्ति,* दी॰ नि॰ 2.198; – **नाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमं परियायं अकासि यदिदं इधागमनाय,* म॰ नि॰ 1.321; **ख.** स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **गमना.**- (सूर्य एवं चन्द्रमा का) जाना और आना, (अस्त होना एवं उदय होना) – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गमनागमनम्पि दिस्सति, वण्णधातु उभयेत्य वीथियो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.55; **नरिन्दा.**- [नरेन्द्रागमन], राजा का आगमन – *नरिन्दागमनं वंसं, कित्तयिस्सं सुणाथ मे,* दी॰ वं॰ 1.2; **ला. अ. 1.** वापस लौटकर आना, वापसी, प्रत्यावर्तन – *सत्थापि सत्तप्पकरणानि देसेत्वा मनुस्सलोकं आगमनत्थाय आकप्पं दस्सेसि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.102; *मिगवं गहेत्वा मुञ्चस्सु, कत्वा आगमनं पुन, ... कतं मे पोरिसादेन, मम आगमनं पुन,* चरिया॰ 392; **ला. अ. 2.** पुनर्जन्म, पुनः भव में आगमन, कर्मों का अनिवार्य प्रतिफल – **नाय** च वि॰, ए॰ व॰ – *यस्स दरथजा न सन्ति केचि, ओरं आगमनाय पच्चयासे,* सु॰ नि॰ 15; *यस्स गमनं आगमनं गमनागमनं कालंगति भवाभवो चुति च उपपत्ति च निब्बत्ति च भेदो च जाति च जरामरणञ्च नत्थि ...,* महानि॰ 232; – **तो** प॰ वि॰ – *अयञ्च एतदग्गसन्निक्खेपो नाम चतूहि कारणेहि लब्भति अट्ठुप्पत्तितो आगमनतो चिण्णवसितो गुणातिरेकतोति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.101, 104, 108; **ला. अ. 3.** मार्ग या फल की प्राप्ति – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आगमनं पन दुविधं विपस्सनागमनं मग्गागमनञ्च,* विसुद्धि॰ 2.305; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो हि आगमनतो सगुणतो आरम्मणतोति तीहि कारणेहि नामं लभति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 265; **नेन.** तृ॰ वि॰ ए॰ व॰ ... *पच्चनीकेन वा सगुणेन वा आरम्मणेन वा आगमनेन वा,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.137; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अपुना॰, अभब्बा॰, अपाथा॰, सरणा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **कारण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आगमनकारण], आने का कारण – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किं, भन्ते, आगतत्था'ति आगमनकारणं पुच्छि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 69; – **काल** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आगमनकाल], आने का समय, आ पहुंचने का काल – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थेव ठत्वा आगमनकाले पच्चुग्गमनं कत्वा, ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.36; – **दिट्ठिक** त्रि॰, ब॰ स॰ [आगमनदृष्टिक], अच्छे कर्म का सुखद फल आगे मिलेगा, ऐसा विश्वास रखने वाला, कर्म तथा इसके विपाक पर श्रद्धा रखने वाला – *सहत्था देति, अनपविद्धं देति, आगमनदिट्ठिको देति,* अ॰ नि॰ 2(1).161; *अनपविद्धं दानं देति, आगमनदिट्ठिको दानं देति,* म॰ नि॰ 3.72; *आगमनदिट्ठिको'ति "अनागतभवस्स पच्चयो भविस्सती'ति कम्मञ्च विपाकञ्च सद्दहित्वा देतीति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.54;

– **दिवस** पु., तत्पु. स. [आगमनदिवस], आने का दिन – **सं** द्वि. वि., ए. व. – *महाजनो तुम्हाकं दस्सनकामो, आगमनदिवसं वो जानितुं इच्छती'ति,* अ. नि. अट्ठ. 1.102; – **नन्दन** त्रि., [आगतनन्दन], वह, जिसका आगमन मन में आनन्द उत्पन्न कर दे – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *एकस्मिं आगते नन्दन्ति, गते सोचन्ति तादिसो त्वं आगमननन्दनो गमनसोचनो,* दी. नि. अट्ठ. 2.191; – **पटिपदा** स्त्री., तत्पु. स. [आगमनप्रतिपत्], फल की प्राप्ति का मार्ग, उपाय या तरीका – **दा** प्र. वि., ए. व. – *आगमनपटिपदा नाम खन्धादिवसेन बहूहि मुखेहि सक्का कथेतुं* जा. अट्ठ. 4.238; – **पथ** पु., तत्पु. स. [आगमनपथ], (राग आदि मलों के) आने का मार्ग – **थो** प्र. वि., ए. व. – *रजोपथोति रागरजादीनं उट्ठानट्ठानन्ति महाअट्ठकथायं वुत्तं, आगमनपथोतिपि वदन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 1.148; – **मग्ग** पु., तत्पु. स. [आगमनमार्ग], आने का मार्ग – **ग्गे** सप्त. वि., ए. व. – *तस्स किर गामस्स बहि भगवतो आगमनमग्गे ब्राह्मणानं परिभोगभूतो एको उदपानो अहोसि,* उदा. अट्ठ. 307; – **वस** पु., तत्पु. स., आ जाने के कारण – **सेन** तृ. वि., ए. व. – *तस्मा अन्तोअप्पनायमेव आगमनवसेन पटिपदाविसुद्धि,* विसुद्धि. 1.143; – **विपत्ति** स्त्री. प्र. वि., ए. व. – *चण्डालकुले वा'ति आदीहि आगमनविपत्ति चेव पुब्बुप्पन्नपच्चयविपत्ति च दस्सिता,* स. नि. अट्ठ. 1.143; – **सद्धा** स्त्री., तत्पु. स., अभिनीहार (बुद्धत्व-प्राप्ति हेतु लिए गए दृढ़ संकल्प) के समय से ही चली आ रही बोधिसत्त्वों की श्रद्धा – *तत्थ सब्बञ्ञुबोधिसत्तानं सद्धा अभिनीहारतो पट्ठाय आगतत्ता आगमसद्धा नाम,* अ. नि. अट्ठ. 3.27; – **सील** त्रि., ब. स. [आगमनशील], आने वाला – **लो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सकदागामीति सकिदेव इमं लोकं पटिसन्धिग्गहणवसेन आगमनसीलो दुतियफलट्ठो,* उदा. अट्ठ. 249; ... *ठितोपि पटिसन्धिग्गहणवसेन इमं मनुस्सलोकं आगमनसीलो,* इतिवु. अट्ठ. 264; – **नाकार** पु., तत्पु. स. [आगमनाकार], वापस लौटने का स्वरूप या तौर-तरीका – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *राजा अत्तनो आगमनाकारं सब्बं वित्थारतो कथेसि,* जा. अट्ठ. 1.257.

आगमनक त्रि., आगे आने वाला, भविष्य – ... *तस्स तस्स पञ्हस्स उपरि आगमनवादपथं,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.171.

आगमनीय/आगमनिय त्रि., आ +√गम का सं. कृ. [आगमनीय], वह स्थान जहां आ पहुंचना चाहिए, प्राप्त किए जाने योग्य, सम्बद्ध, प्रापक – **येन** तृ. वि., ए. व. – *आगमनियेन कथिते पन सुञ्ञतो वा फस्सो ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).261; स. नि. अट्ठ. 3.135; स. उ. प. के रूप में अना., ओरगा., तीणिसरणा., सरणा. आदि के अन्त. द्रष्ट.; – **कथा** स्त्री., तत्पु. स. [आगमनिककथा], आगमन फल-प्राप्ति की ओर ले जाने वाला कथन – *अपरा आगमनियकथा नाम होति,* स. नि. अट्ठ. 3.135; – **गुण** पु., तत्पु. स. [आगमनिकगुण], श्रमण-जीवन के फल की प्राप्ति का गुण – **णं** द्वि. वि., ए. व. – *कतकिच्चभावं पारं पत्तो परिजानामीति महाबोधिपल्लङ्के अत्तनो आगमनीयगुणं दस्सेति,* अ. नि. अट्ठ. 3.4; – **ठान** नपुं., कर्म. स. [आगमनिकस्थान], मार्ग की उत्पत्ति का स्थान, वह स्थान, जहां मार्ग की उत्पत्ति होती है – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *इति अयं सङ्खारुपेक्खा आगमनीयट्ठाने ठत्वा अत्तनो अत्तनो मग्गस्स नामं देति,* विसुद्धि. 2.304; *यतो मग्गो आगच्छति, तं आगमनीयट्ठानं, तस्मिं आगमनीयट्ठाने,* विसुद्धि. महाटी. 2.447; – **पटिपदा** स्त्री., कर्म. स. [आगमनिकप्रतिपत्], फल की प्राप्ति की ओर ले जाने वाला मार्ग – **दा** प्र. वि., ए. व. – *आगमनीयपटिपदा पन न कथिता,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.9; – **दं** द्वि. वि., ए. व. – *पापुणन्तस्स आगमनियपटिपदं सन्धायेतं वुत्तं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).79; – **पुब्बभागपटिपदा** स्त्री., तत्पु. स. [आगमनिकपूर्वभागप्रतिपत्], (अर्हत्) फलप्राप्ति के पूर्वभाग में अनुसरणीय मार्ग – **दा** प्र. वि., ए. व. – *कित्तकेन नु खो तण्हासङ्खयविमुत्तस्स खीणासवस्स सङ्खेपतो आगमनियपुब्बभागपटिपदा होती'ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).193; – **दं** द्वि. वि., ए. व. – *संखित्तेन खीणासवस्स पुब्बभागप्पटिपदं पुच्छितो सल्लहुकं कत्वा ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).195; – **सद्धा** स्त्री., कर्म. स. [आगमनिकश्रद्धा], अभिनीहार के समय से ही चली आ रही बोधिसत्त्वों की श्रद्धा – ... *तत्थ आगमनीयसद्धा सब्बञ्ञुबोधिसत्तानं होति,* दी. नि. अट्ठ. 2.107.

आगमयति/आगमयमान द्रष्ट. आगमेति के अन्त..

आगमा द्रष्ट. आगच्छति के अन्त..

आगमि द्रष्ट. आगच्छति के अन्त..

आगमिक पु., [आगमिक], आगमों (निकायों में आगत वचनों) का ज्ञाता या अध्येता – **कानं** ष. वि., ब. व. – *इदानि आगमिकानं कोसल्लजननत्थं पदसमोधानवसेन नामिकपदमाला वुच्चते,* सद्द. 1.258.

आगमे आगहे के स्थान पर अप., आ +√गह का विधि., प्र. पु., ए. व., ग्रहण करे, ले ले – *यो जातरूपं रजतं, छड्डेत्वा पुनरागमे,* थेरीगा. 343; ... *पुनरागमेति यो पुग्गलो सुवण्णं रजतं अञ्ञम्पि वा किञ्चि धनजातं छड्डेत्वा पुन तं गण्हेय्य ...,* थेरीगा. अट्ठ. 266.

आगमेति आ +√गम के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आगमयति], **शा. अ.,** आने देता है, **ला. अ.,** प्रतीक्षा करता है, आशा करता है, प्रतीक्षा में रुक जाता है, प्राप्त करता है – *चुरादिगणं पत्तस्स आपुब्बस्स इमस्स आगमेति आगमयति आगमेन्तो आगमयमानोति,* सद्द. 2.462; 18; (प्रायः द्वि. वि. में अन्त होने वाले ना. प. के साथ प्रयुक्त) – *लटुकिका सकुणिका पूतिलताय बन्धनेन बद्धा तत्थेव वधं वा बन्धं वा मरणं वा आगमेति,* म. नि. 2.122; *आगमेतीति उपेति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.118; – **न्ति** ब. व. – ... *परिपाकं आगमेन्ति पण्डिता,* मि. प. 44; – **मयामसे** उ. पु., ब. व., आत्मने. – *कालमागमयामसेति कालकिरियं आगमेस्साम,* जा. अट्ठ. 6.106; – **हि** अनु., म. पु., ए. व. – *आगमेहि महाराज, पितरं आमन्तयामह'न्ति* ..., जा. अट्ठ. 3.222; *आगमेहि महाराज, मा मं विज्झि रथेसभ,* जा. अट्ठ. 4.231; – **तु** प्र. पु., ए. व. – *आगमेतु भन्ते, भगवा धम्मस्सामी,* महाव. 462; – **थ** म. पु., ब. व. – *आगमेथ, आवुसो, याव रत्ति विभायति,* महाव. 98; – **न्तु** प्र. पु., ब. व. – *आगमेन्तु किर भोन्तो,* ..., म. नि. 2.384; – **य्याथ** विधि., म. पु., ब. व. – *मुहुत्तं आगमेय्याथ, याव जानामि तं मनं,* चरिया. 56; – **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – ... *तदनुरूपं कालं आगमेन्तो भिक्खं गहेत्वा ...* , स. नि. अट्ठ. 3.221; – **न्तानं** च/ष. वि., ब. व. – *भिक्खवे, नागमेन्तानं नाकामा भागं दातुन्ति,* महाव. 371; – **मयमानो** वर्त. कृ., आत्मने., पु., प्र. वि., ए. व. – *उक्कुटिकं निसिन्नो आगमयमानो मुच्छितो पपति,* महाव. 213; – **सि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो थेरो भत्तग्गे वच्चितो आगमेसि,* चूळव. 355; – **मिंसु** ब. व. – ... *थेरा आगमिंसु,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).291; – **मित्थ / मेत्थ** म. पु., ब. व. – *"किस्स तुम्हे नागमित्था"ति,* महाव. 371; – **स्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *"अज्जण्हो भन्ते, आगमेही"ति वुच्चमानो नागमेस्सती"ति,* पारा. 334-35; – **तुं** निमि. कृ. – *नाहं सक्कोमि भवन्ते सत्त वस्सानि आगमेतुं,* दी. नि. 2.180; *परिपक्के ञाणे न सक्का निमेसन्तरम्पि आगमेतुं,* मि. प. 186; – **त्वा** पू. का. कृ. – ... *निसिन्ना भविस्सन्ती'ति चिन्तेत्वा थोकं आगमेत्वा* ..., जा. अट्ठ. 1.11; *कवाटं आकोटेत्वा मुहुत्तं आगमेत्वा,* चूळव. 350; – **तब्ब** सं. कृ. – *वुट्ठानमस्स आगमेतब्ब'न्ति,* महाव. 56.

आगम्म आ +√गम का पू. का. कृ., केवल गाथाओं में ही प्राप्त [आगम्य], **1.** आ कर, पहुंच कर – *वेस्सवणो इधागम्म, निब्बापेसि, महाजनं,* अप. 1.152; *कुतो नु आगम्म अनोमदस्सने, उपपन्ना त्वं भवनं ममं इदं,* वि. व. 153; *कुतो नु साम आगम्म, कस्स वा पहितो तुवं,* जा. अट्ठ. 6. 94; **2.** क्रि. वि. के रूप में तथा सन्धाय, आरब्भ, निस्साय एवं पटिच्च के पर्यायवाचक शब्द के रूप में प्रयुक्त [बौ. सं. आगम्य], सन्दर्भ से, कारण से, साधन से, सहारा लेकर, आश्रय लेकर – *ते च भोन्तो समणब्राह्मणा किमागम्म किमारब्भ सस्सतवादा ...,* दी. नि. 1.11; *यानि छ नेक्खम्मसितानि सोमनस्सानि तानि निस्साय तानि आगम्म* ..., म. नि. 3.267; *वेहायसं गम्ममागम्माति ... आकासे पवत्तं पदवीतिहारं पटिच्च निस्साय,* जा. अट्ठ. 5.15; *अप्पेव नाम तवम्पि आगम्म पियवाचं लभेय्यामा'ति,* जा. अट्ठ. 5.417.

आगामिय त्रि., [आगामिक], आ पहुंचने वाला, अपरिचित आगन्तुक – *सब्बागामियभिक्खूहि, धम्मं देसापयित्थ च,* चू. वं. 44.148.

आगामी त्रि., [आगामिन्], **शा. अ.** आने वाला, आगे आ पहुंचने वाला, **ला. अ. 1.** प्राप्त करने वाला, प्राप्तिकर्ता, पुनर्जन्म पाने वाला – ... *आगामी होति, आगन्ता इत्थत्तं,* अ. नि. 1(1).80; – **मिनो** पु., प्र. वि., ब. व. – *आगामिनो होन्ति आगन्तारो इत्थत्तं,* अ. नि. 1(2).185; स. उ. प. के रूप में अना., सकदा. के अन्त. द्रष्ट.; **ला. अ. 2.** ले जाने वाला, प्राप्त कराने वाला – *नगरं सकलं चेव इधागमि च अञ्जसं,* म. वं. 31.33; **ला. अ. 3.** भविष्यकाल, आगे आने वाला समय – *आगामिकाले दीघत्ते पभावे च मतायति,* अभि. प. 875.

आगारिकमित्त / अगारिकमित्त पु., कर्म. स. [आगारिकमित्र], गृहस्थ मित्र – *मित्ताति द्वे मित्ता – अगारिकमित्तो च अनागारिकमित्तो च,* चूळनि. 218.

आगाळ्ह त्रि., आ +√गाह का भू. क. कृ. [बौ. सं. आगाढ़], बहुत गहरा, अत्यन्त तीव्र, कठोर, बहुत अधिक दृढ़, कर्कश – **ळ्हाय** पु., च. वि., ए. व. – *तीहङ्गेहि समन्नागतस्स भिक्खुनो आकङ्खमानो सङ्घो आगाळ्हाय चेतेय्य,* परि. 244; *आगाळ्हाय चेतेय्याति आगाळ्हाय दळ्हभावाय चेतेय्य, तज्जनीयकम्मादिकतस्स वत्तं न पूरयतो इच्छमानो सङ्घो उक्खेपनीयकम्मं करेय्याति अत्थो,* परि. अट्ठ. 166; – **ळ्हेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. – *आगळ्हेनाति गाळ्हेन कक्खळेन,* अ. नि. अट्ठ. 2.233; *इधेकच्चो पुग्गलो आगळ्हेनपि वुच्चमानो फरुसेनपि वुच्चमानो अमनापेनपि वुच्चमानो ...,* प. प. 140; *आगाळ्हेनाति अतिगाळ्हेन मम्मच्छेदकेन थद्धवचनेन,* पु. प. अट्ठ. 63.

आगिलायति आ +√गिला का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आग्लायति], कुछ कुछ पीड़ा उत्पन्न करता है, हलका दर्द देता है, थकावट या अवसाद उत्पन्न करता है – *पिट्ठि मे आगिलायति, तमहं आयमिस्सामी'ति,* चूळव. 340; दी. नि. 3.167; *अपि मे पिट्ठि आगिलायति बहिद्वारकोट्ठके ठितस्स कथापरियोसानं आगमयमानस्सा'ति,* अ. नि. 3(1).178; *यदा च तेसं हदयं आगिलायति, किस्मिञ्चिदेव वा जिगुच्छा उप्पज्जति,* खु. पा. अट्ठ. 50.

आगिलायन नपुं., आ +√गिला से व्यु., क्रि. ना. [आग्लपन], थकावट, दर्द, पीड़ा – *उपादिन्नकसरीरञ्च नाम 'नो आगिलायती'ति न वत्तब्बं, तस्मा चिरं निसज्जाय सञ्जातं अप्पकम्पि आगिलायनं गहेत्वा एवमाह,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.21.

आगु नपुं., [आगस्], पाप-कर्म, दुष्कर्म, अकुशल-कर्म, अपराध, अपुण्यकर्म – *अपुञ्ञाकुसलं कण्हं कलुसं दुरितागु च,* अभि. प. 84; *आगु वुत्तमपराधो, करो तु वलिमुच्चते,* अभि. प. 355; *आगु पापापराधेसु, के तुम्हि चिन्हे धजो,* अभि. प. 1064; – **गुं** द्वि. वि., ए. व. – *आगुं किर महाराज, अकरि कम्मदुक्कटं,* जा. अट्ठ. 6.100; *"अपि च, उदायि, यो ... आगुं न करोति कायेन वाचाय मनसा, तमहं 'नागो"ति ब्रूमी"ति,* अ. नि. 2(2).60; *आगुन्ति पापकं लामकं अकुसलधम्मं,* अ. नि. अट्ठ. 3.113; – **किरिया** स्त्री., तत्पु. स., पापकर्म, अकुशलकर्म – *विमलत्ता वा आगुं न करोति, तेन अकाचो, आगुकिरिया हि उपघातकरणतो 'काचो'ति वुच्चति,* सु. नि. अट्ठ. 2.124; – **चारी** त्रि., [आगस्कारिन्], पाप कर्म करने वाला, पापी, दुष्ट (केवल चोर के विशेषण के रूप में प्रयुक्त) – **रिं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *सेय्यथापि, भिक्खवे, चोरं आगुचारिं गहेत्वा रञ्ञो दस्सेय्युं ...,* स. नि. 1(2).88; 111; महानि. 297; ... *राजानो चोरं आगुचारिं गहेत्वा विविधा कम्मकारणा कारेन्ते ...,* म. नि. 3.203; *आगुचारिन्ति पापकारिं अपराधकारकं,* अ. नि. अट्ठ. 2.1; *चतुत्थे आगुचारिन्ति पापचारिं दोसकारकं,* स. नि. अट्ठ. 2.99.

आगोत्तभुं / आगोत्रभुं अ., अव्ययी. स., आ+गोत्तभू से व्यु., गोत्रभू-नामक अवस्था की प्राप्ति तक (आसव शब्द के निर्वचन के सन्दर्भ में प्रयुक्त) – *आसवेहीति आभवग्गं आगोत्रभुं सवनतो पवत्तनतो,* उदा. अट्ठ. 75; *अथ वा आगोत्रभुं आभवग्गं वा सवन्तीति आसवा,* उदा. अट्ठ. 141; **विशेष तात्पर्य के लिए द्रष्ट.** गोत्रभू के अन्त. (आगे).

आगोत्रभुतो अ., क्रि. वि., आ + गोत्रभू से व्यु., गोत्रभू नामक अवस्था की प्राप्ति-पर्यन्त (आसव शब्द के व्याख्यान के सन्दर्भ में प्रयुक्त) – *आसवाति आरम्मणवसेन आगोत्रभुतो, आभवग्गतो च सवना,* विसुद्धि. 2.322.

आघात पु., आ +√हन से व्यु. [आघात], **शा. अ.,** हत्या, प्रहार, **ला. अ.,** क्रोध, द्वेष, प्रतिशोध का भाव, शत्रुता या वैमनस्य का भाव – *कोधाघाता कोप-रोसा, ब्यापादोनभिरद्धि च,* अभि. प. 164; – **तो** प्र. वि., ए. व. – ... *भिक्खुनो उप्पन्नो आघातो सब्बसो पटिविनेतब्बो,* अ. नि. 2(1).174; *तिब्बो आघातो ... भविस्सतीति बलवकोपो ... पच्चुपट्ठितो भविस्सति,* दी. नि. अट्ठ. 3.34; *अयञ्चरहि देवदत्तस्स भगवति पठमो आघातो अहोसि,* चूळव. 326; – **तेन** तृ. वि., ए. व. – *सो तेन आघातेन महतिं गरुं सिलं गहेत्वा ...,* मि. प. 138; स. उ. प. के रूप में, **अना.** – त्रि., ब. स., आघात से रहित, प्रबल क्रोध या द्वेष की भावना से रहित – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *"मेत्तं, नु खो मे चित्तं पच्चुपट्ठितं सब्रह्मचारीसु अनाघातं,* अ. नि. 3(2).66; *अनाघातन्ति आघातविरहितं, विक्खम्भनेन विहताघातन्ति अत्थो,* अ. नि. अट्ठ. 3.309; **खग्गा.** – पु., तत्पु. स. [खड्गाघात], तलवार का प्रहार – *खग्गाघातद्विधाभूतवेरिविग्गहभिसं,* चू. वं. 72.110; **बद्धा.** – त्रि., ब. स. [बद्धाघात], अत्यन्त प्रबल द्वेष-भाव से युक्त – **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *तदा नं जण्णुकप्परमुट्ठीहि*

पहरतेव यथा तं पुरिमजातीसु बद्धाघाता, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 174; **विहता॰** – त्रि॰, ब॰ स॰ [विहताघात], द्वेषभाव को नष्ट कर चुका या उससे मुक्त हो चुका – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विक्खम्भनेन विहताघातन्ति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.309; **समुच्छिन्ना॰**- त्रि॰, ब॰ स॰ [समुच्छिन्नाघात], उपरिवत् – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनागामिमग्गेन सब्बसो पहीनत्ता पनुण्णकोधो समुच्छिन्नाघातो,* उदा॰ अट्ठ॰ 157; – **करणरस** त्रि॰, ब॰ स॰, प्रतिहिंसा-भाव या द्वेष-भाव को उत्पन्न कर देने का काम करने वाला – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ कुज्झनलक्खणो कोधो, चण्डिक्कलक्खणो वा, आघातकरणरसो, दुस्सनपच्चुपट्ठानो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).113; – **ट्ठपना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, प्रतिहिंसा-भाव या द्वेषभाव की स्थापना, द्वेषभाव को उत्पन्न करना – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सण्ठपनाति सब्बतोभागेन पुनप्पुनं आघातट्ठपना,* विभ॰ अट्ठ॰ 464.

आघातन नपुं॰, **1**. आ +√हन से व्यु॰ करणार्थक कृ॰ ना॰ [आघातन], वध-स्थान, वध्य-शिला, शूली, कसाई-खाना, पशुओं के वध के लिए प्रयुक्त काष्ठपट्टिका – **नं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आघातनं वधट्ठानं, सूणा तु अधिकोट्टनं,* अभि॰ प॰ 521; *आघातनन्ति धम्मगन्धिका वुच्चति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.41; – **नं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *सेट्ठिपुत्तं महन्तेनारक्खेन आघातनं नेत्वा असिना सीसं छिन्दित्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.51; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *दक्खिणतो नगरस्स आघातने सीसं छिन्दथा'ति,* दी॰ नि॰ 2.240; – **ना** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तुट्ठो आयुक्खया होति, मुत्तो आघातना यथा,* थेरगा॰ 711; **2**. नपुं॰, भाव॰ अर्थ में व्यु॰, मृत्यु – ... *किमागम्म किमारब्भ उद्धमाघातनिका सञ्जीवादा उद्धमाघातनं सञ्ञिं अत्तानं पञ्ञपेन्ति ...,* दी॰ नि॰ 1.26; ... *आघातनं वुच्चति मरणं, ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.101; **3**. मृत्यु का क्षेत्र, विपत्ति का स्थल – *विसमूलं आघातनं,* थेरगा॰ 418; *सत्तानं ब्यसनुप्पत्तिट्ठानताय आघातनं कम्मं किलेसं वा ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.90; स॰ उ॰ प॰ के रूप में **गवा॰** – नपुं॰, तत्पु॰ स॰, गाय के वध का स्थान, कसाई-खाना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चक्कमो लोहितेन फुटो होति, सेय्यथापि गवाघातनं,* महाव॰ 253; **महा॰**- त्रि॰, अत्यधिक पीड़ा-दायक – **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तुम्हाकं सासनं नाम, महाआघातनं नामेतं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).169; – **भण्डिका** स्त्री॰, वधशिला – **य** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *दक्खिनद्वारेन निय्यमानो विय आघातनभण्डिकाय ठपितसीसो विय सूले उत्तासितो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.57; *गच्छथेतस्स आघातनभण्डिकायं ठपेत्वा, सीसं छिन्दथा'ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.69; – **निस्सित** त्रि॰, वधशिला के निकट में स्थित या उस से सम्बद्ध – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भाघातनिस्सितं वा होति, आघातननिस्सितं वा होति, सुसाननिस्सितं वा होति,* पारा॰ 231; – **पच्चुपट्ठित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, वध करने हेतु या मार दिए जाने के लिए सामने उपस्थित, मृत्यु का विषयीभूत ··· **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वज्जबन्धनबद्धो लोकसन्निवासो आघातनपच्चुपट्ठितो,* पटि॰ म॰ 117; *आघातनपच्चुपट्ठितोति मरणधम्मगण्ठिकठानं उपेच्च ठितो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.18; – **नाभिमुख** अ॰, क्रि॰ वि॰, वध-स्थल की ओर – **खं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सिङ्घाटकेन सिङ्घाटकं विचरापेत्वा कसाहि ताळेन्तो आघातनाभिमुखं नेति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 5.

आघातपटिविनय पु॰, तत्पु॰ स॰ [आघातप्रतिविनय], द्वेषभाव का उपशमन, द्वेषभाव का उपशमन करने वाले मेत्ता, करुणा, उपेक्खा, अमनसिकार तथा कर्मस्मरण जैसे धर्म – **या** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पञ्चिमे, आवुसो, आघातपटिविनया यत्थ भिक्खुनो उप्पन्नो आघातो सब्बसो पटिविनेतब्बो,* अ॰ नि॰ 2(1).174; *नवयिमे, भिक्खवे, आघातपटिविनया,* अ॰ नि॰ 3(1).218; *दुतियस्स पठमे आघातं पटिविनेन्ति वूपसमेन्तीति आघातपटिविनया,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.57.

आघातपटिविनयसुत्त नपुं॰, अ॰ नि॰ के दो ऐसे सुत्त, जिन में द्वेषभाव के उपशमन कराने वाले पांच अथवा नौ धर्मों अथवा उपायों का विवरण है – **त्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदं पञ्चकनिपाते आघातपटिविनयसुत्ते वित्थारेतब्बं,* विसुद्धि॰ 1.289; अ॰ नि॰ 2(1).175-77, 3(1).218.

आघातबन्धन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आघातबन्धन], द्वेषभाव के साथ बंध जाना, द्वेष-भाव के साथ लगाव – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदं पठमं देवदत्तस्स बोधिसत्ते आघातबन्धनं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.120.

आघातमत्त नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आघातमात्र], थोड़ा सा भी द्वेषभाव, अत्यन्त अल्पमात्रा में द्वेष-भाव – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मिम्पि काले सीलवमहाराजा चोररञ्ञो आघातमत्तम्पि नाकासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.256.

आघातवग्ग पु॰, अ॰ नि॰ के उस वग्ग का शीर्षक, जिसमें कुल दस सुत्त हैं तथा जिसका नामकरण द्वेषभाव का उपशमन कराने वाले पांच धर्मों के प्रकाशक दो

आघातपटिविनयसुत्तों के नामों के आधार पर किया गया है, अ॰ नि॰ 2(1).174-188.

आघातवत्थु नपुं., तत्पु॰ स॰ [आघातवस्तु], द्वेषभाव, द्वेषभाव को मन में उदय कराने वाली नौ अथवा दस बातें (धर्म) या कारण – **स्मिं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कोपनेय्योति पटिघट्ठानीये सब्बस्मिम्पि आघातवत्थुस्मिं न कुप्पति न दुस्सति* ..., उदा॰ अट्ठ॰ 200; – **त्थूनि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *नवयिमानि, भिक्खवे, आघातवत्थूनि,* अ॰ नि॰ 3(1).217; *नवमे आघातवत्थूनीति आघातकारणानि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.274; – **त्थूसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सो सीहोव सद्देसु आघातवत्थूसु कुज्झितुकामताय न सन्तसति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.100; – **पदट्ठान** त्रि॰, ब॰ स॰ [आघातवस्तुपदस्थान], वह अकुशल मनोभाव, जिसका समीपतम कारण द्वेष हो, द्वेष को समीपतम कारण बनाने वाला – **ट्ठानो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुस्सनपच्चुपट्ठानो लद्धोकासो विय सपत्तो, आघातवत्थुपदट्ठानो,* अभि॰ अव॰ 27; – **समुट्ठान** त्रि॰, ब॰ स॰ [आघातवस्तुसमुत्थान], द्वेषभाव के कारण मन के भीतर उठने वाला – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *रागो च नवआघातवत्थुसमुट्ठानो दोसो च* ..., जा॰ अट्ठ॰ 3.358; – **सम्भव** त्रि॰, ब॰ स॰ [आघातवस्तुसम्भव], उपरिवत् – **वो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा चेस, एवं नवविधआघातवत्थुसम्भवो ब्यापादो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).178; – **वं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *खन्तिसंवरेन सीतादीनि खमन्तोपि तंतंआघातवत्थुसम्भवं कोधं विनेति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.9.

आघातविनय पु॰, द्वेषभाव का उपशमन – **या** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *द्वे आघातविनया, साकच्छा साजीवतो पञ्हं,* अ॰ नि॰ 2(1).188.

आघातविनयनरस त्रि॰, ब॰ स॰ [आघातविनयनरस], वह कुशल धर्म (मनोभाव), जिसका सार-तत्त्व द्वेषभाव का उपशमन करना हो – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविरोधलक्खणो वा अनुकूलमित्तो विय, आघातविनयरसो, परिळाहविनयरसो वा चन्दनं विय,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 172.

आघातविनयपच्चुपट्ठान त्रि॰, ब॰ स॰ [आघातविनयप्रत्युपस्थान], द्वेषभाव के उपशमन से उदित होने वाली (मेत्ता-भावना), द्वेषभाव का उपशमन कराने वाला/वाली – **ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हितूपसंहाररसा, आघातविनयपच्चुपट्ठाना, सत्तानं मनापभावदस्सनपदट्ठाना,* विसुद्धि॰ 1.308; ध॰ स॰ अट्ठ॰ 237.

आघातविरहित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आघातविरहित], द्वेषभाव से रहित – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनाघातन्ति आघातविरहितं, विक्खम्भनेन विहताघातन्ति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.309.

आघातित त्रि॰, आघात के ना॰ धा॰ से व्यु॰, [आघातित], **शा॰ अ॰,** बुरी तरह से चोट पहुंचाया गया या पीटा गया, **ला॰ अ॰,** पीड़ित, विषयीभूत – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नवहि आघातवत्थूहि आघातितो,* उदा॰ अट्ठ॰ 114; *नवहि आघातवत्थूहि आघातितो लोकसन्निवासोति,* पटि॰ म॰ 118; *आघातितोति घट्टितो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.27; – **ता** ब॰ व॰ – *अञ्ञमञ्ञेहि ब्यारुद्धेति अञ्ञमञ्ञं सत्ता विरुद्धा पटिविरुद्धा आहता पच्चाहता आघातिता पच्चाघातिता,* महानि॰ 302; – **मन** त्रि॰, ब॰ स॰ [आघातितमन], पीड़ित अथवा द्वेष से दूषित मन वाला – **ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ते तित्थिया दुट्ठमना विरुद्धमना पटिविरुद्धमना आहतमना पच्चाहतमना आघातितमना पच्चाघातितमना वदन्ति* ..., महानि॰ 44; *आघातितमनाति विहिंसावसेन आघातितं मनं एतेसन्ति आघातितमना, पच्चाघातितमनाति उपसग्गवसेनेव* ..., महानि॰ अट्ठ॰ 149.

आघातुक त्रि॰, [आघातक], प्रहार करने को उत्सुक, चोट या हानि पहुंचाने की मनोवृत्ति वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहननसीलो आघातुको, करणसीलो कारुको,* क॰ व्या॰ 538; सद्द॰ 3.846.

आघातेति आघात का ना॰ धा॰ [आघातयति], द्वेषभाव से भर देता है, द्वेषभाव से पीड़ित करा देता है – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चित्तं आघातेन्तो उप्पन्नोति चित्तस्स आघातो,* महानि॰ अट्ठ॰ 256; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *निरये कोकालिको भिक्खु उपपन्नो सारिपुत्तमोग्गल्लानेसु चित्तं आघातेत्वा'ति,* स॰ नि॰ 1(1).178.

आघान नपुं॰, आ +√घा से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आघ्राण], गन्ध को सूंघना, गन्ध को नाक द्वारा अनुभव करना – *सिघि आघाने, आघानं घानेन गन्धानुभवनं,* सद्द॰ 2.334.

आचमति आ +√चम का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आचमति], आचमन करता है, हथेली पर जल लेकर पीता है, कुल्ला करता है, गटकता है – *जातिमन्ततापसो पातोव गङ्गं ओरुय्ह उदकं आचमति, जटा धोवति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.61; – **न्ति** ब॰ व॰ – *तिमिरपिङ्गला अब्भन्तरे* ... *महाउदकधारा आचमन्ति धमन्ति च,* मि॰ प॰ 244; –

मितुं निमि॰ कृ॰ – *वन्तो अहं आचमितुं न उस्सहे,* थेरगा॰ 1128; पाठा॰ आवमितुं.

आचमन नपुं॰, आ +√चम से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आचमन], धार्मिक अनुष्ठान के अवसर पर जल द्वारा मुख एवं समस्त शरीर की शुद्धि करना, हथेली पर जल लेकर घूंट-घूंट करके पीना, मलत्याग के उपरान्त जल द्वारा मलद्वार को धोना – *वत्थुकम्मं वत्थुपरिकम्मं आचमनं न्हापनं जुहनं वमनं विरेचनं ...,* दी॰ नि॰ 1.10; *आचमनन्ति उदकेन मुखसुद्धिकरणं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.86; स॰ उ॰ प॰ के रूप में **उदका॰**- नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [उदकाचमन], जल द्वारा मुख को धोना – **नानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कुहना वङ्कदण्डा च, उदकाचमनानि च,* स॰ नि॰ 2(2).124; *उदकाचमनानि चाति उदकेन मुखपरिमज्जनानि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.43; **सुद्धिका॰** – नपुं॰, कर्म॰ स॰ [शुद्धिकराचमन], शुद्ध कर देने हेतु किया गया आचमन या जल का पान – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *केचि उत्तरन्ति केचि उत्तरित्वा सुद्धिकआचमनं करोन्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 60; स॰ पू॰ प॰ के रूप में **नोदक** – नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आचमनोदक], आचमन के लिए प्रयुक्त जल, धार्मिक अनुष्ठान में मुखशुद्धि एवं शरीरशुद्धि के लिए पान किया जाने वाला जल, शौचक्रिया में मलद्वार को धोने के लिए प्रयुक्त जल – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचमेहीति आचमनोदकं देहि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.246; – **उदकावसेस** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आचमनोदकावशेष], शौचक्रिया में प्रयुक्त जल का बचा हुआ भाग – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... ... *भिक्खु एकदिवसं वच्चकुटिं पविट्ठो ... आचमनउदकावसेसं भाजने ठपेत्वाव निक्खमि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).287; जा॰ अट्ठ॰ 3.429.

आचमनकुम्भी स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आचमनकुम्भी], शौचालय के बाहर शौचक्रिया में उपयोग हेतु रखा हुआ जल से भरा मटका – **म्भी** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचमेति, आचमयति आचमनकुम्भी,* सद्द॰ 2.556; – **म्भिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचमनकुम्भी न होति ... अनुजानामि, भिक्खवे आचमनकुम्भि'न्ति,* चूळव॰ 263; – **या** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचे आचमनकुम्भिया उदकं न होति, आचमनकुम्भिया उदकं आसिञ्चितब्बं,* महाव॰ 54; चूळव॰ 370, 367.

आचमनथालक नपुं॰, तत्पु॰ स॰, शुद्ध करने हेतु प्रयुक्त जल का पात्र – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *परिक्खारंदापेसि आचमनथालकं,* सीमाविवादविनिच्छय कथा, 28.8(रो॰).

आचमनपादुका स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आचमनपादुका], पैरों को धोने के लिए रखा गया लकड़ी का तख्ता या पीढ़ा – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तिस्सो पादुका धुवट्ठानिया असङ्कमनियायो – वच्चपादुकं, पस्सावपादुकं, आचमनपादुक'न्ति,* महाव॰ 264; *दुक्खं निसिन्ना आचमेन्ति ... अनुजानामि, भिक्खवे, आचमनपादुक'न्ति, आचमनपादुका पाकटा होन्ति,* चूळव॰ 263; – **य** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचमनपादुकाय ठितेन उब्भजितब्बं,* चूळव॰ 366.

आचमनसरावक पु॰, तत्पु॰ स॰, विहार के शौचालय (वच्चकुटी) के बाहर रखे पानी से भरे मटके से पानी निकालने हेतु प्रयोगों में लाया जाने वाला पात्र – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचमनसरावको न होति ... अनुजानामि, भिक्खवे, आचमनसरावक'न्ति,* चूळव॰ 263; – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चपुचपुकारकम्पि आचमेन्ति, आचमनसरावकेपि उदकं सेसेन्ति,* चूळव॰ 366.

आचमापेन्ति आ +√चम के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, आचमन कराते हैं, शौचक्रिया के उपरान्त धुलवाते हैं – *ततो पट्ठाय नं नेव नहापेन्ति न च आचमापेन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.8.

आचमेति / आचमयति आ +√चम के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आचमयति], हाथ पैर आदि धोने के बाद अपने मुख का प्रक्षालन करता है, धोता है, शौचक्रिया के उपरान्त प्रक्षालन करता है – *आपुब्बो चमुधातु धोवने वत्तति, आचमेति आचमयति, आचमनकुम्भी,* सद्द॰ 2.556; – **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *वच्चं कत्वा न आचमेसी'ति,* चूळव॰ 365; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *दुक्खं निसिन्ना आचमेन्ति ...,* चूळव॰ 263; – **यमानो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *विसं चिक्खस्सन्तो उद्धमधो आचमयमानो'ति,* मि॰ प॰ 152; – **य्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यो नाचमेय्य, आपत्ति दुक्कटस्सा'ति,* चूळव॰ 365; – **मित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *नाचमेय्य सचे वच्चं, कत्वा यो सलिले सति, ... आचमित्वा सरावेपि, सेसेतब्बं न तूदकं,* विन॰ वि॰ 2938-2939; – **स्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *कथञ्हि नाम भिक्खु वच्चं कत्वा न आचमेस्सती'ति,* चूळव॰ 365; – **तुं** निमि॰ कृ॰ – *भिक्खू हिरियन्ति आचमेतुं ...,* चूळव॰ 263; – **यित्वान / यित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *'सयं आचमयित्वान, दत्वा सकेहि पाणिभि,* अ॰ नि॰ 2(2).52; *सयं आचमयित्वानाति अत्तनाव हत्थपादे धोवित्वा मुखं विक्खालेत्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.110; *ततो हि सो आचमयित्वा लिच्छवि, थेरस्स दत्वान*

युगानि अट्ठ, पे. व. 569; *आचमयित्वाति हत्थपादधोवनपुब्बकं मुखं विक्खालेत्वा,* पे. व. अट्ठ. 208.

आचय पु., आ +√चि से व्यु. [आचय], **शा. अ.,** चयन, एकत्रीकरण, राशि, ढेर या पुञ्ज बना देना, अस्तित्व में ला देना – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *अञ्जनानं खयं दिस्वा, उपचिकानञ्च आचयं,* ध. प. अट्ठ. 1.264; – **यो** प्र. वि., ए. व. – ... *कम्मकिलेसेहि आचियतीति आचयो,* ध. स. अट्ठ. 91; *तदुभयं एकज्झं गहेत्वा आचयो लक्खणं एतस्साति आचयलक्खणो,* विसुद्धि. महाटी. 2.95; *यो आयतनानं आचयो सो रूपस्स उपचयो,* ध. स. 641; *आचयोति निब्बत्ति,* ध. स. अट्ठ. 359; **ला. अ.,** वृद्धि, विकास, विपुलभाव – *दिस्सति, भिक्खवे, इमस्स चातुमहाभूतिकस्स कायस्स आचयोपि अपचयोपि ...,* स. नि. 1(2).84; *आचयोति वुड्ढि, अपचयोति परिहानि,* स. नि. अट्ठ. 2.86; *ततो एव आचयसङ्खाता चया अपेतत्ता, निब्बाणं अपेतं चयाति अपचयो,* ध. स. अट्ठ. 91; – **गामी** त्रि., [आचयगामिन्], आचय (वृद्धि) के निष्पादक अथवा आचय की ओर ले जाने वाले सास्रव कुशलधर्म एवं अकुशल धर्म – **मिनो** ब. व. – ... *तस्स कारणं हुत्वा निप्फादनकभावेन तं आचयं गच्छन्ति, यस्स वा पवत्तन्ति तं पुग्गलं यथावुत्तमेव आचयं गमेन्तीतिपि आचयगामिनो,* ध. स. अट्ठ. 91; *तिस्सो पटिसम्भिदा सिया आचयगामिनो, सिया नेवाचयगामिनापचयगामिनो,* विभ. 344; – **मी** पु., प्र. वि., ए. व. – *कामावचरं कुसलं सविपाकं आचयगामीतिआदिका पुच्छा परवादिस्स, पटिञ्ञा च पटिक्खेपो च सकवादिस्स,* प. प. अट्ठ. 198; *कतमो च, भिक्खवे, आचयगामी धम्मो ? मिच्छादिट्ठि ... मिच्छाविमुत्ति – अयं वुच्चति, भिक्खवे, आचयगामी धम्मो,* अ. नि. 3(2). 210; *अत्थि आचयगामी, अत्थि अपचयगामी, अत्थि नेवाचयगामिनापचयगामी,* विभ. 18; – **मित्तिक** नपुं., तत्पु. स., ध. स. की दसवीं तिकमातिका, जिसमें आचयगामी, अपचयगामी तथा नेवाचयगामि-नापचयगामी धर्मों का परिगणन है – **के** सप्त. वि., ए. व. – *आचयगामित्तिके कम्मकिलेसेहि आचियतीति आचयो,* ध. स. अट्ठ. 91.

आचयापचय पु., द्व. स. [आचयापचय], वृद्धि एवं हानि, विकास एवं क्षय – **यो** प्र. वि., ए. व. – *एवं इमस्स कायस्स आचयापचयो होति,* म. नि. 1.304; *आचयापचयो होतीति वड्ढि च अवड्ढि च होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).182.

आचरण नपुं., आ +√चर से व्यु., क्रि. ना. [आचरण], चाल-चलन, व्यवहार – *अज्झाचारोति अधिट्ठहित्वा आचरणं,* नेत्ति. अट्ठ. 234; द्रष्ट. अज्झाचार; – **क** त्रि., आचरण से व्यु., – **किलेसविरहितं** पु., द्वि. वि., ए. व., आचरण में दुष्प्रभाव डालने वाले या आचरण में प्रभाव डालने वाले क्लेशों से मुक्त – *अनाचरियकन्ति आचरणककिलेसविरहितं,* स. नि. अट्ठ. 3.47.

आचरति आ +√चर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आचरति], **क.** आचरण करता है, व्यवहार में उतारता है, कुशल या अकुशल कर्म करता है – ... *भिक्खु उपसम्पन्नसमनन्तरा अनाचारं आचरति,* महाव. 63; *अनाचारं आचरतीति पण्णत्तिवीतिक्कमं करोति,* महाव. अट्ठ. 253; *विलोममाचरति अकिच्चकारिनी,* जा. अट्ठ. 5.432; ... *सिक्खति आचरति समाचरति समादाय सिक्खति,* महानि. 373; – **रेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *यो आचरेय्य, यथाधम्मो कारेतब्बो'ति,* चूळव. 264; *विसमाय पणिधिया हेतु विसमं न चरेय्य न आचरेय्य न समाचरेय्य न समादाय वत्तेय्याति,* महानि. 30; – **रि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *दळ्हं समादाय समत्तमाचरि,* दी. नि. 3.109; – **रिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *एवरूपं अनाचारं आचरिस्सती'ति ...,* महाव. 108; – **रिस्सामि** उ. पु., ए. व. – *सोहं तदेव पुनप्पुनं, वट्टुमं आचरिस्सामि सोभने,* जा. अट्ठ. 3.365; – **रे** विधि., प्र. पु., ए. व. – *मालं न धारे न च गन्धमाचरे, मञ्चे छमायं व सयेथ सन्थते,* अ. नि. 1(1).244; – **रेय्य** – *यो आचरेय्य परदारमलङ्घनीयं, घोरञ्च विन्दति सदा व्यसनं च नेकं,* तेल. 80; – **रितब्ब** त्रि., सं. कृ. – *न, भिक्खवे, विविधं अनाचारं आचरितब्बं,* चूळव. 264; – **रित** त्रि., भू. क. कृ. [आचरित], वह, जिसका व्यावहारिक जीवन में पालन किया गया है या अनुसरण किया गया है, व्यवहार में उतारा हुआ, व्यवहृत – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *मा त्वं अधम्मो आचरितो, अस्मा कुम्भमिवाभिदा'ति,* पाचि. 278; जा. अट्ठ. 3.25; **विशेष अर्थ क.** प्रयोग करता है, व्यवहार में लाता है – **रे** विधि., प्र. पु., ए. व. – *मालं न धारे, न च गन्धमाचरे,* सु. नि. 403; *आकप्पं सरकुत्तिं वा, न रञ्ञो सदिसमाचरे,* जा. अट्ठ. 7.187; **विशेष अर्थ ख.** परस्त्री-गमन करता है – **रेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *यो आचरेय्य परदारमलङ्घनीयं,* तेल. 80.

आचरिनी स्त्री., भिक्षुणीसङ्घ में रहने वाली आचार्य नारी – **निं / नीं** द्वि. वि., ए. व. – *गणं वा आचरिनिं वा पत्तं वा चीवरं वा परियेसति,* पाचि. 303-304, 433; – **निया** च. / ष. वि., ए. व. – *उपज्झायाय आपत्ति पाचितियस्स, गणस्स च आचरिनिया च आपत्ति दुक्कटस्स,* पाचि. 440.

आचरिय पु., [आचार्य, बौ. सं., आचरिय / आचारिय], **सामान्य अर्थ.** शिक्षक, अध्यापक, विविध शिल्पों एवं विद्याओं की शिक्षा देने वाला शिक्षक, घोड़ों एवं हाथियों आदि का प्रशिक्षक – *गामणीयो तु मातङ्ग-हयाद्याचरियो भवे,* अभि. प. 368; – **येन** तृ. वि., ए. व. – ... *सब्बसिप्पानि उग्गण्हित्वा आचरियेन अनुञ्ञातो ...,* जा. अट्ठ. 3.206; *असुकाचरियेन कतोतिपि जानाति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).240; – **य** संबो., ए. व. – *"इच्छामहं, आचरिय, सिप्पं सिक्खितुं"न्ति,* महाव. 466; – **या** प्र. वि., ब. व. – *आचरियाव जानन्ति, कम्मं सुकतदुक्कटं,* जा. अट्ठ. 3.249; – **येसु** सप्त. वि., ब. व. – ... *.सिप्पस्स कारणा आचरियेसु सगारवा ...,* महाव. 260; **विशेष अर्थ 1.** उपनयन कराने वाला तथा वेदों एवं वेदाङ्गों की शिक्षा देने वाला ब्राह्मण आचार्य – *उपनीयाथ वा पुब्बं, वेदमज्झापये द्विजो, यो साङ्गं सरहस्सं चाचरियो ब्राह्मणेसु सो,* अभि. प. 411; *अहं तस्स आचरियब्राह्मणो,* जा. अट्ठ. 7.299; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *"अहं इमं मन्तं आचरियस्स उपकारको हुत्वा लभिस्सामी"ति चिन्तेत्वा ...,* जा. अट्ठ. 4.180; – **या** प्र. वि., ब. व. – *"तुम्हे किं करिस्सथा"ति तुम्हे पन आचरियाति,* जा. अट्ठ. 4.439; **विशेष अर्थ 2.** आचार-विचार की शिक्षा देने वाला (पिता, कुटुम्बीजन, मित्र आदि), पथप्रदर्शक – **यो** प्र. वि., ए. व. – *....तस्मा इदानिपि नो आचारसिक्खापनेन आचरियो भवाति आह,* जा. अट्ठ. 5.378; *आचरियन्ति आचारे सिक्खापनतो इध पिता 'आचरियो'ति अधिप्पेतो,* जा. अट्ठ. 4.160; *आचरियो ति कुटुम्बिकस एस्स मय्हं आचारसिक्खापको आचरियो,* जा. अट्ठ. 4.335; **विशेष अर्थ 3.** बौद्ध भिक्षुसङ्घ में प्रव्रजित अथवा उपसम्पदा-प्राप्त भिक्षु को उपाध्याय के अभाव में निःश्रय प्रदान करने वाला तथा नव-दीक्षित भिक्षुओं को आचार एवं अच्छे व्यवहार की प्रायोगिक शिक्षा देने वाला भिक्षु-शिक्षक – **यो** प्र. वि., ए. व. – *आचरियो, भिक्खवे, अन्तेवासिकम्हि पुत्तचित्तं उपट्ठापेस्सति,* महाव. 68; ... *आचारसमाचारसिक्खापको आचरियो नाम कोचि नत्थि,* पे. व. अट्ठ. 219; – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *अनुजानामि, भिक्खवे, आचरियं,* महाव. 68; ... *आचरियन्ति आचारसमाचारसिक्खापनकं आचरियं अनुजानामि,* महाव. अट्ठ. 254; – **म्हा** प. वि., ए. व. – *छयिमा, भिक्खवे, निस्सयपटिप्पस्सद्धियो आचरियम्हा,* महाव. 80; – **यानं** ष. वि., ब. व. – *इदं अम्हाकं आचरियानं भविस्सति,* चूळव. 289; *'एवं अम्हाकं आचरियानं उग्गहो परिपुच्छा'ति,* पाचि. 154; **विशेष अर्थ 4.** ध्यान के लिए कर्मस्थान प्रदान करने वाला कल्याणमित्र, योग-शिक्षक – **स्स** ष. वि., ए. व. – *कम्मट्ठानं गहेत्वान, आचरियस्स सन्तिके,* अभि. अव. 836; स. उ. प. के रूप में, अट्ठकथा., इस्सासा., उद्देसा., उपज्झाया., उपसम्पदा., ओवादा., कच्चायना., कम्मवाचा., गणा., गन्था. / गन्धा., गुत्तिला., दिसापामोक्खा., धनुग्गहा., धम्मपाला., धम्मा., निस्सया., पच्छा., पब्बज्जा., पा., पिट्ठि., पीठा., पुब्ब., पोराणा., बुद्धघोसा., महा., मातङ्ग-हयाद्या., योग., रथा., लाखा., लेखा., लोका., वजिरबुद्धा., वत्थुविज्जा., वळञ्जनका., सत्था., सिलोका., हत्था. आदि के अन्त. द्रष्ट..

आचरियक नपुं., आचरिय से व्यु. [आचार्यक], आचार्यवाद, आचार्यभाव, पारम्परिक सिद्धान्त, शिल्प, व्यवसाय, आचार्यों द्वारा किया गया शिक्षण या अध्यापन, मत, विश्वास – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *सकं आचरियकं उग्गहेत्वा आचिक्खन्ति ...,* दी. नि. 2.80; *आचरियकन्ति आचरियभावं आचरियवादं,* दी. नि. अट्ठ. 3.13; *एके समणब्राह्मणा इस्सरकुत्तं ... आचरियकं अग्गञ्ञं पञ्ञपेन्ति,* दी. नि. 3.20; *सकं आचरियकं सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरेय्या'ति,* म. नि. 1.223; *सकं आचरियकन्ति अत्तनो आचरियसमयं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).74; – **के** सप्त. वि., ए. व. – *दक्खा परियोदातसिप्पा सके आचरियके नहापितकम्मे,* महाव. 325; *आचरियकेति आचरियकम्मे,* पारा. अट्ठ. 1.230.

आचरियकम्म नपुं., तत्पु. स. [आचार्यकर्म], आचार्य का कर्म या शिल्प, आचार्य या शिक्षक द्वारा ज्ञात या गृहीत व्यवसाय – **म्मे** सप्त. वि., ए. व. – *आचरियकेति आचरियकम्मे,* पारा. अट्ठ. 1.230; ... *सुसिक्खितो अनवयो सके आचरियके कुम्भकारकम्मे परियोदातसिप्पो,* पारा. 47-48.

आचरियकिच्च नपुं., तत्पु. स. [आचार्यकृत्य], आचार्य द्वारा किए जाने योग्य कृत्य, शिक्षक द्वारा करणीय कार्य – **च्चं** प्र. वि., ए. व. – *आचरियकिच्चं उपज्झायकिच्चं ... समानाचरियकिच्चं – इदं किच्चं नो अधिकरणं,* चूळव. 203.

आचरियकुल नपुं., तत्पु. स. [आचार्यकुल], एक ही आचार्य से शिक्षा-प्राप्त शिष्यों की परम्परा या उनका समूह, आचार्य का परिवार, एक मतवाद अथवा एक शाखा के अनुयायियों का समूह, धार्मिक शाखा या निकाय – **लानि** प्र. वि., ब. व. – *अट्ठारस निकायातिपि, अट्ठारसाचरियकुलानीतिपि एतेसंयेव नामं,* प. प. अट्ठ. 102; – **ले** सप्त. वि., ए. व. – ... *किमञ्ञत्र अवुसितत्ताति आचरियकुले असंवुद्धा,* दी. नि. अट्ठ. 1.206; *सिक्खितोति दस द्वादस वस्सानि आचरियकुले उग्गहितसिप्पो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).364; – **लं** द्वि. वि., ए. व. – ... *नगरं पविसित्वा आचरियकुलं गन्त्वा आचरियं वन्दित्वा ...,* जा. अट्ठ. 5. 455; *एवं अम्हाकं आचरियकुलं निस्साय निय्यानिकं भविस्सति,* चूळव. अट्ठ. 112; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *मा मे आचरियकुलस्स अवण्णो अहोसी'ति,* अ. नि. 1(2).129.

आचरियकुलवादकथा स्त्री., म. वं. के पांचवें परिच्छेद की प्रारम्भिक तेरह गाथाएं, जिसमें सम्राट् अशोक के काल तक विकसित बौद्ध भिक्षुसंघ की अट्ठारह शाखाओं का उल्लेख है – *आचरियकुलवादकथा निट्ठिता,* म. वं. (पृ.) 56.

आचरियकेवट्ट पु., ब्रह्मदत्त के पुरोहित का नाम – **ट्टो** प्र. वि., ए. व. – *आचरियकेवट्टोपि केवलं नलाटे वण्णं कत्वा चरति,* जा. अट्ठ. 6.235.

आचरियगरुत्त नपुं., भाव. [आचार्यगुरुत्व], आचार्यों की महिमा, आचार्यों की श्रेष्ठता – **त्ता** प. वि., ए. व. – *आचरियगरुत्ता कथिकं न परिभवति,* महानि. अट्ठ. 7.

आचरियगाथा स्त्री., तत्पु. स. [आचार्यगाथा], आचार्यों के मुख से निकला वचन, परम्परागत सिद्धान्त को प्रकाशित करने वाला कथन – **य** तृ. वि., ए. व. – *इमाय आचरियगाथाय तमत्थं साधेन्ति,* स. नि. अट्ठ. 2.236.

आचरियगुण पु., तत्पु. स. [आचार्यगुण], आचार्य में पाए जाने योग्य गुण, ऐसे गुण, जो किसी भी आचार्य में अवश्य होने चाहिए – **णा** प्र. वि., ब. व. – *आचरियानं पञ्चवीसति आचरियगुणा, तेहि गुणेहि आचरियेन सम्मा पटिपज्जितब्बं,* मि. प. 105.

आचरिगुत्तिल पु., कर्म. स., (वीणा-वादन आदि) गन्धर्व-शिल्पों में दक्ष आचार्य, एक आचार्य, जो वीणा-वादन जैसे गन्धर्व-शिल्प में दक्ष थे – **लो** प्र. वि., ए. व. – *सारिपुत्त थेरो बुद्धघोसाचरियो आचरियगुत्तिलो'ति वा महोसधपण्डितो,* सद्द. 3.751; *इतो किर सत्तमे दिवसे आचरियगुत्तिलो च अन्तेवासिकमूसिलो च ...,* जा. अट्ठ. 2.210.

आचरियचतुक्क नपुं., [आचार्यचतुष्क], आचार्य एवं अन्तेवासिक के परस्पर-सम्बन्ध-विषयक चार विनय-नियम – **क्के** सप्त. वि., ए. व. – *आचरियचतुक्केपि एसेव नयो,* परि. अट्ठ. 171.

आचरियट्ठान नपुं., तत्पु. स. [आचार्यस्थान], आचार्य का पद, आचार्य की पदवी अथवा स्थिति – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *उदको रामपुत्तो सब्रह्मचारी मे समानो आचरियट्ठाने मं ठपेसि,* म. नि. 1.226.

आचरियदक्खिणा स्त्री., तत्पु. स. [आचार्यदक्षिणा], आचार्य को देय दक्षिणा – **णं** द्वि. वि., ए. व. – *आचरियधनन्ति आचरियदक्खिणं आचरियभागं,* अ. नि. अट्ठ. 3.67.

आचरियधन नपुं., तत्पु. स. [आचार्यधन], आचार्य को दक्षिणा के रूप में देय धन – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *अञ्ञतित्थिया आचरियस्स आचरियधनं परियेसिस्सन्ति,* म. नि. 2.17; *आचरियधनं परियेसिस्सन्तीति अञ्ञतित्थिया हि यस्स सन्तिके सिप्पं उग्गण्हन्ति तस्स, सिप्पुग्गहणतो पुरे वा पच्छा वा अन्तरन्तरे वा गेहतो नीहरित्वा धनं देन्ति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.11; *'पच्छा धम्मेन भिक्खं चरित्वा आचरियधनं आहरिस्सामी'ति,* जा. अट्ठ. 4.201.

आचरियधनु नपुं., कर्म. स., अत्यन्त उत्तम कोटि का धनुष, दृढ़ धनुष – **नुं** द्वि. वि., ए. व. – *दळ्हधम्मिनोति दळ्हधनुनो, उत्तमप्पमाणं आचरियधनुं धारयमाना,* स. नि. अट्ठ. 1.236.

आचरियधम्मपाल पु., कर्म. स., प्रसिद्ध अट्ठकथाकार, आचार्य धम्मपाल – **लो** प्र. वि., ए. व. – *बदरतित्थविहारवासी आचरियधम्मपालो पन,* सद्द. 1.230.

आचरियधम्मपालत्थेर पु., कर्म. स., उपरिवत् – **रेन** तृ. वि., ए. व. – *आचरियधम्मपालत्थेरेनेव पनेत्थ इदं वुत्तं,* सारत्थ. टी. 1.33; *आचरियधम्मपालत्थेरेन वुत्तं 'यावदेवाति इमिना समानत्थं यावदेति इदं पदं'न्ति,* सारत्थ. टी. 1.37; *आचरियधम्मपालत्थेरेनपि नेत्तिपकरणट्ठकथायं एवमेतस्स सुत्तङ्गसङ्गहोव कथितो,* सारत्थ. टी. 1.84.

आचरियनय पु., तत्पु. स. [आचार्यनय], स्थविरवादी परम्परा के आचार्यों की वह पद्धति, जो व्याख्यानों के स्रोत के रूप में पिटकों एवं अट्ठकथाओं की पद्धतियों के अतिरिक्त तीसरी ग्राह्य पद्धति है – **येन** तृ. वि., ए. व. – *अट्ठकथामुत्तकेन पन आचरियनयेन अपरापि छ पञ्ञत्तियो,* प. प. अट्ठ. 27, 28; *पाळिमुत्तकेन पन अट्ठकथानयेन अपरापि छ पञ्ञत्तियो,* प. प. अट्ठ. 26.

आचरियन्तेवासिक पु., द्व. स., भिक्षु आचार्य एवं उसकी देखरेख में रहने वाला भिक्षु शिष्य – **केसु** सप्त. वि., ब. व. – *एस नयो आचरियन्तेवासिकेसुपि,* पारा. अट्ठ. 2.60; *आचरियन्तेवासिकेसु हि यो यो न सम्मा वत्तति, तस्स तस्स आपत्ति,* महाव. अट्ठ. 254.

आचरियन्तेवासी पु., द्व. स., आचार्य एवं शिष्य – **सी** प्र. वि., ब. व. – *इतिह ते उभो आचरियन्तेवासी अञ्ञमञ्ञस्स उजुविपच्चनीकवादा,* दी. नि. 1.2.

आचरियपरम्परा स्त्री., तत्पु. स. [आचार्यपरम्परा], आचार्यों की परम्परा, शिक्षकों की लगातार चली आ रही पीढ़ियों में सुरक्षित सिद्धान्त, परम्परा से प्राप्त मतवाद – **रा** प्र. वि., ए. व. – *आचरियपरम्परा खो पनस्स न सुग्गहिता होति न सुमनसिकता न सूपधारितांति इदं ततियं,* परि. 255; पारा. अट्ठ. 1.183; ... *एत्थ आचरियपरम्पराति आचरियानं विनिच्छयपरम्परा,* सारत्थ. टी. 2.43; – **य** तृ. वि., ए. व. – *उपालित्थेरमादिं कत्वा आचरियपरम्पराय याव ततियसङ्गीति ताव आभतं,* पारा. अट्ठ. 1.24; *एकंसो गहितोति अनुस्सवेन वा आचरियपरम्पराय वा इतिकिराय वा,* स. नि. अट्ठ. 3.238; *खुद्दकपाठो आदि आचरियपरम्पराय वाचनामग्गं आरोपितवसेन न भगवता वुत्तवसेन,* खु. पा. अट्ठ. 3.

आचरियपाचरिय पु., [आचार्यप्राचार्य], 1. शिक्षक एवं शिक्षकों का भी शिक्षक, आचार्य एवं प्राचार्य, वह, जो स्वयं आचार्य है तथा आचार्यों का भी आचार्य है, 2. बहुत से देवों एवं मनुष्यों को बुद्ध के धर्मामृत का पान कराने के कारण आचार्य तथा श्रद्धावान् श्रावकों के लिए प्राचार्य – **यो** प्र. वि., ए. व. – *सोणदण्डो बहूनं आचरियपाचरियो तीणि माणवकसतानि मन्ते वाचेति,* दी. नि. 1.99; *भवञ्हि चङ्की बहूनं आचरियपाचरियो,* म. नि. 2.385; *बहूनं आचरियपाचरियोति भगवतो एकेकाय धम्मदेसनाय चतुरासीतिपाणसहस्सानि अपरिमाणापि देवमनुस्सा मग्गफलामतं पिवन्ति, तस्मा बहूनं आचरियो, सावकविनेय्यानं पाचरियोति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.296; दी. नि. अट्ठ. 1.230; – **येहि** तृ. वि., ब. व. – *ब्राह्मणेहि वुद्धेहि महल्लकेहि आचरियपाचरियेहि सद्धिं कथासल्लापो होति,* दी. नि. 1.78; *आचरियपाचरियेहीति आचरियेहि च तेसं आचरियेहि च,* दी. नि. अट्ठ. 1.205; – **यानं** ष. वि., ब. व. – *पुब्बकानं आचरियपाचरियानं नटानं भासमानानं,* स. नि. 2(2).295; *आचरियपाचरियानन्ति आचरियानञ्चेव आचरियाचरियानञ्च,* सु. नि. अट्ठ. 2.156; – **येसु** सप्त. वि., ब. व. – *मज्झिमोपीति मज्झिमेसु आचरियपाचरियेसु एकोपि,* ... दी. नि. अट्ठ. 1.302.

आचरियपुत्त / आचेरपुत्त पु., एक पुरोहित का पुत्र (सरभङ्ग) – **त्तो** प्र. वि., ए. व. – *आचेरपुत्तो सुविनीतरूपो, सो नेसं पञ्हानि वियाकरिस्सती'ति,* जा. अट्ठ. 5.134.

आचरियपूजक त्रि., [आचार्यपूजक], आचार्यों या गुरुजनों का सम्मान करने वाला, आचार्यों के प्रति सम्मानभाव से जुड़ा हुआ – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *अहं ते सरणं होमि, अहमाचरियपूजको,* वि. व. 328; जा. अट्ठ. 2.211; *उपतिस्सो सब्बकालम्पि आचरियपूजकोव,* थेरगा. अट्ठ. 2.319.

आचरियब्राह्मण पु., कर्म. स. [आचार्यब्राह्मण], ब्राह्मण जाति में उत्पन्न शिक्षक, ब्राह्मण आचार्य – **णं** द्वि. वि., ए. व. – *आचरियब्राह्मणं एतदवोच 'सञ्ञापेहि खो, त्वं, ब्राह्मण, इमं दारकं मन्तानीति',* मि. प. 9.

आचरियभरिया स्त्री., तत्पु. स. [आचार्यभार्या], आचार्य की पत्नी, शिक्षक की पत्नी – **या** प्र. वि., ए. व. – *माताति वा मातुच्छाति वा मातुलानीति वा आचरियभरियाति वा गरूनं दाराति वा,* दी. नि. 3.53; अ. नि. 1(1).68; – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *आचरियभरियं सखिं, मातुलानिं पितुच्छकिं, यदा लोके गमिस्सन्ति,* जा. अट्ठ. 4.164; – **य** च. वि., ए. व. – *"अधिवासेतु ... अम्हाकं आचरियभरियाय वेरहच्चानिगोत्ताय ब्राह्मणिया स्वातनाय भत्त'न्ति,* स. नि. 2(2).127.

आचरियभाग पु., तत्पु. स. [आचार्यभाग], शिक्षक को दिया जाने वाला शुल्क, आचार्य को देय दक्षिणा – **गो** प्र. वि., ए. व. – *थेरो 'आचरियभागो नामाय'न्ति कप्पियवसेन गाहापेत्वा पुप्फपूजं अकासि,* पारा. अट्ठ. 2.61; *'अयं ते आचरियभागो'ति सहस्सं अदासि,* ध. प. अट्ठ. 1.143; – **गं** द्वि. वि., ए. व. – *आचरियधनन्ति आचरियदक्खिणं आचरियभागं,* अ. नि. अट्ठ. 3.67.

आचरियमग्ग पु., तत्पु. स. [आचार्यमार्ग], आचार्यों द्वारा ग्रहण किया गया मार्ग या आचार-व्यवहार, आचार्यों के कथन का प्रकार – **ग्गो** प्र. वि., ए. व. – *"आवुसो, तया पठमं कथितो एव आचरियमग्गो,* विसुद्धि. 1.94; *आचरियमग्गोति आचरियानं कथामग्गो,* विसुद्धि. महाटी. 1.110.

आचरियमति स्त्री., तत्पु. स. [आचार्यमति], शिक्षक का विचार अथवा आचार्य का स्पष्टीकरण – **या** तृ. वि., ए. व. – *तस्मा आचरियमतिया सुत्तं अपटिबाहेत्वा सुत्तमेव*

पमाणं कत्तब्बं, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.236; – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचरियमतिकोति आचरियमतियं नियुत्तो तस्मा अनतिवत्तनतो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.112; – **क**, त्रि॰ ब॰ स॰, आचार्य के विचार का अनुसरण करने वाला, आचार्य द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त का अनुयायी, – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवरूपो हि तन्तिधरो वंसानुरक्खको पवेणीपालको आचरियो आचरियमतिकोव होति, न अत्तनोमतिको होति,* विसुद्धि॰ 1.97; *आचरियमतिकोति आचरियमतियं नियुत्तो* ..., विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.112.

आचरियमत्त त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जो शील आदि में आचार्य जैसा हो चुका है, पांच वर्षों से अधिक समय से उपसम्पदा प्राप्त भिक्षु, आचार्य-पद पाने योग्य व्यक्ति – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवस्सिकस्स छब्बस्सो आचरियमत्तो,* महाव॰ अट्ठ॰ 346; *आचरियमत्तोति सीलादिना आचरियप्पमाणो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.333; – **त्तेसु** पु॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आचरियेसु आचरियमत्तेसु उपज्झायेसु उपज्झायमत्तेसु अनुपाहनेसु चङ्कममानेसु सउपाहनेन चङ्कमितब्बं,* महाव॰ 260; *उपज्झाये उपज्झायमत्तेसु आचरिये आचरियमत्तेसु सब्बत्थ अनाधिकरणेन भवितब्बं अनवसेसकारिना,* मि॰ प॰ 351.

आचरियमहयुग पु॰, [आचार्यमहायुग], आचार्यों की बहुत पुरानी पीढ़ी – **गा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अत्थि कोचि तेविज्जानं ब्राह्मणानं याव सत्तमा आचरियामहयुगा येन ब्रह्मा सक्खिदिट्ठो ति ?,* दी॰ नि॰ 1.216; *एकाचरियपाचरियोपि, याव सत्तमा आचरियमहयुगापि,* म॰ नि॰ 2.388.

आचरियमुट्ठि स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आचार्यमुष्टि], **शा॰ अ॰**, आचार्य की बन्द मुट्ठी, **ला॰ अ॰**, विद्यादान या ज्ञान देने में शिक्षक की अनुदार प्रवृत्ति, अपने ज्ञान को अपने तक सीमित रखने की आदत, अपने पास रहस्य छिपाकर शिष्यों को विद्या न देने की प्रवृत्ति – **ट्ठि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नत्थानन्द, तथागतस्स धम्मेसु आचरियमुट्ठि,* दी॰ नि॰ 2.78; *आचरियमुट्ठी'ति ... दहरकाले कस्सचि अकथेत्वा पच्छिमकाले मरणमञ्चे निपन्ना पियमनापस्स अन्तेवासिकस्स कथेन्ति* ..., दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.123; *नत्थानन्द तथागतस्स धम्मेसु आचरियमुट्ठी'ति,* मि॰ प॰ 145; ... *न ते अत्थि आचरियमुट्ठीति वुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.90; – **ट्ठिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बोधिसत्ता नाम सिप्पं वाचेन्ता आचरियमुट्ठिं न करोन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.186; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, पक्षपातयुक्त होकर शिक्षक द्वारा सभी को विद्या का रहस्य न बतलाना – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्हाकं, महाराज ..., आगतं पोराणमन्तपदं अत्थि, तं मयं आचरियमुट्ठिताय न कस्सचि भणिम्हा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.50.

आचरियलेस पु॰, [आचार्यलेश], आचार्य का बहाना, आचार्य के रखने का दिखावा ढोंग या पाखण्ड – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचरियलेसो नाम इत्थन्नामस्स अन्तेवासिको दिट्ठो होति,* पारा॰ 266.

आचरियवंस पु॰, तत्पु॰ स॰ [आचार्यवंश], आचार्यों की परम्परा, आचार्यों का वंश या पीढ़ियां, आचार्यों के वाद, धार्मिक शाखा – **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचरियवंसेन अधिप्पाया कारणुत्तरियताय, ... आचरियवंसोति आचरियवादो,* मि॰ प॰ 148; पारा॰ अट्ठ॰ 1.179.

आचरियवच नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आचार्यवचस्], आचार्य का वचन, आचार्य की शिक्षा – **चो** प्र/द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदं तदाचरियवचो, पारासरियो यदब्रवि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.169; जा॰ अट्ठ॰ 3.138; *इदं तं आचरियस्स वचनं,* तदे॰; स॰ उ॰ प॰ के रूप में – **पुब्बाचरिय॰**- नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [पूर्वाचार्यवचस्], पूर्व-काल के आचार्यों का वचन – **चो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बे ते अप्पटिक्खिप्पा, पुब्बाचरियवचो इदं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.306; *पुब्बाचरियवचो इदन्ति पुब्बाचरिया वुच्चन्ति मातापितरो, इदं तेसं वचनं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.307.

आचरियवत्त नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आचार्यव्रत], अपने आचार्य के प्रति अन्तेवासी का उचित व्यवहार, आचार्य के प्रति शिष्य का कर्त्तव्य – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निस्सयन्तेवासिकेन हि याव आचरियं निस्साय वसति, ताव सब्बं आचरियवत्तं कातब्बं,* महाव॰ अट्ठ॰ 254; *एवं आचरियवत्तं कत्वा* ..., ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.54.

आचरियवाद पु॰, तत्पु॰ स॰ [आचार्यवाद], **शा॰ अ॰**, आचार्यों का सिद्धान्त, आचार्यों की शिक्षा, **ला॰ अ॰ 1**. अट्ठकथा, – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचरियवादो नाम धम्मसङ्गाहकेहि पञ्चहि अरहन्तसतेहि ठपिता पाळिविनिमुत्ता ओक्कन्तविनिच्छयप्पवत्ता अट्ठकथातन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.180; – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुत्तं, सुत्तानुलोमं, आचरियवादं अत्तनोमतिन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.179; **ला॰ अ॰ 2**. मतवाद, धार्मिक निकाय, शिल्पस्थानों अथवा विद्यास्थानों की शाखा, आचार्यों द्वारा स्थापित सिद्धान्त – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सकं आचरियकन्ति अत्तनो आचरियवादं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.282; **ला॰ अ॰ 3**. थेरवाद सहित बौद्धधर्म की विभिन्न शाखाएं अथवा निकाय, थेरवाद, महासांघिक, गोकुलिक, एकव्यावहारिक, प्रज्ञप्तिवादी, बाहुलिक, चैत्यवाद,

महिशासक, वज्जिपुत्तक, धम्मउत्तरीय, भद्रयानिक, छन्नागारिक, सम्मितिय, सब्बत्थिवाद, धम्मगुत्तिक, कस्सपीय, सङ्कन्तिक, सुत्तवाद नामक अठारह शाखाओं को आचार्यवाद कहा गया है; – **दा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अञ्ञाचरियवादा तु ततो ओरं अजायिसुं* म॰ वं॰ 5.2; *तथाचरियवादा च भिन्नरूपा न विज्जरे,* चू॰ वं॰ 37.227; – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनोत्तरन्तो असमेन्तो च गारय्हाचरियवादो न गहेतब्बो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.180; – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अकंसाचरियवादं ते महासङ्गिकनामकं,* म॰ वं॰ 5.4.

आचरियसमय पु॰, तत्पु॰ स॰ [आचार्यसमय], आचार्यों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त या विषय – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सकं आचरियकन्ति अत्तनो आचरियसमयं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).74; – **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ आचरियकेति आचरियसमये,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.162.

आचरियसादिस त्रि॰, ब॰ स॰ [आचार्यसदृक्], आचार्य जैसा, आचार्यों के समान – **सा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पदकस्म वेय्याकरणा, जप्पे आचरियसादिसा,* सु॰ नि॰ 600.

आचरियसुद्धि स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आचार्यशुद्धि], आचार्यों की परम्परा की विशुद्धि, आचार्यों की विशुद्ध पीढ़ी – *अत्तनो मतिं पहाय आचरियसुद्धिया वत्ता होति ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.184.

आचरिया स्त्री॰, [आचार्या], भिक्षुणीसङ्घ में प्रवेश पा रही भिक्षुणी की शिक्षिका – *सङ्घमित्तायुपज्झाया धम्मपाला ति विस्सुता, आचरिया आयुपाला, काले सासि अनासवा,* म॰ वं॰ 5.208.

आचरियाचरिय पु॰, तत्पु॰ स॰ [आचार्याचार्य], आचार्य का आचार्य, शिक्षक का शिक्षक – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा आचरियो च आचरियाचरियो च पाळिञ्च परिपुच्छञ्च वदन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.184; – **यानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आचरियपाचरियानन्ति आचरियानञ्चेव आचरियाचरियानञ्च,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.157; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.139.

आचरियानी स्त्री॰, आचरिय + आनी [आचार्यानी], शिक्षक की पत्नी, आचार्य की पत्नी – *मातुलादितो भरियायमानी होन्ति,* मातुलानी; करुणानी; गहपतानी; आचरियानी, मो॰ व्या॰ 3.33.

आचरियानुसिट्ठि स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आचार्यानुशिष्टि], आचार्य द्वारा दिया गया अनुशासन या निर्देश, आचार्य की शिक्षा – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा, महाराज, अन्तेवासिको आचरियानुसिट्ठिया विज्जं पञ्ञाय सच्छिकरोति,* मि॰ प॰ 295; *दक्खो मालाकारो नानापुप्फरासिम्हा आचरियानुसिट्ठिया पच्चत्तपुरिसकारेन ...,* मि॰ प॰ 315.

आचरियासभ पु॰, कर्म॰ स॰ [आचार्यर्षभ], श्रेष्ठ आचार्य, उत्तम आचार्य – **भो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अधिकक्खरवण्णानि ... न बुद्धवचना नीति दीपेताचरियासभो,* रूप॰ 2.86(रो॰).

आचरियुग्गह पु॰, तत्पु॰ स॰ [आचार्योद्ग्रह], आचार्य से ग्रहण किया गया या सीखा गया शास्त्र, आचार्य से गृहीत कर्मस्थान – **हो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उग्गहेतब्बतो उग्गहो ... आचरियतो उग्गहो आचरियुग्गहो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.309; *पवेणिया आगतो आचरियुग्गहोव गहेतब्बो, कुरुन्दियं पन लोकवज्जे आचरियुग्गहो न वट्टति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 117; *एत्थ गारय्हो आचरियुग्गहो न गहेतब्बो,* तदे॰; – **हं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खुसङ्घो कतमाचरियानं उग्गहो, अत्तनो आचरियुग्गहञ्ञेव वदतु,* विसुद्धि॰ 1.94.

आचरियुपज्झाय पु॰, इत॰ द्व॰ स॰, ब॰ व॰ में ही [आचार्योपाध्याय], आचार्य एवं उपाध्याय – **या** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *नो चे अम्हाकं आचरियुपज्झाया गमिस्सन्ति,* महाव॰ 100; *तं आचरियुपज्झाया उपट्ठहन्ता नासक्खिंसु अरोगं कातुं,* महाव॰ 278; – **येहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *न, भिक्खवे, आचरियुपज्झायेहि अनुजानितब्बा,* महाव॰ 149; – **यानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *पञ्च वस्सानि आचरियुपज्झायानं सन्तिके वसित्वा ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.301; – **येसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तेन खो पन समयेन भिक्खू आचरियुपज्झायेसु पक्कन्तेसुपि विब्भन्तेसुपि ...,* महाव॰ 79; – **क** त्रि॰, आचार्य एवं उपाध्याय से सम्बन्धित, आचार्य एवं उपाध्याय वाला – *आचरियुपज्झायकसिस्ससद्धिविहारिवत्तानिपि सब्बसोव,* विन॰ वि॰ 2915; – **वत्त** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आचार्योपाध्यायव्रत], आचार्य एवं उपाध्याय के प्रति सद्धिविहारिक एवं अन्तेवासिक का उचित व्यवहार, शिक्षकों के प्रति शिष्यों का कर्तव्य – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बोधिवत्तं वा आचरियुपज्झायवत्तं वा योनिसोमनसिकारो वा नत्थि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.159; – **त्तानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आचरियुपज्झायवत्तानि पानीयपरिभोजनीयउपोसथागारजन्ताघरादिवत्तानि च साधुकं करोति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.430; – **या** स्त्री॰, द्व॰ स॰ [आचार्योपाध्याया], भिक्षुणी की आचार्या एवं उपाध्याया नामक दो शिक्षिकाएं – **याहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तस्मा अस्सा आचरियुपज्झायाहि विहारं गन्त्वा सङ्गाहकपक्खे ठितो,* चूळव॰ अट्ठ॰ 30.

आचरियुपासन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आचार्योपासना, स्त्री॰], आचार्य की सेवा सुश्रूषा, शिक्षक की सेवा – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थि मे, महाराज, आगमो अधिगमो ... परिपुच्छा आचरियुपासनं,* मि॰ प॰ 122.

आचरियूपद्दव पु., तत्पु. स. [आचार्योपद्रव], आचार्य के चित्त में उदित क्लेशों से जनित विपत्ति – **वो** प्र. वि., ए. व. – *एवं सन्ते, खो, आनन्द, आचरियूपद्दवो होति, एवं सन्ते अन्तेवासूपद्दवो होति ...*, म. नि. 3.158; – **वेन** तृ. वि., ए. व. – *आचरियूपद्दवेनाति अब्भन्तरे उप्पन्नेन किलेसूपद्दवेन आचरियस्सुपद्दवो*, म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.121.

आचल त्रि., अचल के स्थान पर अप. [अचल], स्थिर, अडिग – **ला** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *ताहं भूमिमनुप्पत्तो, ठिता सद्धम्ममाचला*, अप. 1.51.

आचाम पु., [आचाम], **शा. अ.**, पानी का झाग या फेन, उबाले हुए चावल या भात का झाग, वर्तन की तलहटी पर लगी हुई भात की पपड़ी, **ला. अ.**, अरुचिकर अथवा अस्वादिष्ट खाद्य, भात का मांड़ – **मो** प्र. वि., ए. व. – *निस्सावो च तथा चामो*, अभि. प. 466; *आचामोति भत्तउक्खलिकाय लग्गो झामकओदनो, तं छड्डितट्ठानतोव गहेत्वा खादति*, दी. नि. अट्ठ. 1.264; म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).358; *भुत्वा आचामकुण्डकन्ति ... एत्थ आचामो वुच्चति ओदनावसेसं*, जा. अट्ठ. 2.241; – **मं** द्वि. वि., ए. व. – *या ते अदासि आचामं, पसन्ना सेहि पाणिभि*, वि. व. 186.

आचामकञ्जिक नपुं., कर्म. स. [आचामकाञ्जिक], चावल का खट्टा तरल पेय, कांजी – *आचामकञ्जिकलोणूदकन्तिपि वदन्ति*, वि. व. अट्ठ. 79.

आचामकुण्डक नपुं., कर्म. स., चावल की लाल रंग की भूसी से तैयार किया हुआ पेय, स्नान करते समय प्रयोग में लाया जाने वाला चावल का चूर्ण – **कं** प्र. वि., ए. व. – *बहु तत्थ महाब्रह्मे, अपि आचामकुण्डकं*, जा. अट्ठ. 2.241; ध. प. अट्ठ. 2.188; *भुत्वा तिणपरिघासं, भुत्वा आचामकुण्डकं*, ध. प. अट्ठ. 2.188.

आचामकुम्भी स्त्री., तत्पु. स. [आचामकुम्भी], नहाने-धोने के लिए पानी से भरा मटका – **भी** प्र. वि., ए. व. – *आचामकुम्भी सोवण्णा उळुङ्को च अहू तहिं*, म. वं. 27.40.

आचामदान नपुं., तत्पु. स. [आचामदान], चावल की भूसी की पपड़ी का दान, मांड़ का दान – **स्स** ष. वि., ए. व. – *एतस्साचामदानस्स, फलं नाग्घति सोळसिन्ति एतस्स एताय दिन्नस्स आचामदानस्स फलं सोळसभागं कत्वा ...*, वि. व. अट्ठ. 83.

आचामदायिकविमानवण्णना स्त्री., वि. व. अट्ठ. के एक स्थल का शीर्षक, वि. व. अट्ठ. 80-83; *आचामदायिकाविमानवण्णना निट्ठिता*, वि. व. अट्ठ. 83.

आचामदायिकविमानवत्थु नपुं., वि. व. के एक खण्ड-विशेष का शीर्षक, वि. व. 185-194.

आचामदायिका स्त्री., [आचामदायिका], भात की पपड़ी या मांड़ का दान करने वाली स्त्री – **का** प्र. वि., ए. व. – *तत्थ सा सुखिता नारी, मोदताचामदायिका'ति*, वि. व. 189; *मोदताचामदायिकाति आचाममत्तदायिका, सापि नाम पञ्चमे कामसग्गे दिब्बसम्पत्तिया मोदति*, वि. व. अट्ठ. 82.

आचामभक्ख त्रि., ब. स. [आचामभक्ष], भात की पपड़ी का भोजन करने वाला (तपस्वी) – **क्खो** पु., प्र. वि., ए. व. – *कणभक्खो वा होति, आचामभक्खो वा होति, पिञ्ञाकभक्खो वा होति*, दी. नि. 1.150; महानि. 309.

आचामेहि आ +√चम के प्रेर. का अनु., म. पु., ए. व., केवल अनु., म. पु., ए. व. में ही प्रयुक्त, आचमन कराओ, मुंह हाथ धुलाओ – *एहि, मल्लिके, आचमेही'ति*, म. नि. 2.321; *आचमेहीति आचमनोदकं देहि*, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.246.

आचार पु., आ +√चर से व्यु. [आचार], **1.** आचरण, व्यवहार, चाल-चलन, प्रथा, रीति-रिवाज, जीवनयापन करने का प्रकार, लोकाचार – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *आचारं इसिनं ब्रूहि, तं सुणोम वचो तवा'ति*, स. नि. 1(1).273; *आचारन्ति यस्मिं जनपदे वसामि, तत्थ वसन्तो यथा आचारं जनपदचारित्तं सिक्खेय्यं जानेय्यं ...*, जा. अट्ठ. 4.198; – **रेन** तृ. वि., ए. व. – *पापाचाराति पापकेन आचारेन समन्नागता*, पाचि. 322; **2.** अच्छा आचरण, पवित्र आचरण, सदाचार (अनाचार के विलो. के रूप में प्राप्त), **क.** तीन प्रकार के अवीतिक्कमों (विनय नियमों के अनुल्लंघन में एक), **ख.** सम्पूर्ण शीलसंवर, **ग.** सम्यक् आजीव – **रो** प्र. वि., ए. व. – *'आचारगोचरसम्पन्नो'ति अत्थि आचारो*, विभ. 276; विसुद्धि. 1.17; *कायिको अवीतिकम्मो वाचसिको अवीतिक्कमो, कायिकवाचसिको अवीतिक्कमो, अयं वुच्चति आचारो*, विसुद्धि. 1.17; *सब्बोपि सीलसंवरो आचारो*, तदे.; ... *न अञ्ञतरञ्ञतरेन वा ... मिच्छाआजीवेन जीवितं कप्पेति, अयं वुच्चति आचारो*, तदे.; **3.** व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में, इधर-उधर या समीप में विचरण – ... *अधि सि ठा वसानं पयोगे तप्पानाचारेसु च दुतिया, काले*, सद्द. 3.717; *तप्पनाचारेसु नदिं पिवति गामं चरति इच्चादि*, तदे.; स. उ. प. के रूप में, अतन्दिता., अना., अरिया., अवेक्खिता., आजीवसीला., इच्छा., इस्सा., एवा., ओळारिका.,

कुसला॰, खुद्दा॰, चित्ता॰, दुरा॰, पटा॰, पतिता॰, पसत्था॰, पापा॰, भिक्खा॰, भिन्ना॰, मिच्छा॰, मुत्ता॰, लामका॰, लुद्दा॰, विपस्सना॰, विसेवना॰, विरसट्ठा॰, वेत्ता॰, वेदिका॰, संकस्सरा॰, सद्धम्मा॰, साधुजना॰, सीला॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आचारअक्य पु॰, म्यां-मां का एक स्थविर, जिसे थेर-परम्परा में स्थान प्राप्त नहीं हो सका – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मिञ्च काले 'बाहु-मं अक्यो', 'आचार-अक्यो' ति द्विन्नं भिक्खूनं च लोकधम्मेसु छेकताय द्वे विहारे कत्वा अदासि,* सा॰ वं॰ 99.

आचारअरिय त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आचारार्य], सदाचार के कारण आर्य अथवा उत्तम, आचार-विचार में उत्तम, विशुद्ध जीवनवृत्ति वाला – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियोति चत्तारो अरिया आचारअरियो लिङ्गअरियो दस्सनअरियो पटिवेधअरियोति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.34; *अरियोति आचारअरियो अरियस्साति आचारअरियस्स,* जा॰ अट्ठ॰ 3.312; *अरियोति इध आचारअरियो अधिप्पेतो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.260; – **येहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *अरियप्पवेदिते ति ये राजानो आचारअरियेहि धम्मिकराजूहि पवेदिते दसविधे राजधम्मे रता,* जा॰ अट्ठ॰ 3.391.

आचारउपचारञ्ञू त्रि॰, [आचारोपचारज्ञ], सदाचार एवं विनम्र शिष्टाचार का ज्ञाता – **ञ्ञू** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचारउपचारञ्ञू, धम्मानुच्छविसंवरं,* अप॰ 1.353.

आचारकिरिया स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आचारक्रिया], शिष्टाचार एवं सदाचार का अभ्यास, अच्छा आचरण – **सु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *वत्ते गुणे पटिपत्ति, आचारकिरियासु च,* अप॰ 1.342, 347.

आचारकुलपुत्त पु॰, तत्पु॰ स॰ [आचारकुलपुत्र], सदाचार या उत्तम आचरण के कारण सत्पुरुष – **त्तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुलपुत्तेनाति द्वे कुलपुत्ता आचारकुलपुत्तो जातिकुलपुत्तो च,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.44; ... *कुलपुत्तोति आचारकुलपुत्तो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.3; – **त्ता** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कुलपुत्ताति आचारकुलपुत्ता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.180; – **त्तानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बेसंयेव इमेसं कुलपुत्तानन्ति ब्रह्मचरियचिण्णकुलपुत्तानं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.237.

आचारकुसल त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आचारकुशल], सदाचार का पालन करने में कुशल – **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पटिसन्थारवुत्यस्स, आचारकुसलो सिया,* ध॰ प॰ 376; *आचारकुसलोति सीलम्पि आचारो, वत्तपटिवत्तम्पि आचारो, तत्थ कुसलो सिया, छेको भवेय्याति अत्थो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.346; – **लेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वुत्ताचारविपत्तीति, आचारकुसलेन सा,* विन॰ वि॰ 3105.

आचारकोसल्ल नपुं॰, भाव॰ [आचारकौशल्य], सदाचार में कुशलता – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततो पटिसन्थारवुत्तितो च आचारकोसल्लतो च ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.346.

आचारगुणसम्पन्न त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आचारगुणसम्पन्न], सदाचार एवं उत्तम गुणों से परिपूर्ण – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचारगुणसम्पन्नो, वत्तसीलसमाहितो,* बु॰ वं॰ 23.13.

आचारगोचर पु॰, द्व॰ स॰ [आचारगोचर], सदाचार तथा आचरण का क्षेत्र, उत्तम आचरण एवं सात्विक प्रवृत्ति – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ते पन आचारगोचरे एकतो कत्वा दस्सेतुं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.26; *आचारगोचरे युत्तो, आजीवो सोधितो अगारय्हो,* थेरगा॰ 590; *युत्तट्ठानभूतेन गोचरेन च युत्तो सम्पन्नो, सम्पन्नआचारगोचरोति अत्थो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.178; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **पाप॰-** त्रि॰, पापमय आचरण एवं प्रवृत्तियों वाला – **रं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पापिच्छं पापसङ्कप्पं, पापआचारगोचरं,* सु॰ नि॰ 282; – **रे** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *निद्धमित्वान पापिच्छे, पापआचारगोचरे,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.44.

आचारगोचरनिद्देस पु॰, तत्पु॰ स॰ [आचारगोचरनिर्देश], आचार एवं गोचर का व्याख्यान – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचारगोचरनिद्देसे किञ्चापि भगवा समणाचरं समणगोचरं कथेतुकामो ...,* विभ॰ अट्ठ॰ 316.

आचारगोचरसम्पत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आचारगोचरसम्पत्ति], उत्तम आचरण के अभ्यास की संपत्ति, सदाचार के अनुसरण का धन – **त्ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एतन्ति आचारगोचरसम्पत्ति आजीवपारिसुद्धि इन्द्रियेसु गुत्तद्वारताति एतं तयं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.179.

आचारगोचरसम्पन्न त्रि॰, [बौ॰ सं॰ आचारगोचरसम्पन्न], **शा॰ अ॰**, सदाचार (उत्तम आचरण) तथा इसके उचित क्षेत्र से युक्त, **ला॰ अ॰**, उत्तम आचरण वाला तथा उत्तम आचरण वाले तीन क्षेत्रों में विचरण करने वाला, उत्तम आचरण के सतत अभ्यास में लगा हुआ – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो एवं पब्बजितो समानो पातिमोक्खसंवरसंवुतो विहरति आचारगोचरसम्पन्नो,* दी॰ नि॰ 1.55; *आचारगोचरसम्पन्नोति आचारेन चेव गोचरेन च सम्पन्नो,*

दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.149; महानि॰ अट्ठ॰ 96; *आचारगोचरसम्पन्नोति इदमस्स पातिमोक्खसंवरस्स उपकारकधम्मपरिदीपनं,* महानि॰ अट्ठ॰ 94; *आचारगोचरसम्पन्नोति मिच्छाजीवपटिसेधकेन न वेळुदानादिना आचारेन,* ... पाचि॰ अट्ठ॰ 47; *इति इमिना च आचारेन इमिना च गोचरेन उपेतो ... तेन वुच्चति आचारगोचरसम्पन्नोति,* विसुद्धि॰ 1.18; – **न्ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पातिमोक्खसंवरसंवुता विहरथ आचारगोचरसम्पन्ना अणुमत्तेसु वज्जेसु भयदस्साविनो,* म॰ नि॰ 1.41; *आचारगोचरसम्पन्नाति आचारेन च गोचरेन च सम्पन्ना,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).164-165.

आचारदिट्ठि स्त्री॰, द्व॰ स॰ [आचारदृष्टि], उत्तम आचरण एवं सम्यक् दृष्टि – विषयक अतिक्रमण या अपराध – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सीलविपत्तिया चोदेति, अथो आचारदिट्ठिया,* परि॰ 304; *आचारदिट्ठियाति आचारविपत्तिया चेव दिट्ठिविपत्तिया च,* परि॰ अट्ठ॰ 204; तुल॰ आचारविपत्ति.

आचारपञ्ञत्ति / आचारपण्णत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आचारप्रज्ञप्ति], उत्तम आचरण के विषय में विनय की शिक्षा, सदाचार-विषयक आज्ञा या निर्देश – **त्ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ओवाददायके निस्साय आचारपण्णत्तिविनयो वा सुसिक्खितो न भवेय्य,* जा॰ अट्ठ॰ 3.326; *केवलं तत्थ सिक्खा संयमो नियमो सीलगुणआचारपण्णत्ति अत्थरसो धम्मरसो विमुत्तिरसो,* मि॰ प॰ 183; *पुब्बभागपटिपदाति च सीलं आचारपञ्ञत्ति धुतङ्गसमादानं याव गोत्रभुतो सम्मापटिपदा वेदितब्बा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.152; – **सिक्खापद** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आचारप्रज्ञप्तिशिक्षापद], विनय के वे शिक्षापद, जिनमें उत्तम आचरण से सम्बन्धित आज्ञा या निर्देश दिए गए हैं – **दं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खूनं मेत्तचित्तेन आचारपञ्ञत्तिसिक्खापदं, कम्मट्ठानकथनं धम्मदेसना तेपिटकम्पि बुद्धवचनं मेत्तं वचीकम्मं नाम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).289.

आचारपटिपत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आचारप्रतिपत्ति], उत्तम आचरण को व्यवहार में उतारना, व्यवहार में सदाचार का अनुसरण, सदाचार की वास्तविक पूर्णता – **त्ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचारपटिपत्ति ते, बाळ्हं खो मम रुच्चति,* अप॰ 1.373; स॰ प॰ के अन्त॰, *यदि तत्थ बुद्धपुत्ता आचारसीलगुणवत्तपटिपत्तिमेघवस्सं अपरापरं अनुप्पबन्धापेय्युं अभिवस्सापेय्युं* ..., मि॰ प॰ 135.

आचारवत्त नपुं॰, [आचारवृत्त], सदाचार, उत्तम आचरण का व्रत या पवित्र कृत्य, उत्तम जीवनवृत्ति – **त्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विनीतवत्तन्ति विनीतेन आचारवत्तेन समन्नागतं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.405.

आचारवन्तु त्रि॰, आचार + वन्तु से व्यु॰ [आचारवत्], सदाचारी, उत्तम आचरण का पालन करने वाला – **वा** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *सचे पन जातिकुलपुत्तो आचारवा होति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.44.

आचारविकार पु॰, तत्पु॰ स॰ [आचारविकार], सदाचार का ह्रास, उत्तम आचरण में गड़बड़ी का आ जाना – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नानावण्णपटिमण्डितञ्च तालवण्टं गहेत्वा आचारविकारं आपज्जिंसु,* सा॰ वं॰ 96.

आचारविट्ठिगाम पु॰, श्रीलङ्का में अनुराधपुर से तीन योजन दूर पूर्वोत्तर दिशा में स्थित एक प्राचीन गांव का नाम – **म्हि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचारविट्ठिगामम्हि सोळसकरिसे तले,* म॰ वं॰ 28.13; *नगरतो तियोजनमत्थके ठाने पुब्बउत्तरकण्णे आचारविट्ठिगामे तियामरत्तिं,* थू॰ वं॰ 219-220(रो॰).

आचारविनय पु॰, तत्पु॰ स॰ [आचारविनय], उत्तम – आचरण सम्बन्धी नियम – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विनयन्ति 'एवं अभिक्कमितब्ब'न्तिआदिकं आचारविनयं न जानाति, ओवादञ्च न सम्पटिच्छति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.217.

आचारविपत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आचारविपत्ति], चार प्रकार की विपत्तियों में दूसरी, पातिमोक्खसुत्त में निर्दिष्ट थुल्लच्चय, पाचित्तिय, पाटिदेसनीय, दुक्कट एवं दुब्भासित नामक अपराध, उत्तम आचरण का ह्रास या हानि, सदाचार के पालन में असफलता या विमुखता – **त्ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *थुल्लच्चयं, पाचित्तियं पाटिदेसनीयं, दुक्कटं, दुब्भासितं, अयं आचारविपत्ति,* महाव॰ 242; *वुत्ताचारविपत्ती'ति, आचारकुसलेन सा,* विन॰ वि॰ 3105; – **त्तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथाचारविपत्तिं चे, पटिच्छादेति दुक्कटं,* उत्त॰ वि॰ 175; – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सीलविपत्तिया वा ठपेसि, आचारविपत्तिया वा ठपेसि,* महाव॰ 242; *अमूलिकाय सीलविपत्तिया ... अमूलिकाय आचारविपत्तिया पातिमोक्खं ठपेति – इमानि द्वे अधम्मिकानि पातिमोक्खट्ठपनानि,* चूळव॰ 399; *सीलविपत्तिया वा आचारविपत्तिया वा अत्तानं उक्कंसेतुकामताय वा परं वम्भेतुकामताय वा न उपवदेय्य,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.73; – **चोदना** स्त्री॰, पातिमोक्ख में प्रज्ञप्त (पाराजिक एवं पाचित्तिय) गम्भीर अपराधों को छोड़ शेष

अपराधों के विषय में अपराधी भिक्षु को प्रेरक वचन कहना, डांटना फटकारना अथवा पापकर्म की निन्दा करना – *अवसेसानं वसेन आचारविपत्तिचोदना ...*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.157; – **पच्चय** पु॰, कारण के रूप में पाराजिक एवं पाचित्तिय के अतिरिक्त शेष अपराध – **या** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचारविपत्तिपच्चया एकं आपत्तिं आपज्जति,* परि॰ 201; – **पुच्छा** स्त्री॰, [आचारविपत्तिपृच्छा], आचारविपत्ति अर्थात् थुल्लपच्चय आदि अपराधों के विषय में प्रश्न – *विपत्तिपुच्छाति – सीलविपत्तिपुच्छा, आचारविपत्तिपुच्छा, दिट्ठिविपत्तिपुच्छा, आजीवविपत्तिपुच्छा,* परि॰ 324.

आचारविपन्न त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आचारविपन्न], उत्तम आचरण से रहित, अच्छे आचरण से विहीन, पाराजिक एवं पाचित्तिय को छोड़ शेष पांच प्रकार की आपत्तियों में फंसा हुआ – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अधिसीले सीलविपन्नो होति, अज्झाचारे आचारविपन्नो होति,* महाव॰ 82; परि॰ 244; *इतरे पञ्चापत्तिक्खन्धे आपन्नो अज्झाचारे आचारविपन्नो नाम,* महाव॰ अट्ठ॰ 258; *आचारविपन्नो नाम पञ्च आपत्तिक्खन्धे आपन्नो,* परि॰ अट्ठ॰ 166.

आचारविहार पु॰, तत्पु॰ स॰ [आचारविहार], उचित व्यवहार, सदाचारमयी जीवनवृत्ति – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राजा तस्साचारविहारे पसीदित्वा तं निमन्तापेत्वा पासादतले पल्लङ्के निसीदापेत्वा, ...* जा॰ अट्ठ॰ 3.310.

आचारसंयम पु॰, स॰ प॰ के अन्त॰ प्राप्त [आचारसंयम], आचरण के विषय में संयम, सदाचार- परायण होने के लिए प्रयास स॰ प॰ के॰ रूप में – *यावता लोके सुगतागमपरियत्तिआचारसंयमसीलसंवरगुणा, सब्बे ते भिक्खुसङ्घमुपगता भवन्ति,* मि॰ प॰ 185.

आचारसमाचारसिक्खापक / सिक्खापनक त्रि॰, ('आचरिय' शब्द के सर्वाधिक मान्य निर्वचन के सन्दर्भ में प्रयुक्त), उत्तम आचरण एवं व्यवहार की शिक्षा देने वाला (आचार्य) – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नत्थि आचरियो नामाति आचारसमाचारसिक्खापको आचरियो नाम कोचि नत्थि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 219; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुजानामि भिक्खवे आचरियन्ति आचारसमाचारसिक्खापनकं आचरियं अनुजानामि,* महाव॰ अट्ठ॰ 254.

आचारसम्पत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आचारसम्पत्ति], उत्तम आचरण रूपी सम्पदा, अत्यन्त उत्तम आचरण, आचरण में उच्चता – **त्तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचारसम्पत्तिञ्च आणबलञ्च सुचिभावञ्च जानाति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.186; – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं वुत्तभिक्खुसारुप्पआचारसम्पत्तिया,* उदा॰ अट्ठ॰ 182.

आचारसम्पन्न त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आचारसम्पन्न], सदाचारी, उत्तम आचरण एवं व्यवहार का अनुसरण करने वाला, सभी के प्रति उचित सम्मानभाव आदि रखने वाला – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपिच यो भिक्खु सत्थरि सगारवो सप्पतिस्सो सब्रह्मचारीसु ... अयं वुच्चति आचारसम्पन्नो,* उदा॰ अट्ठ॰ 182; *यो भिक्खु ... भोजने मत्तञ्ञू जागरियानुयुत्तो सतिसम्पजञ्ञेन समन्नागतो अप्पिच्छो ... गरुचित्तीकारबहुलो विहरति, अयं वुच्चति आचारसम्पन्नो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 269; *... एवं सीलसम्पन्नो, एवं आचारसम्पन्नोति आदिगुणकथनं परम्मुखा मेत्तं वचीकम्मं नाम होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).139; *'अयं सीलवा गुणवा लज्जिपेसलो आचारसम्पन्नो'ति वा नत्थि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.202; – **न्नेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'अहं कं निस्साय एवं आचारसम्पन्नेन पुत्तेन वियोगं पत्तो'ति?,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.104; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एतं आचारसम्पन्नस्स अरियस्स कल्याणं उत्तमवचनं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.383.

आचारसिक्खापन नपुं॰, तत्पु॰ स॰, उत्तम आचरण की शिक्षा, सदाचार का सिखलाना – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा इदानिपि नो आचारसिक्खापनेन आचरियो भवाति आह,* जा॰ अट्ठ॰ 5.378.

आचारसील नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आचारशील], 'चतुक्क' शीर्शक में शील के विभाजनों में से एक, सामाजिक रीति रिवाज, परम्परा से चली आ रही सामाजिक प्रथा, सामाजिक व्यवहार से सम्बद्ध नियम – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुलदेसपासण्डानं अत्तनो अत्तनो मरियादाचारित्तं आचारसीलं,* विसुद्धि॰ 1.16; *कुलदेसपासण्डधम्मो हि आचारसीलन्ति अधिप्पेतं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.35.

आचारसीलगुणवत्तपटिपत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आचारशीलगुणव्रतप्रतिपत्ति], आचारशीलों, गुणों एवं व्रतों आदि का व्यवहार में पालन – *यदि तत्थ बुद्धपुत्ता आचारसीलगुणवत्तपटिपत्तिमेघवस्सं अपरापरं अनुप्पबन्धापेय्युं अभिवस्सापेय्युं,* मि॰ प॰ 135; – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *योगिना योगावचरेन आचारसीलगुणवत्तप्पटिपत्तिया आगमाधिगमे पटिसल्लाने,* मि॰ प॰ 357.

आचारसीलसम्पन्न त्रि., तत्पु. स. [आचारशीलसम्पन्न], **शा. अ.**, आचारशील से सम्पन्न, **विशेष अर्थ**, इक्कीस प्रकार के वर्जित जीविका-साधनों से जीविकोपार्जन न करने वाला तथा चार मार्गफलों में प्राप्त शीलों से परिपूर्ण (व्यक्ति) – **न्नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आचारसीलसम्पन्नो, निसे अग्गीव भासति*, जा. अट्ठ. 4.387; – **न्ना** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *तस्सेका धीता अभिरूपा पासादिका आचारसीलसम्पन्ना हिरोत्तप्पसमन्नागता केवलं निच्चप्पहसितमुखा*, जा. अट्ठ. 1.393; – **न्ने** पु., सप्त. वि., ए. व. – *आचारसीलसम्पन्ने, सीतिभूते अनासवे*, जा. अट्ठ. 3.364; *आचारसीलसम्पन्नेति एकवीसतिया अनेसनाहि जीविककप्पनं अनाचारो नाम, तस्स पटिपक्खेन आचारेन चेव मग्गफलेहि आगतेन सीलेन च समन्नागते*, जा. अट्ठ. 3.365.

आचारहीन त्रि., तत्पु. स. [आचारहीन], सदाचार या उत्तम आचरण का अनुसरण न करने वाला, दुराचारी, दस प्रकार के हीन व्यक्तियों में एक – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आचारहीनो, महाराज, पुग्गलो, ... पे. ... कम्महीनो महाराज, पुग्गलो ... पे. ... पयोगहीनो महाराज पुग्गलो लोकस्मिं ओञ्ञातो अवञ्ञातो हीळितो खीळितो गरहितो परिभूतो अचित्तीकतो*, मि. प. 267.

आचिक्खक त्रि., आ +√चिक्ख / √चक्ख से व्यु., कहने वाला, घोषित करने वाला, निर्देश या सङ्केत देने वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *चिक्खति आचिक्खति अब्भाचिक्खति, आचिक्खको, चक्खति, चक्खु*, सद्द. 2.332.

आचिक्खति आ +√चक्ख / √चिक्ख का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आचष्टे / आचक्षते / आख्याति], कहता है, उपदेश देता है, दरसाता है, विज्ञापित करता है, प्रतिपादित करता है, प्रकाशित करता है, विभाजित करके स्पष्ट करता है, सूचित करता है, व्याख्या करता है, घोषणा करता है – *आचिक्खतीति कथेति, देसेतीति दस्सेति, पञ्ञापेतीति जानापेति, पट्ठपेतीति ञाणमुखे ठपेति, विवरतीति विवरित्वा दस्सेति, विभजतीति विभागतो दस्सेति, उत्तानीकरोतीति पाकटं करोति*, स. नि. अट्ठ. 2.36; *आचिक्खति नाम पुट्ठो भणति – "एवं देहि"*, पारा. 190; – **सि** म. पु., ए. व. – *अच्छेरमाचिक्खसि पुञ्ञसिद्धिं*, जा. अट्ठ. 7.133; – **से** आत्मने., म. पु., ए. व. – *पथं आचिक्खसे तुवं*, अप. 1.81; *पथं आचिक्खसेति, ... निब्बानाधिगमनुपायं आचिक्खसे कथेसि देसेसि विभजि उत्तानिं अकासीति अत्थो*, अप. अट्ठ. 2.48; – **क्खामि** उ. पु., ए. व. – *आचिक्खामीति कथेमि*, अ. नि. अट्ठ. 2.348; – **न्ति** प्र. वि., ब. व. – *यं तं अरिया आचिक्खन्तीति पदनिद्देसे पन ... देसेन्ती'ति आदीनि सब्बानेव अञ्ञमञ्ञ वेवचनानि*, विभ. अट्ठ. 350; – **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *अत्थं आचिक्खन्तोपि यथा सो न जानाति*, सु. नि. अट्ठ. 1.143-44; *आनन्दथेरेन पुट्ठो सितकारणं आचिक्खन्तो आह*, ध. प. अट्ठ. 2.44; – **न्ती** उपरिवत्, स्त्री. – *एवं पन तेन इसिना पुच्छिता उब्बरी अत्तना अधिप्पेतं ब्रह्मदत्तं आचिक्खन्ती ...*, पे. व. अट्ठ. 143; – **तु** अनु., प्र. पु., ए. व. – *आचिक्खतु च मे, भन्ते, भगवा दुक्खं*, स. नि. 1(2).20; – **क्ख** म. पु., ए. व. – *आचिक्ख मे तं यमहं विजञ्ञ'न्ति*, जा. अट्ठ. 3.318; – **क्खाहि** उपरिवत् – *"आनन्दसेट्ठि पुत्तस्स ते पञ्च महानिधियो आचिक्खाही"ति आचिक्खापेत्वा सद्दहापेसि*, ध. प. अट्ठ. 1.265; – **क्खथ** म. पु., ब. व. – *"भन्ते, आचिक्खथा"ति भिक्खुसङ्घं पुच्छति*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).149; *"मातरं मे आचिक्खथा"ति पुच्छित्वा ..." तं मे आचिक्खथा"ति आह*, ध. प. अट्ठ. 2.81; – **क्खेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *मूळ्हस्स वा मग्गं आचिक्खेय्य*, पारा. 6; *मग्गं आचिक्खेय्याति हत्थे गहेत्वा एस मग्गोति वदेय्य*, पारा. अट्ठ. 1.129; – **क्खेय्याथ** विधि., म. पु., ब. व. – *"सचे मे, भन्ते, पब्बज्जिते निस्सये आचिक्खेय्याथ, अभिरमेय्यामहं*, महाव. 65; – **क्खि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *अथ खो आयस्मा अज्जुको तं ओकासं तस्स दारकस्स आचिक्खि*, पारा. 79; – **क्खिं** अद्य., उ. पु., ए. व. – *अहञ्हि कस्सचि नाचिक्खिं*, चरिया. 403; – **क्खिंसु** अद्य., प्र. पु., ब. व. – *तस्स भिक्खू पटिकच्चेव निस्सये आचिक्खिंसु*, महाव. 65; – **क्खिस्सा** काला., प्र. पु., ए. व. – *सचे तथा सत्था नाचिक्खिस्सा ...*, उदा. अट्ठ. 100; – **क्खितुं** निमि. कृ. – *लब्भा सोवण्णमयाय लट्ठिया धञ्ञपुञ्जोपि सुवण्णपुञ्जोपि आचिक्खितुन्ति*, कथा. 189; *अनुजानामि, भिक्खवे, उपसम्पादेन्तेन चत्तारो निस्सये आचिक्खितुं ...*, महाव. 65; – **क्खितब्ब** त्रि., सं. कृ. – *उपज्झायेन आचिक्खितब्बं एवं धोवेय्यासीति*, महाव. 59-60; – **क्खित्वा / क्खित्वान** पू. का. कृ. – *... वन्दित्वा तं पवत्तिं आचिक्खित्वा ...*, उदा. अट्ठ. 145; *आचिक्खित्वान तं मग्गं, निब्बुता ते ससावकाति*, बु. वं. 28.20; – **क्खियमान** त्रि., वर्त. कृ., कर्म. वा. – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *तथागतेन एवं आचिक्खियमाने देसियमाने ... न जानाति न*

पस्सति, स॰ नि॰ 2(1).126; – **मानं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तन्ति आचिक्खियमानं तमेव कम्मं, तं वा मम वचनं,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 293; – **क्खापेत्वा** प्रेर॰, पू॰ का॰ कृ॰ – *"ते पञ्च महानिधियो आचिक्खाही"ति आचिक्खापेत्वा सद्दहापेसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.265; – **चिक्खित** त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰ [आचष्ट/आख्यात], उद्घोषित, कथित, बतलाया गया – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पवेदितन्ति वेदितं पवेदितं आचिक्खितं देसितं पञ्ञापितं पट्ठपितं विवटं विभत्तं उत्तानीकतं पकासितन्ति,* महानि॰ 137; *मय्हं ताव तया आचिक्खितं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 317; – **ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचे आचिक्खिते पटिग्गण्हाति, आपत्ति दुक्कटस्स,* पाचि॰ 111; – **मग्ग** पु॰, कर्म॰ स॰ [आख्यातमार्ग], उपदिष्ट मार्ग, कथित मार्ग – **ग्गेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन आचिक्खितमग्गेन गच्छन्तो पुन पन्नरसयोजनप्पमाणे ठाने अञ्ञं तापसं दिस्वा ...,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 133; – **सञ्ञा** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [आख्यातसंज्ञा], बतलाया हुआ ज्ञान – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वे हंसपोतका पितरा आचिक्खितसञ्ञाय तत्थ गन्त्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.31.

आचिक्खन / आचिक्खण नपुं॰, आ +√चक्ख / चिक्ख से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आचक्षण / आख्यान], कथन, उद्घोषणा, प्रतिपादन, कुछ पूछे जाने पर उत्तर के रूप में कथन – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचिक्खनं नाम पुट्ठस्स "एवं देहि एवं देन्ता सामिकस्स पिया भविस्ससि, मनापा चा"ति भणनं,* कङ्खा॰ अभि॰ टी॰ 214; स॰ प॰ के रूप में – *ओभासेय्याति अवभासेय्य वण्णावण्ण याचनआयाचनपुच्छनपटिपुच्छन आचिक्खणा- नुसासनअक्कोसनवसेन नानप्पकारं असद्धम्मवचनं वदेय्य,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 131; *अपिचेतं बुद्धानं अनाचिण्णं, यं अनागतस्स ईदिसस्स वत्थुस्स आचिक्खनं,* उदा॰ अट्ठ॰ 212; – **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बोधिसत्तस्स पन सीलरक्खणआचिक्खणे सञ्ञं अकत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 3. 393; *आचरियसमो सत्तानं कुसलसिक्खापने, सुदेसकसमो सत्तानं खेमपथमाचिक्खणे,* मि॰ प॰ 188.

आचिक्खणा / आचिक्खना स्त्री॰, उपरिवत्, **शा॰ अ॰,** विस्तृत व्याख्या, स्पष्ट रूप से निर्वचन, सूचना, **विशेष अर्थ,** भगवान बुद्ध द्वारा उपदिष्ट आर्यसत्य, अष्टांगिक मार्ग आदि का विभाजन करके तथा एक एक अंगों का नाम लेकर कहा गया कथन – *आचिक्खना नाम पुट्ठो भणति – एवं मरस्सु, ... ताय आचिक्खनाय मरिस्सामीति दुक्खं वेदनं उप्पादेति ...,* पारा॰ 93; *तत्थ अतीतं आरब्भ अत्थि ओदिस्सआचिक्खना,* पाचि॰ अट्ठ॰ 171; *दुक्खस्स अरियसच्चस्स आचिक्खना देसना पञ्ञापना पट्ठपना विवरणा विभजना उत्तानीकम्मं,* म॰ नि॰ 3.297; *आचिक्खनाति देसेतब्बानं सच्चादीनं इमानि नामानीति नामवसेन कथना, ... अथ वा आचिक्खनाति देसनादीनं छन्नं पदानं मूलपदं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.169.

आचिक्खितु पु॰, आ +√चिक्ख से व्यु॰, क॰ ना॰ [आचष्ट्र / आख्यातृ], कहने वाला, प्रतिपादित करने वाला, सङ्केतक, प्रकाशक – **तारं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'इमं गहेत्वा सुखेन जीवा'ति आचिक्खितारं विय,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.309.

आचिण्ण त्रि॰, आ +√चर का भू॰ क॰ कृ॰ [आचीर्ण], **1.** बार बार किया गया – **ण्णं** नपुं॰ प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचिण्णन्ति अभिण्हसो कतं, एकवारं कत्वापि वा अभिण्हसो समासेवितं,* अभि॰ ध॰, वि॰ टी॰ 154; **2.** सामान्य स्वभाव के रूप में व्यवहार में उतारा हुआ, सामान्य या सुपरिचित आचरण – **ण्णं** उपरिवत् – *अनाचिण्णं तथागतेन आचिण्णं तथागतेनाति दीपेति, आचिण्णं तथागतेन अनाचिण्णं तथागतेनाति दीपेति,* महाव॰ 476; चूळव॰ 195; 344; *अरियाचरितन्ति अरियेहि बुद्धादीहि आचिण्णं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.366; – **ण्णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपि च ... सब्बञ्ञुबोधिसत्तानं एस आचिण्णो समाचिण्णो पोराणकमग्गो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.364; – **ण्णा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"महाराज, याचना हि नामेसा कामभोगीनं गिहीनं आचिण्णा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.312; – **ण्णानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इमानेव हि द्वे भोजनानि वट्टे सत्तानं आचिण्णानि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).4; **3.** नपुं॰ निर्धारित परिपाटी या रीति, व्यवहार में लाई गई परम्परा – **ण्णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मातापितुपोसकं नाम पोराणकपण्डितानं आचिण्णमेवा'ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.232; *इदमेव हि पोराणानं आचिण्णं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.241; **4.** त्रि॰ आचरण या अनुसरण करने वाला – **ण्णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुक्कुरादिवताचिण्णो कुक्कुरादि सहव्यतं,* सद्धम्मो॰ 90; **5.** नपुं॰, तौर तरीका, अभ्यास, आदत, स्वभाव – **ण्णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचिण्णं खो पनेतं बुद्धानं भगवन्तानं आगन्तुकेहि भिक्खूहि सद्धिं पटिसम्मोदितुं,* महाव॰ 66; *आचिण्णं खो पनेतं वस्संवुट्ठानं भिक्खूनं भगवन्तं दस्सनाय उपसङ्कमितुं,* पारा॰ 108; *आचिण्णं निगण्ठस्स नाटपुत्तस्स पञ्ञपेतु'न्ति,* म॰ नि॰ 2.39; **6.** स॰ प॰ के अन्त॰ प्राप्त, पूर्व में किया गया आचरण, पूर्वोदाहरण – *आवासानुमताचिण्णममथितं जलोगि च,* म॰ वं॰ 4.10;

आवासानुमताचिण्णं ति आवासकप्पं अनुमतिकप्पं आचिण्णकप्पं चा ति अत्थो, म॰ वं॰ टी॰ 122 (ना॰); स॰ उ॰ प॰ के रूप में अना॰, दीघरत्ता॰, पब्बज्जा॰, पुब्बा॰, बुद्धा॰, ब्रह्मचरिया॰, योग्गा॰, लोका॰, सावका॰, सुत्तकारा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आचिण्णकप्प पु॰, पूर्वकाल में प्रचलित व्यवहार या आचरण का सही होना, द्वितीय बौद्ध-सङ्गीति के समय की दस विवाद-वस्तुओं में एक, पूर्वकालीन उदाहरणों पर आधारित आचरण – **प्पं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवासानुमताचिण्णं ति आवासकप्पं अनुमतिकप्पं आचिण्णकप्पं चा ति अत्थो,* म॰ वं॰ टी॰ 122 (ना॰); *आचिण्णकप्पं... "यं उपज्झायाचरियेहि कतं कप्पियं वा अकप्पियं वा तं तेहि कतत्ता येव कातुं वट्टती"ति इमं आचिण्णकप्पं च,* म॰ वं॰ टी॰ 123 (ना॰); – **प्पेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ते पोराणकेन आचिण्णकप्पेन भिक्खू परिसत्वा उपधावन्ति,* महाव॰ 99; – **प्पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दस वत्थूनि दीपेन्ति – ... कप्पति आचिण्णकप्पो, ... कप्पति जातरूपरजतन्ति,* चूळव॰ 463; *आचिण्णकप्पो खो आवुसो, एकच्चो कप्पति, एकच्चो न कप्पती'ति,* चूळव॰ 470.

आचिण्णचङ्कमन त्रि॰, ब॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आचीर्णचंक्रमण], चंक्रमण करने में अभ्यस्त – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *थेरो आरद्धवीरियो आचिण्णचङ्कमनो, तस्मा पच्छिमयामे चङ्कमनं ओतरि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.12.

आचिण्णपरिचिण्ण त्रि॰, सतत रूप में आचरण किया गया, लगातार व्यवहार में अनुसरण किया हुआ, बार-बार अभ्यास किया हुआ – **त्ता** नपुं॰, भाव॰, प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा अहं दीघरत्तं मेत्ताभावनाय आचिण्णपरिचिण्णत्ता अक्कोधनो जातोति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.163.

आचिण्णविसय पु॰, कर्म॰ स॰ [आचीर्णविषय], सुपरिचित विषय, पहले से अच्छी तरह जानी हुई वस्तु या विषय – **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवमेव आचिण्णविसये तस्स रागं आगन्तुकविसयेन नीहरित्वा ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 139.

आचिण्णसमाचिण्ण त्रि॰, कर्म॰ स॰ [आचीर्णसमाचीर्ण], बार-बार आचरण किया हुआ, वह, जिसका अभ्यास व्यापक रूप में या भली-भांति किया गया है, स्वभाव या आदत का अङ्ग बन चुका – **ण्णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयञ्हि कबळीकारो आहारो नाम इमेसं सत्तानं अपायलोकेपि देवमनुस्सलोकेपि आचिण्णसमाचिण्णोव,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).140; *गणवासो नामायं वट्टे आचिण्णसमाचिण्णो नदीओतिण्णउदकसदिसो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.114; *अपिच सतं पण्डितानं सब्बञ्ञुबोधिसत्तानं एस आचिण्णो समाचिण्णो पोराणकमग्गो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.364.

आचित 1. त्रि॰, आ +√चि का भू॰ क॰ कृ॰ [आचित], ऊपर तक फैला हुआ, परिव्याप्त – *आचितं निचितं भवे,* अभि॰ प॰ 701; – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मंसलोहिताचितानि मंसेन च लोहितेन च आचिता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.101; *मंसलोहिताचिता तचोत्थता, उपरिचरणसोभना अहु,* दी॰ नि॰ 3.116; – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अन्तलिक्खेति आकासे "अलङ्कतमणिकञ्चनाचितं"न्तिपि पाठो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 151; **2.** त्रि॰, राशीकृत, पुञ्जीभूत, उत्पन्न कराया गया, प्रादुर्भूत कराया गया – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एवमेव तेभूमककुसलेन चिता चुतिपटिसन्धियो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 258; पाठा॰ चिता; *सोपि अपरिमितमसङ्खेय्यकप्पे समाचितकुसलमूलो ब्राह्मणकुलकुलीनो ...,* मि॰ प॰ 326; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **मासा॰**- त्रि॰, तत्पु॰ स॰, उड़द से भरा हुआ – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मासाचितं मञ्ञे'ति,* म॰ नि॰ 1.416; *तस्स मे कायो गरुको अकम्मञ्ञो मासाचितं मञ्ञे,* अ॰ नि॰ 3(1).153; – **त्त** नपुं॰, भाव॰, परिपूर्णता, भरपूर होना, सञ्चित होना, पुञ्जीभूत होना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कतत्ता आचितत्ता च, गङ्गा भागीरथी अयं,* अप॰ 2.8, 77.

आचिनाति आ +√चि का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आचिनोति], **शा॰ अ॰,** ढेर लगा देता है, पुञ्जीभूत बना देता है, **ला॰ अ॰,** (कुशल अथवा अकुशल कर्मों की) वृद्धि कर देता है, पुञ्जीभूत करके या बहुत बड़े ढेर के रूप में उत्पन्न कर देता है, घटित कराता है – *अयं वुच्चति, भिक्खवे, भिक्खु नेवाचिनाति न अपचिनाति, ...,* स॰ नि॰ 2(1).84; *अपचिनाति नो आचिनातीति वट्टं विनासेति, नेव चिनाति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.262; *नेव चिनातीति न वड्ढेति,* स॰ नि॰ टी॰ 2.213; *नेवाचिनतीति कुसलाकुसलानं पहीनत्ता तेसं विपाकं न वड्ढेति,* महानि॰ अट्ठ॰ 70; *तेभूमकुसलं वट्टस्मिं चुतिपटिसन्धियो आचिनाति वड्ढेतीति आचयगामी नाम होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 258; – **नं / नन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बालो पूरति पापस्स, थोकं थोकम्पि आचिनं'न्ति,* ध॰ प॰ 121; *एवं बालपुग्गलो थोकं थोकम्पि पापं आचिनन्तो करोन्तो वड्ढेन्तो पापस्स पूरतियेवाति अत्थो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.10; – **नतो** उपरिवत्, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवमाचिनतो दुक्खं, आरा निब्बान वुच्चति,* थेरगा॰ 795.

आचीयति / आचिय्यति आ +√चि के कर्म॰ वा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आचीयते], ढेर लगा दिया जाता है, बढ़ा दिया जाता है, पुञ्जीभूत कर दिया जाता है – *न चीयती तस्स नरस्स पापं, सचे न चेतेति वधाय तस्स,* जा॰ अट्ठ॰ 5.7; पाठा॰ चीयति; *आचयगामित्तिके कम्मकिलेसेहि आचियतीति आचयो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 91; – **यन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचेय्यमानोति मंसलोहितेहि आचियन्तो वड्ढन्तो, तरुणोव हुत्वाति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.7.

आचेर पु॰, [आचार्य], आचार्य, शिक्षक, अध्यापक, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहं पतिञ्च पुत्ते च, आचेरमिव माणवो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.338; *तत्थ आचेरमिव माणवोति वत्तसम्पन्नो अन्तेवासिको आचरियं विय पटिजग्गति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.339; – **र** सम्बो॰, ए॰ व॰ – *अत्तानमेव गरहासि एत्थ, आचेर यं तं निखणन्ति सोब्भे'ति, आचेर यं तन्ति आचरिय, येन कारणेन तं निखणन्ति सोब्भे,* जा॰ अट्ठ॰ 4. 222.

आचेरक नपुं॰, [आचार्यक], अध्ययन का विषय, शिल्प-स्थान, विद्या की विशेष शाखा, व्यवसाय, सिद्धान्त, मतवाद – **म्हि** – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सगारवो वुड्ढतरेसु भिक्खुसु, आचेरकम्हि च सके विसारदो,* महाव॰ 483; *आचेरकम्हि च सकेति अत्तनो आचरियवादे,* महाव॰ अट्ठ॰ 411; *धम्मिं कथं भासति सच्चनामो, सकस्मिमाचेरके अप्पमत्तो'ति,* पे॰ व॰ 554.

आजञ्ञ पु॰, [बौ॰ सं॰ आजन्य], अच्छी नस्ल वाला घोड़ा (बैल या हांथी), अपने स्वामी के अभिप्राय, संकेत या इशारे को ठीक से समझने वाला घोड़ा – **ञ्ञो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आजञ्ञो कुरुते वेगन्ति सारथिस्स चित्तरुचितं कारणं आजाननसभावो आजञ्ञो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.181; *आजञ्ञोति आजानीयो जातिमा कारणाकारणानं आजाननको,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.69; – **ञ्ञं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अल्लरोहितमच्छं वा आजञ्ञं वा आजञ्ञरथं वा उसभं वा गाविं वा कपिलं वा,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 95; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **कुञ्जरा॰**- पु॰, कर्म॰ स॰ [बौ॰ सं॰ कुञ्जराजन्य], अच्छी नस्ल का हांथी, मालिक के सङ्केतों को समझने वाला समझदार हांथी – *तं कुञ्जराजञ्ञहयानुचिण्णं, पावेक्खि अन्तेपुरमरियसेट्ठो'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.182; **पुरिसा॰**- पु॰, कर्म॰ स॰ [पुरुषाजन्य], उत्तम प्रकृति का पुरुष – **ञ्ञ** संबो॰, ए॰ व॰ – *नमो ते पुरिसाजञ्ञ, नमो ते पुरिसुत्तम,* दी॰ नि॰ 3.149; सु॰ नि॰ 549; – **ञ्ञो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुल्लभो पुरिसाजञ्ञो, न सो सब्बत्थ जायति,* ध॰ प॰ 193.

आजञ्ञजातक पु॰, एक जातक का शीर्षक, जा॰ अट्ठ॰ 1.181-182.

आजञ्ञयुत्त त्रि॰, ब॰ स॰ [आजन्ययुक्त], वह रथ, जिसमें अच्छी नस्ल वाले घोड़े लगाए हुए हों, अच्छी नस्ल के घोड़ों द्वारा खींचा जा रहा (रथ) – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा हि आजञ्ञयुत्तो रथो 'आजञ्ञरथो'ति वुच्चति,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 217; – **त्ता** ब॰ व॰ – *आजञ्ञयुत्ता च रथा तवेव, सक्कोहमस्मी तिदसानमिन्दो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.19.

आजञ्ञरथ पु॰, तत्पु॰ स॰ [आजन्यरथ], ऊंची नस्ल के घोड़ों द्वारा खींचा जा रहा रथ – **थो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा हि आजञ्ञयुत्तो रथो 'आजञ्ञरथो'ति वुच्चति,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 217; *सक्कस्स देवानमिन्दस्स सहस्सयुत्तो आजञ्ञरथो,* स॰ नि॰ 1(1).260; – **थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुत्तस्स आजञ्ञरथं, कञ्ञाय मणिकुण्डलं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.353; *सहस्सयुत्तं आजञ्ञरथं पहिणिस्सामि,* म॰ नि॰ 2.276.

आजञ्ञवळवा स्त्री॰, कर्म॰ स॰, अच्छे नस्ल की घोड़ी – **य**[1] ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथस्सा रत्तिभागसमनन्तरे आजञ्ञवळवाय गब्भवुट्ठानं अहोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.223; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.305; – **य**[2] सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमस्मिं पन गेहे आजानेय्यवळवाय विजाताय सञ्ञम्पि अकत्वा निसीदितुं नाम अयुत्त'न्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.225; पाठा॰ आजानेय्यवळवा.

आजञ्ञसंयुत्त त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आजन्यसंयुक्त], ऊंची नस्ल के घोड़ों द्वारा खींचा जा रहा रथ – **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *रथा वाजञ्ञसंयुत्ता, सदा पातुभवन्ति मे,* अप॰ 2.53; – **त्ते** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रथे चाजञ्ञसंयुत्ते, सुकते चित्तसिब्बने,* सु॰ नि॰ 302, 306.

आजञ्ञहय पु॰, कर्म॰ स॰ [आजन्यहय], अच्छी नस्ल का घोड़ा – **येहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कुञ्जराजञ्ञहयानुचिण्णन्ति कुञ्जरेहि च आजञ्ञहयेहि च अनुचिण्णं परिपुण्णं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.183.

आजव पु॰, आ +√जु से व्यु॰ [आजव, बौ॰ सं॰ आजवंजव], **शा॰ अ॰,** वेग, तेज धारा, तेजी से बह रहा प्रवाह, **ला॰ अ॰,** पुनर्जन्म के समय से ही मन की धारा में तेजी से दौड़ रही तृष्णा – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गेधं ब्रूमि महोघोति, आजवं ब्रूमि जप्पनं,* सु॰ नि॰ 951; *आजवं ब्रूमि जप्पनन्ति, आजवं 'जप्पना'ति ब्रूमि,* महानि॰ 320; *आजवन्ति आपटिसन्धितो जवति धावतीति आजवं, वट्टमूलताय पुनब्भवे*

पटिसन्धिदानतण्हायेतं अधिवचनं, महानि॰ अट्ठ॰ 353; *किञ्च भिय्यो – अवहननट्ठेन 'ओघो'ति च आजवनट्ठेन 'आजव'न्ति च*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.259.

आजवनट्ठ पु॰, तत्पु॰ स॰ [आजवनार्थ], वेग के साथ दौड़ने का अर्थ – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'ओघो'ति च आजवनट्ठेन 'आजव'न्ति*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.259.

आजानन नपुं॰, आ +√ञा से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आज्ञान], सुस्पष्ट ज्ञान, अच्छी समझ – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुतियं आजाननतो इन्द्रियट्ठसम्भवतो च अञ्ञिन्द्रियं*, विसुद्धि॰ 2.118; *आजाननतोति पठममग्गेन दिट्ठमरियादं अनतिक्कमित्वाव जाननतो*, विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.173; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ञातानं एव धम्मानं पुन आजानने अञ्ञाताविभावे इन्दट्ठं कारेतीति अञ्ञाताविन्द्रियं*, तदे॰ – **क** त्रि॰, ठीक से जानने वाला/वाली – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञिन्द्रियन्ति आजाननकं इन्द्रियं*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 280; *तेन मग्गेन ञातानं चतुसच्चधम्मानमेव जाननतो इन्द्रियट्ठसम्भवतो च आजाननकं इन्द्रियं अञ्ञिन्द्रियं*, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.75-76; – **नत्थिक** त्रि॰, [आज्ञानार्थिक], सुस्पष्ट ज्ञान पाने की इच्छा रखने वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञत्थिको ति आजाननत्थिको*, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 195.

आजानाति आ +√ञा का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आजानाति], ठीक से जानता है, अच्छी तरह से समझता है, सीखता है, अनुभव करता है – *वेदो ति विदति सुखुमम्पि कारणं आजानातीति'वेदो*, सद्द॰ 2.390; – **न्ति** ब॰ व॰ – *उपमायपिधेकच्चे विञ्ञू पुरिसा भासितस्स अत्थं आजानन्ति*, म॰ नि॰ 3.190; – **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *न त्वं इमं ध म्मविनयं आजानासि, अहं इमं धम्मविनयं आजानामि, किं त्वं इमं धम्मविनयं आजानिस्ससि*, दी॰ नि॰ 1.59; म॰ नि॰ 2.205-206; *एवं वित्थारेन अत्थं आजानासि*, म॰ नि॰ 3.101; – **मि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यथा यथाहं, भन्ते भगवता धम्मं देसितं आजानामि*, महाव॰ 253; – **थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तुम्हेपि मे, भिक्खवे, एवं धम्मं देसितं आजानाथ*, म॰ नि॰ 1.186; – **म** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *यथा खो मयं, आवुसो, भगवता धम्मं देसितं आजानाम*, महाव॰ 391; – **नं/न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *को सोत्थिमाजानमिधावजेय्या'ति*, जा॰ अट्ठ॰ 5.27; *एवाभिजानं परमन्ति ञत्वा*, महानि॰ 60; *एवं अभिजानन्तो आजानन्तो विजानन्तो पटिविजानन्तो ...*, तदे॰; – **न्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा तं सुतवता सावकेन सम्मदेव सत्थुसासनं आजानन्तेन*, म॰ नि॰ 1.207; – **मानो** वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धम्मञ्च सेट्ठं अभिजानमानो*, सु॰ नि॰ 1070; पाठा॰ अभिजानमानो; – **हि** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आजानाहि निग्गहं यदि तत्तं दहति*, मि॰ प॰ 44; – **नेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *विसमे पञ्च नीवरणे विसमाति जानेय्य आजानेय्य ...*, महानि॰ 29; – **नेय्युं** ब॰ व॰ – *मया संखित्तेन भासितस्स एवं वित्थारेन अत्थं आजानेय्युं ...*, म॰ नि॰ 3.107; – **नेय्याथ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अपि नु तुम्हे परेसं सुभासितं दुब्भासितं आजानेय्याथाति ?*, दी॰ नि॰ 1.3; – **नेय्याम** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यथा मयं ... वित्थारेन अत्थं आजानेय्यामा'ति*, म॰ नि॰ 1.359; – **ञ्ञासि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यदा भगवा अञ्ञासि यसं कुलपुत्तं कल्लचित्तं ...*, महाव॰ 20; – **ञ्ञासिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञासिं खो अहं, आनन्द*, म॰ नि॰ 3.257; – **निंसु** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सासनं आजानिंसूति अनुसिट्ठिं जानिंसु*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.181; – **निस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"को इमं धम्मं खिप्पमेव आजानिस्सती"ति*, महाव॰ 10; – **निस्सामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"भगवतो सन्तिके एतस्स भासितस्स अत्थं आजानिस्सामी"ति*, म॰ नि॰ 2.225; – **निस्ससि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *किं त्वं इमं धम्मविनयं आजानिस्ससि*, दी॰ नि॰ 1.7; – **निस्सन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *"इमे नो सुभासितदुब्भासितं आजानिस्सन्ती"ति*, स॰ नि॰ 1(1).257; – **निस्सथ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आजानिस्सथ मे त'न्ति ?*, म॰ नि॰ 2.156; – **निस्साम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *"भगवतो सन्तिके एतस्स भासितस्स अत्थं आजानिस्सामा"ति*, म॰ नि॰ 1.118; – **ञ्ञातुं/नितुं** निमि॰ कृ॰ – *दूरतोपि खो मयं आवुसो, आगच्छाम ... एतस्स भासितस्स अत्थमञ्ञातुं*, म॰ नि॰ 1.18; *विञ्ञू पटिबला सुभासितदुब्भासितं ... अजानितुं*, पारा॰ 189; – **मञ्ञाय/नित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *कस्स त्वं धम्ममञ्ञाय, गिरं भाससि एदिसिं*, थेरीगा॰ 317; – **ञ्ञेय्य/नितब्ब** त्रि॰, सं॰ कृ॰ – *अञ्ञेय्योति आजानितब्बो*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.116; – **ञ्ञात** त्रि॰, भू॰ क॰ कृ॰ – *अञ्ञातमेतं अविसय्हसाहि*, जा॰ अट्ठ॰ 5.8.

आजानिय/आजानीय/आजानेय्य पु॰/त्रि॰, [बौ॰ सं॰ आजनिय/आजानीय/आजानेय/आजानेय्य], ऊंची नस्ल का घोड़ा, बहुत अच्छा घोड़ा, आज्ञा को समझने वाला घोड़ा, **क.** उत्तम अश्व, अच्छी नस्ल का सधा हुआ घोड़ा – *भेदो अस्सतरो तस्साजानीयो तु कुलीनको*, अभि॰ प॰

369; – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आजानियेको पन किं करिस्सति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.166; – **या** ब॰ व॰ – *आजानीयाव जातिया, सिन्धवा सीघवाहना,* जा॰ अट्ठ॰ 7.362; *परमा वा अग्गा सेट्ठा आजानीया सब्बालङ्कारेहि अलङ्कता हया अस्सा,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 62; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आजानीयमदासहन्ति आजानीयं उत्तमजातिसिन्धवं अहं अदासिं पूजेसिन्ति अत्थो,* अप॰ अट्ठ॰ 2.75; – **ये** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आजानीयेव जातिया सिन्धवे सीघवाहने,* जा॰ अट्ठ॰ 7.257; **ख.** अच्छी नस्ल वाला बैल, गज, एवं चौपाया – *"अत्थि नु खो एतेसं गुन्नं अन्तरे इमानि सकटानि उत्तोरेतुं समत्थो उसभाजानीयो"ति ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.193; *आजानीयोति हत्थी वा होतु अस्सादीसु अञ्ञतरो वा, यो कारणं जानाति, अयं आजानीयोव चतुप्पदानं सेट्ठोति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.31; **ग.** उत्तम गुणों एवं ज्ञान से परिपूर्ण होने के कारण उत्तम अश्व के समान बुद्ध एवं क्षीणास्रव शिष्य – *आजानीयो वत, भो, समणो गोतमो,* स॰ नि॰ 1(1).32; *ब्यत्तपरिचयट्ठेन कारणाकारणजाननेन वा आजानीयो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.72; *भगवापि युगे युत्तो सुदन्तआजानीयो विय एत्तकं पस्सन्तो गच्छति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.275; **घ.** सामणेरों को प्रशिक्षित करने के कारण अनुरुद्ध थेर के लिए प्रशिक्षक के तात्पर्य में प्रयुक्त – *आजानीयेन आजञ्ञो,* थेरगा॰ 433; *आजानीयेनाति पुरिसाजानीयेन ... कतकिच्चेन अनुरुद्धेन ... सुट्ठु वा आजञ्ञो कारितो दमितो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.95; **ङ.** कारण एवं अकारण का अच्छी तरह से ज्ञान रखने वाला आचार्य – *आचरियो नो, आवुसो, उजु आजानीयो,* विसुद्धि॰ 1.95; *कारणाकारणस्स आजाननतो आजानीयो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.111; स॰ उ॰ प॰ के रूप में – **अस्सा॰**- पु॰, सधा हुआ उत्तम नस्ल का घोड़ा, सिन्धी घोड़ा – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्साजानीयो उसभाजानीयो पुरिसाजानीयो खीणासवोति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.253; **उसभा॰**- पु॰, कर्म॰ स॰, ऊंची नस्ल का प्रशिक्षित सांढ़ – उपरिवत्, **गन्धहत्था॰**- पु॰, कर्म॰ स॰, ऊंची नस्ल का बलवान हाथी – *सेय्यथापि नाम गन्धहत्थाजानियो दीघरत्तं सुपरिदन्तो,* दी॰ नि॰ 2.130; **निसभा॰**- पु॰, कर्म॰ स॰ [ऋषभाजानीय], **शा॰ अ॰,** उत्तम नस्ल का सांढ़, **ला॰ अ॰,** मनुष्यों के बीच में सर्वोत्तम (बुद्ध) – *पूजितं देवसङ्घेन निसभाजानियं यथा,* अप॰ 1.198; **पुरिसा॰**- पु॰, कर्म॰ स॰, उत्तम प्रकृति वाला पुरुष, आस्रवों को क्षीण कर चुका तथा प्रज्ञाविमुक्ति को प्राप्त अर्हत् – **ये** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *... भद्दे अस्साजानीये देसेस्सामि तयो च भद्दे पुरिसाजानीये,* अ॰ नि॰ 3(1).207; – **या** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *"इमे खो, भिक्खवे, तयो भद्दा पुरिसाजानीया"ति,* अ॰ नि॰ 3(1).210; – **भद्दा** पु॰, कर्म॰ स॰, भद्र प्रकृति का, अच्छी नस्ल का, स्वामी के हित एवं अहित को समझने वाला अश्व – *ओरसं पुत्तं भद्दाजानीयसदिसकिच्चताय आजानीयन्ति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.123; **महा॰**- पु॰, कर्म॰ स॰, महान ज्ञानी एवं संयमी – *महाजानियो खो आळारो कालामो, ...,* म॰ नि॰ 1.229; **सिन्धवा॰**- पु॰, कर्म॰ स॰, सिन्धु देश का उत्तम अश्व – *... पदं कोट्टेन्तो सिन्धवाजानीयो विय गच्छति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).151.

आजानीयझायित नपुं॰, तत्पु॰ स॰, हित एवं अहित को ठीक से जानने वाले सिन्धी घोड़े जैसा ध्यान – *आजानीयझायितं खो, सद्ध, झाय, मा खलुङ्कझायितं,* अ॰ नि॰ 3(2).291; *कथञ्च सद्ध आजानीयझायितं होतीति कथं कारणाकारणं जानन्तस्स सिन्धवस्स झायितं होति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.342.

आजानीयट्ठान नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आजानीयस्थान], कारण एवं अकारण (हित अथवा अहित) को ठीक से जानने वाले का स्थान या अवस्था, हित अहित को भलीभांति जानने वाला अश्व अथवा ऊंचे ज्ञान एवं संयम वाला व्यक्ति – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनाजानीयेव समाने आजानीयठाने ठपिम्ह,* म॰ नि॰ 2.33; *अहो वत मं मनुस्सा आजानीयट्ठाने ठपेय्युं,* अ॰ नि॰ 3(2).141-42.

आजानीयपरिमज्जन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आजानीयपरिमार्जन], हित एवं अहित को जानने वाले सिंधी घोड़े की मालिश – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आजानीयपरिमज्जनञ्च परिमज्जेय्यु'न्ति,* अ॰ नि॰ 3(2).142, 144.

आजानीयभोजन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आजानीयभोजन], ऊंची नस्ल वाले सिंधी घोड़े को दिया जाने वाला भोजन – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आजानीयेव समाने आजानीयभोजनं भोजिम्ह,* म॰ नि॰ 2.33; *आजानीयभोजनञ्च भोजेय्युं,* अ॰ नि॰ 3(2).142.

आजानीयलण्ड नपुं॰, तत्पु॰ स॰, ऊंची नस्ल वाले सिंधी घोड़े की लीद – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आजानीयलण्डस्स गन्धं घायित्वा एकोपि हत्थी नदिं ओतरितुं न उस्सहि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.16.

आजानीयवत नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आजानीयव्रत], कारण एवं अकारण के पूर्ण ज्ञाता होने की अवस्था, ऊंचे नस्ल वाले घोड़े के स्वभाव से युक्त होना, उच्चता, उत्तम प्रकृति –

ता प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आजानीयो वत, भो समणो गोतमो, आजानीयवता च समुप्पन्ना ... अधिवासेति अविहञ्ञमानो ति,* स॰ नि॰ 1(1).32.

आजानीयसदिस त्रि॰, उत्तम प्रकृति या स्वभाव वाले (उत्तम अश्व) जैसा – **स** संबो॰, ए॰ व॰ – *इसिनिसभाति इसीसु निसभ आजानीयसदिस,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 220.

आजानीयसद्द पु॰, तत्पु॰ स॰ [आजानीयशब्द], ऊंचे नस्ल वाले सिंधी घोड़े की हिनहिनाहट, उत्तम अश्व की आवाज – **द्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *जातस्स रथसद्दो च आजानीयसद्दो धजसद्दो च समन्ता असनिपातसद्दो विय अहोसि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.300.

आजानीयसुसूपमा स्त्री॰/त्रि॰, **1.** उच्च कुल वाले सिंधी अश्व के बछेड़े या शिशु की उपमा, **2.** उच्चकुलीन छोटे अश्व की उपमा से युक्त, बछेड़े की उपमा वाला – **मं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन समयेन अहुवत्थ यदा खो अहं आजानीयसुसूपमं धम्मपरियायं देसेसिं,* म॰ नि॰ 2.117; *आजानीयसुसूपमं धम्मपरियायं देसेसिन्ति तरुणाजानीयउपमं कत्वा धम्मं देसयिं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.113.

आजानीयस्स पु॰, कर्म॰ स॰ [आजानीयाश्व], हित एवं अहित को जानने वाला उत्तम नस्ल का घोड़ा, मालिक के इशारों को समझने वाला सिंधी घोड़ा – **स्सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ आजञ्ञन्ति इमं आजानीयस्सञ्च मणिञ्चाति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.165.

आजानेय्यप्पमाण त्रि॰, ब॰ स॰ [आजानीयप्रमाण], उच्चकुलीन घोड़े की लम्बाई चौड़ाई वाला – **णं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गब्भपातनसमत्थं घोररूपं आजानेय्यप्पमाणं काळवण्णं महाकण्हसुनखं मापेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.162.

आजानेय्यवळवा स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [आजानीयवडवा], ऊंचे नस्ल की उत्तम घोड़ी, सिंधी घोड़ी – **य** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमस्मिं पन गेहे आजानेय्यवळवाय विजाताय सञ्ञम्पि अकत्वा* .... ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.225; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.306.

आजायति आ +√जन का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आजायते], उत्पन्न होता है, जन्म लेता है – **रे** आत्मने॰, ब॰ व॰ – *सचे एन्ति मनुस्सत्तं, अड्ढे आजायरे कुले,* स॰ नि॰ 1(1).40.

आजि स्त्री॰, [आजि], युद्ध, लड़ाई, संघर्ष, रणक्षेत्र – *आजित्थी आहवो युद्धमायोधनं च संयुगं,* अभि॰ प॰ 399.

आजिर नपुं॰, आजि से व्यु॰ [अजिर], आंगन, क्षेत्र, प्रदेश; केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्राप्त, **कुच्छि॰**- कोरव का क्षेत्र या प्रदेश – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुच्छिआजिरं कारेसि कुच्छिआलिन्दमेव च,* म॰ वं॰ 35.3; **घरा॰**- घर का आंगन – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *घरे ओहीयित्वा घराजिरे ठत्वा,* विसुद्धि॰ 1.139.

आजीव पु॰, [आजीव], **1.** जीविका, जीविका कमाने का साधन, व्यवसाय, धन्धा – *आजीवो वत्तनं चाथ कसिकम्मं कसीत्थियं,* अभि॰ प॰ 445; – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एतं आगम्म जीवन्तीति आजीवो,* विसुद्धि॰ 1.29; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्हाकम्पि दुल्लद्धं, ये मयं आजीवस्स हेतु पुत्तदारस्स कारणा सेनाय आगच्छामा ति,* पाचि॰ 142, – **सत** नपुं॰, द्व॰ स॰, सौ प्रकार के जीविका कमाने के साधन – **ते** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एकूनपञ्ञास आजीवसतेति एकूनपञ्ञास आजीववुत्तिसतानि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.165; **2.** जीवनवृत्ति – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *परिसुद्धो मे आजीवो परियोदातो असंकिलिट्ठोति,* चूळव॰ 322; अ॰ नि॰ 2(1).116; – **वेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन कम्मेन तेन आजीवेन हत्थियायी वा अस्सयायी,* अ॰ नि॰ 2(2).21; **3.** जीविका कमाने के उचित साधन, विनय नियमों के अनुरूप जीवनयापन, विनय-अनुमोदित जीवनवृत्ति – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मा मे आजीवो भिज्जी ति आजीवभेदभया तं भेसज्जं पजहि न उपजीवि,* मि॰ प॰ 217; – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नेव भिन्देय्यमाजीवं, चजमानोपि जीवित न्ति,* मि॰ प॰ 336; स॰ उ॰ प॰ के रूप में; **खेत्ता॰**- त्रि॰, ब॰ स॰, खेती से जीविका कमाने वाला, किसान – **वो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *खेत्ताजीवो कस्सकोथ,* अभि॰ प॰ 447; **गणना॰** – त्रि॰, ब॰ स॰, गणना करके जीविका कमाने वाला – **वानं** च॰/ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *गणकाणं गणनाजीवानं दिस्सति,* म॰ नि॰ 3.50; **ञाया॰**- पु॰, आर्यमार्ग के अनुसरण की जीवनवृत्ति, उत्तम आचरण से युक्त जीवन, स॰ प॰ के रूप में – *सो वोदानलक्खणो ञायाजीवप्पवत्तिरसो मिच्छाजीवप्पहानपच्चुपट्ठानो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 260; **परिसुद्धा॰** – त्रि॰, ब॰ स॰ [परिशुद्धाजीव], परिशुद्ध जीवनवृत्ति वाला – **वो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपरिसुद्धाजीवो समानो 'परिसुद्धाजीवोम्ही' ति पटिजानाति,* चूळव॰ 322; – **ताय** स्त्री॰, भाव॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ताय च पन परिसुद्धाजीवताय नेवत्तानुक्कंसेस्साम न परं वम्भेस्सामा ति,* म॰ नि॰ 1.344; **भिन्ना॰** – त्रि॰, ब॰ स॰, नष्ट हो चुके जीविका के साधन वाला, वह, जिसका जीविका का साधन टूट गया है – **वो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *परिभूतो अचित्तीकतो, भिन्नाजीवोत्वेव सङ्खं गच्छति,* मि॰ प॰ 215; **मिच्छा॰** – पु॰, कर्म॰ स॰,

जीविका कमाने का अनुचित साधन – **वेन** तृ. वि., ए. व. – *ते एवरूपाय तिरच्छानविज्जाय मिच्छाजीवेन जीवितं कप्पेन्ति,* दी. नि. 1.8; **सम्बहुला.**- त्रि., जीविका के भिन्न भिन्न प्रकार के साधन अपनाने वाला, जीविका कमाने के प्रचुर साधनों वाला – **वो** पु., प्र. वि., ए. व. – *किं पनायं सम्बहुलाजीवो सब्बं संभक्खेति,* दी. नि. 3.31; **सम्मा.**- पु., तत्पु. स. [सम्यगाजीव], जीविका कमाने के विशुद्ध साधन, शुद्ध जीवनवृत्ति – **वेन** तृ. वि., ए. व. – *मिच्छाआजीवं पहाय सम्माआजीवेन जीवितं कप्पेति,* दी. नि. 2.234; **सुद्धा.**- त्रि., ब. स. [शुद्धाजीव], परिशुद्ध जीविकासाधन अपनाने वाला, अच्छी या पवित्र जीवन-वृत्ति वाला – **वे** पु., द्वि. वि., ब. व. – *मित्ते भजस्सु कल्याणे, सुद्धाजीवे अतन्दिते,* ध. प. 376; *साधुजीविताय सुद्धाजीवे,* ध. प. अट्ठ. 2.346.

आजीवक / आजीविक पु., आजीव से व्यु. [आजीवक], बुद्ध के समय का एक प्रमुख एवं सम्मानित धार्मिक सम्प्रदाय, इसके अनुयायी गृहत्यागी श्रमण थे तथा अचेलक या नग्न रहते थे, इसके एक प्रमुख आचार्य मक्खलि गोसाल को बौद्ध साहित्य में कट्टर नियतिवादी अथवा अक्रियावादी बतलाया गया है, आजीवक संभवतः बौद्धों के कट्टर प्रतिद्वन्दी थे – **को** प्र. वि., ए. व. – *आजीवकोति नग्गसमणको,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).161; *आजीवकोति नग्गपरिब्बाजको,* अ. नि. अट्ठ. 3.87; – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *नाभिजानामि कञ्चि आजीवकं सग्गूपगं अञ्ञत्र एकेन,* म. नि. 2.159; – **केन** तृ. वि., ए. व. – *महापुरिसो ... वाराणसिं गच्छन्तो ... उपकेनाजीवकेन समागच्छि,* सु. नि. अट्ठ. 1.217; – **स्स** च./ष. वि., ए. व. – ... *धम्मं सोतुकामा आजीवकस्स एतमत्थं कथेत्वा,* ध. प. अट्ठ. 1.211; – **क** संबो., ए. व. – *आजीवकाति आजीवहेतु पब्बजित पदुट्ठतापस,* जा. अट्ठ. 2.316; – **का** प्र. वि., ए. व. – *आजीवका वा यदि वा निगण्ठा,* सु. नि. 383; – **के** द्वि. वि., ब. व. – ... *आजीवके उय्योजेसि,* पाचि. 300; – **कानं** ष. वि., ए. व. – ... *आजीवकानं मिच्छातपं आरब्भ कथेसि,* जा. अट्ठ. 1.470; – **केसु** सप्त. वि., ब. व. – ... *बिम्बिसारस्स ञातिसालोहितो आजीवकेसु पब्बजितो होति,* पाचि. 103; – **पब्बज्जा** स्त्री., तत्पु. स. [आजीवकप्रव्रज्या], आजीवक के रूप में दीक्षा, आजीवकों के सम्प्रदाय में दीक्षा लेना, आजीवक की दीक्षा – **ज्जं** द्वि. वि., ए. व. – *आजीवकपब्बज्जं पब्बजित्वा अचेलको अहोसि,* जा. अट्ठ. 1.373; *हत्था दड्ढाति आजीविकपब्बज्जं पब्बजितकाले उण्हपिण्डपातपटिग्गहणे हत्थापि किरस्स दड्ढा,* जा. अट्ठ. 3.477; – **सावक** पु., तत्पु. स. [आजीवकश्रावक], आजीवकों का शिष्य या अनुयायी – **को** प्र. वि., ए. व. – *अथ खो अञ्ञतरो आजीवकसावको गहपति येनायस्मा आनन्दो तेनुपसङ्कमि,* अ. नि. 1(1).248; – **स्स** च. वि., ए. व. – *अञ्ञतरस्स आजीवकसावकस्स महामत्तस्स सङ्घभत्तं होति,* चूळव. 294; – **केहि** तृ. वि., ब. व. – *अञ्ञतरो उपासको सम्बहुलेहि आजीवकसावकेहि सद्धिं उय्यानं अगमासि,* चूळव. 250; – **सुत्त** नपुं., अ. नि. का एक सुत्त, अ. नि. 1(1).248-49; – **सेय्या** स्त्री., तत्पु. स. [आजीवकशय्या], आजीविकों के लिए शय्या अथवा शयन का स्थान – **य्यं** द्वि. वि., ए. व. – *अथ खो सो पुरिसो दण्डितो भिक्खुनूपस्सयस्स अविदूरे आजीवकसेय्यं कारापेत्वा आजीवके उय्योजेसि,* पाचि. 300.

आजीवकारण नपुं., तत्पु. स., आजीविका का कारण, जीविकोपार्जन के लिए – **णा** प. वि., ए. व. – *आजीवहेतु आजीवकारणा पापिच्छो इच्छापकतो असन्तं अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उल्लपति,* परि. 202; *तत्थ अज्झाजीवेति आजीवहेतु आजीवकारणा भिक्खु उत्तरिमनुस्सधम्मं उल्लपति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.24; *आजीवहेतूति आजीवकारणा जीविकापकतो हुत्वा ...,* थेरगा. अट्ठ. 2.399.

आजीवट्ठमकसील नपुं., कर्म. स., शील का एक प्रभेद, आदिब्रह्मचरियकशील, ब्रह्मचर्य-जीवन या भिक्षु-जीवन के प्रारम्भ में ही तीन प्रकार के शारीरिक कर्मों, चार प्रकार के वाणी के पापकर्मों तथा एक प्रकार के जीविकोपार्जन के अनुचित साधन से चित्त की विरति कराने वाला आदिभूत शील – *सुपरिसुद्धानि तीणि कायकम्मानि चत्तारि वचीकम्मानि, सुपरिसुद्धो आजीवोति इदं आजीवट्ठमकं,* विसुद्धि. महाटी. 1.31; *इमं कुसलं धम्मन्ति इमं अनवज्जं आजीवट्ठमकसीलं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).276; – **लं** द्वि. वि., ए. व. – *एवं आजीवट्ठमकसीलं सोधेत्वा अनोमानदीतीरतो तिंसयोजनप्पमाणं सत्ताहेन अगमा राजगहं बुद्धो,* सु. नि. अट्ठ. 2.101; *तिविधं कायदुच्चरितं पहाय उभयसुचरितं पूरेन्तस्सेव यस्मा आजीवट्ठमकसीलं पूरेति,* अ. नि. अट्ठ. 1.391; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *मग्गब्रह्मचरियस्स आदिभावभूतन्ति आदिब्रह्मचरियकं आजीवट्ठमकसीलस्सेतं अधिवचनं,* विसुद्धि. 1.12.

आजीवति आ +√जीव का वर्त., प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आजीवति], जीता है, जीवन चलाता है, जीवनयापन करता है, के सहारे जीता है – *न पापकं आजीवं आजीवति,* म॰ नि॰ 2.225; – **मानो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *याय चेतनाय मिच्छाजीवं आजीवमानो किरियं करोति नाम,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 263.

आजीवन नपुं॰, [आजीवन], पूरे जीवन भर – *पिण्डो आजीवने देहे पिण्डने गोळके मतो,* अभि॰ प॰ 1017.

आजीवपच्चयापत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, जीविका कमाने या जीवन को चलाने के कारण होने वाला अपराध – **त्ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आजीवपच्चयापत्ति छब्बेधाति पकासिता,* विन॰ वि॰ 3106; द्रष्ट॰ आजीवविपत्ति.

आजीवपारिसुद्धि स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आजीवपरिशुद्धि], कुशल काय-कर्म एवं कुशल वाक्-कर्म करते हुए जीवनयापन, दोषरहित अथवा विशुद्ध साधनों के सहारे जीविका कमाना – **द्धि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आजीवपरिसुद्धि धम्मेनेव समेन पच्चयुप्पत्तिमत्तकं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.258; – **द्धिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुसलं कायकम्मं, कुसलं वचीकम्मं, आजीवपरिसुद्धम्पि खो अहं थपति, सीलस्मिं वदामि,* म॰ नि॰ 2.228; – **सील** नपुं॰, शीलों के अनेक प्रभेदों में एक – *परियेट्ठिसुद्धि नाम आजीवपारिसुद्धिसीलं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.247; – **धम्म** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आजीवपरिशुद्धिधर्म], जीविका की विशुद्धि से सम्बन्धित धर्म – **म्मे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आजीवपारिसुद्धिधम्मे वा दसविधसुचरितधम्मे वा बुद्धानं चारित्तधम्मे वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.120.

आजीवपारिसुद्धिसील नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आजीवपरिशुद्धिशील], शील के चतुर्विध प्रभेदों में एक प्रभेद, जीविका कमाने के लिए बुद्ध द्वारा कहे गए छ शिक्षा-पदों का उल्लंघन किए बिना जीविका कमाना, जीविका कमाने के बुरे या अनुचित साधनों से मन को विलग रखना **लं**, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *या पन आजीवहेतुपञ्ञत्तानं छन्नं सिक्खापदानं वीतिक्कमस्स, ... पापधम्मानं वसेन पवत्ता मिच्छाजीवा विरति, इदं आजीव पारिसुद्धिसीलं,* विसुद्धि॰ 1.16; *परियेट्ठिसुद्धि नाम आजीवपारिसुद्धिसीलं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.247; *इदं आजीवपारिसुद्धिसीलं नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 1.266.

आजीवपारिसुद्धी स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आजीवपरिशुद्धि], जीविका कमाने के साधनों की पवित्रता, पवित्र जीवनवृत्ति – **द्धी** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आजीवपारिसुद्धी च सीलं पच्चयनिस्सितं,* सद्धम्मो॰ 342.

आजीवपूरण नपुं॰, जीविकोपार्जन के पवित्र नियमों या साधनों की पूर्णता – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मनोद्वारे आजीवपूरणं नाम नत्थि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 263.

आजीवभण्डक नपुं॰, तत्पु॰ स॰, जीवनयापन के लिए आवश्यक वस्तुएं या सामग्री – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्तनो आजीवभण्डकं गवेसमानो दिसा ववत्थापेतुं ...* जा॰ अट्ठ॰ 1.306.

आजीवभेद पु॰, तत्पु॰ स॰, जीविकोपार्जन–सम्बन्धी साधनों का नष्ट हो जाना या छिन्न भिन्न हो जाना – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मनोद्वारे आजीवभेदो नाम नत्थि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 263; स॰ पू॰ प॰ के रूप में – *मा मे आजीवो भिज्जी'ति आजीवभेदभया तं भेसज्जं पजहि न उपजीवि,* मि॰ प॰ 217.

आजीवमुख नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आजीवमुख], जीवनयापन के साधन, व्यवसाय, कृषि आदि जीविकासाधन – **खानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यानि तानि कसिवाणिज्जानि इणदानं उञ्छाचरियाति आजीवमुखानि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.381.

आजीववार पु॰, तत्पु॰ स॰, जीविकोपार्जन से सम्बन्धित खण्ड, जीविका के उपार्जन का अवसर – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आजीववारे अपरिसुद्धाजीवाति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).122.

आजीवविपत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आजीवविपत्ति], चार प्रकार की विपत्तियों में एक, **1.** जीविका कमाने के अनुचित साधनों को अपनाना, **2.** आजीविका के लिए भिक्षु या भिक्षुणी द्वारा किए गए छ प्रकार के अनुचित व्यवहार या अननुमोदित आचरण – *अयं सा आजीवविपत्ति सम्मता,* परि॰ 280; ... *अयं छहि सिक्खापदेहि सङ्गहिता आजीवविपत्ति नाम चतुत्था विपत्ति सम्मताति ...,* परि॰ अट्ठ॰ 188; *चतस्सो विपत्तियो – सीलविपत्ति, आचारविपत्ति, दिट्ठिविपत्ति,* आजीवविपत्ति, परि॰ 249; *इध भिक्खवे, एकच्चो मिच्छाआजीवो होति, मिच्छाआजीवेन जीविकं कप्पेति, अयं वुच्चति, भिक्खवे, आजीवविपत्ति,* अ॰ नि॰ 1(1).305; – **चोदना** स्त्री॰, जीविका कमाने के लिए गृहीत अनुचित साधनों के विषय में आज्ञा या निर्देश – *आजीवहेतु पञ्ञत्तानं छन्नं सिक्खापदानं वसेन आजीवविपत्तिचोदना वेदितब्बा,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.157; – **पच्चय** पु॰, तत्पु॰ स॰, जीविका-उपार्जन के अनुचित साधनों के ग्रहण करने के कारण – **या** प॰ वि॰, ए॰ व॰ –

आजीवविपत्तिपच्चया छ आपत्तियों आपज्जति, परि॰ 202; – **पुच्छा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आजीवविपत्तिपृच्छा], आजीव-विपत्ति के विषय में प्रश्न, मिथ्या-आजीव के विषय में प्रश्न – *आचारविपत्तिपुच्छा, दिट्ठिविपत्तिपुच्छा, आजीवविपत्तिपुच्छा,* परि॰ 324.

आजीवविपन्न त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आजीवविपन्न], सम्यक्-आजीव की स्थिति से रहित, विशुद्ध जीवनवृत्ति से रहित, जीविका उपार्जन के विशुद्ध साधन नहीं अपनाने वाला – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मिच्छादिट्ठिको च होति, आजीवविपन्नो च,* परि॰ 339.

आजीवविसुद्धि स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आजीवविशुद्धि], जीविका की शुद्धि – *आजीवविसुद्धिपरियोसानस्स सीलस्स उपनिस्सयो होति,* परि॰ अट्ठ॰ 210-11.

आजीववुत्ति स्त्री॰, जीविका का साधन, व्यवसाय, जीवनयापन के लिए आवश्यक कामधंधा – **सतानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – एक सौ प्रकार के जीविकोपार्जन के साधन, एक सौ प्रकार के व्यवसाय – *एकूनपञ्ञास आजीवकसतेति एकूनपञ्ञासआजीवकवुत्तिसतानि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.134; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.165.

आजीवसंवर पु॰, तत्पु॰ स॰, जीवनवृत्ति के विशय में ग्रहण किया गया संयम, जीवकोपार्जन में संयम – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दसयिमे, भिक्खवे, धम्मा सरीरट्ठा ... कायसंवरो, वचीसंवरो, आजीवसंवरो, पोनोभविको भवङ्खारो,* अ॰ नि॰ 3(2).73.

आजीवसम्पदा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आजीवसम्पत्], उत्तम जीवनवृत्ति, जीविका कमाने के अच्छे तरीकों की प्राप्ति, सम्यक् आजीवता, सम्यक्-आजीव होकर जीवन जीना – *इध, भिक्खवे, एकच्चो सम्माआजीवो होति, सम्माआजीवेन जीविकं कप्पेति अयं वुच्चति, भिक्खवे, आजीवसम्पदा,* अ॰ नि॰ 1(1).306; *कम्मन्तसम्पदा, आजीवसम्पदा दिट्ठिसम्पदा,* अ॰ नि॰ 1(1).305; *का सम्पत्तीति या चस्स सीलसम्पदा चेव आजीवसम्पदा च,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.190; *या चस्स सीलसम्पदा च आजीवसम्पदा च, सा सम्पत्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.21.

आजीवसीलाचारविपन्न त्रि॰, तत्पु॰ स॰, सम्यक्-आजीव, शीलों एवं उत्तम आचरण से रहित – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आजीवसीलाचारविपन्नोपि ब्राह्मणो भवेय्य,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.306.

आजीवसुद्धि स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आजीवशुद्धि], सम्यक्-आजीव होने की दशा, विशुद्ध जीवनवृत्ति, जीविका-उपार्जन के लिए अपनाए गए साधनों की पवित्रता – **द्धिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सम्पस्सतन्ति सम्मा आजीवसुद्धिं पस्सतं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.119; *आजीवसुद्धिं रक्खेय्य अकरोन्तो अनेसनं,* सद्धम्मो॰ 392.

आजीवहेतु अ॰, च॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰, जीविका पाने के निमित्त – *आजीवहेतूति जीविकनिमित्तं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.48; *आजीवहेतु आजीवकारणा पापिच्छो इच्छापकतो असन्तं अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उल्लपति,* परि॰ 202; विसुद्धि॰ 1.22; *आजीवहेतु आजीवकारणा – भिक्खु उत्तरिमनुस्सधम्मं ... नयेन परिवारे पञ्ञत्तानि छ सिक्खापदानि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.24; – **क** त्रि॰, जीविकोपार्जन के कारण उत्पन्न या उदित – *यं पन नआजीवहेतुकं चतुब्बिधं वचीदुच्चरितं भासन्ति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 264; – **पञ्ञत्त** त्रि॰, जीविका कमाने के सन्दर्भ में कहा गया या बतलाया गया (शिक्षापद) – **त्तानं** नपुं॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *या पन आजीवहेतुपञ्ञत्तानं छन्नं सिक्खापदानं वीतिक्कमस्स,* विसुद्धि॰ 1.16; – **त्तेहि** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आजीवेनपि चोदेतीति आजीवहेतुपञ्ञत्तेहि छहि सिक्खापदेहि चोदेति,* परि॰ अट्ठ॰ 204.

आजीविक[1] / आजीविका नपुं॰, (स॰प॰ में) / स्त्री॰, [बौ॰ सं॰ आजीवक / आजीवका], जीविका कमाने के आवश्यक साधन – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आजीविकाय पकतो अभिभूतोति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.129; *आजीविकापकताति आजीविकाय उपद्दुता अभिभूता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.267; – **पकत** त्रि॰, अट्ठ॰ में प्रायः आजीविका + अपकत रूप में व्याख्यात, वह, जिसका प्रत्येक व्यवहार केवल जीविका कमाने मात्र के लिए है, दरिद्र, दुर्गतिग्रस्त, केवल जीविका कमाने में लगा हुआ – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आजीविकाय पकतो अभिभूतोति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.129; – **ता** ब॰ व॰ – *ते ... राजाभिनीता ... नाजीविकापकता अगारस्मा अनगारियं पब्बजिता,* म॰ नि॰ 2.136.

आजीविक[2] पु॰, द्रष्ट॰ आजीवक के अन्त॰.

आजीविकपब्बजा स्त्री॰, द्रष्ट॰ आजीवक[2] के अन्त॰.

आजीविकभय नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आजीविकाभय, बौ॰ सं॰ आजीविकभय], पांच प्रकार के भयों में से एक, जीविका कमाने के सन्दर्भ से उत्पन्न जीविकोपार्जन-सम्बन्धी भय, जीविकोपार्जन के कारण उत्पन्न भय – **यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आजीविकभयं, असिलोकभयं, परिससारज्जभयं,*

मरणभयं दुग्गतिभयं, अ॰ नि॰ 3(1).182; *आजीविकाभयन्ति जीवितवुत्तिभयं*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.259; *आजीवकभयम्पि दुक्खं, मरणभयम्पि दुक्खं*, मि॰ प॰ 189.

आजीविकसेय्या स्त्री॰, द्रष्ट॰ आजीवक॰ के अन्त॰.

आजीविकापकत त्रि॰, द्रष्ट॰ आजीविक' के अन्त॰.

आजीविनी / आजीविका / आजीवकिनी स्त्री॰, [आजीविका], आजीवक संप्रदाय की अनुयायिनी स्त्री – **किनियो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आजीवका आजीवकिनियो*, अ॰ नि॰ 2(2).93; *आजीवका आजीवकिनियो सुक्काभिजातीति वदति*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.135; *आजीवका आजीविनियो अयं सुक्काभिजातीति वदन्ति*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.303.

आजीवी त्रि॰, केवल स॰ उ॰ प॰ में प्राप्त [आजीविन्], (के सहारे) जीने वाला, जीवनयापन करने वाला, स॰ उ॰ प॰ में – **मन्तस्साजीविनो**- पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, प्रज्ञा के सहारे जीवन-यापन करने वाले बुद्धिमान मन्त्री – *मन्तस्साजीविनोति मन्ता वुच्चति पञ्ञा, तं निस्सयं कत्वा ये जीवन्ति पण्डिता महामत्ता, तेसं एतं नामं*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.32; *अमच्चा पारिसज्जा गणकमहामत्ता अनीकट्ठा दोवारिका मन्तस्साजीविनो सन्निपतित्वा*, दी॰ नि॰ 3.47; **लूखाजीविं** – पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, रूक्ष या कष्टदायक पद्धति से जीवन जीने वाला – *मं पन तपस्सिं लूखाजीविं कुलेसु न सक्करोन्ति*, दी॰ नि॰ 3.31; *लूखाजीविन्ति अचेलकादिवसेन वा धुतङ्गवसेन वा लूखाजीविं*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.20; **सुद्धा॰ ... विं** – पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, विशुद्ध जीवन-वृत्ति वाला – *तं वे देवा पसंसन्ति, सुद्धाजीविं अतन्दितं*, ध॰ प॰ 366.

आजीवुपायविपत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, जीविका के उपार्जन में उत्पन्न विपत्ति या संकट – *कसिरवुत्तिकेतिआदीहि आजीवुपायविपत्ति*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.143.

आज्जव / अज्जव नपुं॰, [आर्जव], सरलता, सीधापन – *उजुनो भावो अज्जवं, इच्चेवमादि*, क॰ व्या॰ 404; *उजुनो भावो अज्जवन्ति च*, सद्द॰ 3.807.

आट पु॰, [आटि / आडि], एक पक्षी, जिसकी चोंच लकड़ी की चम्मच के समान होती है – *आटो दब्बिमुखद्विजो*, अभि॰ प॰ 637; – **टा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आटाति दब्बिसण्ठानमुखसकुणा*, जा॰ अट्ठ॰ 7.309.

आटक नपुं॰, पिशाच प्रदेश की आठ प्रकार की धातुओं में से एक – **कं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मोरक्खकं, पुथुकं, मलिनकं, चपलकं, सेलकं, आटकं, भल्लकं, दूसिलोहन्ति अट्ठ पिसाचलोहानि नाम*, विभ॰ अट्ठ॰ 60.

आटानाटा स्त्री॰, उत्तरकुरु जनपद के एक नगर का नाम – *आटानाटा कुसिनाटा परकुसिनाटा, नाटसुरिया परकुसिटनाटा*, दी॰ नि॰ 3.152; *एकञ्हिस्स नगरं आटानाटा नाम आसि*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.134; *आटानाटानामाति इत्थिलिङ्गवसेन लद्धनामं नगरं आसि*, दी॰ नि॰ टी॰ 3.142.

आटानाटिय त्रि॰, [बौ॰ सं॰ आटानाटिक], आटानाटा-नामक नगर से सम्बद्ध – **या** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं खो सा, मारिस, आटानाटिया रक्खा भिक्खूनं भिक्खुनीनं उपासकानं... फासुविहाराय*, दी॰ नि॰ 3.154; *आटानाटियन्ति आटानाटनगरे बद्धत्ता एवंनामं*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.131.

आटानाटियपरित्त नपुं॰, आटानाटिय-सुत्त का परित्राण या सुरक्षा, आटानाटिय-सुत्त का सुरक्षादायक मन्त्रकवच, अनेक परित्राणकारी सुत्तों की सूची में से एक – *सेय्यथिदं, रतनसुत्तं मेत्तसुत्तं ... मोरपरित्तं ... आटानाटियपरित्तं अङ्गुलिमालपरित्तं*, मि॰ प॰ 151; स॰ प॰ के अन्त॰; *आटानाटियपरित्तमोरपरित्तधजग्गपरित्त– रतनपरित्तादीनञ्हि एत्थ आणा पवत्तति*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.343; विभ॰ अट्ठ॰ 406.

आटानाटियसुत्त नपुं॰, दी॰ नि॰ के पाथिक वग्ग का एक सुत्त, जिसमें भगवान् बुद्ध ने भिक्षुओं, भिक्षुणियों एवं उपासकों के लिए उत्तरकुरु जनपद की सुदृढ़ सुरक्षा जैसे उत्तम सुरक्षा-साधनों का उपदेश दिया है, दी॰ नि॰ 3.147-165; *एवं मे सुतन्ति आटानाटियसुत्तं*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.129; – **त्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा कुवेरो वेस्सवणो'ति वुच्चति, वुतञ्चेतं आटानाटियसुत्ते*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.91; – **वण्णना** स्त्री॰, दी॰ नि॰ के आटानाटियसुत्त की अट्ठकथा, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.129-138.

आठपना / अट्ठपना स्त्री॰, आ +√ठा के प्रेर॰ से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आस्थापना], व्यवस्थित कराना, निर्धारण कराना, रखवाना, स्थापित कराना, आदरपूर्वक रखाना, प्रारम्भ से विन्यस्त कराना – *यो एवरूपो उपनाहो ... अट्ठपना ठपना सण्ठपना अनुसंसन्दना ... अयं वुच्चति उपनाहो*, पु॰ प॰ 124; *या एवरूपा इरियपथस्स ठपना आठपना सण्ठपना भाकुटिका भाकुटियं*, महानि॰ 164; *आठपनाति आदिट्ठपना, आदरेन वा ठपना*, महानि॰ अट्ठ॰ 269.

आठपित त्रि॰, आ +√ठा के प्रेर॰ का भू॰ क॰ कृ॰ [आस्थापित], स्थापित किया हुआ, रखाया हुआ, ठीक से व्यवस्थित किया हुआ – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *योपि भुजिस्सो मातरा वा पितरा वा आठपितो होति*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.289; – **तं** पु॰,

द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मानुसं मातरापि वा पितराठपितं वापि, अवहारो न विज्जति,* विन॰ वि॰ 217.

आठपेतुं आ +√ठा के प्रेर॰ का निमि॰ कृ॰ [आस्थापयितुं], अच्छी तरह से स्थापित करने के निमित्त, ठीक से रखवाने के निमित्त – *लब्भा पथवी केतुं विक्केतुं आठपेतुं ओचिनितुं विचिनितुन्ति ?,* कथा॰ 293.

आडम्बर पु॰, [आडम्बर], युद्धभेरी, बिगुल, स॰ प॰ के अन्त॰ – *लज्जितानेकपज्जुन्नगज्जिताडम्बरेहि च,* चू॰ वं॰ 85.44.

आणक / आनक पु॰, [आनक, आनयति उत्साहवतःकरोति], बड़ा सैनिक ढोल, नगाड़ा, एक ढोल का नाम, मृदंग – *दसारहानं आनको नाम मुदिङ्गो अहोसि,* स॰ नि॰ 1(2).243; *आनकोति एवंलद्धनामो मुदिङ्गो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.201; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *यं आनकस्स मुदिङ्गस्स पोराणं पोक्खरफलकं अन्तरधायि,* स॰ नि॰ 1(2).243; – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स दसारहा आनके घटिते अञ्ञं आणिं ओदहिंसु,* तदे॰.

आणट्ठान नपुं॰, [आज्ञास्थान], प्रभुत्व का क्षेत्र, प्रभुत्व का स्थान – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रक्खसस्स च आणट्ठानं न ओतरि ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.271.

आणत्त त्रि॰, आ +√ञा के प्रेर॰ का भू॰ क॰ कृ॰ [आज्ञप्त / आज्ञापित], वह, जिसे आज्ञा या आदेश दिया गया, निर्दिष्ट, वह नियम, जिसका विधान निर्दिष्ट किया गया है, विहित, पूछा गया, निवेदित – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रञ्ञा आणत्तो अम्हाकं किर, भणे, विजिते भद्दियनगरे मेण्डको गहपति पटिवसति,* महाव॰ 318; *सो आणत्तो अहं तया'ति,* पारा॰ 62; – **त्ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपि चाहं हिय्योव गहपतिना आणत्ता,* चूळव॰ 180; – **त्तं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हिय्यो "किर मे पितरा आणत्तं कम्मं निप्फादेही"ति पहिणि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.103; – **त्तेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न भिक्खवे, थेरेन आणत्तेन अगिलानेन न गन्तब्बं,* महाव॰ 146; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचे आणत्तस्सेव मातापितरो, सोव आनन्तरियं फुसति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.41; – **त्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सकिं आणत्ते पन तस्मिं बहुकेपि द्वारे निक्खमन्ते ...,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 197; – **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *थेरेन आणत्ता नवा भिक्खू न गच्छन्ति,* महाव॰ 146; – **त्तानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चत्तारि पटाकानि आणत्तानि गमिस्सन्ति,* मि॰ प॰ 99; – **त्ते** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आणत्ते यत्तके आणत्तो घातेति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.41; – **काल** पु॰, कर्म॰ स॰ [आज्ञप्तकाल], निर्दिष्ट समय, निर्धारित किया गया समय – **लो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रञ्ञा आणत्तकालो विय कम्मरञ्ञा वट्टसन्निस्सितपुथुज्जनं गहेत्वा ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.99; – **पुरिस** पु॰, कर्म॰ स॰ [आज्ञप्तपुरुष], वह पुरुष, जिसे आज्ञा दी गई है अथवा आदेश दिया गया है, प्रयोज्य कर्त्ता – *कारेति इच्चादिसु पन आणत्तपुरिसादयो कत्तुकम्मं नाम,* सद्द॰ 3.692.

आणत्ति स्त्री॰, आ +√ञा के प्रेर॰ से व्यु॰ [आज्ञप्ति], **1.** आज्ञा, आदेश, विधान – **त्ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आणत्तियं यत्थ आणत्ति नत्थि,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 282; – **त्तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निद्देसकारीति यदि तस्स निद्देसं आणत्तिमेव सेसो यो कोचि पुरिसो करोति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.226; – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *साणत्तिकं "धोवा"ति आदिकाय आणत्तिया,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 161; – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आणत्तियं यत्थ आणत्ति नत्थि,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 282; **2.** क्रिया-पद की प॰ वि॰ द्वारा प्रकाशित आज्ञा, अनुज्ञा, आख्यात-पञ्चमी का एक अर्थ – *आणत्यासिट्ठेनुत्तकाले पञ्चमी,* क॰ व्या॰ 417; *आणत्तियेव पञ्चमी,* परि॰ 253; **3.** व्याकरण में उल्लिखित छ कालों में से एक – *अतीतानागत-पच्चुप्पन्नाणत्ति-परिकप्प-कालातिपत्तिवसेन पन छ,* सद्द॰ 1.20; **क.** स॰ उ॰ प॰ के रूप में – **अनियमिता॰**- कर्म॰ स॰ [अनियमिताज्ञप्ति], अबाध्यकारी आदेश – **त्ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पस्सति अनियमिताणत्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.72; **यथाणत्तिवसेन-** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, आदेश के अनुसार, निर्देश या आज्ञा के अनुरूप – *यथाणत्तिवसेनेव कत्तब्बं सत्थु सासनं,* सद्धम्मो॰ 354; **ख.** स॰ पू॰ प॰ के रूप में; – **त्यत्थ** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आज्ञप्त्यर्थ], आज्ञा का अर्थ, आदेश का अर्थ – **त्थे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आणत्यत्थे च आसिट्ठत्थे च अनुत्तकाले पञ्चमी विभत्ति होति,* क॰ व्या॰ 417; – **कर** पु॰, सन्देशवाहक, आज्ञा का अनुपालन करने वाला दूत – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इधागतोति तेसं उभिन्नम्पि अहं दूतो आणत्तिकरो रञ्ञो च अम्हि पहितो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.360; – **कालिक** त्रि॰, व्या॰ के सन्दर्भ में प्रयुक्त, क्रिया के छ कालों में आणत्तिकाल से सम्बद्ध – *पञ्चमीविभत्ति आणत्तिकालिका,* सद्द॰ 1.50; – **क्खण** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आज्ञप्तिक्षण], आदेश देने का क्षण – **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आणापकस्स आणत्तिक्खणे आणत्तस्स च मारणक्खणेति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.42; – **नियाम** पु॰, निर्देश या आदेश में विद्यमान नियम – **मेन** तृ॰ वि॰,

ए. व. – *गहेत्वान तं खादि यावदत्थन्ति थेरेन आणत्तिनियामेन उच्छुं गहेत्वा,* पे. व. अट्ठ. 225; – **नियामक** पु., आदेश देने में कार्यरत मुख्य निर्धारक तत्त्व या तरीका – **का** प्र. वि., ब. व. – *किरियाविसेसोति इमे, छ आणत्तिनियामका'ति,* खु. पा. अट्ठ. 20; – **परिकप्पिका** स्त्री., आणत्ति (लोट्) एवं परिकप्पिक (विधिलिङ्) नामक दो आख्यात विभक्तियां – **का** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *दुवे विभत्तियो तत्थ, आणत्तिपरिकप्पिका,* सद्द. 1.50; – **मत्त** नपुं., केवल निर्देश, मात्र आदेश – **त्तेन** तृ. वि., ए. व. – *तत्थ इमिना पठमेन ठानेनाति इमिना आणत्तिमत्तेनेव ताव पठमेन कारणेन,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.37; – **मूलक** त्रि., ब. स. [आज्ञप्तिमूलक], वह, जिसकी जड़ आदेश या आज्ञा में है, आज्ञा या आदेश से उत्पन्न – *अत्तना कतमूलकेन वा आणत्तिमूलकेन वा पुब्बेकतेन वा, ...,* अ. नि. अट्ठ. 2.154; – **वचन** नपुं., तत्पु. स. [आज्ञप्तिवचन], आज्ञा के अर्थ को कहने वाला वचन – **नानि** प्र. वि., ब. व. – *पञ्चमीविभत्यन्तानि पदानि आणत्तिवचनानि,* सद्द. 1.50; – **वसेन** क्रि. वि., आज्ञा के कारण से – *तत्थ आणत्तिवसेन पुब्बपयोगो वेदितब्बो,* कङ्खा. अट्ठ. 121; – **वार** पु., विनय के निर्देश या आदेश देने का क्रम या बारी – **रेसु** सप्त. वि., ब. व. – *इतो परेसु चतूसु आणत्तिवारेसु पठमे ताव सो गन्त्वा पुन पच्चागच्छतीति,* पारा. अट्ठ. 1.297.

आणत्तिक त्रि., आणत्ति से व्यु. [आज्ञप्तिक], **शा. अ.**, आज्ञा अथवा आदेश के साथ जुड़ा हुआ, आज्ञा, आदेश अथवा निर्देश के कारण घटित या होने वाला, **विशेष अर्थ 1.** पु., प्राणि-हत्या के छ प्रयोगों में से एक, दूसरे को आज्ञा देकर कराई गई हत्या – **को** प्र. वि., ए. व. – *पाणातिपातस्स छपयोगा – साहत्थिको, आणत्तिको, निस्सग्गियो, थावरो, विज्जामयो इद्धिमयोति,* पारा. अट्ठ. 2.37; *आणत्तिको नाम 'असुकस्स भण्डं अवहरा'ति अञ्ञं आणापेति,* कङ्खा. अट्ठ. 120; *'आणत्तिको'ति अञ्ञं आणापेन्तस्स 'एवं विज्झित्वा वा पहरित्वा वा मारेही'ति आणापनं,* पारा. अट्ठ. 2.37; *आणत्तिकोति 'असुकं नाम मारेही'ति अञ्ञं आणापेन्तस्स आणापनं,* कङ्खा. अट्ठ. 124; **2.** स्त्री., आज्ञा, निर्देश, आदेश – **या** तृ. वि., ए. व. – *सत्थु आणत्तिया अञ्ञतरस्स थेरस्स सन्तिके पब्बजि,* अ. नि. अट्ठ. 1.200; पाठा. आणत्तिया, स. उ. प. के रूप में, – **साणत्तिकं** नपुं., प्र. वि., ए. व., वाणी द्वारा दी गई आज्ञा के कारण होने वाला – ... *अयमेत्थ अनुपञ्ञत्ति, साधारणपञ्ञत्ति, साणत्तिकं, हरणत्थाय गमनादिके पुब्बपयोगे दुक्कटं,* कङ्खा. अट्ठ. 123; *आणत्तिकं वाचाचित्ततो समुट्ठाति,* कङ्खा. अभि. टी. 196; स. पू. प. के रूप में, – **पयोगकथा** स्त्री., आज्ञा के कारण होने वाले प्राणातिपात आदि के प्रयोगों का कथन – *अधिट्ठायाति मातिकावसेन आणत्तिकपयोगकथा निट्ठिता,* पारा. अट्ठ. 2.44.

आणपन / आणापन नपुं., [आज्ञापन], आज्ञा, विनय का विधानात्मक निर्देश या शिक्षा, आदेश – नं प्र. वि., ए. व. – *अञ्ञं आणापेन्तस्स आणापनं,* कङ्खा. अट्ठ. 124; *कस्माति चे आणपनं, परिकप्पो च सच्चतो,* सद्द. 1.51.

आणपयति द्रष्ट. आणापेति के अन्त.

आणा स्त्री., [आज्ञा], **1. शा. अ.**, आज्ञा, आदेश, निर्देश, राजकीय आदेश – **णा** प्र. वि., ए. व. – *आणा च सासनं ञेय्यं, उद्दानं तु च बन्धनं,* अभि. प. 354; *रज्जे आणाधनमिस्सरियं, भोगा सुखा दहरिकासि,* थेरीगा. 466; *केन कारणेन अरहतो काये आणा नप्पवत्तति इस्सरियं वा,* मि. प. 237; – **णं** द्वि. वि., ए. व. – *सचेपि मे सभावे कथिते आणं करेय्य,* जा. अट्ठ. 4.182; *पेसुञ्ञकारकस्स आणं कारेत्वा,* जा. अट्ठ. 1.258; – **य¹** तृ. वि., ए. व. – *अथ वा भगवतो आणाय अच्छरासम्भोगसञ्ञाताय ...,* उदा. अट्ठ. 140; – **य²** ष. वि., ए. व. – *यदि ते तात, अय्यको तुम्हे ब्राह्मणस्स हत्थतो आणाय बलसा मुधा गण्हाति,* मि. प. 263; **विशेष अर्थ**, दण्ड, मृत्युदण्ड – *सचेपि मे सभावे कथिते आणं करेय्य ...,* जा. अट्ठ. 4.182; ... *पेसुञ्ञकारकस्स आणं कारेत्वा ...,* जा. अट्ठ. 1.258; *"सचे तस्मिं खणे नागच्छसि, आणं ते करिस्सामी"ति,* ध. प. अट्ठ. 1.252; स. उ. प. के रूप में, – **जिनाणाय** तृ. वि., ए. व., बुद्ध की आज्ञा द्वारा – *उपोसथादिकम्मत्थ जिनाणाय जनाधिप,* म. वं. 15.181; **सम्बुद्धा.**- बुद्ध की आज्ञा – **य** तृ. वि., ए. व. – *सम्बुद्धाणाय अन्तोहि वसिस्सामि जुतिन्धर,* म. वं. 15.182; स. पू. प. के रूप में, – **करण** नपुं., दण्ड को लागू करना, दण्डविधान का प्रयोग, दण्डदान – **णं** प्र. वि., ए. व. – *आगन्तुकपुरिसस्स गेहस्सामिकेसु तुण्हीमासिनेसु आणाकरणं न युत्तं,* दी. नि. अट्ठ. 1.159; म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).273; – **करणभय** नपुं., दण्डविधान का भय, दण्ड दिए जाने का डर – **येन** तृ. वि., ए. व. – *तव आणाकरणभयेन तयि सिनेहेन मातापितून न कथेसि,* जा. अट्ठ. 6.304; – **क्खेत्त** नपुं., तीन प्रकार के बुद्धक्षेत्रों में से एक, वह क्षेत्र, जहां तक बुद्ध की आज्ञा

अथवा विनयशिक्षा का प्रसार है तथा जहां अनेक परित्तों का अनुभाव है – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आणाक्खेत्तं कोटिसतसहस्सचक्कवाळपरियन्तं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.295; पारा॰ अट्ठ॰ 1.119; दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.72; *कोटिसतसहस्सचक्कवाळं पन आणाखेत्तं नाम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप.प॰) 3.81; – **त्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *सब्बसत्तानं अत्थाय परित्ते कते आणाखेत्ते* ..., विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.47; – **चक्क** नपुं॰, बुद्ध के प्रभाव या महिमा का क्षेत्र, बुद्ध की वह आज्ञा या शिक्षा, जो चक्र की भांति अप्रतिहत रूप से सर्वत्र और सर्वदा चलती रहती है, चक्र के समान अप्रतिहत गति वाली बुद्ध की आज्ञा – **क्कं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तुम्हाकं धम्मचक्कं होतु, अम्हाकं आणाचक्क'न्ति पटिञ्ञमकासि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प॰) 1(2).175; *मय्हं आणाचक्कं, तुम्हाकं धम्मचक्कं होतु,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.9; खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 77; *आणाचक्कन्ति आणायेव अप्पटिहतवुत्तिया पवत्तनट्ठेन चक्कन्ति आणाचक्कं,* सारत्थ॰ टी॰ 1.51.

आणादेसना स्त्री॰, विनय के विधिपरक एवं निषेधपरक बुद्धवचन, विनयपिटक में संगृहीत बुद्धवचन – *एत्थ हि विनयपिटकं आणारहेन भगवता आणाबाहुल्लतो देसितत्ता आणादेसना,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.17; ध॰ स॰ अट्ठ॰ 23.

आणापक पु॰, [आज्ञापक, बौ॰ सं॰ आणपक], आज्ञा देने वाला – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आणापयती ति आणापको,* क॰ व्या॰ 643; *आणापको अत्तानं सन्धाय आणापेति, इतरो अञ्ञं तादिसं मारेति आणापको मुच्चति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.43; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आणत्तो च "अयमेव ईदिसो"ति आणापकमेव मारेति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.43; – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *सो आणत्तो यो आणापकेन "इत्थन्नामो"ति अक्खातो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.44; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आणापकस्स च अवहारकस्स च आपत्ति पाराजिकस्स,* पारा॰ 62.

आणापन नपुं॰, आ +√ञा के प्रेर॰ से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आज्ञापन], आज्ञा, आदेश – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आणापयते आणापनं,* क॰ व्या॰ 643; *कारिते ... आणापयते आणापनं,* सद्द॰ 3.865; *"एवं विज्झित्वा वा पहरित्वा वा मारेही"ति आणापनं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.37; *एकस्स बन्धनं आणापनवसेन विहिंसावितक्को,* उदा॰ अट्ठ॰ 176.

आणापयति द्रष्ट॰ आणापेति के अन्त॰.

आणापवत्तन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आज्ञाप्रवर्तन], दण्ड देने की आज्ञा को लागू करना – *वसोति आणापवत्तनं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.90; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो कोचि राजा जनपदतो धम्मिकं बलिं उद्धरापेत्वा आणापवत्तनेन दानं ददेय्य,* मि॰ प॰ 258.

आणापवत्तिट्ठान नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आज्ञाप्रवृत्तिस्थान], आज्ञा के प्रसार का क्षेत्र, वह स्थान, जहां तक आदेश या आज्ञा का प्रसार एवं प्रभाव पाया जाए – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं एकेकस्स रञ्ञो आणापवत्तिट्ठानं,* महाव॰ अट्ठ॰ 393; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राजा अत्तनो आणापवत्तिट्ठानस्स केदारसीमं गन्त्वा सत्थारं वन्दित्वा परिदेवमानो* ..., स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.9.

आणापातिमोक्ख नपुं॰, पातिमोक्ख के पाठ के दो प्रकारों में से एक, जिसमें सङ्घ की आज्ञा के रूप में पातिमोक्ख के पाठ या उपोसथ आदि सङ्घकर्मों को करने को कहा गया हो – *"सुणातु मे, भन्ते, सङ्घो"ति आदिना नयेन वुत्तं आणापातिमोक्खं नाम,* कङ्खा॰ अभि॰ टी॰ 145; – **क्खं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुद्दिट्ठं पातिमोक्खन्ति अन्वद्धमासं आणापातिमोक्खं अनुद्दिट्ठं अहोसि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.141; *सङ्घो'तिआदिना नयेन वुत्तं आणापातिमोक्खं नाम,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 100; *दुविधञ्हि पातिमोक्खं आणापातिमोक्खं ओवादपातिमोक्खन्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 243.

आणापित त्रि॰, आ +√ञा के प्रेर॰ का भू॰ क॰ कृ॰ [आज्ञापित], वह (दण्डविधान आदि) जिसके लिए आज्ञा दिलाई गई है, वह (व्यक्ति), जिसे कुछ करने को आज्ञा प्रदान कराई गई है – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवुसो छन्न, ब्रह्मदण्डो आणापितो'ति,* चूळव॰ 460; *आणापिता नरिन्देन, मुनिनो पियगारवा,* म॰ वं॰ 29.18; – **त्त** नपुं॰, भाव॰, आज्ञा दिलाया जाना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुटिपुरिसे येव उपादाय आणापितत्ता सब्बे सन्निपतन्तू'ति,* मि॰ प॰ 148.

आणापेति आ +√ञा के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आज्ञापयति, बौ॰ सं॰ आणापेति], आज्ञा देता है, निर्देश देता है, विधान कराता है, आदेश दिलाता है, दण्डविधान कराता है – *यस्स खो मं भगवा आणापेति,* महाव॰ 270; *आणापको अत्तानं सन्धाय आणापेति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.43; – **मि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *छन्नस्स भिक्खुनो ब्रह्मदण्डं आणापेमि,* चूळव॰ 459; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तस्स दण्डं आणापेन्ति,* मि॰ प॰ 25; – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *सचे पन अत्तानं सन्धाय आणापेन्तोपि ओकासं नियमेति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.43; – **न्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अकत्वा परम्पराय आणापेन्तं समणसतं समणसहस्सं वा*

होतु, पारा॰ अट्ठ॰ 1.297; – **न्तेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आणापेन्तेन च "अमुकस्मिं नाम ओकासे तेलं वा वट्टि वा कपल्लिका वा अत्थि, तं गहेत्वा करोही"ति वत्तब्बो,* महाव॰ अट्ठ॰ 323; – **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *साधु देवो जीवकं वेज्जं आणापेतु,* महाव॰ 365; – **हि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *त्वंयेव छन्नस्स भिक्खुनो ब्रह्मदण्डं आणापेही"ति,* चूळव॰ 459; – **थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *"आणापेथ, भन्ते, किं करोमी"ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.9; – **य्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *न अञ्ञं आणापेय्य,* पाचि॰ 383; – **य्यासि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अथ त्वं पुरिसे आणापेय्यासि,* दी॰ नि॰ 2.242; – **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अथेकं बलसम्पन्नं योधं आणापेसि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.100; – **सुं** ब॰ व॰ – *अथ खो कोसिनारका मल्ला पुरिसे आणापेसुं,* दी॰ नि॰ 2.119; – **स्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तस्मा "नं हत्थेसु च पादेसु च बन्धं कत्वा आणापेस्सामी"ति बन्धं आणापेसि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.235; – **तब्बो** सं॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचे पन कुसितो होति, पुनप्पुनं आणापेतब्बो,* पाचि॰ अट्ठ॰ 19; – **तुं** निमि॰ कृ॰ – *थेरेन भिक्खुना नवं भिक्खुं आणापेतुन्ति,* महाव॰ 146.

आणाबल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आज्ञाबल], आज्ञा का बल, अधिकारी के आदेश का बल, स॰ प॰ के अन्त॰, – *दुब्बलेति सरीरबलभोगबलआणाबलविरहिते,* जा॰ अट्ठ॰ 6.128.

आणाबाहुल्ल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आज्ञाबाहुल्य], आज्ञा की बहुलता, आदेश से भरपूर होना – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भगवता आणाबाहुल्लतो देसितत्ता आणादेसना,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.17; ध॰ स॰ अट्ठ॰ 23.

आणाभेद पु॰, तत्पु॰ स॰ [आज्ञाभेद], आज्ञा का निष्प्रभावी हो जाना, आदेश का भङ्ग हो जाना – **दाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चक्कभेदायाति आणाभेदाय,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.174.

आणारह त्रि॰, [आज्ञार्ह], आज्ञा देने में सक्षम, आदेश देने हेतु अधिकृत, अधिकारसम्पन्न – **हेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एत्थ हि विनयपिटकं आणारहेन भगवता आणाबाहुल्लतो देसितत्ता आणादेसना,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.17; ध॰ स॰ अट्ठ॰ 23.

आणावीतक्कम पु॰, तत्पु॰ स॰ [आज्ञाव्यतिक्रम], आज्ञा का अतिक्रमण, विनय में संगृहीत बुद्ध के आज्ञापरक वचनों का उल्लंघन – **मन्तरायिक** त्रि॰, आज्ञा के उल्लंघन में विघ्न उपस्थित करने वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सत्त आपत्तिक्खन्धा आणावीतिक्कमन्तरायिका नाम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).9.

आणावोहारपरमत्थदेसना स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, विधिपरक एवं निषेधपरक आज्ञा के रूप में विनयपिटक, व्यावहारिक एवं लोकप्रिय शैली में सुत्तपिटक तथा गम्भीर शैली में अभिधम्म के रूप में परमार्थधर्मों का उपदेश – *एतानि हि तीणि पिटकानि यथाक्कमं आणावोहारपरमत्थदेसना,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.17; ध॰ स॰ अट्ठ॰ 23.

आणि स्त्री॰, [आणि / आणी], रथ या वाहन के धुरे की कील, अक्षकील, खूंटी – **णि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एते खो सङ्गहा लोके, रथस्साणीव यायतो,* दी॰ नि॰ 3.146; – **णिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स दसारहा आनके घटिते अञ्ञं आणिं ओदहिंसु,* स॰ नि॰ 1(2).243; – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा आणिया सतियेव रथो याति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.127; *तच्छन्तो आणिया आणिं, निहन्ति बलवा यथा,* थेरगा॰ 744; – **यो** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आणियो कोट्टेत्वा कतं,* उदा॰ अट्ठ॰ 342; – **णीनं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आणीनं सङ्घाटमत्तमेव अवसेसं अहोसि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.202; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **पटा॰**- स्त्री॰, पलंगों एवं आसनों के नीचे एवं ऊपर लगाई हुई कांटी या कील – *पदरसञ्चितं होति, पटाणि दिन्ना होति,* पाचि॰ 68; **विसमा॰**- स्त्री॰, असमान कांटी या कील, भिन्न माप वाली कांटी – *तत्थ फलकं विय चित्तं, फलके विसमाणी विय अकुसलवितक्का,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1.(1) 404; **सारदारु॰**- स्त्री॰, ठोस लकड़ी पर लगाई गई कांटी या कील – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततो सुखुमतराय सारदारुआणिया,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).403; **सुखुमा॰**- स्त्री॰, कर्म॰ स॰, सूक्ष्म कांटी, बारीक कांटी – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुखुमाणिया ओळारिकाणिनीहरणं विय असुभभावनादीहि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).404.

आणिकोटि स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आणिकोटि], कांटी या कील का शिरा अथवा किनारा – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततो रथे आणिकोटिया आणिकोटिं पहरन्ते,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.176.

आणिगण्ठिकाहत त्रि॰, तत्पु॰ स॰, कांटियों या खूंटियों तथा गांठों से कुरूप कर दिया गया, जोड़ों एवं भरावों द्वारा भद्दा, कुरूप या शोभारहित बना दिया गया – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो पच्छा भिन्नो वा छिद्दो वा आणिगण्ठिकाहतो वा अप्पग्घो होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.246; दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.162; *आणिगण्ठिकाहतोति आणिना, गण्ठिया च हतसोभो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.120.

आणिचोळ त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसके वस्त्र सदा खूंटी पर टंगे रहते हैं या तैयार रहते हैं – **ळा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰

व॰ – *धुवचोळाति निच्चपक्खित्ताणिचोळा*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.122.

आणिचोळक नपुं॰, जांघिया, जांघ पर बांधा जाने वाला कम माप वाला वस्त्र – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुजानामि, भिक्खवे, आणिचोळकन्ति, चोळकं निपतति*, चूळव॰ 434; *सदा आणिचोळकं सेवसीति वुत्तं होति*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.122.

आणिद्वार नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आणिद्वार], कांटी जैसा छोटा द्वार, निचला द्वार, संकीर्ण द्वार, परकोटे से घिरे हुए नगर की छोटी खिड़की जैसा द्वार – **रं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आणिद्वारं नाम पाकारबद्धस्स नगरस्स खुद्दकद्वारं*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.57; – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ओलग्गेस्सामि ते चित्त, आणिद्वारेव हत्थिनं*, थेरगा॰ 355.

आणिमंस नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आणिमांस], स्त्री या पुरुष की जननेन्द्रिय का मांस – *सिखरणीति बहिनिक्खन्तआणिमंसा*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.122.

आणिमण्डब्य पु॰, एक तपस्वी – **ब्यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततो पट्ठाय मण्डब्यो आणिमण्डब्यो नाम जातो*, जा॰ अट्ठ॰ 4.28; *भरिया विसाखा, पुत्तो राहुलो, आणिमण्डब्यो सारिपुत्तो, कण्हदीपायनो पन अहमेव अहोसिन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 4.33.

आणिरक्ख पु॰, रथ या वाहन की धुरी की कांटियों या कील की रक्षा करने वाला, आणी का रक्षक – **क्खा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एको सारथि योधेको, आणिरक्खा दुवे जना*, विन॰ वि॰ 1571.

आणिरक्खक पु॰, उपरिवत् – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *रथरक्खा नाम रथस्स आणिरक्खका*, दी॰ नि॰ टी॰ 1.194.

आणिसंघाट पु॰, तत्पु॰ स॰ [आणिसङ्घात], कांटियों या कीलों का ढांचा – **टो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आणिसङ्घाटोव अवसिस्सि*, स॰ नि॰ 1(2).243; *आणिसङ्घाटोव अवसिस्सीति सुवण्णादिमयानं आणीनं सङ्घाटमत्तमेव अवसेसं अहोसि*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.202.

आणिसुत्त स॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, स॰ नि॰ 1(2). 243.

आण्य नपुं॰, [आर्ण्य], ऋणग्रस्तता, कर्ज में डूबे रहने की दशा – *इसिस्स भावो आरिस्सं, इणस्स भावो आण्यं, उसभस्स भावो आसभं*, क॰ व्या॰ 404; *इसिनो भावो आरिस्यं, इणस्स भावो आण्यं*, सद्द॰ 3.807.

आतङ्क पु॰, [आतङ्क], मानसिक विपत्ति, व्यथा, रोग, पीड़ा, वेदना, त्रास, डर, आशंका – **ङ्को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आतङ्को आमयो ब्याधि, गदो रोगो रुजापि च*, अभि॰ प॰ 323; *आतंको रोगतापेसु, मातंगो सपचे गजे*, अभि॰ प॰ 1045; *आतङ्कोति किच्छजीवितकरो रोगो*, उदा॰ अट्ठ॰ 99; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [आतङ्कता], आतंक का भाव, डरावनापन – *अप्पातङ्कतञ्च लहुट्ठानञ्च बलञ्च फासुविहारञ्च*, म॰ नि॰ 1.176; म॰ नि॰ 2.109; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **निरा॰**- त्रि॰, ब॰ स॰ [निरातङ्क], आतङ्क से मुक्त, भयमुक्त, व्यथामुक्त – **ङ्कानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *महाराज, निरातङ्कानं लोहितकानं अन्तरे करुम्भकं नाम सालिजाति*, मि॰ प॰ 235; **रोगा॰**- पु॰, रोग के कारण उत्पन्न कष्ट या व्यथा – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तमेनं अञ्ञतरो गाळ्हो रोगातङ्को फुसति*, अ॰ नि॰ 1(2).202; स॰ पू॰ प॰ के रूप में; – **फस्स** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आतङ्कस्पर्श], रोग या व्याधि का प्रभाव – **स्सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आतङ्कफस्सेन खुदाय फुट्ठो, सीतं अतुण्हं अधिवासयेय्य*, सु॰ नि॰ 972; *आतङ्कफस्सेनाति रोगफस्सेन*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.265.

आतङ्कति आ +√तङ्क का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, विपत्ति या दुर्गति में रहता है – *तंकति आतंकति आतंको, आतंको ति किच्छाजीवितकरो रोगो*, सद्द॰ 2.322.

आतङ्की त्रि॰, [आतङ्किन्], रुग्ण, बीमार, व्याधि से पीड़ित – **ङ्किनं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आतङ्किनं यथा कुसलो भिसक्को*, जा॰ अट्ठ॰ 5.79; *आतङ्किनन्ति गिलानानं*, जा॰ अट्ठ॰ 5.79.

आतत नपुं॰, आ +√तन का भू॰ क॰ कृ॰ [आतत], फैलाया हुआ, **विशेष अर्थ**, ऐसा ढोल, जिसका एक पार्श्व ही चमड़े से ढका हुआ हो – *आततं चेव विततं, आततविततं घनं*, अभि॰ प॰ 139; *आततं नाम चम्मावनद्धेसु भेरियादिसु, तलेकेकयुत्तं*..., अभि॰ प॰ 140; *तत्थ आततं नाम चम्मपरियोनद्धेसु भेरिआदीसु एकतलतूरियं*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.232.

आततवितत नपुं॰, ऐसा वाद्य, जो पूरी तरह से तांत से बंधा हुआ हो, पणव-नामक वाद्ययन्त्र – *आततविततं सब्बविनद्धं पणवादिकं*, अभि॰ प॰ 141; *आततविततं नाम तन्तिबद्धपणवादि*, म॰ वं॰ टी॰ 479(ना॰).

आततायी त्रि॰, [आततायिन्], वह जिसका धनुष (दूसरों को कष्ट देने हेतु) तना हुआ हो, **विशेष अर्थ**, हत्यारा, अपराधी, क्रूर, डकैत – *विहत्थो ब्याकुलो चाथ, आततायी वधुद्युतो*, अभि॰ प॰ 736.

आतत्त त्रि॰, आ +√तप का भू॰ क॰ कृ॰ [आतप्त], पूरी तरह से तपाया हुआ, अत्यधिक उष्ण, सूखा, आदीप्त – *छातो*

आतत्तरूपोसि, कुतोसि कत्थ गच्छति, ... आतत्तरूपोति सुक्खसरीरो, जा॰ अट्ठ॰ 5.63-64.

आतन्वती आ +√तन का वर्त॰ कृ॰, स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, फैलाती हुई, उत्पन्न करती हुई – *राजहंसीविलासं आतन्वती,* हत्थ॰ वं॰ 31.30

आतप पु॰, आ +√तप से व्यु॰ [आतप], **शा॰ अ॰,** धूप, सूर्य के कारण उत्पन्न सन्ताप या गर्मी, तेज प्रकाश, **ला॰ अ॰,** उत्साह, पराक्रम, विरोधियों को तपा देने की शक्ति – **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथोभासो पकासो चालोकोज्जोतातपा समा,* अभि॰ प॰ 37; *यं छाया जहति तं आतपो फरति, यं आतपो जहति तं छाया फरति,* म॰ नि॰ 3.22; *थलं छाया आतपो आलोको अंधकारो,* ध॰ स॰ 617(मा॰); – **पं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आतपं तप्पन्तो निद्दायति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.298; – **पेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आतपेन सुक्खकद्दमो फलति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 19; – **पे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निब्बुतिं नाधिगच्छामि, अग्गिदड्ढाव आतपे'ति,* पे॰ व॰ 38; स॰ प॰ में, – **कठिनातपतापित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, अत्यधिक तेज धूप के द्वारा तपाया या गर्म किया हुआ – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भोकासगतं सन्तं, कठिनातपतापितं,* अप॰ 1.379; **पच्छा॰** – त्रि॰, ब॰ स॰, पीछे के भाग में विद्यमान धूप वाला (स्थान), पिछवाड़े की ओर की धूप वाला (स्थान) – **पे** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चमवग्गस्स पठमे पच्छातपेति पासादच्छायाय पुरत्थिमदिसं पटिच्छन्नत्ता पासादस्स पच्छिमदिसाभागे आतपो होति, तस्मिं ठाने ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.271; **बाला॰**- पु॰, प्रातःकाल की कम प्रचण्ड धूप – **पं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं एकदिवसं पातोव तोरणग्गे निसीदित्वा बालातपं तपमानं एको सकुणो नखपञ्जरेन अग्गहेसि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).239; **बालसूरिया॰**- पु॰, प्रातःकालीन सूर्य की धूप – **पं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञतरस्मिं पब्बतपादे सीहो बालसूरियातपं तप्पमानो निपन्नो होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.100; **मन्दा॰**- पु॰, कर्म॰ स॰ [मन्दातप], मन्द धूप, अल्प मात्रा में उष्ण धूप – **पे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उण्होदके मद्दापेत्वा मन्दातपे विसज्जापेसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.182; **वाता॰** – पु॰, द्व॰ स॰, हवा और धूप – **पे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *वातातपे डंससरीसपे च,* सु॰ नि॰ 52; – **सुरिया॰** पु॰, सूर्य की गर्मी, सूर्य की धूप – **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आतपोति सूरियातपो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.258.

आतपट्ठपन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आतपस्थपन], (उत्पीड़ित करने हेतु) धूप में रखा देना, धूप में खड़ा करा देना, स॰ प॰ के अन्त॰, – *परिसमज्झगणमज्झादीसु आतपठपनपंसुओकिरणादीहि विप्पकारं पापेन्तो पच्छतो पच्छतो अनुबन्धन्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.117; *खुप्पिपासा हि आतपावट्ठानादिना च आतापनं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.186.

आतपता स्त्री॰, आतप का भाव॰, दाहकता, जलनशीलता, गर्मी – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *छाया आतपतं यन्ति रित्तञ्च महासरा,* सद्धम्मो॰ 123.

आतपतापन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आतपतापन], धूप की गर्मी – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *घरेवाहं तिले जाते, दिस्वानातपतापने,* अप॰ 2.252.

आतपत्त नपुं॰, [आतपत्र], धूप से रक्षा करने वाला छाता, छत्र – *आतपत्तं तथा छत्तं, रञ्ञं तु हेममासनं,* अभि॰ प॰ 357; *तत्र छत्तन्ति आतपत्तं,* सद्द॰ 2.542; – **क** नपुं॰, उपरिवत् – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मिञ्जन्ते परिभण्डन्ते, अङ्के वा आतपत्तके,* खु॰ सि॰ 5.7.

आतपवारण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आतपवारण], **शा॰ अ॰,** धूप का निवारण, धूप से बचाव, **ला॰ अ॰,** छाता, स॰ प॰ के अन्त॰, – *अध्यारयुं आतपनवारणाधिकं अदिस्समाना व नभम्हि देवता,* दा॰ वं॰ 1.28; – **म्हि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो धातुं अत्तसिरसा समुब्बहन्तो ठत्वा समुस्सितसितातपवारणम्हि,* दा॰ वं॰ 5.35.

आतपसुक्ख त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आतपशुष्क], धूप में सूखा हुआ, धूप द्वारा सुखाया गया – **क्खं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वनपुप्फं आतपसुक्खं, अङ्गारपक्कं चारकबद्धो इच्चेवमादि,* सद्द॰ 3.757-58.

आतपाभाव पु॰, तत्पु॰ स॰ [आतपाभाव], धूप का अभाव, छाया – *छाया तु आतपाभावे पटिबिम्बे पभाय च,* अभि॰ प॰ 953.

आतप्प नपुं॰, आ +√तप से व्यु॰ [आतप्य], कुशल कर्मों को करने हेतु वीर्य या पराक्रम, कठोर प्रयास, दृढ़ शक्ति, सम्यक् प्रधान – *उस्साहातप्पपग्गाहा वायामो च परक्कमो,* अभि॰ प॰ 156; – **प्पं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तुम्हेहि किच्चमातप्पं,* ध॰ प॰ 276; *जरामरणं, भिक्खवे, अजानता ... पे॰ ... आतप्पं करणीयं ... पे॰ ...,* स॰ नि॰ 1(2).117; *आतपन्ति कुसलकम्मवीरियं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.36; – **प्पं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *एकच्चो समणो वा ब्राह्मणो वा आतप्पमन्वाय ...,* दी॰ नि॰ 1.11; – **प्पाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आतप्पायाति वीरियकरणत्थाय,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.194; तुल॰ आताप॰.

आतप्पकरणीयसुत्त नपुं., अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 1(1).178.

आताप पु., आ +√तप से व्यु. [आताप], **शा. अ.**, भीषण गर्मी, तीव्र ताप या उष्णता, **ला. अ.**, प्रबल वीर्य, अत्यधिक उत्साह, दृढ़ पराक्रम, प्रबल प्रयास, सम्यक् व्यायाम – **पो** प्र. वि., ए. व. – *आतापो विरिये भागे, सीमाय ओधि च,* अभि. प. 1135; *आतापो वुच्चति किलेससन्तापनट्ठेन वीरियं,* उदा. अट्ठ. 36; *आतापोति तीसु भवेसु किलेसे आतापेतीति आतापो, वीरियस्सेतं नामं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).254; *यो चेतसिको वीरियारम्भो ... सम्मावायामो अयं वुच्चति आतापो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).255; *कायस्स च चित्तस्स च आतापो परितापो ठानचङ्कमनिसज्जासयनाहारपरिग्गहो,* मि. प. 287; – **पेन** तृ. वि., ए. व. – *इमिना आतापेन उपेतो समुपेतो ...,* महानि. 278; स. उ. प. के रूप में, – **वीरिया.** पु., वीर्य का पराक्रम – **पेन** तृ. वि., ए. व. – *आतापीति वीरियातापेन समन्नागतो,* स. नि. अट्ठ. 1.180.

आतापन नपुं., आ +√तप के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना. [आतापन], **शा. अ.**, पूरी तरह से जला देना, **ला. अ.**, उत्पीड़न, भस्मीकरण, नाश, विध्वंस – **नं** प्र. वि., ए. व. – *खुप्पिपासा हि आतपावट्ठानादिना च आतापनं,* विसुद्धि. महाटी. 2.186; – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *इदानि तुम्हेहि किलेसानं आतापनेन 'आतप्प'न्ति,* ध. प. अट्ठ. 2.232; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *अनातापी अनोत्तापीति किलेसानं आतापनस्स वीरियस्स अभावेन अनातापी,* इतिवु. अट्ठ. 305; – **ट्ठ** पु., तत्पु. स. [आतापनार्थ], वीर्य का अर्थ, पूरी तरह से जला देने का तात्पर्य – **ट्ठेन** तृ. वि., ए. व. – *सत्तमे अनातापीति किलेसानं आतापनट्ठेन आतापो,* इतिवु. अट्ठ. 91; – **परितापनट्ठ** पु., तत्पु. स. [अतापनपरितापनार्थ], आतापन एवं परितापन का अर्थ या अभिप्राय, भूख, प्यास, धूप में खड़ा होने तथा पञ्चाग्नि में झुलसाने का अभिप्राय – **ट्ठेन** तृ. वि., ए. व. – *वीरियञ्हि किलेसानं आतापनपरितापनट्ठेन आतापोति वुच्चति,* विसुद्धि. 1.4; – **परितापनानुयोग** पु., तत्पु. स. [आतापनपरितापनानुयोग], आतापन एवं परितापन में लगाव, जलाने एवं झुलसाने अथवा शरीर को पीड़ा देने वाली क्रिया में लगाव – **गं** द्वि. वि., ए. व. – *इति एवरूपं अनेकविहितं कायस्स आतापनपरितापनानुयोगमनुयुत्तो विहरति,* अ. नि. 1(1).334.

आतापिय त्रि., उत्साही, प्रबल वीर्य से सम्पन्न, सम्यक् व्यायाम अथवा चार सम्यक् प्रधानों का अभ्यास करने वाला – **यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आतापियो संवरती सतीमा,* उदा. 110; *आतापियोति वीरियवा,* उदा. अट्ठ. 192; *तस्स सहायभूतानं सम्मावायामसतीनं अत्थिताय आतापियो सतिमा,* उदा. अट्ठ. 192; *तं सब्बजानिं कुसलो विदित्वा, आतापियो ब्रह्मचरियं चरेय्या'ति,* उदा. 123.

आतापी त्रि., आताप से व्यु. [आतापिन्], उपरिवत् – **पी** पु., प्र. वि., ए. व. – *आतापीति कायिकचेतसिकसङ्खातेन वीरियातापेन आतापी,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.76; दी. नि. अट्ठ. 1.270; *आतापीति वीरियवा, वीरियञ्हि किलेसानं आतापनपरितापनट्ठेन आतापोति वुच्चति तदस्स अत्थीति आतापी,* विसुद्धि. 1.4; *एको वूपकट्ठो अप्पमत्तो आतापी पहितत्तो,* दी. नि. 1.159; *आतापीति कायिकचेतसिकसङ्खातेन वीरियातापेन आतापी,* दी. नि. अट्ठ. 1.270; म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.76; – **पिना** तृ. वि., ए. व. – *इदं, भिक्खवे, पठमं अनागतभयं सम्पस्समानेन ... भिक्खुना अप्पमत्तेन आतापिना पहितत्तेन विहरितुं ...,* अ. नि. 2(1).95; – **पिनो**[1] ष. वि., ए. व. – *आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स,* महाव. 2; *आतापिनोति सम्मप्पधानवीरियवतो,* महाव. अट्ठ. 227; – **पिनो**[2] पु., प्र. वि., ब. व. – *"तग्घ मयं, भन्ते, अप्पमत्ता आतापिनो पहितत्ता विहरामा"ति,* महाव. 473; – **पीनं** पु., ष. वि., ब. व. – ... *एवं अप्पमत्तानं आतापीनं पहितत्तानं विहरन्तानं ...,* म. नि. 1.271.

आतापेति आ +√तप के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आतापयति], **शा. अ.**, बुरी तरह से तपाता या झुलसा देता है, **ला. अ.**, उत्पीड़ित कराता है, दूसरों को कष्ट पहुंचवाता है, व्यथित कराता है – *सो अत्तानं सुखकामं दुक्खपटिक्कूलं आतापेति परितापेति,* म. नि. 2.4; *उसुकारो तेजनं द्वीसु अलातेसु आतापेति परितापेति उजुं करोति कम्मनियं,* म. नि. 3.11; – **न्ति** ब. व. – ... *विसमभोजनेन कायं आतापेन्ती"ति,* मि. प. 288; – **य्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *अत्थाय उसुकारो तेजनं द्वीसु अलातेसु आतापेय्य परितापेय्य उजुं करेय्य ...,* म. नि. 3.11; – **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *सच्छिकरोतीति कथं अत्तानं आतापेन्तो परितापेन्तो सच्छिकरोति ?,* स. नि. अट्ठ. 3.146; – **त्वा** पू. क. कृ. – *ते कायञ्च चित्तञ्च आतापेत्वा ठानचङ्कमनिसज्जासयनाहारं परिग्गहेत्वा ...,* मि. प. 288.

आतिथेय्य नपुं., अतिथि से व्यु. [आतिथेय], अतिथियों के लिए देय उपहार, अतिथि के स्वागत में भेंट किया जाने वाला उपहार – **य्यं** प्र. वि., ए. व. – *अयं धम्मपरियायो भणितो इदं ते होतु आतिथेय्य'न्ति,* अ. नि. 2(2).207; *इदं ते होतु आतिथेय्यन्ति इदमेव धम्मभणनं तव अतिथिपण्णाकारो होतु,* अ. नि. अट्ठ. 3.172; – **य्यानि** ब. व. – *सत्तमे आतिथेय्यानीति आगन्तुकदानानि,* अ. नि. अट्ठ. 2.62; स. उ. प. के रूप में, **आमिसा.** अतिथि के लिए धन, संपत्ति अथवा वस्तुओं का उपहार, **धम्मा.**- अतिथि के लिए धर्म का उपहार – **य्यं** प्र. वि., ए. व. – *द्वेमानि, भिक्खवे, आतिथेय्यानि ... आमिसातिथेय्यञ्च धम्मातिथेय्यञ्च,* अ. नि. 1(1).113.

आतिसार पु., अतिसार से व्यु. [आतिसार], अतिसार या पेचिश के रोग का विषय, पेचिश रोग का शिकार – **रो** प्र. वि., ए. व. – *वसातीनं विसयो (देसो) वासातो, एवं कुन्तो, साकुन्तो, आतिसारो,* क. व्या. 354.

आतु पु., संभवतः मातु के मि. सा. पर निर्मित, पिता – *भिक्खुस्स आतुमारी, भिक्खुस्स मातुमारी, वरं ते,* म. नि. 2.121; *आतुमारी मातुमारीति एत्थ आतूति पिता, मातूति माता,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.118.

आतुम/आतुमन्तु पु., [आत्मन्], आत्मा, स्वयं, अपने आप, आत्मभाव – **मा** प्र. वि., ए. व. – *राजा ब्रह्मा सखा अत्ता आतुमा सा पुमा रहा,* सद्द. 1.153; *आतुमा वुच्चति अत्ता,* महानि. 49; *अप्पातुमोति आतुमा वुच्चति अत्तभावो,* अ. नि. अट्ठ. 2.218; – **मानं** द्वि. वि., ए. व. – *अनरियधम्मं कुसला तमाहु, यो आतुमानं सयमेव पाव,* सु. नि. 788; *यो आतुमानं सयमेव पावाति यो एवं अत्तानं सयमेव वदति,* सु. नि. अट्ठ. 2.216; – **मे** सप्त. वि., ए. व. – *तत्थ आतुमेति अत्तनि,* पे. व. अट्ठ. 144.

आतुम पु., थेरगा. की एक गीति के रचयिता एक स्थविर का नाम, ... आतुमो थेरो ... थेरगा. 72; *अथ इमस्मिं बुद्धुप्पादे सावत्थियं सेट्ठिपुत्तो हुत्वा निब्बत्ति, आतुमोतिस्स नामं अहोसि,* थेरगा. अट्ठ. 1.172.

आतुमा स्त्री., [बौ. सं. आदुमा], कुसीनारा एवं सावत्थी के मध्यवर्ती क्षेत्र में अवस्थित एक प्राचीन नगर – **यं** सप्त. वि., ए. व. – *तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो बुड्ढपब्बजितो आतुमायं पटिवसति नहापितपुब्बो,* महाव. 325; – **य** प. वि., ए. व. – *अथ खो, पुक्कुस, आतुमाय महाजनकायो निक्खमित्वा,* दी. नि. 2.100; – **वत्थु** नपुं., आतुमा नगर का क्षेत्र ... **स्मिं** सप्त. वि., ए. व. – *अयं किरेसो खन्धके आगते आतुमावत्थुस्मिं नहापितपुब्बको वुड्ढपब्बजितो ...,* दी. नि. अट्ठ. 2.171.

आतुर त्रि., [आतुर], रुग्ण, बीमार, पीड़ित, व्यथित, प्रभावित, दयनीय स्थिति में पहुंचा हुआ, चोटिल, दुर्बल – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *बधिरो सुतिहीनो'थ गिलानो व्याधितातुरा,* अभि. प. 322; *आतुरो हायं, गहपति, कायो अण्डभूतो परियोनद्धो,* स. नि. 2(1).2; *आतुरो हायन्ति आतुरो हि अयं, ... निच्चपग्घरणट्ठेन आतुरोयेव,* स. नि. अट्ठ. 2.220; *आतुरो त्यानुपुच्छामी'ति बाळ्हगिलानो हुत्वा अहं तं अनुपुच्छामि,* जा. अट्ठ. 6.93; – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *आतुरन्ति जरातुरं* दी. नि. अट्ठ. 2.41; *आतुरं बहुसङ्कप्पं, यस्स नत्थि धुवं ठिति,* थेरगा. 769; – **रा** प्र. वि., ब. व. – *आतुराति एकन्तमरणधम्मताय आतुरा आसन्नमरणा ...,* जा. अट्ठ. 3.174; – **रेन** तृ. वि., ए. व. – *किं वने राजपुत्तेन, आतुरेन करिस्ससि,* जा. अट्ठ. 5.85; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *आतुरस्साति जरातुरो रोगातुरो किलेसातुरोति तयो आतुरा,* स. नि. अट्ठ. 1.254; – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *अधने आतुरे जिण्णे,* चरिया. अट्ठ. 75; – **रेसु** सप्त. वि., ब. व. – *आतुरेसु मनुस्सेसु, विहराम अनातुरा,* ध. प. 198; स. उ. प. के रूप में, **अना.** – त्रि., [अनातुर], रोगमुक्त, स्वस्थ, अपीड़ित – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *अनातुरे पन उभयम्पेतं सक्कोति,* जा. अट्ठ. 1.350; **किलेसा.**- त्रि., [क्लेशातुर], क्लेशों द्वारा पीड़ित – **स्स** ष. वि., ए. व. – *आतुरस्सानुसिक्खतो'ति कामपत्थनावसेन किलेसातुरस्स, तस्स च फलेन दुक्खातुरस्स च,* उदा. अट्ठ. 286; **किलेसदुक्खा.** – त्रि., तत्पु. स. [क्लेशदुःखातुर], क्लेशजनित दुःख से ग्रस्त – **रानं** पु., ष. वि., ब. व. – *अत्तपरितापने च अल्लीनेहि किलेसदुक्खातुरानं अनुसिक्खन्तेहि, सयञ्च किलेसदुक्खातुरेहि,* उदा. अट्ठ. 287; **खुप्पिपासा.** – त्रि., तत्पु. स. [क्षुत्पिपासातुर], भूख एवं प्यास से पीड़ित – **रा** पु., प्र. वि., ब. व. – *ते खुप्पिपासातुरा विरळच्छायायं निसीदिंसु,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).220; *पेता हि नेकवस्सानि खुप्पिपासातुरा पि च,* सद्धम्मो. 507; **जरा.**- त्रि., तत्पु. स. [जरातुर], बुढ़ापे से पीड़ित – **रं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *आतुरन्ति जरातुरं,* दी. नि. अट्ठ. 2.41; **दुक्खा.** – त्रि., तत्पु. स. [दुःखातुर], दुःख से पीड़ित – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *तस्स च फलेन दुक्खातुरस्स*

च उभयत्थापि पटिकाराभिलासाय किलेसफले अनुसिक्खतो, उदा॰ अट्ठ॰ 286; **जिण्णा॰** – त्रि॰, बूढ़ा एवं रोगी, स॰ प॰ में, – *अपरो 'जिण्णातुरमतपब्बजितसङ्घातनिमित्ते दिस्वा',* उदा॰ अट्ठ॰ 208; **वेदना॰** – त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [वेदनातुर], पीड़ा से ग्रस्त – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो वेदनातुरो आकासे ठातुं असक्कोन्तो भूमियं पति,* उदा॰ अट्ठ॰ 199; **सोका॰** – त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [शोकातुर], शोक से ग्रस्त – **रं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सोकातुरं तत्थ तत्थ अस्सासेन्ता महाजनं,* म॰ वं॰ 3.13.

आतुरकाय त्रि॰, ब॰ स॰ [आतुरकाय], रोगग्रस्त शरीर वाला, वह, जिसका शरीर अस्वस्थ या रुग्ण है – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहमस्मि, भन्ते, जिण्णो वुड्ढो महल्लको अद्धगतो वयोअनुप्पत्तो आतुरकायो अभिक्खणातङ्को,* स॰ नि॰ 2(1).2; *आतुरकायोति गिलानकायो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.220; – **येहि** पु॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *नानप्पकाररोगदुक्खाभिपीळितत्ताआतुरकायेहि महाजनेहि,* उदा॰ अट्ठ॰ 43; – **या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *खीणासवा आतुरकाया अनातुरचित्ता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.225.

आतुरचित्त त्रि॰, [आतुरचित्त], राग, द्वेष एवं मोह से ग्रस्त चित्त वाला – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आतुरकायो चेव होति आतुरचित्तो च,* स॰ नि॰ 2(1).3; एवं खो, गहपति, आतुरकायो चेव होति आतुरचित्तो चाति कायो नाम बुद्धानम्पि आतुरोयेव, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.225; *एवं आतुरचित्तो खो पनेस मीयमानो निरयेयेव निब्बत्तिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.208; – **त्तेहि** पु॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *नानाविधकिलेसब्याधिपीळितत्ता आतुरचित्तेहि देवमनुस्सेहि ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 43; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **अना॰**- त्रि॰, ब॰ स॰ [अनातुरचित्त], राग, द्वेष एवं मोह से मुक्त चित्त वाला (अर्हत) – **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *खीणासवा आतुरकाया अनातुरचित्ता, सत्त सेखा नेव आतुरचित्ता, न अनातुरचित्ताति वेदितब्बा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.225; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, चित्त की राग, द्वेष एवं मोह से युक्त अवस्था – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भजमाना पन अनातुरचित्ततंयेव भजन्तीति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.225.

आतुरता स्त्री॰, आतुर का भाव॰ [आतुरता], रुग्णता, बीमारी, विपत्ति, व्याकुलता, परेशानी – *अट्ठहि खलु, सम्म पुण्णमुख, ठानेहि इत्थी सामिकं अवजानाति – दलिद्दता आतुरता, जिण्णता, सुरासोण्डता मुद्धता पमत्तता, सब्बकिच्चेसु अनुवत्तनता, सब्बधनअनुप्पदानेन,* जा॰ अट्ठ॰ 5.430; – **य** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ताय आतुरताय इच्छितिच्छितक्खणे आगन्तुं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.220; – **ता** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *तिस्सो आतुरता होन्ति,* तदे॰; स॰ उ॰ प॰ रूप में, **जरा॰ / ब्याधा॰ / मरणा॰**- स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, वृद्धावस्था की विपत्ति, रोगों की व्यथा, मृत्यु का संकट – *विसेसेन पनस्स जरातुरता ब्याधातुरता मरणातुरताति तिस्सो आतुरता होन्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.220; **किलेसा॰ रोगा॰**- स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, क्लेशों द्वारा उत्पन्न किया गया कष्ट, रोगों से उत्पन्न कष्ट – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आतुरन्ति जरातुरताय रोगातुरताय किलेसातुरताय च निच्चातुरं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.213; **सोका॰**- स्त्री॰, शोक के कारण उत्पन्न व्याकुलता – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रञ्ञो वचनं सुत्वा वियोगं असहमाना सोकातुरताय ...,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 139; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [आतुरत्व], उपरिवत् – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्तिसंभञ्जनरसं, आतुरत्तन्ति गय्हति,* ना॰ रू॰ प॰ 116.

आतुरन्न नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आतुरान्न], **शा॰ अ॰,** विपत्तिग्रस्त व्यक्ति के लिए भोजन, **ला॰ अ॰,** मृत्यु के समय का भोजन, मरणकाल का भोजन – **न्नानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *अयञ्हि आतुरन्नानि भुञ्जति, आतुरन्नानीति मरणभोजनानि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.195; *मा सालूकस्स पिहयि, आतुरन्नानि भुञ्जति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.345.

आतुररूप त्रि॰, ब॰ स॰ [आतुररूप], वह, जिसका शरीर दुखदायक पीड़ा से पीड़ित है, पीड़ाग्रस्त शरीर वाला – **पो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आबाधिकोहं दुक्खितो गिलानो, आतुररूपोम्हि सके निवेसने,* वि॰ व॰ 1220; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.21; *आतुररूपोति दुक्खवेदनाभितुन्नकायो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 279.

आतुरस्सर पु॰, कर्म॰ स॰ [आतुरस्तर], पीड़ा से भरा स्वर, पीड़ा से जनित स्वर, कराह – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा अट्ठिकसङ्खालिका अट्टस्सरं आतुरस्सरं करोतीति अत्थो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.88; स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.192.

आतुरित त्रि॰, [आतुरित], रोग से पीड़ित, वृद्धावस्था से पीड़ित, क्लेशों या राग, द्वेष आदि चित्तमलों से ग्रस्त – **तानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *उच्चारपस्सावं करोन्ति, गेलञ्ञेन आतुरितानि सयन्ति, मतानि पतन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).34.

आतुरितकाल पु॰, तत्पु॰ स॰ [आतुरितकाल], पीड़ित या व्यथित होने का काल – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकं बुद्धन्तरम्पि खुप्पिपासाहि आतुरितकालेपि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).303.

आतुरीभूत त्रि॰, रोगों आदि से पीड़ित, विपत्तिग्रस्त, क्लेशों से ग्रस्त – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आतुरीभूता पुग्गला,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.171.

आतुरीयति आतुर के ना॰ धा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – रुग्ण होता है, पीड़ित होता है, ग्रस्त हो जाता है, प्रभावित होता है, बाधायुक्त हो जाता है – *सरोपि उपहञ्जति, कण्ठोपि आतुरीयति,* म॰ नि॰ 3.283; *आतुरीयतीति आतुरो होति गेलञ्ञप्पत्तो साबाधो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप.प.) 3.203; *निवातसेनासने वसन्तो अतिविय पित्तरोगादीहि आतुरीयति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 117.

आतोज्ज त्रि॰/नपुं॰, [आतोद्य], **शा॰ अ॰,** चारों ओर से ताड़ित, अच्छी तरह से पीटा गया, **ला॰ अ॰,** एक विशेष प्रकार का वाद्य – **ज्जं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आतोज्जं तु च वादित्तं वादितं वज्जमुच्चते,* अभि॰ प॰ 142.

आथब्बण त्रि॰, [आथर्वण], अथर्ववेद के साथ जुड़ा हुआ, अथर्ववेद में विहित कर्मकाण्डों को करने वाला – **णं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आथब्बणं सुपिनं लक्खणं, नो विदहे अथोपि नक्खत्तं,* सु॰ नि॰ 933; *आथब्बणन्ति आथब्बणिकमन्तप्पयोगं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.256; – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आथब्बणिका आथब्बणं पयोजेन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 237.

आथब्बणपयोग पु॰, तत्पु॰ स॰ [आथर्वणप्रयोग], अथर्ववेद के मन्त्रों का व्यावहारिक प्रयोग – **गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततियो नं निसेधेत्वा आथब्बणपयोगं सन्धाय उपकड्ढन्तिपि अपकड्ढन्तिपी'ति आह,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.275.

आथब्बनवेद पु॰, कर्म॰ स॰ [अथर्ववेद], अथर्ववेद, अथर्ववेद का मन्त्र – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आथब्बनवेदं पन पणीतज्झासया न सिक्खन्ति,* सद्द॰ 2.390.

आथब्बणिक त्रि॰, [आथर्वणिक], अथर्ववेद में विहित कर्मकाण्डों को करने वाला पुरोहित, अथर्ववेद के मारण, उच्चाटन आदि के मन्त्रों का ज्ञाता या प्रयोक्ता – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आथब्बणिका किर आथब्बणं पयोजेत्वा सत्तं सीसच्छिन्नं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.275; *आथब्बणिका आथब्बणं पयोजेन्ति,* महानि॰ 280; – **कादि** त्रि॰, वह समूह, जिसके आदि में अथर्ववेद के मन्त्रों के ज्ञाता हों – **दीनं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आथब्बणिकादीनं विय मन्तपरिजप्पनपयोगो विज्जामयो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 202; – **मन्तपयोग** पु॰, तत्पु॰ स॰, अथर्ववेद के मन्त्रों का व्यावहारिक प्रयोग – **गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आथब्बणन्ति आथब्बणिकमन्तप्पयोगं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.256.

आद पु॰, [आद], ग्रहण स्वीकरण, खाने वाला, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्रयुक्त, दाया॰, वन्ता॰, विद्यासा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आदत्ते आ +√दा का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आत्मने॰ [आदत्ते], स्वयं ग्रहण करता है, लेता है, स्वीकार करता है – *यस्मा वा अपेति, यस्मा वा भयं जायते, यस्मा वा आदत्ते, तं कारकं अपादानसञ्ञं होति,* क॰ व्या॰ 273; *यस्मादपेति भयमादत्ते वा तदपादानं नाम,* बाला॰ 49; *"आदत्ते कुरुते पेते" इच्चादिनयदस्सना,* सद्द॰ 2.319.

आददाति आ +√दा का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आददाति], ले लेता है, पकड़ लेता हे, ग्रहण करता है, स्वीकार करता है – *सद्धो दानं ददाति देति, सीलं आददाति आदेति इमानि सुद्धकत्तुपदानि,* सद्द॰ 2.367; *आपुब्बवसेन गहणञ्च वदन्तो ददाति देति आददाति आदेति दानं आदानन्ति सनामपदानि सुद्धकत्तुपदानि जनयति,* सद्द॰ 2.368; – **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *एवं "आददातु, आददेय्य", इच्चादि सब्बं नेय्यं, आदेतु आदेय्य इच्चादि यथारहं योजेतब्बं,* सद्द॰ 2.373.

आदधान त्रि॰, आ +√धा का वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰ [आदधान], रखने वाला, उत्पन्न करने वाला, प्रदायक, आपूरक – **नं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वन्दामि चक्खवरलक्खणं आदधानं,* रस॰ 1.7; *सोस्सामि धम्मं सिवमादधानं,* रस॰ 2.23.

आदपयति/आदपेति आ +√दा के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, ग्रहण कराता है, लेने हेतु प्रेरित करता है – *समादपेतीति तत्थ लक्खणारम्मणिकं विपस्सनं सम्मा आदपेति,* उदा॰ अट्ठ॰ 293; *सीलं आदपेति समादपेति,* सद्द॰ 2.367; *कारिते आदपेति समादपेति आदपयति समादपयति,* सद्द॰ 2.480; – **न्ति** ब॰ व॰ – *ये धम्ममेवादपयन्ति सन्तो,* म॰ नि॰ 2.314; *ये सन्तो सप्पुरिसा धम्मंयेव आदपेन्ति समादपेन्ति गण्हापेन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.243; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *समादपेसीति तदत्थं समादपेत्वा कथेसि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.241.

आदयति √अद के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आदयति], खिलवाता है – *खादादीनं पयोज्जे कत्तरि दुतिया न होति, खादयति देवदत्तेन, आदयति देवदत्तेन,* मो॰ व्या॰ 2.6.

आदर पु॰, [आदर], सम्मान, उचित व्यवहार, अच्छी देख-भाल, सत्कार, सेवा-टहल – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दरति*

आदरति अनादरति, आदरो अनादरो, सद्द॰ 2.426; *तस्मा हितत्थकामेन, कातब्बो एत्थ आदरो,* अभि॰ अव॰ 1407; ... *एतस्स आदरोति अनादरो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 92; – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *सवने आदरं जनेति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.8; – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *धम्मं आदरेन अस्सुणन्तो* ..., स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.9; **क.** स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **अना॰**- पु॰, आदर का अभाव, असम्मान – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पापे अनादरेनापि सततं वत्तते मनो,* सद्धम्मो॰ 21; **सञ्जातधम्मस्सवना॰** – त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसके मन में धर्म को सुनने के लिए आदरभाव हो – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अतिविय साधुरूपा गाथा भविस्सन्ती'ति सुट्ठुतरं सञ्जातधम्मस्सवनादरो हुत्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 5.487; **ख.** स॰ पू॰ प॰ के रूप में; – **कारी** पु॰, सम्मान अथवा आदर करने वाला – **री** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असक्कच्चकारीति न सुकतकारी, न आदरकारी,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.139; – **जननत्थ** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आदरजननार्थ], सम्मान के भाव को उत्पन्न करने का प्रयोजन – **त्थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं अनामसित्वा तत्थ अभिरतियं आदरजननत्थं अभिरम, नन्द, अभिरम, नन्दा'ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 139; – **जात** त्रि॰, सम्मान या श्रद्धाभक्ति को प्राप्त करने वाला – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *देवापि मनुस्सापि आदरजाता अतिविय पिहयन्ती'ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 162; – **दस्सन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आदरदर्शन], सम्मान के भाव का प्रकाशन – *आदरदस्सनत्थं चेत्थ आमेडितवसेन वुत्तं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 242; – **दीपन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आदरदीपन], उपरिवत् – *भिक्खूनं तप्परभावतो सवने आदरदीपनेन सक्कच्चसवनं दस्सेति,* उदा॰ अट्ठ॰ 316; – **रहित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आदररहित], आदरभाव या सम्मानभाव को अप्राप्त – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ओत्तप्पस्स अभावेन सब्रह्मचारीसु आदररहितो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 135; – **विरहित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, उपरिवत् – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विरमिस्साम एवरूपा'ति एवं आदरविरहिता* ..., सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.265.

आदरता स्त्री॰, आदर से व्यु॰, भाव॰ [आदरत्व, नपुं॰], आदरभाव, निषे॰, रूप में स॰ उ॰ प॰ में ही प्राप्त; **अना॰** – अनादरभाव, तिरस्कारभाव, उपेक्षाभाव – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *अनादरियनिद्देसे ओवादस्स अनादियनवसेन अनादरभावो अनादरियं, अनादरियनाकारो अनादरता,* विभ॰ अट्ठ॰ 471.

आदरति आ +√दर से व्यु॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आद्रियते], आदर करता है, आदर किया जाता है – *दरति आदरति अनादरति, आदरो अनादरो,* सद्द॰ 2.426.

आदहति आ +√धा का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आदधाति], **शा॰ अ॰**, ला कर रख देता है, किसी पर निर्धारित कर देता है, **ला॰ अ॰ 1. अग्नि के सन्दर्भ में**, प्रज्वलित करता है, परचाता है, **2. चित्त के सन्दर्भ में**, स्थिर करता है, ठीक से रखता है, आलम्बन पर रखता है – *समाधीति चित्तं समं आदहति आरम्मणे ठपेतीति समाधि,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 55; – **हामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *समादहामीति सम्मा आदहामि, सुट्ठु आरोपेमीति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).396; – **हन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वेस्सानरमादहानोति वेस्सानरं अग्गिं आदहन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.49; – **हि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सहस्सबाहु असमो पथब्या, सोपि तदा आदहि जातवेद'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.47; – **हित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *सूचिघटिकं दत्वाति अग्गळसूचिञ्च उपरिघटिकञ्च आदहित्वा,* उदा॰ अट्ठ॰ 242.

आदा / आदाय आ +√दा का पू॰ का॰ कृ॰ [आदाय], ले कर, ग्रहण कर – *इतो आदाय कमण्डलुं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.102; पाठा॰ – **आदा**, निषे॰, अनादा, नहीं लेकर – *अनादा चे भिक्खु पुराणसन्थतस्स सामन्ता* ..., पारा॰ 350; *अनादा चे ... सुगतविदत्थिन्ति अनादियित्वा* ..., तदे॰.

आदाति आ +√दा का अद्वित्त्वीकृतरूप, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आददाति], ग्रहण करता है, ले लेता है – **तब्ब** त्रि॰, सं॰ कृ॰, ले लेना चाहिए – **ब्बा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *द्वे भागा सुद्धकाळकानं एळकलोमानं आदातब्बा ततियं ओदातानं चतुत्थं गोचरियानं,* पारा॰ 343; – **ब्बं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तिण्णं दुब्बण्णकरणानं अञ्ञतरं दुब्बण्णकरणं आदातब्बं,* पाचि॰ 162.

आदातु त्रि॰, आ +√दा से व्यु॰, क॰ ना॰ [आदातृ], ग्रहण करने वाला, लेने वाला – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं अदिन्नं थेय्यसङ्खातं आदाता होति,* म॰ नि॰ 1.359.

आदान नपुं॰, आ +√दा से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आदान], **शा॰ अ॰**, ग्रहण कर लेना, ले लेना, स्वीकरण, पकड़ लेना, प्राप्ति – *इमस्मिं पन भुवादिगणे दानं वदन्तो आपुब्बवसेन गहणञ्च वदन्तो ... दानं आदानन्ति सनामपदानि सुद्धकत्तुपदानि जनयति,* सद्द॰ 2.368; – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बं सकस्स आदानं, अनादानं तिणस्स चा'ति,* ..., जा॰

अट्ठ॰ 3.100-101; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एत्थ आदिकेनाति आदानेन गहणेन,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.179; **विशेष अर्थ, 1.** भोजन-ग्रहण, तृणभक्षण – **नानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अज्ज मे सत्तमा रत्ति, अदनानि उपासतो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.367; *तत्थ अदनानीति आदानानि, गोचरग्गहणट्ठानानीति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.367; **विशेष अर्थ 2.** आसक्ति, विषयभोगों के प्रति लगाव, पुनर्जन्म का ग्रहण – **नं**[1] प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दिस्सति ... इमस्स चातुमहाभूतिकस्स कायस्स आचयोपि अपचयोपि आदानम्पि निक्खेपनम्पि,* स॰ नि॰ 1(2).84; *अग्गिस्स आदानं यूपस्स उस्सापनं महप्फलं होति महानिसंसन्ति,* अ॰ नि॰ 2(2).191; *आदानन्ति निब्बत्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.86; *तत्थ आदानन्ति पटिसन्धि,* विसुद्धि॰ 2.252; – **नं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदानं पजहतो पटिनिस्सग्गानुपस्सनावसेन जाता धम्मा अञ्ञमञ्ञं नातिवत्तन्तीति ...,* पटि॰ म॰ 28; *आदानन्ति निब्बत्तनवसेन किलेसानं, अदोसदस्साविताय सङ्खतारम्मणस्स वा आदानं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.113; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पटिनिस्सग्गानुपस्सनाय आदानतो चित्तं मोचेन्तो अस्ससति चेव पस्ससति च,* विसुद्धि॰ 1.277; *आदानतोति निच्चादिवसेन गहणतो, पटिसन्धिग्गहणतो वाति एवमेत्थ अत्थो दट्ठब्बो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.323; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पटिनिस्सग्गानुपस्सनाय आदानस्स ...,* पटि॰ म॰ 41; – **नेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आदानेसु विनेय्य छन्दरागं,* सु॰ नि॰ 366; *आदानेसु ... तेसु उपधीसु न सारमेति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.87; स॰ उ॰ प॰ के रूप में; **अदिन्ना॰-** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [अदत्तादान], **शा॰ अ॰,** जो कुछ प्रसन्नता के साथ नहीं दिया गया है, उसे चोरी, डकैती, घूसखोरी, ठगी आदि द्वारा छीन लेना, **विशेष अर्थ,** तीन प्रकार के शारीरिक पापकृत्यों में से दूसरा पापकृत्य – **न्नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अकुसलकम्मपथेसु पाणातिपातो अदिन्नादानं मिच्छाचारो मुसावादो मिच्छादिट्ठीति,* अभि॰ अव॰ 172; **अना॰-** नपुं॰, आदान का निषे॰ [अनादान], अग्रहण, नहीं लिप्तता – **ना** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सादानेसु अनादानाति सगहणेसु सत्तेसु च ... अगहणा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.308; **भारा॰-** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [भारादान], भार को ग्रहण करना, भार को ढोना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भारादानं दुखं लोके, भारनिक्खेपनं सुखं,* स॰ नि॰ 2(1).25; **सत्था॰-** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [शस्त्रादान], शस्त्रों को रखना – *रूपाधिकरणं दण्डादान – सत्थादान – कलह – विग्गह – विवाद – तुवंतुवं – पेसुञ्ञ – मुसावादा,* म॰ नि॰ 2.80; **सब्बगेहा॰-** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [सर्वगेहादान], समस्त गृहों का ग्रहण – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *याव कळीरच्छेज्जं सब्बगेहादानं उभतोपक्खे याव सत्तमकुला समुग्घातो'ति,* मि॰ प॰ 186; **सा॰-** नपुं॰, आदान या ग्रहण करने योग्य – **नेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सादानेसु अनादानं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं,* ध॰ प॰ 406.

आदानकाल पु॰, तत्पु॰ स॰ [आदानकाल], ग्रहण या स्वीकार करने का उपयुक्त समय, स्वीकार्यता – **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महाजनस्स आदानकालं गहणकालं जानित्वाव ब्याकरोतीति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.80.

आदानगन्थ पु॰, तत्पु॰ स॰, आसक्ति की गांठ, तृष्णा की गांठ – **थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदानगन्थं गथितं विसज्ज, आसं न कुब्बन्ति कुहिञ्चि लोके,* सु॰ नि॰ 800; *चतुब्बिधम्पि रूपादीनं आदायकत्ता आदानगन्थं अत्तनो चित्तसन्ताने गथितं बद्धं अरियमग्गसत्थेन विसज्ज छिन्दित्वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.221.

आदानगहण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आदानग्रहण], आसक्ति की पकड़, लगाव या तृष्णा की दृढ़ पकड़, स॰ प॰ के अन्त॰; – *कायद्वारे आदानगहणमुञ्चनचोपनानि पापेत्वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).259; स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.132; *कायद्वारे आदानगहणमुञ्चनचोपनपत्ता अट्ठकामावचरकुसलचेतना,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.39.

आदानतण्हा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आदानतृष्णा], ग्रहण करने की तृष्णा, तृष्णा-उपादान, रूप आदि के प्रति मन का दृढ़ लगाव, रूप-तृष्णा, वेदनातृष्णा आदि तृष्णाएं – **ण्हं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदानतण्हं विनयेथ सब्बं,* सु॰ नि॰ 1109; *तत्थ आदानतण्हन्ति रूपादीनं आदायिकं गहणतण्हं, तण्हुपादानन्ति वुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.291.

आदाननिक्खेप पु॰, द्व॰ स॰ [आदाननिक्षेप], ग्रहण एवं परित्याग, ले लेना और छोड़ देना – **पे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरञ्ञको नागो हत्थिदमकस्स आदाननिक्खेपे वचनकरो होति ओवादप्पटिकरो ...,* म॰ नि॰ 3.174; – **पेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इधलोकतो परलोकं आदाननिक्खेपेहि अपरापरं धावति संसरतीति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 192.

आदाननिक्खेपन नपुं॰, द्व॰ स॰ [आदाननिक्षेपण], **शा॰ अ॰,** लेना और छोड़ देना, ग्रहण एवं परित्याग, ग्रहण एवं विसर्जन, **ला॰ अ॰,** जन्मग्रहण एवं जन्म का अन्त या मृत्यु – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हत्थेसु, भिक्खवे, सति*

आदाननिक्खेपनं होति, सु. नि. अट्ठ. 1.181; *हत्थेसु, भिक्खवे, सति आदाननिक्खेपनं पञ्ञायति,* स. नि. 2(2).175; *तत्थ आदानन्ति पटिसन्धि निक्खेपनन्ति चुति,* विसुद्धि. 2.252; – **तो** प. वि., क्रि. विशे. – *आदाननिक्खेपनतो, वयोवुड्ढत्थगामितो,* विसुद्धि. 2.252; *आदाननिक्खेपनतोति भवस्स गहणविस्सज्जनतो, जातितो मरणतो चाति अत्थो,* विसुद्धि. महाटी. 2.380.

आदानपटिनिस्सग्ग पु., द्व. स. [आदानप्रतिनिःसर्ग], ग्रहण एवं अग्रहण, लेना एवं त्याग देना, आसक्ति एवं अनासक्ति, निर्वाण, जिसमें समस्त लगावों का त्याग हो जाता है – **ग्गे** सप्त. वि., ए. व. – *आदानपटिनिस्सग्गे, अनुपादाय ये रता,* ध. प. 89; *आदानपटिनिस्सग्गेति आदानं वुच्चति गहणं, तस्स पटिनिस्सग्गसङ्खाते अग्गहणे चतूहि उपादानेहि किञ्चि अनुपादियित्वा ये रताति अत्थो,* ध. प. अट्ठ. 1.338; *आदानपटिनिस्सग्गेति गहणपटिनिस्सग्गसङ्खाते निब्बाने,* अ. नि. अट्ठ. 3.334.

आदानवट्टि स्त्री., औषधियों के लेप से युक्त पट्टी – **ट्टि** प्र. वि., ए. व. – *वच्चमग्गे भेसज्जमक्खिता आदानवट्टि वा वेळुनाळिका वा वट्टति,* महाव. अट्ठ. 354; *आदानवत्तीति आनहवत्ति,* वजिर. टी. 440.

आदानसङ्ग पु., तत्पु. स., सांसारिक आसक्तियों की ओर मन का झुकाव, अर्थलिप्सा, लोभ – *आदानसत्ते वा आदानाभिनिविट्ठे पुग्गले आदानसङ्गहेतुञ्च इमं पजं मच्चुधेय्ये लग्गं ततो वीतिक्कमितुं असमत्थं इति पेक्खमानो* ..., सु. नि. अट्ठ. 2.291; चूळनि. अट्ठ. 41.

आदानसत्त पु., कर्म. स., आसक्ति या लगाव की मनोवृत्ति वाला प्राणी – **त्ते** सप्त. वि., ए. व. – *आदानसत्ते इति पेक्खमानोति आदानसत्ता वुच्चन्ति ये रूपं आदियन्ति उपादियन्ति* ..., चूळनि. 138; *आदानसत्ते इति पेक्खमानो,* सु. नि. 1110; *आदातब्बट्ठेन आदानेसु रूपादीसु सत्ते सब्बलोके* ... *आदानसत्ते वा आदानाभिनिविट्ठे पुग्गले,* सु. नि. अट्ठ. 2.291.

आदानसील त्रि., ब. स. [आदानशील], स्वभाव से ही आसक्त, लालची अथवा तृष्णामयी प्रकृति वाला, केवल दूसरों से ले लेने वाला – **ला** पु. प्र. वि., ब.व. – *अदानसीला न च देन्ति कस्सचि,* सु. नि. 247; *अदानसीलाति अदानपकतिका, आदानाधिमुत्ता असंविभागरताति अत्थो,* ... *केचि पन 'आदानसीला'तिपि पठन्ति, केवलं गहणसीला, कस्सचि पन किञ्चि न देन्तीति,* सु. नि. अट्ठ. 1.264.

आदानाधिप्पाय त्रि., ब. स. [आदानाभिप्रायक], वह, जिसका अभिप्राय दूसरों से छीनना है, दूसरों की धन-सम्पदा आदि को ले लेने की इच्छा रखने वाला – **यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *चोरो, भिक्खवे, आदानाधिप्पायो अप्पं रत्तिया सुपति, बहुं जग्गति,* अ. नि. 2(1).147; *आदानाधिप्पायोति इदानि गहेतुं सक्खिस्सामि, इदानि सक्खिसामीति एवं गहणाधिप्पायो,* अ. नि. अट्ठ. 3.50; – **या** ब. व. – *चोरा, खो, ब्राह्मण, आदानाधिप्पाया गहनूपविचारा सत्थाधिट्ठाना,* अ. नि. 2(2).76; *परभण्डस्स आदाने अधिप्पायो एतेसन्ति आदानाधिप्पाया,* अ. नि. अट्ठ. 3.122.

आदानाभिनिविट्ठ त्रि., तत्पु. स. [आदानाभिनिविष्ट], दूसरों की सम्पत्ति आदि को ले लेने का मानसिक अभिप्राय रखने वाला – **ट्ठे** पु., सप्त. वि., ए. व. – *आदानसत्ते वा आदानाभिनिविट्ठे पुग्गले* ... *इति पेक्खमानो,* चूळनि. अट्ठ. 41; सु. नि. अट्ठ. 2.291.

आदापेति आ +√दा के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व., ग्रहण कराता है, आसक्ति या लगाव उत्पन्न कराता है – *एवं एव च दापेति आदापेतीति आदीनि पि यथारहं,* सद्द. 2.374.

आदाय[1] आ +√दा का सं. कृ. [आदाय], **1.** लेकर, ग्रहण कर, स्वीकार कर, चयन कर – *उद्दिस्स, उद्दिसित्वा, आदाय आदियित्वा,* क. व्या. 599; *अपस्सन्तो एकंसेन आदाय वोहरेय्यं,* म. नि. 2.80; *भरित्वा तुवरमादाय, सङ्घस्स अददिं अहं,* अप. 1.234; *भरित्वा तुवरमादायाति तुवरअट्ठिं मुग्गकलयसदिसं तुवरट्ठिं भज्जित्वा,* अप. अट्ठ. 2.181; **2.** प्रायः इसका प्रयोग क्रि. वि. अथवा उप. के रूप में भी प्राप्त, साथ, साथ में लेकर – *तथा पि नयमादाय कथितत्ता अकोपिया,* सद्द. 1.24; *पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय येन कसिभारद्वाजस्स ब्राह्मणस्स कम्मन्तो तेनुपसङ्कमि,* सु. नि. (पृ.) 96; *आदाय अग्गिं मम देहि वित्तं,* जा. अट्ठ. 7.56; *एत्तकं याचित्वा आदाय पक्कामि,* जा. अट्ठ. 1.119.

आदाय[2] पु., किसी धार्मिक आस्था का ग्रहण, धार्मिक विश्वास का स्वीकरण – *गहणवसेन आदायो,* महानि. अट्ठ. 115; विभ. अट्ठ. 309; – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *यञ्च कथेन्तो सकं आदायं अत्तनो आचरियवादं न हापेति,* महाव. अट्ठ. 411; स. उ. प. के रूप में तथागता., बुद्धा. के अन्त. द्रष्ट..

आदाय[3] आ +√दा[4] का पू. का. कृ. [आदाय], खींच कर, तान कर, बांध कर – *आदाय पत्तिं परविरियघातिं, चापे*

सरं किं विचिकिच्छसे तुवं, जा॰ अट्ठ॰ 4.243; *एतं पत्तसहितं सरं चापे आदाय सन्नय्हित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.243.

आदायक त्रि॰, आ +√दा से व्यु॰ [आदायक], लेने वाला, ग्रहण करने वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मच्छरिनोति अञ्ञेसं अदायका,* जा॰ अट्ठ॰ 6.129; पाठा॰ आदायका; स॰ उ॰ प॰ के रूप में; **तदा॰**- त्रि॰, उसका (पूर्वनिर्दिष्ट का) आदान या ग्रहण कराने वाला – *परपरिग्गहितसञ्ञिनो तदादायकउपक्कमसमुट्ठापिका थेय्यचेतना अदिन्नादानं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.128; **मूला॰**- त्रि॰, कायिक एवं वाचिक, इन दो प्रकार की आपत्तियों (अपराधों) के मूल को ग्रहण करने वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सियापि मूलादायका भिक्खू पुनकम्माय उक्कोटेय्युं,* चूळव॰ 473.

आदायछक्क नपुं॰, महाव॰ के कठिनखन्धक में संगृहीत एक वत्थु का शीर्षक, महाव॰ 334-335.

आदायपन्नरसक नपुं॰, महाव॰ के कठिनखन्धक के एक वत्थु का शीर्षक, महाव॰ 336.

आदायसत्तक नपुं॰, महाव॰ के कठिनखन्धक की एक विनयवत्थु, महाव॰ 332.

आदायी त्रि॰, [आदायिन्], लेने वाला, ग्रहण करने वाला, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्राप्त, **अदिन्ना॰** – न दी हुई वस्तु को ले लेने वाला – **यिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अदिन्नं आदियन्तीति अदिन्नादायिनो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.127; **दिन्ना॰** – केवल दी हुई वस्तु, धन आदि को लेने वाला – **यी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अदिन्नादानं पहाय अदिन्नादाना पटिविरतो होति दिन्नादायी दिन्नपाटिकङ्खी,* म॰ नि॰ 1.240; **वरा॰** – त्रि॰, उत्तम वस्तु या भाव को ग्रहण करने वाला – **यी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सारादायी च होति वरादायी च कायस्स,* अ॰ नि॰ 2(1).74; *ततियो वरादायीति उत्तमस्स वरस्स आदायको,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.31; **सारा॰**- त्रि॰, सार-तत्त्व को ग्रहण करने वाला – **यी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सारादायी च होति वरादायी च कायस्स,* अ॰ नि॰ 2(1).74.

आदायिवल्ली स्त्री॰, एक लता का नाम – **हि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ ... *कदम्बपुप्फमादायि – वल्लीहि, विततं अहु,* म॰ वं॰ 17.31; *आदायिवल्ली ति हियवल्ली वुच्चति,* म॰ वं॰ टी॰ 339 (ना॰); पाठा॰ आदारिवल्ली.

आदास पु॰, [आदर्श], दर्पण, आईना, मुंह देखने का शीशा – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दीपो पदीपो पज्जोतो, पुमे त्वादास-दप्पना,* अभि॰ प॰ 316; *तं किं मञ्ञसि, राहुल, किमत्थियो आदासो'ति ?,* म॰ नि॰ 2.85; *'यतो च खो, महाराज, आदासो सिया, आभा सिया, मुखं सिया, जायेय्य अत्ता'ति,* मि॰ प॰ 54; – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततो आदासमादाय, सरीरं पच्चवेक्खिसं,* थेरगा॰ 169; – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथेकदिवसं केवट्टो आदासे मुखं ओलोकेन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.237; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ खो यतो कुतोचि छाया आगन्त्वा आदासस्स आपातमुपगच्छति,* मि॰ प॰ 275; – **सेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अथ नं राजा आदासेहि परिक्खिपापेसि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.272; स॰ प॰ के अन्त॰, – **कञ्चना॰** पु॰, तत्पु॰ स॰ [काञ्चनादर्श], सोने से मढ़ा हुआ आईना, सुनहरी पट्टियों से सज्जित दर्पण, सुनहरा आईना – *अनुलिम्पित्वा सुपरिमज्जितकञ्चनादाससन्निभोति दस्सेतुं हेमवण्ण'न्ति,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 261; *मुखं जालाभिहतपदुमं विय मलग्गहितकञ्चनादासमण्डलं विय च विरूपं होति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.481; स॰ उ॰ प॰ के रूप में; **सब्बकायिका॰** – पु॰, कर्म॰ स॰, सम्पूर्ण शरीर को दिखलाने वाला आईना – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथस्सा दिब्बं सब्बकायिकादासं पुरतो ठपयिंसु,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.248; **काव्या॰** – पु॰, तत्पु॰ स॰, काव्यरूपी आईना, संस्कृत अलङ्कार शास्त्र का आचार्य दण्डी द्वारा रचित "काव्यादर्श" नामक एक ग्रन्थ – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *काव्यादासे च "त्वंमुखं कमलेने'व तुल्यं नाञ्ञेन केनची"ति,* सद्द॰ 1.289; **धम्मा॰** – पु॰, धर्मरूपी आईना या दर्पण – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धम्मादासन्ति धम्ममयं आदासं, येनाति येन धम्मादासेन समन्नागतो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.311; **पसन्ना॰** – पु॰, कर्म॰ स॰ [प्रसन्नादर्श], स्वच्छ दर्पण, साफ-सुथरा आईना – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स दानस्स फलेन इध निब्बत्तो'ति पसन्नादासे मुखनिमित्तं विय सब्बं पुरिमजातिकिरियं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.361; **विमला॰**- पु॰, कर्म॰ स॰ [विमलादर्श], दागों, मलों या धब्बों से रहित आईना, निर्मल एवं स्वच्छ दर्पण – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इध पन, महाराज, सिनिद्धसमसुमज्जितसप्पभासविमलादासं सण्हसुखुमगेरुकचुण्णेन अपरापरं मज्जेय्युं,* मि॰ प॰ 136; **सुवण्णा॰** – पु॰, तत्पु॰ स॰ [सुवर्णादर्श], सुनहरा आईना, सोने की तरह चमचमाता आइना – *सो गन्त्वा बोधिसत्तस्स सुवण्णादासफुल्लपदुमसस्सिरिकं मुखं दिस्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.145; स॰ पू॰ प॰ के रूप में, – **तल** – नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आदर्शतल], आईना की ऊपरी सतह, दर्पण का ऊपरी तल – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथा आदासतलं विय चक्खुधातु, मुखं विय रूपधातु,* विभ॰ अट्ठ॰

74; *सुवण्णमयं आदासतलं विय वट्टा च सुच्छवि च,* जा॰ अट्ठ॰ 5.196; – **दण्डसण्ठान** त्रि॰, ब॰ स॰ [आदर्शदण्डसंस्थान], आईना के मूंठ या हैण्डिल जैसी बनावट वाला – **नानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आदासदण्डसण्ठानानि, महावासिदण्डसण्ठानानीतिपि एके,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 38; – **दन्तथरु** पु॰, तत्पु॰ स॰, हाथी-दांत से बनाई हुई आईना की मूंठ – *तं नून कक्कूपनिसेवितं मुखं, आदासदन्ताथरुपच्चवेक्खितं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.292; – **पञ्ह** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आदर्शप्रश्न], दी॰ नि॰ के सामञ्ञफलसुत्त में परिगणित बुद्धकालीन विद्याओं में वह विद्या, जिसमें किसी के खोने आदि के प्रश्नों का उत्तर आईना द्वारा दिलाया जाता था – **ञ्हं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हत्थाभिजप्पनं हनुजप्पनं कण्णजप्पनं आदासपञ्हं कुमारिकपञ्हं देवपञ्हं आदिच्चुपट्ठानं,* दी॰ नि॰ 1.10; *आदासपञ्हन्ति आदासे देवतं ओतारेत्वा पञ्हपुच्छनं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.85; – **मयभित्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, कांच की दीवार, वह दीवार जो आईनों से भरी हो – **ना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पवरेनापरेनापि आदासमयभित्तिना, आदासमण्डपेनापि सदा तं उपसोभितं,* चू॰ वं॰ 73.119; – **मण्डप** पु॰, श्रीलङ्का के पुलत्थिनगर का एक भवन – **पेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदासमण्डपेनापि सदा तं उपसोभितं,* चू॰ वं॰ 73.119; – **मण्डल** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, गोल आकार वाला आईना, आईना का मण्डल या घेरा – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तारकरूपानं वण्णनिभा आदासमण्डलस्स वण्णनिभा मणिसङ्खमुत्तावेळुरियस्स वण्णनिभा,* ध॰ स॰ 617(मा॰).

आदासक पु॰, आदास से व्यु॰, आईना, छोटा सा दर्पण, सुन्दर दर्पण – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ *कोच्छं पसादं अञ्जनिञ्च, आदासकञ्च गण्हित्वा,* थेरीगा॰ 413.

आदासमुखकुमार पु॰, वाराणसी के एक प्राचीन राजा का नाम – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेनस्स नामग्गहणदिवसे आदासमुखकुमारो'ति नामं अकंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 2.247.

आदाहनट्ठान नपुं॰, [आदाहनस्थान], **शा॰ अ॰**, वह स्थान, जहां कुछ भी जलाया जाए, दाहस्थल, **ला॰ अ॰**, श्मशान, दाह-क्रिया का स्थल – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मम पुत्तस्स अरहतो आदहनट्ठाने चितकं चितकट्ठानं अहं अग्गमासिन्ति अत्थो,* अप॰ अट्ठ॰ 2.189; पाठा॰ आदहनट्ठान.

आदि पु॰/त्रि॰, [आदि], 1. प्रारम्भ, आधार, कारण, प्रथम, सबसे पहला, अग्र, मुख्य, प्रधान, प्रमुख – **दि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जिघञ्ञं चरिमं पुब्बं, त्वग्ग पठममादिसो,* अभि॰ प॰ 715; *आदि चेतं चरणञ्च, मुखं सञ्ञमसंवरो,* परि॰ 286; *तत्रायमादि भवति, इध पञ्ञस्स भिक्खुनो,* ध॰ प॰ 375; *तत्रायमादि भवतीति तत्र अयं आदि, इदं पुब्बट्ठानं होति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.346; *आदि सीलं पतिट्ठा च, कल्याणनञ्च मातुकं,* थेरगा॰ 612; – **दिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा पन नक्खत्तदिवसे बन्धनागारे बद्धो पुरिसो नक्खत्तस्स नेव आदिं, न मज्झं, न परियोसानं पस्सति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).214; *नेव आदिं मनसि करोतीति नेव पुब्बपट्ठपनं मनसि करोति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.98; – **दीनि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तत्थ तत्थ कसिगोरक्खादीनि करोन्ते मनुस्से गोगणे सुनखेति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.105; *इमे छाता'ति वुत्ता सा तण्डुलादीनि निद्दिसि, भक्खितानं वाणिजानं, नावट्ठं विविधं बहुं,* म॰ वं॰ 7.24; – **ना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मुग्गरादिनानावुधहत्था अरञ्ञं पविसित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.154; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिस्स तीणि लक्खणानि,* पटि॰ म॰ 162; – **म्हि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आदिम्हि वा मज्झे वा परियोसाने वा अप्पमत्तकम्पि सारं अदिस्वा ...,* मि॰ प॰ 9; **2.** प्रायः स॰ उ॰ प॰ के अन्त॰, ना॰ प॰ अथवा त्रि॰ के रूप में, **क.** ना॰ प॰ के रूप में; – **दि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रञ्ञो चक्कवत्तिस्स चक्करतनादि ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 139; – **दयो** ब॰ व॰ – *उदाहु धम्मानुस्सतिआदयोपी'ति पुच्छि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.261; **ख.** त्रि॰ के रूप में – **दि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्सासपस्सासादिचुण्णिकजातअट्ठिकपरियोसानो कायो वुत्तो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).253; – **दिनो** नपुं॰ द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तण्डुलादीनि निद्दिसि,* म॰ वं॰ 7.24; – **म्हि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ विसमेति विसमे कायकम्मादिम्हि निविट्ठा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.60; – **दीहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एको दीपको नानप्पकारेहि अम्बपनसादीहि फलरुक्खेहि सम्पन्नो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.268; – **दीनं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पारगङ्गाय अम्बलबुजादीनं मधुरफलानं अन्तो नत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.131; **3.** किसी लम्बे स॰ प॰ के उत्तर पद के रूप में – ... *मुग्गरादिनानावुधहत्था अरञ्ञं पविसित्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.154; *न बहुजनो अनिच्चादिवसेन विपस्सति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.100; **4.** किसी उद्धरण के अन्त में 'ति' अथवा 'ति एवं' के साथ इत्यादि के अर्थ का सूचक, **क.** असमस्त रूप में, – *"यावता, भिक्खवे, सत्ता अपदा वा ... पे॰ ... तथागतो तेसं अग्गमक्खायती"ति आदि,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 142; *बाहुलिकातिआदि धम्मदायादे वुत्तं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).161; **ख.** स॰ प॰ रूप में, – *एतं "न*

साधारणदारस्सा"तिआदिवचनं अब्रवि, जा. अट्ठ. 7.180; स. उ. प. के रूप में द्रष्ट. उणा., संयोगा. के अन्त.

आदिअक्खर नपुं., कर्म. स. [आद्यक्षर], प्रथम अक्षर, वर्ग या पंक्ति का प्रथम अक्षर – **रानि** प्र. वि., ब. व. – *एकेकं गाथं वत्थुकामेहि उच्चारितानं तासं गाथानं आदिअक्खरानि,* पे. व. अट्ठ. 244.

आदिअत्थ त्रि., ब. स. [आद्यर्थक], आदि के अर्थ को प्रकट करने वाला (शब्द) – **त्थो** पु., प्र. वि., ए. व. – *इतिसद्दो आदिअत्थो पकारत्थो वा,* उदा. अट्ठ. 174.

आदिअन्तवन्तता स्त्री., आदिअन्तवन्तु का भाव., आदि या प्रारम्भ तथा अन्त से युक्त रहना, उदय एवं व्यय के स्वभाव वाला होना – **य** तृ. वि., ए. व. – *आदिअन्तवन्ततायाति पुब्बापरकोटिवन्तताय, उदयब्बय- धम्मतोति अत्थो,* विसुद्धि. महाटी. 2.370.

आदिआगम पु., तत्पु. स. [आद्यागम], किसी भी शब्द के प्रारम्भ में किसी वर्ण का आगम – **मो** प्र. वि., ए. व. – *आदिआगमो ताव – वुत्तो भगवता, मुत्तमो इच्चेवमादि,* क. व्या. 406.

आदिआदेस पु., तत्पु. स. [आद्यादेश], किसी शब्द के प्रारम्भ में किसी वर्ण के स्थान पर आया हुआ अन्य वर्ण – **सो** प्र. वि., ए. व. – *आदिआदेसो ताव – यूनं इच्चेवमादि,* क. व्या. 406.

आदिकं त्रि., [आदिक], **1.** प्रथम, प्रारम्भ का, सबसे पहला, इत्यादि – **कं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *पञ्चसतेहि पुत्तेहि फलं पापुणि आदिकं,* म. वं. 12.21; *फलं पापुणि आदिकं ति सपुत्तदारो सोतापत्तिफलं पापुणी ति,* म. वं. टी. 274 (ना.); – **का** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *"न मे आचरियो अत्थी"ति आदिका गाथायो च वित्थारेतब्बा,* विसुद्धि. 1.199; – **केन** तृ. वि., ए. व., क्रि. वि., प्रारम्भ में ही, तुरन्त ही, प्रथम प्रयोग में ही – *सचे, भन्ते, न सक्कुणेय्यं आदिकेनेव आहत्तुं,* म. नि. 2.64; *आदिकेनेव ओपिलवतीति एत्थ आदिकेनाति आदानेन गहणेन,* स. नि. अट्ठ. 2.179; **2.** स. उ. प. में, त्रि., आदि शब्द के ही अर्थ में, इत्यादि – **कं**[1] नपुं., प्र. वि., ए. व. – *यं मनुस्सानं वोहारूपगं अलङ्कारपरिभोगूपगञ्च जातरूपरजतमुत्तामणिवेळुरियपवाळलोहितङ्कमसारगल्लादिकं,* खु. पा. अट्ठ. 136; – **कं**[2] पु., द्वि. वि., ए. व. – *तत्थ वण्णागमो वण्णविपरिययोतिआदिकं निरुत्तिलक्खणं गहेत्वा ...,* विसुद्धि. 1.202; *आदिकन्ति आदिसद्देन वण्णविकारो, वण्णलोपो, धातुअत्थेन नियोजनञ्चाति इमं तिविधं लक्खणं सङ्गण्हाति,* विसुद्धि. महाटी. 1.239; – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *नयेन वुत्तो अविज्जादिको पच्चयाकारो,* उदा. अट्ठ. 31; – **का** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *उप्पलवण्णाथेरिआदिका महासाविका अनेकेहि भिक्खुनिसतेहि ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).98; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *वुत्तो अनापत्तिनयो पनेवं, अवत्तुकामस्स तथादिकस्स,* विन. वि. 310; – **कानं** ष. वि., ब. व. – *बीजरुक्खादिकानंव, पुब्बा कोटि न नायति,* अभि. अव. 1249; – **केसु** सप्त. वि., ब. व. – *पुब्बे दुक्खादिकेसु च,* अप. 2.284; – **के** सप्त. वि., ए. व. – *उपसग्गो दिस्सति पादिकेपि च,* अभि. प. 1033.

आदिकत्तु पु., कर्म. स. [आदिकर्तृ], किसी भी काम को अथवा किसी भी प्रवृत्ति को प्रारम्भ करने वाला, कर्म की उत्पत्ति को प्रारम्भ करने वाला – **त्ता** प्र. वि., ए. व. – *अकुसलानं धम्मानं आदिकत्ता पुब्बङ्गमो,* पारा. 22; *आदिकत्ता पुब्बङ्गमोति सासनं सन्धाय वदति,* पारा. अट्ठ. 1.171.

आदिकप्प पु., कर्म. स. [आदिकल्प], प्रथम कल्प, संसार की सृष्टि-प्रक्रिया का पहला युग – **म्हि** सप्त. वि., ए. व. – *आदिकप्पम्हि राजूनं दस्सेन्तो चरियं विय,* चू. वं. 51.2.

आदिकम्म नपुं., कर्म. स., 'आ' एवं 'प' उप. के अर्थों के व्याख्यानक्रम में प्रयुक्त [आदिकर्मन्], **शा. अ.** किसी कर्म का प्रारम्भ, किसी भी कर्म का प्रारम्भिक चरण, **विशेष अर्थ,** ध्यान-भावना का प्रारम्भिक चरण – *आभिमुख्यसमीपादिकम्मालिङ्गनपत्तिसु,* अभि. प. 1180; *आदिभूतं योगकम्मं आदिकम्मं,* विसुद्धि. महाटी. 2.4; – **म्मे** सप्त. वि., ए. व. – *आदिकम्मे भुसत्थे च सम्भवो तिण्ण तितिसु,* अभि. प. 1162; – **त्थ** पु., तत्पु. स., कर्म को आरम्भ करने का अर्थ – **त्थे** सप्त. वि., ए. व. – *आदिकम्मत्थे प-कारो दट्ठब्बो,* पटि. म. अट्ठ. 1.249.

आदिकम्मिक त्रि., आदिकम्म से व्यु. [आदिकर्मिक], **शा. अ.**, कर्म को पहले पहल करने वाला, किसी कर्म को प्रारम्भ से ही करने वाला, किसी काम की नई नई शुरुआत करने वाला, **ला. अ.**, (विनय के विशेष सन्दर्भ में) विनय-आपत्ति में आपतित होने वाला, सङ्घकर्म का प्रारम्भ कराने वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *अदिन्नपुब्बमञ्ञेसं, भविस्सं आदिकम्मिको,* अप. 1.332; *पुब्बे अभावितभावनो आदिकम्मिको योगावचरो इद्धिविकुब्बनं सम्पादेस्सतीति,* ध. स. अट्ठ. 231; *तस्मिं वत्थुस्मि'न्ति परिवारे आगतत्ता*

देवदत्तो आदिकम्मिको, पारा॰ अट्ठ॰ 2.176; – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सीले पतिट्ठितेन पयोगसुद्धेन आदिकम्मिकेन कुलपुत्तेन ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 29; – **स्स**, पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिकम्मिकस्साति आदितो कतयोगकम्मस्स,* अभि॰ ध॰, वि॰ टी॰ 143; – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इध पन आदिकम्मिका अञ्ञमञ्ञं जीविता वोरोपितभिक्खू,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.55; – **कानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तथापि आदिकम्मिकानं बोज्झङ्गेसु असम्मोहत्थं ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).89; – **कुलपुत्त** पु॰, कर्म॰ स॰ [आदिकर्मिककुलपुत्र], किसी कार्य को प्रारम्भ करने वाला उच्च कुल में उत्पन्न व्यक्ति, काम को प्रारम्भ से ही करने वाला उच्च कुल में उत्पन्न व्यक्ति – **त्ता** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आदिकम्मिककुलपुत्ता पन परिकम्मं कत्वाव सरन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.118; – **त्तेन**, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ इमिना आदिकम्मिककुलपुत्तेन पठमं गणनाय, ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.21; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [आदिकर्मिकत्व], किसी काम को प्रारम्भ करने वाला होना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धनियत्थेरस्स आदिकम्मिकत्ता अनापत्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.231; – **पुग्गल** पु॰, कर्म॰ स॰ [आदिकर्मिकपुद्गल], कर्म को प्रारम्भ करने वाला व्यक्ति, संघ कर्म को प्रारम्भ कराने वाला विनय-आपत्ति में आपतित भिक्षु – **ला** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *भिक्खूनं पातिमोक्खस्मिं, आदिकम्मिकपुग्गला,* विन॰ वि॰ 3121; – **भिक्खु** पु॰, कर्म॰ स॰ [आदिकर्मिकभिक्षु], कर्म को प्रारम्भ करने वाला भिक्षु – **ना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं सम्पादेतुकामेन, आदिकम्मिकभिक्खुना,* अभि॰ अव॰ 1076; – **नो** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथा उम्मत्तकस्सापि, आदिकम्मिकभिक्खुनो,* विन॰ वि॰ 1690.

आदिकम्मिकयोगी पु॰, भावना के कर्म को ग्रहण करने वाला योगी – **गिना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न लिङ्गविसभागम्हि, आदिकम्मिकयोगिना, भावेतब्बा मतसत्ते,* ना॰ रू॰ प॰ 1397.

आदिकम्मी त्रि॰, [आदिकर्मिन्], **शा॰ अ॰**, प्रारम्भ करने वाला, किसी भी काम को पहले पहल करने वाला, **ला॰ अ॰**, (विनय के सन्दर्भ में) किसी विनय-आपत्ति में पहले पहल आपतित होने वाला, पहले पहल अपराध करने वाला – **म्मिनो** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथेवासादियन्तस्स, जानन्तस्सादिकम्मिनो,* विन॰ वि॰ 36; *सब्बस्सपि च सीलादिं, वदतो आदिकम्मिनो,* विन॰ वि॰ 938; *अविहेसेतुकामस्स, अकीळस्सादिकम्मिनो,* विन॰ वि॰ 1653.

आदिकर त्रि॰, [आदिकर], प्रारम्भ करने वाला – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिकरो पुग्गलो जानितब्बो,* परि॰ 236; *आदिकरोति सुदिन्नत्थेरादि आदिकम्मिको,* परि॰ अट्ठ॰ 159; **अना॰** – त्रि॰, आदिकर का निषे॰, प्रारम्भ न करने वाला, अनुप्रज्ञप्ति जैसे संघकर्म को करने वाला – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनादिकरोति मक्कटिसमणादि अनुपञ्ञत्तिकारको,* परि॰ अट्ठ॰ 159.

आदिकल्याण त्रि॰, ब॰ स॰ [आदिकल्याण], प्रारम्भ में ही कल्याणकारक, आरम्भ में ही शुभ – **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'अरहत्तमग्गो आदिकल्याणो चेव होति लक्खणसम्पन्नो' च,* पटि॰ म॰ 164; – **णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'पठमं झानं आदिकल्याणञ्चेव होति लक्खणसम्पन्नञ्च',* पटि॰ म॰ 162; – **णा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ये ते धम्मा आदिकल्याणा मज्झेकल्याणा परियोसानकल्याणा सात्थं सब्यञ्जनं ...,* पाचि॰ 75.

आदिकल्याणता त्रि॰, आदिकल्याण का भाव॰ [आदिकल्याणता], प्रारम्भ में ही कल्याणमय अथवा हितकारक होना – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सीलेन च तेसं पटिपत्तिया आदिकल्याणता दस्सिता,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.11-12; *सीलेन च सासनस्स आदिकल्याणता पकासिता होति,* विसुद्धि॰ 1.5; *तत्थ सब्बगुणेहि अग्गभावतो, इतरबोधिद्वयमूलताय च पठमाय बोधिया आदिकल्याणता,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.254.

आदिकाल पु॰, कर्म॰ स॰ [आदिकाल], प्राचीन समय – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यस्स पन आदिकालतो पभुति अन्वयवसेन सो एव जनपदो निवासो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.103; – **लत्थ** पु॰, तत्पु॰ स॰, प्राचीन काल का अर्थ या तात्पर्य – **त्थे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *खोति पदपूरणमत्ते अवधारणे आदिकालत्थे वा निपातो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.14; सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.111; पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.119.

आदिग्गहण नपुं॰, तत्पु॰ स॰, 'आदि' शब्द का ग्रहण या प्रयोग – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिग्गहणेन अञ्ञस्मा पि स्मिं–नानं इकार–आकारादेसा होन्ति,* क॰ व्या॰ 181.

आदिच्च[1] पु॰, 'अदिति' से व्यु॰ [आदित्य], अदिति का पुत्र, सूर्य – *आदिच्चो सूरियो सूरो, सतरंसि दिवाकरो,* अभि॰ प॰ 62; – **च्चो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नक्खत्तानं मुखं चन्दो, आदिच्चो तपतं मुखं,* महाव॰ 323; सु॰ नि॰ 574; *मज्झे समणसङ्घस्स, आदिच्चोव विरोचसि,* थेरगा॰ 820; सु॰ नि॰ 555; *यथा आदिच्चो उग्गच्छन्तो सब्बं तमगतं विधमेत्वा,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.260-61; *आदिच्चो वुच्चति सूरियो,* महानि॰ 251; – **च्चं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अङ्गीरसं पस्स विरोचमानं, तपन्तमादिच्चमिवन्तलिक्खे'ति,* स॰ नि॰ 1(1).99; – **स्स**

ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिच्चस्स, भिक्खवे, उदयतो एतं पुब्बङ्गमं एत्तं पुब्बनिमित्तं, यदिदं–अरुणुग्गं,* स॰ नि॰ 3(1).122; – **च्चे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुग्गतम्हि आदिच्चे, पनादो विपुलो अहु,* अप॰ 1.261; स॰ उ॰ प॰ के रूप में; **तरुणा॰** – पु॰, कर्म॰ स॰ [तरुणादित्य], प्रातःकालीन सूर्य – **सप्पभ** त्रि॰, ब॰ स॰, प्रातःकालीन सूर्य के समान आभा वाला – **भे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *फुल्लारविन्दसंकासे, तरुणादिच्चसप्पभे,* अप॰ 2.202; **नरा॰** – पु॰, तत्पु॰ स॰ [नरादित्य], सूर्य के समान तेजस्वी मनुष्य – **च्च** संबो॰, ए॰ व॰ – *पणमामि नरादिच्च, आदिच्चकुलकेतुकं,* अप॰ 2.202; **बाला॰**- पु॰, कर्म॰ स॰, प्रातःकालीन सूर्य – *बालादिच्चप्पभापुञ्जसंनिभे सुमनोहरे,* चू॰ वं॰ 74.212; **बुद्धा॰**- पु॰, कर्म॰ स॰, बुद्धरूपी सूर्य, सूर्य के समान देदीप्यमान आभा से युक्त बुद्ध – **च्चे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बुद्धादिच्चे अनुदिते सिद्धिमग्गावभासके,* सद्धम्मो॰ 14; *अवेकल्लमनुस्सत्तं बुद्धादिच्चाभिमण्डितं,* सद्धम्मो॰ 17; – **च्चोदय** पु॰, तत्पु॰ स॰, बुद्धरूपी सूर्य का उदय – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बुद्धादिच्चोदयो चापि मतो अच्चन्तदुल्लभो,* सद्धम्मो॰ 40; **सरदा॰**- पु॰, तत्पु॰ स॰, शरद् ऋतु का शीतल सूर्य – **सदिस** त्रि॰, शरत्कालीन सूर्य जैसा – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सरदादिच्चसदिसं रंसिजालसमुज्जलं,* अप॰ 2.206.

आदिच्च[2] त्रि॰, आदित्य गोत्र वाला, सूर्यवंशी – **च्चा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आदिच्चा नाम गोत्तेन, साकिया नाम जातिया,* सु॰ नि॰ 425.

आदिच्च[3] पु॰, तमिल देश का एक अधिकारी – *तदा आदिच्चदमिळाधिकारीति समञ्ञितो,* चू॰ वं॰ 76.39.

आदिच्चकुलकेतुक त्रि॰, सूर्यवंश की पताका को फहराने वाला – **कं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पणमामि नरादिच्च, आदिच्चकुलकेतुकं,* अप॰ 2.202.

आदिच्चगोत्त त्रि॰, ब॰ स॰, सूर्यवंशी, सूर्य के गोत्र वाला – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहं कोण्डञ्ञगोत्तो, अहं आदिच्चगोत्तो'ति मानं करोति,* विभ॰ अट्ठ॰ 440.

आदिच्चन्वय पु॰, तत्पु॰ स॰ [आदित्यान्वय], सूर्य वंश, सूर्य से प्रारम्भ होने वाली कुलपरम्परा – **मण्डन** त्रि॰, सूर्यवंश को शोभित करने वाला – **ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *देवी पि सुत्वा तं सब्बं आदिच्चन्वयमण्डना,* चू॰ वं॰ 63.11.

आदिच्चपथ पु॰, तत्पु॰ स॰ [आदित्यपथ], सूर्य के जाने का मार्ग, आकाश, अन्तरिक्ष – **थो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अन्तलिक्खं खमादिच्चपथोब्भं गगनाम्बरं,* अभि॰ प॰ 45; *वेहासो गगनं देवो खमादिच्चपथो पि च,* सद्द॰ 2.442; – **थे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हंसादिच्चपथे यन्ति, आकासे यन्ति इद्धिया,* ध॰ प॰ 175; *इमे हंसा आदिच्चपथे आकासे गच्छन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.101.

आदिच्चपाक/आदिच्चपक्क पु॰/त्रि॰, तत्पु॰ स॰, सूर्य की उष्णता या उसके द्वारा पकाया गया या तैयार किया गया – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एत्थ मधुकपुप्फरसो अग्गिपाको वा होतु आदिच्चपाको वा,* महाव॰ अट्ठ॰ 361; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिच्चपाकं कत्वा परिस्सावेत्वा गहितं सत्ताहकालिकं होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.264; *वट्टतादिच्चपाकं तु, अग्गिपक्कं न वट्टति,* विन॰ वि॰ 2687; – **केन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आतपे आदिच्चपाकेन पचित्वा परिस्सावेत्वा,* महाव॰ अट्ठ॰ 361; महानि॰ अट्ठ॰ 321; *ततो आदिच्चपाकेन पच्चित्वा पक्कपयोघनिका विय तिट्ठति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.247; – **कानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एतानि सब्बानि ... कतानि आदिच्चपाकानि वा ... यामकालिकानि नाम,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 220.

आदिच्चपारिचरिया स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आदित्यपरिचर्या], सूर्य की उपासना, सूर्यपूजा – **या** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिच्चुपट्ठानन्ति जीविकत्थाय आदिच्चपारिचरिया,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.85.

आदिच्चबन्धु[1] पु॰, [आदित्यबन्धु], सूर्य का भाई-बन्धु, सूर्य वंश में उत्पन्न, सूर्यवंशी (बुद्ध की एक उपाधि) – **न्धु** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सक्यसीहो तथा सक्यमुनि चादिच्चबन्धु च,* अभि॰ प॰ 5; *'गोतमो, आदिच्चबन्धू'ति गोत्ततो च पसिद्धो,* सद्द॰ 1.73; *तस्मा बुद्धो आदिच्चबन्धूति,* महानि॰ 251; – **नं/न्धुनं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तण्हासल्लस्स हन्तारं, वन्दे आदिच्चबन्धुन'न्ति,* स॰ नि॰ 1(1).222; *आदिच्चबन्धुनन्ति आदिच्चबन्धुं सत्थारं दसबलं वन्दामीति वदति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.245; – **ना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ते तोसिता चक्खुमता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना,* सु॰ नि॰ 1134; – **नो** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नाकासिं सत्थु वचनं, बुद्धस्सादिच्चबन्धुनो,* वि॰ व॰ 242; *वचनं अनुगन्त्वान तस्सेवादिच्चबन्धुनो,* सद्धम्मो॰ 74.

आदिच्चबन्धु[2] पु॰, व्य॰ सं॰, एक प्रत्येक-बुद्ध का नाम – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिच्चबन्धुस्स वचो निसम्म, एको चरे खग्गविसाणकप्पो,* सु॰ नि॰ 54; अप॰ 1.9; *येन कारणेन फस्सयेति एतं आदिच्चबन्धुस्स पच्चेकबुद्धस्स वचो निसम्म,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.83; अप॰ अट्ठ॰ 1.144.

आदिच्चरंसि स्त्री., तत्पु. स. [आदित्यरश्मि], सूर्य की किरण – **हि** तृ. वि., ब. व. – *उस्सापिताहि नेकाहि वारितादिच्चरंसिहि*, चू. वं. 85.6; – **सावरण** त्रि., सूर्य की किरणों को ढक लेने वाला अथवा उनसे रक्षा करने वाला – **णं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *आदिच्चरंसावरणं, को एति सिरिया जलं*, जा. अट्ठ. 7.63; जा. अट्ठ. 5.314.

आदिच्चरंसी पु., व्य. सं., आनन्द की आचार्य-परम्परा से सम्बद्ध एक स्थविर – **नो** च. वि., ए. व. – *कुलविहारं नाम परिवारविहारं आदिच्चरंसिनो नाम थेरस्स अदासि*, सा. वं. 80.

आदिच्चवंस पु., तत्पु. स. [आदित्यवंश], **1.** सूर्य से प्रारम्भ वंश-परम्परा, सूर्यवंश, **2.** त्रि., सूर्यवंशी – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *तत्थ आदिच्चवंसो, ओक्काकराजवंसोति जानितब्बं, ततो सञ्जातताय साकिया आदिच्चगोत्ताति*, थेरगा. अट्ठ. 2.89; – **से** सप्त. वि., ए. व. – *आदिच्चवंसे सम्भूतत्ता आदिच्चो बन्धु एतस्साति*, थेरगा. अट्ठ. 1.87.

आदिच्चवण्णसंकास त्रि., [आदित्यवर्णसंकाश], सूर्य के समान देदीप्यमान या चमकीला – **सा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *आदिच्चवण्णसङ्कासा, हेमचन्दनगन्धिनी*, जा. अट्ठ. 5.149.

आदिच्चसन्ताप पु., तत्पु. स. [आदित्यसन्ताप], सूर्य की गर्मी, कड़ी धूप – **पेन** तृ. वि., ए. व. – *सूरियसन्तापेति आदिच्चसन्तापेन*, चरिया. अट्ठ. 215.

आदिच्चसुत्त नपुं., स. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, स. नि. 3(1).122.

आदिच्चानुपरिवत्तन नपुं., तत्पु. स., सूर्य के पीछे पीछे घूमना स. प. के अन्त. – *सो दुक्खं विहरतीति पञ्चातपतप्पनमरुप्पपात-पतनादिच्चानुपरिवत्तन-उक्कुटिकप्पधानादीनि अनुयुञ्जतो दिट्ठे*, अ. नि. अट्ठ. 1.361.

आदिच्चुपट्ठान नपुं., तत्पु. स. [आदित्योपस्थान], सूर्यपूजा, सूर्य की उपासना – **नं** प्र. वि., ए. व. – *देवपञ्हं आदिच्चुपट्ठानं महतुपट्ठानं*, दी. नि. 1.10; *आदिच्चुपट्ठानन्ति जीविकत्थाय आदिच्चपारिचरिया*, दी. नि. अट्ठ. 85.

आदितो अ., आदि से व्यु. प. वि., प्रतिरू. निपा. [आदितः], **1.** प्रारम्भ से ही – *आदिप्पभूतीहि तो वा होति; आदो, आदितो; मज्झतो अन्ततो, पिट्ठितो पस्सतो मुखतो*, मो. व्या. 4.98; *सो आदितो पट्ठाय असप्पायभावं कथेसि*, जा. अट्ठ. 1.450; *तस्स आदितो पभुति अत्थसंवण्णनं आरभिस्सामि*, खु. पा. अट्ठ. 3; **2.** सर्वप्रथम, पहले पहल – *या महाकस्सपादीहि महाथेरेहि आदितो*, म. वं. 5.1; *अथादितो पनेकं वा, द्वे वा तीणिपि सत्त वा*, विन. वि. 2004; *आदितो पन भिक्खुस्स, चतूस्वन्तिमवत्थुसु*, उत्त. वि. 569; *इमस्मिं सङ्खारलोके सिक्खितब्बधम्मेसु सीलं आदितो सिक्खेय्य*, थेरगा. अट्ठ. 2.186; **3.** स. उ. प. के रूप में, आदि से, से प्रारम्भ होने वाला – *रञ्ञा कातञ्जुजा तेन थूपकारापनादितो*, म. वं. 26.24; *नो च द्वादितो नम्हि*, क. व्या. 67; *मनोवितक्के अस्सादादितो यथाभूतं जानन्तो*, उदा. अट्ठ. 192; *लक्खणादितो पन विजाननलक्खणं चित्तं*, ध. स. अट्ठ. 158.

आदित्त[1] त्रि., आ +√दीप का भू. क. कृ. [आदीप्त/आदीपित], धधक रहा, जल रहा, प्रज्वलित, अत्यधिक चमक रहा – *आदित्ते गब्बिते दित्तो, पिट्ठं तु चुण्णितेपि च*, अभि. प. 1075; – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आभुसो दिप्पतीति आदित्तो, उच्चतीति उत्तो, विसेसेन विच्चती ति विवित्तो*, क. व्या. 582; *चक्खुसम्फस्सो आदित्तो ... मनोसम्फस्सो आदित्तो*, महाव. 39; *आदित्तो लोकसन्निवासोति*, पटि. म. 115; *आदित्तोति दुक्खलक्खणवसेन पीळायोगतो सन्तापनट्ठेन आदीपितो ... आदित्तोति रागादीहियेव आदित्तो*, पटि. म. अट्ठ. 2.13; – **त्ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *ससागरन्ता पथवी, आदित्ता विय होति मे*, अप. 1.43; – **त्तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *सब्बं, भिक्खवे, आदित्तं, महाव. 39; यं उदकं तदेव आदित्तं*, जा. अट्ठ. 3.453; *आदित्तं वत रागग्गि, तण्हानं विजितं तदा*, बु. वं. 353; *आदित्तं चेलं वा सीसं वा अज्झुपेक्खित्वापि*, स. नि. अट्ठ. 1.40; – **त्तेन** तृ. वि., ए. व. – *मुखं विवरित्वा आदित्तेन सम्पज्जलितेन सजोतिभूतेन*, म. नि. 3.224; *येन केनचि अन्तमसो लोहखण्डेनपि आदित्तेन कप्पियं कातब्बं*, पाचि. अट्ठ. 28; – **तो** प. वि., ए. व. प्रज्वलित अवस्था में – *कामे आदित्ततो दिस्वा, जातरूपानि सत्थतो*, थेरगा. 790; *वत्थुकामे किलेसकामे च एकादसहि अग्गीहि आदित्तभावतो दिस्वा*, थेरगा. अट्ठ. 2.254; *आदित्ततोहं समथेहि युत्तो, पब्बाय दच्छं तदिदं कदा मे*, थेरगा. 1102; *आदित्ततोति एकादसहि अग्गीहि आदित्तभावतो*, थेरगा. अट्ठ. 2.394; – **स्मिं** सप्त. वि., ए. व. – *आदित्तस्मिं अगारस्मिं, यं नीहरति भाजनं*, स. नि. 1(1).35; – **त्ताय** स्त्री., सप्त. वि., ए. व. – *आदित्ताय लोहपथविया उत्तानकं निपज्जापेत्वा*, जा. अट्ठ. 1.484; – **त्ता** पु, प्र. वि., ब. व. – *अथस्सा तयो भवा आदित्ता गेहा विय गीवाय बद्धकुणपं विय च उपट्ठहिंसु*, ध. प. अट्ठ. 2.64-65.

आदित्त[2] नपुं॰, आदि का भाव॰, केवल स॰ प॰ में ही प्राप्त [आदित्व], आदि में या प्रारम्भ में रहना; **अचिन्तिया॰** – नपुं॰, [अचिन्त्यादित्व], अचिन्तनीय आदि की अवस्था – *अचिन्तियादित्तमुपागतो यो,* जिना॰ 4; **कुसलादित्तसाधक** – त्रि॰, कुशल-भाव के प्रारम्भभाव का निष्पादक – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धम्मानं कुसलादीनं, कुसलादित्तसाधको,* अभि॰ अव॰ 543; *तस्मा हि कुसलादीनं, कुसलादित्तसाधको,* अभि॰ अव॰ 546.

आदित्तक त्रि॰, आदित्त से व्यु॰ [आदीप्तक], धधक रहा, जल रहा, प्रज्वलित – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं आदित्तको लोको, जराय मरणेन च,* स॰ नि॰ 1(1).35.

आदित्तगेहसदिस त्रि॰, [आदीप्तगेहसदृक्], जलते हुए या आग से धधक रहे घर जैसा – **सा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तयो भवा आदित्तगेहसदिसा खायिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.71.

आदित्तघर नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आदीप्तगृह], आग से धधक रहा घर – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुन उब्हितुमिच्छसीतिआदित्तघरतो नीहटभण्डं विय,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.270.

आदित्तचेल त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसके वस्त्र आग से जल रहे हों – **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदित्तचेलो वा आदित्तसीसो वा ...,* अ॰ नि॰ 1(2).108; स्स ष॰ वि॰, ए॰ व॰ *आदित्तचेलस्सिरसूपमो मुनि, भङ्गानुपस्सी अमतस्स पत्तिया'ति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.220.

आदित्तछारिका स्त्री॰, कर्म॰ स॰, तपता हुआ या धधक रहा अंगारा – **कसङ्घात** त्रि॰, धधक रहे अंगारे जैसा – **तेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदित्तछारिकसङ्घातेन कुक्कुळेन विय,* जा॰ अट्ठ॰ 3.395.

आदित्तजातक नपुं॰, जातक संख्या 424 का शीर्षक, जा॰ अट्ठ॰ 3.414-418.

आदित्तदेसना स्त्री॰, "सभी कुछ आदीप्त है या धधक रहा है" इस उपदेश से युक्त महाव॰ का 'आदित्तपरियाय' नामक सुत्त, इसे आदित्तसुत्त की संज्ञा से भी अभिहित किया गया है। संयुत्तनिकाय में तीन आदित्तसुत्त हैं। प्रथम आदित्तसुत्त जेतवन में बुद्ध के सम्मुख एक देवता द्वारा उच्चरित है। दूसरा आदित्तसुत्त श्रावस्ती में उपदिष्ट हुआ था। तीसरा आदित्तसुत्त, जो आदित्तपरियायसुत्त के नाम से भी जाना जाता है, गया में उपदिष्ट हुआ। उपर्युक्त सुत्तों की विषय-वस्तु प्रायः समान है। इस सुत्त की चर्चा जा॰ अट्ठ॰ 1.91 तथा 4.161 में भी आई है। अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.82 व 1.227 में और थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.69 में भी इस सुत्त का जिक्र आया है; – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदित्तपरियायं पच्चवेक्खमानोति आदित्तदेसनं ओलोकेन्तो,* महानि॰ अट्ठ॰ 372.

आदित्तपण्णकुटी स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [आदीप्तपर्णकुटी], जलती हुई फूस की झोपड़ी – *तेसं आदित्तपण्णकुटिं विय तयो भवा उपट्ठहिंसु,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.171; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.141.

आदित्तपण्णसाला स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [आदीप्तपर्णशाला], उपरिवत् – **ला** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मयं भणे आदित्तपण्णसाला विय तयो भवाति पब्बजिम्हा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.142; – **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्तानं आदित्तपण्णसालं पविट्ठं विय च मञ्ञमानो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.142.

आदित्तपरियाय पु॰/नपुं॰, महाव॰ तथा स॰ नि॰ में संगृहीत वह उपदेश, जिसमें उपमा द्वारा रूप, वेदना आदि को राग, द्वेष एवं मोह की अग्नि से प्रज्वलित बतलाया गया है – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कतमो च, भिक्खवे, आदित्तपरियायो, धम्मपरियायो,* स॰ नि॰ 2(2).172; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'आदित्तपरियायं वो, भिक्खवे, धम्मपरियायं देसेस्सामि,* स॰ नि॰ 2(2).172; *आदित्तपरियायं पच्चवेक्खमानो,* महानि॰ 365; *उपसम्पन्नो आदित्तपरियायावसाने अरहत्तं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.191; – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निमित्तग्गाहो'तिआदिना आदित्तपरियायेन वेदितब्बा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.129; – **देसना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, आदित्तपरियाय का उपदेश – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं आदित्तपरियायदेसनं सुत्वा सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं ...,* अप॰ अट्ठ॰ 2.281; – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गयासीसे निसीदापेत्वा आदित्तपरियायदेसनाय अरहत्ते पतिट्ठापेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.91; बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 22; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.52; – **सुत्त** नपुं॰, महाव॰ तथा स॰ नि॰ में संगृहीत वह सुत्त, जिसमें रूप, वेदना, चक्षु, स्रोत आदि को राग, द्वेष एवं मोह की अग्नि से प्रज्वलित बतलाया गया है – *आदित्तपरियायसुत्तं निट्ठितं,* महाव॰ 40; *आदित्तागारसदिसे कत्वा दस्सेतुं वट्टती'ति आदित्तपरियायसुत्तं देसेसि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.227; *गयासीसे आदित्तपरियायसुत्तपरियोसाने जटिलसहस्सं अरहत्ते पतिट्ठापेसि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.82.

आदित्तभवत्तय नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आदीप्तभवत्रय], कामभव, रूपभव एवं अरूपभव, इन तीन भवों का दाह या जलन – *रागादीहि एकादसहि अग्गीहि आदित्तं भवत्तयसङ्घातं अङ्गारकासुंयेव,* उदा॰ अट्ठ॰ 290; पाठा॰ आदित्तं भवत्तयसङ्घातं.

आदित्तवग्ग पु., स. नि. के एक वग्ग का शीर्षक, स. नि. 1(1).35-41.

आदित्तसीस त्रि., ब. स. [आदीप्तशीर्ष], वह, जिसका शिर आग से जल रहा है – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *चरेय्यादित्तसीसोव, नत्थि मच्चुस्स नागमो'ति*, स. नि. 1(1).128; महानि. 32; *यथा च डय्हमानो मत्थके आदित्तसीसो तस्स निब्बापनत्थाय वीरियं आरभति*, स. नि. अट्ठ. 1.45; – **सूपम** त्रि., ब. स. [आदीप्तशीर्षोपम], आग से जल रहे शिर जैसा – **मं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *धम्मदायादभावं आकङ्खमानो आदित्तसीसूपमं पच्चवेक्खित्वा*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).102.

आदित्तसुत्त नपुं., स. नि. के अनेक सुत्तों का शीर्षक, स. नि. 1(1).35-36; 2(1).65-66; 2(2).18-19; द्रष्ट. आदित्तदेसना.

आदित्तागार पु., कर्म. स. [आदीप्तागार], आग की लपटों से जल रहा घर – **सदिस** त्रि., आग से जल रहे घर जैसा – **से** पु., द्वि. वि., ब. व. – *इमेसं तयो भवे आदित्तागारसदिसे कत्वा*, अ. नि. अट्ठ. 1.227.

आदिदीघ त्रि., व्याकरण-ग्रन्थों में प्रयुक्त [आदिदीर्घ], प्रारम्भ में दीर्घ अथवा बृहत्, ऐसा शब्द जिसका प्रथम स्वर दीर्घ हो – **घो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आदिदीघो ताव – पाकारो, नीवारो, पासादो, पाकटो, पातिमोक्खो, पाटिकङ्खो इच्चेवमादि*, क. व्या. 405; *तत्थ आदिदीघो ताव, पाकारो, नीवारो पासादो इच्चादि*, सद्द. 3.807.

आदिदीपक अलंकारशास्त्र के विशेष सन्दर्भ में प्रयुक्त [आदिदीपक], दीपक नामक अलङ्कार के तीन प्रभेदों में से वह प्रभेद, जिसमें गाथा का आदि पद अन्य तीन पदों का उपकारक रहे – *दीपकं नाम तं चादिमज्झन्तविसयं तथा*, सुबोधा. 230;(बौद्धलङ्कारशास्त्रम्, नाम से प्रकाशित).

आदिन्न त्रि., आ +√दा का भू. क. कृ. [आदत्त], ले लिया गया, ग्रहण कर लिया गया, स्वीकार किया गया – **न्नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *एवं पञ्चङ्गसमन्नागतं खो, उपालि, अत्तादानं आदिन्नं*, चूळव. 409; *अत्थि खो पन मया अदिन्नं आदिन्नं अहम्पम्हि आपायिको*, स. नि. 2(2).305; – **न्ने** सप्त. वि., ए. व. – *आदिन्ने अनादिन्नसञ्ञी, आपत्ति दुक्कटस्स*, पाचि. 163; – **कप्पक** पु., ग्रहण करने के लिए अनुमोदित – **का** प्र. वि., ब. व. – *अदसा रजितायेव, वट्टतादिन्नकप्पका*, विन. वि. 578; – **तिणकट्ठसाखापलास** त्रि., तृणों, लकड़ियों, शाखाओं एवं पत्तों को पकड़ चुका – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *यथा, महाराज, महतिमहाअग्गिक्खन्धो आदिन्नतिणकट्ठसाखापलासो परियादिन्नभक्खो*, मि. प. 279; – **दण्ड** त्रि., ब. स. [आदत्तदण्ड], **शा. अ.**, दण्ड को धारण किया हुआ, **ला. अ.**, वह, जो अपने दासों आदि को दण्ड-विधान देता हो – **ण्डो** पु., प्र. वि., ए. व. – *यो पन आदिन्नदण्डो हुत्वा ...*, जा. अट्ठ. 2.195; – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *घरा नादिन्नदण्डस्स, परेसं अनिकुब्बतो ...*, जा. अट्ठ. 2.195; – **ण्डानं** ष. वि., ब. व. – *राजूनं आदिन्नदण्डानं आदिन्नसत्थानं एवरूपं खन्तिसोरच्चं भविस्सति*, महाव. 470; – **पुब्ब** त्रि., पूर्वकाल में ग्रहण किया गया – **ब्बं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *तिणसलाकमत्तम्पि अदिन्नं नादिन्नपुब्बं*, जा. अट्ठ. 1.421; – **सत्थ** त्रि., ब. स. [आदत्तशस्त्र], शस्त्र को ग्रहण किया हुआ – **त्थानं** पु., ष. वि., ब. व. – *राजूनं आदिन्नदण्डानं आदिन्नसत्थानं एवरूपं खन्तिसोरच्चं भविस्सति*, महाव. 470.

आदिन्नत्त नपुं., आदिन्न का भाव. [आदत्तत्व], ग्रहण किया जाना – **त्ता** प. वि., ए. व. – *समं आदिन्नत्ता समाधि, विसमं अनादिन्नता समाधि*, पटि. म. 44; *एसितत्ता नेसितत्ता, आदिन्नत्ता अनादिन्नत्ता पटिपन्नत्ता नप्पटिपन्नत्ता ...*, पटि. म. अट्ठ. 1.201.

आदिन्नवन्तु त्रि., आ +√दा का भू. क. कृ. [आदत्तवत्], वह, जो ग्रहण कर चुका है या पकड़ चुका है, पकड़ लिया, ग्रहण कर लिया – **वा** पु., प्र. वि., ए. व. – *सीहबाहुनरिन्दो सो सीहं आदिन्नवा इति*, म. वं. 7.42; *तत्थ आदिन्नवा इती ति सीहं गहितं वा इति सो सीहबाहुनरिन्दो सीहलो नाम जातो ति अत्थो*, म. वं टी. 223(ना.).

आदिपद नपुं., कर्म. स., व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में प्रयुक्त [आदिपद], समास का प्रथम पद, प्रथम स्थान या अवस्था, किसी सन्दर्भविशेष में प्रयुक्त प्रथम शब्द – **दं** द्वि. वि., ए. व. – *अज्झसिं परियाये आरद्धे आदिपदं गहेत्वाव पदभाजनं करीयति*, ध. स. अट्ठ. 189; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *इदं केवलं पुच्छाय आगतस्स आदिपदस्स पच्चुद्धरणमत्तमेव*, परि. अट्ठ. 138; – **दानं** ब. व. – *तत्थ सतिसम्बोज्झङ्गन्तिआदिना नयेन वुत्तानं सत्तन्नं आदिपदानं*, अ. नि. अट्ठ. 1.376.

आदिपरियोसान नपुं., समा., द्व. स. [आदिपर्यवसान], आदि एवं अन्त – **नं** प्र. वि., ए. व. – *एकस्स मज्झं पाकटं होति, न आदिपरियोसानं*, पटि. म. अट्ठ. 2.83.

आदिपाद पु॰, श्रीलङ्का के प्राचीन शासकों के एक उच्च पदाधिकारी की शासकीय उपाधि – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिपादो व सो तस्मा हुत्वा रज्जं विचारयि,* चू॰ वं॰ 48.31.

आदिपादकजम्बु स्त्री॰, श्रीलङ्का के एक प्राचीन स्थान का नाम – *आदिपादकजम्बू ति विस्सुतम्हि पदेसके,* चू॰ वं॰ 61.15.

आदिपादकपुन्नागखण्ड पु॰, श्रीलङ्का के रोहण-क्षेत्र के एक स्थान का नाम – **नाम** त्रि॰, आदिपादपुन्नागखण्ड नाम वाला – **म म्हि** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिपादकपुन्नागखण्डनामम्हि ठानके,* चू॰ वं॰ 75.14.

आदिपाराजिकुट्ठान त्रि॰, ब॰ स॰, प्रथम पाराजिक से उत्पन्न होने वाला – **ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिपाराजिकुट्ठाना, अयन्ति परिदीपिता,* उत्त॰ वि॰ 340.

आदिपुब्बङ्गम त्रि॰, पूर्ववर्तियों में प्रथम, प्रारम्भ में ही पूर्ववर्ती – **मं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मूलनिदानं पठमं आदिपुब्बङ्गमं धुरं* दी॰ वं॰ 4.32; – **मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिपुब्बङ्गमो असि, तस्स दानस्सिदं फलं,* अप॰ 1.338.

आदिपुरिस पु॰, तत्पु॰ स॰ [आदिपुरुष], प्रथम व्यक्ति, पहला पुरुष, प्रथम पुरुष (व्या॰ के सन्दर्भ में) – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यञ्हि लोके अच्छरियट्ठानं बोधिसत्तोव तत्थ आदिपुरिसोति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.299; – **वाचक** त्रि॰, प्रथम पुरुष का अर्थ कहने वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वेधा वा वत्तमानायं, आदिपुरिसवाचको अत्थो भवे ति एतस्स भवती'ति पि युज्जति,* सद्द॰ 1.33.

आदिपोत्थकी पु॰, राजा के भण्डारगृह का अधिकारी – **की** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्समण्डलतित्थट्ठो कित्तिनामादिपोत्थकी,* चू॰ वं॰ 72.27; – **किं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततो रक्खाधिकारिं च सामन्तं चादिपोत्थकिं,* चू॰ वं॰ 72.160; *क्यानगामे नियोजेत्वा कित्तिनामादिपोत्थकिं,* चू॰ वं॰ 72.207.

आदिप्पति आ +√दिप का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आदीप्यते], प्रकाशित होता है, चमकता है, जलता है – **न्ति** ब॰ व॰ – *अयञ्च महापथवी सिनेरु च पब्बतराजा आदिप्पन्ति पज्जलन्ति एकजाला भवन्ति,* अ॰ नि॰ 2(2).239.

आदिप्पन नपुं॰, आ +√दिप से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, प्रकाशित होना, प्रभास्वर होना, जाज्वल्यमान होना, तेज प्रभा वाला होना – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिप्पनतो पन आदिच्चो,* लीन॰ (दी॰नि॰टी॰) 3.137.

आदिब्रह्मचरिय नपुं॰, ब्रह्मचर्य अथवा आर्यमार्ग के प्रारम्भ में ही पालनीय शील, ब्रह्मचर्य-जीवन की पूर्णता हेतु प्रारम्भ में ही पालनीय प्राणातिपात से विरति आदि पांच, आठ या दश शील – *आदिब्रह्मचरियं तु तदञ्ञं सीलमीरितं,* अभि॰ प॰ 431; *ब्रह्मचरियस्स अरियस्स मग्गस्स आदिम्हि तदत्थाय च चरितब्बता आदिब्रह्मचरियं,* अभि॰ प॰ सूची॰ 37; – **यं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदि ब्रह्मचरियस्साति आदिब्रह्मचरियं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.30; – **यं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तिण्णविचिकिच्छो खो पन सो भगवा विगतकथंकथो परियोसितसङ्कप्पो अज्झासयं आदिब्रह्मचरियं,* दी॰ नि॰ 2.165; *आदिब्रह्मचरियं पटिजानन्ति, तेसाहमस्मि,* म॰ नि॰ 2.434; *आदिब्रह्मचरियन्ति ब्रह्मचरियस्स आदिभूता उप्पादका जनकाति एवं पटिजानन्तीति वुत्तं होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.318 – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *करणत्थे पच्चत्तवचनं, अधिकासयेन उत्तमनिस्सयभूतेन आदिब्रह्मचरियेन पेराणब्रह्मचरियभूतेन च अरियमग्गेन,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.225.

आदिब्रह्मचरियक त्रि॰, [बौ॰ सं॰ आदिब्रह्मचर्यक], भिक्षुजीवन के आधारभूत शीलों से सम्बद्ध, ब्रह्मचर्य के मार्ग के आदि में अथवा पूर्वभाग में आया हुआ, बुद्ध की त्रिविध शिक्षाओं में आदिभूत शील की शिक्षा के साथ सम्बद्ध – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिब्रह्मचरियकोति मग्गब्रह्मचरियस्स आदि पुब्बभागप्पटिपत्तिभूतो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.180; *आदिब्रह्मचरियकोति सिक्खत्तयसङ्गहस्स सकलसासनब्रह्मचरियस्स आदिभूतो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.197; – **यिका** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिब्रह्मचरियिकाति मग्गब्रह्मचरियस्स आदिभूतानं चतुन्नं महासीलानमेतं अधिवचनं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.392; – **य** च / ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिब्रह्मचरियकायाति सेक्खपण्णत्तियं विनेतुं न पटिबलोति अत्थो,* महाव॰ अट्ठ॰ 259; – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नादिब्रह्मचरियकन्ति सिक्खत्तयसङ्खातस्स सासनब्रह्मचरियकस्स न आदिमत्तं, अधिसीलसिक्खामत्तम्पि न होति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.280; *न आदिब्रह्मचरियकन्ति ब्रह्मचरियस्स आदिमत्तम्पि पुब्बभागसीलमत्तम्पि न होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.103; – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *नेते, भिक्खवे, वितक्का अत्थसंहिता नादिब्रह्मचरियका ...,* स॰ नि॰ 3(2).481; – **कानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अत्थसंहितानि, भिक्खवे, धम्मचेतियानि आदिब्रह्मचरियकानी'ति,* म॰ नि॰ 2.333.

आदिभावभूत त्रि., [आदिभावभूत], आदि में या प्रारम्भिक अवस्था में विद्यमान – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *मग्गब्रह्मचरियस्स आदिभावभूतन्ति आदिब्रह्मचरियकं,* विसुद्धि. 1.12; *आदिभावभूतन्ति आदिम्हि भावेतब्बतं निप्फादेतब्बतं भूतं पत्तं आदिभावभूतं,* विसुद्धि. महाटी. 1.31.

आदिभिक्खा स्त्री., कर्म. स. [आदिभिक्षा], प्रथम भिक्षादान, सर्वोत्तम भिक्षादान – **क्खं** द्वि. वि., ए. व. – *हट्ठो हट्ठेन चित्तेन, आदिभिक्खमदासहं,* अप. 1.46; *आदिभिक्खं पठमं आहारं बुद्धभूतस्स अहं अदासिन्ति सम्बन्धो,* अप. अट्ठ. 1.308.

आदिभूत त्रि., [आदिभूत], 1. व्याकरण के सन्दर्भ में, किसी भी शब्द के आदि में आया हुआ – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *वेदानमादिभूतं सा, सावित्ती तिपदं सिया,* अभि. प. 417; – **तानं** पु., ष. वि., ब. व. – *इ–उ इच्चेतेसं आदिभूतानं मा वुद्धि होति,* क. व्या. 403; 2. मूलभूत पूर्ववर्ती, प्रारम्भ में ही अथवा प्रथम स्थान में रहने वाला – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आदिकम्मिको नाम यो तस्मिं तस्मिं कम्मे आदिभूतो,* पारा. अट्ठ. 1.216; *यो तस्मिं तस्मिं वत्थुस्मिं आदिभूतो, सो आदिकम्मिको,* कङ्खा अट्ठ. 118; – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *न आदिब्रह्मचरियकन्ति सिक्खत्तयसङ्गहितस्स सकलसासनब्रह्मचरियस्स आदिभूतं न होति,* दी. नि. अट्ठ. 3.89; *निब्बिदानुलोमञाणेसु विय आदिभूतं मुञ्चितुकम्यताञाणं अग्गहेत्वा,* पटि. म. अट्ठ. 2.111; स. उ. प. के रूप में **संयोगा.-** त्रि., तत्पु. स., संयुक्त अक्षर-समूह के आदि में आया हुआ – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *संयोगादिभूतो नकारो निग्गहीतमापज्जते,* क. व्या. 609; स. पू. प. के रूप में, – **त्त** नपुं., भाव. [आदिभूतत्व], आदिभूत होना, प्रारम्भ में आना – **त्ता** प. वि., ए. व. – *ञाणस्स पटिपत्तिमलविसोधकत्तेन पटिपत्तिया आदिभूतत्ता,* पटि. म. अट्ठ. 1.8; *मुदुभूतो हि पुब्बभागसमाधि आदिभूतत्ता समं एसति, विसमं नेसति नाम,* पटि. म. अट्ठ. 1.201.

आदिमग्ग पु., तत्पु. स. [आदिमार्ग], मार्ग का प्रथम चरण, सोतापत्ति-मार्ग – *दिट्ठ्यादिमग्गो ञाणक्खिक्खणलद्धिसु दस्सनं,* अभि. प. 888; – **ग्गो** प्र. वि., ए. व. – *आदिमग्गो तयो पाका, आरुप्पा च तथूपरि,* अभि. अव. 267; – **ग्गेन** तृ. वि., ए. व. – *आदिमग्गेन संयुत्तं, ञाणन्ति ञाणदस्सनं,* अभि. अव. 1338.

आदिमज्झ नपुं., समा. द्व. स. [आदिमध्य], आदि एवं मध्य, किसी अक्षरसमूह का आदि एवं मध्य – **ज्झं**[1] प्र. वि., ए. व. – *एकस्स परियोसानं पाकटं होति, न आदिमज्झं,* ..., पटि. म. अट्ठ. 2.82; – **ज्झं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *सो सज्झायं करोन्तो आदिमज्झंयेव पस्सति, ... 'इमस्स सिप्पस्स आदिमज्झमेव पस्सामि, नो परियोसान'न्ति,* खु. पा. अट्ठ. 157; – **ज्झेसु** सप्त. वि., ब. व. – *अन्ते पञ्ञायमाने आदिमज्झेसु अपञ्ञायमानेसु* ..., ध. प. अट्ठ. 2.321; स. पू. प. के रूप में, – **कथापरियोसान** नपुं., समा., द्व. स., किसी भी कथा का प्रारम्भ, मध्य एवं अन्त – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *आनन्दो गिज्झराजा कुणालस्स आदिमज्झकथापरियोसानं विदित्वा* ..., जा. अट्ठ. 5.445; – **ज्झन्तसोभण** त्रि., ब. स., आदि, मध्य एवं अन्त में शुभ – **णं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *सुत्वान तं धम्मवरं, आदिमज्झन्तसोभणं,* अप. 2.152; – **ज्झन्तभाव** पु., प्रारम्भ, मध्य एवं अन्त की अवस्था – **वेसु** सप्त. वि., ब. व. – *आदिमज्झन्तभावेसु ये अनत्थावहा इमे,* सद्धम्मो. 99; – **परियोसान** नपुं., समा., द्व. स. [आदिमध्यपर्यवसान], प्रारम्भ, मध्य एवं अन्त – **नं**[1] प्र. वि., ए. व. – *तत्थ अत्थि देसनाय आदिमज्झपरियोसानं, अत्थि सासनस्स,* अ. नि. अट्ठ. 2.164; – **नं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *अत्तनो सिप्पस्स आदिमज्झपरियोसानं ओलोकेन्तो,* मि. प. 9; – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *कुहिं इमस्स सुत्तस्स सब्बानि सच्चानि पस्सितब्बानि, आदिमज्झपरियोसानेति ?* नेत्ति. 20; – **ज्झुत्तर** त्रि., आदि, मध्य एवं अन्त में आने वाला – **रेसु** सप्त. वि., ब. व. – *तेसु आदिमज्झुत्तरेसु जिनवचनानुपरोधेन क्वचि वुद्धि होति, क्वचि लोपो होति,* क. व्या. 406; सद्द. 3.808-809.

आदिमनसिकार पु., तत्पु. स., मन द्वारा आलम्बन को ग्रहण करने की प्रारम्भिक अवस्था – **रेन** तृ. वि., ए. व. – *थेरस्स अन्तेवासिका आदिमनसिकारेनेव दिट्ठीनं समुच्छेदप्पहानं होतीति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 1(1).191.

आदिमलय पु., श्रीलङ्का के शासक विजयबाहु प्रथम के एक सेनापति का नाम – *विस्सुतो आदिमलयनामेन बलनायको,* चू. वं. 59.4.

आदिमुख नपुं., घर का द्वार-कक्ष, प्रवेशकक्ष – **खं** प्र. वि., ए. व. – *चतुद्वारे च तत्थेव, आदिमुखमकारयि,* म. वं. 35.119.

आदिय[1] 1. त्रि., आ +√दा के कर्म. वा. का सं. कृ. [आदेय], **शा. अ.,** ग्राह्य, स्वीकार्य, वह, जिसे ग्रहण किया जाए, **ला. अ.,** ग्राह्यता का कारण – **यो** पु., प्र.

वि॰, ए॰ व॰ – *अयं पञ्चमो भोगानं आदियो,* अ॰ नि॰ 2(1).42; – **या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पञ्चिमे, गहपति, भोगानं आदिया,* अ॰ नि॰ 2(1).41; *पञ्चमस्स पठमे भोगानं आदियाति भोगानं आदातब्बकारणानि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.22; – **ये** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *इमे पञ्च भोगानं आदिये आदियतो* ..., अ॰ नि॰ 2(1).42; **2.** आ+दर का सं॰ कृ॰, आदरणीय, सम्मान करने योग्य – **ये** स्त्री॰, संबो॰ ए॰ व॰ – *भोति अय्ये, भोति कञ्ञे, भोति घरादिये,* क॰ व्या॰ 114, 242.

आदिय² त्रि॰, [आद्य], प्रारम्भ वाला, आदि में विद्यमान – **येन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदियेनेव ते मद्दि, दुक्खं नक्खातुमिच्छिसं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.344; *तत्थ आदियेनेवाति आदिकेनेव,* तदे॰; – **या** स्त्री॰, प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिया थूलमूलानि खुद्दकानितराहि तु,* म॰ वं॰ 18.44; *आदिया थूलमूलानि ति तासु मूललेखाय तावदेव बुब्बुळका हुत्वा दसमहामूलानि निक्खमित्वा ओतरुं ति सम्बन्धो,* म॰ वं॰ टी॰ 354(ना॰).

आदियसुत्त अ॰ नि॰ का एक सुत्त, अ॰ नि॰ 2(1).41-42.

आदियति¹ आ +√दा का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आदत्ते/आद्रियते ?], **शा॰ अ॰,** ले लेता है, ग्रहण कर लेता है, प्राप्त करता है, अपना बना लेता है, स्वीकार कर लेता है, पकड़ लेता है, अपना लेता है – *आपुब्बो गहणे, अदिन्नं आदियति,* सद्द॰ 2.480; *चोरो नाम यो पञ्चमासकं वा अतिरेकपञ्चमासकं वा अग्घनकं अदिन्नं थेय्यसङ्खातं आदियति,* पारा॰ 53; *लोके अदिन्नमादियति, परदारञ्च गच्छति,* ध॰ प॰ 246; *यथा च रसलोलो अन्धो भत्ते उपनीते यंकिञ्चि समक्खिकम्पि निम्मक्खिकम्पि आमिसं आदियति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.362; – **न्ति** ब॰ व॰ – *न ते भवं अट्ठममादियन्ति,* सु॰ नि॰ 232; *तेसं निरुद्धता अत्थङ्गतत्ता न अट्ठमं भवं आदियन्ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.249; *आदियन्ति च निरस्सजन्ति चाति पलिबोधं करोन्ति च विस्सज्जेन्ति च खिपन्ति च,* महानि॰ अट्ठ॰ 172; – **न्तो/मानो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदियन्तचतुक्के पादं वा अतिरेकपादं वा सहत्था आदियन्तो गरुकं आपज्जति,* परि॰ अट्ठ॰ 171; *इमं खो अहं अत्तादानं आदियमानो लभिस्सामि ...,* चूळव॰ 408; – **य** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"आदिय, भो, निक्खिप, भो"ति,* म॰ नि॰ 3.174; – **न्तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *"आदियन्तु खो भिक्खुनियो उदकसुद्धिक"न्ति,* पाचि॰ 357; – **थ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – ... *"यानि इमस्मिं सत्थे महासारानि पणियानि, तानि आदियथा"ति,* दी॰ नि॰ 2.255; – **ये/येय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पाणं न हञ्ञे न चदिन्नमादिये,* अ॰ नि॰ 1(1).244; *यो पन भिक्खु अदिन्नं थेय्यसङ्खातं आदियेय्य,* पारा॰ 51; – **येय्यं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अहञ्चेव खो पन परस्स अदिन्नं थेय्यसङ्खातं आदियेय्यं,* स॰ नि॰ 3(2).420; – **येय्याम** ब॰ व॰ – *"यंनून मयम्पि परेसं अदिन्नं थेय्यसङ्खातं आदियेय्यामा"ति,* दी॰ नि॰ 3.48; – **यि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"सच्चं किर त्वं, धनिय, रञ्ञो दारूनि अदिन्नं आदियी"ति,* पारा॰ 50; – **यिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अनेकगुणसम्पन्नं, पवत्तफलमादियिं,* बु॰ वं॰ 296; – **यिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"कथञ्हि नाम आयस्मा धनियो कुम्भकारपुत्तो रञ्ञो दारूनि अदिन्नं आदियिस्सती"ति,* पारा॰ 50; – **यिस्ससि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"कथञ्हि नाम त्वं, मोघपुरिस, रञ्ञो दारूनि अदिन्नं आदियिस्ससि,* तदे॰; – **यिस्सामि/यिस्सं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *हन्त्वानिमं हदयमानयिस्स"न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.202; – **यिस्सन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – ... *उदाहु आदियिस्सन्ती"ति,* मि॰ प॰ 144; – **यिस्साम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तिण्हानि सत्थानि कारापेत्वा येसं अदिन्नं थेय्यसङ्खातं आदियिस्साम,* दी॰ नि॰ 3.49; – **दिय/यित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *तम्माक विज्जञ्च सुतञ्च आदिय,* जा॰ अट्ठ॰ 2.187; *अनापत्तिआदियित्वा परिभुञ्जति,* पाचि॰ 163; **ला॰ अ॰ 1.,** आश्रय लेता है, सहारा लेता है, मान बैठता है, (प्रायः अधिकरण शब्द के साथ प्रयुक्त) – **ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *कम्मन्तं कारेति, अधिकरणं आदियति पामोक्खेसु भिक्खूसु पटिविरुद्धो होति,* अ॰ नि॰ 2(1).161; *एत्थ सासनं सोधेतुकामो भिक्खु यं अधिकरणं अत्तना आदियति,* चूळव॰ अट्ठ॰ 124; – **न्ति** ब॰ व॰ – *यस्सं परिसायं भिक्खू अधिकरणं आदियन्ति ...,* अ॰ नि॰ 1(1).90; – **यिस्साम** भवि॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *इमं अधिकरणं आदियिस्साम,* चूळव॰ 468; **ला॰ अ॰ 2.,** हाथ में ले लेता है, निष्पादित करता है (केवल निषे॰, वर्त॰ कृ॰ के रूप में प्रयुक्त रहने पर) – **अनादियन्तं** पु॰, वर्त॰ कृ॰ का निषे॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, नहीं करने वाले को – *सम्हानि कम्मानि अनादियन्तं,* सु॰ नि॰ 256; *तस्स कम्मानि अनादियन्तं करणत्थाय असमादियन्तं, अथ वा चित्तेन तत्थ आदरमत्तम्पि अकरोन्तं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.271; **ला॰ अ॰ 3.,** मन में ले आता है, मानता है, सहमत होता है, ध्यान देता है – **ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *राजा आह किं ते तत्थ बलं अत्थि, को वा ते वचनं आदियति अनुम्मत्तो,* मि॰ प॰ 128; – **यि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *तस्सा वचनं*

नादियि, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.176; – **अनादियित्वा** पू॰ का॰ कृ॰, निषे॰, नहीं मान कर – *संङ्घभेदो'तिआदीहि ओवदितोपि सत्थु वचनं अनादियित्वा पक्कन्तो आयस्मन्तं आनन्दं राजगहे पिण्डाय चरन्तं दिस्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.82; **ला॰ अ॰ 4.,** (किसी की) आज्ञा को मानता है, आज्ञाकारी होता है, अनुसरण करता है, वशवर्ती हो जाता है – **ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सा नेव सस्सुं आदियति, न ससुरं आदियति, न सामिकं आदियति,* अ॰ नि॰ 2(2).229; *न ससुरं आदियतीति वचनं न गण्हाति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.178; – **न्ति** ब॰ व॰ – *नेव महाराजानं आदियन्तीति वचनं न गण्हन्ति, आणं न करोन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.136; **ला॰ अ॰ 5.,** दृढ़तापूर्वक पकड़ लेता है, किसी विचार या धारणा के साथ स्वयं को जोड़ देता है – **अनादियानं** पु॰, वर्त॰ कृ॰, निषे॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं ब्राह्मणं दिट्ठिमनादियानं, केनीध लोकस्मिं विकप्पयेय्य,* सु॰ नि॰ 808; *तं ब्राह्मणं दिट्ठिमनादियन्तं अगण्हन्तं अपरामसन्तं अनभिनिवेसन्तन्ति,* महानि॰ 80; – **यिस्सन्ति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *उक्कलेस्सन्ति नु खो मम सावका मया विसज्जापीयमाना ममच्चयेन खुद्दानुखुद्दकानि सिक्खापदानि, उदाहु आदियिस्सन्ती'ति,* मि॰ प॰ 144.

आदियति[2] व्यु॰ संदिग्ध, आ +√दा अथवा आ +√दर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आद्रियते], 1. आदर करता है, सम्मान करता है, प्रतिष्ठा करता है, 2. स्वयं को पूरी तरह से लगा देता है, मन लगाता है, 3. आदियति के ही अर्थों में – *अनादरो नाम सङ्घं वा गणं वा पुग्गलं वा कम्मं वा नादियति,* पाचि॰ 294; *एकपुग्गलं वा तं कम्मं वा न आदियति, न अनुवत्तति, न तत्थ आदरं जनेतीति अत्थो,* पाचि॰ अट्ठ॰ 166; – **यि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *एवम्पि खो आयस्मा उदायी विसाखाय मिगारमातुया वुच्चमानो नादियि,* पारा॰ 293; *नादियीति तस्सा वचनं न आदियि, न गण्हि, न वा आदरमकासीति अत्थो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.194; – **यिस्सन्ति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *नादियिस्सन्तुपज्झाये, खलुङ्को विय सारथिं,* थेरगा॰ 976; *नादियिस्सन्तुपज्झायेति उपज्झाये आचरिये च आदरं न करोन्ति, तेसं अनुसासनियं न तिट्ठन्ति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.313; – **अनादियित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ का निषे॰, अनादर करके, स्वीकार न करके – *अथ खो सो यक्खो तं यक्खं अनादियित्वा,* उदा॰ 113; *अनादियित्वाति आदरं अकत्वा, तस्स वचनं अग्गहेत्वा,* उदा॰ अट्ठ॰ 199.

आदियनमुख त्रि॰, ब॰ स॰, कही गई बात पर तुरन्त विश्वास कर लेने वाला, भोलाभाला, कान का कच्चा – **खो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदेय्यमुखोति आदियनमुखो गहणमुखोति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.51; *सद्दहनट्ठेन हि आदानेन एस आदियनमुखोति वुत्तो,* तदे॰.

आदियनवत्थु नपुं॰, न दी गई वस्तु को ग्रहण कर लेने के अपराध से सम्बद्ध एक सिक्खापद – **स्मिं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रञ्ञो दारूनि अदिन्नं आदियनवत्थुस्मिं पञ्ञत्तं,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 123; *सावत्थियं अञ्ञतरं भिक्खुनिं आरब्भ जतुमट्ठकसादियनवत्थुस्मिं पञ्ञत्तं,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 300.

आदियापेति आ +√दा के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, ग्रहण कराता है, स्वीकार कराता है – *न अदिन्नं आदियति, न अदिन्नं आदियापेति, न अदिन्नं आदियतो समनुञ्ञो होति,* दी॰ नि॰ 3.35.

आदियाम पु॰, तत्पु॰ स॰, रात्रि का प्रथम याम – **मे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदियामे नमस्सामि, मज्झिमे अथ पच्छिमे,* अप॰ 1.50.

आदिरस्स त्रि॰, ब॰ स॰, व्याकरण में प्रयुक्त [आदिह्रस्व], वह वर्णसमूह, जिस का आदिस्वर ह्रस्व हो – **स्सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिरस्सो ताव – पगेव इच्चेवमादि,* क॰ व्या॰ 405; *तत्थ आदिरस्सो – पगेव इच्चादि,* सद्द॰ 3.808.

आदिराज पु॰, कर्म॰ स॰ [आदिराजन्], प्रथम राजा, श्रीलङ्का का प्रथम शासक – **जा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मिंयेव वस्से सीहकुमारस्स पुत्तो तम्बपण्णिदीपस्स आदिराजा विजयकुमारो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.51; *भागीरथानन्ति पन पाठे भागीरथो नाम आदिराजा,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.144.

आदिलोप पु॰, व्याकरण में प्रयुक्त [आदिलोप], प्रथम वर्ण का लोप, आदिभूत वर्ण का लोप – **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिलोपो ताव – तालीसं इच्चेवमादि,* क॰ व्या॰ 406; *कालिङ्गो इच्चादि, आदिलोपो तालीसं इच्चादि,* सद्द॰ 3.809.

आदिवण्ण पु॰, कर्म॰ स॰ [आदिवर्ण], प्रथम वर्ण, आदिभूत वर्ण – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चत्तालीससद्दस्स गणने परियापन्नस्स आदिवण्णस्स लोपो होति,* सद्द॰ 3.800; – **ण्णानं** ब॰ व॰ – *क्वचादिवण्णानमेकस्सरानं द्वेभावो,* क॰ व्या॰ 460.

आदिविकार पु॰, तत्पु॰ स॰, व्याकरण का परिभाषिक शब्द, किसी शब्द के प्रथम या आदि वर्ण में ध्वनि-परिवर्तन – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिविकारो ताव – आरिस्सं, आसभं*

आण्यं इच्चेवमादि, क॰ व्या॰ 406; *तत्थ उत्तरआगमो वेदल्लं इच्चादि आदिविकारो आरिस्यं आसभं इच्चादि,* सद्द॰ 3.810.

आदिविपरीत पु॰, तत्पु॰ स॰, व्याकरण का पारिभाषिक शब्द, आदि-स्वर का रूपान्तरण या परिवर्तन – **तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिविपरीतो ताव – उग्गते सुरिये, उग्गच्छति इच्चेवमादि,* क॰ व्या॰ 406; *यानि तानि इच्चादि, आदिविपरीतो उज्ञातं 'दहरो ति न उज्ञातब्बो ऊहतो; रजो' इच्चादि,* सद्द॰ 3.810.

आदिविसोधनट्ठ पु॰, तत्पु॰ स॰, आदिभूत धर्म के विशोधन का तात्पर्य, सर्वप्रथम आए हुए धर्म की विशुद्धि का अर्थ – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"... आधिपतेय्यट्ठेन आदिविसोधनट्ठेन अधिमत्तट्ठेन, अधिट्ठानट्ठेन, परियादानट्ठेन, पतिट्ठापकट्ठेन",* पटि॰ म॰ 209; *आदिविसोधनट्ठेनाति कुसलानं धम्मानं आदिभूतस्स सीलस्स विसोधनट्ठेन,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.129.

आदिवुड्ढि / आदिवुद्ध स्त्री॰, केवल व्याकरण के सन्दर्भ में प्रयुक्त [आदिवृद्धि], किसी भी शब्द के आदिस्वर की वृद्धि – **ड्ढि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिवुड्ढि ताव – आभिधम्मिको, वेनतेय्यो इच्चेवमादि,* क॰ व्या॰ 406; *तत्थ आदिवुड्ढि ताव; आभिधम्मिको इच्चादि,* सद्द॰ 3.809.

आदिव्यञ्जन नपुं॰, व्याकरण में ही प्रयुक्त [आदिव्यञ्जन], विसंयुक्त व्यञ्जनों में आदिभूत व्यञ्जन ध्वनि – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिसरस्स वा असंयोगन्तस्स आदिब्यञ्जनस्स वा सरस्स वुद्धि होति,* क॰ व्या॰ 402.

आदिसति आ +√दिस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आदिशति / आदिशते], **1.** संकेत करता है, प्रदर्शित करता है, कहता है, वर्णन करता है, उद्घोषित करता है, सूचित करता है, भविष्यवाणी करता है, भविष्य की ओर संकेत करता है – *यो अतीतं आदिसति, (इच्चायस्मा पोसालो) अनेजो छिन्नसंसयो,* सु॰ नि॰ 1118; चूळनि॰ 148; *यो भगवा अत्तनो च परेसञ्च "एकम्पि जातिं"न्तिआदिभेदं अतीतं आदिसति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.293; चूळनि॰ अट्ठ॰ 44; – **न्ति** ब॰ व॰ – *लक्खणपाठका लक्खणं आदिसन्ति,* महानि॰ 281; – **न्तं** पु॰, वर्त॰ कृ॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समणं ब्राह्मणं वा कं, आदिसन्तं पभङ्गुनं,* थेरगा॰ 751; *आदिसन्तन्ति देसेन्तं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.241; – **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *जत्वा हत्थेन आदिसि,* म॰ वं॰ 5.52; – **सित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *एवं तं तं आदिसित्वा निमित्तमनुयुत्ता विहरन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.82; **2.** अनुमान करता है, दूसरे के मन की बात को भांपता है – **ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *इध, केवट्ट, भिक्खु परसत्तानं परपुग्गलानं चित्तम्पि आदिसति,* दी॰ नि॰ 1.197; *आदिसतीति कथेति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.291; – **न्तं** वर्त॰ कृ॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चेतसिकम्पि आदिसन्तं ...,* दी॰ नि॰ 1.197; **3.** दान अथवा उपहार को संकेतित करता है, दान अथवा उपहार प्रदान करता है – **सन्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *इमे दायका दानं दत्वा पुब्बपेतानं आदिसन्ति,* मि॰ प॰ 271; – **स** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *एतं अच्छादयित्वान, मम दक्खिणमादिस,* पे॰ व॰ 62; ... *ममदक्खिणमादिसाति एतं उपासकं ... तं दक्खिणं मय्हं आदिस पत्तिदानं देहि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 42; – **सेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ ... ... *दारुणं कम्मं कत्वा पुब्बपेतानं आदिसेय्य 'इमस्स मे कम्मस्स विपाको पुब्बपेतानं पापुणातू'ति,* मि॰ प॰ 272; – **सेय्यासि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तञ्च भिक्खुसङ्घं परिविसित्वा मम दक्खिणं आदिसेय्यासि,* अ॰ नि॰ 2(2).207; – **सी** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *कुटियो अन्नपानञ्च, मातु दक्खिणमादिसी,* पे॰ व॰ 123; – **सिंसु / सुं** ब॰ व॰ – ... *भिक्खुसङ्घस्स महादानं दत्वा तस्सा दक्खिणमादिसिंसु,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 46; – **सिस्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पदक्खिणञ्च कत्वान, आदिसिस्सामि दक्खिणं,* थेरीगा॰ 309; – **सित्वान** पू॰ का॰ कृ॰ – *चापाय आदिसित्वान, पब्बजिं अनगारियं,* थेरीगा॰ 312.

आदिसद्द पु॰, कर्म॰ स॰ [आदिशब्द], 'आदि' शब्द – **द्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिसद्दो'यं पकारे वत्तते,* रू॰ सि॰ 147(टी॰); – **द्देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिसद्देन सब्बेपेते दुक्खवेदनाय सहगता,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.343; *एतस्स पुरिमेन आदिसद्देन अनन्तरेन च सस्सतसद्देन सम्बन्धो होति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.32; – **लोप** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आदिशब्दलोप], आदिशब्द का लोप – **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एत्थ आदिसद्दलोपो कतोति वेदितब्बो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.74.

आदिसन नपुं॰, आ +√दिस से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, संकेत, अनुमान, निर्वचन, व्याख्यान – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ वा इति एवं आदिसनं आदेसनापाटिहारियन्ति आदेसनसद्दो पाठसेसं कत्वा पयुज्जितब्बो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.286.

आदिसर पु॰, तत्पु॰ स॰ [आदिस्वर], किसी भी शब्द में आया हुआ प्रथम स्वर – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिसरस्स वा असंयोगन्तस्स आदिब्यञ्जनस्स वा सरस्स वुद्धि होति सणकारे पच्चये परे,* क॰ व्या॰ 402; *आदि–मज्झ–उत्तरसरानं क्वचि दीघ-रस्सत्तं,* सद्द॰ 3.807.

आदिस्स[1] **/ आदिय** त्रि., आ +√दिस से व्यु., सं. कृ. [आदेश्य], **शा. अ.**, संकेतित किए जाने योग्य, **ला. अ.**, निन्दनीय – *अहम्पि तेन न आदियो भवेय्यं,* म. नि. 1.17; पाठा. आदिस्सो; – **या / स्सा** पु., प्र. वि., ब. व. – *तुम्हेपि तेन आदिया भवेय्याथ,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).99.

आदिस्स[2] आ +√दिस का पू. का. कृ. [आदिश्य], **1.** संकेत करके, निर्देश करके, **2. द्वि. वि. में अन्त होने वाले नाम के उपरान्त प्रयुक्त होने पर,** के विषय में, के सन्दर्भ में, दृष्टि में रखकर – *तासं इत्थीनं वचमग्गं पस्सावमग्गं आदिस्स वण्णम्पि भणति अवण्णम्पि भणति,* पारा. 188, 191; *कल्याणमित्तता मुनिना, लोकं आदिस्स वण्णिता,* थेरीगा. 213; *लोकं आदिस्स वण्णिताति कल्याणमित्ते अनुगन्तब्बन्ति सत्तलोकं उद्दिस्स ...,* थेरीगा. अट्ठ. 199; **3. क्रि. वि. के रूप में प्रयुक्त होने पर तथा दुहरा कर प्रयुक्त होने पर,** पुनः पुनः व्यवस्थापित करके, यह है अथवा वह है, इस तरह से सूचित करके, विशिष्ट स्वरूप को संकेतित करके अथवा अभिव्यक्त करके – *आदिस्स जम्मनं ब्रूहि, गोत्तं ब्रूहि सलक्खणं,* सु. नि. 1024; *तत्थ आदिस्साति "कतिवस्सो"ति एवं उद्दिस्स,* सु. नि. अट्ठ. 2.274; *विनय परियत्तिया वण्णं भासति, आदिस्स आदिस्स आयस्मतो उपालिस्स वण्णं भासति,* चूळव. 298; *आदिस्स आदिस्साति पुनप्पुनं ववत्थपेत्वा विसुं विसुं कत्वा,* पाचि. अट्ठ. 133.

आदीन नपुं., [आदेण्य], अत्यधिक दीनता, संकटमयी अवस्था, दुःख – **नं**, द्वि. वि., ए. व. – *आदीनवो ति आदीनं दुक्खं वाति अधिगच्छति एतेना ति आदीन-वो दोसो,* सद्द. 2.480; *अथ वा आदीनं वाति गच्छति पवत्ततीति आदीनवो,* विसुद्धि. 2.247; पटि. म. अट्ठ. 2.292.

आदीनव पु./नपुं., [आदीनव], विपत्ति, दुष्परिणाम, भय, खतरा, अनित्य, दुख एवं अनात्म इन के रूप में विद्यमान दोष – *भावोधिमुत्ति छन्दोथ, दोसो आदीनवो भवे,* अभि. प. 766; – **वो** प्र. वि., ए. व. – *दिस्वानस्स आदीनवो पातुरहोसि,* महाव. 19; *आदीनवो पातुरहु,* थेरगा. 269; ... *तत्थ मे अनेकाकारआदीनवो दोसो पातुरहोसि,* थेरगा. अट्ठ. 2.3; ... *आदितो ताव दोसे आदीनवो,* विसुद्धि. 1.283; *आदीनवो दट्ठब्बो पाणघातादिवसेन दिट्ठधम्मिकसम्परायिकादिअनत्थमूलभावतो,* विसुद्धि. महाटी. 1.330; – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *आदीनवं सम्मसिता भवेसु,* सु. नि. 69; *आदीनवं सम्मसिता भवेसूति ताय अनुधम्मचरितासङ्खाताय विपस्सनाय अनिच्चाकारादिदोसं तीसु भवेसु समनुपस्सन्तो,* सु. नि. अट्ठ. 1.98; – **वे** सप्त. वि., ए. व. – *कथं भयतुपट्ठाने पञ्ञा आदीनवे ञाणं ?,* पटि. म. 52; – **तो** प. वि., ए. व. – *सुञ्ञतो अनत्ततो आदीनवतो विपरिणामधम्मतो असारकतो ...,* पटि. म. 406; *पवत्तिदुक्खताय दुक्खस्स च आदीनवताय आदीनवतो,* पटि. म. अट्ठ. 2.292; – **वा** प्र. वि., ब. व. – *संविज्जन्तस्स इधेकच्चे आदीनवा'ति,* म. नि. 1.400; *ताव एकच्चे मानातिमानादयो आदीनवा न संविज्जन्ति ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).279; – **वेहि** तृ. वि., ब. व. – *इमेहि आदीनवेहि अयं ञानपरिहानि,* पेटको. 267; स. उ. प. के रूप में; **अदिट्ठा.**- पु., नहीं देखी गयी व्यथा, विपत्ति अथवा दोष – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *न च सक्का किञ्चि अदिट्ठादीनवं पहातुं,* विसुद्धि. 1.283; **अनेका.**- पु., अनेक प्रकार की विपत्तियां, संकट अथवा दुःख – ... *तापसपब्बज्जूपगमनेन अनेकादीनवाकुला गहट्ठभावा अभिनिक्खमित्वा गतोति,* चरिया. अट्ठ. 125; **अविज्जापटिच्छादिता.** – पु., अज्ञान के द्वारा प्रतिच्छादित होने के कारण उत्पन्न दोष, दुःख अथवा विपत्ति – **वे** सप्त. वि., ए. व. – *तदेवं पवत्तमानं तण्हाअविज्जानं अप्पहीनत्ता अविज्जापटिच्छादितादीनवे,* विभ. अट्ठ. 154; **कामा.**- पु., कामनाओं के कारण उत्पन्न दुःख, विपत्ति या दोष, कामभोगों में अन्तर्निहित दुःख या विपत्ति – **वेन** – तृ. वि., ए. व. – *एवं कामादीनवेन तज्जेत्वा नेक्खम्मे आनिसंसं पकासेसि,* उदा. अट्ठ. 231; **दिट्ठा.**- पु., दिखलायी दे रही विपत्ति, दुःख अथवा दोष – **तो** प. वि., ए. व. – *अथेवं दिट्ठादीनवतो दोसतो चित्तं विवेचनत्थाय ... मेत्ताभावना आरभितब्बा,* विसुद्धि. 1.283-284; *आरुप्पानेव जायन्ते, दिट्ठादीनवतो किर,* अभि. अव. 262; **निरा.**- त्रि., दीनता, दुःख या संकट से मुक्त – **वो** पु., प्र. वि., ए. व. – *भिक्खुसङ्घो निरादीनवो अपगतकाळको सुद्धो सारे पतिट्ठितो,* पारा. 10; **पटिच्छन्ना.**- त्रि., वह, जिसका दोष ढका हुआ हो, प्रतिच्छन्न, दुःख, दोष एवं विपत्ति वाला – **वे** पु., सप्त. वि., ए. व. – *अविज्जाय पटिछन्ना-दीनवे विसये पन,* अभि. अव. 596; **बहु.**- त्रि., अत्यधिक दोषों, संकटों एवं विपत्तियों से परिपूर्ण – **वो** पु., प्र. वि., ए. व. – *बहुदुक्खो खो अयं कायो बहुआदीनवो ?,* अ. नि. 3(2).91; **सा.**- त्रि., दुःख, संकट या विपत्ति ये युक्त – **वो** पु., प्र. वि., ए. व. – *न तं विदूति न तं जानन्ति, "एवं सादीनवो अय"न्ति,* महाव.

अट्ठ॰ 408; **टि॰.** पालि-तिपिटक में आदीनव के तीन प्रकार के समूहों का उल्लेख हैं – 1. शील से संबंधित पांच प्रकार के आदीनव – *इमे खो, गहपतयो, पञ्च आदीनवा दुस्सीलस्स सीलविपत्तिया,* महाव॰ 303; 2. मादक वस्तुओं के सेवन के छः प्रकार के आदीनव या दुष्परिणाम – *इमे खो, गहपतिपुत्त, छ आदीनवा सुरा–मेरय–मज्जप्पमादट्ठानानुयोगे,* दी॰ नि॰ 3.138; 3. राजाओं के अन्तःपुरों में प्रवेश आदि से प्राप्त होने वाले आदीनव या दुःख – *दसयिमे, भिक्खवे, आदीनवा राजन्तेपुरप्पवेसने,* पाचि॰ 210.

आदीनवजात त्रि॰, दुर्गतिग्रस्त, विपत्ति से पीड़ित, उत्पीड़ित – **ते** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपद्दवजातेति आदीनवजाते,* चूळनि॰ अट्ठ॰ 71.

आदीनवञाण नपुं॰, [आदीनवज्ञान], बुरे परिणाम अथवा दुष्परिणामों की पहचान, दीनता अथवा बुरी अवस्था का ज्ञान – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सम्मसनञाणं ... आदीनवञाणं ... अनुलोमञाणञ्चेति दस विपस्सनाञाणानि,* अभि॰ ध॰ स॰ 66; *तस्सेवं पस्सतो आदीनवञाणं नाम उप्पन्नं होति,* विसुद्धि॰ 2.283; *दिट्ठभयानं आदीनवतो पेक्खणवसेन पवत्तं ञाणं आदीनवञाणं,* अभि॰ ध॰ वि॰ टी॰ 232; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ञाणन्तिआदि पन आदीनवञाणस्स पटिपक्खञाणदस्सनत्थं वुत्तं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.221.

आदीनवता स्त्री॰, आदीनव का भाव॰ [आदीनवत्व], विपन्नता, दुःख से ग्रस्त होने अथवा उत्पीड़ित होने की अवस्था – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पवत्तिदुक्खताय दुक्खस्स च आदीनवताय आदीनवतो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.292.

आदीनवत्त नपुं॰, आदीनव का भाव॰, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्रयुक्त [आदीनवत्व], उपरिवत्, **दिट्ठा॰**- संकट या विपत्ति के दिखलायी देने की अवस्था – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कलहकारके किरस्स दिट्ठादीनवत्ता समग्गवासिनो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.152; **रूपा॰** – नपुं॰, रूप से संबंधित विपत्ति अथवा दोष – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथस्स परिविदितरूपादीनवत्ता पथवीकसिणादीसु अञ्ञतरं उग्घाटेत्वा ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.207; **सुपरिविदिता॰** – उपरिवत्, विपत्ति या दोष से अच्छी तरह से परिचित रहना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तासो उप्पज्जि भेरवोति सुपरिविदितादीनवत्ता भयानको चित्तुत्रासो उदपादि,* चरिया॰ अट्ठ॰ 198.

आदीनवदस्स त्रि॰, बुरी अवस्था, संकट अथवा भय को दिखलाने वाला – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनादीनवदस्सोति यं भगवा इदानि सिक्खापदं पञ्ञपेन्तो आदीनवं दस्सेस्सति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.164.

आदीनवदस्सन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आदीनवदर्शन], विपत्ति, संकट अथवा हानियों को देखना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सप्पे आदीनवदस्सनं विय आदीनवानुपस्सनाञाणं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.27; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भयदस्सनेन सभये अभयसञ्ञाय आदीनवदस्सनेन अस्सादसञ्ञाय,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).26; – **ञाण** नपुं॰, हानि, विपत्ति या संकट का दर्शन तथा ज्ञान – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदीनवानुपस्सनाति भयतुपट्ठानवसेन उप्पन्न सब्बभवादीसु आदीनवदस्सनञाणं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.90.

आदीनवदस्सावी त्रि॰, विपत्ति अथवा संकट को देखने वाला – **वी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं अगधितो अमुच्छितो अनज्झापन्नो आदीनवदस्सावी निस्सरणपञ्ञो परिभुञ्जति,* दी॰ नि॰ 3.33; म॰ नि॰ 2.36; स॰ नि॰ 1(2).174; *आदीनवदस्सावीति अनेसनापत्तियञ्च गधितपरिभोगे च आदीनवं पस्समानो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.146; – **विनो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इमे पञ्च कामगुणे गधिता ... आदीनवदस्साविनो निस्सरणपञ्ञा परिभुञ्जन्ति,* म॰ नि॰ 1.233.

आदीनवदस्सिता स्त्री॰, आदीनवदस्सी से व्यु॰, भाव॰, संकट या विपत्ति को देखने या जानने की क्षमता, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्राप्त; **अना॰**- संकट या विपत्ति को नहीं देख सकने की अवस्था – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ते दूरतो वज्जेत्वा सङ्खारे यथाभूतं पस्सतो च तत्थ अनादीनवदस्सिताय,* उदा॰ अट्ठ॰ 282.

आदीनवदस्सी त्रि॰, [आदीनवदर्शिन्], संकट या विपत्ति को देखने की क्षमता रखने वाला, – **स्सी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो अत्तहिताय पटिपन्नो पण्डितो कुसलो ब्यत्तो आदीनवदस्सी,* पेटको॰ 303.

आदीनवपटिच्छादक त्रि॰, संकट, विपत्ति अथवा हानि को आच्छादित कर लेने वाला – **कं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमोहेन तेस्वेव आदीनवपटिच्छादकं मोहं धुनाति,* विसुद्धि॰ 1.80; *आरक्खदुक्खपराधीनवुत्तिचोरभयादि आदीनवपटिच्छादकं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.98; – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जाति तत्थेव आदीनवपटिच्छादिका अविज्जा,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.399.

आदीनवपरियेसना स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आदीनवपर्येषणा], विपत्ति अथवा संकट की खोज या तलाश – **नं** द्वि॰ वि॰,

ए. व. – *वायोधातुयाहं, भिक्खवे, आदीनवपरियेसनं अचरिं,* स. नि. 1(2).155; *लोकस्साहं, भिक्खवे, आदीनवपरियेसनं अचरिं,* अ. नि. 1(1).292.

आदीनवविभावना स्त्री., दुष्परिणामों का प्रकाशन, बुरे परिणामों को प्रकट करना – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *इमं उदानन्ति इमं पापकिरियाय निसेधनं आदीनवविभावनञ्च उदानं उदानेसि,* उदा. अट्ठ. 240.

आदीनवसञ्ञा स्त्री., तत्पु. स. [आदीनवसंज्ञा], संकट, हानि अथवा बुरे परिणामों से संबंधित संज्ञा-ज्ञान, पांच प्रकार की संज्ञाओं में से एक – **ञ्ञा** प्र. वि., ए. व. – *असुभसञ्ञा, मरणसञ्ञा, आदीनवसञ्ञा आहारे पटिकूलसञ्ञा, सब्बलोके अनभिरतसञ्ञा,* अ. नि. 2(1).74; *सत्त सञ्ञा – अनिच्चसञ्ञा, अनत्तसञ्ञा, असुभसञ्ञा, आदीनवसञ्ञा, पहानसञ्ञा, विरागसञ्ञा, निरोधसञ्ञा,* दी. नि. 3.199, 233; – **परिचित** त्रि., दुःख या विपत्ति की संज्ञा से परिचित – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आदीनवसञ्ञापरिचितञ्च नो चित्तं भविस्सति,* अ. नि. 3(2).89.

आदीनवानिसंस पु., द्व. स. [आदीनवानिशंस], हानि अथवा लाभ, विपत्ति अथवा दुःख – **से** द्वि. वि., ब. व. – *थेरोपिस्स पवत्तिनिवत्तीसु आदीनवानिसंसे विभावेन्तो धम्मं देसेसि,* उदा. अट्ठ. 251; *सहसा समेच्चाति सहसा आदीनवानिसंसे अविचारेत्वा समवायेन अनुपविट्ठा सप्पविट्ठा,* वि. व. अट्ठ. 285; – **दस्सन** नपुं., विपत्ति एवं लाभ का दर्शन, अच्छे या बुरे परिणामों को देखना, संकटों अथवा लाभों का दर्शन – **नं** प्र. वि., ए. व. – ... *आनिसंसस्स च दस्सनं आदीनवानिसंसदस्सनं,* विसुद्धि. महाटी. 1.66; – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *इदानि कोधे अकोधे च आदीनवानिसंसदस्सनेन धम्मं कथेन्तो,* ... थेरगा. अट्ठ. 2.98.

आदीनवानुपस्सना स्त्री., तत्पु. स. [आदीनवानुपश्यन], दीनतामयी स्थिति, दीनता से भरी अवस्था या दशा के विषय में विचार, दुष्परिणामों अथव संकटों का अनुभव – **ना** प्र. वि., ए. व. – *आदीनवानुपस्सनाति भयतुपट्ठानवसेन उप्पन्नं सब्बभवादीसु आदीनवदस्सनञाणं,* पटि. म. अट्ठ. 1.90; – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *आदीनवानुपस्सनं भावेन्तो आलयाभिनिवेसं पजहति,* विसुद्धि. 2.263; – **य** तृ. वि., ए. व. – *आदीनवानुपस्सनाय आलयाभिनिवेसं ...,* पटि. म. 40; – **ञाण** नपुं., दैन्य अवस्था की अनुभूति का ज्ञान, दुष्परिणामों से संबंधित विचार का ज्ञान – **णं** प्र. वि., ए. व. – *सप्पे आदीनवदस्सनं विय आदीनवानुपस्सनाञाणं,* पटि. म. अट्ठ. 1.27.

आदीनवानुपस्सी त्रि., सारहीनता की अवस्था अथवा बुरे परिणामों को ठीक से देखने वाला, विपत्ति की स्थिति का अनुभव करने वाला – **स्सी** पु., प्र. वि., ए. व. – *इति इमस्मिं काये आदीनवानुपस्सी विहरति,* अ. नि. 3(2).91; *आदीनवानुपस्सी हि तिदसिन्दोपभोजिये,* सद्धम्मो. 411; – **स्सिनो** पु., ष. वि., ए. व. – *तस्स असारत्तस्स असंयुत्तस्स असम्मूळ्हस्स आदीनवानुपस्सिनो विहरतो आयतिं पञ्चुपादानक्खन्धा अपचयं गच्छन्ति,* म. नि. 3.348.

आदीपन नपुं., आ +√दीप से व्यु., क्रि. ना. [आदीपन], व्याख्यान, प्रकाशन, स्पष्ट करना, प्रज्वलन – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *एकमन्तं उपाविसिन्ति न ताव कट्ठानि आदित्तानीति तेसं आदीपनं उदिक्खन्तो थोकं एकमन्तं निसीदिं,* चरिया. अट्ठ. 103.

आदीपनीय त्रि., आ +√दीप से व्यु., सं. कृ., व्याख्या करने योग्य, प्रकाशित करने योग्य – **यं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *"यं तं ओपम्मेहि आदीपनीयं कारणेहि मं सञ्ञापेहि, यथा अत्थिधम्मं ओपम्मेहि आदीपनीय"न्ति,* मि. प. 252.

आदीपित त्रि., आ +√दीप से व्यु., आदीप का भू. क. कृ. [आदीपित], धधक रहा, जाज्वलयमान, आग की लपटों में जल रहा – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सब्बो आदीपितो लोको, सब्बो लोको पधूपितो,* स. नि. 1(1).157; *आदित्तोति दुक्खलक्खणवसेन पीळायोगतो सन्तापनट्ठेन आदीपितो,* पटि. म. अट्ठ. 2.13; – **त्तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आदीपितं दारु तिणेन मिस्सं,* जा. अट्ठ. 7.52.

आदीपितता स्त्री., आदीपित से व्यु., भाव., आदीप्त होना, जाज्वल्यमान होना, धधकते हुए रहना – **य** तृ. वि., ए. व. – *तेहियेव पुनप्पुनं आदीपितताय पदीपितो,* थेरीगा. अट्ठ. 191.

आदीयति आ +√दा का कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आदीयते], ग्रहण किया जाता है, स्वीकार किया जाता है, ले लिया जाता है – *सद्धेन दानं दीयति, सीलं आदीयति समादीयति,* सद्द. 2.367; *पठमं आदीयती ति आदि, उदकं दधाती ति उदधि,* क. व्या. 553.

आदु/अदु अ., पुष्टि अथवा जोर देने के अर्थ को प्रकट करने वाला, निपा., संभवतः उदाहु का ही संक्षिप्तीकृत भ्रष्ट स्वरूप, 1. वियोजक प्रश्न के द्वितीय घटक के रूप में अथवा के अर्थ में प्रयुक्त निपा. – *निब्बायि सो आदु*

सउपादिसेसो, यथा विमुत्तो अहु तं सुणोम, थेरगा. 1283; *यथा विमुत्तो ति "किं अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया यथा असेक्खा, उदाहु उपादिसेसाय यथा सेक्खा"ति पुच्छति, सेसमेत्थ पाकटमेव,* सु. नि. अट्ठ. 2.76; *तत्थ अदूति निपातो,* जा. अट्ठ. 3.441; *देवतानुसि गन्धब्बो, अदु सक्को पुरिन्ददो;* वि. व. 977; *अदु सक्को पुरिन्ददोति उदाहु पुरे ददाती ति,* वि. व. अट्ठ. 217; **2.** वास्तव में, ठीक यही, निश्चित रूप से, परन्तु, तब – *अदु पञ्ञा किमत्थिया, निपुणा साधुचिन्तिनी ... तत्थ अदूति निपातो,* जा. अट्ठ. 3.441; *अदु चापं गहेत्वान, खग्गं बन्धिय वामतो,* जा. अट्ठ. 7.324; जा. अट्ठ. 3.300; *अदूति नामत्थे निपातो, पञ्ञा नाम किमत्थियाति अत्थो,* जा. अट्ठ. 6.272.

आदेति आ +√दा का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आददाति/आदत्ते], लेता है, ग्रहण करता है, स्वीकार करता है, प्राप्त करता है, किसी विचार को ग्रहण करता है – *आपुब्बवसेन गहणञ्च वदन्तो ददाति ... आदेति दानं आदानन्ति,* सद्द. 2.368; *कतिभि रजमादेति, कतिभि परिसुज्झती'ति, ... पञ्चभि रजमादेति, पञ्चभि परिसुज्झती'ति,* स. नि. 1(1).4; *पञ्चहि पन नीवरणेहेव किलेसरजं आदियति गण्हाति परामसति,* स. नि. अट्ठ. 1.23; – **न्ति** प्र. पु., ब. व. – *एवं असारेहि धनेहि सारं, पुञ्ञानि कत्वान बहूनि पञ्ञा, आदेन्ति, बाला पन कामहेतु, बहूनि पापानि करोन्ति मोहा,* म. वं. 35.127; – **य्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *अदेय्याति आदियेय्य, न-कारेन योजेत्वा न गण्हीति अत्थो,* जा. अट्ठ. 3.259; – **तु** अनु., प्र. पु., ए. व. – *"आदेतु सीहदायी"ति सहस्सं सो पचरयि,* म. वं. 6.24; – **थ** म. पु., ब. व. – *"अमतं आदेथ भिक्खवो"ति,* मि. प. 305.

आदेय्यरूप त्रि., ग्रहण करने योग्य स्वरूप वाला, स्वीकार करने योग्य जाति वाला – **पं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *यदा न पस्सन्ति समेक्खमाना, आदेय्यरूपं पुरिसस्स वित्तं,* जा. अट्ठ. 5.442; *आदेय्यरूपन्ति गहेतब्बजातिकं,* जा. अट्ठ. 5.443.

आदेय्यवचन त्रि., ब. स., ग्रहण करने योग्य वचनों को बोलने वाला, प्रभावशाली वाणी को बोलने वाला – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आदेय्यवचनो होमि, न धंसेमि यथा अहं,* अप. 1.355; *मुसावादनिवत्तिया सत्तानं पमाणभूतो होति पच्चयिको थेतो आदेय्यवचनो,* चरिया. अट्ठ. 281; – **ता** स्त्री., भाव., वचनों का दूसरों द्वारा स्वीकरणीय या ग्राह्य होना – *आदेय्यवचनता आनिसंसो,* दी. नि. अट्ठ. 3.110; – **वाक्यवचन** त्रि., ग्रहण करने योग्य वाक्यों और वचनों को बोलने वाला – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आदेय्यवाक्यवचनो, ब्रह्मा उजु पतापवा,* अप. 1.392; – **वाच** त्रि., बहुत लोगों द्वारा ग्रहण करने योग्य या सुनने योग्य मधुर वचन बोलने वाला – **चो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अनाथपिण्डिको गहपति बहुमित्तो होति बहुसहायो आदेय्यवाचो,* चूळव. 286; *आदेय्यवाचो ति तस्स वचनं बहू जना आदियितब्बं सोतब्बं मञ्ञन्तीति अत्थो,* चूळव. अट्ठ. 62; *आदेय्यवाचो होति,* दी. नि. 3.131; *आदेय्यवाचो होती ति गहेतब्बवचनो होति,* दी. नि. अट्ठ. 3.109.

आदेव पु., आ +√देव से व्यु., विलाप, रोना, चिल्लाना, अवसाद – **वो** प्र. पु., ए. व. – *अञ्ञतरञ्ञतरेन ब्यसनेन समन्नागतस्स अञ्ञतरञ्ञतरेन दुक्खधम्मेन फुट्ठस्स आदेवो परिदेवो आदेवना परिदेवना,* दी. नि. 2.228; *एवं आदिस्स आदिस्स देवन्ति परिदेवन्ति एतेनाति आदेवो,* दी. नि. अट्ठ. 2.349; – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *आदेवं परिदेवं ... न करेय्य न जनेय्य ....,* महानि. 273.

आदेवति आ +√देव का वर्त., प्र. पु., ए. व., विलाप करता है, रोता है, खिन्न होता है – *देवति आदेवति परिदेवति, 'आदेवो परिदेवो आदेवना परिदेवना आदेवितत्तं परिदेवितत्तं',* सद्द. 2.440.

आदेवन नपुं., आ +√देव से व्यु., क्रि. ना., शोक-विलाप की क्रिया, रोने-चिल्लाने की क्रिया – *आदेवं परिदेवं आदेवनं परिदेवनं आदेवितत्तं परिदेवितत्तं वाचा पलापं विप्पलापं ... लालप्पायनं लालप्पायितत्तं ... नाभिनिब्बत्तेय्य,* महानि. 273.

आदेवनेय्य त्रि., आ +√देव से व्यु., सं. कृ., शोक-विलाप करने योग्य – **य्ये** पु., द्वि. वि., ब. व. – *परिदेवनेय्येति आदेवनेय्ये परिदेवनेय्येति – एते वितक्के परिदेवनेय्ये,* महानि. 373; *आदेवनेय्येति विसेसेन देवनिय्ये,* महानि. अट्ठ. 377.

आदेस पु., आ +√देस से व्यु. [आदेश], **1.** संकेत, सूचना, दिशा-निर्देश, आज्ञा, विधानात्मक आदेश – *गेहादेसो-पमाहीनपसादनिग्गताच्चये,* अभि. प. 1165; – **सं** द्वि. वि., ए. व. – *आदेसं नापसादेन्तो राजिनो दीघदस्सिनो,* चू. वं. 72.201; **2. व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में,** स्थानापन्न, किसी दूसरे वर्ण, वर्णसमूह या ध्वनि का स्थानापन्न – *अभि इच्चेतस्स सरे परे अब्भो आदेसो होति,* क. व्या. 44; *क्वचि विपरीतो होति, क्वचि आदेसो होति,* सद्द. 3.809.

आदेसनविधा स्त्री., तत्पु. स., दूसरों के चित्तों को जानने का एक प्रकार या पद्धति – **सु** सप्त. वि., ब. व. – *यथा भगवा धम्मं देसेति आदेसनविधासु, चतस्सो इमा, भन्ते, आदेसनविधा,* दी. नि. 3.76; – **धा** द्वि. वि., ब. व. – *इदानि ता आदेसनविधा दस्सेन्तो चतस्सो इमाति आदिमाह,* दी. नि. अट्ठ. 3.62.

आदेसना आ +√दिस से व्यु., क्रि. ना. [आदेशन], **शा. अ.** संकेतन, इशारा, सूचित करना, **ला. अ.**, किसी के चरित्र के विषय में अनुमान करना, दूसरे के मन को पढ़ना, भविष्यवाणी करना – **ना** प्र. वि., ए. व. – *आदेसनाति परस्स चित्ताचारं ञत्वा कथनं आदेसनापाटिहारियं,* बु. वं. अट्ठ. 44; *इद्धिआदेसनानुसासनीभेदेन तेसु च एकेकस्स विसयादिभेदेन विविधं बहुविधं वा,* उदा. अट्ठ. 9; *इद्धि आदेसनानुसासनीसमुदाये भवं एकेकं पाटिहारियन्ति वुच्चति,* तदे.; – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *इतरेसु पन आदिस्सनवसेन आदेसनं, अनुसासनवसेन अनुसासनी,* पटि. म. अट्ठ. 2.284.

आदेसनापाटिहारिय नपुं., तत्पु. स. [आदेशनप्रातिहार्य], दूसरे के चित्तों को जानने की अलौकिक शक्ति, एक प्रकार का ऋद्धिबल या मानसिक बल – **यं** प्र. वि., ए. व. – *इद्धिपटिहारियं, आदेसनापाटिहारियं, अनुसासनीपाटिहारियं,* दी. नि. 1.196; अ. नि. 1(1).198, 199; *अथ वा इति एवं आदिसनं आदेसनापाटिहारियन्ति आदेसनसद्दो पाठसेसं कत्वा पयुज्जितब्बो,* पटि. म. अट्ठ. 2.286; – **येन** तृ. वि., ए. व. – *"इमं खो अहं, केवट्ट, ... आदेसनापाटिहारियेन अट्टीयामि हरायामि जिगुच्छामि",* दी. नि. 1.198; – **यानुसासनी** स्त्री., दूसरें के चित्तों को जानकर उन चित्तों के अनुरूप दी गई शिक्षा – नी., प्र. वि. ए. व. *आदेसनापाटिहारियानुसासनी नाम "एवम्पि ते मनो, तथापि ते मनो"ति एवं परस्स चित्तं जानित्वा तदनुरूपा धम्मदेसना,* चूळव. अट्ठ. 110; – **निया** तृ. वि., ए. व. – *अथ खो आयस्मा सारिपुत्तो आदेसनापाटिहारियानुसासनिया भिक्खू धम्मियाकथाय ओवदि अनुसासि,* चूळव. 340; – **योजना** स्त्री., दूसरों के चित्तों का ज्ञान कराने वाले ऋद्धिबल एवं मानसिक बल के साथ सम्बन्ध या जोड़ – **य** तृ. वि., ए. व. – *इति अनुसासनीपाटिहारियन्ति एत्थ आदेसनापाटिहारिययोजनाय विय योजना कातब्बा,* पटि. म. अट्ठ. 2.286.

आदेसभूत त्रि., व्याकरण में प्रयुक्त, वह, जो किसी का स्थानापन्न बना दिया गया है – **ते** पु., सप्त. वि., ए. व. – *पावचने आदेसभूते उकारे परे निच्चं वकार-रकारागमो होति,* सद्द. 3.830.

आदेससर पु., तत्पु. स. [आदेशस्वर], किसी अन्य के स्थान पर आया हुआ स्वर – *एकवचनट्ठाने येव सागमो भवति आदेससरपरत्ता,* सद्द. 1.123.

आदेसिका स्त्री., [आदेशिका], संकेत देने वाली स्त्री, इशारों से बतलाने वाली नारी – **का** प्र. वि., ए. व. – *आपणादेसिका सा तु देवित्तं तस्स पत्थयि,* म. वं. 5.59; *तेन वुत्तं "आपणादेसिका सा तु ... पे. ... अतिमनोरम"न्ति,* म. वं. टी. 164(ना.).

आदो अ., सप्त. वि., प्रतिरू. निपा., आदि शब्द का सप्त. वि., ए. व. [आदौ], प्रारम्भ में – *पलापोनत्थिका गिरा, आदो भासनमालापो, विलापो तु परिद्दवो,* अभि. प. 123; *आदि इच्चेतस्मा स्मिंवचनस्स अं-ओ च आदेसा होन्ति वा, आदिं, आदो,* क. व्या. 69; *लोहपासादमादो व कासी पासादमुत्तमं,* चू. वं. 37.62; *आदो थुल्लच्चयं तेसु, दुतिये च पराजयो,* विन. वि. 164.

आधातब्ब त्रि., आ +√धा का सं. कृ. [आधातव्य], ठीक से रखने योग्य, स्थापित करने योग्य – **ता** स्त्री., भाव., ठीक से रखा जाना – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *को पनायं समाधानट्ठो? सम्मदेव आधातब्बता,* उदा. अट्ठ. 158; *यथा गन्धकरण्डके कासिकवत्थं आधातब्बतं ठपेतब्बतं गच्छति,* प. प. अट्ठ. 65.

आधातुकाम त्रि., ब. स., स्थापित करने की इच्छा करने वाला, आग को परचाने की कामना करने वाला – **मो** प्र. वि., ए. व. – *तथागता पुच्छितब्बा – "अहञ्हि, भन्ते, अग्गिं आदातुकामो, यूपं उस्सापेतुकामो",* अ. नि. 2(2).192; पाठा. आदातुकामो.

आधान आ +√धा से व्यु., क्रि. ना. [आधान], अनेक स्थलों में आदान के साथ व्यामिश्रित, **1.** नपुं., स्थापना, रखा जाना, प्राप्ति, स्थापित करना, निष्पन्न करना, बीच में रख देना, धरोहर, (आग को) जलाना – **नं** प्र. वि., ए. व. – *एकारम्मणे चित्तचेतसिकानं समं सम्मा च आधानं, ठपनन्ति वुत्तं होति,* विसुद्धि. 1.83; *"भो गोतम, अग्गिस्स आदानं यूपस्स उस्सापनं महप्फलं होति महानिसंस"न्ति,* अ. नि. 2(2).191; *अग्गिस्स आदानन्ति यञ्ञयजनत्थाय नवस्स मङ्गलग्गिनो आदियनं,* अ. नि. अट्ठ. 3.168; **2.** त्रि., वह,

जिसे मजबूती के साथ रखा गया है या जमा किया गया है – *आधानं वुच्चति दळ्हं सुट्ठु ठपितुं तथा कत्वा गण्हातीति आधानग्गाही,* दी. नि. अट्ठ. 3.21; *आधानं गण्हन्तीति आधानग्गाही, आधानन्ति दळ्हं वुच्चति, दळ्हग्गाहीति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).198; स. उ. प. के रूप में उदका., कण्टका., पुप्फा., मुखा., युगा., सा. तथा. के अन्त. द्रष्ट. (आगे).

आधानग्गाही त्रि., [आधारग्राहिन्], **शा. अ.**, अपने लिए या अपना आधार ग्रहण करने वाला, **ला. अ.**, अपनी बात पर अड़ा रहने वाला, जिद्दी – **ही** पु., प्र. वि., ए. व. – *भिक्खु सन्दिट्ठिपरामासी होति आधानग्गाही दुप्पटिनिस्सग्गी,* चूळव. 197; *आधानग्गाहीति दळ्हग्गाही,* परि. अट्ठ. 154; *आधानं गण्हन्तीति आधानग्गाही, आधानन्ति दळ्हं वुच्चति, दळ्हग्गाहीति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).198; – **हिस्स** पु., ष. वि., ए. व. – ... *सन्दिट्ठिपरामासि – आधानग्गाहि – दुप्पटिनिस्सग्गिस्स पुरिसपुग्गलस्स,* म. नि. 1.56; विलो. **अनाधानग्गाही**, अपनी बात पर न अड़ने वाला, जिद्दीपन से मुक्त, हठधर्मिता से मुक्त – *"असन्दिट्ठिपरामासी अनाधानग्गाही सुप्पटिनिस्सग्गी भविस्सामा"ति चित्तं उप्पादेतब्बं,* म. नि. 1.55, 58.

आधाय आ +√धा से व्यु., सं. कृ. [आधाय], ठीक से रखकर, अच्छी तरह स्थापित करके – *भिक्खुना दन्तेभिदन्तमाधाय जिव्हाय तालुं आहच्च चेतसा चित्तं अभिनिग्गण्हितब्बं,* म. नि. 1.171; *दन्तेभिदन्तमाधायाति हेट्ठादन्ते उपरिदन्तं ठपेत्वा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).185.

आधार पु., [आधार], **1**. वह, जिस पर कोई भी वस्तु या व्यक्ति स्थित हो, ग्रहण करने वाला, खड़े होने की जगह, **2**. कारण, चर्चा में आया हुआ विषय – *मञ्चाधारो पटिपादो, मञ्चङ्गे त्वटनित्थियं,* अभि. प. 309; *आधारो चाधिकरणे पत्ताधारे लवालके,* अभि. प. 1011; *अधिट्ठितियमाधारे ठानेधिट्ठानमुच्चते,* अभि. प. 1032; – **रो** प्र. वि., ए. व. – *"नायं कायो इमस्स अच्चन्तसन्तस्स पणीततमस्स अरियधम्मस्स आधारो भवितुं युत्तो"ति,* उदा. अट्ठ. 235; – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *महता मणिना एकं आधारं दन्तधातुया,* चू. वं. 82.11; – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *उदमणिको पूरो उदकस्स समतित्तिको काकपेय्यो आधारे ठपितो,* म. नि. 3.139; – **तो** प. वि., ए. व. – *नदीनं आधारतो पटिसरणतो च सागरो"मुख"न्ति वुत्तो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.285; **3**. व्या. के विशेष सन्दर्भ में, सप्त. वि. के अर्थ अधिकरण का सूचक – **रो** प्र. वि., ए. व. – *यो आधारो तं ओकाससञ्ञं होति,* क. व्या. 280; – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *आधारे चेतं भुम्मवचनं,* थेरगा. अट्ठ. 1.156; स. उ. प. के रूप में, **जला.**- पु., जल का आधार, जलाशय, पोखर – *जलासयो जलाधारो, गम्भीरो रहदो स च,* अभि. प. 677; **तदा.**- पु., उसका आधार या सहारा – *परिकप्पादिवसेन निप्फादेतब्बस्स विधिनो पि नामं कप्पो पन तदाधारत्ता तद्धितन्ति पवुच्चति,* सद्द. 3.783; **तिदिवा.**- पु., तीन प्रकार के स्वर्गों का आधार (सुमेरु) – *सिनेरु मेरु तिदिवाधारो नेरु सुमेरु च,* अभि. प. 26; **दण्डा.**- पु., छड़ी का सहारा, डण्डे का आधार – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *भूमि-आधारके दारुदण्डाधारे सुसज्जिते,* खु. सि. 68; **निरा.**- त्रि., बिना आधार वाला, असहाय – *निराधारजनाधारो जरादुब्बलजन्तुसु,* चू. वं. 87.45; **पत्ता.**- पु., पात्रों का आधार – *पत्ताधारपिधानेसु तालवण्टे च बीजने,* खु. सि. 271; **मञ्चा.**- पु., पलंग का पैर – **रो** प्र. वि., ए. व. – *मञ्चाधारो पटिपादो, मञ्चङ्गे त्वटनित्थियं,* अभि. प. 309; **सम्बन्धट्ठया.**- पु., सम्बन्ध अर्थ का आधार – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *सम्बन्धट्ठयाधारे छट्ठी विभत्ति होति,* सद्द. 3.722; **सासना.**- पु., तत्पु. स., बुद्ध के धर्म एवं सङ्घ का सहारा – *पुब्बे लङ्कादीपा ते नरवरपवरा सासनाधारभूता,* चू. वं. 99.182; **सुता.**- त्रि., जो कुछ धर्मग्रन्थों से सुना है, उसे आधार बनाने वाला – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *धम्मकामो सुताधारो, भवेय्य परिपुच्छको,* जा. अट्ठ. 7.180; स. पू. प. के रूप में, – **त्त** नपुं., भाव. [आधारत्व], आधार-भाव, सहारा होना – **त्ता** प. वि., ए. व. – *सम्मासम्बुद्धकप्पानं आधारत्ता च निच्चसो,* चू. वं. 64.31; – **परिकप्प** त्रि., आधार जैसा – **प्पो** पु., प्र. वि., ए. व. – *गुणन्तानं आधारसुति च आधारपरिकप्पो च होति येव,* सद्द. 1.125; – **प्पत्त** त्रि., आधार-भाव को प्राप्त – *उभयथापि पगुणं आधारप्पत्तं करोन्तो धारेति नाम,* स. नि. अट्ठ. 2.66; – **भाव** पु., [आधारभाव], आधार होना – *संघस्स दानकिरियाय आधारभावतो "संघे",* सद्द. 1.125.

आधारक त्रि., सहारा देने वाली कोई भी वस्तु, **1**. पु., पैर रखने वाला पीढ़ा – **को** प्र. वि., ए. व. – *आधारको पत्तपिधानं, तालवण्टं, बीजनी चङ्कोटकं, पच्छि, यट्ठिसम्मुञ्जनी मुट्ठिसम्मुञ्जनीति,* चूळव. अट्ठ. 82; *तथागतस्स सेतच्छत्तं निसीदनपल्लङ्को आधारको पादपीठन्ति इमानि पन चत्तारि अनग्घानेव अहेसुं,* ध. प. अट्ठ. 2.66; – **कं** द्वि. वि., ए.

व॰ – *थेय्यचित्तेन कुम्भिया आधारकं वा उपत्थम्भनलेड्डुकं वा अपनेति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.256; *कारयित्वा ततो तस्स आधारकं पुन भूपति,* चू॰ वं॰ 82.11; – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हत्थे आधारके वापि, पत्तं ऊरूसु वा ठितं,* विन॰ वि॰ 1277; **2.** नपुं॰, उपरिवत् – *आधारकं मया दिन्नं, सिखिनो लोकबन्धुनो,* अप॰ 1.215; – **कानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *"भिक्खूनं आसनानि च आधारकानि च पथविं भिन्दित्वा उट्ठहन्तू"ति चिन्तेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.43; **3.** पु॰, पुस्तक रखने वाली काष्ठपीठिका या लकड़ी की तख्ती, रिहल – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकं पोत्थकं विचित्रवण्णे आधारके ठपेत्वा सुसिक्खितेहि चतूहि पञ्चहि माणवेहि पुच्छिते पुच्छिते पञ्हे कथेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.206; *सयं पन अट्ठ वा दस वा पण्डितवादिनो गहेत्वा मनोरमे आधारके रमणीयं पोत्थकं ठपेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.266–267; **स॰ उ॰ प॰ के रूप में** अना॰, किरिया॰, दण्डका॰, दारु॰, पत्ता॰, भूमि॰, मणि॰, यट्ठि॰ रुक्खा॰, वट्टा॰, वलया॰, सधम्मा॰, सासना॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; **स॰ पू॰ प॰ के रूप में,** – **कट्ठ** पु॰ आधार होने का अर्थ – *निसज्जपचनादिकिरियानं आधारकट्ठेन आधारो,* सद्द॰ 3.709; – **सङ्खेपगमन** पु॰, प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आधारकसङ्खेपगमनतो हि पट्ठाय छिद्दं विद्धम्पि अविद्धम्पि वट्टतियेव,* चूळव॰ अट्ठ॰ 52.

आधारण नपुं॰, आ +√धर के प्रेर॰ से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आधारण], **शा॰ अ॰,** मजबूती से पकड़ना, दृढ़ता के साथ ग्रहण करना, सहारा देना, **ला॰ अ॰,** बरकरार रखना, मन में धारण करना, उचित रख-रखाव – *तदेव आधारणउपनिबन्धनसमत्थता गति नाम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).364; *पच्छा आगतपरिसं अस्सवनसुस्सवन आधारण दळ्हीकरणादीनि वा सन्धाय तदत्थ दीपकमेव च,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.114; – **लक्खण** त्रि॰, सहारा देने या आधार बनने के लक्षण से युक्त – **णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आधारणलक्खणं ओकासकारकं,* सद्द॰ 3.711.

आधारदायक पु॰, व्य॰ सं॰, एक भिक्षु का नाम – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थं सुदं आयस्मा आधारदायको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप॰ 1.215.

आधारपटिग्गाहकभाव पु॰, तत्पु॰ स॰ [आधारप्रतिग्राहक-भाव], आधार या आश्रय होना – **वेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – तत्थापि तादिसेसु *ठानेसु द्वे अधिप्पाया भवन्ति आधारपटिग्गाहकभावेन भूम्मसम्पदानानं, इच्छितब्बत्ता,* सद्द॰ 1.218.

आधारभाव पु॰, [आधारभाव], आधारभूत अवस्था, सहारा देने वाली दशा या तथ्य – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपधारणं भुसो धारणं पतिट्ठावसेन आधारभावो,* सद्द॰ 2.564; *कुसलानं धम्मानं पतिट्ठानवसेन आधारभावोति अत्थो,* विसुद्धि॰ 1.8; उदा॰ अट्ठ॰ 180; – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उप्पज्जमानस्स पयोगस्स निस्सयं आधारभावं उपगता विय हुत्वा कतमे धम्मा पच्चया होन्तीति अत्थो,* परि॰ अट्ठ॰ 215; – **वेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कप्पनामत्तसिद्धेन रूपेन अवयवानं आधारभावेन पञ्ञापीयति,* उदा॰ अट्ठ॰ 19; – **पच्चुपट्ठान** त्रि॰, सहारा देने वाला अथवा कारणभूत – **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चक्खुविञ्ञाणस्स आधारभावपच्चुपट्ठानं, दट्ठुकामतानिदानकम्मजभूतपदट्ठानं,* अभि॰ अव॰ 84; *सोतविञ्ञाणस्स आधारभावपच्चुपट्ठानं सोतुकामतानिदान-कम्मजभूतपदट्ठानं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 346; *आधारभावपच्चुपट्ठानं निस्सयपच्चयभावतो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.85.

आधारभूत त्रि॰, [आधारभूत], वह, जो किसी का सहारा बना हो, खम्भा, सहारा – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुताधारोति सुतस्स आधारभूतो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.181; – **तेसु** पु॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तथा तेसुं आधारभूतेसु पटिहतो सङ्खारलोको विहञ्ञति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.181.

आधाररूप त्रि॰, [आधाररूप], आधार के आकार या स्वरूप से युक्त (भिक्षा-पात्र को रखने के लिए बनाया गया आधार) – **पं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमस्सुजातो अपुराणवण्णी, आधाररूपञ्च पनस्स कण्ठे,* जा॰ अट्ठ॰ 5.192; *आधाररूपञ्च पनस्स कण्ठेति कण्ठे च पनस्स अम्हाकं भिक्खाभाजनट्ठपनं पत्ताधारसदिसं पिळन्धनं अत्थीति मुत्ताहारं सन्धाय वदति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.195.

आधारवलय नपुं॰, [आधारवलय], सहारा देने वाला या रक्षा करने वाला कंगन – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स हेट्ठा असनि–उपद्दव विद्धंसनत्थं आधारवलयमिवकत्वा अनग्घं वजिरचुम्बटकं च पूजेसी ति अत्थो,* म॰ वं॰ टी॰ 623; (ना॰).

आधारित त्रि॰, आ +√धर के प्रेर॰ का भू॰ क॰ कृ॰ [आधारित], रखा हुआ, सहारा पाया हुआ – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"यथा, महाराज, इमं उदकं वातेन आधारितं, एवं तम्पि उदकं वातेन आधारित"न्ति,* मि॰ प॰ 71.

आधावति आ +√धाव का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आधावति], किसी की ओर अभिमुख होकर तेजी से दौड़ता है, घबराकर इधर-उधर दौड़ता है – *"धावति विधावती, आधावति*

परिधावति", धावको, सद्द॰ 2.440; *मिगो मनुस्से दिस्वा कम्पमानो मरणभयतज्जितो अन्तोनिवेसनङ्गणे आधावति परिधावति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.160; – **न्ति** ब॰ व॰ – *अस्सस्सपि पुरतो धावन्ति, रथस्सपि पुरतो धावन्तिपि आधावन्तिपि उस्सेळेन्तिपि, अप्फोटेन्तिपि,* चूळव॰ 22; – **न्तियो** वर्त॰ कृ॰, स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *चक्कवालमुखवट्टियाव आधावन्तियो* ..., दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.151; – **वित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *माता तस्स आधावित्वा परिधावित्वा विचरणकाले अञ्ञं पुत्तं लभि,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.212; *आधावित्वा विधावित्वा कीळनकाले पन लोभनीयवयस्मिं वा ठितकाले दारकं ओलोकेत्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.100; *सो पनस्सा दारको आधावित्वा परिधावित्वा कीळनवये ठितो कालमकासि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.280.

आधावन नपुं॰, आ +√धाव से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [बौ॰ सं॰ आधावन], तेज दौड़, बहुत तेजी के साथ दौड़ना – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुप्पति सीतेन उण्हेन जिघच्छाय विपासाय अतिभुत्तेन ठानेन पधानेन आधावनेन उपक्कमेन कम्मविपाकेन,* मि॰ प॰ 138; – **परिधावन** नपुं॰, द्व॰ स॰, इधर-उधर, भाग-दौड़, भटकाव-भरी दौड़ – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवीचिमहानिरये निब्बत्तसत्तस्स हि अपरापरं आधावनपरिधावनं होतियेव,* जा॰ अट्ठ॰ 3.213; – **विधावन** नपुं॰, द्व॰ स॰, इधर से उधर हो रही दौड़ – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथस्सा आधावनविधावनेन कीळितुं समत्थकालतो पट्ठाय पदवारे पदवारे पदुमपुप्फं उट्ठासि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.259.

आधि पु॰, [आधि], व्यथा, बीमारी, कष्ट – *पेमं सिनेहो स्नेहो'थ चित्तपीळा धिसञ्ञिता,* अभि॰ प॰ 173.

आधिकरण / अधिकरण नपुं॰, [अधिकरण], आधार, कारण, हेतु – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किमाधिकरणं यक्ख, चक्काभिनिहतो अह'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.4.

आधिक्य नपुं॰, अधिक से व्यु॰ भाव॰ [आधिक्य], प्रचुरता, अधिकता, श्रेष्ठता – *समीपपूजासादिस्से दोसक्खानोपपत्तिसु, भुसत्थापगमाधिक्यपुब्बकम्मनिवत्तिसु,* अभि॰ प॰ 1185.

आधिगच्छति / अधिगच्छति अधि +√गम का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, छन्द के कारण अधिगच्छति के स्थान पर आधिगच्छति के रूप में प्रयुक्त [अधिगच्छति], प्राप्त करता है – *यं गिहिस्सपि तदत्थजोतकं, पब्बज्जम्पि च तदाधिगच्छति,* दी॰ नि॰ 3.113; *तदाधिगच्छतीति एत्थ आकारो निपातमत्तन्ति आह "तं अधिगच्छती"ति,* लीन॰ (दी॰ नि॰ टी॰) 3.99.

आधिपच्च नपुं॰, अधिपति से व्यु॰, भाव॰ [आधिपत्य], सर्वोच्च शासक होना, बहुत बड़ा एवं महत्वपूर्ण स्वामी होना, शक्ति-सम्पन्नता – **च्च**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आधिपच्चन्ति अधिपतिभावो, खत्तियमहासालादिभावेन सामिकभावोति अत्थो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 183; – **च्चं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो तं कम्मं खेपेत्वा तं इद्धिं तं यसं तं आधिपच्चं आगामी होति आगन्ता इत्थत्तं,* अ॰ नि॰ 2(2).205; – **च्चेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बलोकाधिपच्चेनाति न एकस्मिं एत्तके लोके नागसुपण्णवेमानिकपेतेहि सद्धिं, सब्बस्मिं लोके आधिपच्चेन,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.109; – **म्हि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"दक्खे उट्ठान सम्पन्ने आधिपच्चम्हि ठापये"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.192; स॰ उ॰ प॰ के रूप में **इस्सरिया॰**- नपुं॰, उपरिवत् – **च्चं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ क्रि॰ वि॰, पूर्ण आधिपत्य के साथ – *तेन खो पन समयेन राजा मागधो सेनियो बिम्बिसारो असीतिया गामसहस्सेसु इस्सरियाधिपच्चं रज्जं कारेति,* महाव॰ 251; *देवानं तावतिंसानं इस्सरियाधिपच्चं रज्जं कारेन्तो उट्ठानवीरियस्स वण्णवादी भविस्सति,* स॰ नि॰ 1(1).251; **पच्चेका॰**- नपुं॰, तत्पु॰ स॰, हरेक व्यक्ति का स्वामी होना – **च्चं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ये वा पन कुलेसु पच्चेकाधिपच्चं कारेन्ति, वुद्धियेव पाटिकङ्खा, नो परिहानि,* अ॰ नि॰ 2(1).71; **मूलरज्जा॰**- नपुं॰, तत्पु॰ स॰, मूल राज्य पर स्वामित्व – **च्चं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मूलरज्जाधिपच्चं तं अम्हं निन्दाकरं न हि,* चू॰ वं॰ 63.21; **लंका॰** – नपुं॰, तत्पु॰ स॰, लंका का आधिपत्य या स्वामित्व – **च्चं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लंकाधिपच्चं इदं अप्पतरं मं आसि बुद्धो गुणेहि विविधेहि पमाणसुञ्ञो,* दा॰ वं॰ 6.17; **सब्बलोका॰** – नपुं॰, तत्पु॰ स॰, समस्त लोकों का स्वामित्व या स्वामी होना – **च्चेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बलोकाधिपच्चेन सोतापत्तिफलं वरं,* ध॰ प॰ 178; स॰ पू॰ प॰ के रूप में – **ट्ठान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आधिपत्य का स्थान अथवा अवस्था, स्वामित्व, प्रभुता – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"दक्खे उट्ठान सम्पन्ने, आधिपच्चम्हि ठापये"ति ... तस्मा तादिसा आधिपच्चट्ठाने न ठपेतब्बा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.192-193; – **परिवार** पु॰, द्व॰ स॰, आधिपत्य या शक्ति तथा प्रशंसा – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आधिपच्चपरिवारो, सब्बमेतेन लब्भति,* खु॰ पा॰ 8.11; – **भूत** त्रि॰, वह, जो अधिपति या स्वामी बन गया है या बना दिया गया है, प्रमुखता को प्राप्त, प्रधानीभूत – **तं** प्र॰ वि॰,

ए॰ व॰ – *यञ्च सक्कादीनं तस्मिं तस्मिं देवनिकाये आधिपच्चभूतं इस्सरियं,* उदा॰ अट्ठ॰ 127; – **सङ्खात** त्रि॰, आधिपत्य या स्वामित्व के रूप में विख्यात – **तेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपि च आधिपच्चसङ्खातेन इस्सरियट्ठेनपि एतानि इन्द्रियानि,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.76; – **सभाव** त्रि॰, स्वामी या अधिपति के स्वभाव वाला – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चत्तारोधिपती वुत्ता आधिप्पच्चसभावतो,* ना॰ रू॰ प॰ 166.

आधिपतेय्य नपुं॰, [बौ॰ सं॰ आधिपतेय, सं॰ आधिपत्य], **1.** प्रधानता, प्रमुखता, महत्त्व, प्रभाव – **य्यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनिच्चतो मनसिकरोतो अधिमोक्खबहुलस्स कतमिन्द्रियं आधिपतेय्यं होति,* पटि॰ म॰ 234; – **य्यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *इमस्सा लोका परलोकं गतं दिब्बं आयुवण्णसुखयस – आधिपतेय्यं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.171; – **य्येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... नाधिपतेय्येन *दिब्बे अट्ठीयथ हरायथ जिगुच्छथ,* अ॰ नि॰ 1(1).137; – **य्येहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आयुवण्णयससुखआधिपतेय्येहि ... उळारेहि कामगुणेहि समप्पितस्स समङ्गीभूतस्स,* चरिया॰ अट्ठ॰ 154; **2.** त्रि॰, शासक, प्रमुख, प्रधान – **य्यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुक्खतो मनसिकरोतो पस्सद्धिबहुलस्स कतमो विमोक्खो आधिपतेय्यो होति,* पटि॰ म॰ 243; – **य्या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *किं अधिपतेय्या सब्बे धम्मा,* अ॰ नि॰ 3(1).158; – **य्यानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आधिपतेय्यानन्ति अधिपतिट्ठानं जेट्ठकट्ठानं करोन्तानं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.254; स॰ उ॰ प॰ के रूप में कम्मा॰, किंमा॰, छन्दा॰, तण्हा॰, दस्सना॰, धम्मा॰ पञ्ञा॰, विमंसा॰, विरिया॰, सता॰, समाधा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आधिपतेय्यट्ठ पु॰, तत्पु॰ स॰, प्रधानता अथवा प्रमुखता को प्रकाशित करने वाला अर्थ, मार्ग के पांच अर्थों में से एक – **ट्ठो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मग्गस्स निय्यानट्ठो हेतुट्ठो दस्सनट्ठो आधिपतेय्यट्ठो भावनट्ठो,* पटि॰ म॰ 108; 284; *अधिपतिभावेन आधिपतेय्यट्ठोति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.82; – **ट्ठं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मग्गस्स निय्यानट्ठं हेतुट्ठं दस्सनट्ठं आधिपतेय्यट्ठं भावेन्तो,* पटि॰ म॰ 101; – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सति आधिपतेय्यट्ठेन अभिञ्ञेय्या,* पटि॰ म॰ 20.

आधिपतेय्यत्त नपुं॰, आधिपतेय्य का भाव॰, अधिपति या अधिपतिप्रत्यय की अवस्था – **त्ता** प॰ वि॰,ए॰ व॰ – *अनत्तानुपस्सनाय विपस्सनाक्खणेपि पञ्ञिन्द्रियस्सेव आधिपतेय्यत्ता,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.148.

आधिपतेय्यपच्चय पु॰, [अधिपतिप्रत्यय], अधिपति प्रत्यय अथवा अधिपति प्रत्यय से उत्पन्न – **ता,** स्त्री॰ भाव॰ अधिपति-प्रत्यय होने की अवस्था, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ चक्खु आधिपतेय्यपच्चयताय पच्चयो,* नेत्ति॰ 67; *चित्तस्स इन्द्रियानि पच्चयो आधिपतेय्यपच्चयताय मनसिकारो,* पेटको॰ 281.

आधिपतेय्यसंवत्तनिक त्रि॰, प्रधानता या प्रमुखता की स्थिति को प्राप्त कराने वाला या उस स्थिति तक ले आने वाला – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आधिपतेय्यसंवत्तनिकं आयस्मता चुन्देन कुम्मारपुत्तेन कम्मं उपचितन्ति,* दी॰ नि॰ 2.103; *आधिपतेय्यसंवत्तनिकन्ति जेट्ठकभावसंवत्तनिकं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.146.

आधिपतेय्यसङ्खात त्रि॰, आधिपतेय्य नाम वाला – **तेन** पु॰ तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चतुत्थवग्गस्स पठमे सुखञ्च तं सहजातानं आधिपतेय्यसङ्खातेन इन्दट्ठेन इन्दियञ्चाति सुखिन्द्रियं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.269.

आधियति आ +√धा का कर्म॰ वा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, **शा॰ अ॰,** ठीक से रखा जाता है, सुव्यवस्थित रूप में रखा जाता है, **ला॰ अ॰,** सुदृढ़ बनाया जाता है, एकाग्र किया जाता है – *चित्तं समाधियतीति चित्तं सम्मा आधियति अप्पितं विय अचलं तिट्ठति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).183; *चित्तं समाधियतीति आरम्मणे सम्मा आधियति सुट्ठु ठपितं ठपियति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.235; *समाधियतीति सम्मा आधियति, निच्चलं हुत्वा आरम्मणे ठपीयति,* विभ॰ अट्ठ॰ 296.

आधीन त्रि॰, अधीन का अप॰ [अधीन], वशवर्ती, नियंत्रण में रखने वाला – **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं खलु धम्ममाधीनं, वसो वत्तति किञ्चनं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.346.

आधुनिक त्रि॰, अधुना से व्यु॰ [आधुनिक], वर्तमान समय में विद्यमान, इस समय में मौजूद – **कानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *विरचितो आधुनिकानं अनुग्गहाय,* रूपा॰ 147(रो॰).

आधुयमान त्रि॰, आ +√धु अथवा धू के कर्म॰ वा॰ का वर्त॰ कृ॰, हिलाया-डुलाया जा रहा, कम्पित किया जा रहा, मन्द गति से प्रवाहित किया जा रहा – *आधुयमान-मलयाचलकाननन्तो,* दा॰ वं॰ 5.33(रो॰).

आधूत आ +√धू का भू॰ क॰ कृ॰ [आधूत], प्रकम्पित, हिलाया-डुलाया गया, विक्षोभित किया गया, कांप रहा – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धूतो आधूतचलिता, निसितं तु*

च तेजितं, अभि॰ प॰ 744; – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वातेरितं सालवनं, आधुतं दिजसेवितं,* वि॰ व॰ 692; *आधुतन्ति मन्देन मालुतेन सणिकसणिकं विधूपयमानं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 147.

आधेय्य[1] त्रि॰, आ +√धा का सं॰ कृ॰ [आधेय], **क.** वह, जिसे किसी आधार पर रखा जाय, उचित रूप में रखे जाने योग्य, ठीक से स्थापित किये जाने योग्य – **य्यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स तं वचनं आधेय्यं गच्छति, गन्धकरण्डकेव नं कासिकवत्थं,* पु॰ प॰ 142; *आधेय्यं गच्छतीति ... एवं उत्तमङ्गे सिरस्मिं हदये च आधातब्बतं ठपेतब्बतम्पि गच्छति,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 65; **ख.** व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में – वह, जिसे आधार पर स्थापित किया जाय – **य्येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ ... आधेय्येन पत्थटो होति,* सद्द॰ 3.709-10; – **भूत** त्रि॰, वह, जो किसी आधार पर रखा गया हो – **ते** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन आधारभूतेन वत्थुना सप्पिं आनेति इति आधेय्यभूते सप्पिम्हि आनीते,* सद्द॰ 3.925; – **मुख** त्रि॰, कान का कच्चा, भोला-भाला, तुरन्त विश्वास कर लेने वाला – **खो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दत्वा अवजानाति, संवासेन अवजानाति आधेय्यमुखो होति, लोलो होति, मन्दो मोमूहो होति,* अ॰ नि॰ 2(1).155; *आधेय्यमुखोति पाळिया पन ठपितमुखोति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.51-52; *आधेय्यमुखोति आदितो धेय्यमुखो, पठमवचनस्मिं येव ठपितमुखोति अत्थो,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 93; अ॰ नि॰ टी॰ 3.45.

आधेय्य[2] त्रि॰, संभवतः उप॰ अधि से व्यु॰, निजी, अपना, अपने अधीन रहने वाला, अपने उत्तरदायित्व के रूप में विद्यमान, पूर्णतया अपनी निजी धरोहर, ठीक से संजो कर रखने योग्य – **य्यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो तत्थ भिक्खु ब्यत्तो पटिबलो तस्साधेय्यं पातिमोक्खन्ति,* महाव॰ 145; *अत्थि चेतसिकं दुक्खं, तवाधेय्यं अरिन्दम,* अप॰ 1. 334; – **य्या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चत्तारि सामञ्ञफलानि चतस्सो पटिसम्भिदा तिस्सो विज्जा छळभिञ्ञा केवलो च समणधम्मो सब्बे तस्साधेय्या होन्ति,* मि॰ प॰ 323.

आन नपुं॰, [आन], भीतर की ओर खींची जा रही वायु, प्राणवायु, आश्वास – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथो अपानं पस्सासो, अस्सासो आनमुच्चते,* अभि॰ प॰ 39; *आनन्ति अस्सासो, नो पस्सासो,* पटि॰ म॰ 165; *तत्थ आनन्ति अस्सासो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.158; *आनन्ति अब्भन्तरं पविसन वातो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.64; द्रष्ट॰ अपान, आपान, उदान, एवं पान.

आनञ्च नपुं॰, अनन्त से व्यु॰, भाव॰ [आनन्त्य], काल, स्थान एवं संख्या की अनन्तता या असीमता, प्रचुरता, अधिकता – *अनन्तमेव आनञ्चं,* विसुद्धि॰ 1.322; चूळनि॰ अट्ठ॰ 56; पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.78; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **आकासा॰/विञ्ञाणा॰**- नपुं॰, आकास की अनन्तता, विज्ञान की अनन्तता – **ञ्चं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकासानन्तमेव आकासानञ्चं,* विसुद्धि॰ 1.321; *विञ्ञाणं आनञ्चं विञ्ञाणानञ्चन्ति अवत्वा विञ्ञाणञ्चन्ति वुत्तं,* विसुद्धि॰ 1.322.

आनञ्ज/आनेञ्ज/आनेञ्ज 1. नपुं॰, [बौ॰ सं॰ आनञ्ज/आनेञ्ज], **शा॰ अ॰,** अविचल होना, अविक्षिप्तता, अचंचलता, अप्रतिहतता, **ला॰ अ॰,** ध्यान-भावना द्वारा लाई गई चार अरूप-ध्यानों की चार प्रकार की कुशल चेतना – **ञ्जं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *न इञ्जति न फन्दति न चलतीति आनेञ्जं,* अभि॰ अव॰ पु॰ टी॰ 79; *अनोनतं चित्तं कोसज्जे न इञ्जतीति – आनेञ्जं,* पटि॰ म॰ 377; उदा॰ अट्ठ॰ 150; ... *ओभासगतं चित्तं अविज्जन्धकारे न इञ्जतीति आनेञ्जं,* पटि॰ म॰ 377; – **ञ्जं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनेञ्जं समापज्जतीति आकासानञ्चायतनानेञ्जं समापज्जति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.41; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनेञ्जसप्पायाति आनेञ्जस्स चतुत्थज्झानस्स सप्पाया,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.41; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **कम्मा॰**- नपुं॰, कुशलकर्म-विषयक स्थिरता अथवा अविचल-भाव – **ञ्जेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कम्मानेञ्जेन कम्मविञ्ञाणं, विपाकानेञ्जेन विपाकविञ्ञाणं उपगतं होति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.69; – **ततिया॰** नपुं॰, तृतीय अरूपध्यान के चित्त की स्थिर अवस्था – **ञ्जे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमस्मिं ततिय आनेञ्जे विपस्सनावसेन ओसक्कना कथिता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.42; **दुतिया॰**- नपुं॰, अरूपध्यान के दूसरे चित्त की अविचल अवस्था, द्वितीय ध्यान में अविचल स्थति – **ञ्जे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इति इमस्मिं दुतिय आनेञ्जे विपस्सनावसेन ओसक्कना कथिता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.41; **पठमक॰**- नपुं॰, प्रथम अरूप ध्यान के चित्त की अविचल अवस्था – **ञ्जे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इति इमस्मिं पठमकआनेञ्जे समाधिवसेन ओसक्कना कथिता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.41; **विपाका॰**- नपुं॰, अरूप ध्यान के विपाक चित्तों की अविचल अवस्था –

ञ्जेन तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विपाकानेञ्जेन विपाकविञ्ञाणं उपगतं होति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.69; 2. त्रि॰, अविचल, स्थिर, चंचलता से रहित, गतिरहित – **ञ्जो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चत्तारो सतिपट्ठाना चत्तारो विहारा दिब्बो ब्रह्मा अरियो आनेञ्जो चत्तारो,* पेटको॰ 326; – **ञ्जं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इधाहं, आवुसो, सप्पिनिकाय नदिया तीरे आनेञ्जं समाधिं समापन्नो,* पारा॰ 145; *आनेञ्जं समाधिन्ति अनेजं अचलं कायवाचाविप्फन्दविरहितं चतुत्थज्झानसमाधिं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.92; – **ञ्जेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन खो पन समयेन भगवा आनेञ्जेन समाधिना निसिन्नो होति,* उदा॰ 97; *आनेञ्जसमाधिनाति चतुत्थझानपादकेन अग्गफलसमाधिना,* उदा॰ अट्ठ॰ 149; स॰ पू॰ प॰ के रूप में, – **कथा**- स्त्री॰, आनेञ्ज या अविचल स्थिति के विषय में कथन – *आनेञ्जकथा,* कथा॰ 495-496; *इदानि आनेञ्जकथा नाम होति,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 279; – **कारण**- नपुं॰, हांथी को अविचल या अचल बना देना, स्थिरीकरण – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो आनेञ्जं कारणं कारियमानो नेव पुरिमे पादे चोपेति न पच्छिमे पादे चोपेति,* म॰ नि॰ 3.174; *तोमरहत्था मनुस्सा परिवारेत्वा आनेञ्जकारणं कारेन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.397; – **कारित** त्रि॰, स्थिर या अचल बने रहने के लिए सुशिक्षित (हाथी) – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुभानुरूपो आयासि, आनेञ्जकारितो विय,* अप॰ 1.23; *आनेञ्जकारितो वियाति तोमरादीहि कारितो आनेञ्जो हत्थी विय,* अप॰ अट्ठ॰ 1.238; – **पटिसंयुत्त** त्रि॰, स्थिरता या अचल स्थिति के साथ जुड़ा हुआ – **त्ताय** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनेञ्जपटिसंयुत्ताय च पन कथाय कच्छमानाय न सुस्सूसति,* म॰ नि॰ 3.39; *आनेञ्जपटिसंयुत्तायाति आनेञ्जसमापत्तिपटिसंयुत्ताय,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.34; – **प्पत्त** त्रि॰, [बौ॰ सं॰ आनेञ्ज्यप्राप्त], अविचल अथवा अबाधित अवस्था को प्राप्त – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कथञ्च, भिक्खवे, भिक्खु आनेञ्जप्पत्तो होति?* अ॰ नि॰ 1(2).212; – **त्तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिस्सीकतमेवस्स चित्तं होति, ठितं, आनेञ्जप्पत्तं, वयञ्चस्सानुपस्सति,* महाव॰ 256; *आनेञ्जप्पत्तन्ति अचलनप्पत्तं,* महाव॰ अट्ठ॰ 345; – **प्पत्ति** स्त्री॰, अविचल अवस्था की प्राप्ति, निश्चलभाव में स्थिति – ... *निच्चलभावेन अवट्ठानं आनेञ्जप्पत्ति,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.7; – **मय** त्रि॰, स्थिरता अथवा अचलभाव से भरा हुआ – **या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तिविधा सङ्खारा पुञ्ञमया अपुञ्ञमया आनेञ्जमया, तप्पच्चया विञ्ञाणं,* पेटको॰ 306; – **विहारसमापत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, अचल अथवा अकम्पित अवस्था की प्राप्ति – *भगवता सद्धिं आनेञ्जविहारसमापत्तिधम्मपरिभोगेन एकपरिभोगा अहेसुं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.43; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.305; – **वोहार** पु॰, आनेञ्ज शब्द का व्यवहार में सामान्य प्रयोग – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणविभागेन चतुब्बिधं अरूपावचरज्झानन्ति एतेसं पञ्चन्नं झानानं आनेञ्जवोहारो,* उदा॰ अट्ठ॰ 150; – **संयोजन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, नीचे के छ ध्यानों की छ प्रकार की समापत्तियों के साथ लगाव या बन्धन – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनेञ्जसंयोजनेन हि खो विसंयुत्तो आकिञ्चञ्ञायतनाधिमुत्तो पुरिसपुग्गलो'ति,* म॰ नि॰ 3.40; *आनेञ्जसंयोजनेन हि खो विसंयुत्तोति आनेञ्जसमापत्ति संयोजनेन विसंसट्ठो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.34; – **सङ्खार** पु॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आनेञ्ज्याभिसंस्कार], ध्यान-भावना द्वारा उदित चार अरूप ध्यानों की चार प्रकार की कुशल चेतना – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथेवानेञ्जसङ्खारो, अरूपावचरभूमियं,* अभि॰ अव॰ 575; *तथेवानेञ्जसङ्खारो, एकारूपभवे पुन,* तदे॰; *तथेवानेञ्जसङ्खारो न इञ्जति न फन्दति न चलतीति आनेञ्जं, आनेञ्जञ्च तं सङ्खारो चाति आनेञ्जसङ्खारो,* अभि॰ अव॰ पु॰ टी॰ 1.79; *भावनावसेनेवपवत्ता चतस्सो अरूपावचरकुसलचेतना आनेञ्जाभिसङ्खारो नाम,* अभि॰ अव॰ अभि॰ टी॰ 2.64; – **सञ्ञा** स्त्री॰, अविचलता अथवा ध्यान भावना को प्राप्त चित्त की स्थिरता या चेतना – *या च सम्परायिका रूपसञ्ञा, या च आनेञ्जसञ्ञा – सब्बासञ्ञा,* म॰ नि॰ 3.47; – **सञ्ञी** त्रि॰, अचलभाव अथवा ध्यान में प्राप्त चित्त के अविचल भाव की चेतना से युक्त – **ञ्ञिनो** पु॰, च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनेञ्जसञ्ञिनो असञ्ञायतनं समापन्नस्स आकिञ्चञ्ञायतनसहगता मनसिकारा समुदाचरन्ति,* पेटको॰ 267; – **सप्पाय** त्रि॰, चित्त की स्थिरता पाने में लाभदायक या हितकर – **या** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"अयं, भिक्खवे, पठमा आनेञ्जसप्पाया पटिपदा अक्खायति",* म॰ नि॰ 3.46; *इति, खो, आनन्द, देसिता मया आनेञ्जसप्पाया पटिपदा, देसिता आकिञ्चञ्ञायतनसप्पाया पटिपदा,* म॰ नि॰ 3.49; – **समाधि** पु॰, अविचल-भाव लाने वाला ध्यान, चित्त की स्थिरता से युक्त समाधि, चौथे अरूप-ध्यान की समाधि – **ना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमानि च पञ्च भिक्खुसतानि सब्बेव आनेञ्जसमाधिना निसीदिम्हा'ति,* उदा॰ 98; *आनेञ्जसमाधिनाति चतुत्थज्झानपादकेन*

अग्गफलसमाधिना, उदा॰ अट्ठ॰ 149; *आनेञ्जं समाधिन्ति अनेजं अचलं कायवाचाविप्फन्दविरहितं चतुत्थज्झानसमाधिं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.92; – **समापत्ति** स्त्री॰, अविचल-भाव या चित्त स्थिरता की प्राप्ति, चार अरूप ध्यानों के अविचल कुशल चित्तों की प्राप्ति – **ना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयस्मन्तं यसोजं सत्था पक्कोसित्वा आनेञ्जसमापत्तिना पटिसन्थारमकासि,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.389; – **समापत्तिसंयोजन** नपुं॰, अरूप ध्यानों में चार कुशल चेतनाओं की प्राप्ति – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विसंयुत्तोति आनेञ्जसमापत्तिसंयोजनेन विसंसट्ठो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.34; – **ञ्जाधिमुत्त** त्रि॰, चित्त की स्थिरता की प्राप्ति-हेतु पूरी तरह से लगा हुआ – **त्तो** पु॰ प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विज्जति यं इधेकच्चो पुरिसपुग्गलो आनेञ्जाधिमुत्तो अस्स,* म॰ नि॰ 3.39-40; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनेञ्जाधिमुत्तस्साति किलेससिञ्चनविरहितासु हेट्ठिमासु छसु समापत्तीसु अधिमुत्तस्स तन्निन्नस्स तग्गरुनो तप्पब्भारस्स,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.35; – **ञ्जाभिसङ्खार** पु॰, स्थिर अवस्था का संग्रह, अरूप ध्यान-भावना द्वारा चार प्रकार की कुशल चेतनाओं का संग्रह – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तयो सङ्खारा – पुञ्ञाभिसङ्खारो, अपुञ्ञाभिसङ्खारो, आनेञ्जाभिसङ्खारो,* दी॰ नि॰ 3.174; *आनेञ्जं निच्चलं सन्तं विपाकभूतं अरूपमेव अभिसङ्खारोतीति आनेञ्जाभिसङ्खारो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.164; – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपुञ्ञाभिसङ्खारो पुञ्ञाभिसङ्खारेन च आनेञ्जाभिङ्खारेन च सुञ्ञो,* पटि॰ म॰ 353; – **ञ्जूपग** त्रि॰, आनेञ्ज की अवस्था के समीप पहुंचा हुआ – **गं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ठानमेतं विज्जति यं तंसंवत्तनिकं विञ्ञाणं अस्स आनेञ्जूपगं,* म॰ नि॰ 3.46; *आनेञ्जूपगन्ति कुसलानेञ्जसभावूपगतं अस्स, तादिसमेव भवेय्याति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.41.

आनण्य / आणण्य नपुं॰, भाव॰ [आनृण्य], ऋण से मुक्ति की अवस्था, कर्ज़ से छुटकारे की हालत – **ण्यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *क्वचि न भवति आनण्यं,* सद्द॰ 3.625; *सेय्यथापि, महाराज, यथा आणण्यं यथा आरोग्यं यथा बन्धनामोक्खं,* दी॰ नि॰ 1.65; *"सेय्यथापि, महाराज आणण्य"न्ति एत्थ भगवा पहीनकामच्छन्दनीवरणं आणण्यसदिसं, सेसानि ओरोग्यादिसदिसानि कत्वा दस्सेति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.174; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स चतुरोघतिण्णस्स पिहयन्ति इणायिका विय आणण्यस्साति अरहत्तनिकूटेन देसनं निट्ठापेसि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.229; – **निदान** त्रि॰, ऋणमुक्ति के कारण उत्पन्न अथवा उदित – **नं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततो निदानन्ति आणन्यनिदानं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.172; – **परिभोग** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आनृण्यपरिभोग], ऋणमुक्ति की अवस्था का उपभोग – **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो इणपरिभोगस्स पच्चनीकत्ता आणण्यपरिभोगो वा होति, दायज्जपरिभोगेयेव वा सङ्गहं गच्छति,* विसुद्धि॰ 1.41; *एवं इणपरिभोगयुत्तो लोकतो निस्सरितुं न लभतीति तप्पटिपक्खत्ता सीलवतो पच्चवेक्खितपरिभोगो आणण्यपरिभोगोति आह,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.69.

आनत त्रि॰, आ +√नम का भू॰ क॰ कृ॰ [आनत], **शा॰ अ॰,** थोड़ा सा झुका हुआ, **ला॰ अ॰,** विनम्र, विनत – *अथद्धतानतीसाकोति सखिलसम्मोदभावसङ्खाताय अथद्धताय अनतईसो थोकनतईसोति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.143.

आनन नपुं॰, [आनन], मुख, चेहरा – *वदनं तु मुखं तुण्डं वत्तं लपनमाननं,* अभि॰ प॰ 260; *वत्तं पज्जाननाचारे, धञ्ञङ्गे सुखुमे कणो,* अभि॰ प॰ 1047; *वदनं लपनं तुण्डं मुखमस्सञ्च आननं,* सद्द॰ 2.386; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनने नं गहेत्वान, मण्डले परिवत्तये,* जा॰ अट्ठ॰ 2.81; *तं अस्सं आनने गहेत्वा अस्समण्डले परिवत्तेय्य,* जा॰ अट्ठ॰ 2.81; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **पमुदिता॰**- त्रि॰, ब॰ स॰ [प्रमुदितानन], प्रसन्न मुख वाला – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मेत्तचित्तो कारुणिको, सदापमुदिताननो,* अप॰ 2.158; **पटिसंफुलिता॰** – त्रि॰, प्रीति से प्रफुल्लित अथवा खिले हुए मुख वाला – **नं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गुणोघायतनीभूतं, पीति सम्फुल्लिताननं,* अप॰ 2.125; **रविदित्तिहरा॰** – त्रि॰, ब॰ स॰ [रविदीप्तिहरानन], सूर्य की चमक को भी फीका कर देने वाले तेजस्वी मुख वाला – **नं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सिरीनिलयसङ्कासं, रविदित्तिहराननं,* अप॰ 2.126; **विकता॰** – त्रि॰, ब॰ स॰ [विकृतानन], विकृत मुख वाला – **ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततो जराभिभूता सा, विवण्णा विकताननना,* अप॰ 2.217; **विमला॰** – त्रि॰, ब॰ स॰ [विमलानन], निर्मल मुख वाला – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वीरो कमलपत्तक्खो, ससङ्कविमलाननो,* अप॰ 2.111; **सोण्णा॰** – त्रि॰, ब॰ स॰ [सुवर्णानन], सोने के समान चमकदार मुख वाला – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सोण्णाननो जिनवरो, समणीव सिलुच्चयो,* अप॰ 2.160.

आननीय त्रि., आ + √नी का अनियमित सं. कृ., बांधे जाने योग्य, पकड़कर लाए जाने योग्य – **यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *न रागपासेन हि आननीयो,* समन्त. 428(रो.).

आनन्तरिक / आनन्तरिय / अनन्तरित त्रि., अनन्तर से व्यु., **1.** सद्यः-पूर्ववर्ती अथवा सद्यः-परवर्ती, तुरन्त पहले आया हुआ, तुरन्त बाद में आया हुआ, अव्यवहित, आनुक्रमिक – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *पकततस्स समानसंवासकस्स समानसीमाय ठितस्स अन्तमसो आनन्तरिकस्सापि भिक्खुनो विञ्ञापेन्तस्स सङ्घमज्झे पटिक्कोसना रुहति,* महाव. 419; *आनन्तरिकस्साति अत्तनो अनन्तरं निसिन्नस्स,* महाव. अट्ठ. 403; – **तानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *तत्थ अब्बोकिण्णानीति खत्तियादिजातिअन्तरेहि अवोमिस्सानि अनन्तरितानि,* उदा. अट्ठ. 156; **2.** तुरन्त, सद्यः या तत्काल (समाधि एवं मग्ग के विशेषण के रूप में प्रयुक्त) फलदायक – **कं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *यं बुद्धसेट्ठो परिवण्णयी सुचिं, समाधिमानन्तरिकञ्ञमाहु,* खु. पा. 6.5; *यञ्च अत्तनो पवत्ति समनन्तरं नियमेनेव फलपदानतो "आनन्तरिकसमाधी"ति आहु, न हि मग्गसमाधिम्हि उप्पन्ने तस्स फलुप्पत्ति निसेधको कोचि अन्तरायो अत्थि,* खु. पा. अट्ठ. 144; *समाधिमानन्तरिकञ्ञमाहूति यं अत्तनो पवत्तिसमनन्तरं नियमेनेव फलप्पदानतो आनन्तरिकसमाधीति आहूति अत्थो,* विसुद्धि. महाटी. 2.457; **3.क.** पु., ('पुग्गल' शब्द के साथ अथवा उसके बिना भी प्रयुक्त) पांच प्रकार के जघन्य पापकर्मों का तुरन्त फल प्राप्त करने वाला व्यक्ति – **को** प्र. वि., ए. व. – *असञ्चिच्च मातरं जीविता वोरोपेत्वा आनन्तरिको होति,* कथा. 477; – **स्स** च. / ष. वि., ए. व. – *आनन्तरियस्स पुग्गलस्स अत्थि अन्तरा भवोति?,* कथा. 302; – **का** प्र. वि., ब. व. – *पञ्च पुग्गला आनन्तरिका,* पु. प. 119; **3.ख.** नपुं., ('कम्म' शब्द के साथ अथवा इसके बिना प्रयुक्त) तुरन्त फल देने वाले पांच प्रकार के गम्भीर पापकर्म – **यं**[1] प्र. वि., ए. व. – *अथ नं यस्मा आनन्तरियकम्मं नाम कम्मपथप्पत्तं,* प. प. अट्ठ. 270; ... *जीविता वोरोपेन्तस्स कम्मं आनन्तरियं होति,* अ. नि. अट्ठ. 1.340; – **यं**[2] द्वि. वि., ए. व. – ... *मनुस्सभूत मातरं वा पितरं वा मारेन्तो आनन्तरियं फुसति,* तदे.; **येन** तृ. वि., ए. व. *अयं आनन्तरियेन मातुघातककम्मेन मातुघातको,* महाव. अट्ठ. 289; – **यानं** ष. वि., ब. व. – *पञ्चन्नम्पि आनन्तरियानं कत्ता एकेन कम्मेन निरये निब्बत्तति,* अ. नि. अट्ठ. 2.105; **4.** नपुं., भाव. [आनन्तर्य], **शा. अ.**, निरन्तरता, लगातारपन, सातत्य, अत्यधिक सामीप्य, अव्यवहित पूर्ववर्तिता, **ला. अ.**, तुरन्त विपाक देने वाली मार्गसमाधि – *अथ इति कत्थचि पञ्हानन्तरियाविच्छिन्नाधिकारन्तरेसु पि,* सद्द. 3.891; – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *सो इमेसं पञ्चन्नं इन्द्रियानं मुदुत्ता दन्धं आनन्तरियं पापुणाति आसवानं खयाय,* अ. नि. 1(2).172; *आनन्तरियन्ति अनन्तरविपाकदायकं मग्गसमाधिं,* अ. नि. अट्ठ. 2.340; स. पू. प. के रूप में, – **कम्म** – नपुं., इसी जन्म में सद्यः फल देने वाले पांच प्रकार के जघन्य पाप कर्म, पांच प्रकार के गम्भीर पापकर्म – **म्मं** प्र. वि., ए. व. – *देवदत्तेन पठमं आनन्तरियं कम्मं उपचितं,* चूळव. 332; – **म्मेन** तृ. वि., ए. व. – *कम्मावरणे नाति पञ्चविधेन आनन्तरियकम्मेन,* पटि. म. अट्ठ. 2.10; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *नियतमिच्छादिट्ठिया सद्धिं आनन्तरियकम्मस्सेतं नामं,* दी. नि. अट्ठ. 3.158; – **दीपन** नपुं., निरन्तरता का प्रकाशन – *कम्मस्सकतादीपनत्थं, पच्चत्तपुरिसकारदीपनत्थं, आनन्तरियदीपनत्थं, ब्रह्मविहार दीपनत्थं ... लोकसम्मुतिया अप्पहानत्थञ्चाति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).148; *तस्मा भगवा आनन्तरियदीपनत्थं पुग्गलकथं कथेति,* अ. नि. अट्ठ. 1.79; – **धम्म** पु., गुरु-गम्भीर पाप-कर्म – **म्मा** प्र. वि., ए. व. – *तत्थ पञ्चानन्तरियधम्मा कम्मन्तरायिका नाम,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).9; – **वत्थु** नपुं., पांच अत्यन्त गम्भीर पापकर्म – **त्थूनि** प्र. वि., ब. व. – *तत्थ आनन्तरियवत्थूनि नाम गरूनि भारियानि,* प. प. अट्ठ. 270; – **स्मिं** सप्त. वि., ए. व. – *आनन्तरियवत्थुस्मिं आनन्तरियकं वदे,* विन. वि. 286; – **सदिस** त्रि., पांच प्रकार के आनन्तरिय कर्मों जैसा (गम्भीर पापकर्म) – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *महासावज्जो हि अरियूपवादो आनन्तरियसदिसो,* पारा. अट्ठ. 1.124; – **सं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *कम्मं पन भारियं, आनन्तरियसदिसमेव,* अ. नि. अट्ठ. 1.341; – **सदिसत्त** नपुं., भाव., आनन्तरिय कर्मों के साथ समानता – **त्ता** प. वि., ए. व. – *महासावज्जो हि अरियूपवादो, आनन्तरियसदिसत्ता,* विसुद्धि. 2.54; – **समाधि** पु., मार्ग-समाधि – *यथा मग्गसमाधि आनन्तरिकसमाधीति वुच्चति,* थेरीगा. अट्ठ. 110; – **म्हि** सप्त. वि., ए. व. – *अविक्खेपपरिसुद्धता आसवसमुच्छेदे पञ्ञा आनन्तरिकसमाधिम्हि ञाणं,* पटि. म. 2.

आनन्तरियक त्रि., आनन्तरिय से व्यु., सद्यः विपाक देने वाले पांच प्रकार के गम्भीर पाप-कर्मों से युक्त अथवा इन्हे करने वाला – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *एवमिमस्मिं दुके ये च पुग्गला पञ्चानन्तरियका,* प. प. अट्ठ. 36; – **कं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *आनन्तरियवत्थुस्मिं, आनन्तरियकं वदे,* विन. वि. 286; *आनन्तरियकं कम्मं, आपज्जति कथं नरो,* उत्त. वि. 741; *मातरं पितरं हन्त्वा, नान्तरियकं फुसे,* उत्त. वि. 744.

आनन्द पु., [आनन्द], प्रसन्नता, हर्ष, आह्लाद सन्तुष्टि का भाव, प्रीतिभाव – **न्दो** प्र. वि., ए. व. – *आनन्दो पमुदामोदा सन्तोसो नन्दि सम्मदो,* अभि. प. 87; *तत्र तुम्हेहि न आनन्दो, न सोमनस्सं, न चेतसो उप्पिलावितत्तं करणीय'न्ति,* मि. प. 178; *को नु हासो किमानन्दो, निच्चं पज्जलिते सति,* ध. प. 146; *आनन्दो च पमोदो च, सदाहसितकीळितं, मातरं परिचरित्वान, लब्भमेतं विजानतो,* जा. अट्ठ. 5.324; *महाराजकुले तस्मिं आनन्दो च महा अहु,* म. वं. 22.59; – **न्दं** द्वि. वि., ए. व. – *आनन्दं तुट्ठिं जननतो आनन्दो नाम पच्चेकबुद्धोति अत्थो,* अप. अट्ठ. 2. 183; स. उ. प. के रूप में, **गिरिमा.** – पु., व्य. सं., एक स्थविर का नाम – **न्दो** प्र. वि., ए. व. – *तेन खो पन समयेन आयस्मा गिरिमानन्दो आबाधिको होति दुक्खितो बाळ्हगिलानो,* अ. नि. 3(2).90; **निरा.** – त्रि., ब. स. [निरानन्द], आनन्दरहित, प्रसन्नता से रहित – **न्दो** पु., प्र. वि., ए. व. – *तत्थ सेसिं निरानन्दो, अनूना दस रत्तियो,* जा. अट्ठ. 5.65; स. पू. प. के रूप में, – **कर** त्रि., [आनन्दकर], आनन्द का भाव उत्पन्न करने वाला, मन में प्रमोद भर देने वाला -- **रं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *ते थेरा थेरमानन्दं आनन्दकरमब्रवुं,* म. वं. 3.23; – **छण** पु., आरुन्ददायक महोत्सव या क्रियाकल्प – **णं** द्वि. वि., ए. व. – *कञ्चनलताविनद्धं आनन्दभेरिं चरापेत्वा आनन्दछणं आचरिंसु,* जा. अट्ठ. 7.375; – **जनन** त्रि., आनन्द को उत्पन्न कर देने वाला – **नी** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *येन जातासि कल्याणी, आनन्दजननी मम,* दी. नि. 2.195; 197; – **ने** पु., सप्त. वि., ए. व. – *सत्तमो अभिसम्बुद्धे सत्थरि सक्यकुलानन्दजनने भगवन्तं अनुपब्बजन्ता निक्खमिंसु,* मि. प. 117; – **जात** त्रि., आनन्द से भरपूर, प्रमुदित, प्रफुल्ल – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *तत्थ आनन्दीति आनन्दजातो,* जा. अट्ठ. 5.488; – **ते** पु., द्वि. वि., ब. व. – *आनन्दजाते तिदसगणे पतीते, सक्कञ्च इन्दं सुचिवसने च देवे,* सु. नि. 684; – **भेरी** स्त्री., आनन्द उत्पन्न करने वाला नगाड़ा – **रिं** द्वि. वि., ए. व. – *कञ्चनलता विनद्धं आनन्दभेरिं चरापेत्वा आनन्दछणं आचरिंसु,* जा. अट्ठ. 7.375; *आनन्दभेरिकालोयं, किं वो अस्सूहि पुत्तिका,* अप. 2.201; – **रूप** त्रि., ब. स., आनन्द से परिपूर्ण स्वभाव वाला, प्रमुदित प्रकृति से युक्त – **पो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आनन्दो वत, भो, आनन्दरूपो, वत भो हेतुरूपं भन्ते,* म. नि. 2.339; *आनन्दरूपोति आनन्दसभावो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.257; – **सोमनस्स** नपुं., द्व. स., आनन्द एवं सौमनस्य -- **स्सा** प्र. वि., ब. व. – *पियजातिका हि खो भन्ते आनन्दसोमनस्सापियप्पभविका'ति,* म. नि. 2.316; 317.

आनन्द' पु., व्य. सं., बुद्ध के प्रमुख उपट्ठाक (परिचारक) शिष्य – **न्दो** प्र. वि., ए. व. – *धम्मभण्डागारिको च आनन्दो द्वे समाथ च,* अभि. 436; **क.** जन्म से सम्बन्धित विवरण के लिए द्रष्ट., अ. नि. अट्ठ. 1.219-226; थेरगा. अट्ठ. 2.349-363; अप. अट्ठ. 1.316-322; **ख.** बुद्ध के चचेरे भाई, पिता अमितोदन तथा माता मृगी – *सक्यकुलप्पसुतो चायं आयस्मा तथागतस्स भाता चूळपितुपुत्तो,* पारा. अट्ठ. 1.7; खु. पा. अट्ठ. 75; *आनन्दत्थेरो अमितोदनस्स, सो भगवतो कनिट्ठो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).373; **ग.** बुद्ध की शरण जाने वाले छ शाक्यकुलीन क्षत्रिय-कुमारों में एक – *छ यिमे, महाराज, खत्तियकुमारा भद्दियो च अनुरुद्धो च आनन्दो च भगु च किमिलो च,* मि. प. 117; **घ.** उनके उपाध्याय का नाम बेलट्ठसीस – *आयस्मतो आनन्दस्स उपज्झायस्स आयस्मतो बेलट्ठसीसस्स थुल्लकच्छाबाधो होति,* महाव. 277; **ङ.** बुद्ध के बहुश्रुत एवं स्मृतिमान् शिष्यों में अग्रगण्य – *एतदग्गं, भिक्खवे मम सावकानं भिक्खूनं बहुस्सुतानं यदिदं आनन्दो ...,* अ. नि. 1(1).33; **च.** पूर्व-जन्मों की अनुस्मृति के अभिज्ञाबल से सम्पन्न – *आयस्मा च आनन्दो ... जातिस्सरा जातिं सरन्ति, एवं अभिजानतो सति उप्पज्जति,* मि. प. 86; **छ.** शारिपुत्र के साथ प्रगाढ़ स्नेह – *सारिपुत्तत्थेरो च आनन्दत्थेरो च अञ्ञमञ्ञं ममायिंसु,* दी. नि. अट्ठ. 3.82; *"तुय्हम्पि नो, आनन्द, सारिपुत्तो रुच्चती"ति,* स. नि. 1(1).78; **ज.** आनापानसति, इद्धि, कल्याणमित्र, निरोध, बोज्झङ्ग, लोक, वेदना, चार सतिपट्ठानों, सुञ्ञ तथा बुद्ध के मौन के विषय में बुद्ध के साथ संलाप एवं प्रश्न – *एकमन्तं निसिन्नो खो आयस्मा आनन्दो भगवन्तं एतदवोच – "अत्थि नु खो, भन्ते,*

एकधम्मो भावितो बहुलीकतो चत्तारो धम्मे परिपूरेति ..., स॰ नि॰ 3.398-399; *अभिजानामि ख्वाहं, आनन्द, इद्धिया मनोमयेन कायेन ब्रह्मलोकं उपसङ्कमिता'ति*, स॰ नि॰ 3(2).353; *सकलमेव हिदं, आनन्द, ब्रह्मचरियं – यदिदं कल्याणमित्तता कल्याणसहायता कल्याणसम्पवङ्कता*, स॰ नि॰ 1(1).105; *आयस्मा आनन्दो भगवन्तं एतदवोच – "निरोधो निरोधो"ति, भन्ते, वुच्चति*, स॰ नि॰ 2(1).24; *कथं भाविता आनन्द, सत्त बोज्झङ्गा कथं बहुलीकता विज्जाविमुत्तिं परिपूरेन्ति?*, स॰ नि॰ 3(2).402; *कित्तावता नु खो, भन्ते, लोकोति वुच्चती'ति, यं खो, आनन्द, पलोकधम्मं, अयं वुच्चति अरियस्स विनये लोको*, स॰ नि॰ 2(2).59; ... *आयस्मा आनन्दो भगवन्तं एतदवोच – कतमा नु खो, भन्ते, वेदना ...*, स॰ नि॰ 2(2).216; *कथं भाविता चानन्द, चत्तारो सतिपट्ठाना कथं बहुलीकता सत्त बोज्झङ्गे परिपूरेन्ति?*, स॰ नि॰ 3(2).401; *आनन्द, सुञ्ञं अत्तेन वा अत्तनियेन वा तस्मा सुञ्ञो लोकोति वुच्चति*, स॰ नि॰ 2(2).60; **झ.** शारिपुत्र के साथ धर्म-संलाप – *एकमन्तं निसिन्नो खो आयस्मा आनन्दो आयस्मन्तं सारिपुत्तं एतदवोच*, अ॰ नि॰ 1(2).193; **ञ.** एकान्त में निवास के लिए इच्छा प्रकट की – *एकमन्तं निसिन्नो खो आयस्मा आनन्दो भगवन्तं एतदवोच – ... यमहं भगवतो धम्मं सुत्वा एको वूपकट्ठो अप्पमत्तो ... विहरेय्य'न्ति*, स॰ नि॰ 2(2).60; **ट.** भिक्खुणीसंघ की स्थापनाहेतु बुद्ध से याचना – *"साधु, भन्ते, लभेय्य मातुगामो तथागतप्पवेदिते धम्मविनये अगारस्मा अनगारियं पब्बज्ज"न्ति*, चूळव॰ 416; **ठ.** पूर्वजन्म में बुद्ध के लिए प्राणत्याग किया – *एतरहि कथाय ... पुब्बेपि आनन्दो मय्हं जीवितं परिच्चजियेवा'ति वत्वा अतीतं आहरि*, जा॰ अट्ठ॰ 3.257; **ड.** बुद्ध-परिनिर्वाण के अवसर पर आनन्द की मनःस्थिति – *आयस्मा आनन्दो विहारं पविसित्वा कपिसीसं आलम्बित्वा रोदमानो ठितो ... सत्थु च मे परिनिब्बानं भविस्सति*, दी॰ नि॰ 2.108; **ढ.** आनन्द द्वारा अर्हत्त्व-प्राप्ति – *आनन्दत्थेरो अत्तनो अरहत्तप्पत्तिं आपेतुकामो भिक्खूहि सद्धिं नागतो ... आनन्दत्थेरस्स आसनं ठपेत्वा निसिन्ना*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.11; **ण.** प्रथम धर्म-सङ्गीति में धर्म-कथिक के रूप में चयन – *अयं भन्ते, आयस्मा आनन्दो ..., बहु च अनेन भगवतो सन्तिके धम्मो च, विनयो च परियत्तो, तेन, हि भन्ते, थेरो आयस्मन्तम्पि आनन्दं उच्चिनतू'ति*, चूळव॰ 453; **त.** प्रथम धर्म-संगीति के अवसर पर आनन्द की भर्त्सना – *अथ खो थेरा भिक्खू आयस्मन्तं आनन्द एतदवोचुं – इदं ते, आवुसो आनन्द, दुक्कटं, यं त्वं भगवन्तं न पुच्छि*, चूळव॰ 457; **थ.** जीवन के अन्तिम वर्ष – *एकं समयं आयस्मा आनन्दो सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे अचिरपरिनिब्बुते भगवति*, दी॰ नि॰ 1.180; **द.** आनन्द का निर्वाण – *आनन्दत्थेरसदिसा पन अमतपुब्बपदेसे परिनिब्बायन्ति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.305; *आनन्दत्थेरोपि सीलादिगुणेहि चेव इमस्मिं सुत्ते आगतगुणेहि च थेरो विय अभिञ्ञातो पाकटो महा*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प॰) 1(2).145; **ध.** प्रतिमा में आनन्द – *आनन्दपटिमं नेत्वा पुरं कत्वा पदक्खिणं*, चू॰ वं॰ 51.80; **न.** बहुश्रुत (परमज्ञानी) – *अयं पन आनन्दो बहुस्सुतो तिपिटक धरो*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.109; **प.** धर्म की रक्षा करने वाला – *आनन्दो नाम नामेन, धम्मारक्खो तवं मुने*, अप॰ 1.41; **फ.** धर्म के भण्डारपाल – ... *धम्मभण्डागारिको आयस्मा आनन्दो निसीदि*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.76; **ब.** उपट्ठाक (परिचारक) आनन्द – *आनन्दो नामुपट्ठाको, उपट्ठिस्सतिमं जिनं*, बु॰ वं॰ 2.67; **भ.** श्रावक (शिष्य) के रूप में आनन्द – *यो सो बुद्ध उपट्ठासि, आनन्दो नाम सावको*, अप॰ 1.283; **म.** सम्बुद्ध, आनन्द – *आनन्दो नाम सम्बुद्धो, सयम्भू अपराजितो*, अप॰ 1.240; **य.** यशस्वी आनन्द – *पुन देय्यासि सम्बुद्धं, आनन्दस्स यसस्सिनो*, अप॰ 1.335; *"आनन्दा"ति आदिको सङ्गीति अनारुळ्हो पाळिधम्मो एव तथा दस्सितो*, दी॰ नि॰ टी॰ 2.142; *भन्ते आनन्द*, अ॰ नि॰ 3(1).235; *निसीदतु भवं आनन्दो*, म॰ नि॰ 2.191; *आवुसो आनन्द, परिसा*, स॰ नि॰ 1(2).197.

आनन्द[2] पु॰, व्य॰ सं॰, पदुमुत्तर बुद्ध के पिता, एक क्षत्रिय राजा – **न्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नगरं हंसवती नाम, आनन्दो नाम खत्तियो, सुजाता नाम जनिका, पदुमुत्तरस्स सत्थुनो*, बु॰ वं॰ 12.19; *यम्हि काले महावीरो, आनन्दं उपसङ्कमि, पितुसन्तिकं उपगन्त्वा, आहनी अमतदुन्दुभिं*, बु॰ वं॰ 12.5; – **न्दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ आनन्दं उपसङ्कमीति पितरं आनन्दराजानं सन्धाय वुत्तं*, बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 221; – **महाराजा** पु॰, कर्म॰ स॰, आनन्द-नामक महाराज – *यदा पन आनन्दमहाराज वीसतिया पुरिससहस्सेहि वीसतिया अमच्चेहि च सद्धिं पदुमुत्तरस्स सम्मासम्बुद्धस्स सन्तिके मिथिलनगरे पातुरहोसि*, बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 221.

आनन्द[3] पु॰, गृही अवस्था में विद्यमान तिष्य बुद्ध के पुत्र का नाम – **न्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुभद्दानामिका नारी, आनन्दो नाम अत्रजो*, बु॰ वं॰ 19.18; – **कुमार** पु॰, कुमार आनन्द

– **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो चत्तारि, निमित्तानि दिस्वा सुभद्दादेविया पुत्ते आनन्दकुमारे उप्पन्ने सोनुत्तरं नाम अनुत्तरं तुरङ्गवरमारुय्ह महाभिनिक्खमनं निक्खमित्वा पब्बजि,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 261.

आनन्द[4] पु॰, एक प्रत्येकबुद्ध का नाम – **न्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनन्दो नाम सम्बुद्धो, सयम्भू अपराजितो,* अप॰ 1.240; *आनन्दं तुट्ठिं जननतो आनन्दो नाम पच्चेकबुद्धोति अत्थो,* अप॰ अट्ठ॰ 2.183.

आनन्द[5] पु॰, एक गृद्धराज का नाम – **न्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तदा आनन्दो नाम गिज्झराजा दससहस्सगिज्झपरिवारो गिज्झपब्बते पटिवसति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.419; 445; 447; 454; सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.83.

आनन्द[6] पु॰, समुद्र की पांच सौ योजन आकार की एक बड़ी मछली, विशालकाय महामत्स्य – **न्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महामच्छा तिमि तिमिङ्गलो तिमिरपिङ्गलो, आनन्दो च तिमिन्दो च अज्झारोहो महातिमि,* अभि॰ प॰ 673; *अतीतस्मिञ्हि काले महासमुद्दे छ महामच्छा अहेसुं तेसु आनन्दो तिमिनन्दो अज्झारोहोति इमे तयो मच्छा पञ्चयोजनसतिका,* जा॰ अट्ठ॰ 5.459; – **मच्छ** पु॰, आनन्द नामक मछली – **च्छं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चतुप्पदा सीहं राजानं अकंसु, मच्छा आनन्दमच्छं सकुणा सुवण्णहंसं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.204.

आनन्दकुमार पु॰, 1. मङ्गलबुद्ध का सौतेला भाई – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वेमातिकभाता किरस्स आनन्दकुमारो नाम ... सत्थु सन्तिकं अगमासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.40; अप॰ अट्ठ॰ 1.41; **2.** पु॰, उम्मग्ग-जातक के कथानक का एक पोत-शिल्पी – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गङ्गातीरं पन पत्वा आनन्दकुमारं पक्कोसापेत्वा ... पेसेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.255.

आनन्दचेतिय नपुं॰, बुद्धपूर्वकालीन एक चैत्य का नाम, आनन्द यक्ष द्वारा प्रतिष्ठापित एक विहार – **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकं समयं भगवा भोगनगरे विहरति आनन्दचेतिये,* अ॰ नि॰ 1(2).194; *आनन्दचेतियेति आनन्दयक्खस्स भवनट्ठाने पतिट्ठितविहारे,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.353.

आनन्दथेर पु॰, व्य॰ सं॰, **1.** अनुराधपुर महाविहार (श्रीलङ्का) का एक भिक्षु, अभिधम्म पर मूलटीका का लेखक – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिधम्मटीकं पन आनन्दथेरो अकासि,* सा॰ वं॰ 31; **2.** काञ्चीपुर का एक स्थविर, छपद के चार सहायकों में से एक – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किञ्चिपुरवासिना आनन्दथेरेन ...,* सा॰ वं॰ 38; 44; 63; 64; **3.** अभिधम्म की मधुसारत्थदीपनी-नामक मूलटीका का लेखक, श्रीलङ्का में हंसावती-नामक स्थान का निवासी एक स्थविर – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हंसावतीनगरवासी पन आनन्दथेरो मधुसारत्थदीपनिं नाम अभिधम्मटीकाय संवण्णनं ...,* सा॰ वं॰ 45.

आनन्दबोधि पु॰, आनन्द द्वारा रोपा गया बोधि-वृक्ष – **धि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो पन आनन्दत्थेरेन रोपितत्ता "आनन्दबोधी"ति जातो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.266.

आनन्दयक्ख पु॰, एक यक्ष का नाम – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनन्दयक्खस्स भवनट्ठाने पतिट्ठितविहारे,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.353.

आनन्दवग्ग पु॰, अ॰ नि॰ के एक वर्ग का शीर्षक जिसमें स्थविर आनन्द से सम्बद्ध विवरण हैं, अ॰ नि॰ 1(1).246-259.

आनन्दसुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ तथा अ॰ नि॰ के अनेक सुत्तों का शीर्षक, स॰ नि॰ 1(1).218; 231; 2(1).24; 35; 36-37; 96-97; 172-73; 2(2).365-366; 3(2).356-357; 357; 398-402; 403; 427-429; अ॰ नि॰ 1(1).156-158; 2(1).124-125; 2(2).74-75; 3(1).234-235; 3(2).62-63; 126-129.

आनन्दसुरिय पु॰, म्यां-मां के एक राजकुमार का नाम – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोङ्ह्चज्रसू रञ्ञो पुत्तो आनन्दसुरियो नाम,* सा॰ वं॰ 86(ना॰).

आनन्दसेट्ठि पु॰, श्रावस्ती का एक अत्यधिक समृद्ध एवं महाकृपण सेठ – *सावत्थियं किर आनन्दसेट्ठि नाम चत्तालीसकोटिविभवो, महामच्छरी अहोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.264-266; – **वत्थु** नपुं॰, ध॰ प॰ अट्ठ॰ के एक कथानक का शीर्षक, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.264-266.

आनन्दा स्त्री॰, राजा ओक्काक की पांच पुत्रियों में से एक – ... *पञ्च धीतरो पिया, सुप्पिया, आनन्दा, विजिता, विजितसेनाति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.209.

आनन्दाचरिय पु॰, सच्चसङ्खेप के लेखक श्रीलङ्का के भिक्षु चुल्ल धम्मपाल के आचार्य आनन्द – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनन्दाचरियस्स जेट्ठसिस्सो चुल्लधम्मपालो नामाचरियो सच्चसङ्खेपं अकासि,* गा॰ वं॰ 60(रो॰).

आनन्दि आ +√नन्द का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आनन्दित हुआ, प्रसन्न हुआ – *आनन्दि वित्ता सुमना,* जा॰ अट्ठ॰ 7.374; *आनन्दि वित्ता पपीता,* तदे॰; *आनन्दि वित्ता सुमनाति ... अतिविय नन्दीति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.375.

आनन्दित त्रि., आनन्द से व्यु. [आनन्दित], प्रसन्न, प्रमुदित, खुश – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *एवं आनन्दितो होतु, सह दारेहि लुद्दको,* जा. अट्ठ. 4.377; – **ता** ब. व. – ... *ब्रह्मकायिका, आनन्दिता विपुलमकंसु घोसं,* बु. वं. 1.6; *आनन्दितातिं पमुदितहदया, सञ्जातपीतिसोमनस्सा हुत्वाति अत्थो,* बु. वं. अट्ठ. 37; – **ते** पु., द्वि. वि., ब. व. – *सब्बेव ञातके आनन्दिते पमुदिते करोन्तो जातोति,* अ. नि. अट्ठ. 1.223; – **जन** त्रि., लोगों को आनन्दित कर देने वाला – **नाहि** स्त्री., तृ. वि., ब. व. – *अनोमाहि अनेकाहि आनन्दितजनाहि च पुप्फप्पदीपिकाभत्तपूजाहि,* चू. वं. 85. 69-70.

आनन्दिय त्रि., आ +√नन्द का सं. कृ., आनन्द प्राप्त करने योग्य, आनन्द देने योग्य, आनन्द से परिपूर्ण उत्सव – **यं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *आनन्दियं आचरिंसु, रमणीये गिरिब्बजे,* जा. अट्ठ. 7.374; *आनन्दियं ... रमणीये ... आनन्दछणं आचरिंसु,* जा. अट्ठ. 7.375.

आनन्दी त्रि., [आनन्दिन्], प्रसन्न, आनन्द के भाव से परिपूर्ण, खुश, प्रमुदित – **न्दिनो**[1] पु., प्र. वि., ब. व. – *तत्र चे तुम्हे अस्सथ आनन्दिनो सुमना उप्पिलाविता तुम्हं येवस्स तेन अन्तरायो,* दी. नि. 1.3; – **न्दिनो**[2] पु., ष. वि., ए. व. – *आनन्दिनो तस्स दिसा भवन्ति,* थेरगा. 555; *आनन्दिनो पमोदवन्तो पीतिवन्तो भवन्ति,* थेरगा. अट्ठ. 2.160.

आनमना स्त्री., आ + √नम से व्यु., क्रि. ना. [आनमन], झुक जाना, पीछे की ओर से झुक जाना, आगे की ओर झुक जाना – *कायसङ्खारेहि या कायस्स आनमना विनमना सन्नमना पणमना इञ्जना ... पकम्पना,* पटि. म. 177; *आनमनाति पच्छतो नमना,* पटि. म. अट्ठ. 2.103.

आनय 1. त्रि., आ +√नी का अनियमित सं. कृ., केवल स. उ. प. में ही प्राप्त [आनेय], ले आने योग्य, ठीक से लाने योग्य – **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अनुपट्ठहन्तम्पि सुखुमं सुआनयं होति,* पटि. म. अट्ठ. 2.104; **2.** आ +नी का अनु., म. पु., ए. व. [आनय], ले आ, आनेति के अन्त. द्रष्ट..

आनयति आ +√नी का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आनयति], ले आता है, आनेति के अन्त. द्रष्ट. (आगे).

आनयन नपुं., आ +√नी से व्यु. नियमित क्रि. ना. [आनयन], ले आना, पास में ले जाना, खींच कर ले आना – **नं** प्र. वि., ए. व. – *यक्खभवनं आनयनञ्च एकक्खणेयेव अहोसि,* स. नि. अट्ठ. 1.292; *थेरानं परम्परवसेन संघट्टेत्वा आनयनं एवेत्थ अधिप्पेतं,* सा. वं. 69(ना.); – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *एवं पुनप्पुनं आनयनेन सन्निपातो चिरेनेव अहोसि,* उदा. अट्ठ. 253; – **कारण** नपुं., तत्पु. स., लाए जाने का कारण, पकड़ कर ले आने का कारण – **णं** द्वि. वि., ए. व. – *पण्डितस्स आनयनकारणं करिस्सामी'ति,* जा. अट्ठ. 6.199; – **क्कम** नपुं., तत्पु. स. [आनयनक्रम], लाए जाने का क्रम – *दीनानि वीतिनामेन्तो धातूनानयनक्कमं,* चू. वं. 74.183; – **पच्चुपट्ठान** त्रि., ब. स., ले आए जाने के काम को उदित कराने वाला – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आरम्मणे चित्तस्स आनयनपच्चुपट्ठानो,* ध. स. अट्ठ. 160.

आनह नपुं., बांधने वाला बन्धन – *आदानवत्तीति आनहवत्ति,* वजिर. टी. 440.

आनापान / आणापान / आणापाण नपुं., द्व. स. [प्राणापान], आश्वास एवं प्रश्वास, श्वास का अन्दर आना एवं बाहर निकलना, श्वास-प्रक्रिया – **नं**[1] प्र. वि., ए. व. – *आनापानं मोहचरितस्स वितक्कचरितस्स च,* अभि. ध. स. 63; *आनञ्च अपानञ्च आनापानं,* अभि. ध. वि. टी. 225; 226; – **नं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *आनापानं अनुपस्सति,* स. नि. अट्ठ. 3.301; – **ने**[1] सप्त. वि., ए. व. – *आनापाने परिच्छेदाकासे,* स. नि. अट्ठ. 1.197; – **ने**[2] द्वि. वि., ए. व. – *पल्लङ्कं आभुजित्वा आनापाने परिग्गहेत्वा पठमज्झानं निब्बत्तेसि,* जा. अट्ठ. 1.68; – **नेसु** सप्त. वि., ब. व. – *आनापानेसु सति आनापानस्सतीति,* पटि. म. अट्ठ. 2.74; – **चतुत्थज्झान** नपुं., आश्वास-प्रश्वास को आलम्बन बनाने वाला चतुर्थ ध्यान – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *आनापानचतुत्थज्झानं निब्बत्तेत्वा ....* पारा. अट्ठ. 2.11; – **ज्झान** नपुं., आश्वास एवं प्रश्वास पर ध्यान (चित्त-एकाग्रता) – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *यदिच्छकन्ति कसिणज्झानं वा आनापानज्झानं वा ब्रह्मविहारज्झानं वा असुभज्झानं ... इच्छति,* प. प. अट्ठ. 33; – **निमित्त** नपुं., ध्यान के निमित्त (आलम्बन) के रूप में आश्वास एवं प्रश्वास – **त्तं**[1] प्र. वि., ए. व. – *यस्मा आनापाननिमित्तं तारकरूपमुत्तावलिकादिसदिसं हुत्वा पञ्ञायति,* स. नि. अट्ठ. 3.296; – **त्तं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *आनापाननिमित्तं*

ताव वड्डयतो वातरासियेव वड्डति, विसुद्धि॰ 1.110; – **पब्ब** नपुं॰, आश्वास एवं प्रश्वास पर चित्त को एकाग्र करने की समयावधि अथवा कालखण्ड – **ब्बं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेसु आनापानपब्बं आनापानस्सतिवसेन विसुं कम्मट्ठानंयेव,* विसुद्धि॰ 1.231; *आनापानपब्बन्ति आनापानकम्मट्ठानावधि,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.281; – **परिग्गाहक** त्रि॰, आश्वास एवं प्रश्वास पर (चित्त की एकाग्रता) पूर्ण नियन्त्रण करा देने वाला, आश्वास एवं प्रश्वास को अधिक या कम लम्बाई आदि के रूप में ग्रहण करने वाला – **काय** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनापानपरिग्गाहिकाय सतिया सद्धिं सम्पयुत्तो समाधि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.300; *आनापानपरिग्गाहिकायाति दीघरस्सादिविसेसेहि सद्धिं अस्सासपस्सासे परिच्छिज्जगाहिकाय,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.294; – **नारम्मण** नपुं, ध्यान के आलम्बन के रूप में आश्वास एवं प्रश्वास – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खुनो आनापानारम्मणस्स सुट्ठु परिग्गहितत्ता,* विसुद्धि॰ 1.280; 289; *तत्थ कारणमाह आनापानारम्मणस्स सुट्ठु परिग्गहितत्ता'ति,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.326.

आनापानवग्ग पु॰, स॰ नि॰ के एक वर्ग का शीर्षक, स॰ नि॰ 3(1).150-157.

आनापानसंयुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ के एक संयुत्त का शीर्षक, स॰ नि॰ 3(2).382-409.

आनापानसति स्त्री॰, [बौ॰ सं॰ आनापानस्मृति], आश्वास एवं प्रश्वास की श्वसन-प्रक्रियायों के विषय में चित्त की एकाग्रता एवं समभाव में अवस्थिति, श्वास-प्रक्रिया पर चित्त को स्थिर करना, आश्वास एवं प्रश्वास की स्वाभाविक क्रियाओं को आलम्बन बनाने वाली स्मृति, दस प्रकार की अनुस्मृतियों एवं संज्ञाओं में एक के रूप में उपदिष्ट – **ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ आनन्ति अस्सासो अपानन्ति पस्सासो अस्सासपस्सास निमित्तारम्मणा सति आनापानसति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.158; *आनापाने आरब्भ उप्पन्ना सति आनापानस्सति अस्सासपस्साससनिमित्तारम्मणाय सतिया एतं अधिवचनं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.354; *आनापनस्सतीति आनापाने सति, तं आरब्भ पवत्ता सति, अस्सासपस्सासपरिग्गाहिका सतीति अत्थो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 233-34; ... *आनापानस्सति उपसमानुस्सतीति इमा दस अनुस्सतियो,* विसुद्धि॰ 1.108; – **तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनापानस्सतिं, राहुल, भावनं भावेहि,* म॰ नि॰ 2.91; – **या**[1] तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं भाविताय ... आनापानस्सतिया एवं बहुलीकताय ... फलं पाटिकङ्खं,* स॰ नि॰ 3(2).384; – **या**[2] ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनापानस्सतिया च पभावना न होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.17; *आनापानस्सतियं वा समाधि आनापानस्सतिसमाधीति एवमेत्थ अत्थोवेदितब्बो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.9; – **यो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तत्थ आनापानस्सतियो यथा बुद्धेन देसिता,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.74; स॰ प॰ के रूप में, *दसानुस्सतिदसकसिणचतुधातुववत्थानब्रह्मविहारानापानसतिप्पभेदानि बहूनि निब्बानोरोहणकम्मट्ठानानि सन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.8; – **कम्मट्ठान** नपुं॰, ध्यान के आलम्बन के रूप में आश्वास एवं प्रश्वास पर चित्त की एकाग्रता – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ वा यस्मा ... विसेसाधिगमदिट्ठधम्मसुखविहारपदट्ठानं आनापानस्सतिकम्मट्ठानं ... झानस्स,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.81; 86; – **पठमज्झान** नपुं॰, आश्वास एवं प्रश्वास (आनापन) पर स्मृति अथवा चित्त की जागरूकता से युक्त प्रथम ध्यान – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भवेय्य नु खो एतं आनापानस्सतिपठमज्झानं बुज्झनत्थाय मग्गोति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).187; – **भावना** स्त्री॰, आनापान (आश्वास एवं प्रश्वास) पर स्मृति की जागरुकता द्वारा की गई समाधिभावना अथवा चित्तविशुद्धि – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मुट्ठस्सतिस्स असम्पजानस्स आनापानस्सतिभावनं वदामी'ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.26; – **य** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनापानस्सतिभावनाय आनिसंसं दस्सेतुं वुत्तं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.99; – **समाधि** पु॰, आश्वास एवं प्रश्वास पर चित्त की जागरुकता के साथ की जा रही समाधि – **धि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनापानस्सतिसमाधि भावितो बहुलीकतो सन्तो ... वूपसमेति,* पारा॰ 83; *आमन्तेत्वा च पन भिक्खूनं अरहत्तप्पत्तिया पुब्बे आचिक्खितअसुभकम्मट्ठानतो अञ्ञं परियायं आचिक्खन्तो "आनापानस्सतिसमाधि"ति आह,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.8; – **धिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं भगवा आनापानस्सतिसमाधिं भासेय्य,* स॰ नि॰ 3(2).392; – **ना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनापानस्सतिसमाधिना ..., भगवा वस्सावासं बहुलं विधसी'ति,* स॰ नि॰ 3(2).395; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनापानस्सतिसमाधिस्स, भिक्खवे, भावितत्ता बहुलीकतत्ता ... वा,* स॰ नि॰ 3(2).386; – **सहगत** त्रि॰, आश्वास-प्रश्वास पर चित्त की जागरूकता से युक्त – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनापानस्सतिसहगतं उपेक्खासम्बोज्झङ्गं भावेति ...,* स॰ नि॰ 3(2).383.

आनापानसतिकथा स्त्री॰, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ के आनापानसति – विषयक एक भाग का शीर्षक, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.64-112.

आनापानसतिसुत्त नपुं., म. नि. का आनापानसति-विषयक एक सुत्त, म. नि. 3.124-132.

आनापानसुत्त नपुं., स. नि. का आनापान-विषयक एक सुत्त, स. नि. 3(1).157.

आनापेति / आणापेति आ +√नी के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व., लाए जाने हेतु प्रेरित करता है, बुलवाता है – **पेमि** उ. पु., ए. व. – *तेनाहं गरहभयभीतो तमेव आणापेमीति,* जा. अट्ठ. 1.138; ध. प. अट्ठ. 2.43; – **पेन्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *"यंकारणा जेट्ठकं ठपेत्वा कनिट्ठं आणापेन्तो जेट्ठापचायिककम्मं न करोसी"ति,* जा. अट्ठ. 1.138; – **न्ता** तदे., ब. व. – *ते च सयं आनेन्तापि अञ्ञेहि आणापेन्तापि आनेन्तियेवाति वेदितब्बा,* पारा. अट्ठ. 1.214; – **हि** अनु., म. पु., ए. व. – *ब्राह्मण, दारुगहे गणकं आणापेही'ति,* पारा. 49; *तं तव परिसाय आणापेहीति,* सु. नि. अट्ठ. 2.92; – **नेय्यासि** विधि., म. पु., ए. व. – *ततो तं अपरिग्गहितत्ता आनेय्यासि,* जा. अट्ठ. 5.213; – **पेय्यं** विधि, उ. पु., ए. व. – *आनापेय्यं रज्जहेतु सुमित्तं भातरं मम,* म. वं. 8.2; – **सि** अद्य. प्र. पु., ए. व. – *सो "साधु भगिनी"ति यक्खे आणापेसि,* सु. नि. अट्ठ. 2.92; – **स्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *एवं किर वुत्ते राजा तं आणापेस्सति,* ध. प. अट्ठ. 1.258; – **पेत्वा** पू. का. कृ. – *ते अत्तनो समीपं आणापेत्वा उपट्ठातुमेव युत्तं,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.208; – **पयित्वा** पू. का. कृ. – *आनापयित्वा मतिमा नानापासण्डिके विसुं,* म. वं. 5.36; – **पयित्वान** पू. का. कृ. – *चोरे आनापयित्वान रहस्सेन पलापिय,* म. वं. 36.80; – **पिय** पू. का. कृ. – *पेसेत्वाचरियं राजा तं आनापिय पोसयि,* म. वं. 22.63; – **तुं** निमि. कृ. – *महाबोधिं च थेरिं च आनापेतुं महीपति,* म. वं. 18.1.

आनाय पु., [आनाय], मछली पकड़ने में प्रयुक्त जाल – *थियं कुवेणि कुमिनं, आनायो जालमुच्चते,* अभि. प. 521.

आनिसंस पु., [आनृशंस्य, बौ. सं. अनुशंस / आनुशंस / आनृशंस], लाभ, कल्याण, शुभ फल, लाभप्रद परिणाम, पुण्य, पुरस्कार, शुभ गुण, उत्तम लक्षण – **सो** प्र. वि., ए. व. – *आनिसंसो गुणो चाथ,* अभि. प. 767; *सुचेतसो अनिस्सितो तदानिसंसो'ति,* स. नि. 1(1).55; *तदानिसंसोति अरहत्तानिसंसो,* स. नि. अट्ठ. 1.94; ... *को आनिसंसो पाटिकङ्खो'ति,* अ. नि. 1(1).74; – **सं** द्वि. वि., ए. व. – *किं पन त्वं, विसाखे, आनिसंसं सम्पस्समाना तथागतं अट्ठ वरानि याचसी'ति,* महाव. 384; ... *नेक्खम्मे आनिसंसं पकासेसि,* महाव. 20; – **सा** प्र. वि., ब. व. – *जातकबुद्धवंसादीसु दस्सिताकारा आनिसंसा,* चरिया. अट्ठ. 299; – **से** द्वि. वि., ब. व. – *बोधिसत्तोपि पच्छतो गमने बहू आनिसंसे अद्दस,* जा. अट्ठ. 1.107; *आनिसंसे अनेकेपि, पवत्तयति योगिनो,* अभि. अव. 1337; – **सानं**, ष. वि. ब. व. *दायकेनानिसंसानं, अनेकेसमनेन च, आदिमग्गेन संयुत्तं ...,* अभि. अव. 1338; स. उ. प. के रूप में, अट्ठा., अनुमोदना., अनुस्सरणा., अनेका., अप्पमादा., अभिञ्ञा., अरञ्ञा., अरहत्ता., अविप्पटिसारा., आदीनवा., आवसथा., आवासा., इतिवादपमोक्खा., उदारा., आरम्भा., कठिना., किमा., गुणा., दाना., निब्बाना., निब्बिदाविरागा., पञ्ञाभावना., पलिबोधा., पामुज्जा., फला., बिम्बा., महा. मेत्ता., यथाभूतञाणदस्सना., सद्धा., सीला. आदि के अन्त. द्रष्ट.; **ख.** स. पू. प. के रूप में, – **कथामुख** नपुं., लाभ के विषय में कहे गए कथनों का प्रारम्भ – **खं** प्र. वि., ए. व. – *इति सीलस्स विञ्ञेय्यं, आनिसंसकथामुखन्ति,* विसुद्धि. 1.11. – **चीवर** नपुं., कठिनचीवर नामक संघकर्म में प्राप्त चीवर-विषयक विशिष्ट सुविधा या लाभ, कठिनचीवर नामक संघकर्म में प्राप्त चीवर – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *यो पन आनिसंसचीवरं आदाय पक्कमति,* कङ्खा. अभि. टी. 257; – **त्त** नपुं., आनिसंस का भाव. [आनृशंसत्त्व], लाभ की स्थिति, हितकरता, लाभप्रदता, कल्याणकारी होना – **त्ता** प. वि., ए. व. – *मग्गो हि समथविपस्सनानं आनिसंसत्ता विसेसोति वुत्तो,* पटि. म. अट्ठ. 2.73; – **दस्सन** नपुं., हितों या लाभों का दिखलाई देना – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *सीलसम्पत्तिया च आनिसंसदस्सनेन,* अ. नि. अट्ठ. 3.317; – **दस्सावी** त्रि., लाभ अथवा हित को देखने वाला – **वी** पु., प्र. वि., ए. व. – *सङ्खारे च ... निब्बाने च आनिसंसदस्सावी होतीति?,* कथाव. 328; – **विस्स** पु., ष. वि., ए. व. – *आनिसंसदस्साविस्स संयोजनानं पहानन्ति,* कथा. 327; – **विनो** पु., च. / ष. वि., ए. व. – *अयमानिसंसो वीरियस्सा'ति एवं आनिसंसदस्साविनोपि उप्पज्जति,* विभ. अट्ठ. 264; – **दस्साविता** स्त्री., भाव., लाभ अथवा हित को देखने की अवस्था – **ता** प्र. वि., ए. व. – *येन ... नेक्खम्मे आनिसंसदस्साविता हेतु,* पेटको. 289; – **परिच्छेद** पु., तत्पु. स., लाभ अथवा हित की सीमा अथवा सुनिश्चित मात्रा – **दं** द्वि. वि., ए. व. –

आनिसंसपरिच्छेदं, तस्स सीलस्स को वदे, विसुद्धि॰ 1.10; – **परिवार** त्रि॰, ब॰ स॰, लाभों से परिपूर्ण – **रं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अट्ठानिसंसपरिवारं भङ्गानुपस्सनाञाणं बलप्पत्तं होति,* विसुद्धि॰ 2.280; – **फल** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, पुण्य-कर्मों का फल – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बदुक्खक्खयो आनिसंसफलं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).142; *अपिच निच्चतो अनुपगमनादिवसेन पेतस्स आनिसंसफलं वेदितब्बं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).143; – **महन्तता** स्त्री॰, भाव॰, पुण्य-कर्मों अथवा कल्याणों की महानता – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुनापीपुञ्ञवत्थूनं आनिसंसमहन्ततं, किञ्चि मत्तं भणिस्सामि सुद्धानं बुद्धिमोदकं,* सद्धम्मो॰ 263; – **मूलक** त्रि॰, ब॰ स॰, कठिन-चीवर नामक संघकर्म में विशेष लाभ के रूप में प्राप्त चीवर – **के** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निट्ठितचीवरं निट्ठिते आनिसंसमूलके चीवरे,* कङ्खा॰ अभि॰ टी॰ 252; – **मूलचीवर** नपुं॰, कठिनचीवर नामक संघ-कर्म के अवसर पर विशेष लाभ के रूप में प्राप्त चीवर – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यदि पन आनिसंसमूलचीवरं आदाय बहिसीमागतो ...,* कङ्खा॰ अभि॰ टी॰ 257; – **विभावन** त्रि॰, लाभ एवं हानि को प्रकाशित करने वाला – **नं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदीनवानिसंसविभावनं इमं उदानं उदानेसी ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 87.

आनिसंसदस्सावीकथा स्त्री॰, कथा॰ के एक खण्ड का शीर्षक, कथा॰ 327-328.

आनिसंसवग्ग पु॰, अ॰ नि॰ के अनेक वर्गों का शीर्षक, अ॰ नि॰ 2(2).141-144; 3(2).1-12.

आनिसंससुत्त नपुं॰, अ॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, अ॰ नि॰ 2(2).141.

आनिसद / आणिसद नपुं॰, व्यु॰ संदिग्ध, संभवतः आ + नि +√सद से व्यु॰, **शा॰ अ॰**, शरीर का वह भाग जिसके सहारे नीचे बैठा जाए, **ला॰ अ॰**, पुट्ठा अथवा पीछे वाला भाग, नितम्ब, चूतड़ – **दं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवमेवस्सु मे आनिसदं ... उन्नतावनतो होति तायेवप्पाहारताय,* म॰ नि॰ 1.114; *बोधिसत्तस्स ... आनिसदं मज्झे गम्भीरं होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).362; – **दं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उभोहि हत्थेहि आणिसदं पहरित्वा कूपे खिपित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.385; – **दा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *उदकचिक्खल्लो उट्ठहित्वा याव आनिसदा पहरति,* महाव॰ अट्ठ॰ 365; **क.** स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **महा॰**- त्रि॰, बहुत विशाल नितम्बों वाला – **दो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भद्दकटिको वा महाआनिसदो वा उद्धनकूटसदिसेहि ... समन्नागतो,* महाव॰ अट्ठ॰ 295; **ख.** स॰ पू॰ प॰ के रूप में, – **दट्ठि** नपुं॰, नितम्बों की हड्डी – **ट्ठीनि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आनिसदट्ठीनि हेट्ठामुखठपितसप्पफणसण्ठानानि,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 37; – **ट्ठिका** स्त्री॰, उपरिवत् – **का** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पावळा वुच्चति आनिसदट्ठिका,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.10; – **त्तच** पु॰, ब॰ स॰, नितम्बों की त्वचा – **चो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनिसदत्तचो उदकपूरितपटपरिस्सावनसण्ठानो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 34; – **मंस** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, नितम्ब-प्रदेश का मांस, चूतड़ों का मांस – **सं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनिसदमंसं उद्धनकोटिसण्ठानं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 35; – **सेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आनिसदमंसेहि अच्चुग्गतेहि समन्नागतो,* महाव॰ अट्ठ॰ 295.

आनीत त्रि॰, आ +√नी से व्यु॰, भू॰ क॰ कृ॰ [आनीत], समीप में ले आया गया, पास में पहुंचा दिया गया – *आहटो आभतानीता,* अभि॰ प॰ 749; – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपणा मक्कटच्छापको किणित्वा आनीतो,* म॰ नि॰ 2.53; *अम्हेहि पठमं काको आनीतो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.108; – **ते** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सीसेनादाय आनीते चङ्कोटम्हि सुवण्णये,* म॰ वं॰ 31.87; – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पुब्बे आनीता केनचिदेव करणीयेन पक्कमिंसु,* उदा॰ अट्ठ॰ 253; – **तेसु** पु॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अत्तना आनीतेसु गन्धेसु,* सा॰ वं॰ 125(ना॰); – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स अत्थाय वेसी आनीता अहोसि,* महाव॰ 27; – **ताय** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं अहं भरियायानिताय,* थेरगा॰ 72; *आनीतायाति यथा वंसो वड्ढितग्गो वंसन्तरेसु संसट्ठ साखापसाखो वेळुगुम्बतो दुन्नीहरणीयो होतीति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.172; – **तं**[1] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पियसासनं देवि आनीतं न्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.215; – **तं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सकिं आनीतं पानीयं सब्बं पिवति,* चूळव॰ अट्ठ॰ 116; – **ते** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आधेय्यभूते सप्पिम्हि आनीते,* सद्द॰ 3.925; – **तानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तुम्हमेवेतानि मया आनीतानी ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.157; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **करमरा॰** – त्रि॰, जीते गए अथवा अधीनस्थ प्रदेश से लाया गया – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दासो नाम अन्तोजातो धनक्कीतो करमरानीतो,* पाचि॰ 301; *करमरानीतो नाम तिरोरट्ठं विलोपं वा कत्वा उपलापेत्वा वा तिरोरट्ठतो भुजिस्समानुसकानि आहरन्ति ...,* महाव॰ अट्ठ॰ 268; स॰ पू॰ प॰ के रूप में, – **त्त** नपुं॰, आनीत का भाव॰, ले आया हुआ होना – **त्ता** प॰

वि., ए. व. – ... *सीहळदीपतो आनीतत्ता ततो लद्धो,* सा. वं. 125.

आनीय आ +√नी का पू. का. कृ. [आनीय], पास ला कर, समीप ला कर – *जिनगीवट्ठिं ..., थेरस्स सारिपुत्तस्स, सिस्सो आनीय चेतिये,* म. वं. 1.38.

आनीयत आ +√नी के कर्म. वा. का अनु., म. पु., ब. व., लाने हेतु प्रेरित किया जाए – *तावतिका आनीयतन्ति,* दी. नि. 2.180.

आनीयति आ +√नी का कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आनीयते], ले आया जाता है, समीप में पहुंचा दिया जाता है – **मानो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *पाणो गलप्पवेठकेन आनीयमानो दुक्खं दोमनस्सं पटिसंवेदेति,* म. नि. 2.37; – **नेसु** पु., सप्त. वि., ब. व. – *थेरेन हि ... अञ्ञेसु आनीयमानेसु,* उदा. अट्ठ. 253.

आनुकूल्य / अनुकूल्य नपुं., अनुकूल का भाव. [आनुकूल्य], अनुकूलता, उपयुक्तता, कृपा, मित्रता – *आनुकूल्ये तु सद्धं च,* अभि. प. 1147; – **ल्यं** प्र. वि., ए. व. – *किच्चाविरोधनरसा, अनुकूल्यन्ति गय्हति,* ना. रू. प. 97.

आनुट्ठुभ त्रि., [अनुष्टुभ], अनुष्टुप् नामक छन्द के वर्ग के अन्तर्गत आने वाला – **भेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. – *आनुट्ठुभेन अस्सा, छन्दो बद्धेन गणियमाना तु,* चूळनि. अट्ठ. 131; *गणना उत्तरस्सायं, छन्दसानुट्ठुभेन तु,* उत्त. वि. 969.

आनुत्तरिय / अनुत्तरिय नपुं., अनुत्तर का भाव. [बौ. सं. अनुत्तर्य], **1.** प्रधानता, सर्वश्रेष्ठता, प्रमुखता, सर्वश्रेष्ट कल्याण, सर्वोच्च प्राप्य – **यं** प्र. वि., ए. व. – *अपरं पन, भन्ते, एतदानुत्तरियं, यथा भगवा धम्मं देसेति कुसलेसु धम्मेसु,* दी. नि. 3.75; *आनुत्तरियन्ति अनुत्तरभावो,* दी. नि. अट्ठ. 3.59; **2.** त्रि., भव्य, सर्वोत्तम, बेजोड़, अनुपम – **या** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *या वा पनेतासं सञ्ञानं परिसुद्धा परमा अग्गा अनुत्तरिया अक्खायति,* म. नि. 3.18; *अनुत्तरिया अक्खायतीति असदिसा कथीयति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.11.

आनुपुब्ब नपुं., अनु + पुब्ब से व्यु., भाव. [बौ. सं. आनुपूर्वी, स्त्री.], नियमसङ्गत क्रम, नियमितता – **ब्बं** प्र. वि., ए. व. – *किमानुपुब्बं पुरिसो, किं वतं किं समाचारं,* थेरगा. 727.

आनुपुब्बता स्त्री., अनुपुब्ब से व्यु., भाव., केवल स. उ. प. में ही प्राप्त, पूर्वापरक्रम; **गणना.** – स्त्री., गणनाक्रम, गणना में पूर्वापरक्रम – *ततियन्ति गणनानुपुब्बता ततियं,* ध. स. अट्ठ. 220; **पदा.** – स्त्री., पदों का पूर्वापरक्रम – *इच्चाति ... अक्खरसमवायो ब्यञ्जनसिलिट्ठता पदानुपुब्बतापेतं,* महानि. 101.

आनुपुब्बिक त्रि., अनुपुब्ब से व्यु. [आनुपूर्विक], नियमित, क्रमबद्ध – *गोणसद्दो ... वत्तिच्छानुपुब्बिका सद्दप्पटिपत्तीति वचनतो गोसद्दोति विसुं ... पक्खित्तो,* सद्द. 1.105-06; – **कथानुभाव** पु., एक के बाद दूसरे के क्रम में अथवा क्रमशः आगे बढ़ने वाले क्रम में दिए गए धर्मोपदेश का प्रभाव अथवा बल – **वेन** तृ. वि., ए. व. – *आनुपुब्बिकथानुभावेन विक्खम्भितनीवरणतं सन्धाय वुत्तं,* दी. नि. अट्ठ. 1.248.

आनुपुब्बी स्त्री., [आनुपूर्वी], नियमित क्रम, उचित सिलसिला – *अनुक्कमो परियायो अनुपुब्बयपुमे कमो,* अभि. प. 429; – **ब्बी** प्र. वि., ए. व. – *तत्रायमानुपुब्बी, नवविधसुत्तन्तपरियेट्ठीति,* नेत्ति. 2; – **ब्बियं** सप्त. वि., ए. व. – *आनुपुब्बियं-अनुजेट्ठं,* मो. व्या. 3.2.

आनुभाव / अनुभाव पु., [आनुभाव], गौरव, महिमा, बल, महत्ता, चमक दमक, शान, भव्यता, शक्ति, सामर्थ्य, प्रभाव – **वो** प्र. वि., ए. व. – *पभावो ति, पकारतो भवती ति पभावो, सो यमानुभावो येव,* सद्द. 1.69; *अनुभावो एव आनुभावो, पभावो महन्तो आनुभावो येसं ते महानुभावा,* सारत्थ. टी. 1.42; *गहपतिस्स नत्थि सा इद्धि वा आनुभावो वा,* अ. नि. 1(1).273; *नत्थि सा इद्धि ... सो वा आनुभावो नत्थि,* अ. नि. अट्ठ. 2.213; – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *एतु वदतु ब्याहरतु परस्सामिस्सानुभावन्ति,* अ. नि. 1(2).36; – **वेन** तृ. वि., ए. व. – *कासिकोसलानं, मल्लिके, आनुभावेन कासिकचन्दनं पच्चनुभोम,* म. नि. 2.320; – **वा** प्र. वि., ब. व. – *सत्तानं सोत्थिभावापादनादयो आनुभावा विभावेतब्बा,* चरिया. अट्ठ. 215; स. प. के रूप में, *किलेसगहनपच्चवेक्खणानुभावेनापि, ... एवं चित्तं नमि,* स. नि. अट्ठ. 1.174; स. उ. प. के रूप में, – **खण** पु., तत्पु. स., प्रभाव, शक्ति अथवा महिमा का क्षण – **णे** सप्त. वि., ए. व. – *आनुभावखणे तस्स, पच्चयानमभावतो,* अभि. अव. 717; *आनुभावखणुप्पादे, जातिया पन लब्भति,* अभि. अव. 715; – **दीपक** त्रि., प्रभाव अथवा महिमा को प्रकाशित करने वाला – **कं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *अरियमग्गस्स आनुभावदीपकं वुत्तप्पकारं उदानं*

उदानेसीति, उदा॰ अट्ठ॰ 41; – **धर** त्रि॰, प्रभाव अथवा महिमा को धारण करने वाला – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *जुतिन्धराति आनुभावधरा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.162; – **पकासन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, प्रभाव अथवा महत्त्व का प्रकाशन – **नानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अरियमग्गस्स आनुभावप्पकासनानि ... भासितानि,* उदा॰ अट्ठ॰ 41; – **महत्त** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, अनुभाव अथवा प्रभाव की महत्ता – **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मनोजव'न्ति इमिना आनुभावमहत्तं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 11; – **महन्तता** स्त्री॰, भाव॰, तत्पु॰ स॰, प्रभाव की महत्ता – *महानुभावता नाम आनुभावमहन्तता,* चरिया॰ अट्ठ॰ 300; – **विजाननत्थ** पु॰, प्रभाव को ठीक से जानने का प्रयोजन या उद्देश्य – **त्थं** द्वि॰ वि॰, क्रि॰ वि॰ – *आणदस्सनविसुद्धिया आनुभावविजाननत्थं,* विसुद्धि॰ 2.316; *आनुभावविजाननत्थन्ति सतिपट्ठानपारिपूरि आदिकस्स आनुभावस्स बोधनत्थं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.460; – **विभावना** स्त्री॰, प्रभाव अथवा महिमा का व्याख्यान अथवा प्रकाशन – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेसपारमिनिद्धारणा आनुभावविभावना च ... वेदितब्बाति,* चरिया॰ अट्ठ॰ 182; – **सम्पन्न** त्रि॰, अलौकिक शक्तियों से परिपूर्ण – **न्नं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आनुभावसम्पन्नं एकं मणिक्खन्धं अदस,* जा॰ अट्ठ॰ 2.84; – **न्नेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ जुतीमताति आनुभावसम्पन्नेन,* जा॰ अट्ठ॰ 5.401; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पंसुकूलिक एवं आनुभावसम्पन्नस्स ... निसीदितु'न्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).280; – **न्ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विञ्झाटवियं आनुभावसम्पन्ना रुक्खदेवता हुत्वा निब्बत्ति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 37.

आनुभावता स्त्री॰, आनुभाव का भाव॰, केवल स॰ उ॰ प॰ में ही प्रयुक्त, प्रभाव-परिपूर्णता, प्रभावमयी स्थिति; **अप्पा॰**- स्त्री॰, कर्म॰ स॰, कम प्रभावमयी स्थिति – *तथा हिस्स अङ्गलक्खणानुसारेन अप्पानुभावता दिस्सति,* चरिया॰ अट्ठ॰ 229; **दिब्बा॰** – स्त्री॰, दिव्य प्रभाव वाली स्थिति – *तेसञ्च दिब्बानुभावताति एवमादयो महासत्तस्स गुणानुभावा वेदितब्बाति,* चरिया॰ अट्ठ॰ 72; **महा॰**- स्त्री॰, महान् प्रभावमयी स्थिति – *"अच्छरियं, आवुसो, ... महानुभावता, यत्र हि नाम तथागतो ... जानिस्सति",* म॰ नि॰ 3.161.

आनुभाववन्तु त्रि॰, द्युति, आभा अथवा महत्त्व से परिपूर्ण, प्रभाव से भरपूर – **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आनुभाववन्तो, अरहत्तमग्गञाणजुतिया खन्धादिभेदेधम्मे जोतेत्वा ठिताति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.338.

आनुभावी त्रि॰, स॰ उ॰ प॰ में प्रयुक्त, प्रभाव अथवा महत्त्व से परिपूर्ण, **सब्बा॰**, सभी प्रकार से महिमामय अथवा प्रभावशाली – **वी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बानुभावी च वसी किमत्थं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.53; *सो पन यदि सब्बानुभावी च वसी च,* जा॰ अट्ठ॰ 7.55.

आनुरुद्धि पु॰, अनुरुद्ध की पुरुष सन्तान – *दक्खस्स अपच्चं (पुत्तो) दक्खि, दक्खस्स अपच्चं (पुत्तो) वा, एवं दोणि ... आनुरुद्धि,* क॰ व्या॰ 349.

आनेज/आनेज्ज, आनेञ्ज त्रि॰, दृढ़ता, स्थिरता, राग आदि से अप्रभावित रहने की स्थिति, द्रष्ट॰ अनेज के अन्त॰ (पीछे).

आनेञ्जता स्त्री॰, आनेञ्ज का भाव॰, निश्चल भाव से चित्त का अवस्थान – *इध च पहीनत्तायेव अरूपसमापत्तीनं आनेञ्जता सन्तविमोक्खता च वुत्ता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 246.

आनेञ्जसप्पायसुत्त नपुं॰, व्य॰ सं॰, म॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक – *आनेञ्जसप्पाय सुत्त निट्ठितं छट्ठं,* म॰ नि॰ 3.46-49; – **वण्णना** स्त्री॰, म॰ नि॰ अट्ठ॰ में आनेञ्जसप्पायसुत्त की अट्ठकथा का शीर्षक – *आनेञ्जसप्पायसुत्तवण्णना निट्ठिता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.38-45.

आनेति/आनयति आ +√नी का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आनयति], पास में ले आता है, किसी स्थान पर ले आता है, उपलब्ध करा देता है, वापस ले आता है, – *अतीतयोब्बनो पोसो, आनेति तिम्बरुत्थनिं,* सु॰ नि॰ 110; *आनेति परिग्गण्हाति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.137; – **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *थेरो "त्वं मं अत्तनो वसं आनेसी'ति पुन निवत्तित्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.31; – **मि/यामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *इमं पण्डितं गहेत्वा आनेमी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.159; – **स्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आनेस्सामि सके पुत्ते,* जा॰ अट्ठ॰ 7.324; – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *भिक्खू नानादिसा नानाजनपदा पब्बज्जापेक्खे च उपसम्पदापेक्खे च आनेन्ति,* महाव॰ 26; – **स्साम** भवि॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अत्तना समानजातियकुलतो ते दारिकं आनेस्साम ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.272; – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रथे सुभे, आनयन्तो ...,* म॰ वं॰ 19.33; *आनयन्तो'ति आहरापयन्तो,* म॰ वं॰ टी॰ 364 (ना॰); – **न्ता** प्र॰ वि॰ ब॰ व॰ – *सयं आनेन्तापि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.214; – **हि/नय** अनु॰ म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *त्वं, ब्राह्मण, आपणा मक्कटच्छापकं किणित्वा आनेहि,* म॰ नि॰ 2.53; *"तं*

मे ब्राह्मणमानया'ति, जा॰ अट्ठ॰ 5.185; – **न्तु** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आनेन्तेतं पभावतिन्ति,* आनेन्तु एतं जा॰ अट्ठ॰ 5.291; – **थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अमुकं नाम पाणं आनेथा'ति,* म॰ नि॰ 2.37; – **य्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सो हिंसितो आनेय्य पुन इधा'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.203; – **नये** प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"तञ्च देसं न पस्सामि, यतो सोदरियमानये"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.295; – **य्यासि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *थेरं विस्सासेत्वा आनेय्यासि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.31; – **य्याथ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *मम सन्तिके आनेय्याथ असुरपुर'न्ति,* स॰ नि॰ 1(1).255; – **य्याम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सचे, भन्ते, अय्यो दापेय्य आनेय्याम मयं तं कुमारिकं इमस्स कुमारकस्सा'ति,* पारा॰ 200; – **सि**[1] अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आनयी भरतो लुद्दो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.383; *उपासिकं परिगहेत्वा आनेसि,* महाव॰ 294; – **सि**[2] म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"कुतो नु भवं भारद्वाज, इमे आनेसि दारके,* जा॰ अट्ठ॰ 7.354; – **नेसिं / नयिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आनयिं रासिं अकासिन्ति, अत्थो,* अप॰ अट्ठ॰ 2.189; *राजानं मम वसमानेसिं,* चरिया॰ अट्ठ॰ 176; – **नेसुं / नयुं** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सोणं कोळिविसं सिविकाय आनेसुं,* महाव॰ 251; *तथा तेपानयुं योधे,* म॰ वं॰ 23.99; – **यिम्ह** अद्य॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *न गन्त्वा आनयिम्ह,* थू॰ वं॰ 30 (रो॰); – **स्सामि / नयिस्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आपणा मक्कटच्छापकं किणित्वा आनेस्सामि,* म॰ नि॰ 2.53; *आहरिस्सामीति आनयिस्सामि,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 188; *अहं अञ्ञं पजापतिं आनेस्सामी'ति,* पाचि॰ 109; – **स्सति** प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *चोरेहि नीते दारके आनेस्सती'ति,* पारा॰ 80; *को विधुरमिध मानयिस्सती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.154; *पस्सितुम्पि नं कोचि न लभति, तं को इध आनयिस्सतीति वदति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.154; – **स्ससि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *जम्बुदीपे जेट्ठकं सुतसोमराजानं सचे नानेस्ससि,* चरिया॰ अट्ठ॰ 226; ... *इमे मनुस्से, नानादिट्ठिके नानयिस्ससि ते'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.148; *संसारमोचकादयो पनेत्थ कुसलसञ्ञिनो ते त्वं कथं आनयिस्ससि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.148; – **स्साम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *ते दारिकं आनेस्सामा'ति वदिंसु,* चरिया॰ अट्ठ॰ 182; *मयं तं रागपासेन, ... बन्धित्वा आनयिस्साम,* स॰ नि॰ 1(1).146; – **तुं / नयितुं** निमि॰ कृ॰ – *अहम्पि सक्कुणेय्यं अचेलं पाथिकपुत्तं इमं परिसं आनेतु'न्ति,* दी॰ नि॰ 3.14; *सक्का आनयितुं कण्ह, यं पेतमनुसोचसी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.77; – **नेत्वा / नयित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *गिलानो भिक्खु ... सङ्घमज्झे आनेत्वा,* महाव॰ 150; *आनयित्वा चुद्दसियं ...,* म॰ वं॰ 19.39; – **नेतब्बा** सं॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अत्थारकुसला खन्धकभाणकथेरापरियेसित्वा आनेतब्बा,* महाव॰ अट्ठ॰ 366.

आप पु॰ / नपुं॰, [आपस्, नपुं॰], **शा॰ अ॰,** जल, पानी, **ला॰ अ॰,** चार महाभूतों में आप-नामक एक महाभूत या भूतरूप, प्रक्षरण-लक्षण युक्त रूपधर्म, तरलता, स्नेहत्व एवं पिण्डीकरणत्व आदि के गुणों के रूप में आपोधातु, रूपधर्मों में विद्यमान स्नेहत्व एवं बन्धनत्व के गुण – **क. पर्याय,** – *आपो पयं जलं वारि पानीयं सलिलं दकं, अण्णो नीरं वनं वालं तोयमम्बु दकं च कं,* अभि॰ प॰ 661; *पानीय मुदकं तोयं जलं पाथो च अम्बु च, दकं कं सलिलं वारि आपो अम्भो पयम्पि च, नीरञ्च केबुकं पानि अमतं एलमेव च, आपोनामानि एतानि आगतानि ततो ततो,* सद्द॰ 2.408; तुल॰ अमर॰ 1.10, 3-4; **ख. व्युत्पत्ति,** – *आपं व्यापने, आपुणाति आपो* (जो रूपधर्मों में व्याप्त हो जाए, फैल जाए, भर जाए, वह आप है), सद्द॰ 2.494; *विस्सन्दनभावेन तं तं ठानं अप्पोतीति आपो,* विसुद्धि॰ 1.340; **ग. प्रयोग, 1.** पु॰, – **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपो आपोकायं अनुपेति अनुपगच्छति,* दी॰ नि॰ 1.49; *लक्खणससम्भारारम्मणसम्मुतिवसेन चतुब्बिधो आपो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).33; **2.** नपुं॰, – **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ओमत्तं पन आपो अधिमत्तं ...,* सद्द॰ 1.108; *आपो आपोकायं अनुपेति अनुपगच्छति,* दी॰ नि॰ 1.49; – **पं / पो** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपं आपतो सञ्जानाति,* म॰ नि॰ 1.2; *आपं आपतोति एत्थापि लक्खणससम्भारारम्मण सम्मुतिवसेन चतुब्बिधो आपो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).33; *आपो सिञ्चं यजं उस्सेति यूपं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.269; – **पेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपेन फरणं आपोफरणं नाम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.105; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपस्स आपत्तेन अननुभूतं,* म॰ नि॰ 1.413; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपं आपतो सञ्जानाति,* म॰ नि॰ 1.2; – **स्मिं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपस्मिं मज्जति,* म॰ नि॰ 1.2; – **पा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *किं कयिरा उदपानेन, आपा चे सब्बदा सियुं,* उदा॰ 162; – **पेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बआपेसु गतं अल्लयूसभावलक्खणं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).126; – **पो** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अङ्गा एव सो जनपदो, गङ्गाय पन या उत्तरेन आपो, तासं अविदूरत्ता "उत्तरापो"तिपि वुच्चति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.145; स॰ प॰ के अन्तर्गत –

आपमुखेन दस्सितं गिलानपच्चयं, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.96; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अङ्कुत्तरा॰, उत्तरा॰, खारा॰, मिगतण्हिका॰, स्नेहना॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आपक / आपग पु॰/स्त्री॰, [आपगा], नदी, झरना, पानी को ले जाने वाली नदी – **गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ दक्खिसि आपगं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.278; *आपगन्ति उदकवाहनदिआवट्टं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.279; – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *लोणतोयवतियंव आपका,* जा॰ अट्ठ॰ 5.450; *आपकाति आपगा, अयमेव वा पाठो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.452; – **के** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *वन्दाम, सुपतित्थे च आपके,* जा॰ अट्ठ॰ 7.327; *आपकेति सुपतित्थाय नदिया अधिवत्था देवतापि वन्दाम,* जा॰ अट्ठ॰ 7.328.

आपकरणीय त्रि॰, जल द्वारा किए जाने योग्य – **यं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन आपेन आपकरणीयं करोतीति?,* कथा॰ 121.

आपगरहक त्रि॰, जल की निन्दा करने वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *पथवीगरहका ..., आपगरहका आपजिगुच्छका,* म॰ नि॰ 1.410.

आपगा स्त्री॰, [आपगा], नदी, झरना – *सवन्ती निन्नगा सिन्धु सरिता आपगा नदी,* अभि॰ प॰ 681; – **गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा नरो आपगमोतरित्वा, महोदकं सलिलं सीघसोतं ...,* सु॰ नि॰ 321; *तत्थ आपगन्ति नदिं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.58; – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सालग्गामापगायं तु सेतुं तालीसयट्ठिकं,* चू॰ वं॰ 86.41; – **गा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आपकाति आपगा, अयमेव वा पाठो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.452; तुल॰ आपक; – **कूल** नपुं॰, [आपगाकूल], नदी का तट – **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सोभेन्ति आपगाकूलं, मम लेणस्स पच्छतो,* थेरगा॰ 309.

आपजिगुच्छक त्रि॰, जल से घृणा करने वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *पठवीगरहका पथवीजिगुच्छका, आपगरहका आपजिगुच्छका,* म॰ नि॰ 1.410.

आपज्जति[1] आ + √पद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आपद्यते], **1.क.** प्राप्त कर लेता है, किसी स्थिति या अवस्था में जा पहुंचता है, प्रविष्ट हो जाता है, लिप्त हो जाता है, निष्पादित करता है – ... *तं आपत्तिं आपज्जति,* चूळव॰ 10; *पच्छिमा जनता दिट्ठानुगतिं आपज्जति,* चूळव॰ 225; *सम्मोहं आपज्जतीति विसञ्ञी विय सम्मूळ्हो होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).369; – **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *चीवरे विकप्पं आपज्जसी'ति,* पारा॰ 327; *कुलेसु चारित्तं आपज्जसीति,* पाचि॰ 135; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *ते पच्छा विघातं आपज्जन्ती'ति,* महाव॰ 257; – **थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *धम्मिकानं ... पच्छा खीयनधम्मं आपज्जथाति,* पाचि॰ 202; – **ते** प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आत्मने॰ – *करोन्तोव पनापत्तिं, कथमापज्जते,* उत्त॰ वि॰ 458; – **न्तो / मानो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्तानं कप्पेन्तो विकप्पेन्तो विकप्पं आपज्जन्तो,* महानि॰ 258; *आपत्तिं आपज्जमानोपि ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.34; – **ज्जतो / न्तस्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स तं धम्मं पञ्ञाय पविचिनतो पविचरतो परिवीमंसमापज्जतो आरद्धं होति वीरियं असल्लीनं,* विभ॰ 256; *खीयनधम्मं आपज्जन्तस्स पाचित्तियं,* परि॰ 37; – **ज्जन्ता / माना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पब्बजिता आपत्तिं आपज्जन्ता ...,* महानि॰ 186; *आपज्जन्ताति अनगारिका सत्तसु आपत्तिक्खन्धेसु अञ्ञतरं आपज्जमाना,* महानि॰ अट्ठ॰ 282; – **न्ते** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ब्यसनं आपज्जन्ते,* उदा॰ 154; – **न्तानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पाराजिकानि चत्तारि, आपज्जन्तानमेकतो,* उत्त॰ वि॰ 564; – **न्तेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *विसुं पनापज्जन्तेसु, अयमेव विनिच्छयो,* उत्त॰ वि॰ 565; – **मानं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अकुसलं आपज्जमानं ...,* अ॰ नि॰ 1(1).71; – **ना** वर्त॰ कृ॰, स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दिट्ठानुगतिं आपज्जमाना,* दी॰ नि॰ 3.63; – **ज्जाहि** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *चक्खुन्द्रिये संवरं आपज्जाहि,* म॰ नि॰ 3.51; – **थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *पटिसल्लाणे, भिक्खवे, योगमापज्जथ,* स॰ नि॰ 2(1).15; – **ज्जेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *वुद्धिं विरुळ्हिं वेपुल्लं आपज्जेय्याति,* महाव॰ 407; – **ज्जेय्यं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अकुसलं आपज्जेय्यं,* अ॰ नि॰ 1(1).71; – **ज्जेय्युं** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अनयब्यसनं आपज्जेय्युं,* स॰ नि॰ 1(2).134; – **ज्जेय्याथ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तुट्ठिं आपज्जेय्याथ,* म॰ नि॰ 1.343; – **ज्जि**[1] **/ पादि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *द्वे सङ्घादिसेसा आपत्तियो आपज्जि द्वेमासप्पटिच्छन्नायो,* चूळव॰ 131; *अन्तरा वोसानं आपादि,* चूळव॰ 342; – **ज्जि**[2] म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *चीवरे विकप्पं आपज्जी'ति,* पारा॰ 385; – **ज्जिं / पादिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *एकं आपत्तिं आपज्जिं,* चूळव॰ 98; *भिय्यो पल्लोममापादिं अरञ्ञे विहाराय,* म॰ नि॰ 1.23; – **ज्जिंसु / पादुं** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *न विविधा पाणा संघातं आपज्जिंसु,* दी॰ नि॰ 1.125; *भीता सन्तासमापादुं,* स॰ नि॰ 2(1).80; – **ज्जित्थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *मायस्मन्तो*

विवादं आपज्जित्था'ति, म॰ नि॰ 3.25; – **ज्जिम्हा** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *गारय्हं, आवुसो, धम्मं आपज्जिम्हा असप्पायं,* पाचि॰ 234; – **ज्जिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *उस्सुक्कं आपज्जिस्सति,* चूळव॰ 288; – **स्ससि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *चीवरे विकप्पं आपज्जिस्ससि,* पारा॰ 327; – **स्सामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आपत्तिं आपज्जिस्सामी'ति तुण्हीभूतो सङ्घं विहेसेति,* पाचि॰ 55; – **स्सन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *वुड्ढिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जिस्सन्ति,* महाव॰ 51; – **स्सथ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *वुड्ढिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जिस्सथ,* म॰ नि॰ 1.176; – **स्साम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *न मदं आपज्जिसाम, ... न पमादं आपज्जिस्साम,* म॰ नि॰ 1.210; – **स्स** काला॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *हि त्वं, ... अप्पमादं आपज्जिस्स,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.76; – **स्सथ** तदे॰, आत्मने॰ – *नामरूपं वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जिस्सथा'ति,* दी॰ नि॰ 2.49; – **ज्जितुं** निमि॰ कृ॰ – *तस्सा हि ... कायसंसग्गं आपज्जितुं,* परि॰ अट्ठ॰ 244; – **ज्ज / ज्जित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *संसारमापज्ज परम्पराय,* म॰ नि॰ 2.270; *सो सञ्चेतनिकं सुक्कविस्सट्ठिं आपत्तिं आपज्जित्वा,* पाचि॰ 47; – **तब्ब** सं॰ कृ॰ – **ब्बो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असतिअमनसिकारो आपज्जितब्बो,* म॰ नि॰ 1.170; – **ब्बं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मिं पुग्गले विस्सासं आपज्जितब्बं मञ्ञन्ति,* म॰ नि॰ 1.133; – **ब्बा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपत्ति न आपज्जितब्बा,* चूळव॰ 10; – **ब्बं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *देसेत्वा ... आयतिं संवरं आपज्जितब्बं,* म॰ नि॰ 2.86-87; **2.क.** आपत्ति या विनय-नियमों के विपरीत आचरण करता है, अपराध कर बैठता है, (आपत्ति में) ग्रस्त या पीड़ित हो जाता है – **ज्जति / ज्जते** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आपज्जति यावतकेसु वत्थुसु,* महाव॰ 484; *करं आपज्जते नरो,* उत्त॰ वि॰ 459; – **ज्जरे** आत्मने॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आगन्तुको तथावासि-कोपि आपज्जरे उभो,* उत्त॰ वि॰ 553; – **ज्जन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सकवाचाय कायेन, पसुत्तो च अचित्तको, आपज्जन्तो,* परि॰ 252; – **ज्जेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सचे पन अङ्गुलिमत्तम्पि आकासे तिट्ठेय्य न आपज्जेय्य,* परि॰ अट्ठ॰ 160; **1.ख.** विनय-शिक्षा-पदों का उल्लंघन कर बैठता है, शिक्षापदों में निर्दिष्ट नियमों का अतिक्रमण करने लगता है – *सो यानि तानि खुद्दानुखुद्दकानि सिक्खापदानि तानि आपज्जतिपि वुट्ठातिपि,* अ॰ नि॰ 1(1).263; *यं विनापि चित्तेन आपज्जति, तं अचित्तकं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.216; **1.ग.** **व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में**, रूप को प्राप्त करता है, किसी दशा में परिवर्तित होता है या उसके साथ घुल मिल जाता है, वर्त॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नुपच्चयस्सन्तो अत्तमापज्जति,* सद्द॰ 3.647; *पञ्चादीनं सङ्ख्यानमन्तो अत्तमापज्जते सु-नं-हि इच्चेतेसु परेसु,* क॰ व्या॰ 90; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *नपुंसकानि लिङ्गानि सिम्हि रस्सं आपज्जन्ति,* सद्द॰ 3.646; – **न्ते** तदे॰, आत्मने॰ – *घो रस्समापज्जते संसासु एकवचनेसु विभत्तादेसेसु,* क॰ व्या॰ 66; *सिस्मिं अनपुंसकानि लिङ्गानि न रस्समापज्जन्ते,* क॰ व्या॰ 85; **1.घ.** परिणत होता है, तार्किक रूप प्रतिफलित होता है अथवा घटित होता है – ... *अभिधम्मविरोधो आपज्जति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.98; ..., *दुक्खस्स च सुखपटिविरुद्धन्ति ञानमग्गफलसुखस्स, अनवज्जपच्चय परिभोगसुखस्स च तेसं अधम्मभावो आपज्जतीति एवं वत्तब्बा,* नेत्ति॰ टी॰ 70.

आपज्जन नपुं॰, आ +√पद से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [बौ॰ सं॰, आपद्यन], आ फंसना, पहुंच, प्राप्ति, तार्किक परिणति, प्रवेश, अन्तर्भाव – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ वा आपत्तीति आपज्जनं होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.208; ... *आपत्तिया आपज्जनं दट्ठब्बं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.36; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अनुप्पादधम्मतं आपज्जनेन खीणा ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).135; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवरूपं आपत्तिं आपज्जने ... कथिता,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.208; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **अना॰** – नपुं॰, निषे॰, अप्राप्ति, प्रभावित नहीं होना, अग्रस्तता – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनगारिकविनयो नाम सत्तापत्तिक्खन्ध अनापज्जनं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 108; **दिट्ठानुगति॰** – नपुं॰, मिथ्यादृष्टि के जाल में आ फंसना – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अञ्ञेसं पुञ्ञकामानं दिट्ठानुगतिआपज्जने नियोजनञ्च,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 91; – **द्विरुत्तभावा॰** नपुं॰, **व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में**, द्वित्व की प्राप्ति – *विसेसाभावतो द्विरुत्तभावापज्जनतो च,* सद्द॰ 1.265; **हत्थपरामसना॰**- नपुं॰, हाथ के स्पर्श की प्राप्ति – *भण्डकस्स कारणा हत्थपरामसनापज्जनं विय* ..., स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.63; – **क** त्रि॰, प्राप्त करने वाला, ग्रस्त होने वाला, अपराध से पीड़ित – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *परदारचारित्तं आपज्जनका,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.142.

आपज्जापेति आ +√पद के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आपादयति], प्राप्त कराता है, संपन्न कराता

है – *योजनं गतो ... वत्तब्बतं आपज्जापेति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 127.

आपज्जितु त्रि॰, आ +√पद से व्यु॰, क॰ ना॰, प्राप्त करने वाला, ग्रस्त होने वाला, फंस जाने वाला, ग्रस्त, प्रभावित – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सरतायस्मा एवरूपिं आपत्तिं आपज्जिताति?,* चूळव॰ 183; *एत्थ सरतु आयस्मा एवरूपिं आपत्तिं आपज्जिता, आयस्मा एवरूपिया आपत्तियाति अयमत्थो,* चूळव॰ अट्ठ॰ 37; *एवरूपिं गरुकं आपत्तिं आपज्जिता,* चूळव॰ 214.

आपटिसन्धितो अ॰, प॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰, प्रतिसन्धि अथवा पुनर्जन्म के क्षण से लेकर – *आपटिसन्धितो जवति धावतीति आजवं,* महानि॰ अट्ठ॰ 353.

आपण[1] पु॰/नपुं॰, [आपण], **शा॰ अ॰,** बिक्री के लिए लाई गई वस्तुएं, **ला॰ अ॰,** दुकान, बाजार – **णो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तु आपणो पण्यवीथिका,* अभि॰ प॰ 213; *आपणो कारापितो होति,* महाव॰ 185; – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपणं पसारेन्ति,* चूळव॰ 431; *नानाभण्डानं अनेकविधं आपणं पसारेन्ति,* चूळव॰ अट्ठ॰ 130; – **णा/तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कंसपाति आभता आपणा वा कम्मारकुला,* म॰ नि॰ 1.32; *आपणतो वा कंसपातिकारकानं कम्मारानं घरतो वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).151; – **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपणे निसिन्नो पण्डितवाणिजो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.71; – **णा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बापणा पसारितनियामेनेव ठिता,* जा॰ अट्ठ॰ 4.442; – **णे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यथापसारिते आपणे च ... पहाय,* जा॰ अट्ठ॰ 6.36; – **णेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कल्याणिनामनगरी रुचिरापणेहि,* चू॰ वं॰ 91.5; – **णेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आपणेसु हि सविञ्ञाणकम्पि अविञ्ञाणकम्पि मक्कटादिकीळनभण्डकं विक्किणन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.67-68; – **णानि** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *वीथिया उभतो पस्से आपणानि पसारिय,* म॰ वं॰ 34.76; स॰ प॰ के अन्त॰, – *धुत्तस्स आपणसमीपेन गच्छति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.280; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अगदा॰, अन्तरा॰, ओदनिका॰, ओसधा॰, गन्धा॰, दुस्सा॰, धञ्ञा॰, पुप्फा॰, फला॰, मध्वा॰, मालाकारा॰, रतना॰, सब्बगन्धा॰, सब्बा॰ एवं सा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आपण[2] नपुं॰/पु॰, व्य॰ सं॰, अंगदेश का एक निगम – **णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ खो भगवा अनुपुब्बेन चारिकं चरमानो येन आपणं तदवसरि,* महाव॰ 321; ... *येन आपणं नाम अङ्गुत्तरापानं निगमो तदवसरि,* सु॰ नि॰ 164; *तदवसरीति आपणबहुलताय सो निगमो "आपणो" त्वेव नामं लभि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.147; – **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अङ्गुत्तरापेसु आपणे नाम ब्राह्मणगामे ब्राह्मणकुले निब्बत्तित्वा ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.259.

आपणद्वार नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आपणद्वार], दुकान का प्रवेश-द्वार – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपणद्वारं गन्त्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.281; – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एको पन पुरिसो आपणद्वारेन आगच्छन्तो ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.299; – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपणद्वारे पतितकं,* परि॰ अट्ठ॰ 173.

आपणफलक नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आपणफल्की], सामानों को रखने हेतु दुकान में लगायी गई लकड़ी की तख्ती या पट्टा – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एककुलस्स आपणफलके पञ्चमासकं भण्डं दुट्ठपितं दिस्वा ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.294.

आपणबहुलता स्त्री॰, भाव॰ [आपणबहुलता], दुकानों की अधिकता अथवा प्रचुरता – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपणबहुलताय सो निगमो ... लभि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.147.

आपणमुख नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आपणमुख], **शा॰ अ॰,** दुकान का अगला भाग, **ला॰ अ॰,** दुकान, स॰ प॰ के रूप में, – *तस्मिं किर वीसति आपणमुखसहस्सानि विभत्तानि अहेसुं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.147.

आपणसाला स्त्री॰, [आपणशाला], दुकान वाला घर – *आपणसाला कारापिता होति,* महाव॰ 185.

आपणसुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ का एक सुत्त, स॰ नि॰ 3(2).300-302.

आपणिक पु॰, [आपणिक], दुकानदार, व्यापारी, व्यवसायी – *कयविक्कयिको सत्थवाहापणिकवाणिजा,* अभि॰ प॰ 469; – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ खो सो उपासको येन सो आपणिको तेनुपसङ्कमि,* पाचि॰ 336; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपसङ्कमित्वा तं आपणिकं एतदवोच,* पाचि॰ 336; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपणिकस्स तण्डुलमुट्ठिं थेय्यचित्तो अवहरि,* पारा॰ 76; स॰ उ॰ प॰ के रूप में गन्धा॰, धम्मा॰, पुप्फा॰, फला॰, मधु॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आपणुग्घाटन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आपणोद्घाटन], दुकान को खोलना – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कस्सका कसिकम्मं वाणिजा आपणुग्घाटनं ... पयोजेन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.195.

आपतति आ +√पत् का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आपतति], आ धमकता है, अचानक टूट पड़ता है, तेजी से आ पहुंचता है, आ जाता है, किसी ओर अभिमुख होकर उड़ता है – **सि** म. पु., ए. व. – *पहट्ठरूपो आपतसि,* जा. अट्ठ. 6.280; *आपतसीति आगच्छसि,* तदे.; – **न्तं** वर्त. कृ., पु., द्वि. वि., ए. व. – *तमापतन्तं दिस्वान,* जा. अट्ठ. 5.356; – **न्तेसु** सप्त. वि., ब. व. – *रूपसद्दगन्धरसफोट्ठब्बधम्मेसु आपतन्तेसु,* मि. प. 337; – **न्ती** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *धेनु वेगेन आपतन्ती,* उदा. अट्ठ. 75; – **ती** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *दण्डमादाय नेसादो, आपती तुरितो भुसं,* जा. अट्ठ. 5.356; – **तिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *धनपालको हत्थी आपतिस्सति,* मि. प. 199; – **तित्वा / त्वान** पू. का. कृ. – *आपातं परिपातं, आपतित्वा आपतित्वा परिपतित्वा परिपतित्वा,* उदा. अट्ठ. 290; *कच्चि यन्तापतित्वान, दण्डेन समपोथयि,* जा. अट्ठ. 5.344; *आपतित्वानाति उपधावित्वा,* जा. अट्ठ. 5.345.

आपतन नपुं., आ +√पत से व्यु., क्रि. ना., आ गिरना – **नाय** च. वि., ए. व. – *सभण्डा उपगच्छन्ति, वस्सस्सापतनाय ते,* अप. 1.365.

आपत्त नपुं., आप का भाव. [आपत्व], जल का स्वभाव, जलत्व, तरलता – **त्तेन** तृ. वि., ए. व. – *आपस्स आपत्तेन अननुभूतं,* म. नि. 1.413.

आपत्तञ्जभागिय त्रि., दूसरी आपत्ति से सम्बद्ध – **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आपत्तञ्जभागियं वा होति अधिकरणञ्जभागियं वा,* पारा. 263; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *आपत्तञ्जभागियं वा होति अधिकरणञ्जभागियं वा'ति आदिमाह, या च सा अवसाने आपत्तञ्जभागियस्स अधिकरणस्स वसेन चोदना वुत्ता,* पारा. अट्ठ. 2.167.

आपत्ताधारता स्त्री., भाव., आपत्ति के विषय में उत्पन्न विवाद का आधारभाव, सात प्रकार की आपत्तियां – *आपत्ताधारता चेव, किच्चाधिकरणम्पि च,* विन. वि. 2760; *आपत्ताधारता नाम, सत्त आपत्तियो मता,* विन. वि. 2762.

आपत्ताधिकरण नपुं., तत्पु. स., भिक्षुजीवन में किए गए अपराधों या आपत्तियों से सम्बन्धित वैधानिक मुद्दा या मामला, चार प्रकार के अधिकरणों में से एक – **णं** प्र. वि., ए. व. – *अधिकरणं नाम चत्तारि ... –विवादाधिकरणं, अनुवादाधिकरणं आपत्ताधिकरणं, किच्चाधिकरणं,* पारा. 256; *पञ्चपि आपत्तिक्खन्धा आपत्ताधिकरणं, सत्तपि आपत्तिक्खन्धा आपत्ताधिकरण'न्ति एवं आपत्तियेव आपत्ताधिकरणं,* पारा. अट्ठ. 2.163; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *छ आपत्तिसमुट्ठाना आपत्ताधिकरणस्स मूलं,* चूळव. 199; *आपत्ताधिकरणस्स छ,* चूळव. अट्ठ. 176; – **पच्चया** अ., प. वि., प्रतिरू. निपा., आपत्ति-विषयक विवाद-विषय के कारण – *आपत्ताधिकरणपच्चया चतस्सो आपत्तियो आपज्जतीति,* परि. अट्ठ. 199.

आपत्तानापत्ति स्त्री., द्व. स., आपत्ति (अपराध) एवं अनापत्ति (अपराध का अभाव) – **त्ति** प्र. वि., ए. व. – *विवादाधिकरणं आपत्तानापत्तीति ? विवादाधिकरणं न आपत्ति,* परि. 290; – **त्तिं** द्वि. वि., ए. व. – *आपत्तानापत्तिं न जानाति,* परि. 255; 345; परि. अट्ठ. 166.

आपत्ति स्त्री., [आपत्ति], **शा. अ.,** आकर कहीं पर गिर जाना, आ गिरना, प्राप्ति, प्रवेश, आ पहुंचना – *यथा पनस्स हेतुपच्चयपरियेसनापत्ति होति,* विसुद्धि. महाटी. 2.346; ... *आपत्तीति आपज्जनं होति, पाराजिकस्साति पाराजिकध म्मस्स,* पारा. अट्ठ. 1.208; *"आपत्ति पाराजिकस्सा"ति पाराजिकसङ्खाता आपत्ति अस्स, पाराजिकसञ्जितस्स वा वीतिक्कमस्स आपज्जनं, उल्लपनन्ति अत्थो,* विसुद्धि. महाटी. 1.48; *कतमं आपत्ति नो अधिकरणं? सोतापत्ति समापत्ति अयं आपत्ति नो अधिकरणं,* चूळव. 203; – **तो** प. वि., ए. व. – *दसहाकारेहि पेसुञ्ञं उपसंहरति – जातितोपि ... आपत्तितोपि ...,* पाचि. 20; **ला. अ. क.,** केवल स. प. में प्राप्त, तार्किक दोष में आ फंसना, अयुक्तियुक्तता में आपतित हो जाना – *न पटिपत्तिया वञ्झभावापत्ति अभावपापकत्ताति चे,* विसुद्धि. 2.137; *निब्बानस्सेव अणुआदीनम्पि निच्चभावापत्तीति चे,* विसुद्धि. 2.138; – **तो** प. वि., ए. व. – *सब्बत्थ सब्बदा सब्बेसञ्च एकसदिसभावापत्तितो,* विसुद्धि. 2.232; **ला. अ. ख.,** भगवान् बुद्ध द्वारा प्रज्ञप्त तथा पातिमोक्ख, सुत्तविभङ्ग एवं खन्धकों में संगृहीत विनय-शिक्षा-पदों का उल्लंघन, विनय-विपरीत आचरण (अपराध) में आपतन या आ फंसना, **विनयमातिका के अनुसार,** पाराजिक, संघादिसेस, पाचित्तिय, पाटिदेसनीय एवं दुक्कट नामक पांच आपत्तियां परिगणित – *तत्थ कतमा पञ्च आपत्तियो ? पाराजिकापत्ति, सङ्घादिसेसापत्ति पाचित्तियापत्ति, पाटिदेसनीयापत्ति, दुक्कटापत्ति,* परि. 188; **पदभाजनीय विभङ्ग के अनुसार,** पाराजिक, संघादिसेस, थुल्लच्चय, पाचित्तिय, पाटिदेसनीय,

दुक्कट एवं दुब्भासित नामक 7 आपत्तियां परिगणित – *तत्थ कतमा सत्त आपत्तियो ? पाराजिकापत्ति, सङ्घादिसेसापत्ति, थुल्लच्चयापत्ति, पाचित्तियापत्ति, पाटिदेसनीयापत्ति, दुक्कटापत्ति, दुब्भासितापत्ति–इमा सत्त आपत्तियो,* परि॰ 189; *पञ्च आपत्तियोति मातिकाय आगतवसेन वुत्ता, सत्ताति विभङ्गे आगतवसेन,* परि॰ अट्ठ॰ 152; *तत्थ सङ्घादिसेसोति सजातिसाधारणं, आपत्तीति सब्बसाधारणं,* चूळव॰ अट्ठ॰ 22; *एत्थ अकुसलन्ति आपत्ति अधिप्पेता, आपत्तिं आपन्नोति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.11; *यस्स सिया आपत्ति, सो आविकरेय्य,* परि॰ अट्ठ॰ 229; *सन्ती आपत्ति आविकातब्बा,* महाव॰ 131; *एका आपत्ति एकाहप्पटिच्छन्ना, एका आपत्ति द्वीहप्पटिच्छन्ना,* चूळव॰ 126; – **त्तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वीहाकारेहि आपत्तिं आपज्जति – कायेन वा आपज्जति वाचाय वा आपज्जति,* परि॰ 239; *सन्तिं आपत्तिं नाविकरेय्य, सम्पजानमुसावादस्स होति,* महाव॰ 131; – **या¹** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *छब्बग्गिया भिक्खू अनोकासकतं भिक्खुं आपत्तिया चोदेन्ति,* महाव॰ 143; – **या²** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञतरो भिक्खु आपत्तिया अदस्सने उक्खित्तको विब्भमि,* महाव॰ 124; *आपत्तिया अदस्सने च अप्पटिकम्मे,* परि॰ अट्ठ॰ 179; – **या³ / तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वीहाकारेहि आपत्तिया वुट्ठाति* – परि 239; *आपत्तितो वा आपत्तिं सङ्कमति,* परि॰ 316; – **यं / या** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बञ्चेतं आपत्तियं युज्जति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.217; *असन्तिया आपत्तिया तुण्ही भवितब्बं,* महाव॰ 130; – **यो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तस्स होन्ति आपत्तियो पटिच्छन्नायोपि अप्पटिच्छन्नायोपि ...,* चूळव॰ 153; *सो पुन उपसम्पन्नो ता आपत्तियो नच्छादेति,* चूळव॰ 149; – **त्तीहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सचे मयं इमाहि आपत्तीहि अञ्ञमञ्ञं कारेस्साम,* चूळव॰ 192; – **त्तीनं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पञ्चन्नं आपत्तीनं अञ्ञतरं आपत्तिं पस्सति,* पारा॰ अट्ठ॰ 185; – **त्तीहि** प॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ते भिक्खू ताहि आपत्तीहि वुट्ठिता होन्ति,* चूळव॰ 195; – **त्तीसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एकच्चासु आपत्तीसु निब्बेमतिको, एकच्चासु आपत्तीसु वेमतिको,* चूळव॰ 153; **टि॰**, यह शब्द स्थविरवादी विनय की शब्दावली का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शब्द है। व्युत्पत्ति की दृष्टि से इसका प्रयोग सोतापत्ति, समापत्ति जैसे शब्दों में आ पहुंचना, प्रवेश अथवा प्राप्ति हैं परन्तु विनय में इस शब्द का विशेष अर्थ पातिमोक्ख, विभङ्ग एवं खन्धकों में संगृहीत बुद्ध द्वारा प्रज्ञप्त सिक्खापदों का अतिक्रमण तथा तज्जन्य अपराध से ग्रस्त हो जाना है। पातिमोक्ख नियमों के अनुसार पाराजिक, सङ्घादिसेस, निस्सग्गियपाचित्तिय, पाचित्तिय तथा पाटिदेसनीय नामक पांच आपत्तियां हैं, इन पांचों के अतिरिक्त थुल्लच्चय, दुक्कट एवं दुब्भासित, इन तीन अन्य आपत्तियों का भी विनय में उल्लेख है। इन आठ आपत्तियों में पाराजिक एवं पाचित्तिय, ये दो गरुकापत्ति (अधिक गम्भीर अपराध) हैं तथा शेष 6 लहुकापत्ति (हलके अपराध) बतलाए गए हैं; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अचित्तका॰, अत्था॰, अदुट्ठुल्ला॰, अनयव्यसना॰, अनवसेसा॰, अना॰, अन्तरा॰, अपरा॰, अप्पटिकम्मा॰ अभूतारोचना॰, थुल्लच्चया॰, दुक्कटा॰, दुट्ठुल्ला॰, दुब्भासिता॰, पाचित्तिया॰, पाटिदेसनीया॰, पाराजिका॰, पुनप्पुनअज्झाचारा॰, पुब्बा॰, पुरिसा॰, मूला॰, लहुका॰, विकारा॰, सङ्घादिसेसा॰, सप्पटिकम्मा॰, सभागा॰, सावसेसा॰, सोता॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आपत्तिअङ्गवस नपुं॰, किसी भी अपराध अथवा शिक्षापदों के उल्लंघन के कारण – **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ क्रि॰ वि॰ – *न आपत्तिअङ्गवसेन,* महाव॰ अट्ठ॰ 258.

आपत्तिआपज्जनक त्रि॰, विनय अपराधों में आपतित, पाराजिक आदि अपराधों का आरोपी – **कं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं आपत्तिआपज्जनकं आपन्नपुग्गलं,* उदा॰ अट्ठ॰ 249-50.

आपत्तिकर त्रि॰, पाराजिक आदि आपत्तियों को उत्पन्न कराने वाला – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आपत्तिकरा धम्मा जानितब्बा,* परि॰ 236; *आपत्तिकरा धम्मा जानितब्बातिआदिम्हि एकुत्तरिकनये आपत्तिकरा धम्मा नाम छ आपत्तिसमुट्ठानानि,* परि॰ अट्ठ॰ 158; – **रं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दिवा पटिसल्लीयन्तस्स पन परिवत्तकद्वारमेव आपत्तिकरं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.225.

आपत्तिकुसलता स्त्री॰, भाव॰, आपत्तियों (विनय-अपराधों) के ज्ञान के विषय में कुशलता – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपत्तिकुसलता च आपत्तिवुट्ठानकुसलता च,* अ॰ नि॰ 1(1).101; *एकादसमे आपत्तिकुसलाति पञ्चन्नञ्च सत्तन्नञ्च आपत्तिक्खन्धानं जाननं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.55.

आपत्तिकुसलभाव पु॰, उपरिवत्, – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *या तासं आपत्तीनं आपत्तिकुसलता पञ्ञा पजानन्ति एवं वुत्तो आपत्तिकुसलभावो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.146.

आपत्तिकोट्ठास पु॰, तत्पु॰ स॰, आपत्तियों का एक विशेष भाग – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततिये आपन्नो होति*

कञ्चिदेव देसन्ति कञ्चि आपत्तिकोट्ठासं आपन्नो होति, अ. नि. अट्ठ. 3.297.

आपत्तिक्खन्ध पु., [बौ. सं. आपत्तिस्कन्ध], आपत्तियों की श्रेणी अथवा वर्ग, जिसमें पांच अथवा सात आपत्तियां परिगणित हैं – **न्धो** प्र. वि., ए. व. – *सत्तन्नं आपत्तिक्खन्धानं कतमो आपत्तिक्खन्धो,* परि. 2; *सो आपत्तिक्खन्धो अनियतोति वुच्चति,* परि. अट्ठ. 192; – **धानं** ष. वि., ब. व. – *पञ्चन्नं वा आपत्तिक्खन्धानं अञ्ञतरा आपत्ति,* महाव. 131; – **न्धं** द्वि. वि., ए. व. – *सुद्धकन्ति सङ्घादिसेसं विना लहुकापत्तिक्खन्धमेव,* चूळव. अट्ठ. 35; – **न्धेन** तृ. वि., ए. व. – ... *एकेन आपत्तिक्खन्धेन सङ्गहिता-दुक्कटापत्तिक्खन्धेन,* परि. 85; – **न्धे** सप्त. वि., ए. व. – *भिक्खुनो पच्छिमस्मिं आपत्तिक्खन्धे यथापटिच्छन्ने परिवासं ...,* चूळव. 149; *पच्छा छादितत्ता पन पच्छिमस्मिं आपत्तिक्खन्धे'ति वुत्तं,* चूळव. अट्ठ. 35; – **न्धा** प्र. वि., ब. व. – *पञ्चपि आपत्तिक्खन्धा आपत्ताधिकरणं, सत्तपि आपत्तिक्खन्धा आपत्ताधिकरणं,* चूळव. 196; – **न्धेसु** सप्त. वि., ब. व. – ... *यस्स सत्तसु आपत्तिक्खन्धेसु आदिम्हि वा अन्ते वा सिक्खापदं भिन्नं होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).293; – **न्धानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *यं देसितंनन्तजिनेन तादिना आपत्तिक्खन्धानि विवेकदस्सिना,* परि. 394; *यानि सत्थारा सत्त आपत्तिक्खन्धानि देसितानि,* परि. अट्ठ. 238.

आपत्तिगणना स्त्री., आपत्तियों अथवा विनय में प्रज्ञप्त अपराधों की गणना – **ना** प्र. वि., ए. व. – *वत्थूनं गणनायस्स, आपत्तिगणना सिया,* विन. वि. 705; 706.

आपत्तिगामी त्रि., आपत्ति में आपतित, विनय-निर्दिष्ट अपराधों को करने का आरोपी, भिक्षुसंघ से सम्बद्ध अपराध को करने वाला वह भिक्षु जिसने अभी तक पाप का स्वीकरण नहीं किया है – **नियो** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *तस्मिं ... भिक्खुनियो कम्मप्पत्तायोपि आपत्तिगामिनियोपि,* चूळव. 424.

आपत्तिजनक त्रि., आपत्तियों अथवा पापों को जन्म देने वाला – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *अनारुळ्हेसु सङ्गीतिं, आपत्तिजनकाति हि,* विन. वि. 904.

आपत्तिदिट्ठि त्रि., आपत्ति को आपत्ति के रूप में देखने वाला – **ट्ठि** पु., प्र. वि., ए. व. – *सो तस्सा आपत्तिया आपत्तिदिट्ठि होति,* महाव. 457; – **नो** पु., प्र. वि., ब. व. – *अञ्ञे भिक्खू तस्सा आपत्तिया आपत्तिदिट्ठिनो होन्ति,* महाव. 457.

आपत्तिदेसना स्त्री., तत्पु. स., आपत्ति अथवा भिक्षुसङ्घ से सम्बद्ध अपराध का स्वीकरण – **नं** द्वि. वि., ए. व. – ... *इदं सन्धाय वुत्तं, न आपत्तिदेसनं,* चूळव. अट्ठ. 133; ... *आपत्तिदेसनासङ्खातानं विनयकम्मानमेतं अधिवचनं,* परि. अट्ठ. 222; – **किच्च** नपुं., तत्पु. स., आपत्ति के स्वीकरण का कार्य – **च्चं** प्र. वि., ए. व. – *उद्दिस्स ... भुत्तस्स पच्छा अत्वा आपत्तिदेसनाकिच्चं नाम नत्थि,* पारा. अट्ठ. 2.173; – **पटिग्गहण** नपुं., तत्पु. स., आपत्ति के स्वीकरण का अनुमोदन या पुष्टि – **णेसु** सप्त. वि., ब. व. – *आपत्तिदेसनापटिग्गहणेसु पनेत्थ अयं पाळि,* पारा. अट्ठ. 2.202.

आपत्तिनानत्त नपुं., भाव. [आपत्तिनानात्व], भिक्षु द्वारा किए गए अपराधों की विविधता, – **त्तं** प्र. वि., ए. व. – *अत्थि आपत्तिनानत्तं, नत्थि वत्थुस्स नानता,* उत्त. वि. 557; 561.

आपत्तिनानत्तता स्त्री., भाव. [आपत्तिनानात्व], आपत्तियों या भिक्षुसङ्घीय अपराधों की अनेकता अथवा विविधता – **ता** प्र. वि., ए. व. – *वत्थुनानत्तता अत्थि, ... आपत्तिनानता,* उत्त. वि. 557, 558, 559; *अत्थि नेव वत्थुनानत्तता नो आपत्तिनानत्तता,* परि. 250; *भिक्खुस्स च भिक्खुनिया च अञ्ञमञ्ञं कायसंसग्गे भिक्खुस्स सङ्घादिसेसो भिक्खुनिया पाराजिकन्ति एवं आपत्तिनानत्ततात्व होति,* परि. अट्ठ. 170.

आपत्तिनिकाय पु., तत्पु. स. [बौ. सं. आपत्तिनिकाय], आपत्तियों अथवा भिक्षुसङ्घ से सम्बद्ध अपराधों का वर्ग या समुच्चय, बहुत सारे अपराध – **यो** प्र. वि., ए. व. – *अयं सङ्घादिसेसो नाम आपत्तिनिकायोति एवमेत्थ सम्बन्धो वेदितब्बो,* पारा. अट्ठ. 2.98; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *तस्सेव आपत्तिनिकायस्स नामकम्मं अधिवचनं,* पारा. 150; *सङ्घादिसेसोति इमस्स आपत्तिनिकायस्स नामं,* पारा. अट्ठ. 2.98.

आपत्तिनिदान त्रि., ब. स., आपत्तियों के कारण उत्पन्न, भिक्षुसङ्घीय अपराधों से उदित – **नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आपत्ताधिकरणं आपत्तिनिदानं ...,* परि. 289; *आपत्ति निदानं अस्साति आपत्तिनिदानं,* परि. अट्ठ. 199.

आपत्तिनिरोध पु., तत्पु. स. [बौ. सं. आपत्तिनिरोध], आपत्तियों अथवा भिक्षुसङ्घ से सम्बद्ध अपराधों की समाप्ति या उप मन – **धं** द्वि. वि., ए. व. – *आपत्तिनिरोधं न जानाति,* परि. 254; *निरोधन्ति अयं आपत्ति देसनाय निरुज्झति, वूपसम्मति, अयं वुट्ठानेनाति एवं आपत्तिनिरोधं न जानाति,* परि. अट्ठ. 176; – **गामी** त्रि., आपत्तियों के निरोध को प्राप्त कराने वाला, अपराधों के उच्छेद की स्थिति की ओर ले जाने वाला – **निं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. – *आपत्तिनिरोधगामिनिं पटिपदं जानाति,* परि. 254; *सत्त समथे अजानन्तो पन आपत्तिनिरोधगामिनिपटिपदं न जानाति,* परि. अट्ठ. 176.

आपत्तिपच्चय त्रि., ब. स., आपत्ति अथवा अपराध के कारण से उत्पन्न – **या** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *आपत्तिपच्चया वुत्ता, कति आपत्तियो पन, आपत्तिपच्चया वुत्ता, चतस्सोव महेसिना,* उत्त. वि. 290.

आपत्तिपटिग्गह पु., तत्पु. स., आपत्तियों या अपराधों की आत्मस्वीकृति – **हो** प्र. वि., ए. व. – ... *एवं आपत्तिप्पटिग्गहो पटिग्गहो नाम,* कङ्खा. अट्ठ. 245.

आपत्तिपटिग्गहण/आपत्तिप्पटिग्गहण नपुं., तत्पु. स. [बौ. सं. आपत्तिप्रतिग्रहण], उपरिवत् – **णं** प्र. वि., ए. व. – *ततो आपत्तिप्पटिग्गहणञ्च निस्सट्ठचीवरदानञ्च* ..., कङ्खा. अट्ठ. 154; – **णे** सप्त. वि., ए. व. – *आपत्तिपटिग्गहणे पन अयं विसेसो, यथा ... आपत्तिपटिग्गाहको भिक्खु ञत्तिं ठपेति,* पारा. अट्ठ. 2.203.

आपत्तिपटिग्गाहक त्रि., अपराध-स्वीकरण को स्वीकार करने वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *यथा गणस्स निस्सज्जित्वा आपत्तिया देसियमानाय आपत्तिपटिग्गाहको भिक्खु ञत्तिं ठपेति,* पारा. अट्ठ. 2.203; – **केन** पु., तृ. वि., ए. व. – *आपत्तिपटिग्गाहकेनापि "सुणन्तु मे आयस्मन्ता* ... कङ्खा. अट्ठ. 154; – **के** पु., सप्त. वि., ए. व. – *देसेतीति आपत्तिपटिग्गाहके सभागपुग्गले सति ... देसेतियेव,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).295.

आपत्तिपरिच्छेद पु., तत्पु. स., आपत्ति या अपराध की सुनि चत सीमा – *अप्पटिच्छन्नायो'ति आदीसु आपत्तिपरिच्छेदवसेन परिमाणायो चेव अप्पटिच्छन्नायो चाति अत्थो,* चूळव. अट्ठ. 35; – **विरहित** त्रि., अपराध का विनिश्चय करने में अक्षम – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अपदानं वुच्चति परिच्छेदो, आपत्तिपरिच्छेदविरहितोति अत्थो,* महाव. अट्ठ. 404.

आपत्तिपरियन्त 1. पु., तत्पु. स., आपत्तियों या भिक्षु द्वारा किए गए अपराधों का उपशमन या अन्त – **न्तं** द्वि. वि., ए. व. – *सो आपत्तिपरियन्तं न जानाति, रत्तिपरियन्तं जानाति,* चूळव. 142; *ततो आपत्तिपरियन्तं न जानाति, रत्तिपरियन्तं न जानाती'ति आदिना नयेन सुद्धन्तपरिवासो दस्सितो,* चूळव. अट्ठ. 34; **2.** त्रि., आपत्तियों अथवा अपराधों तक परिसीमित – **न्ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अत्थि भिक्खुसम्मुति आपत्तिपरियन्ता, न कुलपरियन्ता,* पाचि. 48.

आपत्तिपरिवास पु., तत्पु. स., आपत्ति में आपतित हो जाने के कारण निर्धारित अवधि के लिए परीक्ष्यमाण स्थिति में रहने का दण्ड – **सं** द्वि. वि., ए. व. – *ते नेव तित्थियपरिवासं वसन्ति, न आपत्तिपरिवासं, ... वसन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 3.40.

आपत्तिपुच्छा स्त्री., [आपत्तिपृच्छा], आपत्ति के विषय में पूछ-ताछ – **च्छा** प्र. वि., ए. व. – ... *मातिकाय च विभङ्गे च आगतापत्तिपुच्छा,* परि. अट्ठ. 152.

आपत्तिबहुका स्त्री., कर्म. स., आपत्तियों की बहुलता, बहुत सारी आपत्तियां – **का** प्र. वि., ए. व. – *आपत्तिबहुका ञेय्या, पुनप्पुनं निपज्जने,* विन. वि. 2248.

आपत्तिबहुल त्रि., ब. स., बहुत सारे अपराध करने वाला, अपराध करते रहने की प्रकृति वाला – **लो** पु., प्र. वि., ए. व. – *भिक्खु बालो होति अब्यत्तो आपत्तिबहुलो अनपदानो,* महाव. 419; *आपत्तिबहुलोति, सापत्तिककालोवस्स बहु, सुद्धो निरापत्तिककालो अप्पोति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.110; – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *बालस्स अब्यत्तस्स आपत्तिबहुलस्स तज्जनीयकम्मं करोन्तेन,* चूळव. अट्ठ. 2; – **ला** पु., प्र. वि., ब. व. – *सापत्तिका वाति आपत्तिबहुला,* महानि. अट्ठ. 189; – **ता** स्त्री., भाव., आपत्तियों की अधिकता अथवा अनेकता – **ता** प्र. वि., ए. व. – *आपत्तिट्ठाने पन धारावच्छेदवसेन पयोगबहुलताय आपत्तिबहुलता वेदितब्बा,* पारा. अट्ठ. 2.183.

आपत्तिभय नपुं., तत्पु. स., आपत्तियों अथवा भिक्षुसङ्घीय अपराधों का भय – **यानि** प्र. वि., ब. व. – *चत्तारिमानि, ... आपत्तिभयानि,* अ. नि. 1(2).276; *आपत्तिभयानीति, इमानि चत्तारि आपत्तिं निस्साय उप्पज्जनकभयानि नामाति,* अ. नि. अट्ठ. 2.392; – **वग्ग** पु., अ. नि. के एक वग्ग का शीर्षक जिसमें भिक्षुसङ्घ के अपराधों से उत्पन्न भयों का विवरण है, अ. नि. 1(2).275-282.

आपत्तिभयसुत्त नपुं., व्य. सं., अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 1(2).276-278.

आपत्तिभाव पु., तत्पु. स., आपत्ति अथवा अपराध की अवस्था – **वो** प्र. वि., ए. व. – ... *सब्बापत्तीनं साधारणो आपत्तिभावो,* पारा. अट्ठ. 2.169; – **वं** द्वि. वि., ए. व. – ... *आपत्तिभावं न जानासी'ति,* महाव. अट्ठ. 406.

आपत्तिभीरु त्रि., आपत्तियों अथवा भिक्षुसङ्घीय अपराधों से डरने वाला – **ना** पु., तृ. वि., ए. व. – *आपत्तिभीरुना निच्चं, वत्थब्बं परिमण्डलं,* विन. वि. 1871; – **क** त्रि., उपरिवत् – **केन** तृ. वि., ए. व. – *तस्मा आपत्तिभीरुकेन ... मंसं पटिग्गहेतब्बं,* पारा. अट्ठ. 2.173; म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.35.

आपत्तिभेद पु., तत्पु. स. [आपत्तिभेद], अपराधों का भेद-प्रभेद, आपत्तियों का वर्गीकरण – **दो** प्र. वि., ए. व. – *इतरस्स पन सब्बो आपत्तिभेदो पठमसिक्खापदे वुत्तो,* पाचि. अट्ठ. 87, 176; – **दं** द्वि. वि., ए. व. – *एवं वत्थुवसेन च चित्तवसेन च आपत्तिभेदं दस्सेत्वा ...,* पारा. अट्ठ. 1.298.

आपत्तिमूल नपुं., तत्पु. स. [आपत्तिमूल], आपत्ति अथवा अपराध का मूल उद्गम-स्थल – **लानि** प्र. वि., ब. व. – *कति आपत्तिमूलानि, पञ्ञत्तानि महेसिना,* उत्त. वि. 876; 877.

आपत्तिमोक्ख पु., तत्पु. स. [आपत्तिमोक्ष], आपत्तियों से मुक्ति – **क्खो** प्र. वि., ए. व. – *एवं एकस्स सतियापि आपत्तिमोक्खो होतीति,* पारा. अट्ठ. 2.215.

आपत्तिलेस पु., दस प्रकार के लेसों में से एक, लघु आपत्ति में आपतित भिक्षु को पाराजिक जैसी गम्भीर आपत्ति का आरोप लगाने वाले भिक्षु का अपराध – **सो** प्र. वि., ए. व. – *आपत्तिलेसो नाम लहुकं आपत्तिं आपज्जन्तो दिट्ठो होति तञ्चे पाराजिकेन चोदेति अस्समणोसि, असक्यपुत्तियोसि ... पे. ... आपत्ति वाचाय ...,* पारा. 265; ... *लेसो नाम दस लेसा – जातिलेसो, नामलेसो, गोत्तलेसो, लिङ्गलेसो, आपत्तिलेसो, पत्तलेसो, चीवरलेसो उपज्झायलेसो, आचरियलेसो, सेनासनलेसो,* पारा. 264; द्रष्ट. लेस के अन्त.

आपत्तिवस्स नपुं., तत्पु. स., आपत्तियों की वर्षा, सङ्घीय अपराधों की झड़ी या प्रचुरता – **स्सं** द्वि. वि., ए. व. – *ततो ... आपत्तिवस्सं किलेसवस्सं अतिविय वस्सति,* उदा. अट्ठ. 249.

आपत्तिविनिच्छय[1] पु., तत्पु. स. [आपत्तिविनिश्चय], विनय में निर्दिष्ट अपराधों का स्पष्ट निश्चय – **यो** प्र. वि., ए. व. – *अयं पन आदितो पट्ठाय वित्थारेन आपत्तिविनिच्छयो,* पारा. अट्ठ. 2.183.

आपत्तिविनिच्छय[2] पु., व्य. सं., पञ्ञासामी महाथेर द्वारा लिखित विनय-आपत्ति-विषयक एक ग्रन्थ का नाम – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *रञ्ञो ... अभियाचितो सो येवाहं अक्खरविसोधनिं नाम गन्थं आपत्तिविनिच्छयं नाम गन्थञ्च तथा सङ्घरञ्ञा चोदितो ... अकासिं,* सा. वं. 141(ना.).

आपत्तिविसेस पु., तत्पु. स., आपत्तियों का विशिष्ट भाव, विनय में निर्दिष्ट अपराधों की विशिष्ट रूप से पहचान – **सो** प्र. वि., ए. व. – *वत्थुविसेसेन पनेत्थ कम्मविसेसो च आपत्तिविसेसो च होती ति,* पारा. अट्ठ. 2.42.

आपत्तिवुट्ठान[1] नपुं., तत्पु. स., आपत्तियों से ऊपर उठ जाना, आपत्तियों से विमुक्ति या छुटकारा – **नं** प्र. वि., ए. व. – *इमं आपत्तिं आपज्जित्वा वुट्ठातुकामस्स यं तं आपत्तिवुट्ठानं ...,* पारा. अट्ठ. 2.99; *आपत्तिवुट्ठानत्थं तुरिततुरितो छन्दजातो न होति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.110; – **कुसलता** स्त्री., आपत्तियों से विमुक्त हो जाने की अवस्था के ज्ञान में कुशलता – **ता** प्र. वि., ए. व. – *आपत्तिकुसलता च आपत्तिवुट्ठानकुसलता च,* अ. नि. 1(1).101; *आपत्तिवुट्ठानकुसलताति देसनाय वा कम्मवाचाय वा आपत्तीहि वुट्ठानजानननन्ति,* अ. नि. अट्ठ. 2.55; – **ता** स्त्री., भाव., आपत्तियों से विमुक्ति की अवस्था – **ता** प्र. वि., ए. व. – *सा वो भविस्सति अञ्ञमञ्ञानुलोमता आपत्तिवुट्ठानता विनयपुरेक्खारता,* महाव. 211; *आपत्तिवुट्ठानता विनयपुरेक्खारताति आपत्तीहि वुट्ठानभावो विनयं पुरतो कत्वा, चरणभावो,* महाव. अट्ठ. 336.

आपत्तिवुट्ठान[2] नपुं., द्व. स., स. प. के अन्त. ही प्रयुक्त, आपत्ति (अपराध) तथा उससे छुटकारा – *आपत्तिवुट्ठानपदस्स कोविदोति आपत्तिवुट्ठानकारणकुसलो,* महाव. अट्ठ. 411.

आपत्तिसङ्गह पु., तत्पु. स., नौ प्रकार के संग्रहों में से एक, 'आपत्ति' शीर्षक के अन्दर शिक्षापदों का संग्रह – **हो** प्र. वि., ए. व. – *नवसङ्गहा – वत्थुसङ्गहो, विपत्तिसङ्गहो, आपत्तिसङ्गहो, निदानसङ्गहो, पुग्गलसङ्गहो, खन्धसङ्गहो, समुट्ठानसङ्गहो, अधिकरणसङ्गहो, समथसङ्गहो ति,* परि. 414; *यस्मा पन सत्तहापत्तीहि मुत्तं एकसिक्खापदम्पि नत्थि, तस्मा सब्बानि आपत्तिया सङ्गहितानीति एवं आपत्तिसङ्गहो वेदितब्बो,* परि. अट्ठ. 265.

आपत्तिसञ्ञा स्त्री., तत्पु. स., आपत्ति के विषय में चेतना अथवा ज्ञान – **य** तृ. वि., ए. व. – *अनापत्ति पन*

आपत्तिसञ्ञायपि अनापत्तिसञ्ञायपि ... होति, चूळव॰ अट्ठ॰ 19.

आपत्तिसञ्ञी त्रि॰, आपत्ति (विनय-अपराध) के रूप में जानने वाला – **ञ्ञी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो च आपत्तिया आपत्तिसञ्ञी, यो च अनापत्तिया अनापत्तिसञ्ञी ...,* परि॰ 240; *आपत्ति च होति आपत्तिसञ्ञी च,* चूळव॰ अट्ठ॰ 19.

आपत्तिसन्दस्सना स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, आपत्ति को अच्छी तरह से दरसाना अथवा प्रकाशित करना, वत्थुसन्दस्सना के अन्त॰ चार प्रकार की चोदनाओं में से एक – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपत्तिसन्दस्सना नाम त्वं मेथुनधम्मपाराजिकापत्तिं आपन्नो'ति एवमादिनयप्पवत्ता,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.158.

आपत्तिसभागता स्त्री॰, आपत्ति से समानता, आपत्ति जैसा होना – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थि वत्थुसभागता नो आपत्तिसभागता, ...,* परि॰ 250; *असाधारणापत्तियं नेव वत्थुसभागता नो आपत्तिसभागता,* परि॰ अट्ठ॰ 170; *अत्थापत्तिसभागता, नत्थि वत्थुसभागता,* उत्त॰ वि॰ 566.

आपत्तिसभागत्त नपुं॰, भाव॰, उपरिवत् – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सियापत्तिसभागत्तं, न च वत्थुसभागता,* उत्त॰ वि॰ 569.

आपत्तिसमुट्ठान नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आपत्तियों की उत्पत्ति कराने वाले छ धर्म, विनय में निर्दिष्ट अपराधों अथवा आपत्तियों को उठाने वाले छ प्रकार के धर्मों में से कोई एक – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपत्तिसमुट्ठानेन कति आपत्तियो आपज्जति?,* परि॰ 194; *ततियेन आपत्तिसमुट्ठानेन पञ्च आपत्तियो आपज्जति,* परि॰ अट्ठ॰ 173; – **ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तत्थ कतमे छ आपत्तिसमुट्ठाना,* परि॰ 189; – **नानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *छ आपत्तिसमुट्ठानानि मूलानि,* परि॰ 207; ... *आपत्तिकरा धम्मा नाम छ आपत्तिसमुट्ठानानि,* परि॰ अट्ठ॰ 158; – **नानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *छन्नं आपत्तिसमुट्ठानानं कतिहि समुट्ठानेहि समुट्ठातीति?,* परि॰ 2.

आपत्तिसमुट्ठानगाथा स्त्री॰, परि॰ के उस गाथा-संग्रह का शीर्षक, जिसमें आपत्तियों को उत्पन्न कराने वाले धर्मों का उल्लेख है, परि॰ 198-200.

आपत्तिसमुट्ठानसीसकथा स्त्री॰, उत्त॰ वि॰ के उस भाग का शीर्षक, जिसमें आपत्तियों का उदय कराने में कारणभूत छ धर्मों का विवरण है, उत्त॰ वि॰ 325-423.

आपत्तिसमुदय पु॰, तत्पु॰ स॰, आपत्तियों की उत्पत्ति का कारण – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपत्तिसमुदयं न जानाति,* परि॰ 254; – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समुदयन्ति छ आपत्तिसमुट्ठानानि आपत्तिसमुदयो नाम,* परि॰ अट्ठ॰ 176.

आपत्तिसमूह पु॰, तत्पु॰ स॰, आपत्तियों का समूह, अपराधों का ढेर – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्सेव आपत्तिनिकायस्साति तस्स एव आपत्तिसमूहस्स,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.99.

आपत्तिसामन्त 1. त्रि॰, वह, जिसकी सीमा कोई आपत्ति हो – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वे सामन्तानि खन्धसामन्तञ्च आपत्तिसामन्तञ्च,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.32; 2. क्रि॰ वि॰ के रूप में प॰ वि॰ में प्रयुक्त, लगभग आपत्ति में आपतित होने जा रहा – *उपज्झायो आपत्तिसामन्ता भणमाणो निवारेतब्बो,* महाव॰ 52; *आपत्तिसामन्ता ... आपत्तिया आसन्नवाचं भणमानो,* महाव॰ अट्ठ॰ 248.

आपथ पु॰, आगमन का पथ, आने का अथवा उत्पन्न होने का स्थान – **थो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रजोपथोति रागदोसमोहरजानं आपथो, आगमनट्ठानन्ति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.309.

आपदा स्त्री॰, [आपद, बौ॰ सं॰ आपद], विपत्ति, बुरी एवं दुःख भरी अवस्था, भय से परिपूर्ण स्थिति – *विपत्ति चापदा,* अभि॰ प॰ 385; – **दा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *विपत्ति आपदाति वुच्चति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.235; – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बोद्धुमरहन्ति आपदं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.335; *तस्मा ते आपदं बोद्धुमरहन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.337; – **य / दे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *उप्पन्नाय आपदाय अत्था भविस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.147; *यो मित्तो मित्तमापदे, न चजे ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.334; *दुक्खमापज्जि विपुलं, तस्मिं पठममापदे,* जा॰ अट्ठ॰ 5.344; – **दा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *या ता होन्ति आपदा अग्गितो ... दायादतो,* अ॰ नि॰ 1(2).78; – **नं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *धनपरिच्चागं कत्वा तासं आपदानं मग्गं पिदहति निवारेति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.306; – **सु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सति ... आपदासु यावदत्थ'न्ति,* चूळव॰ 260; *आपदासूति वाळमिगादयो वा दिस्वा मग्गमूळ्हो वा दिस्वा ओलोकेतुकामो हुत्वा दवडाहं वा उदकोघं वा आगच्छन्तं दिस्वा ... वट्टति,* चूळव॰ अट्ठ॰ 57; – *यो मित्तोति यो मित्तो आपदासु मित्तं न चजे,* जा॰ अट्ठ॰ 5.336; – **पासु** अनि॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आपासु मे युद्धपराजितस्स,* जा॰ अट्ठ॰ 2.262; *तत्थ आपासूति आपदासु,* तदे॰; – **दत्थ** पु॰, सङ्कटकाल के निमित्त – **त्थाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *देवगहदारूनि नगरपटिसङ्खारिकानि आपदत्थाय निक्खित्तानि,* पारा॰ 49; *आपदत्थाय निक्खित्तानीति अग्गिदाहेन वा पुराणभावेन वा*

पटिराजूपरुन्धनादिना वा गोपुरट्टालकराजन्तेपुरहत्थिसालादीनं विपत्ति आपदाति वुच्चति ..., पारा. अट्ठ. 1.235; – **बुज्झन** नपुं., विपत्ति का ज्ञान – **नं** प्र. वि., ए. व. – *पदं हेतन्ति यसमहत्तं वा ञाणमहत्तं वा पत्तानं अत्तनो आपदबुज्झनं नाम पदं कारणं,* जा. अट्ठ. 5.337.

आपन्न त्रि., आ +√पद का भू. क. कृ. [आपन्न], **1.** कर्तृ. वा., **शा. अ.**, आ पहुंचा हुआ, **ला. अ. क.**, किसी अवस्था अथवा स्थिति में प्राप्त, **ख.** विनयसम्मत अपराधों में आपतित (विपत्ति से) पीड़ित या ग्रस्त – *आपन्नो त्वापदम्पत्तो,* अभि. प. 743; – **न्नो** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *आपत्तिं आपन्नो होति,* महाव. 157; *इत्थन्नामं आपत्तिं आपन्नो,* चूळव. 216; *आपत्तिं त्वं, आवुसो, आपन्नो,* महाव. 409; – **न्नं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *तञ्च सत्थं अद्दसंसु अनयब्यसनं आपन्नं,* दी. नि. 2.255; – **न्नेन** पु., तृ. वि., ए. व. – *अञ्ञेन पाराजिकं आपन्नेन पुट्ठेन,* पारा. अट्ठ. 2.151; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *सभागसङ्घादिसेसं आपन्नस्स पन सन्तिके आवि कातुं न वट्टति,* चूळव. अट्ठ. 21; – **न्ने** पु., सप्त. वि., ए. व. – ... *अप्पोस्सुक्कभावं आपन्ने भगवति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).175; – **न्ना** पु., प्र. वि., ब. व. – *द्वे भिक्खू सङ्घादिसेसं आपन्ना होन्ति,* चूळव. 161; – **न्नेसु** सप्त. वि., ब. व. – *तुम्हेसु अप्पोस्सुक्कतं आपन्नेसु खत्तियवंसो उपच्छिज्जिस्सति,* ध. प. अट्ठ. 1.258; – **न्ना** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *भिक्खुनी पठमापत्तिकं धम्मं आपन्ना निस्सारणीयं सङ्घादिसेसन्ति,* पाचि. 305; – **न्नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – ... *चीवरे विकप्पं आपन्नं निस्सग्गियं,* पारा. 329; – **न्नानि** ब. व. – *पञ्चमत्तानि देवतासतानि उस्सुक्कं आपन्नानि होन्ति* ..., उदा. 73; **2.** कर्म. वा. में, वह, जिसे प्राप्त कर लिया गया है, विहित, कृत, सम्पादित – **न्ना** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *आपन्नाति अट्ठपरियोसाने आपन्ना,* कङ्खा. अट्ठ. 285; – **न्नं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. – *पच्छा आपन्नमापत्तिं, समोधाय विधानतो,* विन. वि. 526; – **न्नाय** स्त्री., ष. वि., ए. व. – *आपन्नाय आपत्तिया मूलायपटिकस्सने कते,* चूळव. अट्ठ. 33; **3.** पु., किया जा चुका अपराध, आपत्ति – **न्नं** द्वि. वि., ए. व. – *छादेति जानमापन्नं,* खु. सि. 5(गा. 28); *यो भिक्खु ... एवं वत्थुवसेन वा जानमापन्नं आपत्तिं याव छादेति,* खु. सि. पु. टी. 87; स. उ. प. के रूप में अदया., अना., उस्सुका., दया., विवादा., सोता. के अन्त. द्रष्ट.

आपन्नत्त नपुं., आपन्न का भाव. [आपन्नत्व], प्राप्त होने या ग्रस्त होने की अवस्था – **त्ता** प. वि., ए. व. – ... *अञ्ञाणेन आपन्नत्ता तस्सा आपत्तिया मोक्खो नत्थि,* पाचि. अट्ठ. 134; *पुरिमकअत्तभावे जायाय सद्धिं पमादं आपन्नत्ता'ति,* ध. प. अट्ठ. 2.75.

आपन्नपुग्गल पु., कर्म. स. [आपन्नपुद्‌गल], अपराध कर चुका व्यक्ति, आपत्ति में आपतित या उससे ग्रस्त व्यक्ति – **लं** द्वि. वि., ए. व. – ... *तं आपत्तिआपज्जनकं आपन्नपुग्गलं* ... *तेमेति,* उदा. अट्ठ. 249-250.

आपन्नभाव पु., अपराध-ग्रस्तता, आपत्ति में आ फंसने की दशा – **वं** द्वि. वि., ए. व. – ... *आपत्तिं वा आपन्नभावं आजनन्तोयेव* ... *पुच्छति,* पाचि. अट्ठ. 31; ... *आपत्तिं आपन्नभावं जानाही'ति वा वदतु,* चूळव. अट्ठ. 21; – **वेन** तृ. वि., ए. व. – *तस्स हि आपत्तिं आपन्नभावेनपि दोसो,* अ. नि. अट्ठ. 2.12.

आपन्नसत्ता स्त्री., ब. स. [आपन्नसत्त्वा], गर्भवती नारी, वह स्त्री, जिसकी कोख में शिशु-प्राणी पहुंच चुका है – *गरुगब्भापन्नसत्ता च गब्भिनी,* अभि. प. 239; *गब्भिनिवग्गस्स पठमसिक्खापदे – आपन्नसत्ताति कुच्छिपविट्ठसत्ता,* पाचि. अट्ठ. 210; – **त्तं** द्वि. वि., ए. व. – *पोस मन्ति आपन्नसत्तमेव मं छड्डेत्वा पब्बजितो,* उदा. अट्ठ. 58; – **त्तानं** च./ष. वि., ब. व. – *यथा आपन्नसत्तानं, भारमोरोपनं धुवं,* जा. अट्ठ. 1.26.

आपपसंसक त्रि., [आपप्रशंसक], जल की प्रशंसा करने वाला व्यक्ति, पानी का गुणगान करने वाला व्यक्ति – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *ये पन* ... *पथवीपसंसका पथवाभिनन्दिनो, आपपसंसका* ... *ब्रह्माभिनन्दिनो,* म. नि. 1.410.

आपयति √आप के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व., प्राप्त कराता है, ला देता है, पहुंचा देता है – *आपेति आपयति, आपो,* सद्द. 2.553; – **ये** विधि., प्र. पु., ए. व. – *को तेसं गतिमापये'ति,* जा. अट्ठ. 6.53; *गतिमापयेति को मं तेसं पच्चेकबुद्धानं निवासट्ठानं पापेय्य, गहेत्वा गच्छेय्याति अत्थो,* जा. अट्ठ. 6.53.

आपवण नपुं., आ + प +√वण से व्यु., क्रि. ना. [आप्रवण], ढलान, झुकाव, उतार, पार्श्वभाग – *खुदि आपवणे, खुन्दति,* सद्द. 2.381.

आपस्सेन नपुं., अपस्सेन का सन्धिविकारजनित रूपान्तरण, अप + आ +√सि से व्यु., केवल स. उ. प. में प्राप्त [अपाश्रयण], सहारा, तकिया, आधार, टिकने का उपकरण,

स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **चतुरा॰** – त्रि॰, ब॰ स॰, चार प्रकार के सहारों वाला – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो हि चतुरापस्सेनो सङ्खायेकं पटिसेवति, ... अधिवासेति, ... परिवज्जेति, ... विनोदेती'ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.96.

आपाक पु॰, आ +√पच से व्यु॰ [आपाक], चूल्हा, भट्टा, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, – **कुम्भकारापाक** पु॰, कुम्हार का भट्ठा, आवां – **का** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुरिसो कुम्भकारपाका उण्हं कुम्भं उद्धरित्वा समे भूमिभागो पटिसिस्सेय्य,* स॰ नि॰ 1(2).74.

आपाटली त्रि॰, [आपाटल], (पाटलि-नामक एक वृक्ष का) पीत-रक्त, प्याजी अथवा गुलाबी रंग वाला (पुष्प) – **लिं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपाटलिं अहं फुप्फं उज्झितं सुमहापथे, थूपम्हि अभिरोपेसिं,* अप॰ 1.119; पाठा॰ अपाटलिं.

आपाणकोटिकं अ॰, अव्ययी॰ स॰ [आप्राणकोटिकं], अन्तिम सांस लेने तक, प्राण निकलने तक, मृत्यु पर्यन्त – *भिक्खू पस्सामि यावजीवं आपाणकोटिकं परिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं चरन्ते,* म॰ नि॰ 2.330; *तत्थ आपाणकोटिकन्ति पाणोति जीवितं, तं मरियादं अन्तो करित्वा, मरणसमयेपि चरन्तियेव, तं न वीतिक्कमन्तीति वुत्तं होति, "अपाणकोटिक"न्तिपि पाठो, आजीवितपरियन्तन्ति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.251.

आपाणकोटियं अ॰, उपरिवत् – *आपाणकोटिया आपाणकोटियं कपच्चयस्स यकारादेसो,* सद्द॰ 3.749.

आपातपरिपातं अ॰, क्रि॰ वि॰, किसी की ओर उन्मुख होकर गिरते हुए, चारों ओर उड़कर गिरते हुए – *सम्बहुला अधिपातका तेसु तेलप्पदीपेसु आपातपरिपातं अनयं आपज्जन्ति,* उदा॰ 154; *आपातपरिपातन्ति आपातं परिपातं, आपतित्वा आपतित्वा परिपतित्वा परिपतित्वा, अभिमुखपातञ्चेव परिब्भमित्वा पातञ्च कत्वाति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 290.

आपातलिका स्त्री॰, [आपातलिका], वेतालीय जाति के छन्द का एक प्रभेद, जिसके प्रथम एवं तृतीय चरणों में छ वर्ण एवं द्वितीय तथा चतुर्थ चरणों में आठ वर्ण रहते हैं – *आपातलिका कथिता'यं भग्गान्तो यदि पुब्बमिवञ्चं,* वुत्तो॰ 30 (पृ॰ 165).

आपाथ पु॰, आ +पथ के प्रेर॰ से व्यु॰ [आपाथ], इन्द्रियों एवं चित्त का विषय, आलम्बन अथवा क्षेत्र, **क.** प्रायः गच्छति, आगच्छति एवं उपगच्छति के साथ प्रयुक्त होने पर; विषय बन जाता है, सुस्पष्ट हो जाता है, प्रायः इन्द्रियवाचक, चित्तवाचक एवं संज्ञावाचक षष्ठी-विभक्त्यन्त अथवा सप्तमी-विभक्त्यन्त नामों के पश्चात् प्रयोग में प्राप्त – *... चक्खुविञ्ञेय्या रूपा चक्खुस्स आपाथं आगच्छन्ति,* महाव॰ 256; *धम्मे आवज्जन्तस्स आपाथं अनागतधम्मो नाम नत्थीति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.62; *अतीतं ... धम्मा सब्बाकारेन बुद्धस्स भगवतो ञाणमुखे आपाथं आगच्छन्ति,* पटि॰ म॰ 368; *आपाथं आगच्छन्तीति ओसरणं उपेन्ति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.237; **ख.** कभी कभी, ष॰ वि॰/सप्त॰ वि॰ में अन्त होने वाले नामों के बिना भी प्रयोग में प्राप्त – *बाहिरा च रूपा न आपाथं आगच्छन्ति,* म॰ नि॰ 1.251; *एवं ताव दिट्ठवसेन रूपारम्मणं आपाथमागच्छति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 118; *तीणि महाभूतानि एकप्पहारेनेव आपाथं आगच्छन्ति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 364; **ग.** अन्य क्रि॰ रू॰ के साथ भी यदा-कदा प्रयुक्त – *आपाथं न वजन्ति ये, ते धम्मारम्मणा होन्ति,* अभि॰ अव॰ 301; *सम्मासम्बुद्धस्स रूपं इमेसं अक्खीनं आपाथं करोही'ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.32; *आपाथं करोहीति सम्मुखं करोहि, गोचरं करोहीति अत्थो,* सारत्थ॰ टी॰ 1.112; *आपाथकनिसादी होतीति मनुस्सानं आपाथे दस्सनट्ठाने निसीदति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.20; *आपाथे पतितं अत्तनो वा परस्स वा साटकवेठनादिवत्थुकं रूपारम्मणं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.116; *... भिक्खुनो ञाणमुखे एतापथो, एवं आपाथं गच्छामीति वुत्तं होती,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰ प॰) 1(2).282; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अना॰, एता॰, चक्खा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **काल** पु॰, तत्पु॰ स॰, विषय या क्षेत्र बनने का समय, सुस्पष्ट रूप से प्रकट होने का काल – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेनेव हिस्स आपाथकाले विय विमद्दनकालेपि कथेन्तस्स विय सुणन्तस्सापि सम्मुखीभावतो ... वुत्तं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 195; – **गत** त्रि॰, [आपाथगत], इन्द्रियों अथवा चित्त द्वारा गृहीत या ज्ञात, पकड़ में आया हुआ – **तं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कनिट्ठमापाथगतं गहेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.147; – **ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चक्खुद्वारे पन रूपे आपाथगते भवङ्गचलनतो उद्धं सककिच्चं निप्फादनवसेन आवज्जनादीसु उप्पज्जित्वा ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).273; *चक्खुद्वारे पन रूपे आपाथगते इट्ठे मे आरम्मणे रागो उप्पन्नो,* विभ॰ अट्ठ॰ 37; – **तानि** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ठपेत्वा आपाथगतानि रूपादीनि,* विभ॰ अट्ठ॰ 383; – **तेसु** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *घानद्वारादीसु पन गन्धादीसु आपाथगतेसु एको एवं परिग्गहं पट्ठपेति,* विभ॰ अट्ठ॰ 38; – **गतत्त** नपुं॰, भाव॰ [आपाथगतत्व], आपाथ में अथवा इन्द्रियों आदि की पकड़ के अन्दर रहना

– **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ असम्भिन्नत्ता चक्खुस्स, आपाथगतत्ता रूपानं, आलोकसन्निस्सितं, मनसिकारहेतुकं* ..., ध॰ स॰ अट्ठ॰ 318; – **गम** पु॰, √गम से व्यु॰, आपाथ अथवा विषय बन जाना, आलम्बनत्व – **मेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असम्भेदेन चक्खुस्स, रूपापाथगमेन च, ... जायते चक्खुविञ्ञाणं,* अभि॰ अव॰ 69; – **गमन** नपुं॰, उपरिवत् – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं पच्चुप्पन्नरूपादीनं चक्खुपसादादिघट्टनञ्च भवङ्गचलनसमत्थताय मनोद्वारे आपाथगमनञ्च अपुब्बं अचरिमं एकक्खणेयेव होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 117-118; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अत्तनो आपाथगमने सति ... अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 290; – **ट्ठान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आपाथस्थान], दृष्टिपथ में आया हुआ स्थान – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपाथकज्झायीति मनुस्सानं आपाथट्ठाने समाधिसमापन्नो ... झायी,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.50; – **दस** त्रि॰, आपाय+दिस से व्यु॰, दृष्टिपथ में आए हुए सभी कुछ को देखने वाला – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गहपति, अरियसावको महापञ्ञो पुथुपञ्ञो आपातदसो पञ्ञासम्पन्नो,* अ॰ नि॰ 1(2).78; पाठा॰ आपातदसो; – **मत्त** त्रि॰, [आपाथमात्र], वह, जो इन्द्रियों अथवा चित्त के आलम्बन मात्र के रूप में है, केवल विषय, केवल गोचर – **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अञ्ञत्र अभिनिपातमत्ताति अञ्ञत्र आपातमत्ता,* विभ॰ 363; पाठा॰ आपातमत्ता; – **रमणीय** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आपाथरमणीय], आपाथ अथवा इन्द्रियों के गोचर के रूप में मनोहर एवं आकर्षक, इन्द्रियों द्वारा ग्रहण किए जाते ही मनोहारी – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भगवतो एव वा वचनं अभिक्कन्तं ... आपाथरमणीयतो, ... आह,* उदा॰ अट्ठ॰ 233-34.

आपाथक पु॰, आपाथ से इसी शब्द के अर्थ में व्यु॰ – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आपाथके जनस्स पाकटट्ठाने झायी,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.50; – **ज्झायी** त्रि॰, लोगों की दृष्टि के सामने ही ध्यान लगाने का ढोंग रचने वाला – **यी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *समाहितो विय सेय्यं कप्पेति, आपाथकज्झायीव होति,* महानि॰ 164; *आपाथकज्झायीव होतीति सम्मुखा आगतानं मनुस्सानं झानं समापज्जन्तो विय सन्तभावं दस्सेति,* महानि॰ अट्ठ॰ 269; – **निसादी** त्रि॰, लोगों के दृष्टिपथ में बैठने वाला, लोगों के आमने सामने बैठने वाला – **दी** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तपस्सी आपाथकनिसादी होति,* दी॰ नि॰ 3.31; *आपाथकनिसादी होतीति मनुस्सानं आपाथे दस्सनट्ठाने निसीदति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.20.

आपाद पु॰, आ +√पद से व्यु॰ [आपाद], प्राप्ति, अवाप्ति, परिग्रह, पारिश्रमिक – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनापादासूति आपादानं आपादो, परिग्गहोति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.160.

आपादक 1. त्रि॰, आ +√पद से व्यु॰, उत्पन्न करने वाला, ले जाने वाला – **कं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिञ्ञापादकं चतुत्थज्झानं समापज्जित्वा* ..., वि॰ व॰ अट्ठ॰ 4; 2. नपुं॰, शिशु की देख-रेख करने वाला, संरक्षक, प्रतिपालक – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *बहुकारा, मातापितरो पुत्तानं आपादका पोसका इमस्स लोकस्स दस्सेतारो,* अ॰ नि॰ 1(1).78; *आपादकाति वड्ढका अनुपालका,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.28; – **दिका** स्त्री॰, धाय, धात्री, उपमाता, पालने-पोसने वाली नारी – **का** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बहूपकारा, भन्ते, महापजापति गोतमी भगवतो मातुच्छा आपादिका पोसिका खीरस्स दायिका,* म॰ नि॰ 3.303; *आपादिकाति संवड्ढिका, तुम्हाकं हत्थपादेसु हत्थपादकिच्चं असाधेन्तेसु हत्थे च पादे च वड्ढेत्वा पटिजग्गिकाति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.232-33; *तस्स बुद्धस्स मातुच्छा, जीवितापादिका अयं,* अप॰ 2.206.

आपादित त्रि॰, आ +√पद के प्रेर॰ का भू॰ क॰ कृ॰ [आपादित], 1. पूरा किया जा चुका, प्राप्त हो चुका, निष्पादित, प्राप्त कराया जा चुका – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *संवेगमापादितोति*–, महानि॰ 301; *घट्टितोति, घट्टनमापादितो,* महानि॰ अट्ठ॰ 381; ... *पूतिभावं आपादितरुक्खो विय* ..., स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.77; *उक्खित्तभण्डिकभावं आपादितेति अत्थो,* महाव॰ अट्ठ॰ 385; 2. पाला या पोसा गया, भरण-पोषण किया गया – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपादितोति उपड्ढबलितो पटिपादितो,* महानि॰ अट्ठ॰ 228; – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *जीवितं आपादितं पालितं ... पवत्तितं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.100; – **त्त** नपुं॰, आपादित का भाव॰ [आपादितत्व], प्राप्त करायी गयी अवस्था अथवा स्थिति – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अनुप्पत्तिधम्मतं आपादितत्ता* ... *अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 38.

आपादेति आ +√पद का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आपादयति], 1. (किसी विशेष स्थिति अथवा अवस्था को) प्राप्त कराता है अथवा उसमें पहुंचा देता है, निष्पादित कराता है – *सो अभिक्कमन्तो पटिक्कमन्तो बहू खुद्दके पाणे सङ्घातं आपादेति,* म॰ नि॰ 2.45; ... *वधं आपादेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.42; – **न्ति** ब॰ व॰ – ... *यावजीवं परिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं चरन्ति, अद्धानञ्च आपादेन्तीति,* स॰ नि॰ 2(2).118; *आपादेन्तीति पवेणिं पटिपादेन्ति, दीघरत्तं*

अनुबन्धापेन्ति, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.39; – **न्ता** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *बहू खुद्दके पाणे सङ्घातं आपादेन्ता'ति,* महाव॰ 181; *आपादेन्ताति विनासं आपादेन्ता,* महाव॰ अट्ठ॰ 330; – **य्युं** विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *इदानि अनुबन्धित्वा अनयब्यसनं आपादेय्यु'न्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).121; – **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सुवीरो ... देवानमिन्दस्स पटिस्सुत्वा पमादं आपादेसि,* स॰ नि॰ 1(1). 250; *आपादेसीति पमादं अकासि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.297; – **सिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *माहं खुद्दके पाणे विसमगते सङ्घातं आपादेसि'न्ति,* म॰ नि॰ 1.112; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).358-59; – **स्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अनयब्यसनं आपादेस्सामि वज्जी'ति,* दी॰ नि॰ 2.56; *आपादेस्सामीति पापयिस्सामि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.95; – **तुं** निमि॰ कृ॰ – *फातिं कातुन्ति वड्ढिं आपादेतुं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).156; – **दीयति** कर्म॰ वा॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आपाद्यते], प्राप्त कराया जाता है, पहुंचाया जाता है – *विक्खिप्पपेति विक्खिपीयति विक्खेपं आपादीयति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.68; **2.** पालन-पोषण कराता है, देखभाल कराता है – **य्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यंनूनाहं इमं दारकं अस्समं नेत्वा आपादेय्यं पोसेय्यं वड्ढेय्यन्ति,* दी॰ नि॰ 2.252; *आपादेय्यन्ति निप्फादेय्यं, आयुं वा पापुणापेय्यं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.361; **3. ला॰ अ॰,** तात्पर्य अथवा आशय के रूप में ग्रहण करता है – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *अयमेत्थ ... ञायं अत्थतो आपादेत्वा ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.169.

आपादेतु त्रि॰, आ +√पद के प्रेर॰ से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, प्रतिपालक, पोषक, बलवर्धक, प्राप्त कराने वाला – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथापि जातस्स आपादेता, एवं मोग्गल्लानो,* म॰ नि॰ 3.297; *आपादेताति पोसेता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.228.

आपान[1] नपुं॰, आ +√पा से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आपान], **1.** एक साथ बैठकर पीने का स्थान, मधुशाला, मदिरालय, **2.** पानगोष्ठी, मद्यपों की मण्डली – *आपानं पानमण्डलं,* अभि॰ प॰ 534; *आभुसं पिवन्त्यस्मिन्ति आपानं, आगन्त्वा पिवन्ति एत्था'ति वा,* अभि॰ प॰ सूची (पृ॰) 38(रो॰); – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मयं सुरापातियं विसञ्ञीकरणं भेसज्जं पक्खिपित्वा आपानं सज्जेत्वा निसीदित्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.259.

आपान[2] पु॰, व्य॰ सं॰, श्रीलङ्का के एक वन्निराजा का नाम – *कदलीवाटमापानं तिपव्हं हिमियानकं,* चू॰ वं॰ 90.33.

आपानकमनुस्स पु॰, कर्म॰ स॰, पियक्कड़ मनुष्य, मदिरापान के व्यसन से पीड़ित आदमी – **स्सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आपानकमनुस्सो विय आचरियुपज्झायादिको कल्याणमित्तो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.105.

आपानभूमि स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आपानभूमि], मधुशाला, मदिरालय, एक साथ मिल बैठकर मदिरा पीने वाला स्थान – **मिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *तेसं आपानभूमिं गन्त्वा तेसं किरियं ओलोकेत्वा "अयं सुरा इमेहि इमिना नाम कारणेन योजिता"ति ञत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.260; ... *सेतच्छत्तञ्च आपानभूमिञ्च वत्थं ... दस्सेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.281; – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *उदककीळं कीळित्वा उय्यानं गन्त्वा आपानभूमियं निसीदि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.45.

आपानमण्डप पु॰, तत्पु॰ स॰ [आपानमण्डप], खुली हुई मधुशाला, सुरापान के निमित्त तैयार किया गया मण्डप – **पं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उय्याने आपानमण्डपं कारेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 6.221; ... *संवसित्वा सुरापानमण्डपं गन्त्वा ... पिवि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.425.

आपानमण्डल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आपानमण्डल], मदिरापान के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला एक गोलाकार क्षेत्र, सुरापान के निमित्त प्रयुक्त गोलाकार स्थल – **लं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सकलं लुम्बिनीवनं चित्तलतावनसदिसं, महानुभावस्स रञ्ञो सुसज्जितं आपानमण्डलं विय अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.63; *अयं मे दारकानं आपानमण्डलं भविस्सति, कीळाभूमि भविस्सति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).266; – **लं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आपानमण्डलं सज्जेत्वा निसिन्ना केवलं इमं सुरं वण्णेथ,* जा॰ अट्ठ॰ 1.260.

आपानीय त्रि॰, आ +√पा का सं॰ कृ॰, **शा॰ अ॰,** अच्छी तरह से पीने योग्य, पानी के साथ जुड़ा हुआ, **ला॰ अ॰,** वह, जिसमें पानी या मदिरा को पिया जाए – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यस्मा पनेत्थ आपं पिवन्ति, तस्मा "आपानीयो"ति वुच्चति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.105; – **स्स** नपुं॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपानीयकंसोति आपानीयस्स मधुरपानकस्स भरितकंसो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).271; – **कंस** पु॰, तत्पु॰ स॰, **शा॰ अ॰,** कांसे का वह पात्र जिससे जल पिया जा सके, **ला॰ अ॰,** सुरापात्र, जाम – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपानीयो च सो कंसो चाति आपानीयकंसो सुरामण्डसरकस्सेतं नामं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.105; *सेय्यथापि, भिक्खवे, आपानीयकंसो वण्णसम्पन्नो गन्धसम्पन्नो रससम्पन्नो,* म॰ नि॰ 1.397; *आपानीयकंसोति आपानीयस्स मधुरपानकस्स*

भरितकंसो, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).271; – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपि नु सो पुरिसो अमुं आपानीयकंसं पिवेय्य* ..., म॰ नि॰ 3.45; – **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपानीयकंसेन निमन्तनपुरिसो विय लोके... निमन्तकजनो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.105; – **सम्हि**, सप्त॰ वि॰ ए॰ व॰ *तत्थ यथा आपानीयकंसम्हि गुणे च आदीनवे च आरोचिते ... भविस्सति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.105.

आपापेति आ + प +√आप का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आप्रापयति], प्राप्त कराता है, स्थिति-विशेष में पहुंचाता है – *किलेसपरिळाहतो मुत्तो सब्बसत्ते अस्सासेति, सन्तभावं आपापेति,* अप॰ अट्ठ॰ 2.98.

आपाभिनन्दी त्रि॰, [आपाभिनन्दिन्], आप-तत्त्व का अभिनन्दन करने वाला, जल-तत्त्व में आनन्द लेने वाला – **न्दिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *अहेसुं* ..., *तया पुब्बे समणब्राह्मणा लोकस्मिं पथवीपसंसका पथवाभिनन्दिनो, आपपसंसका आपाभिनन्दिनो,* म॰ नि॰ 1.410.

आपायिक त्रि॰, अपाय से व्यु॰ [बौ॰ सं॰ आपायिक], तिरच्छान, निरय (नरक), पेत्तिविसय (प्रेतयोनि) तथा असुरकाय, इन चार प्रकार की दुखद गतियों अथवा अवस्थाओं के साथ जुड़ा हुआ, चार प्रकार की दुखभरी योनियों में जन्म लेने वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपायेसु जातो आपायिको,* क॰ व्या॰ 404; *असद्धम्मेहि ... देवदत्तो आपायिको नेरयिको कप्पट्ठो अतेकिच्छो,* चूळव॰ 342; *अपाये निब्बत्तिस्सतीति आपायिको,* चूळव॰ अट्ठ॰ 110; – **का** ब॰ व॰ – *इति आपायिकापि नानत्तकाया एकत्तसञ्ञिनोत्वेव सङ्ख्यं गच्छन्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.166; *कति आपायिका वुत्ता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना,* परि॰ 394; – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपायिकं दुक्खं उपलब्भतीति,* कथा॰ 51; – **स्स** नपुं॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपायिकस्स दुक्खस्स पटिसंवेदी उपलब्भतीति?,* कथा॰ 51; – **के** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दिट्ठिसम्पन्नो पुग्गलो आपायिके रूपे रज्जेय्याति?,* कथा॰ 382; – **कानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अपाये भवानि आपायिकानि आदिसद्देन तदञ्ञं सब्बसंसारदुक्खं सङ्गण्हाति,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.37; – **कानं** नपुं॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आपायिकानं ठानानं दुग्गतिवेदनियानं अप्पहाना ... वदामि,* म॰ नि॰ 1.353; *आपायिकानं ... अपाये निब्बत्तापकानं कारणानं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).221; – **दुक्ख** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आपायिकदुःख], दुखदायक योनियों में जन्म ग्रहण करने से प्राप्त दुःख – **क्खं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *दुक्खं आपायिकदुक्खं अनुभवन्ति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 51.

आपायिकवग्ग पु॰, अ॰ नि॰ के एक वर्ग का शीर्षक, अ॰ नि॰ 1(1).300-308; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.224-227.

आपायिकसुत्त नपुं॰, अ॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, अ॰ नि॰ 1(1).300.

आपिलति द्रष्ट॰ अपिलपित के अन्त॰.

आपीयति आ +√पा के कर्म॰ वा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आपीयते], ठीक से पिया जाता है, पूरी तरह पी लिया जाता है अथवा सोख लिया जाता है – *अप्पोति आपियति अप्पायतीति वा आपो,* विसुद्धि॰ 1.354; *अप्पेति, आपीयति, अप्पायतीति वा आपो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.69; *आपीयतीति सोसीयति, पिवीयतीति केचि,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.416.

आपुच्छ / आपुच्छा आ +√पुच्छ का पू॰ का॰ कृ॰, पूछ कर, अनुमति लेकर – ..., *भणति आपुच्छहं गमिस्सामि,* थेरीगा॰ 416; 418; *भणति आपुच्छहं गमिस्सामीति अहं तुम्हे आपुच्छित्वा यत्थ कत्थचि गमिस्सामी ति सो मम सामिको ... भणति,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 290.

आपुच्छक त्रि॰, आ +√पुच्छ से व्यु॰, पूछने वाला, अनुमति ले कर काम करने वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *"आपुच्छका च परियेसन्तापि अदिस्वा सब्बे आपुच्छिता अम्हेही"ति सञ्ञिनो होन्ति,* महाव॰ अट्ठ॰ 270.

आपुच्छकरणनिद्देस पु॰, खु॰ सि॰ के सत्रहवें खण्ड का शीर्षक, खु॰ सि॰ 22-23.

आपुच्छति आ +√पुच्छ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आपृच्छति], **1.** पूछता है, प्रश्न करता है – *परिनिब्बानाय च सत्थारं आपुच्छति,* उदा॰ अट्ठ॰ 349; – **च्छिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *धम्मराजं उपगम्म, आपुच्छिं पञ्हमुत्तमं,* अप॰ 1.99; *आपुच्छिं पञ्हमुत्तमन्ति उत्तमं खन्धायतनधातुसच्चसमुप्पादादिपटिसंयुत्तं पञ्हं अपुच्छिन्ति अत्थो,* अप॰ अट्ठ॰ 2.67; – **च्छुं / च्छिंसु** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आयस्मन्तं सारिपुत्तं उत्तरि पञ्हं अपुच्छुं,* म॰ नि॰ 1.60; *आयस्मन्तं सारिपुत्तं उत्तरिं पञ्हं अपुच्छिंसु,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).215; **2.** अनुमति लेता है, अनुमोदन प्राप्त करता है, स्वीकृति प्राप्त करता है – *सापेक्खो गन्त्वा तत्थ ठितो आपुच्छति,* पाचि॰ 63; – **च्छामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सङ्घं भन्ते इमस्स दारकस्स भण्डुकम्मं आपुच्छामी ति,* महाव॰ अट्ठ॰ 270; – **च्छि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *ब्राह्मणं पच्चुग्गन्त्वा परिक्खारग्गहणं आपुच्छि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.311; *सो तत्थेव दण्डं छड्डेत्वा पत्तचीवरपटिग्गहणं आपुच्छि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.37; *राजा "अनुभागो अत्थि, अनापुच्छित्वा खादितुं*

न युत्त'न्ति महाथेरं आपुच्छि, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.70; – **च्छि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"नागराज, चिरं वसिम्ह, गमिस्सामा"ति आपुच्छि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.423; **3.** (प्रायः तृ॰ वि॰ में अन्त होने वाले नामपद के साथ प्रयुक्त) निवेदित करता है, स्वागत करता है, सत्कृत करता है – **च्छि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पच्चुग्गन्त्वा पत्तचीवरं पटिग्गहेसि, पानीयेन आपुच्छि,* महाव॰ 407; – **च्छित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – ... *भिक्खुं दिस्वा पिण्डपातेन आपुच्छित्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.61; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सम्बहुला ... आचरियुपज्झाये न आपुच्छन्ति,* महाव॰ 149; *गामप्पवेसनम्पि आपुच्छन्तियेव,* चूळव॰ अट्ठ॰ 7; – **च्छं** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपुच्छं गच्छति,* पाचि॰ 63; – **न्तेन** पु॰, वर्त॰ कृ॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गामप्पवेसनं आपुच्छन्तेनापि ... वत्तब्बं,* महाव॰ अट्ठ॰ 271; – **च्छाहि** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"तेन हि तं आपुच्छाही"ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.5; – **च्छथ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *मा मं गामप्पवेसनं आपुच्छथा'ति,* चूळव॰ अट्ठ॰ 6; – **च्छाम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तस्स भण्डुकम्मं आपुच्छामा'ति ... वट्टति,* महाव॰ अट्ठ॰ 270; – **च्छेय्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यंनूनाहं पटिकच्चेव आपुच्छेय्य'न्ति,* महाव॰ 365; – **च्छिंसु** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – ... *आचरियुपज्झाये न आपुच्छिंसु,* महाव॰ 149; – **च्छिस्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *भिक्खुं दिस्वा आपुच्छिस्सामीति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 111; – **च्छिस्साम** ब॰ व॰ – *चारिकं चरणत्थाय आपुच्छिस्साम,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.151; – **च्छितुं** निमि॰ कृ॰ – *दिट्ठट्ठानतो पट्ठाय आपुच्छितुंयेव वट्टति,* महाव॰ अट्ठ॰ 250; – **च्छित्वा / त्वान / तून / च्छ** पू॰ का॰ कृ॰ – *सति करणीये आनन्तरिकं भिक्खुं आपुच्छित्वा गन्तु'न्ति,* चूळव॰ 355; *आपुच्छित्वान आगच्छिं, यं मय्हं सकमस्सम,* चरिया॰ 403(गा॰95); *अपुच्छितून गच्छ,* थेरीगा॰ 428; *सेनासनं आपुच्छा पक्कमितब्बं,* चूळव॰ 354; – **तब्बो** सं॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खु न होति, सामणेरो आपुच्छितब्बो,* चूळव॰ 354; *एत्थ भिक्खुम्हि सति भिक्खु आपुच्छितब्बो,* पाचि॰ अट्ठ॰ 38; – **तब्बं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गमनकाले सब्बेहिपि आपुच्छितब्बं,* पाचि॰ अट्ठ॰ 39; – **तब्बा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पब्बजितापि आपुच्छितब्बाव,* महाव॰ अट्ठ॰ 277.

आपुच्छन नपुं॰, आ +√पुच्छ से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आपृच्छन], अनुमति अथवा अनुमोदन प्राप्त करने की क्रिया, विदाई के लिए अनुनय – *पुच्छना नन्दनानि च,* अभि॰ प॰ 760; – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपुच्छनं पन वत्तं,* पाचि॰ अट्ठ॰ 39; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुन आपुच्छने किच्चं, नत्थीति, परिदीपितं,* विन॰ वि॰ 2943; – **नेसु** ब॰ व॰ – *एस नयो सब्बआपुच्छनेसु,* महाव॰ अट्ठ॰ 271; – **काल** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आपृच्छनकाल], बिदाई लेने हेतु निवेदन करने का समय – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्ताहच्चयेन पुन आपुच्छनकाले ... वदन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.292; – **किच्च** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आपृच्छनकृत्य], विदाई लेने हेतु अनुमति मांगने का काम – **च्चं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नत्थि इमस्सापुच्छनकिच्चं,* महाव॰ अट्ठ॰ 278; – **विधि** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आपृच्छनविधि], अनुमति मांगने का तरीका – **धि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्रायं आपुच्छनविधि* –, महाव॰ अट्ठ॰ 270; – **नाकार** पु॰, तत्पु॰ स॰, अनुमति प्राप्त करने की क्रिया का स्वरूप – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स आपुच्छनाकारं अनुजानामि, ... वण्णयिस्साम,* महाव॰ अट्ठ॰ 238.

आपुच्छा आ +√पुच्छ का पू॰ का॰ कृ॰, पूछ कर, अनुमति अथवा अनुमोदन को पाकर – ... *सेनासनं आपुच्छा पक्कमितब्बं,* चूळव॰ 354; *अनुजानामि, भिक्खवे, सन्तं भिक्खुं आपुच्छा कुलानि पयिरुपासितुं,* पाचि॰ 137.

आपुच्छापेति आ +√पुच्छ का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, विदा पाने हेतु अनुमति दिलाता है, पुछवाता है, पूछने हेतु प्रेरित करता है – *एवमिमे सीलादीहि वड्ढिस्सन्ती'ति सभारे कातुकामो आपुच्छापेति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.226; – **तुं** निमि॰ कृ॰ – *आपुच्छामा'ति आदिना नयेन आपुच्छापेतुं वट्टति,* महाव॰ अट्ठ॰ 270; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *नो चे दहरभिक्खुं पेसेत्वा आपुच्छापेत्वा पब्बाजेतब्बो,* महाव॰ अट्ठ॰ 278.

आपुच्छित आ +√पुच्छ का भू॰ क॰ कृ॰, पूछा जा चुका, अनुमति को प्राप्त किया हुआ, अनुमोदित – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपलोकितोति आपुच्छितो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.226; – **ता** ब॰ व॰ – *अपलोकिता वा ... आपुच्छिता,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.210; – **सञ्ञा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, "यह बात अनुमोदित है" इस प्रकार की चेतना – **ञ्ञा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनापुच्छिते आपुच्छितसञ्ञा ..., आपत्ति पाचित्तियस्स,* पाचि॰ 373.

आपुणाति √आप का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आप्नोति / आप्नुते], प्राप्त करता है, पहुंच जाता है – *आपुणाति आपो,* सद्द॰ 2.494.

आपुण्णता स्त्री॰, आ +√पुर / पूर के भू॰ क॰ कृ॰ का भाव॰ [आपूर्णता], परिपूर्णता, हर तरह से परिपूर्ण होना – *आपुण्णता न सलिलेन जलालयस्स,* तेल॰ 23.

आपुत्तपुत्तेहि अ॰, पुत्रों के भी पुत्रों तक – *आपुत्तपुत्तेहि पमोदथव्हो'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.146; *आपुत्तपुत्तेहीति याव पुत्तानम्पि पुत्तेहि पमोदथ, नत्थि वो इमस्मिं ठाने भयन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.146.

आपुस्सदत्त नपुं॰, आप + उस्सद का भाव॰, जलमयता, तरलता से भरपूर रहने की दशा – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चक्खुं ... आपुस्सदत्ता पग्घरति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 342.

आपूपिक त्रि॰, अपूप से व्यु॰ [आपूपिक], पुओं को खाने वाला – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *णिक – अचित्ता, आपूपिकं, संकुलिकं,* मो॰ व्या॰ 4.68; – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपूपिको'ति एत्थ अपूपसद्देन अपूपखादनं विय* ..., सारत्थ॰ टी॰ 1.71; ... *अपूपभक्खनसीलो आपूपिको'ति,* विभ॰ मू॰ टी॰ 68.

आपूरति आ +√पुर / पूर का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आपूर्यते], भरपूर हो जाता है, पूर्ण हो जाता है, ऊपर तक भर जाता है, बढ़ जाता है, वृद्धि को प्राप्त करता है – *आपूरति यसो तस्स, सुक्कपक्खेव चन्दिमा'ति,* दी॰ नि॰ 3.138; जा॰ अट्ठ॰ 4.25; *उदेति आपूरति वेति चन्दो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.133; – **रामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तथा अहम्पि अज्ज तया दिन्नेहि गामवरादीहि आपूरामी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.90; – **थ** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आपूरथ तेन मुहुत्तकेन,* जा॰ अट्ठ॰ 4.399.

आपूरेति आ +√पूर का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आपूरयति], भर देता है, परिपूर्ण कर देता है – **न्तो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महता जयघोसेन आपूरेन्तो दिसादिसं,* चू॰ वं॰ 72.300; *भेरिकाहलनादेन आपूरेन्तं दिसादिसं,* चू॰ वं॰ 75.104.

आपेति √आप का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आपयति], प्राप्त कराता है, पहुंचा देता है, बढ़ा देता है – *आपेति सहजातरूपानि पत्थरति, आपायति वा ब्रूहेति वड्ढेतीति आपो,* अभि॰ ध॰ वि॰ टी॰ 174; *तेजो तेजेति रूपानि, आपो आपेति पालना,* अभि॰ अव॰ 81.

आपेसि / आपेसी / अपेसि स्त्री॰, कांटेदार झाड़ी से बनाया हुआ लकड़ी का फाटक – **सिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कोट्ठकं अपेसिं यमककवाटं तोरणं पलिघ'न्ति,* चूळव॰ 281; *अपेसीति दीघदारुम्हि खाणुके पवेसेत्वा कण्टकसाखाहि विनन्धित्वा कतं द्वारथकनकं,* चूळव॰ अट्ठ॰ 62.

आपोकसिण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आपकृत्स्न], ध्यान-प्रक्रिया में चित्त को एकाग्र करने हेतु निर्दिष्ट दस प्रकार के कर्मस्थानों में से एक, चित्त की एकाग्रता के लिए आलम्बनभूत आप-धातु – **णं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ यञ्च पथवीकसिणं यञ्च आपोकसिणं एवं सब्बं,* नेत्ति॰ 74; *आपोकसिणन्ति आपोकसिणज्झानं आपोकसिनकम्मट्ठानं वा,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.183; *आपोकसिणं अभिञ्ञेय्यं,* पटि॰ म॰ 7; – **णं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपोकसिणमेको सञ्जानाति* ..., दी॰ नि॰ 3.214; – **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदानि पथवीकसिनणानन्तरे आपोकसिणे वित्थारकथा होति,* विसुद्धि॰ 1.163; – **समापत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आपकृत्स्नसमापत्ति], आप-धातु के कर्मस्थान पर चित्त की एकाग्रता वाले ध्यान की प्राप्ति – **या** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पकतिया आपोकसिणसमापत्तिया लाभी होती,ति,* पटि॰ म॰ 378; – **णारम्मण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आपकृत्स्नालम्बन], ध्यान-प्रक्रिया के क्रम में आप-धातु का आलम्बन – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महानदिं ओलोकेत्वा आपोकसिणारम्मण-झानं निब्बत्तेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.300.

आपोकाय पु॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आपकाय], आप-धातु, आपस्कन्ध के समुच्चय रूप में आप-महाभूत – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कतमे सत्त?, पथवीकायो, आपोकायो, तेजोकायो, वायोकायो, सुखे, दुक्खे, जीवे सत्तमे,* दी॰ नि॰ 1.50; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आपो आपोकायं अनुपेति अनुपगच्छति,* दी॰ नि॰ 1.49.

आपोगत त्रि॰, जल की अवस्था में विद्यमान, आप के स्वभाव को प्राप्त, जलमय, पानीदार, पनीला, पनसर – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं अज्झत्तं पच्चत्तं आपो आपोगतं उपादिन्नं,* म॰ नि॰ 1.247; *आपोधातुनिद्देसे आपोगतन्ति सब्बआपेसु गतं अल्लयूसभावलक्खणं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰)1(2).126; *आपो आपोगतन्ति आदीसु आबन्धनवसेन आपो तदेव आपोसभावं गतत्ता आपोगतं नाम,* विभ॰ अट्ठ॰ 60.

आपोधातु स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आपोधातु], तरलता, प्रघरण (पिघल कर बहना) अथवा संसंजन का मूलभूत भौतिक धर्म, रूपधर्मों को आपस में बांध कर रखने वाला तथा स्निग्धता के स्वभाव वाला एक महाभूत, **क.** छ प्रकार की धातुओं में से एक – *छ धातुयो पथवीधातु, आपोधातु, तेजोधातु वायोधातु, आकासधातु, विञ्ञाणधातु,* दी॰ नि॰ 3.196; **ख.** चार महाभूतों की सूची में भी एक महाभूत के रूप में निर्दिष्ट – *चत्तारो महाभूता अपरिसेसा निरुज्झन्ति, सेय्यथिदं पथवीधातु आपोधातु तेजोधातु वायोधातू'ति,* दी॰ नि॰ 1.199; **ग.** तरलता, द्रवनशीलता एवं रूपधर्मों को

बांध कर एक साथ रखना, इसके प्रमुख लक्षण – *यं आपो आपोगतं सिनेहो सिनेहगतं बन्धनत्तं रूपस्स – इदं तं रूपं आपोधातु,* ध. स. 651; *अयोपिण्डिआदीनि हि आपोधातु आबन्धित्वा बद्धानि करोति,* ध. स. अट्ठ. 365; *यो द्वादससु कोट्ठासेसु आबन्धनभावो, अयं आपोधातु,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).36; *आपोधातुया आबन्धनलक्खणं,* विसुद्धि. 1.340; **घ.** प्राणियों के भौतिक शरीर में मूत्र आदि की तरलता के रूप में तथा आबन्धन के स्वभाव से युक्त धातु के रूप में उल्लिखित – *अत्थि इमस्मिं काये पथवीधातु आपोधातु तेजोधातु वायोधातू'ति,* दी. नि. 2.217; *इति लसिका नाम इमस्मिं सरीरे पाटियेक्को कोट्ठासो अचेतनो अब्याकतो सुञ्ञो निस्सत्तो यूसभूतो आबन्धनाकारो आपोधातूति,* विसुद्धि. 1.353; **ङ.** आपोधातु आध्यात्मिक एवं बाह्य, इन दो प्रभेदों में वर्णित – *आपोधातु सिया अज्झत्तिका, सिया बाहिरा,* म. नि. 1.247; – **तु** प्र. वि., ए. व. – *आपोधातु चे हिदं ... एकन्तसुखा अभविस्स ... नयिदं सत्ता वायोधातुया निब्बिन्देय्युं,* स. नि. 1(2).158; – **तुं** द्वि. वि., ए. व. – *यं आपोधातुं पटिच्च ... पटिच्च उप्पज्जति सुखं सोमनस्सं अयं वायोधातुया अस्सादो,* स. नि. 1(2).154; – **या** तृ./प. वि., ए. व. – *अयं आपोधातुया अस्सादोति अयं आपोधातुनिस्सयो अस्सादो,* स. नि. अट्ठ. 2.135; *यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय दिस्वा आपोधातुया निब्बिन्दति, आपोधातुया चित्तं विराजेति,* म. नि. 2.92; *यो आपोधातुया ... उप्पादो ठिति अभिनिब्बत्ति पातुभावो, दुक्खस्सेसो उप्पादो रोगानं ठिति जरामरणस्स पातुभावो,* स. नि. 1(2).158; – **क्खोभवसेन**, क्रि. वि. पु., तत्पु. स., आप-धातु के अत्यधिक प्रकोप हो जाने के कारण से – *सरीरब्भन्तरे आपोधातुक्खोभवसेन वा अञ्ञधातुक्खोभवसेन वा ...,* महानि. अट्ठ. 373; – **निद्देस** पु., तत्पु. स. [बौ. सं. आपोधातुनिर्देश], आप-धातु-विषयक व्याख्यान – **से** सप्त. वि., ए. व. – *आपोधातुनिद्देसे आपोगतन्ति सब्बआपेसु गतं अल्लयूसभावलक्खणं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).126; – **प्पकोप** पु., तत्पु. स. [बौ. सं. आपोधातुप्रकोप], आप-धातु का प्रकोप, आप-धातु-विषयक गड़बड़ी – **पेन** तृ. वि., ए. व. – *आपोधातुप्पकोपेन, होति पूतिमुखेव सो,* ध. स. अट्ठ. 335; – **सदिस** त्रि., ब. स. [बौ. सं. आपोधातुसदृक्], आप धातु जैसा – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *नन्दिरागो सिनेहनट्ठेन आपोधातुसदिसो,* स. नि. अट्ठ. 2.241.

आपोपग्घरण त्रि., पानी के रिसाव से युक्त, आपधातु की स्निग्धता एवं तरलता से युक्त, आपधातु के कारण रिसाव अथवा द्रवनशीलता से युक्त – **णो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आपोपग्घरणो कायो, सदा सन्दति पूतिकं,* थेरगा. 568; *अयं कायो आपोधातुया सदा पग्घरणसीलो,* थेरगा. अट्ठ. 2.169.

आपोफरण नपुं., तत्पु. स. [आपस्फरण], जल का आप्लावन, आप-धातु से चारों ओर से परिपूर्ण रहना, स्निग्धता अथवा तरलता से व्याप्त होना – **णं** प्र. वि., ए. व. – *आपोकसिणं समापज्जित्वा आपेन फरणं आपोफरणं नाम,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.105.

आपोमय त्रि., आप + मय से व्यु., जलमय, जल ही जल वाला – *मनादीनमापादीनं च ओ होतुत्तरपदे, मये च, मनोसेट्ठा, मनोमया, रजोजल्लं रजोमयं आपोगतं, आपोमयं, अनुयन्ति दिसोदिसं,* मो. व्या. 3.59.

आपोरस पु., तत्पु. स. [आपोरस], जल का स्वाद, जल का गुण – **सं** द्वि. वि., ए. व. – *यञ्च आपोरसं उपादियति,* पटि. म. 128; *आपोरसन्ति ... आपस्स च सम्पदं,* पटि. म. अट्ठ. 2.43; – **सिनेह** पु., तत्पु. स., जल के रस या स्वाद के प्रति स्नेह अथवा तृष्णा – **हे** सप्त. वि., ए. व. – *निग्रोधस्स खन्धजा नाम पारोहा आपोरससिनेहे सति जायन्ति,* सु. नि. अट्ठ. 2.36.

आपोसंवट्ट पु., तत्पु. स. [आपस्संवर्त], जलप्रलय अथवा जल द्वारा (लोक का) अन्त – *तयो संवट्टा–तेजोसंवट्टो आपोसंवट्टो, वायोसंवट्टोति,* पारा. अट्ठ. 1.119; *आपोसंवट्टवसेन वड्ढमाना कुप्पति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).123; – **काल** पु., तत्पु. स. [आपस्संवर्तकाल], जल-प्रलय का समय – **ले** सप्त. वि., ए. व. – *आपोसंवट्टकाले पन कोटिसतसहस्सचक्कवाळं उदकपूरमेव होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).126.

आपोसङ्गहित त्रि., तत्पु. स. [आपस्संगृहीत], आबन्धनत्व नामक रूपधर्म द्वारा एकजुट किया हुआ, जल-तत्त्व द्वारा एक साथ समञ्जित किया हुआ – **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *तेजोधातु पथवीपतिट्ठिता आपोसङ्गहिता वायोवित्थम्भिता इमं कायं परिपाचेति,* विसुद्धि. 1.355; *वायोधातु पथवीपतिट्ठिता आपोसङ्गहिता तेजानुपालिता इमं कायं वित्थम्भेति,* विसुद्धि. 1.356; *सङ्गहिताति यथा न विप्पकिरति, एवं आबन्धनवसेन सम्पिण्डित्वा गहिता,* विसुद्धि. महाटी. 1.418.

आपोसञ्ञा स्त्री., तत्पु. स. [आपस्संज्ञा], आप-धातु-विषयक संज्ञा – **ञ्ञा** प्र. वि., ए. व. – *परित्ता पथवीसञ्ञा भाविता होति, अप्पमाना आपोसञ्ञा,* दी. नि. 2.83; *आपोसञ्ञादीसुपि एसेव नयो,* अ. नि. अट्ठ. 3.342.

आपोसञ्ञी त्रि., आप-धातु के विषय में ज्ञान रखने वाला, "यह आप धातु है" इस प्रकार का ज्ञान रखने वाला – **ञ्ञी** पु., प्र. वि., ए. व. – *यथा नेव पथवियं पथविसञ्ञी अस्स, न आपस्मिं आपोसञ्ञी अस्स,* अ. नि. 3(2).6.

आपोसन्निस्सय पु., तत्पु. स. [आपस्सन्निश्रय], जल पर निर्भरता, आबन्धन-स्वभाव आप-धातु का आश्रय अथवा अवलम्बन – **येन** तृ. वि., ए. व. – *आपोसन्निस्सयेनापि, समनक्कारहेतुना,* अभि. अव. 504.

आपोसन्निस्सित त्रि., तत्पु. स. [आपस्सन्निश्रित], जल पर निर्भर रहने वाला, आप-धातु पर आश्रित अथवा उसके साथ जुड़ा हुआ – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *असम्भिन्नत्ता जिव्हाय आपाथगतत्ता रसानं, आपोसन्निस्सितं मनसिकारहेतुकं चतूहि पच्चयेहि उप्पज्जति जिव्हाविञ्ञाणं,* ध. स. अट्ठ. 319; *तत्थ आपोसन्निस्सित न्ति जिव्हातेमनं आपं लद्धाव उप्पज्जति, न विना तेन,* ध. स. अट्ठ. 319.

आपोसभाव पु., तत्पु. स., जल का स्वभाव, आप-धातु का स्वभाव – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *तदेव आपोसभावं गतत्ता आपोगतं नाम,* विभ. अट्ठ. 60.

आपोसम त्रि., जल जैसा/जैसी, आप-धातु के समान – **मं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. – *आपोसमं भावनं भावेहि,* म. नि. 2.94.

आप्पच्चय पु., आ + पच्चय, केवल व्याकरणों के सन्दर्भ में प्रयुक्त [टाप्रत्यय], पु. के अकारान्त नामों की स्त्री. बनाने हेतु विहित तद्धित प्रत्यय 'आ' – **यो** प्र. वि., ए. व. – *अकारन्ततो आप्पच्चयो होति,* क. व्या. 237.

आफुसति आ +√फुस का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आस्पृशति], प्राप्त कर लेता है, पास में जा पहुंचता है, (के साथ) जुड़ जाता है – **सिं** अद्य., उ. पु., ए. व. – *तत्थेवहं समथसमाधिमाफुसिं सायेव मे परमनियामता अहु,* वि. व. 145; वि. व. अट्ठ. 65; *आफुसिं अधिगच्छिं,* वि. व. अट्ठ. 67.

आबज्झ आ +√बन्ध का पू. का. कृ. [आबध्य], अच्छी तरह से बांध कर – *आबज्झ नन्धिया कटिया निसदम्हि अबन्धिसुं,* म. वं. 23.6; *आबज्झा ति आबन्धित्वा,* म. व. टी. 407(ना.).

आबद्ध त्रि., आ +√बन्ध का भू. क. कृ. [आबद्ध], पूरी तरह से बन्धन में बंधा हुआ, बन्धनग्रस्त – **द्धो** पु., प्र. वि., ए. व. – *न्हारुसुत्तकेन मत्थलुङ्गे आबद्धो,* ध. स. अट्ठ. 342; ... *वल्लीहि आबद्धो ठितो,* स. नि. अट्ठ. 3.74; – **द्धा**[1] ब. व. – ... *मय्हं देसनाजाले परियापन्ना, एतेन आबद्धा,* दी. नि. अट्ठ. 1.108; – **द्धा**[2] स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *बहि चस्स गता वङ्कसाखा नानावल्लीहि आबद्धा,* स. नि. अट्ठ. 3.74; – **द्धं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *द्वीहि पदेहि आबद्धं होति उपरि सकलसुत्तं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).70; – **द्धानि** ब. व. – *नपि तीणि अट्ठिसतानि जानन्ति मयं न्हारूहि आबद्धानी ति,* खु. पा. अट्ठ. 36; स. उ. प. के रूप में एका., दया., नाना., बुन्दिका., समन्ता., सिनेहा. के अन्त. द्रष्ट.; – **कच्छ** त्रि., ब. स., वह, जिसने अपनी कमर के इर्द-गिर्द कच्छा, धोती या लुंगी को कसकर बांध लिया है – **च्छो** पु., प्र. वि., ए. व. – *युद्धाय आबद्धकच्छो सो गतो पल्लववालकं,* चू. वं. 72.220; – **परिकरण** त्रि., ब. स. [आबद्धपरिकर], सभी तरह से तैयार, सभी तैयारियों को पूरा कर चुका – **णेन** पु., तृ. वि., ए. व. – ... *सब्बकालं युत्तप्पयुत्तेन भवितब्बं आबद्धपरिकरणेन,* चरिया. अट्ठ. 287; – **पटिबद्धसहायक** त्रि., बिलग न होने योग्य, पूरी तरह से जुड़ा रहने वाला – **कानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *तानि किर द्वेपि ... आबद्धपटिबद्धसहायकानेव अहेसुं,* ध. प. अट्ठ. 1.52; – **पुप्फवटंसक** पु., कर्म. स., अच्छी तरह से बांधा गया फूलों का गुच्छा – **को** प्र. वि., ए. व. – *सुट्ठु पीळेत्वा आबद्धपुप्फवटंसको विय,* दी. नि. अट्ठ. 2.149; – **वङ्कसाखा** स्त्री., कर्म. स., अच्छी तरह से (किसी के द्वारा) बांध दी गई टेढ़ी शाखा – **खा** प्र. वि., ए. व. – ... *बहिद्धा वल्लीहि आबद्धवङ्कसाखा विय ... दट्ठब्बो,* स. नि. अट्ठ. 3.76; – **सिनेह** त्रि., ब. स., अत्यधिक स्नेह करने वाला, सुदृढ़ स्नेह करने वाला – **हो** पु., प्र. वि., ए. व. – *कुटुम्बिको गुणवसेन तिस्साय आबद्धसिनेहो ... अट्ठासि,* पे. व. अट्ठ. 71.

आबद्धता स्त्री., आबद्ध का भाव. [आबद्धता], बंधा हुआ होना, जुड़ा हुआ होना, बन्धनग्रस्त रहना – **य** तृ. वि., ए. व. – *उपचिकाहि वन्तखेळसिनेहेन आबद्धताय सत्तसत्ताहं देवे वस्सन्तेपि न विप्पकिरियति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).33.

आबद्धत्त नपुं., आबद्ध का भाव. [आबद्धत्व], उपरिवत् – **त्ता** प. वि., ए. व. – ... *बहिद्धा वल्लीहि आबद्धत्ता च गङ्*

ओतरित्वा, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.74; *ताय आबद्धत्ता तानि बद्धानि नाम होन्ति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 365; *एतं ... सद्धिं एकाबद्धत्ता रक्खति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.255.

आबन्ध पु॰, आ +√बन्ध से व्यु॰ [आबन्ध], बन्धन, अनेक प्रकार का बन्धन, जञ्जीर – **न्धं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वट्टमाबन्धमिच्चेवं, तेभूमकमनादिकं, पटिच्चसमुप्पादोति, पट्ठपेसि महामुनि,* अभि॰ ध॰ स॰ 57; – **न्धे** ब॰ व॰ – *बन्धे विबन्धे आबन्धे लग्गे लग्गिते पलिबुद्धे बन्धने पोटयित्वा,* महानि॰ 71; *आबन्धेति अनेकविधेन बन्धे,* महानि॰ अट्ठ॰ 185.

आबन्धति आ +√बन्ध का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आबध्नाति], बांध देता है, किसी के साथ जोड़ देता है, एक साथ मिला देता है – *आपोधातु पन पथवीधातुम्पि तेजोवायोधातुयोपि अफुसित्वाव आबन्धति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 366; – **न्धती** स्त्री॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *संसूचकेन अङ्गुलिना आबन्धती विय ओलोकेत्वा,* उदा॰ अट्ठ॰ 138; – **माना** स्त्री॰, वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न्हारु सरीरब्भन्तरे अट्ठीनि आबन्धमाना ठिता,* विभ॰ अट्ठ॰ 55; – **न्धेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यदि फुसित्वा आबन्धेय्य फोट्ठब्बायतनं नाम भवेय्य,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 366; – **न्धित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *आभुजित्वाति आबन्धित्वा,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.12; – **न्धितब्बानि** सं॰ कृ॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आबन्धनानी ति हत्थिअस्सरथेसु आबन्धितब्बानि भण्डानि च गण्हथ,* जा॰ अट्ठ॰ 5.310.

आबन्धन 1. नपुं॰, आ +√बन्ध से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आबन्धन], प्रगाढ़ बन्धन, मजबूत गांठ, जोड़, समंजन, सुसंगति – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आबन्धनमापोधातु,* ना॰ रू॰ परि॰ 498; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपरापरभावाय विननतो आबन्धनतो संसिब्बनतो वानन्ति ... विसंयुत्तं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.168; **2.** त्रि॰, वह, जिसे बांधा जाए, बांधा जा रहा, बन्धनक्रिया का विषयीभूत, बांधा जाने योग्य – *आबन्धनानि गण्हाथ,* जा॰ अट्ठ॰ 5.310; *आबन्धनानीति हत्थिअस्सरथेसु आबन्धितब्बानि भण्डानि च गण्हथ,* जा॰ अट्ठ॰ 5.310; – **ट्ठ** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आबन्धनार्थ], बांधे जाने का अर्थ – ट्ठेन तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आबन्धनट्ठेन ञातियेव ञातिपरिवट्टो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.149; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, आपस में बांध कर रखना – *या आबन्धनता, सा आपोधातु,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 57; – **धातु** स्त्री॰, आप–धातु, रूप धर्मो को आपस में बांधकर रखने वाला आप-नामक महाभूत – *आपोधातूति आबन्धनधातु,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.134; – **भाव** पु॰, आपस में बांध कर रखने की दशा – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो द्वादससु कोट्ठासेसु आबन्धनभावो, अयं आपोधातु,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).36; *यो आबन्धनभावो वा द्रवभावो वा, अयं आपोधातु,* विसुद्धि॰ 1.342; – **लक्खण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आपस में बांध कर रखने का लक्षण – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं आबन्धनलक्खणं, अयं आपोधतु,* विसुद्धि॰ 1.341; – **वल्ली** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, बांधने वाली डोरी – **ल्लिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वल्लिन्ति आबन्धनवल्लिं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).128; – **समय** पु॰, तत्पु॰ स॰, बांधे जाने का समय, बन्धन में लाए जाने का काल – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुत्तो मे वयप्पत्तो, घरावासेनस्स आबन्धनसमयो'ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.301; – **नाकार** त्रि॰ आपस में बांध कर रखने वाले स्वरूप अथवा आकार वाला – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यूसभूतो आबन्धनाकारो आपोधातूति,* विभ॰ अट्ठ॰ 61; – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वादससु कोट्ठासेसु यूसगतं उदकसङ्खातं आबन्धनाकारं आपोधातूति ववत्थपेति,* विसुद्धि॰ 1.343.

आबाध आ +√बाध से व्यु॰, [आबाध], शा॰ अ॰ रोग, बीमारी, विपत्ति, व्यथा, दुर्गति, संकटमय अवस्था, दुख भरा अनुभव – *आतङ्को आमयो व्याधि गदो रोगो रुजा'पि च, गेलञ्ञाकल्लमाबाधो ...,* अभि॰ प॰ 323; *बाधति विबाधति, आबाधो, आबाधति चित्तं विलोळेतीति आबाधो,* सद्द॰ 2.394; *आबाधो ति विसभागवेदना वुच्चति या एकदेसे उप्पज्जित्वा सकलसरीरं अयपट्टेन बन्धित्वा विय गण्हाति,* सद्द॰ 2.322; *आबाधोति योकोचि रोगो,* विसुद्धि॰ 1.93; *विसभागवेदनुप्पत्तिया ककचेनेव चतुइरियापथं छिन्दन्तो आबाधतीति आबाधो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).213; – **धो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचे खो मयं गिलानं ठाना चावेस्साम, आबाधो वा अभिवड्डिस्सति,* महाव॰ 150, 152, 214; *यस्स कण्डु वा ... आबाधो, कायो वा दुग्गन्धो,* महाव॰ 277; पाचि॰ 226; *आबाधोति महापिळकाबाधो वुच्चति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 143; – **धं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आबाधं, ते देव, पस्सामा'ति,* महाव॰ 361; *अत्थकामस्स गिलानुपट्ठाकस्स यथाभूतं आबाधं नाविकत्ता होति,* महाव॰ 394; – **धेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खूनं सारदिकेन आबाधेन फुट्ठानं यागुपि,* महाव॰ 274; *अबाधेनाति सरदकाले उप्पन्नेन पित्ताबाधेन,* महाव॰ अट्ठ॰ 351; – **धा / तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपरेन समयेन तम्हा आबाधा मुच्चेय्य,* दी॰ नि॰ 1.64; *न दानिमे इमम्हा आबाधा वुट्ठहिस्सन्ती'ति,* दी॰ नि॰ 2.239; *पेसुञ्ञं उपसंहरति–*

... *आबाधतोपि,* पाचि॰ 20; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आबाधस्स लसुणं भेसज्जं,* चूळव॰ अट्ठ॰ 57; – **धे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आबाधे मे समुप्पन्ने, सति मे उदपज्जथ,* थेरगा॰ 30; *आबाधे मे समुप्पन्नेति ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.94; – **धा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सन्ति ते एवरूपा आबाधा,* महाव॰ 120; – **धानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तिकिच्छका, विरेचनं देन्ति पित्तसमुट्ठानानम्पि आबाधानं पटिघाताय,* अ॰ नि॰ 3(2).185; **ला॰ अ॰ क.** दस प्रकार के पलिबोधों में से एक – *आवासो च कुलं लाभो, गणो कम्मञ्च पञ्चमं अद्धानं ञाति आबाधो, गन्थो इद्धीति ते दसा'ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.19; **ला॰ अ॰ ख.** 3, 5, 6, 8 एवं 48 प्रकारों में निर्दिष्ट – *मनुस्सेसु तयो आबाधा भविस्सन्ति,* दी॰ नि॰ 3.55; *मनुस्सा पञ्चहि आबाधेहि ... वदन्ति,* महाव॰ 91; *मगधेसु पञ्च आबाधा उस्सन्ना होन्तीति मगधनामके जनपदे मनुस्सानञ्च अमनुस्सानञ्च पञ्च रोगा उस्सन्ना वुड्ढिप्पत्ता फातिप्पत्ता होन्ति,* महाव॰ अट्ठ॰ 263; 238; *मनुस्सानं छळेव आबाधा अहेसुं–सीतं, उण्हं जिघच्छा, पिपासा, उच्चारो, पस्सावो,* अ॰ नि॰ 2(2).266; *पित्तसेम्हवातसन्निपातउतुविपरिणामविसमपरिहारउपक्कमकम्मविपाकवसेन अट्ठविधो आबाधो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.81; *विविधा आबाधा उप्पज्जन्ति, सेय्यथिदं – चक्खुरोगो सोतरोगो ... पित्तसमुट्ठाना आबाधा सेम्हसमुट्ठाना आबाधा वातसमुट्ठाना आबाधा सन्निपातिका आबाधा उतुपरिणामजा आबाधा विसमपरिहारजा आबाधा ओपक्कमिका आबाधा कम्मविपाकजा आबाधा सीतं उण्हं जिघच्छा पिपासा उच्चारो पस्सवो'ति,* अ॰ नि॰ 3(2).91; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अना॰, अन्तगण्ठा॰, अप्पमत्तका॰, अप्पा॰, अमनुस्सिका॰, उदरवाता॰, उदरा॰, कायचित्ता॰, कायडाहा॰, कायिका॰, कुच्छिविकारा॰, गण्डा॰, गरुका॰, घरदिन्नका॰, चक्खुरोगा॰, चेतसिका॰, थुल्लकच्छा॰, थुल्लकच्छु॰, पण्डुरोगा॰, पादखीला॰, पित्ता॰, बव्हा॰, भगन्दला॰, मधुमेहा॰, महा॰, लोहितपक्खन्दिका॰, वम्मिका॰, विसभागा॰, विसमा॰, सब्बा॰, सा॰, सीसा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **ता** स्त्री॰, आबाध का भाव॰, रुग्णता, रोगग्रस्त होना, विपत्ति अथवा बाधा से पीड़ित होना, स॰ उ॰ प॰ में प्रयुक्त – *अत्तभावस्स पित्तपकोपादीनं वसेन साबाधता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.8; – **प्पच्चया** अ॰, क्रि॰ वि॰, बाधा, विपत्ति अथवा रोग के कारण से; बाधा, विपत्ति अथवा रोग होने की स्थिति में – *अनुजानामि, आबाधप्पच्चया सम्बाधे लोमं संहरापेतुं'न्ति,* चूळव॰ 255; *आबाधप्पच्चया लसुणं खादितुं'न्ति,* चूळव॰ 262; – **भूत** त्रि॰, रोगग्रस्त, रोग का शिकार – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं ..., कायो रोगभूतो ... आबाधभूतो,* म॰ नि॰ 2.188; – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो त्वं इमं कायं रोगभूतं गण्डभूतं ... आबाधभूतं,* म॰ नि॰ 2.188; – **समङ्गी** त्रि॰, रोगग्रस्त, रोगी – **ङ्गी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ आबाधिकोति आबाधसमङ्गी,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 279.

आबाधति आ +√बाध का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आबाधते], पीड़ा देता है, चुभता है – *न मं किञ्चि आबाधती'ति,* म॰ नि॰ 2.187; ... *चतुइरियापथं छिन्दन्तो आबाधतीति आबाधो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).213.

आबाधन नपुं॰, आ +√बाध से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आबाधन], कष्ट, चोट, पीड़ा, हानि, तकलीफ, रोग – **नाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आबाधनाय पीळनाय,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.275; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सरीरस्स आबाधनतो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.94; – **ट्ठ** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आबाधनार्थ], पीड़ाप्रद होने का अर्थ अथवा आशय – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आबाधनट्ठेन आबाधो होति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.281; *आबाधट्ठेनाति विबाधनट्ठेन, रोगट्ठेन वा,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.55; पाठा॰ आबाधट्ठेन; – **दुक्ख** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, पीड़ा का दुख, रोग का दुख – **क्खं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कायस्स आबाधनदुक्खं दुक्खं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.127.

आबाधिक त्रि॰, [बौ॰ सं॰ आबाधिक], रोगी, बीमार, व्याधि से पीड़ित – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुरिसो आबाधिको अस्स दुक्खितो बाळ्हगिलानो,* दी॰ नि॰ 1.64; ... *आबाधतीति आबाधो, स्वास्स अत्थीति आबाधिको,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.172; *इरियापथभञ्जनकेन विसभागाबाधेन आबाधिको,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.59; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न त्वं अद्दस मनुस्सेसु इत्थिं वा पुरिसं वा आबाधिकं,* म॰ नि॰ 3.219; – **स्स**, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं तेनेव आबाधेन आबाधिकस्स वट्टति, न अञ्ञस्स,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.268; – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ते अपरेन समयेन आबाधिका होन्ति,* दी॰ नि॰ 2.239; – **कानं** पु॰, च॰/ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इदं ओसधं येन केनचि आबाधेन आबाधिकानं देथा'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.157; – **कं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *भगिनिं पस्सेय्य आबाधिकं,* म॰ नि॰ 1.123; *आबाधिकन्ति ब्याधिकं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).372; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [आबाधिकत्व], व्याधिग्रस्तता, रुग्णता, बीमारी – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *थेरस्स आबाधिकत्ता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.278; – **भाव** पु॰, उपरिवत् – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्थु*

आबाधिकभावं आचिक्खित्वा, ध. प. अट्ठ. 2.417.

आबाधिकिनी स्त्री., आबाधिक से व्यु., रुग्ण नारी, बीमार स्त्री – **नी** प्र. वि., ए. व. – *इत्थन्नामा, भिक्खुनी आबाधिकिनी दुक्खिता बाळ्हगिलाना,* अ. नि. 1(2).166.

आबाधित त्रि., आ +√बाध का भू. क. कृ. [आबाधित], पीड़ित, रोगग्रस्त, विपत्ति से ग्रस्त, कष्ट में पड़ा हुआ – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अरहं सुगतो लोके, वातेहाबाधितो मुनि,* थेरगा. 185.

आबाधेति आ +√बाध का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आबाधयति], पीड़ा अथवा कष्ट देता है, हानि पहुंचाता है, व्यथा उत्पन्न कराता है – **न्ति** प्र. पु., ब. व. – *डंसादयो 'मं आबाधेन्ती'ति ... अत्थो,* थेरगा. अट्ठ. 1.96; – **यित्थ** अद्य., प्र. पु., ब. व. – *मा, हेव चिरवासिस्स कुमारस्स किञ्चि आबाधयित्थाति,* स. नि. 2(2).312; – **धियमान** त्रि., कर्म. वा. का वर्त. कृ. – **नानं** पु., ष. वि., ब. व. – *तेन आबाधियमानानं पुथुज्जनानं तत्थ पटिघुप्पत्तितो,* पटि. म. अट्ठ. 1.127.

आभाधातु स्त्री., कर्म. स., प्रकाशमान धातु, सुस्पष्ट रूप से व्यक्त हो रही धातु – *रूपधातुयेव हि आभाधातु,* विसुद्धि. 2.114.

आभंकर त्रि., आभा या चमक को उत्पन्न करने वाला – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आभंकरो पभंकरो धम्मोभासपज्जोतकरोति च बुद्धा,* नेत्ति. 45.

आभञ्जति आ +√भञ्ज का वर्त., प्र. पु., ए. व., **1.** टिका देता है, (का) सहारा दे देता है, **2.** भग्न कर देता है, मोड़ देता है – **न्ति** प्र. पु., ब. व. – *विविधा आभञ्जन्ति भारं ओलम्बेन्ति तेनाति ब्याभङ्गी विधं,* अ. नि. टी. 3.2; *विविधं भारं आभञ्जन्ति ओलम्बन्ति एत्थाति ब्याभङ्गी काजं,* म. नि. टी. (म.प.) 196.

आभट्ठ त्रि., आ +√भास का भू. क. कृ. [आभासित, बौ. सं., आभाष्ट], कथित, उच्चारित, बोल दिया गया, कह दिया गया – **ट्ठं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *दुट्ठु आभट्ठं भासितं लपितन्ति दुराभट्ठं,* परि. अट्ठ. 193.

आभण्डन नपुं., आ +√भण्ड से व्यु., क्रि. ना. [आभण्डन], सुनिश्चित करना, भण्डाफोड़ कर देना – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *लभ आभण्डने,* सद्द. 2.556.

आभत त्रि., आ +√भर का भू. क. कृ., प्रायः आहत एवं आगत के स्थान पर भी प्रयुक्त [आभृत], समीप ले आया गया, ले जाया गया, पहुंचा दिया गया, हस्तान्तरित किया गया, आनीत – *आहटो आभतानीता,* अभि. प. 749; – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *गामतो सप्पिकुम्भो आभतो,* महाव. अट्ठ. 360; *आहितोति आभतो, जालितो,* सु. नि. अट्ठ. 1.24; – **तं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *भिक्खू उपनन्दत्थेरेन आभतं पत्तचीवररासिं दिस्वा,* जा. अट्ठ. 3.293; – **तेन** पु., तृ. वि., ए. व. – *न मे तया आभतेन पण्णाकारेन अत्थो,* जा. अट्ठ. 4.96; – **ते** पु., सप्त. वि., ए. व. – *महाब्रह्मुना आभते अरहद्धजे गहितमत्तेयेव वस्ससट्ठिकत्थेरो विय ...,* अ. नि. अट्ठ. 1.116; – **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *कंसपाति आभता ... परियोनद्धा,* म. नि. 1.32; *आभताति आनीता,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).151; – **तं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. – *अत्तनो आभतं कटच्छुभिक्खं दापेसि,* ध. प. अट्ठ. 2.126; – **ताय** स्त्री., ष. वि., ए. व. – *इदं तावेत्थ धम्मदेसनत्थं आभताय उपमाय संसन्दनं,* स. नि. अट्ठ. 3.102; – **तं**[1] नपुं., प्र. वि., ए. व. – *इदं ... आयस्मन्तं उद्दिस्स चीवरचेतापन्नं आभतं,* पारा. 335; *आभतन्ति आनीतं,* पारा. अट्ठ. 2.229; – **तं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *अहन्त्वा धनमाभतं,* अप. 2.232; – **तेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. – *तेसं आभतेन येन केनचि यापेन्तोपि ... होति,* स. नि. अट्ठ. 2.145; – **तो** प. वि., ए. व. – *परिभण्डकरणत्थाय आभततो गहितन्ति एके,* स. नि. अट्ठ. 2.285; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *त्वं मया आभतस्स उप्पत्तिं मा पुच्छ,* जा. अट्ठ. 3.296; – **तानि**[1] नपुं., प्र. वि., ब. व. – *तेहि पन नानप्पकारानि फलाफलानि आभतानि,* जा. अट्ठ. 1.431; – **तानि**[2] द्वि. वि., ब. व. – *आभतानि तिणादीनि एत्थ निक्खिप,* स. नि. अट्ठ. 2.73; – **तेहि** नपुं., तृ. वि., ब. व. – *अत्तनो खज्ज–भोज्जेहि तेहि तेहाभतेहि च, सन्तप्पेसि, ससङ्घं तं,* म. वं. 15.72; 106; **क.** स. उ. प. के रूप में अत्थवसा., अना., अपा., आचरियपरम्परा., आज्झाया., कपाला., काला., दुरा., परम्परा., मलया., यथा., रत्ता., **ख.** स. पू. प. के रूप में, – **त्त** नपुं., आभत का भाव., [आभृतत्व], ले आया जाना – **त्ता** प. वि., ए. व. – *उञ्छे ... उञ्छाचरियाय आभतत्ता ... अभिरता,* थेरगा. अट्ठ. 1. 299; – **पक्ख** पु., कर्म. स. [आभृतपक्ष], लाया हुआ पक्ष – **क्खे** सप्त. वि., ए. व. – *आभतपक्खे पन इदं संसन्दनं,* स. नि. अट्ठ. 3.102; – **पण्णाकार** पु., कर्म. स., लाया

हुआ उपहार अथवा सौगात – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एत्तकं कालं देवमनुस्सेहि आभतपण्णाकारेनेव दानं अदासि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.295; – **भाजन** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आभृतभाजन], लाया गया पात्र – **नानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *आभतभाजनानि पूरेत्वा गच्छति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.336; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, – **मंस** नपुं॰, लाया गया मांस – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्तनो अभतं मंसं द्वे कोट्ठासे कत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.457; – **मूल** नपुं॰, लाई गई जड़ – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आभतमूलं बहु,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.202; – **सक्कार** पु॰, श्रद्धा-स्वरूप लाया गया भोजन – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तुम्हेहि आभत सक्कारं कुसग्गेन जिव्हग्गे ठपेत्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.284.

आभताभत त्रि॰, आभत + आभत के योग से व्यु॰ [आभृताभृत], समय समय पर लाया गया – **तं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"तुम्हेहि आभताभतं तुम्हाकं गेहमेव नेथा"ति आह,* जा॰ अट्ठ॰ 3.16; – **मंस** नपुं॰, कर्म॰ स॰, समय समय पर लाया हुआ मांस – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"ब्यग्घेन आभताभतमंसं खादको कूटजटिलो"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.310.

आभरण नपुं॰, आ +√भर से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आभरण], **शा॰ अ॰**, वह, जिसे धारण किया जाए अथवा ले आया जाए, **ला॰ अ॰**, आभूषण, साज-सजावट – *विभूसनं चाभरणं अलङ्कारो पिलन्धनं,* अभि॰ प॰ 283; – **णं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सीलमाभरणं सेट्ठं,* थेरगा॰, 614; *गुणसरीरोपसोभनट्ठेन आभरणं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.188; *परस्स सीसे आभरणं विय दट्ठब्बो,* विसुद्धि॰ 1.208; – **णं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आभरणं ओमुञ्चित्वा,* चूळव॰ 318; *आभरणं ओमुञ्चित्वाति महालतं नाम नवकोटिअग्घनकं अलङ्कारं अपनेत्वा,* पाचि॰ अट्ठ॰ 139; – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिनिप्पीळनाय वत्थेन वा आभरणेन वा सद्धिं पीळयतो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.111; – **णा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *गन्धा च विलेपना च आभरणा च पिलन्धना च,* महानि॰ 279; *गीवादीसु पिळन्धनआभरणा च ...,* महानि॰ अट्ठ॰ 334; – **णानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *आभरणानि पिळन्धन्तो अत्तमनो अहोसि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.46; – **णेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आभरणेहि सद्धिं सत्तरतनपूरानि सकटानि उभोसु पस्सेसु पेसेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.269; **क.** स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अङ्गदा॰, अङ्गुल्या॰, अपेता॰, आमुत्तमाला॰, आमुत्तहत्था॰, दारा॰, दिब्बकुसुमा॰, दिब्बा॰, धारिता॰, नाना॰, पटिमा॰, पीता॰, पुप्फा॰, ब्रह्मा॰, माला॰, मालागुणा॰, मुत्ता॰, रत्तङ्गा॰, राजा॰, वत्था॰, विचित्तवत्था॰, विमट्ठा॰, सब्बा॰, सोण्णवण्णङ्गा॰, हत्था॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; **ख.** स॰ पू॰ प॰ के रूप में, – **जात** नपुं॰, [आभरणजात], विशेष प्रकार का अलंकार या आभूषण – **तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *सुवण्णवण्णं आभरणजातं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.177; – **णत्थ** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आभरणार्थ], साज-सजावट अथवा अलंकरण का प्रयोजन – **त्थाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"न सक्का एस आभरणत्थाय उपनेतुं",* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.202; *आभरणत्थाय सो मं मारेतुकामो अहोसी"ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.370; – **त्थिका** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, आभूषण अथवा अलंकार का प्रयोजन रखने वाली – *सचे तुम्हे आभरणत्थिका, इमानि गण्हथ,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.177; – **भण्ड** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, जेवर-जवाहरात, सजाने संवारने हेतु प्रयुक्त उपकरण – **ण्डं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आभरणभण्डमेव वा इध "वम्म"न्ति अधिप्पेतं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.184; – **ण्डं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्तनो आभरणभण्डं भञ्जापेत्वा ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.164; – **ण्डेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मया आभरणभण्डेन चेतियं पूजितं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.368; – **ण्डेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आभरणभण्डेसु पन सीसपसाधनकदन्तसूचिआदिकप्पियभण्डं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.117; – **मण्डक** नपुं॰, साज-सजावट की सामग्रियां, हीरे-जवाहरात – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मनुस्सा "आभरणभण्डकं गण्हिस्सामा"ति आपणं गच्छन्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.177; – **मङ्गल** नपुं॰, विवाह संस्कार के अवसर पर आभूषण देने का मांगलिक विधान – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आभरणमङ्गलं, अभिसेकमङ्गलं, आवाहमङ्गलन्ति तीणि मङ्गलानि अकंसु,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.227; – **वस्सा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आभरणवर्षा], आभूषणों की बरसात, आभूषणों की प्रचुरता – *कहापणमत्थके दिब्बाभरणवस्सं वस्सि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.129; – **विकति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आभरणविकृति], आभूषण का विशेष प्रकार – **यो** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *परिचारकपुरिसा नानावण्णानि दुस्सानि नानप्पकारा आभरणविकतियो मालागन्धविलेपनानि च आदाय,* जा॰ अट्ठ॰ 1.70; – **विभूसित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आभरणविभूषित], गहनों से सजा हुआ, अलंकारों से अलङ्कृत – आभरणविभूसिताहि नाटकित्थीहि परिवारितो, म॰ वं॰ टी॰ 568(रो॰); – **विलेपनादि** त्रि॰, ब॰ स॰, आभूषण एवं लेप प्रसाधन आदि – **दीहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *हिमवा विय आभरणविलेपनादीहि ओभासेन्तु चेव पवायन्तु च,* जा॰ अट्ठ॰ 7.362.

आभवग्गं अ., अव्ययी. स. [आभवाग्रम्], भवाग्र-नामक अवस्था तक, भव अथवा अस्तित्व की सर्वोच्च अवस्था तक – *आभवग्गं आगोत्रभुं सवनतो पवत्तनतो ... "आसवा"ति,* उदा. अट्ठ. 75; *आगोत्रभुं आभवग्गं वा सवन्तीति आसवा,* उदा. अट्ठ. 141.

आभवग्गतो अ., प. वि., प्रतिरू. निपा., उपरिवत् – *आरम्मणवसेन आगोत्रभुतो, आभवग्गतो च सवना,* विसुद्धि. 2.322.

आभस्सर पु., [आभास्वर], **शा. अ.**, आभा अथवा दीप्ति से परिपूर्ण, **ला. अ.**, **1.** रूपी ब्रह्माओं के एक लोक का नाम – **रा** प्र. वि., ए. व. – *महातापसानं आभस्सरा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).322; – **रे** द्वि. वि., ब. व. – *आभस्सरे आभस्सरतो सञ्जानाति ... सञ्ञत्वा ... मञ्ञति,* म. नि. 1.3; – **तो** प. वि., ए. व. – *बोधिसत्तो आभस्सरतो आगन्त्वा आकासे ठत्वा इमं गाथमाह,* जा. अट्ठ. 1.451; – **रेसु** सप्त. वि., ब. व. – *दुतियज्झानं भावेत्वा आभस्सरेसु अट्ठकप्पं आयुं गहेत्वा निब्बत्ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).302; – **काय** पु., तत्पु. स., आभा से परिपूर्ण देवों (आभास्वर वर्ग के देवों) का समूह, आभास्वर देवों का वर्ग – **या** प. वि., ए. व. – *आयुक्खया वा पुञ्ञक्खया वा आभस्सरकाया चवित्वा सुञ्ञं ब्रह्मविमानं उपपज्जन्ति,* दी. नि. 1.15; – **ट्ठान** नपुं., तत्पु. स. [आभास्वरस्थान], आभास्वर लोक का निवास-स्थान, आभा से परिपूर्ण स्थान – *सुभकिण्हतो च चवित्वा आभस्सरट्ठानादीसु सत्ता निब्बत्तन्ति,* पटि. म. अट्ठ. 1.300; – **त्त** नपुं., आभस्सर का भाव. [आभास्वरत्व], प्रभासित होना, अत्यधिक दीप्तिमय होना – **त्तेन** तृ. वि., ए. व. – *आभस्सरानं आभस्सरत्तेन अननुभूतं,* म. नि. 1.413; – **ब्रह्मलोक** पु., कर्म. स. [आभास्वर ब्रह्मलोक], आभा अथवा प्रकाश से परिपूर्ण ब्रह्मलोक, आभास्वर देवों का ब्रह्मलोक, आभास्वर नामक ब्रह्मलोक – **कं** द्वि. वि., ए. व. – ... *आभस्सरब्रह्मलोकं आदिं कत्वा लोको पातुभवति,* पटि. म. अट्ठ. 1.300; – **के** सप्त. वि., ए. व. – *तदा च आभस्सरब्रह्मलोके पठमतराभिनिब्बत्ता सत्ता आयुक्खया वा पुञ्ञक्खया वा ...,* पटि. म. अट्ठ. 1.298; – **भवन** नपुं., कर्म. स., प्रकाश से भरा हुआ क्षेत्र, आभास्वर नामक क्षेत्र अथवा स्थल – **ना** प. वि., ए. व. – *वुड्डिया पन पवत्तमानाय याव आभस्सरभवनापि एकोदकं होति,* स. नि. अट्ठ. 1.31; – **लोक** पु., कर्म. स. [आभास्वरलोक], प्रकाश से परिपूर्ण आभास्वर देवों का लोक, आभास्वर नामक लोक – **के** सप्त. वि., ए. व. – *आभस्सरलोके महाब्रह्मानो विय पीतिसुखेनेव वीतिनामेस्सामा"ति,* ध. प. अट्ठ. 2.149; – **संवत्तनिक** त्रि., आभास्वर नामक लोक में पुनर्जन्म लेने वाला – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *संवट्टमाने लोके येभुय्येन सत्ता आभस्सरसंवत्तनिका होन्ति,* दी. नि. 1.15; – **रूपग** त्रि., आभास्वर नामक ब्रह्मलोक को जाने वाला अथवा वहां पहुंचने वाला – **गो** पु., प्र. वि., ए. व. – *लोके आभस्सरूपगो होमि,* अ. नि. 2(2).227; **2.** पु., सदा ब. व. में प्रयुक्त, उन देवताओं के वर्ग का नाम जो कि आभास्वर-नामक रूप-ब्रह्मलोक में निवास करते हैं तथा जिनके शरीर से आभा अथवा प्रकाश की किरणें निकल कर चारों ओर बिखर जाती हैं – **रा** प्र. वि., ब. व. – *आभस्सरवारे दण्डदीपिकाय अच्चि विय एतेसं सरीरतो आभा छिज्जित्वा छिज्जित्वा पतन्ती विय सरति विसरतीति आभस्सरा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).38; दी. नि. अट्ठ. 2.90; *सत्ता एकत्तकाया नानत्तसञ्ञिनो, सेय्यथापि देवा आभस्सरा,* दी. नि. 2.54; – **रे** द्वि. वि., ब. व. – *आभस्सरे ... सञ्जानाति, ... अभिनन्दति,* म. नि. 1.3; – **रानं** ष. वि., ब. व. – *आभस्सरानं आभस्सरत्तेन अननुभूतं,* म. नि. 1.413; – **रेसु** सप्त. वि., ब. व. – *आभस्सरेसु मञ्ञति,* म. नि. 1.3.

आभा[1] स्त्री., आ +√भा से व्यु. [आभा], प्रकाश, चमक, कान्ति, दीप्ति – *रंसि चाभा पभा दित्ति रुचि भा जुति दीधिति,* अभि. प. 64; *विविधेहि सीलादिगुणेहि भवतीति विभू ... विभा ... आभा, भुजगो, ...परितो, इच्चेवमादि,* क. व्या. 641; – **भा** प्र. वि., ए. व. – *मणिरतनस्स आभा समन्ता योजनं फुटा अहोसि,* दी. नि. 2.131; *नत्थि सूरियसमा आभा, समुद्दपरमा सरा"ति,* स. नि. 1(1).8; *एसा आभाति एसा बुद्धाभा,* स. नि. अट्ठ. 1.48; – **भं** द्वि. वि., ए. व. – *आभं पटिच्च अच्चि पञ्ञायति,* म. नि. 1.376; *आभं पटिच्च अच्चीति तं आलोकं पटिच्च जालसिखा पञ्ञायति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).245; – **य** तृ. वि., ए. व. – *चन्दिमसूरिया एवंमहिद्धिका एवंमहानुभावा आभाय नानुभोन्ति,* दी. नि. 2.9; *आभाय नानुभोन्तीति अत्तनो पभाय नप्पहोन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 2.23; – **भा**[1] प्र. वि., ब. व. – *चतस्सो इमा, आभा, ... चन्दाभा, सूरियाभा, अग्गाभा, पञ्ञाभा,* अ. नि. 1(2).160; – **भा**[2] द्वि. वि., ब. व. – ... *देवा ये इमेसं चन्दिमसूरियानं आभा नानुभोन्ति,* म. नि. 2.236;

आभा ... ओभासं न वळञ्जन्ति, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म.प॰) 2.193; – **हि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *हेमाचला व दिस्सन्ति तस्साभाहितहिं तदा,* जिन॰ च॰ 204(रो॰); – **कर** पु॰, [आभाकर], प्रकाश को उत्पन्न करने वाला सूर्य – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रंसिमाभाकरो भानु अक्को सहस्सरंसि च,* अभि॰ प॰ 63; – **धातु** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, आभा अथवा प्रकाश का मूलभूत तत्त्व, सात प्रकार के धातुविभाजनों में से एक – *आभाधातु, सुभधातु, आकासानञ्चायतनधातु, विञ्ञाणञ्चायतनधातु, आकिञ्चञ्ञायतनधातु, नेवसञ्ञानासञ्ञायतनधातु, सञ्ञावेदयितनिरोधधातु ... सत्त धातुयो'ति,* स॰ नि॰ 1(2).132; *आभाधातूति आलोकधातु, आलोकस्सपि आलोककसिणे परिकम्मं कत्वा उप्पन्नज्झानस्सापीति सहारम्मणस्स झानस्स एतं नाम,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.118; – **नानत्त** नपुं॰, भाव॰ [आभानानात्त्व], आभा अथवा प्रकाश में विविधता – *वण्णनानत्तञ्हि खो पञ्ञायति नो च आभानानत्तं,* म॰ नि॰ 3.187; *आभानानत्तन्ति आलोके नानत्तं न पञ्ञायति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.148.

आभा² पु॰/स्त्री॰, केवल ब॰ व॰ में प्रयुक्त, **शा॰ अ॰,** प्रभास्वर, देदीप्यमान, **ला॰ अ॰,** परित्ताभा, अप्पमाणाभा तथा आभस्सर, नामक तीन प्रकार के देवों के लिए प्रयुक्त – *आभा देवा ... दीघायुका वण्णवन्तो सुखबहुलाति,* म॰ नि॰ 3.145; *आभातिआदीसु आभादयो नाम पाटियेक्का देवा नत्थि, तयो परित्ताभादयो देवा आभा नाम, परित्तासुभादयो च,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.108; *या ता ... आभा सब्बा ता परित्ताभा उदाहु सन्तेत्थ एकच्चा देवता अप्पमाणाभा'ति,* म॰ नि॰ 3.188; *आभा नाम विसुं नत्थि, परित्ताभअप्पमाणाभ आभस्सरानमेतं अधिवचनं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).229.

आभाति आ +√भा का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, अच्छी तरह से चमकता है, सम्यक्‌रूप से सुशोभित करता है, प्रकाशित करता है, देदीप्यमान बना देता है – *रत्तिमाभाति चन्दिमा,* स॰ नि॰ 1(1).18; 56; *रत्तिमाभाति चन्दिमा'ति उट्ठहन्तस्स चन्दस्स अञ्जलिं पग्गण्हि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.217-18; – **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *का नु विज्जुरिवाभासि, ओसधी विय तारका,* जा॰ अट्ठ॰ 4.414; – **भन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तपन्ति आभन्ति विरोचरे च, सतेरता विज्जुरिवन्तलिक्खे,* जा॰ अट्ठ॰ 5.194.

आभावग्ग पु॰, अ॰ नि॰ के एक वर्ग का शीर्षक, अ॰ नि॰ 1(2). 160-162.

आभावेति आ +√भू का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आभावयति], उत्पन्न करता है, जन्म देता है, अस्तित्व में लाता है, वृद्धि कराता है – **वेसि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *मेत्ताचित्तं अभावेसि ब्रह्मलोकूपपत्तिया,* पे॰ व॰ 384; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *मेत्ताचित्तं आभावेत्वा, ब्रह्मलोकूपपत्तिया,* पे॰ व॰ 386; *आभावेत्वाति वड्ढेत्वा ब्रूहेत्वा, अभावेत्वा'ति केचि पठन्ति, तेसं अकारो निपातमत्तं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 146.

आभास पु॰, आ +√भास से व्यु॰, केवल स॰ उ॰ प॰ में प्रयुक्त [आभास], प्रकाश, चमक, दीप्ति, रंग, आकार – **कनकाभासा** स्त्री॰, ब॰ स॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, सोने के समान वर्ण वाली – *सा कञ्ञा कनकाभासा, पदुमाननलोचना,* अप॰ 2.216; – **कम्बुतलाभासा** स्त्री॰, ब॰ स॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, शंख के समान आकार वाली – *दीघा कम्बुतलाभासा, गीवा एणेय्यका यथा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.150.

आभासति¹ आ +√भास का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आभाशते], बोलता है, सम्बोधित करता है, बातचीत करता है – *भिक्खवोति भगवा आभासति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).17; – **न्ति** ब॰ व॰ – *अम्म ताता'ति पठमतरं आभासन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.187.

आभासति² आ +√भास (चमकना) का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आभासते], चमकता है, दिखता है, प्रतीत होता है – *अभब्बतो आभासति उपट्ठातीति अभब्बाभासं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.193.

आभासनसील त्रि॰, चमकदार, दीप्तिमान – **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *पभाय आभासनसीलाति आभस्सरा,* अभि॰ ध॰ वि॰ टी॰ 149.

आभासुत्त नपुं॰, अ॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, अ॰ नि॰ 1(2).160.

आभिक्खञ्ञ नपुं॰, अभिक्खण का भाव॰ [आभीक्ष्ण्य, बौ॰ सं॰ आभीक्ष्णक], निरन्तर आवृत्ति, लगातार दुहराया जाना, सतत रूप से पुनरावृत्ति – *सीलाभिक्खञ्ञा वस्सकेसु णी,* मो॰ व्या॰ 5.53.

आभिचेतसिक त्रि॰, अभिचेतस से व्यु॰, सुस्पष्ट एवं विशुद्ध मानसिकता वाला, शुद्ध चित्तवृत्ति से युक्त – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयमस्स पठमो आभिचेतसिको दिट्ठधम्मसुखविहारो अधिगतो होति,* अ॰ नि॰ 2(1).197; – **कानं** नपुं॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चतुन्नं झानानं आभिचेतसिकानं*

दिट्ठधम्मसुखविहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी, परि॰ 262.

आभिजञ्ञा अभि +√ञा का विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [अभिजानीयात्], जाने, जानना चाहिए – *यं ब्राह्मणं वेदगुमाभिजञ्ञा, अकिञ्चनं कामभवे असत्तं,* सु॰ नि॰ 1065.

आभिजानाथ अभि +√ञा का वर्त॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ [अभिजानीथ], तुम लोग जानते हो, ठीक से अथवा सुस्पष्ट रूप से स्मरण करते हो – *किमाभिजानाथ पुरे पुराणं, किं वो पिता अनुसासे पुरत्था,* जा॰ अट्ठ॰ 7.185.

आभिजिक / अभिजिक पु॰, व्य॰ सं॰, एक भिक्षु का नाम – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अभिजिकञ्च भिक्खुं अनुरुद्धस्स सद्धिविहारिं,* स॰ नि॰ 1(2).182; *मम वचनेन ... अभिजिकञ्च ... आमन्तेती'ति,* स॰ नि॰ 1(2).182.

आभिदोसिक / आभिदोसिय त्रि॰, अभि + दोसं से व्यु॰, बीती हुई अथवा पिछली रात का (यागु अथवा दलिया), बासा, दूसित भाव को प्राप्त – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"ततोयं अभिदोसिको कुम्मासो"ति,* पारा॰ 17; *ततो तव गेहतो अयं आभिदोसिको कुम्मासो लद्धोति अत्थो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.161; – **कं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुदिनस्स ञातिदासी आभिदोसिकं कुम्मासं छड्डेतुकामा होति,* पारा॰ 16; *आभिदोसिकन्ति पारिवासिकं एकरत्तातिक्कन्तं पूतिभूतं, तत्रायं पदत्थो – पूति भावदोसेन अभिभूतोति अभिदोसो, अभिदोसोव अभिदोसिको एकरत्तातिक्कन्तस्स वा नामसञ्ञा एसा यदिदं आभिदोसिकोति, तं आभिदोसिकं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.160; – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथापि, आवुसो पुरिसं पणीतभोजनं भुत्ताविं अभिदोसिकं भोजनं नच्छादेय्य,* अ॰ नि॰ 2(2).102; *आभिदोसिकन्ति अभिञ्ञातदोसं कुद्रूसकभोजनं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.133.

आभिधम्मिक त्रि॰, अभिधम्म से व्यु॰ [आभिधार्मिक], अभिधर्म का अध्ययन करने वाला, अभिधर्म में निष्णात, अभिधर्म का अच्छा ज्ञान रखने वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विनयमधीते ति वेनयिको, विनयमधीते वा, एवं ... आभिधम्मिको वेय्याकरणिको,* क॰ व्या॰ 353; *त्वम्पि आभिधम्मिको, भण, तात, अभिधम्मपदानी'ति,* मि॰ प॰ 15; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुत्तन्तिकं वा आभिधम्मिकं वा उपसङ्कमति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).179; – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सुत्तन्तिका वेनयिका आभिधम्मिका ...,* मि॰ प॰ 309; – **गण** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आभिधार्मिकगण], अभिधर्म का अध्ययन करने वालों अथवा अभिधर्म में निष्णात व्यक्तियों की मण्डली – **णो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गणोति सुत्तन्तिकगणो वा आभिधम्मिकगणो वा,* विसुद्धि॰ 1.92; – **स्स** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *देम, इदं आभिधम्मिकगणस्साति एवं गणस्स देन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.216; – **भिक्खु** पु॰, कर्म॰ स॰ [आभिधार्मिकभिक्षु], अभिधर्म का अध्ययन करने वाला भिक्षु, अभिधर्म में निष्णात भिक्षु – **क्खु** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्सेको आभिधम्मिकभिक्खु आचरियो अहोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.170; – **क्खू** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *अट्ठ आभिधम्मिकभिक्खू पेसेसि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.209; – **क्खूनं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *द्विन्नं आभिधम्मिकभिक्खूनं अभिधम्मं सज्झायन्तानं सरे निमित्तं गहेत्वा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 18.

आभिधम्मिकगोदत्त पु॰, व्य॰ सं॰, एक स्थविर का नाम, जो विनय में निष्णात माना जाता था – **त्थेरो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मिञ्च सन्निपाते आभिधम्मिकगोदत्तत्थेरो नाम विनयकुसलो होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.246; 2.29; *आभिधम्मिकगोदत्तत्थेरो सीसच्छेदकस्सा'ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.65.

आभिन्दति आ +√भिद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आभिनत्ति], काटता है, तोड़ देता है, फाड़ देता है, खण्ड खण्ड कर देता है – **न्देय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पुरिसो तिण्हाय कुठारिया यतो यतो आभिन्देय्य,* स॰ नि॰ 2(2).164; *आभिन्देय्याति पहरेय्य पदालेय्य वा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.50.

आभिमुख्य नपुं॰, अभिमुख का भाव॰ [आभिमुख्य], किसी के मुख की ओर अथवा उसके सामने रहना, उपस्थिति, अभिमुखीभाव – **ख्ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लक्खणवाचकेन सह अभि पति इच्चेतेसं आभिमुख्ये ...,* सद्द॰ 3.776; *आभिमुख्यविसिट्ठुद्धकम्मसारुप्पवुद्धिसु,* अभि॰ प॰ 1176; 1178, 1180.

आभिसमाचारिक / अभिसमाचारिक नपुं॰, [बौ॰ सं॰ आभिसमाचारिक], **शा॰ अ॰,** अच्छे आचरण की ओर उन्मुख, उत्तम आचरण से सम्बद्ध, **ला॰ अ॰,** आदिब्रह्मचरियक शीलों के अतिरिक्त तथा इन शीलों की अपेक्षा **गौण** माने गए शील अथवा विनय-शिक्षापद – **कं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अधिको समाचारो अभिसमाचारो, तत्थ नियुत्तं, सो वा पयोजनं एतस्साति आभिसमाचारिकं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.30; *आभिसमाचारिकमुच्चते,* अभि॰ प॰ 431; ...

अभिसमाचारोति उत्तमसमाचारो – अभिसमाचारो अभिसमाचारं वा आरब्भ पञ्ञत्ता आभिसमाचारिकसिक्खा, विनया॰ टी॰ 1.219; ... *आभिसमाचारिकं आचिक्खिंसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.255; *आजीवट्ठमकतो अवसेससीलस्सेतं अधिवचनं,* विसुद्धि॰ 1.12; – **आदिब्रह्मचरियक** नपुं॰ आभिसमाचारिक एवं आदिब्रह्मचर्य नामक दो प्रकार के शील-प्रभेद – **वसेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथा आभिसमाचारिकआदिब्रह्मचरियकवसेन ...,* विसुद्धि॰ 1.11; – **वत्त** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आभिसमाचारिकव्रत], आभिसमाचारिक वर्ग के शीलों के पालन का व्रत – **त्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आभिसमाचारिकवत्ते पन परिपूरे सीलं परिपूरति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.19; – **सिक्खा** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, शिक्षा के रूप में ग्रहण करने योग्य आभिसमाचारिक शील, अभिसमाचार-शीलों अथवा उत्तम आचरण से सम्बद्ध शिक्षा – *अभि विसिट्ठो उत्तमो समाचारो अभिसमाचारो, अभिसमाचारोव आभिसमाचारिकोति च सिक्खितब्बतो सिक्खाति च आभिसमाचारिकसिक्खा अभिसमाचारं वा आरब्भ पञ्ञत्ता सिक्खा अभिसमाचारसिक्खा,* विनया॰ टी॰ 1.219; – **सील** नपुं॰, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक्-वाक् एवं सम्यक्-आजीव, इनके अन्तर्गत निर्दिष्ट आठ प्रकार के आदिब्रह्मचरियक शीलों के अतिरिक्त क्षुद्रक-अनुक्षुद्रक अन्य शील, परिपालनीय व्रतों के रूप में महावग्ग एवं चूळवग्ग में प्रज्ञप्त शील – *यानि वा सिक्खापदानि खुद्दानुखुद्दकानीति वुत्तानि, इदं आभिसमाचारिकसीलं ... खन्धक वत्तपरियापन्नं आभिसमाचारिकं,* विसुद्धि॰ 1.12; *यम्पिदं चेतियङ्गणवत्तं ... द्वे असीति खन्धकवत्तानि चुद्दसविधं महावत्तन्ति इमेसं वसेन आभिसमाचारिकसीलं वुच्चति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.19.

आभिसेकिक / आभिसेकिय त्रि॰, अभिसेक से व्यु॰, सं॰ कृ॰ [आभिषेक], स्नान करने के स्थान पर, अथवा राजाओं के राज्याभिषेक की क्रिया के लिए निर्धारित स्थान पर छोड़ दिए गए (चीवर), स्नान अथवा राज्याभिषेक के अवसर पर प्रयुक्त, पांच, दस अथवा तेईस प्रकार के पंसुकूलों की सूची में परिगणित एक पंसुकूल – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपरानिपि पञ्च पंसुकूलानि – गोखायिकं, ..., आभिसेकिकं, गतपटियागतं,* परि॰ 253; *आभिसेकिकन्ति नहानट्ठाने वा रञ्ञो अभिसेकट्ठाने वा छड्डितचीवरं,* परि॰ अट्ठ॰ 173; *दस पंसुकूलानीति सोसानिकं, पापणिकं, उन्दूरक्खायितं, उपचिकक्खायितं, अग्गिदड्ढं, गोखायितं, अजिकक्खायितं, थूपचीवरं, आभिसेकियं, भतपटियाभतन्ति एतेसु उपसम्पन्नेन उस्सुक्कं कातब्बं,* परि॰ अट्ठ॰ 183; *पंसुकूलन्ति सोसानिकं, पापणिकं, रथियं, सङ्कारकूटकं, सोत्थियं, सिनानं, तित्थं, गतपच्चागतं, अग्गिदड्ढं, गोखायितं उपचिकखायितं, उन्दूरखायितं, अन्तच्छिन्नं, दसाच्छिन्नं, धजाहटं, थूपं समणचीवरं, सामुद्दियं, आभिसेकियं, पन्थिकं, वाताहटं, इद्धिमयं देवदत्तियन्ति तेवीसति पंसुकूलानि वेदितब्बानि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.174.

आभुज पु॰, आ +√भुज से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, प्रायः "पल्लङ्क" के साथ प्रयुक्त, मोड़ने की क्रिया, दबक, झुकाव, मोड़ – **जे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *या पुब्बे बोधिसत्तानं, पल्लङ्कवरमाभुजे, निमित्तानि पदिस्सन्ति,* बु॰ वं॰ 2.82; *पल्लङ्कवरमाभुजेति वरपल्लङ्काभुजने,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 114.

आभुजति / आभुञ्जति आ +√भुज का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, 1. प्रायः "पल्लङ्क" के साथ प्रयुक्त, मोड़ता है, झुकाता है, पालथी लगा लेता है, पालथी लगा कर बैठ जाता है – *भिक्खु पल्लङ्कं आभुजति,* सद्द॰ 2.348; – **जिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पीतिया च अभिस्सन्नो, पल्लङ्कं आभुजिं तदा,* बु॰ वं॰ 2.78; *आभुजिन्ति कतपल्लङ्को हुत्वा पुप्फरासिम्हि निसीदिन्ति अत्थो,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 114; – **जुं** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सम्पजाना समुट्ठाय, सयने पल्लङ्कमाभुजुं,* अप॰ 1.3; – **जित्वा / जित्वान / ञ्जित्वा / ज्जित्वा / ज्ज / ज्य / ञ्जिय** पू॰ का॰ कृ॰, पालथी लगाकर, पर्यङ्कासन में बैठकर – *आभुजित्वाति आबन्धित्वा,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.12; *पल्लङ्कं आभुजित्वान निसीदि पुरिसुत्तमो,* अप॰ 1.17; ... *पल्लङ्कं आभुजित्वा उजुं कायं पणिधाय परिमुखं सतिं उपट्ठपेत्वा ...,* महाव॰ 29; *अथस्स निसज्जाय दळ्हभावं अस्सासपस्सासानं पवत्तनसुखतं आरम्मणपरिग्गहूपायञ्च दस्सेन्तो पल्लङ्कं आभुजित्वा ति आदिमाह,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.12; *एकं पादं आभुजित्वा कतपल्लङ्कं,* चूळव॰ अट्ठ॰ 132; 2. पीछे की ओर जाता है, घटता है, वापस पलटता है – *महासमुद्दो आभुजति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.23; 3. मरोड़ देता है, सिकोड़ देता है, समेट लेता है, उलट-पलट देता है, तोड़-मरोड़ देता है – *चित्तं परिकुपितं कायं आभुजति निब्भुजति सम्परिवत्तकं करोति,* मि॰ प॰ 237; – **जित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *कण्हसप्पो ... भोगं आभुजित्वा सत्तुं खादन्तो निपज्जि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.303; 4. चित्त को तीव्रता से एकाग्र करता है, मनन-चिन्तन करता है, [illegible] में ले आता है, अनुचिन्तन करता है – *विञ्ञाणधातु तत्थ तत्थ*

सम्मापयोगमन्वाय आभुजतीति, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.163; *धम्मारम्मणवसेन आभुजित्वा धम्मदानं दस्सामि,* चरिया॰ अट्ठ॰ 279.

आभुजन नपुं॰, आ +√भुज से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, **1.** मोड़ देने की क्रिया, मोड़, दबक, स॰ उ॰ प॰ के अन्त॰, **पलङ्क॰** – नपुं॰, तत्पु॰ स॰, पालथी लगाकर बैठना – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अज्जपेतन्ति अज्ज तव पल्लङ्काभुजनेपि एतं भयं न होतेवाति अत्थो,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 116, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 191; **2.** अनुचिन्तन, सोच-विचार, मनन, चित्त को आलम्बन की ओर मोड़ देना – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ *तस्सेव आभुजनतो आभोगो,* विभ॰ अट्ठ॰ 382.

आभुजित त्रि॰, आ +√भुज का भू॰ क॰ कृ॰, **1.** मोड़ा हुआ, वक्र किया हुआ – **तेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वजिरासने निसिन्नकालतो पट्ठाय सकिम्पि अनुट्ठहित्वा यथाआभुजितेन एकेनेव पल्लङ्केन,* उदा॰ अट्ठ॰ 26; **2.** मन द्वारा अनुचिन्तित, मन में लाया हुआ – **तानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *"परित्तानि अभिभुय्य तानि चे कदापि वण्णवसेन आभुजितानि होन्ति ...,* म॰ नि॰ टी॰ (म॰प॰) 2.122.

आभुजी स्त्री॰, भोजपत्र नामक एक वृक्ष – *भुजपत्तो तु आभुजी,* अभि॰ प॰ 565; *भूजपत्ते इति ख्याते सुन्दरतचे रुक्खे, यस्सतचे मन्तक्खरानि लिखन्ति,* अभि॰ प॰ सूची 39(रो॰); – **नो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मोचा कदली बहुकेत्थ सालियो, पवीहयो आभूजिनो च तण्डुला,* जा॰ अट्ठ॰ 5.401; *आभूजिनोति भुजपत्ता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.402; – **परिवारित** त्रि॰, ब॰ स॰, भोजपत्र के वृक्षों से घिरा हुआ – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कदलीधजपञ्ञाणो, आभुजीपरिवारितो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.186.

आभोग[1] पु॰, [आभोग], पूर्णता, पूर्ण आनन्द, पूर्ण भोग – *आभोगो पुण्णतावज्जे ...,* अभि॰ प॰ 1083; – **मत्त** नपुं॰, आभोगमात्र, केवल उपभोग, केवल आनन्द का अनुभव – *आभोगमत्तमेव हेत्थ पमाणं,* कङ्खा॰ 219.

आभोग[2] **1.** पु॰, आ +√भुज से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आभोग], **शा॰ अ॰,** मुड़ाव, झुकाव, लपेट, घुमाव, घेरा, परिधि, कुण्डलन, **ला॰ अ॰,** मानसिक प्रवृत्ति, मन का लगाव, मनसिकार, मन में चढ़ा लेना, अभिरुचि, मानसिक अनुचिन्तन, मानसिक प्रत्यय, ध्यान – **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यदेव तत्थ सुखमिति चेतसो आभोगो, एतेनेतं ओळारिकं अक्खायति,* दी॰ नि॰ 1.32; *चेतसो आभोगोति झाना वुट्ठाय तस्मिं सुखे पुनप्पुनं चित्तस्स आभोगो मनसिकारो समन्नाहारोति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.104; – **गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *एवं आभोगं कातुम्पि वट्टति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.226; *अनापुच्छा वा आभोगं वा अकत्वा अन्तोगब्भे वा असंवुतद्वारे बहि वा निपज्जन्तानं आपत्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.226; 225; – **गेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पच्छिमस्स आभोगेन मुत्ति नत्थि,* पाचि॰ अट्ठ॰ 39; – **गे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"किमिदं अन्धकार"न्ति ? सत्तानं आभोगे उप्पन्ने, ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.195; **2.** त्रि॰, आभोग करने वाला, मानसिक प्रत्यय बनाने वाला, मनन करने वाला, अनुचिन्तन का विषय बनाने वाला – **स्स** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आभोगस्स होति ... समन्नाहरन्तस्स होति ...,* कथा॰ 287; *ननु आवट्टेन्तस्साति वारे आभोगस्साति आभोगवतो,* कथा॰ अट्ठ॰ 194; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अत्था॰, अना॰, अन्ता॰, चित्ता॰, पठमा॰, पुब्बा॰, सा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, केवल स॰ उ॰ प॰ में ही प्राप्त, चित्त के अनुचिन्तन की अवस्था, **पठमा॰**- प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, आलम्बन की ओर चित्त के जाने का प्रथम क्षण – *पठमावज्जनञ्चेव पठमाभोगतापि च,* अभि॰ अव॰ 1327; – **पच्चवेक्खणरहित** त्रि॰, मानसिक अनुचिन्तन एवं प्रत्यवेक्षण से रहित – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अज्झमज्झं आभोगपच्चवेक्खणरहिता एते धम्मा ...,* विभ॰ अट्ठ॰ 54; – **सञ्ञा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आभोगसंज्ञा], मानसिक चिन्तन के विषय में संज्ञा-ज्ञान – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आभोगसञ्ञायपि ञाणसञ्ञायपि एवंसञ्ञी होति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.136; *तथारूपस्स आभोगस्स असम्भवतो, समापत्तितो वुट्ठितस्स आभोगो पुब्बभागभावनायवसेन ञाणक्खणे पवत्तं अभिभवनाकारं गहेत्वा पवत्तोति दट्ठब्बं,* दी॰ नि॰ टी॰ 2.147(बर्मी॰); – **समन्नाहार** पु॰, तत्पु॰ स॰, आभोग नामक ध्यान – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अट्ठविधे आभोगसमन्नाहारे ... लब्भति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.102; *सन्तं पणीतं सब्बसङ्खारसमथो सब्बूपधिपटिनिस्सग्गो तण्हाक्खयो विरागो निरोधो निब्बान"न्ति एवं अट्ठविधे आभोगसञ्ञिते समन्नाहारे,* अ॰ नि॰ टी॰ 2.92; – **समन्नाहारमनसिकार** पु॰, कर्म॰ स॰, आभोग में विद्यमान एकाग्रता – विषयक मनसिकार (मन का ध्यान) – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"ओळारिकोळारिके कायसङ्खारे पस्सम्भेमी"ति आभोगसमन्नाहारमनसिकारो नत्थि,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.84; – **गानुरूपं** अ॰, क्रि॰ वि॰, मानसिक चिन्तन अथवा मनसिकार की अनुरूपता में – *गोचरभावं गच्छन्तीति आभोगानुरूपं अनेककलापगतानि आपाथं आगच्छन्ति,* अभि॰ ध॰ स॰ 131; – **गाभाव** पु॰, तत्पु॰ स॰, मानसिक चिन्तन

का अभाव – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्ता सुखिता वा होन्तु ... ति आभोगाभावतो,* विसुद्धि॰ 1.315.

आम[1] अ॰, अनुमोदनार्थक, सहमतिसूचक अथवा स्वीकृत्यर्थक निपा॰ [आम्, बौ॰ सं॰ आम/आमं], ओह, हां, जी हां, हां ऐसा ही है, वास्तव में यही बात ठीक है, एकदम ऐसा ही है, वाक्यों में दो प्रकार से प्रयुक्त; **क.** इसके उपरान्त संबो॰ में आवुसो, भन्ते, अय्य, अय्ये, उपासक, दारक, देव, भगवा एवं महाराज आदि शब्द अवश्य रहते हैं – *"आम, आवुसो"ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.34; *"आम, भन्ते"ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.23; *"अम्म, सेट्ठिनो धीतासी"ति,? "आम, ताता"ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.111; *"आमाय्य नवरत्तो कम्बलो"ति,* पारा॰ 193; *"आमाय्ये सिब्बिस्सामी"ति,* पाचि॰ 383; *"आम, उपासका"ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.6; *"आम, देवा"ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.275; *"आम, दारक, जानामहं सिप्पानि,* मि॰ प॰ 10; **ख.** संबो॰ में अन्त होने वाले नाम के प्रयोग के बिना कभी-कभी "आम" के तुरन्त उपरान्त स्वीकृति अथवा पूर्वकथन के अनुमोदन को सूचित करने वाला वाक्य अथवा वाक्यांश का प्रयोग मिलता है – *आम, पब्बजितोम्ही"ति,* महाव॰ 122; *आम, मया गहिता"ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.42; *"किं पनेत्थ आपत्तिभावं न जानासीति? आम, न जानामी"ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.34.

आम[2] अ॰/त्रि॰, केवल स॰ पू॰ प॰ में ही प्राप्त अमा से व्यु॰ अथवा उस का अप॰, अपना, निजी, अपने ही घर का – **जन** पु॰, कर्म॰ स॰, एक ही घर में रहने वाला, घरेलू आदमी, पारिवारिक जन, सम्बन्धी जन – **नो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न नो समसब्रह्मचारीसूति एत्थ समजनो नाम सकजनो वुच्चति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.124; पाठा॰ समजनो; – **जात** त्रि॰, "हां मैं आपकी दासी हूं" इस प्रकार से 'हां' कहने वाली या स्वीकारने वाली दासी से उत्पन्न दासी-पुत्र – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यत्थ दासो आमजातो, ठितो थुल्लानि गज्जती"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.221; *आमजातोति "आम, अहं वो दासी"ति एवं दासब्यं उपगताय आमदासिसङ्खाताय दासिया पुत्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.222; – **दासीसङ्खाता** स्त्री॰, "हां मैं आपकी दासी हूं" ऐसा कहने या स्वीकारने के कारण "आमदासी" नाम से विख्यात या प्रसिद्ध दासी – **य** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहं वो दासी"ति एवं दासब्यं उपगताय आमदासिसङ्खाताय दासिया पुत्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.222.

आम[3] त्रि॰, आ +√अम से व्यु॰ [आम], **1.** कच्चा, अनपका, अपक्व (भोजन या फल) – **मं**[1] नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आमं पक्कञ्च जानन्ति, अथो लोणं अलोणकं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.338; – **मं**[2] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आमं पक्कवण्णि ..., आमं आमवण्णि ... चत्तारि अम्बानि,* अ॰ नि॰ 1(2).122; *पञ्चमे आमं पक्कवण्णीति आमकं हुत्वा ओलोकेन्तानं पक्कसदिसं खायति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.322; **2.** आवे में न पकाया हुआ (बर्तन आदि) – **मं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं ते पञ्ञाय भेच्छामि, आमं पत्तंव अस्मना,* सु॰ नि॰ 445; **3क.** अनपचा, अधपचा (भोजन आदि), अपवित्र, **3ख.** पु॰/नपुं॰, अजीर्णता अथवा अनपच का रोग – *दुट्ठं आमासयगतं रसं आमं बुधा विदुं,* भेषज्ज॰ 1.113 (रो॰).

आमक त्रि॰, [आमक], उपरिवत्, **क.** कच्चा, नहीं पकाया हुआ – **कं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अय्य, आमकं किर न गण्हन्ती"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.61; *जात वेदस्स डय्हमाने आमकसङ्कटे आमकवण्णविनासे रसादीनं विनासो भवति,* अभि॰ अव॰ 108; **ख.** नहीं पका हुआ – *बालो आमकपक्कंव, ... आमिसं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.361; *आमकपक्कति आमकञ्च पक्कञ्च,* जा॰ अट्ठ॰ 5.362; *आमकं हुत्वा ओलोकेन्तानं पक्कसदिसं खायति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.322; **ग.** आवे में नहीं पकाया हुआ (मिट्टी का बर्तन आदि) कच्चा – **कानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यानि कानिचि कुम्भकारभाजनानि आमकानि चेव पक्कानि च सब्बानि तानि भेदनधम्मानि ...,* स॰ नि॰ 1(1).116; – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुम्भकारो आमके आमकमत्ते,* म॰ नि॰ 3.160; – **च्छिन्न** त्रि॰, कर्म॰ स॰, कच्ची अवस्था में ही काट लिया गया, हरी भरी हालत में ही काट दिया गया – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तित्तकालाबु आमकच्छिन्नो ... होति सम्मिलातो,* म॰ नि॰ 1.114; *आमकच्छिन्नोति अतितरुणकाले छिन्नो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).362; – **तक्क** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आमकतक्र], ताजा मट्ठा – **क्के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचे आमकतक्के वा, खीरे वा पक्खिपन्ति तं, सामपाकनिमित्तम्हा, न तु मुच्चति दुक्कटा,* विन॰ वि॰ 1457; *आमकतक्कादीसु पन सयं न पक्खिपितब्बा,* पाचि॰ अट्ठ॰ 102; – **धञ्ञ** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आमकधान्य], नहीं पकाया हुआ अनाज, कच्चा अनाज – **ञ्ञं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... रस्सकाले आमकधञ्ञं विञ्ञापेत्वा नगरं अतिहरन्ति द्वारट्ठाने,* पाचि॰ 360; *इदं आमकधञ्ञं नाम मातरम्पि विञ्ञापेत्वा भुञ्जन्तिया पाचित्तियमेव,* पाचि॰ अट्ठ॰ 188; – **पक्कभिक्खाचरिया** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, कच्चे तथा पके हुए भोजन को प्राप्त करने हेतु किया जा रहा भिक्षाटन – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समुच्छकन्ति गामे*

वा आमकपक्कभिक्खाचरियं अरञ्ञे वा फलाफलहरणसङ्खातं उञ्छं यो चरेय्य, जा. अट्ठ. 4.60. – **पटिग्गहण** नपुं., तत्पु. स. [आमकधान्यप्रतिग्रहण], दान के रूप में कच्चे अनाज को स्वीकार करना – **णा** प. वि., ए. व. – *आमकधञ्ञपटिग्गहणा पटिविरतो समणो गोतमो,* दी. नि. 1.5; *आमकधञ्ञपटिग्गहणाति, सालिवीहियवगोधूमकङ्गुवरक कुद्रूसकसङ्खातस्स सत्तविधस्सापि आमकधञ्ञस्स पटिग्गहणा न केवलञ्च एतेसं पटिग्गहणमेव, आमसनम्पि भिक्खूनं न वट्टतियेव,* दी. नि. अट्ठ. 1.72; – **पूतिक** त्रि., कर्म. स., कच्ची अवस्था में ही सड़ चुका – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *जीवमतको नाम आमकपूतिको नाम चेस,* पारा. अट्ठ. 2.160; – **फल** नपुं., कर्म. स. [आमकफल], नहीं पका हुआ फल, कच्चा फल – **लं** द्वि. वि., ए. व. – *आमकफलम्पि असेसेत्वा खादिंसु,* जा. अट्ठ. 3.333; – **भाजन** नपुं., कर्म. स. [आमकभाजन], आवे में नहीं पकाया गया मिट्टी का कच्चा बर्तन – **नं** प्र. वि., ए. व. – *निच्चं विभिज्जतिह आमकभाजनं व,* तेल. 33; – **मंस** नपुं., कर्म. स. [आमकमांस], कच्चा मांस, नहीं पकाया हुआ मांस – **सं** द्वि. वि., ए. व. – *सो सूकरसूनं गन्त्वा आमकमंसं खादि ... पिवि, तस्स सो अमनुस्सिकाबाधो पटिप्पस्सम्भि,* महाव. 278; *आमकमंसञ्च ... अमनुस्सो खादित्वा च पिवित्वा च पक्कन्तो, तेन वुत्तं – तस्स सो अमनुस्सिकाबाधो पटिप्पस्सम्भी'ति,* महाव. अट्ठ. 352; – **मंसपटिग्गहण** नपुं., तत्पु. स. [आमकमांसप्रतिग्रहण], दान के रूप में बिना पकाए हुए मांस का स्वीकरण – **णा** प. वि., ए. व. – *आमकमंसपटिग्गहणा पटिविरतो समणो गोतमो,* दी. नि. 1.5; *आमकमंसपटिग्गहणाति एत्थ अञ्ञत्र ओदिस्स अनुञ्ञाता आमकमंसच्छानं पटिग्गहणमेव भिक्खूनं न वट्टति, नो आमसनं,* दी. नि. अट्ठ. 1.72; – **मच्छभोजिन** त्रि., [आमकमत्स्यभोजिन], कच्ची मछलियों का भोजन करने वाला – **जिनो** पु., ष. वि., ए. व. – *उदकथलचरस्स पक्खिनो, निच्चं आमकमच्छभोजिनो,* जा. अट्ठ. 2.124; ध. प. अट्ठ. 1.84; – **मत्त** त्रि., अभी तक पूरी तरह से नहीं पकाया हुआ (मिट्टी का बर्तन), अभी तक पूरी तरह से नहीं सूखा हुआ (बर्तन) – **त्ते** नपुं., सप्त. वि., ए. व. – *न वो अहं, आनन्द, तथा परक्कमिस्सामि यथा कुम्भकारो आमके आमकमत्ते,* म. नि. 3.160; *आमकमत्तेति आमके नातिसुक्खे भाजने,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.122; – **लोहित** नपुं., कर्म. स. [आमकलोहित], ताजा खून, गर्म लहू – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *सो सूकरसूनं गन्त्वा आमकमंसं खादि, आमकलोहितं पिवि,* महाव. 278; ... *अनुजानामि, अमनुस्सिकाबाधे आमकमंसं आमकलोहितन्ति,* महाव. 278; – **साक** नपुं., कर्म. स. [आमकशाक], कच्ची साग-सब्जी – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *आमकसाकं हत्थेन गहेत्वा खादितुं वट्टति,* विसुद्धि. 1.68.

आमकसुसान नपुं., कर्म. स., ऐसा भयंकर श्मशान जिसमें बिन जले अथवा अधजले शव छोड़ दिए जाते हों, श्मशान की दुर्गन्ध भरी अपवित्र भूमि, अनेक प्रकार की गन्दगी से भरपूर श्मशान-भूमि – **नं**[1] प्र. वि., ए. व. – *तस्स अलङ्कतपटियत्तं ... तं महातलं अपविद्धनानाकुणपभरितं आमकसुसानं विय उपट्ठासि,* जा. अट्ठ. 1.71; *यत्थ सुसाने छवसरीरं छड्डीयति, तं आमकसुसानं,* विसुद्धि. महाटी. 1.338; *आमकसुसाने पातितं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1). 372; – **नं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *"इदानि नं आमकसुसानं नेत्वा गच्छन्तरे निपज्जापेहि,* ध. प. अट्ठ. 1.102; – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *"आमकसुसाने तं यथा काकसुनखादयो न खादन्ति, तथा निपज्जापेत्वा रक्खापेथा"ति,* ध. प. अट्ठ. 2.59.

आमगन्ध[1] 1. पु., कर्म. स. [बौ. सं. आमगन्ध], **शा. अ.**, दुर्गन्ध, दुर्गन्ध से परिपूर्ण वस्तु, कच्चे मांस की गन्ध, शव जैसी गन्ध, सड़ायंध, चिरायंध, **ला. अ.**, मन में विद्यमान मलिन मनोभाव, क्लेश, अनुशय, आस्रव, प्राणि-हत्या, चोरी आदि पापकर्म – **न्धो** प्र. वि., ए. व. – *"आमगन्धो नाम मच्छमंसं, गहपतयो"ति,* सु. नि. अट्ठ. 1.259; *"अपि च खो आमगन्धो नाम सब्बे किलेसा पापका अकुसला धम्मा"ति वत्वा ...,* तदे.; *"न आमगन्धो ममकप्पतीति,* सु. नि. 244; *एसामगन्धो न हि मंसभोजनन्ति एस पाणातिपातादिअकुसलधम्मसमुदाचारो आमगन्धो विस्सगन्धो कुणपगन्धो ... ये ... हि उस्सन्नकिलेसा सत्ता, ते तेहि अतिदुग्गन्धा होन्ति, ... तस्मा एसामगन्धो,* सु. नि. अट्ठ. 1.263; – **न्धे** पु., द्वि. वि., ब. व. – *आमगन्धे च खो अहं भोतो भासमानस्स न आजानामि,* दी. नि. 2.177; 2. त्रि., **क.** दुर्गन्ध से परिपूर्ण, सड़ायध से भरपूर, **ख.** हिंसा आदि दुराचार करने वाला, क्लेशों द्वारा मलिनीकृत – **न्धं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *सो भुञ्जसी कस्सप आमगन्धं,* सु. नि. 243; – **न्धा** पु., प्र. वि., ब. व. – *आमगन्धा सकुणपगन्धा पूतिगन्धायेवाति वदति,* दी. नि. अट्ठ. 2.232.

आमगन्ध[2] पु., व्य. सं., बुद्ध के समय का वह तापस जिसे भगवान् बुद्ध ने आमगन्धसुत्त का उपदेश दिया तथा जो काश्यप बुद्ध के काल में भी आमगन्ध नामक ब्राह्मण था – **न्धो** प्र. वि., ए. व. – *अनुप्पन्ने भगवति आमगन्धो नाम ब्राह्मणो ... न कदाचि मच्छमंसं खादति*, सु. नि. अट्ठ. 1.258; – **न्धं** द्वि. वि., ए. व. – *एवं भगवा परमत्थतो आमगन्धं विस्सज्जेत्वा दुग्गतिमग्गभावञ्चस्स पकासेत्वा ... भुञ्जति*, सु. नि. अट्ठ. 1.266; – **सञ्ञी** त्रि., अपवित्रता एवं दुर्गन्धमयता की संज्ञा रखनेवाला – **ञ्ञी** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *यस्मिं मच्छमंसभोजने तापसो आमगन्धसञ्ञी दुग्गतिमग्गसञ्ञी च हुत्वा तस्स अभोजनेन सुद्धिकामो हुत्वा तं न भुञ्जती*, सु. नि. अट्ठ. 1.266.

आमगन्धसुत्त नपुं., सु. नि. के चूळवग्ग का एक सुत्त, जिसमें भगवान् बुद्ध ने ब्राह्मणों में स्वीकृत "आमगन्ध" शब्द के अर्थ का खण्डन कर पापकर्मों एवं अकुशल मनोभावों को 'आमगन्ध' घोषित किया था, सु. नि. 242-255; – **वण्णना** स्त्री., आमगन्धसुत्त की अट्ठकथा या व्याख्या, सु. नि. अट्ठ. 2.258-268.

आमगिद्ध / आमगिज्झ त्रि., कच्चे मांस के प्रति लालच रखने वाला, चारा के रूप में प्रयुक्त कच्चे मांस का लालची – **द्धो** पु., प्र. वि., ए. व. – *यथापि मच्छो बळिसं, ... आमगिद्धो न जानाति*, जा. अट्ठ. 6.242; 264.

आमट्ठ त्रि., आ +√मस का भू. क. कृ. [आमृष्ट], **शा. अ.**, ठीक से स्पर्श किया गया, **ला. अ.**, सुविचारित, सुचिन्तित – **ट्ठा** पु., प्र. वि., ब. व. – *निरासङ्कचित्तताय पुनप्पुनं आमट्ठा परामट्ठा*, दी. नि. अट्ठ. 1.93; – **मत्त** त्रि., केवल स्पर्शमात्र किया हुआ – **त्ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *आमसना नाम आमट्ठमत्ता*, पारा. 174.

आमण्ड पु., (वृक्ष के अर्थ में) / नपुं., (फल के अर्थ में) [आमंड], **क.** अट्ठ. के अनुसार आंवला का वृक्ष या फल – **ण्डं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आमण्डन्ति आमलकं*, म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.107; – **ण्डो** पु., प्र. वि., ए. व. – *तत्थ आमण्डोति आमलकरुक्खो*, बु. वं. अट्ठ. 269; – **ण्डानि** नपुं., द्वि. वि., ब. व. – *सेय्यथापि, भिक्खवे, चक्खुमा पुरिसो पञ्च आमण्डानि हत्थे करित्वा पच्चवेक्खेय्य*, म. नि. 3.144; **ख.** संस्कृत शब्दकोशों एवं अभि. प. के अनुसार रेंड़ी का पौधा या फल – **ण्डो** पु., प्र. वि., ए. व. – *एरण्डो तु च आमण्डो*, अभि. प. 566; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *आमण्डस्स इदं फलं*, अप. 1.95.

आमण्डगामणी पु., श्रीलङ्का का एक शासक – **णी** प्र. वि., ए. व. – *आमण्डगामणी भयो महादाठिक अच्चये*, म. वं. 35.1.8; – **पुत्त** पु., तत्पु. स., राजा आमण्डगामणी का पुत्र – **त्तो** प्र. वि., ए. व. – *आमण्डगामणीपुत्तो चूळाभयो ति विस्सुतो*, दी. वं. 21.38.

आमण्डधीतु स्त्री., आमण्डगामणी अभय नामक एक सिंहली राजा की पुत्री – **ता** प्र. वि., ए. व. – *आमण्डधीता चतुरो मासे रज्जं अकारयि*, म. वं. 35.14.

आमण्डभागिनेय्य पु., आमण्डगामणी अभय नामक सिंहली शासक का भाञ्जा – **य्यो** प्र. वि., ए. व. – *आमण्डभागिनेय्यो तु सीवलिं अपनीय नं*, म. वं. 35.15.

आमण्डलिय / आमण्डलिक नपुं., पानी के बीच की भंवर, जल-आवर्त या मण्डल – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *गावो मज्झेगङ्गाय नदिया सोते आमण्डलियं करित्वा तत्थेव अनयब्यसनं आपज्जिंसु*, म. नि. 1.290.

आमण्डसारक **1.** पु., तत्पु. स. [आमण्डसारक], आंवले का तूंबा या आंवले से बना पात्र, **2.** त्रि. आंवला के फल वाला – **को** प्र. वि., ए. व. – *"आमण्डकसारको आमलकफलमयो"ति वदन्ति*, वजिर. टी. 109; *तेलभाजनेसु ... अलाबुके वा आमण्डसारके वा उपेत्वा इत्थिरूपं पुरिसरूपञ्च अवसेसं सब्बम्पि वण्णमट्ठकम्मं वट्टति*, पारा. अट्ठ. 1.234; *आमण्डसारकेति आमलकेहि कतभाजने*, सारत्थ. टी. 2.108; *विसाणे नाळियं वापि, तथेवामण्डसारके*, विन. वि. 3072.

आमण्डियमहीपति पु., कर्म. स., व्य. सं., श्रीलङ्का के एक शासक आमण्डगामणी अभय का ही एक अन्य नाम – **ति** प्र. वि., ए. व. – *मंसकुम्भण्डकं नाम आमण्डियमहीपति*, म. वं. 35.7.

आमत त्रि., आ +√मर का भू. क. कृ., लगभग मरा हुआ, अर्धमृत – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *यदा सो आमतो होति, त्याहं एवं वदामि*, दी. नि. 2.249; *आमतो होतीति अद्धमतो मरितुं आरद्धो होति*, दी. नि. अट्ठ. 2.361.

आमत्तिक पु., आमत्त से व्यु., मिट्टी से बने हुए बर्तनों का व्यापारी या स्वामी – **का** प्र. वि., ब. व. – *आमत्तानि वुच्चन्ति भाजनानि, तानि येसं भण्डं ते आमत्तिका*, पारा. अट्ठ. 2.255; – **कापण** पु., तत्पु. स., मिट्टी के बर्तनों की दुकान, घड़ों की दुकान अथवा व्यापार – **णं** द्वि. वि., ए. व. – *पत्तवाणिज्जं वा समणा सक्यपुत्तिया करिस्सन्ति आमत्तिकापणं वा पसारेस्सन्ती'ति*, पारा. 364; *आमत्तिकापणं*

वाति ... आमत्तिका, तेसं आमत्तिकानं ... कुलालभण्डवाणिजका पणन्ति अत्थो, पारा॰ अट्ठ॰ 2.255; – **णो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेसं आपणो आमत्तिकापणो,* पाचि॰ अट्ठ॰ 179.

आमद्दन नपुं॰, आ +√मद्द से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आमर्दन], रौंद देना, कुचल देना – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यस्स खेत्तसामिकस्स इदं माससस्सं धनं, तं अयं गोगणो ... भञ्जनतो, आमद्दनतो पुरेतरमेवाति अत्थो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 264.

आमन्तक त्रि॰, आ +√मन्त से व्यु॰ [आमन्त्रक], आमन्त्रण देकर पास में बुलाने वाला, बुलाने वाला – **केसु** पु॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *असद्धम्मवसेन हि आमन्तकेसु निमन्तकेसु विज्जमानेसु मातुगामो नाम न सक्का रक्खितुन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.283.

आमन्तण / आमन्तन नपुं॰, आ +√मन्त से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आमन्त्रण], **क. शा॰ अ॰,** संबोधित करना, बुलाना, आवाज देकर पुकारना, निमन्त्रण, समालाप – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुण गुण आमन्तने,* सद्द॰ 2.536; *साम स्वान्तने आमन्तने,* सद्द॰ 2.558; *नास्स आमन्तने कोचि अन्तरायो अहोसीति इममत्थं दस्सेति,* उदा॰ अट्ठ॰ 351; **ख. केवल व्याकरण के सन्दर्भ में,** 1. अनु॰, के अनेक अर्थों में से एक – *आणत्यासिट्ठ अक्कोससपथयाचनविधि निमन्तणामन्तनाज्झिट्ठ सम्पुच्छनपत्थनासु पञ्चमी,* सद्द॰ 3.813; 2. विधि॰ के अनेक अर्थों में से एक – *आमन्तणे इध भवं निसीदेय्य इच्चादि,* सद्द॰ 3.815; 3. संबो॰ वि॰ का अर्थ, संबो॰ कारक – *आमन्तणट्ठमी सायं सि यो येवा ति चुद्दस ... विभत्तियो,* सद्द॰ 1.60; – **पद** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आमन्त्रणपद], संबो॰ वि॰ में प्रयुक्त पद – **दानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पठमाविभत्तियुत्तानं एकवचनपुथुवचनन्तानं आमन्तणपदानं दिट्ठत्ता ...,* सद्द॰ 3.895; – **वचन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आमन्त्रण अथवा पुकारे जाने के अर्थ का कथन – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नाग नागस्साति एकं आमन्तनवचनं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.143; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आमन्तणवचने अट्ठमी विभत्ति,* सद्द॰ 1.60; – **सञ्ञ** त्रि॰, ब॰ स॰ [आमन्त्रणसंज्ञक], आमन्त्रण संज्ञा वाला, आमन्त्रण कहा जाने वाला – **ञ्ञं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं वत्थुं आलपति अभिमुखं करोति, तं आमन्तणसञ्ञं होति,* सद्द॰ 3.713; – **नाकारदीपन** नपुं॰, बुलाए जाने के तरीके का प्रकाशन – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खवोति तेसं आमन्तनाकारदीपनं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.27.

आमन्तना / आमन्तणा स्त्री॰, [आमन्त्रण], पुकार, बातचीत, सलाह-मशविरा, बात-विचार – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आमन्तना होति सहायमज्झे, वासे ठाने गमने चारिकायं,* सु॰ नि॰ 40; *इदं मे देही'ति आदिना नयेन तथा तथा आमन्तना होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.67.

आमन्तनिक / आमन्तणिक त्रि॰, [आमन्त्रनीय], आमन्त्रण दिए जाने योग्य, बातचीत अथवा संलाप करने योग्य, निमन्त्रण देने वाला, अनुरोध करने वाला – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आमन्तनिका रञ्ञोम्हि सक्कस्स वसवत्तिनो,* वि॰ व॰ 165; ... *आमन्तनिका आलापसल्लापयोग्गा, कीळनकाले वा तेन आमन्तेतब्बा अम्हि,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 76.

आमन्तनीय त्रि॰, आ +√मन्त का सं॰ कृ॰ [आमन्त्रणीय], आमन्त्रित करने योग्य, दान आदि देने हेतु अनुरोध करने योग्य – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गरु च आमन्तनीयो च, दातुमरहामि भोजनं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.333; *आमन्तनीयोति आमन्तेतब्बयुत्तको मया दिन्नं भत्तं गहेतुं अनुरूपो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.335; *आमन्तनीयोति आमन्तेतब्बयुत्तको मया दिन्नं भत्तं गहेतुं अनुरूपो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.334.

आमन्ता स्वीकृति-सूचक सम्बोधनार्थक निपा॰, अभिधम्म में प्रयुक्त, संभवतः आम+भन्ते के संक्षिप्तीकृत रूप से निष्पन्न, जी हां श्रीमान्, ऐसा ही है श्रीमान् – ... *पुग्गलो नुपलब्भति सच्चिकट्ठपरमत्थेनाति आमन्ता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 5; *परवादी "आमन्ता"ति पटिजानाति पटिजाननञ्हि कत्थचि "आम भन्ते"ति आगच्छति, कत्थचि "आमो"ति आगच्छति, इध पन "आमन्ता"ति आगतं,* मोहवि॰ 277.

आमन्तापन नपुं॰, आ +√मन्त के प्रेर॰ से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, आमन्त्रण कराना, बुलवाना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एत्थ किञ्चा पि सीलादिधम्मानं आमन्तापनं न'त्थि,* सद्द॰ 2.536.

आमन्तापेति आ +√मन्त का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – आमन्त्रित कराता है, बुलवाता है – **पेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *भिसक्कं सल्लकत्तं आमन्तापेय्य,* मि॰ प॰ 149; – **पीयति** कर्म॰ वा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आमन्त्रित कराया जाता है – *गोणापीयति आमन्तापीयति अत्तनि पतिट्ठितो पुग्गलो दट्ठुं सोतुं पूजितुञ्च इच्छन्तेहि जनेही'ति गुणो,* सद्द॰ 2.536.

आमन्तेति / आमन्तयति आ +√मन्त का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आमन्त्रयते], सम्बोधित करता है, बुलाता है, आवाज

देता है, निमन्त्रण देता है, अनुरोध करता है, परामर्श करता है, बिदा लेता है, संलाप करता है – *सत्था तं ... आमन्तेती'ति,* चूळव. 319; *आमन्तेतीति पक्कोसति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).3; – **यामि** उ. पु., ए. व. – *हन्द दानि, भिक्खवे, आमन्तयामि वो,* दी. नि. 2.92; – **यतं** अनु. प्र. पु., ए. व. – *आमन्तयतन्ति आमन्तेतु जानापेतु,* दी. नि. अट्ठ. 1.239; – **न्तेहि** अनु., म. पु., ए. व. – *मम वचनेन भद्दियं भिक्खुं आमन्तेहि,* चूळव. 319; – **यस्सु** अनु., म. पु., ए. व., आत्मने. – *आमन्तयस्सु ते पुत्ते,* जा. अट्ठ. 7.313; – **न्तये** विधि., प्र. पु., ए. व. – *याव आमन्तये ञाती, मित्ते च सुहदज्जने,* जा. अट्ठ. 7.157; *आमन्तये ... भो यक्खसेनापति,* तदे.; – **न्तेसि/न्तयि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *आमन्तेसी'ति आलपि अभासि सम्बोधेसि,* पारा. अट्ठ. 1.150; *सारथिं आमन्तयी राजा,* पे. व. 660; – **यित्थ** तदे., आत्मने. – *आमन्तयित्थ राजानं, सञ्जयं धम्मिनं वरं,* जा. अट्ठ. 7.260; – **न्तेसिं** उ. पु., ए. व. – *तत्रापि खो ताहं आनन्द, आमन्तेसिं,* दी. नि. 2. 89; – **न्तयिंसु** प्र. पु., ब. व. – *सामो इति मं ञातयो, आमन्तयिंसु जीवन्तं,* जा. अट्ठ. 6.92; – **न्तेतब्बा** स्त्री., सं. कृ., प्र. वि., ए. व. – *कीळनकाले वा तेन आमन्तेतब्बा अम्हि,* वि. व. अट्ठ. 76; – **न्तेत्वा** पू. का. कृ. – *थेरो वस्सूपनायिकदिवसे ते भिक्खू आमन्तेत्वा पुच्छि,* ध. प. अट्ठ. 1.6; – **न्तित** त्रि., भू. क. कृ. – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *आमन्तिता खत्तिया आनुयन्ता नेगमा चेव जानपदा च,* दी. नि. 1.123.

आमप्पयोग पु., प्रचुर, व्यापक अथवा एकजुट बनाने की क्रिया – **गो** प्र. वि., ए. व. – *आमप्पयोगो नाम उस्सन्नकिरिया,* सद्द. 2.539.

आमभेदनिदस्सन नपुं., भैषज्य. का वह अध्याय, जिसमें अपच से सम्बद्ध रोगों का विवरण है, नवां अध्याय.

आमय पु., [आमय], रोग, व्याधि, बीमारी, विपत्ति, मनोव्यथा, हानि – *आतङ्को आमयो व्याधि गदो रोगो रुजापि च,* अभि. प. 323; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *तस्स तस्सामयस्सेव पटिसेधनमत्तकं, अव्यापज्झात्थिकं सेवे भेसज्जं स्नेहवज्जितो,* सद्धम्मो. 397.

आमरिस पु., [आमर्ष], क्रोध, कोप, असहनशीलता – **सो** प्र. वि., ए. व. – *अमरिसो आमरिसो,* सद्द. 3.921.

आमलक 1. पु., [आमलक], आंवला का वृक्ष – **का** प्र. वि., ब. व. – *अम्बा ... हरीतकी आमलका,* जा. अट्ठ. 7.293; 2. नपुं., [आमलक], आंवले का फल – **कं** प्र./द्वि. वि., ए. व. – *तेन खो पन समयेन जीवको कोमारभच्चो नखेन भेसज्जं ओलुम्पेत्वा आमलकञ्च खादति पानीयञ्च पिवति,* महाव. 366; *अनुजानामि, भिक्खवे, फलानि भेसज्जानि ... आमलकं,* महाव. 277; *अथ खो जीवको कोमारभच्चो काकं दासं एतदवोच हन्द, भणे काक, आमलकञ्च खाद पानीयञ्च पिवस्सू'ति,* महाव. 366; – **कानि** प्र./द्वि. वि., ब. व. – *पिण्डपाते ... अम्बे आमलकानि च,* थेरगा. 938; – **मत्त** त्रि., ब. स. [आमलकमात्राक], आंवले के फल के जैसे आकार वाला – **त्तियो** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *कोलमत्तियो हुत्वा आमलकमत्तियो अहेसुं, आमलकमत्तियो हुत्वा बेलुवसलाटुकमत्तियो अहेसुं,* स. नि. 1(1).177; – **त्ता** उपरिवत् – *सासपमत्तियो पिळका उट्ठहिंसु, ता अनुपुब्बेन ... आमलकमत्ता ... हुत्वा,* ध. प. अट्ठ. 1.181; – **कक्क** पु., तत्पु. स., केश-प्रक्षालन के लिए प्रयुक्त आंवले के फल को पीसकर बनाया गया चूर्ण – **क्केन** तृ. वि., ए. व. – *आमलककक्केन सीसं मक्खेत्वा उदकं ओरुय्ह ओनमित्वा सीसं धोवि,* अ. नि. अट्ठ. 2.184; – **घट** पु., तत्पु. स. [आमलकघट], आंवले के फल से बनाया हुआ घड़ा – **टो** प्र. वि., ए. व. – *आमलकतुम्बं आमलकघटो लाबुकतुम्बं ... भाजनीयं,* चूळव. अट्ठ. 83; – **पट्ट** पु., तत्पु. स. [आमलकपट्ट], आंवले के आकार वाला पलंग पोश अथवा चादर, आंवले के आकार की वस्त्रपट्टिका – **ट्टो** प्र. वि., ए. व. – *घनपुप्फो उण्णामयत्थरको, यो आमलकपट्टोतिपि वुच्चति,* अ. नि. अट्ठ. 2.167; – **पत्त** नपुं., तत्पु. स. [आमलकपत्र], आंवले के वृक्ष की पत्ती – **त्तानं** ष. वि., ब. व. – *"अहं खदिरपत्तानं वा ... आमलकपत्तानं वा पुटं करित्वा ...,* स. नि. 3(2).501; – **पलिबोध** पु., तत्पु. स., केश-प्रक्षालन के लिए आंवले के प्रयोग के कारण उत्पन्न अड़चन अथवा बाधा, केशों को बढ़ाकर रखने में उत्पन्न सोलह प्रकार की बाधाओं में से एक – **धो** प्र. वि., ए. व. – *सोळसिमे, दारक, पलिबोधे दिस्वा केसमस्सुं ओहारेत्वा पब्बजितो, ... आमलकपलिबोधो ... कप्पकपलिबोधो ... ऊकापलिबोधो,* मि. प. 10; – **पिण्ड** नपुं., तत्पु. स., केशों को धोने में प्रयुक्त आंवले के चूर्ण का पिण्ड – **ण्डं** द्वि. वि., ए. व. – *आमलकपिण्डं दत्वा गच्छ असुकट्ठाने सीसं धोवित्वा आगच्छाही'ति पेसिसि,* अ. नि. अट्ठ. 2.184; –

फलमय त्रि., आंवले के फलों वाला – **यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *"आमण्डकसारको आमलकफलमयो"ति वदन्ति,* वजिर. टी. 109; – **फाणित** नपुं., आंवले का सीरा, आंवले की चाशनी – **ते** द्वि. वि., ब. व. – *अनापत्ति अमज्जञ्च होति मज्जवण्णं ... तं पिवति, ... आमलकफाणिते,* पाचि. 150; – **मुत्ता** स्त्री., श्रीलङ्का के आठ प्रकार के मोतियों में से एक, आमलक नामक मोती – **त्ता** प्र. वि., ए. व. – *हयमुत्ता, गजमुत्ता, रथमुत्ता, आमलकमुत्ता, वलयमुत्ता अङ्गुलिवेठकमुत्ता, ककुधफलमुत्ता, पाकतिकमुत्ताति,* पारा. अट्ठ. 1.53; – **रुक्ख** पु., तत्पु. स. [आमलकवृक्ष], आंवले का वृक्ष (फुस्स नामक बुद्ध का बोधिवृक्ष) – **क्खो** प्र. वि., ए. व. – *आमलकरुक्खो बोधि,* जा. अट्ठ. 1.51; – **वट्ट** त्रि., [आमलकवृत्त], आंवले के फल के समान वृत्ताकार (आमलक मुक्ता), स. प. के अन्त. – *दक्खिणावट्टसङ्खरतनञ्च आमलकवट्टमुत्तरतनञ्च,* जा. अट्ठ. 5.377; – **वट्टक / वट्टिका** त्रि., अनेक पैरों वाला पीठ अथवा आसन – **कं** प्र. वि., ए. व. – *अनुजानामि, भिक्खवे, आमलकवट्टिकं पीठन्ति,* चूळव. 275; *आमलकवट्टिकपीठं नाम आमलकाकारेन योजितं बहुपादकपीठं,* चूळव. अट्ठ. 59.

आमलकतुम्ब नपुं., तत्पु. स., आंवले के फल से बना हुआ तूंबा – **म्बं** प्र. वि., ए. व. – *आमलकतुम्बं आमलकघटो लाबुकतुम्बं ... भाजनीयं,* चूळव. अट्ठ. 83.

आमलकी स्त्री., [आमलकी], आंवले का पेड़ – **की** प्र. वि., ए. व. – *तस्सा अविदूरे आमलकी,* महाव. 35; *तं परिवारेत्वाहरीतकीआमलकी मरिचगच्छो च अहोसि,* जा. अट्ठ. 5.12; *हरीतकीआमलकीआदीसु ओसधीसु तालनाळिकेरादीसु तिणेसु वनजेट्ठकेसु च वनप्पतिरुक्खेसु,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).265; – **वन** नपुं., तत्पु. स. [आमलकीवन], आंवले के वृक्षों का उद्यान, आंवलों का बाग – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *एकं समयं भगवा चातुमायं विहरति आमलकीवने,* म. नि. 2.129.

आमलचेतिय नपुं., व्य. सं., उत्तरी श्रीलङ्का में नागदीप में अवस्थित एक चैत्य का नाम – **ये** सप्त. वि., ए. व. – *उण्णलोमधरं चेव छत्तं आमलचेतिये,* चू. वं. 42.62.

आमसति आ +√मस, वर्त., प्र. पु., ए. व. [आमृशति], **शा. अ.,** (भोजन को) पकड़ता है, (वस्तुओं का) हाथ से स्पर्श करता है, मलता है, गुदगुदाता है, झपट्टा मारता है, खा जाता है, **ला. अ.,** विचार-विमर्श करता है, चिन्तन करता है, मनन करता है, पर्यवेक्षण करता है – *कुम्भिं आमसति, आपत्ति दुक्कटस्स,* पारा. 54; *इत्थी च होति इत्थिसञ्ञी सारत्तो च भिक्खु च, नं इत्थिया कायेन कायं आमसति ... आपत्ति सङ्घादिसेसस्स,* पारा. 175; – **न्ति** ब. व. – *"वीहिं किरेते नामसन्ती"ति,* जा. अट्ठ. 4.61; – **साम** उ. पु., ब. व. – *"न मयं वीहिं आमसामा"ति,* जा. अट्ठ. 4.61; – **न्तो** पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. – *तस्मा तं बहूनं वचनं उपादाय द्विक्खत्तुं आमसन्तो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).204; – **न्तिया** स्त्री., वर्त. कृ., च. वि., ए. व. – *अनापत्ति असञ्चिच्च, अजानित्वामसन्तिया,* विन. वि. 1987; – **सेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *निब्बत्ते सद्दे अदूरगते कोचि आमसेय्य, सह आमसनेन सद्दो निरुज्झेय्य,* मि. प. 281-82; – **सि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *थेय्यचित्तो आमसि,* पारा. 66; – **सिं** उ. पु., ए. व. – *अनामासानि आमसिं,* जा. अट्ठ. 2.299; – **सिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *को इमं वसलं दुग्गन्धं आमसिस्सती'ति,* पारा. 195; – **सितुं** निमि. कृ. – *काकमासको नाम यथा काकेहि आमसितुं सक्का होति, एवं याव मुखद्वारा आहारेति,* ध. स. अट्ठ. 424; – **सित्वा** पू. का. कृ. – *ओदपत्तकिनी नाम उदकपत्तं आमसित्वा वासेति,* पारा. 206; – **तब्ब** त्रि., सं. कृ. – **तो** प. वि., ए. व. – *मच्चुना मरणेन आमसितब्बतो आमिसं,* उदा. अट्ठ. 96.

आमसन नपुं., आ +√मस से व्यु., क्रि. ना., स्पर्श, अनुचिन्तन, सोच विचार – *भुसत्थे पटिलोमत्थे विक्कमामसनादिसु,* अभि. प. 1164; – **नं** प्र. वि., ए. व. – *उब्भजाणुमण्डलं आमसनं वा परामसनं वा गहणं वा छुपनं वा पटिपीळनं वा,* पाचि. 287.

आमसना स्त्री., स्पर्श करना, ग्रहण करना, विचार करना, अनुचिन्तन करना – **ना** प्र. वि., ए. व. – *आमसना नाम आमट्ठमत्ता,* पारा. 174; *आमसना, परामसना, ओमसना, उम्मसना,* तदे.; *आमसना परामसना'ति आदिना ... वुत्तं,* पारा. अट्ठ. 2.110.

आमसब्रह्मचारी आम[2] के अन्त. द्रष्ट..

आमा स्त्री., घर की दासी, घरेलू नौकरानी – *आमा आमा आमायो,* सद्द. 1.260.

आमायदास पु., जन्म से ही दास, दासी की कोख से उत्पन्न घरेलू नौकर – **सा** प्र. वि., ब. व. – *आमायदासापि भवन्ति हेके, धनेन कीतापि भवन्ति दासा,* जा. अट्ठ. 7.178;

तत्थ आमायदासाति दासिया कुच्छिम्हि जातदासा, जा॰ अट्ठ॰ 7.178.

आमायदासी स्त्री॰, घरेलू दासी, घर की दासी से उत्पन्न लड़की या पुत्री – **सी** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यदि ते सुता बीरणी जीवलोके, आमायदासी अहुब्राह्मणस्स,* जा॰ अट्ठ॰ 6.140; *आमायदासीति गेहदासिया कुच्छिम्हि जातदासी,* जा॰ अट्ठ॰ 7.140.

आमावसेस नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आमावशेष], उदर में नहीं पचाए हुए भोजन का शेष भाग – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आमावसेसं पाचेति, महाव॰ 297; आमावसेसं पाचेतीति सचे आमावसेसकं होति, तं पाचेति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.79.

आमावासी स्त्री॰, [अमावासी, अमावस्या, अमावसी], महीने के कृष्णपक्ष की पन्द्रहवीं तिथि, अमावस्या की तिथि, द्रष्ट॰, अड्ढमासी के अन्त॰.

आमास पु॰, आ +√मस से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आमर्श], विचार-विमर्श, भोजन-ग्रहण – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेनासनपरिभोगे पन आमासम्पि अनामासम्पि सब्बं वट्टति,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 249.

आमासय पु॰, तत्पु॰ स॰ [आमाशय], पेट में वह स्थान, जहां पर अनपचा भोजन सञ्चित रहता है, पेट, उदर का ऊपरी भाग – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा ... पक्कासयं अज्झोत्थरित्वा आमासयं उक्खिपित्वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.132-33.

आमिस नपुं॰, [आमिष, वै॰, आमिस], **शा॰ अ॰**, मांस, **ला॰ अ॰ 1.** आहार, विषय, शिकार के लिए चारा, शिकार, खाने योग्य भोजन, प्रतिज्ञात पुरस्कार, **2.** सांसारिक सम्पत्ति, सुखद एवं प्रिय वस्तु, लाभ, लालच, भौतिक आवश्यकताएं, तृष्णा, पांच काम भोगों के विषय में तृष्णा – **सं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *थो मंसं आमिसं पिसितं भवे,* अभि॰ प॰ 280; 1104; *मच्चुनो आमिसं दुरतिवत्तन्ति ते अरियपुग्गला अघस्स वट्टदुक्खस्स मूलभूतं,* उदा॰ अट्ठ॰ 96; – **सं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमित्तमज्झे वसतो, तेसु आमिसमेसतो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.274; *आमिसन्ति खादनीयभोजनीयं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.52; *भिक्खुनिया हत्थतो आमिसं पटिग्गहेसीति,* पाचि॰ 232; *यथा च रसलोलो अन्धो भत्ते उपनीते यं किञ्चि समक्खिकम्पि निम्मक्खिकम्पि आमिसं आदियति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.362; *मच्छोव घसमामिसं,* थेरगा॰ 749; *मच्छोव घसमामिसन्ति आमिसं घसन्तो खादन्तो मच्छो विय,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.241; *आमिसं बन्धनञ्चेतन्ति एते पञ्च कामगुणा नाम एवं इमस्स मच्छभूतस्स लोकस्स मारबालिसिकेन पक्खित्तं आमिसञ्चेव,* जा॰ अट्ठ॰ 3.174; *ते वे खणन्ति अघमूलं, मच्चुनो आमिसं दुरतिवत्त'न्ति,* उदा॰ 85; *आमिसं दुरतिवत्तन्ति ते अरियपुग्गला अघस्स वट्टदुक्खस्स मूलभूतं, मच्चुना मरणेन आमसितब्बतो आमिसं,* उदा॰ अट्ठ॰ 95; *आमिसम्पि दुविधं – निप्परियायामिसं, परियायामिसन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).96; – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आमिसे पन, भन्ते, कथं पटिपज्जितब्ब'न्ति ? आमिसं खो सारिपुत्त, सब्बेसं समकं भाजेतब्ब'न्ति,* महाव॰ 479; स॰ उ॰ प॰ के रूप में कामा॰, निप्परियाया॰, निरा॰, पच्चया॰, परियाया॰, मारा॰, लोका॰, वन्तलोका॰, वट्टा॰, सा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आमिसइद्धि स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, उपभोग करने योग्य भौतिक सुखसाधनों की समृद्धि, पांच प्रकार के कामगुणों की प्रचुरता – **द्धि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वेमा, ... इद्धियो, ... आमिसिद्धि च धम्मिद्धि च,* अ॰ नि॰ 1(1).113.

आमिसकथा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, **1.** भोजन अथवा भोजन-सामग्री के विषयों में बातचीत – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आमिसकथायमेव आभिरमति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.62; **2.** चीवर, पिण्डपात आदि चार प्रत्ययों से सम्बद्ध विन॰ वि॰ के एक खण्ड का शीर्षक, विन॰ वि॰ 1160-1162.

आमिसकिञ्चिक्खनिमित्तं अ॰, क्रि॰ वि॰, थोड़े से आहार अथवा भोगसामग्री प्राप्त करने के लिए – *आमिसकिञ्चिक्खहेतूति आमिसस्स किञ्चिक्खनिमित्तं, किञ्चि आमिसं पत्थेन्तोति अत्थो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 95.

आमिसकिञ्चिक्खहेतु अ॰, उपरिवत् – *अत्तहेतु वा परहेतु वा आमिसकिञ्चिक्खहेतु वा सम्पजानमुसा भासिता होति,* म॰ नि॰ 1.360.

आमिसकोट्ठास पु॰, कर्म॰ स॰, अपने द्वारा प्राप्य भाग के रूप में भौतिक सुख सामग्री, भोगसाधनों में अपना भाग – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धम्मकोट्ठासस्सेव सामिनो भवथ, मा आमिसकोट्ठासस्स,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).98.

आमिसखार नपुं॰, तत्पु॰ स॰, कोष्ठबद्धता या कब्ज के उपचार के लिए प्रयुक्त मादक पेय, सूखे भात से तैयार किया गया एक पेय – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुजानामि, भिक्खवे, आमिसखारं पायेतुन्ति,* महाव॰ 282; *आमिसखारन्ति सुक्खोदनं झापेत्वा ताय छारिकाय पग्घरितं खारोदकं,* महाव॰ अट्ठ॰ 353.

आमिसगत त्रि॰, शिकार को पकड़ने के लिए चारा के रूप में प्रयुक्त (कांटा या बंसी) – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथापि, भिक्खवे, बाळिसिको आमिसगतं बळिसं गम्भीरे उदकरहदे पक्खिपेय्य,* स॰ नि॰ 1(2).205.

आमिसगरु त्रि., ब. स., भौतिक भोग-सामग्रियों को अत्यधिक महत्व देने वाला – **रु** पु., प्र. वि., ए. व. – *सत्था आमिसगरु आमिसदायादो आमिसेहि संसट्ठो विहरति, ... उपेति,* म. नि. 2.156.

आमिसगरुक त्रि., उपरिवत् – **को** स्त्री./पु., प्र. वि., ए. व. – *रागचरितो दोसचरितो मोहचरितो भीरुको आमिसगरुको इत्थी सोण्डो पण्डको दारको'ति,* मि. प. 104; *आमिसगरुको आमिसहेतु मन्तितं गुय्हं विवरति न धारेति,* मि. प. 104.

आमिसगिद्ध त्रि., तत्पु. स., शिकार के प्रति लालच रखने वाला, भौतिक भोगसाधनों के प्रति तृष्णा रखने वाला – **द्धा** पु., प्र. वि., ब. व. – ... *आमिसगिद्धा आमिसचक्खुका ... अत्थि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).281.

आमिसगिद्धी त्रि., उपरिवत् – **द्धिनी** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *ओहाय पुत्ते निक्खमि, सीहीवामिसगिद्धिनी,* जा. अट्ठ. 7.333.

आमिसचक्खु नपुं., तत्पु. स., अपने शिकार पर ही जमा कर रखी गई दृष्टि या आंख – **ना** तृ. वि., ए. व. – *लुद्देनामिसचक्खुना, दाठी दाठीसु पक्खन्ति,* जा. अट्ठ. 4.310.

आमिसचक्खुक त्रि., ब. स., शिकार पर ही अपनी आंख को जमाकर रखने वाला, भौतिक भोगसाधनों पर पूर्णतया आंखों को जमाया हुआ – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – ... *पापिच्छस्स इच्छापकतस्स आमिसचक्खुकस्स लोकधम्मगरुकस्स* ..., महानि. 285; – **का** पु., प्र. वि., ए. व. – *आमिसगिद्धा आमिसचक्खुका चतुपच्चयआमिसत्थमेव आहिण्डमाना ... अत्थि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).281.

आमिसचक्खुता स्त्री., भाव., भौतिक भोगसाधनों के प्रति तृष्णाशीलता – **य** तृ. वि., ए. व. – *"बहुधनं लभिस्सामा"ति आमिसापेक्खताय जीवितवुत्तिं निस्साय कथयिंसूति,* जा. अट्ठ. 1.328; पाठा. आमिसापेक्खताय.

आमिसचाग पु., तत्पु. स., भौतिक सुखसाधनों का त्याग अथवा उनका मुक्त दान – **गो** प्र. वि., ए. व. – *आमिसचागो च धम्मचागो च,* अ. नि. 1.110.

आमिसञ्जतर नपुं., कर्म. स., भौतिक सुखसाधन, कामभोगों में से कोई एक भौतिक वस्तु, भिक्षु के लिए निर्धारित आवश्यक चार वस्तुओं (चीवर, पिण्डपात, सेनासन, भेसज्ज) में से कोई एक – **रं** प्र. वि., ए. व. – *आमिसञ्जतरं खो पनेतं, यदिदं पिण्डपातो,* म. नि. 1.18; *आमिसञ्जतरन्ति चतुन्नं पच्चयामिसानं अञ्जतरं, एकन्ति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).102.

आमिसतण्हा स्त्री., कर्म. स., अपने चारे के प्रति तृष्णा, सांसारिक विषय-भोगों के प्रति तृष्णा – **ण्हया** तृ. वि., ए. व. – *अज्झोहटो व बलिसं मच्छो आमिसतण्हया,* सद्धम्मो. 610.

आमिसत्थं अ., लाभ या प्राप्ति के निमित्त, सांसारिक विषय-भोगों का आनन्द पाने के लिए – *"आमिसत्थं मारावट्टनं भिन्दितुं अननुच्छविक"न्ति,* स. नि. अट्ठ. 1.158.

आमिसत्थी त्रि., सांसारिक विषयभोगों की चाह रखने वाला/वाली – **त्थिना** तृ. वि., ए. व. – *किञ्च गेहे परिच्चत्तं आमिसं आमिसत्थिना,* सद्धम्मो. 374.

आमिसदान नपुं., तत्पु. स., भिक्षु के लिए चीवर, पिण्डपात, सेनासन एवं भेसज्ज, इन चार मूलभूत आवश्यक वस्तुओं का दान – **नं** प्र. वि., ए. व. – *द्वेमानि, भिक्खवे, दानानि, ... आमिसदानञ्च धम्मदानञ्च,* अ. नि. 1(1).110; *आमिसदानन्ति चत्तारो पच्चया दिय्यनकवसेन आमिसदानं नाम,* अ. नि. अट्ठ. 2.61.

आमिसदायाद पु., तत्पु. स., सांसारिक विषयभोगों अथवा भौतिक सामग्रियों का उत्तराधिकारी – **दा** प्र. वि., ब. व. – *किन्ति मे सावका धम्मदायादा भवेय्युं नो आमिसदायादा'ति,* म. नि. 1.17; *आमिसदायादाति धम्मस्स मे दायादा, भवथ, मा आमिसस्स,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).96.

आमिसन्तर त्रि., ब. स., सांसारिक विषय-भोगों को पाने की तृष्णा से युक्त, कामसुखों, भौतिक सुखसाधनों अथवा चीवर, पिण्डपात आदि को पाने हेतु उत्सुक – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आमिसन्तरोति गिलानं उपट्ठाति,* अ. नि. 2(1).135; *आमिसन्तरो आमिसहेतुको चीवरादीनि पच्चासीसमानो,* अ. नि. अट्ठ. 3.46.

आमिसपटिग्गह पु., तत्पु. स., भौतिक सुखसाधनों अथवा चीवर, पिण्डपात जैसे आवश्यक उपकरणों का स्वीकरण – **हेन** तृ. वि., ए. व. – *तत्र भगवा ... महाजनं आमिसपटिग्गहेन अनुग्गण्हन्तो ... परियोसापेति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).55; *तत्थ ... वसन्तो महाजनं आमिसपटिग्गहेन अनुग्गण्हन्तो धम्मदानेन चस्स ... परियोसापेति,* दी. नि. अट्ठ. 1.196.

आमिसपटिसन्थार पु., तत्पु. स., भौतिक सुखसाधनों के दान द्वारा सत्कार, चीवर आदि के दान के माध्यम से किया गया सम्मान अथवा मैत्रीभाव, दो प्रकार के सम्मानप्रद व्यवहारों में से एक – **रो** प्र. वि., ए. व. – *पटिसन्थारनिद्देसे आमिसपटिसन्थारो ति आमिसअलाभेन अत्तना सह परेसं*

छिद्दं यथा पिहितं होति पटिच्छन्नं एवं आमिसेन, ध. स. अट्ठ. 418; ... *आमिसपटिसन्थारो च धम्मपटिसन्थारो च,* अ. नि. 1(1).112; – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *तेहि एत्तकम्पि आमिसपटिसन्थारं अलभन्ता जीवितापि वोरोपेय्युं,* दी. नि. अट्ठ. 1.76 77.

आमिसपण्णाकार पु., भौतिक पदार्थों का उपहार, चीवर आदि वस्तुओं की भेंट – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *न केवलञ्चेतं आमिसपण्णाकारं, इमं किर धम्मपण्णाकारम्पि पेसेसि,* पारा. अट्ठ. 1.54.

आमिसपरिच्चाग पु., तत्पु. स. [आमिसपरित्याग], सांसारिक वस्तुओं का उदारतापूर्वक दान, सांसारिक भोगसाधनों के प्रति उदारता – **गो** प्र. वि., ए. व. – *द्वेमे, परिच्चागा, ... आमिसपरिच्चागो च धम्मपरिच्चागो,* अ. नि. 1(1).110.

आमिसपरिभोग पु., तत्पु. स. [आमिसपरिभोग], सांसारिक भोगसाधनों का आनन्द के साथ उपभोग – **गो** प्र. वि., ए. व. – *द्वे च परिभोगा – ... धम्मपरिभोगो आमिसपरिभोगोति,* पारा. अट्ठ. 2.248.

आमिसपरियेट्ठि स्त्री., तत्पु. स., सांसारिक विषय-भोगों की तलाश अथवा इन्हें पाने की तीव्र लालसा – **ट्ठि** प्र. वि., ए. व. – *द्वेमा, भिक्खवे, परियेट्ठियो, ... आमिसपरियेट्ठि च धम्मपरियेट्ठि च,* अ. नि. 1(1).112.

आमिसपरियेसना स्त्री., तत्पु. स. [आमिसपर्येषणा], उपरिवत् – **ना** प्र. वि., ए. व. – *द्वेमा, परियेसना, ... आमिसपरियेसना च धम्मपरियेसना,* अ. नि. 1(1).112.

आमिसपिण्ड नपुं., तत्पु. स., भिक्षा में प्राप्त भोजन का पिण्ड – **ण्डानं** ष. वि., ब. व. – *तथा भिक्खासङ्खातानं आमिसपिण्डानं पातो पिण्डपातो,* उदा. अट्ठ. 204.

आमिसपूजा स्त्री., तत्पु. स., सांसारिक विषयभोग की वस्तुओं के दान द्वारा सम्मान, सांसारिक वस्तुओं का सम्मानसहित दान – **जा** प्र. वि., ए. व. – *द्वेमा, पूजा, ... आमिसपूजा च धम्मपूजा च,* अ. नि. 1(1).112.

आमिसपेक्खी त्रि., शिकार की तलाश करने वाला, भौतिक सुखसाधनों को पाने की इच्छा रखने वाला – **क्खी** पु., प्र. वि., ए. व. – *सीहोवामिसपेक्खीव, वनसण्डं विगाहय,* जा. अट्ठ. 7.278.

आमिसभेसज्जादि नपुं., भौतिक विषयभोग के उपकरण एवं औषधि इत्यादि, स. प. के अन्त. – *सेसं पन आमिसभेसज्जादि सब्बं सब्बत्थ अन्तोसीमगतस्स पापुणाति,* महाव. अट्ठ. 389.

आमिसभोग पु., तत्पु. स., सांसारिक वस्तुओं का आनन्द के साथ उपभोग – **गो** प्र. वि., ए. व. – *द्वेमे, भोगा, ... आमिसभोगो च धम्मभोगो च,* अ. नि. 1(1).110.

आमिसमक्खित त्रि., शिकार पकड़ने हेतु प्रयुक्त चारे से लिप्त, चारे से युक्त – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आमिसगतन्ति आमिसमक्खितं,* स. नि. अट्ठ. 2.181.

आमिसयाग पु., तत्पु. स., सांसारिक वस्तुओं का उदारता के साथ दान – **गो** प्र. वि., ए. व. – *द्वेमे, यागा, ... आमिसयागो च धम्मयागो च,* अ. नि. 1(1).110; विलो. धम्मयाग.

आमिसरतन नपुं., तत्पु. स., बहुमूल्य सांसारिक वस्तुएं, भौतिक धनसम्पदा-रूपी रत्न – **नं** प्र. वि., ए. व. – *द्वेमानि रतनानि, आमिसरतनञ्च धम्मरतनञ्च,* अ. नि. 1(1).113; विलो. धम्मरतन.

आमिसलाभ पु., तत्पु. स., भौतिक धनसम्पदा का लाभ, चीवर, पिण्डपात आदि का लाभ, भिक्षा में भोजन का लाभ – **भो** प्र. वि., ए. व. – *तत्थ ... पारुपित्वा च पिण्डाय चरतो आमिसलाभो सीतस्स पटिघाताया'ति आदिना नयेन ... नाम,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).275.

आमिसलोल त्रि., तत्पु. स., विषयभोग-जनित सुख के प्रति लगाव रखने वाला – **ला** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *इत्थियो ... आमिसलोला भविस्सन्ति,* जा. अट्ठ. 1.323.

आमिसवुड्ढि स्त्री., तत्पु. स. [आमिसवृद्धि], सांसारिक सुख-साधनों की प्रचुरता, भौतिक सम्पदा की समृद्धि – **ड्ढि** प्र. वि., ए. व. – *द्वेमा, वुड्ढियो, ... आमिसवुड्ढि च धम्मवुड्ढि च,* अ. नि. 1(1).113; विलो. धम्मवुड्ढि.

आमिसवेपुल्ल नपुं., भाव., तत्पु. स. [आमिसवैपुल्य], भौतिक सुख-साधनों की प्रचुरता – **ल्लं** प्र. वि., ए. व. – *द्वेमानि, वेपुल्लानि ... आमिसवेपुल्लञ्च धम्मवेपुल्लञ्च,* अ. नि. 1(1).113; विलो. धम्मवेपुल्ल.

आमिससंविभाग पु., तत्पु. स., भौतिक संपदा का उचित बटवारा – **गो** प्र. वि., ए. व. – *द्वेमे, संविभागा, ... आमिससंविभागो च धम्मसंविभागो,* अ. नि. 1(1).110; विलो. धम्मसंविभाग.

आमिससंसट्ठ त्रि., तत्पु. स., कच्चे भोजन से मिश्रित – **ट्ठं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *अथ आमिससंसट्ठं, गहेत्वा ठपितं सचे,* विन. वि. 1384; 2680.

आमिससङ्गण्हन नपुं., तत्पु. स., सांसारिक भोगों को पूरा करने वाली वस्तुओं को संग्रह करना – **नेन** तृ. वि., ए.

व॰ – *आमिससङ्गण्हनेन अञ्ञे सिस्सादिके पोसेतुं अनुस्सुक्कताय अनञ्ञपोसिनो,* उदा॰ अट्ठ॰ 162.

आमिससन्थार पु॰, तत्पु॰ स॰, भोगसामग्री के दान द्वारा स्वागत, दो प्रकार के स्वागतों में से एक – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वेमे, सन्थारा, ... आमिससन्थारो च धम्मसन्थारो च,* अ॰ नि॰ 1(1).112.

आमिससन्निचय पु॰, तत्पु॰ स॰, भौतिक सुख देने वाली सामग्री का संचय – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वेमे, सन्निचया, ... आमिससन्निचयो च धम्मसन्निचयो च,* अ॰ नि॰ 1(1).113; विलो॰ धम्मसन्निचय.

आमिससन्निधि पु॰, तत्पु॰ स॰, विभिन्न प्रकार की भोगसाधन-सामग्री का भण्डारण, गृहस्थ जीवन में उपयोगी वस्तुओं का भण्डारण – **धिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अन्नसन्निधिं पानसन्निधिं वत्थसन्निधिं यानसन्निधिं सयनसन्निधिं गन्धसन्निधिं आमिससन्निधिं इति वा इति,* दी॰ नि॰ 1.6; – **धि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खु, मुण्डकुटुम्बिकजीविकं जीवति, न समणजीविक'न्ति, एवरूपो आमिससन्निधि नाम होति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.76.

आमिससम्भोग पु॰, तत्पु॰ स॰, दूसरों के साथ मिल कर भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने वाले संसाधनों का भरपूर उपभोग – **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वेमे, सम्भोगा, ... आमिससम्भोगो च धम्मसम्भोगो,* अ॰ नि॰ 1(1).110; विलो॰ धम्मसम्भोग.

आमिससिक्खापद नपुं॰, पाचि॰ के एक खण्ड का शीर्षक, पाचि॰ 82-84.

आमिसहेतु अ॰, लाभ के निमित्त, भौतिक लाभ पाने के निमित्त – *आमिसहेतु थेरा भिक्खू भिक्खुनियो ओवदन्ती'ति,* पाचि॰ 83; *आमिसगरुको आमिसहेतु मन्तितं गुय्हं विवरति न धारेति,* मि॰ प॰ 104.

आमिसहेतुक त्रि॰, ब॰ स॰, भौतिक संसाधनों की प्राप्ति की इच्छा से संचालित – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आमिसन्तरोति आमिसहेतुको चीवरादीनि पच्चासीसमानो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.46.

आमिसातिथेय्य नपुं॰, तत्पु॰ स॰, भौतिक सुखसाधनों द्वारा किया गया अतिथि-सत्कार, भौतिक वस्तुओं का उपहार देकर अतिथि-सत्कार – **य्यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वेमानि, आतिथेय्यानि, ... आमिसातिथेय्यञ्च धम्मातिथेय्यञ्च,* अ॰ नि॰ 1(1).112-13; विलो॰ धम्मातिथेय्य.

आमिसानुकम्पा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, चीवर, पिण्डपात, शयनासन एवं औषधि, इन चार प्रत्ययों के दान द्वारा प्रदर्शित अनुकम्पा – **म्पा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वेमा, अनुकम्पा, ... आमिसानुकम्पा च धम्मानुकम्पा,* अ॰ नि॰ 1(1).111; *दसमे चतूहि पच्चयेहि अनुकम्पनं आमिसानुकम्पा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.61; विलो॰ धम्मानुकम्पा.

आमिसानुग्गह पु॰, तत्पु॰ स॰, जीवनयापन के चीवर आदि चार आवश्यक साधनों के दान द्वारा किया गया अनुग्रह या कृपा – **हो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वेमे, अनुग्गहा, ... आमिसानुग्गहो च धम्मानुग्गहो,* अ॰ नि॰ 1(1).111; *नवमे चतूहि पच्चयेहि अनुग्गण्हनं आमिसानुग्गहो ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.61.

आमिसानुप्पदान नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आमिसानुप्रदान], भौतिक सुख साधनों का दान, श्रमणों एवं ब्राह्मणों के सम्मान के पांच प्रकार के उपायों में से एक – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मेत्तेन कायकम्मेन मेत्तेन वचीकम्मेन मेत्तेन मनोकम्मेन अनावटद्वारताय आमिसानुप्पदानेन,* दी॰ नि॰ 3.145.

आमिसेसना स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, भौतिक आवश्यकता पूरी करने वाले चीवर आदि की तलाश अथवा उन्हें पाने की कामना – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वेमा, एसना, ... आमिसेसना च धम्मेसना च,* अ॰ नि॰ 1(1).112; *ततिये वुत्तप्पकारस्स आमिसस्स एसना आमिसेसना,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.62; विलो॰ धम्मेसना.

आमुखं अ॰, क्रि॰ वि॰ [आमुखं], आमने सामने, मुख के सामने – *मारयन्ता तदा सत्तुसेनं आमुखमागतं,* चू॰ वं॰ 70.319.

आमुत्त त्रि॰, आ +√मुच का भू॰ क॰ कृ॰ [आमुक्त], **शा॰ अ॰ 1.,** वह, जिस पर सब कुछ छोड़ दिया गया है **2.** वह, जिसके द्वारा किसी को बांधा गया है, **ला॰ अ॰,** विभूषित, सुसज्जित, युक्त, धारण किया गया, पहना हुआ – **त्तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हेमजालेहि कुम्भालङ्कारादिभेदेहि हत्थालङ्कारेहि चितं आमुत्तं महन्तं, ... आगताति,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 151; – **मणिकुण्डल** त्रि॰, ब॰ स॰, मणि कुण्डलों द्वारा अलङ्कृत (व्यक्ति), वह, जिसके कान लटक रहे मोती के हार से जगमगा रहे हों – **ले** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *राजानो आमुत्तमणिकुण्डले सज्जिताय,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.133; – **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सट्ठि पुरिससहस्सानि, आमुत्तमणिकुण्डला,* पे॰ व॰ 308; *आमुत्तमणिकुण्डलाति नानामणिविचित्तकुण्डलधरा,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 117; *आमुत्तमणिकुण्डलाति ओलम्बितमुत्ताहारमणि कञ्चितकण्णाति अत्थो,* अप॰ अट्ठ॰ 1.286; – **मालाभरण**

त्रि., ब. स., मालाओं एवं आभूषणों से सुसज्जित, मालाओं में लगे हुए आभूषणों से अलङ्कृत, मालाओं के आभूषणों से सज्जित – **णो** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *सेमसो नाम खत्तियो, आमुत्तमालाभरणो,* अप. 1.226; पाठा. *आमुक्कमालाभरणो; आमुक्कमालाभरणोति आमुक्कमुत्ताहारकेयूरकटकमकुटकुण्डलमालो,* बु. वं. अट्ठ. 211; – **यञ्जसुत्त** त्रि., ब. स. [आमुक्तयज्ञसूत्र], यज्ञ के सूत्र को धारण किया हुआ – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *दोणो ब्राह्मणोपि ... आमुत्तयञ्जसुत्तो रत्तवट्टिका उपाहना ... पटिपज्जि,* अ. नि. अट्ठ. 2.290; – **हत्थाभरण** त्रि., ब. स., अंगूठियों एवं कंगनों से विभूषित – **णो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आमुत्तहत्थाभरणो, सुवत्थो चन्दनभूसितो,* जा. अट्ठ. 7.242.

आमूलग्गं अ., क्रि. वि., ऊपर से लेकर नीचे तक, जड़ से लेकर शिखर तक, स. प. के अन्त. – *आमूलग्गसमुब्भिन्नमहाभित्तिभरोनता,* चू. वं. 88.95.

आमेण्डित / आमेडित त्रि., आ +√मिड के प्रेर. का भू. क. कृ. [आम्रेडित], **1.** शब्द की पुनरुक्ति या आवृत्ति, ध्वनि की आवृति, किसी बात को दो या तीन बार कहना अथवा दो प्रकार से कहना, **2.** द्वित्त्व – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आमेण्डितं तु विञ्ञेय्यं द्वित्तिक्खत्तुमुदीरणं,* अभि. प. 106; *भये कोधे पसंसायं तुरिते कोतूहळच्छरे, हासे सोके पसादे च करे आमेण्डितं बुधो,* अभि. प. 107; पारा. अट्ठ. 1.128; **3.** अट्ठ. में निम्नलिखित अर्थों का भी संकेत, **क.** अतिशय अथवा अधिकता – *अतिसयत्थे च इदं आमेडितं,* पारा. अट्ठ. 2.186; *अबलबलो वियाति अबलो किर बोन्दो वुच्चति, अतिसयत्थे च इदं आमेडितं, तस्मा अतिबोन्दो वियाति वुत्तं होति,* पारा. अट्ठ. 2.186; **ख.** निन्दा एवं असम्मान के प्रकाशन में भाब्दों की आवृत्ति – *चसद्दो अवुत्तसमुच्चयत्थो, तेन गरहासम्मानादीनं सङ्गहो दट्ठब्बो पापो पापोति आदिसु हि गरहायं, अभिरूपक अभिरूपकाति आदिसु असम्माने,* सद्द. 1.40; **ग.** आदर अथवा सम्मान के भाव के प्रकाशन में आवृत्ति – ... *तत्थ अभिरतियं आदरजननत्थं "अभिरम, नन्द, अभिरम, नन्दा"ति आमेडितवसेन वुत्तं,* उदा. अट्ठ. 139; **घ.** स्थिर अथवा विश्वस्त करने के अभिप्राय से आवृत्ति – *पुच्छ भिक्खु, पुच्छ भिक्खूति थिरकरणवसेन आमेडितं कतं,* स. नि. अट्ठ. 1.41; **ङ.** सुदृढ़ करने के अभिप्राय से आवृत्ति, भय व्यक्त करने की दृष्टि से आवृत्ति – *तत्थ कण्हो कण्होति भयवसेन दळहीवसेन वा आमेडितं,* जा. अट्ठ. 4.163; **च.** बातचीत में शीघ्रता के कारण आवृत्ति – *तत्थ तुरितालपनवसेन भिक्खु भिक्खूति आमेडितं वेदितब्बं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).32.

आमेण्डितवचन / आमेडितवचन नपुं., कर्म. स. [आम्रेडितवचन], पुनरावृत्ति से युक्त कथन, ध्वनि अथवा शब्द को दुहरा कर कहा गया वचन, दो बार कहा गया वचन, दुहरायी गई बात, स. प. के रूप में – *भयकोधादिसु उप्पन्नेसु कथितामेण्डितवचनवसेन वा,* सद्द. 1.38; 40; – **नं** प्र. वि., ए. व. – *द्विवचनन्ति द्विक्खत्तुं वचनं आमेडितवचनन्ति वुत्तं होति,* सारत्थ. टी. 2.160; *तुरितवसेन चेतं आमेडितवचनं,* थेरगा. अट्ठ. 1.119; – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *एकेकलोमतो ... एकेकलोमतो ... ति उभयत्थापि आमेडितवचनेन सब्बलोमानं परियादिन्नत्ता ... होति,* पटि. म. अट्ठ. 2.11.

आमोद पु., आ +√मुद से व्यु., क्रि. ना. [आमोद], **1.** आनन्द, प्रसन्नता, हर्ष, खुशी – *आनन्दो पमुदामोदा सन्तोसो नन्दिसम्मदो,* अभि. प. 87; **2.** सुगन्ध, खुशबू, सौरभ – *सो त्वामोदो दूरगामी विस्सन्ता तीस्वितो परं,* अभि. प. 145; *आमोदो हासगन्धेसु,* अभि. प. 1108; ... *देवविमानकप्पं पुप्फगन्धदामादीहि एकामोदपमोदं पासादं आरोपेत्वा ...,* चरिया. अट्ठ. 200; *सुगन्धतेलदीपेहि आमोदचन्दनादिहि,* चू. वं. 98.9; – **दं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *सुवण्णवण्णं सम्बुद्धं आहुतीनं पटिग्गहं, रथियं पटिपज्जन्तं, आमोदमददिं फलं,* थेरगा. अट्ठ. 1.258; 277.

आमोदति आ +√मुद का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आमोदते / आमोदयति], प्रसन्न या हर्षित होता है, आनन्द मनाता है – *दिब्बसम्पत्तीहि आमोदति पमोदति,* अ. नि. अट्ठ. 2.101; – **मानो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आमोदमानो पकिरेति, देथ देथाति भासति,* स. नि. 1(1).119; *आमोदमानोति तुट्ठमानसो हुत्वा,* स. नि. अट्ठ. 1.146; – **दिं** अद्य., उ. पु., ए. व. – *आकिण्णो देवकञ्ञाहि, आमोदिं कामकामहं,* अप. 1.305.

आमोदन नपुं., आ +√मुद से व्यु., क्रि. ना. [आमोदन, त्रि.], आनन्दित होना, प्रसन्न होना, स. प. के अन्त., *आमोदनाकारो आमोदना,* ध. स. अट्ठ. 188; पटि. म. अट्ठ. 2.105.

आमोदना स्त्री., आ +√मुद से व्यु., आनन्द अथवा हर्ष, प्रसन्नता का भाव – **ना** प्र. वि., ए. व. – *पीति पामोज्जं आमोदना पमोदना हासो पहासो वित्ति ओदग्यं अत्तमनता*

चित्तस्स, ध॰ स॰ 285; *आमोदनाकारो आमोदना, ..., यथा वा भेसज्जानं वा तेलानं वा उण्होदकसीतोदकानं वा एकतोकरणं मोदनाति वुच्चति, ..., उपसग्गवसेन पन मण्डेत्वा आमोदना पमोदनाति वुत्ता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 188; पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.105.

आमोदफलिय पु॰, व्य॰ सं॰, एक स्थविर का नाम, अप॰ में संगृहीत गाथाओं का रचयिता एक स्थविर – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थं सुदं आयस्मा आमोदफलियो थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप॰ 2.90.

आमोदयति द्रष्ट॰, आमोदति के अन्त॰.

आमोदित त्रि॰, आ +√मुद से व्यु॰ [आमोदित, आ +√मुद् + इतच्], आनन्दभाव से भरपूर, हर्षोत्फुल्ल, अत्यधिक प्रसन्न – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आमोदिता नरमरू, बुद्धबीजं किर अयं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.21; *आमोदिता नरमरू, साधुकारं पवत्तयुं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.17; *आमोदिता नरमरू, नमस्सन्ति कतञ्जली,* अप॰ 2.68; – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *विय मुदुकं होति आमोदितं पमोदितं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.100; – **पमोदित** त्रि॰, आमोद एवं प्रमोद से युक्त – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सम्मुदितो आमोदितपमोदितो होति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.172.

आमोदेति/आमोदयति आ +√मुद का प्रेर॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आमोदयति, आमोदयते], प्रसन्न करता है, सन्तुष्ट करता है, आनन्दित कर देता है, मुदिता-भावना से भर देता है, व्यवस्थित बना देता है, ध्यान के अंग प्रीति से आप्लावित कर देता है – *सो समापत्तिक्खणे सम्पयुत्ताय पीतिया चित्तं आमोदेति पमोदेति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.32; ... *आमोदेतीति झानचित्तसम्पयुत्ताय पीतिसम्बोज्झङ्गभूताय ... झानपीतिया तमेव झानचित्तं ... हट्ठपहट्ठाकारं पापेन्तो आमोदेति पमोदेति च,* सारत्थ॰ टी॰ 2.216; – **यामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *चित्तं आमोदयामहं, थेरगा॰ 649; एवंभूतं कत्वा मम मेत्तचित्तं आमोदयामि अभिप्पमोदयामि ब्रह्मविहारं भावेमि,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.204; – **यं** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आमोदयं पितरं मातरञ्च, सब्बो च ते नन्दतु ञातिपक्खो'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.31.

आय पु॰, आ +√इ से व्यु॰ [आय], **शा॰ अ॰,** आ पहुंचना, आ जाना, अन्तःप्रवेश, आगमन, वृद्धि – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयतीति आयो, क॰ व्या॰ 530; आयन्ति ततोति आयो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).252; *आयोति उप्पत्तिट्ठानं,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 86; *आयकोसल्लादिनिद्देसे यस्मा आयोति वुड्ढि,* विभ॰ अट्ठ॰ 391; *ततियत्तिके आयो नाम वुड्ढि,* विसुद्धि॰ 2.66; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आयन्ति आगमनं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.238; *आयञ्च भोगानं विदित्वा, वयञ्च भोगानं विदित्वा ...,* अ॰ नि॰ 3(1).110; **ला॰ अ॰ क**. उत्पत्ति-स्थान, उद्भव-स्थल – *आयोति उप्पत्तिदेसो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).252; *आयोति उपत्तिट्ठानं,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 86; **ला॰ अ॰ ख**. धनागम, आमदनी, राजस्व, प्राप्तद्रव्य, लाभ, नफा – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथायो धनागमो,* अभि॰ प॰ 356; *यो बाहिरेसु जनपदेसु आयो सञ्जायति ततो उपड्ढं अन्तेपुरे पवेसेथ,* स॰ नि॰ 1(1).72; *तं निस्साय आयोपिस्स मन्दो जातो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.234; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *एकस्मिं पञ्चकुलिके गामे परित्तकं आयं लभिंसु,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).244; – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततो जातेन आयेन, महायञ्ञमकप्पयि,* सु॰ नि॰ 984; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बोधिसत्तस्स पटिसन्धिग्गहणकालतो पट्ठाय रञ्ञो आयस्स पमाणं नाम नाहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.233; – **या** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *वड्ढिसङ्खाता सुखसङ्खाता वा अया अपेतत्ता अपायो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).349; – **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेट्ठिनोपि निरन्तरं दानं देन्तस्स वोहारे अकरोन्तस्स आये मन्दीभूते धनं परिक्खयं अगमासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.223; – **यानि** नपुं॰ प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एवं दिवसे दिवसे पञ्चसतसहस्सानि तत्थ उट्ठहिस्सन्ति, तानि सभावानि आयानीति दस्सेति,* उदा॰ अट्ठ॰ 341; – **यानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आयानम्पि हि चतूसु द्वारेसु चत्तारि, सभायं एकन्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 341; **ला॰ अ॰ ग**. कर, राजस्व का कर, उपहार, राजदेय – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततो आयं गहेत्वा मनुस्सा आगता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.40; **ला॰ अ॰ घ**. द्यूतक्रीड़ा में प्रयुक्त (अन्दर की ओर आने वाला) भाग्यशाली पासा – **या** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पासकेसु आया नाम मालिकं सावट्टं बहुलं सन्तिभद्रादयो चतुवीसती,* जा॰ अट्ठ॰ 7.174; – **येसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *राजा चतुवीसतिया आयेसु विचिनन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.175; स॰ उ॰ प॰ के रूप में महा॰, लद्धा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **कम्मिक** पु॰, राजस्व का अधिकारी, कोषागार का अधिकारी, प्रबन्धक – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयकम्मिकं पक्कोसापेत्वा, मम गेहे कित्तकं धनन्ति पुच्छि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.107; – **कुसल** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, हितकारक धर्मों की वृद्धि में कुशल – **लो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खु न आयकुसलो च होति, न अपायकुसलो च होति, न उपायकुसलो च होति,* अ॰ नि॰ 2(2).133; *न आयकुसलोति न आगमनकुसलो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.141;

– **कोसल्ल** नपुं., भाव. [आयकौशल्य], कुशल धर्मों के संग्रह में कुशलता, कुशलधर्मों की अभिवृद्धि तथा अकुशलधर्मों के प्रहाण के विषय में कुशलता – **ल्लं** प्र. वि., ए. व. – *तीणि कोसल्लानि – आयकोसल्लं, अपायकोसल्लं, उपायकोसल्लं,* दी. नि. 3.176; ... *इमे धम्मे मनसिकरोतो अनुप्पन्ना चेव अकुसलाधम्मा न उप्पज्जन्ति, ... उप्पन्ना च कुसला धम्मा भिय्योभावाय वेपुल्लाय भावनाय पारिपूरिया संवत्तन्ती"ति – या तत्थ पञ्ञा पजानना ... इदं वुच्चति "आयकोसल्लं",* विभ. 371; – **पापुणन** नपुं., तत्पु. स., प्राप्ति, आमदनी का लाभ, आय की प्राप्ति – **नं** प्र. वि., ए. व. – *दुब्बलभोजकानं परित्तकं आयपापुणनं विय चक्खुविञ्ञाणादीनं रूपदस्सनादिमत्तं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).244; – **पोत्थक** नपुं., तत्पु. स. [आयपुस्तक], धन की प्राप्ति को उल्लिखित करने वाली बही, आमदनी लिखने हेतु प्रयुक्त पुस्तक – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *अथस्स ... आयपोत्थकं आहरित्वा सुवण्णरजतमणिमुत्तादिभरिते गब्भे विवरित्वा,* जा. अट्ठ. 1.3; – **भूत** त्रि., वह, जो किसी की उत्पत्ति का स्थान बन गया है, स्रोतभूत – **ते** पु., सप्त. वि., ए. व. – *ते च पन आयभूते धम्मे एतानि तनोन्ति, ... होति,* पटि. म. अट्ठ. 1.72; – **तो** प. वि., ए. व. – *सरीरम्हि असुचिसञ्चयतो, कुच्छितानं वा केसादीनञ्चेव चक्खुरोगादीनञ्च रोगसतानं आयभूततो कायोति वुच्चति,* खु. पा. अट्ठ. 29; – **मुख** नपुं., तत्पु. स. [आयमुख], **शा. अ.**, (पानी के) अन्दर आने का प्रवेश द्वार – **खं** प्र. वि., ए. व. – ... *उदकस्स आयमुखं,* दी. नि. 1.66; – **खानि** प्र. वि., ब. व. – *आयमुखानि तानि पिदहेय्य, यानि च अपायमुखानि तानि विवरेय्य,* अ. नि. 1(2).192; **ला. अ.** प्रवेश मार्ग, प्रवेशिका, मुहाना – **खं** प्र. वि., ए. व. – *तेन सङ्घो पुञ्ञस्स आयमुखन्ति दस्सेति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.286; – **खानि** द्वि. वि., ब. व. – *छ भोगानं आयमुखानि सेवति,* महानि. 194; – **वय** पु., द्व. स. [आयव्यय], आमदनी और खर्च, लाभ एवं हानि, प्राप्ति एवं व्यय – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *आयवयं उपधारेत्वा,* अ. नि. अट्ठ. 3.267; – **सम्पत्ति** स्त्री., तत्पु. स. [आयसम्पत्ति], राजस्व की प्राप्ति के रूप में समृद्धि, आय से प्राप्त सम्पदा – **त्तिं** द्वि. वि., ए. व. – *अधम्मिको राजा रट्ठस्स रसं ओजं न जानाति, आयसम्पत्तिं न लभति,* जा. अट्ठ. 5.233; – **सम्पन्न** त्रि., तत्पु. स., जल के अन्दर प्रवेश कराने वाले द्वार या मुहाने से युक्त, जल के आगमन-द्वार से युक्त – **न्नं** प्र. वि., ए. व. – *खेत्तं ..., न आयसम्पन्नं होति, न अपायसम्पन्नं होति,* अ. नि. 3(1).70; *आयसम्पन्नन्ति न उदकागमनसम्पन्नं,* अ. नि. अट्ठ. 3.228; – **साधक** पु., कर संग्राहक, कर वसूलने वाला अधिकारी – **को** प्र. वि., ए. व. – *आयसाधको आयुत्तकपुरिसो विय तन्निस्सितो नन्दिरागो अनुचरो नाम,* ध. प. अट्ठ. 2.259.

आयजितब्ब त्रि., आ +√यज का सं. कृ., यज्ञ में देवताओं को आहुति देने योग्य – **ब्बो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आयागोति आयजितब्बो,* सु. नि. अट्ठ. 2.125.

आयत त्रि., आ +√यम का भू. क. कृ. [आयत], **क.** खींचा गया, आकृष्ट, दृढ़तापूर्वक बांधा गया, तान दिया गया अथवा खींचकर किसी के साथ जोड़ दिया गया, केवल स. उ. प. के रूप में प्रयुक्त, अच्चायत आदि के अन्त. द्रष्ट.; – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *तं मं वियायतं सन्तं, साखाय च लताय च,* जा. अट्ठ. 3.330; *वियायतन्ति ... वीणाय भमरतन्ति विय विततं आकड्ढितसरीरं,* जा. अट्ठ. 3.331; **ख.** लम्बा खींचा गया, अत्यधिक खींचा गया (स्वर या आवाज) – **तेन** पु., तृ. वि., ए. व. – *तथा हि ब्राह्मणा कत्थचि कत्थचि रस्सट्ठाने पि ... आयतेन ... सरेन वेदं पठन्ति,* सद्द. 1.91; **ग.** लम्बा, अतिविस्तृत, विकीर्ण, बड़ा, गम्भीर, बहुत दूर तक फैला हुआ सुदीर्घ – *अथायतं दीघमथो,* अभि. प. 707; – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *ताव अच्चुग्गतो नेरु, आयतो वित्थतो च सो,* अप. 1.18; *आयतो उच्चतो च वित्थारतो च,* अप. अट्ठ. 1.232; *आयतोति आयामसम्पन्नो,* जा. अट्ठ. 3.344; – **ते** पु., सप्त. वि., ए. व. – *अथ पल्लङ्कस्स च ठितट्ठानस्स च अन्तरा पुरत्थिमपच्छिमतो आयते रतनचङ्कमे चङ्कमन्तो सत्ताहं वीतिनामेसि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).86; – **तं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. – *महापथविं उत्तरेन आयतं दक्खिणेन सकटमुखं सत्तधा समं सुविभत्तं,* दी. नि. 2.172; – **तं**[1] नपुं., प्र. वि., ए. व. – *पुरिससीसम्हि वट्टं होति, सूलेन पहरन्तस्स पहारो ठानं न लभति परिगलति, मच्छसीसं आयतं पुथुलं, पहारो ठानं लभति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).314; – **तं**[2] पु., द्वि. वि., ए. व. – *चीवरं मं उद्दिस्स विय्यति, आयतञ्च करोहि वित्थतञ्च,* पारा. 384; – **तं**[3] नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *आयतं वा संसारदुक्खं नयन्ति, पवत्तेन्ति,* अभि. ध. वि. टी. 203; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *आयतस्स वा संसारदुक्खस्स नयनतो आयतनानि,*

खु. पा. अट्ठ. 65; – **ता** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *नेत्तहेसुमभिनीलमायता,* थेरीगा. 257; *अभिनीला हुत्वा आयता,* थेरीगा. अट्ठ. 234; **घ.** संयत, नियन्त्रित – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *मग्गञ्च पटियादेसि, आयतो सब्बदस्सिनो,* अप. 2.257; **ङ.** लम्बी कालावधि तक फैला हुआ, – **तं**[1] पु., द्वि. वि., ए. व. – *मयं खो अकुसलानं धम्मानं समादानहेतु एवरूपं आयतं ञातिक्खयं पत्ता, यंनून मयं कुसलं करेय्याम,* दी. नि. 3.54; – **तं**[2] नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *आयतं वा संसारदुक्खं सवन्ति पसवन्तीतिपि आसवा,* ध. स. अट्ठ. 95; – **स्स** ष. वि., ए. व. *आयतस्स च नयनतो आयतनं,* पटि. म. अट्ठ. 1.72; स. उ. प. के रूप में अच्चा., ईसका., कण्णा., तियोजना., पुण्णा., मज्झिमा., योजना., सट्ठियोजना. के अन्त. द्रष्ट.; – **तंस** त्रि., ब. स. [आयतांश], लम्बे या बहुत बड़े पार्श्वभागों वाला, लम्बे किनारों वाला – **तंसा** पु., प्र. वि., ब. व. – *वेळूरियथम्भा सतमुस्सितासे, सिलापवाळस्स च आयतंसा, मसारगल्ला सहलोहितङ्गा, थम्भा इमे जोतिरसामयासे,* वि. व. 1242; *आयतंसाति दीघंसा, अथ वा आयता हुत्वा अट्ठसोळसद्वत्तिंसादिअंसवन्तो,* वि. व. अट्ठ. 288; – **चक्खुनेत्त** त्रि., ब. स. [आयतचक्षु], बड़ी आंखो वाला/वाली – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सिङ्गी मिगो आयतचक्खुनेत्तो, अट्ठित्तचो विरिसियो अलोमो,* जा. अट्ठ. 2.83; *आयतचक्खुनेत्तोति एत्थ दस्सनट्ठेन चक्खु, नयनट्ठेन नेत्तं, आयतानि चच्खुसङ्खातानि नेत्तानि अस्साति आयतचक्खुनेत्तो, दीघअक्खीति अत्थो,* जा. अट्ठ. 2.284; – **पण्ही** त्रि., ब. स. [आयतपार्ष्णि], बड़ी एड़ी वाला, लम्बी एड़ी वाला – **ण्ही** पु., प्र. वि., ए. व. – *आयञ्हि देव, कुमारो आयतपण्ही,* दी. नि. 2.13; *आयतपण्हीति दीघपण्हि, परिपुण्णपण्हीति अत्थो,* दी. नि. अट्ठ. 2.33; – **पण्हिक** त्रि., ब. स. [आयतपार्ष्णिक], उपरिवत् – **के** पु., द्वि. वि., ब. व. – *दीघङ्गुली तम्बनखे, सुभे आयतपण्हिके, ये पादे पणमिस्सन्ति, तेपि धञ्ञा गुणन्धर,* अप. 2.203; – **पम्ह** त्रि., ब. स. [आयतपक्ष्म], लम्बी बरौनियों वाला, बड़ी बड़ी बरौनियों वाला/वाली – **म्हे** स्त्री., संबो., ए. व. – *अपि दूरगता सरम्हसे, आयतपम्हे विसुद्धदस्सने, न हि मत्थि तया पियत्तरा, नयना किन्नरिमन्दलोचने,* थेरीगा. 385; *आयतपम्हेति दीघपखुमे,* थेरीगा. अट्ठ. 279; – **भमु** त्रि., ब. स. [आयतभ्रू], लम्बी भौहों वाला, बड़ी बड़ी भौंहों वाला – **मू** पु., प्र. वि., ब. व. – *सण्हकेसा पुथुनलाटा आयतभमू विसालक्खी,* जा. अट्ठ. 5.204; – **स्सर** त्रि., ब. स. [आयतस्वर], देर तक खींचे गए स्वर वाला, ऊंची आवाज करने वाला, स. प. के रूप में – ... *आयतस्सरवसेन दूरे ठितपुरिसस्स आमन्तणकाले दूरट्ठस्सालपनपदं भवति,* सद्द. 1.91.

आयतक त्रि., आयत से व्यु., लम्बा, देरी तक खींचा हुआ (स्वर), देर तक निष्पादित – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *आयतको नाम तं तं वत्तं भिन्दित्वा अक्खरानि विनासेत्वा पवत्तो,* चूळव. अट्ठ. 47; – **केन** तृ. वि., ए. व. – *भिक्खू आयतकेन गीतस्सरेन धम्मं गायन्ति,* चूळव. 225; *पञ्चिमे, भिक्खवे, आदीनवा आयतकेन गीतस्सरेन धम्मं भणन्तस्स* ..., अ. नि. 2(1).230; *आयतकेनाति दीघेन, परिपुण्णपदब्यञ्जनकं गाथावत्तञ्च विनासेत्वा पवत्तेन,* अ. नि. अट्ठ. 3.79; *महासमुद्दो ... आयतकेनेव पपातो,* चूळव. 393.

आयतग्ग त्रि./नपुं., आयति + अग्ग/आय + अग्ग [आयताग्र], **1.** भविष्य में उत्तम एवं महान फल देने वाला, **2.** पुण्यफल देने के कारण अग्रगण्य – **ग्गं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *पुञ्ञमेव सो सिक्खेय्य, आयतग्गं सुखुद्रयं,* इतिवु. 13; *विपुलफलताय उळारफलताय आयतग्गं, पियमनापफलताय वा आयतिं उत्तमन्ति आयतग्गं, आयेन वा योनिसोमनसिकारादिप्पच्चयेन उळारतमेन अग्गन्ति आयतग्गं ... पुञ्ञफलेन अग्गं पधानन्ति आयतग्गं,* इतिवु. अट्ठ. 69.

आयतति आ +√यत का वर्त., प्र. पु., ए. व., प्रयास करता है, प्रयत्न करता है, उद्योग करता है, सक्रिय हो जाता है – **न्ति** ब. व. – *चित्तचेतसिका धम्मा सेन सेन अनुभवनादिना, किच्चेन आयतन्ति उट्ठहन्ति घट्टेन्ति वायमन्तीति वुत्तं होति,* विभ. अट्ठ. 42.

आयतन नपुं., आय से व्यु. [आयतन], **शा. अ.,** स्थान, आवास, घर, प्रवेशस्थान, आश्रय, क्षेत्र, मिलनस्थल, आश्रयस्थल, एकजुट होने की जगह, उत्पत्ति का स्थल – *गेहं चानित्थि सदुमं, चेतियायतनानि,* अभि. प. 207; 801; *आयतति आयतञ्च संसारदुक्खं नयतीति आयतनं,* उदा. अट्ठ. 34; 154; *इति सब्बथापिमे धम्मा आयतनतो, आयानं तननतो, ... आयतनानीति वुच्चन्ति अपिच निवासट्ठानट्ठेन, आकरट्ठेन, समोसरणट्ठानट्ठेन, सञ्जातिदेसट्ठेन, कारणट्ठेन, च आयतनं वेदितब्बं,* इतिवु. अट्ठ. 301; – **नं**[1] प्र. वि., ए. व. – *यावता, अरियं आयतनं, यावता वणिप्पथो, इदं अग्गनगरं भविस्सति, पाटलिपुत्तं पुटभेदनं,* महाव. 304;

यावता अरियं आयतनन्ति यत्तकं अरियमनुस्सानं ओसरणट्ठानं नाम अत्थि, महाव॰ अट्ठ॰ 356; *यं यदायतनं मञ्ञेति, महाराज, यं यं समोसरणट्ठानं दिजानं पाणरोधनं जीवितक्खयकरं मञ्ञामि ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.342; *खेत्तं तं न होति ... वत्थुं तं न होति ... आयतनं तं न होति ... अधिकरणं तं न होति यंपच्चयास्स तं उप्पज्जति अज्झत्तं सुखदुक्ख'न्ति,* अ॰ नि॰ 1(2).184; *विहिता सन्तिमे, पासा, पल्ललेसु जनाधिप यं यदायतनं मञ्ञे, दिजानं पाणरोधनं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.341; – **नं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *यक्खस्स रमणीये ठाने आयतनं कारापेत्वा ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.43; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मनोरमे आयतने, सेवन्ति नं विहङ्गमा, छायं छायत्थिका यन्ति, फलत्था फलभोजिनो,* अ॰ नि॰ 2(1).38; **ला॰ अ॰ 1.** निवास-स्थान, आश्रय-स्थल, घर, आसन, क्षेत्र, प्रदेश, विभाग, वर्ग, श्रेणी – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सम्बाधोयं घरावासो, रजस्सायतनं इति,* सु॰ नि॰ 408; *रजस्सायतनन्ति ...., रागादिरजस्स उप्पत्तिदेसो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.100; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थि खो मे इमेसु पञ्चसु कामगुणेसु अञ्ञतरस्मिं वा अञ्ञतरस्मिं वा आयतने उप्पज्जति चेतसो समुदाचारो'ति,* म॰ नि॰ 3.157; *आयतनेति तेसुयेव कामगुणेसु किस्मिञ्चिदेव किलेसुप्पत्तिकारणे,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप.प॰) 3.119; **ला॰ अ॰ 2.** भूमि, आधारस्थल, स्रोत, हेतु-प्रत्यय, अवस्था, कारण – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रोगानं आयतनं,* दी॰ नि॰ 3.138; *सा धम्मधातु धम्मायतनपरियापन्ना, यं आयतनं अनासवं, नो च भवङ्ग,* नेत्ति॰ 53; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्र तत्रेव सक्खिभब्बतं पापुणिस्ससि, सति सतिआयतने,* म॰ नि॰ 2.172; *सति आयतनेति सति सतिकारणे,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म.प॰) 2.145; – **नानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इमानेव पञ्चायतनानीति इमानेव पञ्च कारणानि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप.प॰) 3.13; **ला॰ अ॰ 3.** ध्यानस्थ चित्त की एकाग्रता का आलम्बन अथवा क्षेत्र, अरूपध्यान में स्थित चित्त की अवस्था, चित्त की सामान्य अवस्था – **नं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असञ्ञसत्तायतनं नेवसञ्ञानासञ्ञायतनमेव दुतियं,* दी॰ नि॰ 2.54; *तदायतनन्ति तं कारणं, ... निब्बानञ्हि मग्गफलञाणादीनं आरम्मणपच्चयभावतो रूपादीनि विय चक्खुविञ्ञाणादीनं आरम्मणपच्चयभूतानीति कारणट्ठेन आयतन'न्ति वुच्चति,* उदा॰ अट्ठ॰ 316; – **नं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लोकुत्तरं आयतनं भावेति,* ध॰ स॰ 552; *आकासानञ्चायतनं ... विञ्ञाणञ्चायतनं ... आकिञ्चञ्ञायतनं ... नेवसञ्ञानासञ्ञायतनमेव,* दी॰ नि॰ 2.55; *पसादो आयतनं,* पटि॰ म॰ 46; *यो पसन्नभावो, इदं आयतनं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.204; **ला॰ अ॰ 4.** बाह्य जगत् के पदार्थों का मन के साथ स्पर्श कराने में द्वारभूत चक्षु, स्रोत, घ्राण, जिह्वा, काय एवं मन, ये छ इन्द्रियां तथा इनके द्वारा क्रमशः ग्राह्य रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्पृष्टव्य तथा धर्म नामक विषय, छ इन्द्रियां तथा इन इन्द्रियों के छ विषय – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *खन्धधातुआयतनं, सङ्खतं जातिमूलकं दुक्खं,* थेरीगा॰ 474; – **ना** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एवं खन्धा च धातुयो, छ च आयतना इमे हेतुं पटिच्च सम्भूता, हेतुभङ्गा निरुज्झरे,* स॰ नि॰ 1(1).159; – **नानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तस्साहं वचनं सुत्वा, खन्धे आयतनानि च,* थेरगा॰ 1264; – **नानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *आयतनानं पटिलाभो,* दी॰ नि॰ 2.228; – **नानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अज्झत्तिकानि आयतनानि एको अन्तो, छ बाहिरानि आयतनानि दुतियो अन्तो विञ्ञाणं मज्झे,* अ॰ नि॰ 2(2).106; *छ अज्झत्तिकानि आयतनानि ..., छ बाहिरानि आयतनानि वेदितब्बानि,* म॰ नि॰ 3.264; *तण्हाय च पन दसरूपीनि आयतनानि पदट्ठानं,* नेत्ति॰ 58; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अग्या॰, (अग्निशाला), अञ्ञतित्थिया॰ (बौद्धेतर धर्माचार्यों का आश्रयस्थल), अट्ठा॰ (आठ घरों वाला), अनेका॰ (अनेक घरों वाला), अपविपुण्णा॰, अपुञ्ञा॰, अभिभा॰, अरञ्ञा॰, अरिया॰, असञ्ञसत्ता॰, आकासानञ्चा॰, आकिञ्चञ्ञा॰, इस्सरा॰, छट्ठा॰, छफस्सा॰, छला॰, जिव्हा॰, तदा॰, तित्था॰, थेरमहाथेरा॰, देवा॰, द्वादसा॰, धम्मा॰, धातु॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰, स॰ पू॰ प॰ के रूप मे, – **नत्थ** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आयतनार्थ], आयतन (शब्द) का अर्थ अथवा अभिप्राय – **त्थो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वुच्चते आकारत्थो आयतनत्थो,* पेटको॰ 245; – **नन्तर** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आयतनो का विशिष्ट स्वरूप – **रं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुखुमं पन चित्तन्तरं खन्धन्तरं धात्वन्तरं आयतनन्तर ... आभिधम्मिकधम्मकथिकस्सेव पाकटं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प॰) 1(2).153; – **नुप्पाद** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आयतनोत्पाद], आयतनों का प्रादुर्भाव, आयतनों की उत्पत्ति, जन्म – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दिस्वा आयतनुप्पादं, सम्मा चित्तं विमुच्चति,* महाव॰ 257; *आयतनुप्पादन्ति आयतनानं उप्पादञ्च वयञ्च दिस्वा,* महाव॰ अट्ठ॰ 345; – **नूपचय** पु॰, तत्पु॰ स॰, आयतनों का ढेर, आयतनों की राशि – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयतनूपचयतो चक्खुविञ्ञाणसञ्ञासमङ्गिस्स रूपेसु द्वादस विपल्लासा याव*

मनो सञ्ञासमङ्गिस्स, पेटको॰ 249; – **कथा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, आयतनों के विषय में कथन अथवा व्याख्यान – **थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेसु आयतनकथं सज्झायन्तेसु सरे निमित्तं गहेत्वा,* म॰ वं॰ टी॰ 152(ना॰); – **कुसल** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, आयतनों के विषय में कुशल – **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आयतनकुसलो च होति,* म॰ नि॰ 3.108; – **कुसलता** स्त्री॰, भाव॰, आयतनों के विषय में कुशलता अथवा दक्षता – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थि ... तेन भगवता जानता पस्सता अरहता सम्मासम्बुद्धेन द्वे धम्मा सम्मदक्खाता, ... आयतनकुसलता च पटिच्चसमुप्पादकुसलता च,* दी॰ नि॰ 3.169; – **घट्टन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आयतनघर्षण], आयतनों की परस्पर में टकराहट, आयतनों के मध्य परस्पर में संपर्क – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयतनघट्टनतो फस्सो जायति,* विसुद्धि॰ 2.216; – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयतनानं विसयिविसयभूतानं अञ्ञमञ्ञाभिमुखभावो आयतनघट्टनं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.322; – **चरिया** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, आयतनों से सम्बन्धित आध्यात्मिक चर्या, भीतरी एवं बाहरी, बारहों आयतनो से सम्बद्ध चर्या – **या** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अट्ठ चरियायो – इरियापथचरिया, आयतनचरिया, सतिचरिया समाधिचरिया, ञाणचरिया, मग्गचरिया, पत्तिचरिया, लोकत्थचरियाति,* पटि॰ म॰ 207; *आयतनचरियाति छसु अज्झत्तिकबाहिरेसु आयतनेसु,* पटि॰ म॰ 207; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [आयतनत्व], आयतन अथवा वासस्थान होना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नयिदं देवायतनं विय मनस्स आयतनत्ता मनायतनं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 185; – **देसना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, आयतनों के विषय में उपदेश – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रूपभेदविभाविनी आयतनदेसना,* मो॰ वि॰ टी॰ 139; – **द्वार** नपुं॰, कर्म॰ स॰, आयतनों का द्वार, आयतनरूपी द्वार, द्वार जैसा आयतन – *कम्मजं आयतनद्वारवसेन पाकटं होति,* विसुद्धि॰ 2.257; *आयतनद्वारवसेनाति आयतनसङ्खातद्वारवसेन,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.385; – **धातुनिद्देस** पु॰, विसुद्धि॰ के पन्द्रहवें अध्याय का शीर्षक, जिसमें आयतनों एवं धातुओं के अन्तर्गत धर्मों का सूक्ष्म विवेचन किया गया है, विसुद्धि॰ 2.109 117; – **धीर** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, आयतनों के विषय में बुद्धिमान् – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अपि च खन्धधीरा, धातुधीरा, आयतनधीरा, ...,* महानि॰ 32; – **नानत्त** नपुं॰, भाव॰, आयतनों की अनेकता – **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयतननानत्तं पजानाति,* विभ॰ 388; *आयतननानत्तन्ति इदं चक्खायतनं नाम ... पे॰ ... इदं धम्मायतनं नाम, तत्थ दसायतना कम्मावचरा, द्वे चतुभूमका'ति एवं आयतननानत्तं पजानाति,* विभ॰ अट्ठ॰ 430; – **निद्देस** पु॰, विसुद्धि॰ के एक खण्डविशेष का शीर्षक, जिसमें आयतनों का विवेचन किया गया है, विसुद्धि॰ 2.109-112; – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सळायतनवारे चक्खायतनन्तिआदीसु यं वत्तब्बं, तं सब्बं विसुद्धिमग्गे खन्धनिद्देसे चेव आयतननिद्देसे च वुत्तनयमेव,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).231; – **पञ्ञत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, आयतनों का वर्गीकरण, आयतनों का प्रकाशन अथवा विवरण – **त्ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *खन्धपञ्ञत्ति आयतनपञ्ञत्ति, धातुपञ्ञत्ति, सच्चपञ्ञत्ति, इन्द्रियपञ्ञत्ति, पुग्गलपञ्ञत्तीति,* पु॰ प॰ 103; *अत्थि सावकस्स ... पञ्ञत्ति,* कथा॰ 265; ... **यो** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इदानि ता आयतनपञ्ञत्तियो दस्सेन्तो छयिमानि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.61; – **पदेस** पु॰, तत्पु॰ स॰, आयतनों का क्षेत्र अथवा आलम्बन के रूप में आयतन – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दसविधो हि पदेसो नाम – खन्धपदेसो, आयतनपदेसो, ... धम्मपदेसोति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 32; – **परियन्त** पु॰, तत्पु॰ स॰, आयतनों की सीमा – **न्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *खन्धपरियन्ते ठितो, धातुपरियन्ते ठितो, आयतनपरियन्ते ठितो,* महानि॰ 16; 346; – **पुच्छा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आयतनपृच्छा], आयतनों के विषय में प्रश्न या पूछताछ – **च्छा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपरापि तिस्सो पुच्छा – खन्धपुच्छा, धातुपुच्छा, आयतनपुच्छा,* महानि॰ 251; – **भेद** पु॰, तत्पु॰ स॰, आयतनों के भेद, आयतनों का विभाजन – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं दिब्बं द्वादसायतनभेदं तथा मानुसकञ्च,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.138; – **मच्छरिय** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आयतनमात्सर्य], आयतनों में विद्यमान कृपणता अथवा स्वार्थपरता – **यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *खन्धमच्छरियम्पि मच्छरियं, धातुमच्छरियम्पि मच्छरियं, आयतनमच्छरियम्पि मच्छरियं गाहो,* महानि॰ 26; – **मार** पु॰, आयतनों में विद्यमान मार – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *कम्माभिसङ्खारवसेन पटिसन्धिको खन्धमारो धातुमारो आयतनमारो ... अन्वेति,* चूळनि॰ 137; – **लक्खण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आयतनों का लक्षण – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयतनलक्खणं सळायतनं, दस्सनादिरसं, वत्थुद्वार भावपच्चुपट्ठानं, नामरूपपदट्ठानं,* उदा॰ अट्ठ॰ 35; – **लोक** पु॰, तत्पु॰ स॰, आयतनों का क्षेत्र – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अज्झत्तबहिद्धासङ्खाते सब्बस्मिम्पि आयतनलोके अज्झत्तबहिद्धारम्मणवसेन ... धोवित्वा ... एति,* सु॰ नि॰

अट्ठ॰ 2.138; – **ववत्थान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आयतनों की विवेचना – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धातुववत्थानेन मनोविञ्ञाणधातुं, आयतनववत्थानेन मनायतनं, इन्द्रियववत्थानेन मनिन्द्रियं,* पेटको॰ 273; – **विमङ्ग** पु॰, विभ॰ के दूसरे अध्याय का शीर्षक, जिसमें बारहों आयतनों का विवेचन है, विभ॰ 77-91; विभ॰ अट्ठ॰ 42-51; – **सङ्गह** पु॰, 'आयतन' के अन्तर्गत संग्रह – **हेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ये धम्मा खन्धसङ्गहेन सङ्गहिता आयतनसङ्गहेन असङ्गहिता,* धातु॰ 29; स॰ पू॰ प॰ के रूप में – **सब्ब** पु॰, आयतनों का सभी कुछ – **ब्बं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्र सब्बसद्दो सब्बसब्बं पदेससब्बं आयतनसब्बं सक्कायसब्बन्ति ... दिट्ठप्पयोगो,* सद्द॰ 1.269; – **सहगत** त्रि॰, आयतनों के साथ जुड़ा हुआ – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिभूमिआयतनसहगता रूपसञ्ञीसु दुतिये झाने झानभूमि,* पेटको॰ 264; – **सेवी** त्रि॰, शीलवान् व्यक्तियों अथवा उत्तम धर्मों का सेवन करने वाला – **विनो** पु॰, च॰/ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अज्झत्तञ्च पयुत्तस्स, तथायतनसेविनो, अनिब्बिन्दियकारिस्स, सम्मदत्थो विपच्चति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.117; *तथायतनसेविनोति तथेव सीलवन्ते पुग्गले सेवमानस्स,* जा॰ अट्ठ॰ 5.119; – **सो** अ॰, क्रि॰ वि॰ [आयतनशः], आयतनों के द्वारा, आयतनों के अनुरूप – *इन्द्रियेसु सुसंवुतो तस्सेव अलोभस्स पारिपूरियं मम आयतनसोचितं अनुपादाय,* पेटको॰ 212.

आयतनसुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ के दो सुत्तो का शीर्षक – *छफस्सायतनसुत्त,* स॰ नि॰ 1(1).134-135; *अज्झत्तिकायतनसुत्त,* स॰ नि॰ 3(2).489-490.

आयतनिक त्रि॰, [बौ॰ सं॰ आयतनिक], आयतनों के साथ जुड़ा हुआ, छ प्रकार के स्पर्शों से सम्बद्ध, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्रयुक्त – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *छफस्सायतनिको इतिपि,* म॰ नि॰ 1.421; – **का** ब॰ व॰ – *छ फस्सायतनिका नाम सग्गा,* पेटको॰ 199.

आयति¹ स्त्री॰, आ +√या से व्यु॰ [आयति], **1.** आगे आने वाला समय, भविष्य, **2.** फैलाव, विस्तार, लम्बाई, **3.** महिमा, प्रताप, **4.** भावी फल, परिमाण, **5.** नियन्त्रण – *चोत्तरकालो तु आयति,* अभि॰ प॰ 86; – **तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰, भविष्य में, भावी समय के लिए – *आयतिं संवरेय्यासी'ति,* महाव॰ 157; *आयत्तिं ... अनागते अनुप्पज्जनकसभावा,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.97; ... *आयतिं तालपत्तसदिसे विपाकक्खन्धे निब्बत्तेतुं असमत्था जाता,* सारत्थ॰ टी॰ 1.299; *तस्स मे भन्ते, भगवा अच्चयं अच्चयतो पटिग्गण्हातु आयतिं संवराया'ति,* दी॰ नि॰ 1.75; – **भूत** त्रि॰, फैलाव या प्रसार का स्थल बन चुका – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गुणानं आयतिभूतो, रतनानंव सागरो,* अप॰ 2.116; – **लक्खण** त्रि॰, भविष्य में विशिष्ट स्वरूप के लक्षणों वाला – **णं** पु॰ द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *परप्पवादमथनं आयतिलक्खणं कथावत्थुप्पकरणं अभासि,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 106.

आयति² त्रि॰, आगे आने वाला, भविष्य में होने वाला, अगला, भावी (फल या परिणाम) – **तिं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयतिम्पि वस्सं एवमेव कातब्बं,* चूळव॰ 317.

आयतिक त्रि॰, आयति से व्यु॰, **क.** अगला, भावी, आगे आने वाला – **कं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयतिकम्पि वस्सावासं ... विहरेय्यासी'ति,* अ॰ नि॰ 3(1).65; – **के** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विरतचित्तायतिके भवस्मिं,* सु॰ नि॰ 238; **ख.** प्राप्त कराने वाला (की ओर) ले जाने वाला, (में) परिणत हो जाने वाला – **कं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *करोहि पुञ्ञं सुखमायतिकं,* स॰ नि॰ 1(1).168; स॰ उ॰ प॰ के रूप में कुसला॰, लोका॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आयतिगवं अ॰, क्रि॰ वि॰ [आयतिगवं], गायों के घर वापस लौटने के समय में, गोधूलि-वेला में – *तिट्ठन्ति गावो यस्मिं काले तिट्ठगुकालो, वहग्गुकालो, आयतिगवं, खलेयवं, लूनयवं, लूयमान यवमिच्चादि,* मो॰ व्या॰ 3.7.

आयत्त¹ त्रि॰, आ +√यत का भू॰ क॰ कृ॰, प्रायः च॰/ष॰ वि॰ में अन्त होने वाले नाम के साथ अथवा स॰ उ॰ प॰ के रूप में [आयत्त], **1.** अधीन, आश्रित, सहारा लिया हुआ, वश्य, विनीत – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयत्तो तु च सन्तको,* अभि॰ प॰ 728; – **त्ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इतो पट्ठाय तव रक्खा ममायत्ता'ति वत्वा सकट्ठानमेव गतो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.126; **2.** नपुं॰, संपत्ति, स्वामित्व, परिग्रह – *आयत्ते परिवारे च भरिमायं परिग्गहो,* अभि॰ प॰ 870; – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गेहे दास कम्मकरादयोपि गोमहिंसादयोपि हिरञ्ञसुवण्णम्पि सब्बं तासञ्ञेव आयत्तं भविस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.326; *भिक्खाचारकिच्चं ममायत्तं होतु,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.210; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अपरा॰, करुणा॰, कुलपवेणिका॰, तदा॰, निजा॰, परा॰, सका॰, सक्का॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; स॰ पू॰ प॰ के रूप में, – **ता** स्त्री॰, भाव॰, केवल स॰ उ॰ प॰ में प्राप्त [आयत्तता], अधीनता, आश्रयता,

वशवर्तिता – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एतमत्थन्ति एतं परायत्तताय अधिप्पायासमिज्झनसङ्खातं अत्थं विदित्वा ....,* उदा॰ अट्ठ॰ 127; – **वुत्ति** स्त्री॰, अधीन अथवा आश्रित रहने की अवस्था – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नोभयं पनिदं कस्मा, निस्सयायत्तवुत्तितो,* अभि॰ अव॰ 721; – **वुत्तिक** त्रि॰, ब॰ स॰, अधीन अथवा आश्रित रहने के स्वभाव वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इध निब्बानवज्जो सब्बो सभावधम्मो पच्चयायत्तवुत्तिकोव उपलब्भति,* उदा॰ अट्ठ॰ 316; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, पराधीनता – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कारणञ्हि यथा तिट्ठति एत्थ फलं तदायत्तवुत्तितायाति ठानन्ति वुच्चति, एवं अनवकासोतिपि वुच्चतीति,* उदा॰ अट्ठ॰ 243; – **वुत्तिभाव** पु॰, उपरिवत् – **वेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कारणञ्हि यस्मा तत्थ फलं तिट्ठति तदायत्तवुत्तिभावेन, तस्मा ठानन्ति वुच्चति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).109; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं अनवसेसतो कामरूपभवस्स तत्थ अभावो वुत्तो होति तदायत्तवुत्तिभावतो,* उदा॰ अट्ठ॰ 317.

आयत्तक त्रि॰, आयत्त + क से व्यु॰, अधीन, आश्रित – **के** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा हि जातो वरकम्हि तस्स, आयत्तके मङ्गलचक्कवाले,* जिना॰ 189; – **भाव** पु॰, अधीनता, वशवर्तिता, वश्यता – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लोकनाथो इमं दीपं तदा एव अत्तनो आयत्तकभावं दस्सेतुं अत्तनो पादमुद्दिकवसेन सुमनकूटनगमुद्धनि ठितत्तं एव अकासी'ति अधिप्पायो,* म॰ वं॰ टी॰ 88(ना॰).

आयत्तमन त्रि॰, ब॰ स॰ [आयस्तमन], उत्सुकता से युक्त मन वाला, पीड़ित अथवा व्याकुल मन वाला – **ना** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ता दिस्वा आयत्तमना पुरिन्ददो, इच्चब्रवी ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.390; *आयत्तमनाति उस्सुक्कमना ब्यावटचित्ता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.391.

आयनक त्रि॰, आयन से व्यु॰ [आयानक], जाने वाला, चलने वाला, हिलने-डुलने वाला – **के** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सुखदुक्खे सह आयनके सहाये'ति,* म॰ वं॰ टी॰ 67(ना॰).

आयमति आ + √यम का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आयच्छति], **1.** विस्तार करता है, अपने को फैलाता है, लम्बा करता है, **2.** ऊपर की ओर या वापस खींचता है, **3.** थामता दबाता या रोकता है – **मेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अभिसन्नधातु कुच्छि अञ्ञस्मिं अज्झोहरिते भिय्यो आयमेय्य,* मि॰ प॰ 172; – **मिस्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पिट्ठि मे आगिलायति, तमहं आयमिस्सामी'ति,* चूळव॰ 340; – **मित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *सो दण्डकोटिया वा वल्लिकोटिया वा पंसुचुण्णकेन वा घट्टितो आयमित्वा ... पच्छिन्नगमनो हुत्वा अमित्तवसं याति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).36.

आयव / आयाव नपुं॰, आयु से व्यु॰ [आयव], वीर्य, पराक्रम, बल, पुरुषत्व – **वं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थि आयवन्ति अत्थि वीरियं, आयावन्तिपि पाठो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.272.

आयवति आ + √यु का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आयौति / आयुवाति], **क.** मिलाता है, गड्ड मड्ड कर देता है, बांध देता है, जकड़ देता है – **न्ति** ब॰ व॰ – *आयवन्ति मिस्सीभवन्ति सत्ता एतेना ति आयु,* सद्द॰ 2.416; **ख.** सम्मिलित होता है, क्रियाशील होता है – **न्ति** ब॰ व॰ – *अथ वा आयवन्ति आगच्छन्ति पवत्तन्ति तस्मिं सति अरूपधम्मा ति आयु,* सद्द॰ 2.416.

आयवन नपुं॰, आ + √यु से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, आपस में मिला देना अथवा थाम कर या बांध कर रखना – *आयवनट्ठेन आयु,* सद्द॰ 416.

आयस त्रि॰, [आयस], लौह-धातु से निर्मित, लोहा से बनाया हुआ – **सं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयसं, बन्धनं, ... कापोतं सत्थि,* मो॰ व्या॰ 4.66; *चतुद्वारमिदं नगरं, आयसं दळ्हपाकारं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.3; *न तं दळ्हं बन्धनमाहु धीरा, यदायसं दारुजं पब्बजञ्च,* स॰ नि॰ 1(1).94; – **से** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कूटे बद्धोस्मि आयसे,* जा॰ अट्ठ॰ 4.373; – **साय** स्त्री॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *देविया सरीरं आयसाय तेलदोणिया पक्खिपित्वा ...,* अ॰ नि॰ 2(1).54; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अना॰, काला॰, सब्बा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आयसक्क / आयसक्य नपुं॰, अ + यस से व्यु॰ [अयशस्क], अकीर्ति, अपयश, निन्दा, निन्दनीय अथवा अकीर्तिकर अवस्था – **क्यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुब्बण्णियं आयसक्यञ्चुपेन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.17; *आयसक्यन्ति गरहं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.18; *कोधसम्मदसम्मत्तो, आयसक्यं निगच्छति,* अ॰ नि॰ 2(2).234; *आयसक्यन्ति अयसभावं, अयसो नियसो होतीति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.179.

आयसिक त्रि॰, आयस से व्यु॰ [आयसिक], लोहा से निर्मित – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वरत्ताय बद्धो वारत्तिको आयसिको, पासिको,* मो॰ व्या॰ 4.29.

आयस्मन्त पु., व्य. सं., राजा साहसमल्ल का एक सेनापति – *आथापनेत्वा तं भूपं दुरतिक्कमविक्कमो, आयस्मन्तचमूनाथो स राजकुलवड्डनो,* चू. वं. 80.33.

आयस्मन्तु त्रि., [आयुष्मत्, बौ. सं. आयुष्मं], बौद्ध भिक्षुओं के लिए प्रयुक्त, सम्मान-सूचक संबोधन या भिक्षुओं अथवा स्थविरों के नाम के पूर्व में प्रयुक्त उपाधि, पूज्य, श्रीमान्, आदरणीय भिक्षु या स्थविर – *अथ वा महापरिनिब्बान सुत्तट्ठकथायं "आयस्मातिस्स" इति दीघवसेन वुत्तालपनेकवचनस्स दस्सनतो ...,* सद्द. 1.146; *आयस्मन्तोति पियवचनमेतं गरुवचनमेतं सगारवसप्पतिस्साधिवचनमेतं आयस्मन्तोति,* महाव. 131; – **स्मा** पु., प्र. वि./संबो., ए. व. – *आयस्मा खो यस्सत्थाय अगारस्मा अनगारियं पब्बजितो,* दी. नि. 1.209; *आयस्माति पियवचनमेतं गरुवचनमेतं,* स. नि. अट्ठ. 2.75; *नवकतरेन भिक्खुना थेरतरो भिक्खु "भन्ते"ति वा "आयस्मा"ति वा समुदाचरितब्बो,* दी. नि. 2.115; – **न्तं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *लाभा नो आवुसो, सुलद्धं नो आवुसो ये मयं आयस्मन्तं तादिसं सब्रह्मचारिं पस्साम एवं अत्थुपेतं ब्यञ्जनुपेतं'न्ति,* दी. नि. 3.96; – **स्मता** तृ. वि., ए. व. – *राजा मागधो सेनियो बिम्बिसारो सुखविहारितरो आयस्मता गोतमेना'ति,* म. नि. 1.131; – **स्मतो** पु., ष. वि., ए. व. – *तस्स आयस्मतो उपसम्पदा अहोसि,* महाव. 22; 63; 64; 100; – **स्मन्ते** पु., सप्त. वि., ए. व. – *अचिरूपसम्पन्ने आयस्मन्ते रट्ठपाले ....,* म. नि. 2.259; – **स्मन्तो** पु., प्र. वि., ब. व. – *वदन्तु मं आयस्मन्तो,* म. नि. 1.133; – **स्मन्ते** पु., द्वि. वि., ब. व. – *नेवाहं आयस्मन्ते याचिं ... मन्ति,* महाव. 63; – **न्तेहि** पु., तृ. वि., ब. व. – *वचनीयोम्हि आयस्मन्तेही'ति,* म. नि. 1.133; – **स्मन्तानं** पु., ष. वि., ब. व. – *नु खो आयस्मन्ता नं सुखविहारितरो,* म. नि. 1.131; – **स्मन्तेसु** सप्त. वि., ब. व. – *इमेसु आयस्मन्तेसु मेत्तं कायकम्मं पच्चुपट्ठितं,* म. नि. 1.270; – **स्मन्तो** संबो., ब. व. – *किं सङ्घस्स पुब्बकिच्चं?, पारिसुद्धिं आयस्मन्तो आरोचेथ,* महाव. 130.

आयाग 1. पु., आ +√यज से व्यु. [आयाग], यज्ञ में देय दक्षिणा, देवताओं को देय बलि, आहुति, 2. त्रि., यज्ञ की आहुतियों का ग्रहीता, यज्ञ-आहुति पीने योग्य, दक्षिणा का पात्र, दान का सत्पात्र – **गो** प्र. वि., ए. व. – *आयागोति आयजितब्बो, ततो ततो आगम्म वा यजितब्बमेत्थातिपि आयागो,* सु. नि. अट्ठ. 2.125; *आयागो सब्बलोकस्स, आहुतीनं पटिग्गहो,* थेरगा. 566; *आयागो ..., सब्बस्स सदेवकस्स लोकस्स अग्गदक्खिणेय्यताय देय्यधम्मं आनेत्वा यजितब्बट्ठानभूतो,* थेरगा. अट्ठ. 2.166; – **गं** द्वि. वि., ए. व. – *वड्ढकीहि कथापेत्वा, मूलं दत्वानहं तदा, हट्ठो हट्ठेन चित्तेन, आयागं कारपेसहं,* अप. 1.88; *एकत्तिंसे इतो कप्पे, आयागं यमकारयिं,* अप. 1.88; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *उदकेहं न मिय्यामि, आयागस्स इदं फलं,* अप. 1.88; *आयागस्स इदं फलन्ति भोजनसालदानस्स इदं विपाकन्ति अत्थो,* अप. अट्ठ. 2.57; – **वत्थु** नपुं., तत्पु. स. [आयागवस्तु], यज्ञ में देय दक्षिणा का सत्पात्र – **त्थूनि** प्र. वि., ब. व. – *आयागवत्थूनि पुथू पथब्या, संविज्जन्ति ब्राह्मणा वासवस्स,* जा. अट्ठ. 7.51; *आयागवत्थूनीति पुञ्ञक्खेत्तभूता अग्गदक्खिणेय्या पथब्या पुथू ब्राह्मणा संविज्जन्ति,* जा. अट्ठ. 7.51; – **सेट्ठ** पु., कर्म. स., उत्तम यज्ञ-दक्षिणा, यज्ञ में दिया गया उत्तम दान – **ट्ठेहि** तृ. वि., ब. व. – *तस्सेव तेजेन अयं वसुन्धरा आयागसेट्ठेहि मही अलङ्कता,* दी. नि. 2.126.

आयागदायक पु., व्य. सं., एक स्थविर का नाम – **को** प्र. वि., ए. व. – *इत्थं सुदं आयस्मा आयागदायको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप. 1.88.

आयाचक त्रि., [आयाचक], भिखारी, याचना करने वाला, विनती या अनुरोध करने वाला, निवेदक, प्रार्थी – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *सामो ... कुमारो कतपुञ्ञो ... आयाचको सक्को, तिण्णं चेतोपणिधिया ... निब्बत्तो,* मि. प. 133.

आयाचति आ +√याच का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आयाचते], **क.** प्रार्थना करता है, निवेदन करता है, देवता का आवाहन करता है – *अथ सक्को देवानमिन्दो तस्स कुलस्स अनुकम्पाय तं देवपुत्तं आयाचति पणिधेहि,* मि. प. 133; *तस्मा सो ब्रह्मा सब्बेसं तथागतानं आयाचति धम्मदेसनाय,* मि. प. 220; – **न्ति** ब. व. – *यतो च चन्दिमसूरिया उग्गच्छन्ति, यत्थ च ओगच्छन्ति आयाचन्ति थोमयन्ति पञ्जलिका नमस्समाना अनुपरिवत्तन्ती'ति?,* दी. नि. 1.217; *आयाचन्तीति "उदेहि भवं चन्द, उदेहि भवं सूरिया"ति एवं आयाचन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 1.302; – **चेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *तमेनं महा जनकायो सङ्गम्म समागम्म आयाचेय्य थोमेय्य पञ्जलिको अनुपरिसक्केय्य,* स. नि. 2(2).299; **ख.** आर्शीवाद मांगता है, सफलता, सुख एवं समृद्धि हेतु कहता है – **न्तीनं** स्त्री., वर्त. कृ., ष. वि., ब. व. – *अस्सोसुं भिक्खू ... एकच्चानं इत्थीनं ओयाचन्तीनं,* पारा. 203; **ग.** प्रणिधान करता है, संकल्प लेता है, प्रण करता है – **चि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *तुम्हे एवं भेरिं चरापेथ अम्हाकं राजा उपराजकालेयेव एवं आयाचि सचाहं*

रज्जं पापुणिस्सामि, जा॰ अट्ठ॰ 1.252; – **चिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *बलिकम्मं करिस्सामी'ति आयाचिं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.252; **घ.** मांगता है, याचना करता है, अनुरोध करता है, विनती करता है – **ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तासं इत्थीनं वच्चमग्गं पस्सावमग्गं आदिस्स वण्णम्पि भणति अवण्णम्पि भणति याचतिपि आयाचतिपि पुच्छतिपि पटिपुच्छतिपि,* पारा॰ 188; *आयाचति नाम कदा ते माता पसीदिस्सति,* पारा॰ 190; – **न्ति** ब॰ व॰ – *नेव मिगा न पसू नोपि गावो, आयाचन्ति अत्तवधाय केचि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.56; – **न्तो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहम्पि तादिसो होमी'ति एवं आयाचन्तो पिहेन्तो पत्थेन्तो यं अत्थि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.59; – **न्ता** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आवुसोति आयाचन्ता भणन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).68; – **मानो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खु एवं सम्मा आयाचमानो आयाचेय्य,* अ॰ नि॰ 1(1).107; – **माना** स्त्री॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खुनी एवं सम्मा आयाचमाना आयाचेय्य,* अ॰ नि॰ 1(1).107; – **चि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अत्तनो संविभागत्तं भत्तेनायाचि खत्तियो,* म॰ वं॰ 10.34; *भत्तेनायाचीति अत्तनो भत्तेन संविभागतं कुमारिं आयाचि,* म॰ व॰ टी॰ 246; – **चिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पब्बज्जं अहमायाचिं,* थेरगा॰ 624; *अहमायाचिन्ति, "सुनीत, पब्बजितुं, सक्खिस्ससी"ति सत्थारा ओकासे कते अहं पब्बज्जं अयाचिं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.192; – **चुं** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आयाचुं मम हत्थिनागं,* चरिया॰ 373, 379; – **चितुं** निमि॰ कृ॰ – *न खो, गहपति, अरहति अरियसावको आयुकामो आयुं आयाचितुं* अ॰ नि॰ 2(1).44; – **चित्वा / त्वान** पू॰ का॰ कृ॰ – *मातरं पितरं चाहं, आयाचित्वा विनायकं,* अप॰ 2.213; *आयाचित्वान सम्बुद्धं, वन्दित्वान च सुब्बतं पामोज्जं जनयित्वान, सकं भवनुपागमिं,* अप॰ 1.150.

आयाचन नपुं॰, आ +√याच से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [बौ॰ सं॰ आयाचन], अनुरोध, याचना, विनती, प्रण, प्रणिधान, प्रार्थना – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *देवताय आयाचनं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.382; ... *आयाचनं करि,* जा॰ अट्ठ 5.469; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो अहं इमिना आयाचनेन रज्जस्स पटिलद्धत्ता इदानि यजिस्सामि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.253; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयाचनतो मुच्चिस्सामी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.170; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *साधूति आयाचने निपातो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.227; स॰ उ॰ प॰ के रूप में देवता॰, ब्रह्मा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; स॰ पू॰ प॰ के रूप में, – **त्थ** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आयाचनार्थ], आयाचन, प्रार्थना अथवा अनुरोध का अर्थ – **नत्थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेनेव चेत्थ आयाचनत्थं सन्धाय चरेम से'तिपि पाठं विकप्पेन्ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.36; – **त्थे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयाचनत्थे निपातो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.125; – **बलिकम्म** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, प्रसन्न करने हेतु देवताओं को बलि या भोजन देने का कर्म – **म्मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदं सत्था ... देवतानं आयाचनबलिकम्मं आरब्भ कथेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.170; – **मोचन** नपुं॰, दिए हुए वचन अथवा किए गए संकल्पों की पूर्णता – *देवताय आयाचनामोचनत्थं ... आरोचेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.469; – **हेतु** अ॰, क्रि॰ वि॰, याचना अथवा विनती करने के लिए – *अपि नु तस्स पुरिसस्स अव्हायनहेतु वा आयाचनहेतु वा पत्थनहेतु वा अभिनन्दनहेतु वा अचिरवतिया नदिया पारिमं तीरं ओरिमं तीरं आगच्छेय्या'ति,* दी॰ नि॰ 1.221.

आयाचनवग्ग पु॰, अ॰ नि॰ तथा स॰ नि॰ के वर्गों का शीर्षक, अ॰ नि॰ 1(1).107-109; स॰ नि॰ 2(1).184-186.

आयाचनसुत्त नपुं॰, अ॰ नि॰ तथा स॰ नि॰ के दो सुत्तों का शीर्षक, अ॰ नि॰ 1(2).190; स॰ नि॰ 1(1).162-164.

आयाचना स्त्री॰, [आयाचना], प्रार्थना, याचना, विनती, विनम्र आवाहन, अनुरोध, संकल्प, प्रण – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ एकच्चेहि "बलिकम्मेन आयाचनाय मङ्गलकिरियाया"ति वुत्ते सब्बम्पि तं विधिं कत्वा पटिबाहितुं नासक्खिंसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.250; – **ना** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *थेरो उट्ठहित्वा चत्तारो पटिक्खेपा चतस्सो च आयाचनाति अट्ठ वरे याचि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.224.

आयाचित त्रि॰, आ + √याच का भू॰ क॰ कृ॰ [आयाचित], प्रार्थित, संकल्पित, निवेदित, वह, जिसे मांगा गया हो, वह, जिसके विषय में प्रार्थना या अनुरोध किया गया हो, निमन्त्रित, प्रतिज्ञात, प्रार्थित – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सामो, कुमारो सक्केन देवानमिन्देन आयाचितो पारिकाय तापसिया कुच्छिं ओक्कन्तो,* मि॰ प॰ 133; – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्हेहि अटविदेवताय आयाचितं अत्थि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.383; – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बेसं तथागतानं धम्मता एसा, यं ब्रह्मुना आयाचिता धम्मं देसेन्ति,* मि॰ प॰ 219; – **धम्मदेसना** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिससे धर्मोपदेश के लिए याचना की गई हो – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सहम्पतिब्रह्मुना आयाचितधम्मदेसनो बुद्धचक्खुना लोकं वोलोकेत्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.51; – **नं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयाचितधम्मदेसनं किर तं भिक्खुं,* विसुद्धि॰ 1.313; *आयाचिता धम्मदेसना एतेनाति आयाचितधम्मदेसनो, तं आयाचितधम्मदेसनं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 364; – **भत्तजातक** नपुं॰, 19वें जातक का शीर्षक, जा॰ अट्ठ॰ 1.170 171.

आयाचेसि आ + √याच के प्रेर॰ का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, याचना की, प्रार्थना की – *अभिवादेत्वा निसीदि आयाचेसि तथागतं,* दी॰ वं॰ 2.43.

आयात त्रि॰, आ + √या का भू॰ क॰ कृ॰ [आयात], आ पहुंचा हुआ, प्राप्त कर चुका, आ चुका, पहुंच चुका, आया हुआ, प्राप्त – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न बाहुविरियायातं न च जातिकुलागतं परप्पसादलद्धं किं युत्तं गथितभोजने,* सद्धम्मो॰ 407; *कुतो नु भो इदमायातं,* सद्द॰ 1.92.

आयाति आ + √या का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आयाति], **क.** आता है, आ पहुंचता है, प्राप्त करता है, वापस आ जाता है – *अद्धिको विय आयाति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.311; – **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सभानुरूपो आयासि, आनेञ्जकारितो विय, दन्तोव दन्तदमथो, उपसन्तोसि ब्राह्मण,* अप॰ 1.23; – **मि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"गच्छ त्वं, कस्सप, आयामहन्ति,* महाव॰ 34; *आयामि आवुसो, आयामि आवुसो'ति,* दी॰ नि॰ 3.13; – **यन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अन्धंव तिमिसमायन्ति,* सु॰ नि॰ 674; *अन्धंव तिमिसमायन्तीति अन्धकरणेन अन्धमेव बहलन्धकारत्ता तिमिस'न्ति सञ्जितं धूमरोरुवं नाम नरकं गच्छन्ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.181; – **म** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *एतेन वेगेन आयाम सब्बे, रतिं मग्गं पटिपन्ना विकाले,* वि॰ व॰ 1235; *येन तव दस्सनतो पुब्बे आयाम आगतम्ह,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 286; – **न्तं** पु॰, वर्त॰ कृ॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किंसु पुनप्पुनायन्तं, अभिनन्दन्ति पण्डिता'ति,* स॰ नि॰ 1(1).51; – **यतो पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰** – *कस्स ... चरन्ति वरपुञ्जस्स, हत्थिक्खन्धेन आयतो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.314; – **यन्ते** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मिं पल्लङ्कमायन्ते राजा इति विचन्तयि,* म॰ वं॰ 5.64; *पल्लङ्कमायन्ते ति पल्लङ्कसमीपं उपगच्छन्ते,* म॰ वं॰ टी॰ 165(ना॰); – **यन्तिं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयन्तिं नाभिनन्दति, पक्कमन्तिं न सोचति,* उदा॰ 75; *आयन्तिन्ति आगच्छन्तिं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.23; – **अना ... न्तेसु** निषे॰, पु॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अनायन्तेसु सब्बेसु विजयो भयसङ्कितो,* म॰ वं॰ 7.16; *अनायन्तेसू ति सब्बेसु न आगतेसु,* म॰ वं॰ टी॰ 219(ना॰); – **यन्तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आयन्तु, भोन्तो अरहन्तो'ति,* पारा॰ 138; – **म** अनु॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आयामानन्द, वेरञ्जं ब्राह्मणं अपलोकेस्सामा'ति,* पारा॰ 10; *आयामाति आगच्छ याम,* पारा अट्ठ॰ 1.151; – **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पवत्ते तुमुले युद्धे सन्नद्धो भल्लुको तहिं राजाभिमुखमायासि नागराजा तु कण्डुलो,* म॰ वं॰ 25.83; **ख.** आ मिलता है, जा पहुंचता है, प्रवेश कर जाता है, बन जाता है – **यन्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *योगमायन्ति मच्चुनो,* स॰ नि॰ 1(1).13; – **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *कोधो वो वसमायातु,* स॰ नि॰ 1(1).277; *कोधो वो वसमायातूति कोधो तुम्हाकं वसं आगच्छतु,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.310.

आयान नपुं॰, आ + √या से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आयान], आगमन, आ जाना, आ पहुंचना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयानम्पि हि चतूसु द्वारेसु चत्तारि, सभायं एकन्ति एवं दिवसे दिवसे पञ्चसतसहस्सानि तत्थ उट्ठहिस्सन्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 341.

आयापाय पु॰, द्व॰ स॰ [आयापाय], आय एवं व्यय, लाभ एवं हानि, अच्छा और बुरा, हित एवं अहित – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो बालो नेव गुणवन्तानं गुणं जानाति न अत्तनो आयापायं जानाति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.201.

आयापेति आ + √याप का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आयापयति], जारी रहता है, बरकरार रहता है, बना रहता है, क्रियाशील रहता है – **न्ति** ब॰ व॰ – *एवं पटिपन्नस्स कुसला धम्मा आयापेन्तीति आयतनचरियाय चरति,* पटि॰ म॰ 207; *आयापेन्तीति समथविपस्सनावसेन पवत्ता कुसला धम्मा भुसं यापेन्ति, पवत्तन्तीति अत्थो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.128.

आयाम¹ पु॰/नपुं॰, आ + √यम से व्यु॰ [आयाम], **क.** दीर्घता, खिंचाव, फैलाव, लम्बाई, **ख.** प्रसार, विस्तार, **ग.** निग्रह, नियन्त्रण, **घ.** प्रयास, बल, शक्ति – **मो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयामो दीघतारोहो,* अभि॰ प॰ 295; – **मं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पत्तस्स पत्तिया अत्थि आयामं,* स॰ नि॰ 3(1).13; – **मेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुरत्थिमेन च पच्छिमेन च द्वादसयोजनानि आयामेन,* दी॰ नि॰ 2.110; *धम्मा, आनन्द, पोक्खरणी पुरत्थिमेन पच्छिमेन च योजनं आयामेन अहोसि,* दी॰ नि॰ 2.137; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयामतो दीघतो च उच्चतो च चतुवीसतियोजनं वित्थारतो द्वादसायोजनं अहोसीति सम्बन्धो,* अप॰ अट्ठ॰ 1.275; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, चतुत्तिंसहत्था॰, दियड्ढयोजनसता॰, पञ्चयोजनसता॰, मुखा॰, सट्ठियोजना॰, सत्तयोजना॰, सोळसयोजना॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰, स॰ पू॰ प॰ के रूप में, – **सम्पन्न** त्रि॰, लम्बाई अथवा विस्तार से युक्त, आयत – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयतोति आयामसम्पन्नो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.344.

आयाम² आ + √या की अनु॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰, हम आते हैं, आयाति के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आयास पु., आ + √यस से व्यु. [आयास], **शा. अ.**, प्रयत्न, प्रयास, श्रम, **ला. अ.**, थकावट, कष्ट, कठिनाई – **सो** प्र. वि., ए. व. – *दाघ आयासे च, आयासो किलमनं,* सद्द. 2.335; *उपायासनिद्देसे आयासनट्ठेन आयासो,* पटि. म. अट्ठ. 1.132; – **सेन** तृ. वि., ए. व. – *आयासेन कतं पुञ्ञं,* रस. 1.73 (रो.); – **सा** प्र. वि., ब. व. – *ये आयासा ते उपायासा, नव पदानि यत्थ सब्बो अकुसलपक्खो सङ्गहं समोसरणं गच्छति,* पेटको. 247.

आयासना स्त्री., आ + √यस से व्यु., क्रि. ना., प्रयास अथवा प्रयत्न करने की क्रिया – **ना** प्र. वि., ए. व. – *आयासो उपायासो आयासना,* पटि. म. 34; – **नट्ठ** पु., तत्पु. स., आयासना अथवा प्रयत्न करने का तात्पर्य – **ट्ठेन** तृ. वि., ए. व. – *उपायासनिद्देसे आयासनट्ठेन आयासो,* पटि. म. अट्ठ. 1.132.

आयासितत्त नपुं., आयासित का भाव. [आयासितत्व], थकावट से भरे रहने की स्थिति, क्लिन्नता, कष्ट एवं मानसिक व्यथा की दशा – **त्तं** प्र. वि., ए. व. – *अञ्ञतरञ्ञतरेन ब्यसनेन समन्नागतस्स अञ्ञतरञ्ञतरेन दुक्खधम्मेन फुट्ठस्स आयासो उपायासो आयासितत्तं उपायासितत्तं,* दी. नि. 2.229; *आयासितभावो आयासितत्तं,* पटि. म. अट्ठ. 1.132.

आयासितभाव पु., उपरिवत् – **वो** प्र. वि., ए. व. – *आयासितभावो आयासितत्तं,* पटि. म. अट्ठ. 1.132.

आयिक त्रि., केवल स. उ. प. के रूप में ही प्राप्त, आय वाला, आमदनी वाला – **नट्ठायिको** पु., प्र. वि., ए. व., दिवालिया, वह, जिसकी आय नष्ट हो चुकी है – *यथा पुरिसो नट्ठायिको सब्बरोसकं गहेत्वा जनस्स परिदीपेय्य,* मि. प. 135; *यदा देवदत्तो मनुस्सो अहोसि पवने नट्ठायिको,* मि. प. 192.

आयु नपुं./पु., [आयुस्, नपुं.], जीवन, जीवन की अवधि, उम्र, जीवनदायिनी शक्ति – **यु/युं** प्र. वि., ए. व. – *आयु तु जीवितं,* अभि. प. 155; *आयुं भोतो होतु,* मो. व्या. 2.27; *पुनरायु च मे लद्धो,* दी. नि. 2.211; *पुनारायु च मे लद्धोति पुन अञ्ञेन कम्मविपाकेन मे जीवितं लद्धन्ति, इमिना अत्तनो चतुभावं चेव उपपन्नभावञ्च आविकरोति,* दी. नि. अट्ठ. 2.297; – **युं** द्वि. वि., ए. व. – *यागुं देन्तो आयुं देति,* महाव. 297; *दिब्बं सा लभते आयुं,* महाव. 385; – **ना/युसा** तृ. वि., ए. व. – *ते अञ्ञे अतिरोचन्ति, वण्णेन यससायुना,* दी. नि. 2.153; *माता यथा नियं पुत्तमायुसा एकपुत्तमनुरक्खे,* सु. नि. 149; – **नो/स्स** ष. वि., ए. व. – *आयुनो संहानि इन्द्रियानं परिपाको, अयं वुच्चति भिक्खवे, जरा,* दी. नि. 2.228; *आयुनो ... आयुक्खयचक्खादिइन्द्रियपरिपाकसञ्जिताय पकतिया दीपिता,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).224; *आयुं खो पन दत्वा आयुस्स भागिनी होति,* अ. नि. 1(2).73; – **स्मिं/म्हि** सप्त. वि., ए. व. – *किञ्च, भिक्खवे, भिक्खुनो आयुस्मिं ?,* दी. नि. 3.57; *अयं पन वस्ससतावसिट्ठे आयुम्हि गमनं आरभि,* स. नि. अट्ठ. 1.105; स. उ. प. के रूप में अद्धा., अप्पा., दीघा., पुनरा., ब्रह्मा. के अन्त. द्रष्ट.; स. पू. प. के रूप में, – **अन्तर** नपुं., तत्पु. स., जीवन का अन्तराल, जीवन के क्षणों की अवधि – **रं** प्र. वि., ए. व. – *इदं पन ... भावेत्वा अरहत्तं पत्तस्स आयुअन्तरं परिच्छिन्नमेव होति,* विसुद्धि. 1.280; *आयुअन्तरं नाम जीवितन्तरं जीवनक्खणावधि,* विसुद्धि. महाटी. 1.326; – **उस्माविञ्ञाण** नपुं., द्व. स., आयु, ऊष्मा एवं चेतना – **तो** प. वि., ए. व. – *पेतेति आयुउस्माविञ्ञाणतो अपगते,* पे. व. अट्ठ. 53; – **कप्प** पु./नपुं., जीवन का निर्धारित समय, जीवनकाल, जीवनावधि – **प्पो/प्पं** प्र. वि., ए. व. – *तत्थ कप्पो नाम महाकप्पो कप्पेकदेसा आयुकप्पोति तिविधो,* प.प. अट्ठ. 223; *एत्थ च कप्पन्ति आयुकप्पं,* दी. नि. अट्ठ. 2.129; – **कम्म** नपुं., द्व. स., आयु एवं कर्म (पुण्यकर्म) – **म्मानं** ष. वि., ब. व. – *आयुकम्मानं समकमेव परिक्खीणत्ता मरणं उभयक्खयमरणं,* अभि. ध. वि. टी. 168; – **काम** त्रि., ब. स. [आयुष्काम], दीर्घायु होने की कामना करने वाला, लम्बी जीवनावधि का अभिलाषी, स्वास्थ्य की कामना करने वाला – **मो** पु., प्र. वि., ए. व. – *न ..., अरहति अरियसावको आयुकामो आयुं आयाचितुं वा अभिनन्दितुं वा आयुस्स वापि हेतु,* अ. नि. 2(1).44; – **काल** पु., तत्पु. स., जीवन का निर्धारित समय, जीवन की अवधि – **लो** प्र. वि., ए. व. – *वस्ससतसहस्सतो पन पट्ठाय हेट्ठा, वस्ससततो पट्ठाय उद्धं आयुकालो कालो नाम,* जा. अट्ठ. 1.59; – **कोट्ठास** पु., तत्पु. स., आयु का एक भाग, जीवन का एक भाग, जीवन की एक अवस्था – **से** सप्त. वि., ए. व. – *बुद्धा ... पञ्चमे आयुकोट्ठासे बहुजनस्स पियमनापकालेयेव परिनिब्बायन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 2.129; – **क्खय** पु., तत्पु. स. [आयुक्षय], आयु का विनाश या अन्त, मृत्यु, जीवन की समाप्ति – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *तस्सा आयुक्खयं ञत्वा, देविन्दो एतदब्रवि,* चरिया. 378;

– **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्तनो आयुक्खयेनेव मरि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.28; – **या** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुक्खया वा पुञ्ञक्खया वा आभस्सरकाया चवित्वा,* दी॰ नि॰ 1.15; – **क्खयन्तिक** नपुं॰, मृत्यु की समीपता, जीवन के अन्त की निकटता – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेनेव व्याधिना थेरो पत्तो आयुक्खयन्तिकं,* म॰ वं॰ 5.219; – **क्खयमरण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, शरीर अथवा आयु के क्षय के कारण होने वाला मरण – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सतिपि कम्मानुभावे तंतंगतीसु यथापरिच्छिन्नस्स आयुनो परिक्खयेन मरणं आयुक्खयमरणं,* अभि॰ ध॰ वि॰ टी॰ 167; – **द** त्रि॰, [आयुर्दा], दीर्घायु देने वाला, लम्बी आयु प्रदान करने वाला, स्वास्थ्य प्रद – **दो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुदो बलदो धीरो, वण्णदो पटिभानदो, सुखस्स दाता मेधावी, सुखं सो अधिगच्छति,* अ॰ नि॰ 2(1).37; – **दद** त्रि॰, [बौ॰ सं॰ आयुर्दद], उपरिवत् – **दं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुददं, ..., भोजनं दुरुपचारेन जीवितं हरती'ति,* मि॰ प॰ 153; – **दान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आयुर्दान], आयु का दान, जीवनदान – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुं देतीति आयुदानं देति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.21; – **दायी** त्रि॰, [आयुर्दायिन्], जीवन अथवा जीवन प्रदान करने वाला – **यी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो आयुदायी वण्णदायी, सुखं बलं ददो नरो,* अ॰ नि॰ 1(2).74; – **दुब्बल** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आयुर्दुर्बल], आयु की अल्पता, जीवनावधि का कम होना – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुदुब्बलतो, ... मरणं अनुस्सरितब्बं,* विसुद्धि॰ 1.221; – **धारण** त्रि॰, आयु को धारण करने वाला, आयुवर्धक – **णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भोजनं सब्बसत्तानं आयुधारणं,* मि॰ प॰ 292; – **पच्छेदन** त्रि॰, आयु को नष्ट कर देने वाला, आयु को कम कर देने वाला – **ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पञ्चमे अनायुस्साति आयुपच्छेदना, न आयुवड्ढना,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.47; – **पञ्ञासमाहित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, दीर्घ आयु एवं प्रज्ञा से युक्त – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बलक्खणसम्पन्नो, आयुपञ्ञासमाहितो,* अप॰ 1.345; – **पटिलाभ** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आयुष्प्रतिलाभ], लम्बी आयु की प्राप्ति, दीर्घायु का लाभ – **भाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुसंवत्तनिका हिस्स पटिपदा पटिपन्ना आयुपटिलाभाय संवत्तति, सो लाभी होती आयुस्स दिब्बस्स वा मानुसस्स वा,* अ॰ नि॰ 2(1).44; – **पटिलाभी** त्रि॰, दीर्घायु को प्राप्त करने वाला – **मिनी** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुस्स भागिनी होतीति आयुभागपटिलाभिनी होति, आयुं वा भजनिका होति, आयुप्पटिलाभिनीति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.303; – **प्पमाण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आयुष्प्रमाण], आयु का प्रमाण, जीवनावधि का विस्तार, जीवनावधि – **णं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विपस्सिस्स, भिक्खवे, ... असीतिवस्ससहस्सानि आयुप्पमाणं अहोसि,* दी॰ नि॰ 2.3; – **णं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुप्पमाणं पञ्च कोट्ठासे कत्वा चत्तारो ठत्वा पञ्चमे विज्जमानेयेव परिनिब्बुतो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.143; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *देवलोकस्स आयुप्पमानेनेव चवन्तीति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.95; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुप्पमाणतोपि अनुस्सरिस्सति,* दी॰ नि॰ 2.7; – **आयुप्परिक्खय** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आयुपरिक्षय], आयु का क्षय, उम्र का घट जाना – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कालङ्करोतीति न विजातभावपच्चया, आयुपरिक्खयेनेव,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.26; – **परिमाण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आयुष्परिमाण], आयु की माप, आयु का विस्तार, जीवन की अवधि – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वस्ससतम्पि याव आयुपरिमाणं तिट्ठति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).218; – **परियन्त** त्रि॰, केवल स॰ उ॰ प॰ में प्राप्त, ब॰ स॰, आयु की सीमा या अवधि वाला – **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्रापासिं एवंनामो एवंगोत्तो एवंवण्णो एवमाहारो एवंसुखदुक्खप्पटिसंवेदी एवमायुपरियन्तो,* दी॰ नि॰ 1.11; – **परियोसान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आयुष्पर्यवसान], आयु का अन्त, जीवन की अन्तिम घड़ी – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुपरियोसाने पुब्बनिमित्तेसु उप्पन्नेसु,* चरिया॰ अट्ठ॰ 73; – **पाल** पु॰, व्य॰ सं॰, एक स्थविर भिक्षु का नाम – **लो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन खो पन समयेन आयस्मा आयुपालो सङ्खेय्यपरिवेणे पटिवसति,* मि॰ प॰ 16; – **पालक** त्रि॰, आयु का पालन-पोषण करने वाला, आयु-वर्धक – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा, ... भोजनं सब्बसत्तानं आयुपालकं जीवितरक्खकं,* मि॰ प॰ 247; – **पाला** स्त्री॰, व्य॰ सं॰, एक भिक्षुणी, जो सम्राट अशोक की पुत्री संघमित्रा की आचार्या थी – **ला** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचरिया आयुपाला, काले सासि अनासवा,* म॰ वं॰ 5.208; *सङ्घमित्तायपि राजधीताय आचरिया आयुपालित्थेरी नाम,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.37; पाठा॰ आयुपाली; – **ब्बेद** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आयुर्वेद], आयु अथवा स्वास्थ्य से सम्बन्धित विद्या-शाखा, आयुर्वेद – **दे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुब्बेदे सयं चापि निपुणत्ता नराधिपो,* चू॰ वं॰ 73.42; – **वड्ढन क.** त्रि॰, आयुवर्धक, आयु को बढ़ाने में उपयोगी – **ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आयुपच्छेदना, न आयुवड्ढना,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.47; **ख.** एक ब्राह्मण-पुत्र का

नाम – *अथस्स आयुवड्ढनकुमारो'ति नामं करिंसु,* ध. प. अट्ठ. 1.378; ... **वण्णबल** नपुं., द्व. स. [आयुर्वर्णबल], दीर्घ आयु, सौन्दर्य एवं बल – **लेन** तृ. वि., ए. व. – *महायसा सुखेनापि, आयुवण्णबलेन च दिब्बसम्पत्ति वा तेसं मनुस्सानं भविस्सति,* अना. वं. 128 (रो.); – **वण्णसुखबल** नपुं., समा. द्व. स. [आयुर्वर्णसुखबल], दीर्घ आयु, सुन्दर रूप, सुख एवं बल – **लानि** प्र. वि., ब. व. – *रतनत्तयप्पणामेन हि आयुवण्णसुखबलानि,* अ. नि. टी. 1.4; – **वण्णसुखबलवड्ढन** त्रि., [आयुर्वर्णसुखबलवर्धन], आयु, सुन्दरता, सुख एवं बल की वृद्धि करने वाला – **तो** प. वि., ए. व. – *अथ वा रतनत्तयपूजाय आयुवण्णसुखबलवड्ढनतो अनन्तरायेन परिसमापनं वेदितब्बं,* अ. नि. टी. 1.4; – **वण्णसुखबलवुद्धि** स्त्री., तत्पु. स. [आयुर्वर्णसुखबलवृद्धि], आयु, सुन्दरता, सुख एवं बल की वृद्धि – **या** तृ. वि., ए. व. – *ततो आयुवण्णसुखबलवुद्धिया होतेव कारियनिट्ठानं,* अ. नि. टी. 1.4; – **वन्तु** त्रि., लम्बी आयु वाला, अत्यधिक आयु वाला, बुजुर्ग – **वा** पु., प्र. वि., ए. व. – *तेसञ्ञतरोयमायुवा,* थेरगा. 234; *अयं आयुवा दीघायु आयस्मा,* थेरगा. अट्ठ. 1.383; – **वेमज्झ** नपुं., तत्पु. स., जीवन का मध्यभाग – **ज्झं** द्वि. वि., ए. व. – *आयुवेमज्झं अनतिक्कमित्वा परिनिब्बायति ...,* स. नि. अट्ठ. 3.180; – **वेमत्त** नपुं., तत्पु. स. [आयुर्वैमात्र्य], आयु सीमा में विविधता अथवा भिन्नता, जीवन की अवधि में भिन्नता – **त्तं** प्र. वि., ए. व. – *सम्मासम्बुद्धानं आयुवेमत्तं, सरीरप्पमाणवेमत्तं, कुलवेमत्तं दुक्करचरियावेमत्तं, रस्मिवेमत्तन्ति ...,* उदा. अट्ठ. 121; – **वेमत्तता** स्त्री., भाव. [आयुर्वैमात्रता], आयु के विस्तार में विविधता अथवा भिन्नता का होना, आयु-सीमा में अन्तर होना, विभिन्न बुद्धों में अन्तर कर देने वाले 8 धर्मों में से एक – **त्ता** प्र. वि., ए. व. – *हेट्ठिमपरिच्छेदेन च वस्ससतायुककाले उप्पज्जन्ति उपरिमपरिच्छेदेन वस्ससतसहस्सायुककाले, अयं नेसं आयुवेमत्तता,* सु. नि. अट्ठ. 2.122; – **वोस्सज्जन** नपुं., तत्पु. स. [आयुर्व्यवसर्जन], जीवन का परित्याग, आयु का अन्त, मृत्यु – **नं** प्र. वि., ए. व. – *आलवकङ्गुलिमाल-अपलालदमनं पि च, पारायनकसमितिं आयुवोस्सज्जनं तथा,* म. वं. 30.84; *आयुवोस्सज्जनं तथा ति मारयाचानुपुब्बकं भगवता विस्सट्ठआयुवोस्सज्जनाधिकारं च,* म. वं. टी. 505(ना.); – **संवत्तनिक** त्रि., [आयुसंवर्तनिक], दीर्घायु को देने वाला, दीर्घायु में परिणत होने वाला – **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *आयुकामेन ... अरियसावकेन आयुसंवत्तनिका पटिपदा पटिपज्जितब्बा, आयुसंवत्तनिका हिस्स पटिपदा पटिपन्ना आयुपटिलाभाय संवत्तति,* अ. नि. 2(1).44; *आयुसंवत्तनिकं आयसमता चुन्देन कम्मारपुत्तेन कम्मं उपचितं,* दी. नि. 2.103; – **सङ्खय** पु., तत्पु. स. [आयुसंक्षय], आयु का क्षय, मृत्यु, जीवन का अन्त – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *मतञ्च दिस्वा गतमायुसङ्खयं,* थेरगा. 73; *यस्माकालङ्कतो आयुनो खयं वयं भेदं गतो नाम होति, तस्मा वुत्तं गतमायुसङ्खयं'न्ति,* थेरगा. अट्ठ. 1.176; – **या** प. वि., ए. व. – *यदा देवो देवकाया, चवति आयुसङ्खया तयो सद्दा निच्छरन्ति, देवानं अनुमोदतं,* इतिवु. 56; – **ये** सप्त. वि., ए. व. – *भवनम्पि पकम्पित्थ, बुद्धस्स आयुसङ्खये,* अप. 1.152; – **सङ्खार** पु., तत्पु. स. [आयुसंस्कार], प्राणाधायक तत्त्व, जीवन-तत्त्व, लम्बी जीवनावधि का आधारभूत तत्त्व, जीने की लालसा या चेतना – **रो** प्र. वि., ए. व. – *तथागतेन सतेन सम्पजानेन आयुसङ्खारो ओस्सट्ठो ति,* दी. नि. 2.88; – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *ओस्सट्ठे च भगवता आयुसङ्खारे महाभूमिचालो अहोसि भिंसनको लोमहंसो, देवदुन्दुभियो च फलिंसु,* उदा. 142; – **रा / रे** प्र. / द्वि वि., ब. व. – *अत्तनो आयुसङ्खारे उपधारेत्वा,* विसुद्धि. 1.280; *आयुसङ्खारा, ते वेदनिया धम्मा,* म. नि. 1.376; – **रानं** ष. वि., ब. व. – *पत्तो आयुसङ्खारानं इत्तरभावं दस्सेत्वा,* जा. अट्ठ. 4.189; – **रेसु** सप्त. वि., ब. व. – *अथस्स अनुपुब्बेन आयुसङ्खारेसु परिहीनेसु परिनिब्बानदिवसो सम्पापुणि,* जा. अट्ठ. 1.231; – **सङ्खारखेपनसङ्खात** त्रि., "जीने की चेतना का अपनयन" नाम वाला – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *तत्थ वा आयुसङ्खारस्सखेपनसङ्खातस्स कालस्स कतत्ता कालकतो,* वि. व. अट्ठ. 264; – **सङ्खारपरित्तता** स्त्री., भाव., अल्पायु होने की दशा, अल्पायुता – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *इदानि इमिस्सापि जातिया आयुसङ्खारपरित्ततं दस्सेत्वा,* जा. अट्ठ. 4.356; – **सङ्खारवोस्सज्जन** नपुं., तत्पु. स., जीवन का परित्याग, आयु-संस्कार (जीवनविषयिणी चेतना) की समाप्ति – **ज्जने** सप्त. वि., ए. व. – *तस्मिं आयुसङ्खारवोस्सज्जने,* अप. अट्ठ. 2.125; – **सङ्खारवोस्सज्जभाव** पु., तत्पु. स. [संस्कारव्यवसर्जनभाव], आयु-संस्कार अथवा जीवन-चेतना के परित्याग की अवस्था – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *देवपुत्तो ... बुद्धस्स आयुसङ्खारवोस्सज्जभावं ञत्वा महासोकं दोमनस्सं उप्पादेसि,* अप. अट्ठ. 2.125; – **सङ्खारोस्सज्जन** नपुं., तत्पु. स.,

आयुसंस्कार का परित्याग – **ज्जने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ ... *अज्ज... सुत्वा आयु सङ्खारोसज्जने गमिस्सामा'ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.150; – **सन्तानजनकपच्चयसम्पत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, आयु की निरन्तरता में कारणभूत (भोजन आदि) तत्त्वों की प्राप्ति – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ यं विज्जमानायपि आयुसन्तानजनकपच्चयसम्पत्तिया केवलं पटिसन्धिजनकस्स कम्मस्स विपक्कविपाकत्ता मरणं होति,* विसुद्धि॰ 1.220; *आयुसन्तानजनकपच्चयसम्पत्तियाति आयुप्पबन्धस्स पवत्तापनकानं आहारादिपच्चयानं सम्पत्तियं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.272; – **सहगत** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, आयु के साथ जुड़ा हुआ, जीवन के साथ साथ विद्यमान – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यदायं कायो, आयुसहगतो च होति उस्मासहगतो च विञ्ञाणसहगतो च, तदा लहुतरो च होति मुदुतरो च कम्मञ्ञतरो च,* दी॰ नि॰ 2.249.

आयुक त्रि॰, ब॰ स॰ [आयुष्क], आयु वाला, ब॰ स॰ के उ॰ प॰ के रूप में ही प्राप्त, अट्ठकप्पा॰ (आठ कल्पों की आयु वाला), अप्पा॰ (छोटी या कम आयु वाला), असङ्खेय्या॰(संख्या से परे आयु वाला), असीतिवस्ससहस्सा॰ (एक हजार कल्पों की आयु वाला), कप्पा॰ (एक कल्प की आयु वाला), खीणा॰ (वह, जिस की आयु क्षीण हो चुकी है), चतुसट्ठिकप्पा॰ (चौसठ कल्पों की आयु वाला), चत्तालीसवस्ससहस्सा॰ (चालीस हजार वर्षों की आयु वाला), दसवस्ससहस्सा॰ (दस हजार वर्षों की आयु वाला), दीघा॰ (लम्बी आयु वाला), नियता॰ (सुनिर्धारित अवधि की आयु वाला), परिक्खीणा॰ (अत्यधिक हो चुकी आयु वाला), परित्ता॰ (अत्यल्प आयु वाला), यावता॰ (जब तक आयु है तब तक), वस्ससतसहस्सा॰ (एक सौ हजार वर्षों की आयु वाला), वस्ससता॰ (एक सौ वर्षों की आयु वाला), वस्ससहस्सा॰ (एक हजार वर्षों की आयु वाला), सावसेसा॰ (वह, जिसकी आयु का कुछ भाग अभी तक शेष है), के रूप में प्राप्त.

आयुञ्जन नपुं॰, आ + √युज से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, प्रबल जोड़, मजबूत लगाव, सुदृढ़ आसक्ति – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुञ्जनं अनुयुञ्जनं आयोगो,* दी॰ नि॰ टी॰ 1.332.

आयुत त्रि॰, आ + √यु से व्यु॰, भू क॰ कृ॰ [आयुत], **शा॰ अ॰,** अच्छी तरह से जोड़ दिया गया, भली-भांति बांध दिया गया, **ला॰ अ॰,** युक्त, परिपूर्ण, (से) समन्वित, भरपूर – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रागरत्तो सुखसीलो, कामेसु गेधमायुतो, बुद्धेन चोदितो सन्तो, तदा त्वं पब्बजिस्ससि,* अप॰ 1.54; *गेधमायुतोति वत्थुकामेसु गेधराङ्खाताय तण्हाय आयुतो योजितोति अत्थो,* अप॰ अट्ठ॰ 2.6; *हरितेन आयुतो नादियो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.305; – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं नदी पुथुलोमेहि मच्छेहि आयुता पुथु विपुला,* जा॰ अट्ठ॰ 5.5; – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किम्पुरिसेहि आयुतं परिकिण्णं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.279; स॰ उ॰ प॰ के रूप में किम्पुरिसा॰, गणङ्कुलमिगा॰, गुणगन्धा॰, दिजगणा॰, दुमा॰, दुरा॰, नारीवरगणा॰, पुथुलोमा॰, युधा॰, वालमिगा॰, सोण्णकिङ्किणिका॰ के अन्त॰ प्रयुक्त.

आयुत्त आ + √युज से व्यु॰, भू॰ क॰ कृ॰ [आयुक्त], 1. त्रि॰, किसी काम में लगा दिया गया, जोड़ दिया गया, लगा हुआ, संयुक्त, प्राप्त – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुत्तो कटकरणस्स आयुत्तो कटकरणे,* मो॰ व्या॰ 2.37; *पठमस्स झानस्स उप्पादाय युत्तो पयुत्तो आयुत्तो समायुत्तो,* महानि॰ 379; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मेथुनमनुयुत्तस्साति, मेथुनधम्मे युत्तस्स पयुत्तस्स आयुत्तस्स समायुत्तस्स,* महानि॰ 104; – **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तपोजिगुच्छाय आयुत्ता,* स॰ नि॰ 1(1).82; *आयुत्ताति तपोजिगुच्छने युत्तपयुत्ता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.113; 2. पु॰, कार्य-विशेष के लिए नियुक्त प्रशासनिक पदाधिकारी अथवा मन्त्री – **त्तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुत्तो मातुसन्देसं सब्बं तस्स निवेदयि,* म॰ वं॰ 10.19; *दारकं च सहस्सं च आयुत्तस्स अदा रहो,* म॰ वं॰ 10.5; – **त्ता** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मा ते अधम्मिकायुत्ता, धनं रट्ठञ्चनासयुं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.112; – **क** पु॰, आयुत्त + क से व्यु॰ [आयुक्तक], सरकारी पदाधिकारी, किसी प्रशासनिक कार्य के सम्पादन अथवा निरीक्षण के लिए नियुक्त पदाधिकारी या पर्यवेक्षक – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्हाकं, देव, नगरे आयुत्तको नत्थि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.100; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुत्तकं गामकिच्चं करोन्तमेव पस्सि,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.274; – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयसाधकेन आयुत्तकेन सहितं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.259; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मम गामसते आयुत्तकस्स सन्तिकं पेसेत्वा मारापेस्सामी'ति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.273; – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *आयुत्तका लञ्जं गहेत्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 5.114; – **के** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *आयुत्तके अदासि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.445; – **घर** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, प्रशासनिक पदाधिकारी का निवासस्थान – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गतेसु तेसु सो गन्त्वा आयुत्तकघरं सकं,* म॰ वं॰ 10.12; – **पुरिस** पु॰, प्रशासनिक अधिकारी – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयसाधको आयुत्तकपुरिसो विय तन्निस्सितो नन्दिरागो अनुचरो नाम,*

ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.259; – **ब्राह्मण** पु॰, कर्म॰ स॰, ब्राह्मण जाति वाला प्रशासनिक अधिकारी – **णो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवंनामको राजगहनगरे जिण्णपटिसङ्खरणकारको आयुत्तकब्राह्मणो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.147; – **वेस** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आयुक्तकवेश], प्रशासनिक पदाधिकारी की वेशभूषा – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेट्ठिनो आयुत्तकवेसं गहेत्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.8.

आयुध नपुं॰, संभवतः आवुध के स्थान पर संस्कृत के प्रभाववश उत्तरकालीन रचनाओं में प्रयुक्त सं॰ शब्द [आयुध], हथियार, शस्त्र – **धं**¹ प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथायुधं च हेतीत्थी सत्थं पहरणं भवे,* अभि॰ प॰ 385; *आयुधं मेनुभावेन तेसं काये पतिस्सति,* म॰ वं॰ 7.36; – **धं**² द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुधं मम बाहुना गाहेतुं असमत्थोति,* चू॰ वं॰ 72.106; – **धे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *गोपुरट्ठा तु दमिळा खिपिंसु विविधायुधे,* म॰ वं॰ 25.30; – **जीवी** त्रि॰, [आयुधजीविन्], हथियारों अथवा शस्त्रों की कुशलता द्वारा अपनी जीविका कमाने वाला, योद्धा – **विनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मय्हं रज्जम्हि ये केचि सन्ति आयुधजीविनो एते सब्बे समादाय खिप्पं गन्त्वा पसय्ह तं आनेस्सथ कुमारं ति,* चू॰ वं॰ 66.67-68; – **सम्पहार** पु॰, तत्पु॰ स॰, हथियारों अथवा शस्त्रों का प्रहार – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुधसम्पहारो न साधु सिया,* थू॰ वं॰ 31(रो॰).

आयुधीय त्रि॰ / पु॰, [आयुधीय], हथियारों के सहारे जीविका कमाने वाला, योद्धा, सैनिक – **या** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *हुत्वायुधीया राजूनं अब्भन्तरपवत्तिनो, बलवन्ततरा जाता लद्धट्ठानन्तरा तदा,* चू॰ वं॰ 61.69.

आयुर पु॰, व्य॰ सं॰, वाराणसी के शासक माधव का एक सचिव – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"उपायेन तं तिकिच्छिस्सामी"ति आयुरञ्च पुक्कुसञ्चाति द्वे रञ्ञो पण्डितामच्चे आमन्तेत्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 3.298.

आयुसुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ के दो सुत्तों का शीर्षक, स॰ नि॰ 1(1).128; 129.

आयुस्स त्रि॰, आयु से व्यु॰ [आयुष्य], आयु को बढ़ाने वाला, स्वास्थ्यवर्धक – **स्सं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *छट्ठियन्तेहि चक्खु आदीहि हिते 'स्सो' होति, चक्खुस्सं, आयुस्सं,* मो॰ व्या॰ 4.71; – **स्सा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *धम्मा आयुस्सा,* अ॰ नि॰ 2(1).136.

आयुस्ससुत्त नपुं॰, अ॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, अ॰ नि॰ 2(1).136.

आयूहक त्रि॰, आयूह + क से व्यु॰, प्रबल प्रयास करने वाला, सक्रिय, उत्सुक – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महोसधो, ... वीरियवा आयूहको सङ्गाहको,* मि॰ प॰ 197.

आयूहति आ + √ऊह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [बौ॰ सं॰ आयूहति], **शा॰ अ॰,** प्रयास करता है, प्रयत्न करता है, कोशिश करता है, संघर्ष करता है, **ला॰ अ॰,** उत्पन्न करता है, उदित कराने हेतु प्रयास करता है, सामने लाता है, वृद्धि कराता है – *सो अप्पवत्तनत्थाय मग्गं आयूहति गवेसति भावेति बहुलीकरोति,* मि॰ प॰ 297; *आयूहति सब्बगत्तेभि जन्तु,* स॰ नि॰ 1(1).56; *नायूहती पारगतो हि सोव,* तदे॰; – **हामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यदाख्वाहं, आवुसो, आयूहामि तदास्सु निब्बुय्हामि,* स॰ नि॰ 1(1).2; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *पटिसन्धिजननत्थं आयूहन्ति ब्यापारं करोन्तीति,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.238; – **न्तो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, पु॰ प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, निशे॰, बिना किसी प्रयास के – *अप्पतिट्ठं ख्वाहं आवुसो, अनायूहं ओघमतरिन्ति,* स॰ नि॰ 1(1).1-2; *अनायूहन्ति अनायूहन्तो, अवायमन्तोति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.17; – **न्तं** वर्त॰ कृ॰, नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यंकिञ्चि कम्मं आयूहन्तं एवं जानाति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).350; – **तं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *जयो महाराज पराजयो च, आयूहतं अञ्ञतरस्स होति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.175; – **माना** स्त्री॰, वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *फस्सो फुसन्तोयेव, मनोसञ्चेतना आयूहमानाव, विञ्ञाणं विजानन्तमेव,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).218; – **युहे** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *कोयं मज्झे समुद्दस्मिं, अपस्सं तीरमायुहे,* जा॰ अट्ठ॰ 6.42; ... *आयूहति विरियं करोति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.42; – **हि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *ननु ..., देवदत्तो ... कप्पट्ठियं कम्मं आयूहि,* मि॰ प॰ 203; – **हिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अपब्बजितोपि अयं मोघपुरिसो कप्पट्ठियमेव कम्मं आयूहिस्सतीति कारुञ्ञेन देवदत्तं पब्बाजेसी'ति,* मि॰ प॰ 117; – **हित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *कुसलं पन आयूहित्वा ... होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.193; – **हितब्ब** सं॰ कृ॰ (स॰ प॰ के अन्त॰) – *इदानि आयूहितब्बकम्मानं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.196; – **हियमानं** वर्त॰ कृ॰, कर्म॰ वा॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कम्मञ्हि आयूहियमानमेव पटिसन्धिं आकड्ढति नाम,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.99.

आयूहन नपुं॰, आ + √ऊह से व्यु॰, क॰ ना॰, **क.** आत्मप्रयास, पुरुषार्थ, या प्रयत्न करना, **ख.** उत्पन्न कराना, उदित

कराना, सञ्चित कराना – **नं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयूहनन्ति समीहनं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.292; *आयूहनन्ति सङ्खारानं अत्थाय पयोगकरणं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.113; *मनोसञ्चेतनाय आयूहनमेव,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प॰) 1(1).219; – **नं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयूहनं पटिसन्धिं, आणं आदीनवे इदं,* पटि॰ म॰ 54; – **ना** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयूहना वुट्ठातीति – गोत्रभु,* पटि॰ म॰ 60; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयूहने आदीनवं दिस्वा,* पटि॰ म॰ 387; *पिण्डकरणत्थायाति आयूहनवसेन रासिकरणत्थाय,* अ॰ नि॰ टी॰ 2.93; – **ट्ठ** पु॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आयूहनार्थ], प्रयास या प्रयत्न करने का अर्थ – **ट्ठो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समुदयदस्सनेनेव आयूहनट्ठो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.88; – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चेतना पधाना आयूहनट्ठेन पाकटत्ता,* विभ॰ अट्ठ॰ 19; – **नावसान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, प्रयास का अन्त अथवा प्रयत्न की समाप्ति – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयूहनावसाने वुत्तचेतना भवोति,* विभ॰ अट्ठ॰ 183; – **काल** पु॰, तत्पु॰ स॰, प्रयास अथवा प्रयत्न करने का समय – **लो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयूहनकालो अञ्ञो विपच्चनकालो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 325; – **ट्ठिति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, प्रयास करने की अवस्था, प्रयत्नशीलता, ऐसी स्थिति, जो प्रयास करने के अनुरूप हो – **ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जा सङ्खारानं... आयूहनट्ठिति,* पटि॰ म॰ 44; *आयूहनट्ठितीति आह, आयूहनभूता ठितीति अत्थो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.202; – **पच्चय** पु॰, प्रयास के कारण – **या** प॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰ – *ये आयूहनपच्चया किलेसा निब्बत्तेय्युं,* पटि॰ म॰ 387; – **रस** त्रि॰, ब॰ स॰, प्रयास का कार्य सम्पादित करने वाला, वह, जिसका सारतत्त्व अथवा प्रधान कार्य प्रयत्न करना हो – **सा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चेतना... आयूहनरसा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 157; – **रसता** स्त्री॰, भाव॰, प्रधान कार्य के रूप में प्रयत्नशीलता – *आयुहनरसता पन कुसलाकुसलेसु एव होति, ... एवमस्सा आयूहनरसता वेदितब्बा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 157; – **लक्खण** त्रि॰, ब॰ स॰, प्रयत्नशीलता अथवा उद्योगी होने के लक्षण वाला, वह, जिसकी मुख्य पहचान उसका प्रयत्नशील रहना हो – **णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भवस्स आयूहनलक्खणं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.60; – **सङ्खार** पु॰, तत्पु॰ स॰, प्रयत्न-विषयिणी चेतना, प्रयास करने के लिए मन में हो रहा ऊहापोह – **रा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *छसु जवनेसु चेतना आयूहनसङ्खारा नाम,* विभ॰ अट्ठ॰ 183; – **समङ्गिता** स्त्री॰, भाव॰, प्रयत्नशीलता से परिपूर्ण रहने की स्थिति, पांच प्रकार की परिपूर्णताओं में से एक – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चविधा समङ्गिता – आयूहनसमङ्गिता, चेतनासमङ्गिता, कम्मसमङ्गिता, विपाकसमङ्गिता, उपट्ठानसमङ्गितानि,* विभ॰ अट्ठ॰ 413.

आयूहना स्त्री॰, आ + √ऊह से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, उपरिवत् – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयूहनाति आयतिं पटिसन्धिहेतुभूतं कम्मं, तञ्हि अभिसङ्खरणट्ठेन आयूहनाति वुच्चति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.81.

आयूहनी 1. स्त्री॰, प्रयत्न, प्रयास, कोशिश, उद्योगशीलता, अध्यवसाय, 2. त्रि॰, प्रयास कराने वाला / वाली, प्रेरित करने वाली, कोशिश कराने वाली – **नी** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स तस्स पटिलाभत्थाय सत्ते आयूहापेतीति आयूहिनी,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 390.

आयूहापेति आ + √ऊह का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रयास कराता है, कोशिश करने हेतु प्रेरित करता है – **ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स तस्स पटिलाभत्थाय सत्ते आयूहापेतीति आयूहिनी,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 390.

आयूहित त्रि॰, आ + √ऊह से व्यु॰, भू॰ क॰ कृ॰, **शा॰ अ॰**, वह, जिसके लिए सुदृढ़ प्रयास किया गया हो, उत्पादित, सञ्चित, **ला॰ अ॰**, सक्रिय, व्यस्त – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयूहितो अत्थसाधनताय अपचितिं न करोति,* मि॰ प॰ 175; – **तं**[1] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अतीते कप्पकोटिसतसहस्समत्थकेपि हि आयूहितं कम्मं एतरहि पच्चयो होति,* विभ॰ अट्ठ॰ 24; – **तं**[2] नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सङ्गतं पकप्पितं आयूहितं करोन्तेन करीयति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप.प॰) 3.221; – **ते** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कम्मे आयूहिते,* अभि॰ अव॰ 13.

आयोग पु॰, आ + √युज से व्यु॰ [आयोग], **क. शा॰ अ॰**, एक जुट कर देना, बांध देना, बन्धन, जोड़, जुड़ाव, एक जुट हो जाना, **ख.** विनय में विशेष अर्थ, गद्दीदार आसन – **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कथं नु खो आयोगो कातब्बो'ति,* चूळव॰ 256; – **गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुजानामि, भिक्खवे, आयोगन्ति,* चूळव॰ 256; – **गेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन खो पन समयेन अञ्ञतरो भिक्खु गिलानो होति, तस्स विना आयोगेन न फासु होति,* चूळव॰ 256; – **गे**[1] द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आयोगे धूमनेत्ते च, अथोपि दीपधारके,* अप॰ 1.333; – **गे**[2] सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनापत्ति आयोगे,* पाचि॰ 224; **ग. ला॰ अ॰**, प्रयास, अध्यवसाय, व्यावहारिक अभ्यास, सुदृढ़ उद्योग, प्रयोग में लाना – **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ –

अधिचित्ते च आयोगो, एतं बुद्धानसासन'न्ति, दी॰ नि॰ 2.38; ध॰ प॰ 185; *आयोगोति पयोगकरणं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.137; – **गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा तिह, भिक्खवे, तुम्हेपि अकुसलं पजहथ, कुसलेसु धम्मेसु आयोगं करोथ,* म॰ नि॰ 1.176; **घ. ला. अ.,** (केवल स॰ प॰ में प्राप्त) ब्याज के साथ ऋण – *तं तं आयोगग्गहणेन वा इणं गहेत्वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.143; – **पट्ट** पु॰, तत्पु॰ स॰, वस्त्रखण्ड, कपड़े की पट्टी – **ट्टो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उक्कट्ठस्स नेव अपस्सेनं, न दुस्सपल्लत्थिका, न आयोगपट्टो वट्टति,* विसुद्धि॰ 1.78; – **ट्टं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयोगपट्टं अहमदासिं, भिक्खुनो पिण्डाय चरन्तस्स,* वि॰ व॰ 546; *आयोगपट्टं अहमदासिं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 119; – **पल्लत्थिका** स्त्री॰, [आयोगपर्यस्तिका, बौ॰ सं॰ आयोगपल्लत्थिक], दोनों घुटनों को मोड़कर लगाया गया पालथी का आसन, पद्मासन, कमलासन – **का** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुस्सपल्लत्थिकायाति एत्थ आयोगपल्लत्थिकापि दुस्सपल्लत्थिका एव,* पाचि॰ अट्ठ॰ 152; – **वत्त** नपुं॰, अनुरक्त, निष्ठावान, समर्पित – **त्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कसावरत्तनिवासनो कण्णे तालपण्णं पिळन्धित्वा एकेन आयोगवत्तेन गीतं गायन्तो राजङ्गणेन पायासि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.395.

आयोधन नपुं॰, आ + √युध से व्यु॰ [आयोधन], **क.** युद्ध, लड़ाई, संग्राम, **ख.** युद्धभूमि, रणभूमि – *तदा माळवरायरा अग्गहेसि मुण्डिक्कारं कत्वान आयोधनं बली,* चू॰ वं॰ 76.267.

आर[1] पु॰, सुई, सुआ – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरोच सत्थि च आरसत्थि,* बाला॰ 109.

आर[2] नपुं॰, [आर], पीतल – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरस्सेव कूटो आरकूटो, आरं पित्तलं कूटयति थूपीकरोति वा रीरित्थी आरकुटो वा,*, अभि॰ प॰ 492 पर सूची.

आरक त्रि॰, आरा से व्यु॰, दूरवर्ती, दूर में विद्यमान, समीप में नहीं स्थित – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरकाहं, ..., अनुत्तराय विज्जाचरणसम्पदाय साचरियको'ति,* दी॰ नि॰ 1.89; *सीलब्बतपरामासो आरको होति,* अ॰ नि॰ 2(2).273; – **का**[1] स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सक्कायदिट्ठि आरका होति,* अ॰ नि॰ 2(2).273; – **का**[2] पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरकास्स होन्ति पापका अकुसला धम्मा,* म॰ नि॰ 1.352; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).47.

आरककिलेस त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसके चित्त से क्लेश बहुत दूर चले गए हैं, क्लेशों से रहित – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरहन्ति आरककिलेसो, दूरकिलेसो पहीनकिलेसोति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).46.

आरकण्टक पु॰/नपुं॰, **शा॰ अ॰,** सुई का नुकीला अग्रभाग, **विशेष अर्थ**, ग्रन्थों के लिखने आदि में प्रयुक्त तीक्ष्ण अग्रभाग वाली कलम – **कं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरकण्टकं नाम, अयं पिप्फलको नाम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).405; *आरकण्टकं नाम पोत्थकादि अभिसङ्खारणत्थं कतदीघमुख सत्थकन्ति वदन्ति,* वि॰ वि॰ टी॰ 1.147; – **कं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरकण्टकं, पिप्फलिकं, नखच्छेदनं सूचिं, ... सब्बं अदासि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.201; – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरकण्टकेपि वट्टमणिकं वा अञ्ञं वा वण्णमट्ठं न वट्टति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.234; – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरकण्टको पोत्थकादि करणसत्थकजाति,* वजिर॰ टी॰ 109.

आरकता स्त्री॰, आरक का भाव॰, दूर रखने की अवस्था, दूरवर्तिता – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किलेसेहि आरकताय अरियं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.158.

आरकत्त नपुं॰, आरक का भाव॰, उपरिवत्, **क.** अरहा की व्यु॰ के सन्दर्भ में प्रयुक्त – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्तन्नं धम्मानं आरकत्ता अरहा होती'ति,* अ॰ नि॰ 2(2).273; *किलेसेहि आरकत्तादिना अरहं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.339; **ख.** 'अरिय' की व्यु॰ के सन्दर्भ में प्रयुक्त, – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किलेसेहि आरकत्ता अरियो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.225; *किलेसानं आरकत्ता अरियो होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).220.

आरकभाव पु॰, उपरिवत्, – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा इमस्स साचरियकस्स तेसं पटिपत्तितो आरकभावं दस्सेतुं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.221.

आरका अ॰, प॰/सप्त॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰, आरक का प॰ वि॰ [आरकात्], – *आरा दूरा च आरका,* अभि॰ प॰ 1157; **1.** क्रि॰ वि॰ के रूप में, दूर से, दूर में, दूरी से, फासले पर – *आरका परिवज्जेय्य, गूथट्ठानंव पावुसे,* थेरगा॰ 1156; *तं आरका दूरतोव परिवज्जेय्य,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.412; ..., *भिक्खुं सइन्दा देवा सब्रह्मका सपजापतिका आरकाव नमस्सन्ति,* स॰ नि॰ 2(1).84; *आरकाव नमस्सन्तीति दूरतोव नमस्सन्ति, दूरेपि ठितं नमस्सन्तियेव आयस्मन्तं नीतत्थेरं विय,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.263; **2.** पूर्वसर्ग के रूप में, **क.** द्वि॰ वि॰ में अन्त होने वाले ना॰ प॰ के साथ, दूर में, फासले पर, दूरस्थ – *आरका इमं धम्मविनयं,* क॰ व्या॰ 277; **ख.** तृ॰/प॰ वि॰ में अन्त होने वाले ना॰ प॰ के साथ – *आरकाव सङ्घम्हा, सङ्घो च तेन,* चूळव॰ 396; **ग.** ष॰ वि॰ में अन्त होने वाले ना॰ प॰ के साथ, दूर में, दूरस्थ – *तस्स पुरिसस्स*

आरकावस्स चेतना आरका पत्थना आरका पणिधि, स॰ नि॰ 1(2).88; *आरकावस्साति दूरेयेव भवेय्य,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.98.

आरकूट पु॰/नपुं॰, [आरकूट], तीन प्रकार की मिश्रित धातुओं में एक, पीतल – **टो/टं** पु॰/नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रीरित्थी आरकुटो वा,* अभि॰ प॰ 492; *कंसलोहं, वट्टलोहं, आरकूटन्ति तीणि कित्तिमलोहानि नाम,* विभ॰ अट्ठ॰ 60; *तीणि हि कित्तिमलोहानि कंसलोहं, वट्टलोहं आरकूटन्ति ... रसकतम्बे मिस्सेत्वा कतं आरकूटं,* कङ्खा॰ अभि॰ टी॰ 390; – **मय** त्रि॰, पीतल से बना हुआ – **यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरकूटमयं सुवण्णवण्णं आभरणजातं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.177; – **लोह** नपुं॰, कर्म॰ स॰, तीन प्रकार की मिश्रित लौहधातुओं में से एक – **हं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरकूटलोहन्ति सुवण्णवण्णो कित्तिमलोहविसेसो,* विनया॰ टी॰ 1.68.

आरक्ख[1]/आरक्खा पु॰/स्त्री॰, [आरक्षा, स्त्री॰], सुरक्षा, संधारण, देखरेख, रखवाली, निगरानी – **क्खो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरक्खो वा सो ते न भविस्सती'ति,* पारा॰ 18; *आरक्खोति अन्तो च बहि च रत्तिञ्च दिवा च आरक्खणं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.162; *मच्छरियं पटिच्च आरक्खो,* दी॰ नि॰ 2.46; – **क्खा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आचरियेन अन्तेवासिम्हि सततं समितं आरक्खा उपट्ठपेतब्बा,* मि॰ प॰ 105; – **क्खं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरक्खं याचति,* पाचि॰ 301; *सत्तानुरक्खणं, महाराज, परित्तं अत्तना कतेन आरक्खं जहति,* मि॰ प॰ 153; – **क्खेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं आरक्खेन गुत्तिया सम्पादेस्साम,* अ॰ नि॰ 2(1).33; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरक्खस्स, यदिदं मच्छरियं,* दी॰ नि॰ 2.46; – **क्खाय[1]** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भगवतो ओवादे ठितानं एदिसाय आरक्खाय करणीयं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.46; – **क्खाय[2]** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *छन्नं इन्द्रियानं आरक्खाय सिक्खति,* स॰ नि॰ 2(2).179-80; – **क्खे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बसो आरक्खे असति,* दी॰ नि॰ 2.46; स॰ प॰ के अन्त॰, *आरक्खत्थाय भण्डस्स, निधानकुसलं नरं,* अप॰ 1.41.

आरक्ख[2] पु॰, रक्षा करने वाला, रखवाला, देखरेख रखने वाला – **क्खो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रथस्स आरक्खो सारथि नाम योग्गियो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.158; *पिटकत्तयधम्मभण्डस्स आरक्खो रक्खको पालको,* अप॰ अट्ठ॰ 1.296.

आरक्खक त्रि॰, आ + √रक्ख + क से व्यु॰ [आरक्षक], शा॰ अ॰, रखवाला, रक्षा करने वाला, संधारण करने वाला ... **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बे आरक्खका देव सुखं यन्तु नवं नवं,* सद्द॰ 3.928; *आरक्खका पटिच्छन्ना हुत्वा तस्स सन्तिकं आगच्छन्ते ओलोकेन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.27; – **के** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पटिसत्तुं निवारेतुं योजेत्वारक्खके जने,* चू॰ वं॰ 94.8; *आरक्खके खग्गेन पहरन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.135; **विशेष अर्थ,** पु॰, विहार में नियुक्त रक्षाधिकारी – **क्खके** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरक्खके च हत्थिभण्डे च उपट्ठापेसि,* अप॰ अट्ठ॰ 1.85; – **कानं** च॰/ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *लाभग्गामं अदा तस्सारक्खकानं महेसिया,* चू॰ वं॰ 42. 61; – **जेट्ठक** पु॰, तत्पु॰ स॰, रक्षा करने वालों के बीच सभी से वरिष्ठ या ज्येष्ठ – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरक्खकजेट्ठको एकोव नदन्तो वग्गन्तो पहरित्वा, ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.278; – **देवता** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, रक्षा करने वाला देवता, अधिष्ठाता देवता – **ता** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तेसं सुत्वा आरक्खदेवता धि–कारं अकंसु,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.192; – **पुरिस** पु॰, कर्म॰ स॰, द्वारपाल, रखवाला, सिपाही – **सेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चोरो पापधम्मो घरसन्धिं छिन्दन्तो सन्धिमुखे आरक्खकपुरिसेहि गहितो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.253.

आरक्खकम्मनाथ पु॰, व्य॰ सं॰, एक प्रधान रक्षाधिकारी का नाम – **थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरक्खकम्मनाथं च तथा कञ्चुकिनायकं,* चू॰ वं॰ 72.58.

आरक्खकारण/आरक्खाकरण 1. नपुं॰, रखवाली या सुरक्षा करने का काम, रखवाली, सुरक्षा-कर्म – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उप्पलवण्णस्स आचिक्खि दीपं आरक्खकारणं,* दी॰ वं॰ 9.24; स॰ प॰ के रूप में, – *आरक्खाकरणत्थाय दक्खिणस्मिं दिसन्तरे,* चू॰ वं॰ 88.22; 2. – **णा** प॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰, रखवाली करने के कारण से – *आरक्खाधिकरणन्ति आरक्खकारणा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).369.

आरक्खकिच्च नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आरक्षाकृत्य], रक्षा करने का कार्य, रखवाली का काम – **च्चं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भगवतो वा आरक्खकिच्चं अत्थीति?,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.125.

आरक्खगहणत्थ पु॰, तत्पु॰ स॰, निगरानी अथवा देखभाल रखने का प्रयोजन – **त्थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰, निगरानी रखने के लिए – *देवदत्तो सत्थरि पदुट्ठचित्तो अनत्थम्पि कातुं उपक्कमेय्या'ति आरक्खग्गहणत्थं* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.125.

आरक्खगोचर पु., कर्म. स./त्रि., ब. स., अच्छी तरह से रक्षित अथवा नियन्त्रित इन्द्रियों द्वारा ग्राह्य विषयों का क्षेत्र, इन्द्रियों द्वारा ग्राह्य रूप आदि ऐसे विषय जिनके ग्रहण के लिए इन्द्रियों के द्वार सुरक्षित कर लिए गए हैं, वह भिक्षु, जिसने अपने इन्द्रिय द्वारों का रूप आदि विषयों के अनियन्त्रित ग्रहण पर नियन्त्रण कर लिया है – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *यो भिक्खु अन्तरघरं पविट्ठो ... न दिसाविदिसा पेक्खमानो गच्छति, अयं आरक्खगोचरो,* इतिवु. अट्ठ. 269; *गोचरो पन उपनिस्सयगोचरो आरक्खगोचरो उपनिबन्धगोचरोति तिविधो,* उदा. अट्ठ. 182.

आरक्खट्ठान नपुं., तत्पु. स. [आरक्षास्थान], 1. सैनिकों अथवा रक्षकों की चौकी, वह स्थान, जहां रक्षक अथवा रक्षासाधन मौजूद हों, 2. रक्षा करने योग्य स्थान – **नं**[1] प्र. वि., ए. व. – *इदं पन अरञ्ञे आरक्खट्ठानं नाम सुङ्कघाततोपि गरुकतरं,* पारा. अट्ठ. 1.275; – **नं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *अभिपारको अत्तनो आरक्खट्ठानं गच्छन्तो,* जा. अट्ठ. 5.201; – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *आरक्खट्ठाने बहि सुनखानं ओकासो नत्थि,* जा. अट्ठ. 1.176.

आरक्खति आ + √रक्ख का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आरक्षति], रक्षा करता है, संधारण करता है, निगरानी रखता है, देखभाल करता है – **तो** पु., वर्त. कृ., ष. वि., ए. व. – *तस्स एवं आरक्खतो गोपयतो ते भोगा विप्पलुज्जन्ति,* महानि. 113; – **क्खिं** अद्य., उ. पु., ए. व. – *नारक्खिं मम जीवितं,* चरिया. (पृ.) 390; *जीवितं पन नारक्खिं,* चरिया. अट्ठ. 141; – **क्खितुं** निमि. कृ. – *आरक्खितुं जनपदं सम्पन्नबलवाहनं,* म. वं. 24.2; *आरक्खितुं जनपदं ति आदमिळपरिस्सया आदीघवापितो वा ओरं रोहणजनपदं रक्खणत्थाय राजपुत्तं तिस्सं दीघवापिम्हि वासयी ति अत्थो,* म. वं. टी. 422 (ना.).

आरक्खदायक पु., व्य. सं., एक स्थविर का नाम, अप. की कतिपय गाथाओं का रचयिता एक कवि-स्थविर – *इत्थं सुदं आयस्मा आरक्खदायको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप. 1.225; अप. 1.272.

आरक्खदुक्खमूल नपुं., तत्पु. स., रक्षा करने के दुख की जड़, रखवाली करने अथवा नियंत्रित करने के दुख का मूल कारण – **लं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आरक्खदुक्खमूलं उपादानं सम्पत्तिविसयगहणभावतो,* विसुद्धि. महाटी. 2.308.

आरक्खदेवता स्त्री., कर्म. स., अधिष्ठाता देवता, रक्षक देवता – **ता** प्र. वि., ब. व. – *ततो आरक्खदेवता, अथञ्ञापि परचित्तविदुनियो देवता,* पारा. अट्ठ. 1.165; *आरक्खदेवताति तस्स आरक्खत्थाय ठिता देवता,* सारत्थ. टी. 2.13.

आरक्खन/आरक्खण नपुं., आ + √रक्ख से व्यु., क्रि. ना. [आरक्षण], रखवाली, सुरक्षा, देखभाल – **णं**[1] प्र. वि., ए. व. – *आरक्खोति अन्तो च बहि च रत्तिञ्च दिवा च आरक्खणं,* पारा. अट्ठ. 1.162; – **णं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *उप्पन्नानं भोगानं आरक्खणञ्च करोति परिभोगनिमित्तञ्च,* नेत्ति. 36; – **णे** सप्त. वि., ए. व. – *आरक्खणे असन्तम्हि, लद्धं लद्धं विनस्सति,* अभि. अव. 884; – **त्थ** पु., रक्षा का प्रयोजन – **त्थाय** च. वि., ए. व. – *बोधिसत्तस्स आरक्खणत्थाय उपगन्त्वा सिरीगब्भं पविट्ठा,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.131; – **ट्ठान** नपुं., तत्पु. स. [आरक्षणस्थान], रक्षा प्रदान करने का स्थान, रक्षा करने योग्य स्थान, नियन्त्रित करने योग्य विषय – **नं** प्र. वि., ए. व. – *इदमारक्खणट्ठानं गरुकं सुङ्कघाततो,* विन. वि. 172.

आरक्खनिमित्त नपुं., तत्पु. स., संधारण अथवा संरक्षण वाला कारण, सुरक्षित बनाए रखने का कारण – *उप्पन्नानं भोगानं आरक्खनिमित्तं परिभोगनिमित्तञ्च, पमादं आपज्जति ...,* नेत्ति. 35.

आरक्खनिरोध पु., तत्पु. स. [आरक्षानिरोध], रखवाली अथवा निगरानी की समाप्ति या अन्त – **धा** प. वि., ए. व. – *सब्बसो आरक्खे असति आरक्खनिरोधा,* दी. नि. 2.46.

आरक्खपच्चुपट्ठान त्रि., ब. स., सुरक्षा अथवा संधारण के रूप में उदित होने वाला, सुरक्षा को उपस्थित कराने वाला – **ना** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *सति ... आरक्खपच्चुपट्ठाना,* विसुद्धि. 1.156; *किलेसेहि आरक्खा हुत्वा पच्चुपतिट्ठति, ततो वा आरक्खं पच्चुपट्ठपेतीति आरक्खपच्चुपट्ठाना,* विसुद्धि. महाटी. 1.175.

आरक्खपञ्ञत्ति स्त्री., तत्पु. स., सुरक्षा की संज्ञा, संरक्षण का नाम – **त्ति** प्र. वि., ए. व. – *आरक्खपञ्ञत्ति कुसलानं धम्मानं,* नेत्ति. 51.

आरक्खपरिवार पु., तत्पु. स., अङ्गरक्षक, रक्षकों का घेरा – **रेन** तृ. वि., ए. व. – *तत्थ अभिसरेनाति आरक्खपरिवारेन,* जा. अट्ठ. 5.370.

आरक्खपुरिस पु., कर्म. स., रक्षा करने वाला पुरुष, संरक्षक, सिपाही, सैनिक – **सो** प्र. वि., ए. व. – *आरक्खकपुरिसोपि सयितो कुमारो,* सु. नि. अट्ठ. 1.83; – **सा** प्र. वि., ब. व. – *पुनदिवसे आरक्खपुरिसा आगन्त्वा*

तं पवत्तिं रञ्ञो आरोचेसुं, जा॰ अट्ठ॰ 4.27; – **सेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरक्खपुरिसेहि अनुबद्धो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.260.

आरक्खमनुस्स पु॰, कर्म॰ स॰, उपरिवत् – **स्सा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरक्खमनुस्सा रत्तिं ओभासं दिस्वा, महेसक्खा देवता ... करिंसु,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.24; – **स्से** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरक्खमनुस्से उपसङ्कमित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 2.272; – **स्सेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरक्खमनुस्सेहि निरोकासे ठाने खग्गं सन्नय्हित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.257; – **स्सानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरक्खमनुस्सानं भयजननत्थं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.436.

आरक्खमूलक त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसकी जड़ में रक्षा अथवा आरक्षण का भाव रहे, असुरक्षा की भावना से जनित – **कं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरक्खमूलकम्पि दुक्खं दोमनस्सं पटिसंवेदेति,* महानि॰ 113; *आरक्खमूलकन्ति रक्खणमूलकम्पि,* महानि॰ अट्ठ॰ 222.

आरक्खयट्ठि स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आरक्षायष्टि], अपनी रक्षा के लिए रखी जाने वाली छड़ी या लाठी – **ट्ठिं** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दण्डोति आरक्खयट्ठिं सन्धाय वुत्तं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.341; – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उस्सीसके ठपितआरक्खयट्ठियं पतिट्ठासि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.337; *मणिम्हि दिन्ने आरक्खयट्ठियं पतिट्ठहि,* तदे॰.

आरक्खसंविधान नपुं॰, तत्पु॰ स॰, रक्षा का प्रबन्ध, संरक्षण का प्रदान – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरक्खसंविधानेन रक्खितत्ता रक्खितं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.241; स॰ प॰ के अन्त॰ ... *देवताहि कतारक्खसंविधानो,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 151.

आरक्खसति त्रि॰, तत्पु॰ स॰, सुरक्षित रखने की जागरूकता से युक्त – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *विहरथ आरक्खसतिनो,* अ॰ नि॰ 2(1).129; *आरक्खसतिनोति द्वाररक्खिकाय सतिया समन्नागता,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.45.

आरक्खसम्पदा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, आरक्षण अथवा चित्त की जागरूकता की सम्पत्ति – **दा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कतमा च, ब्यग्घपज्ज, आरक्खसम्पदा? इध, ब्यग्घपज्ज, कुलपुत्तस्स भोगा होन्ति उट्ठानविरियाधिगता बाहाबलपरिचिता, सेदावक्खित्ता, धम्मिका धम्मलद्धा,* अ॰ नि॰ 3(1).110.

आरक्खसम्पन्न त्रि॰, तत्पु॰ स॰, रक्षा के साधनों से युक्त, अच्छी तरह से रक्षित, हर तरह के रक्षा-साधनों से भरपूर – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गहपति ... अड्ढो महद्धनो महाभोगो, सो च आरक्खसम्पन्नो,* स॰ नि॰ 2(1).103; *आरक्खसम्पन्नोति अन्तो आरक्खेन चेव बहिआरक्खेन च समन्नागतो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.274; – **न्ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सक्यराजूनं मङ्गलपोक्खरणी अहोसि पासादिका आरक्खसम्पन्ना,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.1.

आरक्खसारथि पु॰, कर्म॰ स॰, **शा॰ अ॰,** रक्षक सारथि, सावधान मन वाला रथ चालक, **ला॰ अ॰,** स्मृति, चित्त की जागरूकता, अप्रमाद – **थि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हिरी ईसा मनो योत्तं, सति आरक्खसारथि,* स॰ नि॰ 3(1).6; *आरक्खसारथीति मग्गसम्पयुत्ता सति आरक्खसारथि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.158.

आरक्खसुत्त नपुं॰, अ॰ नि॰ का एक सुत्त जिसमें चित्त की जागरूकता को सर्वोत्तम सुरक्षा कहा गया है, अ॰ नि॰ 1(2).137.

आरक्खाधिकरणं अ॰, क्रि॰ वि॰, चित्त की जागरुकता के फलस्वरूप, चित्त की सुरक्षा करने के कारण – *आरक्खाधिकरणं दण्डादानसत्थादान ... अनेके पापका अकुसला धम्मा सम्भवन्ति,* दी॰ नि॰ 2.46; *आरक्खाधिकरणन्ति भावनपुंसकं, आरक्खहेतूति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.80.

आरक्खित त्रि॰, आ + √रक्ख का भू॰ क॰ कृ॰ [आरक्षित], सुरक्षित, वह जिसकी पूरी तरह से रक्षा की गई है, पूर्णतया रक्षित – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरक्खितो अमच्चेहि यथाट्ठानं महीपति,* म॰ वं॰ 29.23; *आरक्खितो गहितारक्खो महीपति,* म॰ वं॰ अट्ठ॰ 478 (ना॰).

आरक्खित्थी स्त्री॰, कर्म॰ स॰, रक्षा करने का काम कर रही नारी – **त्थिया** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कचवरं सङ्कड्ढित्वा आरक्खित्थिया उपरि छड्डेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.281.

आरग्ग नपुं॰, [आराग्र], सुई का नुकीला शिरा, सुई का अग्रभाग, टेकुआ का अग्रभाग – **ग्गं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरग्गमिव कंसपत्तं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 407; – **ग्गेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बत्थ आरग्गेन लेखा दिन्ना होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.232; *आरग्गेन निखादनग्गेन,* वजिर॰ टी॰ 109; – **ग्गा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *पातितो, सासपोरिव आरग्गा,* ध॰ प॰ 407; *आरग्गाति यस्सेते रागादयो किलेसा, अयञ्च परगुणमक्खनलक्खणो मक्खो आरग्गा सासपो विय पातितो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.387; – **ग्गे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरग्गेरिव सासपो,* ध॰ प॰ 401; *यथा च आरग्गे सासपो न उपलिम्पति न सण्ठाति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.379; – **कोटि** स्त्री॰, सुई का नुकीला शिरा – **या** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरग्गकोटिया पतनमत्ते ओकासे,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.40; – **निखुदनमत्त** त्रि॰, सुई के अग्रभाग की चुभन मात्र वाला – **त्ते** नपुं॰,

सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरग्गनिसुदनमत्ते ठाने उपरिमकोटिया,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.34.

आरचयारचया/आरजयारजया व्यु॰, संदिग्ध, संभवतः, आ + रञ्ज के पू॰ का॰ कृ॰ की आवृत्ति से व्यु॰, पुनः पुनः खींचकर, पुनः पुनः काटकर, पुनः पुनः छिन्न भिन्न कर – *गहेत्वा, आरजयारजया विहनन्ति,* सु॰ नि॰ 678; ... *आरजयारजया विहनन्तीति ... एककमेकं, कोटिं छिन्देत्वा विहनन्ति, छिन्नछिन्ना कोटि पुनप्पुनं समुट्ठाति, आरचयारचया'तिपि पाठो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.182.

आरज्झति आ + √राध का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आराध्यति], सम्पन्न करता है, कार्यान्वित करता है, पूरा करता है – *रञ्ञो भाग्यमारज्झति,* मो॰ व्या॰ 2.27.

आरञ्जति आ + √रञ्ज का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, भेदता है, छिन्न-भिन्न कर देता है, खरोचता है – *नागो दन्तेहि भूमिं रञ्जति, आरञ्जति,* सद्द॰ 2.349.

आरञ्जनट्ठान नपुं॰, आ + √रञ्ज से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, उच्छेद, तोड़ या समाप्ति का स्थान – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सिक्खत्तयसङ्गहं ... तेभूमकधम्मानं आरञ्जनट्ठानन्ति पि वुच्चती'ति,* सद्द॰ 2.349; नेत्ति॰ अट्ठ॰ 191.

आरञ्जित त्रि॰, आ + √रञ्ज का भू॰ क॰ कृ॰, तोड़ दिया गया, वह, जिसे छिन्न-भिन्न कर दिया गया है, काट डाला गया – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स महावजिरञाणसब्बञ्ञुतञ्ञाणदन्तेहि आरञ्जितं,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 191; – **तानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *उच्चा च दन्तेहि आरञ्जितानि,* म॰ नि॰ 1.239; *आरञ्जितानीति सत्तट्ठरतनुब्बेधे वटरुक्खादीनं खन्धप्पदेसे फरसुना पहतट्ठानं विय दाट्ठाहि छिन्नट्ठानं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).100; – **ट्ठान** नपुं॰, कर्म॰ स॰, काट डाला गया स्थान, विनष्ट कर दिया गया तत्त्व – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथागतस्स ञाणदाठाय आरञ्जितट्ठानं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).117.

आरञ्ञ त्रि॰, अरञ्ञ से व्यु॰ [आरण्य], वन के साथ जुड़ा हुआ, अरण्य से सम्बद्ध, जंगली, वनवासी – **ञ्ञं**[1] पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कदाहं नन्दं पस्सेय्यं, आरञ्ञं पंसुकूलिकं,* स॰ नि॰ 1(2).255; – **ञ्ञं**[2] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरञ्ञं रुक्खमूलं,* पु॰ प॰ 169; – **देव** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आरण्यदेव], वन का देवता – **वा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरञ्ञदेवा तरुपब्बता च, महिंसु नेकेहि सुविम्हयेहि,* समन्त॰ 492; – **वन** नपुं॰, घना जंगल, बीहड़ जंगल – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुदालपिटकं आदाय अरञ्ञवनं अज्झोगाहति,* दी॰ नि॰ 1.88.

आरञ्ञक/आरञ्ञिक त्रि॰, अरञ्ञ से व्यु॰ [आरण्यक], **शा॰ अ॰,** अरण्य अथवा वन से सम्बन्धित (शील, व्रत आदि) वन में स्थित (विहार, निवासस्थान) वन में उत्पन्न अथवा वन में रहने वाला (नाग, मृग, सिंह आदि), **ला॰ अ॰,** आरञ्ञक-धुतङ्ग को पालन कर रहा, वन में एकान्तवास की चर्या कर रहा तपस्वी भिक्षु अथवा स्थविर – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरञ्ञको विहारो,* मो॰ व्या॰ 4.25; *यो इच्छति, आरञ्ञिको होतु,* चूळव॰ 336; *आरञ्ञिको होतीति गामन्तसेनासनं पटिक्खिपित्वा आरञ्ञिकधुतङ्गवसेन अरञ्ञवासिको होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.159; *सेय्यथापि, सारिपुत्त, आरञ्ञको मिगो मनुस्से दिस्वा ... थलेन थलं संपतति,* म॰ नि॰ 1.112-113; *आरञ्ञकोति अरञ्ञे जातवुड्ढो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).359; *"इमं गामं निस्साय कोचि आरञ्ञको विहारो अत्थी"ति पुच्छि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.9; *आरञ्ञिकोति समादिन्नआरञ्ञिकधुतङ्गो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.69; – **कं**[1] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरञ्ञकं नाम सेनासनं पञ्चधनुसतिकं पच्छिमं,* पारा॰ 391; – **कं**[2] पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरञ्ञकं नागं अतिपस्सित्वा,* म॰ नि॰, 3.173; – **कं**[3] नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरञ्ञकं सेनासनं अगमंसु,* पाचि॰ 239; – **केन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुजानामि, भिक्खवे, आरञ्ञिकेन ... अनिस्सितेन वत्थुं,* महाव॰ 117; – **स्स** च॰/ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरञ्ञिकस्स एकस्सारञ्ञे सेरिविहारेन,* म॰ नि॰ 2.143; – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तिंसमत्ता पावेय्यका भिक्खू, सब्बे आरञ्ञिका, सब्बे ... संभावेतुं,* महाव॰ 330; *धुतङ्गसमादानवसेन आरञ्ञिका, न अरञ्ञवासमत्तेन,* महाव॰ अट्ठ॰ 365; – **कानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यानि खो पन तानि आरञ्ञकानि सेनासनानि सासङ्कसम्मतानि सप्पटिभयानि,* पारा॰ 391; – **के** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पस्सतारञ्ञके भिक्खू, अज्झोगाळ्हे धुते गुणे,* मि॰ प॰ 316; – **केहि** पु॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यथा आरञ्ञिकेहि भिक्खूहि सम्मा वत्तितब्बं,* चूळव॰ 360; – **कानं**[1] पु॰, च॰/ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरञ्ञिकानं भिक्खूनं वत्तं पञ्ञपेस्सामि,* चूळव॰ 360; – **कानं**[2] नपुं॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरञ्ञकानञ्चेव सीलानं अभिनिम्मदनाय,* म॰ नि॰ 3.173; – **केसु** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *भिक्खू वुत्थवस्सा आरञ्ञकेसु सेनासनेसु विहरन्ति,* पारा॰ 390; स॰ उ॰ प॰ के रूप में उक्कट्ठा॰, जाति॰, वोसासा॰, सेखा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आरञ्जकङ्ग नपुं., तेरह धुतङ्गों में से एक, वन के निर्जन क्षेत्र में तपश्चर्या करते हुए पालन किया जाने वाला धुतङ्ग, कहीं कहीं 5 धुतङ्गों की सूची में प्रथम धुतङ्ग के रूप में भी उल्लिखित – *पंसुकूलिकङ्गं तेचीवरिकङ्गं पिण्डपातिकङ्गं सपदानचारिकङ्गं एकासनिकङ्गं पत्तपिण्डिकङ्गं खलुपच्छाभत्तिकङ्गं आरञ्जिकङ्गं रुक्खमूलिकङ्गं अब्भोकासिकङ्गं सोसानिकङ्गं यथासन्थतिकङ्गं नेसज्जिकङ्गं, ... तेरसहि धुतगुणेहि ... पटिलभति,* मि. प. 324; *पञ्च धुतङ्गानि – आरञ्जिकङ्गं, रुक्खमूलिकङ्गं, अब्भोकासिकङ्गं, सोसानिकङ्गं, यथासन्ततिकङ्गन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 3.181; – **ङ्गं¹** प्र. वि., ए. व. – *न आरञ्जिकङ्गं समादातब्बं,* चूळव. 78; *आरञ्जिकङ्गन्ति अरञ्ञे निवासो सीलं अस्साति आरञ्जिको, तस्स अङ्गं आरञ्जिकङ्गं,* महानि. अट्ठ. 153; – **ङ्गं²** द्वि. वि., ए. व. – *आरञ्जिकङ्गं पिण्डपातिकङ्गं पंसुकूलिकङ्गं समादियिंसु,* पारा. 349; स. प. के रूप में, *आरञ्जिकङ्गादीहि इच्छावचरप्पटिच्छादनं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).160; – **निप्फादक** त्रि., आरञ्जिकङ्ग नामक धुतङ्ग का निष्पादक – **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आरञ्जिकङ्गनिप्फादकं सेनासनं वुत्तं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).119; – **युत्तता** स्त्री., भाव., आरञ्जिकङ्ग नामक धुतङ्ग से जुड़ा हुआ होना – **य** तृ. वि., ए. व. – *अरञ्जकङ्गयुत्तताय अरञ्ञानि,* दी. नि. अट्ठ. 2.360; – **ङ्गाधिमुत्त** त्रि., तत्पु. स., आनञ्जिकङ्ग-नामक धुतङ्ग के पालन में दृढ़ता से लगा हुआ – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अयं पुग्गलो ... आरञ्जिकङ्गाधिमुत्तो ... धिमुत्तं,* चूळनि. 154; *आरञ्जकङ्गाधिमुत्तो ति आदीनि धुतङ्गसमादानवसेन वुत्तानि,* चूळनि. अट्ठ. 60; – **ङ्गारह** त्रि., आरञ्जिकङ्ग-नामक धुतङ्गनियम को ग्रहण करने योग्य – **हे** नपुं., सप्त. वि., ए. व. – *अरञ्जकङ्गारहे ठाने विहारं कारापेत्वा अदासि,* सा. वं. 56 (ना.).

आरञ्जकत्त नपुं., आरञ्जक का भाव. [आरण्यकत्व], वन में निवास करने अथवा वन के साथ जुड़े हुए रहने की स्थिति, तपस्वी के रूप में वनवासी होने की अवस्था – **त्तं¹** प्र. वि., ए. व. – *अद्धमिदं, भिक्खवे, लाभानं यदिदं आरञ्जिकत्तं ... अप्पाबाधता'ति,* अ. नि. 1(1).53; *आरञ्जिकत्तन्ति यो एस आरञ्जिकभावो,* अ. नि. अट्ठ. 1.368; – **त्तं²** द्वि. वि., ए. व. – *आरञ्जिकत्तं अनुग्गण्हाति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).158; – **त्तेन** तृ. वि., ए. व. – *आरञ्जिकत्तेन अत्तानुक्कंसेति, परं वम्भेति,* म. नि. 3.87; *आरञ्जिकत्तेन लोभधम्मा परिक्खयं गच्छन्ति,* म. नि. 3.87-88; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *आरञ्जिकत्तस्स च वण्णवादी,* स. नि. 1(2).180.

आरञ्जकधुतङ्ग नपुं., 13 धुतङ्गों में वह नियम, जिसका पालन वन के निर्जन क्षेत्र में रह कर तपश्चर्या के रूप में किया जाता है – **ङ्गं** द्वि. वि., ए. व. – *आगतागतानं आरोचेतुं हरायमानेन आरञ्जिकधुतङ्गं न समादातब्बं,* चूळव. अट्ठ. 10; *आरञ्जिकधुतङ्गं समादाय ... होन्तु,* पारा. अट्ठ. 2.170; – **समादान** नपुं., वन में रहते हुए तपश्चर्या करने के व्रत का ग्रहण, आरञ्जिकधुतङ्ग – नामक धुतङ्ग का ग्रहण – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *गामन्तसेनासनं पटिक्खिपित्वा आरञ्जकधुतङ्गसमादानेन आरञ्जिका,* थेरगा. अट्ठ. 2.411.

आरञ्जकभिक्खु / आरञ्जिकभिक्खु पु., कर्म. स. [आरण्यकभिक्षु], वन में रह कर साधना करने वाला भिक्षु, वनवासी भिक्षु – **क्खूनं** ष. वि., ब. व. – *हेतुसम्पन्नताय आरञ्जकभिक्खूनं सन्तिके पब्बजित्वा,* थेरगा. अट्ठ. 1.391.

आरञ्जकमग पु., तत्पु. स. [आरण्यकमृग], वन्य पशु, जंगली जानवर – **गो** प्र. वि., ए. व. – *आरञ्ञकमगो विय हि समणब्राह्मणा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).95; आरञ्जिक के अन्त.

आरञ्जकविहार पु., कर्म. स. [आरण्यकविहार], वन में स्थित विहार – **रो** प्र. वि., ए. व. – *अत्थि नु खो, उपासक, इमस्मिं पदेसे आरञ्जकविहारो,* ध. प. अट्ठ. 1.302; – **रं** द्वि. वि., ए. व. – ... *आरञ्जकविहारं पविसिंसु,* ध. प. अट्ठ. 1.148.

आरञ्जकसिक्खापद नपुं., वन में रहने वाले साधकों के लिए प्रज्ञप्त शिक्षापद – **दे** सप्त. वि., ए. व. – *आरञ्जकसिक्खापदे आरञ्जकं नाम सेनासनं पञ्चधनुसतिकं पच्छिम'न्ति वुत्तं,* पारा. अट्ठ. 1.240.

आरञ्जकसीस पु., तत्पु. स. [आरण्यकशीर्ष], "आरण्यक" का शीर्षक – **सेन** तृ. वि., ए. व. – *विसेसतो आरञ्जकस्स, आरञ्जकसीसेन च सब्बेसम्पि कम्मट्ठानं गहेत्वा ...,* खु. पा. अट्ठ. 197.

आरञ्जकसेनासनाराम नपुं., कर्म. स. [आरण्यकशयनासनाराम], वन्य निवासस्थान एवं आराम, वन में स्थित आराम – **मं** द्वि. वि., ए. व. – *आरञ्जकसेनासनारामञ्च तस्स उपचारञ्च ठपेत्वा,* पाचि. अट्ठ. 147.

आरञ्जिक / अरञ्जिक / आरञ्जक त्रि., अरञ्ञ से व्यु. [आरण्यक], वन के साथ जुड़ा हुआ, वन में वसने वाला,

वन के एकान्त में रहकर साधना करने वाला (तापस, भिक्षु आदि), ग्रामवास त्याग कर आरञ्ञिक नामक 'धुतङ्ग' का ग्रहण एवं उसका पालन करने वाला (भिक्षु) – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *रुक्खमूले वसतीति, रुक्खमूलिको, आरञ्ञिको, सोसानिको, लोके विदितो लोकिको,* मो. व्या. 4.32; *आरञ्ञिको सातितिको,* थेरगा. 851; *गामन्तसेनासनं पटिक्खिपित्वा आरञ्ञिकङ्गसमादानेन आरञ्ञिको,* थेरगा. अट्ठ. 2.274; – **कं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *आरञ्ञिकं भिक्खुं सन्धाय,* विसुद्धि. महाटी. 1.91; ... *अञ्ञतरं आरञ्ञिकं भिक्खुं दिस्वा ...,* ध. प. अट्ठ. 2.302; – **केन** पु., तृ. वि., ए. व. – *आरञ्ञिकेन गामन्तसेनासनं पहाय ...,* विसुद्धि. 1.70; – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *आरञ्ञिकस्स भिक्खुनो उपज्झायो,* विसुद्धि. 1.71; *अस्स आरञ्ञिकस्स चित्तं,* विसुद्धि. महाटी. 1.91; – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *पञ्च आरञ्ञिका,* पु. प. 180; – **कानं** पु., ष. वि., ब. व. – *एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं ... आरञ्ञकानं यदिदं रेवतो खदिरवनियो,* अ. नि. 1(1).32; *आरञ्ञकानन्ति अरञ्ञवासीनं,* अ. नि. अट्ठ. 1.174; – **ङ्ग** नपुं., कर्म. स., तेरह अथवा आठ धुतङ्गों में एक, वन में रहते हुए ग्राह्य एवं पालनीय धुतङ्ग – **ङ्गं** प्र. वि., ए. व. – *अट्ठ धुतङ्गानि – आरञ्ञिकङ्गं, पिण्डपातिकङ्गं, पंसुकूलिकङ्गं, तेचीवरिकङ्गं, सपदानचारिकङ्गं, खलुपच्छाभत्तिकङ्गं, नेसज्जिकङ्गं, यथासन्थतिकङ्गं,* महानि. 47; – **धुतङ्ग** नपुं., उपरिवत् – **ङ्गं** द्वि. वि., ए. व. – *आरञ्ञिकधुतङ्गं समादाय सब्बेपि भिक्खू याव जीवन्ति ताव आरञ्ञिका होन्तु,* पारा. अट्ठ. 2.170.

आरञ्ञिकसुत्त नपुं., अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 2(1).204.

आरत त्रि., आ + √रम से व्यु., भू. क. कृ. [आरत], किसी से विरत हो जाने वाला, अलग हो जाने वाला, विराम ले लेने वाला, हट जाने वाला – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आरतो विरतो पटिविरतो निक्खन्तो ... विहरतीति,* महानि. 50; – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *तं मं अकिञ्चनं ञत्वा, सब्बपापेहि आरतं,* जा. अट्ठ. 4.335.

आरति / आरती स्त्री., आ + √रम से व्यु. [आरति], विराम, विलगाव, हटाव, परित्याग, विरति, उचटाव – **ति / ती** प्र. वि., ए. व. – *थियं वेरमणी चेव विरत्यारति चाप्यथ,* अभि. प. 160; *आरती विरति, पापा, मज्जपाना च संयमो,* सु. नि. 267; *आरति नाम पापे आदीनवदस्साविनो मनसा एव अनभिरति,* सु. नि. अट्ठ. 2.22; – **प्पयोग** पु., व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में प्रयुक्त, विराम अथवा बिलगाव के अर्थ वाले शब्दों में (प. वि. का) प्रयोग – **गे** सप्त. वि., ए. व. – *आरतिप्पयोगे गामधम्मा कुसलधम्मा असद्धम्मा आरति विरति पटिविरति,* सद्द. 3.706.

आरत्त नपुं., भाव., व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में प्रयुक्त शब्द, 'आर' प्रत्यय से युक्त होने की स्थिति – *अञ्ञेस्वारत्तं, ... आरत्तग्गहणेन कत्थचि अनियमं दस्सेति,* क. व्या. 200; *सत्थु पितुआदीनं अन्तो यो अङ्गादिसु वचनेसु आरत्तं आपज्जति वा,* सद्द. 3.668.

आरदन्त नपुं., तत्पु. स. [आरदन्त], पीतल का दांत – **न्ते** द्वि. वि., ब. व. – *आरदन्ते पि खादन्ति,* पञ्च. ग. दी. 32 (रो.).

आरद्ध[1] त्रि., आ + √रभ से व्यु., भू. क. कृ. [आरब्ध], **1.** कर्तृ. वा. में, प्रारम्भ कर चुका, प्रारम्भ किया हुआ, **क.** निमि. कृ. के साथ अन्वित – **द्धो** पु., प्र. वि., ए. व. – *पण्णानि खादितुं आरद्धो,* जा. अट्ठ. 1.169; *अस्सारोहो ... अञ्ञं अस्सं सन्नय्हितुं आरद्धो,* जा. अट्ठ. 1.179; – **द्धा**[1] स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *तस्स पन गतदिवसतो पट्ठाय ब्राह्मणी अतिचरितुं आरद्धा,* जा. अट्ठ. 1.473; – **द्धे** सप्त. वि., ए. व. – *तस्मिञ्हि अधीयितुं आरद्धे तेपि अधीयन्ति,* ध. स. अट्ठ. 157; – **द्धा**[2] पु., प्र. वि., ब. व. – *अथ नं राजपुरिसा नीहरितुं आरद्धा,* जा. अट्ठ. 1.176; **ख.** द्वि. वि. में अन्त होने वाले नाम के साथ – **द्धा** पु., प्र. वि., ब. व. – *इमे भिक्खू विवादं आरद्धा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).288; **ग.** 'इति' के साथ, – **द्धा** पु., प्र. वि., ब. व. – *ब्राह्मणा ... यञ्ञं यजित्वा पटिकम्मं करोमाति आरद्धा'ति आह,* स. नि. अट्ठ. 1.126; **2.** कर्म वा. में, **क.** वह, जिसे तैयार कर दिया गया है अथवा हाथ में ले लिया गया है, व्यवस्थित कर लिया गया, बना लिया गया, सम्पादित, **ख.** सुदृढ़ अथवा अशिथिल बना दिया गया, पुष्ट कर दिया गया, समुत्तेजित अथवा जागृत कर दिया गया, सबल बना दिया गया – **द्धो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो आरद्धो,* स. नि. 3(1).22; – **द्धा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *योनि चस्स आरद्धा होति आसवानं खयाय,* स. नि. 2(2).179; *आरद्धा होतीति कारणञ्चस्स परिपुण्णं होति,* स. नि. अट्ठ. 3.66; – **द्धं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आरद्धं खो पन मे, ब्राह्मण, वीरियं अहोसि असल्लीनं,* पारा. 4; ... *आरद्धं अहोसि, पग्गहितं असिथिलप्पवत्तितन्ति वुत्तं होति,*

पारा॰ अट्ठ॰ 1.103; – **द्धे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञस्मिं परियाये आरद्धे,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 189; – **द्धाय¹** स्त्री॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'कित्तका विहारे समणा'ति गणनाय आरद्धाय,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.83; – **द्धाय²** स्त्री॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मधुरस्सरेन आरद्धाय धम्मदेसनाय सद्दं सुत्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.258; – **द्धा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चत्तारो इद्धिपादा आरद्धा,* स॰ नि॰ 3(2).328; – **द्धायो** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अत्तानं उद्दिस्स अत्तनो अत्थाय आरद्धायोति अत्थो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.134; – **द्धापरिसमत्त** त्रि॰, व्या॰ के विशेष सन्दर्भ में प्रयुक्त, प्रारम्भ कर दिया गया परन्तु समाप्त नहीं हो सका – **त्ते** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वत्तमाने आरद्धापरिसमत्ते अत्थे,* मो॰ व्या॰ 6.1.

आरद्ध² त्रि॰, आ + √राध से व्यु॰, भू॰ क॰ कृ॰ [आराद्ध], **शा॰ अ॰,** अनुष्ठित, निष्पन्न, सम्पन्न हो चुका, पूर्ण हो चुका, तैयार हो चुका, प्राप्त हो चुका, **ला॰ अ॰,** प्रसन्न, सन्तुष्ट – **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयञ्चेव लोको आरद्धो होति परो च लोको,* दी॰ नि॰ 3.137; *आरद्धो होति परितोसितो चेव निप्फादितो च,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.114; *आरद्धो होतीति संसाधितो होति ...,* दी॰ नि॰ टी॰ 3.116; – **द्धा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *या उद्दिसित्वा आरद्धा, इद्धा विनयवण्णना,* परि॰ अट्ठ॰ 267; – **द्धं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमतं तेसं, ... आरद्धं,* अ॰ नि॰ 1(1).61; *आरद्धन्ति परिपुण्णं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.404.

आरद्ध³ आ + √राध का पू॰ का॰ कृ॰ [आराध्य], प्राप्त करके, पूर्ण करके, सन्तुष्ट होकर, प्रसन्न होकर – *आरद्ध, आरभित्वा/आराधित्वा,* क॰ व्या॰ 602.

आरद्धकम्मट्ठान त्रि॰, ब॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आरब्धकर्मस्थान], ध्यान के कर्म स्थानों (आलम्बनों) को ग्रहण करने का काम प्रारम्भ कर चुका (साधक) – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"आरद्धकम्मट्ठानस्स भिक्खुनो कम्मट्ठानकारको अय"न्ति जानित्वा ...,* विसुद्धि॰ 1.97.

आरद्धकम्मन्त नपुं॰, कर्म॰ स॰, प्रारम्भ कर दिया गया काम, हाथ में ले लिया गया काम – **न्ता** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बेसं आरद्धकम्मन्ता च इच्छिता च अत्था सिद्धिमगमंसु,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 256.

आरद्धकाल पु॰, तत्पु॰ स॰, वह समय जब कार्य का आरम्भ किया गया है – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरद्धकालतो पट्ठाय तुरिततुरितो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).151; *आरद्धकालतो पट्ठाय परिभोगं अकासि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.24; – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रञ्ञा आरद्धकाले ... पञ्च धातुयो निय्यादेसि,* सा॰ वं॰ 88(ना॰).

आरद्धचित्त त्रि॰, ब॰ स॰ [आराद्धचित्त], प्रसन्न अथवा आनन्दित चित्त वाला, सन्तुष्ट चित्त वाला – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरद्धचित्तो उपसम्पदं अनुजानि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.190; *आरद्धचित्तोति आराधितचित्तो,* सारत्थ॰ टी॰ 2.46; – **त्तेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरद्धचित्तेन भगवता अनुञ्ञातउपसम्पदा ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.453; – **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरद्धचित्ता भिक्खू पब्बाजेन्ति, उपसम्पादेन्ति भिक्खुभावाय,* दी॰ नि॰ 1.159; *आरद्धचित्ताति अट्ठवत्तपूरणेन तुट्ठचित्ता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.269.

आरद्धञ्जस नपुं॰, कर्म॰ स॰, ऐसा सीधा मार्ग, जिस पर चलना प्रारम्भ कर दिया गया है, गृहीत सरल मार्ग – **सा** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेनारद्धञ्जसा धीरो याचित्वान पदेसकं,* जिन॰ च॰ 41(रो॰).

आरद्धत्त नपुं॰, आरद्ध का भाव॰, सन्तुष्टि, आनन्द या हर्ष से परिपूर्ण होना – **त्ताय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरद्धत्तायेव च मे तं असल्लीनं अहोसि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.103.

आरद्धबलवीरिय त्रि॰, ब॰ स॰, प्रबल शक्ति एवं उत्साह से भरपूर, सुदृढ़ बल एवं वीर्य से युक्त – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सतिमा पञ्ञवा भिक्खु, आरद्धबलवीरियो,* थेरगा॰ 165; *सद्धादिबलानञ्चेव चतुब्बिधसम्पप्पधानवीरियस्स च संसिद्धिपारिपूरिया आरद्धबलवीरियो,* थेरगा॰ अट्ठ 1.316.

आरद्धभाव पु॰, कर्म॰ स॰ [आरब्धभाव], आरम्भ कर देने की अवस्था, प्रारम्भ कर देना – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेसं विपस्सनाय आरद्धभावं ञत्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.34.

आरद्धभावन त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसने ध्यानभावना करना प्रारम्भ कर दिया है – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरहत्तं पापुणितुं आरद्धभावनस्स कायपरिळाहादीनं उप्पत्तिं वारेत्वा ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.237.

आरद्धयञ्ञ पु॰, कर्म॰ स॰ [आरब्धयज्ञ], प्रारम्भ कर दिया गया यज्ञ, अनुष्ठित किया जा रहा यज्ञ-विधान – **ञ्ञो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खूहि रञ्ञो आरद्धयञ्ञो तथागतस्स आरोचितो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.124.

आरद्धविपस्सक त्रि॰, ब॰ स॰, विपश्यना-ध्यान को आरम्भ कर चुका (साधक), सुदृढ़ भाव से विपश्यना की भावना करने वाला (साधक), विपश्यना में शिक्षाप्राप्ति की अवस्था में विद्यमान (आर्यश्रावक) – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यस्साधिगमा "आरद्धविपस्सको"ति सङ्खं गच्छति,* चूळनि॰

अट्ठ॰ 91; *सोतापत्तिमग्गत्थाय आरद्धविपस्सको,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.162; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सोतापत्तिमग्गत्थाय आरद्धविपस्सकं करोन्तो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.162; – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सीलवता आरद्धविपस्सकेन न दुक्करं अञ्ञं ब्याकातुं, पटिबलो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.85; – **कतो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सम्बुज्झति आरद्धविपस्सकतो पञ्ञाय योगावचरोति सम्बोधि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).299; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथस्स आरद्धविपस्सकस्स कुलपुत्तस्स ओभासो,* चूळनि॰ अट्ठ॰ 91; – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पञ्चसता आरद्धविपस्सका उग्घटितञ्ञूपुग्गला,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.9; – **के** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *योगी आरद्धविपस्सके सरित्वा ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.303; – **केहि** प॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चतुन्नं मग्गानं अत्थाय आरद्धविपस्सकेहि ... समणेहि सुञ्ञा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.162; – **कानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरद्धविपस्सकानञ्हि अयमानिसंसो ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.95; – **केसु** पु॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एस नयो सेसमग्गत्थाय आरद्धविपस्सकेसु,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.162; – **भाव** पु॰, विपश्यना भावना की शिक्षाप्राप्ति की अवस्था में होना – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथस्सा सत्था आरद्धविपस्सकभावं ञत्वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).41.

आरद्धविपस्सन त्रि॰, ब॰ स॰, उपरिवत् – **ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बे आरद्धविपस्सना सततं समितं रत्तिं दिवेसुयुत्तपयुत्ता ...,* सद्धम्म॰ 58; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरद्धविपस्सनानं भङ्गानुपस्सनादिसङ्खाताय तरुणविपस्सनाय,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.400; – **त्त** नपुं॰, भाव॰, विपश्यना-भावना के अभ्यास में शिशिक्षु या शिक्ष्यमाण की अवस्था – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *थेरो पन आरद्धविपस्सनत्ता काये जीविते ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.341.

आरद्धविपस्सना स्त्री॰, कर्म॰ स॰, सुदृढ़ विपश्यना-भावना, विपश्यना-भावना में सुदृढ़ स्थिति – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आरद्धविपस्सनं उस्सुक्कापेत्वा ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.48; – **धुर** त्रि॰, ब॰ स॰, विपश्यना-भावना के भार को वहन करने वाला, विपश्यना-भावना का अभ्यास कर रहा (साधक) – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तस्मिं नगरे आरद्धविपस्सना धुरा महल्लका भिक्खुसहस्समत्ता अहेसुं,* सा॰ वं॰ 85 (ना॰).

आरद्धवीरिय[1] नपुं॰, कर्म॰ स॰, सुदृढ़ वीर्य, अत्यधिक प्रबल पराक्रम, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, – **यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्चारद्धवीरियं उद्धच्चाय संवत्तति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.200.

आरद्धवीरिय[2] त्रि॰, ब॰ स॰, **शा॰ अ॰**, सुदृढ़ वीर्य से युक्त, प्रबल पराक्रम से भरपूर, कठोर प्रयास करने वाला, उत्साही, अध्यवसायी, सुदृढ़ निश्चय वाला, **ला॰ अ॰**, चार प्रकार के सम्यक् प्रधानों का अभ्यास करने वाला अथवा उनसे युक्त (साधक) – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरद्धवीरियो होति,* दी॰ नि॰ 3.199; *सब्बसो कोसज्जपहानेन आरद्धवीरियो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.291; *आरद्धवीरियोति पग्गहितवीरियो, अनोसक्कितमानसो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.22; *आरद्धवीरियोति पग्गहितवीरियो, परिपुण्णकायिकचेतसिकवीरियोति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).51; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरद्धवीरियं पहितत्तं, निच्चं दळहपरक्कमं, निब्बानं अभिकङ्खन्तं, कस्मा पब्बजितं तपेति,* स॰ नि॰ 1(1).229; *आरद्धवीरियन्ति पग्गहितवीरियं परिपुण्णवीरियं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.254; – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अराधनीयो खो, आवुसो, धम्मो आरद्धवीरियेना'ति,* पारा॰ 137; *आरद्धवीरियेनाति वत्थुद्वयं एकसदिसम्पि द्वीहि भिक्खूहि विसुं विसुं आरोचितत्ता भगवता विनिच्छिनितं सब्बम्पि विनीतवत्थूसु आरोपेतब्बन्ति, पाळियं आरोपितं,* सारत्थ॰ टी॰ 2.259; – **स्स** पु॰, च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरद्धवीरियस्सायं धम्मो, नायं धम्मो, कुसीतस्स,* दी॰ नि॰ 3.240; *आरद्धवीरियस्साति कायिकचेतसिकवीरियवसेन आरद्धवीरियस्स,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.227; – **या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ये खो केचि भगवतो सावका आरद्धवीरिया विहरन्ति, अहं तेसं अञ्ञतरो,* महाव॰ 253; *आरद्धवीरियाति परिपुण्णपग्गहितवीरिया,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.125; *आरद्धं वीरियमेतेसन्ति आरद्धवीरिया, सम्मप्पधानयुत्तानमेतं अधिवचनं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).198; – **ये** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरद्धवीरिये पहितत्ते, निच्चं दळहपरक्कमे, समग्गे सहिते दिस्वा ...,* थेरगा॰ 353; *आरद्धवीरियेति चतुब्बिधसम्मप्पधानवसेन पग्गहितवीरिये,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.53; – **येहि** पु॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *निच्चं आरद्धवीरियेहि, पण्डितेहि सहावसे'ति,* स॰ नि॰ 1(2).140; *आरद्धवीरिया परिपुण्णपरक्कम्मा आरद्धवीरियेहि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.126; – **यानं**[1] पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एतदग्गं, भिक्खवे ... आरद्धवीरियानं यदिदं सोणो कोळिविसो,* अ॰ नि॰ 1(1).32; *आरद्धवीरियानन्ति पग्गहितवीरियानं परिपुण्णवीरियानं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.180; – **यानं**[2] स्त्री॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सत्तमे आरद्धवीरियानन्ति पग्गहितपरिपुण्णवीरियानं सोणा अग्गाति दस्सेति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.271; – **पुग्गलसेवनता** स्त्री॰,

भाव॰, सुदृढ़ रूप से चार सम्यक् प्रधानों को भावना करने वाले साधकों के साथ सत्संगति – **त्ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकादस धम्मा वीरियसम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय संवत्तन्ति ... आरद्धवीरियपुग्गलसेवनता, तदधिमुत्तताति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.379-80; *आरद्धवीरियपुग्गलसेवनताति ... भावनारम्भवसेन आरद्धवीरियानं दळ्हपरकमानं पुग्गलानं कालेन कालं उपसङ्कमना,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.147; – **भाव** पु॰, सुदृढ़ पराक्रम से युक्त होना – **वेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरद्धवीरियभावेन नचिरस्सेव अग्गफले पतिट्ठिता'ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.273.

आरद्धवीरियगाथावण्णना स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, सु॰ नि॰ तथा अप॰ की गाथाओं की अट्ठकथा का शीर्षक जिनमें सु॰ नि॰ के खग्गविसाणसुत्त की गाथा में आए हुए आरद्धवीरियो आदि पदों की व्याख्या की गई है, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.95-97; अप॰ अट्ठ॰ 1.199-200.

आरद्धवीरियता स्त्री॰, आरद्धवीरिय का भाव॰, सुदृढ़ पराक्रम से परिपूर्ण रहने की स्थिति, उद्योगशीलता, चार सम्यक्-प्रधानों का दृढ़ अभ्यास होना – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एतमहं, ब्राह्मण, आरद्धवीरियतं अत्तनि सम्पस्समानो,* म॰ नि॰ 1.25; *आरद्धवीरियतञ्च दस्सेन्तो ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.292; – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथा आरद्धवीरियताय थिनमिद्धं,* विसुद्धि॰ 1.181; *तथा आरद्धवीरियतायाति ... पग्गहितवीरियताय,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.198.

आरद्धवीरियसोणत्थेरी स्त्री॰, एक भिक्षुणी का नाम – **री** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं पच्छा आरद्धवीरियसोणत्थेरीति पाकटा जाता,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.272.

आरद्धसद्धाभियोग पु॰, तत्पु॰ स॰, प्रबल श्रद्धा के साथ लगाव – **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुरिमवयसि येवारद्धसद्धाभियोगो,* दाठा॰ 4.7(रो॰).

आरद्धा आ + √रभ का आलद्धा के मि॰ सा॰ पर निर्मित पू॰ का॰ कृ॰ [आरम्य], प्रारम्भ करके – *आरब्भा आरद्धा आरभित्वा,* सद्द॰ 3.857.

आरद्धुकामत्त नपुं॰, आरद्धुकाम का भाव॰, प्रारम्भ करने की कामना वाला होना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पभाते युद्धमारद्धुकामत्ता न पटिग्गहि,* चू॰ वं॰ 72.114.

आरनाळ नपुं॰, [आरनालक], कांजी, खट्टा दलिया – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सोवीरं कञ्जियं वुत्तं आरनाळं थुसोदकं,* अभि॰ प॰ 460; *विलङ्गं वुच्चति आरनालं बिलङ्गतो निब्बत्तनतो,* दी॰ नि॰ टी॰ 2.329; तुल॰ अमर॰ 2.9.39.

आरप्पयोग पु॰, केवल व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में प्राप्त, दूर अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग (होने पर प॰ वि॰ होती है) – **गे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दिसायोगे विभत्ते आरप्पयोगे सुद्धत्थे ...,* क॰ व्या॰ 277; सद्द॰ 3.705.

आरब्भ आ + √रभ का पू॰ का॰ कृ॰ [आरभ्य], **शा॰ अ॰,** प्रारम्भ करके – *आगम्म, ... आरब्भ, आरब्भित्वा, आरद्ध, आरभित्वा,* क॰ व्या॰ 602; **प्रायोगिक अ॰, क.** उत्पन्न कर के, प्रवर्तित करके, क्रियाशील बना कर – *उपेक्खमारब्भ समाहितत्तो,* सु॰ नि॰ 978; *उपेक्खमारब्भ समाहितत्तोति चतुत्थज्झानुपेक्खं उप्पादेत्वा समाहितचित्तो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.265; *नयिदं सिथिलमारब्भ, नयिदं अप्पेन थामसा, निब्बानं अधिगन्तब्बं,* स॰ नि॰ 1(2).252; *सिथिलमारब्भाति सिथिलवीरियं पवत्तेत्वा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.208; **ख.** के विषय में, के सन्दर्भ में, के बारे में, की अपेक्षा से, को ध्यान में रख कर, **1.** द्वि॰ वि॰ में अन्त होने वाले ना॰ प॰ के साथ प्रयुक्त – *पुब्बन्तं आरब्भ अनेकविहितानि अधिमुत्तिपदानि अभिवदन्ति अट्ठारसहि वत्थूहि,* दी॰ नि॰ 1.11; *आरब्भ आगम्म पटिच्च,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.90; *बोधिसत्तस्स मग्गं आरब्भ सतिसम्मोसो अहोसी'ति,* मि॰ प॰ 267; **2.** ष॰ वि॰ में अन्त होने वाले ना॰ प॰ के साथ प्रयुक्त – *तञ्च पन न सब्बेसं जिनपुत्तानं येव आरब्भ भणितं,* मि॰ प॰ 173; **3.** के आलोक में, पद्धति का अनुसरण करके, की दृष्टि से (वसेन के साथ अन्वित होने पर) – *तत्रायं खन्धवसेन आरब्भविधानयोजना,* विसुद्धि॰ 2.244; **ग.** आलम्बन बना कर, आधार बना कर – *हेट्ठा वत्तेसु रूपारम्मणादीसु रूपारम्मणं वा आरब्भ, आरम्मणं कत्वाति अत्थो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 152.

आरब्भते आ + √रभ, कर्म॰ वा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आरभ्यते], प्रारम्भ किया जाता है – *अत्थवण्णना आरब्भते,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 132; – **मानो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरब्भमानोयेवाति कुरुमानोयेव,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.184; – **नं** नपुं॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बं विभावयितुं आरब्भमानं विरसज्जनं अधिप्पेतञ्चेव अत्थं न साधेय्य,* विसुद्धि॰ 1.83.

आरभति[1] आ + √रभ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आरभते], **1.शा॰ अ॰,** प्रारम्भ करता है, आरम्भ करता है – *नं कत्तुं आरभति, करोतियेव वा,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.169; *यागुं सयमेव पातुं आरभति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 105; – **न्ति** ब॰ व॰ – *कल्याणचित्ते उप्पन्ने दातुं आरभन्ति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 69; – **न्तस्स** वर्त्त॰ कृ॰ पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सम्मासम्बोधिं अधिगन्तुं*

आरभन्तस्सेव सतो, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.221; – **मि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *मिगो अम्बत्थलमग्गं गहेत्वा पलायितुं आरभि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.52; *थेरो तीणि सरणानि दत्वा पञ्च सीलानि दातुं आरभि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.108; – **भिंसु** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अथस्स मत्थकतो धातुं ओरोपेतुं आरभिंसु,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.61; – **भिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यस्मिं पन ठाने निसीदित्वा मं खादितुं आरभिस्सति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.96; – **भिस्सामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तस्मा सासनं निम्मलं कातुं आरभिस्सामी'ति,* सा॰ वं॰ 41 – **भिस्साम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आरभिस्साम कारेतुं उपसम्पदमङ्गलं,* चू॰ वं॰ 89.54; – **भित्वान** पू॰ का॰ कृ॰ – *युज्झितुं आरभित्वान घातेसुं ते पुनप्पुनं,* चू॰ वं॰ 99.132; – **भितब्बं** नपुं॰, सं॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स वत्तं कातुं आरभितब्बं,* चूळव॰ अट्ठ॰ 116; **2. ला॰ अ॰,** हाथ में ले लेता है, निष्पादित करता है, सक्रिय हो जाता है, उद्योगशील हो जाता है, उत्पन्न करता है, उत्तेजित कर देता है, प्रेरित करता है, प्रयास करता है, व्यायाम करता है – **ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *एकच्चो पुग्गलो आरभति, न विप्पटिसारी होति,* अ॰ नि॰ 2(1).156; *आपत्तिवीतिक्कमनवसेन आरभति चेव,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.52; – **भामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *वीरियं आरभामि अप्पत्तस्स पत्तिया,* अ॰ नि॰ 2(1).95; *आरभामीति दुविधम्पि वीरियं करोमि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.36; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *न वीरियं आरभन्ति,* अ॰ नि॰ 1(1).87; *आरभन्तीति दुविधम्पि वीरियं न करोन्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.44; – **थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तस्मातिह, भिक्खवे, भिय्योसोमत्ताय वीरियं आरभथ,* म॰ नि॰ 3.124; – **भाम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *न नं आरभाम,* विसुद्धि॰ 2.193; – **न्तो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्हं आरभन्तो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.177; – **न्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुन आरभन्तेनापि आपुच्छितब्बं,* महाव॰ अट्ठ॰ 321; – **तो** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वीरियमारभतो दळ्हं,* ध॰ प॰ 112; *वीरियमारभतो दळ्हन्ति दुविधज्झाननिब्बत्तनसमत्थं थिरं वीरियं आरभन्तस्स,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.390; – **भेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *करुणाभावनायोगमारभेय्य ततो परं,* ना॰ रू॰ प॰ 1350; – **म्भथ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आरम्भथ निक्कमथ, युञ्जथ बुद्धसासने,* स॰ नि॰ 1(1).183; *आरम्भथाति आरम्भवीरियं करोथ,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.195; – **ते** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आत्मने॰ – *अस्मिमानस्स पहानं आरभते,* पेटको॰ 192; – **मानो** वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरभमानो च सङ्खेपतो ताव आरभति,* विसुद्धि॰ 2.264; – **म्भव्हो** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आरम्भव्हो दळ्हा होथ, खन्तिबलसमाहिता,* दी॰ नि॰ 2.180; *आरम्भव्हो दळ्हा होथाति एवं सन्ते वीरियं आरभथ,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.235; – **भि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *विपस्सनं आरभि,* पाचि॰ अट्ठ॰ 61; – **भिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *युज्झिं, इदानि एको व मच्चुना युद्धमारभिं,* म॰ वं॰ 32.17; – **भिंसु** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तेसं दुवे वीरियमारभिंसु,* दी॰ नि॰ 2.201; – **भिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *न वीरियं आरभिस्सति तस्सङ्गणस्स,* म॰ नि॰ 1.32; – **भिस्सामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तस्स आदितो पभुति अत्थसंवण्णनं आरभिस्सामि,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 3; – **भिस्सन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *न वीरियं आरभिस्सन्ति,* अ॰ नि॰ 2(1).100; – **भितुं / द्धुं** निमि॰ कृ॰ – *अलमेव सद्धापब्बजितेन कुलपुत्तेन वीरियं आरभितुं,* स॰ नि॰ 1(2).27; *आरभितुन्ति चतुरङ्गसमन्नागतं वीरियं कातुं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.44; – **भित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – ... *विपस्सनं आरभित्वा नचिरस्सेव छळभिञ्ञो अहोसि,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.77; *विरियारम्भो, आरभितुं आरभित्वा आरब्भ,* सद्द॰ 2.409; – **भितब्बा** स्त्री॰, सं॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मेत्ताभावना आरभितब्बा,* विसुद्धि॰ 1.284; – **भितब्बं** नपुं॰, सं॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वीरियं आरभितब्बं,* चूळव॰ अट्ठ॰ 72, – **भितब्बे** पु॰, सं॰ कृ॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निद्देसे आरभितब्बे,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.167.

आरभति[2] आ + √रभ (हिंसार्थक) का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आलभते], **शा॰ अ॰,** दृढ़ता के साथ पकड़ लेता है, काबू में कर लेता है, **ला॰ अ॰,** आक्रमण करता है, मारने के लिए टूट पड़ता है, हिंसा करता है – *रभति आरभति समारभति,* सद्द॰ 2.409; – **न्ति** ब॰ व॰ – *समणं गोतमं उद्दिस्स पाणं आरभन्ति,* म॰ नि॰ 2.35; *आरभन्तीति घातेन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.33; – **थ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *इमं पाणं आरभथा'ति,* म॰ नि॰ 2.37.

आरभन नपुं॰, आ + √रभ से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, प्रारम्भ कर देना, आरम्भ कर देने की क्रिया – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरभनं आदिकरणं आरम्भो,* अभि॰ प॰ सूची 41; *आरम्भधातूति आरभनवसेन पवत्तवीरियं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.111; – **काल** पु॰, तत्पु॰ स॰, प्रारम्भ करने का काल – **लो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *विपस्सनाय कम्मं आरभनकालो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.256.

आरभापेति आ + √रभ[1] का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रारम्भ कराता है, प्रारम्भ करने हेतु प्रेरित करता है – **पयि** अद्य॰,

प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तत्थ तत्थेव राजूहि विहारे आरभापयि,* म॰ वं॰ 5.80; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *कम्मानि आरभापेत्वा लेणानि अट्ठसट्ठियो,* म॰ वं॰ 16.12; *आरभापेत्वा ति द्वारट्ठपनादीनि कम्मानि पट्ठपेत्वा,* म॰ व॰ टी॰ 330(ना॰).

आरभियति आ + √रभ[2] के कर्म॰ वा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, **शा॰ अ॰,** दृढ़ता के साथ पकड़ लिया जाता है, काबू में कर लिया जाता है, **ला॰ अ॰,** मार दिया जाता है, हत्या कर दिया जाता है – **मानो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पाणो आरभियमानो दुक्खं दोमनस्सं पटिसंवेदेति,* म॰ नि॰ 2.37-8; *आरभियमानोति मारियमानो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.37.

आरमन/आरमण नपु॰, आ + √रम से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आरमण], **1.** आमोद प्रमोद, मौज-मस्ती, अभिरति – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ आरमनं आरामो, अभिरतीति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.182; **2.** विरति, बिलगाव, त्याग, थम जाना – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरतीति आरमणं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 114.

आरमति आ + √रम का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आरमते], **1.** आनन्द प्राप्त करता है, आमोद-प्रमोद से भरपूर हो जाता है, प्रसन्न होता है, सन्तुष्ट होता है – **न्ति** ब॰ व॰ – *आरमन्ति एत्थाति आरामो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.330; *आरमन्तीति रतिं विन्दन्ति कीळन्ति लळन्ति,* अ॰ नि॰ टी॰ 2.303; *एतेहि भवेहि आरमन्ति अभिनन्दन्तीति भवारामा,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 155; – **मितब्ब** त्रि॰, सं॰ कृ॰ – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो आरमितब्बतो आरामो एतस्साति अब्यापज्झारामो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 130; **2.** छोड़ देता है, बिलग हो जाता है, हट जाता है, विरत हो जाता है – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आरमन्ति विरमन्ति पटिविरमन्ति,* महानि॰ 248; – **मेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *कुक्कुच्चा आरमेय्य,* महानि॰ 277.

आरम्भ पु॰, [आरम्भ], **शा॰ अ॰,** प्रारम्भ, कर्म का प्रारम्भ, शुरुआत – **म्भा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरम्भाति कम्मानं पठमारम्भा,* महानि॰ अट्ठ॰ 356; – **म्भं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अकारम्भं च भिक्खूनं भोगगामे च दापयि,* चू॰ वं॰ 54.40; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निसिन्नानं वो आरम्भतो पट्ठाय याव ममागमनं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.162; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्भस्स च अवसानस्स च वेमज्झट्ठानं,* पाचि॰ अट्ठ॰ 67; **ला॰ अ॰,** आदिकर्म, कार्य, व्यवसाय, कृत्य, प्रारम्भिक प्रयास, प्रयत्न, वीर्य, उत्साह, हिंसा, पापकर्म, विनय-नियमों के उलंघन से जनित अपराध या आपत्ति – *अयञ्हि आरम्भसद्दो कम्मे आपत्तियं किरियायं वीरिये हिंसायं विकोपनेति अनेकेसु अत्थेसु आगतो,* महानि॰ अट्ठ॰ 331; **क.** आदिकर्म, प्रारम्भिक कर्म, प्रयास का प्रारम्भिक चरण, प्रबल वीर्य अथवा पराक्रम – **म्भो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *यदा बोधिसत्तो दुक्करकारिकं अकासि, नेतादिसो अञ्ञत्र आरम्भो अहोसि निक्कमो ...,* मि॰ प॰ 230; ... *चेतसिको, आरम्भो चेतना कम्मं कायिका वाचसिका,* पेटको॰ 189; – **म्भं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भगवा पदं सोधेति, नो च आरम्भं,* नेत्ति 60; – **म्भेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *येनारम्भेन इदं सुत्तं भासति सो आरम्भो नियुत्तो,* पेटको॰ 298; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थिक्खाताव इमस्स आरम्भस्स अनभासितं,* पेटको॰ 238; **ख.** वीर्य, पराक्रम, उत्साह – **म्भो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पब्बजितुं आरम्भो उस्साहो,* उदा॰ अट्ठ॰ 252; – **म्भा** ब॰ व॰ – *वियारम्भाति विविधा पुञ्ञाभिसङ्खारादिका आरम्भा,* महानि॰ अट्ठ॰ 355; *निट्ठं धम्मूपसंहिता, सीघं गच्छन्तु आरम्भा,* परि॰ अट्ठ॰ 267; **ग.** आपत्ति, हिंसा, वध, मारकाट, पापकर्म – **म्भा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बीजगामभूतगामसमारम्भा पटिविरतो होति,* दी॰ नि॰ 1.57; – **म्भानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरम्भानं निरोधेन, नत्थि, दुक्खस्स सम्भवो,* सु॰ नि॰ 749; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अञ्ञाधिकारवचना॰, अना॰, उपा॰, कम्मट्ठाना॰, गन्था॰, ञाया॰, थिरा॰, थूपा॰, निग्गमना॰, निरा॰, पकरणा॰, पच्चया॰, पठमा॰, पुच्छा॰, पुब्बा॰, भावना॰, मरणा॰, महा॰, युद्धा॰, वचना॰, विगता॰, विपस्सना॰, विरिया॰ संवण्णना॰, सज्झाया॰, समा॰, सम्मसना, सेसा॰ के अन्त॰, द्रष्ट॰; स॰ पू॰ प॰ के रूप में, – **गहण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, 'आरम्भ' शब्द का प्रयोग – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्भमत्तं एवेत्थ न अत्थसिद्धी ति दस्सनत्थं आरम्भगहणं,* सद्द॰ 3.919; – **ज** त्रि॰, कर्मों से उत्पन्न, पापकर्मों के कारण उत्पन्न, विनय-शिक्षापदों के पालन न करने के फलस्वरूप उत्पन्न – **जा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आयस्मतो खो आरम्भजा आसवा संविज्जन्ति,* अ॰ नि॰ 2(1).157; *आरम्भजाति आपत्तिवीतिक्कमसम्भवा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.52; – **जे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरम्भजे आसवे पहायाति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.52; – **ट्ठ** पु॰, तत्पु॰ स॰, "आरम्भ" (उत्साह) का अर्थ या तात्पर्य – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्भट्ठेन वीरियं,* नेत्ति॰ 45; – **त्त** नपुं॰, भाव॰, प्रारम्भ होने की अवस्था – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कतारम्भत्ता नानप्पकारेन सब्बं,* सद्द॰ 1.144; – **त्थ** पु॰, आरम्भ अथवा प्रबल उत्साह का अर्थ – **त्थो**

प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पमिणन्तीति एत्थ आरम्भत्थो प-सद्दोति आह तुलेतुं आरभन्ती'ति,* अ॰ नि॰ टी॰ 3.106; – **दळ्हता** स्त्री॰, कर्म को प्रारम्भ किए जाने के विषय में दृढ़ता, आदि कर्म-विषयिणी दृढ़ता – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आरम्भदळ्हता, धीरवीरभावो ... एवमादिका सब्बापि बोधिसम्भारपटिपत्ति वीरियानुभावेनेव समिज्झतीति* ..., चरिया॰ अट्ठ॰ 289; – **धातु** स्त्री॰, कर्म को प्रारम्भ करने का प्रबल उत्साह, कर्म के प्रथम आरम्भ के लिए वीर्य – **तु** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थि, भिक्खवे, आरम्भधातु निक्कमधातु,* स॰ नि॰ 3(1).83; *आरम्भधातूति पठमारम्भवीरियं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.178; – **तुं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वीरियं नाम लभन्ति आरम्भधातुं उपादाय,* पेटको॰ 190; – **या** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"आरब्भधातुया सति आरम्भवन्तो सत्ता पञ्ञायन्ती"ति,* अ॰ नि॰ 2(2).53; पाठा॰ आरम्भधातुया; – **पच्चया** अ॰, प॰ वि॰, प्रतिरू॰, क्रि॰ वि॰, (पाप) कर्मों के प्रारम्भ किए जाने के फलस्वरूप – *यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति सब्बं आरम्भपच्चयाति,* सु॰ नि॰ पृ॰ 194; – **पञ्ञत्ति** स्त्री॰, कर्म को प्रारम्भ किए जाने का कथन, आदिकर्म की संज्ञा – **त्ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्भपञ्ञत्ति वीरियिन्द्रियस्स,* नेत्ति॰ 50; – **लक्खण** त्रि॰, ब॰ स॰, उत्साह के लक्षण से युक्त – **णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्भलक्खणं वीरियं,* नेत्ति॰ 25; – **वत्थु** नपुं॰, वीर्य का आधारभूत कारण – **त्थूनि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अट्ठ आरम्भवत्थूनि,* दी॰ नि॰ 3.203; *आरम्भवत्थूनीति वीरियकारणानि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.207; – **वीरिय** नपुं॰, कर्म॰ स॰, प्रबल प्रयास, मानसिक प्रयत्न – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ आरम्भथाति आरम्भवीरियं करोथ,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.195; – **सुद्धि** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, वीर्य अथवा कार्य-विषयक उत्साह की शुद्धि – **द्धि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मनोति आरम्भो नेव पदसुद्धि, न आरम्भसुद्धि,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 306.

आरम्भति आ + √रम्भ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आरभते], **1**. प्रारम्भ करता है, दृढ़ प्रयास करता है, समुत्तेजित अथवा प्रोत्साहित करता है, सक्रिय करता है, उत्पन्न करता है, **2**. पाप कर्म करता है, आपत्ति में आपतित हो जाता है – *आरम्भति च विप्पटिसारी च होती'ति एत्थ आपत्ति,* महानि॰ अट्ठ॰ 331; – **न्ति** ब॰ व॰ – *आरम्भन्ति चेतसिको,* पेटको॰ 189; – **थ / व्हो** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आरम्भथ निक्कमथ, युञ्जथ बुद्धसासने,* पेटको॰ 217; *आरम्भव्हो दळ्हा होथाति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.235.

आरम्भन नपुं॰, आ + √रम्भ से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, प्रोत्साहन, प्रबल प्रयास, दृढ़ प्रयत्न, कठोर व्यायाम, स॰ प॰ के रूप में, – **वसेन** क्रि॰ वि॰, सुदृढ़ प्रयास के रूप में – *वीरियञ्हि आरम्भनवसेन आरम्भोति वुच्चति,* महानि॰ अट्ठ॰ 331.

आरम्भनक नपुं॰, आरम्भन से व्यु॰, उपरिवत् – *वीरियञ्हि आरभनकवसेन आरम्भोति वुच्चति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.38; पाठा॰ आरभनकवसेन.

आरम्भवन्तु त्रि॰, प्रारम्भ कर देने वाला, प्रबल प्रयास करने वाला, अध्यवायी, वीर्यवान् – **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *"आरब्भधातुयासति आरब्भवन्तो सत्ता पञ्ञायन्ती"ति,* अ॰ नि॰ 2(2).53; पाठा॰ आरब्भवन्तो.

आरम्मण नपुं॰, संभवतः आ + √रम्भ से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, आलम्बन अथवा आरम्मन का परिवर्तित रूप [आलम्बन], **शा॰ अ॰**, आश्रय, सहारा, टेक, आशय, आवास, आधार – *पतिट्ठापि हि आलम्बीयतीति आरम्मणं नाम होति ... अञ्ञत्थ पाळियम्पि हि पतिट्ठा "आरम्मण"न्ति वुच्चन्ति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.174; *या आहारट्ठिति या पुनब्भवाभिनिब्बत्तिका ठिति या च पोनोभविका ठिति, अयं वुच्चति आरम्मणं,* पेटको॰ 307; *अप्पटिक्खिपितब्बेन अत्तनो फलेन आलम्बियतीति आलम्बणं,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 289; – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"आरम्मणं ब्रूहि समन्तचक्खु, यं निस्सितो ओघमिमं तरेय्यं,* सु॰ नि॰ 1075; *आरम्मणन्ति निस्सयं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.284; *आरम्मणं ब्रूहि समन्तचक्खूति आरम्मणं आलम्बणं निस्सयं उपनिस्सयं ब्रूहि* ..., चूळनि॰ 91; **ला॰ अ॰ 1.**, इन्द्रियों का विषय, चेतना का विषय, चित्त एवं चैतसिक धर्मों का आश्रय, गोचर, आयतन, इन्द्रियों (ग्राहकों) द्वारा ग्राह्य रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्पृष्टव्य एवं धर्म, बाह्य आयतन – **णं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलम्बो विसयो तेजारम्मणालम्बनानि च,* अभि॰ प॰ 94; *इन्दोधिपतिसक्केस्वारम्मणं, हेतु गोचरे,* अभि॰ प॰ 1132; ... *तदेव दुब्बलपुरिसेन दण्डादि विय चित्त चेतसिकेहि आलम्बीयति, तानि वा आगन्त्वा एत्थ रमन्तीति आरम्मणं* ..., अभि॰ ध॰ वि॰ टी॰ 121; – **णं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"आरम्मणतो"ति पाणातिपाता वेरमणी परस्स जीवितिन्द्रियं आरम्मणं कत्वा अत्तनो वेरचेतनाय विरमति,* विभ॰ अट्ठ॰ 363; – **णानि** ब॰ व॰ – *आरम्मणानि नाम रूपारम्मणं सद्दारम्मणं गन्धारम्मणं रसारम्मणं फोट्ठब्बारम्मणं धम्मारम्मणञ्चेति छब्बिधानि भवन्ति,* अभि॰ ध॰ स॰ 21; **ला॰ अ॰ 2**. हेतु, चौबीस प्रत्ययों (पच्चयों) में से एक, कारण, तार्किक आधार – **णं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलम्बीयति*

दुब्बलेन विय दण्डादिकं चित्तचेतसिकेहि गय्हतीति आरम्मणं चित्तचेतसिका हि यं यं धम्मं आरब्भ पवत्तन्ति, ते ते धम्मा तेसं तेसं धम्मानं आरम्मणपच्चयो नाम, अभि॰ ध॰ वि॰ 211; *"यञ्च, भिक्खवे, चेतेति यञ्च पकप्पेति यञ्च अनुसेति आरम्मणमेतं होति विञ्ञाणस्स ठितिया",* स॰ नि॰ 1(2).59; *पच्चयो हि इध आरम्मणन्ति अधिप्पेता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.62; *आरम्मणम्पि हि बाहिरायतनानि विय इध 'बहिद्धा'ति वुत्तं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.139; *आरम्मणमेतं होतीति एतं चेतनादिधम्मजातं पच्चयो होति, पच्चयो हि इध आरम्मणन्ति अधिप्पेता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.62; – **णं²** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न लच्छति मारो आरम्मणं,* दी॰ नि॰ 3.42; – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणेनापि परित्तकेन, पच्चेकबोधिं अनुपापुणन्ति,* अप॰ 1.8; *तेन आरम्मणेन रागा विमुच्चति,* मि॰ प॰ 302; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आरम्मणतो जानाति* ..., कथाव॰ 262; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणस्स गोचरट्ठो अभिञ्ञेय्यो,* पटि॰ म॰ 15; *सीले पतिट्ठाय कम्मट्ठानवसेन गहितस्स आरम्मणस्स भावनापवत्तिट्ठानत्ता गोचरट्ठानत्ता च गोचरट्ठो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.83; – **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणे सति पतिट्ठा विञ्ञाणस्स होति,* स॰ नि॰ 1(2).58; *आरम्मणे सतीति तस्मिं पच्चये सति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.62; – **णा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरम्मणा यस्स न सन्ति केचि,* सु॰ नि॰ 478; *आरम्मणाति पच्चया, पुनब्भवकारणानीति वुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.123; – **णे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरम्मणे लभित्वान, पहितत्तेन भिक्खुना,* मि॰ प॰ 385; *पाटियेक्के पाटियेक्के आरम्मणे बन्धतीति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 391; – **णेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *छट्ठारिकेहि आरम्मणेहि निम्मथितो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).193; – **णानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चक्खादीनं वत्थूनं रूपादीनं आरम्मणानञ्च पटिघातेन समुप्पन्ना सञ्ञा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 246; – **णेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *योगिना योगावचरेन आरम्मणेसु येव चित्तं उपनिबन्धितब्बं,* मि॰ प॰ 384; ... *सब्बेसु रूपादिसु आरम्मणेसु सवन्तो सब्बापि रूपतण्हा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.307; – **वसेन** तृ॰/प॰ वि॰, प्रतिरू॰ निपा॰, क्रि॰ वि॰, आलम्बन के कारण, आलम्बन के विषय में – *यं विञ्ञाणट्ठितीसु ठितं पठमाभिनिब्बत्तिआरम्मणवसेन उपादानं, इदं वुच्चति चेतसिकन्ति,* पेटको॰ 306; *अयञ्हि यथा असुभकम्मट्ठानं ... ओळारिकारम्मणत्ता पन पटिकूलारम्मणत्ता च आरम्मणवसेन नेव सन्तं न पणीतं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.300.

आरम्मणक नपुं॰, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में, आलम्बन, विषय, **अप्पमाणा॰**- प्रमाण से रहित आलम्बन, बहुत बड़ा आलम्बन; **तदा॰**- पांच इन्द्रिय द्वारों में प्रादुर्भूत आलम्बन के ग्रहण हेतु उत्पन्न चित्त की प्रवृत्ति का सोलहवां एवं सत्तरहवां क्षण, जवनक्षण में परिभुक्त आलम्बन की कटु अथवा मधुर अनुभूतियों को अंकित करने का क्षण – **कं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तदा तेन तुल्यविपाकम्पि, तदारम्मणकं सिया,* अभि॰ अव॰ 393.

आरम्मणकथा स्त्री॰, पांच प्रकार की कथावत्थुओं में से एक – *तिस्सो पन सङ्गीतियो अनारुळ्हं धातुकथा आरम्मणकथा असुभकथा ञाणवत्थुकथा ... कथावत्थूहि ... नाम,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.177.

आरम्मणकरण नपुं॰, तत्पु॰ स॰, (किसी वस्तु को) अपना आलम्बन बनाना – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गोत्रभुञाणस्स सुविसुद्धनिब्बानारम्मणकरणं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 274; *आभुजितवसेन वा हि उस्सदवसेन वा आरम्मणकरणं होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 364; – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणकरणेन च निब्बाने पक्खन्दतीति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.33; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सकायचित्तानं आरम्मणकरणतो अज्झत्तारम्मणं होति,* विसुद्धि॰ 2.58; – **सम्पत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, चिन्तन का आलम्बन बनाने की अवस्था की प्राप्ति – *कम्मञ्ञभावेनेव सम्पन्नाकारेन आरम्मणस्स गहणं आरम्मणकरणसम्पत्ति,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.135.

आरम्मणकिरिया स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, आलम्बन अथवा विषय की क्रिया – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थो किच्चवसेन आरम्मणकिरियाय च विदितो,* उदा॰ अट्ठ॰ 41.

आरम्मणकुसल त्रि॰, तत्पु॰ स॰, ध्यान के आलम्बनों के ग्रहण में कुशल – **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न समाधिस्मिं आरम्मणकुसलो,* स॰ नि॰ 2(1).264; *न समाधिस्मिं आरम्मणकुसलोति कसिणारम्मणेसु अकुसलो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.318.

आरम्मणगोचरसद्द पु॰, तत्पु॰ स॰, आरम्मण शब्द एवं गोचर शब्द – **द्दानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरम्मणगोचरसद्दानं एकत्थता वुत्ता,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.100.

आरम्मणगहण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आलम्बनग्रहण], आलम्बन का ग्रहण, विषय को पकड़ लेना – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणग्गहणञ्हि चित्तं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.277; – **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अज्झत्तिकबाहिरा चस्स पथवी आरम्मणग्गहणे पच्चयो होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 349; – **क्खम**

त्रि., तत्पु. स. [आलम्बनग्रहणक्षम], आलम्बन अथवा अपने विषय को ग्रहण करने में सक्षम या समर्थ – **मानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *सत्तानं इन्द्रियानि आरम्मणगहणक्खमानि होन्ति,* विसुद्धि. 2.85; *आरम्मणगहणक्खमानीति रूपादिआरम्मणं गहेतुं समत्थानि ...,* विसुद्धि. महाटी. 2.123; – **लक्खण** त्रि., ब. स., वह, जिसका लक्षण अपने आलम्बन अथवा अपने विषय का ग्रहण कर लेना हो, आलम्बन के ग्रहण के लक्षण वाला – **णो** पु., प्र. वि., ए. व. – *लोभो आरम्मणग्गहणलक्खणो,* विसुद्धि. 2.95; *आरम्मग्गहणं "मम इद"न्ति तण्हाभिनिवेसवसेन अभिनिविस्स आरम्मणस्स अविस्सज्जनं, न आरम्मणकरणमत्तं,* विसुद्धि. महाटी. 2.139.

आरम्मणचतुक्क[1] नपुं., आलम्बनों का चतुष्टय, आलम्बनों की चौकड़ी – **क्कं** प्र. वि., ए. व. – *केवलञ्चेत्थ आरम्मणचतुक्कं आरम्मणदुकं होति,* ध. स. अट्ठ. 234.

आरम्मणचतुक्क[2] नपुं., व्य. सं., ध. स. अट्ठ. के एक अंश का शीर्षक, ध. स. अट्ठ. 229; – **वण्णना** स्त्री., ध. स. मू. टी. के एक खण्ड का शीर्षक, ध. स. मू. टी. 100.

आरम्मणचित्त नपुं., कर्म. स., चित्र-विचित्र आलम्बन, तरह तरह के आलम्बन – **त्तानि** प्र. वि., ब. व. – *चित्रानीति आरम्मणचित्तानि,* स. नि. अट्ठ. 1.57.

आरम्मणचित्तता स्त्री., भाव., आलम्बन पर चित्त को लगा देने की अवस्था – **य** तृ. वि., ए. व. – *अपिच चित्तं नामेतं सहजातं सहजातधम्मचित्तताय ... आरम्मणचित्तताय ... लिङ्गनानत्तसञ्ञानानत्तवोहारनानत्तादीनं अनेकविधानं चित्तानं ... वेदितब्बं,* स. नि. अट्ठ. 2.288.

आरम्मणट्ठ पु., तत्पु. स. [आलम्बनार्थ], आलम्बन का अर्थ अथवा अभिप्राय – **ट्ठो** प्र. वि., ए. व. – *आरम्मणट्ठो अभिञ्ञेय्यो,* पटि. म. 15; *तस्स निब्बानारम्मणस्स आलम्बनभावेन आरम्मणट्ठो,* पटि. म. अट्ठ. 1.82; – **ट्ठं** द्वि. वि., ए. व. – *आरम्मणट्ठं बुज्झन्तीति – बोज्झङ्गा,* पटि. म. 295; – **ट्ठेन** तृ. वि., ए. व. – *समथविपस्सनं युगनद्धं भावेति, आरम्मणट्ठेन,* पटि. म. 277; *आरम्मणट्ठेनाति आलम्बनट्ठेन, आरम्मणवसेनाति अत्थो,* पटि. म. अट्ठ. 2.175.

आरम्मणट्ठिति स्त्री., तत्पु. स. [आलम्बनस्थिति], आलम्बन (विषय) की स्थिरता, आलम्बन का टिकाऊपन – **ति** प्र. वि., ए. व. – *एकमेकस्स चेतेति च पकप्पेति च विञ्ञाणस्स ठिति या होति, सा च ठिति द्विधा आरम्मणट्ठिति च आहारट्ठिति च,* पेटको. 306.

आरम्मणता स्त्री., आरम्मण का भाव., आलम्बन-भाव, चित्त एवं इन्द्रियों का आलम्बन या गोचर होना, केवल स. उ. प. के रूप में प्रयुक्त, – **ता** प्र. वि., ए. व. – *आरम्मणविभागे ... अत्तनो सन्तानसम्बन्धं हेट्ठिमसमापत्तिं आरब्भ पवत्तितो अज्झत्तारम्मणता वेदितब्बा,* ध. स. अट्ठ. 439; – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *एवं पजानने अप्प–माणारम्मणतं भवे,* अभि. अव. 1158; – **य** ष. वि., ए. व. – *तञ्हि यथा बुद्धेन भगवता देसितं, तथा अनोदिस्सकफरणवसेन अपरिमाणसत्तारम्मणताय अप्पमाणं,* थेरगा. अट्ठ. 2.204.

आरम्मणत्त नपुं., आरम्मण का भाव. [आलम्बनत्त्व], उपरिवत् – **त्ता** प. वि., ए. व. – *आरूप्पज्झानस्स आरम्मणत्ता,* विसुद्धि. 1.321; *भयस्स आरम्मणत्ता,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).127; स. उ. प. के रूप में, अकुप्पा..

आरम्मणत्तिक नपुं., तत्पु. स., आलम्बनों अथवा गोचर-भूत रूप आदि धर्मों की तिकड़ी, आलम्बनों का त्रिक – **का** प्र. वि., ब. व. – *आरम्मणत्तिका वुत्ता, ये चत्तारो महेसिना,* विसुद्धि. 2.57; *चत्तारो हि आरम्मणत्तिका महेसिना वुत्ता,* तदे.; – **केसु** सप्त. वि., ब. व. – *आरम्मणत्तिकेसु पन ... चक्खुसोत ... इन्द्रियानि सन्धाय वुत्तं,* विभ. अट्ठ. 120; स. उ. प. के रूप में परित्ता. के अन्त. द्रष्ट..

आरम्मणदायक त्रि., किसी भी धर्म को आलम्बन अथवा आश्रय के रूप में प्रस्तुत करने वाला – **कानं** पु., च./ष. वि., ब. व. – *लद्धा च नं अस्सादेन्ति, आरम्मणदायकानञ्च चित्तकारादीनं सक्कारं करोन्ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).229.

आरम्मणदुक नपुं., तत्पु. स., दो आलम्बनों की एक इकाई, आलम्बनों का दुक्का – **कं** प्र. वि., ए. व. – *केवलञ्चेत्थ आरम्मणचतुक्कं आरम्मणदुकं होति,* ध. स. अट्ठ. 234; *पञ्चवीसति आरम्मणानारम्मणउपपरिक्खणवसेन पवत्तता आरम्मणदुका नाम,* ध. स. अट्ठ. 337.

आरम्मणदुब्बलता स्त्री., तत्पु. स. [आलम्बनदुर्बलता], आलम्बनों की दुर्बलता – *कस्मा एवं होति ? आरम्मणदुब्बलताय,* ध. स. अट्ठ. 307.

आरम्मणधम्म पु., कर्म. स. [आलम्बनधर्म], आलम्बनभूत धर्म, आलम्बन के रूप में विद्यमान वस्तु अथवा अवस्था – **म्मा** प्र. वि., ब. व. – *धम्माति आरम्मणधम्मा,* स. नि. अट्ठ. 1.159; *विचिकिच्छट्ठानीया धम्माति विचिकिच्छाय आरम्मणधम्मा,* स. नि. अट्ठ. 3.177; *ओघनिया, ओघानं आरम्मणधम्मा एव वेदितब्बा,* ध. स. अट्ठ. 95; – **म्मानं** ष.

वि., ब. व. – *कामरागस्स कारणभूतानं आरम्मणधम्मानं,* स. नि. अट्ठ. 3.185.

आरम्मणनानत्त नपुं., तत्पु. स. [आलम्बननानात्व], आलम्बनों की विविधता, आलम्बनों का नानारूप होना – **त्तं** प्र. वि., ए. व. – *एकस्स पठवीकसिणं आरम्मणं होति ... पे. ... एकस्स ओदातकसिणन्ति इदं आरम्मणनानत्तं,* विभ. अट्ठ. 494; – **त्तो** प. वि., ए. व. – *आरम्मणनानत्ततो हि अपरिमितसङ्ख्येय्यानं सत्तानं अपरिमितमसङ्ख्येय्या विपल्लासा भवन्ति,* पेटको. 249; – **ता** स्त्री., भाव., उपरिवत् – **ता** प्र. वि., ए. व. – *चतुत्थं झानं भावेत्वा आरम्मणनानत्तता ... देवानं सहब्यतं उपपज्जन्ति,* विभ. 498; *आरम्मणनानत्ततानि आरम्मणस्स नानत्तभावो,* विभ. अट्ठ. 494.

आरम्मणन्तर नपुं., तत्पु. स. [आलम्बनान्तर], आलम्बन का आन्तरिक स्वरूप, आलम्बन अथवा विषय की भीतरी वि ोषता – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *एकाकियो अदुतियो, सेति आरम्मणन्तरे'ति,* मि. प. 368; – **गत** त्रि., (ध्यानाभ्यास के क्रम में) आलम्बन के भीतर तक गया हुआ – *योगिना योगावचरेन मानसे कायं निक्खिपित्वा आरम्मणन्तरगतेन सयितब्बं,* तदे..

आरम्मणपच्चय[1] पु., [बौ. सं. आलम्बनप्रत्यय], चौबीस प्रकार के प्रत्ययों में से एक, आलम्बनभूत प्रत्यय, चित्त एवं चैतसिक धर्मों की उत्पत्ति में आलम्बन (आधार) के रूप में विद्यमान लौकिक एवं लोकोत्तर धर्म – **यो** प्र. वि., ए. व. – *आलम्बीयति दुब्बलेन विय दण्डादिकं चित्तचेतसिकेहि गय्हतीति आरम्मणं चित्तचेतसिका हि यं यं धम्मं आरब्भ पवत्तन्ति, ते ते धम्मा तेसं तेसं धम्मानं आरम्मणपच्चयो नाम,* अभि. ध. स. 211; ... *तस्मा लोकियलोकुत्तरादिभेदा सब्बेपि धम्मा यथायोगं चित्तचेतसिकानं आरम्मणपच्चयोति वेदितब्बोति ...,* मो. वि. 339; ... *चाति आरम्मणपच्चयो, आरम्मणं हुत्वा पच्चयो, आरम्मणभावेन पच्चयो'ति अत्थो'ति न कम्मधारयमत्तं,* विसुद्धि. महाटी. 2.251; *चक्खु निस्सयपच्चयो, रूपं आरम्मणपच्चयो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).274; – **येन** तृ. वि., ए. व. – *आरम्मणपच्चयेन च उपनिस्सयपच्चयेन चाति द्वेधा पच्चयो होति,* विभ. अट्ठ. 138; *"... ते ते धम्मा तेसं तेसं धम्मानं आरम्मणपच्चयेन पच्चयो"ति ...,* विसुद्धि. 2.162; – **ता** स्त्री., भाव., आलम्बन के रूप में प्रत्यय होना, आश्रय के रूप में कारणता – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *आरम्मणपच्चयतं जानाति,* कथाव. 263; – **य** तृ. वि., ए. व. – *आरम्मणपच्चयताय पच्चयो,* पेटको. 270; – **भाव** पु., उपरिवत् – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *न हि सो धम्मो अत्थि, यो चित्तचेतसिकानं आरम्मणपच्चयभावं न गच्छेय्य,* अभि. ध. वि. 211; – **भूत** त्रि., आलम्बन-प्रत्यय के रूप में विद्यमान, वह, जिसे आलम्बनभूत प्रत्यय बना दिया गया है – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *मग्गफलानं आरम्मणपच्चयभूतं अमतं महानिब्बानं नाम अत्थि नु खो नत्थी'ति,* ध. स. अट्ठ. 383; – **तानं** पु., ष. वि., ब. व. – *संयोजनस्स आरम्मणपच्चयभूतानं एतं अधिवचनं,* ध. स. अट्ठ. 95.

आरम्मणपच्चय[2] पु., द्व. स., आलम्बन एवं प्रत्यय – **येहि** तृ. वि., ब. व. – *आरम्मणपच्चयेहि च, परधम्मेहि चिमे पभाविता,* विसुद्धि. 2.230.

आरम्मणपटिपदा स्त्री., द्व. स., आलम्बन एवं मार्ग, चेतना द्वारा गृहीत रूप आदि आलम्बन तथा इस के ज्ञान का मार्ग – **हि** तृ. वि., ब. व. – *ये केचि झानं उप्पादेन्ति नाम न ते आरम्मणपटिपदाहि विना उप्पादेतुं सक्कोन्ति,* ध. स. अट्ठ. 230; – **मिस्सक** त्रि., आलम्बन एवं इसके ग्रहण के मार्ग से मिश्रित – **कं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *इदानि आरम्मणपटिपदामिस्सकं सोळसक्खत्तुकनयं दस्सेतुं,* ध. स. अट्ठ. 229.

आरम्मणपटिपादक पु., तत्पु. स., आलम्बन-विषयक नियन्त्रण – **को** प्र. वि., ए. व. – *आरम्मणपटिपादको मनम्हि कारोति मनसिकारो,* विसुद्धि. 2.94; – **त्त** नपुं., भाव., आलम्बन-विषयक नियन्त्रण की अवस्था, आलम्बन पर पूर्ण नियन्त्रण करना – **त्तेन** तृ. वि., ए. व. – *आरम्मणपटिपादकत्तेन सम्पयुत्तानं सारथि विय दट्ठब्बो,* विसुद्धि. 2.94.

आरम्मणपटिविजानन नपुं., तत्पु. स., आलम्बन की सही सही पहचान, आलम्बन का ठीक ठीक ज्ञान – **नं** प्र. वि., ए. व. – *आरम्मणपटिविजाननं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो,* विसुद्धि. 2.225; *आरम्मणपटिविजाननन्ति थद्धतासङ्घातफोट्ठब्बारम्मणपटिविजाननं,* विसुद्धि. महाटी. 2.334.

आरम्मणपटिसङ्खा 1. स्त्री., तत्पु. स., आलम्बनविषयक प्रतिसंख्यान, आलम्बन का अनुचिन्तन, रूप आदि आलम्बनों के अनित्य, परिवर्तनशील होने का ज्ञान – **ङ्खा** प्र. वि., ए. व. – *या च आरम्मणपटिसङ्खा या च भङ्गानुपस्सना यञ्च सुञ्ञतो उपट्ठानं, अयं अधिपञ्ञाविपस्सना नामाति वुत्तं होति,* विसुद्धि. 2.279; **2.** सं. कृ. क्रि. वि. के रूप

में, ध्यानपूर्वक, एकाग्रतापूर्वक, सावधानी से – *तत्थ आरम्मणपटिसङ्खाति यं किञ्चि आरम्मणं पटिसङ्खाय जानित्वा, खयतो वयतो दिस्वाति अत्थो,* विसुद्धि॰ 2.277.

आरम्मणपथवी स्त्री॰, कर्म॰ स॰ (ध्यान के) आलम्बन के रूप में पृथ्वी, एक ज्ञान-कसिण के रूप में पृथ्वी – *लक्खणपथवी ससम्भारपथवी आरम्मणपथवी सम्मुतिपथवीति चतुब्बिधा पथवी,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).28; ... *आरम्मणपथवी, निमित्तपथवीतिपि, वुच्चति,* तदे॰.

आरम्मणपणीतता स्त्री॰ भाव॰, ध्यान के आलम्बन की सूक्ष्मता, आलम्बन का सूक्ष्मभाव – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणपणीतताय पणीतो अतित्तिकरो, अङ्गपणीततायपीति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.300.

आरम्मणपरिग्गह पु॰, तत्पु॰ स॰ [आलम्बनपरिग्रह], आलम्बनों को अपने अधीन में ले लेना अथवा उन्हें दृढ़ता से ग्रहण कर लेना – **रहित** त्रि॰, आलम्बनों के परिग्रह से रहित – **तानं** च॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सोळससु ठानेसु आरम्मणपरिग्गहरहितानंयेव तादिसानि सेनासनानि दुरभिसम्भवानि, न तेसु आरम्मणपरिग्गाहयुत्तानं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).120.

आरम्मणपुरेजात 1. नपुं॰, कर्म॰ स॰, पूर्व में उत्पन्न आलम्बन, आलम्बन की पूर्ववर्तिता, पूर्व में उत्पन्न आलम्बन-प्रत्यय – **तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – "... *सेक्खा वा पुथुज्जना वा चक्खुं अनिच्चतो दुक्खतो अनत्ततो विपस्सन्ती"ति आगतत्ता मनोद्वारे पि आरम्मणपुरेजातं लब्भतेव,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 369; 2. नपुं॰, द्व॰ स॰, आलम्बन एवं पूर्ववर्तिता, स॰ प॰ के रूप में ... *बाहिरेसु पन रूपायतनं चक्खुसम्फस्सस्स आरम्मणपुरेजातअत्थिअविगतवसेन चतुधा पच्चयो होति,* विभ॰ अट्ठ॰ 169.

आरम्मणप्पभेद पु॰, तत्पु॰ स॰, आलम्बनों का भेद, आलम्बन का विभाजन – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणप्पभेदं पन अनुगन्त्वा,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 198.

आरम्मणभाव पु॰, [आलम्बनभाव], चित्त-चैतसिकों का आलम्बन होना, आलम्बन होने की स्थिति – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणभावं उपगन्त्वा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 89; 95; – **वेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसवानं आरम्मणभावेन पच्चयभूतं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.239; – **वाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कायपटिबद्धो वण्णो पुरिसस्स चक्खुविञ्ञाणस्स आरम्मणभावाय उपकप्पति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.236.

आरम्मणभूत त्रि॰, आलम्बन हो चुका, वह, जो किसी के लिए आलम्बन बन गया है अथवा किसी के ज्ञान का विषय है – **ता**[1] पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सङ्खारा चेतिता पकप्पिता च आरम्मणभूता होन्ति,* पेटको॰ 307; *तस्मा सब्बेपि चित्तचेतसिकानं धम्मानं आरम्मणभूता धम्मा आरम्मणपच्चयो ति वेदितब्बा,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 345; – **ता**[2] स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्ञापि आरम्मणभूता ञेय्यं,* नेत्ति॰ 163; *आरम्मणभूता ञेय्यन्ति ञेय्यतो विसुं कत्वा पञ्ञा वुत्ता,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 388; – **ता**[3] स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *विपस्सनाय आरम्मणभूता झानसमापत्तियो वुत्ता,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.255; – **ता**[4] नपुं॰, प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं सो तस्मा चतुत्थज्झानस्स आरम्मणभूता कसिणरूपा निब्बिज्ज ...,* विसुद्धि॰ 1.317; – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं किञ्चि आरम्मणभूतं अज्झत्तिकं वा बाहिरं वा, सब्बं तं सङ्खतेन असङ्खतेन च निद्दिसितब्बं,* नेत्ति॰ 163; *आरम्मणभूतन्ति यं किञ्चि ञाणस्स विसयभूतं रूपादि,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 388 – **त्त** नपुं॰, आरम्मणभूत का भाव॰ [आलम्बनभूतत्त्व], आलम्बन होना, विषय रहना, स॰ प॰ के रूप में **वत्था॰**- चक्षु आदि वत्थुओं का विषयीभाव होना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वत्थारम्मणभूतत्ता सङ्घट्टनवसेन गहेतब्बतो थूलं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 368.

आरम्मणभेद पु॰, तत्पु॰ स॰ [आलम्बनभेद], 1. आलम्बनों (रूप आदि विषयों) का वर्गीकरण या भेद-प्रभेद – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्सा तेसु वुत्तनयेनेव आरम्मणभेदो वेदितब्बो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 432; – **देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *झानं नाम यथा पटिपदाभेदेन एवं आरम्मणभेदेनापि चतुब्बिधं होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 229; 2. आलम्बनों की विविधता – **देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणभेदेन हि बहुका एता सतियो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).249; *आरम्मणभेदेन सतिबहुत्ता बहुवचनं वेदितब्बं,* तदे॰; – **दे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणभेदे, किच्चभेदे च बहुवचनं होति,* सद्द॰ 3.736; – **भिन्न** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, आलम्बनों के भेद के कारण भिन्न – **न्नं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *छळारम्मणभेदभिन्नं विपस्सनाय विसयं,* उदा॰ अट्ठ॰ 73; – **दाभाव** पु॰, तत्पु॰ स॰, आलम्बनों अथवा रूप आदि विषयों में भेद का अभाव – **तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरुप्पज्झानेसु पन आरम्मणभेदाभावतो पुरिमकारणद्वयवसेनेव बहुवचनं वेदितब्बं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).194.

आरम्मणमरियादा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, आलम्बन की मर्यादा, रूप आदि विषयों की सीमा, आलम्बन-विषयिणी मर्यादा –

तत्थ द्वे मरियादा किलेसमरियादा च आरम्मणमरियादा च, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.62.

आरम्मणमालिन त्रि॰, ध्यान के आलम्बनों की माला को धारण करने वाला – **लिना** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *योगिना योगावचरेन आरम्मणमालिना भवितब्बं,* मि॰ प॰ 358.

आरम्मणरस पु॰, तत्पु॰ स॰ [आलम्बनरस], आलम्बन का मुख्य कार्य, आलम्बन का आधारभूत गुण, आलम्बन का रस – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सरवताय विस्सविताय सामिभावेन वेदनाव आरम्मणरसं अनुभवति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 155; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अवसेसधम्मानं आरम्मणरसस्स एकदेसानुभवनं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 156; – **सानुभवन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आलम्बन के कार्य अथवा रस का अनुभव – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मातरा कम्मे उपनीतकालो विय जवनस्स आरम्मणरसानुभवनं वेदितब्बं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 317; – **सेकदेस** पु॰, तत्पु॰ स॰, आलम्बनभूत पदार्थ या धर्म का एक भाग – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेसधम्मापि आरम्मणरसेकदेसमेव अनुभवन्ति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 156.

आरम्मणवड्ढन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आलम्बनवर्धन], आलम्बन की वृद्धि, आलम्बन का विस्तार – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपचारे वा अप्पनाय वा पत्ताय आरम्मणवड्ढनं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 239.

आरम्मणवन नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आलम्बन-रूपी वन, घने जंगल जैसे रूप आदि आलम्बन – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरञ्ञमहावनं विय हि आरम्मणवनं वेदितब्बं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.87; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मिं वने विचरणमक्कटो विय आरम्मणवने उप्पज्जनकचित्तं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.87.

आरम्मणववत्थान नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आलम्बनव्यवस्थान], ध्यान के क्रम में आलम्बनों का निर्धारण, आलम्बन-विषयक निश्चय – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न च तानि धम्मारम्मणानि भवन्तीति वुत्तनयेनेव ... आरम्मणववत्थानं वेदितब्बं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 117; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणववत्थानतोति इमेहि चुद्दसहाकारेहि चित्तं परिदमेतब्बं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 231; – **पञ्ञा** स्त्री॰, आलम्बनों का निर्धारण करने वाली प्रज्ञा – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपिच खो पन इमेसु सोळससु ठानेसु आरम्मणववत्थानपञ्ञायाति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).125.

आरम्मणववत्थापन नपुं॰, उपरिवत् – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणमत्तस्सेव ववत्थापनं आरम्मणववत्थापनं नाम,* विसुद्धि॰ 2.4; स॰ प॰ में – *किरियमनोविञ्ञाणधातुया आरम्मणववत्थापनमत्तकमेव किच्चं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 309.

आरम्मणवार पु॰, आलम्बन की बारी, आलम्बन का संप्राप्त क्रम – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इति मूलवारो ... आरम्मणवारो, ... समुदयवारोति सब्बेपि दस वारा होन्ति,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 288.

आरम्मणविजाननलक्खण त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसका लक्षण आलम्बनों का ज्ञान कराना है – **णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यस्मा पन आरम्मणविजाननलक्खणं चित्तं ...,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.107.

आरम्मणविभत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आलम्बनविभक्ति] ध्यान प्रक्रिया के सन्दर्भ में आलम्बनों का विभाजन या वर्गीकरण – **यो**[1] प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अत्थि ... तेन भगवता ... आरम्मणविभत्तियो अक्खाता,* मि॰ प॰ 302; – **यो**[2] द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अट्ठतिंस आरम्मणविभत्तियो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.219; – **निद्देस** पु॰, आलम्बनों के विभाजनों का विवेचनात्मक व्याख्यान, स॰ उ॰ प॰ में **परिचिण्णा॰**- त्रि॰, आलम्बनों के विभाजनों के विवेचनपरक व्याख्यान में अभ्यस्त – **सा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *भिक्खू उळारदेसनापटिवेधा परिचिण्णारम्मणविभत्तिनिद्देसा सिक्खागुणपारमिप्पत्ता,* मि॰ प॰ 313.

आरम्मणविभाग पु॰, तत्पु॰ स॰ [आलम्बनविभाग], **क.** आलम्बनों का वर्गीकरण, आलम्बनों का पार्थक्यीकरण – **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेसं आरम्मणविभागो जानितब्बो तत्थ विपस्सनाञाणं परित्तमहग्गतअतीतानागतपच्चुप्पन्नअज्झत्तबहिद्धावसेन सत्तविधारम्मणं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.183; – **गे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणविभागे पन विञ्ञाणञ्चायतनं ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 439; **ख.** आलम्बनों के भेद – **गेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरम्मणविभागेसु, पवत्तति कथं पन,* अभि॰ अव॰ 1143.

आरम्मणविभागनिद्देस पु॰, अभि॰ अव॰ के छट्ठे परिच्छेद का शीर्षक, जिसमें रूप आदि छ आलम्बनों के प्रभेदों का विवेचन किया गया है, अभि॰ अव॰ 50-57; गा॰ 291-375.

आरम्मणविभावन नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आलम्बनों का स्पष्टीकरण आलम्बनों का स्पष्ट रूप से प्रकाशन – **ठान** नपुं॰, आलम्बनों के सुस्पष्ट प्रकाशन का स्थल – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणविभावनट्ठाने चित्तं पुब्बङ्गमं पुरेचारिकं होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 158.

आरम्मणविमुत्ति स्त्री., तत्पु. स., रूप आदि आलम्बनों के प्रति राग से छुटकारा – **त्तीसु** सप्त. वि., ब. व. – *आरम्मणविमुत्तीसु, सभावदस्सनो मुनि,* अप. 1.352.

आरम्मणवियोग पु., तत्पु. स., आलम्बनों से बिलगाव – **स्स** ष. वि., ए. व. – *आरम्मणवियोगस्स चेव दुक्खवियोगस्स च अप्पदानतो योगातिपि तेसञ्ञेव अधिवचनं,* विसुद्धि. 2.322.

आरम्मणविसभागता स्त्री., आलम्बन की भिन्नता – **य** तृ. वि., ए. व. – ... *कस्मा ? आरम्मणविसभागताय,* विसुद्धि. 1.307.

आरम्मणवीथि स्त्री., आलम्बनों को ग्रहण करने अथवा उनका ज्ञान करने की प्रक्रिया वाला मार्ग, स. उ. प. के रूप में, **पञ्चा.**- चक्षु आदि पांच इन्द्रियों द्वारा ग्राह्य रूप आदि पांच आलम्बनों के ग्रहण की प्रक्रिया – **या** ष. वि., ए. व. – *इट्ठमज्झत्ते पञ्चारम्मणवीथिया सन्तीरणं हुत्वा* ..., अभि. अव. 11.

आरम्मणसङ्कन्ति स्त्री., तत्पु. स. [आलम्बनसंक्रान्ति], ध्यान के क्रम में किसी एक आलम्बन को छोड़कर दूसरे आलम्बन का ग्रहण, विभिन्न आलम्बनों का एक ही ध्यान में संक्रमण, पठवीकसिण, आपोकसिण आदि सभी कसिणों का एक ही ध्यान में आलम्बन के रूप में ग्रहण – **न्ति** प्र. वि., ए. व. – ... *सुखुमं पन चित्तन्तरं खन्धन्तरं* ... *अङ्गसङ्कन्ति आरम्मणसङ्कन्ति एकतोवड्ढनं उभतोवड्ढनन्ति आभिधम्मिकधम्मकथिकस्सेव पाकटं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).153; *पठवीकसिणे पठमं झानं समापज्जित्वा तदेव आपोकसिणेति एवं सब्बकसिणेसु एकस्सेव झानस्स समापज्जनं आरम्मणसङ्कन्ति,* म. नि. टी. (मू.प.) 1(2). 179; *तस्स तस्सेव हि झानस्स आरम्मणन्तरे पवत्ति आरम्मणसङ्कन्ति,* विसुद्धि. महाटी. 2.4.

आरम्मणसङ्कन्तिक त्रि., सभी कसिणों (कृत्स्नों) अथवा आलम्बनों पर किसी एक ही ध्यान की प्राप्ति से सम्बन्धित – **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *"सब्बकसिणेसु एकस्सेव झानस्स समापज्जनं आरम्मणसङ्कन्तिकं नामा"ति,* विसुद्धि. महाटी. 2.4; – **तो** प. वि., ए. व. – *तस्मा इद्धिविधं ताव सम्पादेतुकामो ... अङ्गसङ्कन्तिकतो आरम्मणसङ्कन्तिकतो ... इमेहि चुद्दसहि आकारेहि चित्तं परिदमेत्वा* ..., पटि. म. अट्ठ. 1.277.

आरम्मणसङ्खात त्रि., आलम्बन के रूप में विख्यात, तथाकथित आलम्बन – **तानं** स्त्री., ष. वि., ब. व. – *एतेसञ्च पथवीकसिणादिवसेन नवन्नं आरम्मणसङ्खातानं रूपसञ्ञानं, सब्बाकारेन अनवसेसानं वा विरागा च निरोधा च* ..., विसुद्धि. 1.318.

आरम्मणसञ्जानन नपुं., तत्पु. स., आलम्बनों का समुचित रूप में ज्ञान – **नं** प्र. वि., ए. व. – *आरम्मणसञ्जाननञ्चेव विपस्सनाय च विसयभावं उपगन्त्वा निब्बिदाजननं,* ध. स. अट्ठ. 252; – **मत्त** नपुं., केवल आलम्बन का ज्ञान – **त्तं** द्वि. वि., ए. व. – *सञ्ञा "नीलं पीतक"न्ति आरम्मणसञ्जाननमत्तमेव होति,* विसुद्धि. 2.63.

आरम्मणसन्तता स्त्री., ध्यान के आलम्बन का शान्त भाव, आलम्बन की परम सूक्ष्मता – **य** तृ. वि., ए. व. – *अपि च खो आरम्मणसन्ततायपि सन्तो वूपसन्तो निब्बुतो* ..., स. नि. अट्ठ. 3.300; *अङ्गसन्तताय आरम्मणसन्तताय सब्बकिलेसदरथसन्तताय च सन्तो,* दी. नि. अट्ठ. 3.225.

आरम्मणसभागता स्त्री., आलम्बन की समरूपता, आलम्बन की समानता – **य** तृ. वि., ए. व. – *मेत्तादीसु उप्पन्नततियज्झानस्सेव पन उप्पज्जति, आरम्मणसभागतायाति,* विसुद्धि. 1.307; *कम्मसभागताय वा आरम्मणसभागताय वा 'तस्सेव कम्मस्स विपाकावसेसो'ति,* पारा. अट्ठ. 2.88; *आरम्मणसभागतायाति आरम्मणस्स सभागभावेन सदिसभावेन,* सारत्थ. टी. 2.261.

आरम्मणसभाव पु., आलम्बनों की यथार्थ प्रकृति, आलम्बनों का वास्तविक स्वभाव – *मोहो चित्तस्स अन्धभावलक्खणो ... आरम्मणसभावच्छादनरसो वा, ... सब्बाकुसलानं मूलन्ति दट्ठब्बो,* विसुद्धि. 2.96.

आरम्मणसमतिक्कम पु., आलम्बनों का उल्लंघन, आलम्बनों पर विजय, चार प्रकार के अरूप ध्यानों में आका श की अनन्तता आदि आलम्बनों का अतिक्रमण – **मो** प्र. वि., ए. व. – *समतिक्कमोति द्वे समतिक्कमा अङ्गसमतिक्कमो च आरम्मणसमतिक्कमो च,* विसुद्धि. 1.108; – **मं** द्वि. वि., ए. व. – *आरम्मणसमतिक्कमं अवत्वा ... सञ्ञानंयेव समतिक्कमो वुत्तो,* ध. स. अट्ठ. 245; – **मेन** तृ. वि., ए. व. – *आरम्मणसमतिक्कमेन पत्तब्बा एता समापत्तियो,* ध. स. अट्ठ. 246; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *कसिणादिआरम्मणसमतिक्कमस्स पाकटत्ता तं अवत्वा सुत्तन्तेसु वुत्तरूपसञ्ञादिसमतिक्कमो वुत्तो,* पटि. म. अट्ठ. 2.139-140; – **मूत** त्रि., आलम्बनों का अतिक्रमण कर चुका – **तं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – ... *अङ्गेसु समतिक्कमितब्बाभावेन आरम्मणसमतिक्कमभूतं*

आकासानञ्चायतनं सन्ततो मनसि करित्वा ..., मो॰ वि॰ टी॰ 189.

आरम्मणसमतिक्कमन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आलम्बनसमतिक्रमण], उपरिवत् – **मत्त** नपुं॰, आलम्बनों का उल्लंघन-मात्र, केवल आलम्बनों का अग्रहण – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ज्ञानस्स आरम्मणसमतिक्कमनमत्तं तत्थ होति,* विसुद्धि॰ 1.230.

आरम्मणसम्पटिच्छन नपुं॰, आलम्बनों का ग्रहण – **मत्तक** नपुं॰, आलम्बनों का ग्रहण मात्र – **कं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विपाकमनोधातुया आरम्मणसम्पटिच्छनमत्तकमेव,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 309; – **समत्थ** त्रि॰, आलम्बनों के ग्रहण में समर्थ या सक्षम – **त्था** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दूरेपि आरम्मणसम्पटिच्छनसमत्था दिब्बा पसादसोतधातु होति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.283.

आरम्मणसारग्गाह पु॰, तत्पु॰ स॰ [आलम्बनसारग्राह], आलम्बनों के सारतत्त्व का ग्रहण – **हो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणसारग्गाहो, ... एतं जिनपुत्तानं करणीयं,* मि॰ प॰ 173.

आरम्मणाकार पु॰, तत्पु॰ स॰ [आलम्बनाकार], रूप आदि आलम्बनों का आकार अथवा स्वरूप – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नीलादिवसेन आरम्मणाकारं गहेत्वा,* विसुद्धि॰ 2.64.

आरम्मणातिक्कम पु॰, तत्पु॰ स॰, आलम्बनों का अतिक्रमण या त्याग, आलम्बनों पर विजय, कम्मट्ठानों या रूपध्यान के आलम्बनों को पारकर जाना – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणातिक्कमतो चतस्सोपि भवन्तिमा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 253; – **भावना** स्त्री॰, आलम्बनों के अतिक्रमण से प्राप्त ध्यानभावना, आलम्बनों पर विजय से सहगत ध्यानभावना, स॰ प॰ के रूप में, – *विसुद्धिभावनानुक्कमवसेन हि लोकुत्तरं अप्पनं पापुणाति आरम्मणातिक्कमभावनावसेन आरुप्पं,* विसुद्धि॰ 1.230.

आरम्मणाधिगहितुप्पन्न त्रि॰, तत्पु॰ स॰, चार प्रकार के उप्पन्नों में से एक, आलम्बनों के अधिगृहीत हो जाने के कारण इसके उत्तरकाल में उत्पन्न – **न्नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुब्बभागे अनुप्पज्जमानम्पि किलेसजातं आरम्मणस्स अधिग्गहितत्ता एवं अपरभागे एकन्तेन उप्पत्तितो आरम्मणाधिग्गहितुप्पन्नन्ति वुच्चति,* विसुद्धि॰ 2.328; *एवं आरम्मणाधिग्गहितुप्पन्नम्पीति तिविधस्सापि भूमिलद्धेन एकसङ्गहता वुत्ता,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.473.

आरम्मणाधिपति पु॰ कर्म॰ स॰ [आलम्बनाधिपति], चौबीस प्रकार के प्रत्ययों (पच्चयों) में से तृतीय के रूप में उपदिष्ट अधिपति-पच्चय के दो प्रभेदों में से एक, अधिपति (अधिक प्रबल प्रत्यय) भूत आलम्बन-प्रत्यय, चित्त एवं चैतसिकों का वह कुशल आलम्बन अथवा विषय जो अन्य आलम्बनों की अपेक्षा अधिक दृढ़ता के साथ चित्त को अपनी ओर खींचता है, जिस कुशल आलम्बन को अधिक गुरु (महत्त्वपूर्ण) बना कर चित्त-चैतसिक अनुचिन्तन करें, वह आलम्बन उन चित्त-चैतसिकों के उदय में आरम्मणाधिपति-प्रत्यय बन जाता है – **ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणाधिपति – दानं दत्वा सीलं समादियित्वा उपोसथकम्मं कत्वा, तं गरुं कत्वा पच्चवेक्खति, पुब्बे सुचिण्णानि गरुं कत्वा पच्चवेक्खति, झाना वुट्ठहित्वा झानं गरुं कत्वा पच्चवेक्खति, सेक्खा ..., वोदानं ..., सेक्खा मग्गा वुट्ठहित्वा मग्गं गरुं कत्वा पच्चवेक्खन्ति,* पट्ठा॰ 1.157 59; 350-351; 417-419; 469; 511-512; *यं पन धम्मं गरुं कत्वा अरूपधम्मा पवत्तन्ति, सो नेसं आरम्मणाधिपति,* विसुद्धि॰ 2.163; *एत्थ च सत्तधा सहजाताधिपति, सत्तधा आरम्मणाधिपति वेदितब्बो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.255; – **तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अधिपतिं करित्वाति आरम्मणाधिपतिं कत्वा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 387; – **ना** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणाधिपतिना सद्धिं नानत्तं अकत्वाव विभत्तो,* विसुद्धि॰ 2.165; – **वसेन** अ॰, क्रि॰ वि॰, किसी एक कुशल आलम्बन को अधिक महत्त्वपूर्ण बनाकर – *अत्तना पटिविद्धमग्गं गरुं कत्वा पच्चवेक्खणकाले आरम्मणाधिपतिवसेन मग्गाधिपतिनो ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 432; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **किरिया॰**- पु॰, आरम्मणाधिपतिपच्चय का एक प्रभेद – *कामावचरादिभेदतो पन तिविधोपि किरियारम्मणाधिपति लोभसहगताकुसलस्सेव आरम्मणाधिपतिपच्चयो होति,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 361; **कुसला॰**- पु॰, कामावचर, रूपावचर एवं अरूपावचर भूमियों के कुशलचित्तों का आरम्मणाधिपति, प्रत्यय (पच्चय) – **म्हि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रूपावचरारूपावचरेपि कुसलारम्मणाधिपतिम्हि एसेव नयो,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 360; **विपाका॰**- पु॰, विपाक चित्तों का आरम्मणाधिपति प्रत्यय (पच्चय) – *लोकुत्तरो पन विपाकारम्मणाधिपति कामावचरतो आणसम्पयुत्तकुसलकिरियानञ्ञेव आरम्मणाधिपतिपच्चयो होति,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 361-62; स॰ पू॰ प॰ के रूप में – **णूपनिस्सय** पु॰, द्व॰ स॰, आरम्मणाधिपति एवं आरम्मणूपनिस्सय पच्चय, अधिपति-प्रत्यय तथा उपनिस्सय-प्रत्यय के रूप में रूप आदि आलम्बन – **येहि** तृ॰ वि॰, ए॰

व॰ – *गरुंकत्वा अस्सादनकाले आरम्मणाधिपतिआरम्मणूपनिस्सयेहि,* विसुद्धि॰ 2.170; ··· **णूपनिस्सयपच्चय** पु॰, उपरिवत् – **येहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरम्मणाधिपति आरम्मणूपनिस्सयपच्चयेहि रूपस्स पच्चयभावो दस्सितो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 344; – **पच्चय** पु॰, अधिपति-प्रत्यय के दो प्रभेदों में से एक, अधिपतिभूत आलम्बन, चित्त एवं चैतसिकों का वह (कुशल) आलम्बन अथवा ग्राह्य विषय जो अन्य आलम्बनों की अपेक्षा अधिक गुरु अथवा महत्त्वपूर्ण बन गया हो – **येन** तृ॰ वि॰ ए॰ व॰ – *अधिपतिपच्चयेनाति आरम्मणाधिपतिपच्चयेन,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.255; – **पच्चयता** स्त्री॰, भाव॰, आरम्मणाधिपति – नामक प्रत्यय होने की स्थिति – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निब्बानं आरम्मणाधिपतिपच्चयताय अत्तनि अनवज्जधम्मे नामेति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 414.

आरम्मणानन्तर पु॰, द्व॰ स॰, आरम्मण-प्रत्यय एवं अनन्तर-प्रत्यय – **रेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरम्मणानन्तरेहि असम्मिस्सोति अत्थो,* विसुद्धि॰ 2.165.

आरम्मणानुभवन नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आलम्बनों अथवा विषय का अनुभव, स॰ प॰ के रूप में, **अनिट्ठ॰**- नपुं॰, अप्रिय आलम्बन का अनुभव – **लक्खण** त्रि॰, वह, जिसका लक्षण अप्रिय आलम्बन का अनुभव करना हो – **णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनिट्ठारम्मणानुभवनलक्खणं दोमनस्सं,* विसुद्धि॰ 2.88.

आरम्मणानुमज्जन नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आलम्बन का बारम्बार अनुचिन्तन – **लक्खण** त्रि॰, वह, जिसका लक्षण आलम्बन का पुनः पुनः अनुचिन्तन हो – **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विचरणं विचारो, ... स्वायं आरम्मणानुमज्जनलक्खणो,* विसुद्धि॰ 1.137.

आरम्मणान्वय पु॰, तत्पु॰ स॰, आलम्बन का अनुगमन – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणअन्वयेन, उभो एकववत्थना,* विसुद्धि॰ 2.276.

आरम्मणाभिमुख त्रि॰, ब॰ स॰, आलम्बन की ओर उन्मुख, आलम्बन के ग्रहण में प्रवृत्त – **खा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चत्तारो खन्धा नामं, ते हि आरम्मणाभिमुखा नमन्ति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 414; – **खं**[1] स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणाभिमुखं सतिं ठपयित्वा,* उदा॰ अट्ठ॰ 152; – **खं**[2] क्रि॰ वि॰ – *आरम्मणाभिमुखं नमनतो चित्तस्स च नतिहेतुतो सब्बम्पि अरूपं नामन्ति वुच्चति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 61; – **नमन** नपुं॰, आलम्बन की ओर झुकाव, रूप आदि विषयों की ओर प्रवृत्ति – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणाभिमुखनमनं आरम्मणेन विना अप्पवत्ति, तेन नमनट्ठेन नामकरणट्ठेन,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.329; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणाभिमुखं नमनतो नमनट्ठेन नामं,* विसुद्धि॰ 2.220; – **प्पवत्तसति** त्रि॰, आलम्बन की ओर अभिमुख होकर प्रवृत्त स्मृति से युक्त, जागरुक स्मृति से युक्त – **नं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *निच्चं आरम्मणाभिमुखप्पवत्तसतीनमेतं अधिवचनं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).198; – **भाव** पु॰, आलम्बन की ओर अभिमुख या जागरुक होना – **वेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सतिपि मे आरम्मणाभिमुखभावेन उपट्ठिता अहोसि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.205.

आरम्मणाभिमुखीभाव पु॰, आलम्बन की ओर प्रवृत्ति, आलम्बन के प्रति जागरूकता – **वेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सतिपि मे आरम्मणाभिमुखीभावेन उपट्ठिता अहोसि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).131.

आरम्मणिक त्रि॰, आरम्मण + इक के योग से व्यु॰, केवल स॰ उ॰ प॰ में ही प्रयुक्त [आलम्बनिक], आलम्बन से सम्बद्ध, रूप आदि छ आलम्बनों के साथ जुड़ा हुआ, **छळा॰**- त्रि॰, छ आलम्बनों से सम्बद्ध – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इधेकचत्तालीसेव, छळारम्मणिका मता,* अभि॰ अव॰ 364; **तदा॰**- त्रि॰, उसे अपना आलम्बन बनाने वाला – तदारम्मणकं भवे॰ तदे॰ 444.

आरम्मणिय त्रि॰, आ + √रम का सं॰ कृ॰ [आरमणीय], आनन्द लेने योग्य, आमोद-प्रमोद से भरपूर – **यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उद्धच्चकुक्कुच्चस्स रजनीयं आरम्मणियं अस्सादियाकिन्द्रियं ताव अपरिपुण्णञ्च ञाणं पच्चयो,* पेटको॰ 273.

आरम्मणूपनिज्झान नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आलम्बन के विषय में अनुचिन्तन, आलम्बन पर चित्त की एकाग्रता, आलम्बन पर ध्यान लगाना – **नं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणूपनिज्झानं, लक्खणूपनिज्झानन्ति दुविधं होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.107; – **नं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *झायस्सु आरम्मणूपनिज्झानं अनुयुञ्ज,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.88; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणूपनिज्झानेन अट्ठतिंसारम्मणानि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).203; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणूपनिज्झानतो पच्चनीकज्झापनतो वा झानन्ति वेदितब्बं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 211; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरम्मणूपनिज्झाने लक्खणूपनिज्झाने च रतो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.58; – **सङ्खात** त्रि॰, आरम्मणूपनिज्झान नाम से प्रसिद्ध, स॰ प॰ में, – *लक्खणूपनिज्झानआरम्मणूपनिज्झानसङ्खातेहि झानेहि झायति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.240.

आरम्मणूपनिज्झायन नपुं., तत्पु. स., आलम्बन पर ध्यान, आलम्बन पर चित्त की एकाग्रता, स. उ. प. में, – *कसिणादिआरम्मणूपनिज्झायनतो,* पारा. अट्ठ. 1.107.

आरम्मणूपनिस्सय पु., उपनिस्सय-पच्चय के तीन प्रभेदों में से वह प्रभेद जिसमें आलम्बन (कुशल धर्मों आदि के) सुदृढ़ आधार के रूप में उपनिस्सय-पच्चय बन जाते हैं – **यो** प्र. वि., ए. व. – *सो आरम्मणूपनिस्सयो अनन्तरूपनिस्सयो पकतूपनिस्सयोति तिविधो होति,* विसुद्धि. 2.165; ... *गरुकतब्बमत्तट्ठेन आरम्मनाधिपति बलवकारणट्ठेन आरम्मणूपनिस्सयोति एवमेतेसं नानत्तं वेदितब्बं,* तदे.; *सवितक्कसविचारो धम्मो सवितक्कसविचारस्स धम्मस्स उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो – आरम्मणूपनिस्सयो* ..., पट्ठा. 2.80; 81–86; 138–143; 189–191; 248–250; 298–300; 335; – **लक्खण** नपुं., सुदृढ़ आधार वाले आलम्बन रहने का लक्षण – **णेन** तृ. वि., ए. व. – *आरम्मणूपनिस्सयलक्खणेन उपनिस्सयपच्चये सङ्गहं गच्छति,* प. प. अट्ठ. 459.

आरम्मणोक्कन्तिक त्रि., आलम्बनों का परिहार करने वाला, आलम्बनों को लांघ जाने वाला – **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *सुखुमं ... झानोक्कन्तिकं आरम्मणोक्कन्तिकं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).153.

आरा[1] स्त्री., [आरा], सुई, सूजा, टेकुआ – *आरा तु सूचिविज्झनं,* अभि. प. 528; *ण–कारा, हारा, तारा, आरा,* मो. व्या. 5.49; *चम्मकारानं चम्मवेधने'प्यारा,* अभि. प. सूची 41.

आरा[2] अ., निपा. [आरात्], दूर का, (से) दूर, दूरवर्ती – *आरा दूरा च आरका,* अभि. प. 1157; *आरादूरेति अञ्ञमञ्ञवेवचनं अतिदूरेति वा दस्सेन्ती एव माह,* जा. अट्ठ. 4.32; **क.** द्वि. वि. में अन्त होने वाले शब्द के साथ – *एवं आचिनतो दुक्खं आरा निब्बानमुच्चति,* स. नि. 2(2).79; *आरा सिङ्गामि वारिजं,* स. नि. 1(1).237; *आराति दूरे नाळे गहेत्वा ... वदति,* स. नि. अट्ठ. 1.262; **ख.** प. वि. में अन्त होने वाले शब्द के पूर्व-सर्ग के रूप में – *आसवा तस्स वड्ढन्ति आरा सो आसवक्खया,* ध. प. 253; *सहनन्दी अमच्चेहि, आरा संयोजनक्खया,* इतिवु. 53; *ऊहते चित्ते आरा चित्तं समाधिम्हा'ति,* म. नि. 1.165; *आराति दूरे,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).396.

आराचारी त्रि., सदाचारी, पापकर्मों से दूर रहने वाला, शुद्ध आचार से सम्पन्न – **री** पु., प्र. वि., ए. व. – *ब्रह्मचरियं ... आराचारी विरतो मेथुना गामधम्मा'ति,* दी. नि. 1.4; – **रिं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *अज्जतग्गे मं आयस्मन्तो ब्रह्मचारिं धारेथ आराचारिं,* अ. नि. 2(1).200; – **रिनो**[1] पु., प्र. वि., ब. व. – *ब्रह्मचारिनो धारेतु आराचारिनो विरता मेथुना गामधम्मा,* अ. नि. 2(1).201; – **रिनो**[2] पु., द्वि. वि., ब. व. – *ब्रह्मचारिनो धारेतु आराचरिनो,* अ. नि. 2(1).201.

आरादेस पु., तत्पु. स., केवल व्याकरण में प्रयुक्त, व्याकरण विषयक शब्द, 'आरा' का आदेश – **तो** प. वि., ए. व. – *ततो आरादेसतो सब्बेसं योनं ओकारादेसो होति सत्थारो* ..., क. व्या. 205, 209.

आराध क. पु., [आराध], आराधना, सम्मान – **धो** प्र. वि., ए. व. – *आराधो मे रञ्ञो, एवं आराधो मे राजानं,* क. व्या. 279; **ख.** त्रि., सम्मान व्यक्त करने वाला, आराधना करने वाला – *आराधो हं रञ्ञो एवं आराधो हं राजानं,* सद्द. 3.696; – **पेक्ख** त्रि., आराधना अथवा सम्मान करने की अपेक्षा रखने वाला, सम्मान देने का इच्छुक – **क्खो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आराधापेक्खो मञ्जुना सरेन गायि,* महाव. 467.

आराधक त्रि., आ + √राध से व्यु. [आराधक], **श. अ.,** सफल, उत्साही, उत्सुक, सम्पादक, पूर्ण कर देने वाला, अच्छी तरह से प्राप्त, **ला. अ.,** प्रसन्न कर देने वाला, श्रद्धा-युक्त, सम्मानभाव देने वाला, सन्तोषप्रद, सेवा–आराधना करने वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *अञ्ञतित्थियपुब्बो आराधको होति,* महाव. 88; *कुद्धो आराधको होति, कुद्धो होति गरहियो,* परि. 404; *अभिन्नस्स वा परबलस्स भेदेता भिन्नस्स वा सकबलस्स आराधको,* जा. अट्ठ. 5.113; – **कं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *अरहन्तो ... आराधकं पुग्गलं अरियमग्गेन पुनन्ति,* जा. अट्ठ. 4.70; – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *राजा नाम यस्स कस्सचि आराधकस्स पसीदित्वा वरितं वरं दत्वा कामेन तप्पयति* ..., मि. प. 213; – **का**[1] पु., प्र. वि., ब. व. – *भिक्खू आराधका अभविस्संसु,* म. नि. 2.170; – **का**[2] स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *भिक्खुनियो च आराधिका, एवमिदं ब्रह्मचरियं परिपूरं तेनङ्गेन,* म. नि. 2.170.

आराधन / आराधना नपुं. / स्त्री., आ + √राध से व्यु., क्रि. ना. [आराधना], **क.** कार्य का सम्पादन, कार्य की पूर्णता, सफलता, उपलब्धि, **ख.** अनुकूल वस्तु या व्यक्ति की उपलब्धि या प्राप्ति, सन्तोष – *आराधनं साधने च पत्तियं परितोसने,* अभि. प. 887; – **ना** प्र. वि., ए. व. – *कथं आराधना होति, कथं होति विराधना,* दी. नि. 2.212; *आराधनाति सम्पादना,* दी. नि. अट्ठ. 2.298; *मिच्छत्तं*

आगम्म विराधना होति, नो आराधना, अ॰ नि॰ 3(2).180; – **नं**¹ नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञथा आराधनं नाम नत्थीति दस्सेति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.300; – **नं**² द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उग्गज्जनं आराधनं सुत्वा,* अप॰ अट्ठ॰ 2.41; – **नाय** नपुं॰, च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ब्राह्मणा, भो गोतम, पञ्च धम्मे पञ्ञपेन्ति पुञ्ञस्स किरियाय, कुसलस्स आराधनाया'ति,* म॰ नि॰ 2.423; – **नेन** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महाजनकरञ्ञो देविया आराधनेन,* अप॰ अट्ठ॰ 1.208; – **ने** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रञ्ञो आराधने अम्हाकं भारो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.385; **ग.** सेवा, सम्मान, पूजा, वन्दना, विनती – **नं**¹ नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उद्दिस्साराधनं सम्मा लङ्किन्देन कतं तदा,* चू॰ वं॰ 57.36; – **नं**² द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इति आराधनं कत्वा दूतं पाहेसि सब्बधि,* चू॰ वं॰ 89.56; – **नत्थ** पु॰, प्रसन्न करने के निमित्त – **त्थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰ – *सो तस्सा आराधनत्थं निसीदित्वा पादे सम्बाहि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.46; – **त्थाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महाब्रह्मुनो आराधनत्थाय* ..., जा॰ अट्ठ॰ 5.197.

आराधनीय त्रि॰, आ + √राध का सं॰ कृ॰ [आराधनीय], पूर्ण करने योग्य, सम्पादित करने योग्य, प्राप्त करने योग्य – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आराधनीयो ... धम्मो आरद्धवीरियेना'ति,* पारा॰ 137; *आराधनीयोति सक्का आराधेतुं सम्पादेतुं निब्बत्तेतुन्ति अत्थो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.85; – **यं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कायेन वाचा मनसा आराधनीयमेसति,* चरिया॰ 375; *सब्बथापि कायवचीमनोकम्मेहि यथा सो आराधितो होति, एवं आराधनीयं आराधनमेव एसति,* चरिया॰ अट्ठ॰ 53.

आराधिक त्रि॰, कार्य को पूर्ण कर देने वाला, सम्पादक, प्रसन्न कर देने वाला, आराधना या सम्मान करने वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सद्धा वे नन्दिका आराधिको, नो तस्स सद्धोति,* पेटको॰ 217.

आराधित त्रि॰, आ + √राध का भू॰ क॰ कृ॰ [आराधित], **क.** पूरा किया जा चुका, निष्पादित, पूर्णता को प्राप्त कर दिया गया, प्राप्त कर लिया गया, अनुमोदित – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेनायस्मता जातिया सत्तवस्सेनेव अञ्ञा आराधिता,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 59; *तया अञ्ञा आराधिताति,* उदा॰ अट्ठ॰ 143; *आराधितो मे सम्बुद्धो, पब्बजिं अनगारियं,* अप॰ 1.328; *आराधितोम्हि सुगतं, गोतमं सक्यपुङ्गवं,* अप॰ 1.386; **ख.** आह्लादित, प्रसन्न कर लिया गया, सन्तुष्ट – **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰, प्रसन्न अथवा सन्तुष्ट चित्त वाला – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरहत्तप्पत्तिया आराधितचित्तो,* उदा॰ अट्ठ॰ 149; *सत्था तस्स पञ्हब्याकरणेन आराधितचित्तो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.119; – **त्तेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *परा थेरस्स अरियवंसपटिपत्तिया आराधितचित्तेन भगवता भासिता,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.287; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वत्तपटिपत्तिया आराधितचित्तस्स तस्स सन्तिके,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.20; – **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पयिरुपासनाय आराधितचित्ता किञ्चि वत्तुकामा होन्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1. 290; **ग.** पूजित, सत्कृत, सम्मानित, वन्दित – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आराधितो मे सम्बुद्धो, पब्बजिं अनगारियं,* अप॰ 1.328; – **ता** ब॰ व॰ – *यमरियधम्मने पुनन्ति वुद्धा, आराधिता समचरियाय सन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.69; – **साधुमन्ती** त्रि॰, सज्जन मन्त्रियों द्वारा अनुमोदित – **न्तिं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुमारआराधितसाधुमन्तिं महादयं पण्डुनरिन्दवंसजं,* दाठा॰ 1.7; – **ताधिकार** त्रि॰, ब॰ स॰, अपने कर्तव्य का पूर्णरूप से पालन कर चुका व्यक्ति – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुमेधो बोधिसत्तो मग्गसोधनादीहि आराधिताधिकारो,* म॰ वं॰ टी॰ 42.

आराधेति / आराधयति आ + √राध का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आराधयति, बौ॰ सं॰ आरागयति], **1.** निष्पादित करता है, सफल परिणति तक पहुंचा देता है, (अञ्ञा, अत्थ, अर्थ, हित) धम्म (धर्म), मग्ग (मार्ग), सील (शील) तथा सील सम्पदा (शील सम्पत्) को प्रचुरता के साथ प्राप्त करता है, **2.** अमत (अमृत), अरहत्त (अर्हत्त्व), निब्बान (निर्वाण) दक्खिना (दक्षिणा), दान तथा धन को उपलब्ध करता है, **3.** आचरिय (आचार्य), गरु (गुरु), तापस, धीतर (पुत्री), राजा एवं सत्था (बुद्ध) की कृपा अथवा अनुग्रह का लाभ पाता है, **4.** चित्त को आह्लादित कर देता है, मन को प्रसन्न कर देता है, **5.** सम्मान करता है, पूजा-आराधना करता है – ... *"यथा नरो आराधयति राजानं, पूजं लभति भत्तुसू'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.194; *चोदको भिक्खु अनुयोगेन विञ्ञूनं सब्रह्मचारीनं चित्तं न आराधेति,* महाव॰ 243; *नो च खो पञ्हस्स वेय्याकरणेन चित्तं आराधेति,* दी॰ नि॰ 1.158; *चित्तं आराधेतीति पञ्हाविस्सज्जनेन महाजनस्स चित्तं परितोसेतियेव,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.268; – **मि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तेसाहं चित्तं आराधेमि पञ्हस्स वेय्याकरणेन,* म॰ नि॰ 2.212; ... *आराधेमीति ... गण्हामि सम्पादेमि परिपूरेमि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.172; *आराधेमि सकं चित्तं विवज्जेमि अनेसनं,* अप॰ 1.64; *आराधेमीति आदितो पट्ठाय राधेमि वसे*

वत्तेमीति अत्थो, विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.66; – **न्ति / धयन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *नो च खो पटिपन्ना आराधेन्ती'ति,* दी॰ नि॰ 1.158; *पूरेतुं सक्कोन्ति, सब्बाकारेन पन पूरेन्ति, पटिपत्तिपूरणेन तस्स भोतो गोतमस्स चित्तं आराधेन्तीति वत्तब्बा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.268; *आराधयन्ति सद्धम्मं, योगक्खेमं अनुत्तरं,* इतिवु॰ 79; *आराधयन्तीति साधेन्ति सम्पादेन्ति,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 296; – **धेन्त / धयन्त** त्रि॰, वर्त॰ कृ॰ – **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरहत्तं आराधेन्तो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.180; *मित्ते आराधेन्तो तोसेन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.245; – **न्ती** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा सामिकं आराधेन्ती,* अप॰ अट्ठ॰ 2.228; *आराधयन्तो नाथस्स, वनवासेन मानसं,* विसुद्धि॰ 1.72; *आराधयन्तोति अनुनयन्तो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.91; – **धयं** उपरिवत्, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कातुं अत्तानुसासनं आराधयं अनिच्छन्तं,* चू॰ वं॰ 57.33-34; – **न्ता** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आराधयन्ता सततं निवत्तिंसु यथारुचिं,* चू॰ वं॰ 59.48; – **मान** त्रि॰, वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, – **मानेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं वत्तसम्पत्तिया गरुं आराधयमानेन सायं वन्दित्वा याहीति विस्सज्जितेन गन्तब्बं,* विसुद्धि॰ 1.99; – **न्तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आराधेन्तु हितोपायमच्चन्तं सुखसाधनं,* ना॰ रू॰ परि॰ 1342; – **धेहि / धयाहि** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सञ्ञावूपसमं सुखं, आराधयाहि निब्बानं,* थेरीगा॰ 6; *आराधयाहि निब्बानन्ति कामसञ्ञादीनं पापसञ्ञानं उपसमनिमित्तं अच्चन्तसुखं निब्बानं आराधेहि,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 13; – **धेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथापि भिक्खु ... अञ्ञं आराधेय्य,* म॰ नि॰ 1.104; *वसन्तो च आराधेय्य, ञायं धम्मं कुसलं,* म॰ नि॰ 2.200; – **य्यासि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पसादेय्यासीति आराधेय्यासि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.263; *आराधेय्यासि लभेय्यासीति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.342; – **य्यं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *चित्तं न आराधेय्यं,* दी॰ नि॰ 1.104; – **धये**[1] विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आराधये दक्खिणेय्येभि तादि,* सु॰ नि॰ 514; 494; ... *सम्पादये सोधये, महप्फलं तं हुतं करेय्य न अञ्ञथाति अत्थो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.127; – **धये**[2] म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अप्पेव आराधये दक्खिणेय्ये'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.342; – **येय्यं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आराधयेय्यं सम्बुद्धं,* अप॰ 1.327; – **धेसि / धयी** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *न सो भिक्खु भगवतो चित्तं आराधेसि,* स॰ नि॰ 1(2).94; *आराधेसीति पच्चयाकारवसेन ब्याकारापेतुकामस्स भगवतो तथा अब्याकरित्वा द्वत्तिंसाकारवसेन ब्याकरोन्तो अज्झासयं गहेतुं नासक्खि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.104; *आराधयी सो निब्बानं,* अ॰ नि॰ 2(2).15; *आराधयीति परिपूरयि तं सम्पादेसीति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.99; – **धेसुं / धयिंसु** ब॰ व॰ – *ओपम्मेहि तथागतं आराधेसुं तोसेसुं पसादेसुं,* मि॰ प॰ 200; *आराधयिंसु वत मे, भिक्खवे, भिक्खू एकं समयं चित्तं,* म॰ नि॰ 1.176; *आराधयिंसूति गण्हिंसु पूरयिंसु,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).3; – **धयिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सचे सामि, अहं इमानि किच्चानि करोन्ती रञ्ञो दळ्हधम्मस्स चित्तं नाराधयिं न परितोसेसिं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.341; – **धेस्सति / धयिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *ञायप्पटिपन्नो ञायमाराधेस्सती'ति,* दी॰ नि॰ 3.89; *को दानि अञ्ञो तस्स चित्तं आराधयिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.341; – **धेस्सामि** भवि॰ उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *चित्तं आराधेस्सामि,* दी॰ नि॰ 1.105; *मन्तबलेन आराधेस्सामि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.286; – **धेतुं** निमि॰ कृ॰ – *आराधेतुं सम्पादेतुं निब्बत्तेतुन्ति अत्थो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.85; *मोक्खमग्गं वा आराधेतुं भब्बो होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.76; – **धेत्वा / धयित्वा / रब्भ** पू॰ का॰ कृ॰ – *एतादिसं सो सत्थारं आराधेत्वा विराधये,* थेरगा॰ 511; *आराधेत्वा इमस्मिं नवमे खणे पटिलभित्वा,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.134; *कदा इणट्टोव दलिद्दको निधिं आराधयित्वा धनिकेहि पीळितो,* थेरगा॰ 1109; *आराधयित्वा अधिगन्त्वा इणञ्च सोधेत्वा,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.396; ... *आरब्भ, आरभित्वा, आरद्ध, आरभित्वा,* क॰ व्या॰ 602; – **धेतब्ब** त्रि॰, सं॰ कृ॰ – **ब्बो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राजायेव हि नमस्सितब्बो च आराधेतब्बो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.194.

आराम पु॰, आ + √रम से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आराम], **शा॰ अ॰**, अभिरति, मन का रम जाना, आह्लाद, आनन्द – **मो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरमनं आरामो, अभिरतीति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.182; **ला॰ अ॰, 1.** वासस्थान, रम जाने का स्थान, आनन्द प्राप्त करने का स्थान, आलम्बन, आश्रय, क्रीड़ा या आमोद-प्रमोद का स्थान – **मो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वसनट्ठानट्ठेन रूपं चक्खुस्स आरामोति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.153; *कम्मं आरमितब्बतो आरामो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 217; *निवासनट्ठेन समथविपस्सनाधम्मो आरामो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.336; **ला॰ अ॰, 2.** भिक्षुओं का सुख सुविधा-युक्त निवास-स्थान, प्राङ्गणयुक्त विहार, उद्यानयुक्त विहार – **मो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तरुसण्डो स आरामो तथोपवनमुच्चते,* अभि॰ प॰ 537; *आरामो नाम यत्थ कत्थचि मनुस्सानं कीळितुं रमितुं कतं होति,* पाचि॰ 408; *आरामन्ति*

कीळनउपवनं, पाचि॰ अट्ठ 202; *आरमन्ति एत्थ पाणिनो विसेसेन वा पब्बजितानि आरामो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प॰) 1(1).65; *आरामो कारापितो होति,* महाव॰ 184; – **मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पटिग्गहेसि भगवा आरामं,* महाव॰ 44; *अनुजानामि, भिक्खवे, आराम'न्ति, तदे॰; आरामेनेव आरामं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.413; *अञ्ञतरेन आरामेनेव अञ्ञतरं आरामं नेन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.414; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *परिक्खित्तस्स आरामस्स परिक्खेपं अतिक्कमन्तस्स आपत्ति पाचित्तियस्स,* पाचि॰ 62; *दुग्गतिं नाभिजानामि, आरामस्स इदं फलं,* अप॰ 1.269; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरामतो अविदूरे खन्धावारं निवासेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.137; – **मे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे,* महाव॰ 274; – **मा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सत्त च आरामसहस्सानि सत्त च आरामसतानि सत्त च आरामा,* महाव॰ 356; – **मे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरामे, अय्या, करोथ,* चूळव॰ 286; – **मेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *द्वत्तिंस बोधितरुणे योजनियआरामेसु पतिट्ठापेसुं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.69.

आरामक¹ पु॰, आराम से व्यु॰, सुख-सुविधा-युक्त भिक्षुओं का वासस्थान, उपवनयुक्त वासस्थान – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरामके सुरभिपुप्फं फलाभिरामे.... वासं अकासि,* जि॰ च॰ 446(रो॰).

आरामकरा स्त्री॰, अभिरति उत्पन्न कराने वाली नारी, आनन्द देने वाली नारी – **सु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *नरानमारामकरासु नारिसु, अनेकचित्तासु अनिग्गहासु च,* जा॰ अट्ठ॰ 5.432; *आरामकरासूति अभिरतिकारिकासु,* जा॰ अट्ठ॰ 5.435.

आरामकोट्ठक नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आरामकोष्ठक], विहार के प्रवेशद्वार का बाहरी प्रकोष्ठ, विहार के मुख्यद्वार पर स्थित कमरा – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बहारामकोट्ठके सकटपरिवट्टं करित्वा अच्छन्ति,* महाव॰ 315; *आरामं गन्त्वा पत्तचीवरं पटिसामेत्वा बहारामकोट्ठके सङ्घाटिपल्लत्थिकाय निसीदिसुं,* चूळव॰ 180; *बहारामकोट्ठकेति वेळुवनविहारस्स बहिद्वारकोट्ठके,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.151.

आरामगत त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आरामगत], आराम अथवा विहार में गया हुआ, आराम में पहुंचा हुआ या विहार में एकत्रित – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरामगतो निसीदति पञ्ञत्ते आसने,* म॰ नि॰ 2.348; – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरामगतं भिक्खुं पस्सेय्य सुधोतहत्थपादं,* म॰ नि॰ 2.123; – **स्स** पु॰, च॰/ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'तस्स ते आरामगतस्स यो तज्जो छन्दो सो पटिप्पस्सद्धो'ति,* ? स॰ नि॰ 3(2).344; – **तानं** पु॰, च॰/ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरामगतानं भिक्खूनं धम्मं देसेय्य,* म॰ नि॰ 1.36; *आरामगतानन्ति विहारे सन्निपतितानं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प॰) 1(1).156.

आरामगोनिसादिका स्त्री॰, आराम की गोशाला, विहार की वह भूमि जहां न उद्यान हो न निवास स्थान (प्रकोष्ठ) हों, विहार की खुली हुई जगह – **का** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यत्थ नेव आरामो न सेनासनानि परिक्खित्तानि होन्ति, अयं आरामगोनिसादिका नाम,* महाव॰ अट्ठ॰ 359.

आरामगोपक पु॰, उद्यानरक्षक, माली – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरामगोपको हुत्वा जीवन्तो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.343; – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *भिक्खुसङ्घस्स पन आरामगोपका यं अत्तनो भतिया खण्डेत्वा देन्ति, एतं वट्टति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.312; – **किच्च** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, उद्यानरक्षक या माली का काम – **च्चं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रट्ठवासिनो च आरामगोपककिच्चं कारापेसी,* सा॰ वं॰ 133(ना॰); – **कुल** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, उद्यानरक्षक का कुल, माली का कुल – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरामगोपककुले निब्बत्तित्वा,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.388; – **लानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *खेत्तवत्थूनि अदासि आरामगोपककुलानि च,* सा॰ वं॰ 80(ना॰).

आरामचेतिय नपुं॰, उद्यान-युक्त चैत्य, पुष्पों एवं फलों के ढेरों से युक्त आराम – **यानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तानि आरामचेतियानि वनचेतियानि रुक्खचेतियानि भिंसनकानि सलोमहंसानि तथारूपेसु सेनासनेसु विहरामि,* म॰ नि॰ 1.27; *पुप्फारामफलारामादयो आरामा एव आरामचेतियानि, चित्तीकतट्ठेन हि चेतियानीति वुच्चन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प॰) 1(1).126.

आरामचेत्य नपुं॰, उपरिवत् – **त्या** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरामचेत्या वनचेत्या, पोक्खरञ्ञो सुनिम्मिता मनुस्सरामणेय्यस्स, कलं नाग्घन्ति सोळसिं,* स॰ नि॰ 1(1).269; *आरामचेत्याति आरामचेतियानि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.305.

आरामट्ठ त्रि॰, [आरामस्थ], आराम में स्थित, आराम में रखा हुआ – **ट्ठं¹** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरामट्ठं नाम भण्डं आरामे चतूहि ठानेहि निक्खित्तं होति भूमट्ठं थलट्ठं, आकासट्ठं, वेहासट्ठं,* पारा॰ 56; – **ट्ठं²** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरामट्ठं भण्डं*

अवहरिस्सामीति, तदे.; – **ट्ठे** सप्त. वि., ए. व. – *आरामट्ठेपि – आरामं ताव दस्सेन्तो,* पारा. अट्ठ. 1.270.

आरामट्ठकविनिच्छय पु., तत्पु. स., आराम में स्थित रहने के विषय में निश्चय – **येन** तृ. वि., ए. व. – *आरामट्ठकविनिच्छयेन विनिच्छिनितब्बं,* पारा. अट्ठ. 1.277.

आरामट्ठकथा स्त्री., 1. पारा. अट्ठ. के एक खण्ड का शीर्षक, पारा. अट्ठ. 1.270-271; 2. विन. वि. के एक खण्ड का शीर्षक, विन. वि. 151-153.

आरामता स्त्री., आराम का भाव., आमोद-प्रमोद से परिपूर्णता, आनन्दमयता – **ता** प्र. वि., ए. व. – *पञ्चविधे संसग्गे आरामता,* अ. नि. अट्ठ. 3.250.

आरामदण्ड पु., एक ब्राह्मण का नाम – **ण्डो** प्र. वि., ए. व. – *आरामदण्डो ब्राह्मणो,* अ. नि. 1(1).82; – **ब्राह्मणादीहि** तृ. वि., ब. व. – *आरामदण्डब्राह्मणादीहि मनुस्सेहि,* उदा. अट्ठ. 3.

आरामदान नपुं., तत्पु. स. [आरामदान], उद्यान का दान, उद्यान-युक्त स्थल का विहार के रूप में प्रयोग करने हेतु दान – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *इमिनारामदानेन, चेतनापणिधीहि च, भवे निब्बत्तमानोहं,* अप. 1.36.

आरामदायक पु., स. उ. प. में प्रयुक्त, 1. आराम का दान करने वाला, 2. एक स्थविर का नाम, सङ्घा-. संघ के लिए आराम का दान करने वाला – **को** प्र. वि., ए. व. – *सङ्घारामदायको तापसो सुमापितं ... पादासि,* अप. अट्ठ. 1.285; *इदं सुदं आयस्मा आरामदायको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप. 1.269.

आरामदूसकजातक नपुं., अनेक जातक-कथानकों का शीर्षक, जा. अट्ठ. 1.243-245; जा. अट्ठ. 2.285-287.

आरामदेवता स्त्री., तत्पु. स., उद्यान का देवता – **ता** प्र. वि., ए. व. – *आरामदेवता वनदेवता रुक्खदेवता ...,* म. नि. 1.387; *आरामदेवताति तत्थ तत्थ पुप्फारामफलारामेसु अधिवत्था देवता,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).265.

आरामद्वार नपुं., तत्पु. स., विहार का बाहरी द्वार, आराम का बाहरी दरवाजा – **रा** प. वि., ए. व. – *आरामद्वारा निक्खम्म, पदुमुत्तरो महामुनि,* अप. 1.49; *आरामद्वाराति सब्बसत्तानं धम्मदेसनत्थाय विहारद्वारतो निक्खमित्वा,* अप. अट्ठ. 1.320.

आरामनिस्सयी त्रि., उद्यान के समीप निवास करने वाला, आराम में आश्रय लेकर रहने वाला – **यी** पु., प्र. वि., ए. व. – *अहमस्मि, भो गोतम आरामनिस्सयी परिसावचरो,* स. नि. 3(1).90; *आरामं निस्साय वसनभावेन आरामनिस्सयी,* स. नि. अट्ठ. 3.182.

आरामपत्त त्रि., तत्पु. स. [आरामप्राप्त], आराम में पहुंचा हुआ, उद्यान में पहुंच चुका – **त्तानं** पु., ष. वि., ब. व. – *तेसमारामपत्तानं, धम्मं देसेसि चक्खुमा,* अप. 2.348.

आरामपाल पु., उद्यान-रक्षक, माली, आराम की रक्षा करने वाला – **लो** प्र. वि., ए. व. – *आरामपालो आरामं गन्त्वा अम्बरुक्खमूलेसु पंसुं अपनेत्वा तादिसं पंसुं आकिरि,* वि. व. अट्ठ. 242; – **लं** द्वि. वि., ए. व. – *सो आरामपालं आह,* वि. व. अट्ठ. 242.

आरामप्पवेसन नपुं., तत्पु. स. [आरामप्रवेशन], उद्यान का प्रवेश द्वार, विहार का प्रवेश द्वार – **नं** प्र. वि., ए. व. – *भिक्खुनिया तियोजने ठत्वा आरामप्पवेसनं आपुच्छितब्बं भविस्सति,* महाव. अट्ठ. 394.

आराममरियादक त्रि., ब. स., विहार की सीमा के अन्दर आने वाला, आराम की सीमा के अन्तर्गत – **कं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *पादा नगरगल्लं च आराममरियादकं,* चू. वं. 48.36.

आरामरक्खक पु., उद्यान का रक्षक, माली, आराम (विहार) का रक्षक – **का** प्र. वि., ब. व. – *गिहीनं आरामरक्खका भिक्खूनं देन्ति,* पारा. अट्ठ. 1.312.

आरामरक्खनक पु., उद्यान की रखवाली करने वाला – **को** प्र. वि., ए. व. – *आरामरक्खनको मक्कटो,* जा. अट्ठ. 1.244.

आरामरम्म पु./नपुं., कर्म. स., आराम अथवा विहार का रमणीय वास-स्थान, रमणीय या सुखदायक आराम – **म्मं** द्वि. वि., ए. व. – *अनिच्छन्तं व नेत्वातमारामरम्ममुत्तमं,* जि. च. 399(रो.).

आरामरामणेय्यक नपुं., तत्पु. स., उद्यान की रमणीयता अथवा सुन्दरता – **कं**[1] प्र. वि., ए. व. – *सेय्यथापि, भिक्खवे, अप्पमत्तकं इमस्मिं जम्बुदीपे आरामरामणेय्यकं,* अ. नि. 1(1).48; *आरामरामणेय्यकन्ति पुप्फारामफलारामानं रामणेय्यकं,* अ. नि. अट्ठ. 1.364; – **कं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *सुपिनकं परिसता आरामरामणेय्यकं ... पोक्खरणीरामणेय्यक'न्ति,* दी. नि. 2.248.

आरामरुक्ख नपुं., तत्पु. स. [आरामवृक्ष], उद्यान का वृक्ष, बाग का वृक्ष, आनन्ददायक अथवा मनोहारी वृक्ष – **क्खे/क्खानि** द्वि. वि., ब. व. – *आरामरुक्खानि च रोपयिस्सं,* वि. व. 1131; *आरामरुक्खानि चा आरामभूते*

रुक्खे, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 255; *सुवण्णरसधारापरिसेकपिञ्जरपत्तपुप्फफलविटपे विय आरामरुक्खे करिंसु,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.87; – **चेतिय/चेत्य** नपुं॰, द्व॰ स॰, आराम अथवा विहार के वृक्ष एवं चैत्य – **त्यानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *बहुं वे सरणं यन्ति ... आरामरुक्खचेत्यानि, मनुस्सा भयतज्जिता,* ध॰ प॰ 188; *वेळुवन जीवकम्बवनादयो आरामे च उदेनचेतियगोतमचेतियादीनि रुक्खचेत्यानि च,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.142.

आरामरोप पु॰, उद्यानों को रोपने वाला, बाग बगीचा में वृक्षों, लताओं एवं पौधों को लगाने वाला (माली) – **पा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरामरोपा वनरोपा, ये जना सेतुकारका,* स॰ नि॰ 1(1).38; *आरामरोपाति पुप्फारामफलारामरोपका,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.79.

आरामरोपन नपुं॰, तत्पु॰ स॰, उद्यानों को रोपना, उद्यान तैयार करना, बाग लगाना, स॰ प॰ के अन्त॰, – *आरामरोपनसेतुबन्धनचङ्कमनकरणादीसु पुञ्ञकम्मेसु पसुतो हुत्वा,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 131.

आरामवग्ग पु॰, पाचि॰ तथा परि॰ के कुछ वग्गों का शीर्षक, पाचि॰ 419-432; पाचि॰ अट्ठ॰ 206-209; परि॰ 127-129; 149-150.

आरामवत्थु नपुं॰, **क.** विहार का स्थल, विहारों के निर्माण के लिए निर्धारित भूखण्ड, उजड़ चुके विहारों के स्थान पर खाली पड़ा भूखण्ड – **त्थु** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरामवत्थु कारापितं होति,* महाव॰ 184; *आरामवत्थु नाम तेसंयेव आरामानं अत्थाय परिच्छिन्दित्वा ठपितोकासो, तेसु वा आरामेसु विनट्ठेसु तेसं पोराणकभूमिभागो,* चूळव॰ अट्ठ॰ 76; *यथा आरामस्स वत्थुभूतपुब्बो पदेसो आरामस्स अभावे "आरामवत्थू"ति वुच्चति ...,* सारत्थ॰ टी॰ 1.298; **ख.** उद्यान लगाने के लिए तैयार किया गया भूखण्ड, वह क्षेत्र, जिसे तीन ओर से घेराबन्दी करके भविष्य में उद्यान लगाने हेतु खाली छोड़ दिया गया है – *वत्थु नाम आरामवत्थु विहारवत्थु,* पारा॰ 57; *बीजं वा उपरोपके वा अरोपेत्वाव केवलं भूमिं सोधेत्वा तिण्णं पाकारानं येन केनचि परिक्खिपित्वा वा अपरिक्खिपित्वा वा पुप्फारामादीनं अत्थाय ठपितो भूमिभागो आरामवत्थु नाम,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.273.

आरामवनमाली त्रि॰, उद्यानों एवं वनों के पुष्पों की माला को धारण करने वाला – **लिनिं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कदाहं मिथिलं फीतं, आरामवनमालिनिं, पहाय पब्बजिस्सामि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.54.

आरामसम्पन्न त्रि॰, तत्पु॰ स॰, उद्यानों से युक्त, बाग-बगीचों से भरपूर – **न्नं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पस्सेय्य पुराणं नगरं ... आरामसम्पन्नं,* स॰ नि॰ 1(2).93.

आरामसामिक पु॰, तत्पु॰ स॰ [आरामस्वामी], उद्यान का स्वामी, बगीचे का मालिक – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *कूटसक्खिं ओतारेत्वा आरामसामिकं जिनातीति अत्थो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.271; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आरामसामिकस्स संसयं जनेति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.270.

आरामसील त्रि॰, ब॰ स॰, उद्यानों में जाने का शौकीन स्वभाव से ही उद्यानों का प्रेमी – **ला** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरामसीला च उय्यानं, नदी ञाति, परकुलं, आदासदुस्समण्डनमनुयुत्ता, या चित्थी मज्जपायिनी,* जा॰ अट्ठ॰ 5.431.

आरामस्स पु॰/नपुं॰, व्य॰ सं॰, श्रीलङ्का के एक प्राचीन ग्राम का नाम – **स्सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लोहरूपस्स पादासि आरामस्सं च गामकं,* चू॰ वं॰ 49.17.

आरामाभिमुख त्रि॰, उद्यान की ओर उन्मुख – **खं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰, बाग की ओर – *पटिबद्धचित्तो अस्सं तं आरामाभिमुखं पेसेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.359.

आरामिक त्रि॰, [आरामिक], **1.** उद्यान में रहने वाला, उद्यान के साथ जुड़ा हुआ, उद्यानरक्षक – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हापेति अत्थं दुम्मेधो, कपि आरामिको यथा'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.244; *आरामिको यथाति यथा आरामे नियुत्तो आरामरक्खनको मक्कटो,* तदे॰; **2.** उद्यान अथवा वन के आवासों में निवास करने वाला (भिक्षु), वनवासी भिक्षु, कुटी में रहने वाला (भिक्षु) – **कानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरामिकानं भिक्खूनं आरामेसु तहिं तहिं एकं एकं कुटिं कत्वा ...,* चू॰ वं॰ 52.19; **3.** पु॰, आराम अथवा विहार का कर्मचारी, विहार का प्रबन्धक अथवा अधिकारी – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न ... भगवता आरामिको अनुञ्ञातो,* महाव॰ 283; *यो मया, भणे, अय्यस्स आरामिको पटिस्सुतो, दिन्नो सो आरामिको'ति,* महाव॰ 284; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयस्स आरामिकं दम्मी'ति,* महाव॰ 284; – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थो, भन्ते, अय्यस्स आरामिकेना'ति,* महाव॰ 283; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरामिकस्स निवेसनं,* महाव॰ 284; – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरामिका दिस्वा दीघभाणकअभयत्थेरस्स आरोचेसुं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.62; – **के** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *भिक्खुसङ्घस्स आरामिके देमाति,* महाव॰ अट्ठ॰ 269; – **केहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरामकेहि सद्धिं*

एकतो खादति, पारा॰ अट्ठ॰ 2.282; – **कानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *भिक्खूनं वा आरामिकानं वा पत्तभागम्पि लभित्वा ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.245; – **केसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरामिकेसु आगतेसु अम्हाकं भारं करोथ,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.81; – **किच्च** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, किसी विहार में सेवक अथवा सहायक का काम – **च्चं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आरामिककिच्चं साधेन्ता ... निच्चं महादानं अदंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.48; – **कुल** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, उद्यान-कर्मचारी का कुल, विहार अथवा आराम के सेवक का कुल – **लं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कहं इमं आरामिककुलं गत'न्ति,* महाव॰ 285; – **लं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राजा ... तं आरामिककुलं बन्धापेसि,* महाव॰ 285; – **गाम** पु॰, तत्पु॰ स॰, आराम अथवा विहार में काम करने वाले लोगों का ग्राम – **मे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ ··· *भोगगामे च दापयि तथारामिकगामे च,* चू॰ वं॰ 52.26; – **दारक** पु॰, विहार में सेवक या सहायक के रूप में काम करने वाले का पुत्र, आराम में काम करने वाला बालक – **केहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरमिकदारकेहि संसट्ठो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.76; – **दास** पु॰, कर्म॰ स॰, विहार में काम करने वाला दास, आराम में काम कर रहा सेवक – **सा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *विहारेसु राजूहि आरामिकदासा नाम दिन्ना होन्ति,* महाव॰ अट्ठ॰ 269; – **पेसक** पु॰, विहार में काम कर रहे कर्मचारियों का अधिष्ठाता अथवा अधीक्षक – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन खो पन समयेन सङ्घस्स ... आरामिकपेसको न होति,* चूळव॰ 310; – **भाव** पु॰, उद्यानपाल होना, माली होना, उद्यानपालत्व – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आरामिकभावं पत्थयमानो ...,* पारा॰ 26; – **भूत** त्रि॰, वह जो आराम अथवा विहार का सेवक हो चुका है, विहार का कर्मचारी बन चुका व्यक्ति – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ते आरामिकभूता वा उपासकभूता वा पञ्चसिक्खापदे समादाय वत्तन्ति,* म॰ नि॰ 2.207; – **वेवचन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आरामिक का पर्याय, आरामिक के लिए प्रयुक्त उपाधि – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कप्पियकारकोति ..., वेय्यावच्चकरो, अप्पहरितकारको, यागुभाजको, फलभाजको, खज्जकभाजकोति ... आरामिकवेवचनेन ... होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.201; – **सदिस** त्रि॰, आरामिक के जैसा, विहार के सेवक अथवा कर्मचारी के समान – **सा** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरामिकसदिसा एते उपासिके,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.246; – **समणुद्देस** पु॰, **1.** द्व॰ स॰, आराम के कर्मचारी एवं श्रामणेर, **2.** कर्म॰ स॰, आरामिक का काम करने वाला श्रामणेर – **से** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मुदुकेन आरामिकसमणुद्देसे पक्कोसित्वा सोधापेत्वा ... वसितब्बं,* विसुद्धि॰ 1.72-73; ··· **सेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *भविस्सन्ति भिक्खू अनागतमद्धानं आरामिकसमणुद्देसेहि संसट्ठा विहरिस्सन्ति, आरामिकसमणुद्देसेहि संसग्गे ... पाटिकङ्खं,* अ॰ नि॰ 2(1).102; – **सेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तावदेवस्स तिब्बं हिरोत्तप्पं पच्चुपट्ठितं होति भिक्खूसु भिक्खुनीसु उपासकेसु उपासिकासु अन्तमसो आरामिकसमणुद्देसेसु,* अ॰ नि॰ 1(2).91.

आरामिकगामक पु॰, व्य॰ सं॰, राजगृह के समीप में स्थित एक गांव का नाम, जिसका दूसरा नाम पिलिन्दगामक भी था – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरामिकगामकोति'पि नं आहंसु, पिलिन्दगामको'तिपि नं आहंसु,* महाव॰ 284.

आरामिकिनी स्त्री॰, आराम अथवा विहार में काम करने वाली नारी, विहार की परिचारिका – **नी** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा आरामिकिनी तं तिणण्डुपकं गहेत्वा तस्सा दारिकाय सीसे पटिमुञ्चि,* महाव॰ 284; – **निं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं आरामिकिनिं एतदवोच,* महाव॰ 284; – **निया** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्सा आरामिकिनिया धीता,* महाव॰ 284.

आरामुय्यानोपवनतळाकपोक्खरणिसम्पन्न त्रि॰, द्व॰ स॰/तत्पु॰ स॰, आरामों, उद्यानों, उपवनों, तालाबों एवं पुष्करणियों से युक्त – **न्नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सागलं नाम नगरं ... आरामुय्यानोपवनतळाकपोक्खरणिसम्पन्नं,* मि॰ प॰ 2.

आरामूपचार पु॰, तत्पु॰ स॰, आराम अथवा विहार का पार्श्ववर्ती क्षेत्र, विहार का अहाता, विहार का उपक्षेत्र – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरामं आरामूपचारं ठपेत्वा (आगन्त्वा),* पाचि॰ 241; *आरामूपचारं ठपेत्वाति आरञ्ञकसेनासनारामञ्च तस्स उपचारञ्च ठपेत्वा,* पाचि॰ अट्ठ॰ 147; – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरामे आरामूपचारे चोरानं निविट्ठोकासो दिस्सति,* पाचि॰ 240; *तं दस्सेतुं आरामे आरामूपचारे'तिआदि वुत्तं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.281.

आरामूपवन नपुं॰, द्व॰ स॰, उद्यान एवं उपवन – **नानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरामानीति आरामूपवनानीति अत्थो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 91.

आराव पु॰, आ + √रु से व्यु॰, [आराव], आवाज, ऊंची आवाज, हल्ला, ध्वनि – *आराव-संराव-विराव-घोसारवा सुतित्थी सर निस्सनो च,* अभि॰ प॰ 128.

आरिय त्रि., अरिय से व्यु., **क.** आर्य जाति का, **ख.** एक जनजाति के लिए प्रयुक्त – **ये** पु., द्वि॰ वि., ब॰ व॰ – *ठकुरप्पमुखे सब्बे पुच्छिंसु आरिये भटे,* चू॰ वं॰ 90.27.

आरियक्खत्तयोद्धा पु., श्रीलङ्का में राजा द्वारा चुने गए योद्धाओं का एक वर्ग – **नं** च॰ वि., ब॰ व॰ – *आरियक्खत्तयोद्धानं भत्तिं दातुं समारभुं,* चू॰ वं॰ 90.16.

आरियचक्कवत्ती पु., व्य॰ सं., एक प्राचीन तमिल-सेनापति का नाम अथवा उपाधि – **त्ती** प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *आरियचक्कवत्तीति विस्सुतो नारियो पि सो,* चू॰ वं॰ 90.44.

आरियमुनित्थेर पु., व्य॰ सं., एक स्थविर के लिए प्रयुक्त नाम अथवा उपाधि – **रं** द्वि॰ वि., ए॰ व॰ – *दुतियारियमुनित्थेरं ससंघं हि निमन्तिय,* चू॰ वं॰ 100.95.

आरिस्स नपुं., भाव., इसि से व्यु. [आर्ष्य], ऋषि-भाव, ऋषि या मुनि की अवस्था, ऋषि से सम्बद्ध होना – **स्सं** प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *इसिस्स भावो आरिस्सं,* क॰ व्या॰ 404; *आदिविकारो ताव – आरिस्सं ...,* क॰ व्या॰ 406.

आरुण्ण नपुं., आ + √रुद से व्यु., रोना, विलाप, रोदन, स॰ प॰ में प्रयुक्त – *अताणो असरणो आरुण्णरुण्णकारुञ्ञरवं परिदेवमानो,* मि॰ प॰ 322.

आरुप्प/आरुप/अरुप पु./नपुं., अरूप से व्यु. [बौ॰ सं., आरूप्य], **1.** रूपरहित आलम्बनों वाला, अरूपध्यान, आकाश की अनन्तता, विज्ञान का आयतन, अकिञ्चनता का आयतन तथा न संज्ञा एवं न असंज्ञा का आयतन, इन रूपरहित चार आलम्बनों वाला अरूप ध्यान, **2.** अरूप–भव, तीन प्रकार के भवों में से तृतीय भव, रूपरहित ब्रह्मा का लोक, **3.** अरूप-धातु – **पं** प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *रूपानमेतं निस्सरणं यदिदं अरूपं,* दी॰ नि॰ 3.220; *रूपानं निस्सरणं यदिदं आरुप्पन्ति एत्थ आरुप्पेपि अरहत्तमग्गो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.222; ... *अप्पनं पापुणाति, आरम्मणातिक्कमभावनावसेन आरुप्पं,* विसुद्धि॰ 1.230; – **प्पं** द्वि॰ वि., ए॰ व॰ – *असदिसरूपो नाथो, आरुप्पं यं चतुब्बिधं आह,* विसुद्धि॰ 1.328; *उद्धं वा आरुप्पं, अधो कामधातुं, तिरियं रूपधातुं अनवसेसं फरन्तो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 202; – **तो** प॰ वि., ए॰ व॰ – *आरुप्पतो हि अञ्ञस्मिम्पि पञ्चवोकारभवे तं विपाकनामं हदयवत्थुनो सहायं हुत्वा ...,* विभ॰ अट्ठ॰ 166; – **स्स** ष॰ वि., ए॰ व॰ – *आरुप्पस्स च निरोधस्स च गहणं अञ्ञत्थ पाठे वुत्तक्कमेनेव कतं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.296; – **प्पे** सप्त॰ वि., ए॰ व॰ – *आरुप्पे परस्स चित्तं जानितुकामो ...,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.284; *नाममेव हि आरुप्पे, पटिसन्धिपवत्तिसु,* विभ॰ अट्ठ॰ 165; – **प्पा** पु., प्र॰ वि., ब॰ व॰ – *अरूपे आरम्मणे पवत्ता आरुप्पा,* अभि॰ ध॰ वि॰ 226; *ये ते सन्ता विमोक्खा, अतिक्कम्म रूपे आरुप्पा, ते कायेन फुसित्वा विहरेय्य'न्ति,* म॰ नि॰ 1.42; *आरुप्पाति आरम्मणतो च विपाकतो च रूपविरहिता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(1).171; – **प्पानि** नपुं., प्र॰ वि., ब॰ व॰ – *पञ्च रूपावचरानि चत्तारि च आरुप्पानि,* विसुद्धि॰ 2.177; – **प्पे** पु., द्वि॰ वि., ब॰ व॰ – *चत्तारो आरुप्पे गण्हिंसु,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 16; – **पेहि**[1] पु., तृ॰ वि., ब॰ व॰ – *पञ्च सुद्धावासा चतूहि आरूपेहि सद्धिं नवाति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(2).229; – **पेहि**[2] प॰ वि., ब॰ व॰ – *अरूपेहि निरोधो सन्ततरोति,* सु॰ नि॰ (पृ.) 195; – **प्पानं** ष॰ वि., ब॰ व॰ – *अरूपावचरं चतुन्नं आरुप्पानं योगवसेन चतुब्बिधं,* विसुद्धि॰ 2.80; – **पेसु** पु., सप्त॰ वि., ब॰ व॰ – *चतूसु पन आरुप्पेसु आरम्मणसमतिक्कमो होति,* विसुद्धि॰ 1.109; *अरुप्पेसु असण्ठिताति,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 195; – **कथा** स्त्री., कथा॰ के छठे वर्ग की चौथी कथा का शीर्षक, कथा॰ 271-272; प॰ प॰ अट्ठ॰ 189; – **किरिया** स्त्री., अरूपावचरभूमि के चार प्रकार के क्रियाचित्त – **या** प्र॰ वि., ब॰ व॰ – *चतस्सो आरुप्पकिरिया,* विभ॰ अट्ठ॰ 23; – **कुसल** नपुं., तत्पु॰ स., अरुपावचरभूमि के चार कुशलचित्त – **लानि** प्र॰ वि., ब॰ व॰ – *चत्तारि आरुप्पकुसलानि,* विभ॰ अट्ठ॰ 23; – **गमन** नपुं., तत्पु॰ स., अरूपभूमि अथवा अरूपलोक में पुनर्जन्म का ग्रहण – **नं** प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *पटिसन्धिवसेन अरूपगमनं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.188; – **चित्त** नपुं., अरूपावचरभूमि का चित्त, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **दुतिया॰**- अरूपावचरभूमि का द्वितीय चित्त, जिसका आलम्बन विज्ञान का आयतन होता है – **त्तं** प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *दुतियारुप्पचित्तञ्च, चतुत्थारुप्पमानसं,* अभि॰ अव॰ 314; – **चुति** स्त्री., तत्पु॰ स., अरूप-भूमि अथवा रूपरहित ब्रह्मलोकों में मृत्यु, अरूप-धातु में जीवन से बिलगाव – **या** तृ॰ वि., ए॰ व॰ – *आरुप्पचुतियापि अनन्तरा पटिसन्धि वेदितब्बा,* विसुद्धि॰ 2.181; *अरूपावचरे च ... हेट्ठिमा हेट्ठिमा पटिसन्धि नत्थीति चतुत्थारुप्पचुतिया नवत्तब्बारम्मणपटिसन्धि नत्थि,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.283; – **चेतस** नपुं., कर्म॰ स., अरूपावचरध्यान का चित्त, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **दुतिया॰**- द्वितीय अरूपध्यान का कुशलचित्त एवं विपाकचित्त – **सो** ष॰ वि., ए॰ व॰ – *पठमारुप्पकुसलं दुतियारुप्पचेतसो,* अभि॰ अव॰ 366; –

ज्झान नपुं॰, कर्म॰ स॰, अरूपध्यान, रूपरहित चार आलम्बनों पर ध्यान – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततियस्स आरुप्पज्झानस्स आरम्मणत्ता,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.144; – **नानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चत्तारि आरुप्पज्झानानिपि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(1).171; – **ट्ठायी** त्रि॰, अरूपध्यान में स्थित, अरूपलोक अथवा रूप-रहित ब्रह्मलोकों में विद्यमान – **यिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अरूपट्ठायिनोति अरूपावचरा,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 195; *ये च रूपूपगा सत्ता, ये च अरूपट्ठायिनो,* इतिवु॰ 46; सु॰ नि॰ 759; – **देसना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, अरूपध्यान अथवा अरूप-भूमि के विषय में उपदेश – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बप्पकारेन आरुप्पदेसनमेव भजति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 231; – **निद्देस** पु॰, विसुद्धि॰ के दसवें परिच्छेद का शीर्षक, इस परिच्छेद में चार अरूपध्यानों का विवेचन है, विसुद्धि॰ 1.316-331; विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.370-387; – **पटिसन्धि** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, अरूप-लोक में पुनर्जन्म, रूपरहित ब्रह्मलोकों में पुनर्जन्म का ग्रहण – **या** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरूपपटिसन्धिया ... कम्मनिमित्तमेव यथारहमारम्मणं होति,* अभि॰ ध॰ स॰ 40; – **पादक** त्रि॰, अरूपध्यान अथवा अरूपलोक को प्राप्त कराने वाला – **कं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"आरुप्पपादकं फलसमापत्ति"न्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 198; – **बोधन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, अरूपध्यान-विषयक ज्ञान, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **चतुत्था॰**- चौथे अरूपध्यान के विषय में ज्ञान – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सावेतब्बो अयं अत्थो, चतुत्थारुप्पबोधने,* अभि॰ अव॰ 1035; – **भव** पु॰, कर्म॰ स॰, रूपरहित लोक में अस्तित्व, रूपरहित ब्रह्मलोकों में उत्पत्ति – **वे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रूपं पनेत्थ आरुप्पभवे भवति पच्चयो,* विभ॰ अट्ठ॰ 166; – **भूमि** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, रूपरहित ध्यान-आलम्बनों वाली चित्तभूमि, चित्त या चेतना का वह स्तर जिसमें चित्त चार रूपरहित आलम्बनों पर एकाग्र किया जाता है – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेचत्तालीस चित्तानि, नत्थि आरुप्पभूमियं,* अभि॰ अव॰ 213; – **यो** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अपरानि चतस्सोपि, ठपेत्वारुप्पभूमियो, चित्तानि पन जायन्ति,* अभि॰ अव॰ 194; – **सु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *विपाका होन्ति सब्बेव, चतूस्वारुप्पभूमिसु,* अभि॰ अव॰ 270; – **मानस** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, अरूपावचर ध्यान का चित्त, अरूपभूमि में सक्रिय चित्त – **सं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चतुत्थं पञ्चमं वापि, होति आरुप्पमानसं,* अभि॰ अव॰ 996; *आलम्बनअभेदेन, चतुधारुप्पमानसं,* अभि॰ ध॰ स॰ 6; – **विञ्ञाण** नपुं॰, अरूपावचरध्यान का विज्ञान, अरूपावचर नामक भूमि का चित्त, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **पठमा॰**- प्रथम अरूपध्यान का चित्त – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तमेव पठमारुप्पविञ्ञाणं अनन्तवसेन परिकम्मं करोन्तस्स दुतियारुप्पमप्पेति,* अभि॰ ध॰ स॰ 65; *पठमारुप्पविञ्ञाणाभावो तस्सेव सुञ्ञतो,* अभि॰ अव॰ 1010; – **विपाक** त्रि॰, अरूपावचर भूमि का विपाकभूत (चित्त) अरूपभूमि के वे चार चित्त, जो अरूपावचर भूमि के चार कुशलकर्मों के विपाक के रूप में उदित होते हैं – **कानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – ... *चत्तारि आरुप्पविपाकानीति सोळस चित्तानि नेव रूपं जनयन्ति, न इरियापथं, न विञ्ञत्तिं,* विसुद्धि॰ 2.249; – **केसु** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरुप्पविपाकेसु ... आनेञ्जाभिसङ्खारं आरभति,* विसुद्धि॰ 2.161; – **विमोक्ख** पु॰, तत्पु॰ स॰, अरूपावचर भूमि में प्राप्त विमुक्ति – **क्खा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अङ्गसन्तताय चेव आरम्मणसन्तताय च सन्ता आरुप्पविमोक्खा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.110; – **सङ्खात** त्रि॰, आरुप्य नाम से जाना गया, स॰ प॰ के रूप में, – **ततियारूप्पसङ्खातखन्ध** पु॰, तृतीय अरूपावचर नामक स्कन्ध – **धेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ततियारुप्पसङ्खात-खन्धेसु च चतूसुपि,* अभि॰ अव॰ 1027; – **समापत्ति** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ आरूप्यसमापत्ति], अरूपावचरध्यान की प्राप्ति – **यो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बथा आरम्मणातिक्कमतो चतस्सोपि भवन्तिमा आरुप्पसमापत्तियोति वेदितब्बा,* विसुद्धि॰ 1.328; – **त्तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्चन्तसुखुमभावप्पत्तसङ्खारं चतुत्थारुप्पसमापत्तिं,* विसुद्धि॰ 1.326; – **सम्भव** पु॰, तत्पु॰ स॰, अरूपभूमि में जन्म, अरूपध्यान के क्रम में उदित, स॰ उ॰ प॰ के रूप में **चतुत्था॰**- चतुर्थ अरूपध्यान से उत्पन्न – **म्भवा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *नेवसञ्ञा'ति निद्दिट्ठा, चतुत्थारुप्पसम्भवा,* अभि॰ अव॰ 1036; – **प्पारम्मण** नपुं॰, तत्पु॰ / कर्म॰ स॰, अरूपावचर ध्यान का आलम्बन, आलम्बन के रूप में अरूपावचर भूमि – **णेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरुप्पारम्मणेसुपि आकासं कसिणुग्घाटिमत्ता,* विसुद्धि॰ 1.110; – **प्पासञ्ञ** त्रि॰, अरूपभूमि की संज्ञा से रहित अरूप-लोक से अनभिज्ञ या अनजान – **ञ्ञं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तयो अपाया आरुप्पासञ्ञं पच्चन्तिमम्पि च,* सद्धम्मो॰ 5.

आरुय्ह आ + √रुह का पू॰ का॰ कृ॰ [आरुह्य], ऊपर चढ़ कर, आरुढ़ हो कर, सवार हो कर, ऊपर जा कर, ऊपर पहुंच कर – *परित्तं दारुमारुय्ह, यथा सीदे महण्णवे,* थेरगा॰ 147; *पुनपारुय्ह चङ्कमं,* थेरगा॰ 272; *पुनपारुय्ह चङ्कमन्ति ... पुनपि चङ्कमट्ठानं आरुहित्वा,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.5;

पासादमारुय्ह समन्तचक्खु, महाव॰ 6; *तमारुय्ह पलायन्तं कुमारमनुबन्धि सो,* म॰ वं॰ 24.38.

आरुहति आ + √रुह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, नियमित आरोहति के स्थान पर गाथाओं में प्रयुक्त अनियमित रूप [आरोहति], ऊपर चढ़ता है, सवार हो जाता है, सवारी करता है, पकड़ लेता है, ऊपर की ओर जाता है – *आरुहती ति आरुळ्हो,* क॰ व्या॰ 591; *खुद्दकमातिकं आरुहति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.264; – **न्ति** ब॰ व॰ – *तमारुहन्ति नारियो,* जा॰ अट्ठ॰ 7.138; *तत्थ तमारुहन्तीति तं एवरूपं सिम्बलिरुक्खं आरुहन्ति,* तदे॰; *न ते थूपमारुहन्ति,* अप॰ 1.70; – **हाम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *न मयं रथमारुहाम,* थू॰ वं॰ 46; – **न्ता** वर्त॰ कृ॰, पु॰ प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यत्थ एके विहञ्ञन्ति, आरुहन्ता सिलुच्चयं,* थेरगा॰ 1061; – **न्तं** वर्त॰ कृ॰, पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तमारुहन्तं खुरसञ्चितं गिरिं... को चोदये परलोके सहस्स'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.138; *तं भवन्तं जलितावुधपहारे असहित्वा जलितखुरेहि सञ्चितं जलितलोहपब्बतं आरुहन्तं,* तदे॰; – **ह** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *अस्सं आरुहा ति तमाह सो,* म॰ वं॰ 23.72; – **पेन्तु** अनु॰, प्रेर॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, चढ़वा दें, रखा दें – *सुवण्णपादुका च रथं आरोपेन्तूति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.28; – **हे** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सम्मतोम्हीति आरुहे,* जा॰ अट्ठ॰ 7.188; – **हि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *'पुथुद्दिसा नमस्सित्वा, पमुखो रथमारुही'ति,* स॰ नि॰ 1(1).271; *रथमारुहीति देवानं पमुखो सेट्ठो रथं आरुहि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.307; सा मद्दी नागमारुहि, जा॰ अट्ठ॰ 7.377; – **हिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तया सिम्बलिमारुहिं'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.78; – **हिंसु / रुहुं** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *'रथम्पि नाभिरुहिंसू'ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.56; *तुरिता पब्बतमारुहुं,* सु॰ नि॰ 1020; *तं चेतियं अभिरुहिंसु, ... पब्बतमारुहु'न्ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.274; – **हिम्ह** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आरुहिम्ह तदा नावं, भिक्खु चाजीविको चहं,* अप॰ 2.101; – **हित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *नावं दळ्हमारुहित्वा,* सु॰ नि॰ 323; – **हितब्बं** सं॰ कृ॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लेणं गम्भीरं अहोसि ओतरित्वा अभिरुहितब्बं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.146; पाठा॰ आरुहितब्बं; – **रुय्हति** कर्म॰ वा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – आरोहण किया जाता है, सवार हुआ जाता है, चढ़ा जाता है – *आरुय्हतीति आरोहो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 27.

आरुहन नपुं॰, आ + √रुह से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आरोहण], ऊपर चढ़ना, सवार होना, सवारी करना – **त्थ** पु॰, ऊपर चढ़ने अथवा सवार होने का प्रयोजन – **त्थाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कण्डुलो अत्तनो पिट्ठिं आरुहनत्थाय नन्दिमित्तं ओलोकेसि,* थू॰ वं॰ 61; *यथा वणं आलिम्पेय्य यावदेव आरुहणत्थाय,* महानि॰ 271; – **सज्ज** त्रि॰, चढ़ने के लिए तैयार (सवारी) – **ज्जो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रथो गन्त्वा कुमारं पदक्खिणं कत्वा आरुहनसज्जो हुत्वा,* अप॰ अट्ठ॰ 1.265.

आरुळ्ह / आरूळ्ह त्रि॰, आ + √रुह का भू॰ क॰ कृ॰ [आरूढ़], **शा॰ अ॰**, कर्तृ वा॰ / कर्म॰ वा॰ में, **1.** वह जो चढ़ चुका है, सवार हो चुका है या ऊपर जा चुका है, सवार, **2.** वह, जिस पर चढ़ा जा चुका है अथवा जिस पर सवार हुआ जा चुका है, सवारी – **ळ्हो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरुहतीति आरुळ्हो,* क॰ व्या॰ 591; *सो पुरिसो पठमं रुक्खं आरुळ्हो,* म॰ नि॰ 2.32; *एकं साखं गण्हित्वा पठमं रुक्खं आरुळ्हो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.351; – **ळ्हं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तमद्दसा चन्दनसारलित्तं, आजञ्ञमारुळ्हमुळारवण्णं,* पे॰ व॰ 570; *तळाकं आरुळ्हं गण्हतो ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.264; – **ळ्हेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नावं ... आरुळ्हेन भुञ्जितब्बं,* पाचि॰ 104; *खलुङ्कं आरुळ्हेन जवसम्पन्नं आजानीयं आरुय्ह गच्छन्तो विय गहेतुं न सक्काति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.281; – **ळ्हे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुतियभागे पन थेरासनं आरुळ्हे आगतानं पठमभागो न पापुणाति,* महाव॰ अट्ठ॰ 395; – **ळ्हा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मनुस्सा पासादेसुपि हम्मियेसुपि छदनेसुपि आरुळ्हा अच्छन्ति,* चूळव॰ 334; – **ळ्हे** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरुळ्हे गामणीयेहि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.56; – **ळ्हानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरुळ्हानं खोभं अकरोन्तो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 27; – **ळ्हं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'आरुळ्हं, ..., आरोपेतुं न वट्टती'ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.61; – **ळ्हेन** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'पिळन्धनेन एकिस्सा मक्कटिया हत्थे आरुळ्हेन भवितब्ब'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.368; **ला॰ अ॰**, रख दिया गया, निविष्ट कर दिया गया, संगृहीत, अन्तर्गत, प्राप्त, पहुंचा दिया गया – **ळ्हो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सम्माआजीवो अत्थि चित्तङ्गवसेन पन पाळियं न आरुळ्हो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 177; – **ळ्हं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वेपि सङ्गीतियो आरुळ्हं तिपिटकसङ्गहितं साट्ठकथं सब्बं थेरवादं ... उग्गहेत्वा ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.37; – **ळ्हे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पठमपाराजिके सङ्गहमारुळ्हे ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.12; – **ळ्हा**[1] पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ते पकतिसावका,*

इध पाळियं आरूळ्हा पन परिमिताव गाथावसेन परिग्गहितत्ता, तथापि महासावकेसुपि केचि इध पाळियं नारूळ्हा, थेरगा. अट्ठ. 2.456; – **ळ्हा²** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *सब्बअट्ठकथासु देसना आरूळ्हा,* पारा. अट्ठ. 1.217; *आरुळ्हायेव मातिकं,* चूळव. अट्ठ. 96; – **ळ्हं** द्वि. वि., ए. व. – *भजति, ... रूपावचरदेसनं न आरुळ्हं,* ध. स. अट्ठ. 231; – **ळ्हा** स्त्री., द्वि. वि., ब. व. – *इमा गाथा ताव सङ्गहं आरुळ्हा,* उदा. अट्ठ. 340; – **ळ्हासु** स्त्री., सप्त. वि., ब. व. – *गोपानसीसु पन आरुळ्हासु बहुकतो नाम होति,* चूळव. अट्ठ. 83; – **ळ्हं¹** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *विनयपिटकं सङ्गहमारूळ्हं,* पारा. अट्ठ. 1.12; – **ळ्हं²** द्वि. वि., ए. व. – *इदं पाळियं आरुळ्हञ्च अनारुळ्हञ्च सब्बं भगवा अवोच,* दी. नि. अट्ठ. 2.205; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *तन्तिं आरुळ्हस्स बुद्धवचनस्स पटिसम्भिदाप्पत्तानं ...,* विभ. अट्ठ. 367; – **ळ्हे** सप्त. वि., ए. व. – *तिस्सो सङ्गीतियो आरुळ्हे तेपिटके बुद्धवचने,* दी. नि. अट्ठ. 3.73; – **हानि¹** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *पुप्फनकानि ... पाळिं नारुळ्हानि, आहरित्वा पन दीपेतब्बानीति दीपितानि,* स. नि. अट्ठ. 1.177; – **हानि²** द्वि. वि., ब. व. – *धम्मुद्देसवारे पाळिआरुळ्हानि छप्पञ्ञास पदानि विभजित्वा,* ध. स. अट्ठ. 181; – **काल** पु., तत्पु. स. [आरोहणकाल], ऊपर की ओर चढ़ने का समय, सवारी पर सवार होने का समय – **लो** प्र. वि., ए. व. – *आरुळ्हकालो विय पठमज्झाने ...,* अ. नि. अट्ठ. 2.351; – **ट्ठान** नपुं., तत्पु. स. [आरोहणस्थान], वह स्थान जहां पहले चढ़ा जा चुका है – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *एवं आरुळ्हट्ठाने पदं विय हि सुखवेदनाय उप्पत्ति पाकटा होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).288; – **ता** स्त्री., आरुहन का भाव., स. उ. प. के रूप में, **मुखा.**- मुख पर आ जाना – **य** तृ. वि., ए. व. – *केवलं लोकवोहारवसेन ब्यञ्जनसिलिट्ठताय मुखारूळ्हताय एतं वुत्तं,* पारा. अट्ठ. 1.194; – **धम्म** पु., कर्म. स. [आरूढ़धर्म], सुनिर्धारित धर्म – **म्मं** द्वि. वि., ए. व. – *तिस्सो सङ्गीतियो आरुळ्हधम्मंयेव पन पदसो वाचेन्तस्स आपत्ति,* पाचि. अट्ठ. 8; – **नावा** स्त्री., कर्म. स., वह नौका, जिस पर लोग चढ़ चुके हैं – **य** तृ. वि., ए. व. – *तेन आरुळ्हनावाय ब्यापत्ति नाम नत्थि,* जा. अट्ठ. 4.125; – **भाव** पु., [आरूढ़भाव], आरूढ़ हो जाने की स्थिति, सम्प्राप्त हो जाने की अवस्था, आ पड़ने की स्थिति – **वो** प्र. वि., ए. व. – *कथं पन ते, पण्डित, मक्कटिया हत्थं आरुळ्हभावो आतो,* जा. अट्ठ. 1.369; – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *आरुळ्हभावं वा ओरुळ्हभावं वा न जानाति,* पाचि. अट्ठ. 150; – **वानर** त्रि., ब. स., वह वृक्ष, जिस पर वानर चढ़े हुए हों – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आरुळ्हो वानरो यं रुक्खं सो आरुळ्हवानरो,* मो. व्या. 3.17; – **विस** नपुं., कर्म. स., चढ़ चुका विष, शरीर में पूरी तरह फैल चुका विष – **स्स** ष. वि., ए. व. – *याव अक्खिप्पदेसा आरुळ्हविसस्स उपरि अभिरुहितुं ...,* स. नि. अट्ठ. 2.88; – **साखा** स्त्री., कर्म. स., वह शाखा, जिस पर कोई चढ़ा हुआ है – **य** ष. वि., ए. व. – *द्वे सामणेरे... आरुळ्हसाखाय भग्गाय पतन्ते दिस्वा,* थेरगा. अट्ठ. 1.355; – **ळ्हाभिलाप** पु., परम्परा से चली आ रही बातचीत, पारम्परिक कथन – *करणवचनेनेव अयमभिलापो आरोपितोति आदितो पट्ठाय आरुळ्हाभिलापवसेनेवेतं वुत्तन्ति वेदितब्बं,* महाव. अट्ठ. 225.

आरुळिहत्वान आ + √रुह का पू. का. कृ., चढ़ा कर, सवार हो कर, सवार करा के – *आरुळिहत्वान पासादं, गजबाहुनराधिपं,* चू. वं. 70.262.

आरुह / आरूह पु., आ + √रुह से व्यु., स. उ. प. के रूप में ही प्रयुक्त [आरोह], आरोहण, ऊपर चढ़ जाना, स. उ. प. के रूप में, **अज्झा.** – त्रि., अत्यधिक ऊपर की उठा हुआ – **हा** पु., प्र. वि., ब. व. – *अज्झारूहाभिवड्ढन्ति,* जा. अट्ठ. 3.352; *अज्झारुहाभिवड्ढन्तीति निग्रोधादयो रुक्खा अज्झारूहा हुत्वा महन्तम्पि ... दस्सेति,* जा. अट्ठ. 3.353; **दुक्खा.** – त्रि., दुख के साथ चढ़ने वाला, कठिनाई से ऊपर चढ़ने योग्य – **हो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अयं विसरुक्खो न दुक्खारुहो,* जा. अट्ठ. 1.262; **दुरा.**- त्रि., कठिनाई से ऊपर चढ़ने योग्य – **हो** पु., प्र. वि., ए. व. – *तत्थ नायं रुक्खो दुरारुहोति अयं विसरुक्खो न दुक्खारुहो ...,* जा. अट्ठ. 1.262.

आरोग / अरोग त्रि., 'अ' के स्थान पर अनियमित रूप से 'आ' का प्रयोग, ब. स. [अरोग], **क.** रोगों से मुक्त, स्वस्थ, सुरक्षित, सङ्कटों से मुक्त, कुशलक्षेम-युक्त – **गो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आरोग्यत्थायाति अरोगो भविस्सामि,* पारा. 151; *अरोगो भविस्सामीति मोचेत्वा अरोगो भविस्सामि,* पारा. अट्ठ. 2.100; – **गं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *आगन्त्वा नासक्खिंसु अरोगं कातुं,* महाव. 359; – **गा** पु., प्र. वि., ब. व. – *एकच्चे अरोगा जाता,* जा. अट्ठ. 1.352; – **गे** पु., द्वि. वि., ब. व. – *तुम्हे अरोगे कातुं नासक्खि,* जा. अट्ठ.

3.123; – **गा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *सुखिनी अरोगा अरोगं पुत्तं,* जा. अट्ठ. 1.390; – **गं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. – *मय्हं भरियं अरोगं कत्वा,* जा. अट्ठ. 2.99; – **गा** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *कच्चि ... राजकञ्ञायो, अरोगा मय्ह मातरो,* जा. अट्ठ. 6.27; – **गं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *कच्चि अरोगं योग्गं ते,* जा. अट्ठ. 6.28; **ख.** व्याधि एवं विनाश की पकड़ से बाहर वाला, व्याधि एवं जरा आदि का अविषयीभूत – **गो** पु., प्र. वि., ए. व. – *एकन्तसुखी अत्ता होति आरोगो परम्मरणा'ति,* अ. नि. अट्ठ. 1.338; – **ता** स्त्री., अरोग का भाव., रोगमुक्तता, स्वास्थ्य, अविनाशिता – **ता** प्र. वि., ए. व. – *आयु अरोगता वण्णं, सग्गं उच्चाकुलीनता,* मि. प. 309; – **भाव** पु., उपरिवत् – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *धनस्स अरोगभावं ञत्वा,* ध. प. अट्ठ. 1.132; – **वो** प्र. वि., ए. व. – *आरोग्यं नाम सरीरस्स चेव चित्तस्स च अरोगभावो अनातुरता,* जा. अट्ठ. 1.350; *अरोगभावो पुञ्ञवतो इद्धि,* बु. वं. अट्ठ. 36.

आरोगापेति अरोग अथवा आरोग का ना. धा., वर्त., प्र. पु., ए. व., रोग से मुक्त करा देता है, द्रष्ट., अरोगापेति के अन्त.(पीछे).

आरोगिय/अरोगिय नपुं., आरोग्य, स्वास्थ्य – **यं** प्र. वि., ए. व. – *आयुं अरोगियं वण्णं, ... रतियो पत्थयन्तेन,* स. नि. 1(1).104.

आरोग्य[1]/आरोग नपुं., अरोग का भाव. [आरोग्य], बीमारी से छुटकारा, रोग से मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य, सङ्कटों अथवा क्लेशों से मुक्त अवस्था, हर तरह से निरापद जीवन, अनातुरता – **ग्यं[1]** प्र. वि., ए. व. – *कुसलानामयारोग्यं,* अभि. प. 331; *अरोगस्स भावो आरोग्यं,* क. व्या. 362; *रोगो भविस्सति, आरोग्यं भविस्सति,* दी. नि. 1.10; – **ग्यं[2]** द्वि. वि., ए. व. – *यथा आरोग्यं ... इमे पञ्च नीवरणे पहीने अत्तनि समनुपस्सति,* दी. नि. 1.65; *तस्मा भगवा आरोग्यमिव ब्यापादप्पहानं आह,* दी. नि. अट्ठ. 1.175; – **ग्या/तो** प. वि., ए. व. – *यं लोके पियरूपं सातरूपं तं ... आरोग्यतो अद्दक्खुं,* स. नि. 1(2).96; *सत्ता ... आरोग्या दुम्मोचया,* महानि. 22; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *आरोग्यस्स पच्चयो होति,* ध. स. अट्ठ. 173; – **ग्ये** सप्त. वि., ए. व. – *ब्याधिधम्मो आरोग्ये,* स. नि. 3(2).293; *इति, पटिसञ्चिक्खतो यो आरोग्ये आरोग्यमदो सो सब्बसो पहीयि,* अ. नि. 1(1).170; स. प. के अन्त., – *आरोग्ययोब्बनजीवितमदसङ्खाता तिविधा मदा पमादो नाम जायति,* जा. अट्ठ. 5.95; – **काम** त्रि., ब. स., अच्छे स्वास्थ्य की कामना करने वाला, हर प्रकार से सुखी जीवनवृत्ति की कामना करने वाला – **मा** पु., प्र. वि., ब. व. – *आरोग्यकामा सत्ता ब्याधिना पटिविरुद्धा,* महानि. 305; – **काल** पु., तत्पु. स. [आरोग्यकाल], रोग से मुक्त रहने अथवा हर तरह से स्वस्थ एवं कुशलयुक्त रहने का समय – **ले** सप्त. वि., ए. व. – *दहरकाले आरोग्यकाले,* अ. नि. अट्ठ. 3.34; – **ट्ठ** पु., तत्पु. स. [आरोग्यार्थ], रोगमुक्त अथवा हर तरह के कष्टों से मुक्त होने का अर्थ – **ट्ठेन** तृ. वि., ए. व. – *अपिच आरोग्यट्ठेन अनवज्जट्ठेन कोसल्लसम्भूतट्ठेन च कुसलं,* ध. स. अट्ठ. 108; – **पद** नपुं., तत्पु. स. [आरोग्यपद], आरोग्य शब्द – **दं** प्र. वि., ए. व. – *आरोग्यपदं सब्बपदेहि योजेत्वा वुत्तमेकं खण्डचक्कं,* पारा. अट्ठ. 2.101-102; – **परम** त्रि., ब. स. [आरोग्यपरम], वह, जिसमें अच्छे स्वास्थ्य की महत्ता सर्वोपरि रहे, आरोग्य को सर्वोपरि रखने वाला – **मा** पु., प्र. वि., ब. व. – *आरोग्यपरमा लाभा, निब्बानं परमं सुखं,* म. नि. 2.186; *आरोग्यपरमाति गाथाय ये केचि धनलाभा वा यसलाभा वा पुत्तलाभा वा अत्थि, आरोग्यं तेसं परमं उत्तमं, ... आरोग्यपरमा लाभा,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.157; – **प्पत्त** त्रि., [आरोग्यप्राप्त], आरोग्य को प्राप्त, अच्छे स्वास्थ्य को प्राप्त, हर प्रकार के दुखों के अन्त को प्राप्त – **त्तं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *परमं आरोग्यप्पत्तं ... निब्बानप्पत्तन्ति पस्सामि सुद्धं परमं अरोगं,* महानि. 60; – **भाव** पु., रोगमुक्तता, व्याकुलता का अभाव, अनातुरता, स्वस्थता, शरीर एवं चित्त की अव्याकुलता – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *आरोगभावं कथेत्वा तं आदाय आगच्छेय्याथ,* जा. अट्ठ. 3.52; – **भूत** त्रि., वह, जो व्याकुलतारहित हो चुका है, हर तरह से शान्त अवस्था को प्राप्त – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आरोग्यन्ति आरोग्यभूतं,* पटि. म. अट्ठ. 2.293; – **मद** पु., तत्पु. स. [आरोग्यमद], रोगों से मुक्त हो जाने का घमण्ड, स्वस्थ रहने का मद – **दो** प्र. वि., ए. व. – तयोमदा – *आरोग्यमदो, योब्बनमदो, जीवितमदो,* दी. नि. 3.176; *तेसु "अहं निरोगो सट्ठि वा सत्तति वा वस्सानि अतिक्कन्तानि, न मे हरीतकीखण्डम्पि खादितपुब्बं, इमे पनञ्ञे असुकं नाम ठानं रुज्जति, भेसज्जं खादामाति विचरन्ति, को अञ्ञो मादिसो निरोगो नामा"ति एवं मानकरणं आरोग्यमदो,* दी. नि. अट्ठ. 3.170; *यो आरोग्ये आरोग्यमदो सो सब्बसो पहीयि,* अ. नि. 1(1).170; – **मदमत्त** त्रि.,

अच्छे स्वास्थ्य के घमण्ड से भरा हुआ – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आरोग्यमदमत्तो वा, भिक्खवे ... दुच्चरितं चरति,* अ. नि. 1(1).171; – **लाभ** पु., तत्पु. स. [आरोग्यलाभ], स्वास्थ्य का लाभ – **भं** द्वि. वि., ए. व. – *सब्बेसु तेसु लाभेसु आरोग्यलाभमुत्तमं सेट्ठन्ति बुद्धो देसेसि,* चू. वं. 99. 180-181; – **ग्यावह** त्रि., स्वास्थ्यप्रद, हितकारक – **हं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आरोग्यावहं अगदं,* पे. व. अट्ठ. 171; – **विनासक** त्रि., स्वास्थ्य को नष्ट करने वाला, स्वास्थ्य के लिए घातक – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *आरोग्यविनासको रोगो एव रोगब्यसनं,* पारा. अट्ठ. 1.178; – **विलुम्पनट्ठ** पु., स्वास्थ्य को लूट लेने या नष्ट करने का तात्पर्य – **ट्ठेन** तृ. वि., ए. व. – *आरोग्यविलुम्पनट्ठेनेव रोगो,* सु. नि. अट्ठ. 1.80; – **सम्पदा** स्त्री., तत्पु. स. [आरोग्यसंपत्], स्वास्थ्य-संपत्ति, अच्छे स्वास्थ्य के रूप में धन-संपत्ति – **दा** प्र. वि., ए. व. – *पञ्च सम्पदा – ञातिसम्पदा, भोगसम्पदा, आरोग्यसम्पदा, सीलसम्पदा, दिट्ठिसम्पदा,* दी. नि. 3.188; *आरोग्यस्स सम्पदा आरोग्यसम्पदा,* दी. नि. अट्ठ. 3.192; – **साला** स्त्री., तत्पु. स. [आरोग्यशाला], चिकित्सालय, अस्पताल – **लं** द्वि. वि., ए. व. – *आरोग्यसालं कारेसि,* अ. नि. अट्ठ. 1.232; – **सासनमत्त** नपुं., स्वास्थ्य-विषयक शिक्षा-मात्र – **त्तं** द्वि. वि., ए. व. – *एत्तकं कालं तुम्हाकं सन्तिके वसन्तो आरोग्यसासनमत्तम्पि न लभामि,* जा. अट्ठ. 5.286.

आरोचक त्रि., आ + √रुच से व्यु. [आरोचक], उद्घोषक, घोषणा करते हुए कहने वाला, केवल स. उ. प. में प्रयुक्त, उपोसथा. के अन्त. द्रष्ट..

आरोचन नपुं., आ + √रुच से व्यु., क्रि. ना. [बौ. सं. आरोचन/आरोचनता], उद्घोषणा, सूचना, कथन – **नं** प्र. वि., ए. व. – *एतस्स आरोचनं नप्पमाणं,* पारा. अट्ठ. 2.257; 276; *भिक्खुसम्मुतिया च आरोचनं ... भगवता अनुञ्ञातं,* पाचि. अट्ठ. 17; – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *अनत्तमनस्स सतो परेसं आरोचनेनपि दोसो,* अ. नि. अट्ठ. 2.12; – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *पठमे आरोचने भिक्खुनिया दुक्कटं, दुतिये थुल्लच्चयं,* पाचि. अट्ठ. 170; *एकस्सारोचने तस्सा होति आपत्ति दुक्कटं,* उत्त. वि. 180; स. उ. प. के रूप में, अभूता., काला., दुतिया., देवता., पठमा., परम्परा., भूता., सासना. के अन्त. द्रष्ट.; स. पू. प. के रूप में, – **त्थ** पु., तत्पु. स. [आरोचनार्थ], कहने का अर्थ, बतलाने का अर्थ – **त्थे** सप्त. वि., ए. व. – *आरोचनत्थे, ... तदत्थे, ... तुमत्थे, ... अलमत्थे, ... मञ्ञतिप्पयोगे अनादरे अप्पाणिनि,* क. व्या. 279; *यग्घेति आरोचनत्थे निपातो,* पारा. अट्ठ. 1.160; – **किच्च** नपुं., तत्पु. स. [आरोचनकृत्य], बतलाने अथवा सूचित करने का काम – **च्चं** प्र. वि., ए. व. – *इतो चितो च परियेसित्वा आरोचनकिच्चं नाम नत्थि,* पाचि. अट्ठ. 111; – **लेखकामच्च** पु., द्व. स., राजकीय आदेशों को तैयार करने वाले एवं उन्हें निर्गत करने वाले लेखक एवं मन्त्री – **च्चेहि** तृ. वि., ब. व. – *आरोचनलेखकामच्चेहि अभियाचितो,* सा. वं. 141.

आरोचनक त्रि., उद्घोषक, सूचक, बतलाने वाला, स. उ. प. में प्रयुक्त, **अवस्सा.** – अवश्य कहने वाला – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *तं अदिस्वा अञ्ञतरस्स अवस्सारोचनकस्स "आरोचेही"ति वत्वा पच्चाहरति, आपज्जतियेव,* कङ्खा. अट्ठ. 134; **भूता.** – कायिक एवं वाचिक आपत्तियों अथवा अपराधों को कहने वाली – **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *भूतारोचनका नाम, तीहि ठानेहि जायति,* परि. 187.

आरोचना स्त्री., स. उ. प. में प्रयुक्त, उपरिवत्; **अना.** – उद्घोषणा अथवा सूचना का अभाव, नहीं बतलाना – *आगन्तुकादीनं अनारोचना,* चूळव. अट्ठ. 14.

आरोचयति आ + √रुच का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व., कहता है, सूचित करता है, प्रकाशित करता है, द्रष्ट. आरोचेति के अन्त..

आरोचयितु पु., आ + √रुच के प्रेर. से व्यु., क. ना. [आरोचयितृ], सूचक, उद्घोषक, प्रकाशक, कथन करने वाला – **ता** प्र. वि., ए. व. – *कोचिस्स आरोचयितापि नत्थि,* पारा. अट्ठ. 2.5.

आरोचापन नपुं., आ + √रुच के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना., सूचित कराना, उद्घोषित कराना, कहलाना – **नं** प्र. वि., ए. व. – *भिक्खूनं आरोचापनं,* ध. प. अट्ठ. 1.341.

आरोचापेति आ + √रुच के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [बौ. सं., आरोचापेति], किसी अन्य द्वारा घोषणा कराता है, दूसरे से सूचित कराता है अथवा कहलवाता है, दूसरे को जनवाता है – *आरामिकेहि अत्तनो उपकारभावं सङ्घस्स आरोचापेति,* स. नि. अट्ठ. 3.76; – **न्तस्स** वर्त. कृ., पु., ष. वि., ए. व., (सूचित करवाने वाले को) – *तस्स तं पवत्तिं सयं आरोचेन्तस्स वा अञ्ञेन आरोचापेन्तस्स वा सङ्घादिसेसो,* कङ्खा. अट्ठ. 134; – **थ** अनु., म. पु., ब. व. ... *पटिसामनट्ठानं मे आरोचापेथा'ति,* ध. प. अट्ठ. 1.295; – **य्यं** विधि., उ. पु., ए. व. – *भगवतो महापरिसाय*

सन्निपतितभावं आरोचापेय्य'न्ति, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.250; – **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *भगवतो कालं आरोचापेसि,* महाव॰ 43; 289; – **सुं** ब॰ व॰ – *भगवतो कालं आरोचापेसुं,* दी॰ नि॰ 2.69; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *उभिन्नम्पि वत्थु आरोचापेत्वा उभिन्नम्पि पटिञ्ञा सोतब्बा,* परि॰ 414; – **तब्बं** सं॰ कृ॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचे उभो अत्थपच्चत्थिका आगच्छन्ति, उभिन्नम्पि वत्थु आरोचापेतब्बं,* परि॰ 414.

आरोचिक त्रि॰, आ + √रुच से व्यु॰, आरोचक के स्थान पर यत्र तत्र प्रयुक्त [आरोचिक], सूचित करने वाला, घोषणा करने वाला, बतलाने वाला – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *उपोसथारोचिका देवता तत्थ तत्थ गन्त्वा आरोचेन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.141.

आरोचित त्रि॰, आ + √रुच के प्रेर॰ का भू॰ क॰ कृ॰ [बौ॰ सं॰ आरोचित], उद्घोषित, सूचित, कहा हुआ, बतलाया हुआ – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचे आरामे कालो आरोचितो होति,* चूळव॰ 356; *महाथेरेहि आरोचितो भिक्खुसङ्घो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.261; – **ते** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरोचितेयेव काले अगमासीति वेदितब्बो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.162; – **ताय** स्त्री॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरोचिताय चित्तप्पवत्तिया वत्तब्बो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.186; – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वत्थु वा आरोचितं होति अविनिच्छितं,* पाचि॰ 204; *चोदकेन च चुदितकेन च अत्तनो कथा कथिता, अनुविज्जको सम्मतो, एत्तावतापि वत्थुमेव आरोचितं होति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 137; ... *यत्थ कथचि आरोचितं उद्देसभत्तं तस्मिंयेव भत्तुद्देसट्ठाने गाहेतब्बं,* चूळव॰ अट्ठ॰ 88; – **तेन** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किं आवुसो आरोचितेन,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.190; – **ते** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *तेन तस्मिं कारणे आरोचिते ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.385; – **कथा** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, कही हुई कथा, पहले कहा जा चुका वचन – **थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरोचितकथं सुत्वा, उभिन्नम्पि यथा तथा,* विन॰ वि॰ 2018; – **काल** पु॰, कर्म॰ स॰, बतलाया हुआ काल, निर्धारित किया हुआ समय – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरोचितकालतो पट्ठाय च एकं भिक्खुं ठपेत्वा सेसेहि सति करणीये गन्तुम्पि वट्टति,* चूळव॰ अट्ठ॰ 17; 31; – **क्खण** पु॰, कर्म॰ स॰, बतलाया हुआ क्षण – **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं पन आरोचितक्खणेयेव पाराजिकं आपज्जति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.73; – **दिवस** पु॰, कर्म॰ स॰, निर्धारित दिन, पहले से बतलाया हुआ दिन – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरोचितदिवसतो पट्ठाय,* चूळव॰ अट्ठ॰ 25; – **नियाम** पु॰, कर्म॰ स॰, बतलाया हुआ तरीका या विधान, बतलाई हुई पद्धति, बतलाया हुआ मार्ग अथवा उपाय – **मेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ते मुखं विक्खालेत्वा रञ्ञो आरोचितनियामेनेव आरोचेसुं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.241; – **भाव** पु॰, कर्म॰ स॰, सूचित किया हुआ भाव, मनोगत भाव – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेवको रञ्ञो आरोचितभावं ञत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 2.174; – **सञ्ञा** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, पूर्व में प्रकाशित संज्ञा या समझ – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तुम्हेहि आरोचितसञ्ञाय नियामको भविस्सामी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.126.

आरोचेति[1] / आरोचयति आ + √रुच का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रायः आरोचेति रूप में ही प्राप्त [बौ॰ सं॰ आरोचयति], **शा॰ अ॰,** प्रकाशित करा देता है, प्रकट करा देता है, साफ साफ दिखलवा देता है, **ला॰ अ॰,** स्पष्ट रूप से कह देता है, वर्णन या बखान कर देता है, उद्घोषित करता है, सूचित कर देता है – *आरोचेति आरोचयती ति रूपानि दिस्सन्ति,* सद्द॰ 2.478; *पारिसुद्धिहारको चे, ... सुत्तो न आरोचेति, पमत्तो न आरोचेति, समापन्नो न आरोचेति,* महाव॰ 151; ... *अञ्ञो भिक्खु भिक्खुस्स आरोचेति ... अज्झापन्नो'ति,* चूळव॰ 402; *आरोचेतीति बुद्धरक्खितो धम्मरक्खितस्स, धम्मरक्खितो सङ्घरक्खितस्स 'अम्हाकं आचरियो एवं वदति',* पारा॰ अट्ठ॰ 1.296; – **चेमि / चयामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"यं खो मे, ... सम्मुखा पटिग्गहितं, आरोचेमि तं भगवतो"ति,* दी॰ नि॰ 2.162; *आरोचयामि वो,* मो॰ व्या॰ 2.27; *आरोचयामि खो ते, सुनक्खत्त,* दी॰ नि॰ 3.4; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *थेरा भिक्खू परचित्तविदुनो भिक्खूनं आरोचेन्ति ... जानाती'ति,* चूळव॰ 398; – **स्सथ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *कथञ्हि नाम तुम्हे, मोघपुरिसा, भिक्खुस्स ... आरोचेस्सथ,* पाचि॰ 47; – **म** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आगमेन्तु ताव भवन्तो निरयपाला, याव मयं पायासिस्स राजञ्ञस्स गन्त्वा आरोचेम,* दी॰ नि॰ 2.241; – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुपसम्पन्नस्स उत्तरिमनुस्सधम्मं भूतं आरोचेन्तो,* परि॰ 63; *पुरिसस्स हि मतिं इत्थिया आरोचेन्तो जायत्तने आरोचेति, इत्थिया मतिं पुरिसस्स आरोचेन्तो जारत्तने आरोचेति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.127; – **न्तेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यस्मा पनेतं आरोचेन्तेन त्वं किरस्स जाया भविस्ससी'ति आदि वत्तब्बं होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.127; – **न्तस्स / चयतो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुपसम्पन्नस्स उत्तरिमनुस्सधम्मं भूतं आरोचेन्तस्स*

पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति, परि॰ 23; – **न्ता** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *नगरवीथीसु आरोचेन्ता विचरिंसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.117; – **न्तेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *भोजनकालादीसु थुतिवसेन कालं आरोचेन्तेहि सूतेहि चेव मागधकेहि च वण्णिते,* जा॰ अट्ठ॰ 7.232; – **न्ती** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निवत्तभावं सत्थु आरोचेन्ती,* उदा॰ अट्ठ॰ 346; – **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *'सहायकोपि, भिक्खवे, सहायकस्स आरोचेतू'ति,* दी॰ नि॰ 2.116; *अम्हेसु यो पठमं अमतं अधिगच्छति, सो इतरस्स आरोचेतू'ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.53; *असोकं धम्मराजानं एवं चारोचयाहि तं,* दी॰ वं॰ 15.6; – **चेहि / चयाहि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पारिसुद्धिं मे आरोचेही'ति,* महाव॰ 150; – **थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *पारिसुद्धिं आयस्मन्तो आरोचेथ,* महाव॰ 130; – **य्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *एतमत्थं ... न आरोचेय्य, आपत्ति दुक्कटस्सा'ति,* चूळव॰ 429; – **य्यासि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यथा ते भगवा ब्याकरोति, तं साधुकं उग्गहेत्वा मम आरोचेय्यासि,* दी॰ नि॰ 2.56; – **य्यं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *'यन्नूनाहं भगवतो एतमत्थं आरोचेय्य'न्ति,* पाचि॰ 52; – **य्युं** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तं चे ते पुरिसा एवमारोचेय्युं,* दी॰ नि॰ 1.53; – **य्याथ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तेन हि, भन्ते, भगवन्तं पटिपुच्छित्वा मम आरोचेय्याथा'ति,* चूळव॰ 271; – **य्याम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *मयञ्चेव खो पन गिहीनं आरोचेय्याम नास्सस्स मनापं,* चूळव॰ 322; – **चयी / सि**[1] अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *मातु आरोचयी दासी, माता पुच्छिय धीतरं, रञ्ञो आरोचयी ...,* म॰ वं॰ 9.19-20; *अथ खो अन्तरहिता देवता भगवतो आरोचेसि,* महाव॰ 10; – **सि**[2] म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *'पस्स, अय्य, पत्ते गब्भं, मा च कस्सचि आरोचेसी'ति,* चूळव॰ 432; – **चयिं / सिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अनत्तमनो समानो परेसं आरोचेसिं,* अ॰ नि॰ 1(1).71; *कालमारोचयिं अहं,* अप॰ 1.36; – **यिंसु / सुं** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अथ खो ते भिक्खू भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं,* महाव॰ 49; 60; *एके च पब्बज्जमरोचयिंसु,* थेरगा॰ 724; *अथ रञ्ञो आगन्त्वा आरोचयिंसु,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.100; – **यित्थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *मनुस्सं घातयित्थ, अभूतं आरोचयित्था'ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.158; – **चिम्ह / यिम्हा** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *किं नु खो मयं आयस्मतो अनुरुद्धस्स एवमारोचिम्ह,* म॰ नि॰ 1.273; *सासनं आरोचयिम्हा'ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.317; – **स्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *न हि नाम मे कोचि आरोचेस्सती'ति,* महाव॰ 466; – **यिस्सामि / स्सामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तानि आरोचयिस्सामि, तं सुणाथ यथा तथं,* अ॰ नि॰ 2(2).234; *एकस्स होति आरोचेस्सामीति, एककस्स होति न आरोचेस्सामीति,* चूळव॰ 162; *तानि आरोचयिस्सामि, तं सुणाथ तथा तथं,* अ॰ नि॰ 2(2).234; – **स्सन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *कथञ्हि नाम छब्बग्गिया भिक्खू भिक्खुस्स दुट्ठुल्लं आपत्तिं अनुपसम्पन्नस्स आरोचेस्सन्ती'ति* पाचि॰ 47; – **स्सथ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सचे तुम्हे, आयस्मन्तो, अम्हाकं इमं अधिकरणं यथाजातं यथासमुप्पन्नं आरोचेस्सथ,* चूळव॰ 205; – **स्साम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *मयं इमं अधिकरणं आयस्मन्तानं आरोचेस्साम,* चूळव॰ 206; – **तुं / यितुं** निमि॰ कृ॰ – *अनुजानामि, भिक्खवे, आरोचेतुं अज्जुपोसथो'ति,* महाव॰ 147; – **त्वा / त्वान** पू॰ का॰ कृ॰ – *आनन्दत्थेरोपि अनाथपिण्डिकादीहि पेसितसासनं आरोचेत्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.38; *सो तं सञ्जातसंवेगो आरोचेत्वान राजिनो,* म॰ वं॰ 23.62; – **तब्बो** सं॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ओवादो न आरोचेतब्बो,* चूळव॰ 429; – **तब्बं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पारिवासिकेन, भिक्खवे, भिक्खुना आगन्तुकेन आरोचेतब्बं, आगन्तुकस्स आरोचेतब्बं, उपोसथे आरोचेतब्बं, पवा[illegible]य आरोचेतब्बं, सचे गिलानो होति, दूतेनपि आरोचेत[illegible] [illegible]व॰ 79;* – **यमाना** वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, कर्म॰ वा॰, पु॰, प्र॰ [illegible]॰, ब॰ व॰, कहे गए – *भगवतो एतमत्थं आचिक्खिंसु पटिवेद[illegible]येंसु आरोचयमाना च नेव पियकम्यताय न भेदपुरेक्खारताय ..., न'त्ति मञ्ञमाना अ[illegible]चेसुं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.168-69.

आरोदन / आरोदना नपुं॰ / स्त्री॰, आ + √रुद से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आरोदन, नपुं॰], रोना, विलाप करना, अनुताप, रोदन क्रिया – **ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बहुनो जनस्स आरोदना,* अ॰ नि॰ 2(1).250; *आरोदनाति आरोदनट्ठानं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.86; – **नाय** नपुं॰, च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदमस्स आरोदनाय वदामि,* अ॰ नि॰ 2(1).251; – **नं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरोदनं दस्सेसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.107; – **नेन** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अट्ठमो आरोदनेन,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.134; – **नाकारप्पत्त** त्रि॰, रोता हुआ सा, रोती हुई सी सूरत शक्ल वाला – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुक्खे उप्पन्ने आरोदनाकारप्पत्तो विय होति,* विसुद्धि॰ 1.284; – **काल** पु॰, तत्पु॰ स॰, रोने का समय – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनम्हिकालेति रोदनकाले,* जा॰ अट्ठ॰ 3.195; – **परिदेवन** नपुं॰, द्व॰ स॰, रोना-कलपना, रोना और विलाप करना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मनुस्सानं महन्तं आरोदनपरिदेवनं अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.44; – **प्पत्त** त्रि॰,

तत्पु॰ स॰ [आरोदनप्राप्त], रोने की अवस्था को प्राप्त, रो रहा जैसा – त्ता पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एकच्चे आरोदनप्पत्ता अहेसुं*, उदा॰ अट्ठ॰ 349; – **त्तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वनं आरोदनप्पत्तं विय पथवीकम्पमानाकारप्पत्ता विय अहोसि*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.80; – **सद्द** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आरोदनशब्द], रोने की आवाज़ – **द्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पथविउन्द्रियनसद्दो विय आरोदनसद्दो अहोसि*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.305; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्थु परिनिब्बाने आरोदनसद्दतोपि कारुञ्ञतरो अहोसि*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.305.

आरोपक त्रि॰, स॰ उ॰ प॰ में प्रयुक्त, स्थापित करने वाला, खड़ा करने वाला, ऊपर की ओर उठाने वाला, **थम्भा॰** – पु॰, व्य॰ सं॰, एक स्थविर का नाम – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थं सुदं आयस्मा थम्भारोपको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति*, अप॰ 1.174; *निब्बुते लोकनाथम्हीतिआदिकं आयस्मतो थम्भारोपकत्थेरस्स अपदानं*, अप॰ अट्ठ॰ 2.144.

आरोपना / आरोपन स्त्री॰ / नपुं॰, आ + √रुह के प्रेर॰ से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आरोपण], ऊपर की ओर उठाना, समुन्नत कराना, (किसी पर अथवा किसी में) रखना अथवा स्थापित करना – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यस्सायस्मतो खमति इत्थन्नामस्स भिक्खुनो मोहस्स आरोपना, सो तुण्हस्स*, पाचि॰ 194; – **त्थ** पु॰, स्थापित करने का प्रयोजन समुन्नत करने या ऊपर उठाने का प्रयोजन – *तस्स पराजयं आरोपनत्थं "अधम्मं धम्मो"ति आदीनि दीपेत्वा ...*, परि॰ अट्ठ॰ 197; – **काल** पु॰, तत्पु॰ स॰, चढ़ाने का समय – **लो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकनावं आरोपनकालो विय, ... एकसकटं ...*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.88; – **समत्थता** स्त्री॰, भाव॰, धनुष को खींचने अथवा चढ़ाने में सक्षमता – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धनुं आरोपनसमत्थताय सहस्सबाहु*, जा॰ अट्ठ॰ 5.265; – **नारह** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, बतलाने योग्य, प्रकाशित करने योग्य, सूचित करने योग्य – **हो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपारम्भं दोसं आरोपनारहो*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.247.

आरोपनिय त्रि॰, आ + √रुह से प्रेर॰, सं॰ कृ॰ [आरोपनीय], आरोपण करने योग्य, ऊपर की ओर स्थापित करने योग्य, धारण करने योग्य – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्सारोपनियो मोहो, उत्तरिम्पि हि भिक्खुनो*, विन॰ वि॰ 1726.

आरोपमानक त्रि॰, आ + √रुह के कर्म॰ वा॰ के वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰ से व्यु॰ [आरोप्यमानक], ऊपर चढ़ाया जा रहा, आरोपित किया जा रहा – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नन्दमानागतं चित्तं सूलमारोपमानकं*, थेरगा॰ 213; *सूलमारोपमानकन्ति दुक्खुप्पत्तिट्ठानताय सूलसदिसत्ता सूलं तं तं भवं कम्मकिलेसेहि एत्तकं कालं आरोपियमानं*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.365.

आरोपापेति आरोपेति का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, **क.** किसी अन्य द्वारा रखवाता है, दूसरे द्वारा चढ़वाता है – *मक्कटे वा परिपातेत्वा तत्थ आरोपेति, अञ्ञेन वा आरोपापेति, वग्गुलियो वा तत्थ आरोपेति परेन वा आरोपापेति*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.278; **ख.** (पुस्तक में) लिखवाता है – *अत्थयोजनानयं पोत्थके आरोपापेसि*, सा॰ वं॰ 141(ना॰).

आरोपित त्रि॰, आ + √रुह के प्रेर॰ का भू॰ का॰ कृ॰, **शा॰ अ॰**, ऊपर रख दिया गया, स्थापित, ऊपर न्यस्त, **ला॰ अ॰**, साथ में प्रयुक्त ना॰ प॰ के अनुरूप अनेक अर्थों का संकेतक – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेलपदीपो आरोपितो*, महाव॰ 302; – **तेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकेन भिक्खुना पण्णे आरोपितेना'ति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.321; – **ते** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरोपिते मोहे मोहेति, आपत्ति पाचित्तियस्स*, पाचि॰ 194; – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकेकस्स पन ... विसुं विसुं तन्ति आरोपिताति*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.196; – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पीठे वा पीठं आरोपितं होति*, चूळव॰ 350; – **तेन** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं इन्दखीलतो पट्ठाय आरोपितेन आचरियधनुना पञ्चधनुसतप्पमाणन्ति वेदितब्बं*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.240; – **स्स** नपुं॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकासं आरोपितस्स रत्तिभागे समन्ता योजनप्पमाणं ओकासं आभा फरति*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.195; – **ता** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरोपिता च ते पुप्फा*, अप॰ 1.96; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [आरोपितत्व], आरोपित होना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ओजाय आरोपितत्ता हत्थसतुब्बेधस्स रुक्खस्स ...*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.74; – **दीप** पु॰, कर्म॰ स॰, रखा गया दीपक – **पं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरोपितदीपं दीपरुक्खमिव*, बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 56; – **धनु** नपुं॰, कर्म॰ स॰, चढ़ाया हुआ धनुष – **नूनि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सजियानि आरोपितधनूनि*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.29; – **नय** पु॰, कर्म॰ स॰, निर्धारित पद्धति, उत्कृष्ट पद्धति, स्थापित पद्धति – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्च अरहन्तसतानि सङ्गहं आरोपितनयेनेव गणसज्झायमकंसु*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.12; – **भण्ड** त्रि॰, ब॰ स॰, सामग्री अथवा माल-असबाब को ऊपर चढ़ा चुका – **ण्डो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुवण्णभूमिं गमिस्सामी'ति आरोपितभण्डो नावं अभिरुहि*, उदा॰ अट्ठ॰ 62; – **भार** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिस पर भार लाद दिया गया है, भारयुक्त व्यक्ति – **रं**

पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सङ्घेन आरोपितभारं भिक्खूनं वा फासुविहारत्थाय सयमेव तं भारं वहन्तं* ..., पाचि॰ अट्ठ॰ 33; – **वचनानुरूपेन** क्रि॰ वि॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, स्थापित किए हुए वचनों के अनुरूप – *भगवा पन देवताय आरोपितवचनानुरूपेनेव एवमाह,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.23.

आरोपेति / आरोपयति आ + √रुह का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, द्विकर्मक [आरोहयति], **शा॰ अ॰,** ऊपर जाने हेतु प्रेरित करता है, चढ़वाता है, आरुढ़ कराता है, **ला॰ अ॰,1.** रखवाता है, रखवा देता है, स्थापित करा देता है (किसी पर) बैठा देता है, ऊपर की ओर उठा देता है, समुन्नत करा देता है, (की ओर) ले जाता है, सौंप देता है, हस्तान्तरित करा देता है, **ला॰ अ॰, 2.** (वाद के साथ प्रयुक्त होने पर) खण्डन कर देता है, मात कर देता है, पराजित करना है, **3.** तैयार हो जाता है, तत्पर हो जाता है, निष्पादित करता है, **4.** कहता है, प्रदर्शित करता है, देता है – *कलिसासनं आरोपेति, आपत्ति दुक्कटस्स,* पाचि॰ 129; ... *कोधो, तस्स सासनं आरोपेति, कोधस्स आणं आरोपेति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 110; *सङ्घो इत्थन्नामस्स भिक्खुनो मोहं आरोपेति,* पाचि॰ 194; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सम्पज्जलितेहि अयमुग्गरेहि पोथेन्ता आरोपेन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 156; *तमेनं, भिक्खवे, निरयपाला महन्तं अङ्गारपब्बतं आदित्तं ... आरोपेन्तिपि ओरोपेन्तिपि,* म॰ नि॰ 3.206; – **म** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *मयं, भन्ते, बुद्धवचनं छन्दसो आरोपेमा'ति,* चूळव॰ 260; *वेदं विय सक्कतभासाय वाचनामग्गं आरोपेम,* चूळव॰ अट्ठ॰ 57; – **न्तो** पु॰, वर्त॰ कृ॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, चढ़ा रहा, रखवा रहा – *चेतियं वन्दन्तो चेतिये गन्धमालं आरोपेन्तो,* महानि॰ 315; – **न्ते** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰, चढ़ाए जा रहे को – *पुरिसे पस्सामि ... सूलेसु आरोपेन्ते,* मि॰ प॰ 269; – **न्तेहि** पु॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – रखवा रहे, विन्यस्त कर रहे – *नवङ्गं सत्थुसासनं तीहि पिटकेहि सङ्गण्हित्वा वाचनामग्गं आरोपेन्तेहि पुब्बाचरियेहि* ..., खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 5; – **पयतो** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तिलक्खणं आरोपयतो* ..., विसुद्धि॰ 2.258; – **पियन्ता** पु॰, वर्त॰ कृ॰, कर्म॰ वा॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, स्थापित कराए जा रहे – *सूलमारोपियन्ताव, पब्बतेनोत्थटा विय,* ना॰ रू॰ प॰ 1708; – **पियमानाय** स्त्री॰, वर्त॰ कृ॰, कर्म॰ वा॰, आत्मने॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपरो धम्मकथिको ... आपत्तिया आरोपियमानाय* ..., चूळव॰ अट्ठ॰ 43; – **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अज्झवादकं आरोपेतु, पतिट्ठापेतूति अत्थो,* पाचि॰ अट्ठ॰ 31; – **हि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *त्वं, गहपति, समणस्स गोतमस्स इमस्मिं कथावत्थुस्मिं वादं आरोपेहि,* म॰ नि॰ 2.43; – **न्तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, चढ़ जाएं – *आरोपेन्तु धजे तत्थ, चम्मानि कवचानि च,* जा॰ अट्ठ॰ 6.362; – **य्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, रूपान्तरित करें, पलटें – ... *यो आरोपेय्य, आपत्ति दुक्कटस्स,* चूळव॰ 260; – **य्यं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰, दोष निकालूं, खण्डन करूं – *अहं वा हि, गहपति, समणस्स गोतमस्स वादं आरोपेय्यं, दीघतपस्सी वा,* म॰ नि॰ 2.43; – **य्युं** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, उपरिवत् – *भिक्खुं पञ्हं वा पुच्छेय्युं वादं वा आरोपेय्युं* महानि॰ 366; – **सि¹** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, (प्रतिष्ठापित किया, बतलाया) – *विसमगतं देवदत्तं तथागतो समं आरोपेसि,* मि॰ प॰ 120; – **सि²** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *त्वं पन मं अनरियं मग्गं आरोचेसीति अधिप्पायो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.111; पाठा॰ आरोचेसि; – **सिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आरोपेसिं धजत्थम्भं, बुद्धसेट्ठस्स चेतिये,* अप॰ 1.173; – **पेसुं** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *एतेनेव उपायेन खन्धकपरिवारेपि आरोपेसुं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.12; – **पयि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *विहारं वेदिसगिरिं थेरं आरोपयी सुभं,* म॰ वं॰ 13.7; *आरोपयी ति पटिपादयि,* म॰ वं॰ टी॰ 283(ना॰); – **पयिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सुफुल्लपदुमं गय्ह, चितमारोपयिं अहं,* अप॰ 1.96; *आरोपयिं पूजेसिन्ति अत्थो,* अप॰ अट्ठ॰ 2.65; – **यिंसु** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तं सुसानं नेत्वा खदिरसूलं आरोपयिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 4.27; – **स्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, खण्डन करेगा, दोषमुक्त बताएगा – *अयं मे भिक्खु वेय्याकरणेन अनारद्धचित्तो वादं आरोपेस्सति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.293; – **स्सामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *गोतमस्स इमस्मिं कथावत्थुस्मिं वादं आरोपेस्सामि,* म॰ नि॰ 2.43; – **स्सन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तत्थ ये मालं वा गन्धं वा चुण्णकं वा आरोपेस्सन्ति,* दी॰ नि॰ 2.107; – **स्साम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *एवमस्स मयं वादं आरोपेस्साम,* म॰ नि॰ 1.237; – **तुं** निमि॰ कृ॰ – *अनुजानामि, भिक्खवे, अन्वाधिकम्पि आरोपेतुं,* महाव॰ 389; *आरोपेतुन्ति आगन्तुकपत्तम्पि दातुं,* महाव॰ अट्ठ॰ 386; *न युत्तं एतस्स दोसं आरोपेतुं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.272; *"यो मम वादं आरोपेतुं सक्कोति सो इमं साखं मद्दतू"ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.277; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰, **1.** खण्डन करके, अपाकृत करके – *उपज्झायस्स वादं आरोपेत्वा,* महाव॰ 67; **2.** लाद कर, चढ़ा कर, ऊपर चढ़ा कर, रख कर – ... *जानपदा मनुस्सा बहुं लोणम्पि ... सकटेसु आरोपेत्वा* .... महाव॰

296; **3.** रखवा कर, जलवाकर, ऊपर रखा कर – ... *तेलप्पदीपं आरोपेत्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु,* महाव. 302; *तेलप्पदीपं आरोपेत्वाति ... तेलप्पदीपं जालापेत्वाति अत्थो,* स. नि. अट्ठ. 3.86; **4.** चढ़वा कर, आरूढ़ करा कर, ऊपर में रखा कर – ... *पञ्चसु हत्थिनिकासतेसु पच्चेका इत्थियो आरोपेत्वा* ..., दी. नि. 1.44; – **त्वान** उपरिवत्, ऊपर चढ़वा कर – *आरोपेत्वान तं नावं,* चू. वं. 47.50; – **पेत्वा / पयित्वा / पयित्वान / पिय** उपरिवत् – ... *बलक्कारेन वा यानं आरोपेत्वा* ..., पे. व. अट्ठ. 100; *"काजे आरोपयित्वान, भोजपुत्ता हरिंसु मं",* चरिया. 393; *काजे आरोपयित्वानाति अट्ठसु ठानेसु विनिविज्झित्वा* ..., चरिया. अट्ठ. 163; *आरोपयित्वा निद्दोसं, भासं तन्तिनयानुगं,* ध. स. अट्ठ. 3; *नावं आरोपयित्वान राजानं तत्थ कुञ्जरो,* म. वं. 35.26; *खन्धे आरोपयित्वान,* अप. 1.383; *तस्सा फस्सेनातिरत्तो पिट्ठिं आरोपियासु तं,* म. वं. 6.8; – **तब्ब** त्रि., सं. कृ., – **ब्बो** पु., प्र. वि., ए. व. – *मोहो आरोपेतब्बो,* पाचि. 194; – **ब्बा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *मातिका आरोपेतब्बा,* महाव. अट्ठ. 399; – **ब्बं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *बुद्धवचनं छन्दसो आरोपेतब्बं,* चूळव. 260; – **ब्बानि** ब. व. – *मालागन्धादीनि ताव चेतिये आरोपेतब्बानि,* महाव. अट्ठ. 398; – **ब्बकं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *नारोपेतब्बकं बुद्धवचनं अञ्ञथा पन,* विन. वि. 2821; – **माना** स्त्री., कर्म. वा., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व., आरोपित की जा रही – *अनत्तमनताय अञ्ञतितिथियपुब्बतं आरोपयमाना,* स. नि. अट्ठ. 2.159; – **पियमानो** पु., प्र. वि., ए. व., लगाया जा रहा – *तस्मिं तथागते परेन आरोपियमानो दोसो न रुहति,* इति. अट्ठ. 246; – **नाय** स्त्री., ष. वि., ए. व. – *निवासेन्तानं आपत्तिया आरोपियमानाय "किं इमेसं आपत्तिं रोपेथ",* चूळव. अट्ठ. 43.

आरोह पु., आ + √रुह से व्यु. [आरोह], **क.** चढ़ाव, ऊंचाई, लम्बाई, उभार, दीर्घता – **हो** प्र. वि., ए. व. – *आयामो दीघतारोहो,* अभि. प. 295; – **हं** द्वि. वि., ए. व. – *आरोहं वा पस्सित्वा परिणाहं वा पस्सित्वा,* पु. प. 163; – **हेन** तृ. वि., ए. व. – *मा नं रूपेन पामेसि, आरोहेन पभावति,* जा. अट्ठ. 5.288; **ख.** चढ़ने वाला, सवार, घुड़सवार – **हो** प्र. वि., ए. व. – *आरोहो हिताहितविचारणरहितो राजवल्लभो,* बु. वं. अट्ठ. 240; *द्वेपादरक्खा आरोहो, एको तिपुरिसोहयो,* विन. वि. 1571; – **हा** ब. व. – *आरोहा पन चत्तारो, द्वे द्वे तंपादरक्खका,* विन. वि. 1570; – **हे** द्वि. वि., ब. व. – *गजे तुरङ्गे भिन्दित्वा आरोहे च निपातयुं,* चू. वं. 70.233; **ग.** वह, जिस पर चढ़ा जाए, ऊंची जगह, टीला, पहाड़ – *आरुय्हतीति आरोहो,* वि. व. अट्ठ. 27; स. उ. प. के रूप में, अस्सा., नागराजा., रथा., वण्णना., वरा., सुखा., स्वा., हत्था. के अन्त. द्रष्ट..

आरोहक पु., आरोह से व्यु. [आरोहक], सवारी करने वाला, सवार – **को** प्र. वि., ए. व. – *एको आरोहको,* पाचि. अट्ठ. 113; *दिस्वा ... अयं आरोहको मम,* म. वं. 23.71; – **नकं** द्वि. वि., ए. व. – *यानम्पि आरोहनकम्पि भञ्जति,* महानि. 106; पाठा. आरोहनक; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *आरोहकस्स वेकल्ला इत्थी मं लङ्घयी'ति,* म. वं. 24.37; – **का** प्र. वि., ब. व. – *चत्तारो आरोहका,* पाचि. अट्ठ. 113.

आरोहकम्बु त्रि., ब. स., **1.** उन्नत अथवा उठी हुई गर्दन वाला, **2.** ऊंचाई के अनुरूप विशाल – **म्बू** पु., प्र. वि., ब. व. – *आरोहकम्बू सुजवा ब्रहूपमा,* वि. व. 1021; *आरोहकम्बूति उच्चा चेव तदनुरूपपरिणाहा च, आरोहपरिणाहसम्पन्नाति अत्थो,* वि. व. अट्ठ. 233.

आरोहण / आरोहन नपुं., आ + √रुह से व्यु., क्रि. ना. [आरोहण], **1.** ऊपर की ओर उठना, सवार होना, ऊपर चढ़ना, **2.** घोड़े की सवारी करना, **3.** सीढ़ी, जीना – **णं**[1] प्र. वि., ए. व. – *सोपानोवारोहणं च निस्सेणी साधिरोहणी,* अभि. प. 216; *मूलेहि ओजाय आरोहनं विय,* स. नि. अट्ठ. 2.74; – **नं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *ततो निस्सेणितो पपतति, न आरोहनं सम्पादेति,* खु. पा. अट्ठ. 53; – **णाय** च. वि., ए. व. – *निस्सेणिं करेय्य पासादस्स आरोहणाय,* दी. नि. 1.172; – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *आरोहने महानिधि, अथो ओरोहने निधि,* जा. अट्ठ. 6.45; *आरोहने निधीति मङ्गलहत्थिं आरोहनकाले सुवण्णनिस्सेणिया अत्थरणट्ठानतो निधिं नीहरापेसि,* जा. अट्ठ. 6.49; – **कण्ड** पु., तत्पु. स., ऊपर को जा रहा अथवा उड़ रहा बाण – **ण्डेन** तृ. वि., ए. व. – *किं, महाराज, एतं अम्बपिण्डिं उद्धं आरोहनकण्डेन पातेमि, उदाहु अधो आरोहनकण्डेना'ति,* जा. अट्ठ. 2.73; – **काल** पु., तत्पु. स. [आरोहणकाल], ऊपर की आरे उठने का काल – **लो** प्र. वि., ए. व. – *महापथविया ... आरोहनकालो,* जा. अट्ठ. 1.80; – **ले** सप्त. वि., ए. व. – *सो तस्सा आरोहनकाले अत्तनो आनुभावेन वातपुण्णभस्तचम्मं ... पहरापेसि,* जा. अट्ठ. 6.39; – **किच्च** नपुं., तत्पु. स. [आरोहणकृत्य], ऊपर

चढ़ने का काम अथवा उपयोगिता – **च्चं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुप्फिते पारिच्छत्तके आरोहणकिच्चं ... नत्थि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.217; – **निस्सेणि** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आरोहणनिःश्रयणी/निःश्रेणि], ऊपर जाने हेतु प्रयुक्त सीढ़ी – **णि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरोहणनिस्सेणि सतसहस्सं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.237; – **सज्ज** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, चढ़े जाने हेतु सज धज कर तैयार – **ज्जो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रथो कुमारं पदक्खिणं कत्वा आरोहनसज्जो हुत्वा अट्ठासि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.166; – **ज्जं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रथं निवत्तेत्वा सीहपञ्जरउम्मारे पच्छाभागेन ठपेत्वा आरोहणसज्जं कत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 6.125; – **ज्जानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरोहणसज्जानि कारेत्वा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.123.

आरोहणीय त्रि॰, आ + √रुह का सं॰ कृ॰ [आरोहणीय], सवारी करने योग्य, चढ़ने योग्य, आरोहण के लिए उपयुक्त – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुञ्जरो ... आरोहनीयोति अत्थो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 26-27; – **यं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अजातसत्तु ... आरोहणीयं नागं अभिरुहित्वा,* दी॰ नि॰ 1.44; *आरोहणीयन्ति आरोहणयोग्गं, ओपगुय्हन्ति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.123; – **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *स्वारोहे ति सुखेन आरोहणीये,* म॰ वं॰ टी॰ 353(ना॰); – **रथ** पु॰, कर्म॰ स॰ [आरोहणीयरथ], चढ़ने योग्य रथ, सवार होने योग्य रथ – **था** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *राजूनं अरोहनीयरथा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.478; – **हत्थी** पु॰, कर्म॰ स॰, शाही हाथी, राजा की सवारी वाला हाथी, राजकीय सवारी – **त्थी** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बोधिसत्तेन हि सद्धिं ... राहुलमाता चतस्सो निधिकुम्भियो आरोहनियहत्थी कण्डको छन्नो कालुदायीति ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.229.

आरोहता स्त्री॰, आरोह का भाव॰, ऊपर की ओर रहने अथवा ऊपर की ओर चढ़ने की स्थिति, द्रष्ट॰ सुखा॰ के अन्त॰(आगे).

आरोहति आ + √रुह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आरोहति], **शा॰ अ॰**, आरोहण करता है, ऊपर की ओर उठता है, उगता है, ऊपर सवार होता है – *पण्णलोणि रुक्खे च गच्छे च आरोहति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 91; *ठितिका उद्धं आरोहति,* महाव॰ अट्ठ॰ 396; – **न्ति** ब॰ व॰ – *कण्टकावाटम्पि आरोहन्ति, सुत्तम्पि गाविं आरोहन्ति,* म॰ नि॰ 2.121; – **न्त** त्रि॰, वर्त॰ कृ॰ – **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पासादा ओतरन्तो च आरोहन्तो च,* जा॰ अट्ठ॰ 2.202; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गिज्झकूटं पब्बतं आरोहन्तस्स कायकिलमथो,* स॰ नि॰ 3(1).149; – **न्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरोहन्ता विहञ्अन्ति ... परिपतन्ति,* चूळव॰ 235; – **तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आरोहतु मिस्सकनगं जेट्ठमासस्सुपोसथे,* म॰ वं॰ 13.14; – **ह** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आरोह वरपासादं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.174; – **थ** ब॰ व॰ – *आरोहथ रथं, याम नगरं इति ते ब्रवि,* म॰ वं॰ 14.42; – **हेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सहायको उपरिपब्बतं आरोहेय्य,* म॰ नि॰ 3.172; – **हिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *इदं कण्डं दूरं आरोहिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.73; – **हिस्साम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सयनं आरुहिस्सामा'ति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.373; – **हितुं** निमि॰ कृ॰ – *जानामि रुक्खं आरोहितुं,* म॰ नि॰ 2.32; – **हित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *रुक्खं आरोहित्वा,* म॰ नि॰ 2.32; – **मानं** वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदं कण्डं पन आरोहमानं अम्बपिण्डिवण्टं यावमज्झं कन्तमानं आरोहिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.73.

आरोहन्त पु॰, व्य॰ सं॰, एक प्रमुख महामन्त्री का नाम – **न्तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरोहन्तो नाम महामत्तो भिक्खूसु पब्बजितो होति,* पाचि॰ 358.

आरोहपरिणाह पु॰, द्व॰ स॰ [बौ॰ सं॰, आरोहपरिणाह], लम्बाई एवं चौड़ाई, ऊंचाई एवं परिधि अथवा विस्तार – **हेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथापि, भन्ते, काळपक्खे चन्दस्स या रत्ति वा दिवसो वा आगच्छति, ... हायति आरोहपरिणाहेन, ... वड्ढति,* स॰ नि॰ 1(2).183-84; *आरोहपरिणाहेनाति दीघपुथुलत्तेन,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.288; – **स्मिं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदमस्स आरोहपरिणाहस्मिं वदामि,* अ॰ नि॰ 1(1).324-25; *आरोहपरिणाहस्मिन्ति अयमस्स उच्चभावो परिमण्डलभावोति वदामीति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.235; – **वन्तु** त्रि॰, [आरोहपरिणाहवत], लम्बाई एवं चौड़ाई वाला, ऊंचाई के अनुरूप परिधि या परिमण्डल से युक्त – **वा** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अङ्गपच्चङ्गसम्पन्नो आरोहपरिणाहवा विसट्ठवचनो पञ्ञो, मग्गो सग्गस्स तिट्ठति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.24; – **वती** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महासरीरा आरोहपरिणाहवती,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.294; – **सण्ठानपरिपूरिसम्पन्न** त्रि॰, ऊंचाई, चौड़ाई एवं शारीरिक बनावट की पूर्णता से युक्त, सन्तुलित कद काठी वाला, सुगठित आकार प्रकार वाला – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरोहपरिणाहसण्ठानपारिपूरिसम्पन्नो द्वत्तिंसवरलक्खणानुब्यञ्जनसमलङ्कतसरीरो ... भगवा,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 147; – **सम्पत्तिता** स्त्री॰, भाव॰, सुगठित एवं उचित अनुपात वाले आकार प्रकार से सम्पन्न होना – **ता**

प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अङ्गपच्चङ्गसम्पन्नता आरोहपरिणाहसम्पत्तिता,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 23; – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरोहपरिणाहसम्पत्तिया सण्ठानसम्पत्तिया च सुनिब्बत्तो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.283; – **सम्पन्न** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आरोहपरिणाहसम्पन्न], सन्तुलित लम्बाई चौड़ाई वाला, लम्बाई एवं चौड़ाई में सुसन्तुलन को प्राप्त – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकच्चो अस्सखलुङ्को जवसम्पन्नो च होति, न वण्णसम्पन्नो, च, न आरोहपरिणाहसम्पन्नो,* अ॰ नि॰ 1(1).323; – **न्नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरोहपरिणाहसम्पन्नं अभिरूपं एकं पुरिसं फलकं कत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.340; – **न्ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *उच्चा चेव तदनुरूपपरिणाहा च, आरोहपरिणाहसम्पन्नाति अत्थो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 233; – **न्ने** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *धुरवाहे, भन्ते, आरोहपरिणाहसम्पन्ने महागोणेयुगपरम्पराय अयोजेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.322.

आरोहपरिणाही त्रि॰, ऊंचाई (लम्बाई) एवं चौड़ाई (परिमण्डल) के उचित सन्तुलन से युक्त, भव्य आकार-प्रकार या सुगठित डील-डौल वाला – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *गोकण्णा सरभा रुरू, आरोहपरिणाहिनो, सुरूपा अङ्गसम्पन्ना,* अप॰ अट्ठ॰ 2.257.

आरोहपुत्त पु॰, व्य॰ सं॰, एक स्थविर का नाम – **तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरोहपुत्तो मेण्डसिरो, रक्खितो उग्गसव्हयोति,* थेरगा॰ (पृ॰) 178.

आरोहमद पु॰, तत्पु॰ स॰ [आरोहमद], ऊंचे या लम्बे होने का घमण्ड, "मैं दूसरों की तुलना में अधिक ऊंचाई वाला हूं" इस सोच से उत्पन्न अहंकार – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जातिमदो ... आरोहमदो ... वितक्को,* विभ॰ 395-96; *अहं पन दीघो'ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो आरोहमदो नाम,* विभ॰ अट्ठ॰ 442.

आरोहसम्पत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आरोहसम्प्राप्ति], ऊंचाई अथवा लम्बाई की सम्पदा, ऊंचाई अथवा लम्बाई की प्राप्ति – **त्ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चस्सा पठमयुगळेन आरोहसम्पत्ति, दुतिययुगळेन परिणाहसम्पत्ति, ततिययुगळेन वण्णसम्पत्ति वुत्ता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.195; – **या** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमिना आरोहसम्पत्तिया अभावं दस्सेति,* उदा॰ अट्ठ॰ 299.

आरोहसम्पन्न त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आरोहसम्पन्न], ऊंचाई तक पहुंच चुका, अत्यधिक महानता को प्राप्त, अत्यन्त बलवान् – **न्नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिवड्ढितो आरोहसम्पन्नो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.92; – **न्नं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'हत्थिमेव नु खो', 'भन्ते'तिआदिवचनं अवोच, तत्थ महन्तन्ति आरोहसम्पन्नं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.113.

आलपति आ + √लप का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आलपति], बोलता है, बातें करता है, सम्बोधित करता है, चायं चायं करता है, कह कर पुकारता है, आमन्त्रित करता है, आह्वान करता है – *नामेन मं भगवा आलपतीति,* चूळव॰ 284; *संसुमारं आलपति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.114; – **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तपसा अभिभुय्य मम पुत्तं ब्रह्मदत्तं नामेनालपसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.399; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तं किर सिरिकण्हो'तिपि अव्हयन्ति आमन्तेन्ति, आलपन्तीति वुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.187; – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं आलपन्तो आह – सरणं तं उपेम चक्खुमा'ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.35; – **न्ता** ब॰ व॰ – *बुद्धा भगवन्तो सावके आलपन्ता भिक्खवेति आलपन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).107; – **न्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दारकं नेव ओलोकेन्तं नापि आलपन्तं,* उदा॰ 75; – **न्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'अनालापो आनन्दा'ति, आलपन्तेन पन, ... पटिपज्जितब्ब'न्ति,* दी॰ नि॰ 2.106; – **न्ती** वर्त॰ कृ॰, स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मातरं परम्मुखालपनेन आलपन्ती आह,* जा॰ अट्ठ॰ 7.328; – **पेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सचे मं नागनासूरू, आलपेय्य पभावती,* जा॰ अट्ठ॰ 5.287; *आलपेय्या'तिआदीसुपि एसेव नयो,* तदे॰; – **पेय्याम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अञ्ञमञ्ञं नेव आलपेय्याम न सल्लपेय्याम,* महाव॰ 209; – **पि / पी** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तं दिस्वा आलपी राजा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.248; *आलपीति "सट्ठि गामसहस्सानी"ति आदीनि वदन्तो आलपि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.251; – **पित्थ** आत्मने॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सो च तं पच्चासन्तो कथेसि, तस्स तुवं न किञ्चि आलपित्थ,* पे॰ व॰ 742; – **पिंसु** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *भिक्खू अञ्ञमञ्ञं नेव आलपिंसु, न सल्लपिंसु,* महाव॰ 209; – **पिम्हा** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *अञ्ञमञ्ञं नेव आलपिम्हा न सल्लपिम्हा,* महाव॰ 211; – **पिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सचे मं समणो गोतमो आलपिस्सति, अहम्पि तं आलपिस्सामि,* स॰ नि॰ 1(1).207; *कुलदत्तिकनामेन मं आलपिस्सती'ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.276; – **पिस्सामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सचे मं समणो गोतमो आलपिस्सति, अहम्पि तं आलपिस्सामि,* स॰ नि॰ 1(1).207; – **पिस्सन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *समणा ... वुच्चमाना नालपिस्सन्ती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.13; – **पित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *"भिक्खु भिक्खू"ति आलपित्वा अयं वम्मिकोतिआदिमाह,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).32; – **पितुकाम** त्रि॰, बोलने की इच्छा वाला – **मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलपितुकामो आलपति,* कथाव॰ 339.

आलपन नपुं॰, आ + √लप से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आलपन], **क.** सम्बोधन, पुकारना, पुकारने अथवा सम्बोधित करने का तरीका, सामने किसी को सम्बोधित कर के, हे, ओ, रे, अरे आदि शब्दों का कथन – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰; *भिक्खवेति येसं कथेतुकामो, तदालपनं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.112 – *अभिमुखं कत्वा लपनं आलपनं,* क॰ व्या॰ 287 पर क॰ न्या॰; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुग्गलालपने चेव धम्मस्सालपने पि च निज्जीवालपने चा ति भोसद्दो तीसु दिस्सति,* सद्द॰ 1.171; **ख. व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में,** सम्बोधन कारक, – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलपने च,* क॰ व्या॰ 287; – **नाधिवचन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, किसी को पुकारने अथवा सम्बोधित करने के अर्थ का सूचक कथन – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्भो पुरिसाति आलपनाधिवचनमेतं,* पारा॰ 87.

आलपना स्त्री॰, आ + √लप से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आलपन], पुकारना, सम्बोधित करके कहना, फुसलाना, चापलूसी की बातें करना, दूसरों को ठगने अथवा अपने महत्व को उनके मन में बैठाने हेतु की गई चिकनी-चुपड़ी बात – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलपना लपना सल्लपना उल्लपना समुल्लपना उन्नहना समुन्नहना उक्काचना समुक्काचना अनुप्पियभाणिता चाटुकम्यता मुग्गसूप्यता पारिभट्यता,* विभ॰ 404; *आलपनाति विहारं आगतमनुस्से दिस्वा किमत्थाय भोन्तो आगता? ..., भिक्खू गहेत्वा आगच्छामी ति एवं आदितोव लपना अथ वा ... अत्तुपनायिका लपना आलपना,* विभ॰ अट्ठ॰ 455.

आलपित त्रि॰, आ + √लप का भू॰ क॰ कृ॰ [आलपित], पुकारा गया, सम्बोधित किया गया, कहा जा चुका, कथित – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सन्दिट्ठो च होति, सम्भत्तो च, आलपितो च, जीवति च, जानाति च गहिते मे अत्तमनो भविस्सतीति,* महाव॰ 387-88; *बुद्धेहि च आलपितो भिक्खुसङ्घो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.206; – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बकामजहस्स भिक्खुनोति कामा आलपिता,* पेटको॰ 235; – **ते** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बुद्धेहि च आलपिते भिक्खुसङ्घो "भन्ते"ति पटिवचनं देति सावकेहि "आवुसो"ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.206.

आलम्पान/आलम्पायन पु॰, आलम्बान/आलम्बान के स्थान पर अप॰, 1. सवेरे का मन्त्र, 2. इस मन्त्र का ज्ञाता एक ब्राह्मण, सपेरा, 3. दिव्य औषधियों का शरीर पर लेप करने वाला सपेरा – **नो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *संसितो अकतञ्ञुना, आलम्पायनो ममग्गहि,* चरिया॰ 2.2.5 (पृ॰ 386); *आलम्पायनोति अलम्पायनविज्जापरिजप्पनेन "अलम्पायनो" ... एवं लद्धनामो अहितुण्डिकब्राह्मणो,* चरिया॰ अट्ठ॰ 117; – *आलम्पायनोपि दिब्बोसधेहि अत्तनो सरीरं मक्खेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.29; **मन्त** पु॰, सर्पों के विष का शमन करने वाला आलम्पायन नामक मन्त्र – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहञ्चेकं अलम्पायनमन्तं जानामि,* जा॰ अट्ठ॰ 7.21.

आलम्ब[1] पु॰, [आलम्ब], 1. वह, जो किसी का आलम्बन लेकर लटका हुआ हो, लता, परोपजीवी पादप, स॰ प॰ के रूप में, – *सम्पफुल्ललतालम्बमनुञ्ञागिन्दमण्डिता,* सद्धम्मो॰ 245; 2. सहारा, आधार, अवलम्बन, स॰ पू॰ प॰ में, – **दण्ड** पु॰, सहारा देने हेतु गृहीत दण्ड या छड़ी – **ण्डं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलम्बदण्डं दत्वान, पक्कामिं उत्तरामुखो,* अप॰ 2.103; 3. दार्शनिक सन्दर्भ में, विषय, इन्द्रियों अथवा चित्त द्वारा ग्राह्य रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्पृष्टव्य एवं धर्म, ध्यानभावना का कर्मस्थान (कम्मट्ठान) या आलम्बन – **म्बो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलम्बो विसयो तेजारम्मणालम्बनानि च,* अभि॰ प॰ 94; – **म्बा** ब॰ व॰ – *तदेवालम्बभेदेन अरूपज्झानसम्मतं, आकासो चेव विञ्ञाणं तदभावो च तग्गतं, चित्तमरूपज्झानस्स आलम्बा चतुरो मता,* सद्धम्मो॰ 463-64; स॰ उ॰ प॰ में, **पञ्चा॰**- पांच आलम्बन – *पञ्चद्वारे वत्तमानं पञ्चालम्बं यथाक्कमं,* ना॰ रू॰ प॰ 239; – **म्बत्थिकता** स्त्री॰, आलम्बनों पर निर्भरता, आलम्बन-सापेक्षता – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलम्बत्थिकता छन्दो,* ना॰ रू॰ प॰ 85; – **गिज्झनरस** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसकी मूलभूत विशेषता, आलम्बन-विषयक लोभ हो – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *लोभो अपरिच्चागलक्खणो, आलम्बगिज्झनरसो ...,* ना॰ रू॰ प॰ 106; – **बाहननरस** त्रि॰, ब॰ स॰, वह जिसकी आधार-भूत विशेषता आलम्बनों के साथ टकराहट हो – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलम्बाहननरसो सन्निरुज्झोति गय्हति,* ना॰ रू॰ परि॰ 81.

आलम्ब[2] पु॰, व्य॰ सं॰, 1. एक प्राचीन वाद्य का नाम, तुरही, एक प्रकार का तूर्य वाद्य, 2. तूर्यवादक देवपुत्रों का नाम – **म्बो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलम्बो गग्गरो भीमो,* वि॰ व॰ 166; *आलम्बोतिआदि तूरियवादकानं देवपुत्तानं एकदेसतो नामग्गहणन्ति वदन्ति, तूरियानं पनेतं नामग्गहणं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 77.

आलम्बगामवापी स्त्री., श्रीलङ्का में स्थित आलम्बगाम-नामक गांव की बावली, बौली या जलाशय – **पिं** द्वि॰ वि., ए॰ व॰ – *आलम्बगामवापिं सो जेट्ठतिस्सो अकारयि,* म॰ वं॰ 36.131.

आलम्बण नपुं., आलम्बन का ही रूपान्तरण [बौ॰ सं॰ आलम्बन, आरम्मण], रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्पृष्टव्य एवं धर्म, इन्द्रियों एवं चित्त द्वारा ग्राह्य छ विषय, ध्यानप्रक्रिया में चित्त के आलम्बन के रूप में निर्धारित चालीस कर्मस्थानों में कोई एक, – **णं** प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *आरम्मणं आलम्बणं निस्सयं, चूळनि॰ 91; आलम्बणं मया दिन्नं* अप॰ 1.223; स॰ उ॰ प॰ में, **छा॰**- छ प्रकार का आलम्बन – **णं** प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *छालम्बणं मनोद्वारे,* ना॰ रू॰ परि॰ 239; स॰ पू॰ प॰ के रूप में, – **दायकत्थेरअपदान** नपुं., अप॰ के एक खण्ड का शीर्षक, अप॰ 1.223; – **भूत** त्रि., किसी (इन्द्रिय अथवा चित्त) के लिए आलम्बन या विषय बना दिया गया – **तेसु** पु॰, सप्त॰ वि., ब॰ व॰ – *तथा कामावचरजवनावसाने ... कामावचरधम्मेस्वेव आरम्मणभूतेसु तदारम्मणं इच्छन्तीति,* अभि॰ ध॰ स॰ 28; – **मन** त्रि., ब॰ स॰, आलम्बन से जुड़े हुए मन वाला – **नं** नपुं., प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *आलम्बणमनं चित्तं,* ना॰ रु॰ परि॰ 73; – **समोधान** त्रि., ब॰ स॰, आलम्बन के साथ जुड़ाव रखने वाला, आलम्बन की सहवर्तिता से युक्त – **नो** पु., प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *आलम्बणसमोधानो, फस्सो फुसनलक्खणो,* ना॰ रू॰ प॰ 74; – **रस** त्रि., ब॰ स॰, वह जिसके लिए आलम्बन ही सारभूत तत्त्व हो – **सा** स्त्री., प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *वेदनालम्बणरसा,* ना॰ रू॰ प॰ 75.

आलम्बति आ + √लम्ब का वर्त., प्र॰ पु., ए॰ व॰ [आलम्बते], लटकता है, सहारा या आश्रय लेता है, अधीन रहता है, निर्भर होता है, आधारित रहता है, दृढ़ता के साथ किसी के साथ लटक जाता है अथवा सट जाता है, चढ़ता है, आरोहण करता है – *नीचे चोलम्बते सुरियो, आलम्बति आलम्बनं तदालम्बनं ... वा,* सद्द॰ 2.406-07; – **न्तु** अनु., प्र॰ पु., ब॰ व॰ – *सब्बेव ते आलम्बन्तु विमानं,* वि॰ व॰ 1275; *आलम्बन्तूति आरोहन्तु,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 296; – **म्बिंसु** अद्य., प्र॰ पु., ब॰ व॰ – *सब्बेव ते आलम्बिंसु विमानं,* वि॰ व॰ 1276; ... *आरुहिंसु,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 297; – **म्बित्वा / त्वान** पू॰ का॰ कृ॰ – *इध ... आलम्बित्वा उत्तरतूति,* महाव॰ 34; *ओरिमा पन तीरम्हा आलम्बित्वान रज्जुकं,* अभि॰ अव॰ 597.

आलम्बन नपुं., आ + √लम्ब से व्यु., क्रि॰ ना॰ [आलम्बन], **शा॰ अ॰,** सहारा, आश्रय, आधार, **ला॰ अ॰, 1.** थूनी, टेक, छड़ी – **नं** द्वि॰ वि., ए॰ व॰ – *आलम्बनं करित्वान, सङ्घस्स अददं अहं,* अप॰ 1.309; *हेट्ठा पतिट्ठाभावेन उपरि आलम्बनाभावेन च गम्भीरो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.183; **ला॰ अ॰, 2.** त्रि., सहारा या आश्रय देने वाला – **नो** पु., प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *सो तुम्हाकं उपट्ठाको भविस्सति आलम्बनो चा'ति,* मि॰ प॰ 130; – **त्थम्भ** पु., तत्पु॰ स॰ [आलम्बनस्तम्भ], चंक्रमण पथ के अन्त में टिकने अथवा सहारा लेने हेतु गाड़ा गया लकड़ी का खम्भा – **म्भं** द्वि॰ वि., ए॰ व॰ – *भिक्खु चङ्कमे चङ्कमभानो वा आलम्बनत्थम्भं निस्साय ठितो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.77; – **दण्ड** पु., तत्पु॰ स॰ [आलम्बनदण्ड], सहारा देने वाली छड़ी या बेंत – **स्मिं** सप्त॰ वि., ए॰ व॰ – *अथालम्बनदण्डस्मिं कत्तरयट्ठि नारियं,* अभि॰ प॰ 443; – **नङ्गल** नपुं., तत्पु॰ स॰, फसल बोने से सम्बद्ध उत्सव के अवसर पर राजा द्वारा प्रयुक्त हल, सहारा देने वाला हल – **लं** प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *रञ्ञो आलम्बननङ्गलं पन रत्तसुवण्णपरिक्खतं होति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.67; – **फलक** नपुं., तत्पु॰ स॰, चंक्रमण करते हुए बीच में विश्राम लेने हेतु सहारा देने वाला काष्ठ–फलक या लकड़ी का तख्ता – **कं** प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *चङ्कमे अपस्साय तिट्ठन्तस्स आलम्बनरुक्खो वा आलम्बनफलकं वा सब्बम्पेतं अपस्सयनीयट्ठेन अपस्सेन नाम,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.51; – **बाहा** स्त्री., तत्पु॰ स॰, सीढ़ियों का जंगला, सीढ़ियों के दोनों ओर बनाया गया घेरा – **हं** द्वि॰ वि., ए॰ व॰ – *आरोहन्ता परिपतन्ति ... अनुजानामि, भिक्खवे, आलम्बनबाह'न्ति,* चूळव॰ 235; – **रज्जु** स्त्री., तत्पु॰ स॰, सहारा देने वाली रस्सी, सहारा के रूप में पकड़ी गई रस्सी – **ज्जुं** द्वि॰ वि., ए॰ व॰ – *"इमं आलम्बित्वा परिवत्तेय्यासी'ति आलम्बनरज्जुं बन्धेय्युं",* जा॰ अट्ठ॰ 3.350; – **रुक्ख** पु., तत्पु॰ स॰ [आलम्बनवृक्ष], चंक्रमण करते हुए बीच बीच में विश्राम हेतु चंक्रमण पथ के अन्त में स्थित सहारा देने वाला वृक्ष – **क्खो** प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *चङ्कमे अपस्साय तिट्ठन्तस्स आलम्बनरुक्खो वा आलम्बनफलकं वा ... अपस्सेनं नाम,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.51.

आळम्बर[1] / आलम्बर पु., [आडम्बर], **1.** युद्ध भेरी, नगाड़ा, **2.** नगाड़ों का कोलाहल, शोर-शराबा – **रो** प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *आळम्बरो च पणवो,* अभि॰ प॰ 144; *आळम्बरो तु सारम्भे भेरिभेदे च दिस्सति,* अभि॰ प॰ 854; – **रा** ब॰ व॰ –

आळम्बरा मुदिङ्गा च, नच्चगीता सुवादिता, जा. अट्ठ. 6.143; स. उ. प. में, **मुरजा.-** नपुं., मुरज एवं नगाड़े, प्र. वि., ब. व. – *पाणिस्सरा मुदिङ्गा च, मुरजालम्बरानि च,* जा. अट्ठ. 5.387; स. पू. प. में – **मेघ** पु., बादलों की गरज – **घो** प्र. वि., ए. व. – *'आलम्बरमेघो विय थनती'ति तं सन्धाय वदन्ति,* जा. अट्ठ. 2.285.

आलम्बर[2] पु., व्य. सं., असुरों द्वारा निर्मित एक नगाड़े या भेरी का नाम – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *समुद्दं पन पविट्ठं असुरा गहेत्वा आलम्बरं नाम भेरिं कारेसुं,* जा. अट्ठ. 2.285.

आलम्बितब्बट्ठानरहित त्रि., तत्पु. स., आश्रयदायक स्थान से रहित, निराधार स्थान – **ते** नपुं., सप्त. वि., ए. व. – *अनालम्बेति आलम्बितब्बट्ठानरहिते,* जा. अट्ठ. 5.68.

आलम्बीयति आ + √लम्ब का कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व., आलम्बन ग्रहण किया जाता है, आश्रय या सहारा लिया जाता है – *आलम्बीयती ति विञ्ञाणञ्चन्ति,* सद्द. 3.765.

आलय पु./नपुं., आ + √ली से व्यु. [आलय], घर, आश्रय, राग, लगाव आदि विविध अर्थों में प्रयुक्त, – *लि सिलेसने, अल्लीयन्ति एत्थाति आलयो,* रूप. 232(रो.); ... *लोभो रागो च आलयो,* अभि. प. 163; *अल्लीयन्ति रञ्जन्ति एत्थाति आलयो,* अभि. प. 205 की सूची; *जिनालयो देवालयो, इच्चादिसु घरे,* अभि. प. 1097 पर सूची; **1.क.** घर, वासस्थान, कोई भी निर्माण किया गया ढांचा, निवास-स्थल, विश्राम-स्थल, आवास – **ये** सप्त. वि., ए. व. – *तेसं आलये रति नाम नत्थि, ... कञ्चि आलयं,* ध. प. अट्ठ. 1.343; – **यो** प्र. वि., ए. व. – *ओकं वुच्चति आलयो, अनोकं वुच्चति अनालयो, आलयतो निक्खमित्वा अनालयसङ्खातं निब्बानं पटिच्च ...,* ध. प. अट्ठ. 1.338; – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *बहुभेरवं रतनगणानमालयं,* स. नि. 3.463; आलयन्ति निवासट्ठानं; **1.ख.** आश्रय-स्थल, शरण ग्रहण का स्थान, घोसला, नीड, आसन, जगह – **यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *बहुदुक्खानमालयो,* थेरीगा. 270; *बहुदुक्खानमालयोति जरादिहेतुकानं बहूनं दुक्खानं आलयभूतो,* थेरीगा. अट्ठ. 236; – **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *यदा बलाका ... पलेहिति आलयमालयेसिनी,* थेरगा. 307; *आलयन्ति निलयं अत्तनो कुलावकं, आलयेसिनीति तत्थ आलयन निलीयनमेव इच्छन्ती,* थेरगा. अट्ठ. 2.27; – **या** प्र. वि., ब. व. – *एत्थ ओकमोकतोति उदकसङ्खाता आलयाति अयमत्थो,* ध. प. अट्ठ. 1.164; **1.ग.** विषय, आलम्बन, क्षेत्र, क्रियाकलाप का स्थल, गोचर – *बुद्धापि बुद्धे पुच्छन्ति, विसयं सब्बञ्ञुमालयं,* अप. 1.4; **2.क.** आसक्ति लिप्तता, लगाव, प्रवृत्ति, अनुकूलता, पक्षपात, अभिरुचि – **यो** प्र. वि., ए. व. – *'नत्थि ..., गिहिभावाय आलयो'ति,* ध. प. अट्ठ. 1.70; – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *खन्धेसु आलयं पहाय,* ध. प. अट्ठ. 2.316; – **ये** सप्त. वि., ए. व. – *राजकुमारेन पिण्डम्हि आलये दस्सिते,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.222; **2.ख.** स्नेह, राग, प्रेम, तृष्णा, लोभ, सांसारिक विषयभोगों अथवा कामसुखों के प्रति सुदृढ़ लगाव – **यो** प्र. वि., ए. व. – *अभिज्झा वनथो वानं लोभो रागो च आलयो,* अभि. प. 162; – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *सत्ता हि नाम पियभरियासु विय सेसेसु आलयं न करोन्ति,* जा. अट्ठ. 6.288; *सा ... कनिट्ठम्हि आलयं विस्सज्जि,* विसुद्धि. 2.281; – **यानि** द्वि. वि., ब. व. – *छेत्वा आसवानि आलयानि,* सु. नि. 540; *द्वे च आलयानि पञ्ञासत्थेन छेत्वा,* सु. नि. अट्ठ. 2.141; स. उ. प. के रूप में, **सा.-** रागयुक्त, तृष्णायुक्त, आसक्तियुक्त – **या** पु., प्र. वि., ब. व. – *जीविते सालया निवत्तन्तु, निरालया इमं पब्बतं अभिरुहन्तू'ति,* उदा. अट्ठ. 64; स. पू. प. के रूप में, – **वसेन** तृ. वि., क्रि. वि., राग अथवा आसक्ति के कारण – *आलयवसेन भरियं कुलावकं कत्वा,* स. नि. अट्ठ. 1.35; **2.ग.** वर्षावास के विषय में निर्णय लेने के साथ उत्पन्न चिन्तन अथवा चित्तोत्पाद – **यो** प्र. वि., ए. व. – *आलयो नाम 'इध वस्सं वसिस्सामी'ति चित्तुप्पादमत्तं,* महाव. अट्ठ. 334; *तम्पि अलभन्तेन आलयो कातब्बो,* तदे.; – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *आलयं करोति,* चूळव. अट्ठ. 75; *आलयं वा कत्वा,* तदे., **3.** बहाना, वञ्चना, धोखा, ठगी, छल-छद्म, चाल, भुलावा, छिपाव, ढोंग – **ये** द्वि. वि., ब. व. – *रजस्स किर सो भीतो, अकरा आलये बहू,* जा. अट्ठ. 6.24; *अकरा आलये बहूति तुम्हाकं वञ्चनानि बहूनि अकासि,* जा. अट्ठ. 6.25; स. उ. प. में, **उम्मत्तका.-** पागल होने का बहाना – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *सो अनुम्मत्तको उम्मत्तकालयं करोति,* चूळव. 186; **गब्भिनि.-** गर्भवती होने का झूठा बहाना – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *'गब्भिनिआलयं कत्वा एते वञ्चेस्सामी'ति,* जा. अट्ठ. 4.34; **गिलाना.** – बीमार होने का बहाना – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *गिलानालयं कत्वा निपज्जि,* जा. अट्ठ. 1.281; **सुगता.-** बुद्ध होने का बहाना, बुद्ध जैसी लीला या छद्मभाव – **स्स** ष. वि., ए.

व॰ – *देवदत्तस्स ... सुगतालयस्स दस्सितभावं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.468; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *"बुद्धलीलं करिस्सामी"ति सुगतालयं दस्सेन्तो ...,* तदे॰.

आलयति आलय का ना॰ धा॰, प्रायः अल्लीयति का स्थाना॰ अथवा उसी का अप॰ [आलीयते], आसक्तियुक्त होता है, आलीन होता है, राग अथवा लगाव से युक्त हो जाता है – **न्ति** ब॰ व॰ – *अल्लीयन्ति केळायन्ति धनायन्ति ममायन्ति,* स॰ नि॰ 2(1).175; *आलयन्ति सत्ता एतेनाति आलयो, तण्हा,* चरिया॰ अट्ठ॰ 125; *आलयरामाति सत्ता पञ्चसु कामगुणेसु अल्लीयन्ति तस्मा ते आलयाति वुच्चन्ति अट्ठसततण्हाविचरितानि आलयन्ति, तस्मा आलयाति वुच्चन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).78.

आलयपटिपक्ख त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आलयप्रतिपक्ष], राग अथवा आसक्ति का प्रतिपक्ष, कामभोगों के सुख का विरोधी – **क्खे** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अनालये धम्मेति आलयपटिपक्खे विवट्टूपनिस्सिते,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.330.

आलयरत त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आलयरत], आसक्तियों अथवा विषयभोगों में पूरी तरह से डूबी हुई – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलयरामा खो पनायं पजा आलयरता आलयसम्मुदिता,* महाव॰ 5; *आलयरामा आलयेसु रताति आलयरता,* महाव॰ अट्ठ॰ 233; – **ताय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलयरामाय ... आलयरताय आलयसम्मुदिताय ... दुद्दसं इदं ठानं ...,* महाव॰ 5.

आलयराम / आलयाराम त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आलयाराम], आसक्ति अथवा विषय भोगों में पूरी तरह से रमी हुई, विषय भोगों में आनन्द का अनुभव करने वाला / वाली – **मा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलयरामा खो पनायं पजा आलयरता आलयसम्मुदिता,* महाव॰ 5; *आलयरामाति सत्ता पञ्च कामगुणे अल्लीयन्ति, तस्मा ते 'आलया'ति वुच्चन्ति, तेहि आलयेहि रमन्तीति आलयरामा,* महाव॰ अट्ठ॰ 233; *पञ्चूपादनक्खन्धा आलयो, तत्थ रमतीति आलयरामा, पजा,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.309.

आलयरामता स्त्री॰, भाव॰, विषय भोगों, राग, लगाव अथवा आसक्ति में आनन्द अनुभव करने की अवस्था, तृष्णा – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेनेव सा आलयरामता ससन्ताने, परसन्ताने च पाकटा होति,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.309; – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्तानञ्च आलयारामतं ... दिस्वा ...,* मि॰ प॰ 219; स॰ प॰ में, – *आलयआलयारामता-आलयसमुग्घात-आलयसमुग्घातुपायानञ्च वसेनापि चत्तारेव वुत्तानीति,* विसुद्धि॰ 2.124.

आलयविस्सज्जन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आलयविसर्जन], आसक्ति का परित्याग, लगाव से छुटकारा – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कनिट्ठपुत्तम्हि आलयविस्सज्जनं विय 'अनागतेपि निब्बत्तनकसङ्खारा भिज्जिस्सन्ती'ति,* विसुद्धि॰ 2.281.

आलयसमुग्घात पु॰, तत्पु॰ स॰ [आलयसमुद्घात], विषयभोगों के प्रति आसक्ति की पूर्णरूप से समाप्ति या निरोध, निर्वाण की अवस्था, तृष्णा का निरोध – **तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मदनिम्मदनो पिपासविनयो आलयसमुग्घातो वट्टुपच्छेदो तण्हाक्खयो विरागो निरोधो निब्बानं,* अ॰ नि॰ 1(2).40; *आलयसमुग्घातो भावितो बहुलीकतो चागाधिट्ठानं परिपूरेति,* नेत्ति॰ 99; – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुतियं सम्मप्पधानं भावितं बहुलीकतं आलयसमुग्घातं परिपूरेति,* नेत्ति॰ 99; स॰ प॰ के अन्त॰, – *आलयआलयारामताआलयसमुग्घातआलयसमुग्घातुपापायानञ्च वसेनापि चत्तारेव वुत्तानीति,* विसुद्धि॰ 2.124.

आलयसम्मुदित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आलयसम्मुदित], विषय भोगों में मोद अथवा आनन्द प्राप्त करने वाला – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलयरामा खो पनायं पजा आलयरता आलयसम्मुदिता,* महाव॰ 5; *आलयेसु सुट्ठु मुदिता ति आलयसम्मुदिता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.172; – **य** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *पजाय आलयरताय आलयसम्मुदिताय,* महाव॰ 5.

आलयसारी त्रि॰, अपने निर्धारित विषय अथवा क्षेत्र में ही विचरण करने वाला, अपने क्षेत्र में ही कार्यरत – **री** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ओकसारीति गेहसारी आलयसारी,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.228.

आलयाभिनिवेस पु॰, तत्पु॰ स॰ [आलयाभिनिवेश], कामभोग-विषयिणी तृष्णा द्वारा जनित कामभोगों के प्रति चित्त का सुदृढ़ लगाव, विषयभोगों के साथ चित्त का अहितकारी लगाव, संस्कृत धर्मों में चित्त का आश्रय-ग्रहण – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलयाभिनिवेसं पजहतो आदीनवानुपस्सनावसेन ...,* पटि॰ म॰ 29; *सङ्खारेसु लेणताण-भावग्गहणं आलयाभिनिवेसो अत्थतो भवनिकन्ति,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.479; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदीनवानुपस्सनाय पञ्चिन्द्रियानि आलयाभिनिवेसतो निस्सटानि होन्ति,* पटि॰ म॰ 201-02; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदीवनानुपस्सनाय आलयाभिनिवेसस्स,* विसुद्धि॰ 2.334.

आलयेसिनी स्त्री॰, [आलयेषिणी], आलय, आश्रय अथवा निवास-स्थान की खोज करने वाली – **नी** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पलेहिति आलयमालयेसिनी, तदा नदी अजकरणी रमेति मं,* थेरगा॰ 307.

आलवाल पु॰/नपुं॰, [आलवाल], वृक्ष के नीचे वृक्ष के चारों ओर पानी भरने हेतु बनाया गया गड्ढा या थाला, पेड़ को सींचने के लिए पेड़ के नीचे के भूभाग पर चारों ओर निर्मित गड्ढा – **लं**[1] पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलवालं दुमिन्दस्स बन्धित्वा,* चू॰ वं॰ 51.78; – **लं**[2] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उदककोट्ठकन्ति आलवालं,* म॰ नि॰ टी॰ 1(2).249.

आलवालक त्रि॰, तरुमूल के चारों पार्श्वों पर निर्मित गड्ढे वाला – **के** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलवालके तरुसेकत्थं तरुमूलविचिते स्वप्पे जलाधारे,* अभि॰ प॰ 1011 पर सूची.

आलसिक त्रि॰, आलसी, सुस्त – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सीलेस्वालसिको हुत्वा,* रस॰ 2.32(रो॰); *पुब्बेपेस आलसियोयेवा'ति वत्वा अतीतं आहरि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.120; पाठा॰ आलसिको.

आलसिय[1] नपुं॰, अलस का भाव॰ [आलस्य], आलस्य, सुस्ती, अकर्मण्यता, वीर्यहीनता – **यं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलस्यन्ति आलसियं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.90; *या तन्दी तन्दियना तन्दिमनकता आलस्यं आलस्यायना आलस्यायितत्तं, अयं वुच्चति "तन्दी",* विभ॰ 403; पाठा॰ आलसियं; ... *आलसस्सकम्मं अलसत्तं अलसता, अलसत्तनं, आलस्यं, आलसियं वा,* मो॰ व्या॰ 4.59; *अलसस्स भावो आलस्यं,* क॰ व्या॰ 362; – **यं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *युवा बली आलसियं उपेतो,* ध॰ प॰ 280; *उट्ठानविरियं कत्वा आलसियं अनापज्जित्वाति अत्थो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 32; स॰ उ॰ प॰ के रूप में आगन्तुका॰, काया॰, चित्ता॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आलसिय[2] त्रि॰, अलस का रूपा॰ तथा उसी से व्यु॰ [अलस], आलसी, अध्यवसाय से रहित, अनुद्योगी, शिथिल, पराक्रमहीन – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलसियो कुसीतो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.120; *राजकुम्भो नामेस, ... आलसियो,* तदे॰; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राजकुम्भं नाम आलसियं पस्सि,* तदे॰; – **या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तथारूपा किर आलसिया सकलदिवसं ...,* तदे॰.

आलसियकिलासु त्रि॰, आलस्य के कारण थका हुआ अथवा व्याधित, आलस्य से पीड़ित – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तत्थ किलासुनो अहेसुन्ति न आलसियकिलासुनो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.141.

आलसियकुसीतभाव पु॰, आलस्यभाव तथा शिथिलता अथवा वीर्यहीनता – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ नेसं सो आलसियकुसीतभावो भिक्खुसङ्घे पाकटो जातो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.409.

आलसियजात त्रि॰, [अलसजात], आलसी हो चुका, शिथिलता को प्राप्त – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मधुरकजाताति आलसियजाता,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).311.

आलसियजातिक त्रि॰, स्वभाव से ही आलसी, आलसी स्वभाव वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वाराणसिराजा आलसियजातिको अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.120.

आलसियता स्त्री॰, अलस + य + ता, आलस्यभाव, सुस्ती, ढीलाढालापन, अनुद्योगी मनोवृत्ति, स॰ उ॰ प॰ में प्रयुक्त, **काया॰**- शरीर का आलस्यभाव – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलस्यानुयोगोति कायालसियताय युत्तप्पयुत्तता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.115.

आलसियभाव पु॰, [आलस्यभाव], उपरिवत् – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेनस्स सरीरगरुताय उट्ठाननिसज्जादीसु आलसियभावो ईसकं अप्पहीनो विय होति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.250; – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धम्मसभायम्पि तेसं भिक्खूनमेव आलसियभावं निस्साय कथं समुट्ठापेसुं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.409.

आलसियमहग्घस त्रि॰, कर्म॰ स॰, आलसी एवं पेटू – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पूतिभावं आपादितरुक्खो विय आलसियमहग्घसो वेदितब्बो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.77.

आलसियविरहित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आलस्यरहित], आलस्य से मुक्त, उद्योगी, अध्यवसायी, जागरूक – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनलसोति सातच्चकिरियाय आलसियविरहितो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.178-79; – **ता** ब॰ व॰ – *अनलसाति आलसियविरहिता,* पाचि॰ अट्ठ॰ 162.

आलसियब्यसन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आलस्यव्यसन], आलस्य की लत, आलस्य की बुरी आदत, आलस्य के कारण उत्पन्न संकट – **नादि** त्रि॰, आलस्य से उत्पन्न कष्ट आदि – **दीहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आलसियब्यसनादीहि वा अभिभूतो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).162.

आलस्सियाभिभूत त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आलस्याभिभूत], आलस्य से ग्रस्त, आलस्य से बुरी तरह घिरा हुआ, आलस्य में डूबा हुआ – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किसो लूखो धमनिसन्थतगत्तो आलस्सियाभिभूतो कच्छुपरिकिण्णो अहोसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.170.

आलस्य नपुं., अलस का भाव., सं. के प्रभाववश आलस्स एवं आलसिय के स्थाना. के रूप में यत्र तत्र प्रयुक्त [आलस्य], आलस्य, आलस – **स्यं** प्र. वि., ए. व. – *अलसस्स भावो आलस्यं,* क. व्या. 362; *आलस्यञ्च पमादो च, अनुट्ठानं असंयमो ...*, स. नि. 1(1).50; *आलस्यन्ति आलसियं,* स. नि. अट्ठ. 1.90; *तन्दि ... पे. ... आलस्यं,* मि. प. 267; – **स्ये** सप्त. वि., ए. व. – *भिक्खुनो चेतसा बहुलं विहरतो आलस्ये कोसज्जे विस्सट्ठिये पमादे ...*, अ. नि. 2(2).199; *आलस्येति आलसियभावे,* अ. नि. अट्ठ. 3.168.

आलस्यानुयोग पु., तत्पु. स. [आलस्यानुयोग], **शा. अ.**, आलस्य के साथ अपने को जोड़ देना, **ला. अ.**, आलसी मनोवृत्ति का शिकार हो जाना, अकर्मण्यता, शिथिलता, अध्यवसायहीनता – **गो** प्र. वि., ए. व. – *आलस्यानुयोगो भोगानं अपायमुखं,* दी. नि. 3.138; *आलस्यानुयोगोति कायालसियताय युत्तप्पयुत्तता,* दी. नि. अट्ठ. 3.115; – **गं** द्वि. वि., ए. व. – *आलस्यानुयोगं अनुयुत्तस्स मे ...*, महानि. 194; *आलस्यानुयोगन्ति कायालसियताय युत्तप्पयुत्ततं,* महानि. अट्ठ. 284; – **गे** सप्त. वि., ए. व. – *छ खोमे, ... आदीनवा आलस्यानुयोगे,* दी. नि. 3.139.

आलस्यायना स्त्री., आलस्य के ना. धा., आलस्यायति से व्यु., क्रि. ना., आलस्य करना, आलसी स्वभाव का होना, आलस का शिकार बनना – **ना** प्र. वि., ए. व. – *आलस्यं आलस्यायना आलस्यायितत्तं,* महानि. 278.

आलस्यायित त्रि., आलस्य के ना. धा. आलस्यायति का भू. क. कृ., आलस्य में डूबा हुआ – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *आलस्यायितस्स भावो आलस्यायितत्तं,* महानि. अट्ठ. 332; – **त्त** नपुं.. भाव., आलस्य में निमग्न होना – **त्तं** प्र. वि., ए. व. – *आलस्यं आलस्यायना आलस्यायितत्तं,* महानि. 278.

आलस्स नपुं., अलस का भाव. [आलस्य], आलस, सुस्ती, अकर्मण्यता – **स्सेन** तृ. वि., ए. व. – *आलस्सेनाभिभूतस्स अविञ्ञूजनसेविनो,* सद्धम्मो. 567.

आलान / आळान नपुं., [आलान], बन्धन-स्तम्भ (हाथियों को) बांधने हेतु गाड़ा गया खम्भा या खूंटा – **नं**[1] – *आळानमाळ्हको थम्भो,* अभि. प. 364; *आलात्यस्मिं अनेन वा बन्धतीत्यालानं, आपुब्बो लाधातु बन्धनत्थो,* अभि. प. 364 पर सूची; – **नं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *आलानं भिन्दित्वा ...*, जा. अट्ठ. 1.397; – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *आळकसङ्घातआलानेन ...*, चरिया. अट्ठ. 108; – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *तं आळाने निच्चलं बन्धित्वा तोमरहत्था मनुस्सा ... कारेन्ति,* जा. अट्ठ. 1.397; – **त्थम्भ** पु., कर्म. स. [आलानस्तम्भ], उपरिवत् – **म्भे** सप्त. वि., ए. व. – *ममाळकेति आलानत्थम्भे,* चरिया. अट्ठ. 109.

आलाप पु., आ + √लप से व्यु. [आलाप], बातचीत, सम्बोधन, भाषण – **पो** प्र. वि., ए. व. – *आदो भासनमालापो,* अभि. प. 123; *आवुसोति सावकानं आलापो,* स. नि. अट्ठ. 2.206; – **सल्लाप** पु., द्व. स., आलाप एवं संलाप – **पे** सप्त. वि., ए. व. – *मातुगामेन पन आलापसल्लापे सति विस्सासो होति,* दी. नि. अट्ठ. 2.156.

आलिखति आ + √लिख का वर्त., प्र. पु., ए. व., लिखता है, चित्रित करता है, रूपरेखा प्रस्तुत करता है – **न्तु** अनु. प्र. पु., ब. व. – *नामञ्चकारं पि तेसं इहालिखन्तु,* हत्थ. वं. 11.10(सिंहली).

आलिखित्वा आ + √लिख का पू. का. कृ., लिख कर, खींच कर, बना कर, रेखाङ्कित कर – *थेरो पठविया चक्कं लिखित्वा ...*, मि. प. 51; पाठा. आलिखित्वा; *चन्दमण्डले ससलक्खणं लिखित्वा ...*, जा. अट्ठ. 3.47; पाठा. आलिखित्वा.

आलिखितुं आ + √लिख का निमि. कृ., चित्रांकित अथवा रेखाङ्कित करने के निमित्त, लिखने में – ... *सुकुसलोपि चित्तकारो वा पोत्थकारो वा आलिखितुम्पि समत्थो नत्थि,* जा. अट्ठ. 1.80.

आलिङ्ग[1] पु., [आलिङ्गय / आलिङ्ग], एक प्रकार का ढोल या नगाड़ा, मृदङ्ग का एक प्रभेद – *मुदिङ्गो मुरुजोस्स तु आलिङ्गचङ्कयोद्धका भेदा,* अभि. प. 143; *कम्बुग्गीवा तु या गीवा सुवण्णालिङ्गसन्निभा,* अभि. प. 263; तुल., *मृदङ्गा मुरजा भेदास्त्वङ्क्यालिङ्ग्योर्ध्वकास्त्रय:,* अमर. 1.7.5; *कम्बु वुच्चति सुवण्णं कम्बुमयेन आलिङ्गेन (मुरजभेदेन) सन्निभा गीवा कम्बुगीवा,* अभि. प. 263 पर सूची; स. प. के अन्त., – *कम्बुगीवोति सुवण्णाळिङ्गसदिसगीवो, सुवण्णञ्हि कम्बूति वुच्चति,* जा. अट्ठ. 4.119; *कम्बुतलाभासाति सुवण्णालिङ्गतलसन्निभा गीवाति अत्थो,* जा. अट्ठ. 5.151.

आलिङ्ग[2] पु., [आलिङ्गन], आलिङ्गन, चिपट जाना, अपने शरीर से अन्य के शरीर को चिपटा लेना – **ङ्गो** प्र. वि., ए. व. – *आलिङ्गो उपगूहनं,* सद्द. 2.443.

आलिङ्गति आ + √लिङ्ग का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आलिङ्गति], आलिङ्गन करता है – *परिस्सजने आलिङ्गति,* सद्द. 3.880; – **न्तो** वर्त. कृ., आत्मने., पु., प्र. वि., ए. व. – *आलिङ्गन्तो विय गाळ्हं पीळेत्वा,* जा. अट्ठ. 1.271; – **माना** वर्त. कृ., आत्मने., स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *तम्बवण्णेन उदकेन आलिङ्गमाना विय आगच्छति,* स. नि. अट्ठ. 3.74; – **ङ्गेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *परम्मुखिं वा आलिङ्गेय्य,* दी. नि. 1.210; ... *परम्मुखिं वितं पच्छतो गन्त्वा आलिङ्गेय्य,* दी. नि. अट्ठ. 1.298; – **ङ्गि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *पलिस्सजीति आलिङ्गि,* जा. अट्ठ. 5.153; – **ङ्गिंसु** ब. व. – *अञ्ञमञ्ञं परामसित्वा आलिङ्गिंसु,* सु. नि. अट्ठ. 1.57; – **ङ्गित्वा** पू. का. कृ. – *अञ्ञमञ्ञं आलिङ्गित्वा,* दी. नि. 3.53; जा. अट्ठ. 5.153; – **ङ्गितुं** निमि. कृ. – *पुरतो च पच्छतो च आलिङ्गितुं देथाति,* अ. नि. अट्ठ. 1.276; – **ङ्गितो** भू. क. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *आलिङ्गितो चासि पियो पियाय,* जा. अट्ठ. 4.397; – **ङ्गियं** सं. कृ., पु., द्वि. वि., ए. व. – *आलिङ्गियं पियतरञ्च सुतं,* सद्द. 1.87; – **ङ्गिया** सं. कृ., पु., प्र. वि., ब. व. – *आलिङ्गिया अञ्ञमञ्ञं मयं उभो,* जा. अट्ठ. 4.399.

आलिङ्गन नपुं., आ + √लिङ्ग से व्यु., क्रि. ना. [आलिङ्गन], एक दूसरे के शरीर से चिपट जाना या सट जाना, आलिङ्गन, सटाव, चिपकाव – **नं** प्र. वि., ए. व. – *आलिङ्गनं परिस्सङ्गो सिलेसो उपगूहणं,* अभि. प. 774; *लिङ्ग गत्यत्थो, आ पुब्बो य आलिङ्गीयते ति आलिङ्गनं,* अभि. प. 774 पर सूची, *परिस्सग्गो आलिङ्गनं,* सद्द. 346; – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *सिलिस आलिङ्गने,* सद्द. 2.489.

आलिङ्गय पु., आलिङ्ग का सं. के प्रभाववश किया गया रूप. [आलिङ्गय], एक प्रकार का मृदङ्ग या ढोलकी – *आलिङ्गयङ्कयोद्धका भेदा,* अभि. प. 143.

आलिङ्गित त्रि., आ + √लिङ्ग का भू. क. कृ. [आलिङ्गित], वह, जिसका आलिङ्गन किया गया है, प्रिय – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आलिङ्गितो चासि पियो पियाय,* जा. अट्ठ. 4.397.

आलिङ्गीयते आ + √लिङ्ग का कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व., आलिङ्गन किया जाता है – *लिङ्ग गत्यत्थो, आपुब्बो यु आलिङ्गीयते ति आलिङ्गनं,* अभि. प. 774 पर सूची.

आलित्त त्रि., आ + √लिप का भू. क. कृ. [आलिप्त], पूरी तरह से लिपा हुआ, पूर्ण रूप से ग्रस्त अथवा अभिभूत – **त्तं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *खुरंव मधुनो लित्तं उल्लिहं नावबुज्झति,* थेरगा. 737; पाठा. मधुनालित्तं.

आलिन्द / आळिन्द पु., [अलिन्द / आलिन्द], **क.** घर के द्वार के बाहर का चबूतरा, बरामदा, मकान की छत, मकान की मंजिल या तल – *पघाणो पघणालिन्दा पमुखं द्वारबन्धनं,* अभि. प. 218; *गेहेकदेसे आलिन्दो पघाणो पघणो भवे,* अभि. प. 218 पर सूची; – **न्दं** द्वि. वि., ए. व. – *अतरमानो आळिन्दं पविसित्वा उक्कासित्वा अग्गळं आकोटेहि,* महाव. 324; *"अनुजानामि, भिक्खवे, आळिन्दं पघनं पकुट्टं ओसारक"न्ति,* चूळव. 279; *आळिन्दोनाम पमुखं वुच्चति,* चूळव. अट्ठ. 62; – **न्दे** सप्त. वि., ए. व. – *आलिन्दे उत्तरासङ्गं पञ्ञपेत्वा तिणकलापं ओकासेही"ति,* स. नि. 2(2).282; ... *पुत्तं नीहरित्वा बहिआलिन्दे निपज्जापेसि,* ध. प. अट्ठ. 1.16; – **न्दा** प्र. वि., ब. व. – *आळिन्दा पाकटा होन्ति,* चूळव. 279; **ख.** सुमेरु पर्वत का शिखर, सोने के लिए ऊंचा बनाया हुआ स्थान, स. उ. प. में, **पठमा.**- प्रथम आलिन्द – **न्दे** सप्त. वि., ए. व. – *सिनेरुस्स पठमालिन्दे तेसं आरक्खा,* जा. अट्ठ. 1.202; स. उ. प. के अन्य प्रयोगों हेतु कुच्छि., द्वारकोट्ठका., सा. के अन्त. द्रष्टव्य.; – **क** पु., उपरिवत्, स. उ. प. के अन्त., **बहि.**- बाहर का बरामदा – **के** सप्त. वि., ए. व. – *बहिआळिन्दके ठत्वा तेन सद्धिं कथेसि,* जा. अट्ठ. 3.248; **अना.**- बिना बरामदा वाला, बिना चबूतरा का – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *तेन खो पन समयेन विहारा अनाळिन्दका होन्ति अप्पटिसरणा,* चूळव. 279.

आलिन्दकमिड्ढिका स्त्री., घर के बाहर बने चबूतरे के किनारे पर बैठने या लेटने हेतु बनाया गया ऊंचा स्थान या मेंड़, चबूतरे के किनारे बनाया गया पीठ – *मिड्ढन्तेति आलिन्दकमिड्ढिकादीनं अन्ते,* चूळव. अट्ठ. 48.

आलिन्दकवासी त्रि., आलिन्दक का निवासी, महाफुस्सदेवत्थेर के लिए प्रयुक्त एक उपाधि – **सी** पु., प्र. वि., ए. व. – *आळिन्दकवासी महाफुस्सदेवत्थेरो विय,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).268.

आलिम्पति / आलिम्पेति आ + √लिप / लिम्प का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आलिम्पति], लीपता है, लेप करता है, पोतता है, प्रसाधन-सामग्रियों का प्रयोग करता है, अभ्यंजित करता है – **न्ति** ब. व. – *तेन खो पन समयेन छब्बग्गिया भिक्खू मुखं आलिम्पन्ति,* चूळव. 224; *विप्पसन्नछविरागकरेहि मुखालेपनेहि आलिम्पन्ति,* चूळव. अट्ठ. 46; – **म्पतो / न्तस्स** वर्त. कृ., पु., ष. वि., ए. व. – *वणमुखं आलिम्पतो,* म. नि. 3.42; *भेसज्जेन आलिम्पेन्तस्स असुचिं मुच्चि,* पारा. 166; – **म्पेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *वणमुखं आलिम्पेय्य,*

म॰ नि॰ 3.42; – **म्पेय्यासि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *वणमुखं आलिम्पेय्यासि,* तदे॰; – **म्पित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *भेसज्जं आलिम्पित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.328; – **म्पितब्बं** सं॰ कृ॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न, ..., मुखं आलिम्पितब्बं,* चूळव॰ 224.

आलिम्पन नपुं॰, आ + √लिप/लिम्प से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आलिम्पन, भिन्न अर्थ में, आदीपन का समार्थक], अग्निदाह, अगलगी, अग्नि, आग लगाना – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उदकघटकानि ठपेन्ति आलिम्पनं विज्झापेतुं,* मि॰ प॰ 42.

आलिम्पापेय्य आ + √लिप/लिम्प का प्रेर॰, विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, लेप करवाए, लेप लगवाए – *या पन भिक्खुनी पसाखे जातं गण्डं वा रुधितं वा अनपलोकेत्वा ... एकेनेका भेदापेय्य वा ... आलिम्पापेय्य वा ...,* पाचि॰ 431.

आलिम्पीयति आ + √लिप/लिम्प का कर्म॰ वा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आलिप्यते], लेपयुक्त किया जाता है, लेप लगाया जाता है – *सो वणो आलेपेन च आलिम्पीयति तेलेन च मक्खीयति,* मि॰ प॰ 80.

आलिम्पेति आ + √लिप/लिम्प का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आदीपयति], आदीप्त करता है, प्रज्वलित कर देता है, जलाता है, आग लगाता है, आग पकड़ाता है – *उक्कं बन्धित्वा उक्कामुखं आलिम्पेति,* विसुद्धि॰ 1.238; *आलिम्पेतीति आदीपेति जालेति,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.286; – **न्ति** ब॰ व॰ – *छब्बग्गिया भिक्खू दायं आलिम्पेन्ति,* चूळव॰ 259; *आलिम्पेन्तीति तिणवनादीसु अग्गिं देन्ति,* चूळव॰ अट्ठ॰ 56; – **य्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *उक्कं बन्धित्वा उक्कामुखं आलिम्पेय्य,* अ॰ नि॰ 1(1).290; *आलिम्पेय्याति तत्थ अङ्गारे पक्खिपित्वा अग्गिं दत्वा नाळिकाय धमन्तो अग्गिं गाहापेय्य,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.220; – **न्ता** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सकटसहस्सेहि दारूनि आहरित्वा आलिम्पेन्तापि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.128; – **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पिदहित्वा भाजनन्तरे ठपेत्वा आवापं आलिम्पेसि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.314; – **सुं** ब॰ व॰ – *छब्बग्गिया भिक्खू मरणाधिप्पाया दायं आलिम्पेसुं,* पारा॰ 106; – **स्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आवापं आलिम्पेस्सामि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.314; – **स्ससि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *कदा त्वं आवापं आलिम्पेस्ससी'ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.103; – **स्साम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *भगवतो चितकं आळिम्पेस्सामा'ति,* दी॰ नि॰ 2.122; *आळिम्पेस्सामाति अग्गिं गाहापेस्साम,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.174; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *अथ नं आलिम्पेत्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.128; *उक्कामुखं आलिम्पेत्वा सण्डासेन जातरूपं गहेत्वा ... कालेन कालं अभिधमेय्य,* म॰ नि॰ 3.292; – **तुं** निमि॰ कृ॰ – *न सक्कोन्ति आळिम्पेतुं,* दी॰ नि॰ 2.122; *आळिम्पेतुन्ति अट्ठपि सोळसपि द्वत्तिंसपि जना जालनत्थाय यमकयमकउक्कायो गहेत्वा ... अग्गिं गाहापेतुं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.174; – **म्पितब्बो** सं॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न ..., दायो आलिम्पितब्बो,* चूळव॰ 259.

आलु विशे॰ बनाने वाला प्रत्यय तद्बहुल अर्थ में आलु प्रत्यय होता है – *आलु तब्बहुले,* क॰ व्या॰ 361; *आल्वभिज्झादीहि,* मो॰ 4.86.

आलु/आलुक/आलुप/आलुव पु॰/नपुं॰, [आलुक], 1. तेंदू का फल, 2. मीठे कन्द वाला एक पौधा, 3. शकरकन्द, आखू – **वा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आलुवा च कळम्बा च ... बहुका मम अस्समे,* अप॰ 1.14; *एते आलुवादयो मूलफला खुद्दा मधुरसा मम अस्समसमीपे बहू सन्तीति सम्बन्धो,* अप॰ अट्ठ॰ 1.222; – **लूनि/लुवानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *खणन्तो आलूनि चेव तालकन्दानि च,* जा॰ अट्ठ॰ 4.336; *न तक्कला सन्ति न आलुवानि, न बिळालियो न कळम्बानि तात,* जा॰ अट्ठ॰ 4.41; *आलुवानीति आलुवकन्दा,* तदे॰; स॰ प॰ के अन्त॰, *खणन्तालुकलम्बानि, बिलालितक्कलानि च,* जा॰ अट्ठ॰ 4.334; – **कन्द** नपुं॰, तेंदू का फल अथवा शकरकन्द – **न्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आलुवकन्दो ...,* पाचि॰ अट्ठ॰ 89; – **न्दा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आलुवानीति आलुवकन्दा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.41; – **न्दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलुवं तस्स पादासिन्ति तस्स अरहतो अहं पसन्नमानसो आलुवकन्दं पादासिं आदरेन अदासिन्ति अत्थो,* अप॰ अट्ठ॰ 2.187.

आलुम्पकारकं/आलुप्पकारकं अ॰, क्रि॰ वि॰, खण्ड खण्ड करके, टुकड़ों में या भागों में विभक्त करके – *ते, ... सत्ता रसपथविं हत्थेहि आलुप्पकारकं उपक्कमिंसु परिभुञ्जितुं,* दी॰ नि॰ 3.63; *आलुप्पकारकन्ति एत्थ आलोपपरियायो आलुप्प – सद्दोति,* दी॰ नि॰ टी॰ 3.39.

आलुम्पति आ + √लुप का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आलुम्पति], तोड़ देता है, टुकड़े टुकड़े कर देता है, भंग कर देता है, काट देता है, नज़र से ओझल कर देता है, नष्ट कर देता है – *गावी तरुणवच्छा थम्बञ्च आलुम्पति वच्छकञ्च अपचिनति,* म॰ नि॰ 1.407; – **माना** वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *तिणञ्च आलुम्पमाना खादति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).295; – **म्पित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ –

वच्छकस्स आसन्नट्ठाने चरमाना तिणं आलुम्पित्वा गीवं उक्खिपित्वा ..., तदे.

आलुळ त्रि., गंदला, पंकिल, मटमैला – **ळा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *"तेन गङ्गा आलुळा सन्दती"ति,* जा. अट्ठ. 6.258; *नदी ... हेट्ठपरियवालिका आलुळा होति,* स. नि. अट्ठ. 1.209.

आलुळति / आलुलेति आ + √लुड का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आलोडति], **क.** आलोडित अथवा उद्विग्न होता है, **ख.** संभ्रमग्रस्त कर देता है, **ग.** घबराहट में इधर उधर भटकता है – *गम्भीरं महाउदकं ... न आलुळति,* स. नि. अट्ठ 1.208; *एवरूपस्सपि नाम भिक्खुनो अयं पञ्हो आलुळेति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).241; – **माना** स्त्री., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. – *ततो चवित्वा पुन गतिवसेन आलुलमाना,* ध. प. अट्ठ. 2.305; – **लिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *अयं पुग्गलो पवेणिआगतं तन्तिं ... आलुळिस्सती"ति,* ध. स. अट्ठ. 399; – **ले** विधि., प्र. पु., ए. व. – *भातिका इमं पञ्हं आलुळे ...,* म. नि. अट्ठ. 1(1).241.

आलुलापेत्वा आ + √लुळ का प्रेर., पू. का. कृ., आन्दोलित अथवा क्षुब्ध करा कर, बुरी तरह खौल-बौल करा कर – *सेसकं उदकचाटियं आलुळापेत्वा ...,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.60.

आलुळिक त्रि., आलुळ से व्यु., मटमैला, गंदला, पंकिल – **कं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *उदकं आलुलिकं करोन्ते दिस्वा,* दी. नि. अट्ठ. 2.200.

आलुळित / आलुलित त्रि., आ + √लुळ का भू. क. कृ. [आलोडित], **क.** विक्षुब्ध, अशान्त, बेचैन, संभ्रमग्रस्त – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *तव दुस्सयनदुब्भोजनेहि चित्तं आलुळितं भविस्सति,* जा. अट्ठ. 7.310; *अहम्पि ... उपक्किलेसेहि आलुलितपुब्बोति,* म. नि. अट्ठ. (उप. प.) 3.152-53; – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *इमे सङ्खारा अञ्ञमञ्ञमिस्सा आलुळिता ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).259; – **ते** सप्त. वि., ए. व. – *परित्तोदके एव हि भत्तपक्खेपेन आलुळिते सुखुमपाणका मरन्ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).101; *तत्थ आविलेति कद्दमालुळिते,* जा. अट्ठ. 2.83; **ख.** मटमैला, पंकिल या मलिन कर दिया गया, आपस में मिला दिया गया, मथ दिया गया – **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *गङ्गा आलुला सन्दती"ति,* जा. अट्ठ. 6.258; पाठा. आळुलिता; – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *एकतो कत्वा मिस्सितं आलुळितं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).271; – **तानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *चक्खादीनि इन्द्रियानि जरं पत्तस्स परिपक्कानि आलुळितानि अविसदानि ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).225.

आलुळितत्त नपुं., आलुळित का भाव., मटमैलापन, विक्षोभभाव, धुंधलापन, व्यग्रता – **त्ता** प. वि., ए. व. – *पठमतरं ओतरित्वा पिवन्तेहि आलुळितत्ता आविलानि,* उदा. अट्ठ. 202.

आलुळीयति आ + √लुळ का वर्त., प्र. पु., ए. व., कर्म. वा., मथ दिया जाता है, विक्षुब्ध कर दिया जाता है, गंदला अथवा पंकिल बना दिया जाता है – *उदकम्पि आलुळीयति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).158.

आलुळेति / आळुळेति आ + √लुळ का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व., **क.** विक्षोभित कर देता है, मथ देता है, घोलमेल कर देता है – **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *महामेरुं मत्थं कत्वा चक्कवाळमहासमुद्दं आलुळेन्तो,* जा. अट्ठ. 1.34; – **न्ते** द्वि. वि., ब. व. – *महाचङ्कमे सम्मट्ठट्ठानं आलुलेन्ते दिस्वा,* दी. नि. अट्ठ. 2.200; – **न्तानं** पु., ष. वि., ब. व. – *यागुं वा सूपं वा ... आलुलेन्तानं,* पाचि. अट्ठ. 100; *आलुलेन्तानन्ति आलोलेन्तानं, अयमेव वा पाठो,* सारत्थ. टी. 3.64; **ख.** अव्यवस्थित कर देता है, संभ्रमग्रस्त बना देता है, विक्षुब्ध कर देता है, व्यग्र या विचलित कर देता है – **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *सारिपुत्तं आलुळेन्तो पञ्हं पुच्छिस्सामि,* जा. अट्ठ. 2.8; – **स्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *मातुगामो नाम कस्मा तुम्हादिसानं चित्तं नालुळेस्सति,* जा. अट्ठ. 2.26; – **स्सन्ति** ब. व. – *अनुरुद्धा तुम्हे किं न आलुलेस्सन्ति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.152; – **त्वा** पू. का. कृ. – *वालिकं आलुळेत्वा,* स. नि. अट्ठ. 3.42.

आलुवकन्द पु., चुकन्दर, शकरकन्द, आवनूस का फल – **न्दं** द्वि. वि., ए. व. – *अरहतो अहं पसन्नमानसो आलुवकन्दं पादासिं आदरेन ... अत्थो,* अप. अट्ठ. 2.187.

आलुवदायक पु., एक स्थविर का नाम – **को** प्र. वि., ए. व. – *इत्थं सुदं आयस्मा आलुवदायको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप. 1.252.

आलूख नपुं., [आरुक], हिमाचल में प्राप्त एक औषधीय पादप, आड़ू, शफतालू, सतालू – **खं** प्र. वि., ए. व. – *आलूखं वातपित्तस्सकाससासारुची रण,* भेसज्ज. म. 5.102.

आलेख पु., आ + √लिख से व्यु. [आलेख], चित्र लेखन, रेखाङ्कन, चित्राङ्कन – **खं** द्वि. वि., ए. व. – *दिब्बविमानं पेसेत्वा तदालेखं ददाथ मे,* म. वं. 27.10.

आलेप पु., आ + √लिप से व्यु. [आलेप], मलहम, घावों या व्रणों को भरने वाला तरल लेप, उपचारक औषधि के रूप में प्रयुक्त मलहम, तेल या मलहम आदि से मालिश – **पं** द्वि. वि., ए. व. – *सीसच्छविं सिब्बित्वा आलेपं अदासि,* महाव. 363; – **पेन** तृ. वि., ए. व. – *जीवको ... भगन्दलाबाधं एकेनेव आलेपेन अपकड्ढि,* महाव. 361; स. उ. प. के रूप में अगदा., गन्धा., वणा. के अन्त. द्रष्ट..

आलेपन नपुं., आ + √लिप से व्यु., क्रि. ना. [आलेपन], व्रण अथवा घाव पर मलहम लगाना, लेप करना, अभ्यंजन, तेल या मलहम आदि का लेप अथवा मालिश, स. पू. प. के रूप में – **रुहन** नपुं., औषधि या मलहम का लेप लगाने से घाव या व्रण का भर जाना – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *वण्णस्स आलेपनरूहने यथा,* विसुद्धि. 1.42; *आलेपनरूहने यथाति भेसज्जलेपनेन वणस्स रूहने विय,* विसुद्धि. महाटी. 1.69; स. उ. प. के रूप में मुखा., वणा., सीसा. के अन्त. द्रष्ट..

आलेपित त्रि., आ + √लिप का भू. क. कृ. [आदीपित], जलाया गया, दग्ध किया हुआ, आग पकड़ाया हुआ – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *कुम्भकारपाको आलेपितो पठमं धूमेति संधूमेति सम्पधूमेति,* अ. नि. 2(2).238.

आलोक 1. पु., [आलोक], **शा. अ.,** प्रकाश, देखना, दिन का उजाला, सूर्य का प्रकाश, चमकदमक – *अथोभासो पकासो चालोकोज्जोतातपा समा,* अभि. प. 37; *आलोकयति एतेनाति आलोको,* अभि. प. 37 पर सूची; *दिट्ठोभासासेसु आलोको,* अभि. प. 1043; *दस्सने ओभासे चाति द्विसु अत्थेसु,* अभि. प. 1043 पर सूची; *आलोकोति रस्मि, आलोकेन्ति एतेन भुसो पस्सन्ति, जना, चक्खुविञ्ञाणं वाति आलोको,* सद्द. 2.520; – **को** प्र. वि., ए. व. – *अन्धकारो गुहायं अन्तरधायि, आलोको उदपादि,* दी. नि. 2.198; *आलोको उदपादीति यो पकतिया गुहायं अन्धकारो, सो अन्तरहितो,* दी. नि. अट्ठ. 2.267; – **कं** द्वि. वि., ए. व. – ... *सक्का सदेवके लोके अन्धकारं विधमित्वा आलोकं दस्सेतु'न्ति,* मि. प. 286; *ते तं दिवसं आलोकं ओलोकेत्वा ...,* स. नि. अट्ठ. 1.125; – **केहि** तृ. वि., ब. व. – *नेकदीपसहस्सानं आलोकेहि,* चू. वं. 74.219; – **के** सप्त. वि., ए. व. – *उदपत्तो अच्छो विप्पसन्नो अनाविलो आलोके निक्खित्तो,* अ. नि. 2(1).217; **ला. अ.** 1 बुद्धों, अर्हतों तथा देवों के शरीर से बाहर निकलने वाली लौकिक आभा या तेज-पुंज, आभा-मण्डल, अलौकिक प्रभा, इन महासत्त्वों के जन्म एवं निर्वाण के समय प्रकट होने वाला प्रकाश अथवा इनके प्रादुर्भाव एवं अन्तर्धान के पूर्वनिमित्त के रूप में उत्पन्न प्रकाश – **को** प्र. वि., ए. व. – *यथा निमित्ता दिस्सन्ति आलोको सञ्जायति ... ब्रह्मा पातुभविस्सति, ब्रह्मुनो हेतं पुब्बनिमित्तं पातुभावाय, यदिदं आलोको सञ्जायति,* दी. नि. 1.201; – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *ब्रह्मा नाम महानुभावो एकङ्गुलिया एकस्मिं चक्कवाळसहस्से आलोकं फरति,* स. नि. अट्ठ. 1.179; *तं आलोकं दिस्वा "येन सूरियो अत्थञ्चेव गमितो ... एस सो पुरिसो इदानि आलोकं कत्वा ठितो, अहो अच्छरियपुरिसो"ति ...,* अ. नि. अट्ठ. 2.204; – **केन** तृ. वि., ए. व. – *ये ... भिक्खू विकाले आगच्छन्ति तेसम्पि तेजोधातुं समापज्जित्वा तेनेव आलोकेन सेनासनं पञ्ञपेति ..., अङ्गुलिया जलमानाय पुरतो पुरतो गच्छति, तेपि तेनेव आलोकेन ... पिट्ठितो गच्छन्ति,* चूळव. 178; *यतो च ... तथागतो लोके उप्पज्जति ... अथ महतो आलोकस्स पातुभावो होति महतो ओभासस्स,* स. नि. 3(2).505; **ला. अ., 2.** आन्तरिक ज्ञान ज्योति, प्रज्ञा का प्रकाश, लोक के प्रकाशभूत बुद्ध, सम्यक् दृष्टि का प्रकाश, सत्य-विषयक ज्ञान का प्रकाश, ज्ञान, प्रज्ञा, विद्या – *दिट्ठोभासेसु आलोको, बुद्धो तु पण्डिते जिने,* अभि. प. 1043; – **को** प्र. वि., ए. व. – *पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं ..., पञ्ञा ..., विज्जा ..., आलोको उदपादि,* महाव. 14; *उदपादीति ... ओभासट्ठेन च आलोकोति वुत्ता उदपादि,* दी. नि. अट्ठ. 2.46; *ओभासनट्ठेन आलोकोति वुत्तं,* स. नि. अट्ठ. 2.19; *आलोकनट्ठेन पञ्ञाव आलोको पञ्ञाआलोको,* पटि. म. अट्ठ. 1.310; – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *आलोकं दस्सेताति पञ्ञालोकं दस्सनसीलो, पञ्ञालोकस्स दस्सेताति वा अत्थो,* पटि. म. अट्ठ. 2.14; *आलोकं वड्ढेत्वा दिब्बचक्खुना ओलोकेन्तो ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).350; **2.** त्रि., प्रकाश से भरा हुआ, सुस्पष्ट – **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अयं सञ्ञा आलोका होति विवटा परिसुद्धा परियोदाता,* विभ. 284.

आलोककर त्रि., [आलोककर], प्रकाश प्रदान करने वाला, प्रभा उत्पन्न करने वाला, अन्धकार-नाशक – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *पभङ्करोति पभङ्करो आलोककरो ... पज्जोतकरोति,* चूळनि. 193; *आलोककरोति अनन्धकारकरो,* चूळनि. अट्ठ. 78; – **रा** ब. व. – *एवरूपा च ते, भिक्खवे, भिक्खू ... आलोककरातिपि वुच्चन्ति ...,* इतिवु. 76-77; *सपरसन्तानेसु*

पञ्ञाआलोकपञ्ञाओभासपञ्ञापज्जोतानं करणेन निब्बत्तनेन आलोकादिकराति्पि, इतिवु. अट्ठ. 290; *तयो हि आलोककरा, लोके लोकतमोनुदा,* अप. 1.276.

आलोककरण¹ त्रि., तत्पु. स. [आलोककरण], प्रकाश देने वाला, आभा अथवा दीप्ति से परिपूर्ण, प्रकाश का पुञ्ज – **णो** पु., प्र. वि., ए. व. – *मणि निब्बत्तते मय्हं, आलोककरणो मम,* अप. 2.47; – **णा** ब. व. – *आलोककरणा धीरा, ...,* इतिवु. 77; – **णं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *तावता बुद्धचेतियं, ... आलोककरणं तदा,* अप. 1.68.

आलोककरण² नपुं., [आलोककरण], प्रकाश का उदय, आभा की उत्पत्ति, प्रकाश को उत्पन्न करना – **णेन** तृ. वि., ए. व. – *आलोककरणेन "पभङ्करो"ति लद्धनामो सूरियो ... उदेति,* उदा. अट्ठ. 292.

आलोककसिण नपुं., कर्म. स./तत्पु. स. [आलोककृत्स्न], **शा. अ.**, सम्पूर्णता अथवा समग्रता के साथ आलोक अथवा प्रकाश, **ला. अ.**, ध्यान-प्रक्रिया के क्रम में चित्त के आलम्बन के रूप में उल्लिखित चालीस कम्मट्ठानों की सूची में प्रथम दस कम्मट्ठान परिगणित हैं, इन्हें दस कसिण कहा गया, आलोककसिण इन्हीं में एक के रूप में निर्दिष्ट है, चन्द्र, सूर्य आदि का वह अनन्त एवं समग्र आलोक जो ध्यानक्रम में चित्त की एकाग्रता का आलम्बन बनाया जाता है – **णं¹** प्र. वि., ए. व. – *तत्थ पथवीकसिणं, आपोकसिणं, तेजोकसिणं, वायोकसिणं, नीलकसिणं, पीतकसिणं, लोहितकसिणं, ओदातकसिणं, आलोककसिणं, परिच्छिन्नाकासकसिणन्ति, इमे दस कसिणा,* विसुद्धि. 1.108; अभि. ध. स. 62; ... *चन्दादिआलोको आलोककसिणन्ति दट्ठब्बं,* अभि. ध. वि. 225; – **णे** सप्त. वि., ए. व. – *आलोकस्सपि आलोककसिणे परिकम्मं कत्वा उप्पन्नज्झानस्सापीति सहारम्मणस्स झानस्स एतं नामं,* स. नि. अट्ठ. 2.118.

आलोककसिणचतुत्थ नपुं., कर्म. सं., आलम्बन या कम्मट्ठान के रूप में गृहीत आलोककसिण से युक्त चतुर्थ ध्यान, स. उ. प. के रूप में, – *"आकासकसिणआलोककसिणचतुत्थानि" पन विपस्सनायपि अभिञ्ञानम्पि वट्टस्सापि पादकानि होन्ति,* ध. स. अट्ठ. 431.

आलोककिच्च नपुं., तत्पु. स. [आलोककृत्य], प्रकाश किए जाने का काम, उजाला करने की आवश्यकता – **च्चं** प्र. वि., ए. व. – *आलोकट्ठाने आलोककिच्चं नत्थि,* स. नि. अट्ठ. 1.195.

आलोकजात त्रि., प्रकाशमय, आलोकमय, जगमगाहट से भरपूर – **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *आलोकजाता विय मे, आनन्द, एसा दिसा,* उदा. 96; *आलोकजाता वियाति सञ्जातालोका विय,* उदा. अट्ठ. 149; – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *इदं अन्धकारट्ठानं आलोकजातं होतूति वा ... आवज्जित्वा,* विसुद्धि. 2.18; *आलोकजातन्ति आलोकभूतं, जातालोकं वा,* विसुद्धि. महाटी. 2.23.

आलोकट्ठान नपुं., तत्पु. स. [आलोकस्थान], प्रकाश से भरा हुआ स्थान, जगमगाहट से भरा हुआ क्षेत्र – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *नीलकसिणं ताव समापज्जित्वा सब्बत्थ आलोकट्ठाने अन्धकारं फरि,* स. नि. अट्ठ. 1.195; *आलोकट्ठाने आलोककिच्चं नत्थि,* स. नि. अट्ठ. 1.195.

आलोकद त्रि., [आलोकद], प्रकाश देने वाला, ज्ञान की आंख देने वाला – **दा** पु., प्र. वि., ब. व. – ... *तथागतानं ... आलोकदा चक्खुददा भवन्ति,* थेरगा. 3; *यतो देसनाविलासेन सत्तानं ञाणमयं आलोकं देन्तीति आलोकदा,* थेरगा. अट्ठ. 1.35.

आलोकदस्सन नपुं., तत्पु. स. [आलोकदर्शन], प्रकाश का दर्शन, ज्ञान के आलोक का दर्शन – *यथावालोकदस्सनो,* थेरगा. 422; ... *सस्सतुच्छेदग्गाहानं विधमनेन याथावतो आलोकदस्सनो तक्करस्स लोकुत्तरञाणालोकस्स दस्सनो,* थेरगा. अट्ठ. 2.91.

आलोकधातु स्त्री., धातु के रूप में आलोक या प्रभा, मूलतत्व के रूप में आलोक – **तु** प्र. वि., ए. व. – *आभाधातूति आलोकधातु,* स. नि. अट्ठ. 2.118.

आलोकन नपुं., आ + √लुक से व्यु., क्रि. ना. [आलोकन], किसी पर दृष्टिपात करना, आगे की ओर या सामने की ओर देखना, आन्तरिक अवलोकन – **नं** प्र. वि., ए. व. – *आलोकनन्ति पुरतो पेक्खनं,* सद्द. 2.520; *आलोकनं च निज्झानं इक्खनं दस्सनं प्यथ,* अभि. प. 775; *पटिक्कमे पवत्तरूपं आलोकनं,* विसुद्धि. 2.255; *आमुखं लोकनं आलोकनं,* विसुद्धि. महाटी. 2.383.

आलोकनविलोकन नपुं., द्व. स. [आलोकनविलोकन], **शा. अ.**, सामने की ओर देखना तथा चारों ओर या इधर उधर देखना, **ला. अ.**, आध्यात्मिक सर्वेक्षण, अपने अन्दर गहराई तक जाकर अन्वेषण, गम्भीर सोच विचार – **नं** प्र. वि., ए. व. – *पञ्चन्नं खन्धानं समवाये आलोकनविलोकनं पञ्ञायति,* दी. नि. अट्ठ. 1.159;

कसिणादिकम्मट्ठानिकेहि वा पन कम्मट्ठानसीसेनेव आलोकनविलोकनं कातब्बं, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प॰) 1(1).272; स॰ प॰ के रूप में, – *रूपे अभिक्कमपटिक्कमआलोकनविलोकनसमिञ्जनपसारणवसेन,* विसुद्धि॰ 2.255.

आलोकना स्त्री॰, सूक्ष्म परीक्षण, गम्भीर अन्वेषण – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमेसं तिण्णं नयानं अट्ठारसन्नं मूलपदानं आलोकना,* पेटको॰ 334.

आलोकनिमित्त नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आलोकनिमित्त], आलोक का मानसिक प्रतिविम्ब, प्रकाश का मानसिक चित्र – **त्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकसञ्ञन्ति आलोकनिमित्ते उप्पन्नसञ्ञं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.105; *आलोकसञ्ञाति ... आलोकनिमित्ते सञ्ञा,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.89.

आलोकनिस्सय पु॰, तत्पु॰ स॰ [आलोकनिःश्रय], आलोक पर आश्रित रहना, प्रकाश-निर्भरता – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असम्भेदेन चक्खुस्स, रूपापाथगमेन च, आलोकनिस्सयेनापि, समनक्कारहेतुना, ... जायते चक्खुविञ्ञाणं,* अभि॰ अव॰ (पृ॰) 69.

आलोकपज्जोतकर त्रि॰, दिन के प्रकाश को लाने वाला (सूर्य) – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकपज्जोतकरो पभङ्करो, ... भाणुमा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.183.

आलोकपुञ्ज पु॰, तत्पु॰ स॰ [आलोकपुञ्ज], बहुत सारा प्रकाश, प्रकाश की राशि या ढेर, स॰ प॰ के अन्त॰ – *पटिभागनिमित्तं घनविप्पसन्नआलोकपुञ्जसदिसं,* विसुद्धि॰ 1.167.

आलोकफरण पु॰, तत्पु॰ स॰ [आलोकस्फरण], **शा॰ अ॰**, प्रकाश का प्रसार, आलोक का विस्तार अथवा व्यापक फैलाव, **ला॰ अ॰**, प्रज्ञा का प्रसार या फैलाव – **णो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो च आलोकफरणो यञ्च पच्चवेक्खणानिमित्तं,* नेत्ति॰ 74; – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दिब्बचक्खु नाम आलोकफरणेन उप्पन्नं ञाणं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.2; – **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकफरणे उप्पज्जतीति दिब्बचक्खुपञ्ञा आलोकफरणता नाम,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.224; – **समत्थ** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आलोकस्फरणसमर्थ], आलोक अथवा प्रभा के फैलाव में सक्षम – **त्थो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तीसु दीपेसु एकस्मिं खणे आलोकफरणसमत्थो आदिच्चो,* उदा॰ अट्ठ॰ 78.

आलोकफरणता स्त्री॰, आलोकफरण का भाव॰ [आलोकस्फरणत्व, नपुं॰], प्रकाश अथवा प्रज्ञा की दीप्ति का व्यापक प्रसार होना, दिव्य-चक्षु, प्रज्ञा, सम्मासमाधि के पांच अङ्गों में से प्रथम के रूप में निर्दिष्ट – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चङ्गिको सम्मासमाधि... आलोकफरणता ...,* दी॰ नि॰ 3.223; *आलोकफरणे उप्पज्जतीति दिब्बचक्खुपञ्ञा आलोकफरणता नाम,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.224.

आलोकफरणब्रह्म पु॰, आलोक का व्यापक विस्तार करने वाला ब्रह्मा – **ह्मा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लोकधातुसतसहस्सम्हि आलोकफरणब्रह्मा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.107.

आलोकबहुल त्रि॰, ब॰ स॰ [आलोकबहुल], प्रज्ञा के प्रकाश की बहुतायत वाला, अत्यधिक मात्रा में प्रज्ञा के आलोक से युक्त, महन्तत्त एवं वेपुलत्त की प्राप्ति के लिए आधारभूत छ गुणों से युक्त, ज्ञान के प्रकाश से प्रदीप्त – **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खु आलोकबहुलो च होति ...,* अ॰ नि॰ 2(2).133; *आलोकबहुलोति ञाणालोकबहुलो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.141.

आलोकभूत त्रि॰, [आलोकभूत], तेजस्वी, ओजस्वी, ज्योति से प्रदीप्त – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *जोतिना युत्ततो जोति, आलोकीभूतोति वुत्तं होति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.143; – **तं**[1] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पस्स ... आलोकभूतं तिट्ठन्तं, उमङ्गं साधु मापित'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.289; – **तं**[2] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकजातन्ति आलोकभूतं, जातालोकं वा,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.23.

आलोकलेन नपुं॰, व्य॰ सं॰, श्रीलङ्का में आधुनिक नगर कैण्डी के लगभग पन्द्रह मील-उत्तर की ओर अवस्थित मातले के निकट में विद्यमान आधुनिक आळुविहार, जहां वट्टगामणि अभय के शासनकाल (89–77 ई॰ पू॰) में पालि तिपिटक एवं अट्ठकथाओं को पहली बार लिपिबद्ध किया गया, उत्तरकालीन सिंहली पालि-रचनाओं में ही उल्लिखित म॰ वं॰ एवं दी॰ वं॰ में इसका कोई भी उल्लेख अप्राप्त – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकलेने निसिन्ना जनपदाधिपतिना कतारक्खा पोत्थकेसु लिखापयुं,* जिना॰ 61; स॰ प॰ के अन्त॰, – *राजा मातुलरट्ठस्मिं आलोकलेनआदिसु, तेसु तेसु च रट्ठेसु गिरिलेने तहिं तहिं,* चू॰ वं॰ 98.65.

आलोकविद्धंसनसदिसता स्त्री॰, भाव॰, प्रकाश के विखराव की समानता, उजाला के फैल जाने जैसा – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ञाणालोकपरिब्रूहनताय मग्गभावनाय आलोकविद्धंसनसदिसता,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.474; पाठा॰ आलोकविदंसनसदिसता.

आलोकसञ्जानन नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आलोक को सम्यक्रूप से जानना, स॰ प॰ के अन्त॰ – *विभूतं कत्वा*

मनसिकरणेनउपट्ठितआलोकसञ्जाननेन, विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.72-73; – **समत्थ** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, आलोक का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम – **त्थाय** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रत्तिम्पि दिवादिट्ठालोकसञ्जाननसमत्थाय ... सञ्ञाय समन्नागतो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.172.

आलोकसञ्ञत्थ पु॰, तत्पु॰ स॰, आलोकसंज्ञा का महत्त्व या प्रयोजन, आलोकयुक्त परिशुद्ध चेतना की महत्ता – **त्थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *थिनमिद्धं पजहन्तो आलोकसञ्ञत्थं सन्दस्सेति,* पटि॰ म॰ 96.

आलोकसञ्ञा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आलोकसंज्ञा], **शा॰ अ॰** थीन (स्त्यान, चित्त की शिथिलता) एवं मिद्ध (मृद्ध, चेतसिकों की शिथिलता) के प्रतिपक्षभूत आलोक या प्रकाश को निमित्त बनाकर उत्पन्न संज्ञा (चेतना), **ला॰ अ॰** द्वितीय समाधिभावना जो ञाणदस्सनपटिलाभ की स्थिति को प्राप्त करा देती है, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकसञ्ञाति थिनमिद्धस्स पटिपक्खे आलोकनिमित्ते सञ्ञा,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.89; *आलोकसञ्ञा अरियानं निय्यानं,* पटि॰ म॰ 157; *थिनमिद्धं असल्लेखो, आलोकसञ्ञा सल्लेखो,* पटि॰ म॰ 95; – **ञ्ञं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खु आलोकसञ्ञं मनसि करोति,* दी॰ नि॰ 3.178; *आलोकसञ्ञं मनसिकरोतीति दिवा वा रत्तिं वा सूरियचन्दपज्जोतमणिआदीनं आलोकं आलोकोति मनसिकरोति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.172; *आलोकसञ्ञन्ति आलोकनिमित्ते उप्पन्नसञ्ञं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.105; – **ञ्ञाय**[1] ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदं उभयं आलोकसञ्ञाय उपकारत्ता वुत्तं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).117; – **ञ्ञाय**[2] तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकसञ्ञाय थीनमिद्धस्स ... भावेतब्बं भावेन्तो सिक्खति,* पटि॰ म॰ 41.

आलोकसञ्ञाखन्ति स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, आलोकसंज्ञा की प्रवृत्ति, आलोकसंज्ञा की प्रवणता – *आलोकसञ्ञाखन्ति थिनमिद्धेन सुञ्ञा,* पटि॰ म॰ 358; ... *खमनतो रुच्चनतो खन्तीति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.226.

आलोकसञ्ञागरुक त्रि॰, जागरूक संज्ञा अथवा चेतना की गुरुता से युक्त, थीन एवं मिद्ध से मुक्त – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'अयं पुग्गलो आलोकसञ्ञागरुको आलोकसञ्ञासयो आलोकसञ्ञाधिमुत्तो'ति, आलोकसञ्ञं सेवन्तञ्ञेव जानाति,* पटि॰ म॰ 113.

आलोकसञ्ञाधिट्ठान नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आलोकसंज्ञा के विषय में दृढ़ निश्चय, जागरूक संज्ञा अथवा आलोकसंज्ञा का आधार-स्थल – **नं** म॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकसञ्ञाधिट्ठानं थिनमिद्धेन सुञ्ञं,* पटि॰ म॰ 358; *रोचितानियेव पविसित्वा तिट्ठनतो अधिट्ठानन्ति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.226.

आलोकसञ्ञाधिपतत्त नपुं॰, भाव॰, आलोक संज्ञा पर पूर्ण रूप से आधिपत्य – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकसञ्ञाधिपतत्ता पञ्ञा थिनमिद्धतो सञ्ञाय विवट्टतीति,* पटि॰ म॰ 99.

आलोकसञ्ञाधिमुत्त त्रि॰, आलोकमयी संज्ञा अथवा जागरूक चेतना की प्राप्ति हेतु स्वयं को पूरी तरह से लगाया हुआ – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'अयं पुग्गलो आलोकसञ्ञागरुको आलोकसञ्ञासयो आलोकसञ्ञाधिमुत्तो'ति ...,* पटि॰ म॰ 113.

आलोकसञ्ञापटिलाभ पु॰, तत्पु॰ स॰ [आलोकसंज्ञाप्रतिलाभ], आलोकमयी संज्ञा की प्राप्ति, जागरूक चेतना की प्राप्ति – **भो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकसञ्ञापटिलाभो थिनमिद्धेन सुञ्ञो,* पटि॰ म॰ 357; *परिग्गहितानि पत्तिवसेन पटिलभन्तीति पटिलाभोति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.226.

आलोकसञ्ञापटिवेध पु॰, तत्पु॰ स॰, आलोकसंज्ञा का प्रतिवेध-ज्ञान, आलोक संज्ञा के कारण प्राप्त गम्भीर प्रतिवेध ज्ञान – **धो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकसञ्ञाप्पटिवेधो थिनमिद्धेन सुञ्ञो,* पटि॰ म॰ 357; *पटिलद्धानि ञाणवसेन पटिविज्झीयन्तीति पटिवेधोति च वुत्तानि,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.226; द्रष्ट॰ पटिवेध के अन्त॰.

आलोकसञ्ञापरिग्गह पु॰, तत्पु॰ स॰, आलोकमयी संज्ञा का पूर्णरूप से ग्रहण अथवा प्राप्ति – **हो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकसञ्ञापरिग्गहो, थिनमिद्धेन सुञ्ञो,* पटि॰ म॰ 357; *पुब्बभागे एसितानि अपरभागे परिग्गय्हन्तीति परिग्गहोति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.226.

आलोकसञ्ञापरियोगाहन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आलोकसञ्ञपर्यवगाहन], आलोकसंज्ञा का पूर्णरूप से अवगाहन, आलोक संज्ञा में प्रवेश कर यथारुचि सेवन – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकसञ्ञापरियोगाहणं थिनमिद्धेन सुञ्ञं,* पटि॰ म॰ 358; *पविसित्वा ठितानं यथारुचिमेव सेवनतो परियोगाहनन्ति च वुत्तानि,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.226.

आलोकसञ्ञामनसिकार पु॰, तत्पु॰ स॰, आलोकसंज्ञा को मन में कर लेना अथवा मन द्वारा आलोकसंज्ञा का ग्रहण, आलोक संज्ञा की ओर मन का ध्यान – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अतिभोजने निमित्तग्गाहो इरियापथसम्परिवत्तनता*

आलोकसञ्ञामनसिकारो अब्भोकासवासो कल्याणमित्तता सप्पायकथाति, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).294.

आलोकसञ्ञासय त्रि॰, ब॰ स॰, आलोक संज्ञा के प्रति मानसिक अभिरुचि अथवा मन के रुझान से युक्त – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'अयं पुग्गलो आलोकसञ्ञागरुको आलोकसञ्ञासयो आलोकसञ्ञाधिमुत्तो'ति,* पटि॰ म॰ 113.

आलोकसञ्ञी त्रि॰, [आलोकसंज्ञिन्], 1. रात में भी दिन में देखे गए सूर्य के आलोक को पूर्णरूप से जानने में समर्थ, नीवरणों से रहित विशुद्ध संज्ञा (चेतना) से, युक्त 2. आवरणरहित, परिशुद्ध तथा आलोकमयी संज्ञा से युक्त – **ञ्ञी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *विगतथिनमिद्धो विहरति आलोकसञ्ञी,* दी॰ नि॰ 1.63; *आलोकसञ्ञीति रत्तिम्पि दिवादिट्ठालोकसञ्जाननसमत्थाय विगतनीवरणाय, परिसुद्धाय सञ्ञाय समन्नागतो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.172; विभ॰ अट्ठ॰ 348; *अयं सञ्ञा आलोका होति विवटा परिसुद्धा परियोदाता, तेन वुच्चति "आलोकसञ्ञी"ति,* विभ॰ 284; विभ॰ अट्ठ॰ 348.

आलोकसञ्ञेकत्त नपुं॰, भाव॰, तत्पु॰ स॰ [आलोकसंज्ञैकत्व], (थीन–मिद्ध के नानात्व के विपरीत) आलोकमयी संज्ञा अथवा आलोक-विषयिणी संज्ञा का एकत्व (एक होने की अवस्था) – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकसञ्ञेकत्तं चेतयतो थिनमिद्धतो चित्तं विवट्टतीति,* पटि॰ म॰ 100; *आलोकसञ्ञेकत्तं चेतयतो थिनमिद्धेन सुञ्ञं,* पटि॰ म॰ 357.

आलोकसञ्ञेसना स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ [आलोकसंज्ञैषणा], आलोकमयी अथवा आलोक-विषयिणी संज्ञा की तलाश – *आलोकसञ्ञेसना थिनमिद्धेन सुञ्ञा,* पटि॰ म॰ 357.

आलोकसन्धि पु॰, तत्पु॰ स॰ [आलोकसन्धि], खिड़की, झरोखा, गवाक्ष, प्रकाश एवं धूप आदि का खुला प्रवेशस्थान, खिड़की की किवाड़ी – *वातपानं गवक्खो च जालं च सीहपञ्जरं आलोकसन्धि,* अभि॰ प॰ 216; *आलोकानं आतपानं पविसनट्ठानं सन्धि छिद्दन्ति आलोक सन्धि,* अभि॰ प॰ 216 पर सूची; *अञ्ञतरो भिक्खु ... सङ्घस्स आलोकसन्धिं,* पारा॰ 78; *आलोकसन्धीति वातपानकवाटका वुच्चन्ति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 44; – **न्धिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकसन्धिं दिवसं करोतु,* जा॰ अट्ठ॰ 4.276; *आलोकसन्धिं दिवसन्ति एकदिवसेनेव वातपानं करोतु,* जा॰ अट्ठ॰ 4.277; – **कण्णभाग** पु॰, द्व॰ स॰, खिड़कियों के किवाड़ों के भाग एवं प्रकोष्ठ के कोनों के भाग – **गा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आलोकसन्धिकण्णभागा पमज्जितब्बा,* महाव॰ 53; *आलोकसन्धिकण्णभागाति आलोकसन्धिभागा च कण्णभागा च अन्तरबाहिरवातपानकवाटकानि च गब्भस्स च चत्तारो कोणा पमज्जितब्बाति अत्थो,* महाव॰ अट्ठ॰ 249; – **करणमत्त** नपुं॰, केवल खिड़की बनाना – **त्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकसन्धिकरणमत्तेनपि नवकम्मं देन्ति,* चूळव॰ 303; – **परिकम्म** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आलोकसन्धिपरिकर्म], खिड़की की मरम्मत, खिड़की की रगांई, पुताई अथवा साज-सजावट – **म्माय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महल्लकं ... आलोकसन्धिपरिकम्माय द्वत्तिच्छदनस्स परियाय अप्पहरिते ठितेन अधिट्ठातब्बं,* पाचि॰ 69; *आलोकसन्धिपरिकम्मायाति एत्थ आलोकसन्धीति वातपानकवाटका वुच्चन्ति ... तस्मा सब्बदिस्सासु कवाटवित्थारप्पमाणो ओकासो आलोकसन्धि परिकम्मत्थायलिम्पितब्बो वा लेपापेतब्बो वाति अयमेत्थ अधिप्पायो,* पाचि॰ अट्ठ॰ 44.

आलोकित नपुं॰, आ + √लुक का भू॰ क॰ कृ॰ [आलोकित], अपने सामने देखना, अपने आगे की ओर देखना – **तं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकितं नाम पुरतो पेक्खनं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).271; प्रायः विलोकित (चारों ओर ताकना) के साथ प्रयुक्त, – *आलोकितं विलोकितं समिञ्जितं ...,* अ॰ नि॰ 1(2).120; – **तं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकितविलोकितं ... मय्हं रुच्चति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.106; – **तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पासादिकेन ... आलोकितेन विलोकितेन ...,* महाव॰ 45; – **ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकिते विलोकिते सम्पजानकारी होति,* दी॰ नि॰ 1.62.

आलोकितविलोकित नपुं॰, समा॰ द्व॰ स॰ [आलोकितविलोकित], आगे की ओर देखना तथा चारों ओर अथवा इधर उधर देखना – **तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकितविलोकितं न पासादिकं होति,* सा॰ सं॰ 24(सिंहली); स॰प॰ के अन्त॰, – *आलोकितविलोकित-कथितहसितगमनट्ठानादीहि विसेसो होतियेव,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.165.

आलोकूपनिस्सय पु॰, तत्पु॰ स॰, आलोक, प्रज्ञा या ज्ञान के प्रकाश का आश्रय अथवा सहारा – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चक्खायतनं निस्साय इट्ठसम्मतं रुपायत आलम्बित्वा आलोकूपनिस्सयं लभित्वा मनोधातावज्जनानन्तरं एव उप्पज्जति कुसलविपाकं उपेक्खासहगतं चक्खुविञ्ञाणं,* रूपा॰ वि॰ 153(रो॰).

आलोकेति आ + √लुक का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, प्रायः 'विलोकेति' के साथ प्रयुक्त [आलोकेति], **शा॰ अ॰,** सामने की ओर अथवा अपने आगे की ओर देखता है, **ला॰ अ॰,** मान बैठता है, समझ लेता है – *भिक्खु ..., आलोकेति न पस्सति,* स॰ नि॰ 1(1).230; *तव पुथुज्जनिकइद्धिया जलन्तं अङ्गुट्ठकं आलोकेति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.255; – **न्तस्स** वर्त॰ कृ॰, पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकेन्तस्स वा ... कायस्स थम्भना,* ध॰ स॰ 720; – **केय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सतो आलोकेय्य, सतो विलोकेय्य,* चूळनि॰ 35; – **केसि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *राहुलो ... तथागतं आलोकेसि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.95; – **केस्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"आलोकेस्सामी"ति चित्ते उप्पन्ने,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).272; – **त्वान** पू॰ का॰ कृ॰ – *आलोकेत्वान जानाति "अयं धम्मो" ... ति सम्मा योजना,* पेटको॰ 334; – **केतब्बा** सं॰ कृ॰, स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुरत्थिमा दिसा आलोकेतब्बा होति ..., पच्छिमा दिसा, ... आलोकेतब्बा होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).272; – **तब्बं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं ते आलोकितब्बं, एवं ते विलोकितब्बं,* म॰ नि॰ 2.132; – **तो** भू॰ क॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकिते च वीरेन पक्कामिं, पाचिनामुखो,* अप॰ 1.129; – **कापेतुं** प्रेर॰, निमि॰ कृ॰ – *रूपकायं ... आलोकापेतुं विलोकापेतुं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 127.

आलोकेतु पु॰, आ + √लोक से व्यु॰, क॰ ना॰ [आलोकयितृ], आलोकन की क्रिया को करने वाला, आगे की ओर देखने वाला, सामने की ओर ताकने वाला – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोकेता वा विलोकेता वा नत्थि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.158.

आलोङ्हचञ्सू पु॰, ब्य॰ सं॰, म्या-मां के एक प्राचीन शासक का नाम, क्यां-सित्था का पौत्र – *कलियुगे हि अट्ठासीताधिके सत्तवस्ससते नरपतिरञ्ञो धीताय सद्धिं 'आलोङ्हचञ्सू'-रञ्ञो पुत्तो आनन्दसुरियो नाम सन्थवं कत्वा एकं समिद्धिकं नाम पुत्तं विजायि,* सा॰ वं॰ 86.

आलोचन नपुं॰, आ + √लोच से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आलोचन], देखना, सर्वेक्षण करना, जांच पड़ताल करना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोचनं पेक्खनं,* सद्द॰ 2.558; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, दिसा॰, दिशाओं की ओर देखना – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दिसालोचनमाहंसु, चतुत्थो नयलञ्जको,* पेटको॰ 167.

आलोप पु॰, आ + √लुप से व्यु॰ [आलोप], **1.** लूटपाट, झीना-झपटी, छीन लेना, डकैती, लूट लेना, प्रायः "छेदन-वध-बन्धन-विपरामेस-सहसाकारा पटिक्रितो" में प्रयुक्त – **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *छेदनवधबन्धनविपरामोस-आलोपसहसाकारा पटिविरतो,* दी॰ नि॰ 1.5; *आलोपो वुच्चति गामनिगमादीनं विलोपकरणं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.74; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).112; *आलोपसहसाकारा, निकती वञ्चनानि च,* जा॰ अट्ठ॰ 4.11; – **पा** ब॰ व॰ – *तत्थ वधो च बन्धो च निकती वञ्चनानि च, आलोपा सहसाकारा, तानि सो तत्थ सिक्खति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.394; **2.** भोजन का ग्रास या कौर, निवाला, बहुत थोड़ा भोजन – **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोपो कबळो भवे,* अभि॰ प॰ 466; *परिमण्डलो आलोपो कातब्बो,* चूळव॰ 357; – **पं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दीघं आलोपं करोन्तस्स दुक्कटं,* परि॰ 49; – **यदन्तरं** *एकं आलोपं सङ्खादित्वा अज्झोहरामि,* अ॰ नि॰ 2(2).24; *सो मे पक्केन हत्थेन, आलोपं उपनामयि,* थेरगा॰ 1058; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोपस्स आलोपस्स अनुरूपं यावचरिमालोपप्पहोनकं मच्छमंसादिब्यञ्जनं पक्खिपितब्बं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.256; – **पे**[1] सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दिब्बं ओजं गहेत्वा ... उद्धटुद्धटे आलोपे आकिरन्ति,* मि॰ प॰ 217; – **पे**[2] द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चत्तारो पञ्च आलोपे सङ्खादित्वा अज्झोहरामि,* अ॰ नि॰ 2(2).23; – **पेहि** तृ/प॰ वि॰, ब॰ व॰ – *फासुविहारो नाम चतूहि पञ्चहि आलोपेहि ऊनूदरता,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 424; – **पानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चतुन्नं पञ्चन्नं आलोपानं ओकासे सति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).292.

आलोपट्ठितिका स्त्री॰, 'निमन्तन' पर भिक्षुओं को एक एक ग्रास भोजन देने की प्रथा, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोपट्ठितिका नाम नत्थि,* सारत्थ॰ टी॰ 3.368.

आलोपति आ + √लुप का √मुद के मि॰ सा॰ के आधार पर वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आलोपति], लूट लेता है, छीन लेता है, डकैती करके ले लेता है – *आलोपति साहसा यो परेसं,* थेरगा॰ 743; *जिनापेति परं हन्त्वा, वधित्वा अथ सोचयित्वा, आलोपति सहसा यो परेसं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.237.

आलोपदान नपुं॰, तत्पु॰ स॰, एक ग्रास भोजन का दान, स्वल्प मात्रा में भोजन दान – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेल ... मालोपदानं च अदापयिं,* म॰ वं॰ टी॰ 549.

आलोपपिण्डदातु त्रि॰, बहुत कम मात्रा में भोजन का दान करने वाला, केवल एक ग्रास-मात्र भोजन का दान करने वाला – **तारो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आलोपपिण्डदातारो, पटिग्गहे परिभासिम्हसे,* पे॰ व॰ 397; *आलोपपिण्डदातारोति*

आलोपमत्तस्सपि भोजनपिण्डस्स दायका, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 152.

आलोपभत्तट्ठितिका स्त्री॰, विनय की वह व्यवस्था जिसके अनुसार 'निमन्तन' के अवसर पर भिक्षुओं को एक बार में भोजन का एक ही निवाला देने की अनुमति है – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *गहेत्वा आलोपभत्तट्ठितिकाय भाजेतब्बं,* चूळव॰ अट्ठ॰ 96; – **कतो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोपभत्तट्ठितिकतो पट्ठाय आलोपसङ्खेपेन भाजेतब्बं,* तदे॰; द्रष्ट॰, ठितिका, आलोपट्ठितिका तथा उद्देसभत्त के अन्त॰, (आगे).

आलोपसङ्खेप पु॰, तत्पु॰ स॰, 'निमन्तन' के अवसर पर एक बार में एक ग्रास या निवाले के रूप में परोसे जा रहे भोजन का विभाजन (उद्देसभत्त के अवसर पर इस प्रकार का विभाजन विनय-सम्मत नहीं माना गया है) – **पेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलोपसङ्खेपेन भाजेतब्बं,* चूळव॰ अट्ठ॰ 96.

आलोपिक त्रि॰, आलोप से व्यु॰, निवाले भर भोजन पर जीवित रहने वाला, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **सत्ता॰**- सात निवालों वाले भोजन पर जीवित रहने वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्तागारिको वा होति सत्तालोपिको,* म॰ नि॰ 2.5.

आलोळ[1] पु॰/नपुं॰, आ + √लुळ से व्यु॰ [आलोड], **1.** हिला देना, **2.** घालमेल कर देना, क्षोभ, **3.** व्यग्रता, संभ्रम, खलबलाहट – **ळं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'एस गन्त्वा किञ्चि आलोळं करेय्या'ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.26.

आलोळ[2] त्रि॰, [आलोल], चञ्चल, व्यग्र, अस्थिर, हिलडुल रहा, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **दोला॰**- – **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दोळालोलाव ते कण्णा, वेवण्णं समुपागता,* अप॰ 2.245.

आलोळित त्रि॰, आ + √लुळ का प्रेर॰, भू॰ क॰ कृ॰ [आलोडित], व्यग्र, विक्षोभित या बेचैन कर दिया गया, बाधित, मथ दिया गया, दुष्प्रभावित कर दिया गया – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मत्तकुञ्जरेहि ... आलोळितपदेसं,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 277.

आलोळी स्त्री॰, आ + √लुळ से व्यु॰, तरल मिश्रण, स॰ उ॰ प॰ में प्राप्त, **सीता॰**- ठण्डा तरल मिश्रण – **ळिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन खो पन समयेन अञ्ञतरस्स भिक्खुनो घरदिन्नकाबाधो होति, भगवतो एतमत्थं आरोचेसुं अनुजानामि, भिक्खवे, सितालोळिं पायेतुन्ति,* महाव॰ 282.

आलोळेति/आलोलेति/आलुळेति आ + √लुळ का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आलोडयति], **1.** आलोड़ित कर देता है, खौल बौल कर देता है, मथ देता है, घालमेल कर देता है, हिला डुला देता है – **न्ति** ब॰ व॰ – *सोण्डाय उदकं आलोळेन्ति,* अ॰ नि॰ 3(1).240; – **ळेन्तो/लुलयन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उदकं आलुळेन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.410; – **लयमानो** उपरिवत्, आत्मने॰ – *सिथिलं सम्मज्जनिं गहेत्वा सम्परिवत्तकं आलोळयमानो,* विसुद्धि॰ 1.103; *आलोळयमानो वालिकाकचवरानि आकुलयन्तो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.118; – **ळेत्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *सलाकाय वा ... हेट्ठुपरियसेनेव आलोळेत्वा,* चूळव॰ अट्ठ॰ 97; *उण्होदकेन फाणितं आलोलेत्वा,* स॰ नि॰ 1(1).204; **2.** संभ्रम में डाल देता है, व्यामिश्रित करा देता है, आपस में गड्ड वड्ड करा देता है, अव्यवस्थित बना देता है – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अभिधम्मिका पन धम्मन्तरं न आलोळेन्ति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 31; – **ळेसि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अभिसम्बुज्झनकसत्तं अयं किलेसो आलोळेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.227; *विसुद्धसत्तेपेस आलोलेसियेवाति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.296; – **ळेस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तादिसं किं नालोलेस्सती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.227; **3.** (ग्रन्थ का) मन्थन करता है, खंगालता है – **ळेत्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *इमिस्सा गाथाय अत्थं पिटकत्तयं आलोलेत्वा संवण्णेही'ति,* सा॰ वं॰ 28; *तीसु वेदेसु आलोळेत्वा पञ्हं पुच्छि,* सा॰ वं॰ 28.

आळ/अळ नपुं॰, [अल], बिच्छू का डंक – **ळं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आळं विच्छिक – नङ्गुलं,* अभि॰ प॰ 621 पर सूची.

आळक[1] पु॰/नपुं॰, **क.** पशुओं को बन्द करके रखने हेतु प्रयुक्त बांड़ा या व्रज, वह घिरा हुआ क्षेत्र जिसके भीतर पशुओं को खूटों अथवा पगहों में बांध कर रखा जाता है, पशुशाला, गोशाला, गोढ – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उसभोव आळकं भेत्वा, पत्तो सम्बोधिमुत्तमं,* बु॰ वं॰ 26.2; *आळकन्ति गोट्ठं, यथा उसभो गोट्ठं भिन्दित्वा ...,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 303; – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पक्खिपन्तं ममाळके,* चरिया॰ 2.1.9(पृ.385); *ममाळकेति आलानत्थम्भे,* चरिया॰ अट्ठ॰ 109; **ख.** बाण या तीर को सीधा करने हेतु प्रयुक्त उपकरण – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सासो आळकं परिहरति वङ्कजिम्हकुटिलनाराचस्स उजुकरणाय,* मि॰ प॰ 391; *यथा नाम उसुकारो अरञ्ञतो एकं वङ्कदण्डकं आहरित्वा नित्तचं कत्वा कञ्जियतेलेन मक्खेत्वा अङ्गारकपल्ले तापेत्वा रुक्खालके उप्पीळेत्वा निवङ्कं उजुं वालविज्झनयोग्गं करोति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.163; **ग.** एक पौधे या झाड़ीदार पादप का

नाम, अलर्क अकौआ – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आलका इसिमुग्गा च कदलिमातुलुङ्गियो,* अप॰ 1.13; *आळकादयो गच्छा,* अप॰ अट्ठ॰ 1.219.

आळक² / अलक पु॰, [अलक], घुंघराले बाल, जुल्फें, मस्तक पर लटक रहे घूंघर, स॰ प॰ के रूप में, – *कोच्छं नाम आळकादिसण्ठापनत्थं केसादीनं उल्लिखनसाधनं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 296.

आळकमन्द त्रि॰, देवनगरी अलका के समान भीड़ से भरे हुए, एक ही आंगन वाला तथा मनुष्यों की भीड़ से भरा हुआ – **न्दा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तेन खो पन समयेन विहारा आळकमन्दा होन्ति,* चूळव॰ 278; *आळकमन्दाति एकङ्गणा मनुस्साभिकिण्णा,* चूळव॰ अट्ठ॰ 61; पाठा॰ अळकमन्दाति.

आळवक¹ / आलवक त्रि॰, 1. आळवि नामक नगर अथवा जनपद का निवासी, 2. आळव-चेतिय से सम्बद्ध (भिक्षु), 3. एक प्रभावशाली यक्ष – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ खो आळवको यक्खो येन भगवा तेनुपसङ्कमि,* सु॰ नि॰ 111; *अञ्ञतरोपि आळवको भिक्खु रुक्खं छिन्दति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.4; *पञ्चालचण्डो आळवको पज्जुन्नो सुमनो सुमुखो,* दी॰ नि॰ 3.155; – **का** ब॰ व॰ – *आलवका भिक्खू एवरूपानि नवकम्मानि देन्ति,* चूळव॰ 302; *तत्थ आळवकाति आळविरट्ठे जाता दारका आळवका नाम, ते पब्बजितकालेपि "आळवका"त्वेव पञ्ञायिंसु,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.134; – **के** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *भिक्खूसङ्घं सन्निपातापेत्वा आळवके भिक्खू पटिपुच्छि,* पारा॰ 225; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आळवकस्सत्थाय तिसयोजनं, तथा अङ्गुलिमालस्स,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.194.

आळवक² / आलवक पु॰, व्य॰ सं॰, आळवि के राजा का पुत्र हत्थक आळवक, बुद्ध द्वारा अपने उपासक-श्रावकों के बीच चार संग्रहवस्तुओं से युक्त गृहपतियों में अग्रगण्य के रूप में घोषित एक गृहस्थ – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आळवको किर राजा विविधनाटकूपभोगं छड्डेत्वा ... सत्तमे सत्तमे दिवसे मिगवं गच्छन्तो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.278; ... *एसा, तुला एतं पमाणं मम सावकानं उपासकानं यदिदं चित्तो च गहपति हत्थको च आळवको'ति,* अ॰ नि॰ 1(1).107; *उपासकेसु चित्तो गहपति हत्थको आळवकोति द्वे अग्गउपासका ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.193; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्तहि अच्छरियेहि अब्भुतेहि धम्मेहि समन्नागतं हत्थकं आळवकं धारेथ,* अ॰ नि॰ 3(1).53.

आळवकगज्जित नपुं॰, बौद्धधर्म की अपर-शैलीय नामक सिंहली शाखा के उन तीन ग्रन्थों में से एक जो बुद्धवचनों के रूप में थेरवादियों द्वारा स्वीकृत नहीं हुआ – **तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गुळ्हवेस्सन्तरं ... आळवकगज्जितं वेदल्लपिटकन्ति अबुद्धवचनं परियत्तिसद्धम्मप्पतिरूपकं नाम,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.177.

आळवकचेतिय नपुं॰, आळवक नामक एक यक्ष का चैत्य अथवा उसका वास-स्थान – **यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गोतमकचेतियं, आळवकचेतियं'न्ति वुत्ते तेसं यक्खानं निवसनट्ठानं,* अप॰ अट्ठ॰ 2.49.

आळवकपुच्छा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, आळवक यक्ष द्वारा पूछा गया प्रश्न – **च्छा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गाथानं पुच्छा अद्धानं गच्छति, सासनं धारेतुं न सक्कोति, सभियपुच्छा आळवकपुच्छा विय च,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.74.

आळवकयक्ख पु॰, कर्म॰ स॰, सु॰ नि॰ एवं स॰ नि॰ में उल्लिखित एक प्रभावशाली यक्ष जिसे बुद्ध ने सद्धर्म के प्रति श्रद्धावान बनाया, स॰ नि॰ 1(1).247-249; सु॰ नि॰ 111-113; स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.278-294; सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.186-203; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.288; स॰ प॰ के अन्त॰, – *आळवकसूचिलोमखरलोमयक्खसक्कदेवराजादयो,* विसुद्धि॰ 1.199-200.

आळवकयुद्ध पु॰, तत्पु॰ स॰, आळवक नामक यक्ष से (बुद्ध का) आमना सामना अथवा संघर्ष – **द्धं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इतो पट्ठाय आळवकयुद्धं वित्थारेतब्बं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.290.

आळवकसुत्त नपुं॰, 1. सु॰ नि॰ के उरगवग्ग का एक सुत्त जिस में बुद्ध द्वारा आळवक यक्ष को धर्म के प्रति श्रद्धावान बनाने का उल्लेख है, 2. स॰ नि॰ के यक्खसंयुत्त का बारहवां सुत्त, जिस में सु॰ नि॰ के आळवक सुत्त का संक्षेपण कर दिया गया है, सु॰ नि॰ 111-113, स॰ नि॰ 1(1).247-249; – **त्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वित्थारं पन आळवकसुत्ते वण्णयिस्साम,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.121; स॰ प॰ के अन्त॰, – *आळवक–सूचिलोम-खरलोमसुत्तादीनि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).19; – **वण्णना** स्त्री॰, 1. सु॰ नि॰ की अट्ठ॰ के एक भाग का शीर्षक जिस में आळवक सुत्त की व्याख्या की गई है, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.186 203; 2. स॰ नि॰ अट्ठ॰ के एक अंश का शीर्षक, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.278-294; – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वित्थारेत्वा कथेतुकामेन आळवकसुत्तवण्णना ओलोकेतब्बा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.290; – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं आळवकसुत्तवण्णनायं आगतनयेनेव वेदितब्बं,* उदा॰ अट्ठ॰ 52.

आळवन्द पु॰, एक तमिल सरदार, जिस का वध राजा परक्कमबाहु महान के सेना-प्रमुख लङ्कापुर द्वारा वडलि-नामक ग्राम में कर दिया गया था – **न्देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निसिन्नेन आळवन्देन युद्धं कत्वान तं वधि,* चू॰ वं॰ 76.134.

आळवन्दप्पेरुमाल / ळ पु॰, एक तमिल राजकुमार, कुलशेखर का शक्तिशाली सामन्त, श्रीलङ्का के सेनाप्रमुख लंकापुर द्वारा युद्धों में दो बार पराजित – **ळो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आळवन्दप्पेरुमाळो ... अलखियरायरव्हयो,* चू॰ वं॰ 76.145; *आळवन्दप्पेरुमालो इच्चेते दुरतिक्कमा,* चू॰ वं॰ 76.223; 232; – **लव्हय** त्रि॰, ब॰ स॰, आळवन्दपेरुमाल नाम वाला – **व्हयेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आळवन्दप्पेरुमालव्हयेन दमिळेन च,* चू॰ वं॰ 76.128.

आळविक त्रि॰, आळवि नगर अथवा आळवि जनपद का रहने वाला अथवा उन के साथ सम्बद्ध – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एको आळविको भिक्खु ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.175; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आळविकस्स पन रञ्ञो धीताति . ..,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 68; – **का¹** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आळवका भिक्खू नवकम्मं करोन्ता,* पाचि॰ 50; *आळविकाति आळवियं जाता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.167; – **का²** स्त्री॰, सेला नामक भिक्षुणी का दूसरा अधिक प्रचलित नाम, – **का** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बुद्धुप्पादे आळवीरट्ठे आळविकस्स रञ्ञो धीता,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 68.

आळविकासुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, स॰ नि॰ 1(1).151-52.

आळविगोतम पु॰, व्य॰ सं॰, आळवि जनपद के एक स्थविर का नाम – **मो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा अहू वक्कलि मुत्तसद्धो भद्रावुधो आळविगोतमो च,* सु॰ नि॰ 1152; *यथा च सोळसन्नं एको भद्रावुधो नाम, यथा च आळविगोतमो च,* चूळनि॰ अट्ठ॰ 80; ... *सद्धाधिमुत्तो अहोसि, सद्धाधुरेन च अरहत्तं पापुणि ... यथा च आळविगोतमो ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.298.

आळवी स्त्री॰, [अटवी], एक नगर तथा एक जनपद का नाम – **वी / वि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आळवीति तं रट्ठम्पि नगरम्पि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.278; *वाराणसी च सावत्थि वेसाली मिथिलाळवी,* अभि॰ प॰ 199; *येन आळवी तेन पक्कामि ... येन आळवी तदवसरि,* पारा॰ 224; *सावत्थाळवि कोसम्बी, सक्कभग्गा पकासिता,* विन॰ वि॰ 3118; उत्त॰ वि॰ 781; – **विं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थाय वत मे बुद्धो, वासायाळविमागमा,* स॰ नि॰ 1(1).249; *आळविं अगमासि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰2.152; – **वियं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकं समयं भगवा आळवियं विहरति ...,* सु॰ नि॰ 111; *छ पनाळवियं वुत्ता,* विन॰ वि॰ 3120; उत्त॰ वि॰ 785; – **नगर** नपुं॰, आळविनामक नगर – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आळविनगरं उपनिस्साय अग्गाळवे चेतिये,* जा॰ अट्ठ॰ 1.163; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आळवियं जाता आळविनगरतोयेव च निक्खम्म पब्बजिता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.167; – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आळविरट्ठे आळविनगरे,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.289; – **राभिमुख** त्रि॰, आळवि नगर की ओर (जा रहा) – **खो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आळविनगराभिमुखो पायासि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.290; – **रट्ठ** नपुं॰, आळवि नाम वाला राष्ट्र – **ट्ठे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आळवीरट्ठे चेतं भवनं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.186; – **वासी** त्रि॰, आलवि जनपद का निवासी – **सिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आळविवासिनो सत्थरि आळविं सम्पत्ते निमन्तेत्वा दानं अदंसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.97.

आळार / आलार / अळार त्रि॰, [अराल], वङ्किम, वक्र, मोड़- युक्त, टेढ़ा – *अळार वेल्लित वङ्कं कुटिल जिम्ह कुञ्चितं,* अभि॰ प॰ 709; – **रानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आळारानि महन्तानि अक्खीनि मणिगुळसदिसानि,* अप॰ अट्ठ॰ 1.286; – **पम्ह** त्रि॰, ब॰ स॰ – **म्हा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आळारपम्हा हसुला, सुसञ्ञा तनुमज्झिमा,* अप॰ 1.19.

आळार / आलार / आलारकालाम पु॰, [बौ॰ सं॰ आराड], सिद्धार्थ गौतम के प्रथम आचार्य जिन से उन्होंने आकिञ्चन्यायतन नामक अरूपध्यान की शिक्षा ग्रहण की थी – *आळारोति तस्स नामं दीघपिङ्गलो किरेसो, तेनस्स आळारोति नामं अहोसि, कालामोति गोत्तं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.143; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).74; *आळारो कालामो आचरियो मे समानो,* म॰ नि॰ 1.224; *आळारो कालामो आकिञ्चञ्ञायतनं पवेदेसि,* म॰ नि॰ 1.223; – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बोधिसत्तोपि ... चारिकं चरमानो आळारञ्च कालामं उदकञ्च रामपुत्तं उपसङ्कमित्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.76; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यंनूनाहं आळारस्स कालामस्स पठमं धम्मं देसेय्यं,* महाव॰ 10.

आळारक / अद्वारक त्रि॰, बिना द्वार वाला, चारों ओर से घिरा हुआ – **कं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथापि अस्स नगरं ..., अद्वारकं आयसं ..., परिखाउपेतं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.77; पाठा॰ अद्वारकं.

आळारवेदल्लभाणवार पु., महापरिनिब्बान सुत्त के चतुर्थ भाणवार का शीर्षक, जिसमें आळारकालाम का कथानक दिया गया है, दी. नि. 93-103.

आळारिक त्रि., [आरालिक], रसोइया, रसोइए का सहायक या कर्मचारी – **को** प्र. वि., ए. व. – *भत्तकारो सूपकारो सूदो आळारिको तथा,* अभि. प. 464; *आळारिको तदा होमि,* जा. अट्ठ. 5.285; *आळारिकोति भत्तकारको, ... भत्तकारकदासो विय,* तदे.; – **का** ब. व. – *पुथुसिप्पायतनानि, सेय्यथिदं ... आळारिका कप्पका न्हापका सूदा,* दी. नि. 1.45; *आळारिकाति पूविका, ... सूदाति भत्तकारका,* दी. नि. अट्ठ. 1.131; – **के**[1] द्वि. वि., ब. व. – *आळारिके च सूदे च,* जा. अट्ठ. 7.168; *आळारिकेति पूवपाके, सूदेति भत्तकारके,* तदे.; – **के**[2] सप्त. वि., ए. व. – *'आळारिके भते पोसे, वेतनेन अनत्थिके'ति,* जा. अट्ठ. 5.288; – **कम्म** नपुं., तत्पु. स. [आरालिककर्म], रसोइए का काम, भोजन बनाने का काम – **म्मं** द्वि. वि., ए. व. – *आळारिककम्मं कत्वा वसनभाव'न्ति,* जा. अट्ठ. 5.295; – **त्त** नपुं., भाव. [आरालिकत्व], रसोइयापन, रसोइया होना, भोजन बनाने वाला होना – **त्तं** द्वि. वि., ए. व. – *आळारिकत्तञ्च भत्तकत्तञ्च,* जा. अट्ठ. 5.288; *धीतानं आळारिकत्तं करोन्तस्साति,* जा. अट्ठ. 5.297.

आळाहन / आळाहण नपुं., आ + √दह के प्रेर. से व्यु., क्रि. ना. [आदाहन], **शा. अ.**, वह अग्नि जो जला दे अथवा भस्म कर दे, **ला. अ.**, 1. चिता की अग्नि, 2. श्मशान, मृत शरीर को भस्म किए जाने की भूमि – *दहस्स दस्स ळो होलनघणसु, आळाहनं, परिळाहो,* मो. व्या. 5.127; *आळाहणं सुसानं चानित्थियं, कुणपो छवो,* अभि. प. 405; – **नं**[1] प्र. वि., ए. व. – *कस्स इदं आळाहनं,* पे. व. 369; 371; *आळाहनन्ति सुसानं,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2. 245; – **नं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *सो आळाहनं गन्त्वा कन्दति,* म. नि. 2.316; 317; – **ना / तो** प. वि., ए. व. – *यावाळाहना पदानि पञ्ञायन्ति, दी. नि. 1.49; आळाहनतो अट्ठीनि आहरित्वा,* जा. अट्ठ. 3.134; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *आळाहनस्साविदूरे निपज्जित्वा ...,* ध. प. अट्ठ. 1.17; – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *इमस्मिं आळाहने दड्ढा,* पे. व. 374; – **करण** नपुं., **शा. अ.**, जलाना, **ला. अ.**, मृत शरीर को श्मशान में भस्म करना, अन्त्येष्टि संस्कार – **णं** प्र. वि., ए. व. – *परिनिब्बुतस्स पच्चेकबुद्धस्स आळहनकरणमेव नानत्तं,* अप. अट्ठ. 2.203; – **किच्च** नपुं., तत्पु. स., उपरिवत् – **च्चं** द्वि. वि., ए. व. ... *कत्वाळाहनकिच्चं सो तस्स कम्मे पसीदिय,* चू. वं. 39.28; – **ट्ठान** नपुं., तत्पु. स. [आदाहनस्थान], श्मशान – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *थेरस्स आळाहनट्ठाने ठितभिक्खू,* स. नि. अट्ठ. 3.25; – **दस्सनसमागम** पु., तत्पु. स., अन्त्येष्टि देखने हेतु उपस्थित जनसमूह, मृत शरीर को भस्म होते देखने हेतु आया हुआ समूह – **मे** सप्त. वि., ए. व. – *साकेतब्राह्मणस्स आळाहनदस्सनसमागमे,* मि. प. 318; – **पंसुक** नपुं., तत्पु. स., जलाई जा रही चिताग्नि की भूमि, श्मशान भूमि – **कं** प्र. वि., ए. व. – *पंसुकन्ति आळाहनपंसुकं,* जा. अट्ठ. 5.48; – **पस्स** पु. / नपुं., श्मशान का समीपवर्ती भाग, चितास्थल का बगल वाला क्षेत्र – **स्से** सप्त. वि., ए. व. – *तत्थ गन्त्वा आळाहनपस्से ठितो,* जा. अट्ठ. 3.141; – **भस्म** नपुं., तत्पु. स., चिता–भस्म, शव को जलाए जाने पर निकली हुई राख – **स्मं** द्वि. वि., ए. व. – *तस्स आळाहनभस्मं पि कत्वा भेसज्जं,* चू. वं. 46.37; – **भूमि** स्त्री., तत्पु. स., मृत शरीर को जलाए जाने की भूमि, श्मशानभूमि – **मि** प्र. वि., ए. व. – *सापिस्स आळाहनभूमि समन्ततो खता,* जा. अट्ठ. 2.203.

आळाहनपरिवेण नपुं., व्य. सं., पुलत्थिपुर (आधुनिक पोलोन्नरूव) में श्रीलङ्का के शासक महा परक्कमबाहु द्वारा बनवाए गए एक परिवेण का नाम – **णं** द्वि. वि., ए. व. – *आळाहणपरिवेणं तहिं कारेसि खत्तियो,* चू. वं. 78.48.

आलि / आळि स्त्री., [आलि], 1. नदी या तालाब के किनारों पर बनाया गया बांध, तटबन्ध, ऊंचा टीला, सेतु – ... *आलित्थी सखि सेतुसु,* अभि. प. 1083; *आलिसद्दो ... सेतु जलवारको, नद्यादिमग्गो च,* अभि. प. 1082 पर सूची; – **ळिं** द्वि. वि., ए. व. – *महतो तळाकस्स पटिकच्चेव आळिं बन्धेय्य,* चूळव. 420; *आळिन्ति ... यथा महतो तळाकस्स आळिया, अबद्धायपि किञ्चि उदकं तिट्ठेय्य,* चूळव. अट्ठ. 127; *आळिं मुञ्चेय्य, आगच्छेय्य उदक'न्ति,* म. नि. 3.140; – **या** ष. वि., ए. व. – *यथा महतो तळाकस्स आळिया अबद्धायपि किञ्चि उदकं तिट्ठेय्य,* चूळव. अट्ठ. 127; – **प्पभेद** पु., तत्पु. स. [आलिप्रभेद], तटबन्ध का विनाश – **दो** प्र. वि., ए. व. – *तस्सा ..., जम्बालिया न आळिप्पभेदो पाटिकङ्खो,* अ. नि. 1(2).192-93; *न आळिप्पभेदो पाटिकङ्खोति न पाळिप्पभेदो पाटिकङ्खितब्बो,*

अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.352; – **बन्ध** त्रि॰, ब॰ स॰, बांधों से बंधा हुआ, तटबन्धों से घिरा हुआ – **धा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समे भूमिभागे चतुरस्सा पोक्खरणी अस्स आळिबन्धा पूरा उदकस्स ...,* म॰ नि॰ 3.140; **2.** पु॰, [आलि], बिच्छू – *विच्छिको त्वाळि कथितो,* अभि॰ प॰ 621; *आळं विच्छिकनङ्गुलं तं योगा आळि,* अभि॰ प॰ 621 पर सूची; **3.** स्त्री॰, [आलि/आळी], सहेली, सखी – *सखी त्वालि वयस्सा,* अभि॰ प॰ 238; *आलित्थि सखि सेतुसु,* अभि॰ प॰ 1083; – **ळि** सम्बो॰, ए॰ व॰ – *आळि, मा भायि, मतको किं करिस्सती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.470; *न खो मे रुच्चति आळि, पूतिमंसस्स पेक्खना,* तदे॰; **4.** पु॰, [आडि], मछली की एक विशेष प्रजाति का नाम, स॰ प॰ के अन्त॰, – *आळिगग्गरकाकिण्णा, पाठीना काकमच्छका,* जा॰ अट्ठ॰ 5.401; **5.** स्त्री॰, [आलि], कतार, पंक्ति, शृंखला, स॰ प॰ के अन्त॰, **जलधरा॰** - बादलों की कतार – *नभसि जलधराली मद्दमानो'भिगन्त्वा,* दाठा॰ 4.55(रो॰); **मुत्ता॰**- मोतियों की लड़ी – *दन्ता ... मुत्तालिसन्निभा,* रस॰ 2.96; **रम्भा॰**- केले के पौधों की कतार – *मङ्गलद्धजरम्भालितोरणादिमनोहरं,* चू॰ वं॰ 89.15.

आळिगामकदुग्ग पु॰, तत्पु॰ स॰, श्रीलङ्का के आळिसार क्षेत्र के आळिगाम नामक गांव का एक दुर्ग – **म्हि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आळिगामकदुग्गम्हि गङ्गापस्से वसी तदा,* चू॰ वं॰ 70.112.

आळिसारक पु॰, व्य॰ सं॰, **शा॰ अ॰,** तटबन्ध अथवा बांध के कारण उपजाऊ बना दिया गया क्षेत्र, **प्रयोगगत अ॰, 1.** श्रीलङ्का के मध्यवर्ती मातले जिले में स्थित आधुनिक एलहार का पार्श्ववर्ती क्षेत्र – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *संघस्स पाकवट्टत्थं रट्ठं दत्वाळिसारकं,* चू॰ वं॰ 60.14; – **रट्ठक** पु॰, आळिसारक नामक राष्ट्र – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गजबाहु नरिन्दो पि आळिसारकरट्ठके, चतस्सो परिसा नाम पाहिनि युज्झितुं पुन,* चू॰ वं॰ 70.106; *परक्कमभुजो मायागेहाधिनायकं, आमन्तेत्वा नियोजेसि युज्झितुं आळिसारके,* चू॰ वं॰ 70.162; **2.** सिंचाई करने वाली वह नहर जिसके कारण संभवतः पूरे जिले तथा एक गांव का नाम आळिगाम हो गया – *आळिसारोदकभागं विहारस्स अदापयि,* म॰ वं॰ 35.84.

आळहक पु॰/नपुं॰, [आढक], अनाज की पुरानी माप, चौथाई द्रोण, तरल एवं शुष्क दोनों प्रकार के पदार्थों की माप की एक इकाई, सोलह पसतों के चार पत्थ तथा चार पत्थों से एक आळहक की माप बनती है – *आळहको चतुरो पत्था दोणं वा चतुराळहकं,* अभि॰ प॰ 482; – **कं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन पत्थेन चत्तारो पत्था आळहकं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.192; **क.** तरल पदार्थों के माप की इकाई – **कं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो गन्त्वा आळहकं सप्पिं ... आहरापेत्वा,* पारा॰ 73; – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सक्का समुद्दे उदकं, पमेतुं आळहकेन वा,* अप॰ 1.17; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **उदका॰**- आढक की माप में जल – **ळहकानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *"अत्थि पन ते कोचि गणको वा मुद्दिको वा सङ्खायको वा यो पहोति महासमुद्दे उदकं गणेतुं – एत्तकानि उदकाळहकानि इति वा, एत्तकानि उदकाळहसतानि इति वा ...,* स॰ नि॰ 2(2).346; **ख.** सूखी वस्तुओं (अन्न आदि) की माप की एक इकाई – **ळहकेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बद्धा कुलीका मितमाळ्हकेन,* जा॰ अट्ठ॰ 3.477; *मितमाळ्हकेनाति धञ्ञमापकम्मम्पि किर तेन कतं,* तदे॰; पाठा॰ आळ्केन; स॰ प॰ के अन्त॰, – **अड्ढाळहकोदन** नपुं॰, आधे आढक माप वाला चावल – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उक्कट्ठो नाम पत्तो अड्ढाळहकोदनं गण्हाति,* पारा॰ 365; – **कानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चत्तारि आळहकानि दोणं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.192.

आळहक[2] पु॰, संभवतः आळक का ही रूपा॰, पशुओं का बाड़ा, हाथी को बांधने हेतु प्रयुक्त स्तम्भ या खम्भा, हाथीखाना, पीलखाना – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आलानमाळहको थम्भो,* अभि॰ प॰ 364; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हत्थिं तत्थ रतं ञत्वा अकंसु तत्थ आळहकं,* म॰ वं॰ 19.73.

आळहकगणना स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आढकगणना], आढक के माप से गणना – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आळहकगणनाय अप्पमेय्यो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.150.

आळहकथालिका स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आढकस्थालिका], एक आढक माप के चावल को उबालने की क्षमता वाली पतीली, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथापि नाम आळहकथालिका, एवमस्स सादूनि फलानि अहेसुं,* अ॰ नि॰ 2(2).81; *आळहकथालिकाति तण्डुलाळहकस्स भत्तपचनथालिका,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.123; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकंयेव आळहकथालिकं उपनिसीदित्वा ...,* महाव॰ 317; *भत्तथालिकं पुरतो कत्वा सकलजम्बुदीपवासीनं, भत्तं देन्तिया ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.213.

आवजति आ + √वज का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आव्रजति], जाता है, आता है, वापस आता है, लौट आता है – **तु** अनु., प्र. पु., ए. व. – *सा पापधम्मा पुनरावजातू'ति,* जा. अट्ठ. 4.44; – **स्सु** अनु., म. पु., ए. व., आत्मने. – *सच्चानुरक्खी पुनरावजस्सू'ति,* जा. अट्ठ. 5.23; – **जेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *को सोत्थिमाजानमिधावजेय्या'ति,* जा. अट्ठ. 5.27; – **जित्थ** अद्य., म. पु., ब. व. – *मा चस्सु गन्त्वा पुनरावजित्था'ति,* जा. अट्ठ. 4.96; – **जिस्सं** भवि., उ. पु., ए. व. – *सच्चानुरक्खी पुनरावजिस्स'न्ति,* जा. अट्ठ. 5.22.

आवज्ज पु., अनुचिन्तन, विचार-विमर्श, मन की प्रवृत्ति – *आभोगो पुण्णतावज्जेस्वालित्थी सखि सेतुसु,* अभि. प. 1083.

आवज्जति आ + √वज का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आवृङ्क्ते], 1. (किसी के विषय में) सोच विचार करता है, अनुचिन्तन करता है, ध्यान देता है, जांच पड़ताल करता है, उधेड़ बुन या संकल्प-विकल्प करता है, ध्यान में निमग्न हो जाता है – *इद्धिमा परस्स चित्तं जानितुकामो आवज्जति,* विसुद्धि. 2.60; *परस्स चित्तञ्हि ञातुमावज्जतिद्धिमा,* अभि. अव. 1135; *ओभासो धम्मोति ओभासं आवज्जति,* पटि. म. 281; ... *तिरोपब्बतं आवज्जति, आवजित्वा ञाणेन अधिट्ठाति – "आकासो होतू"ति,* पटि. म. 378; – **ज्जेन्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व., अनुचिन्तन कर रहा – *सक्को आवज्जेन्तो तं कारणं ञत्वा,* जा. अट्ठ. 5.146; – **न्तं** द्वि. वि., ए. व. – *तमेव रूपारम्मणं आवज्जन्तं,* अभि. ध. स. 25; – **न्तेन** तृ. वि., ए. व. – *ताव आवज्जन्तेन पुरिमभवे चुतिक्खणे पवत्तितनामरूपं आवज्जितब्बं,* विसुद्धि. 2.40; – **ज्जतो / ज्जन्तस्स** ष. वि., ए. व. – *ये आवज्जतो मनसिकरोतो चित्तं विनीवरणं होति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.187; *तस्सेवं पलितपातुभावं आवज्जेन्तस्स,* जा. अट्ठ. 1.143; – **माना** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *नदी देवता आवज्जमाना तं कारणं ञत्वा,* जा. अट्ठ. 5.3; – **ज्ज / ज्जाहि** अनु., म. पु., ए. व. – *उप्पज्जे ते सचे कोधो, आवज्ज ककचूपमं,* थेरगा. 445; *"पुब्बे तया परिचितकम्मट्ठानं पुन आवज्जेहि",* ध. प. अट्ठ. 2.309; – **ज्जेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *उम्मीलित्वा निमीलित्वा, आवज्जेय्य पुनप्पुनं,* अभि. अव. 859; – **ज्जेय्यासि** म. पु., ए. व. – *आवज्जेय्यासि मन्ति,* जा. अट्ठ. 5.149; – **ज्जिं** अद्य., उ. पु., ए. व. – *अहं तत्थआवज्जिं बोधिमुत्तमं,* अप. 1.180; – **ज्जिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *तं निमित्तं आवज्जिस्सति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).152; – **ज्जिस्सामि** उ. पु., ए. व. – *पुन इमं धम्मं आवज्जिस्सामि वा समापज्जिस्सामि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).76; – **ज्जितुं** निमि. कृ. – *झानं आवज्जितुं ...,* विसुद्धि. महाटी. 1.267; – **ज्जित्वा** पू. का. कृ. – *बुद्ध गुणे आवज्जेत्वा,* दी. नि. अट्ठ. 2.151.

आवज्जन नपुं., आ + √वज्ज से व्यु., क्रि. ना. [आवर्जन, भिन्नार्थक], **शा. अ.**, किसी (आलम्बन) की ओर मुड़ जाना, किसी के ग्रहण में प्रवृत्त हो जाना, खिंचाव, आकर्षण; विशेष अर्थ, 1. ज्ञान की प्रक्रिया में चित्तसन्तति अथवा भवङ्गसन्तति के सामने अभिनव विषय उपस्थित होने पर पूर्वकाल में गृहीत आलम्बन से बिलग होकर नवीन आलम्बन की ओर चित्त की प्रवृत्ति अथवा झुकाव, 2. एक भवङ्गचित्त – **नं**[1] प्र. वि., ए. व. – *चित्तस्स आवट्टनाति आदीनि सब्बानिपि आवज्जनस्सेव वेवचनानेव, आवज्जनञ्हि भवङ्गचित्तं आवट्टेतीति चित्तस्स आवट्टना ... आभुजतीति आभोगो, भवङ्गारम्मणतो अञ्ञं आरम्मणं समन्नाहरतीति समन्नाहारो – तदेवारम्मणं अत्तानं अनुबन्धित्वा उप्पज्जमाने मनसि करोतीति मनसिकारो,* विभ. अट्ठ. 4.472; *आवज्जनन्ति "किं नामेत"न्ति वदन्तं विय आभोगं कुरुमानं,* अभि. ध. वि. टी. 132; – **नं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *चक्खुद्वारिकं आवज्जनं भवङ्गं न आवट्टेति,* विभ. अट्ठ. 384; – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *विना आवज्जनेनापि होति जायतु मानसं,* अभि. अव. 466; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *अधिट्ठानस्स आवज्जनस्स च अन्तरे द्वे भवङ्गचित्तानि वत्तन्ति,* पटि. म. अट्ठ. 2.10; *यक्खं पठमावज्जनस्सेव आपाथं आगतं दिस्वा,* स. नि. अट्ठ. 1.266; – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *आवज्जने पटिच्छन्ने,* अभि. अव. 155; *आवज्जने निरुद्धस्मिं,* अभि. अव. 1083; *आवज्जने समुप्पन्ने,* अभि. अव. 494; – **नानि** प्र. वि., ब. व. – *द्वे आवज्जनानि,* पटि. म. अट्ठ. 1.241; – **नादि** त्रि., आवज्जन इत्यादि – **दीनं** नपुं., ष. वि., ब. व. – *आवज्जनादीनं अञ्ञतरसमये संवरो वा असंवरो वा अत्थि,* ध. स. अट्ठ. 421; – **नादिविञ्ञाण** नपुं., आवज्जन आदि चित्त – **णानि** प्र. वि., ब. व. – *आवज्जनादिविञ्ञाणानि,* स. नि. अट्ठ. 1.159; स. प. के अन्त., – *झानेसु आवज्जनसमापज्जन अधिट्ठान ... युत्तप्पयुत्ता,* ध. प. अट्ठ. 2.130; – **तदारम्मणक्खण** नपुं., तत्पु. स., आवज्जन एवं तदारम्मण नामक वीथिचित्तों का क्षण – **णे** सप्त. वि., ए. व. –

आवज्जनतदारम्मणक्खणे अब्याकतोति वेदितब्बो, पारा॰ अट्ठ॰ 2.98; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अन॰, असुभा॰, उपेक्खा॰, उप्पन्ना॰, आनन्तर॰, एका॰, कसिणा॰, चक्खुद्वारिका॰, जवना॰, झानङ्गा॰, समत्थता॰, नाना॰, पञ्चद्वारा॰, पटिसन्धि॰, पठमा॰, भवङ्गा॰, मनोद्वारा॰, मनोद्वारिका॰, मनोधाता॰, वोट्ठपना॰ ... किच्च॰, वोट्ठपना॰, सहा॰, सा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आवज्जनकिच्च नपुं॰, तत्पु॰ स॰, आलम्बन की ओर चित्त के मुड़ जाने की क्रिया, आलम्बन पर ध्यान देने की चित्त-क्रिया – **च्चं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किरियमनोधातु आवज्जनकिच्चं साधयमाना उप्पज्जित्वा निरुज्झति,* विसुद्धि॰ 1.21; *भवङ्ग विच्छिन्दमानाविय आवज्जनकिच्चं साधयमाना,* विसुद्धि॰ 2.85.

आवज्जनकिरियाचित्त नपुं॰, पञ्चद्वारावज्जन-वीथि एवं मनोद्वारावज्जन-वीथि की प्रक्रिया में उस क्षण का चित्त, जब चित्त विषय की ओर मुड़ने अथवा आवर्जित होने की क्रियामात्र करता है, मनसिकार मात्र करने वाला वीथिचित्त, 2 प्रकार के अहेतुक क्रियाचित्त – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवज्जनक्रियाचित्तं समनक्कारोति सञ्जितं,* अभि॰ अव॰ 510.

आवज्जनकिरियाब्याकत त्रि॰, उपेक्षासहगत पञ्चद्वारावज्जनचित्त तथा मनोद्वारावज्जनचित्त, जो 3 प्रकार के अहेतुक क्रिया के अन्त॰, परिगणित है, तथा जिसका अकुशल अथवा कुशल विपाक नहीं होता है – *दस्सनत्थाय आवज्जनकिरियाब्याकता विञ्ञाणचरिया रूपेसु,* पटि॰ म॰ 73; *आवज्जनकिरियाब्याकताति भवङ्गसन्तानतो अपनेत्वा रूपारम्मणे चित्तसन्तानं आवज्जेति-नामेतीति आवज्जनं विपाकाभावतो करणमत्तन्ति किरिया, कुसलाकुसलवसेन न ब्याकताति अब्याकता,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.240; *आवज्जनकिरियाब्याकताति मनोद्वारावज्जनचित्तं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.241.

आवज्जनक्खण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आवर्जनक्षण], विषय या आलम्बन की ओर चित्त के प्रवृत्त होने का क्षण, आलम्बन के मनसिकार करने का क्षण, चित्त-वीथि पूरा होने में लगने वाले 16 चित्त क्षणों में से 1 क्षण – **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवज्जनक्खणे किरियमनोधातु,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.239; स॰ प॰ के अन्त॰, – *द्वीहि अन्तेहि मुत्तो आवज्जनतदारम्मणक्खणे अब्याकतोति वेदितब्बो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.98.

आवज्जनचित्त नपुं॰, पञ्चद्वारावज्जन-वीथि का वह चित्त, जो पूर्वकाल की चित्त-सन्तति का विच्छेद होने के उपरान्त इन्द्रियों के आपाथ में आपतित अभिनव आलम्बन की ओर प्रवृत्त होता है, मनोद्वारावज्जन-वीथि में मनोधातु, विषयों के ज्ञान की प्रक्रिया की वीथि का प्रथम मन्द चित्त, मनसिकार, 89 प्रकार के चित्तों में 2 प्रकार के चित्त – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मनोद्वारे "मनोधातू"ति आवज्जनचित्तं गहितं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.40; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं निरुद्धम्पि आवज्जनचित्तस्स पच्चयो भवितुं असमत्थं मन्दथामगतमेव पवत्तमानम्पि परिभिन्नं नाम होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).129.

आवज्जनजवन नपुं॰, द्व॰ स॰, वीथि चित्तों में आवज्जनचित्त एवं जवनचित्त, मनोविज्ञान धातु, विषयकी ओर प्रवृत्त चित्त एवं विषयों का निश्चयात्मक ज्ञान करने वाला चित्त – *येन च चित्तेन आवज्जति येन च जानाति, तेसं द्विन्नं सहठानाभावतो आवज्जनजवनानञ्च अनिट्ठट्ठाने ... पटिक्खित्तं,* विसुद्धि॰ 2.60; तुल॰, *मनोविञ्ञाणन्ति आवज्जनं वा जवनं वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).391.

आवज्जनट्ठ पु॰, तत्पु॰ स॰, आवर्जन का अर्थ, चित्त के आलम्बन में प्रवृत्त होने का तात्पर्य – **ट्ठो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकत्ते आवज्जनट्ठो अभिञ्ञेय्यो,* पटि॰ म॰ 16; *चित्तस्स एकग्गट्ठो अभिञ्ञेय्यो, आवज्जनट्ठो अभिञ्ञेय्यो,* पटि॰ म॰ 16; *द्विन्नं चित्तानं आवज्जनट्ठो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.85; – **ट्ठं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवज्जनट्ठं बुज्झन्तीति, बोज्झङ्गा,* पटि॰ म॰ 296; – **आवज्जनक** नपुं॰, आवज्जन से व्यु॰, स॰ उ॰ प॰ में ही प्रयुक्त, सहा॰- त्रि॰, आवज्जनचित्त-सहित – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सहावज्जनकं जवनं निब्बत्तति,* विभ॰ अट्ठ॰ 75; **सा॰**- त्रि॰, उपरिवत् – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सावज्जनकं भवङ्गचित्तं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.159.

आवज्जनट्ठान नपुं॰, तत्पु॰ स॰, विषय की ओर चित्त के प्रवृत्त होने का स्थान – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ठत्वा आवज्जनट्ठाने, तमनावज्जनम्पि च,* अभि॰ अव॰ 1331; *तं गोत्रभुचित्तं अनावज्जनम्पि मग्गस्स आवज्जनट्ठाने ठत्वा,* अभि॰ अव॰ पु॰ टी॰ 113; *पञ्चन्नं विञ्ञाणानं आवज्जनट्ठाने ठत्वा,* विभ॰ अट्ठ॰ 382.

आवज्जनता स्त्री॰, आवज्जन का भाव॰, विषय की ओर चित्त का मुड़ जाना अथवा उसके ग्रहण में प्रवृत्त हो जाना, स॰ उ॰ प॰ के रूप में; **अना॰**- निषे॰, विषय की ओर चित्त का नहीं मुड़ना, चित्त का विमुखीभाव – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कस्मा ? अनावज्जनताय,* स॰ नि॰ अट्ठ 1.158;

अनावज्जनताय मुहुत्तमतके काले सति नप्पहोति, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.63; **निरा.**- उपरिवत् – *निरावज्जनताय पमादेन निसिन्नं,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.63.

आवज्जनपटिवद्ध त्रि., तत्पु. स., मानसिक अनुचिन्ता पर निर्भर, आवज्जन पर पूरी तरह से आश्रित – **द्धा** पु., प्र. वि., ब. व. – *सब्बे धम्मा बुद्धस्स भगवतो आवज्जनपटिबद्धा ...,* महानि. 131, 263; 339; *आवज्जनप्पटिबद्धाति मनोद्वारावज्जनायत्ता आवज्जितानन्तरमेव जानातीति अत्थो,* पटि. म. अट्ठ. 2.237; – **द्धं¹** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आवज्जनपटिबद्धं भगवतो सब्बञ्ञुतञाणं,* मि. प. 112; 115; 116; *एतकम्हि थेरस्स धुवसेवनं आवज्जनपटिबद्धं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).152; *आवज्जनपटिबद्धं खीणासवानं जाननं,* दी. नि. अट्ठ. 2.170; – **द्धं²** द्वि. वि., ए. व. – *आवज्जनपटिबद्धं कम्मट्ठानं कत्वा,* विसुद्धि. 1.115; – **द्धेन** तृ. वि., ए. व. – *आवज्जनपटिबद्धेन सब्बञ्ञुतञाणेन निच्चं पज्जलितग्गि,* स. नि. अट्ठ. 1.208.

आवज्जनपमाण नपुं., तत्पु. स., चित्तवीथि में आवज्जनचित्त की विद्यमानता की समयावधि, विषय की ओर चित्त की प्रवृत्ति की समयसीमा, एक चित्तक्षणमात्र की समयावधि – **णं** प्र. वि., ए. व. – *तस्मिं विञ्ञाते विञ्ञातमत्तन्ति आवज्जनपमाणं,* स. नि. अट्ठ. 3.29; – **णे** सप्त. वि., ए. व. – *यथा आवज्जनं न रज्जति, न दुस्सति, न मुय्हति एवं रज्जनादिवसेन च उप्पज्जितुं अदत्वा आवज्जनप्पमाणेनेव चित्तं ठपेस्सामी'ति,* उदा. अट्ठ. 72.

आवज्जनपरियाय पु., आवज्जन का प्रकार, विषय की ओर चित्त की प्रवृत्ति की प्रकृति – **यो** प्र. वि., ए. व. – *आवज्जनपरियायो नाम लद्धुं वट्टति, दुतियततियचित्तवारे एव जानिस्सती'ति,* दी. नि. अट्ठ. 2.20.

आवज्जनमन नपुं., 7 प्रकार के वीथिचित्तों में से विषय के ग्रहण अथवा विषय को मन में ले आने के काम में लगने वाला आवज्जन-चित्त, जो 3 अहेतुक क्रिया चित्तों में से 2 के रूप में स्वीकृत है – **नो** प्र. वि., ए. व. – *यदा परस्स चित्तञ्हि ञातुमावज्जतिद्धिमा आवज्जनमनो तस्स,* अभि. अव. 1135.

आवज्जनमनसिकार पु., विषय अथवा आलम्बन की ओर पूर्ण रूप से मुड़ा हुआ मन, पूर्ण ध्यान, विषय पर मन का पूरा पूरा ध्यान – **रो** प्र. वि., ए. व. – *सब्बत्थ मनसिकारो आवज्जनमनसिकारो,* विसुद्धि. महाटी. 2.168.

आवज्जनमनोधातु स्त्री., मनोधातु के रूप में आवज्जनचित्त, धर्मों के 18 धातुओं वाली विभाजन-योजना में मनोधातु नामक धातु का एक प्रभेद, वीथिचित्त की योजना की दृष्टि से मनोधातु का वह स्तर जिसमें मन आलम्बन के प्रति सचेत होता है – *पञ्चन्नं पन नेसं आवज्जनमनोधातु अनन्तरसमनन्तर ... होति,* विसुद्धि. 2.116.

आवज्जनमनोविञ्ञाणधातु स्त्री., धर्मों के 18 धातुओं वाले वर्गीकरण में मनोविज्ञान धातु का वह प्रभेद, जिसमें आलम्बन के प्रति अत्यन्त प्रारम्भिक रूप में मानसिक संचेतना या मनोविज्ञान उत्पन्न होता है – **या** ष. वि., ए. व. – *मनोद्वारे पन भवङ्गमनोविञ्ञाणधातु आवज्जनमनोविञ्ञाणधातुया,* विसुद्धि. 2.116.

आवज्जनमन्त पु., [आवर्जनमन्त्र], एक विशेष प्रकार का मन्त्र, वशीकरण मन्त्र, दूसरे को अपनी ओर मोड़ देने वाला मन्त्र – **न्तो** प्र. वि., ए. व. – *पथवीजयमन्तोति आवट्टनमन्तो वुच्चति,* जा. अट्ठ. 2.204; पाठा. आवट्टनमन्तो.

आवज्जनरस त्रि., ब. स., विषय की ओर उन्मुख होने अथवा विषय का मानसिक संप्रत्यय करने का काम करने वाला/वाली, स. उ. प. में, **वोट्ठब्बना.**- पञ्चद्वारावज्जनवीथि में व्यवस्थापन (निश्चयात्मक ज्ञान) एवं मनोद्वारावज्जन-वीथि में आवर्जन (विषय का मानसिक संप्रत्यय) का काम करने वाला/वाली – **सा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *किच्चवसेन पञ्चद्वारमनोद्वारेसु वोट्ठब्बनावज्जनरसा,* विसुद्धि. 2.84; *वोट्ठब्बनावज्जनरसाति पञ्चद्वारे सन्तीरणेन गहितारम्मणं ववत्थपेन्ती विय पवत्तनतो वोट्ठब्बनरसा, मनोद्वारे पन वुत्तनयेन आवज्जनरसा,* विसुद्धि. महाटी. 2.121.

आवज्जनवस पु., तत्पु. स., विषय की ओर उन्मुख होने अथवा विषय की मानसिक संचेतना करने का बल, ध्यान के अङ्गों की ओर चित्त के निरन्तर उन्मुख बने रहने का बल, चित्त को उपयुक्त आलम्बन की ओर मोड़ देने का बल – **सो** प्र. वि., ए. व. – *आवज्जनाय वसो आवज्जनवसो, सो अस्स अत्थीति आवज्जनवसी,* पटि. म. अट्ठ. 1.258; – **सेन** तृ. वि., ए. व. – *आवज्जनवसेन चक्खुविञ्ञाणस्स पुरेचारी हुत्वा,* अभि. अव. 14; स. उ. प. के रूप में, **कसिना.**- कृत्स्नों (ध्यान के आलम्बनों) की मानसिक संचेतना करने का बल – **सेन** तृ. वि., ए. व. – *कसिनावज्जनवसेन आवज्जनवसिता वुत्ता होति,* पटि. म. अट्ठ. 1.197.

आवज्जनवसिता स्त्री., 5 प्रकार की क्षमताओं अथवा आभ्यन्तरिक शक्तियों में प्रथम, ध्यान के 5 अङ्गों में से चित्त

को लगातार उन्मुख बनाए रखने की क्षमता, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चसु झानङ्गेसु एकेकारम्मणे उप्पन्नावज्जनानन्तरं चतुपञ्चजवनकतिपयभवङ्गतो परं अगन्त्वा अपरापरं झानङ्गावज्जनसमत्थता आवज्जनवसिता नाम,* अभि॰ ध॰ वि॰ टी॰ 229; *एतेन कसिनावज्जनवसेन आवज्जनवसिता वुत्ता होति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.197; – **ताय** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पच्चवेक्खणवसिता पन आवज्जनवसिताय एव सिद्धा,* अभि॰ ध॰ वि॰ टी॰ 229.

आवज्जनवसी स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, चित्त को यथेच्छ एवं उपयुक्त ध्यानाङ्ग अथवा आलम्बन की ओर मोड़ देने का बल, 5 प्रकार के ध्यानोपयोगी बलों में से प्रथम बल, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवज्जनाय वसो आवज्जनवसो, सो अस्स अत्थीति आवज्जनवसी,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.258; *वसीति पञ्च वसियो, आवज्जनवसी, समापज्जनवसी, अधिट्ठानवसी, वुट्ठानवसी, पच्चवेक्खणावसी, पठमं झानं यत्थिच्छकं यदिच्छकं यावतिच्छकं आवज्जति, आवज्जनाय दन्धायितत्तं नत्थीति – आवज्जनवसी,* पटि॰ म॰ 92; विसुद्धि॰ 2.344; *पठमज्झानतो वुट्ठाय वितक्कं आवज्जयतो भवङ्गं उपच्छिन्दित्वा पवत्तावज्जनानन्तरं वितक्कारम्मणानेव चत्तारि पञ्च वा जवनानि जवन्ति, ततो द्वे भवङ्गानि, ततो पुन विचारारम्मणं आवज्जनं वुत्तनयेनेव जवनानीति एवं पञ्चसु झानङ्गेसु यदा निरन्तरं चित्तं पेसेतुं सक्कोति अथस्स आवज्जनवसी सिद्धाव होति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.258.

आवज्जनविकलमत्तक त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसके अन्दर केवल आवर्जन (आलम्बन का मानसिक संप्रत्यय करने) की क्षमता न हो, केवल आवर्जनमात्र की विकलता या न्यूनता वाला, मनसिकार-रहित – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथागतस्स आवज्जनविकलमत्तकं सब्बञ्जुतञाणं,* मि॰ प॰ 116; – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवज्जनविकलमत्तकेन न तावता बुद्धा भगवन्तो असब्बञ्ञुनो नाम होन्ती'ति,* मि॰ प॰ 116.

आवज्जनसमत्थता स्त्री॰, भाव॰, ध्यानाङ्गों की ओर मन को मोड़ देने का सामर्थ्य, अभीप्सित आलम्बन के प्रति मन को सचेत कर देने की क्षमता, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवज्जनाबलञ्चेवाति ... आवज्जनसमत्थता,* विसुद्धि॰ 2.278.

आवज्जनसमय पु॰, विषय या अभीप्सित आलम्बन में मन को लगा देने का समय – **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचे आवज्जनसमये जानाति ... आवज्जनसमये ञाते एव सीसं एन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.197.

आवज्जना / आवट्टना स्त्री॰, आ + √वज्ज से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, लिङ्ग विपर्यय, नपुं॰ के स्थान पर स्त्री॰ [आवर्जन], आलम्बन के प्रति चित्त का सचेत होना, विषय की ओर मन को मोड़ देना, आलम्बन की ओर ध्यान ले जाना, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चित्तस्स आवट्टना अनावट्टना आभोगो,* विभ॰ 435; *कुसलेन चित्तेन ... अत्थि तस्स आवट्टना,* कथा॰ 314; – **य ष॰** वि॰, ए॰ व॰ – *आवज्जनाय समुदयोति मनोद्वारावज्जनचित्तस्स समुदयो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.122.

आवज्जनानन्तर त्रि॰, आवज्जन-चित्त की उत्पत्ति के उपरान्त उदित या उत्पन्न (चक्षुविज्ञान), पञ्चद्वारावज्जनचित्त की उत्पत्ति के बाद वाला – **रं**[1] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मनोद्वारावज्जनानन्तरं उप्पज्जनकचित्तं नाम नत्थीति दस्सनत्थं एवकारग्गहणं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.124; – **रं**[2] नपुं॰ द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवज्जनानन्तरं पन चक्खुद्वारे ताव दस्सनकिच्चं साधयमानं चक्खुपसादवत्थुकं चक्खुविञ्ञाणं,* विसुद्धि॰ 2.85; *आवज्जनानन्तरन्ति पञ्चद्वारावज्जनानन्तरं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.124.

आवज्जनाबल नपुं॰, तत्पु॰ स॰, एक आलम्बन का अंग हो जाने पर दूसरे नए आलम्बन की ओर मुड़ जाने का बल – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवज्जना बलञ्चेव पटिसङ्खाविपस्सना,* पटि॰ म॰ 51; विसुद्धि॰ 2.276; *आवज्जनाबलञ्चेवाति रूपस्स भङ्गं दिस्वा पुन भङ्गारम्मणस्स चित्तस्स भङ्गदस्सनत्थं अनन्तरमेव आवज्जनसमत्थता,* विसुद्धि॰ 2.278.

आवज्जनुपेक्खा स्त्री॰, मनोद्वारावज्जन-चित्त की वह चेतना जो अत्यन्त दृढ़ उपेक्षाभाव के साथ आलम्बन के ग्रहण में प्रवृत्त होती है, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपेक्खाति विपस्सनुपेक्खा चेव आवज्जनुपेक्खा च,* विसुद्धि॰ 2.271; *मनोद्वारावज्जनचित्तसम्पयुत्ता चेतना आवज्जने अज्झुपेक्खनवसेन पवत्तिया आवज्जनुपेक्खा'ति वुत्ता,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.405.

आवज्जित त्रि॰, आ + √वज्ज का भू॰ क॰ कृ॰ [आवर्जित], वह, जिसकी ओर चित्त को मोड़ दिया गया है, अनुचिन्तित, विचारित, चिन्तन का विषय बना दिया गया, चित्त के सम्पर्क में आया हुआ – **तं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवमेवं पादकज्झाना वुट्ठाय पुब्बे आवज्जितं अनावज्जित्वा पटिसन्धिमेव आवज्जन्तो ...,* विसुद्धि॰ 2.41; – **ते** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चित्ते आवज्जिते पन,* अभि॰ अव॰ 1130; *एवमावज्जिते तस्मिं,* अभि॰ अव॰ 1081; *वस्ससतेपि*

... *कुसलं आवज्जेय्य, आवज्जिते,* मि. प. 274; – **तानं** ष. वि., ब. व. – *महण्णवानं सब्बेसं सहेव खलु भूमिया, बलादावज्जितानं व फलोघो आगमिस्सति,* सद्धम्मो. 433; – **त्त** नपुं., आवज्जित का भाव., अनुचिन्तन अथवा विचार का विषय होना, चिन्तन का संप्रत्यय हो जाना – **त्ता** प. वि., ए. व. – *आवज्जितत्ता आरम्मणूपट्ठानकुसलो,* पटि. म. 214; *तेसं समापत्तितो उट्ठाय आवज्जितत्ता एतदहोसि,* स. नि. अट्ठ. 1.68; *उप्पादं अनावज्जितत्ता अनुप्पादं आवज्जितत्ता सतिसम्बोज्झङ्गो तिट्ठति,* स. नि. अट्ठ. 3.181; पटि. म. 302; स. उ. प. में, **अना.-** निषे., चेतना का विषयीभूत न होना मनसिकार की पकड़ से बाहर होना, मन द्वारा ध्यान न दिए जाने की स्थिति में रहना – *उप्पादं अनावज्जितत्ता, ... अनिमित्तं सङ्खारे अनावज्जितत्ता,* स. नि. अट्ठ. 3.181; स. पू. प. में, – **हदय** त्रि., ब. स. [आवर्जितहृदय], अन्यत्र मुड़ चुके हृदय वाला, अन्य धार्मिक सम्प्रदाय में दीक्षित हो चुका व्यक्ति – **यानं** पु., ष. वि., ब. व. – *आवज्जितहदयानं पुरत्थिमदिसं ओलोकयमानानं तेसं मनुस्सानं अञ्ञतरो,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.159.

आवज्जेति आ + √वज्ज का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आवर्जयति, भिन्नार्थक], **1.** किसी के विषय में सोचता है, किसी विषय पर अनुचिन्तन करता है, अन्वीक्षण करता है, चित्त को प्रवृत्त करता है, चित्त को (किसी तक) ले जाता है या पहुंचा देता है – *आवज्जेति नामेतीति आवज्जनं,* पटि. म. अट्ठ. 1.240; *इमं धम्मदेसनं सुट्ठु सुत्वा पुनप्पुनं आवज्जेति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).101; *सत्थारं आवज्जेति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).298; – **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *तं धम्मं आवज्जेन्तो मनसिकरोन्तोति अत्थो,* ध. प. अट्ठ. 2.336; *सीलं आवज्जेन्तो निपज्जि,* चरिया. अट्ठ. 100; *आवज्जेन्तो दिस्वा,* ध. प. अट्ठ. 1.157; *आवज्जेन्तो सब्बं ञत्वा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).280; *पुञ्ञसम्पत्तिं आवज्जेन्तो निसीदति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.164; – **न्तेन** पु., तृ. वि., ए. व. – *अयं उत्तरारणी अयं अधरारणी'ति आवज्जेन्तेन अञ्ञविहितकेन भवितब्बं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).404; – **ज्जयतो / न्तस्स / ज्जन्तस्स** पु., ष. वि., ए. व. – *मनसिकरोतीति आवज्जयतो समन्नाहरन्तस्स, ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).73; *तस्स हि आरोगोम्हीति आवज्जयतो तदुभयं होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).213; *कथं नु खो ति आवज्जेन्तस्स भगवतो ञाणं उप्पज्जि,* उदा. अट्ठ. 143; *यदा पन निमीलेत्वा आवज्जन्तस्स योगिनो,* अभि. अव. 860; *उप्पादं आवज्जन्तस्स उप्पादो पाकटो होति, ठानं आवज्जन्तस्स ठानं ... भेदं आवज्जन्तस्स भेदो ...,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.61; – **न्ता** पु., प्र. वि., ब. व. – (भिक्खु) बुद्धगुणे आवज्जेन्ता, मि. प. 3; – **थ** अनु., म. पु., ब. व. – *तुम्हे सीलानि आवज्जेथ,* जा. अट्ठ. 1.198; *सीलमेव आवज्जेथा'ति,* स. नि. अट्ठ. 1.51; – **सि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *राजा पल्लङ्केन निसिन्नो अत्तनो दानं आवज्जेसि,* जा. अट्ठ. 4.366; *दिवाविहारं निसिन्नो अत्तनो गुणे आवज्जेसि,* उदा. अट्ठ. 217; – **त्वा** पू. का. कृ. – *सूरियं ओलोकेन्तो बुद्धगुणे आवज्जेत्वा,* जा. अट्ठ. 2.28; *पारमियो आवज्जेत्वा मेत्ताभावनं पुरेचारिकं कत्वा,* जा. अट्ठ. 1.176; *सचे पन थेरो अत्तनो सीलं आवज्जेत्वा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2). 309; **2.** पलट देता है, उलट देता है, अस्त-व्यस्त कर देता है, विपर्यस्त कर देता है, गड़बड़ कर देता है – **सि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *"निपज्जिस्सामी'ति कायं आवज्जेसि",* पारा. अट्ठ. 1.10; दी. नि. अट्ठ. 1.10.

आवट / आवुत त्रि., आ + √वु का भू. क. कृ. [आवृत], **1.** आच्छादित, ढका हुआ, चारों ओर से घिरा हुआ, पर्दे अथवा आवरण से युक्त, सम्मिलित अथवा अन्तर्भूत कर लिया गया, ग्रस्त, अभिभूत – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *कलहाभिरतो भिक्खु, मोहधम्मेन आवुतो,* सु. नि. 278; *पञ्चहि नीवरणेहि ... ओपमञ्ञो सुभगवणिको, आवुतो निवुतो ओफुटो परियोनद्धो,* म. नि. 2.426; – **टो** उपरिवत् – *एत्थायं जनो आवटो निवुतो ओवुतो पिहितो परियोनद्धो,* मि. प. 159; – **टे** नपुं., सप्त. वि., ए. व. – *आवटे चित्ते धम्माभिसमयो न होती'ति,* मि. प. 238; – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *नीवरणेहि आवुता निवुता ओवुता पिहिता ...,* महानि. 182; – **टा** उपरिवत् – *रागरत्ता न दक्खन्ति, तमो खन्धेन आवुटा'ति,* दी. नि. 2.28; म. नि. 1.227; **2.** पिहित, बन्द कर दिया गया, बाधित, प्रत्याख्यात, अस्वीकृत, निवारित, हटा दिया गया – **टं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आवटं द्वारं निगण्ठानं निगण्ठीनं, अनावटं द्वारं भगवतो,* म. नि. 2.49, 51; *केनचि आवटं होति पटिच्छन्नं,* पटि. म. 378; विसुद्धि. 2.18; *आवटंयेव तेन आवरणेन पिहितं,* पटि. म. अट्ठ. 2.250; – **टा** पु., प्र. वि., ब. व. – *"आवटा मे, आवुसो कामा"ति,* पारा. 139; *एत्थ च आवटाति आवारिता निवारिता, पटिक्खित्ताति अत्थो,* पारा. अट्ठ. 2.86; – **टं**

द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"अपिनुस्स इत्थीसु आवटं वा अस्स अनावटं वा"ति,* दी॰ नि॰ 1.84; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अना॰, निद्दा॰, ब्या॰, भवा॰ के अन्त॰, द्रष्ट॰; स॰ पू॰ प॰ के रूप में, – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [आवृतत्व], आच्छादित अथवा घिरा हुआ होना, बन्द होना, बाधित या रुकावट भरा होना, स॰ उ॰ प॰ मे, **अना॰**- अनावृत अथवा खुला हुआ होना, ढका हुआ अथवा आच्छादित होना, खुलापन – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तदेव अनावटत्ता विवटं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.250.

आवट्ट[1] त्रि॰, आ + √वट्ट/वत्त का भू॰ क॰ कृ॰ [आवृत्त], **शा॰ अ॰**, चक्कर में डाल दिया गया, गोल घेरा या परिधि के रूप में परिवर्तित कर दिया गया, **ला॰ अ॰**, बेचैन कर दिया गया, भ्रम-ग्रस्त बना दिया गया, भौचक्का कर दिया, बहका दिया गया, गुमराह कर दिया गया – **ट्टो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवट्टोसि खो त्वं, गहपति समणेन गोतमेन, आवट्टनिया मायाया"ति,* म॰ नि॰ 2.52; *"आवट्टो खो ते भन्ते उपालि गहपति समणेन गोतमने आवट्टनिया मायाया"ति,* म॰ नि॰ 2.50; *वेरञ्जो ब्राह्मणो मारावट्टनेन आवट्टो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.333; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अना॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आवट्ट[2] **/ आवत्त** पु॰, [आवर्त], **1.** जलावर्त, भंवर – ट्टो प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – आवट्टो सलिलब्भमो, अभि॰ प॰ 660; – **त्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नावत्तेन सुवानयोति न कोधावत्तेन सुआनयो, कोधवसे वत्तेतुं न सुकरोम्हीति वदति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.309; – **ट्टं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मज्झे गङ्गाय आवट्टं उट्ठपेसि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ 1(2).164; – **ट्टे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमं यमुनाय आवट्टे खिपितुं वट्टति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.5; *एकस्मिं आवट्टे निमुज्जित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.79; स॰ प॰ के अन्त॰, – *गङ्गाय आवट्टऊमिवेगजनितं हलाहलसद्दं सुत्वा,* मि॰ प॰ 127; *उदकं ... पासाण सक्खर ... आवट्ट गग्गलक ... परियोत्थरति,* मि॰ प॰ 189; **2.** गोल घेरा, परिधि, घेरा, दायरा – **त्तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविदूरे आवट्टतो द्वादसयोजनो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.332; *आवट्टतो छत्तिंसयोजनाय परिसाय परिवुतो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.121; – **ट्टे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थीनञ्हि ... गब्भासयसञ्जिते ततिये आवत्ते कतिपया लोहितपीळका सण्ठहित्वा अग्गहितपुप्फा एव भिज्जन्ति,* दी॰ नि॰ टी॰ 3.35; *तियोजनसतायामे वित्थारतो अड्ढतेय्यसते आवट्टतो नवयोजनसतप्पमाणे मज्झिमपदेसट्ठाने उप्पज्जति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.143; **3.** किसी ओर मुड़ा हुआ, घुमावदार, लगातार घूम रहा – **ट्टा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पदक्खिणतो आवट्टा तिणलता,* जा॰ अट्ठ॰ 4.208; *तिणगुम्बलता दक्खिणावट्टा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.210; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अञ्ञतरा॰, अट्ठतिंसङ्गुला॰, एकाबद्धा॰, कामा॰, किलेसा॰, कुण्डला॰, केसा॰, गङ्गा॰, चेतियपब्बता॰, दक्खिणा॰, दक्खिणा॰, गति॰, ता॰, द्वा॰, द्वादसा॰, द्विरा॰, नन्दिया॰, नागा॰, पञ्चयोजना॰, पदक्खिणा॰, भूता॰, मणिकुण्डला॰, वण्णा॰, यक्खा॰, योजनसता॰, वलिया॰, वामा॰, वारिया॰, सा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आवट्ट[3] पु॰, नेत्ति॰ के 16 हारों में से 7वें हार (विभाग, अध्याय) का शीर्षक, नेत्ति॰ 35-41; – **ट्टो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ कतमो आवट्टो हारो,* नेत्ति॰ 35; *अयं वुच्चते आवट्टो हारो,* पेटको॰ 234; *कतमे सोळस हारा ... चतुब्यूहो आवट्टो विभत्ति,* नेत्ति॰ 2; पेटको॰ 167; *एकम्हि पदट्ठाने परियेसति सेसकं पदट्ठानं आवट्टति पटिपक्खे आवट्टो नाम सो हारो,* नेत्ति॰ 4; पेटको॰ 233; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवट्टस्स हारस्स अयं भूमि सति,* पेटको॰ 234.

आवट्टक त्रि॰, आवट्ट[1] से व्यु॰, चक्कर में डाल दिया गया, बहला दिया गया, पथभ्रष्ट कर दिया गया, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में, पुनरा॰, कुण्डला॰, दक्खिणा॰, वङ्का॰, गल्ला॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आवट्टकत त्रि॰, गोल कर दिया गया, गोल छिद्र जैसा बना दिया गया – **ते** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अङ्गजातं पवेसेत्वा, तमावट्टकते मुखे,* विन॰ वि॰ 28.

आवट्टगङ्गा स्त्री॰, **1.** एक नदी का नाम, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा तिक्खत्तुं अनोतत्तं पदक्खिणं कत्वा गतट्ठाने "आवट्टगङ्गा"ति वुच्चति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.146; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.27; **2.** एक सिंचाई-प्रणाली या नहर का नाम – **ङ्गं** त्रि॰, ब॰ स॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततो आवट्टगङ्गङ्कं निग्गतं दक्खिणामुखं,* चू॰ वं॰ 79.50.

आवट्टग्गाह पु॰, **शा॰ अ॰**, भंवर की पकड़, **ला॰ अ॰**, पांच कामगुणों की दृढ़ पकड़ अथवा उनमें प्रगाढ़ लिप्तता – **हो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचे सो भिक्खवे दारुक्खन्धो न ओरिमं तीरं उपगच्छति ... न आवट्टग्गाहो गहेस्सति,* स॰ नि॰ 2(2).182; ... *ओरमिं तीरं, किं पारिमं तीरं ... को आवट्टग्गाहो, ... ति,* स॰ नि॰ 2(2).182; *वुतञ्हेतं "आवट्टग्गाहोति खो, भिक्खवे, पञ्चन्नेतं कामगुणानं अधिवचन"न्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.50.

आवट्टति / आवत्तति आ + √वट्ट/वत्त का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आवर्तते], **शा॰ अ॰**, मुड़कर या पलट कर वापस

जाता है, मुड़ कर समीप जाता है, पीछे की ओर मुड़कर पुनः आ जाता है, इधर उधर चक्कर काटता है या भटकता है, **ला॰ अ॰,** चित्त को आलम्बन अथवा विषय की ओर प्रवृत्त करता है – *गेधं आपज्जति आवत्तति बाहुल्लाय,* म॰ नि॰ 3.158; *द्वीहि सस्सतुच्छेददिट्ठीहि आवट्टतीति द्विरावट्टा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.76; *वेदनाहि फुट्ठो आवट्टति परिवट्टति,* उदा॰ 84; *एकस्मिंयेव ठाने अनिपज्जित्वा अत्तनो सरीरं इतो चित्तो आकड्डन्तो आवट्टति,* उदा॰ अट्ठ॰ 93; – **न्ति** ब॰ व॰ – *छिन्नपातं पपतन्ति, आवट्टन्ति, विवट्टन्ति,* दी॰ नि॰ 2.105; 117; 118; 120; *उरानि पटिपिसन्ति आवट्टन्ति विवट्टन्ति,* विसुद्धि॰ 2.132; – **ट्टेन्त** वर्त॰ कृ॰ – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ननु आवट्टेन्तस्स होति ... पणिदहन्तस्स होतीति,* कथा॰ 286-287; निषे॰, **अना॰-** चित्त को विषय की ओर नहीं मोड़ने वाला – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनावट्टेन्तस्स होति ... अनाभोगस्स होति,* कथा॰ 286; *अनावट्टेन्तस्स अपरिवट्टेन्तस्स,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 194; – **त्तन्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *छिन्नपादा विय पतिता आवत्तन्ता परिवत्तन्ता सयन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.197; – **मानं** वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अद्दसा खो भगवा तं परिब्बाजकं ..., वेदनाहि फुट्ठं आवट्टमानं परिवट्टमानं,* उदा॰ 84; – **ट्टेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *मानुसकेहि वा कामेहि आवट्टेय्या'ति,* म॰ नि॰ 2.183; – **ट्टेय्युं** ब॰ व॰ – *इमाय आवट्टनिया आवट्टेय्युं,* म॰ नि॰ 2.52; अ॰ नि॰ 1(2).223; – **ट्टेत्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *ततो भवङ्गं आवट्टेत्वा उप्पन्नस्स,* विसुद्धि॰ 2.306.

आवट्टन नपुं॰, आ + √वट्ट से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आवर्तन], **शा॰ अ॰,** चक्कर काटना, फेरा लगाना, मोड़, **ला॰ अ॰, 1.** कामभोगों में दृढ़ लगाव, कामभोगों द्वारा अभिभूत होना अथवा ग्रस्त होना, **2.** आवर्जन, चित्त का विषयों की ओर मुड़ जाना – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थियो नामेता कामावट्टेन आवट्टनतो आवट्टनी,* जा॰ अट्ठ॰ 2.274; *(आवट्टना) भवङ्गस्स आवट्टनतो आवट्टना,* विभ॰ अट्ठ॰ 382; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अना॰, भवङ्ग॰, मारा॰, सा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आवट्टनमन्त / आवज्जनमन्त पु॰, [आवर्जनमन्त्र], एक विशेष प्रकार का मन्त्र, दूसरे को अपनी ओर खींचकर लाने वाला सम्मोहन मन्त्र, पृथ्वीजय मन्त्र – **न्तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पथवीजयमन्तोति आवट्टनमन्तो वुच्चति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.204.

आवट्टनमानस त्रि॰, ब॰ स॰, मुड़े हुए मन वाला, किसी के प्रति प्रवृत्त मन वाला – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विवेकेनिब्बाने आवट्टमानसो हुत्वा ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.276.

आवट्टना स्त्री॰, आ + √वट्ट से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, आवट्टन का स्थाना॰ [आवर्तन], आलम्बन की ओर चित्त की प्रवृत्ति या मुड़ाव, विषय पर चित्त द्वारा ध्यान देना, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवट्टना वातिआदीनि चत्तारिपि आवज्जनस्सेव नामानि,* विभ॰ अट्ठ॰ 382; *आवट्टना वा आभोगो वा समन्नाहारो वा,* विभ॰ 363; *आवट्टना आभोगो समन्नाहारो मनसिकारो ...,* कथा॰ 313, 316; 396.

आवट्टनी स्त्री॰, [आवर्तनी], सम्मोहक मन्त्र, दूसरे को मोहित कर देने वाला या बहका देने वाला मन्त्र, प्रलोभन में फंसा देने वाला मन्त्र, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवट्टनी महामाया, ब्रह्मचरियविकोपना,* जा॰ अट्ठ॰ 2.273; 330; जा॰ अट्ठ॰ 4.428; जा॰ अट्ठ॰ 5.449; *आवट्टनीति यथा आवट्टनी महाजनस्स हदयं मोहेत्वा अत्तनो वसे वत्तेति, एवमेतापीति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.449; – **निं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"मायावी समणो गोतमो आवट्टनिं मायं जानाति याय अञ्ञतित्थियानं सावके आवट्टेती"ति,* अ॰ नि॰ 1(2).223; *"गोतमो मायावी आवट्टनिं मायं जानाति याय अञ्ञ तित्थियानं सावके आवट्टेती"ति,* म॰ नि॰ 2.43; 50; *आवट्टनिमायन्ति आवट्टेत्वा गहणमायं, आवट्टेतीति आवट्टेत्वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.40; – **निया** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"समणेन गोतमेन आवट्टनिया मायाया"ति,* म॰ नि॰ 2.52; – **निमाया** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, मोह जाल में फंसा देने वाली माया – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवट्टनिमायन्ति आवट्टेत्वा गहणमायं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.40.

आवट्टपरिवट्ट पु॰, [आवर्तपरिवर्त], इधर उधर चक्कर मारना, इधर से उधर भटकते रहना – **ट्टं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भवयोनिगतिविञ्ञाणट्ठिति सत्तावासेसु आवट्टपरिवट्टं करोति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).71.

आवट्टभय नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आवर्तभय], **शा॰ अ॰,** पानी में भंवर से भय, तैरने वाली 4 भंवरों में से एक, **ला॰ अ॰,** सांसारिक कामसुखों में लिप्त हो जाने का भय – **यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चत्तारिमानि, भयानि ..., ऊमिभयं, कुम्भीलभयं आवट्टभयं सुसुकाभयं,* म॰ नि॰ 2.132; अ॰ नि॰ 1(2).141; *अपरानिपि चत्तारि भयानि – ... आवट्टभयं ... भयानि,* विभ॰ 440; *उदकावट्टतो भयं आवट्टभयं,* महानि॰ अट्ठ॰ 320.

आवट्टसीस त्रि., ब. स. [आवर्तशीर्ष], घुंघराले केशों से युक्त शिर वाला – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आवट्टसीसो वा गुन्नं सरीरे आवट्टसदिसेहि उद्धग्गेहि केसावट्टेहि समन्नागतो*, महाव. अट्ठ. 294.

आवट्टित त्रि., आ + √वट्ट का भू. क. कृ. [आवर्तित], **1.** किसी की ओर उन्मुख अथवा झुका हुआ, किसी के प्रति खिंचाव या आकर्षण रखने वाला, अभिभूत, ग्रस्त, गुमराह या पथभ्रष्ट कर दिया गया – **तो** पु., प. वि., ए. व. – *समणस्स गोतमस्स आवट्टनिया मायाय आवट्टितो सरणं गमिस्सति*, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.293; – **ता** ब. व. – *अन्वाविट्ठाति आवट्टिता*, म. नि. अट्ठ. 1(2).311; *अन्वाविट्ठा*, म. नि. 1.419; **2.** आलम्बन या विषय की ओर प्रवृत्त, विषय की ओर मुड़ा हुआ – **ते** सप्त. वि., ए. व. – *सचे पन भवङ्गं आवट्टेति, किरियमनोधातुया भवङ्गे आवट्टिते* ..., ध. स. अट्ठ. 307.

आवट्टितत्त नपुं., आवट्टित का भाव. [आवर्तिततत्व], अभिभूत अथवा ग्रस्त होने की अवस्था – **त्ता** प. वि., ए. व. – *सकलनगरवासीनं मारेन आवट्टितत्ता एकं भिक्खम्पि अलभित्वा*, ध. प. अट्ठ. 1.114.

आवट्टी त्रि., विषयों अथवा कामभोगों की ओर मन को मोड़ देने वाला – **ट्टिनो** पु., च. वि., ए. व. – *आवट्टिनो साभोगोयेव होति*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).374; स. उ. प. में, **अना.**- निषे., विषयों की ओर मन को न मोड़ने वाला, प्र. वि., ए. व. – *अथ खो सो ... नेव ताव कामेसु अनावट्टी होति*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).374.

आवट्टेति आ + √वट्ट का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व., **1.** फुसलाता है, बहका देता है, लुभाता या ललचाता है, वश में कर लेता है – *अञ्ञतित्थियानं सावके आवट्टेती ति*, म. नि. 2.43, 50; – **त्वा** पू. का. कृ. – *आवट्टेतीति आवट्टेत्वा परिक्खिपित्वा गण्हाति*, म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.40; **2.** आलम्बन या विषय की ओर चित्त को मोड़ देता है, विषय पर चित्त का ध्यान ले जाता है – *सचे पन भवङ्गं आवट्टेति*, ध. स. अट्ठ. 307; – **यमाना** स्त्री., वर्त. कृ., आत्मने., प्र. वि., ए. व. – *भवङ्गं आवट्टयमाना उप्पज्जति*, अभि. अव. 14; – **ट्टेत्वा** पू. का. कृ. – *भवङ्गं आवट्टेत्वा*, विसुद्धि. 2. 306; *भवङ्गं आवट्टेत्वा उप्पज्जनमनसिकारो*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).128.

आवत्त[1] त्रि., आ + √वत्त का भू. क. कृ. [आवर्त], **शा. अ.**, पीछे की ओर पलटा हुआ, वापस मुड़ा हुआ, पतित, भ्रष्ट, गिरा हुआ, **ला. अ.**, गृहस्थ जीवन की हीन या तुच्छ अवस्था में पुनः वापस आया हुआ – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *बाहुल्लिको पधानविब्भन्तो आवत्तो बाहुल्लाय*, म. नि. 1.231; महाव. 12; *अयं जिनसासने पब्बजित्वा तत्थ पतिट्ठं अलभित्वा हीनायावत्तो*, मि. प. 232; 233.

आवत्त[2] पु., [आवर्त], भंवर, चक्कर, जलावर्त – **त्तेन** तृ. वि., ए. व. – *नावत्तेन सुवानयोति न कोधावत्तेन सुआनयो*, स. नि. अट्ठ. 1.309; *नावत्तेन सुवानयो*, स. नि. 1(1).276; स. उ. प. के रूप में, कोधा., चरिया., दक्खिणा., नङ्गला., वारिया..

आवत्तगङ्गा स्त्री., एक प्राचीन जलप्रणाली (नहर) का नाम – **ङ्गब्ह** त्रि., आवत्तगङ्गा नाम वाला/वाली – **ब्हं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *ततो आवत्तगङ्गब्हं निग्गतं दक्खिणामुखं*, चू. वं. 79.50.

आवत्तति आ + √वत्त/वट्ट का वर्त., प्र. पु., ए. व., प्रायः आवट्टति के अप. के रूप में प्रयुक्त [आवर्तते], **1.** चारों तरफ चक्कर लगाता है, परिक्रमा करता है, परिधि या मण्डल के रूप में घेरा बना देता है, चारों ओर से घेर लेता है, उलटता पुलटता है – *(उदरवातो) अधिवासेतुं असक्कोन्तो आवत्तति परिवत्तति*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).86; *आवत्तती च परिवत्तती च, वसुलोपी सम्मुखा रञ्ञो*, जा. अट्ठ. 6.143(रो.); – **न्ति** ब. व. – *उच्छङ्गे आवत्तन्ति विवत्तन्ति*, जा. अट्ठ. 7.335; **2.** पलटकर वापस आता है, गृहस्थ-जीवन की हीन अवस्था में पुनः वापस लौट आता है – *सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तति*, म. नि. 2.132; अ. नि. 1(1).171; – **न्ति** ब. व. – *सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तन्ति*, म. नि. 2.207; *इमे दुज्जना ताव तत्थ सासने विसुद्धे पब्बजित्वा पटिनिवत्तित्वा हीनायावत्तन्ति*, मि. प. 231; *जिनसासने पब्बजित्वा हीनायावत्तन्ति*, मि. प. 235; – **माना** वर्त. कृ., आत्मने., पु., प्र. वि., ब. व. – *आवत्तमानापि ते जिनसासनस्स सेट्ठभावं येव परिदीपेन्ति*, मि. प. 236; – **त्तेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *न सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तेय्याति अयं थेरस्स अधिप्पायो*, स. नि. अट्ठ. 2.54; – **त्तिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *विहरन्तो सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तिस्सतीति*, स. नि. 2(2).191; – **त्तिस्ससि** म. पु., ए. व. – *सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तिस्ससि*, उदा. 93; – **त्तिस्सामि** उ. पु., ए. व. – *सिक्खं पच्चक्खाय हीनायावत्तिस्सामी ति*, उदा. 92; म. नि. 2.97; – **त्तित्वा** पू. का. कृ. – *तात*

रट्ठपाल, हीनायावत्तित्वा भोगे, म॰ नि॰ 2.261; *पच्चयबाहुल्लाय आवत्तित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.90; *यन्नूनाहं हीनायावत्तित्वा कामे परिभुञ्जेय्य,* सु॰ नि॰ (पृ॰) 157; *पच्चयबाहुल्लाय आवत्तित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.90; **3.** (समुद्र) घटता है – *आभुजति आवत्ततीति अत्थो,* सद्द॰ 2.348; **4.** (केश) घुंघराला हो जाता है, आकुञ्चित हो जाता है – **माना** वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *केसा द्वङ्गुलमत्ता हुत्वा दक्खिणतो आवत्तमाना सीसं अल्लीयिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.74; **5.** पलट देता है, रूपान्तरित कर देता है – *पटिपक्खेन अकुसले धम्मे परियेसति, तेसं किलेसानं हारेन आवट्टति,* पेटको॰ 234.

आवत्तन नपुं॰, आ + √वत्त से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आवर्तन], वापसी, प्रत्यावर्तन, वापस लौट आना, अधःपतन – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न च तेसं हीनायावत्तनेन जिनसासनं हीळितं नाम होति,* मि॰ प॰ 235; – **क** पु॰ उलट-पुलट करने वाला, – **को** पु॰ प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नङ्गलस्स फालस्स आवत्तनको नङ्गलं इतो चितो च आवत्तेत्वा खेत्ते कसनकोति अत्थो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.69; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नत्थि आवत्तनकस्स भूमि होन्ति,* पेटको॰ 290; स॰ प॰ के अन्त॰, – *एवं अरिया चतुक्कमग्गं पञ्ञापेन्ति अबुधजनसेविताय बालकन्ताय रत्तवासिनिया नन्दिया भवतण्हाय अवट्टनत्थं,* नेत्ति॰ 93; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अना॰ देवता॰, के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आवत्तनधम्म त्रि॰, ब॰ स॰ [आवर्तनधर्म], पुनः वापस लौटने की प्रकृति से युक्त, वापस लौटकर आने वाला, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **अना॰**- पुनः वापस लौटने की प्रकृति से रहित, पुनः अधोगति की प्राप्ति न करने वाला – **म्मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनावत्तिधम्मोति ततो ब्रह्मलोका पुन पटिसन्धिवसेन अनावत्तनधम्मो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.252.

आवत्तनी[1] त्रि॰, [आवर्तिन्], उलटने-पलटने वाला, स॰ उ॰ प॰ में, **नङ्गला॰**- हल के फाल को उलटने पलटने वाला अथवा ऊपर और नीचे करके खींचने वाला – **नी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथापि भद्दो आजञ्ञो नङ्गलावत्तनी सिखी,* थेरगा॰ 16; *नङ्गलस्स फालस्स आवत्तनको नङ्गलं इतो चितो च आवत्तेत्वा खेते कसनकोति अत्थो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.69.

आवत्तनी[2] स्त्री॰, [आवर्तनी], धातुओं को गलाने का पात्र – *सोण्णाद्यावत्तनी मूसा,* अभि॰ प॰ 526.

आवत्तेति / आवत्तयति आ + √वत्त का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आवर्तयति], वापस लौटाता है, गृहस्थ जीवन की हीन अवस्था की ओर वापस लौटने को प्रेरित कराता है, निवारण कराता है, उलट-पुलट करता है – *यथा कुञ्जरं अदन्तं ... बलवा आवत्तेति अकामं,* थेरगा॰ 357; *आवत्तेति अकामन्ति अनिच्छन्तमेव निसेधनतो निवत्तेति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.57; – **त्तो** भू॰ क॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बाहुल्लाय आवत्तो,* महाव॰ 66; – **यिस्ससि** भवि॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *न मं पुत्तकत्ते जम्मि, पुनरावत्तयिस्ससि,* थेरीगा॰ 304; – **यिस्सं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *एवं आवत्तयिस्सं तं, थेरगा॰* 357; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *नङ्गलं इतो चितो च आवत्तेत्वा,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.69.

आवत्थिक त्रि॰, अवत्था से व्यु॰ [आवस्थिक], जीवन की अवस्था-विशेष का सूचक, किसी विशेष अवस्था के साथ सम्बद्ध – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवत्थिकं लिङ्गिकं नेमित्तिकं अधिच्चसमुप्पन्नन्ति ... तत्थ वच्छो दम्मो बलिवद्दोति एवमादि आवत्थिकं,* विसुद्धि॰ 1.201.

आवदति आ + √वद का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आवदति], निन्दा करता है, कलंक लगाता है, सम्बोधित करता है – **दि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तं दिस्वा "कस्मा एवं तियावदि,* चू॰ वं॰ 51.23; – **दितब्बो** सं॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जात्याचारा दीहि निहीनो'यन्ति आवदितब्बो,* अभि॰ प॰ 699 पर सूची.

आवन्तिक त्रि॰, [आवन्तिक], अवन्ती (आधुनिक उज्जैन) का रहने वाला, अवन्ती के साथ जुड़ा हुआ – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पावेय्यका राट्ठि थेरा असीतावन्तिका पि च महाखीणासवा सब्बे अहोगङ्गम्हि ओतरुं,* म॰ वं॰ 4.19.

आवपति / आवपेति आ + √वप का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आवपति], जमा कर देता है, जमानत अथवा गिरवी के तौर पर रख देता है, फेंक देता है – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आवपन्ति, पक्खिपन्तीति वुत्तं होति,* महाव॰ अट्ठ॰ 362; – **पितुं** निमि॰ कृ॰ – *लभति पिता पुत्तं इणट्ठो वा आजीविकपकतो वा आवपितुं वा विक्किणितुं वा'ति,* मि॰ प॰ 259.

आवमति आ + √वम का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आवमति], **शा॰ अ॰,** वमन किए हुए पेय का पुनः पान कर जाता है, **ला॰ अ॰,** जिस सांसारिक जीवन को त्याग चुका है, उसी में पुनः वापस लौटता है – **मितुं** निमि॰ कृ॰ – *मनापिया*

कामगुणा च वन्ता, वन्ते अहं आचमितुं न उस्सहे, थेरगा॰ 1128; *आवमितुं न उस्सहेति एवं ते छड्डिते पुन पच्चावमितुं अहं न सक्कोमि,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.400.

आवरण 1. नपुं॰, आ + √वु से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आवरण, नपुं॰], **शा॰ अ॰**, ढक देने वाला या आच्छादित कर देने वाला ढक्कन, आच्छादन, पर्दा, बाधा, रुकावट, रोक, विघ्न, शरण, पानी को रोककर रखने वाला बांध, घेराबन्दी करने वाली दीवार, दुर्ग की भित्ति – **णं¹** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न तस्सावरणं अत्थि,* बु॰ वं॰ 12-28; *आवरणन्ति पटिच्छादनं तिरोकरणं,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 225; – **णं²** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिसोतानि सब्बानि, सन्दन्ति पञ्च पञ्चसु तेसमावरणं कातुं यो सक्कोति वीरियवा,* थेरगा॰ 739; *नगरस्स समन्ततो कत्वानावरणं मग्गे,* चू॰ वं॰ 70.152; – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रोहिणिं नाम नदिं एकेनेव आवरणेन बन्धापेत्वा सस्सानि करोन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.147; – **णे¹** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पलालतिणमत्तिकाहि आवरणे कते,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.26; – **णे²/णानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *छिन्ने आवरणे चाट्ठारस चेव महीपति,* चू॰ वं॰ 79.83; *भूमिन्दो कन्दरागङ्गानदीसु च तहिं तहिं सुभिक्खं कारयी रट्ठं बन्धेत्वावरणानि,* चू॰ वं॰ 60.52; *नासेन्ता सब्बथा सब्बमातिकावरणानि च,* चू॰ वं॰ 61.65; *पच्चत्थिके विनासेन्तो मग्गे आवरणे बहू,* चू॰ वं॰ 70.159; – **बन्धनकाल** पु॰, तत्पु॰ स॰, बांध के बांधने का समय – **लो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नदियं उदकप्पवत्तनकालो विय भवङ्गवीथिप्पवत्तनकालो, ... आवरणबन्धनकालो विय,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 307; **ला॰ अ॰, 1.** 5 प्रकार के नीवरण, (कामच्छन्द, व्यापाद, थीन-मिद्ध, उद्धच्च-कुक्कुच्च तथा विचिकिच्छा), जो ध्यान के क्रम में चित्त को एकाग्र एवं शान्त नहीं रहने देते तथा साधक सबसे पूर्व इनका प्रहाण करता है, चित्त को विक्षिप्त एवं अशान्त करने वाली पांच अकुशल चित्तवृत्तियां – *अत्थो नीहरणे चेवावरणादो च नी सिया,* अभि॰ प॰ 1167; – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपादानं आवरणं नीवरणं,* महानि॰ 6,21; *कुक्कुच्चे सति आवरणं होति,* मि॰ प॰ 238; *एवं निसीदनं चम्मं नत्थि आवरणं नभे,* दी॰ वं॰ 1.60; *आकासे आवरणं नाम नत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.208; *अविज्जन्धकारो, सोव सभावावगमननिवारणेन आवरणं एतस्साति अविज्जन्धकारावरणो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.14; – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवटंयेव तेन आवरणेन पिहितं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.250; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वे सग्गमग्गानं आवरणतो आवरणानि,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.10; – **णा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पञ्चिमे नीवरणा अरियस्स विनये आवरणातिपि वुच्चन्ति,* दी॰ नि॰ 1.223; *अनावरणा अनीवरणा चेतसो अनुपक्किलेसा,* स॰ नि॰ 3.114; 116; *आवरणा नीवरणा चेतसो अज्झारुहा,* अ॰ नि॰ 2(1).59; *आवरणवसेन आवरणा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.26; – **णानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पहाय पञ्चावरणानि चेतसो, उपक्किलेसे ब्यपनुज्ज सब्बे,* सु॰ नि॰ 66; *पञ्चावरणानीति पञ्च नीवरणानि एव, ... तानि पन यस्मा अब्भादयो विय चन्दसुरिये व चेतो आवरन्ति तस्मा "आवरणानि चेतसो",* अप॰ अट्ठ॰ 1.197; – **णट्ठ** पु॰, तत्पु॰ स॰, आच्छादित करने का अर्थ – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बेपि अकुसला आवरणट्ठेन नीवरणाति वुत्ता,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.66; **ला॰ अ॰ 2,** √कर के क्रि॰ रू॰ के साथ प्रयुक्त, वर्जित करता है, नियन्त्रित करता है, रोक देता है – **णं करोन्ति** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सामणेरानं मुखद्वारिकं आहारं आवरणं करिस्सन्ति,* महाव॰ 107; *न भिक्खवे मुखद्वारिको आहारो आवरणं कातब्बोति,* महाव॰ अट्ठ॰ 279; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अना॰, अविज्जन्धकारा॰, आदिच्चरंसा॰, कम्मा॰, किलेसा॰, तदा॰, दन्ता॰, दूरा॰, निय्याना॰, निरा॰, पण्डरा॰, पहीनसब्बा॰, मातिका॰, मुखा॰, मोक्खमग्गा॰, रक्खा॰, रक्खागुत्ति॰, वाता॰, विपाका॰, सग्गा॰, मोक्खा॰, समन्ता॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आवरणगाथा स्त्री॰, सु॰ नि॰ के खग्गविसाणसुत्त की एक गाथा का सु॰ नि॰ अट्ठ॰ द्वारा दिया गया शीर्षक, इस गाथा में चित्त के 5 नीवरणों के प्रहाण का बुद्धोपदेश विद्यमान है – *पहाय पञ्चावरणानि चेतसो,* सु॰ नि॰ 66.

आवरणता स्त्री॰, आवरण का भाव॰, केवल स॰ उ॰ प॰ में ही प्राप्त, आच्छादन होना, बाधक होना, रुकावट के रूप में विद्यमान रहना, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, कम्मा॰, किलेसा॰, विपाका॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आवरणतासुत्त/आवरणसुत्त नपुं॰, अ॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, अ॰ नि॰ 2(2).136-137.

आवरणनिवरण नपुं॰, रुकावट एवं बाधा, आवरण एवं नीवरण, स॰ प॰ के अन्त॰, – *उदकं गङ्गाय नदिया पासाण सक्खर ... आवरणनिवरणमूलकसाखासु परियोत्थरति,* मि॰ प॰ 189.

आवरणविरहित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आवरणविरहित], नीवरणों से मुक्त, चित्त के मलों से मुक्त – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰ – *विसुद्धत्ता आवरणविरहितं हुत्वा मज्झिमं समथनिमित्तं पटिपज्जति,* विसुद्धि॰ 1.143.

आवरणसुत्त नपुं., अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 2(1).59-60.

आवरणीय त्रि., आ + √वु का सं. कृ. [आवरणीय], आवृत अथवा आच्छादित कर लेने वाला, ढक देने वाला (पांच नीवरण धर्म) – **या** पु., प्र. वि., ब. व. – *नीवरणानि हि चित्तं आवरित्वा तिट्ठन्ति, तस्मा आवरणीया धम्माति वुच्चन्ति,* अ. नि. अट्ठ. 2.85; – **येहि** पु., तृ. वि., ब. व. – *आवरणीयेहि धम्मेहीति पञ्चहि नीवरणेहि धम्मेहि,* तदे.; *दिवसं चङ्कमेन निसज्जाय आवरणीयेहि धम्मेहि चित्तं परिसोधेति,* स. नि. 2(2).111, 180; स. नि. अट्ठ. 3.72.

आवरति आ + √वु का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आवृणोति], बन्द कर देता है, आच्छादित कर देता है, बाधित कर देता है, खुला नहीं रहने देता है, हटा लेता है – **रामि** उ. पु., ए. व. – *आवरामि द्वारं निगण्ठानं,* म. नि. 2.49; – **न्ति** प्र. पु., ब. व. – *कुसलधम्मे न आवरन्तीति अनावरणा,* स. नि. अट्ठ. 3.187; – **ये / रेय्या** विधि., प्र. पु., ए. व. – *गामकथाय आवरये सोतं,* सु. नि. 928; *गामकथाय सोतं आवरेय्य निवारेय्य संवरेय्य,* महानि. 271; – **वर** अनु., म. पु., ए. व. – *तावदेव त्वं गन्त्वा तस्स देवलोकगमनानि मग्गानि आवर, यथा इध नागच्छति, एवं करोहीति अत्थो,* जा. अट्ठ. 5.147; – **रिंसु** अद्य., प्र. पु., ब. व. – *आवरिंसु ततो मच्छा जलनिग्गहनाळियो,* म. वं. 36.78; – **रितुं** निमि. कृ. – *आवरितुं समत्थो नाम नत्थि,* स. नि. अट्ठ. 1.99; *नहि कुट्टं वा कवाटं वा गच्छो वा लता वा आवरितुं सक्कोति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.275; – **रित्वा** पू. का. कृ. – *वीथिं आवरित्वा मण्डपं कारेत्वा,* जा. अट्ठ. 2.356; *सग्गमग्गं आवरित्वा ठिता,* जा. अट्ठ. 6.70; *महासमुद्दस्स उत्तरितुं अदत्वा उदकं आवरित्वा,* जा. अट्ठ. 3.456; – **रित** त्रि., भू. क. कृ., आच्छादित, बाधित, अभिभूत, ग्रस्त, स. उ. प. में ही प्राप्त, दोसा., रागा. के अन्त., द्रष्ट..

आवलि / आवली स्त्री., [आवलि], रेखा, पंक्ति, अटूट सिलसिला, अविच्छिन्न लकीर – *पन्ति वीथ्यावलिस्सेणी पाळि,* अभि. प. 539; केवल स. उ. प. में ही प्रयुक्त, अक्खरा., दन्ता., पभाकरकरा., पुप्फा., भोगिभोगा., मुत्ता., वट्टना. के अन्त. द्रष्ट..

आवसति / आवसेति आ + √वस का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आवसति / आवसते], आकर बस जाता है, निवास करता है, रहता है, ठहरता है, आकर रुक जाता है, डेरा डाल देता है – *सचे अगारं आवसति, विजेय्य पथविं इमं,* सु. नि. 1008; – **सेसि** म. पु., ए. व. – *पुन मावसेसीति पुनपि यथा इमं नागभवनं अज्झावससि, एवं धम्मं चर,* जा. अट्ठ. 7.214; – **सामि** उ. पु., ए. व. – *सञ्ञमा संविभागा च, विमानं आवसामहं,* वि. व. 17; – **न्ति** ब. व. – *वसन्ति पवसन्ति आवसन्ति परिवसन्ति,* महानि. 73; *जगतिं जगतिपाला, आवसन्ति वसुन्धर'न्ति,* जा. अट्ठ. 6.201; *निद्दा तन्दी ... आवसन्ति सरीरट्ठा,* जा. अट्ठ. 6.70; – **सातु** अनु., प्र. पु., ए. व. – *वयं अपस्सं घरमावसातु, ... स चातुरन्तं महिमावसातु,* जा. अट्ठ. 4.275; – **सित्थ** म. पु., ब. व. – *सम्मोदमाना घरमावसित्थ,* जा. अट्ठ. 3.378; – **सिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *नामयेवावसिस्सति, अक्खेय्यं पेतस्स जन्तुनो,* सु. नि. 814; – **से / सेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *"निच्चं आरद्धविरियेहि, पण्डितेहि सहावसे"ति,* थेरगा. 148; *बहुप्फलं काननमावसेय्य,* सु. नि. 1140; ... *बहुप्फलं काननमावसेय्याति ... तस्मिञ्च वनसण्डे वासं कप्पेय्याति,* चूळनि. 189; – **सेम** उ. पु., ब. व. – *सम्मोदमाना घरमावसेमा'ति,* जा. अट्ठ. 3.378; – **सं / न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *यदत्थं भोगं इच्छेय्य पण्डितो घरमावसं,* अ. नि. 1(2).79; अ. नि. 2(1).42; *बह्वन्नपानं घरमावसन्तो,* स. नि. 1(1).50; *बह्वन्नपानं घरमावसन्तोति इमिना यञ्ञउपक्खरो गहितो,* स. नि. अट्ठ. 1.89; *सहजातिं आवसन्तो साळहत्थेरो विचिन्तिय,* म. वं. 4.28; – **न्ता** प्र. वि., ब. व. – *गहट्ठा घरमावसन्ता,* सु. नि. 43; – **मानो** वर्त. कृ., आत्मने., प्र. वि., ए. व. – *अगारं वसमानोपि,* अप. 1.65; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *घरमावसमानस्स, गहट्ठस्स सकं घरं,* जा. अट्ठ. 7.180; – **सुं** अद्य., प्र. पु., ब. व. – *कुसावतिं राजगहं मिथिलं चापि आवसुं,* म. वं. 2.6; – **सिं** उ. पु., ए. व. – *पठविं आवसिं अहं,* अप. 1.32; *पठविं आवसिं रज्जं कारेसिन्ति सम्बन्धो,* अप. अट्ठ. 1.275; – **सित्थ** म. पु., ब. व. – *सम्मोदमाना घरमावसित्थ,* जा. अट्ठ. 3.378; – **सिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *बलाधिपो अट्ठसतं वसुधं आवसिस्सति,* अप. 1.50; *इतो गन्त्वा अयं पोसो तुसितं आवसिस्सति,* तदे.; – **स्सन्ति** ब. व. – *ये अरिया आवसिंसु वा आवसन्ति वा आवसिस्सन्ति वा,* अ. नि. 3(2).25; – **सितुं** निमि. कृ. – *न सक्का अञ्ञेन सत्तेन आवसितुं,* जा. अट्ठ. 1.62; – **सित्वा** पू.

का॰ कृ॰ – *आवसित्वा तिरच्छानयोनियं*, जा॰ अट्ठ॰ 5.451; – **सापेत्वा** प्रेर॰, पू॰ का॰ कृ॰, बसा कर, आबाद करा कर – *सो तं पदेसं आवासापेत्वा जनपदं सण्ठपेत्वा निवत्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 4.136; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.200.

आवसथ पु॰, [आवसथ], वासस्थान, घर, विश्राम घर, शरणस्थल, ठिकाना, निवास, आश्रम, आश्रय – **थो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *घरं गहं चावसथो सरणं च पतिस्सयो*, अभि॰ प॰ 206; *थुल्लनन्दाय भिक्खुनिया आवसथो डय्हति*, पाचि॰ 415; *येन अञ्ञतरो आवसथो तेनुपसङ्कमि*, पाचि॰ 99; *एको आवसथो पिण्डो*, विन॰ वि॰ 1198; – **थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *थुल्लनन्दा भिक्खुनी आवसथं अनिस्सज्जित्वा चारिकं पक्कमिस्सति*, पाचि॰ 416; *अलभमाना आवसथं अगमंसु*, पाचि॰ 98; *पविसिंसु आवसथं परियेसितुं*, अ॰ नि॰ 2(2).107; – **था** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अगिलानो नाम सक्कोति तम्हा आवसथा पक्कमितुं* पाचि॰ 99; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनिस्सज्जित्वा परिक्खित्तस्स आवसथस्स परिक्खेपं अतिक्कामेन्तिया*, पाचि॰ 416; – **थे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्समेति आवसथे*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.146; *भिक्खुनियो आवसथे डय्हमाने भण्डकं न नीहरिस्सन्ती'ति*, पाचि॰ 416; *चिरवासी नाम कुमारो बहि आवसथे पटिवसति*, स॰ नि॰ 2(2).312; – **थेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *नानात्तेहि वत्थेहि सयनेहावसथेहि च*, सु॰ नि॰ 289; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अज्झा॰, अन्तो॰, गिञ्जका॰, पुळवा॰, बहि॰, वाळा॰, सेय्या॰, पदीपेय्या॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आवसथकथा स्त्री॰, विन॰ वि॰ के एक खण्ड का शीर्षक, विन॰ वि॰ 1198-1205(गा॰).

आवसथचीवर नपुं॰, **शा॰ अ॰**, आवास में धारण किया जाने वाला चीवर, **विशेष अर्थ**, ऋतुमती भिक्षुणियों द्वारा आवास में धारण किए जाने हेतु अनुमोदित चीवर – **रं¹** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवसथचीवरं लोहितेन मक्खियति*, चूळव॰ 434; – **रं²** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुजानामि, भिक्खवे, आवसथचीवर'न्ति*, चूळव॰ 434; *आवसथचीवरं अनिस्सज्जित्वा ...*, पाचि॰ 414; *आवसथचीवरं नाम "उतुनियो भिक्खुनियो परिभुञ्जन्तू"ति दिन्नं होति*, पाचि॰ 415.

आवसथद्वय नपुं॰, दो आवासों के कारण उत्पन्न विनय-सम्बन्धी आपत्ति (अपराध) – **यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चाहिकं सङ्कमनिं तथा आवसथद्वयं*, उत्त॰ वि॰ 388.

आवसथद्वार नपुं॰, तत्पु॰ स॰, निवास-स्थान का द्वार – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवसथद्वारेति ओवरकद्वारे*, पाचि॰ अट्ठ॰ 15.

आवसथपिण्ड पु॰, तत्पु॰ स॰, जन सामान्य के निमित्त निर्मित विश्रामगृहों में सभी के लिए तैयार किया गया भोजन – **ण्डो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवसथपिण्डोति आवसथे पिण्डो*, पाचि॰ अट्ठ॰ 68; – **ण्डं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आवसथपिण्डं भुञ्जन्ति*, पाचि॰ 98; *तदुत्तरिं आवसथ–पिण्डं तु परिभुञ्जतो*, उत्त॰ वि॰ 97; – **सिक्खापद** नपुं॰, पाचि॰ के एक खण्ड का शीर्षक, जिसमें भिक्षु द्वारा आवसथपिण्ड के ग्रहण किए जाने से सम्बद्ध विनय-शिक्षापद दिये गए हैं, पाचि॰ 98-100.

आवसथागार नपुं॰, तत्पु॰ स॰, निवास करने हेतु घर, विश्रामशाला, वासस्थान – **रं¹** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवसथोति आवसथागारं*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.369; *पाटलिगमने आवसथागारन्ति आगन्तुकानं आवसथगेहं*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.114; *अत्थि मे आवसथागारं*, स॰ नि॰ 2(2).326; *आवसथागारन्ति कुलघरस्स एकस्मिं ठाने एकेकस्सेव सुखनिवासत्थाय कतं वासागारं*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.146; – **रं²** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"अधिवासेतु नो भन्ते भगवा आवसथागार"न्ति*, दी॰ नि॰ 2.66; – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"वसेय्याम एकरत्तं आवसथागारे"ति*, पाचि॰ 29.

आवसथानिसंस पु॰, तत्पु॰ स॰, निवासस्थान का लाभ, वासस्थान का महत्त्व – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेक्खसुत्ते, आवसथानिसंसं, घटिकारसुत्ते*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).57.

आवसथानुमोदनकथा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, निवासस्थान के प्रयोग के अनुमोदन का कथन – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञायपि पाळिमुत्ताय धम्मकथाय चेव आवसथानुमोदनकथाय च*, उदा॰ अट्ठ॰ 338.

आवसन नपुं॰, वासस्थान, आवास, घर – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवासो आवसनं*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.293.

आवसित त्रि॰, आ + √वस का भू॰ क॰ कृ॰, आबाद किया हुआ वह स्थान जिसमें लोग बस गए हैं – **पदेश** पु॰, कर्म॰ स॰, आबाद किया हुआ प्रदेश, वह प्रदेश जिसमें लोग आकर बस गए हों – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आगतमनुस्सेहि आवसितपदेसो तायेव पुरिमसञ्ञाय ... लभि*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).236; – **कुच्छि** पु॰, कर्म॰ स॰, वह कोख जिसके अन्दर प्राणी आकर बस गया हो, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰

– *बोधिसत्तेन वसितकुच्छि नाम चेतियगब्भसदिसा होति न सक्का अञ्ञेन सत्तेन आवसितुं वा परिभुञ्जितुं वा*, जा॰ अट्ठ॰ 1.62.

आवसेति आवसति के अन्त॰, द्रष्ट॰.

आवह त्रि॰, [आवह], ले आने वाला, उत्पन्न करने वाला, कारणभूत, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अघा॰, अत्था॰, अनत्था॰, अमता॰, अरियफला॰, अरियभावा॰, उपकारा॰, उपरिपासादा॰, एकन्तसुखा॰, एकन्तहितसुखा॰, चित्तसन्तिसुखा॰, ञाणा॰, दिट्ठधम्मसुखा॰, दुक्खा॰, निब्बाना॰, पसादा॰, पासादातिसया॰, पीतिसुखा॰, पेतभवा॰, भोगा॰, मदा॰, रूपारूपभवा॰, वड्ढि॰, विम्हया॰, सग्गा॰, सच्चाभिसमया॰, सब्बकुसलगुणा॰, सब्बानत्था॰, सुखा॰, सत्तसुखा॰, हितसुखा॰, सब्बलोकहिता॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आवहति आ + √वह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आवहति], **शा॰ अ॰ 1.** ले आता है, उत्पन्न करता है, प्रदान करता है, निष्पादित करता है – *किंसु सुचिण्णो सुखमावहति*, स॰ नि॰ 1(1).49; *आवहति आनेति देति अप्पेति*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.286; *"सत्तानं देवूपपत्तिं आवहती"ति*, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 6; *सम्पज्जमाना पन तिरच्छानयोनिं आवहति*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).326; *अब्याहरति आवहति तं निप्फादेति*, जा॰ अट्ठ॰ 5.76; – **हामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"यत्थ जायायहं जारं आवहामि वहामि चा"ति*, जा॰ अट्ठ॰ 3.79; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यथा खिप्पं अरियमग्गं आवहन्ति*, उदा॰ अट्ठ॰ 196; – **हेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अयं गङ्गानदी महन्तं फेणपिण्डं आवहेय्य*, स॰ नि॰ 2(1).126; *आवहेय्याति आहरेय्य*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.282; *आवहेय्य समावहेय्य आहरेय्य*, महानि॰ 222; *अञ्ञम्पि ते सा दुखमावहेय्या'ति*, जा॰ अट्ठ॰ 4.43; *सचेपि वातो गिरिमावहेय्य*, जा॰ अट्ठ॰ 5.475; – **य्युं** ब॰ व॰ – *अनत्थम्पि आवहेय्यु'न्ति*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.73; – **हि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"इस्सानं दुक्खामावही"ति*, जा॰ अट्ठ॰ 4.188; – **हिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *मनसा पसादमावहिं*, अप॰ 1.5; – **हिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"सब्बापि पथवी तस्स न सुखं आवहिस्सती"ति*, जा॰ अट्ठ॰ 3.145; – **वाहेत्वा** प्रेर॰, पू॰ का॰ कृ॰, पकड़वा कर, निकलवा कर – *कुण्ठं गङ्गाय आवाहेत्वा*, जा॰ अट्ठ॰ 2.97; *दद्दुसप्पं आवाहेत्वा*, जा॰ अट्ठ॰ 1.297; – **हिय्यसे** कर्म॰ वा॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *एसावहिय्यसे पब्बतेन, बहुकुटजसल्लकिकेन*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.247; **भा॰ अ॰ 2.** अपने घर की ओर अथवा अपनी ओर ले जाता है, **ला॰ अ॰**, वधू को वर के घर में रहने हेतु ले जाता है, अपने पुत्र का विवाह करता है, विवाह में अपना पुत्र दे देता है – **न्ति** ब॰ व॰ – *कुमारियो पवेच्छन्ति, विवाहन्तावहन्ति च*, जा॰ अट्ठ॰ 4.326; *अत्तनो धीतरो हिरञ्ञसुवण्णं गहेत्वा परेसं देन्ति, ते एवं परेसं ददमाना विवाहन्ति नाम, अत्तनो पुत्तानं अत्थाय गण्हमाना आवाहन्ति नाम*, जा॰ अट्ठ॰ 4.329; द्रष्ट॰, आवाह, विलो॰, विवाह.

आवहत्त नपुं॰, आवह का भाव॰, केवल स॰ उ॰ प॰ में प्रयुक्त, उत्पादकत्व, निष्पादकत्व, कारणभूत होना, उत्पन्न करने वाला होना, **अविप्पतिसारादिगुणा॰**- अविप्रतिसार आदि गुणों को लाने वाला होना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तञ्च कल्याणं अविप्पटिसारादिगुणावहत्ता*, विसुद्धि॰ 1.5; **अहिता॰**- अहितकारक होना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कामा हि अहितावहत्ता मेत्तिया अभावेन अमित्ता*, थेरीगा॰ अट्ठ॰ 267; **इद्धिविधादिगुणा॰** – ऋद्धि-बल जैसे गुणों का लाने वाला होना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो च कल्याणो इद्धिविधादिगुणावहत्ता*, विसुद्धि॰ 1.5.

आवहन त्रि॰, आ + √वह से व्यु॰ [आवहन, नपुं॰], सामने लाने वाला, उत्पन्न करने वाला, निष्पादित करने वाला – **निं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यदा दुक्खस्सावहनिं विसत्तिकं*, थेरगा॰ 519; *तत्थ दुक्खस्सावहनिन्ति दुक्खस्स आयतिं पवत्तिं*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.138; स॰ उ॰ प॰ में, **पसंसा॰** – त्रि॰, प्रशंसा को लाने वाला अथवा यशकारक – **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पामुज्जकरणं ठानं पसंसावहनं सुखं*, सु॰ नि॰ 259; **तादिभावा॰**- उस प्रकार की अवस्था को लाने वाला – *वुत्तनयेन तादिभावावहन भावेन भावितं*, उदा॰ अट्ठ॰ 200; स॰ पू॰ प॰ के रूप में, – **क** त्रि॰, निष्पादक, कारणभूत, लाने वाला – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपरिमितसुखावहं सुखस्स आवहनकं*, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 91; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, लाने वाला या उत्पादक होना, निष्पादकता, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्राप्त, अत्था॰, अनत्था॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आवाट पु॰, [आवट], भूमि-विवर, छिद्र, गड्ढा, कुआं – *थियं तु कासु आवाटो*, अभि॰ प॰ 650; *मतावाटे चयेकासु*, अभि॰ प॰ 1125; *कासूति रासिपि वुच्चति आवाटोपि*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.98; *कुसोब्भाति खुद्दक आवटा, महासोब्भाति महाआवटा*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.48; *नरकन्ति आवाटं*, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 196; – **टो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गम्भीर आवाटो*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.287; *सरीरब्भन्तरं ... आवाटो आसीविसपूरो विय*, जा॰ अट्ठ॰ 3.73; *कप्पानं अन्तरे चाटिप्पमाणो आवाटो अहोसि*,

जा॰ अट्ठ॰ 5.12; – **टं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवाटं खणीति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.42; *आवाटं ओतरित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.43; *चतुरस्सावाटं खणितुं आरभि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.41; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवाटस्स उपरि उग्गन्त्वा ठिता भवेय्युं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.331; – **टे**[1] सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकस्मिं आवाटे निपज्जि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.251; – **टे**[2] द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *गलप्पमाणे आवाटे खणित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.256; *नाभिप्पमाणे आवाटे खणापेत्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.127; *अन्तो वापियं आवाटे पूरेय्य,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.70; – **टेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बेपि आवाटेसु ओतारेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.256; *आवाटेसु येव उदकं सण्ठहेय्य,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.70; *आवाटेसु मयं उदकं पिविस्साम,* जा॰ अट्ठ॰ 1.108; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **उदका॰**- पु॰, तत्पु॰ स॰, पानी भरा गड्ढा – **टेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *उदक आवाटेसु च पविट्ठमच्छे गण्हितुं न देन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.264; **खुद्दका॰**- छोटा गड्ढा – **टो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुसुम्भोति खुद्दकआवाटो,* सद्द॰ 2.407; खुद्दा॰, चतुरस्सा॰, दीघिका॰, **नरका॰** नरक का गड्ढा – **टे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"नरकावाटे पतितो भविस्सती"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.240; **यञ्ञा॰**- यज्ञ के लिए निर्मित गड्ढा – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यञ्ञवाटस्स खत्तिया आनुयन्ता नेगमा,* दी॰ नि॰ 1. 126; **सोण्डि॰**- पहाड़ी या पर्वतीय तालाब – **टे** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पग्घरित्वा सोण्डिआवाटे पूरेत्वा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.247.

आवाटक पु॰/नपुं॰, आवाट + क से व्यु॰, उपरिवत् – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पथवियं खणिते आवाटके घटेहि आहरित्वा,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 97; – **कादि** त्रि॰, गड्ढा इत्यादि – **दीसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *गामद्वारे आवाटकादीसु पटिवसति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).319; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अक्खि॰, उदका॰, खुद्दका॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आवाटतीर नपुं॰, गड्ढे का किनारा, गड्ढे का प्रान्त भाग या एक कोना – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवाटतीरे ठितो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.240; *खणनोकासं गन्त्वा आवाटतीरे ठत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 6.13; *आवाटतीरे एकं गुम्बं ओलोकेन्तो अट्ठासि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.177.

आवाटधातुक त्रि॰, ब॰ स॰, गड्ढे जैसा, गड्ढे की प्रकृति का – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं ठानं आवाटधातुकं होति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.188.

आवाटपुण्ण त्रि॰, तत्पु॰ स॰, (पात्रों के) खोखले भाग को परिपूर्ण कर रहा – **ण्णं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लुञ्चित्वावाटपुण्णं तं यूसं पत्तेहि आदिय,* म॰ वं॰ 28.26.

आवाटमुखवट्टि स्त्री॰, गड्ढे का वर्तुलाकार मुख – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवाटमुखवट्टियं ओलुब्भ,* जा॰ अट्ठ॰ 1.256.

आवाप पु॰, [आवाप], मिट्टी के कच्चे वर्तनों को पकाने वाला आवा, कुम्हार का आवा – **पं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"कदा आवापं आलिम्पेस्ससी"ति पुच्छित्वा,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.272; – **पे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवापे पचेय्यासि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.103; *कुम्भकारो सेट्ठिना वुत्तनियामेनेव मारेत्वा आवापे खिपि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.103.

आवापक पु॰, आवाप से व्यु॰ [आवाप, अन्नपात्र], नाई के स्तुरा को रखने वाला पात्र, क्षुरभाण्ड – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गच्छथ ... खुरभण्डं आदाय नाळियावापकेन अनुघरकं आहिण्डथ ... संहरथ,* महाव॰ 326; *नाळियावापकेनाति नाळिया च आवापकेन च आवापको नाम यत्थ लद्धं लद्धं आवपन्ति पक्खिपन्तीति वुत्तं होति,* महाव॰ अट्ठ॰ 362.

आवायिम / अवायिम नपुं॰, झालरदार आसन या बिछावन – **मं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निसीदनं नाम सदसं वुच्चति अवायिमं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).58.

आवार पु॰, आ + √वु से व्यु॰ [आवार], सुरक्षा, रक्षक आच्छादन, केवल स॰ उ॰ प॰ में ही प्राप्त, खन्धा॰, सकटा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; **खन्धा॰**- तत्पु॰ स॰ [स्कन्धावार], सेना की टुकड़ी का सुरक्षा-कवच – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बलकायो मग्गे खन्धावारं बन्धित्वा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.278.

आवारयति / आवारेति आ + वु का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ बन्द कर देता है, रुकावट डाल देता है, बाधित कर देता है, – *मग्गं आवारयिस्सति पुरा पारिपूरिं गच्छति, .. पुरा मग्गमावारयति,* नेत्ति॰ 81; – **तब्बं** सं॰ कृ॰, नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सकमुट्ठिना वा सो गङ्गाय सोतं आवारेतब्बं मञ्ञेय्य,* स॰ नि॰ 2(2).288.

आवास पु॰, आ + √वस से व्यु॰ [आवास], **1.** निवास करना, आ कर बस जाना, आ कर आबाद कर देना, रहना – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुचरितकम्मञ्हि तदत्ते आयतिञ्च सुखावासहेतुताय "सुखविहारस्स आवासो"ति वुच्चति,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 91; *पुन आवासो आवसनं इदानि मय्हं नत्थीति अत्थो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.293; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **पुना॰** – पुनर्जन्म, फिर से संसार बसाना – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नत्थि दानि पुनावासो, देवकायस्मि जालिनि,* थेरगा॰ 908; **2.** निवासस्थान, भवन, घर, बस्ती, आबादी – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवासो भवनं वेस्मं,* अभि॰ प॰ 206; *गेहो घरञ्च आवासो भवनञ्च निकेतनन्ति,* सद्द॰ 1.86; *'गामो*

आवासो अनावासो'ति पुच्छि, जा॰ अट्ठ॰ 2.63; *आवासो च कुलं लाभो, गणो कम्मञ्च पञ्चमं अद्धानं ञाति आबाधो, गन्थो इद्धीति ते दसाति,* विसुद्धि॰ 1.89; अभि॰ अव॰ 799; – **सं**¹ नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"आवासं सिविसेट्ठस्स पेत्तिकं भवनं ममा"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.270; *समिद्धं देवनगरंव, आवासं पुञ्ञकम्मिनं,* बु॰ वं॰ (पृ॰) 294; *आवासं पुञ्ञकम्मिनन्ति आवसन्ति एत्थ पुञ्ञकम्मिनो जनाति आवासो,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 79; – **सं**² पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पत्तत्थ आवासमिमं उळारं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.146; *अगच्छित्थ देवपुरं, आवासं पुञ्ञकम्मिन'न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.182; *अत्तनो आवासमेव अगमासि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.298; *आवासं वा न लभामि,* महानि॰ 157; *ये न पस्सन्ति नन्दनं आवासं नरदेवानं,* स॰ नि॰ 1(1).7; – **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'आवासेन सुद्धी'ति,* म॰ नि॰ 1.116; *आवासेन सुद्धीति बहूसु ठानेसु वसित्वा सुज्झन्तीति वदन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).363; – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञतरस्मिं आवासे समागन्त्वा अञ्ञमञ्ञं सम्मोदित्वा,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 12; *कुले गणे आवासे लाभे यसे,* महानि॰ 7; – **सा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *विदितानि ते महाराज, आवासा पापकम्मिनं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.149; पाठा॰ आवासं; – **से** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *निरये ताव पस्सामि, आवासे पापकम्मिनं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.127; – **सेहि** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न किरत्थि रसेहि पापियो आवासेहिव सन्थवेहि वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.161; 3. भिक्षुओं का निवासस्थान, विहार, आराम, परिवेण – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवासो नाम सकलारामोपि परिवेणम्पि एकोवरकोपि रत्तिट्ठानदिवाट्ठानादीनिपि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 398; *दुट्ठो, भन्ते, कीटागिरिस्मिं आवासो,* चूळव॰ 23; *आवासो'ति विहारो वुच्चति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.180; – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञतरं आवासं उपगच्छिंसु,* महाव॰ 117; *धम्मेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु आवासं सोभेति,* अ॰ नि॰ 2(1).243; *अज्जेवाहं करिस्सामि आवासं वस फासुकं,* दी॰ वं॰ 14.67; – **साय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खूनं आवासाय परिसक्कति,* अ॰ नि॰ 3(1).164; – **सा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पक्कमतु भन्ते आयस्मा धम्मिको इमम्हा आवासा,* अ॰ नि॰ 2(2).79; *सो तम्हापि आवासा अञ्ञं आवासं गच्छति,* महाव॰ 429; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवासिको भिक्खु आवासस्स बहूपकारो होति,* अ॰ नि॰ 2(1).243; – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असुकस्मिं नाम आवासे सङ्घो विहरति,* अ॰ नि॰ 1(2).195; *तेन खो पन समयेन अञ्ञतरस्मिं आवासे ... सम्बहुला भिक्खू विहरन्ति,* महाव॰ 145; 148; – **सा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इध पन भिक्खवे, सम्बहुला आवासा समानसीमा होन्ति,* महाव॰ 136; चूळव॰ 470; – **सेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यंनूनाहं इमेसु द्वीसु आवासेसु वस्सं वसेय्यं,* महाव॰ 202; *सङ्किकेसु च आवासेसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.293; स॰ उ॰ प॰ के रूप में; अना॰, अन्तरा॰, अरञ्ञा॰, एका॰, कता॰, गब्भा॰, गामका॰, घना॰, घरा॰, छिद्दा॰, जरा॰, दया॰, दसा॰, दुरा॰, नवा॰, नागसता॰, पञ्चा॰, पापकम्मरता॰, पुना॰, भिन्ना॰, मनुस्सा॰, महा॰, रोगा॰, वस्सा॰, विवित्तका॰, सगारवा॰, सत्ता॰, सत्था॰, समग्गा॰, सुखाहेतुता॰, सुद्धा॰, सुरा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आवासकप्प पु॰, [बौ॰ सं॰ आवासकल्प], एक ही सीमा के अन्तर्गत भिन्न भिन्न आवासों या विहारों में अलग अलग रूप में उपोसथ नामक संघकर्म का अनुष्ठान, वैशाली के वज्जिपुत्रीय भिक्षुओं द्वारा व्यवहार में अपनाई गई दस विनय सम्बन्धी वस्तुओं (प्रक्रियाओं) में से एक – **प्पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कप्पति सिङ्गिलोणकप्पो, कप्पति द्वङ्गुलकप्पो, कप्पति गामन्तरकप्पो, कप्पति आवासकप्पो, कप्पति अनुमतिकप्पो, कप्पति आचिण्णकप्पो, कप्पति अमथित कप्पो, कप्पति जलोगिं पातुं, कप्पेति अदसक निसीदनं, कप्पति जातरूपरजतन्ति,* चूळव॰ 463; *को सो, आवुसो, आवासकप्पो'ति,* चूळव॰ 470; 477.

आवासगत त्रि॰, निवासस्थान गया हुआ, (किसी की) धर पकड़ का विषय बन चुका – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवासगतो मारस्स,* स॰ नि॰ 2(2).98; *आवासगतोति वसनट्ठानं गतो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.33.

आवासजग्गनक त्रि॰, आवास की देखरेख करने वाला – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवासिकोति आवासजग्गनको,* जा॰ अट्ठ॰ 4.277; चरिया॰ अट्ठ॰ 187.

आवासता स्त्री॰, आवास का भाव॰, स॰ उ॰ प॰ में ही प्रयुक्त, **दीघा॰**- लम्बे समय तक आवास (संसार) में बने रहने (लिप्त होने) की अवस्था – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दीघावासताय निच्चादिसभावं भवविमोक्खं मञ्ञन्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 171.

आवासदान नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आवासदान], भिक्षुओं के निवासहेतु निवासस्थान का दान – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवासदानं नामेतं, महाराज, महन्तं... आवासो मया परिभुत्तो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.91; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.19; – **स्मिं / ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवासदानस्मिञ्हि दिन्ने*

सब्बदानं दिन्नमेव होति, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.19; *आवासदाने आनिसंसं सल्लक्खेत्वा इसिपतने महाविहारे* ..., ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.170.

आवासदेसना स्त्री॰, निवासस्थान के विषय में उपदेश, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **सत्ता॰**- प्राणियों के आवासों के विषय में उपदेश, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नव सत्तावासदेसना,* उदा॰ अट्ठ॰ 273.

आवासपरम्परा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, **शा॰ अ॰,** आवासों की कतार, आवासों की शृंखला, **ला॰ अ॰,** प्रत्येक आवास (विहार), एक एक आवास में, सभी भिक्षु-आवास – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवासपरम्परञ्च, भिक्खवे, संसथ,* चूळव॰ 46; ... *आवासपरम्परञ्च भिक्खवे संसथाति सब्बावासेसु आरोचेथ,* चूळव॰ अट्ठ॰ 5.

आवासपलिगेधी त्रि॰, आवास के विषय में अत्यधिक लालची या लोभी – **धी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चहि धम्मेहि समन्नागतो आवासिको ... न आवासमच्छरी होति न आवासपलिगेधी,* अ॰ नि॰ 2(1).245; *सत्तमे आवासपलिगेधीति आवासं बलवगिद्धिवसेन गिलित्वा विय ठितो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.85.

आवासपलिबोध पु॰, तत्पु॰ स॰, बाधा के रूप में आवास, कठिनचीवर के सन्दर्भ में आवास से सम्बन्धित बाधा, सोलह प्रकार के पळिबोधों में से एक, आवास-विषयिणी बाधा – **धो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवासोयेव आवासपलिबोधो,* विसुद्धि॰ 1.89; *द्वे कथिनस्स पलिबोधा ? ... आवासपलिबोधो च चीवरपलिबोधो च,* महाव॰ 352; परि॰ 239; *चीवरपलिबोधो पठमं छिज्जति, तस्स सह बहिसीमगमना, आवासपलिबोधो छिज्जति,* परि॰ 334; *पठमं चीवरपलिबोधो छिज्जति, पच्छा आवासपलिबोधो,* महाव॰ अट्ठ॰ 370; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **घरा॰** – पु॰, घर में बसने की बाधा, गृहस्थ जीवन की बाधा या रुकावट – **धं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बं घरावासपलिबोधं छिन्दित्वा ... पब्बजासङ्खातेन एकच्चरियं दळ्हं करेय्य?,* महानि॰ 114.

आवासपाळि स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आवासपालि], आवासों की पंक्ति, निवासस्थानों की कतार, बहुत सारे भिक्षुआवास या विहार, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवासपालि ब्याधानं तदा आसि निवेसिता,* म॰ वं॰ 10.95.

आवासभूत त्रि॰, आवास अथवा निवासस्थान बन चुका, बसा दिया गया, आबाद कर दिया गया – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेसं पुञ्ञकम्मिनं आवासभूतन्ति अत्थो,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 79; – **ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सिखायमाने आवासभूते,* सद्द॰ 1.249.

आवासमच्छरिय नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आवासमात्सर्य], आवास के विषय में मात्सर्य, आवास से सम्बन्धित तुच्छ एवं स्वार्थभरी चित्तवृत्ति, पांच प्रकार के मात्सर्यों में प्रथम – **यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवासे मच्छरियं आवासहेतुकं वा मच्छरियं आवासमच्छरियं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.466; – **यानि** ब॰ व॰ – *पञ्च मच्छरियानि – आवासमच्छरियं, कुलमच्छरियं, लाभमच्छरियं, वण्णमच्छरियं, धम्ममच्छरियं,* दी॰ नि॰ 3.187; महानि॰ 26, 93, 165; *मच्छरियानीति आवासमच्छरियं कुलमच्छरियं, लाभमच्छरियं धम्ममच्छरियं वण्णमच्छरियन्ति इमासु आवासादीसु अञ्ञेसं साधारणभावं असहनाकारेन पवत्तानि पञ्च मच्छरियानि,* विसुद्धि॰ 2.321; – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवासमच्छरियेन पनेत्थ यक्खो वा पेतो वा हुत्वा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.279; *अपिच आवासमच्छरियेन लोहगेहे पच्चति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.279; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवासमच्छरियस्स पहानाय समुच्छेदाय ब्रह्मचरियं वुस्सति,* अ॰ नि॰ 2(1).254.

आवासमच्छरी त्रि॰, आवास के विषय में कृपणवृत्ति अथवा मात्सर्य-भरी मनोवृत्ति रखने वाला, आवास के प्रति लालची अथवा "आवास में केवल मैं रहूं, दूसरे न रहें", इस प्रकार की स्वार्थ-भरी प्रवृत्ति वाला – **री** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न आवासमच्छरी होति, न कुलमच्छरी होति,* अ॰ नि॰ 2(1).238; – **रिनी** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न आवासमच्छरिनी होति,* अ॰ नि॰ 2(1).130; *पञ्चमे आवासमच्छरिनीति आवासं मच्छारायति, तत्थ अञ्ञेसं वासं न सहति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.46.

आवासलोभ पु॰, तत्पु॰ स॰ [आवासलोभ], निवासस्थान के प्रति लोभ – **भेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मया सीलवन्तो कल्याणधम्मा भिक्खू आवासलोभेन परिभिन्ना,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 12.

आवासवत्त नपुं॰, विहार (आवास) में नियमित निवास करने वाले भिक्षुओं द्वारा पालनीय नियम – **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवासवत्तमावासी, अकरोन्तोव दोसवा,* उत्त॰ वि॰ 555.

आवाससङ्ग पु॰, तत्पु॰ स॰, आवासविषयक आसक्ति, स्थायी आवास के साथ मन का लगाव – **ङ्गेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निबद्धवासो च आवाससङ्गेन होति, सो च दुक्खो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.28.

आवाससप्पाय पु., [बौ. सं. आवास-साम्प्रेय], हितकर अथवा उपयुक्त आवास, विनय-नियमों के अनुरूप आवास, स. प. के अन्त., – *आवाससप्पाय उतुसप्पाय भोजनसप्पाय ... आदीनि आसेवन्तो अन्तरन्तरा समापत्तिं समापज्जित्वा,* ध. प. अट्ठ. 1.180; – **ता** स्त्री., भाव., आवास की हितकरता, आवास की उपयुक्तता – **य** तृ. वि., ए. व. – *आवाससप्पायताय हि तम्बपण्णिदीपम्हि चूळनागलेणे ... पञ्चसता भिक्खू अरहत्तं पापुणिंसु,* विसुद्धि. 1.124.

आवाससामिक पु., तत्पु. स., आवास का स्वामी, निवासस्थान का मालिक – **का** प्र. वि., ब. व. – *सचे आवाससामिका नत्थि ...,* स. नि. अट्ठ. 3.144.

आवासानिसंसकथा स्त्री., तत्पु. स., आवास के (दान से प्राप्त) पुण्य अथवा लाभ का कथन – **थं** द्वि. वि., ए. व. – *आवासे आनिसंसो, अयम्पि आनिसंसोति बहुदेवरत्तिं अतिरेकतरं दियड्ढयामं आवासानिसंसकथं कथेसि,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.19-20; स. नि. अट्ठ. 3.92.

आवासापेति आ + √वस का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व., बसा देता है, आवसति के अन्त., द्रष्ट..

आवासिक त्रि., आवास से व्यु. [आवासिक], **शा. अ.,** आकर बस जाने वाला, अपने निर्धारित आवास (विहार) में रहने वाला, **ला. अ.,** अपने विहार में नियमित रूप से निवास कर रहा भिक्षु, विहार का नियमित निवासी भिक्षु – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *आयस्मा सुधम्मो मच्छिकासण्डे चित्तस्स गहपतिनो आवासिको होति,* चूळव. 35; *आवासिको होतु महाविहारे,* जा. अट्ठ. 4.276; *आवासिकोति भारहारो नवे आवासे समुट्ठापेति, पुराणे पटिजग्गति,* अ. नि. अट्ठ. 2.212; *नो आवासिको, अत्थापत्ति आवासिको आपज्जति,* परि. 250; *"पञ्चहुपालि, अङ्गेहि समन्नागतो आवासिको भिक्खु",* परि. 376; – **स्स** च. वि., ए. व. – *"असादियन्ता आवासिकस्स देथा"ति,* स. नि. अट्ठ. 1.191; – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *आवासिका होन्तीति एत्थ आवासो एतेसं अत्थीति आवासिका,* पारा. अट्ठ. 2.180; *"कथञ्हि नाम आवासिका भिक्खू उपोसथागारं न सम्मज्जिस्सन्ती"ति,* महाव. 147; *गामकावासे आवासिका भिक्खू उपद्दुता होन्ति,* चूळव. 299; *अस्सजिपुनब्बसुका नाम भिक्खू कीटागिरिस्मिं आवासिका होन्ति,* म. नि. 2.148; *द्वे जना कीटागिरिस्मिं आवासिका होन्ति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.133; – **के** द्वि. वि., ब. व. – *वुड्ढतरेपि आवासिके भिक्खू न अभिवादेन्ति,* चूळव. 349; – **कानं** ष. वि., ब. व. – *आवासिकानं भिक्खूनं चातुद्दसो होति,* महाव. 172; *आवासिकानं भिक्खूनं वत्तं पञ्ञपेस्सामि,* चूळव. 352; – **निमित्त** नपुं., विहारवासी भिक्षु होने का चिह्न – **त्तं** द्वि. वि., ए. व. – *आगन्तुका भिक्खू पस्सन्ति आवासिकानं भिक्खूनं आवासिकाकारं, आवासिकलिङ्गं, आवासिकनिमित्तं, आवासिकुद्देसं ... पस्सित्वा वेमतिका होन्ति,* महाव. 173; – **काकार** पु., आवासिक भिक्षु होने का आकार-प्रकार – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *आगन्तुका भिक्खू पस्सन्ति आवासिकानं भिक्खूनं आवासिकाकारं, आवासिकलिङ्गं, आवासिकनिमित्तं, आवासिकुद्देसं ... पस्सित्वा वेमतिका होन्ति,* महाव. 173.

आवासिकवग्ग पु., परि. के एक खण्ड-विशेष का शीर्षक, जिसमें आवासिक भिक्षुओं से सम्बद्ध विनय के विषय संगृहीत हैं, परि. 376-378; – **ग्गे** सप्त. वि., ए. व. – *आवासिकवग्गे – यथाभतं निक्खित्तोति यथा आहरित्वा ठपितो,* परि. अट्ठ. 227.

आवासिकवत्त नपुं., आवासिक भिक्षुओं द्वारा पालनीय नियम – **त्ते** सप्त. वि., ए. व. – *आवासिकवत्ते आसनं पञ्ञपेतब्बन्ति एवमादि सब्बं वुड्ढतरे आगते चीवरकम्मं वा नवकम्मं वा ठपेत्वापि कातब्बं,* चूळव. अट्ठ. 116.

आवासिकवत्तकथा स्त्री., चूळव. के वत्तखन्धक की दूसरी कथा का शीर्षक, जिसमें विहार में स्थायीरूप से रहने वाले आवासिक भिक्षुओं के कर्तव्यों का विवरण संगृहीत है, चूळव. 352-353; चूळव. अट्ठ. 116.

आवासिकसङ्घत्थेर पु., विहार में नियमित वास करने वाले आवासिक भिक्षुओं में सबसे वरिष्ठ एवं प्रमुख स्थविर – **रो** प्र. वि., ए. व. – *जिण्णमहाविहारे आवासिकसङ्घत्थेरो हुत्वा* ..., जा. अट्ठ. 4.277.

आवासु / आपासु नियमित आवासु का अप., आपदा का सप्त. वि., ब व. – *आपासु ब्यसनं पत्तो,* जा. अट्ठ. 3.9; *आवासु किच्चेसु च नं जहन्ति,* जा. अट्ठ. 5.442; 445; *आवासूति आपदासु,* जा. अट्ठ. 5.443.

आवाह पु. / नपुं., [आवाह], विवाह का वह स्वरूप जिसमें वधू को वर के घर में ले आया जाता है तथा अपने पुत्र को विवाह-हेतु सौंप दिया जाता है, कन्या-ग्रहण-पद्धति वाला विवाह-संस्कार – **हो** प्र. वि., ए. व. – *आवाहोति कञ्ञागहणं विवाहोतिकञ्ञादानं,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.282; *आवाहादीसु आवाहोति दारकस्स परकुलतो दारिकाय*

आहरणं, पारा॰ अट्ठ॰ 2.126; *इमस्स गहपतिस्स आवाहो वा भविस्सति, विवाहो वा भविस्सति,* चूळव॰ 282; *आवाहो वा होति, विवाहो वा होति,* दी॰ नि॰ 1.86; – **हं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यसोपिस्स महा अहोसि, आवाहमस्स कातुं वट्टती'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.192; *सो चतुन्नं पुत्तानं आवाहं कत्वा चत्तारि सतसहस्सानि अदासि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.229; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.286; *मातापितरो आवाहं कत्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.151; *आवाहं ते करिस्सामा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.164; साधूति सम्पटिच्छित्वे दिवसं ठपेत्वा आवाहं करिंसु, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.170; – **हानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एतेनेव उपायेन आवाहानिपि कारापेति, विवाहानिपि कारापेति, वारेय्यानिपि कारापेति,* पारा॰ 200; द्रष्ट॰ विलो॰ विवाह के अन्त॰.

आवाहक त्रि॰, आ + √वह से व्यु॰ [आवाहक], **शा॰ अ॰,** आवहन करने वाला, ले आने वाला, **ला॰ अ॰,** कन्या को पुत्र के लिए ग्रहण कर वर के घर लाने वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आवाहविवाहकानन्ति आवाहका नाम ये तस्स घरतो दारिकं गहेतुकामा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.117.

आवाहन नपुं॰, आ + √वह से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, कन्या को वर के घर ले आना, वर के लिए कन्या का ग्रहण एवं वर के घर ले आना, विवाह का ही एक प्राचीन स्वरूप – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवाहनं विवाहनं संवरणं विवरणं संकिरणं, विकिरणं,* दी॰ नि॰ 1.10; 61; *असुकनक्खत्तेन दारिकं आनेथाति आवाहकरणं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.85.

आवाहमङ्गल नपुं॰, तत्पु॰ स॰, विवाह का मांगलिक पर्व, विवाह का मङ्गलमय उत्सव – **लं¹** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आभरणमङ्गलं अभिसेकमङ्गलं आवाहमङ्गलन्ति तीणि मङ्गलानि अकंसु,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.227; – **लं²** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मिगारसेट्ठिपि पुत्तस्स आवाहमङ्गलं करोन्तो ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.223; – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवाहमङ्गले तत्थ सत्ताहं उस्सवो महा,* म॰ वं॰ 7.34.

आवाहयुत्त त्रि॰, विवाह के लिए उपयुक्त, विवाह करने योग्य – **त्तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनावय्हन्ति न आवाहयुत्तं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.136.

आवाहविवाह पु॰/नपुं॰, द्व॰ स॰ [आवाहविवाह], **1.** विवाह के प्राचीन काल के दोनों स्वरूप, **क.** वह विवाह जिसमें वधू को ग्रहण कर वर के घर लाया जाता था, **ख.** वह विवाह जिसमें वधू का कन्यादान किया जाता था, **2.** विवाहोत्सव, **3.** वर एवं वधू का आपस में विवाह – *आवाहोति कञ्ञागहणं विवाहोति कञ्ञादानं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.282; – **हं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेसं आवाहविवाहं करिस्सामा'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.86; *तेसं अनिच्छमानानञ्ञेव अञ्ञमञ्ञं आवाहविवाहं करिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 4.21; चरिया॰ अट्ठ॰ 233; *तादिसे काले तं आनेत्वा आवाहविवाहं अकंसु,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 87; – **क** त्रि॰, आवाह करने वाला एवं विवाह करने वाला, अपने पुत्र को अथवा अपनी पुत्री को विवाह में देने वाला – **कानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आवाहविवाहकानं अपत्थितो,* दी॰ नि॰ 3.139; *आवाहविवाहकानन्ति आवाहका नाम ये तस्स घरतो दारिकं गहेतुकामा ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.117.

आवाहविवाहविनिबद्ध त्रि॰, **शा॰ अ॰,** विवाह-सम्बन्ध द्वारा एक दूसरे के साथ जुड़े हुए, **ला॰ अ॰,** एक दूसरे के साथ गहराई के साथ जुड़े हुए – **द्धा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ये हि केचि ... आवाहविवाहविनिबद्धा वा ...,* दी॰ नि॰ 1.86.

आवाहविवाहसम्बन्ध पु॰, विवाह द्वारा आपस में सम्बन्ध, घनिश्ट सम्बन्ध, परस्पर-सम्बन्ध, दो व्यक्तियों के बीच उपयुक्त सम्बन्ध – **न्धो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवाहविवाहसम्बन्धो नाम मय्हञ्च तया तुय्हञ्च मया सद्धिं पतिरूपो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.432; *कस्सपकोण्डञ्ञानञ्च अञ्ञमञ्ञं आवाहविवाहसम्बन्धो अत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.299; – **न्धं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विवाहन्ति आवाहविवाहसम्बन्धं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.413.

आवाहेति आ + √वह का प्रेर॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, ले आने हेतु प्रेरित करता है, विवाह कराता है, आवहति के अन्त॰, द्रष्ट॰.

आवि / आवी / आविं अ॰, निपा॰ [आविः], एक दम सुस्पष्ट, पूरी तरह से साफ सुथरा, आखों के सामने, प्रत्यक्ष रूप में, खुले रूप में – *था'वि पातु च,* अभि॰ प॰ 1149; *सम्मुखा त्वा'वि पातु च,* अभि॰ प॰ 1157; 2 रूपों में प्रयोग में प्राप्त, **1.** विलो॰ 'रहो' (छिपे रूप में, पीछे) के साथ, आंखों के सामने, पीछे, छिपे रूप में, प्रकट रूप में अथवा गुप्त रूप में – *आवी रहोति सम्मुखा च परम्मुखा च,* जा॰ अट्ठ॰ 3.231; *आवी रहो वापि मनोपदोसं नाहं सरे जातु मलीनसत्ते,* जा॰ अट्ठ॰ 5.26; *माकासि पापकं कम्मं, आवि वा यदि वा रहो,* स॰ नि॰ 1(1).241; *आवि वा परेसं पाकटभाववसेन अप्पटिच्छन्नं कत्वा,* उदा॰ अट्ठ॰ 240; **2.** √कर एवं √भू के साथ स॰ प॰ के रूप में प्रयुक्त, **क.** √कर के साथ, प्रकट करता है, सुप्रकाशित कर देता है, प्रयोग आगे द्रष्ट॰; **ख.** √भू के साथ, प्रकट अथवा प्रकाशित होता है, प्रयोग द्रष्ट॰ आगे.

आविकत त्रि., आवि + √कर का भू. क. कृ. [आविष्कृत], पूरी तरह सुस्पष्ट कर दिया गया, सुप्रकाशित, अच्छी तरह से अभिव्यक्त – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *न च नो केवलं परिपूरं ब्रह्मचरियं आविकतं होति उत्तानीकतं,* दी. नि. 3.90; *वुत्तत्ता तदाकारसन्निट्ठानं एवंसद्देन आविकतं,* उदा. अट्ठ. 8; – **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *'आविकता हिस्स फासु होती'ति,* महाव. 131; थेरगा. अट्ठ. 2.100; *दिट्ठि आविकता होति,* परि. अट्ठ. 222.

आविकत्तु पु., [आविष्कर्तृ], सुस्पष्ट करने वाला, प्रकाशित करने वाला, सभी के सामने प्रकाश में लाने वाला उद्घाटित करने वाला – **त्ता** प्र. वि., ए. व. – *यथाभूतं अत्तानं आविकत्ता सत्थरि वा विञ्ञूसु वा सब्रह्मचारीसु,* दी. नि. 3.189; *यानि खो पनस्स होन्ति साठेय्यानि कूटेय्यानि जिम्हेय्यानि वङ्केय्यानि, तानि यथाभूतं सारथिस्स आविकत्ता होति,* अ. नि. 3(1).32; *यथाभूतं आबाधं नाविकत्ता होति,* महाव. 394; अ. नि. 2(1).135.

आविकम्म नपुं., [आविष्करण], प्रकाशन, उद्घाटन, सुस्पष्टीकरण – **म्मं** प्र. वि., ए. व. – *गुय्हस्स हि गुय्हमेव साधु, न हि गुय्हस्स पसत्थमाविकम्मं,* जा. अट्ठ. 6.211; 217; स. उ. प. के रूप में, अना., दिट्ठा., दुब्बल्ला. के अन्त. द्रष्ट..

आविकरण नपुं., [आविष्करण], सुस्पष्ट करना, भली भांति व्याख्या करना, पूरी तरह से खुलासा करना – **णत्थं** क्रि. वि., सुस्पष्ट करने हेतु – *तस्स लद्धिया आविकरणत्थं एकं कारणं आहरितुं इदमारद्धं,* दी. नि. अट्ठ. 1.254.

आविकरोति आवि + √कर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आविष्करोति], **क.** सुस्पष्ट करता है, साफ तौर पर बतलाता है, उद्घोषित करता है, कहता है – **मि** उ. पु., ए. व. – *ते आविकरोमि सक्खिपुट्ठो,* सु. नि. 84; *सत्तम्यत्थे च तुय्हं चस्स आविकरोमि,* क. व्या. 279; – **हि** अनु., म. पु., ए. व. – *त्वं आविकरोहि भूमिपाल,* जा. अट्ठ. 6.209; *अथ मे आविकरोहि मग्गदूसिं,* सु. नि. 85; – **न्तो** वर्त. कृ ., पु., प्र. वि., ए. व. – *भगवा पुग्गलानं नागयोनीहि उद्धरणत्थं नागयोनियो आविकरोन्तो इमं सुत्तमाह,* स. नि. अट्ठ. 2.312; – **न्ती** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *एवं थेरेन पुच्छिता सा देवता अत्तानं आविकरोन्ती,* वि. व. अट्ठ. 63; **ख.** भावों को अभिव्यक्त करता है अथवा प्रकट करता है – **ति** वर्त., प्र. पु., ए. व. – *कुद्धोपि सो नाविकरोति कोपं,* जा. अट्ठ. 7.148; – **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *धम्मदेसनं सुत्वा पसन्नो पसादं आविकरोन्तो,* स. नि. अट्ठ. 1.120; **ग.** रहस्य को उद्घाटित करता है, अपराध या पाप को स्वीकारता है – **रोहि** अनु., म. पु., ए. व. – *विपस्सिनं जानमुपागमुम्हा परिसासु नो आविकरोहि कप्पं,* सु. नि. 351; सु. नि. अट्ठ. 2.74; *निग्रोधकप्पं आविकरोहि पकासेही'ति,* थेरगा. अट्ठ. 2.450; – **रेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *आविकरेय्य गुय्हमत्थं,* जा. अट्ठ. 6.209; *यस्स सिया आपत्ति सो आविकरेय्य,* महाव. 130; *सो आविकरेय्या'ति सो देसेय्य, सो विवरेय्य,* महाव. 131; – **कातब्बं** सं. कृ., नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आविकरणं युत्तं आविकातब्बं,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.93; – **तब्बा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *सन्ती आपत्ति आविकातब्बा,* महाव. 131; – **कारापेत्वा** प्रेर., पू. का. कृ., पाप या अपराध का स्वीकरण करवा कर – *अतेकिच्छो नाम आविकारापेत्वा विस्सज्जेतब्बो'ति,* चूळव. अट्ठ. 27; **घ.** 'अत्तानं' के साथ प्रयुक्त रहने पर, आत्मान्वेषण करता है, स्वयं को खोजता है – **रोन्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *थेरस्स अत्तानं आविकरोन्तो कामरागेनाति आदिमाह,* स. नि. अट्ठ. 1.239; – **न्तं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *एवं अत्तानमाविकरोन्तं भगवन्तं दिस्वा,* थेरगा. अट्ठ. 2.262; **ङ.** 'दिट्ठि' के साथ प्रयुक्त होने पर, अपनी दृष्टि को बतलाता है या प्रकट करता है – **ति** वर्त., प्र. पु., ए. व. – *अनापत्तिया दिट्ठिं आवि करोति,* परि. 347; 348; *गरुकापत्तिया दिट्ठिं आविकरोति,* परि. अट्ठ. 222.

आविज्झति / आविज्जति / आविञ्जति / आविञ्जति / आविञ्छति व्यु., संदिग्ध, संभवतः आ + √विध एवं आ + √विच अथवा आ + √विजि के परस्पर व्यामिश्रण के फलस्वरूप अनेक रूपों में उपलब्ध [आविध्यति, भिन्नार्थक], **क.** गोल चक्कर में घूमता है या घुमाता है, चक्कर काटता है, चारों ओर चक्कर लगाता है, चक्राकार रूप में घूमता है, चक्राकार गति को प्राप्त करता है, चारो ओर से घेर लेता है, अपने अन्दर समाहित कर लेता है – **ञ्जति** वर्त., प्र. पु., ए. व. – ... *सो नागो रत्तिं तं सधातुकट्ठानं अनुपरियाति आविञ्जतीति अत्थो,* म. वं. टी. 342; – **ज्झन्ति** ब. व. – *आविज्झन्ति च चेलानि सम्बोधिं परिवारिता,* दी. वं. 16.26; *अथ नं पादे गहेत्वा आविञ्छन्ति,* अ. नि. अट्ठ. 2.3; – **ञ्छेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *गाविं तरुणवच्छं विसाणतो आविञ्छेय्य, ... उदकं कलसे आसिञ्चित्वा मत्थेन आविञ्छेय्य,* म. नि. 3.181; –

माना वर्त॰ कृ॰, स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *एकं थम्भं हत्थेन गहेत्वा तं आविञ्छमानाव समणधम्मं करोति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.398; – **ञ्जि / ञ्छि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *तिक्खन्तुं दीपं आविञ्जि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.62; *आविञ्जीति समन्ततो विचरि,* सारत्थ॰ टी॰ 1.156; ... *एकं मत्तिकापिण्डं चक्के ठपेत्वा चक्कं आविञ्छि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.281; – **ञ्जितुं** निमि॰ कृ॰ – ... *आविञ्जितुं न सक्का होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.141; *आविञ्जितुं न सक्का होतीति छिन्द तटादिसम्भवतो न सक्का होति आविञ्जितुं,* सारत्थ॰ टी॰ 2.296; – **ञ्झित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *तत्थपि चित्तस्सादं अलभमानो अन्तन्तेन आविञ्झित्वा आरामपच्चन्ते ... पासाणफलके निसीदि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.10; *"सुट्ठु ताता"ति बोधिसत्तो पोक्खरणिं आविञ्झित्वा पदं परिच्छिन्दन्तो ओतिण्णमेव पस्सि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.171-172; *सो ता आविञ्झित्वा मज्झिमसूकरियो ता आविञ्झित्वा पोतकसूकरे ते आविञ्झित्वा जरसूकरे ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.333; *"खेत्तं पन आविञ्झित्वा पण्णसञ्ञं बन्धन्तू"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.156; **ख.** प्रवृत्त करता है, समीप में जा पहुंचता है, आश्रय ग्रहण कर लेता है, अपनी ओर खींच लेता है – **ञ्छति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तं चक्खु आविञ्छति मनापियेसु रूपेसु,* स॰ नि॰ 2(2).197; – **ञ्छेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *कुक्कुरो आविञ्छेय्य गामं पवेक्खामी'ति,* स॰ नि॰ 2(2).197; – **ञ्छेय्युं** ब॰ व॰ – *अथ खो, ते भिक्खवे, छप्पाणका नानाविसया नानागोचरा सकं सकं गोचरविसयं आविञ्छेय्युं,* स॰ नि॰ 2(2).196-197; – **ञ्झन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ब्राह्मणो तस्स कालकिरियतो पट्ठाय सुसानं गन्त्वा छारिकपुञ्जं आविञ्झन्तो परिदेवति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.54; – **ञ्झित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *यस्मा पनेतं नगरं बहि आविञ्झित्वा जातेन हत्थि अस्सादीनं घासतिणेन चेव गेहच्छादनतिणेन च सम्पन्नं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.199; **ग.** नियन्त्रित अथवा सुव्यवस्थित कर लेता है, अपने वश में कर लेता है – **ञ्छेय्यासि** विधि॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *ततो त्वं, मोग्गल्लान, उभो कण्णसोतानि आविञ्छेय्यासि,* अ॰ नि॰ 2(2).225.

आविञ्छति[2] आ + √विछ से व्यु॰, अपनी ओर खींचता है या घसीटता है, आकर्षित होता है, आकर्षित करता है, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यस्स कस्सचि भिक्खुनो कायगतासति अभाविता अबहुलीकता, तं चक्खु आविञ्छति ... मनो आविञ्छति मनापियेसु धम्मेसु,* स॰ नि॰ 2(2).197; *यस्मिं यस्मिं द्वारे आरम्मणं बलवं होति तं तं आयतनं तस्मिं तस्मिं आरम्मणे आविञ्छति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.108; *तं चक्खु नाविञ्छतीति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.109; – **न्ति** ब॰ व॰ – *आविञ्छन्तीति आकड्ढन्ति,* सारत्थ॰ टी॰ 1.298; – **ञ्छेय्य / ञ्छेय्युं** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰/ब॰ व॰ – *ते छप्पाणका नानाविसया नानागोचरा सकं सकं गोचरविसयं आविञ्छेय्युं – अहि आविञ्छेय्य, वम्मिकं पवेक्खामी'ति सुसुमारो आविञ्छेय्य उदकं पवेक्खामी'ति,* स॰ नि॰ 2(2).197; *आविञ्छेय्युन्ति आकड्ढेय्युं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.107; *गाविं तरुणवच्छं विसाणतो आविञ्छेय्य ...,* म॰ नि॰ 3.181; – **ञ्छेय्यासि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *उभो कण्णसोतानि आविञ्छेय्यासि,* अ॰ नि॰ 2(2).225; – **विञ्छेय्याम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *गोयुगेहि आविञ्छेय्यामाति,* दी॰ नि॰ 3.15; *आविञ्छेय्यामाति आकड्ढेय्याम,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.10; – **ञ्छि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *भिक्खु इत्थिया गहितं रज्जुं सारत्तो आविञ्छि,* पारा॰ 187; – **ञ्छित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *आविञ्छित्वा आविञ्छित्वाति अत्थो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.182.

आविञ्जन / आविञ्छन / आविञ्छना नपुं॰/स्त्री॰, आ + √विध से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, **शा॰ अ॰,** अन्दर तक जाकर बेध देना, अपनी ओर खींचना या घसीट कर ले आना, आकर्षित करना, **ला॰ अ॰,** चारों ओर चक्र के आकार में घूमना, चक्कर काटना, ढिलाई के साथ लटकना – **ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकड्ढना नाम आविञ्छना,* पारा॰ 174; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राजा आविञ्छने बन्धं कुञ्चिकमुद्दिकं गण्हि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.184; – **छिद्द** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, द्वार के किवाड़ों पर बनाया गया वह छिद्र जिसमें अन्दर की ओर डोरी डालकर अन्दर की सिटकनी को खोला अथवा बन्द किया जा सके – **द्दं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आविञ्छनछिद्दन्ति यत्थ अङ्गुलिं वा रज्जुसङ्कलिकादिं वा पवेसेत्वा कवाटं आकड्ढन्ता द्वारबाहं फुसापेन्ति, तस्सेतं अधिवचनं,* वि॰ वि॰ टी॰ 2.224; *आविञ्छनछिद्दन्ति यत्थ अङ्गुलिं पेवेसेत्वा द्वारं आकड्ढनता द्वारबाहं फुसापेन्ति, तस्सेतं अधिवचनं,* सारत्थ॰ टी॰ 3.357; – **रज्जु** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, खींचने वाली रस्सी, द्वार को खोलने एवं बन्द करने हेतु प्रयुक्त द्वार के बाहर लटक रही डोरी – **ज्जुं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"अनुजानामि, भिक्खवे, कवाटं ... आविञ्छनरज्जु"न्ति,* चूळव॰ 239; ... *आविञ्छनरज्जुन्ति एत्थ रज्जु नाम सचेपि दीपिनङ्गुट्ठेन कता होति,* चूळव॰ अट्ठ॰ 59; *आविञ्छनरज्जुन्ति कवाटेयेव छिद्दं कत्वा तत्थ पवेसेत्वा येन रज्जुकेन कड्ढन्ता द्वारं फुसापेन्ति, तं आविञ्छनरज्जुकं,*

सारत्थ॰ टी॰ 3.357; – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आविञ्छनरज्जुयं कुञ्चिकमुद्दिकं बन्धित्वा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.183; – **रज्जुट्ठान** नपुं॰, खींचने वाली रस्सी का स्थान – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आविञ्छनरज्जुट्ठाने आरक्खं गहेत्वा अट्ठासि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.328; – **रस** त्रि॰, खींचने अथवा घसीट कर ले जाने का काम करने वाला – **सं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ... चक्खु, रूपेसु आविञ्छनरसं ... सोतं सद्देसु आविञ्छनरसं ... घानं गन्धेसु आविञ्छनरसं ..., जिव्हा, रसेसु आविञ्छनरसा ...,* विसुद्धि॰ 2.71; – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कायो फोट्ठब्बेसु आविञ्छनरसो,* तदे॰; *रूपेसु पुग्गलस्स, विञ्ञाणस्स वा आविञ्छनरसं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.85; – **क** नपुं॰, देवराज शक्र की वह सदा घूमते रहने वाली रस्सी जिसके द्वारा वे लोकों की धुरी तथा चक्र का संधारण करते हैं – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सक्को देवराजा आविञ्छनके आरक्खं विस्सज्जेसि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.329; *सक्को देवराजा आविञ्छनके आरक्खं गण्हि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.329.

आविट्ठ त्रि॰, आ + √विस का भू॰ क॰ कृ॰ [आविष्ट], **शा॰ अ॰,** प्रविष्ट, वह, जिसके भीतर कोई पूर्ण रूप से समा गया है, **ला॰ अ॰,** पूर्णरूप से ग्रस्त अथवा अभिभूत, भूत-प्रेतादि से ग्रस्त अथवा वशीकृत – **ट्ठा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वारुणीवाति यक्खाविट्ठा इक्खणिका विय ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.371.

आविद्ध त्रि॰, आ + √विध का भू॰ क॰ कृ॰ [आविद्ध], **शा॰ अ॰,** अन्दर तक बिधा हुआ या छेदा हुआ, मुड़ा हुआ, टेढ़ा, **ला॰ अ॰, 1.** चक्राकार गति को प्राप्त कराया गया, घुमाया जा रहा, चक्कर कटवाया जा रहा, गोल चक्कर में घूम रहा, चक्कर काट रहा – **द्धं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चक्कं ते सिरसि माविद्धं न तं जीवं पमोक्खसी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.6; *सिरसिमाविद्धन्ति यं पन ते इदं चक्कं सिरस्मिं आविद्धं कुम्भकारचक्कमिव भमति,* तदे॰; *सकिं आविद्धमेव याव मज्झन्हिकातिक्कमा भमियेव,* जा॰ अट्ठ॰ 5.281; **ला॰ अ॰, 2.** अभिभूत, पीड़ित – **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ब्यसनोपद्दवाविद्धो, विप्फन्दति विघातवा,* ना॰ रू॰ प॰ 1352; **ला॰ अ॰ 3.** फेंका गया, प्रक्षिप्त, हिला दिया गया, प्रकम्पित – *नुण्णो नुन्नात्तखित्ता चेरिताविद्धा,* अभि॰ प॰ 744; – **पक्खपासक** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसके चारों ओर पक्खपासक विन्यस्त कर दिए गए हों – *निल्लेखजन्ताघरं नाम आविद्धपक्खपासकं वुच्चति,* चूळव॰ अट्ठ॰ 52; *आविद्धपक्खपासकन्ति कण्णिकमण्डलस्स समन्ता ठपितपक्खपासकं,* वि॰ वि॰ टी॰ 2.220; द्रष्ट॰ पक्खपासक(आगे).

आविभवति आवि + √भू का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आविर्भवति], आंखों के सामने आ जाता है, सुस्पष्ट हो जाता है, प्रकट हो जाता है – *अविपरिणामधम्मस्स पन निरोधस्स दस्सनेनस्स विपरिणामट्ठो आविभवती'ति वत्तब्बमेवेत्थ नत्थि,* विसुद्धि॰ 2.331; *दुक्खदस्सनेन निदानट्ठो आविभवति,* तदे॰; – **न्ति** ब॰ व॰ – *सच्चन्तरदस्सनवसेन च आविभवन्ति,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.475; *लक्खणादीसु ञातेसु धम्मा आविभवन्ति हि,* अभि॰ अव॰ 632; – **विस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *मुत्ते पन थुल्लच्चयम्पि पाराजिकम्पि होति, तं परतो आविभविस्सति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.265; *सत्तेसु महाकरुणाय समोक्कमनाकारो, सो परतो आविभविस्सति,* उदा॰ अट्ठ॰ 106; *तस्स उप्पत्ति परतो आविभविस्सति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.86; *पठमं झानन्ति इदं परतो आविभविस्सति,* विसुद्धि॰ 1.140; – **विस्सन्ति** ब॰ व॰ – *अतिलीनोति आदीनि परतो आविभविस्सन्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.284.

आविभवन नपुं॰, आवि + √भू से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, सुस्पष्ट अथवा सुप्रकाशित हो जाना, आविर्भाव, आंखों के सामने आ जाना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आविभावो ति, आविभवनं आविभावो,* सद्द॰ 1.71; *आविभवनन्ति पच्चक्खभावो,* सद्द॰ 1.86.

आविभाव पु॰, आवि + √भू से व्यु॰ [आविर्भाव], **1.** अत्यधिक सुस्पष्ट होना, अत्यधिक सुस्पष्ट बनाया जाना, खुलासा करना, व्याख्यान, प्रकाशभाव – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं दिवसं कतकिरियाय आविभावो विय पुब्बेनिवासाय ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.181; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आविभावतोति पकासभावतो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.475; *अञ्ञसच्चदस्सनवसेन आविभावतो,* विसुद्धि॰ 2.330; – **वत्थं** क्रि॰ वि॰, सुस्पष्ट करने के लिए – *"तस्सायेव पटिपदाय आविभावत्थं धम्मं देसेमी"ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.258; *तस्स (फरुसा वाचा) आविभावत्थमिदं वत्थु,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ 1(1).208; स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.130; *तेसं आविभावत्थं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.77; *इमस्स पनत्थस्स आविभावत्थं इमस्मिं ठाने सुमेधकथा कथेतब्बा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.3-4; *तस्स आविभावत्थमिदं वत्थु,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1)208; – **वानुरूपं** क्रि॰ वि॰, जिस रूप में सुस्पष्ट अथवा अच्छी तरह ज्ञात हुआ है उसी की अनुरूपता में – *आविभावानुरूपं*

सत्थु गुणे अनुस्सरित्वा, उदा॰ अट्ठ॰ 217; – **कथा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, भली-भांति प्रकाशित करने वाला कथन, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुब्बयोगतो पट्ठाय आविभावकथा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).26; **2.** एक प्रकार का ऋद्धि-बल जिसमें साधक स्वयं को अकस्मात् प्रकट कर देता है, अधिट्ठान-इद्धि का एक प्रभेद, ऋद्धि बल द्वारा स्वयं को किसी भी पदार्थ द्वारा अनाच्छादित एवं सर्वथा सुस्पष्ट बना देना, अन्धकार में आलोक कर देना, ढके हुए की पूरी तरह खुला हुआ बना देना – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बहुधापि हुत्वा एको होति; आविभावं, तिरोभावं तिरोकुट्टं तिरोपाकारं तिरोपब्बतं असज्जमानो गच्छति,* दी॰ नि॰ 1.69; 196; दी॰ नि॰ 3.83; 230; *आविभावन्ति केनचि अनावटं होति अप्पटिच्छन्नं विवटं पाकटं,* पटि॰ म॰ 378; *आविभावन्ति पाकटभावं करोतीति अत्थो ..., आविभावं पच्चनुभोति ..., तत्रायं इद्धिमा आविभावं कत्तुकामो अन्धकारं वा आलोकं करोति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.279.

आविभावत्त नपुं॰, आविभाव का भाव॰, सुस्पष्टता, भलीभांति प्रकाशित होना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स पन आविभावत्ता पुग्गलस्स आविभूताव होन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.184.

आविभावन नपुं॰, आवि + √भू के प्रेर॰ का क्रि॰ ना॰, आविर्भूत करना, सम्यक् रूप से सुप्रकाशित करना – **नत्थं** द्वि॰ वि॰, क्रि॰ वि॰, सुप्रकाशित करने के लिए, सुस्पष्ट व्याख्या या उत्तर देने हेतु – *तस्साविभावनत्थं इदं चतुक्कं वेदितब्बं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.152; *तस्सेव पञ्हस्स आविभावत्थं अत्तनो च पण्डितभावस्स आपनत्थं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.173; पाठा॰ आविभावत्थं.

आविभावेतुकाम त्रि॰, सुस्पष्ट करने की कामना करने वाला – **मेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्तनो पुब्बचरितं आविभावेतुकामेन सत्थुना,* म॰ वं॰ टी॰ 561(रो॰).

आविभूत त्रि॰, आवि + √भू का भू॰ क॰ कृ॰ [आविर्भूत], भलीभांति प्रकाशित, सुस्पष्ट कर दिया गया – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्था तमत्थं आविभूतं कत्वा भिक्खुसङ्घस्स कथेन्तो आह,* जा॰ अट्ठ॰ 6.117; – **तेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *महाथेरो अनेकाकारवोकारं... आविभूतेसु अत्तमनो पमुदितो ... निसीदि,* उदा॰ अट्ठ॰ 217-218; – **काल** पु॰, तत्पु॰ स॰, सुस्पष्ट होने का समय, भलीभांति प्रकाशित किए जाने का काल – **लो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चातुमहाभूतिककायस्स आविभूतकालो ..., तंत्रिदं सुत्तं आवुतन्ति सुत्तस्स आविभूतकालो विय,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.184.

आविल त्रि॰, [आविल], **शा॰ अ॰,** मलिन जल, मटमैला, गंदला, अपवित्र या दूषित (जल), मथा हुआ या पङ्किल (जल); **ला॰ अ॰,** मलिन या क्लेशयुक्त चित्त – *अनच्छो कलु साविला,* अभि॰ प॰ 669; – **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आविलोति अप्पसन्नो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.209; *उदकरहदो आविलो लुळितो कललीभूतो,* अ॰ नि॰ 1(1).12; *उदपत्तो आविलो लुळितो कललीभूतो अन्धकारे निक्खित्तो,* अ॰ नि॰ 2(1).215; *आविलोति अप्पसन्नो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.69; – **लेन** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खु अनाविलेन चित्तेन अत्तत्थं वा ञस्सति परत्थं वा ञस्सति,* अ॰ नि॰ 1(1).12; *आविलेनाति पञ्चहि नीवरणेहि परियोनद्धेन,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.45; – **लानि** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आविलानि च पानीयानि पिवति,* महाव॰ 474; *आविलानि च पानीयानि पिवामि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.36; महाव॰ 474; *आविलानीति तेहि पठमतरं ओतरित्वा पिवन्तेहि आलुलितानि कद्दमोदकानि पिवति,* महाव॰ अट्ठ॰ 409; – **लं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आविलन्ति आलुलं,* उदा॰ अट्ठ॰ 326; *तं चक्कच्छिन्नं उदकं परित्तं लुळितं आविलं सन्दति,* दी॰ नि॰ 2.98; *पत्तीहि च खुभितं भवेय्य आविलं लुळितं कललीभूतं,* मि॰ प॰ 32; – **ले / म्हि** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथोदके आविले अप्पसन्ने, न पस्सति सिप्पिकसम्बुकञ्च ... एवं आविलम्हि चित्ते न सो पस्सति अत्तदत्थं परत्थं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.83; *तत्थ आविलेति कद्दमालुळिते ... एवं आविलम्हीति एवमेव रागादीहि आविले चित्ते,* तदे॰; *तात, आविले चित्तम्हि पगुणापि मन्ता न पटिभन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.83; स॰ प॰ में, **अना॰**- त्रि॰, निर्मल, स्वच्छ, पवित्र – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनाविलन्ति किलेसाविलत्तविरहितं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.172; *चन्दंव विमलं सुद्धं, विप्पसन्नमनाविलं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.393; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अना॰, चित्ता॰ के अन्त॰, द्रष्ट॰; स॰ पू॰ प॰ में, – **लक्ख** त्रि॰, ब॰ स॰, मलिन दृष्टि वाला, राग से रक्त दृष्टि वाला – **क्खो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं वे पिवित्वा उक्कट्ठो आविलक्खो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.16; *आविलक्खोति रत्तक्खो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.18; – **चित्त** त्रि॰, ब॰ स॰, मलिन अथवा राग आदि से दूषित चित्त वाला – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आविलचित्तो अनाविलं, सरजो वीतरजं अनङ्गणं,* थेरीगा॰ 371; – **त्ता** ब॰ व॰ ... *तस्मा यदि असुरा कुपिताविलचित्ता देवपुरं उपयन्ति युद्धेसू ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰

1.296; – **भाव** पु., मलिनता, अपवित्रता, राग आदि द्वारा दूषित होना – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *चित्तस्स आविलभावं जानेय्य आजानेय्य ...,* महानि. 369.

आविलता स्त्री., आविल का भाव., अनुपिटक पालि-साहित्य में ही प्रयुक्त [आविलत्व], अशुचिभाव, अशुद्धि, मलिनता, गंदलापन – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *सासनं च महेसिनो ... चिरं आविलतं गतं,* चू. वं. 73.4; – **य** तृ. वि., ए. व. – *आविलताय आविप्पसन्ने,* जा. अट्ठ. 2.83; स. उ. प. में, कद्दमा.- कीचड़ के कारण गंदलापन – *उदकम्हि सभावतो सेतवण्णं, भूमिवसेन कद्दमाविलताय च अञ्ञादिसं होति,* उदा. अट्ठ. 326.

आविलत्त नपुं., आविल का भाव. [आविलत्व], उपरिवत् – **त्तं** प्र. वि., ए. व. – *यदाविलत्तं मनसो विजञ्ञा, कण्हस्स पक्खोति विनोदयेय्य,* सु. नि. 973; *यदाविलत्तं मनसो विजञ्ञाति, चित्तस्स आविलभावं जानेय्य आजानेय्य विज्जानेय्य पटिविजानेय्य पटिविज्झेय्याति यदाविलत्तं मनसो विजञ्ञा,* महानि. 369; – **त्ता** प. वि., ए. व. – *आविलत्ता, भिक्खवे उदकस्स,* अ. नि. 1(1).12.

आविलति आविल का ना. धा., वर्त., प्र. पु., ए. व., गंदला अथवा मटमैला जैसा हो जाता है – *चलति खुब्भति लुळति आविलति ऊमिजातं होति,* मि. प. 242; 243.

आविसति आ + √विस का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आविशति], **शा. अ.,** भीतर तक प्रवेश करता है, पूरी तरह से प्रवेश कर जाता है, **ला. अ., 1.** पूरी तरह से अधिगृहीत कर लेता है, (लक्ष्य, देव, दानव आदि) अभिभूत कर लेता है, **2.** मनोभावों, क्लेशों, विपत्ति आदि को अपने वश में कर लेता है – *अयं यक्खो गण्हाति, अयं यक्खो आविसति, अयं यक्खो हेठेति ... ति,* दी. नि. 3.155; *अरति मं सोमदत्त आविसति,* जा. अट्ठ. 5.177; *भिय्यो आविसती सोको, दोमनस्सञ्चनप्पकं,* जा. अट्ठ. 5.322; – **न्ति** ब. व. – *पिसाचेहि उब्बाळ्हा होन्ति, आविसन्तिपि, हनन्तिपि,* महाव. 195; *ते किलेसा पवड्ढन्ता, आविसन्ति बहुं जनं,* थेरगा. 931; *जनं ... अभिभवित्वा अवसं करोन्ता आविसन्ति सन्तानं अनुपविसन्ति,* थेरगा. अट्ठ. 2.299; – **सेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *यथा वा पन, कञ्चिदेव पुरिसं भूतो आविसेय्य,* मि. प. 165; *भयं पीळनं घट्टनं उपद्दवो उपसग्गो आविसीति दिस्वा मं भयमाविसि,* महानि. 303; – **सि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *अञ्ञमञ्ञेहि ब्यारुद्धे, दिस्वा मं भयमाविसि,* सु. नि. 942; *भिय्यो मं आविसीति ब्राह्मणस्स चक्खूनि दत्वा,* जा. अट्ठ. 4.368; – **सित्वा** पू. का. कृ. – *यथा नाम केळिसीला रक्खसा भिसक्करहिते उम्मत्ते आविसित्वा ते अनयब्यसनं आपादेन्ता तेहि कीळन्ति ...,* थेरगा. अट्ठ. 2.299.

आवुट / आवुत / आवट त्रि., आ + √वु का भू. क. कृ. [आवृत], पूरी तरह से ढका हुआ, चारों ओर से आच्छादित, रुकावट-युक्त, बाधायुक्त, ग्रस्त, पीड़ित – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आवुतोति आवरितो,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.314; *पटिच्छन्नोति आवटो,* महानि. अट्ठ. 74; – **टा** ब. व. – *"तमोखन्धेन आवुटा"ति,* महाव. 5; दी. नि. 2.29; *तमोखन्धेन आवुटाति अविज्जारासिना अज्झोत्थटा,* स. नि. अट्ठ. 1.174; *संसरन्ति अहोरत्तं, यथा मोहेन आवुता,* इति. 8; *पुथु पञ्चहि नीवरणेहि आवुता निवुता ओवुता पिहिता पटिच्छन्ना पटिकुज्जिताति पुथुज्जना,* महानि. 107; *आवुटा निवुटा ओनद्धा परियोनद्धा,* दी. नि. 1.223; – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *वेठितं तु वलयितं तुं रुद्धं संवुतं सावुतं,* अभि. प. 745; *ततो तं पि पुरं तुङ्गपाकारपरिखावुतं,* चू. वं. 88.77; *अम्बोधिगम्भीरपरिखावुतं,* चू. वं. 88.116; स. उ. प. में, **अना.**- त्रि., [अनावृत], नहीं ढका हुआ, खुला हुआ, उन्मुक्त – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *वित्थिण्णो जम्बुदीपोयं मग्गानेक अनावुता,* सद्धम्मो. 391.

आवुणाति[1] **/ आवुणोति** आ + √वु का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आवृणोति / आवृणाति / आवृणुते / आवृणीते], **1.** ढक देता है, छिपा देता है, गुप्त रखता है, **2.** भर जाता है, व्याप्त हो जाता है, **3.** वरण करता है, इच्छा करता है, **4.** निवेदन या प्रार्थना करता है, **5.** घेर लेता है, नाकेबन्दी करता है, पालि साहित्य में इन अर्थों में केवल आवुट / आवुणित को छोड़ अन्य प्रयोग अप्राप्त, केवल व्याकरण ग्रन्थों में उल्लिखित – *आवुणोति, आवुणाति, पापुणोति, पापुणाति,* क. व्या. 450; *आवुणोति, आवुणाति, सक्कुनोति, सक्कुनाति,* सद्द. 3.825.

आवुणाति[2] **/ आवुनाति** आ + √वु से व्यु. [आवयति / आवयते], **शा. अ.,** आपस में गूंथ देता है, नत्थी कर देता है, वेध देता है, सिल देता है, छेद देता है, पिरो देता है, **ला. अ.,** शूली पर चढ़ा देता है – **न्ति** वर्त., प्र. पु., ब. व. – *अप्पेन्ति निम्बसूलस्मिन्ति इमस्मिं काले राजानो चोरं निम्बसूले आवुणन्ति,* जा. अट्ठ. 3.30; *तत्थ हि तिरियं पलिघं ठपेत्वा रुक्खसूचिसङ्खातं आणिं पलिघसीसे आवुणन्ति,* थेरगा. अट्ठ. 2.57; – **नथ** म. पु.,

ब॰ व॰ – *उप्पेथाति आवुनथ,* जा॰ अट्ठ॰ 6.20; – **नेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *मज्झिमकेसु सूलेसु आवुनेय्य, ये महासमुद्दे सुखुमका पाणा ते सुखुमकेसु सूलेसु आवुनेय्य,* स॰ नि॰ 3.504; – **णन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुमारो मेधावी पञ्ञवा सुतं सुतं मुतं आवुणन्तो विय गण्हाति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.55-56; – **णि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *भिक्खुसङ्घो सुत्तं वट्टेसि, सत्था सूचिपासके आवुणि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.345; – **णिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *बीजमिञ्जं गहेत्वान लताय आवुणिं अहं,* अप॰ 2.24; – **णिस्सन्ति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सचे हि इमं सूले आवुणिस्सन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.30; – **नितुं** निमि॰ कृ॰ – *महासमुद्दे सुखुमका पाणा, ये न सुकरा सूलेसु आवुनितुं,* स॰ नि॰ 3.504; – **णित्वा / नित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *इमस्सेव नं निम्बस्स सूले वा आवुणित्वा साखाय वा,* जा॰ अट्ठ॰ 3.30; *सत्त रोहितमच्छे उद्धरित्वा वल्लिया आवुणित्वा,* चरिया॰ अट्ठ॰ 100; *अङ्कमासकं विज्झित्वा सुत्तेन आवुनित्वा तस्स गीवायं पिळन्धि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.175; – **णापेस्सामि** प्रेर॰, भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *मारेत्वा खण्डाखण्डं छिन्दित्वा सूलेयेव आवुणापेस्सामी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.191.

आवुत² त्रि॰, आ + √वु (बुनना) का भू॰ क॰ कृ॰ [ओत], **1.** बुना हुआ, आपस में गूंथा हुआ, स॰ उ॰ प॰ में, **नवा॰**- नया नया बुना हुआ – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"आमाय्य, नवावुतो कम्बलो"ति,* पारा॰ 193; – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन खो पन समयेन अञ्ञतरा इत्थी नवावुतं कम्बलं पारुता होति,* पारा॰ 193; **तन्ता॰**- तांत से बुना हुआ – **तानं** नपुं॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यानि कानिचि तन्तावुतानं वत्थानं, केसकम्बलो तेसं पटिकिट्ठो अक्खायति,* अ॰ नि॰ 1(1).322; *तन्तावुतानन्ति तन्ते आवुतानं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.170; **2.** धागे से एक सिरे से दूसरे सिरे तक सिला हुआ, (मोती आदि के छिद्र के अन्दर) पिरोया हुआ – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्रास्स सुत्तं आवुतं नीलं वा पीतं वा लोहितं वा ओदातं वा पण्डुसुत्तं वा,* दी॰ नि॰ 2.10; दी॰ नि॰ 1.67; *तादिसञ्हि आवुतं पाकटं होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.183; स॰ पू॰ प॰ में, – **सुत्त** नपुं॰, कर्म॰ स॰, पिरोया हुआ धागा – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवुतसुत्तं विय विपस्सनाञाणं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.184; – **पण्डुसुत्त** नपुं॰, पिरोया हुआ पाण्डुवर्ण का धागा – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विप्पसन्ने मणिरतने आवुतपण्डुसुत्तं विय पस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.62; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.128; – **मुत्ता** स्त्री॰, कर्म॰ स॰, पिरोई हुई मोती – **त्ता** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अथस्स लोमकूपेसु आवुतमुत्ता विय हिमबिन्दूनि तिट्ठन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).360; **3.** बेधा गया, शूली पर चढ़ाया गया – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चमाय सत्तिया दण्डके मधुकपुप्फं विय आवुतो परिदेवमानो निपज्जि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.413; *चतुत्थे लङ्घयित्वान, पञ्चमायसि आवुतो'ति,* तदे॰; स॰ उ॰ प॰ में, **तला॰**- त्रि॰, छेदे गए करतल वाला – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तलावुताति हत्थतलेसु आवुता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.490.

आवुत्ति स्त्री॰, संस्कृत काव्य शास्त्र के पारिभाषिक शब्द आवृत्ति का अनुकरण [आवृत्ति], वह काव्यालङ्कार जिसमें पदों एवं अर्थों को पुनः दोहराया जाए, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुनप्पुनच्चारणं यं अत्थस्स च पदस्स च उभयेसञ्च विञ्ञेया सायं आवुत्ति नामतो,* सुबोधा॰ 224; तुल॰ दण्डी का काव्यादर्श, 2.116.

आवुत्थ त्रि॰, आ + √वस का भू॰ क॰ कृ॰, आबाद किया हुआ, वसा हुआ – **त्थं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवुत्थं धम्मराजेन, पीतिसञ्जननं मम,* स॰ नि॰ 1(1).38; म॰ नि॰ 3.314; – **त्था** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *साहं भुसालयावुत्था, वरवारिवहोघसा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.5.

आवुध नपुं॰, [आयुध], शस्त्र, हथियार – *वो यस्स, आवुधं, आयुधं वा,* सद्द॰ 3.623; **क.** सामान्य रूप में कोई भी अस्त्र अथवा हथियार – **धं¹** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयुधं मेनुभावेन तेसं काये पतिस्सति,* म॰ वं॰ 7.36; – **धं²** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पसन्नचित्तो आवुधं निक्खिपित्वा उपसङ्कमित्वा,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.101; *पमुञ्चित्वान आयुधं,* दी॰ वं॰ 2.23; *निक्खिपित्वान आवुधं,* दी॰ वं॰ 12.49; *आवुधं सरीरे ठपेत्वा "इदं नाम मे देही"ति साहसाकारा च,* जा॰ अट्ठ॰ 4.12; – **धानि¹** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तस्मिं खणे द्वादसयोजनिके वाराणसिनगरे सब्बावुधानि पज्जलिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 5.124; *सकलनगरेपि आवुधानि पज्जलितानी,* ति, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.235; – **धानि²** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आवुधानि छड्डेत्वा, भगवन्तं वन्दित्वा, निसीदिंसु,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.63; *सकलगामवासिनो आवुधानि गहेत्वा सङ्घे ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.90; **ख.** 5 प्रकार के आयुध या शस्त्र, **ला॰ अ॰,** मेत्ता, करुणा, काय, चित्त एवं उपधि विवेक नामक 5 आध्यात्मिक आयुध – **धं¹** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवुधन्ति पञ्चावुधं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.238; *पञ्चविधं आवुधं, यथा हि रथे ठितो पञ्चहि आवुधेहि सपत्ते*

विञ्ञति – मेत्ताय ..., करुणाय, ... काय विवेकेन ... चित्तविवेकेन ..., स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.158; – **धं**² द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्चेव चोरो असिमावुधञ्च*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.279; *आवुधन्ति सेसावुधं*, तदे॰; **ग.** कवच या ढाल से विपरीत अथवा भिन्न अस्त्र – **धं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *फलकञ्च आवुधञ्च दापेसि*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.251; *बलक्कारेन आवुधफलकं गाहापेत्वा*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.125; स॰ उ॰ प॰ में, **फलका॰**- ढाल एवं अन्य आयुध – **धानि**¹ द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *फलकावुधानि गाहापेत्वा*, जा॰ अट्ठ॰ 3.208; – **धानि**² प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *हत्थिनो च अस्सा च फलकावुधानि च*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.62; **निक्खित्तकवचा॰** – त्रि॰, ब॰ स॰, कवच एवं अस्त्रों को त्याग चुका – **वुधा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बे देवा अत्तमना निक्खित्तकवचावुधा*, अप॰ 1.149; स॰ पू॰ प॰ में, – **फलक** नपुं॰, द्व॰ स॰, आयुध एवं ढाल – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बलक्कारेन आवुधफलकं गाहापेत्वा*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.125; **घ.** कोई एक विशेष प्रकार का अस्त्र, हथियारों का कोई एक विशिष्ट प्रभेद – **धं**¹ प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रञ्ञो पच्चन्तिमे नगरे बहुं आवुधं सन्निचितं होति सलाकञ्चेव जेवनिकञ्च*, अ॰ नि॰ 2(2).244; *आवुधं नाम चापो कोदण्डो*, पाचि॰ 273; ... *आवुधन्ति असि वा उसु वा सत्ति वाति एवमादि*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.42; – **धं**² द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्चेव चोरो असिमावुधञ्च*, थेरगा॰ 869; – **धानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *निरयपाला जलितानि असिसत्तितोमर भिन्दिवालमुग्गरादीनि आवुधानि गहेत्वा ...*, जा॰ अट्ठ॰ 6.127; *असिसत्तिधनुआदीनि आवुधानि उग्गिरित्वा*, जा॰ अट्ठ॰ 1.154; *चोरा ... निक्खिप्पसत्थानि च आवुधानि च*, थेरगा॰ 724; *असिआदिसत्थानि चेव धनुकलापादि आवुधानि च*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.230; – **जात** नपुं॰, विशेष प्रकार का आयुध, कोई एक खास हथियार – **तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मतजं नाम आवुधजातं उभतोधारं पीतनिसितं*, म॰ नि॰ 1.353; – **जीविक** त्रि॰, ब॰ स॰, हथियारों से अपनी जीविका चलाने वाला – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सत्थन्ति आवुधजीविकं, उसुञ्च सतिञ्चाति वुत्तं होति*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.169; – **पाणि** त्रि॰, ब॰ स॰ [आयुधपाणि], अपने हांथों में शस्त्र धारण करने वाला – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न आवुधपाणिस्स अगिलानस्स धम्मं देसेस्सामि*, पाचि॰ 273; – **बल** त्रि॰, ब॰ स॰ **1.** वह, जिसका बल उसके शस्त्र या हथियार हैं – **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *रुण्णबला दारका ... आवुधबला चोरा ... अट्ठ बलानि*, अ॰ नि॰ 3(1).58; **2.** नपुं॰, आयुधों का बल, हथियार की ताकत – **लेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आवुधबलवन्तानन्ति आवुधबलेन युत्तानं समन्नागतानं*, जा॰ अट्ठ॰ 6.279; – **बलवन्तु** त्रि॰, आयुधों के कारण बलवान्, अस्त्र-शस्त्रों से पूर्ण रूप से सुसज्जित – **न्तानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आवुधबलवन्तानं, गुणिकायूरधारिनं एतादिसानं योधानं*, जा॰ अट्ठ॰ 6.278; – **भण्ड** नपुं॰, आयुधों का भण्डारण या संग्रह, समस्त आयुध – **ण्डं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्थवणिज्जाति आवुधभण्डं कारेत्वा तस्स विक्कयो*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.63; – **ण्डानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आवुधभण्डानि पज्जलिंसु*, मि॰ प॰ 8; – **लक्खण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आयुधलक्षण], आयुधों के लक्षण – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उसुलक्खणं, ... आवुधलक्खणं ... इति वा इति*, दी॰ नि॰ 1.8; महानि॰ 281; – **वस्सा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आयुधवर्षा], अस्त्रों की वर्षा, अत्यधिक अस्त्रों का प्रयोग – **स्सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नानप्पकारं आवुधवस्सं वस्सि*, जा॰ अट्ठ॰ 5.129; – **विज्जा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आयुधविद्या], अस्त्रविद्या – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सत्थेति आवुधविज्जाय*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.46; – **हत्थ** त्रि॰, ब॰ स॰ [आयुधहस्त], अपने हाथों में अस्त्र धारण करने वाला – **त्थं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रक्खणत्थाय परिवारेत्वा ठितं आवुधहत्थं परिसं ते न पस्सामि*, जा॰ अट्ठ॰ 5.369; *धनुकलापफलकावुधहत्थेहि*, जा॰ अट्ठ॰ 1.108; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, इन्दा॰, उय्यता॰, उय्युता॰, गदा॰, चित्रदण्डयुता॰, आणा॰, दाठा॰, दुस्सा॰, देवट्ठाना॰, नङ्गुला॰, नच्चगीतभाणितमिहिता॰, नद्धपञ्चा॰, नयना॰, पञ्चा॰, पञ्ञा॰, पविवेका॰, भद्रा॰, मङ्गला॰, वजिरा॰, वत्था॰, विपस्सना॰, वाचा॰, सज्जा॰, सन्नद्धपञ्चा॰, सहा॰, सुता॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आवुय्हमाना त्रि॰, आ + √वह का कर्म॰ वा॰, वर्त॰ कृ॰, (संभवतः आधूयमान के स्थान पर), अब ले जाया जा रहा – **ना** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *वातेन मन्दं आवुय्हमाना हेममयपुप्फाति अत्थो*, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 199.

आवुसो पु॰, सम्बो॰, ए॰ व॰/ब॰ व॰ [संभवतः वैदिकआयुष्मस/आयुष्वस् से व्यु॰], सम्बोधित करने का शिष्ट एवं सभ्य प्रकार, श्रीमन्, हे सत्यपुरुष, ऐ मित्र/मित्रों, अनेक प्रकार से प्रयुक्त, **1.** सामान्य जनों द्वारा प्रयुक्त सम्बोधन-वचन, सामान्य जनों को सम्बोधित करने हेतु प्रयुक्त वचन, बौद्ध भिक्षु-संघ से इतर व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त सम्बोधन, बौद्धेतर धर्माचार्यों एवं उनके प्रव्रजित

अनुयायियों के लिए भी प्रयुक्त सम्बोधन – *पुब्बे त्वं आवुसो, अम्हाकं पुरतो केळिं अकासि,* जा. अट्ठ. 2.371; *न खो अहं, आवुसो, अद्दस न्ति?,* दी. नि. 2.99; *कंसि त्वं, आवुसो उद्दिस्स पब्बजितो,* महाव. 11; ध. प. अट्ठ. 2.322; *ते निगण्ठे एतदवोचं – आवुसो, निगण्ठा उब्भट्ठका आसनपटिक्खित्ता,* म. नि. 1.130; *आळारं कालामं एतदवोचं – इच्छामहं, आवुसो कालाम,* म. नि. 1.222; *उदकं रामपुत्तं एतदवोचं, इच्छामहं, आवुसो, इमस्मिं धम्मविनये ब्रह्मचरियं चरितुन्ति,* म. नि. 1.224; *"कोसि त्वं आवुसो"ति,* स. नि. 1(1).176; **2.** बौद्ध-भिक्षुओं एवं बौद्ध-भिक्षुणियों द्वारा बौद्धधर्म के प्रति श्रद्धावान् गृहस्थजनों (उपासकों) के लिए प्रयुक्त सम्बोधनपद – *छब्बग्गियेहि, आवुसो, भिक्खूहि आवरणं कत न्ति,* महाव. 107; *वेसालिके उपासके एतदवोच – "मावुसो, अदत्थ सङ्घस्स कहापणम्पि अड्ढम्पि पादम्पि मासकरूपम्पि,* चूळव. 463; *पञ्च खो इमे, आवुसो विसाख, उपादानक्खन्धा सक्कायो वुत्तो भगवता,* म. नि. 1.380; **3.** बौद्ध-भिक्षुसंघ के सदस्य भिक्षुओं द्वारा आपस में एक दूसरे के लिए प्रयुक्त, अत्यधिक प्रचलित सम्बोधन, [**टि.**, स्वयं बुद्ध भिक्षुओं के लिए 'भिक्खवे' सम्बोधन का प्रयोग करते थे तथा बौद्ध-गृहस्थजन इन भिक्षुओं को सम्बोधित करने हेतु 'भन्ते' पद का प्रयोग करते हुए बतलाए गए हैं] – *आवुसो ..., आवुसोति हि अवत्वा, भिक्खवेति वचनं बुद्धालापो नाम होति, अयं पनायस्मा "दसबलेन समानं आलपनं न करिस्सामी"ति सत्थु गारववसेन सावकालापं करोन्तो" आवुसो भिक्खवे"ति आह,* अ. नि. अट्ठ. 2.32-33; *आवुसो भिक्खवोति एत्थ बुद्धा भगवन्तो सावके आलपन्ता "भिक्खवो"ति आलपन्ति, सावका पन "बुद्धेहि सदिसा मा होमा"ति"आवुसो"ति पठमं वत्वा पच्छा "भिक्खवो"ति वदन्ति, बुद्धेहि च आलपिते भिक्खुसङ्घो"भदन्ते"ति पटिवचनं देति, सावकेहि आलपिते"आवुसो"ति,* पटि. म. अट्ठ. 2.172.

आवुसोवाद पु., 'आवुसो' कहकर सम्बोधित करना – **दो** प्र. वि., ए. व. – *आवुसोवादोयेव हि अञ्ञमञ्ञ भिक्खूनं भगवतो धरमानकाले आचिण्णो,* उदा. अट्ठ. 254; – **देन** तृ. वि., ए. व. – *तथागतं नामेन च आवुसोवादेन च समुदाचरथ,* जा. अट्ठ. 1.90; *नामेन च आवुसोवादेन च समुदाचरन्तीति गोतमाति, आवुसोति च वदन्ति, आवुसो गोतम,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).93; *आवुसोवादेन समुदाचरितब्बं अभञ्जित्थ,* म. नि. 3.296; *यथा खो पनानन्द, एतरहि भिक्खू अञ्ञमञ्ञं आवुसोवादेन समुदाचरन्ति, न खो ममच्चयेन एवं समुदाचरितब्बं, थेरतरेन, आनन्द, भिक्खुना नवकतरो भिक्खु नामेन वा गोत्तेन वा आवुसोवादेन वा समुदाचरितब्बो,* दी. नि. 2.115.

आवेग पु., संस्कृत से गृहीत [आवेग], 33 व्यभिचारीभावों में से एक व्यभिचारीभाव, मन की बेचैनी, व्याकुलाहट – *निद्दावेगा सबीडम्भरणं सचपला व्याधितेतिस्समेते,* सुबोधा. 346(गा.).

आवेठन नपुं., आ + √वेठ्ठ से व्यु, क्रि. ना. [आवेष्टन], **शा. अ.**, लपेट लेना, अपनी पकड़ में ले लेना, घेरे में ले लेना या घेर लेना, चारों ओर से घेरे में ले लेना, **ला. अ.**, वाद-विवाद अथवा संलाप की प्रक्रिया में 3 युग्मों में निर्दिष्ट 6 प्रकार के उपकरणों या अंगों में प्रथम, प्राचीन वाद-पद्धति का एक अङ्ग – **नं** प्र. वि., ए. व. – *पण्डितानं खो, सल्लापे आवेठनम्पि कयिरति, निब्बेठनम्पि कयिरति, निग्गहोपि कयिरति, पटिकम्मम्पि कयिरति, विस्सासोपि कयिरति, पटिविस्सासोपि कयिरति, न च तेन पण्डिता कुप्पन्ति,* मि. प. 25; स. प. में, – *यं पन तथागतो कसिभारद्वाजस्स ब्राह्मणस्स भोजनं पजहि, तं आवेठनविनिवेठन कड्ढननिग्गहप्पटिकम्मेन निब्बति, तस्मा तथागतो तं पिण्डपातं पटिक्खिपि न उपजीवी ति,* मि. प. 217.

आवेठिका / आवेठिया स्त्री., उपरिवत् – **ठियं** द्वि. वि., ए. व. – *पुब्बेव सल्लापा कथंकथी विनिघाती होति, 'जयो नु खो मे भविस्सति, पराजयो नु खो मे भविस्सति, कथं निग्गहं करिस्सामि ... कथं आवेठियं करिस्सामि, कथं निब्बेठियं करिस्सामि,* महानि. 120; *आवेठियं करिस्सामीति परिवेठनं करिस्सामि,* महानि. अट्ठ. 226; – **या** प्र. वि., ए. व. – *निग्गहो ते अकतो, पटिकम्मं ते दुक्कटं, विवेसो ते अकतो, पटिविसेसो ते दुक्कटो, आवेठिया ते अकता, निब्बेठिया ते दुक्कटा,* महानि. 121; – **य** तृ. वि., ए. व. – *आवेठियाय आवेठियन्ति आवेठेत्वा निवत्तनेन निवत्तनं निब्बेठियाय निब्बेट्ठियन्ति दोसतो मोचनेन मोचनं,* महानि. अट्ठ. 229.

आवेठेति आ + √वेठ्ठ का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आवेष्टयति], **1.** लपेट लेता है, घेर लेता है, प्रयोगों के लिए आवेठ्ठित के अन्त. द्रष्ट.; **2.** ऐंठ देता है, मरोड़ देता है, मोड़ देता है – **ठ्ठितं / ल्लितं** भू. क. कृ., प्र. वि., ए. व. – *आवेल्लितं पिट्ठितो उत्तमङ्गं, ... आवेल्लितन्ति परिवत्तितं,* जा. अट्ठ. 4.345; पाठा. आवेळितं.

आवेणिक / आवेणिय / आवेनिक / आवेनि त्रि., व्यु., संदिग्ध, [बौ. सं., आवेणिक / आवेणीय], 1. पृथक् भागों या खण्ड खण्ड में विभाजित, अलग अलग भागों या हिस्सों में विभक्त, एकदम पृथक् रूप में प्राप्त – **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *धातु आवेणिका नत्थि, सरीरं एकपिण्डितं,* अप. 1.68; *धातु आवेणिका नत्थीति देवमनुस्सेहि विसुं विसुं चेतियं कातुं आवेणिका विसुं धातु नत्थि,* अप. अट्ठ. 2.291; 2. त्रि., असामान्य रूप में अथवा विशिष्ट रूप में प्रशस्त, असामान्य धर्मों या लक्षणों के रूप में कथित, असाधारण, दूसरों में अप्राप्त, विशेष प्रकार का, केवल किसी एक में ही विद्यमान – **कं**[1] नपुं., प्र. वि., ए. व. – *इदं लोके उत्तरियन्ति इदं पन इमस्मिं लोके असदिसं मय्हं एव आवेणिकं,* चरिया. अट्ठ. 180; *आवेनिकमभारियं अमतोसध मिच्चन्त मजरामरसाधनं,* ना. रू. प. 979; *सयंकतानि पुञ्ञानि, तं मे आवेणिकं धनं,* जा. अट्ठ. 6.153; – **कं**[2] नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *आवेणिकं कम्मं वा उद्देसं वा करोन्ति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.77; *एकसीमायं आवेणिकं सङ्घकम्मं अकासि,* जा. अट्ठ. 1.468; *भिक्खुसङ्घं विसुं कत्वा मं अनुवत्तन्तेहि भिक्खूहि सद्धिं आवेणिकं उपोसथं सङ्घकम्मानि,* ..., उदा. अट्ठ. 258; – **कानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *पञ्चिमानि मातुगामस्स आवेणिकानि दुक्खानि यानि मातुगामो पच्चनुभोति, अञ्ञत्रेव पुरिसेहि,* स. नि. 2(2).234; *ततिये आवेणिकानीति पटिपुग्गलिकानि पुरिसेहि असाधारणानि,* स. नि. अट्ठ. 3.123; – **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – ... *आदिना ओकारन्तस्स इत्थिलिङ्गस्स गोसद्दस्स आवेणिका नामिकपदमाला वुत्ता,* सद्द. 1.220; *आवेणिका ठितिका कातब्बा,* चूळव. अट्ठ. 94; – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *असेचनको च सुखो च विहारोति एत्थ पन नास्स सेचनन्ति ... पाटेक्को आवेणिको,* पारा. अट्ठ. 2.9; स. नि. अट्ठ. 3.300; – **केन** नपुं., तृ. वि., ए. व. – *तस्मा आवेणिकेन लक्खणेन अप्पत्तो,* महाव. अट्ठ. 403; – **के** सप्त. वि., ए. व. – *आवेणिके असीति अनुब्यञ्जनानि,* सद्द. 1.254; – **घरावास** पु., विशेष प्रकार के घर में निवास – **सं** द्वि. वि., क्रि. वि. – *आवेणिकघरावासं वसनकालतो,* अ. नि. अट्ठ. 1.307; – **त्त** नपुं., भाव., विशिष्टता, अपने आप में खास तरह का होना – *अरियानं पन तस्स तस्सेव आवेणिकत्ता अत्तसदिसत्ता,* उदा. अट्ठ. 154; – **णिकबुद्धधम्म** पु., बुद्ध के विशिष्ट लक्षण, स. प. के अन्त., – *छ असाधारण ञाण अट्ठारसावेणिक बुद्धधम्मपभुति अपरिमाणगुणसमन्नागताय,* वि. व. अट्ठ. 180; – **णिकभूत** त्रि., विशिष्ट अथवा असामान्य प्रकृति से युक्त – **तेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. – *पब्बाजनीयकम्मस्स आवेणिकभूतेन कुलदूसक ... भावलक्खणेन,* सारत्थ. टी. 3.314.

आवेध पु., आ + √विध से व्यु. [आवेध], व्रण, फोड़ा, ज़ख्म, विद्ध-स्थान, बेधा गया स्थान – **धं** द्वि. वि., ए. व. – *आवेधञ्च न पस्सामि, यतो रुहिरमस्सवे,* जा. अट्ठ. 2.230; *आवेधञ्च न पस्सामीति विद्धट्ठाने वणञ्च न पस्सामि,* तदे.; – **तो** प. वि., ए. व. – *आवेधतो लोहितं पग्घरेय्य,* जा. अट्ठ. 2.230.

आवेनि त्रि., आवेणिक का ही समानार्थक, असामान्य, विशिष्ट, अपनी ही तरह का, खास – **निं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *आवेनिं उपोसथं ... आवेनिं सङ्घकम्मं करोन्ति,* चूळव. 345; परि. 370; *आवेनिं कम्माकम्मानि करोन्ति,* परि. 371; स. पू. प. के रूप में, – **कम्म / सङ्घकम्म** नपुं., भिक्षुसङ्घ से सर्वथा स्वतन्त्र होकर अपने व्यक्तिगत स्तर पर किए गए उपोसथ आदि संघकर्म – **म्मानि** द्वि. वि., ब. व. – *आवेनिकम्मानि करोन्ति, न आवेनिपातिमोक्खं उद्दिसन्ति,* अ. नि. 3(2).61, 63; *आवेनिकम्मानि करोन्तीति विसुं सङ्घकम्मानि करोन्ति,* अ. नि. अट्ठ. 3.308; देवदत्तो एकसीमायं आवेणिकं सङ्घकम्मं *अकासि,* जा. अट्ठ. 1.468; – **निभाव / निकभाव** पु., विशिष्ट भाव, विशिष्ट स्वरूप की अवस्था – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *अन्तोसीमाय आवेनिभावं करित्वा गणं बन्धित्वा आवेनिं उपोसथं करोन्ति,* परि. 371; *आवेनिभावं करित्वाति विसुं ववत्थानं करित्वा,* परि. अट्ठ. 226.

आवेय्य / आदेय्य पु., व्य. सं., 59 कल्पों के पूर्वकाल में विद्यमान एक चक्रवर्ती राजा का नाम – **वेय्यो** प्र. वि., ए. व. – *आदेय्यो नाम नामेन चक्कवत्ती महब्बलो,* अप. 1.189; पाठा. आवेय्यो.

आवेळ[1] **/ आवेल** पु. / स्त्री., [आवेष्ठ?], कर्णाभूषण, अवतंसक, कानों में धारण किया जाने वाला आभूषण, हार, माला, कनबाली – **ळा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *उत्तंसो सेखरावेळा,* अभि. प. 308; *आवेळाति कण्णिका,* पारा. अट्ठ. 2.183; – **ळं** द्वि. वि., ए. व. – *आवेळं करोन्ति,* चूळव. 22; *आवेलं पग्गहेत्वान, ... बुद्धस्स अभिरोपयिं,* अप. 1.227; *चन्दसूरसहस्सानि, आवेळमिव धारयि,* अप. 2.205; – **त्थ** पु., कर्णाभूषण के निमित्त – **त्थं** द्वि. वि., ए. व., क्रि. वि. – *पञ्च उप्पल्लहत्थानि, आवेळत्थं अहंसु मे,* अप.

1.96; – **सङ्घात** त्रि., अवतंसक (कनबाली) कहा जाने वाला (गहना) – **तेहि** पु., तृ. वि., ब. व. – *आवेळिनेति आवेळसङ्घातेहि कण्णालङ्कारेहि युत्ते,* जा. अट्ठ. 5.405.

आवेळ² / आवेल पु., व्य. सं., रेवत बुद्ध के एक प्रासाद का नाम – **ळो** प्र. वि., ए. व. – *सुदस्सनो रतनग्घि, आवेळो च विभूसितो,* बु. वं. 319.

आवेळवती स्त्री., आवेळ + वन्तु से व्यु., कर्णाभूषण से युक्त, स. उ. प. में, **रतनमयपुप्फा.**- रत्नों के पुष्पों से निर्मित कर्णाभूषण वाली, प्र. वि., ए. व. – *आवेळिनीति रतनमयपुप्फावेळवती,* वि. व. अट्ठ. 103.

आवेळावेळ त्रि., अनेक हारों अथवा मालाओं जैसा, अनेक हारों अथवा मालाओं से परिपूर्ण – **ळा** स्त्री., द्वि. वि., ब. व. – ... *आवेळावेळा यमकयमका छब्बण्णघनबुद्धरस्मियो विस्सज्जेन्तो* ..., जा. अट्ठ. 1.478; *आवेळावेळाभूता यमकयमकभूता घनबुद्धरस्मियो विस्सज्जेन्तं* ..., जा. अट्ठ. 1.425.

आवेळी त्रि., हारयुक्त, कर्णाभूषण-युक्त, हारों अथवा कर्णाभूषणों को धारण करने वाला – **ने** पु., प्र. वि., ब. व. – *आवेळिनेति आवेळसङ्घातिहि कण्णालङ्कारेहि युत्तो,* जा. अट्ठ. 5.405; *आवेळिने सद्दगमे असङ्गिते,* जा. अट्ठ. 5. 404; – **लिनियो** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *आवेळिनियो पदुमुप्पलच्छदा, अलङ्कता चन्दनसारवासिता,* वि. व. 1029.

आवेल्लितसिङ्गिक त्रि., ब. स. [आवेल्लितशृङ्गक], कुछ कुछ वक्र या टेढ़े तिरछे सींगों वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *आवेल्लितसिङ्गिको हि मेण्डो,* जा. अट्ठ. 6. 182.

आवेसन नपुं., आ + √विश के प्रेर. से व्यु. [आवेशन], शिल्पशाला, कारखाना – **नं¹** प्र. वि., ए. व. – *आवेसनं सियावेसे सिप्पसालाघरेसु च,* अभि. प. 906; *आवेसनं सिप्पसाला,* अभि. प. 212; *घटिकारस्स कुम्भकारस्स आवेसनं सब्बं तेमासं आकासच्छदनं अट्ठासि,* मि. प. 210; – **नं²** द्वि. वि., ए. व. – ... *गच्छथ कुम्भकारस्स आवेसनं उत्तिणं करोथा'ति,* म. नि. 2.254; – **ने** सप्त. वि., ए. व. – ... *नत्थि ... कुम्भकारस्स निवेसने तिणं, अत्थि च ख्वास्स आवेसने तिणच्छदनन्ति* ..., म. नि. 2.253-254; विलो. निवेसन.

आवेसनवित्थक नपुं., सिलने के उपकरणों को रखने हेतु प्रयुक्त लघु पात्र, सुई धागा आदि को रखने के लिए छोटी डिबिया – **कं** द्वि. वि., ए. व. ... *सूचियोपि सत्थकापि पटिग्गहापि नस्सन्ति ... "अनुजानामि आवेसनवित्थक"न्ति,* चूळव. 235; *आवेसनवित्थकं नाम यं किञ्चि पाटिचङ्कोटकादि,* चूळव. अट्ठ. 51.

आवेसिक पु., [आवेशिक], अतिथि, अभ्यागत, घर में अचानक आ पहुंचा मेहमान, पाहुन – *पुमे अतिथि आगन्तु पाहुना'वेसिकाप्यथ,* अभि. प. 424.

आस¹ पु., √असु(फेंकना) से व्यु. [आस], प्रक्षेपण, फेंकना, केवल स. उ. प. के रूप में ही प्रयुक्त, इस्सा., (वाण का प्रक्षेपण) के अन्त., द्रष्ट. आगे.

आस² स. उ. प. में आसा का विपरिवर्तित स्वरूप, निरा., (आशारहित), विगता., (आशा या कामना से मुक्त) के अन्त., द्रष्ट. (आगे).

आस³ √अस का परोक्ष भूत, प्र. पु., ए. व. [आस], हुआ था, केवल इतिहा. (इति + हि + आस, ऐसा घटित हुआ था) के उ. प. के रूप में प्रयुक्त, इतिहा. के अन्त. द्रष्ट. (आगे).

आस⁴ पु., √अस (भोजन करना) से व्यु. [आश], भोजन, केवल स. उ. प. के रूप में ही प्रयुक्त, पातरा. [प्रातःकाल का भोजन, नाश्ता], सायमा. [सायंकालीन भोजन], आदि के अन्त. द्रष्ट. (आगे).

आसंस त्रि., आ + √संस से व्यु., किसी (वस्तु) की कामना करने वाला, इच्छुक, आशा रखने वाला – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सो हि अरहत्तं आसंसति पत्थेतीति आसंसो,* प. प. अट्ठ. 57; *निरासो आसंसो विगतासो* ..., अ. नि. 1(1).131; प. प. 109; *आसंसोति आसंसमानो पत्थयमानो,* अ. नि. अट्ठ. 2.78.

आसंसति / आसिंसति / आसीसति आ + √संस का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आशंसते], कामना करता है, आशा करता है – *आसिसि इच्छायं आपुब्बो सिसि इच्छायं वत्तति, आसिंसति आसिंसत एव पुरिसो,* सद्द. 2.448; *सो हि अरहत्तं आसंसति पत्थेतीति आसंसो,* प. प. अट्ठ. 57; *नेव इमं लोकं आसीसति न परलोकं,* पेटको. 304; *यावतासीसती पोसो तावदेव पवीणति,* जा. अट्ठ. 3.342; *तत्थ आसीसतेवाति आसीसतियेव पत्थेतियेव,* जा. अट्ठ. 3.220; *"नासीसते लोकमिमं परं लोकञ्चा"ति,* पेटको. 304; *परं लोकं नासीसति पररूपवेदनासञ्ञासङ्खारविञ्ञाणं, इमं लोकं नासीसति छ अज्झत्तिकानि आयतनानि,* महानि. 43; – **न्ति** ब. व. – *आसीसन्ति थोमयन्ति अभिजप्पन्ति जुहन्ति,* सु. नि. 1052;

– **सरे** आत्मने., वर्त., प्र. पु., ब. व. – *परतो आसीसरे बाला,* स. नि. 1(1).39; – **सीस / साहि** अनु., म. पु., ए. व. – *आसीसेव तुवं राज, आसा फलवती सुखा,* जा. अट्ठ. 3.219; *आसीसेवाति आसीसाहियेव पत्थेहियेव,* ..., जा. अट्ठ. 3.220; – **सेथ** विधि., आत्मने., प्र. पु., ए. व. – *आसीसेथेव पुरिसो,* जा. अट्ठ. 1.258; जा. अट्ठ. 4.240; – **सन्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *आरोगभावं आसीसन्तो आह,* उदा. अट्ठ. 100; – **सतो** नपुं., ष. वि., ए. व. – *न भावितमासीसतो समनुञ्ञो होति,* दी. नि. 3.35; – **सिंसता** तृ. वि., ए. व. – *जनहितं आसिंसता पूजिय,* म. वं. 30.100; – **सन्ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *जीवितं आसीसन्ता,* वि. व. अट्ठ. 286; – **मानो** वर्त. कृ., आत्मने., पु., प्र. वि., ए. व. – *आसंसोति आसंसमानो पत्थयमानो,* अ. नि. अट्ठ. 2.78; – **सं** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *आसीसन्ति थोमयन्ति,* सु. नि. 1052; स. प. में वर्त. कृ.; आसीसमानरूपोव, परि. 276; – **नीय / सितब्ब** त्रि., सं. कृ., कामना करने योग्य, इच्छा करने योग्य – **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आसिंसनीयं निच्चसुखप्पदं,* भेसज्ज. 14.

आसंसा स्त्री., [अशंसा], इच्छा, कामना, आशा – **यं** सप्त. वि., ए. व. – *आसंसायञ्हि अनागतेपि वत्तमानवचनं इच्छन्ति सद्दकोविदा,* सु. नि. अट्ठ. 2.50; *आसंसायं भूतवचनं,* पटि. म. अट्ठ. 2.131.

आसंसुक त्रि., [आशंसु], आशाओं से परिपूर्ण, इच्छा करने वाला – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *अकम्मकामा अलसा, परदत्तूपजीविनो, आसंसुका सादुकामा,* थेरीगा. 273; *आसंसुकाति ततो एव घासच्छादनादीनं आसीसनका,* थेरीगा. अट्ठ. 242.

आसक त्रि., स. उ. प. में ही प्रयुक्त, खाने वाला, स. उ. प. में अना., अनात्त. के अन्त. द्रष्ट..

आसङ्कति आ + √सङ्क का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आशङ्कते], आशंका करता है, डरता है – *मित्तस्स भेदमेव आसङ्कति,* जा. अट्ठ. 3.166; *तुम्हेसु कञ्चि आसङ्कति,* जा. अट्ठ. 4.278; – **ङ्कामि** उ. पु., ए. व. – *अत्तनो जीवितविनासं आसङ्कामि,* जा. अट्ठ. 3.221; – **न्ति** प्र. पु., ब. व. – *तमेव भिक्खुं आसङ्कन्ति,* पाचि. अट्ठ. 140; – **थ** म. पु., ब. व. – *'कत्थ पन तुम्हे आसङ्कथा'ति,* उदा. 118; – **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *पुत्तं आसङ्कन्तो नीहरि,* जा. अट्ठ. 2.171; *अत्तनो यूथपरिहरणं आसङ्कन्तो,* जा. अट्ठ. 3.106; – **मानो** उपरिवत्, आत्मने. – *रञ्ञो पज्जोतस्स आसङ्कमानो,* म. नि. 3.56; – **माना** प्र. वि., ब. व. – *अत्तनो रज्जविपत्तिं आसङ्कमाना,* जा. अट्ठ. 1.327; *पुब्बे राजानो पुत्ते आसङ्कमाना,* जा. 3.104; – **ङ्कि** अद्य., म. पु., ए. व. – *मा त्वं पुत्तस्स किञ्चि पापकं आसङ्कि,* जा. अट्ठ. 1.165; *न खो मोग्गल्लानं त्वञ्ञेव आसङ्कितब्बयुत्तकं आसङ्कि,* जा. अट्ठ. 3.29; *सीलभेदे आसङ्कं करिंसु,* ध. प. अट्ठ. 2.333; – **ङ्किंसु** प्र. पु., ब. व. – *पोराणकपण्डितापि आसङ्किंसू'ति,* जा. अट्ठ. 3.29; – **ङ्कित्थ** आत्मने., म. पु., ब. व. – *मा अञ्ञं किञ्चि आसङ्कित्थ,* जा. अट्ठ. 1.155; – **ङ्कितब्ब** सं. कृ. – **ब्बो** पु., प्र. वि., ए. व. – *"भिक्खवे किलेसो नाम आसङ्कितब्बोव,* जा. अट्ठ. 3.181; – **ब्बं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *"पोराणकपण्डितापि आसङ्कितब्बं आसङ्किंसुयेवाति वत्वा अतीतं आहरि,* तदे.; – **युत्तक** त्रि., आशंका करने योग्य – **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *"आसङ्कितब्बयुत्तकं नाम आसङ्कितुं वट्टती"ति पलासदेवताय सद्धिं मन्तेन्तो* ..., जा. अट्ठ. 3.181; *"भिक्खवे, आसङ्कितब्बयुत्तकं नाम आसङ्कितुं वट्टति* ..., जा. अट्ठ. 3.351; – **ङ्कितुं** निमि. कृ. – *"आसङ्कितुं वट्टती"ति,* जा. अट्ठ. 3.181.

आसङ्कनीय त्रि., आ + √सङ्क का सं. कृ. [आशङ्कनीय], आशंका या सन्देह करने योग्य, भय करने योग्य, अनिश्चित, संदिग्ध – **यो** पु., प्र. वि., ए. व. – ... *"तवाचरियेन कत"न्ति वुत्ते तुण्हीभूतो अधिवासेति, आसङ्कनीयो होति,* दी. नि. अट्ठ. 1.50; स. उ. प. में, **अना.** – **ता** स्त्री., भाव., आशंका से रहित स्थिति, भयरहित अथवा सुरक्षित स्थिति – **य** तृ. वि., ए. व. – ... *अनासङ्कनीयताय पब्बज्जालिङ्गसमादानादीनि अनुतिट्ठन्तो धम्मेन वाणिज्जं करोति नाम,* उदा. अट्ठ. 272; – **पदेस** पु., अनिश्चित प्रकृति का क्षेत्र अथवा विषय – **से** सप्त. वि., ए. व. – *आसङ्कनीयपदेसे ठत्वा,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).269; *आसङ्कनीयपदेसे ठत्वा चीवरं पारुपित्वा* ..., दी. नि. अट्ठ. 1.155.

आसङ्का[1] स्त्री., [आशङ्का], भय, अनिश्चितता, सन्देह भरी मानसिक स्थिति, प्र. वि., ए. व. – *भयं वा आसङ्का वा नत्थि,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).319-320; – **ङ्कं** द्वि. वि., ए. व. – *आसङ्कं करिस्सन्ती'ति,* पाचि. अट्ठ. 186; *बोधिसत्तो ... आसङ्कं कत्वा ... कुमारिकाय आसङ्काति नामं अकासि,* जा. अट्ठ. 3.218; स. उ. प. के रूप में, अजिगणा.,

अना॰, निरा॰, रत्तुप्पलग्गसदिसा॰, सम्पयोगा॰, सा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आसङ्गा[2] स्त्री॰, व्य॰ सं॰, एक तपस्वी की दत्तक पुत्री का नाम, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसङ्गा कुमारिका तं दिवसं फलिकवातपानं*, जा॰ अट्ठ॰ 3.219.

आसङ्किहदय त्रि॰, ब॰ स॰, आशंका से ग्रस्त हृदय वाला, शङ्कालु हृदय वाला – *नियतं आसङ्किहदया भुसं*, चू॰ वं॰ 65.14; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, गमना॰, भया॰, भेदा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आसङ्कित त्रि॰, आ + √संक से व्यु॰ [आशङ्कित], संदिग्ध, आशंका का विषय, सन्देह का पात्र – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"अतिचारिनी"ति आसङ्किता*, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 88; – **परिसङ्कित** त्रि॰, आशंका अथवा भय एवं सन्देह से परिपूर्ण – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसङ्कितपरिसङ्कितोव होमि*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.127; *वायसो आसङ्कितपरिसङ्कितो यतप्पयतो, ... योगिना योगावचरेन आसङ्कितपरिसङ्कितेन यत्तपयत्तेन उपट्ठिताय*, मि॰ प॰ 339; – **समाचार** त्रि॰, ब॰ स॰, संदिग्ध आचरण वाला, दूसरो पर सन्देह करने वाला, शङ्कालु प्रकृति वाला – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सङ्कस्सराचारोति आसङ्कितसमाचारो*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.113.

आसङ्ग पु॰, [आसङ्ग], आसक्ति अथवा लगाव – **करण** त्रि॰, लगाव अथवा आसक्ति को उत्पन्न करने वाला, आसक्तिजनक – **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसङ्गीति आसङ्गकरणो*, जा॰ अट्ठ॰ 4.11; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अनङ्गा॰, उत्तरा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आसङ्गी त्रि॰, आसङ्ग से व्यु॰ [आसङ्गिन्], लगाव पैदा करने वाला, आसक्ति-जनक – **ङ्गी** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसङ्गीति आसङ्गकरणो*, जा॰ अट्ठ॰ 4.11.

आसच्छेद पु॰, तत्पु॰ स॰ [आशाछेद], आशा का विनाश, आशा का उच्छेद – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मा आसच्छेदं करोहीति*, जा॰ अट्ठ॰ 3.220; – **नकम्म** नपुं॰, आशा को नष्ट कर देने वाला काम, निराशाजनक कर्म – **म्मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेसम्पि आसच्छेदनकम्मं त्वमेव करोसीति वदति*, जा॰ अट्ठ॰ 5.397.

आसज्ज आ + √सद का सं॰ कृ॰ [आसाद्य], **क.** प्राप्त करके, समीप जा कर, पहुंच कर, आमने सामने हो कर, **ख.** आक्रमण कर, अपमानित कर, उत्तेजित कर, उद्विग्न बना कर, असभ्य रूप से आचरण कर, प्रहार कर – *तं भगवन्तं गोतमं एवं आसज्ज आसज्ज अवचासि*, दी॰ नि॰ 1.93; *यावञ्चिदं भोतो गोतमस्स एवं आसज्ज आसज्ज वुच्चमानस्स ...*, म॰ नि॰ 1.318; *आसज्ज आसज्जाति घट्टेत्वा घट्टेत्वा*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.223; *आसज्ज उपनीय वाचा भासिता*, अ॰ नि॰ 1(1).200; म॰ नि॰ 3.191; *न त्वेव भवन्तं गोतमं आसज्ज सिया पुरिसस्स सोत्थिभावो*, म॰ नि॰ 1.301; *सो आसज्ज डहे बालं*, स॰ नि॰ 1(1).85; *आसज्जाति पत्वा*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.118; *काकोव सेलमासज्ज*, स॰ नि॰ 1(1).145; *अनरियं गुणमासज्ज*, अ॰ नि॰ 1(1).228; *तं खुरचक्कं आसज्ज पापुणित्वा*, जा॰ अट्ठ॰ 1.347; *पाणमासज्ज पाणिभि*, जा॰ अट्ठ॰ 5.363.

आसञ्जन नपुं॰, आ + √सञ्ज से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आसञ्जन], आकर सट जाना, किसी के प्रति लाग-लगाव या किसी के साथ दृढ़भाव से चिपकाव – **नट्ठ** पु॰, लगाव या चिपकाव का अर्थ – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रूपादीसु आसञ्जनट्ठेन आसत्तियो*, सारत्थ॰ टी॰ 3.361.

आसति √आस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आस्ते], बैठता है, ठहरता है, रुकता है, रह जाता है – *सेति चेव आसति च एत्थाति सेनासनं*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.170; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.379; – **सीयते** कर्म॰ वा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आसीयते आसितब्बं आसनीयं*, क॰ व्या॰ 542; – **सेथ** विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, आत्मने॰ – *सुखं मनुस्सा आसेथ*, जा॰ अट्ठ॰ 5.209; – **सेय्युं** उपरिवत्, परस्मै॰ – *आसेथाति आसेय्युं निसीदेय्युं*, जा॰ अट्ठ॰ 5.215; – **सित्थ** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰, आत्मने॰ – *तुण्हीमासित्थ उभयो, न सञ्चलेसुमासना*, जा॰ अट्ठ॰ 5.334; – **सितुं** निमि॰ कृ॰ – *"तुण्ही मासितुं पतिरूप"न्ति*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.198; – **सितब्बं / सनीयं** सं॰ कृ॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसितब्बं, आसनीयं*, क॰ व्या॰ 542.

आसत्त त्रि॰, आ + √सञ्ज से व्यु॰, भू॰ क॰ कृ॰ [आसक्त], 1. लगावयुक्त, विषय-भोगों के प्रति प्रबल तृष्णा रखने वाला, 2. किसी स्थान के साथ बराबर जुड़ा रहने वाला (स्थायी रूप से वहां रहने वाला) – *आसत्तो तु च तप्परो*, अभि॰ प॰ 726; *सत्तायं च जने सत्तो आसत्ते सो तिलिङ्गिको*, अभि॰ प॰ 816; – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्तो गुहायन्ति गुहायं सत्तो विसत्तो आसत्तो, लग्गो लग्गितो पलिबुद्धो*, महानि॰ 17; ... *बोधियं सत्तो आसत्तोतिपि बोधिसत्तो*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.19; – **त्ता** ब॰ व॰ – *सत्ताति आसत्ता विसत्ता लग्गा लग्गिता ...*, जा॰ अट्ठ॰ 3.213; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, आसक्ति या लगाव की अवस्था, आसक्तिभाव – **य** तृ॰

वि॰, ए॰ व॰ – *एसा ... विसफलताय विसपरिभोगताय रूपादीसु विसत्तताय आसत्तताय च विसत्तिकाति सङ्खं गता ...*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.83; – **विसत्त** त्रि॰, आसक्ति से युक्त एवं पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जटाय जटितो आसत्तविसत्तो तत्थ विलग्गो,* अप॰ अट्ठ॰ 1.167; – **त्ता** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरम्मणेसु आसत्तविसत्ता आसत्तियो छिन्दित्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.117; – **विसत्ततादि** त्रि॰, आसक्त एवं विसक्त इत्यादि – **दीहि** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आरम्मणेसु आसत्तविसत्ततादीहि कारणेहि विसत्तिका वुच्चति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.19; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अना॰ एवं अन्वा॰ के अन्त॰, द्रष्ट॰.

आसत्ति स्त्री॰, आ + √सज्ज से व्यु॰ [आसक्ति], लगाव, तृष्णा, सांसारिक जीवन के प्रति मन का लगाव, इच्छा, विषय-भोगों को भोगने की प्रबल कामना – **त्ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यदि आसत्ति उप्पज्जति,* नेत्ति॰ 105; – **यो** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बा आसत्तियो छेत्वा,* चूळव॰ 284; *रूपादीसु आसज्जनट्ठेन आसत्तियो, तण्हायो,* सारत्थ॰ टी॰ 3.361; – **त्तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उद्धं सरं आसत्तियेव अभिवदन्ति,* म॰ नि॰ 3.20; *भवेसु आसत्तिमकुब्बमानो,* सु॰ नि॰ 783; *तस्स आसत्तिं उप्पादेतुकामा,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 251; – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भवासवो आसत्तिया पहातब्बो,* पेटको॰ 234; **बहुल** त्रि॰, ब॰ स॰, अत्यधिक लगाव रखने वाला, प्रबल आसक्ति से ग्रस्त – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तण्हा-आसत्तिबहुलस्स,* नेत्ति॰ 13; स॰ उ॰ प॰ के रूप में निरा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आसद[1] 1. पु॰, [बौ॰ सं॰ आसादना, स्त्री॰], आक्रमण, आ धमकना, हिंसक मनोवृत्ति के साथ किसी के पास आ धमकना, तिरस्कार – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मा कुञ्जर नागमासदो दुक्खञ्हि कुञ्जर नागमासदो,* चूळव॰ 334; *... नागमासदो ति ... आसादनं बधकचित्तेन उपगमनं नाम दुक्खं,* चूळव॰ अट्ठ॰ 109; 2. आ + √सद का अद्य॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰, दूर भगाओ, आक्रमण करो – *मेतमासदो,* म॰ नि॰ 1.410.

आसद[2] पु॰, आ + √सद से व्यु॰, वृक्ष में ऊपर लगे हुए फलों को तोड़ने हेतु लग्गी के अग्रभाग में लगा हुआ धातु का अंकुश या हुक – *आसदञ्च मसं जटं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.292; *आसदञ्च मसं जटन्ति आकड्ढित्वा फलानं गहणत्थं अंकुसं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.292.

आसन नपुं॰, √आस से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आसन], 1. वह, जिस पर बैठा जाए, पीठ, पीढ़ा, मञ्च, सिंहासन, बैठने के लिए कोई भी उपकरण, 2. बैठना – *आसनं खन्धदेसम्हि,* अभि॰ प॰ 363; 765; – **नं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसनं पञ्ञपेतब्बं,* महाव॰ 56; *उपोसथागारे आसनं अपञ्ञत्तं होति,* महाव॰ 147; – **नं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसनं तस्स मज्झम्हि कारापेत्वा महारहं,* चू॰ वं॰ 82.10; *इदं आसनं निसीदाही'ति,* स॰ नि॰ 1(2).187; *पसन्नो आसनं दज्जा,* वि॰ व॰ (पृ॰) 5; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... वा आसनेन वा निमन्तेय्याम,* म॰ नि॰ 2.285; *थेरं आसनेन निमन्तेन्तो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.162; *न मं कोचि आसनेनपि निमन्तेसि,* दी॰ नि॰ 1.79; – **ना / म्हा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमम्हा आसना अनन्धो वुट्ठहेय्य,* म॰ नि॰ 2.189; *वत्वा आसना वुट्ठहि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.302; *अथासनम्हा ओरुय्ह,* जा॰ अट्ठ॰ 7.132; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो नातिदूरे नाच्चासन्ने आसनस्स परिवत्तति,* म॰ नि॰ 2.346; – **स्मिं / ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसनस्मिं कायं पक्खिपति,* म॰ नि॰ 2.346; *आसने उपविट्ठो सङ्घो,* क॰ व्या॰ 280; *आसने विरजं वीतमलं धम्मचक्खुं उदपादि,* दी॰ नि॰ 2.32; – **नानि**[1] प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *संविज्जन्ति आसनानि,* म॰ नि॰ 2.24; *आसनानीति पल्लङ्कपीठपलालपीठकादीनि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.28; – **नानि**[2] द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आसनानि पञ्ञत्तानि,* स॰ नि॰ 2(2).184; *आसनानि धोवापेसि,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.129; *द्वे आसनानि ठपेत्वा,* चूळव॰ अट्ठ॰ 118; – **नेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तेन खो पन समयेन सम्बहुला सक्या ... आसनेसु निसिन्ना होन्ति,* दी॰ नि॰ 1.79; स॰ उ॰ प॰ में, अग्गा॰, अना॰, अनुचिण्णा॰, उच्चा॰, उत्तमा॰, उपड्ढा॰, ऊरुबद्धा॰, एका॰, एकादायिका॰, एकाभोजना॰, कमला॰, कुसुमा॰, जया॰, ठाना॰, थेरा॰, दक्खिना॰, दण्डा॰, दीघा॰, देवा॰, धम्मा॰, धुरा॰, निरा॰, निसिन्ना॰, निसीदना॰, नीचा॰, पचुरा॰, पच्छा॰, पच्छिमा॰, पञ्ञत्ता॰, पटिच्छन्ना॰, पटिरूपा॰, पण्डुकम्बलसिला॰, पत्ता॰, पासादभद्रा॰, पुप्फा॰, बुद्धा॰, भुजगा॰, मज्झिमा॰, मणिमया॰, मनोसिला॰, महा॰, रतना॰, राजा॰, रित्ता॰, वजिरा॰, वालिका॰, विवित्ता॰, विसमा॰, सका॰, सङ्घत्थेरा॰, सपरिवारा॰, समा॰, सरा॰, सयना॰, सीहा॰, सुपञ्ञत्ता॰, सुभा॰, सेना॰, सोण्णा॰, हुता॰, हेमा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰, स॰ उ॰ प॰ के प्रयोगों में असन (भोजन) तथा आसन के मध्य सम्भ्रमजनित स्थिति के अनेक स्थल द्रष्ट॰.

आसनक नपुं., आसन + क के योग से व्यु., छोटा सा आसन, सुन्दर आसन – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *अब्भागतानासनकं अदासिं,* वि. व. 1.5; *अप्पकत्ता अनुळारत्ता च 'आसनक'न्ति,* वि. व. अट्ठ. 18.

आसनककुसल त्रि., तत्पु. स. [आसनकुशल], आसनों के प्रयोग में कुशल, विनय-शिक्षापदों के अनुरूप आसनों का प्रयोग करने वाला, ज्येष्ठ एवं कनिष्ठ भिक्षुओं के लिए निर्धारित आसनों को ग्रहण न करने वाला – **लेन** तृ. वि., ए. व. – *आसनकुसलेन भवितब्बं,* परि. 311; *सङ्घे विहरन्तेन आसनकुसलेन भवितब्बं,* म. नि. 2.143; – **ता** स्त्री., भाव., विनय-शिक्षापदों के अनुरूप आसनों के प्रयोग में दक्षता या कुशलता – **य** तृ. वि., ए. व. – *आसनकुसलताय एकमन्तं निसीदन्ति,* पारा. अट्ठ. 1.94; स. नि. अट्ठ. 1.16.

आसनघर पु., ऐसा भवन जिसमें पाषाणनिर्मित आसन या वेदिकाएं हों तथा जिसमें बुद्ध के शरीरधातु के पवित्र अवशेष रखे गए हों – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *बोधिघरं आसनघरं समुज्जनिअट्टो,* चूळव. अट्ठ. 70; 71; – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *आसनघरेपि एसेव नयो यस्मिं पन आसनघरे धातु निहिता होति ...,* सारत्थ. दी. 3.235.

आसनट्ठान/आनिसदट्ठान नपुं., तत्पु. स. [आनिषीदनस्थान], बैठने का स्थान – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *आनिसदट्ठाने लग्गानं पंसुरजवालिकानं फोटनत्थं,* स. नि. अट्ठ. 3.138.

आसनथाली स्त्री., द्व. स. [आसनस्थाली], आसन एवं थाली, प्र. वि., ए. व. – *कारके कत्तुकम्मव्हे क्रियासन्निस्सये यथा धारेन्ती आसनथाली 'क्रियाधारो'ति कप्पिता,* सद्द. 1.9.

आसनदान नपुं., तत्पु. स. [आसनदान], आसनों का दान – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *इमिनासनदानेन ... विनिपातं न गच्छसि,* अप. 2.5.

आसनधोवनपरिभण्डकरणादि त्रि., आसनों को धोना और पोछना आदि – **दीनि** नपुं., द्वि. वि., ब. व. – *आसनधोवनपरिभण्डकरणादीनि ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).2.

आसनन्तरिका स्त्री., 1. कलह के उपशमन के उपरान्त एक आसन का व्यवधान रख कर भिक्षुओं के एक-एक कर एक साथ बैठने की प्रक्रिया, 2. कलहरत भिक्षुओं को एक आसन का अन्तर देकर एक साथ बैठाने की पद्धति – **य** तृ. वि., ए. व. – *आसनन्तरिकाय निसीदितब्बं,* महाव. 462; *आसनन्तरिकाय ... एकेकं आसनं अन्तरं कत्वा,* महाव. अट्ठ. 407.

आसनपञ्ञत्ति स्त्री., तत्पु. स. [आसनप्रज्ञप्ति], आसनों का निर्धारण, आसनों के विषय में प्रज्ञपन अथवा जानकारी – **त्तिं** द्वि. वि., ए. व. – *दिस्वा आसनपञ्ञत्तिं नेमित्ता,* म. वं. 14.53.

आसनपञ्ञापक पु., तत्पु. स. [आसनप्रज्ञापक], भिक्षुओं के लिए आसनों का निर्धारण करने वाला, आसन तैयार करने वाला अथवा बतलाने वाला, आसन-व्यवस्थापक, आसन-प्रबन्धक – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *सङ्घो ... अजितं सम्मन्नति – थेरानं भिक्खूनं आसनपञ्ञापकं,* चूळव. 475.

आसनपटिक्खित्त त्रि., ब. स., कभी भी न बैठने वाला, आसन को कभी भी स्वीकार न करने वाला, सदा तन कर खड़ा रहने वाला – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *उब्भट्ठकोपि होति आसनपटिक्खित्तो,* दी. नि. 1.150; पु. प. 166; – **त्ता** ब. व. – *निगण्ठा उब्भट्ठका आसनपटिक्खित्ता,* म. नि. 1.130.

आसनपरियन्त पु., कर्म. स., 1. सबसे अन्त वाला आसन, 2. आसन का छोर अथवा किनारा, 3. एक दम नया आसन न्तो प्र. वि., ए. व., – *यो होति सङ्घस्स आसनपरियन्तो ... सो तस्स पदातब्बो,* चूळव. 78; *आसनपरियन्तोति भत्तग्गादीसु सङ्घनवकासनं वुच्चति स्वास्स दातब्बो,* चूळव. अट्ठ. 9; – **न्ते** सप्त. वि., ए. व. – *परिवसन्तो भत्तग्गे आसनपरियन्ते निसीदि,* पाचि. 47; *आसनपरियन्ते निसिन्ना उच्छिट्ठपायसं परिभुञ्जि,* ध. प. अट्ठ. 1.297.

आसनपरियन्तिक त्रि., भोजन करने हेतु केवल एक ही बार आसन पर बैठने वाला तथा आसन से उठने के उपरान्त पुनः भोजन ग्रहण न करने वाला, जब तक आसन से नहीं उठ जाता तब तक भोजन करते रहने वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *आसनपरियन्तिको वा याव न वुट्ठाति ताव भुञ्जनतो,* विसुद्धि. 1.67.

आसनपूजा स्त्री., तत्पु. स. [आसनपूजा], आसन की (पुष्पार्पण आदि द्वारा) पूजा, प्रस्तर-वेदिका की पूजा – **जं** द्वि. वि., ए. व. – *आसनपूजं कारेत्वा,* दी. नि. अट्ठ. 3.137; *सामणेरेहि नानापुप्फानि आहरापेत्वा ... तलसन्थरणपूजं आसनपूजञ्च कारेत्वा,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.89; *चित्तलपब्बते पत्तङ्गपुप्फेहि कतं आसनपूजं पस्सतो ...,* विसुद्धि. 1.166; – **य** सप्त. वि., ए. व. – *इत्थन्नाम*

तुम्हं मालागन्धादीसु पत्ति आसनपूजाय पत्ति पिण्डपाते पत्ति ..., दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.137.

आसनप्पमान त्रि॰, ब॰ स॰ एक आसन अथवा वेदिका के आकार वाला, एक वेदिका के बराबर लम्बा-चौड़ा – **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसनप्पमानं निमित्तं उदपादि,* विसुद्धि॰ 1.166.

आसनसन्थविक पु॰, व्य॰ सं॰, एक स्थविर का नाम – को प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थं सुदं आयस्मा आसनसन्थविको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप॰ 1.275.

आसनसाला स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आसनशाला], बैठने अथवा विश्राम करने के लिए निर्मित भवन, सभा-भवन – **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खुनुपस्सयं अन्तरारामं आसनसालं तित्थियसेय्यञ्च,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 204; *आसनसालं सम्मज्जन्तेन वत्तं जानितब्बं,* पाचि॰ अट्ठ॰ 34; *पिण्डाय चरित्वा विहारं वा आसनसालं वा गन्त्वा,* पाचि॰ अट्ठ॰ 100; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसनसालतो पत्तं आहरित्वा,* महाव॰ अट्ठ॰ 400; – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेसुं तेसुं गामेसु आसनसालायं वा न तं आसनमत्थि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.154; *आसानसालायं वा गेहे वा निसीदापेत्वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).266; – **य** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसनसालाय सम्मज्जन उपलेपनादीनि करोन्ता,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.135; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अम्बलकोट्ठका॰, जिण्णा॰, महेजा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आसनाभिहार पु॰, तत्पु॰ स॰, आसन पर बैठने हेतु निवेदन – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसनाभिहारं सादियति,* चूळव॰ 50; *आसनाभिहारं अरहति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.90.

आसनारह त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आसनार्ह], **क.** आसन प्रदान करने योग्य (सम्माननीय व्यक्ति) – **हो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थि पुग्गलो आसनारहो,* परि॰ 250; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसनारहस्स न आसनं देति,* म॰ नि॰ 3.253; **ख.** बैठने के लिए उपयुक्त (आसन) – **हं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसनारहं धम्मासनं पञ्ञापेत्वा,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.9; *आसनारहन्ति निसीदनारहं,* सारत्थ॰ टी॰ 1.52.

आसनिक त्रि॰, केवल स॰ उ॰ प॰ में आसनासनिक रूप में प्रयुक्त, आसन पर आसीन, आसन को ग्रहण किया हुआ, अग्गासना॰, असमानासना॰, एकासना॰, समानासना॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आसनिय त्रि॰, थेरों के नामों के उपनाम के रूप में उ॰ प॰ में प्रयुक्त, आसन वाला, एका॰, कुसुमा॰, पुप्फा॰ जैसे थेरनामों के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आसनीय त्रि॰, √आस का सं॰ कृ॰, बैठने या बैठाने योग्य – **यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भावकम्मेसु तब्बानीया ..., आसनीयं,* क॰ व्या॰ 542.

आसनुपट्ठाहक पु॰, व्य॰ सं॰, एक स्थविर का नाम, – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थं सुदं आयस्मा आसनुपट्ठाहको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप॰ 1.145.

आसनूदक नपुं॰, द्व॰ स॰ [आसनोदक], (आए हुए अतिथि को सम्मान के रूप में दिया जाने वाला) आसन एवं जल – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न तादिसी अरहति आसनूदकं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.395; – **दायी** त्रि॰, आसन एवं जल प्रदान करने वाला – **नं पु.** ा॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आसनूदकदायीनन्ति अब्भागतानं आसनञ्च उदकञ्च दानसीलानं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.394.

आसनूपगत त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आसनोपगत], आसन पर बैठा हुआ, आसीन – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपट्ठितो रुक्खमूलस्मिं आसनूपगतो मुनि,* सु॰ नि॰ 713.

आसनोदक नपुं॰, द्व॰ स॰ [आसनोदक], आसन एवं जल – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्भागते च आसनोदकेन पटिपूजेस्सामा'ति,* अ॰ नि॰ 2(1).33; – **दानादि** त्रि॰, आसन एवं जल का प्रदान आदि, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसनोदकदानादि वेय्यावच्चन्ति सञ्ञितं,* सद्धम्मो॰ 222.

आसन्दि/आसन्दी स्त्री॰, आ + √सद से व्यु॰ [आसन्दी, आसद्यते, अस्याम् इति], **1.** तकियेदार आरामकुर्सी, आराम के साथ बैठने हेतु प्रयोग में लाया जाने वाला चार पायों वाला बड़ा आसन अथवा चार कोनों वाला विशाल पीठ, **2. विनय के सन्दर्भ में विशेष अर्थ,** भिक्षु के लिए बुद्ध द्वारा वर्जित ऊंचे आसनों की सूची में एक, आठ सुगत अङ्गुलों की माप से अधिक ऊंचाई वाला आसन या पलंग, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दुतिये आसन्दी नाम अतिक्कन्तप्पमाणा वुच्चति,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 318; *आसन्दीआदीसु आसन्दीति पमाणातिक्कन्तासनं,* महाव॰ अट्ठ॰ 347; – **न्दिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसन्दिं सुकतं कत्वा,* अप॰ 1.415; *आसन्दिं कुटिकं कत्वा, ओगय्ह अञ्जनं वनं,* थेरगा॰ 55; *आसन्दीनाम दीघपादकं चतुरस्सपीठं, आयतं चतुरस्सम्पि अत्थियेव, यत्थ निसीदितुमेव सक्का, न निप्पज्जितुं तं आसन्दिं कुटिकं कत्वा ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.136; – **या** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसन्दिया पादे छिन्दित्वा ... परिभुञ्जन्तिया, ... अनापत्ति,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 318; *"अनुजानामि, भिक्खवे, आसन्दिया पादे छिन्दित्वा परिभुञ्जितुं ...,* चूळव॰ 299; *पादे आसन्दिया छेत्वा,* विन॰ वि॰ 2285; **3.** अर्थी – **पञ्चम** त्रि॰, ब॰ स॰,

पांचवें के रूप में, अर्थी पर लेटे हुए शव को मिलाकर (कुल चार लोग) – **मा** पु., प्र. वि., ब. व. – *आसन्दिपञ्चमा पुरिसा मतं आदाय गच्छन्ति,* दी. नि. 1.49; – **पीठकारक** त्रि., ऊंचे आसनों एवं पीठों को बनाने वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *चण्डालो आसहं तत्थ आसन्दिपीठकारको,* अप. 1.415.

आसन्दिक पु., [आसन्दिका, स्त्री.], चार कोणों वाला पीठ या बैठने का आसन, आठ अंगुलों से अधिक ऊंचाई वाला चौकोर आसन – **को** प्र. वि., ए. व. – *आसन्दिकोति चतुरस्सपीठं वुच्चति उच्चकम्पि आसन्दिकन्ति वचनतो एकतोभागेन दीघपीठमेव हि अट्ठङ्गुलपादकं वट्टति, चतुरस्स आसन्दिको पन पमाणातिक्कन्तोपि वट्टतीति वेदितब्बो,* चूळव. अट्ठ. 59; *सङ्घस्स आसन्दिको उप्पन्नो होति,* चूळव. 275; *आसन्दिको अतिक्कन्तपमाणोपि च वट्टति,* विन. वि. 2827; – **सण्ठान** त्रि., ब. स., आसन्दी अथवा चतुष्कोणीय पीठ के आकार वाला – **ना** पु., प्र. वि., ब. व. – ... *अङ्कदन्ता चतुकोटिका चतुमूलिका आसन्दिकसण्ठाना,* खु. पा. अट्ठ. 33.

आसन्न त्रि., आ + √सद का भू. क. कृ. [आसन्न], **क.** काल, स्थान एवं संख्या की दृष्टि से समीप में स्थित, निकटस्थ, निकटवर्ती – *समीपंनिकटासन्नोपकट्ठाभ्यास सन्तिकं अविदूरं च सामन्तं सन्निकट्ठमुपन्तिकं,* अभि. प. 705; *समीपे आसन्नन्ति,* सद्द. 3.880; – **न्नं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *आसन्नं अत्तनो सरीरसम्फस्सं आगतन्ति,* जा. अट्ठ. 7.263; – **न्ना**[1] प्र. वि., ब. व. – *भिक्खू ... आसन्ना हुत्वा,* उदा. अट्ठ. 327; – **न्ना**[2] स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *कोधसामन्ताति कोधस्स आसन्ना,* ध. स. अट्ठ. 417; – **न्नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *तीसु कसिणेसु अञ्ञतरं आसन्नं कातब्बं,* विसुद्धि. 2.55; **ख.** नपुं., पड़ोस, सामीप्य – **न्ने** सप्त. वि., ए. व. – *आसन्नेव नो भगवा विहरति, इतो छसु योजनेसु,* महाव. 330; *नगरद्वारस्स आसन्ने मनुस्सानं भण्डकं ओतारेत्वा,* स. नि. अट्ठ. 1.259; *सामन्ता आसन्ने अविदूरे,* महानि. 116; **ग.** नपुं., मृत्यु के क्षण के तुरन्त पूर्व किया गया कर्म, कर्म का एक विशेष प्रभेद, आसन्नकर्म – **न्नं** प्र. वि., ए. व. – *गरुकं आसन्नं आचिण्णं कटत्ताकम्मञ्चेति पाकदानपरियायेन,* अभि. ध. स. 36; *आसन्नन्ति मरणकाले अनुस्सरितं, तदा कतञ्च,* अभि. ध. वि. टी. 154; *गरुके असति आसन्नं,* अभि . ध. वि. टी. 155; *आसन्नञ्च कटत्ता च, कम्मन्ति समुदीरितं,* अभि. अव. 1244; – **तर** त्रि., तुलनात्मक विशे. [आसन्नतर], अधिक पास वाला, अपेक्षाकृत अधिक निकटवर्ती – **रं**[1] नपुं. प्र. वि., ए. व. – *यं आसन्नतरं अङ्गं तस्स ओरिमन्तेन परिच्छिन्दित्वा,* कङ्खा. अट्ठ. 212; – **रं**[2] नपुं. द्वि. वि., ए. व. – *अनन्तरपच्चयमेव आसन्नतरं कत्वा पुच्छति,* परि. अट्ठ. 215; – **त्त** नपुं., आसन्न का भाव. [आसन्नत्त्व], निकटता, समीपता – **त्ता** प. वि., ए. व. – *सोमनस्सिन्द्रियस्स आसन्नत्ता अप्पन्नापत्ताय,* स. नि. अट्ठ. 3.271; *जेट्ठत्ता सेट्ठत्ता आसन्नत्ता सब्बकालं सन्निहितत्ता,* उदा. अट्ठ. 351; *अप्पनाय आसन्नत्ता समीपचारत्ता,* विसुद्धि. 1.134; *आसन्नत्ता भवङ्गस्स,* अभि. अव. 903; स. उ. प. के रूप में; अच्चा., अनावरा., छाया., दूरा., द्वारा., नगरा., मरणा., लेना. के अन्त. द्रष्ट..

आसन्नकत त्रि., तत्पु. स., सद्यः किया गया, तुरन्त किया गया, कुछ समय पूर्व में किया गया – **ते** नपुं., सप्त. वि., ए. व. – *आसन्नकाले कते वत्तब्बमेव नत्थि,* विसुद्धि. महाटी. 2.353; पाठा. आसन्नकाले कते; – **तानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *'पुब्बे सुचिण्णानीति "दत्वा कत्वा"ति हि आसन्नकतानि वुत्तानि,* विसुद्धि. महाटी. 2.259.

आसन्नकारण नपुं., कर्म. स. [बौ. सं., आसन्नकारण], नज़दीकी कारण, सबसे समीपवर्ती अथवा साक्षात् कारण, प्रधान कारण – **णं** प्र. वि., ए. व. – *हिरोत्तप्पञ्च पनस्स विञ्ञूहि पदट्ठानन्ति वण्णितं आसन्नकारणन्ति अत्थो,* विसुद्धि. 1.9; *हिरोत्तप्पेहीतिआदि तस्स आसन्नकारणभावसाधनं,* विसुद्धि. महाटी. 1.27; *आसन्नकारणं यं तु, तं पदट्ठानसञ्ञितं,* अभि. अव. 634; स. उ. प. के रूप में समथा. के अन्त. द्रष्ट.; – **त्त** नपुं., भाव., प्रधान कारण होना – **त्ता** प. वि., ए. व. – *सम्मासम्बुद्धा सम्मासम्बोधिं अधिगच्छन्तीति आसन्नकारणत्ता,* उदा. अट्ठ. 247.

आसन्नकाल पु., कर्म. स., मृत्यु का समय, जीवन की अन्तिम घड़ी – **ले** सप्त. वि., ए. व. – *कालं कत्वा आसन्नकाले गहितसीलं निस्साय तावतिंसभवने निब्बत्तिंसु,* स. नि. अट्ठ. 1.51.

आसन्नगब्भा स्त्री., ब. स. [आसन्नगर्भा], शीघ्र प्रसव करने वाली नारी, अति शीघ्र शिशु को जन्म देने वाली, प्र. वि., ए. व. – *आसन्नगब्भा मे माता,* अप. 2.123; पाठा. आसन्नसत्ता; *माता गरुगब्भा गब्भिनी पसुतासन्नगब्भाति अत्थो,* अप. अट्ठ. 2.229.

आसन्नचुतिक त्रि., ब. स., मरणासन्न, बहुत शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होने वाला – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *ये पन*

आसन्नचुतिका इदानि चविस्सन्ति ते चवमाना ..., पारा॰ अट्ठ॰ 1.123.

आसन्नट्ठान नपुं॰, कर्म॰ स॰ [आसन्नस्थान], सीमावर्ती स्थान – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स विजिते आसन्नट्ठाने एकस्मिं सरतीरे विस्सज्जापेसि*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.112; *पुरिमपस्से विज्झितुकामो विय आसन्नट्ठानेयेव ठितकण्टको*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.94.

आसन्नतक्कचारारि त्रि॰, निकट में स्थित वितर्क एवं विचार नामक ध्यानाङ्गों से मुक्त – **रि** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसन्नतक्कचारारि समापत्ति अयं इति*, अभि॰ अव॰ 947.

आसन्नदूर त्रि॰, निकटवर्ती एवं दूर में स्थित – **वसेन** तृ॰ वि॰, क्रि॰ वि॰, समीपता एवं दूरी के कारण से – *आसन्नदूरवसेन द्वे द्वे पच्चत्थिका*, विसुद्धि॰ 1.309.

आसन्ननीवरणपच्चत्थिक त्रि॰, ब॰ स॰, समीपस्थ नीवरणों का प्रतिपक्षीभूत – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं समापत्ति आसन्ननीवरणपच्चत्थिका*, विसुद्धि॰ 1.149.

आसन्नपच्चक्ख त्रि॰, द्व॰ स॰, निकट में एवं आंखों के सामने स्थित – **वचन** नपुं॰, समीपता एवं प्रत्यक्षता के अर्थों को कहने वाला सङ्केतक सर्वनाम – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसन्नपच्चक्खवचनं*, उदा॰ अट्ठ॰ 170.

आसन्नपच्चत्थिक त्रि॰, ब॰ स॰ [आसन्नप्रत्यर्थिक], निकटस्थ शत्रु जैसा, पास में मौजूद अहितकारी विरोधी जैसा – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *गुणदस्सनसभागताय रागो आसन्नपच्चत्थिको*, विसुद्धि॰ 1.309; *तस्मा मित्तमुखसपत्तो विय तुल्याकारेन दूसनतो रागो मेत्ताय आसन्नपच्चत्थिको*, विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.359; – **केन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसन्नपच्चत्थिकेन रागेन अनाकड्ढनियं*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.204; – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपेक्खाब्रह्मविहारस्स ... अञ्ञानुपेक्खा ... आसन्नपच्चत्थिका*, विसुद्धि॰ 1.310.

आसन्नपठमारूपचित्तपच्चत्थिक त्रि॰, निकटस्थ शत्रु के रूप में प्रथम आरूप्यचित्त से युक्त – **त्थिकं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसन्नपठमारुप्प-चित्तपच्चत्थिकन्ति च*, अभि॰ अव॰ 1008.

आसन्नपदेस पु॰, कर्म॰ स॰ [आसन्नप्रदेश], समीपवर्ती प्रदेश, निकट में स्थित क्षेत्र – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथागामादीनं आसन्नपदेसो गामूपचारो नगरूपचारोति वुच्चति*, विसुद्धि॰ 1.134; – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसन्नपदेसे अनुगतवेधं*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.114; *मातापितूनं आसन्नपदेसे निसिन्नं*, चरिया॰ अट्ठ॰ 194.

आसन्नपीतिपच्चत्थिक त्रि॰, समीपवर्ती शत्रु के रूप में प्रीति को रखने वाला, वह, जिसमें प्रीति ही निकटस्थ शत्रु के रूप में रहे – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"अयं समापत्ति आसन्नपीतिपच्चत्थिका"*, विसुद्धि॰ 1.158.

आसन्नभवङ्गत्त नपुं॰, भाव॰, भवङ्गों की निकटता अथवा सामीप्य – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न ततो परं आसन्नभवङ्गत्ताति पटिक्खित्तं*, विसुद्धि॰ 2.313.

आसन्नभूत त्रि॰, [आसन्नभूत], समीपवर्ती बन चुका, निकटस्थ हो चुका – **त्त** नपुं॰, भाव॰, निकटता, समीपवर्तिता – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसन्नभूतत्ता समं पटिपज्जति*, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.201.

आसन्नमरण त्रि॰, ब॰ स॰ [आसन्नमरण], मरणासन्न लगभग मरने वाला, शीघ्र प्राण त्यागने वाला – **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुत्तसोकेन विप्पलपन्तोयेव आसन्नमरणो हुत्वा*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.137; *यञ्हि आसन्नमरणो अनुस्सरितुं सक्कोति*, विसुद्धि॰ 2.235; – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा गन्त्वासन्नमरणं*, म॰ वं॰ 22.35; – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कतं चिन्तितमासन्न – मासन्नमरणेन तु*, ना॰ रू॰ प॰ 351; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अतीतस्मिं भवे तस्स आसन्नमरणस्स हि*, अभि॰ अव॰ 592; – **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं पन कुसलाकुसलेसु आसन्नमरणे अनुस्सरितुं सक्कोति, तं यदासन्नं नाम*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.108; – **णा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एकन्तमरणधम्मताय आतुरा आसन्नमरणा पण्डितमनुस्सा*, जा॰ अट्ठ॰ 3.174; – **णेसु** पु॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *विसवेगेन आसन्नमरणेसु*, जा॰ अट्ठ॰ 3.174.

आसन्नरूपावचरज्झानपच्चत्थिक त्रि॰, ब॰ स॰, निकटस्थ शत्रु के रूप में रूपावचर-ध्यान से युक्त, वह, जिसमें रूपावचर ध्यान समीपवर्ती प्रत्यर्थी के रूप में प्राप्त हो – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसन्नरूपावचरज्झानपच्चत्थिका अयं समापत्ति*, विसुद्धि॰ 1.321; – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसन्नरूपावचरज्झानपच्चत्थिकन्ति च*, अभि॰ अव॰ 998.

आसन्नवितक्कविचारपच्चत्थिक त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसमें वितर्क एवं विचार निकटस्थ प्रत्यर्थी या शत्रु के रूप में विद्यमान हों, समीपस्थ शत्रु जैसे वितर्क एवं विचार से युक्त – **त्थिका** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"अयं समापत्ति आसन्नवितक्कविचारपच्चत्थिका"*, विसुद्धि॰ 1.152.

आसन्नसन्निवेसववत्थित त्रि., कर्म. स., सुव्यवस्थित पारस्परिक क्रम-विन्यास में विन्यस्त, एक दूसरे के साथ अत्यन्त निकट होकर कतारों में स्थित – **तानं** पु., ष. वि., ब. व. – *तत्थ आसन्नसन्निवेसववत्थितानं रुक्खानं समूहो वनं,* खु. पा. अट्ठ. 152.

आसन्नसोमनस्स त्रि., ब. स., अत्यन्त समीपवर्ती सौमनस्य से युक्त – **सं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *करोति पनिदं चितं, रूपामारम्मणं यतो, आसन्नसोमनस्सञ्च थूलसन्तविमोक्खतो,* अभि. अव. 986; – **पच्चत्थिक** त्रि., समीपस्थ सौमनस्य का प्रत्यर्थी अथवा विरोधी – **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आसन्नसोमनस्सञ्चाति यतो ततियज्झानस्स आसन्नताय आसन्नसोमनस्सपच्चत्थिकञ्च,* अभि. अव. (अभि.टी.) 2.191; *तस्मिं झाने "इमं मया निब्बिण्णं रूपं आरम्मणं करोती"ति च, आसन्नसोमनस्सपच्चत्थिकन्ति,* विसुद्धि. 1.317.

आसन्नाकुसलारिक त्रि., ब. स., वह, जिसमें अकुशल के प्रतिपक्षभूत कुशल धर्म समीप में ही विद्यमान हों, समीप में विद्यमान कु ाल धर्मों वाला – **रिका** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *यस्मा अयं समापत्ति आसन्नाकुसलारिका,* अभि. अव. 933.

आसन्नानन्तर त्रि., एकदम निकटवर्ती, अत्यधिक समीप में स्थित, बिना किसी व्यवधान के जुड़ा हुआ – **रं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *द्वे अनन्तरानि आसन्नानन्तरञ्च दूरानन्तरञ्च,* स. नि. अट्ठ. 2.244.

आसप्पना स्त्री., आ + √सप्प से व्यु., प्रायः परिसप्पना के साथ प्रयुक्त [आसर्पण], **शा. अ.,** रेंग कर पास पहुंचना, फिसलते हुए चलना, फिसलन, **ला. अ.,** अविश्वास, शङ्का, सन्देह, अनिश्चय, विचिकित्सा, "यह ठीक है अथवा ठीक नहीं है" इस प्रकार की अनिश्चयपरक मनोवृत्ति, प्र. वि., ए. व. – *आसप्पना परिसप्पना,* सद्द. 2.330; *या कङ्खा कङ्खायना ... संसयो अनेकंसग्गाहो आसप्पना परिसप्पना अपरियोगाहणा छम्भितत्तं चित्तस्स मनोविलेखो ... अयं वुच्चति "विचिकिच्छा",* विभ. 286; *यस्मा पन बुद्धानं एकद्द म्मेपि आसप्पना परिसप्पना नत्थि,* दी. नि. अट्ठ. 1.65; *या एवरूपा कङ्खा ... द्वेधापथो संसयो अनेकंसग्गाहो आसप्पना परिसप्पना ... इदं कथंकथासल्लं,* महानि. 307; *निच्छेतुं असक्कोन्ती आरम्मणतो ओसक्कतीति आसप्पना,* महानि. अट्ठ. 349; – **परिसप्पना** स्त्री., द्व. स. [आसर्पण–परिसर्पण], सन्देह एवं अविश्वास – **नं** द्वि. वि., ए. व. – ... *एवं विचिकिच्छापि – "बुद्धो नु खो, न बुद्धो"ति आदिना नयेन पुनप्पुनं आसप्पनपरिसप्पनं अपरियोगाहनं ...,* दी. नि. अट्ठ. 1.174; *अरञ्ञं पविट्ठस्स आदिम्हि एव सप्पनं आसप्पनं परि परितो, उपरुपरि वा सप्पनं परिसप्पनं,* दी. नि. टी. (लीन.) 1.230.

आसभ[1] त्रि., प्रायः 'वाचा' (वाणी) एवं 'ठान' (स्थान) के विशे. के रूप में प्रयुक्त [आर्षभ], ऋषि से सम्बद्ध, आर्य-पुद्गल से सम्बद्ध, अर्हत् से सम्बद्ध – **भी** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अथ किं चरहि ते अयं, सारिपुत्त, उळारा आसभी वाचा भासिता,* दी. नि. 3.74; *आसभीति उसभस्स वाचासदिसी अचला असम्पवेधी,* दी. नि. अट्ठ. 3.56; – **भिं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. – *आसभिं वाचं निच्छारेसिं,* पारा. अट्ठ. 1.96; *आसभिञ्च वाचं भासति,* म. नि. 3.165; *आसभिं वाचं निच्छारेन्तो,* जा. अट्ठ. 1.64; *आसभचम्मं सङ्कुसतेन सुविहतं विगतवलिकं,* म. नि. 3.149; – **भं**[1] नपुं., प्र. वि., ए. व. – *यथापि आसभं चम्मं, पथब्या वितनीयति,* जा. अट्ठ. 6.283; – **भं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *येहि बलेहि समन्नागतो तथागतो आसभं ठानं पटिजानाति,* अ. नि. 2(2).120; *भगवा पन अप्पटिसमट्ठेन आसभं ठानं पटिजानाति,* स. नि. अट्ठ. 1.72; *आसभं ठानन्ति सेट्ठट्ठानं उत्तमट्ठानं,* स. नि. अट्ठ. 2.41; – **भो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आसभसदिसत्ता आसभो, नरानं आसभो नरासभो,* अप. अट्ठ. 1.246; – **भा** ब. व. – *आसभा वा पुब्बबुद्धा, तेसं ठानन्ति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).339; स. उ. प. के रूप में, नरा., पुरिसा. के अन्त. द्रष्ट.; – **ट्ठानट्ठायी** त्रि., उत्तम स्थान को ग्रहण करने वाला, प्रमुखता की स्थिति को प्राप्त – **यिनो** पु., प्र. वि., ब. व. – *आसभट्ठानट्ठायिनो सीहनादनादिनो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).10; – **ट्ठाननिच्चल** त्रि., उत्तम स्थान पर अडिग रूप से स्थित – **लो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आनुभाववसिप्पत्तो, आसभण्डाननिच्चलो,* ना. रू. प. 1108; पाठा. ट्ठान; – **भूत** त्रि., उत्तम स्थिति को प्राप्त – **त** पु., सम्बो., ए. व. – *नरासभ नरानं आसभभूत,* अप. अट्ठ. 2.82.

आसभ[2] नपुं., उसभ का भाव., उत्तमता, उच्चता – **भं** प्र. वि., ए. व. – *उसभस्स भावो आसभं,* क. व्या. 404; *उसभस्स इदं ठानन्ति आसभं,* सद्द. 3.807.

आसभसदिसत्त नपुं., भाव., अर्हत् आदि आर्य अथवा निष्पाप जनों के समान होना, उत्तम व्यक्तियों से समानता – **त्ता** प. वि., ए. व. – *आसभसदिसत्ता आसभो,* अप. अट्ठ. 1.246.

आसभिवाचाभासन नपुं., तत्पु. स., सांढ़ की स्थिर ध्वनि जैसी अचल वाणी को बोलना – **नं** प्र. वि., ए. व. – *आसभिवाचाभासनं अप्पटिवत्तियवरधम्मचक्कप्पवत्तनस्स पुब्बनिमित्तं,* दी. नि. अट्ठ. 1.58.

आसय पु./नपुं., [आशय/आश्रय], **1. शा. अ.**, निवास-स्थान, स्थायी रूप से बसने का स्थान, विश्रामस्थल, शरणगृह, आवास, घर, उत्पत्ति-स्थल, उद्गम-स्थल, **ला. अ.**, आधार, सहारा देने वाला, ग्रहण करने वाला भाजन अथवा पात्र, आश्रय – *छब्बलनिद्देसे आसयन्ति यत्थ सत्ता आसयन्ति निवसन्ति, तं तेसं निवासट्ठानं दिट्ठिगतं वा यथाभूतं ञाणं वा,* विभ. अट्ठ. 432; *आसयोति निस्सयो पच्चयोति अत्थो,* विसुद्धि. महाटी. 1.288; *आसयन्ति वसनकसुसिरं,* विसुद्धि. महाटी. 1.165; – **यो** प्र. वि., ए. व. – *सारम्भं नाम किपिल्लिकानं वा आसयो होति,* पारा. 231; *आसयोति निबद्धवसनट्ठानं,* पारा. अट्ठ. 2.141; *किंसु गाथानमासयो'ति,* स. नि. 1(1).44; *विनयो आसयो मय्हं,* अप. 1.45; *आसयतोति आसीविसानञ्हि वम्मिको आसयो, तत्थेव ते वसन्ति,* स. नि. अट्ठ. 3.58; – **या** प. वि., ए. व. – *सीहो ... सायन्हसमयं आसया निक्खमति,* अ. नि. 2(1).113; *आसया निक्खमित्वा,* ध. प. अट्ठ. 2.348; *तत्रासयाति परिस्सया,* महानि. 266; स. उ. प. के रूप में, आमा., पक्खा., आलम्बनवना., उदका., कामा., कुला., कोट्ठा., गब्भा., गुहा., जला., दका., नेक्खम्मा., पक्का., पलिवेठना., बिला., रुक्खा., वना., वारिगेहा., व्यग्घा., सका., सग्गा. के अन्त. द्रष्ट.; 2. मानसिक अभिप्राय, इच्छा, प्रयोजन, मन की प्रवृत्ति अथवा रुझान, स्वभाव, आदत, मानसिक संरचना, चित्तवृत्ति, मन, इरादा, भाव – **यो** प्र. वि., ए. व. – *आसयोव अज्झासयो, सो च ... अनेकविधो,* उदा. अट्ठ. 9; – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *ब्राह्मणस्स आसयं ञत्वा,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.7; *तस्स आसयं न जानाति,* जा. अट्ठ. 1.220; *"तिरच्छानानम्पि नाम आसयं जानिस्सती"ति,* जा. अट्ठ. 2.82; – **या** प्र. वि., ब. व. – *उप्पन्ना पञ्च आसया,* दी. वं. 3.53; स. उ. प. के रूप में, अग्गबोधिगता., अज्झा., अधिका., अविज्जा., असुद्धा., करुणा., करुणानुगता., करुणाभाविता., घट्टिता., तक्का., थिरा., दुन्नीतिनिवहा., बुद्धपेमगता., महाबोधिगता., मुदिता., विम्हिता., विसमा., विसुद्धा–ता., सत्ताविदु. सब्बसत्तहिता. के अन्त. द्रष्ट.; **3.** शरीर के अन्दर विद्यमान पित्त, कफ, पीब एवं रक्त नामक 4 प्रवहनशील तरल तत्त्व, तरल मल, शरीर के अन्दर से बाहर की ओर रिसने वाले पित्त आदि जुगुप्सित तरल – **यो** प्र. वि., ए. व. – ... *चतूसु अञ्ञतरो आसयो होतियेव,* विसुद्धि. 1.335; – **या** ब. व. – *मन्दपुञ्ञानं पन चत्तारो आसया होन्ति,* तदे.; स. उ. प. के रूप में पित्ता., पित्तसेम्हपुब्बलोहिता., पुब्बा., लोहिता., सेम्हा. के अन्त. द्रष्ट..

आसयगत त्रि., तत्पु. स. [आशयगत], स्वभाव में विद्यमान, प्रकृति में मौजूद – **तानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *"दुब्बलानि किलेसानि, यस्सासयगतानि मे",* अप. 2.155.

आसयज्झासय पु., द्व. स. [आशयाध्याशय], आशय एवं अध्याशय, मानसिक अभिप्राय एवं मानसिक रुझान – **स्स** ष. वि., ए. व. – *आकारतो च वोकारतो च आसयज्झासयस्स अधिमुत्तिसमन्नागतानं,* पेटको. 190.

आसयति आ + √सि का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आश्रयते], **शा. अ.**, आकर सो जाता है, **ला. अ.**, निवास करता है, सहारा लेता है, शरण लेता है – **न्ति** ब. व. – *चतुब्बिधो पेसो आसयन्ति सत्ता एत्थ निवसन्ति, चित्तं वा आगम्म सेति एत्थाति आसयो मिगासयो विय,* दी. नि. अभि. टी. 1.88; *आसयन्ति यत्थ सत्ता आसयन्ति निवसन्ति,* विभ. अट्ठ. 432.

आसयदोसमोचन नपुं., इच्छा अथवा मानसिक आसक्ति के दोष से मुक्ति – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *आसयदोसमोचनेन अग्गं,* महानि. अट्ठ. 152.

आसयपोसन नपुं., तत्पु. स., अकुशल चित्तवृत्तियों के विशोधन द्वारा निर्वाण-विषयक मानसिक आशय (रुझान) का पोषण – **नं** प्र. वि., ए. व. – *दुतियेन आसयपोसनं विभावितं होतीति,* पारा. अट्ठ. 1.105; *आसयपोसनन्ति आसयस्स विसोधनं वड्ढनञ्च,* वि. वि. टी. 1.63; *तण्हासंकिलेससोधनेन, विवट्टूपनिस्सयसंवड्ढनेन च अज्झासयविसोधनं आसयपोसनं,* विसुद्धि. महाटी. 1.154.

आसयप्पहान नपुं., तत्पु. स. [आशयप्रहाण], इच्छाओं का नाश, आशयों का उच्छेद – **नाय** च. वि., ए. व. – *तस्स आसयं पहानाय नेव इमं लोकं आसीसति न परलोकं,* पेटको. 304; पाठा. आसयप्पहानाय.

आसयविपत्ति स्त्री., दूषित आशय, अकुशल इच्छा, मानसिक आशय की अविशुद्धि, अभिप्राय की हीनता – *इदानि ये ते पठमगाथाय आसयविपत्तिवसेन कोधनादयो पञ्च, पापमक्खिं वा द्विधा कत्वा छ ...,* सु. नि. अट्ठ. 1.147.

आसयसदित त्रि., 'आशय' शब्द द्वारा कथित – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *यथाभूतञ्च यं ञाणं, एतं आसयसदितन्ति,* विसुद्धि. महाटी. 1.225.

आसयसम्पत्ति स्त्री., आशय की श्रेष्ठता, उत्तम आशय, कुशल मानसिक अभिप्राय – **यं** सप्त. वि., ए. व. – ... *"सुमना भवन्तू"ति इमिना वचनेन आसयसम्पत्तियं नियोजेन्तो* ..., खु. पा. अट्ठ. 133.

आसयसामन्त स्त्री., निवासस्थान के समीप – **न्ता** प. वि., ए. व. – *मम आसयसामन्ता, तिस्सो लोकग्गनायको,* अप. 2.7.

आसयसुद्धि स्त्री., [आशयशुद्धि], मानसिक अभिप्राय अथवा मानसिक प्रवृत्ति की शुद्धि, शुद्ध मनोभाव, विशुद्ध अभिप्राय, प्र. वि., ए. व. – *इचस्स पच्छिमचक्कद्वय सिद्धिया आसयसुद्धि सिद्धा होति,* स. नि. अट्ठ. 1.8; – **द्धिं** द्वि. वि., ए. व. – ... *दीपेति ... तथा आसयसुद्धिं पयोगसुद्धिञ्च,* खु. पा. अट्ठ. 84; – **या** तृ. वि., ए. व. – ... *सत्तानं अभयदाने आसयसुद्धिया आमिसदाने उभयसुद्धिया* ..., चरिया. अट्ठ. 274; – **वचन** नपुं., तत्पु. स., अभिप्राय की शुद्धि का वचन – **तो** प. वि., ए. व. – ... *किलेसापराधप्पहानेन आसयसुद्धिवचनतो* ..., चरिया. अट्ठ. 254.

आसयानुसय पु., द्व. स. [बौ. सं. आशयानुशय], आशय एवं अनुशय, मानसिक अभिप्राय एवं अवचेतन मन में सो रहीं क्लेशात्मक मनोवृत्तियां – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *भगवता, तेसं तेसं सत्तानं आसयानुसयं जानता,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.9; *आसयानुसयं ञत्वा, इन्द्रियानं बलाबलं,* अप. 1.26; *एत्थ आसयोति अज्झासयो चरिया, अनुसयोति थामगतकिलेसो, ... "अयं मोहचरितो"ति आदिना आसयञ्च अनुसयं किलेसपवत्तिञ्च जानित्वाति अत्थो,* अप. अट्ठ. 1.241; – **ये** सप्त. वि., ए. व. – *सत्तानं आसयानुसये ञाणं,* पटि. म. 121.

आसयानुसयचरिताधिमुत्ति स्त्री., आशय (मानसिक संरचना) अनुसय (क्लेशात्मक प्रवृत्तियां), चर्या (व्यवहार) एवं अधिमुक्ति (दृढ़ विश्वास) – **त्तिं** द्वि. वि., ए. व. – *तेसं तेसञ्च सत्तानं आसयानुसयचरिताधिमुत्तिं, सम्मदेव ओलोकेत्वा* ..., उदा. अट्ठ. 120; स. प. के अन्त.; *आसयानुसयचरिताधिमुत्ति आदिविभागावबोधेन,* अप. अट्ठ. 2.260.

आसयानुसयञाण नपुं., तत्पु. स. [बौ. सं. आशयानुशयज्ञान], आशयों (मन की संरचना) एवं अनुशयों का ज्ञान, चित्त की रागात्मिका अथवा द्वेषात्मिका प्रवृत्ति आदि का ज्ञान – **णं** प्र. वि., ए. व. – *तेसु बुद्धचक्खु नाम आसयानुसयञाणञ्चेव इन्द्रियपरोपरियत्तञाणञ्च,* स. नि. अट्ठ. 3.1; *आसयानुसयञाणञ्हि बुद्धानंयेव होति, न अञ्ञेसं,* जा. अट्ठ. 1.182; *आसयानुसयञाणं नामेतं पारमियो पूरेत्वा दस सहस्सिलोकधातुं उन्नादेत्वा ... ति वत्वा,* ध. प. अट्ठ. 2.244; – **निद्देस** पु., **1.** तत्पु. स., आश्रयों एवं अनुशयों के ज्ञान का निर्वचन – **से** सप्त. वि., ए. व. – *आसयानुसयञाणनिद्देसे इध तथागतोति आदि पञ्चधा ठपितो निद्देसो,* पटि. म. अट्ठ. 2.4; **2.** पटि. म. के एक खण्ड का शीर्षक, जिसमें आसयों एवं अनुशयों का विवेचन किया गया, पटि. म. 112; – **निद्देसवण्णना** स्त्री., पटि. म. अट्ठ. के एक व्याख्यान का शीर्षक, जिसमें आशयों एवं अनुशयों के ज्ञान का विवेचन किया गया है, पटि. म. अट्ठ. 2.4.

आसयानुसयसङ्गहित त्रि., आशयों एवं अनुशयों के ही अन्तर्गत् संग्रह किया हुआ – **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *यस्मा चरिताधिमुत्तियो आसयानुसयसङ्गहिता, तस्मा उद्देसे चरिताधिमुत्तीसु ञाणानि आसयानुसयञाणेनेव सङ्गहेत्वा आसयानुसये ञाणं,* पटि. म. अट्ठ. 1.49.

आसरति आ + √सर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आसरति], (की ओर) तेजी के साथ जा पहुंचता है, दौड़कर जाता है, तेज चलता है, चलना जारी रखता है, चलता रहता है – *कत्वा पापं पुन पटिच्छादनतो अति अस्सरति एताय सत्तोति अच्चसरा,* महानि. अट्ठ. 332; पाठा. अस्सरति; – **न्ति** ब. व. – *कत्वा पापं पुन पटिच्छादनतो अतिच्च आसरन्ति एताय सत्ताति अच्चासरा,* विभ. अट्ठ. 465.

आसव[1] पु., [आसव], फूलों, फलों, मधु एवं गुड़ से तैयार किया गया मादक अर्क, मद्यनिष्कर्ष, काढ़ा, मदिरा, ताड़ी जैसे मादक पेय – **वो** प्र. वि., ए. व. – *आसवो तु मेरयं,* अभि. प. 533; आसवो तात लोकस्मिं सुरा नाम पवुच्चति, जा. अट्ठ. 4.199; पुप्फादीहि कतो आसवो मेरयं, कङ्खा. अट्ठ. 227; – **वा** ब. व. – चिरपारिवासियट्ठेन मदिरादयो आसवा, आसवा वियातिपि आसवा लोकस्मिञ्हि चिरपारिवासिका मदिरादयो आसवाति वुच्चन्ति, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).66; स. उ. प. के रूप में, पुप्फा. (फूलों से तैयार किया हुआ मादक अर्क), फला. (फलों से तैयार मादक अर्क) तथा मध्वा. (मधु से तैयार मादक काढ़ा) – वो प्र. वि., ए. व. – मेरयो नाम

पुप्फासवो फलासवो मध्वासवो गुळासवो सम्भारसंयुत्तो, पाचि॰ 149.

आसव²/अस्सव पु॰, [आस्रव, पीड़ा, कष्ट, दु:ख, बहाव, बौ॰ सं॰ आश्रव/आस्रव], **क.** घाव से बाहर निकल रहा स्राव अथवा तरल बहाव, पीब, मवाद का बहाव या स्राव – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – सुरायोपद्दवे कामासवादिम्हि च आसवो, अभि॰ प॰ 968; – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – दुट्ठारुको कट्ठेन वा ... भिय्योसोमत्ताय आसवं देति, अ॰ नि॰ 1(1).147; आसवं देतीति अपरापरं सवति, पुराणवणो हि अत्तनो धम्मतायेव पुब्बं लोहितं यूसन्ति इमानि तीणि सवति ..., अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.93; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, विसन्दमाना॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; **ख.** चित्त-विशुद्धि की प्रक्रिया में बाधक चित्त की धारा में विद्यमान मादक अकुशल चित्तवृत्तियां, सुदीर्घ काल तक चित्तसन्तति में विद्यमान होने के कारण फलों आदि से तैयार आसव (मादक अर्क) के समान चित्त को मतवाला बना देने वाले अकुशल चैतसिक – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – सुरायोपद्दवे कामासवादिम्हि च आसवो, अभि॰ प॰ 968; पुग्गलवाचिनो आसवस्स सस्स द्वित्तं-आसवो अस्सवो, सद्द॰ 3.636; – **वा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – धम्मतो याव गोत्रभुं ओकासतो याव भवग्गं सवन्तीति वा आसवा ... चिरपारिवासियट्ठेन मदिरादयो आसवा, आसवा वियातिपि आसवा, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).66; तयोमे आवुसो आसवा, कामासवो भवासवो, अविज्जासवो, म॰ नि॰ 1.70; – **वानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – विवटं दिस्वान पहानमासवानं, सु॰ नि॰ 376; आसवानं खयसङ्खातं पन अरहत्तं, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.360; – **वे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – खेपेत्वा आसवे सब्बे, थेरीगा॰ 76; – **वेहि** प॰ वि॰, ब॰ व॰ – पञ्ञापरिभावितं चित्तं सम्मदेव आसवेहि विमुच्चति, दी॰ नि॰ 2.66; – **वेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – भिक्खु चित्तं रक्खति आसवेसु च सासवेसु च धम्मेसु, स॰ नि॰ 3.306; आसव इस लोक एवं परलोक, दोनों लोकों से सम्बद्ध हैं – **वानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – दिट्ठधम्मिकानं आसवानं संवराय सम्परायिकानं आसवानं पटिघाताय, पारा॰ 22; **आसवों के प्रभेद**, **1.** 3 प्रकार के आसव, कामासव, भवासव एवं अविद्यासव – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – तयो आसवा – कामासवो, भवासवो, अविज्जासवो, दी॰ नि॰ 3.173; म॰ नि॰ 1.70; उप्पज्जेय्युं कामासवो भवासवो अविज्जासवोति तयो आसवा, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).93; **2.** आसवों के 4 प्रभेद (कामा॰, भवा॰, अविज्जा॰ एवं दिट्ठि॰) – अञ्ञेसु च सुत्तन्तेसु अभिधम्मे च तेयेव दिट्ठासवेन सह चतुधा आगता, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).67; **3.** 5 प्रकार के विपाकों को उत्पन्न करने के आधार पर आसवों के 5 प्रभेद – *अत्थि, भिक्खवे, आसवा निरयगमनीया, अत्थि आसवा तिरच्छानयोनिगमनीया, अत्थि आसवा पेत्तिविसयगमनीया, अत्थि आसवा मनुस्सलोकगमनीया, अत्थि आसवा देवलोकगमनीया अयं वुच्चति, भिक्खवे, आसवानं वेमत्तता,* अ॰ नि॰ 2(2).117; कामासवो च भवासवो च अप्पणिहितेन विमोक्खमुखेन पहानं गच्छन्ति, दिट्ठासवो सुञ्ञताय, अविज्जासवो अनिमित्तेन, नेत्ति॰ 97; **4.** आसवों से विमुक्ति के 6 प्रकार के उपायों के आधार पर आसवों के 6 प्रभेद – *इध, भिक्खवे, भिक्खुनो ये आसवा संवरा पहातब्बा ते संवरेन पहीना होन्ति, ये आसवा पटिसेवना पहातब्बा ते पटिसेवनाय पहीना होन्ति, ये आसवा अधिवासना पहातब्बा ते अधिवासनाय पहीना होन्ति, ये आसवा परिवज्जना पहातब्बा ते परिवज्जनाय पहीना होन्ति, ये आसवा विनोदना पहातब्बा विनोदनाय पहीना होन्ति, ये आसवा भावना पहातब्बा ते भावनाय पहीना होन्ति,* अ॰ नि॰ 2(2).96; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अना॰, अविज्जा॰, कामरागभवरागमिच्छादिट्ठा॰, कामा॰, खीणा॰, चतुरा॰, खीणा॰, दिट्ठा॰, निरा॰, पुब्बा॰, भवा॰, सा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आसव³ पु॰, व्य॰ सं॰, देवताओं का एक वर्ग – **वा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लम्बीतका लामसेट्ठा, जोतिनामा च आसवा,* दी॰ नि॰ 2.192; *आसा च देवा आगताति अत्थो ... आसा देवता छन्दवसेन आसवाति वुत्ता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.254.

आसवकथा स्त्री॰, कथा॰ के एक खण्ड का शीर्षक, जिसमें आसवों की चर्चा की गई है, कथा॰ 415-416.

आसवक्खय पु॰, आसवों का क्षय, अर्हत्व की अवस्था, निर्वाण की अवस्था – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मग्गो आसवक्खयोति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).69; *"पत्तो मे आसवक्खयो"ति,* थेरगा॰ 116; *पत्तो मे आसवक्खयोति कामासवादयो आसवा एत्थ खीयन्ति, तेसं वा खयेन पत्तब्बोति आसवक्खयो, निब्बानं अरहत्तञ्च,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.252; *आसवक्खयो ओधिसो सेक्खानं अनोधिसो अरहन्तानं,* पेटको॰ 191; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"मदिसा वे जिना होन्ति, ये पत्ता आसवक्खयं",* महाव॰ 12; *आसवक्खयन्ति अरहत्तं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.28; *नचिरस्सेव आसवक्खयं पत्तोति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.213; – **या** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसवा तस्स वड्ढन्ति, आरा सो आसवक्खया'ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.47; – **सुत्त**

नपुं., स. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, – स. नि. 3. 310.

आसवक्खयजानन नपुं., तत्पु. स., आसवों के क्षय के विषय में ज्ञान – **नं** प्र. वि., ए. व. – *आसवक्खयजाननं एकन्ति,* स. नि. अट्ठ. 2.40.

आसवक्खयञाण नपुं., तत्पु. स. [बौ. सं., आस्रवक्षयज्ञान], आस्रवों के क्षय को प्राप्त कराने वाला ज्ञान अथवा प्रज्ञा, आस्रवों के क्षय के विषय में ज्ञान, अर्हत्व-फल की अवस्था – **णं** प्र. वि., ए. व. – *आसवक्खयञाणपदट्ठानञ्हि ... आसवक्खयञाणं 'महाबोधी'ति वुच्चति,* चरिया. अट्ठ. 17; – **णेन** तृ. वि., ए. व. – *चतुसच्चपटिच्छादकं तमं विनोदेत्वा आसवक्खयञाणेन ततियं जायति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.24; – **निद्देस** पु., तत्पु. स., आस्रवों के क्षय से सम्बन्धित ज्ञान अथवा प्रज्ञा का विवेचन या व्याख्यान करने वाले, पटि. म. के एक खण्ड का शीर्षक, पटि. म. 106-108; – **निद्देसवण्णना** स्त्री., पटि. म. अट्ठ. के एक व्याख्याखण्ड का शीर्षक, पटि. म. अट्ठ. 1.307-309.

आसवक्खयपत्त त्रि., आस्रवों के क्षय को प्राप्त कर चुका, आस्रवों से मुक्त – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *यथानिसिन्नोव आसवक्खयप्पत्तो,* उदा. अट्ठ. 295.

आसवक्खयपरियोसान त्रि., ब. स., आस्रवों के क्षय में अन्त होने वाला – **नं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *आसवक्खयपरियोसानं आनिसंसं सुत्वा,* अ. नि. अट्ठ. 3.318.

आसवक्खयलाभ पु., तत्पु. स., आस्रवों के क्षय का लाभ – **भेन** तृ. वि., ए. व. – *आसवक्खयलाभेन होति सासनसम्पदा,* सद्द. 1.1.

आसवखीण त्रि., ब. स. [क्षीणास्रव], आस्रवों को क्षीण कर चुका (अर्हत्) – **णो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आसवखीणो पहीनमानो,* सु. नि. 372; *एकादसमगाथाय आसवखीणोति खीणचतुरासवो,* सु. नि. अट्ठ. 2.88.

आसवगोच्छक नपुं., तत्पु. स. [आस्रवगुच्छक], **1.** आस्रवों का गुच्छा, आस्रवों का समुच्चय या झुण्ड – **के** सप्त. वि., ए. व. – *आसवगोच्छके आसवन्तीति आसवा,* ध. स. अट्ठ. 95; **2.** ध. स. के एक खण्ड का शीर्षक, ध. स. 6-7.

आसवचार पु., आस्रवों की प्रकृति, आस्रवों का स्वभाव – **रो** प्र. वि., ए. व. – *आसवचारो नाम एकन्तओळारिको,* विभ. अट्ठ. 13.

आसवट्ठानीय त्रि., आस्रवों को उत्पन्न करने वाले क्लेश धर्म, आस्रवों के उदय में कारणभूत, ईर्ष्या, द्वेष आदि को उत्पन्न करने में सहायक – **या** पु., प्र. वि., ब. व. – *इधेकच्चे आसवट्ठानीया धम्मा सङ्घे पातुभवन्ति,* पारा. 10; *सासने एकच्चे आसवट्ठानीया धम्मा न उप्पज्जन्ति,* पारा. अट्ठ. 1.148; ... *यस्मा सेनासनानि पहोन्ति, तस्मा आवासमच्छरियादिहेतुका सासने एकच्चे आसवट्ठानीया धम्मा न उप्पज्जन्ति,* सारत्थ. टी. 1.394; – **येहि** तृ. वि., ब. व. – *सब्बसो आसवट्ठानियेहि धम्मेहि ...,* अ. नि. 3(1). 59; पटि. म. 348; *आसवट्ठानियेहीति सम्पयोगवसेन आसवानं कारणभूतेहि ... अत्थो,* अ. नि. अट्ठ. 3.222-23.

आसवता स्त्री., भाव., आस्रवत्व, आस्रव की स्थिति में होना, मलिनता, क्लिष्टता, कालुष्य – **य** तृ. वि., ए. व. – *यथा चत्तारो आसवा सभावआसवताय आसवा ... चित्तसासवताय ... सभावताय आसवा, पक्खे आसवताय आसवा,* पेटको. 271.

आसवति आ + √सु का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आस्रवति], रिसता है, भीतर में से बहता है, प्रकट होता है, विद्यमान रहता है – **न्ति** प्र. पु., ब. व. – *तत्थ आसवन्तीति आसवा, ... अन्तोकरणत्थो हि अयं आकारो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).66; *आसवन्तीति आसवा ... मनतोपि सन्दन्ति पवत्तन्तीति वुत्तं होति,* अ. नि. अट्ठ. 2.83; *सवन्ति आसवन्ति सन्दन्ति पवत्तन्तीति,* स. नि. अट्ठ. 2.57; *तस्स गन्थिता किलेसा आसवन्ति,* पेटको. 325; नेत्ति. 95.

आसवनिद्देस पु., आस्रवों का विवेचन, आस्रवों का निर्वचन – **से** सप्त. वि., ए. व. – *आसवनिद्देसे पञ्चकामगुणिको रागो कामासवो नाम,* ध. स. अट्ठ. 395.

आसवनिरोध पु., तत्पु. स. [आस्रवनिरोध], आस्रवों की रुकावट, आस्रवों की समाप्ति या नाश – **धो** प्र. वि., ए. व. – *अयं आसवनिरोधोति यथाभूतं पजानाति,* दी. नि. 1.74; – **गामी** त्रि., आस्रवों के निरोध की ओर ले जाने वाला/वाली – **मिनी** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अयं आसवनिरोधगामिनी पटिपदाति यथाभूतं पजानाति,* दी. नि. 1.74.

आसवनुद त्रि., आस्रवों को मिटाने वाला – **दं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *धम्मं सदासवनुदं चरथप्पमत्ता,* तेल. 27; – **देकहित** त्रि., आस्रवों का विनाशक एवं केवल हित ही करने वाला – **तं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *अत्वान आसवनुदेकहितञ्च धम्मं,* तेल. 98.

आसवपदट्ठान त्रि., ब. स., आस्रवों पर आधारित, आस्रवों से उदित – **ना** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *सेय्यथिदं – अञ्ञाणलक्खणा अविज्जा, सम्मोहनरसा, छादनपच्चुपट्ठाना, आसवपदट्ठाना,* विसुद्धि. 2.157; – **ता** स्त्री., भाव., आस्रवों पर निर्भरता, आस्रव-सापेक्षता – **य** तृ. वि., ए. व. – *आसवपदट्ठानताय सासवतो,* विसुद्धि. 2.247.

आसवपरियादान नपुं., तत्पु. स. [बौ. सं. आस्रवपर्यादान], **शा. अ.**, आस्रवों को पूर्णरूप से ले लेना, **ला. अ.**, आस्रवों का अन्त कर देना – **नं** प्र. वि., ए. व. – *आसवपरियादानञ्च होति जीवितपरियादानञ्च,* अ. नि. 2(2).166.

आसवपिधान नपुं., आस्रवों का आच्छादन, आस्रवों पर नियन्त्रण, आस्रवों का अन्त कर देना – **नेहि** तृ. वि., ब. व. – *सब्बासवसंवरसंवुतोति सब्बेहि आसवपिधानेहि पिहितो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).93.

आसवप्पहान नपुं., तत्पु. स. [आस्रवप्रहाण], आस्रवों का परित्याग, आस्रवों का विनाश – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *आसवप्पहाने चस्स आनिसंसं दस्सेन्तो ...,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).93.

आसवविनासन नपुं., तत्पु. स., आस्रवों को विनष्ट कर देना, आस्रवों का विनाश – **तो** प. वि., ए. व. – *अरहत्तमग्गो हि आसवविनासनतो,* पारा. अट्ठ. 1.126; *आसवविनासनतो आसवानं खयोति,* अ. नि. अट्ठ. 2.144.

आसवविप्पयुत्त त्रि., तत्पु. स. [आस्रवविप्रयुक्त], आस्रवों से मुक्त, आस्रवों के साथ नहीं जुड़ा हुआ, आस्रव-रहित – **त्ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *आसवविप्पयुत्ता अनासवाति,* विसुद्धि. 2.65; *धम्मा विप्पयुत्ता, वेदनाखन्धो ... विञ्ञाणखन्धो ... इमे धम्मा आसवविप्पयुत्ता,* ध. स. 246; – **अनासव** त्रि., द्व. स., आस्रवों से मुक्त एवं आस्रवों से रहित – **वा** पु., प्र. वि., ब. व. – *तीणिन्द्रिया आसवविप्पयुत्त अनासवा,* विभ. 145; – **सासव** त्रि., द्व. स. [आस्रवविप्रयुक्तसास्रव], आस्रवों से मुक्त एवं आस्रवों से कलुषित – **वा** पु., प्र. वि., ब. व. – *आसवविप्पयुत्तसासवा,* विभ. 145.

आसववेपुल्ल नपुं., भाव. [आस्रववैपुल्य], आस्रवों की प्रचुरता, आस्रवों की अधिकता अथवा तीव्रता – **ल्ला** प. वि., ए. व. – *चत्तारो आसवा वेपुल्लं गता ओघा भवन्ति, इति आसववेपुल्ला ओघवेपुल्लं,* नेत्ति. 95.

आसवसमञ्ञा स्त्री., [आस्रवसंज्ञा], आस्रव की अवधारणा अथवा मानसिक संप्रत्यय, आस्रवनाम, आस्रव संज्ञा, प्र. वि., ए. व. – *"कम्मपुग्गलानमासवो"ति वचनतो पुञ्ञापुञ्ञसम्भवे आसवसमञ्ञाति ततो अविसिट्ठो आसवो,* विसुद्धि. महाटी. 2.338.

आसवसंवरपरियाय पु., तत्पु. स., आस्रवों के संयमन अथवा नियन्त्रण का तरीका, आस्रवों के संवरण / नियन्त्रण को समझाने की एक पद्धति – **यो** प्र. वि., ए. व. – *सङ्खेपेन चेत्थ ञाणं आसवसंवरपरियायोति दस्सितं होति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).69.

आसवसमुच्छेद पु., तत्पु. स. [आस्रवसमुच्छेद], आस्रवों का पूर्ण विनाश – **दे** सप्त. वि., ए. व. – *आसवसमुच्छेदे पञ्ञा आनन्तरिकसमाधिम्हि ञाणं,* पटि. म. 2.

आसवसमुदय पु., तत्पु. स. [आस्रवसमुदय], आस्रवों की उत्पत्ति, आस्रवों की उत्पत्ति का कारण – **यो** प्र. वि., ए. व. – *"अयं आसवसमुदयो"ति यथाभूतं पजानाति,* अ. नि. 1(2).240; *आसवा एव अविज्जादीनं कारणत्ता आसवसमुदयो,* विसुद्धि. महाटी. 1.207; – **या** प. वि., ए. व. – *आसवसमुदया अविज्जासमुदयो,* म. नि. 1.69; *आसवसमुदयाति एत्थ पन कामासवभवासवा सहजातादिवसेन अविज्जाय पच्चया होन्ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).233; – **मय** त्रि., आस्रवों की उत्पत्ति वाला – **येन** पु., तृ. वि., ए. व. – *आसवसमुदयमयेन अक्खेन विज्झित्वा'ति,* विसुद्धि. महाटी. 1.207.

आसवसम्पयुत्त त्रि., तत्पु. स., आस्रवों के साथ जुड़ा हुआ, आस्रवयुक्त, 12 प्रकार के अकुशल चित्त जो सदा आस्रवों के कारण अपरिशुद्ध रहते हैं – **त्ता** पु., प्र. वि., ए. व. – *आसवसम्पयुत्ता सासवा,* विसुद्धि. 2.65; *ये धम्मा सम्पयुत्ता ... वेदनाक्खन्धो ... विञ्ञाणखन्धो इमे धम्मा आसवसम्पयुत्ता,* ध. स. 246; *तत्थ द्वादस अकुसलचित्तुप्पादा आसवसम्पयुत्ता नाम,* मोह. वि. 100.

आसवारिगणक्खय पु., तत्पु. स., आस्रवरूपी शत्रुगण का विनाश या अन्त – **क्खया** प. वि., ए. व. – *दन्तभूमिमनुप्पत्तानं आसवारिगणक्खया,* अप. 2.356.

आसवुप्पत्ति स्त्री., [आस्रवोत्पत्ति], आस्रवों की उत्पत्ति, **त्ति**-प्र. वि., ए. व. – *आसवुप्पत्ति पनेत्थ एवं वेदितब्बा,* अ. नि. अट्ठ. 3.131; – **त्तिं** द्वि. वि., ए. व. – *आरब्भ आसवुप्पत्तिं वारेन्तो आसवेसु च सासवेसु च धम्मेसु चित्तं रक्खति नाम,* स. नि. अट्ठ. 3.277; – **यं** सप्त. वि., ए. व. – *आसवुप्पत्तियं पनेत्थ इमेसं उपरिमग्गत्तयसम्पयुत्तानं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).93.

आससान / आसिसान त्रि., आ + √संस / √सस का वर्त. कृ., आत्मने., आशा कर रहा, कामना कर रहा, इच्छा कर रहा – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *निरासो सो उद आससानो,* सु. नि. 1096; *"निरासो सो उद आससानो"ति पुन पुच्छति,* सु. नि. अट्ठ. 2.288; *पुच्छेय्य पोसो सुखमासिसानो,* जा. अट्ठ. 4.17; *इच्चप्पमादं हितमाससानो,* चू. वं. 55.34; – **ना** ब. व. – *अनूपखेत्ते फलमाससमाना,* जा. अट्ठ. 4.342; *'ये केचिमे सुग्गतिमाससमाना',* जा. अट्ठ. 5.387; पाठा. आससाना.

आसा[1] स्त्री., [आशा], इच्छा, कामना, आवश्यकता, आशा, तृष्णा – *छन्दो जटा निकन्त्यासा सिब्बिनी भवनेत्ति च,* अभि. प. 162; *आसा वुच्चति तण्हा,* उदा. अट्ठ. 295; *आसा नाम वुच्चति या भविस्सस्स अत्थस्स आगीसना अवस्सं आगमिस्सतीति आसास्स उप्पज्जति,* नेत्ति. 44; *गाथा सेना लेखापेक्खा आसा पूजा एसा,* सद्द. 1.198; *सिद्धा सिज्झन्तु कल्याणा, एवं आसापि पाणिनन्ति,* चूळव. अट्ठ. 136; – **सं** द्वि. वि., ए. व. – *मार ... आसं माकासि भिक्खुसु,* म. नि. 1.423; *आसञ्च अनासञ्चेपि करित्वा अयोनिसो ब्रह्मचरियं चरन्ति,* म. नि. 3.178; *आसं अनिस्साय,* सु. नि. 478; *आसं निरासं कत्वान,* जा. अट्ठ. 3.86; – **य** तृ. वि., ए. व. – *आसाय न लभति,* महाव. 343; *आसाय कसते खेत्तं, बीजं आसाय वप्पति, आसाय वाणिजा यन्ति,* थेरगा. 530; *आसाय कसते खेत्तन्ति कस्सको कसन्तो खेत्तं फलासाय कसति,* थेरगा. अट्ठ. 2.145; *आसिसनवसेन आसाति आसाय अत्थं गहेत्वा रूपे आसा,* ध. स. अट्ठ. 391; – **सा** प्र. वि., ब. व. – *द्वेमा ... आसा दुप्पजहा – लाभासा च जीवितासा च,* अ. नि. 1(1).105; *आसा यस्स न विज्जन्ति,* सु. नि. 639; – **साभिभूत** त्रि., तत्पु. स. [आशाभिभूत], तृष्णा से ग्रस्त, आशा रखने वाला – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *"इतो किञ्चि लभामा"ति आसाभिभूता,* पे. व. अट्ठ. 25; – **सावच्छेदिक** त्रि., **शा. अ.**, आशा के उच्छेद अथवा आशा के टूट जाने पर आधारित, **विशेष अर्थ**, कठिन-चीवर के लाभ को समाप्त करने वाले 8 आधारों (मातिकाओं) में से एक – **दिका** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अट्ठिमा, भिक्खवे मातिका कथिनस्स ... सवनन्तिका, आसावच्छेदिका ... ति,* महाव. 332; पारा. अट्ठ. 2.199; *आसाय छिन्नमत्ताय, आसावच्छेदिका मता,* विन. वि. 2717; – **दिको** पु., प्र. वि., ए. व. – *तस्स भिक्खुनो आसावच्छेदिको कथिनुद्धारो,* महाव. 342; – **दिके** सप्त. वि., ए. व. – *आसावच्छेदिके आवासपलिबोधो पठमं छिज्जति,* महाव. अट्ठ. 371; *नासनं सवनञ्चेव आसावच्छेदिकापि च,* विन. वि. 2722; [**टि.** कठिनचीवर के लाभ को प्राप्त किया हुआ कोई भिक्षु अधिक चीवर को पाने की प्रत्याशा के साथ अपनी विहार सीमा के बाहर दूसरी सीमा में चला जाता है। अतिरिक्त चीवर प्राप्त करने की उसकी आशा का किसी कारणवश पूरा न हो पाना ही कठिन-चीवर-लाभ का आसावच्छेदिका नामक आधार कहलाता है.]; – **सच्छिन्न** त्रि., ब. स., छिन्न हो चुकी आशा वाला, निराश – **न्ना** पु., प्र. वि., ब. व. – *किं सुकं फुल्लितं दिस्वा आसच्छिन्ना मिगाधमा,* जा. अट्ठ. 6.282; – **दासब्यतंगत** त्रि., [आशादासव्यगत], आशाओं की दासता को प्राप्त, आशाओं के वशीभूत हो चुका – **ते** पु., सप्त. वि., ए. व. – *पतिकारपरे लोके आसादासब्यतंगते उपकारसमत्थस्स सतो को न करेय्य किं,* सद्धम्मो. 498; – **दुक्ख** नपुं., तत्पु. स., 1. आशा के टूट जाने के कारण उत्पन्न दुख, निराशा से उत्पन्न दुख, 2. आशा रूपी दुख – **क्खं** प्र. वि., ए. व. – *आसायेवदुक्खं आसादुक्खं आसाविघातं दुक्खं वा,* विसुद्धि. महाटी. 2.171; – **दुक्खजनन** नपुं., निराशा के कारण दुख को उत्पन्न करना – **तो** प. वि., ए. व. – *पुथुज्जनानं वा सञ्ञा आसादुक्खजननतो रित्तमुट्ठि विय,* विसुद्धि. 2.117; **दुप्पजहवग्ग** पु., अ. नि. के एक वर्ग का शीर्षक, अ. नि. 1(1).105; – **फल** नपुं., तत्पु. स., 1. आशा की पूर्णता, फल पाने की आशा का पूरा होना, 2. वह फल, जिसको प्राप्त करने की आशा की गई है, अभीप्सितफल – **लं**[1] प्र. वि., ए. व. – *फलासाव समिज्झतीति यथापत्थिके फले आसा तस्स फलस्स निप्फत्तिया समिज्झतियेव, अथ वा फलासाति आसाफलं, यथापत्थितं फलं समिज्झतियेवाति अत्थो,* जा. अट्ठ. 1.141; – **लं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *बकोपि ताव अत्तनो आसाफलं लभि,* जा. अट्ठ. 3.220; – **फलनिप्फादन** नपुं., तत्पु. स. [आशाफलनिष्पादन], जिस फल को पाने की आशा की गई है, उसकी प्राप्ति, चाहे गए फल की प्राप्ति – **देन** तृ. वि., ए. व. – *तस्स आसाफलनिप्फादनेन आसं देसि,* जा. अट्ठ. 5.396; – **भङ्ग** पु., तत्पु. स. [आशाभङ्ग], आशा का टूट जाना, निराशा – **ङ्गं** द्वि. वि., ए. व. – *दलिद्दियञ्च दीनत्तं आसाभङ्गञ्च दारुणं,* सद्धम्मो. 78; – **वती** स्त्री., एक हजार वर्षों की अवधि में केवल एक बार फलने वाली देवलोक की एक लता, प्र. वि., ए. व. – *तावतिंसदेवलोके*

चित्तलतावने आसावती नाम लता अत्थि, जा॰ अट्ठ॰ 3.219; *तत्थ आसावतीति एवंनामिका, सा हि यस्मा तस्सा फले आसा उप्पज्जति, तस्मा एतं नामं लभति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.219; *आसावती नाम लता जाता,* सद्द॰ 3.700; – **विघातदुक्ख** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आशाविघातदुःख], आशा के टूट जाने या पूरा न होने के कारण उत्पन्न दुख, निराशा-जनित दुख – *आसायेव दुक्खं आसादुक्खं, आसाविघातं दुक्खं वा,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.171; – **सञ्ञ** त्रि॰, ब॰ स॰ [आशासंज्ञक], आशा नाम से ज्ञात, 'आशा' संज्ञा से युक्त, इच्छा नाम से जाना गया – **ञ्ञेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मञ्ञन्तो मारपासेन आसासञ्ञेन बज्झति,* सद्धम्मो॰ 609; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अना॰, आहारा॰, इस्सरिया॰, कामा॰, वज्जिता॰, गन्धा॰, चीवरा॰, छिन्ना॰, जीविता॰, धना॰, निरा॰, पच्चया॰, पुत्ता॰, फला॰, फोटब्बा॰, बहिरा॰, रसा॰, रिसा॰, रूपा॰, लाभा॰, वन्ता॰, विगता॰, सग्गा॰, सद्दा॰, सुखा॰, सुद्धा॰ के अन्त॰ द्रष्ट.

आसा[2] स्त्री॰, व्य॰ सं॰ [आशा, मनस् की पुत्री तथा वसु की पत्नी], शक्र (इन्द्र) की 4 पुत्रियों में से एक, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तदा सक्कस्स आसा सद्धा सिरी हिरीति चतस्सो धीतरो होन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.388; – **से** सम्बो॰, ए॰ व॰ – *आसेति तं आलपति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.397.

आसा[3] स्त्री॰, उत्तरकालीन पालि-साहित्य में ही प्रयुक्त [आशा], दिशा, क्षेत्र – **य** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुराधनगरस्स पुरुत्तराय आसाय ...,* दाठा॰ 5.13 (रो॰); स॰ उ॰ प॰ में, आसंसा॰, पच्छिमा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आसाटिका स्त्री॰, [बौ॰ सं॰, आशाटिका], मक्खी का अण्डा, अन्य छोटे कीड़ों का अण्डा, गायों के घावों पर नीली मक्खियों द्वारा रखा गया अण्डा, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसाटिका मक्खिकाण्डं,* अभि॰ प॰ 645; *गुन्नं खाणुकण्टकादीहि पहटट्ठानेसु वणो होति तत्थनीलमक्खिका अण्डकानि पातेन्ति, तेसं आसाटिकाति नाम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).157; *सटति रुजति एतायाति साटिका, संवड्ढा साटिकाति आसाटिका,* म॰ नि॰ टी॰ (मू॰प॰) 1(2).181; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न आसाटिकं हारेता होति,* म॰ नि॰ 1.284; *अकुसलवितक्कं आसाटिकं अहरेत्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.352; *नीलमक्खिका आसाटिकं पातेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.151; – **कानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आसाटनपञ्ञत्ति आसाटिकानं,* नेत्ति॰ 50.

आसादन / आसादना नपुं॰ / स्त्री॰, आ + √सद के प्रेर॰ से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [बौ॰ सं॰, आसादना], वरिष्ठ भिक्षुओं अथवा स्थविरों के प्रति अपमानजनक व्यवहार, तिरष्कार, अवहेलना, आक्रमण, संघर्ष, मुकाबला – **ने** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सातं तत्थ न विन्दामीति तस्मिं आसादने सातं न विन्दामि, आसादननिमित्तं मधुरं सुखं न लभामीति अत्थो,* अप॰ अट्ठ॰ 1.298; – **ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *के च छवे पाथिकपुत्ते, का च तथागतानं अरहन्तानं सम्मासम्बुद्धानं आसादना'ति,* दी॰ नि॰ 3.18; *आसादनाति अहं बुद्धेन सद्धिं पाटिहारियं करिस्सामीति घट्टना,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.12; – **नापेक्ख** त्रि॰, [बौ॰ सं॰, आसादनापेक्षिन्], तिरष्कार करने अथवा समुत्तेजित करने की इच्छा रखने वाला, लज्जित कर देने की अपेक्षा करने वाला – **क्खो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुपितो अनत्तमनो आसादनापेक्खो,* महाव॰ 299; *"भिक्खु, खाद वा भुञ्ज वा"ति, जानं आसादनापेक्खो,* पाचि॰ 115; *आसादनापेक्खोति आसादनं चोदनं मङ्कुकरण भावं अपेक्खमानो,* पाचि॰ अट्ठ॰ 87.

आसादित त्रि॰, आ + √सद के प्रेर॰ का भू॰ क॰ कृ॰, अपमानित, तिरष्कृत – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसादितो मया बुद्धो,* अप॰ 1.43; *आसादितो मया बुद्धोति सो पच्चेकबुद्धो मया आसादितो ...,* अप॰ अट्ठ॰ 1.299; – **त्त** नपुं॰, भाव॰, लज्जित कर दिया जाना, तिरष्कृत कर दिया जाना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तपस्सीनं आसादितत्ता अट्ठसु महानिरयेसु महादुक्खस्स अनुभवितब्बत्ता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.265.

आसादेति आ + √सद के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, **शा॰ अ॰**, पास जा पहुंचता है, प्राप्त करता है, स्पर्श करता है, हांथ में ले लेता है, **ला॰ अ॰**, **1**. मुठभेड़, आक्रमण या प्रहार करता है, **2**. तिरष्कार करता है, अपमानित करता है, कनिष्ठ भिक्षु वरिष्ठ स्थविर के प्रति अवमाननापूर्ण व्यवहार करता है, अवहेलना करता है – *पकतत्तं भिक्खुं आसादेति अन्तो वा बहि वा,* चूळव॰ 51; *तं मिळ्हेन आसादेति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.177; *यम्पि सो तथागतं वा तथागतसावकं वा अकप्पियेन आसादेति,* म॰ नि॰ 2.38; *अकप्पियेन आसादेतीति अच्छमंसं सूकरमंसन्ति, दीपिमंसं वा मिगमंसन्ति खादापेत्वा "त्वं किं समणो नाम, अकप्पियमंसं ते खादित"न्ति घट्टेति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.37; – **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – मासादेसि तथागते, थेरगा॰ 280; *मासादेसि तथागतेति ... तथागते अरियसावके पकतिसत्ते*

विय अवञ्ञाय किलेसवसेन च उपसङ्कमाना मासादेसि, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.11; *सो तस्स अग्गनक्खन्धमेव आसादेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.459; – **देसि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तत्थ मा आसादेसीति मा घट्टेसि, मा पहारं देहीति वुत्तं होति,* उदा॰ अट्ठ॰ 199; *पुब्बेपि आसादेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.177; *खुरचक्कं अस्सादेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.179; – **यिं / देसिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अहं वने मूलफलेसनं चरं आसादयिं अच्छं सुघोररूपं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.188; *बुद्धं आसादयिं तदा,* अप॰ 1.42; *पिण्डाय विचरन्तं तं आसादेसिं गजेनहं,* अप॰ 1.330; – **दियिम्ह / दिम्हसे** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *साधुरूपं वत भो अरहन्तं समणं आसादिम्हसे,* दी॰ नि॰ 3.7; *आसादिम्हसेति आसादियिम्ह घट्टयिम्ह,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.7; – **दुं / दितुं** निमि॰ कृ॰ – *विभेमि चेतं आसादुं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.148; *आसादुन्ति आसादितुं,* तदे॰; – **दिय / देत्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *आसज्जापीति आसादेत्वापि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.41; *आसादियाति आसादेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.148; *आसादयित्वा घट्टेत्वा अनादरं कत्वा,* अप॰ अट्ठ॰ 1.299; *बुद्धं अनासादनीयमासादयित्वा,* मि॰ प॰ 196; – **देतब्बो** सं॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न पकतत्तो भिक्खु आसादेतब्बो अन्तो वा बहि वा,* चूळव॰ 49; – **तब्बं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गोतमं वादेन वादं आसादेतब्बं अमञ्ञिम्ह,* म॰ नि॰ 1.301; *भगवन्तं आसादेतब्बं अमञ्ञिम्हा,* स॰ नि॰ 1(1).28.

आसार[1] पु॰, [आसार], भारी वर्षा, मूसलाधार वर्षा – *आसारो धारा सम्पातो,* अभि॰ प॰ 50.

आसार[2] पु॰, [आसार], शरण, आश्रय, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, सुद्धा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आसाळ्ह 1. पु॰, [आषाढ़], आषाढ़ का महीना – **ळ्हो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चित्तो वेसाख जेट्ठो चासाळ्हो,* अभि॰ प॰ 75; – **ळ्हे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चन्दिमसुरिया – आसाळ्ह मासे सिनेरुसमीपेन विचरन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.46; **2.** – **ळ्हा** स्त्री॰, [आषाढा], पूर्वाषाढ़ एवं उत्तराषाढ़ नामक 2 नक्षत्र, 27 नक्षत्रों के बीच 20वां एवं 21वां नक्षत्र – *जेट्ठामूलासाळ्हा दुवे तथा,* अभि॰ प॰ 59; **3.** – **ळ्ही** स्त्री॰, [आषाढ़ी], आषाढ़मास की पूर्णमासी की तिथि, भगवान् बुद्ध के धम्मचक्कप्पवत्तन की तिथि – **ळ्हिया** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसाळ्हिया पुण्णमासे उपकट्ठे च वस्सके,* दी॰ वं॰ 14.50; *द्वेमा ... वस्सूपनायिका पुरिमिका, पच्छिमिका, अपरज्जुगताय आसाळ्हिया पुरिमिका उपगन्तब्बा,* महाव॰ 181; – **ळ्हियं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसाळ्हियं पभाताय रत्तिया कालस्सेव पत्तचीवरमादाय,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 21; – **जुण्हपक्ख** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आषाढ़ज्योत्स्नापक्ष], आषाढ़ मास का शुक्लपक्ष – **क्खे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उट्ठितो आसाळ्हजुण्हपक्खे सकलं अड्ढमासं वस्सनकमेघो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.301; – **ळ्हिछणउस्सव** पु॰, तत्पु॰ स॰, आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन वर्षा-ऋतु के आरम्भ की प्रसन्नता को व्यक्त करने हेतु मनाया जाने वाला उत्सव – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुवच्छरं पवत्तेन्तं आसाळ्हिछणउस्सवं,* चू॰ वं॰ 99.53; – **नक्खत्त** नपुं॰, आषाढ़ा नक्षत्र, आषाढ़ पूर्णमासी का आषाढ़ा नक्षत्र वाला वह दिन जिस में वर्षा के आगमन के उपलक्ष्य में उत्सव आयोजित होता था – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ आसाळ्हीनक्खत्तन्ति वस्सूपगमनपूजादिवसं सन्धाय वुत्तं,* सारत्थ॰ टी॰ 2.335; – **त्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पाचीनदिसाय आसाळ्हनक्खत्तेन युत्तो पुण्णचन्दो उग्गच्छति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.326; – **पवारणनक्खत्त** नपुं॰, द्व॰ स॰, आषाढ़ी पूर्णिमा के अवसर पर तथा पवारणा की तिथि पर आयोजित उत्सव – **त्तादीसु** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *उस्सवेसूति आसाळ्हीपवारणनक्खत्तादीसु महुस्सवेसु,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.194; *आसाळ्हीपवारणनक्खत्तादीसूति एत्थ नक्खत्तसद्दो पच्चेकं योजेतब्बो,* सारत्थ॰ टी॰ 2.335; – **पुण्णमा** स्त्री॰, [आषाढ़ीपूर्णिमा], आषाढ़ मास की पूर्णिमा की तिथि, सिद्धार्थ के महामायादेवी के गर्भ में प्रवेश की तिथि, बुद्ध के प्रथम धर्मोपदेश तथा उपोसथ आदि सङ्घकर्मों के अनुष्ठान आदि की दृष्टि से थेरवादी बौद्धपरम्परा में समादृत, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"स्वे आसाळ्हिपुण्णमा भविस्सती"ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.255; – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ते आसळ्हीपुण्णमायं उपोसथं कत्वा ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.9; *ते किर आसळ्हिपुण्णमायं कतिकवत्तं अकंसु,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.155; *आसळ्हिपुण्णमायं वाराणसिं गन्त्वा ...,* अप॰ अट्ठ॰ 1.94; *आसाळ्हिपुण्णमायं इसिपतनं गन्त्वा ...,* अप॰ अट्ठ॰ 1.307; – **पुण्णमदिवस** पु॰, तत्पु॰ स॰ [आषाढ़ीपूर्णिमादिवस], आषाढ़ी पूर्णिमा का दिन – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *आसाळ्हीपुण्णमदिवसंयेव नियामेन्तो आह ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.173; – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसाळ्हिपुण्णमदिवसे इसिपत्तने मिगदाये,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.51; *आसाळ्हिपुण्णमदिवसे वाराणसियं इसिपत्तनं पविसित्वा ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.103; – **पुण्णमासी** स्त्री॰, [आषाढ़पूर्णमासी], आषाढ़ मास की पूर्णमासी की तिथि – **सियं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ –

आसाळ्हिपुण्णमासियं वाराणसिं गमिस्सामी'ति, जा॰ अट्ठ॰ 1.90; *काले सम्पत्ते आसाळ्हिपुण्णमासियं पातोव कत्तब्बकिच्चं निट्ठापेत्वा*, अप॰ अट्ठ॰ 1.125; – **पुण्णमी** स्त्री॰, [आषाढ़पूर्णिमा], उपरिवत् – **मितो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसाळ्हीपुण्णमितो वा अपराय पुण्णमाय अनन्तरे ...*, महाव॰ अट्ठ॰ 330; – **मिया** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्साति आसाळ्हीपुण्णमिया*, सारत्थ॰ टी॰ 3.255; *देविया कुच्छिस्मिं आसाळ्हिपुण्णमिया... पटिसन्धिं गहेत्वा*, बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 92; – **मङ्गल** नपुं॰, आषाढ़ मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला उत्सव – **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसळ्हिमङ्गलं चापि पवत्तेतुं नियोजयि*, चू॰ वं॰ 85.89; – **मास** पु॰, [आषाढ़मास], आषाढ़ का महीना – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वस्सूपनायिकाय पुरिमभागे आसाळ्हमासो*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.98; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसाळ्हीमासस्स जुण्हपक्खतेरसिया निक्खन्तो गामन्तपब्भारं गन्त्वा ...*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.287; – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ते हि आसाळ्हमासे सिनेरुसमीपेन विचरन्ति*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.46; *गिम्हानं पच्छिमे मासेति आसाळ्हमासे*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.172; *पुण्णाय पुण्णमासिया आसळ्हमासे उपोसथे*, दी॰ वं॰ 14.78; – **सुक्कपक्ख** पु॰, [आषाढ़शुक्लपक्ष], आषाढ़ मास का शुक्लपक्ष – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसाळ्हसुक्कपक्खस्स तेरसे दिवसे पन*, म॰ वं॰ 16.2; *आसाळ्हसुक्कपक्खस्स पण्णरस उपोसथे*, म॰ वं॰ 31.109; – **म्हि** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसाळ्ह सुक्कपक्खम्हि सुक्कपक्खद्वितिथि का*, म॰ वं॰ 3.14.

आसि √अस का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आसीत्], था – *एकमासि रुदम्मुखी*, स॰ नि॰ 1(1).153; *ततो मे पणिधी आसि, चेतसो अभिपत्थितो*, थेरगा॰ 514; *आसीति अहोसि*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.135; – **सिं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *उद्धतो चपलो चासिं कामरागेन अट्टितो*, थेरगा॰ 157; *यं सीलवती आसिं*, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 142; *आसिन्ति अहोसिं*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.301; – **सुं**[1] प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सरणेसु च सीलेसु ठिता आसुं असञ्ञिया*, म॰ वं॰ 1.32; – **सुं**[2] उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *उभो माता च धीता च मयं आसुं सपत्तियो*, थेरीगा॰ 224.

आसिंसक / आसीसक त्रि॰, आ + √संस से व्यु॰ [आशंसक], प्रत्याशी, इच्छुक, आशा रखने वाला, गवेषक – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आसीसका उत्तमत्थं*, अप॰ 1.24; मि॰ प॰ 310; *उत्तमत्थं निब्बानं आसीसका गवेसका*, अप॰ अट्ठ॰ 1.239.

आसिंसति द्रष्ट॰ आसंसति के अन्त॰ (ऊपर).

आसिंसन नपुं॰, आ + √संस से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आशंसन], इच्छा करना, पाने की आशा रखना, प्रत्याशा करना, चाही गई वस्तु को पाने की कामना करना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसिंसनं आसिट्ठं इच्छितब्बस्स अत्थजातस्स पत्थना*, सद्द॰ 3.814; *आसिंसनं आसिट्ठं*, सद्द॰ 3.877.

आसिंसनक / आसीसनक त्रि॰, इच्छुक आशा रखने वाला, – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आसंसुकाति ततो एव घासच्छादनादीनं आसीसनका*, थेरीगा॰ अट्ठ॰ 242.

आसिंसना / आसिंसन / आसीसना स्त्री॰ / नपुं॰, आ + √संस से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [आशंसन], अपनी प्रिय वस्तु या व्यक्ति को पाने की इच्छा, आशा – **ना** प्र॰ वि॰ ए॰ व॰ – *आसिंसना इज्झियथा हि मय्हं तुय्हम्पि सा सामि समिज्झतूति*, जि॰ च॰ 217; आसिसनवसेन *आसिसना*, ध॰ स॰ अट्ठ॰ 391; *आसा आसिंसना आसिंसितत्तं*, ध॰ स॰ 252; *अस्सासकाति आसीसना, पत्थनाति अत्थो*, महाव॰ अट्ठ॰ 244; *आसा आसीसना आसीसितत्तं*, महानि॰ 6; *या भविस्सस्स अत्थस्स आसीसना अवस्सं आगमिस्सतीति आसास्स उप्पज्जति*, नेत्ति॰ 44.

आसिंसनीय / आसीसनीय त्रि॰, आ + √संस का सं॰ कृ॰ [आशंसनीय], इच्छा करने योग्य, कामना करने योग्य, स॰ प॰ के अन्त॰, – *आसीसनीयबहुरतनपरिपूरितं*, मि॰ प॰ 2.

आसिंसवग्ग पु॰, जा॰ अट्ठ॰ के एक खण्ड का शीर्षक, जा॰ अट्ठ॰ 1.254-273; पाठा॰ आसीसवग्ग.

आसिंसवचन नपुं॰, [आशीर्वचन], आशीर्वाद, शुभ-कामना का वचन, शुभेच्छा – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जयतु भवन्ति आसिंसवचनं वदिंसु*, सद्द॰ 2.344.

आसिंसवाचा / आसीसवाचा स्त्री॰, [आशीर्वाक्], उपरिवत् – **चं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तदाहं आसीसवाचं अवोचं अनुकम्पिका*, अप॰ 2.204.

आसिंसा / आसीसा स्त्री॰, [आशिष्, नपुं॰], शुभेच्छा, आशीर्वाद, मङ्गलकामना – *आसिंसत्थे च आयस्मतो दीघायु होतु*, सद्द॰ 3.697; *आसिंसायं जयन्तु सन्तो'ति*, सद्द॰ 3.813; *सोत्थि सुवत्थि इच्चेते आसिंसत्थे*, सद्द॰ 3.900; – **सा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसीसायन्ति अवस्संभावी अत्थसिद्धियं, सा हि इध आसीसाति अधिप्पेता, न पत्थना, ईदिसे अनागतत्थे अतीतवचनं सद्दविदू इच्छन्ति*, वि॰ वि॰ टी॰ 2.241.

आसिंसापेति / आसीसापेति आ + √संस के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व., शुभेच्छा कराता है, मङ्गलकामना कराता है, आशीर्वाद दिलाता है – *न भावितमासीसापेति,* दी. नि. 3.35.

आसिंसितत्त नपुं., भाव. [आशंसितत्व], अभीप्सित अथवा इच्छित होना – **त्तं** प्र. वि., ए. व. – *आसिसितस्स भावो आसिसितत्तं,* ध. स. अट्ठ. 391; पाठा. आसिंसितत्त.

आसिक त्रि., √अस से व्यु., केवल स. उ. प. में प्राप्त, खाने वाला, उक्खित्ता., खेला., वन्ता. के अन्त., द्रष्ट..

आसिञ्चति आ + √सिच, वर्त., प्र. पु., ए. व. [आसिञ्चति], 1. सकर्मक क्रि. के रूप में, सींचता है, टपकाता है, छोटी छोटी बूंदों के रूप में अन्दर डाल देता है या गिरा देता है, बूंद बूंद करके टपकाता है, उड़ेल देता है, छिड़कता है – *खीरं दारकानं मुखे आसिञ्चति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).333; – **न्ति** प्र. वि., ब. व. – *नत्थुं विसमं आसिञ्चन्ति,* महाव. 279; – **ञ्च** अनु., म. पु., ए. व. – *सणिकं आसिञ्चा'ति,* स. नि. अट्ठ. 3.338; – **थ** ब. व. – *"निपज्जित्वा आसिञ्चथा'ति,* ध. प. अट्ठ. 1.7; *तेन हिस्स पादधोवनउदकं आदाय सीसे आसिञ्चथाति,* ध. प. अट्ठ. 2.382; – **ञ्चेय्य** विधि., प्र. पु., ए. व. – *पुरिसो कालेन कालं तेलं आसिञ्चेय्य वट्टिं उपसंहरेय्य,* स. नि. 1(2).77; – **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *थेरो नासाय तेलं आसिञ्चन्तो,* ध. प. अट्ठ. 1.6; – **न्तं** द्वि. वि., ए. व. – *तं साकवत्थुस्मिं उदकं आसिञ्चन्तं दिस्वा,* चरिया. अट्ठ. 174; – **न्तिया** वर्त. कृ., स्त्री., तृ. वि., ए. व. – *मया ... सप्पिं आसिञ्चन्तिया,* ध. प. अट्ठ. 2.181; – **माना** वर्त. कृ., आत्मने., स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *वूपसमयमाना सीतुदकघटसहस्सं मत्थके आसिञ्चमाना विय उप्पज्जति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.94; – **ञ्चि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *भगवा उदकं आसिञ्चि,* महाव. 393; *तत्ततेलकटाहं सीसे आसिञ्चि,* विसुद्धि. 2.9; – **ञ्चिस्साम** भवि., उ. पु., ब. व. – *"मुखे ते पानीयं आसिञ्चिस्सामा'ति,* स. नि. अट्ठ. 2.258; – **ञ्चितुं** निमि. कृ. – *पक्कुथितं सप्पिं आसिञ्चितुं,* ध. प. अट्ठ. 2.181; – **ञ्चित्वा** पू. का. कृ. – *आसिञ्चित्वा अङ्गुलिया वा,* पाचि. अट्ठ. 94; *निसिन्नकोव आसिञ्चित्वा,* ध. प. अट्ठ. 1.6; – **ञ्चितब्बं** सं. कृ., नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आचमनकुम्भिया उदकं आसिञ्चितब्बं,* महाव. 54; *एकेन हत्थेन उदकं आसिञ्चितब्बं,* चूळव. 350; 2. अकर्मक क्रि. के रूप में, टपकाव से युक्त होता है, पिघल जाता है अथवा पिघलाव के रूप में हो जाता है, तरलता से ओत-प्रोत हो जाता है – **ञ्चन्तं** वर्त. कृ., नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *यदा दुक्खं उपज्जति सकलसरीरं ... विलीनतम्बलोहेन आसिञ्चन्तं ... उप्पज्जति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).287; – **न्ते** सप्त. वि., ए. व. – *उण्हे सप्पिम्हि तत्थ आसिञ्चन्ते पटपटाति सद्दो उट्ठहति,* स. नि. अट्ठ. 2.97; – **मानं** वर्त. कृ., आत्मने., नपुं., प्र. वि., ए. व. – *घटेहि आसिञ्चमानं विलीनसुवण्णं विय,* ध. प. अट्ठ. 2.123.

आसिञ्चन नपुं., आ + √सिच से व्यु., क्रि. ना., सींचना, छिड़कना, बूंद बूंद कर के टपकाना, उड़ेलना – **नं** प्र. वि., ए. व. – *पिट्ठियं आसिञ्चनं पिट्ठिसंधोविका नाम,* अ. नि. अट्ठ. 3.330; – **विस** त्रि., ब. स., बूंद बूंद करके बाहर निकल रहे विष से युक्त – **सा** पु., प्र. वि., ब. व. – *परस्स च अत्तनो सरीरे च आसिञ्चनविसाति अत्थो,* स. नि. अट्ठ. 3.54; स. उ. प. के रूप में तक्का. के अन्त. द्रष्ट..

आसिञ्चापेति आ + √सिच के प्रेर. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आसिञ्चयति], सिंचवाता है, बूंद बूंद कर बाहर टपकाने हेतु प्रेरित करता है, छिड़कवाता है – **सि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *सोळसन्नं ब्राह्मणसहस्सानं मुखेसु आसिञ्चापेसि,* जा. अट्ठ. 4.348.

आसिञ्चित / आसित्त त्रि., आ + √सिच का भू. क. कृ. [आसिक्त], सींचा हुआ, भिगोया हुआ, तर किया हुआ, छिड़का हुआ, उड़ेला हुआ – **त्तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *ताय तस्सा मत्थके आसित्तं पक्कुथितसप्पि सीतुदकं विय अहोसि,* ध. प. अट्ठ. 2.181.

आसिट्ठ त्रि., आ + √सिंस का भू. क. कृ. [आशिष्ट], इच्छित, वाञ्छित, वह, जिस को पाने की इच्छा की जा रही हो – **ट्ठे** सप्त. वि., ए. व. – *सज्झायमभिधेय्यायं आसिट्ठे गम्यमाने धातूहि तिप्पच्चयो होति,* क. व्या. 554; – **ट्ठत्थ** पु., इच्छित होने का अर्थ – **त्थे** सप्त. वि., ए. व. – *आसिट्ठत्थे च अनुत्तकाले पञ्चमी विभत्ति होति,* क. व्या. 417.

आसित[1] **/ मासित / असित** त्रि., व्यु., संदिग्ध अट्ठ. के व्याख्यान अस्पष्ट, संभवतः √अस (भोजन करना) का प्रेर. अथवा √मस (स्पर्श करना) से व्यु. मासित का परिवर्तित रूप, अधिकतर स्थलों में, 'मासित' रूप में ही प्राप्त, 1. तृप्त करा दिया गया, भोजन करा दिया गया, 2. स्पर्श

किया गया, प्रभावित किया हुआ – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *यथाहमज्ज सुहितो, ... दुमपक्कानि मासितो'ति,* जा. अट्ठ. 2.370; ... *मासितोति उदुम्बरादीनि रुक्खफलानि खादित्वा असितो धातो सुहितो,* जा. अट्ठ. 2.370; *तत्थ हेस्सामि आसितो,* जा. अट्ठ. 5.64; *असितो धातो सुहितो,* जा. अट्ठ. 5.69; *विसमासितो,* मि. प. 278.

आसित²/असित त्रि., आ + √सि का भू. क. कृ. [आश्रित], किसी के साथ जुड़ा हुआ, किसी का आश्रय लिया हुआ, किसी की शरण में गया हुआ – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सन्तिं निस्सितो असितो अल्लीनो उपगतो,* महानि. 53; ... *सो मया भगवा आसितो उपासितो पयिरुपासितो ...,* चूळनि. 189; *आसितोति उपसङ्कमितो,* चूळनि. अट्ठ. 77; *अस्सितोति आसितो विसेसेन निस्सितो,* महानि. अट्ठ. 159.

आसित्त त्रि., आ + √सिच का भू. क. कृ. [आसिक्त], सींचा हुआ, भिगोया हुआ, लिपा हुआ, तरल किया हुआ – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *असुचिना आसित्तस्स परिळाहो वूपसम्मति,* महाव. अट्ठ. 282; – **त्तेहि** नपुं., तृ. वि., ए. व. – *कहापणेहि कण्डं तं आसित्तेहुपरूपरि,* म. वं. 25.100; – **त्ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *जलधाराहि ... आसित्ता सब्बा लङ्कामही अहु,* म. वं. 17.45; – **त्तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *सेय्यथापि कुम्भो निक्कुज्जो तत्र उदकं आसित्तं विवट्टति,* अ. नि. 1(1).153; *तेलं वा वालुकाय आसित्तं ओसीदतिमेव संसीदतिमेव,* अ. नि. 1(1).313; *"नासाय वो तेलं आसित्त"न्ति,* ध. प. अट्ठ. 1.6; *अभिसेकउदकं आसित्तं सूकरिमेवस्स अग्गमहेसिं करिंसु,* जा. अट्ठ. 4.311; – **त्तेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. – *पत्तं ... आसित्तेन ... सप्पिनाविज्जोतमानं ... हत्थे ठपेत्वा,* स. नि. अट्ठ. 2.164; – **त्ते** नपुं., सप्त. वि., ए. व. – *यथा घते आसित्ते अग्गिम्हि अग्गिसिखा अतीव जलति,* अप. अट्ठ. 2.117; – **त्तानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *सप्पिमधुसक्खराहि आसित्तानि योजितानेव मधुरानि ओजवन्तानि होन्ति,* स. नि. अट्ठ. 1.277; – **उदक** नपुं., कर्म. स. [आसिक्तोदक], छिड़का हुआ जल – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *चङ्कवारे आसित्तउदकं विय परिहायतेव,* अ. नि. अट्ठ. 3.150-151; *परिस्सावने आसित्तउदकं विय परिहायतेव,* जा. अट्ठ. 4.96; – **काल** पु., तत्पु. स., सींचे जाने का समय, स्निग्ध अथवा तरल किए जाने का काल – **लो** प्र. वि., ए. व. – *उदकस्स आसित्तकालो विय देसनाय,* अ. नि. अट्ठ. 2.99; स. उ. प. के रूप में, तोयलवा. के अन्त. द्रष्ट..

आसित्तक त्रि., आसित्त से व्यु. [आसिक्तक], पूरी तरह से सिञ्चित, भली भांति भिगो दिया गया अथवा तर कर दिया गया – **सदिस** त्रि., भिगोया हुआ जैसा – **सा** पु., प्र. वि., ब. व. – *तक्कं सीसे आसित्तकसदिसाव होन्ति,* महाव. अट्ठ. 269; *तक्कं सीसे आसित्तकसदिसाव होन्तीति यथा अदासे करोन्ता तक्केन सीसं धोवित्वा अदासं करोन्ति, एवं आरामिकवचनेन दिन्नत्ता अदासाव तेति अधिप्पायो,* सारत्थ. टी. 3.219; स. उ. प. के रूप में, अना., अमता. के अन्त. द्रष्ट..

आसित्तकपूव पु., कर्म. स. [आसिक्तकपूप], एक प्रकार का पुआ, जिसके अन्दर में पिट्ठा रखकर धीरे धीरे बड़ा आकार देकर उसे बन्द कर देते हैं, संभवतः आधुनिक मगध का ढकन-पुआ – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *तत्थ कपल्लकपूवन्ति आसित्तकपूवं, तं पचन्ता कपाले पठमं किञ्चि पिट्ठं ठपेत्वा अनुक्कमेन वड्ढेत्वा, अन्तन्तेन परिच्छिन्दन्ति पूवं समन्ततो परिच्छिन्नं कत्वा ठपेन्ति,* दी. नि. टी. (लीन.) 2.139.

आसित्तकाधार पु., चावल की गर्म खीर आदि से भरा हुआ धातुपात्र, जिसमें भोजन गर्म बना रहता था, तथा जो एक थाली से ढका रहता था – **रो** प्र. वि., ए. व. – *तेनेव पाळियं आसित्तकूपधान'न्ति वुत्तं, तस्स च पायासादीहि आसित्तकाधारोति अत्थो,* वि. वि. टी. 2.220.

आसित्तकूपधान नपुं., उपरिवत् – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *छब्बग्गिया भिक्खू आसित्तकूपधाने भुञ्जन्ति,* चूळव. 243; – **नं** प्र. वि., ए. व. – *आसित्तकूपधानं नाम तम्बलोहेन वा रजतेन वा कताय पेळाय एतं अधिवचनं,* चूळव. अट्ठ. 52; *पेळायाति अट्ठंससोळसंसादिआकारेन कताय भाजनाकाराय पेळाय, यत्थ उण्हपायासादिं पक्खिपित्वा उपरि भोजनपातिं ठपेन्ति, भत्तस्स उण्हभावाविगमनत्थं, तादिसस्स भाजनाकारस्स आधारस्सेतं अधिवचनं, तेनेव पाळियं "आसित्तकूपधान"न्ति वुत्तं,* वि. वि. टी. 2.220; *इदञ्च आसित्तकूपधानं पच्चन्तेसु न जानन्ति कातुं, मज्झिमदेसेयेव करोन्ति,* वि. वि. टी. 2.220.

आसित्तगन्धतेल त्रि., ब. स., सुगन्धित तेलों से अभ्यञ्जित, सुगन्धित तेलों को लगाया हुआ व्यक्ति – **लाय** स्त्री., तृ. वि., ए. व. – *आसित्तगन्धतेलाय लद्धुं सोवण्णदोणिया,* म. वं. 20.35.

आसित्तपण्डक पु., पांच प्रकार के नपुंसकों में प्रथम के रूप में उल्लिखित, समलैंगिक क्रिया कराने वाला व्यक्ति – **को** प्र. वि., ए. व. – *पण्डको पञ्चविधो होति आसित्तपण्डको, उसूयपण्डको, ओपक्कमिकपण्डको, नपुंसकपण्डको, पक्खपण्डकोति,* कङ्घा. टी. 159; *तत्थ यस्स परेसं अङ्गजातं मुखेन गहेत्वा असुचिना आसित्तस्स परिळाहो वूपसम्मति, अयं आसित्तपण्डको,* तदे.; – **स्स** च./ष. वि., ए. व. – *तेसु आसित्तपण्डकस्स च उसूयपण्डकस्स च पब्बज्जा न वारिता,* महाव. अट्ठ. 282; – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *आसित्तपण्डकञ्च उसूयपण्डकञ्च ठपेत्वा ...,* कङ्घा. अट्ठ. 109.

आसितब्ब त्रि., √आस से व्यु., सं. कृ., बैठे जाने योग्य – **ब्बं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *"भावकम्मेसु तब्बानीया" ... आसीयते, आसितब्बं, आसनीयं,* क. व्या. 542.

आसित्तमत्त त्रि., जल का सिञ्चन करने के साथ साथ, आसिञ्चन अथवा छिड़काव करते ही – **त्ते** नपुं., सप्त. वि., ए. व. – *एवं ताय सच्चकिरियं कत्वा उदके आसित्तमत्तेयेव सोत्थिसेनस्स कुट्ठं अम्बिलेन धोतं विय तम्बमलं तावदेव अपगच्छि,* जा. अट्ठ. 5.90.

आसित्तविस[1] त्रि., ब. स. [आसिक्तविष], विष को मुख से बाहर टपकाते रहने वाला विषधर सर्प, ज़हरीला नाग – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आसित्तविसोतिपि आसीविसो, सकलकाये आसिञ्चित्वा विय ठपितविसो परस्स च सरीरे आसिञ्चनविसोति अत्थो, असितविसोतिपि आसीविसो,* सारत्थ. टी. 2.19; – **सा** ब. व. – *आसित्तविसातिपि आसीविसा, असितविसातिपि आसीविसा,* स. नि. अट्ठ. 3.54.

आसित्तविस[2] नपुं., कर्म. स. [आसिक्तविष], टपकता हुआ विष, धीरे धीरे रिस कर बाहर आ रहा विष – **सेन** तृ. वि., ए. व. – *आसित्तसत्तोति आसित्तविसेन सत्तो,* जा. अट्ठ. 5.82.

आसित्तसत्त त्रि., तत्पु. स. [आसिक्तशप्त], तीव्र विष वाले (नागराज) द्वारा अभिशप्त या शापित – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आसित्तसत्तो निहतो पथब्या,* जा. अट्ठ. 5.82; *आसित्तसत्तोति आसित्तविसेन सत्तो,* तदे.

आसित्तोदक त्रि., [आसिक्तोदक], जल द्वारा सिञ्चित, सिञ्चित – **का** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *महापथवी ... आसित्तोदका चिक्खल्लजाता,* मि. प. 265; – **कानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *आसित्तोदकानि वट्टुमानि,* दी. नि. 2.254.

आसिलिट्ठ त्रि., आ + √सिलिस से व्यु., भू. क. कृ. [आश्लिष्ट], दृढ़ता के साथ जुड़ा हुआ अथवा चिपटा हुआ, पूरी तरह से समर्पित – **ट्ठो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आसिलिट्ठो गुरुम्भवं आसिलिट्ठो गुरुभोता,* मो. व्या. 5.58.

आसी[1] त्रि., √अस (फेंकना) से व्यु., केवल स. उ. प. के रूप में इस्सा. के अन्त. द्रष्ट.

आसी[2] त्रि., √अस (खाना) से व्यु., केवल स. उ. प. में ही प्रयुक्त, खाने वाला, अप्पा., एका., तिणा., पलासा., सुधा. के अन्त. द्रष्ट.

आसी[3] स्त्री., [आशी], सांप की विषैली दाढ़ या दांत – *आसीति वा दाठा वुच्चति, तत्थ सन्निहितविसोति आसीविसो,* सारत्थ. टी. 2.20; *आसी त्थी सप्पदाठा थ,* अभि. प. 655; *सप्पदाठायमासित्थी,* अभि. प. 872.

आसी[4]**/आसि** स्त्री., [आशिष], 1. शुभेच्छा, मङ्गल की कामना, आशीर्वाद, 2. अलङ्कारों का एक प्रभेद – *आसी नाम सियत्थस्स इट्ठस्सासिसनं यथा,* सुबोधा. 336(गा.); *स्वातनी आसि भविस्सन्ती चाति,* सद्द. 1.56; *सप्पदाठायमासित्थी, इट्ठस्सासिंसनाय पि,* अभि. प. 872; – **सवाचा** स्त्री., [आशीर्वचन], मङ्गलकामना अथवा आशीर्वाद का वचन – **चं** द्वि. वि., ए. व. – *तदाहं आसीसवाचं अवोचं अनुकम्पिका,* थेरीगा. अट्ठ. 165; – **सिवाद** पु., [आशीर्वाद], शुभकामना का कथन – **दं** द्वि. वि., ए. व. – *सुखिनी होहि, अरोगा होही'ति आदिना आसिवादं अत्थतो वदापेसि नाम,* वि. व. अट्ठ. 18; – **वादन** नपुं., उपरिवत् – **वसेन** तृ. वि., ए. व., क्रि. वि., आशीर्वाद के द्वारा – *"कालेन कालं आसीवादनवसेन सुट्ठु पयुत्तनन्दिघोसो"ति च वदन्ति,* वि. व. अट्ठ. 232.

आसीतिम त्रि., अस्सीवां – **मे** सप्त. वि., ए. व. – *आसीतिमे वस्से सुखेनेव पब्बज्जं उपगतो,* अ. नि. अट्ठ. 1.234.

आसीदति आ + √सद का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आसीदति], 1. जा पहुंचता है, समीप पहुंचता है, पा लेता है, स्पर्श करता है, पकड़ लेता है, 2. आक्रमण या प्रहार करता है, मुठभेड़ करता है, 3. तिरष्कृत या अपमानित करता है, हटा देता है – **दे** विधि., प्र. पु., ए. व. – *आसीविसम्पि आसीदे येन दट्ठो न जीवति,* अ. नि. 2(1).63; *आसीदेति घट्टेय्य,* अ. नि. अट्ठ. 3.28; *नासीदे, यस्मिं नत्थि कतञ्ञुता,* जा. अट्ठ. 4.51; *आसीदे, सञ्ञतानं तपस्सिनं,* जा. अट्ठ. 5.259; – **सदा** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *नासदा वाकरं मिगो,* म. नि. 2.262; – **सदो** म. पु., ए. व. – *मेतमासदो, एसो हि,* म. नि. 1.410; *अतिच्छं चक्कमासदो,* जा. अट्ठ.

1.396; – **दित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *ब्राह्मणा आसीदित्वा संसीदन्ति,* दी॰ नि॰ 1.224.

आसीन त्रि॰, √आस का भू॰ क॰ कृ॰ [आसीन], बैठा हुआ, आसन पर बैठा हुआ – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुत्थुनन्तो आसीनो, भत्तु याचित्थ जीवितं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.341; – **नं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नगस्स पस्से आसीनं मुनिं दुक्खस्स पारगुं,* स॰ नि॰ 1(1).225; *न हेव ठितं नासीनं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.81; – **ने**[1] सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकस्मिं तुण्हिमासीने, सब्बे तुण्ही भवन्ति ते,* दी॰ नि॰ 2.156; – **ने**[2] पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सो ... अज्झभासथ पवङ्गकाये आसीने दिजसङ्घगणाधिपे,* जा॰ अट्ठ॰ 5.334; – **नानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चोळञ्च नेसं पिण्डञ्च आसीनानं पदापये,* जा॰ अट्ठ॰ 7.192; – **नेसु** पु॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *गेहसामिकेसु तुण्हीमासिनेसु आणाकरणं न युत्तं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.224; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अग्गिमा॰, पासाणमा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आसीनसयन त्रि॰, बैठा हुआ अथवा लेटा हुआ – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चरतो तिट्ठतो वापि, आसीनसयनस्स वा,* थेरगा॰ 452; *आसीनसयनस्स वाति आसीनस्स सयनस्स वा, निसिन्नस्स निपज्जन्तस्स वाति अत्थो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.102.

आसीयति आ + √सि का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आश्रयते], आश्रय लेता है, विद्यमान होता है – *कद्दमे जायति उदके आसीयती'ति,* मि॰ प॰ 81-82.

आसीयते √आस के कर्म॰ वा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, बैठा जाता है, द्रष्ट॰ आसति के अन्त॰.

आसीवचन नपुं॰, शुभकामना के वचन, आसी के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आसीविस / आसिविस पु॰, [आशीविष], अत्यन्त तेजी के साथ शरीर में फैलने वाले विष वाला सर्प, तीव्र विष वाला सर्प – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसु सीघं एतस्स विसं आगच्छतीति आसीविसो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.170; *आसीविसो भुजङ्गोहि ...,* अभि॰ प॰ 653; *आसित्तविसोतिपि आसीविसो,* सारत्थ॰ टी॰ 2.19; *नागराजा इद्धिमा आसिविसो घोरविसो,* महाव॰ 29; *सेय्यथापि सुनक्खत्त, आसीविसो घोरविसो,* म॰ नि॰ 3.45; *काये आसीविसो पतितो होति,* स॰ नि॰ 2(2).43; – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसीविसमिवोरगं अग्गिं विय,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.316; *आसीविसं घोरविसं,* म॰ नि॰ 1.301; – **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसीविसेन वित्तोति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.25; *आसीविसेन दट्ठो भवेय्य,* मि॰ प॰ 150; – **सा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"आरा अमित्ता ब्यवजन्ति तेहि आसीविसा वा रिव सत्तुसङ्घा'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.77; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नागराजस्स इद्धिमतो आसिविसस्स घोरविसस्स तेजसा ...,* महाव॰ 29; *आसिविसस्स घोरविसस्स मुखे अङ्गजातं पक्खित्तं,* पारा॰ 21; *आसीविसस्सानन्तरं कण्हसप्पो वुत्तो,* सारत्थ॰ टी॰ 2.20; – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मण्डूकपोतिकानं आसीविसे कण्हसप्पे गिलनकालो विय भविस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.327; *यत्तो चासीविसे चरे'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.198; – **सा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चत्तारो आसीविसा उग्गतेजा घोरविसा,* स॰ नि॰ 2(2).176; *आसीविसा दुरुपट्ठाना,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.59; – **सेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पठमं आसीविसेहि अनुबद्धो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.56; – **सानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इमेसं चतुन्नं आसीविसानं,* स॰ नि॰ 2(2).176; *आसीविसानञ्च रुक्खसुसिरतिणपण्णगहन सङ्कारट्ठानानिपि आसयो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.58; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, घट्टिता॰, पहता॰ के अन्त॰, द्रष्ट॰.

आसीविसदट्ठ 1. त्रि॰, तत्पु॰ स॰, ज़हरीले सर्प द्वारा डसा गया, विषैले सांप द्वारा काटा गया, 2. नपुं॰, सांप का काटना, स॰ प॰ के अन्त॰, – **टूपमा** स्त्री॰, सांप द्वारा डसे जाने की उपमा – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं पनत्थो आसीविसदट्ठूपमाय दीपेतब्बो एको किर पुरिसो आसीविसेन दट्ठो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.88.

आसीविसपोतक पु॰, शिशु सर्प, सांप का बच्चा – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *द्वे आसीविसपोतका कीळन्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.14.

आसीविसभारित त्रि॰, तत्पु॰ स॰, ज़हरीले सर्पो से भरपूर – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अपेसलानीति एवरूपा पुग्गला आसीविसभरिता विय वम्मिका अप्पियसीला होन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.343.

आसीविसवग्ग पु॰, स॰ नि॰ के एक वर्ग का शीर्षक, स॰ नि॰ 2(2).176-200; स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.52-111.

आसीविसालय पु॰, तत्पु॰ स॰, सर्प की बामी, सर्प के रहने का बिल – **सम** त्रि॰, सांप की बामी के समान, सांप के बिल जैसा – **मे** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसीविसालयसमे रोगावासे कळेवरे,* अप॰ 2.203; – **निभ** त्रि॰, उपरिवत् – **भो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसीविसालयनिभो सभयो सदुक्खो,* तेल॰ 70.

आसीविसूपम त्रि॰, सर्प जैसा, सांप के समान – **मा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चत्तारो आसीविसूपमा पुग्गला,* अ॰ नि॰

1(2).127; *कामा कटुका आसीविसूपमा, येसु मुच्छिता बाला,* थेरीगा॰ 453; – **मे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चुपादानक्खन्धा आसीविसूपमे ...*, विसुद्धि॰ 2.107; विभ॰ अट्ठ॰ 30; – **मं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेसं धम्मं अदेसेसि थेरो आसीविसोपमं*, म॰ वं॰ 12.26; *निसज्ज नन्दनवने देसियासिविसूपमं*, म॰ वं॰ 15.178; *कथेसि तत्थ सुत्तन्तं आसिविसूपमं सुभं*, दी॰ वं॰ 14.18.

आसीविसोपमसुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक – **त्तं**¹ प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथिदं ... आसीविसोपमसुत्तं*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.3; – **त्तं**² द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *थेरो तेसं आसीविसोपमसुत्तं कथेसि*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.47.

आसीविसोपमसुत्तन्त पु॰, उपरिवत् – **न्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कल्लमहाविहारे आसीविसोपमसुत्तन्तं सुत्वा ...*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.308.

आसुं¹ √अस का अद्य॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ [आस्म], हम थे, अत्थि के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आसुं² / आसु अ॰, निपा॰, क्रि॰ वि॰ [आशु], तेजी से, शीघ्रता के साथ, तुरन्त – *किरियाय आसुं परिनिट्ठापनं*, सद्द॰ 3.719; *अरं लहुं आसुं*, सद्द॰ 3.902; *आसु तुण्णमरं चाविलम्बितं तुवट'पि च*, अभि॰ प॰ 40; *इद्धिया चासु निट्ठासि असोकारामसव्हयो*, म॰ वं॰ 5.174.

आसुगामी त्रि॰, [आशुगामिन्], तेजी के साथ चलने वाला, शीघ्रता के साथ सक्रिय होने वाला – **निया** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *ति आदिकं कथं सुभाविनिया पञ्ञाय अनुक्कममाना ...*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.37; पाठा॰ आसुगामिनिया.

आसुणाति आ + √सु का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आशृणोति], सुनता है, आज्ञा का पालन करता है – **णन्ति** ब॰ व॰ – *आसुणन्ति बुद्धस्स भिक्खू*, क॰ व्या॰ 279; – **मानो** वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्सवोति आसुणमानो ... वचनं सुणाति*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.32.

आसुत त्रि॰, व्यु॰, संदिग्ध, अच्छी तरह सुसज्जित – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसुताति सज्जिता "असुत्ता"ति ... अनाविला अपक्का तरुणा*, वजिर॰ टी॰ 493; *आसुताति सब्बसम्भारसज्जिता*, सारत्थ॰ टी॰ 3.410.

आसुम्भति आ + √सुम्भ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, टपकाता है, फेंकता है, गिराता है – **म्भि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सो भिक्खु ... तानि एळकलोमानि ठितकोव आसुम्भि*, पारा॰ 351; *इट्ठकं मत्थके आसुम्भि*, जा॰ अट्ठ॰ 3.385; *ठितकोव आसुम्भीति ... पातेसीति अत्थो*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.242; *आसुम्भि भूमिं चुण्णेत्वा तेसं अट्ठीनि माणवो*, म॰ वं॰ 23.80; – **म्भिस्सन्ति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *कथञ्हि नाम गूथकटाहं मत्थके आसुम्भिस्सन्ति!*, पाचि॰ 361; – **म्भित्वा / त्वान** पू॰ का॰ कृ॰ – *छड्डे आसुम्भित्वाति पातेत्वा*, सारत्थ॰ टी॰ 3.112; *आसुम्भित्वान पादपे*, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 177.

आसेति आ + √सी के वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, 'आसयति' के स्थान पर कतिपय संस्करणों में प्रयुक्त, अप॰, सोता है, द्रष्ट॰ आसयति के अन्त॰.

आसेवति आ + √सेव का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आदि से अन्त तक सेवन करता है, निरन्तर अभ्यास करता है, बार बार आवृत्ति करता है, व्यवहार में अनुसरण करता है, विकसित करता है – *भिक्खु मेत्ताचित्तं आसेवति*, अ॰ नि॰ 1(1).13; *सो तं मग्गं आसेवति भावेति बहुलीकरोति*, अ॰ नि॰ 1(2).181; *निमित्तं न आसेवति न भावेति*, अ॰ नि॰ 3(1).226; *पुब्बण्हसमयं आसेवति*, पटि॰ म॰ 27; *इमं वीरियं आरभति समारभति आसेवति भावेति बहुलीकरोति*, विभ॰ 235; – **न्ति** ब॰ व॰ – *सब्बेसत्ता ... परिभुञ्जन्ति ... आसेवन्ति भावेन्ति बहुलीकरोन्तीति*, कथा॰ 136; – **वियते / वीयति** कर्म॰ वा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *भावीयते आसेवीयते बहुलीकारीयते*, सद्द॰ 1.6; *इमानि पञ्चिन्द्रियानि मेत्ताय चेतोविमुत्तिया आसेवना होन्ति ... आसेवीयति*, पटि॰ म॰ 306; – **वेय्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *नेक्खम्मे आनिसंसं अधिगम्म तमासेवेय्यं*, अ॰ नि॰ 3(1).244; – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमं खो अहं दिट्ठिं आसेवन्तो*, म॰ नि॰ 1.406; – **तो** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं मग्गं आसेवतो भावयतो बहुलीकरोतो संयोजनानि पहीयन्ति*, अ॰ नि॰ 1(2).182; अ॰ नि॰ 2(1).69; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बसङ्खारानं ... भङ्गानुपस्सनं आसेवन्तस्स*, विसुद्धि॰ 2.280; *सङ्खारुपेक्खाञाणं तं, आसेवन्तस्स योगिनो*, अभि॰ अव॰ 1307; – **मानो** वर्त॰ कृ॰, आत्मने, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मेत्तं उपेक्खं करुणं विमुत्तिं, आसेवमानो मुदितञ्च काले*, अप॰ 1.11; *तत्थ आसेवमानोति ... चतुत्थज्झानवसेन भावयमानो*, अप॰ अट्ठ॰ 1.204; – **विं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अवितक्के आनिसंसं अधिगम्म तमासेविं*, अ॰ नि॰ 3(1).245; – **वितुं** निमि॰ कृ॰ – *वुच्चति, आसेवितुं वा फासुककाले*, अप॰ अट्ठ॰ 1.205; – **वित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *कालेति मेत्तं आसेवित्वा ततो वुट्ठाय करुणं*, अप॰ अट्ठ॰ 1.205; *सो तं निमित्तं आसेवित्वा*, विभ॰ 218.

आसेवनपच्चय पु., 24 प्रकार के प्रत्ययों (कारणभूत धर्मों) में से एक, पुनः पुनः किया जा रहा व्यावहारिक आचरण अपने बाद में उत्पन्न होने वाले धर्मों के गुणों के बलवान बनाने में उनका उपकारक होता है, अतः यह आसेवनपच्चय कहलाता है, किसी एक धर्म के उदय में किसी दूसरे धर्म के सतत अभ्यास का कारणभूत होना – **यो** प्र. वि., ए. व. – *आसेवनपच्चयो,* विसुद्धि. 2.161; *सङ्खारारम्मणञ्च कुसलं निब्बानारम्मणस्स आसेवनपच्चयो होतियेव,* विसुद्धि. महाटी. 2.263; *आसेवनट्ठेन अनन्तरानं पगुणबलवभावाय उपकारको धम्मो आसेवनपच्चयो,* प. प. अट्ठ. 348; *आसेवनपच्चयो गन्थादीसु पुरिमपुरिमाभियोगो विय,* विसुद्धि. 2.166; *आसेवनपच्चयोति वपेत्वा आवज्जनद्वयं,* अभि. अव. 175; – **येन** तृ. वि., ए. व. – *"... धम्मानं आसेवनपच्चयेन पच्चयो"ति,* विसुद्धि. 1.134; – **या** प. वि., ए. व. – *उप्पज्जति ... आसेवनपच्चया,* पट्ठा. 2.123; – **ता** स्त्री., भाव., आसेवन-प्रत्यय होना, सतत अभ्यास का अन्य धर्म के उदय में कारणभूत होना, प्र. वि., ए. व. – *तेन हि अत्थि काचि आसेवनपच्चयताति,* कथा. 500; – **भाव** पु., उपरिवत् – **वेन** तृ. वि., ए. व. – *आसेवनपच्चयभावेन ससम्पयुत्तानि,* सद्द. 1.86.

आसेवनपच्चयकथा स्त्री., कथा. के एक खण्ड का शीर्षक, कथा. 498.

आसेवनबलवता स्त्री., धर्मों के आसेवन अथवा सतत अभ्यास की शक्ति – **य** तृ. वि., ए. व. – *आसेवनबलवताय विचित्तवुत्तिताय च,* दी. नि. टी. 1.124.

आसेवनमन्दता स्त्री., तत्पु. स., व्यावहारिक आचरण में शिथिलता, यदा कदा ही अनुपालन अथवा व्यावहारिक आचरण करना – **य** तृ. वि., ए. व. – *आसेवनमन्दताय अप्पसावज्जो,* दी. नि. अट्ठ. 1.70.

आसेवनमहन्तता स्त्री., तत्पु. स., व्यावहारिक आचरण अथवा अभ्यास की बारम्बारता, अनुपालन अथवा व्यावहारिक आचरण की पौनःपुन्यता, पुनः पुनः व्यावहारिक अभ्यास – **य** तृ. वि., ए. व. – *आसेवनमहन्तताय महासावज्जो,* दी. नि. अट्ठ. 1.70.

आसेवना स्त्री./नपुं., [आसेवन, नपुं., बौ. सं., आसेवना, स्त्री.], निरन्तर अभ्यास, पुनः पुनः आवृत्ति, निरन्तर साथ संग, भावना, प्र. वि., ए. व. – *आसेवनाति आदितो सेवना,* पटि. म. अट्ठ. 2.155; *धम्मानं आसेवना भावना बहुलीकम्मं,* म. नि. 1.382; *सा हि भुसं सेवीयतीति आसेवनाति वुत्ता,* पटि. म. अट्ठ. 1.112; – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *चित्तं आसेवनं लभति,* विसुद्धि. 1.230; *आसेवनं लभतीति भावनासेवनं लभति,* विसुद्धि. महाटी. 1.279-280; – **य**[1] तृ. वि., ए. व. – *कथञ्च अत्तानं रक्खन्तो परं रक्खति ? आसेवनाय, भावनाय, बहुलीकम्मेन,* स. नि. 3.244; – **य**[2] च. वि., ए. व. – ... *सीलानि चित्तस्स ... आसेवनाय संवत्तन्ति,* विसुद्धि. 1.47; *तस्मा समाधिस्स आसेवनाय पगुणबलवभावाय संवत्तन्तीति अत्थो,* विसुद्धि. महाटी. 1.75; – **नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *न होतासेवनं पन,* अभि. अव. 974; *एकस्सासेवनं नत्थि, तस्मा द्वे अनुलोमका तेहि आसेवनं लद्धा, ततियं होति गोत्रभु,* अभि. अव. 1341; स. उ. प. के रूप में, दिट्ठा., पुब्बा. के अन्त. द्रष्ट..

आसेवनाभावना स्त्री., धर्मों का पुनः पुनः अभ्यास, व्यावहारिक आचरण में पुनः पुनः अभ्यास, 4 प्रकार की भावनाओं में एक, प्र. वि., ए. व. – *चतस्सो भावना ... आसेवनाभावना,* पटि. म. 25; *पटिलाभे वसिप्पत्तस्स यथारुचि परिभोगकाले भावना, सा हि भुसं सेवियतीति आसेवनाति वुत्ता, केचि पन आसेवनाभावना वसीकम्मं, एकरसाभावना सब्बत्थिका'ति, वण्णयन्ति,* पटि. म. अट्ठ. 1.112.

आसेवयित्वा आ + √सेव के प्रेर. का पू. का. कृ., विकसित करके, भावित करके, बढ़ा करके, व्यावहारिक रूप में अभ्यास करके – *सुञ्ञप्पणिधिञ्च तथानिमित्तं, आसेवयित्वा जिनसासनम्हि,* अप. 1.11.

आसेवित त्रि., आ + √सेव का भू. क. कृ. [आसेवित], भली भांति सेवन किया गया, आचरण में उतारा गया, पालन किया गया, भावित, बढ़ाया गया, विकसित किया गया, बार बार अभ्यास किया गया – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *पाणातिपातो आसेवितो भावितो,* अ. नि. 3(1).78; – **तं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *धम्मं ते देसयिस्सामि, सतं आसेवितं अहं,* जा. अट्ठ. 5.209; – **ते** पु., सप्त. वि., ए. व. – *"आसेविते" तिपि पाठो, तस्स आसेवितायाति अत्थो,* बु. वं. अट्ठ. 221; – **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *"कायगतासति आसेविता"ति,* अ. नि. 1(1).61; *वाचा आसेविता भाविता बहुलीकता,* अ. नि. 3(1).79; – **य** तृ. वि., ए. व. – *मेत्ताय चेतोविमुत्तिया आसेविताय भाविताय बहुलीकताय ...,* परि. 270; अ. नि. 3(2).308; – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *"अमतं तेसं आसेवितं येसं कायगतासति आसेविता"ति,* अ. नि. 1(1).61; – **तानि / ता** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *आसेवितानि भावितानि बहुलीकतानि*

उस्सदगतानि, विम॰ 390; *पापा आसेविता येहि ते अपायेसु जायरे,* सद्धम्मो॰ 93; – **कम्मट्ठान** त्रि॰, ब॰ स॰, ध्यान के कर्मस्थानों का बार बार अभ्यास कर चुका (साधक), वह, जिस ने कर्मस्थानों की ध्यान-भावना का निरन्तर अभ्यास किया है – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसेवितकम्मट्ठानोति असुभकम्मट्ठाने कतपरिचयो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.194; *आसेवितकम्मट्ठानो परिहतधुतङ्गो,* विसुद्धि॰ 1.177; – **निसेवित** त्रि॰, आचरण में भली भांति उतारा हुआ, परिपूरित, वह, जिसका बार बार अभ्यास कर उसे पूर्णतया विकसित कर लिया गया है – **तं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पोराणकबोधिसत्तेहि आसेवितनिसेवितं पठमं दानपारमिं दिस्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.26.

आसेवितब्ब त्रि॰, आ + √सेव का सं॰ कृ॰ [आसेवितव्य], सेवन किए जाने योग्य, आचरण में उतारने योग्य, बार बार अभ्यास किए जाने योग्य – **ब्बं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसेवितब्बञ्च वो, भिक्खवे, धम्मं देसेस्सामि, न आसेवितब्बञ्च,* अ॰ नि॰ 3(2).213; – **ब्बा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *धम्मा ... आसेवितब्बा भावेतब्बा बहुलीकातब्बा,* दी॰ नि॰ 2.92; – **ब्बो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अब्यापादो एवं आसेवितब्बो ... – अनुसासनीपाटिहारियं,* पटि॰ म॰ 396; – **ब्बा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा खो पन आलोकसञ्ञा एवं आसेवितब्बा,* पटि॰ म॰ 396; – **ब्बं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसेवितब्बं भावेतब्बं,* म॰ नि॰ 2.126.

आह √ब्रू का परोक्षभूत का प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, वास्तविक प्रयोगों में किसी कालविशेष का सूचक प्रतीत नहीं होता [आह], **1.** बोलता है, बोला, कहता है, कहा; सम्बोधित करता है, सम्बोधित किया – *सुपिने किलमाह,* सद्द॰ 3.816; *आह आहु,* सद्द॰ 3.827; वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *ब्राह्मणो एवमाह, – ... "गोतमं दस्सनाय उपसङ्कमिस्सती"ति,* दी॰ नि॰ 1.98; *सो एवमाह "–"ति,* म॰ नि॰ 1.130; *सुद्धिमाह,* सु॰ नि॰ 796; *यो वापि कत्वा न करोमि चाह,* ध॰ प॰ 306; *नं सत्था ... "–"ति आह,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.5; *उपसङ्कमित्वा आह – " – ",* जा॰ अट्ठ॰ 2.22; *तेनापि "किमत्थं ठितोसी"ति वुत्तो तथेवाह,* जा॰ अट्ठ॰ 3.46; *"भद्दे, त्वं इमं ... सुखेन जीवाही"आह,* जा॰ अट्ठ॰ 4.21; म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"अथ कस्मा, त्वं महाराज, एवमाह"चित्तेन सरति, नो सतिया"ति,* मि॰ प॰ 85; – **हंसु/हु** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तमेनं भिक्खू एवमाहंसु,* स॰ नि॰ 1(2).244; *"कामा अनिच्चा इति चापि आहु",* थेरगा॰ 188; **2.** आज्ञा देता है, आज्ञा दी, आदेश देता है, आदेश दिया, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तस्सपि नो भगवा पहानमाह,* म॰ नि॰ 2.121; *"उय्यानं मापेही"ति आह,* जा॰ अट्ठ॰ 2.157; *'एहि भिक्खू' ति मं आह,* थेरगा॰ 625; *पुनराह महीपति तस्स योधसतस्सापि तथेव परियोसितुं,* म॰ वं॰ 23.98; **3.** किसी के विषय में कहता है, किसी को लेकर कुछ कहा – **हंसु/हु** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *तमेनं एवमाहंसु –ति,* स॰ नि॰ 2(2).323; ... *ति आहु भिक्खुं,* अ॰ नि॰ 1(2).18; *सच्चं किरेवमाहंसु, वत्थं बालोति पण्डिता,* जा॰ अट्ठ॰ 3.244.

आहच्च **1.** आ + √हन का पू॰ का॰ कृ॰, अ॰, व्यु॰ संदिग्ध [आहत्य], **शा॰ अ॰,** (प्रहार करने हेतु) समीप में आ कर, समीप में पहुंच कर, सट कर, सटा कर, **ला॰ अ॰,** स्पर्श कर, प्रहार कर, तोड़-फोड़ कर, चोट पहुंचा कर, ढकेल कर, धक्का देकर, पीट कर, दबा कर – *मुतन्ति मुत्वा मुनित्वा च गहितं, आहच्च उपगन्त्वाति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).41; *आहच्चाति विसयं अन्वाय, पत्वाति अत्थो,* म॰ नि॰ टी॰ (मू॰प॰) 1.77; *सप्पो सीसेन करण्डपुटं आहच्च ओकासं कत्वा पलायति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.291; *आहच्चाति पहरित्वा,* सारत्थ॰ टी॰ 2.137; *पाणिना तलमाहच्च, सरं कत्वान भेरवं,* दी॰ नि॰ 2.193; *पाणिनातलमाहच्चाति हत्थेन पथवीतलं पहरित्वा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.257; *चक्खुना चक्खुं आहच्च दट्ठब्बं होति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.94; *जिव्हाय तालुं आहच्च,* म॰ नि॰ 1.171; *यथापि सेला विपुला नभं आहच्च पब्बता,* स॰ नि॰ 1(1).121; *नभं आहच्चाति विपुलत्ता एव आकासं अभिविहच्च सब्बदिसासु फरित्वा,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.274; *अट्ठिमिञ्जं आहच्च तिट्ठति,* महाव॰ 105; उदा॰ अट्ठ॰ 58; *पथवियं पन सचेपि कुच्छिया कुच्छिं आहच्च ठिता होन्ति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 99; *तस्स किर लोहिते छिन्ने मंसे मिलाते अक्खिआवाटका मत्थलुङ्गं आहच्च अट्ठंसु,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).362; *अमतद्वारं आहच्च तिट्ठति,* स॰ नि॰ 1(2).39; *नभं आहच्च ठिता,* अ॰ नि॰ 2(1).221; **2.** संभवतः आ + √हर का सं॰ कृ॰, पू॰ का॰ कृ॰ [आहृत्य], **शा॰ अ॰,** आहरण करने योग्य, ले आए जाने योग्य, **ला॰ अ॰,1.** आश्रय या अवलम्बन ग्रहण करने योग्य, अपेक्षा किए जाने योग्य, **ला॰ अ॰, 2.** कहीं अन्यत्र से लेकर उद्धृत किए जाने योग्य, उद्धरणीय – *इमं मे कम्मट्ठानं अनुलोमं वा गोत्रभुं वा आहच्च ठितन्ति न जानाति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.232; *आहच्चुपनिज्झायन्ता,* ना॰ रू॰ प॰ 153; 854; 896; *इच्चाहच्च पवत्तानं लक्खणानं सभावतो,* ना॰ रू॰ प॰

1606; *तेसु द्वावीसति तिका सतं दुकाति अयं आहच्चभासिता ... मातिका नाम,* ध. स. अट्ठ. 10; – **च्चाकारभेद** पु., कण्ठ आदि उच्चारण-स्थानों के साथ वायु की टकराहट के आधार पर आकार के भेदों जैसा भेद – **देन** तृ. वि., ए. व. – *आहच्चाकारभेदेन तिविधा हि विपस्सना,* ना. रू. प. 1616; स. उ. प. के रूप में अना. के अन्त., द्रष्ट..

आहच्चनियम पु., विशिष्ट स्वरूप का अथवा सुनिश्चित प्रकृति वाला नियम – *एत्थ तस्मानुपेक्खित्वा आहच्चनियमं बुधो, तब्भावभाविमत्तेन, पच्चयत्थं विभावये,* ना. रू. प. 730.

आहच्चपच्चय पु., पट्ठा. में निर्दिष्ट विशिष्ट प्रकार के प्रत्यय, बुद्ध के सर्वज्ञता के ज्ञान के प्रभाववश विशिष्टरूप में उपदिष्ट पट्ठान-नय के 24 प्रत्यय – **ट्ठ** पु., विशिष्ट प्रकार के प्रत्यय (कारण) होने का तात्पर्य या आशय – **ट्ठेन** तृ. वि., ए. व. – *आहच्चपच्चयट्ठेन चतुवीसतिधा ठिता,* ना. रू. प. 798; – **ट्ठिति** स्त्री., पट्ठान में निर्दिष्ट प्रत्ययों की विशिष्टता अथवा विशिष्ट स्वरूप में रहने की स्थिति – **ति** प्र. वि., ए. व. – *पटिच्च फलं एति एतस्माति पच्चयो, तिट्ठति फलं एत्थ तदायत्तवुत्तितायाति ठिति, आहच्च विसेसेत्वा पवत्ता पच्चयसङ्खाता ठिति आहच्चपच्चयट्ठिति,* अभि. ध. वि. टी. 206; *केचि पन "आहच्च कण्ठतालुआदीसु पहरित्वा वुत्ता ठिति आहच्चपच्चयट्ठिती"ति,* तदे.; – **तिं** द्वि. वि., ए. व. – *पट्ठाननयो पन आहच्चपच्चयट्ठितिमारब्भ पवुच्चति,* अभि. ध. स. 55; *आहच्चपच्चयट्ठितिमारब्भ पवुच्चतीति,* अभि. ध. वि. टी. 206.

आहच्चपद नपुं., स्वयं बुद्ध द्वारा निश्चित रूप से भासित, 1. वचन, प्रामाणिक वचन, उद्धरणीय बुद्धवचन, 2. कण्ठ आदि उच्चारण-स्थानों से ले आकर अपनी वाणी द्वारा भासित वचन – **दं** प्र. वि., ए. व. – *आहच्चपदन्ति सुत्तं अधिप्पेतं,* पारा. अट्ठ. 1.179; *आहच्चपदन्ति भगवतो सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन विसेसेत्वा उत्तवचनं,* मि. प. टी. 28(रो.); *कण्ठादिवण्णप्पवत्तिट्ठानं आहच्च विसेसेत्वा भासितं पदं आहच्चपदं,* सारत्थ. टी. 2.40; *कण्ठादिवण्णुप्पत्तिट्ठानकरणादीहि आहरित्वा अत्तनो वचीविञ्ञत्तियाव भासितवचनं आहच्चपदं,* वि. वि. टी. 1. 104; – **देन** तृ. वि., ए. व. – *आहच्चपदेन रसेन आचरियवंसेन अधिप्पाया कारणुत्तरियताय,* मि. प. 148.

आहच्चपाठ पु., त्रिपिटक का पाठ, त्रिपिटक में उपलब्ध बुद्धवचन की पंक्ति – **ठो** प्र. वि., ए. व. – *आहच्चपाठो निदस्सनं,* सद्द. 1.147; *अत्रायं आहच्चपाठो,* सद्द. 3.829.

आहच्चपाद पु., अलग किए जाने योग्य पायों वाला मंच या पलंग – **दो** प्र. वि., ए. व. – *कुळीरपादो आहच्चपादो चेव मसारको, चत्तारो बुन्दिकाबद्धो तिमे मञ्चन्तरा सियुं,* अभि. प. 310; *यस्स अटनिछिद्दे पादो पविसित्वा तिट्ठति, सो आहच्चपादो,* अभि. प. टी. 310 (बर्मी).

आहच्चपादक त्रि., ऐसा पलंग जिसके पायों को अलग कर पुनः जोड़ा जा सके, 4 प्रकार के पीठों में से अन्यतम पीठ, तोड़ने एवं जोड़ने योग्य पैरों वाला (मञ्च) – **को** प्र. वि., ए. व. – *सोसानिको आहच्चपादको मञ्चो उप्पन्नो होति,* चूळव. 275; *कुळीरपादको आहच्चपादकोति,* चूळव. अट्ठ. 76; *आहच्चपादको नाम अटनियो विज्झित्वा अटनिछिद्दे पादसीसे सिखं कत्वा तं पवेसेत्वा अटनिया,* विन. वि. टी. 1.314; – **कं**[1] नपुं., प्र. वि., ए. व. – *चत्तारि पीठानि – मसारकं बुन्दिकाबद्धं, कुळीरपादकं, आहच्चपादकं,* पाचि. 60; – **कं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *आहच्चपादकन्ति अङ्गे विज्झित्वा पवेसितपादकं,* कङ्खा. अट्ठ. 198; *" ... उपरिवेहासकुटिया आहच्चपादकं मञ्चं सहसा अभिनिसीदिस्सती"ति,* पाचि. 67; *आहच्चपादकं मञ्चं वेहासकुटियूपरि पीठं वाभिनिसीदन्तो, आपज्जति न भूमितो,* उत्त. वि. 448; – **के** सप्त. वि., ए. व. – *आहच्चपादके मञ्चे वा पीठे वा ठितो उपरि नागदन्तकादीसु,* पाचि. अट्ठ. 43; *आहच्चपादके मञ्चे, विन. वि. 1100; आहच्च पादके सीदं,* उत्त. वि. 85.

आहच्चपाळि स्त्री., स्वयं बुद्ध द्वारा उपदिष्ट त्रिपिटक की पंक्ति – **या** तृ. वि., ए. व. – *एकन्तपुमवाचकत्तञ्चस्स आहच्चपाळिया ञायति,* सद्द. 1.209.

आहच्चभासित त्रि., निश्चित रूप से (त्रिपिटक में संगृहीत) स्वयं बुद्ध द्वारा कहा गया (वचन), बुद्ध का आत्मप्रत्यक्षवचन – **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अयं ..., आहच्चभासिता जिनवचनभूता ... मातिका,* ध. स. अट्ठ. 10; *आहच्चभासिता सावकभासितातिं दुविधा ... मातिका,* मो. वि. टी. 5; – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अतपच्चक्खवचनं न होतीति आहच्च भासितं न होतीति अधिप्पायो,* वजिर. टी. 19; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *आहच्चभासितस्स च दस्सनतो*

ब्रह्मूहि ..., सद्द॰ 1.157; *रसेनाति तस्स आहच्चभासितस्स रसेन, ततो उद्धटेन विनिच्छयेनाति अत्थो,* विनया॰ टी॰ 2.132; – **ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथा धजग्गसुत्तन्ते मुनिनाहच्चभासिते,* सद्द॰ 1.8; – **तानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सम्मासम्बुद्धेन सामं आहच्चभासितानि,* उदा॰ अट्ठ॰ 3-4; – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आहच्चभासिता पयोगा,* सद्द॰ 1.256.

आहच्चवचन नपुं॰, [आहत्यवचन], समग्रवचन, विशिष्ट वचन, प्रामाणिक बुद्ध-वचन, मूल बुद्धवचन – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्रिदं पठमत्थस्स साधकं आहच्चवचनं,* सद्द॰ 1.33; *आहच्चवचनन्ति भगवतो ठानकरणानि आहच्च अभिहन्त्वा पवत्तवचनं,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 208; *किं इदं सुत्तं आहच्च वचनं,* नेत्ति॰ 20; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं सुत्तन्तो आहच्चवचनेन, जिनभासितो नाम जातो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).264.

आहच्चाकारभेद पु॰, समस्त स्वरूपों का विभाजन, आकार के समग्र प्रभेद, कण्ठ आदि उच्चारणस्थानों के साथ वायु के सम्पर्क (स्पर्श) के आधार पर आकार के प्रभेदों जैसा प्रभेद – **देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहच्चाकारभेदेन तिविधा हि विपस्सना,* ना॰ रू॰ प॰ 1616.

आहञ्ञति आ + √हन के कर्म॰ वा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आहन्यते], प्रहार किया जाता है, पीटा जाता है, पीड़ित या व्यथित किया जाता है, पीट कर बजाया जाता है (सङ्गीत-वाद्य) – *हञ्ञतीति विहञ्ञति विघातं आपज्जति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.34; – **न्तु** अनु॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आहञ्ञन्तु भेरिमुदिङ्गसङ्खे,* जा॰ अट्ठ॰ 4.354; *आहञ्ञन्तु सब्बवीणा,* जा॰ अट्ठ॰ 6.295; *आहञ्ञन्तूति वादियन्तु,* जा॰ अट्ठ॰ 6.296; – **मानं** वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न पस्सथ ... मच्चुमाहञ्ञमानमखिलंसततं तिलोकं,* तेल॰ 27.

आहट त्रि॰, आ + √हर से व्यु॰, भू॰ क॰ कृ॰ [आहृत], **शा॰ अ॰,** ले आया गया, लिया हुआ, गृहीत, प्रदत्त, **ला॰ अ॰,** उद्धृत, उल्लिखित, उद्धरणरूप में गृहीत – **टो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहटो आभतानीता,* अभि॰ प॰ 749; – *छन्दारहानं छन्दो आहटो होति,* महाव॰ 415; – **टं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"मुखद्वारं आहटं इदं",* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 221; *न अम्हेहि किञ्चि आहटं न उपाहटं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.127; *इह I आहटन्ति विहारतो बहि आगतट्ठाने आनीतं,* वि॰ वि॰ टी॰ 2.166; *मरणदुक्खं हरित्वा जीवितसुखं आहटं, तेन मं नापि बन्धो तपति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.331; *आहटं सामणेरेहि हिमवन्ता सुगन्धकं,* म॰ वं॰ 29.9; – **टा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहटा होति परिसुद्धि,* महाव॰ 151; – *वेलातिक्कमनहेतु आहटा उरु उरुवेलाति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).76; *अयं उपमा भगवता अत्तनो अत्थाय आहटा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).185; – **टे** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ताय भत्ते आहटे तयोपि एकतो भुञ्जितुं निसीदिंसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.109; – **टानि / टा** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"आसनानि आहरथा" ... आहटानि होन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.136; *सम्बुद्धपत्तं पूरेत्वा सुमनेनाहटा इध,* म॰ वं॰ 20.10; – **टेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पूवेसु आहटेसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.354; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [आहृतत्व], ले आया हुआ होना – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वराहरोति वरस्स मग्गस्स आहटत्ता वराहरोतिवुच्चति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.252; – **टाहट** त्रि॰, [आहृताहृत], पुनः पुनः लाया गया – **टं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहटाहटं थेरासने वा ददेय्युं,* महाव॰ अट्ठ॰ 380; – **उपमा** स्त्री॰, कर्म॰ स॰ [आहृतोपमा], गृहीत उपमा, कहीं अन्यत्र से ली गई उपमा – **मं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवमेव अत्तनो ब्यत्तताय भगवता आहटउपमंयेव,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.265; – **काल** पु॰, कर्म॰ स॰, लाए जाने का काल – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रञ्ञो असीनं आहटकाले असिं उपसिङ्घित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.435; – **कारण** नपुं॰, कर्म॰ स॰, प्राप्त कारण, सामने उपस्थित कारण – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निगण्ठो अत्तनो वादभेदनत्थं आहटकारणमेव अत्तनो मारणत्थाय आवुधं तिखिणं करोन्तो, ...* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).174; – **धन** नपुं॰, कर्म॰ स॰, लाया हुआ धन – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आभतधनञ्च,* जा॰ अट्ठ॰ 6.195; पाठा॰ आभत॰; – **सप्पि** नपुं॰, कर्म॰ स॰, लाया हुआ घी – **प्पिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदं किर सा आहटसप्पिं दत्वा,* पाचि॰ अट्ठ॰ 180; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अना॰, धजा॰, धम्मा॰, नागा॰, वाणिजा॰, वाता॰, सुका॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आहत त्रि॰, आ + √हन का भू॰ क॰ कृ॰ [आहत], पीटा गया, दागा गया, मारा गया, काटा गया, पीड़ित, व्यथित – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नलाटे वा ऊरुआदीसु वा तत्तेन लोहेन लक्खणं आहतं होति,* महाव॰ अट्ठ॰ 266; – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहतोपि न कुप्पेय्य,* जा॰ अट्ठ॰ 7.193; *सत्तिया दीहि चाहतो,* सद्धम्मो॰, 187; *भेरिसद्दो समाहतो,* दी॰ वं॰ 15.21; – **ता** ब॰ व॰ – *सत्ता विरुद्धा पटिविरुद्धा आहता पच्चाहता आघातिता पच्चाघातिता,* महानि॰ 302; –

ते पु., सप्त. वि., ए. व. – *आहते अमतभेरिम्हि वस्सन्ते धम्मवुट्ठिया,* बु. वं. अट्ठ. 221; – **तं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *नागलोकं व गरुळाहतं,* चू. वं. 75.38; स. उ. प. के रूप में, अक्खा., इच्छा., कसा., तक्का., तिलका., दब्बा., लक्खणा., वाटा., वितक्का., सत्तिसता. के अन्त. द्रष्ट.; – **समब्भाहत** त्रि., पुनः पुनः अथवा अत्यधिक प्रहार किया गया – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *पासाणादीसु आहतसमब्भाहतो भिज्जित्वा,* स. नि. अट्ठ. 3.83; – **ताहतट्ठान** नपुं., कर्म. स. [आहताहतस्थान], बार बार चोट पुहंचाया गया स्थान, पुनः पुनः प्रहार किया गया स्थान – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *खीररुक्खस्स कुठारिया आहताहतट्ठाने खीरं न निक्खमिस्सति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.178.

आहतक त्रि., आ + √हर से व्यु., क. ना. [आहृतक], शा. अ. कहीं से पकड़कर लाया हुआ, ला. अ., एक प्रकार का भृत्य, कर्मचारी, सेवक – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *कम्मकारो नाम भटको आहतको,* पाचि. 301; *आहतकोति आनीतो, नियतकोति अधिप्पायो,* वजिर. टी. 325.

आहतचित्त त्रि., ब. स. [आहतचित्त], व्यथित अथवा पीड़ित चित्त वाला, विपत्तिग्रस्त, विपन्न – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *कुपितो अनत्तमनो अनभिरद्धो आहतचित्तो खिलजातो,* पारा. 255; *पटिघेन आहतं चित्तमस्ससाति आहतचित्तो,* पारा. अट्ठ. 2.154; – **त्ता** ब. व. – *दुट्ठमना–आहतचित्ता,* महानि. 44; पाठा. आहतमना; – **त्ते** पु., द्वि. वि., ब. व. – *जरादीहि ब्यारुद्धे आहतचित्ते सत्ते दिस्वा,* सु. नि. अट्ठ. 2.258; – **त्ता** स्त्री., भाव., चित्त का पीड़ित होना अथवा राग आदि से ग्रस्त रहना, प्र. वि., ए. व. – *तं हेतु तप्पच्चया तं निदानं मुनिनो आहतचित्तता खिलजाततापि नत्थि,* महानि. 45; – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *सब्रह्मचारीसु आहतचित्ततं खिलजाततं पभिन्देय्य,* महानि. 381; स. उ. प. के रूप में अना. के अन्त. द्रष्ट..

आहत्तु त्रि., आ + √हर से व्यु., क. ना. [आहर्तृ], आहर्ता, लाने वाला – **त्ता** पु., प्र. वि., ए. व. – *अहं नेसं जीविकाय दाता, यसस्स आहत्ता,* म. नि. 2.333.

आहनति / आहन्ति आ + √हन का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आहन्ति], **1.** पीटता है, प्रहार करता है, तोड़ता-फोड़ता है, हत्या करता है, प्राण लेता है, **2.** टपकाता है, गिराता है – *भित्तिं आहनति,* पाचि. अट्ठ. 43; *तत्थ आहनति चित्तन्ति "आघातो",* दी. नि. अट्ठ. 1.49; – **नेय्युं** विधि., प्र. पु., ब. व. – *यथा सचे खीररुक्खे कुठारिया आहनेय्युं,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.178; – **नन्तं** वर्त. कृ., पु., द्वि. वि., ए. व. – *आहनन्तं धम्मभेरिं,* अप. 2.43; – **नि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *अमतभेरिमाहनि,* अप. 1.46; *वारिमादाय वारिपिट्ठियमाहनि,* म. वं. 30.12; – **निं** उ. पु., ए. व. – *विसिट्ठमधुनादेन अमतभेरिमाहनिं,* अप. 1.6; – **ञ्छं / ञ्छं** भवि., उ. पु., ए. व. – *अहञ्हि अरहा लोके ... आहञ्छं अमतदुन्दुभिं,* महाव. 11; म. नि. 1.230; *आहञ्छं अमतदुन्दुभिन्ति धम्मचक्कपटिलाभाय अमतभेरिं पहरिस्सामीति गच्छामि,* महाव. अट्ठ. 236; वजिर. टी. 366; *आहञ्छन्ति आहनिस्सामि,* सारत्थ. टी. 3.149; – **नित्वा / त्वान** पू. का. कृ. – *धम्मभेरिं आहनित्वा धम्मनगरं मापेत्वा,* बु. वं. अट्ठ. 178; *वासिय आहिनित्वान,* म. वं. 28.33.

आहनन नपुं., क्रि. ना., आ + √हन से व्यु. [आहनन], प्रहार करना, पीटना, हत्या कर देना – **नं** प्र. वि., ए. व. – *आदितो अभिमुखं वा हननं आहननं,* सारत्थ. टी. 1.314; विसुद्धि. महाटी. 1.156; – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *तेन आहननेन भित्ति कम्पति,* पाचि. अट्ठ. 43; कङ्खा. अट्ठ. 199; – **परियाहननरस** त्रि., ब. स., घात-प्रतिघात को अपने सार-तत्त्व के रूप में रखने वाला, घात-प्रतिघात का काम करने वाला – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *स्वायं आरम्मणे चित्तस्स अभिनिरोपनलक्खणो, आहननपरियाहननरसो,* पारा. अट्ठ. 1.106; *आहननपरियाहननरसो,* अभि. अव. 20; *स्वायं आहननपरियाहननरसो,* ध. स. अट्ठ. 160; – **सेन** तृ. वि., ए. व. – *अभिनिरोपन लक्खणेन पन आहननपरियाहननरसेन वितक्केन आकोटेन्तेन विय,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).257; – **सील** त्रि., ब. स., आघात करने के स्वभाव से युक्त – **लो** पु., प्र. वि., ए. व. – *आहननसीलो आघातुको, करणसीलो कारुको,* क. व्या. 538.

आहर त्रि., आ + हर से व्यु., केवल स. उ. प. में ही प्राप्त [आहर], वापस लाने वाला, छीन कर ले जाने वाला, अब्भतीता., धना., धातुका., वरा., सब्बकामरसा. के अन्त. द्रष्ट..

आहरक त्रि., आ + √हर से व्यु., [आहरक], लाने वाला, पास में ले आने वाला, छीन कर ले आने वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *अलद्धस्स वा रज्जस्स आहरको,* जा. अट्ठ. 5.113; – **का** ब. व. – *सब्बेसं कामरसानं आहरका,* जा. अट्ठ. 5.449; स. उ. प. के रूप में, भण्डा. के अन्त. द्रष्ट..

आहरण नपुं., आ + √हर से व्यु., क्रि॰ ना॰ [आहरण], ले आना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना – **णं** प्र॰ वि., ए॰ व॰ – *आवाहोति दारकस्स परकुलतो दारिकाय आहरणं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.126; *आहरणं आहारो,* सारत्थ॰ टी॰ 2.289; – **णेन** तृ॰ वि., ए॰ व॰ – *पटिसन्धिविञ्ञाणस्स आहरणेन मनोसञ्चेतना आहारोति वुत्ता,* अ॰ नि॰ टी॰ 3.301; स॰ उ॰ प॰ के रूप में उदका॰, उपमा॰, धना॰, धाता॰, सत्था॰, सुत्ता॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आहरणक[1] त्रि॰, आहरण से व्यु., लाने वाला, उधर से इधर पहुंचा देने वाला, सन्देशवाहक, हलकारा – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सासनपटिसासनम्पि नो आहरणको न भविस्सति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.240; *आहरियोति आहरणको,* जा॰ अट्ठ॰ 3.288; – **का** ब॰ व॰ – *सब्बेसं कामरसानं आहरका,* जा॰ अट्ठ॰ 5.449; – **वानर** पु॰, ढोकर लाने वाला बन्दर – **रा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मधुरानि फलाफलानि मातुया पेसेन्ति, आहरणकवानरा तस्सा न देन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.168; स॰ प॰ के अन्त॰; **भत्ता॰ पत्ता॰** - नपुं॰, भात को लाने वाला पात्र, भोजनपात्र – **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"भत्ताहरणकपत्तं देथा"ति,* चूळव॰ अट्ठ॰ 95.

आहरणक[2] त्रि॰, आहरण से व्यु., आहर्ता अथवा ले आने वाले व्यक्ति द्वारा लाया गया, आहृत, लाया गया – **कं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"मे भरिया ममत्थाय आहरणकं आहारं थेरस्स पत्ते पतिट्ठपेय्या"ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.329.

आहरणमङ्गल नपुं॰, वधू को वर के घर पर ले आने के उपलक्ष्य में किया जाने वाला मांगलिक अनुष्ठान, विवाह का मांगलिक पर्व – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहरणमङ्गलं आवाहनमङ्गलं,* म॰ वं॰ टी॰ 260(रो॰).

आहरणूपाय पु॰, तत्पु॰ स॰ [आहरणोपाय], पुनः प्राप्त करने अथवा पुनः वापस ले आने का उपाय – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्रायं आहरणूपायो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.26; *"महाराज महाजनं अकिलमेत्वाव आहरणूपायो अत्थी"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.366.

आहरति आ + √हर (ले आना) का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [आहरति], **शा॰ अ॰,** ले आता है, (अन्यत्र से) ले आता है, **ला॰ अ॰, 1.** प्राप्त करता है, उपलब्ध करता है, ला कर (भीतर में) रख देता है, जा पहुंचाता है (भोजन) ग्रहण करता है, प्रवेश कराता हे – *मनुस्सो भोजनीयं वा खादनीयं वा आहरति,* पाचि॰ 241; – **रामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"कुतो पनाहं, भोति, तेलं आहरामि",* उदा॰ 83; *आहरामि ततो दिस्वा,* थेरगा॰ 430; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आहरन्ति मधुं दुमे,* म॰ वं॰ 5.49; – **रेय्य** विधि॰ प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"यो पन भिक्खु अदिन्नं मुखद्वारं आहारं आहरेय्य ... पाचित्तिय"न्ति,* पाचि॰ 124; *आहरेय्याति मुखद्वारं पवेसेय्य,* सारत्थ॰ टी॰ 3.63; – **रेय्यासि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *त्वं मम तिणं आहरेय्यासि,* जा॰ अट्ठ॰ 6.179; – **रेय्यं** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यन्नूनाहं सालिं आहरेय्यं सकिंदेव ...,* दी॰ नि॰ 3.66; – **र** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *पिण्डाय चे चरं सप्पिं लभसे त्वं तमाहर,* म॰ वं॰ 5.217; *हत्थिक्खन्धे ठपेत्वा ता धातुयो इध आहर,* म॰ वं॰ 20.11; – **न्तु** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सहस्सं आहरन्तु मे,* जा॰ अट्ठ॰ 7.118; – **थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *सुवण्णभिङ्कारं आहरथ,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 64; *"सीघं दारुआदीनि आहरथा"ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.106; – **रीयतु** कर्म॰ वा॰ में अनु॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"किं ते, अय्ये, अफासु, किं आहरीयतू"ति,* पाचि॰ 336; – **रिस्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – ... *"अरञ्ञतो आहरिस्सामी"ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.275; *आहरिस्सामीति आनयिस्सामि,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 188; *"भत्तमस्स आहरिस्सामी"ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.296; – **रिस्सन्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *"एत्थेव ते आहरिस्सन्ती"ति,* म॰ नि॰ 2.50; *भिक्खं ते नाहरिस्सन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.288; – **स्साम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *खादनीयं भोजनीयं आहरिस्सामाति पटिसंविदितं,* पाचि॰ अट्ठ॰ 147; – **रि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *उदकं आहरि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.31; *धारणीयं आहरि,* दी॰ नि॰ 2.101; – **रिंसु** ब॰ व॰ – *तयो मणी आहरिंसु,* दी॰ वं॰ 11.20; *छद्दन्तदहतो येव आहरिंसु दिने दिने,* म॰ वं॰ 5.29; – **रिम्ह** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *आहरिम्ह समागमं,* अप॰ 2.264; – **रन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किमेवाहं विहञ्ञामि सालिं आहरन्तो,* दी॰ नि॰ 3.66; – **रित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *पिण्डपातं आहरित्वा अनोतत्तदहे परिभुञ्जित्वा ...,* महाव॰ 33; *सीघं सीघं मत्तिकं आहरित्वा,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.62; *तं काजेन आहरित्वा, भाजनं करित्वा,* म॰ नि॰ 2.252; – **रितब्बं** सं॰ कृ॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वत्तसीसेन आहरितब्बं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.60; – **रितुं** निमि॰ कृ॰ – *इदानिम्हि सत्थं आहरितुं अभब्बो जातो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.388; – **रापेतुं** प्रेर॰, निमि॰ कृ॰, लाने हेतु प्रेरित करने के निमित्त – *दिन्नगामतो आयं आहरापेतुं पुरिसे पेसेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.293; **ला॰ अ॰, 2.क.** पालन-पोषण करता है, पुष्टि देता है, **2.ख.** उत्पन्न करता है, उद्भव करता है, अपने साथ लाता है – *आहरतीति आहारो,* विसुद्धि॰ 1.332;

आहरतीति आहारोति अयं पनत्थो निब्बत्तितओजावसेन वेदितब्बो, विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.391; *सो (पच्चयो) च यं यं फलं जनेति तं तं आहरति नाम, तस्मा आहारोति वुच्चति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.300; – **रीयति** कर्म॰ वा॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आहरीयतीति आहारो ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 361; **ला॰ अ॰, 3**. (स्वयं का हनन करने हेतु शस्त्र को) लेता है, ग्रहण करता है (अर्थात् आत्महनन करता है) – **रेसि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *मा आयस्मा छन्नो सत्थं आहरेसि,* स॰ नि॰ 2(2).63; *सत्थं आहरेसीति जीवितहारकसत्थं आहरि, आहरित्वा कण्ठनाळं छिन्दि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.19; – **रिस्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"सत्थं, आवुसो सारिपुत्त, आहरिस्सामि, नावकङ्खामि जीवित"न्ति,* म॰ नि॰ 3.317; – **रितं** भू॰ का॰ कृ॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन खो पन समयेन आयस्मतो गोधिकेन सत्थं आहरितं होति,* स॰ नि॰ 1(1).142; *सत्थं आहरितं होतीति थेरो किर "किं मय्हं इमिना जीवितेनाति" ? उत्तानो निप्पज्जित्वा सत्थेन गळनाळिं छिन्दि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.162; – **रेय्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यंनूनाहं सत्थं आहरेय्यन्ति,* स॰ नि॰ 1(1).142; – **तुकामो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, शस्त्र ग्रहण करने की इच्छा कर रहा – *तस्मा सत्थं आहरितुकामो अहोसि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.161; **ला॰ अ॰, 4**. भीतर से निकालता या बाहर ले आता है, बाहर निकालता है, खींच कर बाहर ले आता है, वापस ले आता है, दूर ले आता है, हटा देता है, वापस कर देता है, सुरक्षित कर लेता है – **र** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तमेनं राजा एवं वदेय्य, दधिस्स मे रसं आहर ...,* मि॰ प॰ 66; *"आहर मे, भन्ते, भण्डिकं, नाहं अकल्लको"ति,* पारा॰ 73; – **रितुं** निमि॰, कृ॰ – *तेसं रसानं ... विनिब्भुजित्वा रसं आहरितुं ...,* मि॰ प॰ 66; – **रिस्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *तव जीवितं आहरिस्सामि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.158; **ला॰ अ॰, 5**. कहीं अन्यत्र से ले आता है, उद्धृत करता है, परम्परा अथवा बुद्धवचन को उदधृत करता है, कहता है, पाठ करता है – **रामि** वर्त॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *भो गोतम, मय्हं एका उपमा उपट्ठाति, आहरामि तं उपमन्ति वदति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).173; – **र/राहि** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"सो सुत्तं आहरा"ति वत्तब्बो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.10; *"सुत्तं आहराही"ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.346; – **थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *ते पनेवं तु वत्तब्बा "सुत्तं आहरथा"ति हि,* अभि॰ अव॰ 659; – **रिस्सति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *इदमेव आहरिस्सति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.10; – **रिस्सं/रिस्सामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अत्थस्स साधकं एत्थ पालिप्पदेसन्तु आहरिस्सं,* सद्द॰ 1.33; *आहरिस्सामि सुत्तं,* सद्द॰ 1.114; – **रि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *अतीतं आहरि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.404; *सो हि भगवा ... पुब्बकेहि सम्मासम्बुद्धेहि अनुयातं पुराणमग्गवरमाहरि,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 153; *उपमं आहरि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).173; – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुलवंसं आहरन्तो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.208; – **रियमान** त्रि॰, कर्म॰ वा॰ का वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰ – **नासु** स्त्री॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इमस्मिं पन ठाने आहरियमानासु ... सब्बं पाकटं होति,* विसुद्धि॰ 2.300; – **रित्वा/रित्वान** पू॰ का॰ कृ॰ – *इमस्स अतीतकारणं आहरित्वा सोकं वूपसमेत्वा ...,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 33; *थेरो ... दसबलस्स अपचितिदस्सनत्थं "सेय्यथापि आवुसो पुरिसो सारत्थिको सारगवेसी"ति सारोपमं आहरित्वा ...,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 6; – **रितुं** निमि॰ कृ॰ – ... *इमा च उपमा भयतुपट्ठानतो पभुति यत्थ कत्थचि ञाणे ठत्वा आहरितुं वट्टेय्युं,* विसुद्धि॰ 2.300.

आहरहत्थ त्रि॰, ब॰ स॰, दूसरे को सहारा देने हेतु अथवा अपनी ओर लाने हेतु हाथ को फैलाने वाला – **त्थो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *स्वायं आहरहत्थो ककुधो,* महाव॰ 34; *"भन्ते, आहरहत्थ"न्ति एवं वदन्तो विय ओणतोति आहरहत्थो,* महाव॰ अट्ठ॰ 242.

आहरहत्थक त्रि॰, दूसरे को ऊपर उठाने के लिए "मेरा हाथ ले लो" कहने वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहरहत्थको नाम बहुं भुञ्जित्वा अत्तनो धम्मताय उट्ठातुं असक्कोन्तो "आहरहत्थ"न्ति वदति,* महानि॰ अट्ठ॰ 276; स॰ प॰ के अन्त॰, – *आहरहत्थकतत्रवट्टक अलंसाटककाकमासकभुत्तवमितकभोजनं भुञ्जित्वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).294; *महग्घसो चाति महाभोजनो आहरहत्थक ... अञ्ञतरो विय,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.290.

आहरापन नपुं॰, आ + √हर के प्रेर॰ से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, ले आने के लिए प्रेरित करना, वापस बुलवाना, उपलब्ध या प्राप्त कराना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपराधानुरूपं उदकदारुवालिकादीनं आहरापनम्पि कातब्बन्ति वुत्तं,* महाव॰ अट्ठ॰ 279.

आहरापित त्रि॰, आ + √हर के प्रेर॰ का भू॰ क॰ कृ॰, वापस बुलवाया गया या प्राप्त कराया गया – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहरापितञ्च गोणं रक्खित्वा,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.136.

आहरापेति आ + √हर का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व. [आहारयति], आहरण कराता है, ले आने, प्राप्त करने या उपलब्ध करने को प्रेरित करता है, छिनवाता है, आज्ञा अथवा आदेश कराता है, वापस बुलवाता है – *दण्डं आहरापेति,* मू. प. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).386; *राजा तस्स धनं आहरापेति,* महानि. 297; – **न्ति** ब. व. – *जीवग्गाहं गहेत्वा आहरापेन्ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).370; – **पेहि** अनु., म. पु., ए. व., उसे वापस बुलवाओ – *तं आहरापेहि,* पाचि. अट्ठ. 171; – **पेथ** ब. व. – *"अवहटभण्डञ्च आहरापेथा"ति,* पाचि. अट्ठ. 171; *"उदकं आहारापेथा"ति आह,* ध. प. अट्ठ. 2.360; *"तेन हि आहारापेथा"ति आह,* बु. वं. अट्ठ. 320; – **य्यासि** विधि., म. पु., ए. व. – *"यं इच्छेय्यासि तं आहरापेय्यासी"ति,* पाचि. 338; – **य्याथ** म. पु., ब. व. – *"द्वे कम्बलानि आहरापेय्याथा"ति,* ध. प. अट्ठ. 2.2; – **पियतु** कर्म. वा., अनु., प्र. पु., ए. व., (ग्रहण कराया जाए) – *आहरापियतु गण्हियतु,* दी. नि. अट्ठ. 2.235; – **पेन्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *सङ्घो आहरापेन्तो ... सञ्ञापेतब्बो,* पारा. अट्ठ. 1.312; *अत्तनो जीवितं आहरापेन्तो ...,* जा. अट्ठ. 7.206; – **न्तस्स** ष. वि., ए. व. – *चत्तारो पच्चये आहरापेन्तस्स,* पारा. अट्ठ. 2.60; – **पेसि / पयि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *तिणं आहरापेसि,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.203; *लसुणं आहरापेसि,* जा. अट्ठ. 1.453; *राजा तानाहरापयि,* म. वं. 22.64; *सब्बाणि आहरापयि,* म. वं. 28.43; – **स्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *मूलं आहरापेस्सति,* ध. प. अट्ठ. 2.398; – **स्सामि / स्सं** उ. पु., ए. व. – *नामं आहरापेस्सामि,* जा. अट्ठ. 1.384; *इट्ठका अहरापेस्सं–,* म. वं. 30.15; – **स्सन्ति** प्र. पु., ब. व. – *"किं नु आहरापेस्सन्ती"ति,* पारा. अट्ठ. 2.137; – **स्साम** उ. पु., ब. व. – *"बहुधनं आहरापेस्सामा"ति,* स. नि. अट्ठ. 3.57; – **पेतुं** निमि. कृ. – *आहरापेतुं न वट्टति,* पारा. अट्ठ. 2.136; *किं पेसेत्वा आहरापेतुं,* जा. अट्ठ. 2.17; – **पेत्वा** पू. का. कृ. – *आहरापेत्वा अग्घापेसि,* पारा. 80; – **पेतब्बं** सं. कृ., नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अरञ्ञतो भेसज्जं अहरापेन्तेन आतिसामणेरेहि वा आहरापेतब्बं,* पारा. अट्ठ. 2.60.

आहरित त्रि., आ + √हर का भू. क. कृ. [आहृत], ले आया गया, प्राप्त कर लिया गया, उपलब्ध कर लिया गया, आत्महत्या की गई (सत्थं के साथ प्रयुक्त होने पर) – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *छन्नेन भिक्खुना सत्थं आहरित"न्ति,* स. नि. 2(2).66; *तस्मिं खणे थेरेन सत्थं आहरितं होति,* ध. प. अट्ठ. 1.243; *सुखमाहरितं तेसं येसं रज्जमकारयिं,* जा. अट्ठ. 3.330.

आहरितब्ब त्रि., आ + √हर का सं. कृ. [आहर्तव्य], ले आए जाने योग्य, कहीं दूसरी जगह से लाकर रखने योग्य, ले आया जाना चाहिए, लाकर रख दिया जाना चाहिए – **ब्बो** पु., प्र. वि., ए. व. – *पाठसेसो आहरितब्बो,* सु. नि. अट्ठ. 2.97; – **ब्बा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *तस्मा इधेव आहरितब्बाति वुत्ता,* विसुद्धि. 2.300; – **ब्बं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *"ननु लोणमेव आहरितब्ब"न्ति,* मि. प. 67.

आहरिम त्रि., आ + √हर से व्यु., आकर्षक, हृदयावर्जक, मनोरम – **मं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *आहरिमं सोभाविसेसं दस्सेति,* वि. व. अट्ठ. 12; – **मेन** तृ. वि., ए. व. – *आहरिमेन रूपेन, न मं त्वं बाधयिस्ससि,* थेरीगा. 300; – **मेहि** ब. व. – *पल्लङ्को नाम आहरिमेहि वाळेहि कतो होति,* पाचि. 409; – **जटाधर** त्रि., मनोरम जटाओं को धारण करने वाला – **रो** पु., प्र. वि., ए. व. – *जटिलोति आहरिमजटाधरो तापसो,* सारत्थ. टी. 3.297; स. उ. प. के रूप में, अना. के अन्त. द्रष्ट..

आहरिय त्रि., [आहारिक], लाने वाला, ढोने वाला – **यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *"भिक्खञ्च ते आहरियो नरो इध सुदुल्लभो हेहिति भक्खिते मयी,ति* जा. अट्ठ. 3.288.

आहरिय्यति / आहरीयति आ + √हर के कर्म. वा. का वर्त., प्र. पु., ए. व. [आह्रियते], 1. लाया जाता है, प्राप्त किया जाता है, उपलब्ध कराया जाता है – *परिवारो आहरिय्यति,* पाचि. 241; *योजनतोपि अड्ढयोजनतोपि आहरीयति,* पारा. अट्ठ. 1.313; 2. खाया जाता है, (के अन्दर) लाकर रख दिया जाता है, स्वीकार किया जाता है, ग्रहण किया जाता है – **रियतु** अनु., प्र. पु., ए. व. – *"को भन्ते गिलानो, कस्स किं आहरियतू"ति,* महाव. 293; *"इमिना किं आहरिय्यतू"ति,* पारा. 357; *"पानीयं भन्ते आहरियतू"ति,* महाव. अट्ठ. 249; – **तं** – अनु., प्र. पु., ए. व. *भोतो यावतकेन अत्थो तावतकं आहरीयतन्ति,* दी. नि. 2.179; *तावतकं आहरीयतन्ति तावतकं आहरापियतु गण्हियतु,* दी. नि. अट्ठ. 2.235; – **मानो** वर्त. कृ., आत्मने., पु., प्र. वि., ए. व., **क**. खा रहा – *ओळारिकं आहारं आहरियमानो किं सक्खिस्सति,* जा. अट्ठ. 1.77; – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *विगतमदं आहारं आहरयमानं इमिनापङ्गेन समन्नागतं,* दी. नि. 2.164; **ख**. कर्म. वा. में, स्वीकार किया जा रहा –

नो पु., प्र. वि., ए. व. – *दिट्ठो मे भगवा ... तुम्हाकं सक्कारो आहरियमानो,* अ. नि. अट्ठ. 1.189; – **नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *"इदं उदकं उभयतो आहरियमानं",* स. नि. अट्ठ. 1.62; *सो पन तं आहरियमानं दिस्वा मुखं पिधेति,* जा. अट्ठ. 5.266; – **यित्थ** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *"आहरियित्थ भिक्खू"ति ? "आहरियित्थ भगवा"ति,* महाव. 294; *ते भत्तं आहरियित्थ,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.4; – **यिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *"सुट्ठु, अय्य आहरियिस्सती"ति,* महाव. 293; *भत्ताभिहारो आहरीयिस्सति,* स. नि. 1(2).218.

आहरेति / आहारेति आ + √हर का प्रेर., अर्थ में प्रेर. का अभाव [आहारयति, भिन्नार्थक], **1.** ग्रहण करता है, भोजन ग्रहण करता है, खाता है, वर्त., प्र. पु., ए. व. – *आहारं आहारेति,* जा. अट्ठ. 1.112; – **रेम** उ. पु., ब. व. – *मयं अनासका न किञ्चि आहारेमाति* जा. अट्ठ. 5.232-233; **2.** आत्महत्या करता है, (सत्थं के साथ प्रयुक्त होने पर) – **रिस्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *सत्थं आहरिस्सती'ति,* स. नि. 2(2).64; – **सि**, अद्य., प्र. पु., ए. व. – *सत्थं आहरेसि,* स. नि. 2(2).65; *सत्थं आहरेसीति ... कण्ठनालं छिन्दि,* स. नि. अट्ठ. 3.19.

आहव पु., [आहव], युद्ध, रण, संग्राम – **वो** प्र. वि., ए. व. – *आजित्थी आहवो युद्धमायोधनं च संयुगं,* अभि. प. 399; – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *करोन्तो तेन आहवं ... करसपेन ... हतो मरि ...,* चू. वं. 44.152-153; – **वे** सप्त. वि., ए. व. – *निरुस्साहं पलापेसि सेनङ्गं सेसमाहवे,* चू. वं. 72.13; *"हवेति आहवे युद्धे"ति अत्थं वदन्ति,* उदा. अट्ठ. 36; स. उ. प. के रूप में, पुना., महा. के अन्त. द्रष्ट..

आहवन नपुं., आ + √हु से व्यु., क्रि. ना. [आहवन], आहुति देना, हवन करना दान, सम्मान – **नं**[1] द्वि. वि., ए. व. – *सक्कादीनम्पि वा आहवनं अरहतीति, आहवनीयो,* सारत्थ. टी. 2.69; विसुद्धि. 1.211; – **नं**[2] प्र. वि., ए. व. – *आहवनन्ति सक्कादीहिपि दिय्यमानं दानं,* विसुद्धि. महाटी. 1.264.

आहवनीय त्रि., आ + √हु का सं. कृ. [आहवनीय], आहुतियां डालने योग्य (पवित्र अग्नि) – **यो** पु., प्र. वि., ए. व. – *गाहपच्चावहणीयो दक्खिणग्गि तयोग्गयो,* अभि. प. 419; पाठा. आहवण; *ब्राह्मणानं आहवनीयो नाम अग्गि,* इतिवु. अट्ठ. 252.

आहवनीयग्गि पु., कर्म. स. [आहवनीयग्नि], हवन करने योग्य अथवा आहुति देने योग्य पवित्र अग्नि – **म्हि** सप्त. वि., ए. व. – *आहवनीयग्गिम्हि हुतं दधिआदि,* विसुद्धि. महाटी. 1.264.

आहार पु., एक स्थल पर नपुं., आ + √हर से व्यु. [आहार], **शा. अ.**, भोजन, **ला. अ.**, **1.** शरीर को पोषित करने वाला तत्त्व, जीवन का आधार, प्राणियों की स्थिति का आश्रयभूत तत्त्व, कारण, ईंधन, **2.** स्पर्श, संचेतना आदि मानसिक क्रियाएं, सूक्ष्म मानसिक आहार – **रो** प्र. वि., ए. व. – *अथासनं आहारो भोजनं घासो,* अभि. प. 465; *आहारो कबलिङ्काराहारादिसु च कारणे,* अभि. प. 856; *आहारन्ति यंकिञ्चि यावकालिकं वा यामकालिकं वा सत्ताहकालिकं वा यावजीविकं वा, सब्बञ्हेतं अज्झोहरणीयत्ता 'आहारो'ति वुच्चति,* कङ्खा. अट्ठ. 220; *सब्बसत्तानम्पि ठितिहेतु आहारो नाम एको धम्मो,* अ. नि. अट्ठ. 3.300; *तत्थ आहरतीति आहारो,* विसुद्धि. 1.332; – **रं**[1] नपुं., प्र. वि., ए. व. – *योगावचरस्स ... दुल्लभं उदरपरिपूरं आहारं,* मि. प. 378; *आहारन्ति पच्चयं, पच्चयो हि आहरति अत्तनो फलं तस्मा "आहारो"ति वुच्चति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).215; – **रं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *ओळारिकं आहारं आहारेसिं,* म. नि. 1.315; *अयं कायो आहारट्ठितिको, आहारं पटिच्च तिट्ठति,* स. नि. 3(1).82; *असितपीतखायितसायितवसेन चतुब्बिधम्पि आहारं दस्सेति,* पे. व. अट्ठ. 21; – **रेन** तृ. वि., ए. व. – *आहारेन सम्भूतो आहारं निस्साय वड्ढितो,* अ. नि. अट्ठ. 2.338; – **तो** प. वि., ए. व. – *"आहारतो च उतुतो ... सत्त वित्थारेन विपस्सती"ति,* विसुद्धि. 2.252; – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *आहारे उदरे यतो,* स. नि. 1(1).202; *आहारे पटिकूलसञ्ञं उपट्ठपेत्वा,* दी. नि. अट्ठ. 1.156; – **रा** प्र. वि., ब. व. – *उपादिन्नकापि अनुपादिन्नकापि आहारा मिस्सेत्वा कथिता,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).222; *आहारा चस्स परिञ्ञं गच्छन्ति,* नेत्ति. 28; *कतमे तस्मिं समये तयो आहारा होन्ति ? – फस्साहारो, मनोसञ्चेतनाहारो, विञ्ञाणाहारो,* ध. स. 32; *चत्तारो आहारा तण्हानिदाना, तण्हासमुदया, तण्हा जातिका तण्हापभवा,* म. नि. 1.331; *किं पञ्च आहारा अत्थीति ? पञ्च, न पञ्चाति इदं न वत्तब्बं, ननु "पच्चयो आहारो"ति वुत्तमेतं,* अ. नि. अट्ठ. 3.301; *दसन्नं धम्मानं इट्ठानं कन्तानं मनापानं दुल्लभानं लोकस्मिं दस धम्मा आहारा,* अ. नि. 3(2).113; *ओजट्ठमकरूपादयो आहरन्तीति आहारा,* अभि. ध. वि. टी.,

198; – **रानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आहारानं निरोधेन, नत्थि दुक्खस्स सम्भवो,* सु॰ नि॰ 752; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अङ्कोसका॰, अद्धवेलुवा॰, अना॰, अप्पा॰, उतु॰, उतुचित्ता॰, उपादिन्नका॰, एवमा॰, कवलिङ्कारा॰, कोसका॰, तदा॰, निप्परियाया॰, निरा॰, पच्चया॰, परित्ता॰, परियाया॰, फस्सा॰, बेलुवा॰, मग्गा॰, मनोसञ्चेतना॰, मिता॰, मिस्सका॰, यदा॰, लक्खा॰, वनमूलफला॰, विञ्ञाणा॰, विसा॰, समन्ना॰, साला॰, सा॰, सुखा॰, सङ्गा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आहारकाल पु॰, तत्पु॰ स॰ [आहारकाल], भोजन लेने का समय – **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *खिड्डावसेन आहारकालं अतिवत्तेत्वा कालं करोन्ति,* सारत्थ॰ टी॰ 3.191; दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.160.

आहारकिच्च नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [आहारकृत्य], भोजन ग्रहण करने का काम, भोजन-क्रिया, उदरपूर्ति का काम – **च्चं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न आहारकिच्चं अहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.89; **च्चं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ *उपत्थम्भनादिवसेन आहारकिच्चं साधयमानेसु पनेतेसु चत्तारि भयानि दट्ठब्बानि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.24; *कबळीकाराहारं ... आहारकिच्चं साधेति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.301.

आहारगिद्ध त्रि॰, तत्पु॰ स॰, आहार अथवा भोजन के प्रति लोभ-लालच रखने वाला, सांसारिक लाभ के प्रति लोभ करने वाला – **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहारगिद्धो लाभसक्कारप्पसुतो विचरति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.266.

आहारगेध पु॰, आहार-विषयक लोभ, भोजन के लिए दृढ इच्छा – **धेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं ब्राह्मणो आहारगेधेन मं दाने नीयोजेसी'ति मञ्ञति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.266.

आहारगेधी त्रि॰, आहार के प्रति लालच करने वाला, सांसारिक सुख के प्रति आसक्त – **धिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *गच्छाम छाता आहारगेधिनो,* पे॰ व॰ 788.

आहारचिन्ता त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [आहारचिन्ता], भोजन के विषय में चिन्ता – **य** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पचिन्तायाति "अज्ज कहं आहारं लभिस्सामि, स्वे कह"न्ति एवं आहारचिन्ताय अभावेन,* जा॰ अट्ठ॰ 3.275; – **रहित** *त्रि॰,* भोजन की चिन्ता से मुक्त, – **तानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰, *अप्पचिन्तसुखस्साति आहारचिन्तारहितानं अप्पचिन्तानमरियानं सुखं अस्सत्थीति अप्पचिन्तसुखो, तस्स तादिसेन सुखेन समन्नागतस्स,* जा॰ अट्ठ॰ 3.275.

आहारज त्रि॰, आहार से उत्पन्न – **जं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहारतो जातं आहारजं,* विसुद्धि॰ 2.78; *सुद्धट्ठकं, आकासो, लहुतादित्तयञ्च आहारजं नाम,* मो॰ वि॰ टी॰ 69; *कालेनाहारजं होति,* सच्च॰ 59; – **स्स** नपुं॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कबळीकारो आहारो आहारजस्स जनको,* मोहवि॰ 76; **जेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आहारजेसुपि आहारो,* विसुद्धि॰ 2.250.

आहारट्ठिति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आहारस्थिति], भोजन पर पूरी तरह से निर्भर जीवन-स्थिति, आहार पर निर्भरता, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा च ठिति द्विधा आरम्मणट्ठिति च आहारट्ठिति च,* पेटको॰ 306; *या आहारट्ठिति या पुनब्भवाभिनिब्बत्तिका ठिति,* पेटको॰ 307.

आहारट्ठितिक त्रि॰, [आहारस्थितिक], कारणभूत अथवा प्रत्ययभूत आहार पर आश्रित, पोषक भोजन पर निर्भर – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहारट्ठितिको समुस्सयो,* थेरगा॰ 123; *"आहारट्ठितिको समुस्सयो, इति दिस्वान चरामि एसनं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.267; *अयं कायो आहारट्ठितिको आहारं पटिच्च तिट्ठति,* स॰ नि॰ 3.82; – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहारट्ठितिकाति पच्चयट्ठितिका,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.221; सारत्थ॰ टी॰ 1.212; विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.224; वजिर॰ टी॰ 36; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, आहार पर निर्भरता, भोजन पर पूरी तरह आश्रित होने की स्थिति, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा पनायं आहारट्ठितिकता निप्परियायतो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.224.

आहारता स्त्री॰, आहार का भाव॰, **1**. वह जो स्थूल आहार हो अथवा जिसे कवलों अथवा ग्रासों के रूप में कण्ठ के नीचे ले जाया गया हो, **2**. आहार-विषयक मानसिक चेतना, चार प्रकार का सूक्ष्म आहार – *आहारताति कबळीकारो आहारो,* अभि॰ अव॰ (पृ॰) 87; *सञ्ञा चाहारता इति,* अभि॰ अव॰ 814; *"गाथाबन्धवसेन ग-कारस्स लोपं कत्वा आहारगता सञ्ञा'आहारता सञ्ञा"ति वुत्ता, आहारोयेव वा आहारता, तग्गता च सञ्ञा उपचारतो "आहारता"ति वुत्ता, आहारे पटिक्कूलसञ्ञाति अत्थो,* अभि॰ अव॰ अभि॰ टी॰ 2.165.

आहारत्तय नपुं॰, 3 प्रकार के आहारों का समुच्चय अथवा समूह – **यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चित्तुप्पादेसु सब्बत्थ आहारत्तयमीरितं,* ना॰ रू॰ प॰ 180.

आहारत्थिक त्रि॰, [आहारार्थिक], भोजन अथवा आहार पाने की इच्छा करने वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *घासत्थिकोति आहारत्थिको,* जा॰ अट्ठ॰ 3.259; *सचे आहारत्थिको,* चरिया॰ अट्ठ॰ 156.

आहारनिरोध पु., तत्पु. स. [आहारनिरोध], आहार का अन्त या उच्छेद, आहार की समाप्ति – **धो** प्र. वि., ए. व. – *तण्हानिरोधा आहारनिरोधो,* म. नि. 1.60; *कतमो आहारनिरोधो, कतमा आहारनिरोधगामिनी पटिपदा,* म. नि. 1.60; – **धा** प. वि., ए. व. – *तदाहारनिरोधा यं भूतं तं निरोधधम्मन्ति,* स. नि. 1(2).43; *आहारनिरोधा रूपनिरोधो,* स. नि. 2(1).54; *आहारनिरोधाति पवत्तिपच्चयस्स कबळीकाराहारस्स अभावे,* विसुद्धि. महाटी. 2.395; *आहारनिरोधा कायस्स अत्थङ्गमो,* स. नि. 3.259.

आहारनेत्तिप्पभव त्रि., ब. स., चार प्रकार के आहारों एवं तृष्णा-नामक नेत्री से उत्पन्न होने वाला – **वं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आहारनेत्तिप्पभवं नालं तदभिनन्दितुं,* इतिवु. 28; *चतुब्बिधो आहारो च तण्हासङ्खाता नेत्ति च पभवो समुट्ठानं एतस्साति आहारनेत्तिप्पभवं,* इतिवु. अट्ठ. 143.

आहारपच्चय[1] पु., 24 प्रकार के प्रत्ययों में से अन्यतम प्रत्यय, शरीर के संधारण में प्रत्ययभूत भोजन ही आहार-प्रत्यय कहलाता है – **यो** प्र. वि., ए. व. – *आहारपच्चयो,* विसुद्धि. 2.161; *रूपारूपानं उपत्थम्भकट्ठेन उपकारका चत्तारो आहारा आहारपच्चयो,* विसुद्धि. 2.167; – **येन** तृ. वि., ए. व. – *"कबळीकारो आहारो इमस्स कायस्स आहारपच्चयेन पच्चयो"ति,* विसुद्धि. 2.250; *किञ्चि आहारपच्चयेनाति एवं अञ्ञथापि पच्चयो होति,* विभ. अट्ठ. 165; – **या** प. वि., ए. व. – *यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति सब्बं आहारपच्चयाति,* सु. नि. 194; पाठा. आरम्भपच्चया.

आहारपच्चय[2] त्रि., आहार को प्रत्यय बना कर उत्पन्न या उदित – **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आहारजेसुपि आहारो आहारसमुट्ठानं आहारपच्चयं ... (रूपं),* विसुद्धि. 2.250.

आहारपटिक्कूलसञ्ञा स्त्री., आहार-विषयक प्रतिकूल मानसिक अनुचिन्तन, आहार का प्रतिकूलभाव से प्रत्यवेक्षण – **निद्देस** पु., विसुद्धि. के समाधिनिद्देस नामक ग्यारहवें अध्याय में आहार के विषय में प्रतिकूल भावना का अनुशीलन – **तो** प. वि., ए. व. – *वित्थारकथा पनेत्थ विसुद्धिमग्गे आहारपटिकूलसञ्ञानिद्देसतो गहेतब्बा,* विभ. अट्ठ. 342.

आहारपरिग्गह पु., तत्पु. स. [आहारपरिग्रह], आहार के विषय में संयम अथवा नियन्त्रण – **हो** प्र. वि., ए. व. – *आहारपरिग्गहो,* मि. प. 230; स. प. के अन्त.; *आतापो परितापो ठानचङ्कमनिसज्जासयनाहारपरिग्गहो,* मि. प. 287.

आहारपरिभोग पु., तत्पु. स. [आहारपरिभोग], आहार का उपभोग, भोजन को ग्रहण करना – *आहारपरिभोगे,* ध. स. अट्ठ. 421; स. प. के अन्त.; ... *मङ्गल आहारपरिभोगमङ्गलेपि ... पञ्चन्नं भिक्खुसतानं अप्पोदकमधुपायसमेव अदंसु,* ध. प. अट्ठ. 1.298.

आहारपरियेट्ठि स्त्री., तत्पु. स., भोजन की तलाश – **ट्ठिं** द्वि. वि., ए. व. – *आहारपरियेट्ठिं अकत्वा ...,* चरिया. अट्ठ. 23; – **या** तृ. वि., ए. व. – *आहारपरियेट्ठिया,* चरिया. अट्ठ. 27; – **मूलक** त्रि., भोजन की तलाश में जड़ जमाया हुआ, भोजन की तृष्णा से जनित – *पच्चुपन्ने आहारपरियेट्ठिमूलकं दुक्खन्ति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).308.

आहारपरियेसन नपुं., तत्पु. स., उपरिवत् – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *आहारपरियेसनं चरति,* स. नि. अट्ठ. 1.182; – **दुक्ख** नपुं., आहार की खोज में प्राप्त दुख – **क्खं** प्र. वि., ए. व. – *आहारपरियेसनदुक्खं ..., आहारपरियेसनमूलस्स,* बु. वं. अट्ठ. 90.

आहारपरिस्सय पु., तत्पु. स., आहार की कमी, आहार की अल्पता – **यो** प्र. वि., ए. व. – *आहारपरिस्सयो,* अ. नि. अट्ठ. 2.107.

आहारमन्दता स्त्री., तत्पु. स., आहारविषयिणी दरिद्रता, भूखों मरने की स्थिति – **य** तृ. वि., ए. व. – *आहारमन्दताय,* स. नि. अट्ठ. 2.97.

आहारमय त्रि., आहार से निर्मित, नाना प्रकार के आहारों से परिपूर्ण – **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *आहारमयं रूपं छातसुहितवसेन पाकटं होति,* विसुद्धि. 2.257; – **येन** तृ. वि., ए. व. – *आहारमयेनाति नानप्पकारेन आहारेनेव,* जा. अट्ठ. 3.461; – **तो** प. वि., ए. व. – *आहारमयतो,* विसुद्धि. 2.252.

आहाररस पु., तत्पु. स., आहार का सारतत्त्व, भोजन का रस – **सो** प्र. वि., ए. व. – *आहाररसो संसरित्वा आहारसमुट्ठानरूपं समुट्ठापेति,* स. नि. अट्ठ. 1.265; – **से** सप्त. वि., ए. व. – *रसग्गहणमूलकत्ता अज्झोहरणस्स जीवितहेतुम्हि आहाररसे,* विसुद्धि. महाटी. 2.160.

आहाररूप नपुं., रूपधर्म के रूप में आहार, स्थूल आहार, ग्रास लेकर खाया जाने वाला भौतिक आहार – **पं** प्र. वि., ए. व. – *वत्थुरूपं च हदयं यं धातुद्वयनिस्सयं कबळीकारमाहाररूपमिच्चाहु पण्डिता,* ना. रू. प. 490.

आहारलोलता स्त्री., तत्पु. स., आहार के प्रति लालच, भोजन-लिप्सा – **य** तृ. वि., ए. व. – *पञ्चहि लोलताहि लोलो होति, – आहारलोलताय, अलङ्कारलोलताय,*

परपुरिसलोलताय, धनलोलताय पादलोलताय, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.30.

आहारलोलुप्प नपुं॰, उपरिवत्, स॰ उ॰ प॰ में ही प्राप्त, पहीना॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आहारवग्ग पु॰, स॰ नि॰ के एक वर्ग का शीर्षक, स॰ नि॰ 1(2).12-24.

आहारविधान नपुं॰, भोजन तैयार करने एवं परोसने का तरीका – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स एवरूपं आहारविधानं अहोसि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.181.

आहारवेला स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, भोजन करने का समय, आहार लेने की वेला – **ला** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *को पन तेसं आहारो, का आहारवेलाति?,* सारत्थ॰ टी॰ 3.191; – **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकं आहारवेलं अतिक्कमित्वा,* सारत्थ॰ टी॰ 3.191.

आहारसङ्खय पु॰, आहार का पूर्ण क्षय, आहार अथवा ईंधन की समाप्ति – **या** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इधेव परिनिब्बिस्सं, अग्गीवाहारसङ्खयाति ... अग्गि विय इन्धनक्खयेन यथा अग्गि निरुपादानो निब्बायति,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 339.

आहारसमुट्ठान त्रि॰, आहार के कारण से उत्पन्न, आहार से उदित अथवा उठकर सामने आने वाला – **नानं** नपुं॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *(आहारो) कम्मजानं अनुपालको हुत्वा पच्चयो होति, आहारसमुट्ठानानं जनको हुत्वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).218; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्विन्नं रूपसन्ततीनं पच्चयो होति – आहारसमुट्ठानस्स च उपादिण्णकस्स च,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.24; – **नानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आहारसमुट्ठानानि अट्ठ, ... आहारसमुट्ठानादीनि तीणि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 349.

आहारसमुट्ठापिक त्रि॰, आहार का समुत्थान कराने वाला / वाली, आहार की पूर्ण उत्पत्ति कराने वाला / वाली – **पिका** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहारसमुट्ठापिका पुरिमतण्हा समुदयसच्चं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.301.

आहारसमुदय पु॰, तत्पु॰ स॰, आहार का उदय, आहार की उत्पत्ति – **या** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहारसमुदया रूपसमुदयो,* स॰ नि॰ 2(1).54; *आहारसमुदया कायस्स समुदयो,* स॰ नि॰ 259; – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहारसमुदया कायस्स समुदयोति आहारसमुदयेन कायसमुदयो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.257.

आहारसम्भव पु॰, ब॰ स॰, आहार से उदित या उत्पन्न, वह जिसकी उत्पत्ति भोजन के कारण हुई है, हेतु - प्रत्ययों से उत्पन्न – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एतं खन्धपञ्चकं आहारं पटिच्च ठितं, तस्मा तं आहारसम्भवं नाम कत्वा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.54; *तदाहारसम्भवन्ति तं पनेतं खन्धपञ्चकं आहारसम्भवं पच्चयसम्भवं, सति पच्चये उप्पज्जति एवं पस्सथाति पुच्छति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).203; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहारसम्भवस्स निब्बिदाय विरागाय निरोधाय पटिपन्नो होति,* स॰ नि॰ 1(2).43; *अत्तनो फलं आहरतीति आहारो पच्चयो, सम्भवति एतस्माति सम्भवो, आहारो सम्भवो एतस्साति आहारसम्भवं,* म॰ नि॰ टी॰ (मू॰प॰) 2.210; स॰ उ॰ प॰ के रूप में तदा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आहारसम्भूत त्रि॰, तत्पु॰ स॰, आहार के कारण अस्तित्व में आया हुआ, भोजन के द्वारा तैयार किया गया – **तो** पु॰ प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहारसम्भूतो अयं ... कायो ... तण्हा ... मेथुनसम्भूतो अयं भगिनि कायो,* अ॰ नि॰ 1(2).167; – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहारसम्भूतन्ति ववत्थेति,* पटि॰ म॰ 69.

आहारहेतुक त्रि॰, ब॰ स॰, आहार पर आश्रित, भोजन पर अवलम्बित – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बलोकम्हि ये सत्ता जीवन्ताहारहेतुका मनुञ्ञं भोजनं सब्बं लभन्तु मम चेतसा,* अप॰ 1.5.

आहारापेति आ + √हर के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, ले आने हेतु प्रेरित करता है, द्रष्ट, आहरापेति के अन्त॰.

आहारासा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [आहाराशा], भूख, क्षुधा, भोजन मिलने की आशा, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"आहारासा विया"ति अवत्वा चेतनाग्गहणं कतं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.262; – **चेतना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, आहार के विषय में चित्त का चैतन्य होना, भोजन-विषयक मानसिक अनुचिन्तन, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गिज्झपोतकसरीरानं आहारासाचेतना विय,* विसुद्धि॰ 2.166; *गिज्झपोतकसरीरानं आहारासाचेतना विया,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.262.

आहारिक त्रि॰, [आहारिक], आहार लेने वाला, केवल स॰ उ॰ प॰ में प्रयुक्त हत्था॰ के अन्त॰, द्रष्ट॰.

आहारूपच्छेद पु॰, तत्पु॰ स॰, आहार ग्रहण न करना, उपवास, व्रत, आहार लेने से विरति – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहारूपच्छेदो कातब्बोति,* सारत्थ॰ टी॰ 2.242; – **दं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बसोपि आहारूपच्छेदं अकासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.76; *आहारूपच्छेदं कत्वा,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.55; ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.88; – **देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहारूपच्छेदेनपि न मारेतब्बो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.57; *आहारूपच्छेदेन च सब्बथा,*

चरिया॰ अट्ठ॰ 227; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहारूपच्छेदस्स अनुञ्ञातत्ता,* वि॰ वि॰ टी॰ 1.203; – **दाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बसो आहारूपच्छेदाय पटिपज्जि,* म॰ नि॰ 1.313.

आहारूपजीवी त्रि॰, [आहारोपजीविन्], आहार पर जीने वाला, भोजन के सहारे जीवित रहने वाला – **विनो** पु॰, च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"आहारूपजीविनो सत्तलोकस्स महाउपकारो सम्पादितो मया"ति,* चरिया॰ अट्ठ॰ 215; – **विनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ये सत्ता आहारूपजीविनो,* विभ॰ अट्ठ॰ 167; विसुद्धि॰ 2.196.

आहारूपनिबद्ध त्रि॰, तत्पु॰ स॰, आहार के साथ बंधा हुआ – **द्धं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्तानं जीवितं... आहारूपनिबद्धञ्च,* विसुद्धि॰ 1.227.

आहारूपरोध पु॰, तत्पु॰ स॰, आहार पर रोक, भूखा रहना, उपवास – **धेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स आहारूपरोधेन चित्तदुब्बल्यं उप्पज्जि,* मि॰ प॰ 230; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहारूपरोधस्सेवेसो दोसो सदापटियत्ता,* मि॰ प॰ 230; 231.

आहारूपसेवी त्रि॰, आहार का सेवन करने वाला, भोजन का प्रयोग करने वाला – **वीनं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सो यस्मा आहारूपसेवीनञ्ञेव अज्झोहटाहारउतुजाहारूपत्थद्धो एव च कम्मजादिआहारो इमस्स कायस्स ठितिया पवत्तति,* मोहवि॰ 344.

आहारूपहार पु॰, ले आना एवं प्रदान करना, लेन-देन, आदान-प्रदान – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नत्थम्हाकं तया सद्धिं आहारूपहारो,* पारा॰ 201; *आहारूपहारोति आहारो च उपहारो च गहणञ्च दानञ्च,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.126.

आहारूपासीसक त्रि॰, भोजन पाने की आशा कर रहा, आहार पाने के प्रति आशावान् – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहारूपासीसको येव चरति,* मि॰ प॰ 363.

आहारेति / आहारयति आ + √हर के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, आहार का ना॰ धा॰ [आहारयति], **शा॰ अ॰**, लाने हेतु प्रेरित करता है, **प्रायोगिक अ॰**, भोजन करता है, खाता है – *एकाहिकम्पि आहारं आहारेति, द्वीहिकम्पि आहारं आहारेति, सत्ताहिकम्पि आहारं आहारेति,* दी॰ नि॰ 1.150; *अरियसावको पटिसङ्खा योनिसो आहारं आहारेति,* म॰ नि॰ 2.19; *आहारेतीति परिभुञ्जति अज्झोहरति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 421; – **मि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *एकाहिकम्पि आहारं आहारेमि, द्वीहिकम्पि आहारं आहारेमि ... सत्ताहिकम्पि आहारं आहारेमि,* म॰ नि॰ 1.111; – **म** ब॰ व॰ – *"मयं अनासका न किञ्चि आहारेमाति",* जा॰ अट्ठ॰ 5.233; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *एकाहिकम्पि आहारं आहारेन्ति, द्वीहिकम्पि आहारं आहारेन्ति ... सत्ताहिकम्पि आहारं आहारेन्ति,* म॰ नि॰ 1.304; *धम्मिकं समणा सक्यपुत्तिया आहारं आहारेन्ति,* स॰ नि॰ 2(1).237; – **सि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *आहारं न आहारेसि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.93; – **सिं** अद्य॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *थोकं थोकं आहारं आहारेसिं,* म॰ नि॰ 1.314; *ओळारिकं आहारं आहारेसिं,* म॰ नि॰ 1.315; – **रेय्यं** विधि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *ओळारिकं आहारं आहारेय्यं,* म॰ नि॰ 1.315; *यंनूनाहं थोकं थोकं आहारं आहरेय्यं,* 1.314; – **रेन्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनुपायेन हि आहारेन्तो दवत्थाय मदत्थाय ... वा आहारेति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 421; – **यतो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकंयेव कोलं आहारं आहारयतो,* म॰ नि॰ 1.114; – **यतं** वर्त॰ कृ॰, पु॰, च॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तेसं तं ओळारिकं आहारं आहारयतं,* विसुद्धि॰ 2.46; – **त्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *ओळारिकं आहारं आहारेत्वा,* म॰ नि॰ 1.316.

आहाव पु॰, आ + √ह्वे से व्यु॰ [आहाव], पशुओं को पानी पिलाने के लिए कुएं के पास बना जल भरा कुण्ड, प [illegible] पौ [illegible] ाला – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहावो तु निपानं चा,* अभि॰ प॰ 680.

आहि / अहि √अस (होना) का अनु॰ / वर्त॰ का म॰ पु॰, ए॰ व॰, तुम हो – *त्वं आहि,* सद्द॰ 3.832; *आहि,* सद्द॰ 3.834.

आहिण्डति आ + √हिण्ड का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [बौ॰ सं॰ आहिण्डते], इधर से उधर चलता रहता है, इधर उधर भटकता है, इधर उधर घूमता है – *अनुद्दिस्स मरणं संवण्णेन्तो आहिण्डति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.47; *आहिण्डती गोरिव भक्खसादी,* जा॰ अट्ठ॰ 5.15; – **सि** म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"किं भन्ते सुमन, आहिण्डसी"ति आह,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.59; *"कस्मा समणो हुत्वा आहिण्डसी"ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.201; – **ण्डामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"गोतमस्सवादं आरोपेस्सामी"ति आहिण्डामि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).168; *अरञ्ञे इरीणे वने, अन्धाहिण्डामहं तदा,* अप॰ 1.274; – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *छब्बग्गिया भिक्खू छत्तपग्गहिता आहिण्डन्ति,* चूळव॰ 250; *"चेलप्पटिकं मद्दन्ता आहिण्डन्ती"ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.229; – **थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *"दुक्खमेव जिरापेन्ता आहिण्डथा"ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).169; *"महाजनं वञ्चेत्वा आहिण्डथा"ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.117; – **ण्डाम** उ॰ पु॰, ब॰ व॰ – *"मयं सपजापतिका आहिण्डाम,* पाचि॰ 88; – **ण्डाहि** अनु॰, म॰ पु॰, ए॰ व॰ – *"गच्छ तात खेत्तं*

आहिण्डाही"ति, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).211; *इमस्स वादस्स मोक्खाय चर आहिण्डाहि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.230; – **ण्डेय्युं** विधि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *नगरे घोसन्ता आहिण्डेय्युं,* महाव॰ अट्ठ॰ 357; – **ण्डिस्सन्ति** भवि॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *"कथञ्हि नाम भदन्ता छत्तप्पग्गहिता आहिण्डिस्सन्ती"ति,* चूळव॰ 250; – **न्तो** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेनासन चारिकं आहिण्डन्तो,* महाव॰ 254; *भगवा सकल-जम्बुदीपं आहिण्डन्तो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).312; – **न्ता** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सेनासन चारिकं आहिण्डन्ता भिक्खू पस्सित्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.41; – **न्तिया** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पानीयत्थाय आहिण्डन्तिया मे पानीयं देहि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 125; – **मानो** वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहिण्डमानो पुन सत्थु सन्तिकं आगन्त्वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.153; *आहिण्डमानो महिया अट्टस्सरं करोति,* मि॰ प॰ 322; – **ण्डि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *द्वियोजनं अद्धानं आहिण्डि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.278; – **ण्डिंसु** ब॰ व॰ – *(मक्खिका) खादनत्थं गोधा आहिण्डिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.459; – **ण्डित्थ** म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *विरवन्तो आहिण्डित्थ,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.131; स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.283; – **ण्डिस्सामि** भवि॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *गामनिगमराजधानीसु आहिण्डिस्सामि हनन्तो घातेन्तो छिन्दन्तो,* पारा॰ 109; – **ण्डितुं** निमि॰ कृ॰ – *न सक्कोति विना दण्डेन आहिण्डितुं,* चूळव॰ 251; – **ण्डित्वा** पू॰ का॰ कृ॰ – *गच्छ सावत्थिं आहिण्डित्वा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.168; *समसमा आहिण्डित्वा,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).166; *परिवेणं आहिण्डित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.478.

आहिण्डन नपुं॰, आ + √हिण्ड से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, इधर उधर भटकाव – **काल** पु॰, तत्पु॰ स॰, इधर से उधर घूमने का समय – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुत्तो पदसा आहिण्डनकाले कालमकासि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.168.

आहिण्डापेसि आ + √हिण्ड के प्रेर॰ का अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, इधर उधर घुमाया, भटकाया, चक्कर कटवाया – *सब्बद्वारानि आहिण्डापेसि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.52.

आहित त्रि॰, आ + √धा का भू॰ क॰ कृ॰ [आहित], स्थापित, प्रतिष्ठापित, जमा किया गया, सुरक्षित रूप में रखा गया, ला कर रखा गया – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *छन्ना कुटि आहितो गिनि,* सु॰ नि॰ 18; *आहितोति आभतो, जालितो वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.24; *आरम्मणे आहितो निच्चलभावकरणेन पतिट्ठापितोति अधिप्पायो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.201; *आहितो अहंमानो एत्थाति अत्ता,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.430; ... **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चित्तम्पि मे सम्मा आहितं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.103-104; *समाहितं चित्तं एकग्गं,* पारा॰ 4; *यं ... किलेसेहि आहितं सामत्थियमत्तं,* उदा॰ अट्ठ॰ 156; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अग्गा॰, अग्या॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आहितगब्भा स्त्री॰, ब॰ स॰ [आहितगर्भा], गर्भवती नारी, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मेघगज्जितेन आहितगब्भा परियेसति लेणन्ति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.27.

आहितग्गि त्रि॰, ब॰ स॰ [आहिताग्नि], वह, जिसने यज्ञ की अग्नि को प्रज्वलित कर दिया है, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईदिसस्मिं हि ठाने आहितग्गी ति वा अग्गाहितो ति वा* ...., सद्द॰ 2.414.

आहितचित्त त्रि॰, ब॰ स॰ [आहितचित्त], स्थिर एवं एकाग्र चित्त वाला, शान्त चित्त वाला – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समाहितचित्तो च ... सम्मा आहितचित्तोति एवमेत्थ अत्थो वेदितब्बो,* चरिया॰ अट्ठ॰ 135.

आहितबल त्रि॰, ब॰ स॰, बलवान्, बलसम्पन्न, ताकतवर – **लं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहितबलं पठमं विपच्चति,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.353.

आहित्वा आ + √हा का पू॰ का॰ कृ॰ [आहाय], छोड़ कर, त्याग कर – *हिमवन्तं गमित्वान, आहित्वा पुप्फसञ्चयं,* अप॰ 2.111; *सङ्कारकूटा आहित्वा सुसाना रथियापि च,* अप॰ 2.236.

आहु/अहु √हु (होना) का परोक्षभूत का प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, सामान्य अहोसि का छन्दानुरोधवश किया गया रूपान्तरण, हुआ था – *अहु राजा विदेहानं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.102.

आहुणेय्य त्रि॰, द्रष्ट॰, आहुनेय्य के अन्त॰ (आगे).

आहुत[1] त्रि॰, आ + √हु (हवन करना) का भू॰ क॰ कृ॰ [आहुत], वह, जिसे आहुतियों में डाला गया है, हवन किया गया – **तं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनलो ... आहुतं घतं अस्नाति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.58; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, पटियत्ता॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आहुत[2] त्रि॰, आ + √हु का भू॰ का॰ कृ॰ [आहूत], आया हुआ, बुलाया हुआ – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहुनेय्यग्गि ... अतोहयं ब्राह्मण आहुतो सम्भूतो,* अ॰ नि॰ 2(2).194; *आहुतोति आगतो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.168.

आहुतग्गि त्रि॰, ब॰ स॰ [आहुताग्नि], अग्नि में आहुतियां डालने वाला अथवा अग्नि में हवन करने वाला, अग्निहोत्री – **ग्गि** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहुतग्गि च ब्राह्मणो,* जा॰

अट्ठ॰ 7.45; – **ग्गी** ब॰ व॰ – *राजिसी यत्थ सम्मन्ति आहुतग्गी समाहिता,* जा॰ अट्ठ॰ 7.277.

आहुति स्त्री॰, आ + √हु से व्यु॰ [आहुति], **शा॰ अ॰,** किसी देवता को उद्दिष्ट करके अग्नि में दी गई हवनसामग्री, हवनकुण्ड में हवनसामग्री डालना, **ला॰ अ॰,** सम्माननीय व्यक्ति को सम्मानपूर्वक दिया गया दान – **ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहुति पग्गहिता ... यञ्हि किञ्चि अग्गिम्हि जुहितब्बं, तं सब्बं "आहुती"ति वुच्चति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.139; *आहुतियोति यं पहेणकसक्कारादिभेदं दिन्नदानं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.137; – **तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहुनेय्यस्साति आहुतिं पटिग्गहेतुं युत्तस्स,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.70; *आहुतिं निच्चं पग्गण्हाति,* स॰ नि॰ 1(1).167; – **तीनं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आहुतीनं पटिग्गहो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.20; अप॰ 1.47; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, परमा॰, लोका॰, पटिग्गहा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

आहुतिगन्ध पु॰, तत्पु॰ स॰, अग्नि में डाली जा रही हवनसामग्री की गन्ध – **न्धेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ब्राह्मणा आहुतिगन्धेन धावन्ति,* म॰ नि॰ 3.207.

आहुतिपिण्ड पु॰, तत्पु॰ स॰, अग्नि में डाली जाने वाली हवनसामग्री के रूप में चावल का पिण्ड (गोला) – **ण्डं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहुनं आहुतिपिण्डं समुग्गण्हन्ति,* महाव॰ अट्ठ॰ 411; *निच्चकाले आहुतिपिण्डं पग्गण्हाति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.181.

आहुन[1] नपुं॰, [आहवन], **शा॰ अ॰,** यज्ञ में दी जाने वाली आहुति, हवन, **ला॰ अ॰,** सम्मान, सत्कार – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हवनं दानं आहुनं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.308; *आहुनं वुच्चति सक्कारो, आहुनं अरहन्ती'ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.160; *आहुनं अरहती'ति,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.264.

आहुन[2] नपुं॰, आहुति-पिण्ड – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहुनं आहुतिपिण्डं समुग्गण्हन्ति,* महाव॰ अट्ठ॰ 411.

आहुनपटिग्गाहक त्रि॰, [आहुतिप्रतिग्राहक], **1.** यज्ञ की आहुतियों को स्वीकार करने वाला, **2.** सम्मान दिए जाने योग्य, सम्माननीय – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मातापितूनं ... आहुनेय्याति आहुनपटिग्गाहका यस्स कस्सचि सक्कारस्स अनुच्छविका,* जा॰ अट्ठ॰ 5.326.

आहुनपाहुन नपुं॰, यज्ञ एवं आहुति, आहुतियां देना एवं यज्ञ-विधान करना – **वसेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰, यज्ञीय विधान एवं आहुति के द्वारा – *आहुनपाहुनवसेन हुतम्पि सुहुतं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 129; *हुतन्ति आहुनपाहुनवसेन दिन्नं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.18; चरिया॰ अट्ठ॰ 32; – **मङ्गलकिरिया** स्त्री॰, यज्ञीय विधान का मांगलिक कार्य, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहुनपाहुनमङ्गलकिरिया,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 408.

आहुनपिण्ड पु॰, तत्पु॰ स॰, **1.** आहुतपिण्ड, यज्ञ की आहुतियों में दिया जाने वाला पिण्ड, यज्ञीय बलि, **2.** सम्मान के साथ दिया गया दान अथवा उपहार – **ण्डं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहुनेय्योति आहुनपिण्डं पटिग्गहेतुं युत्तो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.182.

आहुनेय्य त्रि॰, आ + √हु का सं॰ कृ॰ [आहवनीय], **शा॰ अ॰,** यज्ञीय बलि प्रदान करने योग्य, **ला॰ अ॰,** सम्माननीय, पूज्य, चीवर आदि 4 प्रत्ययों का दान पाने योग्य – **य्यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहुनेय्योतिआदीसु आनेत्वा हुनितब्बन्ति आहुनं, दूरतोपि आगन्त्वा सीलवन्तेसु दातब्बन्ति अत्थो, चतुन्नं पच्चयानमेतं अधिवचनं, महप्फलभावकरणतो तं आहुनं पटिग्गहेतुं युत्तोति आहुनेय्यो ... सक्कादीनम्पि आहवनं अरहतीति वा आहवनीयो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 252; *सावक सङ्घो, आहुनेय्यो पाहुनेय्यो,* दी॰ नि॰ 3.4; *आहुनेय्यो पाहुनेय्यो दक्खिणेय्यो सुदुल्लभो,* ना॰ रू॰ प॰ 1148; *आनेत्वा हुनितब्बन्ति आहुनं दूरतोपि आनेत्वा दातब्बदानं, तं पटिग्गहेतुं युत्तोति आहुनेय्यो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.498; – **य्यं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहुनेय्यं सङ्घं, पाहुनेय्यं, दक्खिणेय्यं अञ्जलिकरणीयं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.199; *आहुनेय्यन्ति आदीसु,* सारत्थ॰ टी॰ 2.69; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आहुनेय्यस्स यक्खस्स ... तस्स सावकोहमस्मी'ति,* म॰ नि॰ 2.55; – **य्या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *'आहुनेय्या',* अ॰ नि॰ 1(1).156; *आहुनेय्या यजमानानं होन्ति,* अ॰ नि॰ 1(1).79; स॰ उ॰ प॰ के रूप में साक॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **सुत्त** नपुं॰, अ॰ नि॰ के कुछ सुत्तों का शीर्षक, अ॰ नि॰ 2(2).1.2; 3(1).117-118; – **त्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *छक्कनिपाते आहुनेय्यसुत्ते "अत्थि ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.155.

आहुनेय्यग्गि पु॰, कर्म॰ स॰, 3 प्रकार की यज्ञीय अग्नियों में से एक, **शा॰ अ॰,** आहवनीय अग्नि, वह अग्नि, जिसमें आहुतियां दी जाएं, **ला॰ अ॰,** 1. सम्मान अथवा सत्कार देने योग्य माता-पिता-रूपी अग्नि, **2.** सम्माननीय माता-पिता आदि के अनुताप का कारणभूत पुत्र आदि – *अपरेपि तयो अग्गी – आहुनेय्यग्गि, गहपतग्गि, दक्खिणेय्यग्गि,* दी॰ नि॰ 3.174; *रागग्गि ... आहुनेय्यग्गि ... इमे खो भिक्खवे, सत्त अग्गी'ति,* अ॰ नि॰ 2(2).191; *यस्स ते होन्ति माताति वा पिताति वा अयं वुच्चति ब्राह्मण आहुनेय्यग्गि,* अ॰ नि॰ 2(2).194; *आहुनेय्यग्गीतिआदीसु आहुनं वुच्चति*

सक्कारो, आहुनं अरहन्तीति आहुनेय्या मातापितरो हि पुत्तानं बहूपकारताय आहुनं अरहन्ति – इति अनुदहनट्ठेन आहुनेय्यग्गीति वुच्चन्ति, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.160; स॰ प॰ के अन्त॰, – *आहुनेय्यग्गिगहपतग्गिदक्खिणेय्यग्गीसु,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.264.

आहुनेय्यभावादिसिद्धिकथा स्त्री॰, विसुद्धि॰ के उस स्थल का शीर्षक जिसमें लोकोत्तर प्रज्ञा से होने वाले सांसारिक लाभों का वर्णन है, विसुद्धि॰ 2.350-352.

आहुनेय्यवग्ग पु॰, अ॰ नि॰ का एक वग्ग, अ॰ नि॰ 2(2). 1-6.

आहुन्दरिक त्रि॰, अप्रिय, दुर्गम्य, पार न करने योग्य, कठिन, सरलता से दिखलाई न देने योग्य, चारों ओर से घिरा, बाधाओं से भरपूर – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"आहुन्दरिका समणानं सक्यपुत्तियानं दिसा अन्धकारा, न इमेसं दिसा पक्खायन्ती"ति,* महाव॰ 100; *दसमे – आहुन्दरिकाति सम्बाधा,* पाचि॰ अट्ठ॰ 201; *"दसमे आहुन्दरिका"ति पठन्ति किर,* वजिर॰ टी॰ 348; – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यस्मा पन पुरिमभवे नामरूपं असेसं निरुद्धं इध अञ्ञं उप्पन्नं, तस्मा तं ठानं आहुन्दरिकं अन्धतममिव होति सुदुद्दसं दुप्पञ्ञेन,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.294; *आहुन्दरिकन्ति समन्ततो, उपरि च घनसञ्छन्नं सम्बाधट्ठानं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.45.

आहूय आ +√हु का पू॰ का॰ कृ॰, आह्वान करके, बुलाकर, पुकार कर – *आहूय सब्बं पादासि रज्जं पुत्तेहि अत्तनो,* चू॰ वं॰ 45.8; *इच्चेते पञ्च आहूय पेसले,* चू॰ वं॰ 87.17.

इ

√इ गति अथवा अध्ययन के अर्थों को प्रकाशित करने वाली एक धातु [इण् गतौ], जाना, अध्ययन करना – *इ अज्झने गतिकन्तिसु,* मो॰ धा॰ पा॰ 288; *इ अज्झाने गतिम्हि च,* धा॰ मं॰ 96; *इ अज्झयने,* सद्द॰ 2.322; क्रि॰ रू॰ के लिए 'एति' के अन्त॰ द्रष्ट॰ (आगे); सोपसर्ग प्रयोगों के लिए उपेति, अन्वेति, अज्झेति आदि के अन्त॰ द्रष्ट॰.

इकार पु॰, [इकार], पालि-वर्णमाला में प्रयुक्त आठ स्वरों में तालुस्थानीय ह्रस्व स्वर 'इ' – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथागममिकारो,* क॰ व्या॰ 607; सद्द॰ 3.858; – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *इकारञ्च दकारञ्च दुकारञ्च खंकारञ्च ईसकं विच्छिन्दित्वा ...,* सद्द॰ 1.42-43; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *निरुत्तिनयेन इ–कारस्स अत्तं पुत्त–सद्दस्स च लोपं कत्वा ...,* अप॰ अट्ठ॰ 1.136; – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निपातभूतस्स पन इतिसद्दस्स इकारे नट्ठेपि सो अत्थो विञ्ञायतेव ...,* सद्द॰ 1.43; – **रेसु** ब॰ व॰ – ... *द्वीसु इकारेसु परस्स इकारस्स लोपो कातब्बो,* सद्द॰ 1.43; – **लोप** पु॰, तत्पु॰ स॰, केवल व्याकरण में प्रयुक्त [इकारलोप], इकार का लोप, 'इ' वर्ण की समाप्ति – **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुइदन्ति सुदं, सन्धिवसेन इकारलोपो वेदितब्बो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.144; – **पं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इवाति ओपम्मवचनं, इ–कारलोपं कत्वा व–इच्चेव वुत्तं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.12; – **रागम** पु॰, व्याकरण में प्रयुक्त, तत्पु॰ स॰ [इकारागम], 'इ' स्वर का आगम, दो ध्वनियों के मध्य में इकार का अतिरिक्त रूप में आ जाना – **मो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इकारागमो असब्बधातुकम्हि,* क॰ व्या॰ 518; *असब्बधातुके इकारागमो,* सद्द॰ 3.835; *यथागमं सब्बधातूहि सब्बपच्चयेसु इकारागमो होति,* क॰ व्या॰ 607; स॰ उ॰ प॰ में सेकारा॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; **टि॰,** शब्द में प्रयुक्त किसी भी वर्ण के पूर्व में अथवा पश्चात् किसी अन्य वर्ण का मित्र के समान आकर बैठ जाना ही व्याकरण-शब्दावली में आगम कहलाता है – मित्रवदागमः; – **रादेस** पु॰, तत्पु॰ स॰ [इकारादेश], किसी अन्य वर्ण के स्थान पर इकार को रख देना, अन्य ध्वनि के स्थानापन्न के रूप में इकार – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यज इच्चेतस्स धातुस्स आदिस्स इकारादेसो होति येप्पच्चये परे,* क॰ व्या॰ 505; **टि॰,** किसी शब्द में पहले से विद्यमान किसी एक ध्वनि या वर्ण को हटा कर उसके स्थान पर अन्य वर्ण को रख दिया जाना ही आदेश कहलाता है – शत्रुवदादेशः.

इक्क / अच्छ / इस्स / ईस पु॰, [ऋक्ष], भालू, रीछ – **च्छो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अच्छो इक्को च इस्सो तु, कालसीहो इसोप्यथ,* अभि॰ प॰ 612; *अच्छो इक्के पुमे वुत्तो, पसन्नम्हि तिलिङ्गिको,* अभि॰ प॰ 1025; – **क्का / च्छा** ब॰ व॰ – *कक्कटा कटमाया च, इक्का गोणसिरा बहू,* जा॰ अट्ठ॰ 7.306; *तथा कम्मारसालासु, अच्छा कूटानि पातयुं,* म॰ वं॰ 5.31.

इक्कट पु॰, [इक्कट], एक प्रकार की माला का गुच्छा, स॰ प॰ के अन्त॰, – *पीतकसिणे मालागच्छन्ति इक्कटादिमालागच्छं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.184.

इक्कास पु॰ / नपुं॰, अर्थ एवं व्यु॰ संदिग्ध [प्रा॰ इक्कास], **1.** साटने या चिपकाने वाला पदार्थ, गोंद, लस, रस, **2.** निर्यास, अर्क, सार, काढ़ा – **सं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"अनुजानामि, भिक्खवे, इक्कासं पिट्ठमद्द"न्ति,* चूळव॰ 277;

इक्कासन्ति रुक्खनिय्यासं वा सिलेसं वा, चूळव. अट्ठ. 61; *अनुजानामि, भिक्खवे, इक्कासं कसाव'न्ति,* चूळव. 278.

√**इक्ख**[1] देखने के अर्थ को सूचित करने वाली एक धातु – *इक्खो तु दस्सनङ्केसु,* धा. मं. 4; *इक्ख दस्सने,* मो. धा. पा. 13; *इक्ख दस्सनङ्केसु,* सद्द. 2.332; क्रि. रू. के लिए इक्खति, उपेक्खति, अपेक्खति के अन्त. द्रष्ट..

इक्ख[2] त्रि., [ईक्ष्य], देखने योग्य, समझे जाने योग्य – **क्खा** पु., प्र. वि., ब. व. – *असुखद्धम्मतो चिक्खा,* सच्च. 303.

इक्खक त्रि., [ईक्षक], देखने वाला, ध्यान देने वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *उपेक्खकोति उपपत्तितो इक्खको होति,* महानि. अट्ठ. 278.

इक्खणसील त्रि., [ईक्षणशील], देखने की प्रकृति वाला – **लो** पु., प्र. वि., ए. व. – *"संसारसभावो एसो"ति संसारे भयं इक्खणसीलो भिक्खु अधिवासये,* उदा. अट्ठ. 213.

इक्खणिका स्त्री., [ईक्षणिका], भविष्य का कथन करने वाली स्त्री, भविष्यकथिका, दैवज्ञा, भविष्य के शुभ और अशुभ को देख सकने वाली स्त्री, प्र. वि., ए. व. – *वारुणीक्खणिका तुल्या,* अभि. प. 236; *अतियक्खाति भूतविज्जा इक्खणिकापि,* जा. अट्ठ. 7.259; *इत्थी इमस्मिं येव राजगहे इक्खणिका अहोसि,* पारा. 143; – **कम्म** नपुं., भविष्य कथन करने वाली स्त्री का व्यवसाय या धन्धा, पेशा – **म्मं** द्वि. वि., ए. व. – *सा किर इक्खणिकाकम्मं यक्खदासिकम्मं करोन्ती ...,* पारा. अट्ठ. 2.90.

इक्खति √इक्ख का वर्त., प्र. पु., ए. व. [ईक्षते], **शा. अ.**, देखता है, निरखता है. **ला. अ.**, सोचता-विचारता है, नजर डालता है, खोजता है – *संसारे भयं इक्खतीति भिक्खु,* विसुद्धि. 1.4; *संसारे भयं (इक्खति) इक्खनसीलो ति (वा) भिक्खु,* सद्द. 2.584; *एत्थ उपपत्तितो इक्खतीति उपेक्खा,* पारा. अट्ठ. 1.111; – **ते** कर्म. वा., प्र. पु., ए. व. – *नानत्तं इक्खते लोको,* अभि. प. टी. 45, 46(बर्मी); – **सि** म. पु., ए. व. – *ममेव तुवं इक्खसि,* जा. अट्ठ. 5.147; पाठा. सिक्खसि; – **क्खामि** उ. पु., ए. व. – *न तं इक्खामहं पुनो,* थेरीगा. अट्ठ. 163; अप. 2.202; – **न्तो** वर्त. कृ., पु., प्र. वि., ए. व. – *भिक्खूति संसारे भयं इक्खन्तो ...,* थेरगा. अट्ठ. 2.412.

इक्खन / इक्खण √इक्ख से व्यु., क्रि. ना., नपुं., [ईक्षण], देखना, गहराई के साथ देखना, सोच-विचार करना – *इक्खनं दस्सनं प्यथ,* अभि. प. 775; – **ता** स्त्री., भाव., देखते रहने की प्रकृति – **य** तृ. वि., ए. व. – *भिक्खूति संसारे भयं इक्खणताय वा ... एवं लद्धवोहारो सद्धापब्बजितो कुलपुत्तो,* विसुद्धि. 1.17; – **तो** प. वि., ए. व. – *संसारे भयस्स इक्खनतो भिन्नकिलेसताय वा भिक्खु,* थेरगा. अट्ठ. 1.298.

इक्खनाकार पु., तत्पु. स. [ईक्षणाकार], देखने का प्रकार, देखने का तरीका – **रो** प्र. वि., ए. व. – *उपेक्खनाति उपपत्तितो इक्खनाकारो,* महानि. अट्ठ. 382.

√**इङ्ग / √इखि** गति अर्थ में प्रयुक्त धातु, वर्त., प्र. पु., ए. व. – *इङ्गति,* सद्द. 2.329.

√**इङ्ग / √इगी** गमन अर्थ में प्रयुक्त धातु – *इङ्ग गमनत्थे,* धा. पा. 22; *अगी इगी रिगी लिगी वत्री गत्यत्थधातवो,* क. व्या. धा. मं. 6.

इङ्ग पु., [इङ्ग], सङ्केत, इशारा, इङ्गित द्वारा मनोभावों का संकेत देना – **ङ्गो** प्र. वि., ए. व. – *आकारो त्विङ्गितं इङ्गो,* अभि. प. 764; तुल. *आकारस्त्विङ्ग इङ्गितम्,* अमर. 3.2.15.

इङ्गण नपुं., √इङ्ग / √इगी से व्यु., क्रि. ना. [इङ्गन], चलना, हिलना डुलना, कसना, सञ्चरण करना, स. उ. प. में ही प्राप्त, **वाति.**- हवा द्वारा हिलना डुलना – *योजनमत्तके वातिङ्गणसञ्ञाय वालं बन्धापेत्वा रत्तन्धकारे मेघपटलेहिछन्नासु दिसासु कण्डं खिपि,* बु. वं. अट्ठ. 321; *वातिङ्गणसञ्ञाय उसभमत्तके वालं विज्झि,* जा. अट्ठ. 5.126; *वातिङ्गणो च भण्डाकी,* अभि. प. 588.

इङ्गालकुया स्त्री., [अङ्गारकूप], अङ्गारकूप, अङ्गारों का गड्ढा – **या** सप्त. वि., ए. व. – *इङ्गालकुयाव उज्झितो,* थेरीगा. 388; *इङ्गालकुयाति अङ्गारकासुया उज्झितोति वातुक्खित्तो विय यो कोचि, दहनिया इन्धनं वियाति अत्थो,* थेरीगा. अट्ठ. 279.

इङ्गित नपुं., [इङ्गित], संकेत, इशारा, सञ्चलन, हिलना, क्षोभ – *आकारो त्विङ्गितं इङ्गो,* अभि. प. 764; तुल., *आकारस्त्विङ्ग इङ्गितम्,* अमर. 3.2.15; – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *वड्ढकीसूकरो तेसं इङ्गितं दिस्वा,* जा. अट्ठ. 2.335; पाठा. इङ्कितं; *राजा तेसं इङ्गितं दिस्वाव,* अ. नि. अट्ठ. 1.190; *जानित्वा तस्स इङ्गितं,* म. वं. 31.52; – **तेन** तृ. वि., ए. व. – *सा इङ्गितेनेव तस्स अधिप्पायं अञ्ञासि,* अ. नि. अट्ठ. 1.276; – **सञ्ञा** स्त्री., तत्पु. स. [इङ्गितसंज्ञा], मनोभावों या विचारों का संकेतों के द्वारा प्रकाशन, इशारों

द्वारा मन की बातों का खुलासा – ञ्ञं द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राजा परिसाय इङ्गितसञ्ञं अदासि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.163; – य तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"भवितब्बमेत्थ कारणेना"ति इङ्गितसञ्ञाय दासियो पटिक्कमापेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.197; – **ताकार** पु॰, [इङ्गिताकार], संकेत, इशारा, चेष्टा, इङ्गित, अङ्गविक्षेपादि के द्वारा अथवा विभिन्न अंगों की चेष्टा के द्वारा आन्तरिक भावों का प्रकटीकरण – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कोकालिकस्स इङ्गिताकारं दस्सेत्वा,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.173.

इङ्गुदी स्त्री॰, [इङ्गुदी], एक औषधि का वृक्ष, हिंगुपत्र, हिंगोट का वृक्ष, मालकंगनी, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इङ्गुदी तापसतरु,* अभि॰ प॰ 565; तुल॰, *इङ्गुदी तापसतरु,* अमर॰ 2.4.46.

इङ्घ अ॰, निपा॰, संभवतः वैदिक तद् + ई + घ का संक्षिप्तीकृत रूप, अनुरोध, निवेदन, प्रेरणा तथा प्रबोधन के अर्थों में प्रयुक्त; अच्छा तो, कृपा करके – *चोदने इघ हन्दाथ,* अभि॰ प॰ 1157; *इङ्घ हन्द इच्चेते चोदनत्थे,* सद्द॰ 3.898; *इङ्घ, भन्ते, सरापेहीति एत्थ इङ्घाति चोदनत्थे निपातो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.236; *इङ्घाति चोदनत्थे निपातो,* उदा॰ अट्ठ॰ 252; **प्रयोग,** वाक्य के प्रारम्भ में ही निम्नलिखित रूपों में प्रयुक्त; **1.** प्राचीनतम प्रयोगों में (सु॰ नि॰ तथा जा॰ अट्ठ॰ की गाथाओं में) 'त' के उपरान्त कहने, सुनने एवं देखने अर्थ वाली धातुओं के अनु॰, म॰ पु॰, ए॰/ब॰ व॰ के क्रि॰ रू॰ के पूर्व में प्रयुक्त – *"किं ते नट्ठं किं पन पत्थयानो, इधागमा ब्रह्मे तदिङ्घ ब्रूही"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.303; *तदिङ्घ मय्हं वचनं सुणाथ,* जा॰ अट्ठ॰ 4.147; **2.** सामान्य प्रकृति की संरचनाओं में अनु॰, म॰ पु॰, ए॰/ब॰ व॰ तथा संबो॰ में प्राप्त ना॰ प॰ से पूर्व में प्रयुक्त – *इङ्घ पस्स महाराज, सुञ्ञं अन्तेपुरं तव,* जा॰ अट्ठ॰ 6.285; *इङ्घ पस्स महापञ्ञ, मोग्गल्लान महिद्धिक,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.315; **3.** कहीं-कहीं इसके तुरन्त बाद में संबो॰ में अन्त होने वाले ना॰ प॰ के प्रयोग के उपरान्त अनु॰, म॰ पु॰, ए॰/ब॰ व॰ का क्रि॰ प॰ प्राप्त – *इङ्घ, मद्दि, निसामेहि, चित्तरूपंव दिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.270; **4.** कुछ प्रयोगों में इङ्घ + मे त्वं + सम्बो॰, ए॰ व॰ में ना॰ प॰ प्रयुक्त – *इङ्घ मे त्वं, आनन्द, पानीयं आहर, पिपासितोस्मि,* दी॰ नि॰ 2.98; **5.** कहीं-कहीं इङ्घ + द्वि॰ आदि वि॰ में अन्त होने वाले ना॰ प॰ के साथ प्रयुक्त – *इङ्घ मं सावेहीति,* मि॰ प॰ 128; **6.** कुछ प्रयोगों में परवर्ती पुष्टिसूचक 'ताव' के साथ प्राप्त – *"इङ्घ ताव कारणेन मं सञ्ञापेही"ति,* मि॰ प॰ 126; *इङ्घ ताव आयस्मा कायिकं सिक्खस्सू"ति,* चूळव॰ 409; **7.** बहुत कम स्थलों में इङ्घ + अनु॰, उ॰ पु॰, ब॰ व॰ में अन्त होने वाले क्रि॰ प॰ के साथ भी प्राप्त – *इङ्घस्स पुरिमं साखं, मयं छिन्दाम वाणिजा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.313.

इच्च √इ का पू॰ का॰ कृ॰ [इत्य], जा कर, पहुंच कर, प्राप्त कर – *इच्चाति गमनुस्सुक्कवचनमेतं,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 393.

इच्चेव अ॰, इति + एव के योग से व्यु॰ [इत्येव], यह ही, ऐसा ही, तुरन्त पूर्व में कहा गया ही – *इच्चेव वत्वान यमस्स दूता,* वि॰ व॰ 864; *तत्थ इच्चेव वत्वानाति इति एव "उट्ठेही"ति आदिना वत्वा, वचनसमनन्तरमेवाति अत्थो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 188.

इच्चेवं अ॰, निपा॰, इति + एवं के योग से व्यु॰ [इत्येवं], इस प्रकार से, जो कुछ पूर्व में कहा गया है उसके आलोक में, ऐसे – *इच्चेवं सब्बथापि द्वादसाकुसलचित्तानि समत्तानि,* अभि॰ ध॰ स॰ 2; *तत्थ इति–सद्दो वचनवचनीय समुदायनिदस्सनत्थो, एवं–सद्दो वचनवचनीयपटि– पाटिसन्दस्सनत्थो ..., इच्चेवं यथावुत्तनयेन ...,* अभि॰ ध॰ वि॰ 82.

इच्छ त्रि॰, [ईप्सु/इच्छु/इच्छ], चाहने वाला, इच्छा करने वाला – **च्छो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं वुच्चति, भिक्खवे – 'भिक्खु इच्छो विहरति लाभाय,* अ॰ नि॰ 3(1).120; *अयं वुच्चतावुसो, 'भिक्खु इच्छो विहरति लाभाय,* अ॰ नि॰ 3(1).148.

इच्छक त्रि॰, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में ही प्रयुक्त, इच्छा करने वाला, **सुखि॰**- सुख की इच्छा करने वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *नुयुत्ता होन्ति सब्बेपि, वुद्धिकामा सुखिच्छका,* अप॰ 2.105; **यदि॰**- जिस किसी की भी इच्छा करने वाला – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰ – *यत्थिच्छकं यदिच्छकं यावतिच्छकं समापज्जतिपि वुट्ठातिपि,* दी॰ नि॰ 2.55; *यत्थिच्छकन्ति ओकासपरिदीपनं, यत्थ यत्थ ओकासे इच्छति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.93; *यदिच्छकन्ति समापत्तिदीपनं, यं यं समापत्तिं इच्छति,* तदे॰; **येनि॰**- जहां चाहे वहां, अपनी इच्छा के अनुसार – *येनिच्छकं गच्छति गोचराय,* सु॰ नि॰ 39; *येनिच्छकं गच्छति गोचरायति येन येन दिसाभागेन गन्तुमिच्छति, तेन तेन दिसाभागेन गोचराय गच्छति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.66; *इदं पुरे चित्तमचारि चारिकं, येनिच्छकं यत्थकामं यथासुखं,* थेरगा॰ 77.

इच्छता स्त्री॰, इच्छा का भाव॰, इच्छा का होना, स॰ उ॰ प॰ में ही प्राप्त, **महिच्छ॰**- अत्यधिक इच्छा का होना – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *दुप्पोसताय महिच्छताय असन्तुट्ठिताय ... अवण्णं भासित्वा,* महाव॰ 51; *ब्राह्मणी पन महिच्छताय*

पुन एकदिवसं सुवण्णहंसराजस्स आगतकाले "एहि ताव, सामी'ति ..., जा॰ अट्ठ॰ 1.454.

इच्छति √इच्छ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [इच्छति], इच्छा करता है, कामना करता है – *इच्छति सम्पटिच्छति, सम्पटिच्छनं इच्छा अभिच्छा, इच्छं, इच्छमानो,* सद्द॰ 2.453; *यो इच्छति कामेति,* अप॰ अट्ठ॰ 1.294; – **न्ति** ब॰ व॰ – *'मातापितरो पुत्तं इच्छन्ति कुले जायमान'न्ति,* अ॰ नि॰ 2(1).39; – **च्छे / च्छेय्य** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *न पुत्तमिच्छे न धनं न रट्ठं,* ध॰ प॰ 84; *न पुत्तमिच्छेय्य कुतो सहायं,* सु॰ नि॰ 35; – **च्छं** वर्त॰ कृ॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो प्लवती हुरा हुरं, फलमिच्छंव वनस्मि वानरो,* ध॰ प॰ 334; – **च्छि** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *सो तस्सो भरियाय सिनेहेन न इच्छि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 27; – **तब्बं** सं॰ कृ॰, नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एतं तयं केसं इच्छितब्बन्ति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 8; – **च्छापेति** √इच्छ के प्रेर॰ का प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, इच्छा के लिए प्रेरित करता है, इच्छा करवाता है – *'इच्छती ति नरे इत्थी, इच्छापेती ति वा पन,* सद्द॰ 2.363; – **मि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *यदि गरहथ, वदथ, इच्छापेमि वो वत्तुन्ति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.243.

इच्छत्थ त्रि॰, ब॰ स॰ [इच्छार्थक], इच्छा अर्थ को सूचित करने वाला – **त्थेसु** स्त्री॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इच्छत्थेसु तवे तुं वा समानकत्तुकेसु,* सद्द॰ 3.850.

इच्छन नपुं॰, √इच्छ से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [ईप्सन], इच्छा करना, कामना करना, अभिलाषा या तृष्णा करना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *येन देवट्ठाने च मनुस्सट्ठाने च गन्तुं इच्छनं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.133.

इच्छमान त्रि॰, √इच्छ का वर्त॰ कृ॰ [इच्छमान], इच्छा कर रहा, कामना कर रहा – *पथवियं निपन्नस्स, एवं मे आसि चेतसो, इच्छमानो अहं अज्ज, किलेसे झापये मम,* बु॰ वं॰ 2.54; *इच्छमानोति आकङ्खमानो,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 104.

इच्छा[1] स्त्री॰, [इच्छा], इच्छा, कामना, स्पृहा, आकांक्षा, तृष्णा – *तण्हा च तसिणा एजा जालिनी च विसत्तिका ... इच्छाभिलासो कामदोहळा,* अभि॰ प॰ 162-163; प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्छा वुच्चति तण्हा,* महानि॰ 21; 202; *इच्छन्ति एताय आरम्मणानीति इच्छा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 390; *तयो रोगा पुरे आसुं, इच्छा अनसनं, जरा,* सु॰ नि॰ 313; *इति बालस्स सङ्कप्पो, इच्छा मानो च वड्ढति,* ध॰ प॰ 74; – **च्छं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो तस्स कायदुच्चरितस्स पटिच्छादनहेतु पापिकं इच्छं पणिदहति,* अ॰ नि॰ 2(2).66; *न पापिकं इच्छं पणिदहिस्साम,* अ॰ नि॰ 1(2).165; – **य**[1] तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्छाय बज्झती लोको,* स॰ नि॰ 1(1).47; *न हि युज्जति इच्छाय च तण्हाय च अत्थतो अञ्ञत्तं,* नेत्ति॰ 22; – **य**[2] प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सदा इच्छाय निच्छातो अनिच्छो होति निब्बुतो,* सु॰ नि॰ 712; – **य**[3] ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"इच्छाय विप्पहानेन, सब्बं छिन्दति बन्धन"न्ति,* स॰ नि॰ 1(1).47; – **य**[4] सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्छायसन्त्या न ममत्तमत्थि,* सु॰ नि॰ 878; – **नं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पापिच्छो होति न पापिकानं इच्छानं वसंगतो,* दी॰ नि॰ 3.32; *पुग्गलो पापिच्छो, पापिकानं इच्छानं वसं गतो,* म॰ नि॰ 1.137; – **वचर** पु॰, तत्पु॰ स॰ [इच्छावचर], इच्छाओं में विचरण, इच्छाओं में भटकाव – **रानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अकुसलानं इच्छावचरानं अधिवचनं,* म॰ नि॰ 1.33; – **वतिण्ण** त्रि॰, [इच्छावत्तीर्ण], इच्छा से प्रभावित या आक्रान्त – **ण्णानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तेसं इच्छावतिण्णानं, भिय्यो तण्हा पवड्ढथ,* सु॰ नि॰ 308; *ततो तेसं इच्छावतिण्णानं खीरादिपञ्चगोरसस्सादवसेन रसतण्हाय ओत्तिण्णचित्तानं ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.51; – **पकत** त्रि॰, [–प्रकृत], इच्छा से बंधा हुआ – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो भिक्खु पापिच्छो इच्छापकतो असन्तं अभूतं ...,* महाव॰ 123; *पुग्गलो पापिच्छो इच्छापकतो,* मि॰ प॰ 322; – **विनय** पु॰, इच्छा पर संयम या नियन्त्रण – **ये** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्छाविनये तिब्बच्छन्दो होति,* दी॰ नि॰ 3.199; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अति॰, अत्रि॰, अनि॰, अप्पि॰, अभि॰, निरि॰, पापि॰, महि॰, विगति॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

इच्छाकर त्रि॰, किसी की इच्छा को पूर्ण करने वाला – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कामकरोति इच्छाकरो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.233.

इच्छाकरण त्रि॰, अपनी इच्छा के अनुसार काम करने वाला, मनमौजी, स्वेच्छाचारी – **णो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा वा पन ... इस्सरो होति वसवत्ती सामिको इच्छाकरणो,* मि॰ प॰ 324, 325.

इच्छाकारण त्रि॰, ब॰ स॰, इच्छा से उत्पन्न होने वाला, वह, जिसके उदय का कारण इच्छा हो – **णा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इच्छानिदानाति ... इच्छाकारणा इच्छापभवाति – इच्छानिदाना,* महानि॰ 22.

इच्छागत नपुं॰ / स्त्री॰, इच्छा, अभिलाषा – **तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *देवदत्तस्स ... एवरूपं इच्छागतं उप्पज्जि,* चूळव॰ 321; *तस्स मय्हं, भन्ते, एवरूपं इच्छागतं उप्पज्जि,* स॰ नि॰ 1(1).76; – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *या एवरूपा इच्छा*

इच्छागता अतिच्छता रागो सारागो चित्तस्स सारागो–अयं वुच्चति "अतिच्छता", विभ॰ 402; पाठा॰ इच्छागतं.

इच्छाचार पु॰, [इच्छाचार], मनमानीपन, अनियन्त्रित आकांक्षा, उद्दाम इच्छा या कामना, महत्त्वाकांक्षा, उच्चाकांक्षा – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्छाचारं वज्जेत्वा, एव विहरिंसु*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.333; *तस्सतनो नागमने, इच्छाचारं विजानिय*, म॰ वं॰ 1.17; – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं महल्लको इच्छाचारे ठितो*, जा॰ अट्ठ॰ 2.8; *एवं इच्छाचारे ठत्वा पुरेक्खारञ्च भिक्खूसु इच्छति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.293.

इच्छादोस त्रि॰, इच्छाओं के द्वारा प्रदूषित, इच्छा के द्वारा कलंकित – **सा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्छादोसा अयं पजा*, ध॰ प॰ 359.

इच्छाधूमायित / इच्छाधूपायित त्रि॰, इच्छारूपी धुएं से आच्छन्न या ढंका हुआ, इच्छारूपी धुएं से भरा हुआ, इच्छाओं के कारण जल रहा – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मच्चुनाब्भहतो लोको ... इच्छाधूपायितो सदा*, थेरगा॰ 448; महानि॰ 304; *इच्छाधूपायितोति इच्छाय आदित्तो*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.86; *इच्छाधूपायितोति ... इच्छाय सन्तापितो*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.101.

इच्छानङ्गल / इच्छानङ्गल नपुं॰, व्य॰ सं॰, कोशल जनपद में अवस्थित ब्राह्मणों के एक गांव का नाम – **लं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *येन इच्छानङ्गलं नाम कोसलानं ब्राह्मणगामो तदवसरि*, दी॰ नि॰ 1.76; अ॰ नि॰ 2(1).25; – **लं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्छानङ्गलं अनुप्पत्तो इच्छानङ्गले विहरति*, दी॰ नि॰ 1.77; – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गोतमो सक्यपुत्तो ... पब्बजितो इच्छानङ्गले विहरति इच्छानङ्गलवनसण्डे*, सु॰ नि॰ 173; दी॰ नि॰ 1.76; *ब्राह्मणमहासाला इच्छानङ्गले पटिवसन्ति*, सु॰ नि॰ 173; – **क** त्रि॰, इच्छानङ्गल नामक ब्राह्मण ग्राम में रहने वाला या वहां पर उत्पन्न – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञतरो इच्छानङ्गलको उपासको सावत्थिं अनुप्पत्तो होति केनचिदेव करणीयेन*, उदा॰ 82; *इच्छानङ्गलकोति इच्छानङ्गलनामको कोसलेसु एको ब्राह्मणगामो, तंनिवासिताय तत्थ वा जातो भवोति वा इच्छानङ्गलको*, उदा॰ अट्ठ॰ 91; – **का** ब॰ व॰ – *अस्सोसुं खो इच्छानङ्गलका ब्राह्मणगहपतिका ...*, अ॰ नि॰ 2(1).26; – **वनसण्ड** पु॰, कोशल जनपद में अवस्थित एक जंगल का नाम – **ण्डो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *येन इच्छानङ्गलवनसण्डो तेन पायासि*, दी॰ नि॰ 1.78; *येन इच्छानङ्गलवनसण्डो तेनुपसङ्कमिंसु*, अ॰ नि॰ 2(1).26; 2(2).56; – **ण्डे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्छानङ्गले विहरति इच्छानङ्गलवनसण्डे*, सु॰ नि॰ 174; स॰ नि॰ 3(2).395; – **वासी** त्रि॰, इच्छानङ्गल में रहने वाला, इच्छानङ्गल का निवासी – **सिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इच्छानङ्गलवासिनो च सन्निपतिंसु, महासमागमो अहोसि*, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 197; – **वासिक** त्रि॰, उपरिवत् – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तारुक्खो इच्छानङ्गलवासिको*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.300; – **सुत्त** नपुं॰, स॰ नि॰ के आनापानसंयुत्त के एक सुत्त का शीर्षक, स॰ नि॰ 3(2).395-96.

इच्छानिदान त्रि॰, ब॰ स॰, इच्छाहेतुक, इच्छा के कारण से उत्पन्न, तृष्णा से उत्पन्न – **ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इच्छानिदाना भवसातबद्धा, ते दुप्पमुञ्चा न हि अञ्ञमोक्खा*, सु॰ नि॰ 779; *तत्थ इच्छानिदानाति तण्हाहेतुका*, महानि॰ अट्ठ॰ 81; – **नानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इच्छानिदानानि परिग्गहानि*, सु॰ नि॰ 878.

इच्छानिद्देस पु॰, [निर्देश], इच्छा की व्याख्या या विश्लेषण – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्छानिद्देसे जातिधम्मानन्ति जातिसभावानं जातिपकतिकानं*, विभ॰ अट्ठ॰ 101.

इच्छानुकूलक त्रि॰, किसी की इच्छा के अनुकूल रहने वाला, किसी की इच्छा से मेल खाने वाला, किसी की इच्छा के सदृश – **कं** नपुं॰, क्रि॰ वि॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एको व रुक्खो फलति सब्बं इच्छानुकूलकं*, सद्धम्मो॰ 242.

इच्छानुरूप अ॰, क्रि॰ वि॰, किसी की इच्छा के अनुरूप – **पं** नपुं॰, क्रि॰ वि॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स इच्छानुरूपं पयिरुपासिंसु*, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 134; *अत्तनो इच्छानुरूपं तेसं पटिपत्तिं पस्सितुं ...*, उदा॰ अट्ठ॰ 341.

इच्छापकत त्रि॰, इच्छा + पकत / इच्छा + अपकत [इच्छाप्रकृत], अत्यधिक तृष्णा के कारण पीड़ित, स्वभावतः इच्छा से प्रभावित, इच्छा से अभिभूत, तृष्णालु – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्छापकतोति इच्छाय अपकतो, उपद्दुतोति अत्थो*, महानि॰ अट्ठ॰ 269; *इच्छापकतोति इच्छाय अभिभूतो*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.41; *यो भिक्खु पापिच्छो इच्छापकतो असन्तं अभूतं उत्तरिमनुस्सधम्मं उल्लपति*, महाव॰ 123; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लाभसक्कारसिलोकसन्निस्सितस्स पापिच्छस्स इच्छापकतस्स आमिसचक्खुकस्स ...*, महानि॰ 285; *लाभसक्कारसिलोकसन्निस्सितस्स पापिच्छस्स इच्छापकतस्स या परेसं आलपना लपना ...*, विभ॰ 404.

इच्छापच्चय त्रि., इच्छा या तृष्णा से उत्पन्न – **या** पु., प्र. वि., ब. व. – *इच्छानिदानाति इच्छानिदानका इच्छाहेतुका इच्छापच्चया इच्छाकारणा, इच्छापभवाति ...,* महानि. 22.

इच्छापभव त्रि., इच्छा से उत्पन्न, तृष्णा से उद्भूत – **वा** पु., प्र. वि., ब. व. – *"... इच्छानिदानका इच्छाहेतुका इच्छापच्चया इच्छाकारणा इच्छापभवा"ति,* महानि. 22.

इच्छापरियुट्ठान नपुं., इच्छा के द्वारा अभिभूत होने की अवस्था, इच्छा द्वारा आविष्ट या ग्रस्त हो जाना – **नं** प्र. वि., ए. व. – *इच्छापरियुट्ठानं खो पन तथागतप्पवेदिते धम्मविनये परिहानमेतं,* अ. नि. 3(2).132.

इच्छापरियुट्ठित त्रि., परि + उ + √ठा का भू. क. कृ., इच्छा द्वारा अभिभूत, इच्छाग्रस्त – **तेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. – *पापिच्छो खो पन अयमायस्मा, इच्छापरियुट्ठितेन चेतसा बहुलं विहरति,* अ. नि. 3(2).132.

इच्छाबद्ध त्रि., तत्पु. स. [इच्छाबद्ध], इच्छा से बंधा हुआ, तृष्णा एवं लालसा से बंधा हुआ – **द्धा** पु., प्र. वि., ब. व. – *"इच्छाबद्धा पुथू सत्ता, पासेन सकुणी यथा"ति,* स. नि. 1(1).52.

इच्छामत्तोपसाधिय त्रि., [इच्छामात्रोपसाध्य], केवल इच्छा के द्वारा प्राप्य या साध्य, केवल चाहने भर से मिल जाने वाला – **या** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *साधूनं या गति सा मे इच्छामत्तोपसाधिया,* सद्धम्मो. 320.

इच्छारहित त्रि., तत्पु. स. [इच्छारहित], इच्छा से मुक्त, किसी प्रकार की इच्छा न करने वाला – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अप्पिच्छोति, अनिच्छो चतूसु पच्चयेसु इच्छारहितो,* थेरगा. अट्ठ. 2.174.

इच्छारोगापदेस पु., तत्पु. स., इच्छारूपी रोग का व्याज, इच्छारूपी रोग का कारण – **सेन** तृ. वि., ए. व. – *एतेन इच्छारोगापदेसेन सकारणं ब्याधिदुक्खं वुत्तं,* पटि. म. अट्ठ. 2.14.

इच्छालोभ पु., द्व. स., इच्छा और लोभ – **भो** प्र. वि., ए. व. – *इच्छा लोभो च कुम्मग्गो, उजुमग्गो च संयमो,* जा. अट्ठ. 7.142; – **भं** द्वि. वि., ए. व. – *मुसावादं पुरक्खत्वा, इच्छालोभञ्च पापकं,* जा. अट्ठ. 5.370.

इच्छालोभसमापन्न त्रि., तत्पु. स., इच्छा और लोभ से ग्रस्त – **न्नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *इच्छालोभसमापन्नो, समणो किं भविस्सति,* ध. प. 264.

इच्छालोभसमुस्सय त्रि., ब. स., इच्छा और लोभ से उदित होने वाला – **या** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *अविज्जामूलिका सब्बा इच्छालोभसमुस्सया,* इतिवु. 26.

इच्छावचर पु., इच्छा के साथ किए गए सांसारिक क्रिया-कलाप, सकाम कार्य-कलाप, इच्छावशात् प्रवृत्ति – **रा** प्र. वि., ब. व. – *यस्स कस्सचि आवुसो, भिक्खुनो इमे पापका अकुसला इच्छावचरा पहीना दिस्सन्ति चेव सूयन्ति च ...,* म. नि. 1.38; – **रानं** ष. वि., ब. व. – *पापकानं खो एतं, अकुसलानं इच्छावचरानं अधिवचनं,* म. नि. 1.33; *तत्थ इच्छावचरानन्ति इच्छाय अवचरानं, इच्छावसेन ओतिण्णानं पवत्तानं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).153.

इच्छावचरपटिसंहरणलक्खण त्रि., ब. स., इच्छापूर्ण व्यवहार के निराकरण के लक्षण या वैशिष्ट्य से युक्त, वह, जिसका लक्षण इच्छा से भरे हुए व्यवहार का अन्त है – **णो** पु., प्र. वि., ए. व. – *इच्छावचरपटिसंहरणलक्खणो अलोभो,* नेत्ति. 25.

इच्छावतिण्ण त्रि., तत्पु. स. [इच्छावतीर्ण], इच्छाओं से अभिभूत, इच्छाओं से पीड़ित – **ण्णानं** पु., ष. वि., ब. व. – *तेसं इच्छावतिण्णानं, भिय्यो तण्हा पवड्ढथ,* सु. नि. 308.

इच्छावसिक त्रि., इच्छा के वश में रहने वाला, इच्छा का दास – **कं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *परिकड्ढतीति इच्छावसिकं पुग्गलं तत्थ तत्थ उपकड्ढति,* स. नि. टी. 1.123.

इच्छाविघात पु., तत्पु. स. [इच्छाविघात], इच्छा का विघात, तृष्णा का विनाश, इच्छा का भंग – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *विहरन्ते अत्तनो धीतासु आगन्त्वा इच्छाविघातं पत्वा गतासु,* उदा. अट्ठ. 266; – **दुक्ख** नपुं., कर्म. स., इच्छाओं के पूरा न होने के कारण उत्पन्न दुख, इच्छा-भंग से उत्पन्न दुख – **क्खं** प्र. वि., ए. व. – *मनोरथविघातप्पत्तानं इच्छाविघातदुक्खं इच्छितालाभोति ...,* विसुद्धि. 2.135.

इच्छाविघातनिब्बत्तनक त्रि., इच्छा को पूर्ण न होने देने वाला, इच्छा की पूर्ति में बाधा खड़ी करने वाला – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *विघातपक्खिकाति दुक्खभागिया, इच्छाविघातनिब्बत्तनका,* इतिवु. अट्ठ. 235.

इच्छाविनय पु., तत्पु. स. [इच्छाविनय], इच्छा का अपनयन, इच्छा का दूरीकरण या निष्कासन, इच्छा का नाश, सात निद्देसवत्थुओं में तृतीय – **याय** तृ. वि., ए. व. – *इच्छाय बज्झती लोको, इच्छाविनयाय मुच्चति,* स. नि. 1(1).47; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *भिक्खु पापिच्छो होति, इच्छाविनयस्स न वण्णवादी,* अ. नि. 3(2).140; – **ये** सप्त. वि., ए. व. – *इच्छाविनये तिब्बच्छन्दो होति, आयतिञ्च इच्छाविनये अविगतपेमो,* दी. नि. 3.199; अ. नि. 2(2).166.

इच्छाविपरियाय पु., तत्पु. स. [इच्छाविपर्याय], इच्छापूर्ति का वैपरीत्य, इच्छा पूरी होने में उत्पन्न व्यतिक्रम – **ये**

सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्छाविपरियाये आघातवत्थूसु कोधो च उपनाहो च उप्पज्जतीति इदम्पि समत्थनं होति,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 214.

इच्छाविरहित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [इच्छाविरहित], इच्छा या तृष्णा से मुक्त, इच्छा से रहित – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पिच्छोति इच्छाविरहितो निइच्छो नित्तण्हो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).43.

इच्छाविसटगामिनी स्त्री॰, विस्तृत होकर या बहुत फैलकर चलने वाली इच्छा, व्यापक प्रसार वाली तृष्णा, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपरिविसाला दुप्पूरा इच्छा विसटगामिनी,* जा॰ अट्ठ॰ 3.180; जा॰ अट्ठ॰ 4.4; *रूपादीसु आरम्मणेसु तं तं आरम्मणं इच्छमानाय इच्छाय पत्थटाय विसटगामिनी,* जा॰ अट्ठ॰ 3.180.

इच्छाविसिट्ठ त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [इच्छाविशिष्ट], इच्छा की विशिष्टता से युक्त – **ट्ठो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"इच्छ"न्ति एतं अपेक्खति, तदापि अलाभविसिट्ठा इच्छा वुत्ता होति, यदा, "न लभती"ति एतं अपेक्खति, तदा इच्छाविसिट्ठो अलाभो वुत्तो होति,* विभ॰ मू॰ टी॰ 67.

इच्छासभाव त्रि॰, ब॰ स॰, तृष्णालु, इच्छाओं से भरे स्वभाव वाला – **वा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ता पन यस्मा तण्हादिट्ठिकप्पनापरिकप्पितअत्तसुभसुखसस्सतादिप–कतिआदि–धुवादिजीवादिकायादिका विय न इच्छासभावा,* अ॰ नि॰ टी॰ 2.132.

इच्छासहित त्रि॰, तत्पु॰ स॰, इच्छा से युक्त, इच्छा से मिश्रित – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्छावाति एत्थ इच्छासहितो अलाभोवाति च वदन्ति,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.190.

इच्छासुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ के देवतासंयुत्त के एक सुत्त का शीर्षक, स॰ नि॰ 1(1).47.

इच्छाहत त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [इच्छाहत], इच्छा से प्रभावित या अभिभूत – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्छाहतस्स पोसस्स, चक्कं भमति मत्थके"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.396; म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).340.

इच्छाहेतुक त्रि॰, ब॰ स॰ [इच्छाहेतुक], इच्छा से उत्पन्न – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इच्छाहेतुका इच्छापच्चया इच्छाकारणा इच्छापभवा'ति इच्छानिदाना,* महानि॰ 22.

इच्छित / इट्ठ त्रि॰, √इच्छ का भू॰ क॰ कृ॰ [ईप्सित], चाहा हुआ, अभीष्ट, अभीप्सित, इष्ट – **तं**[1] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं वत नो अहोसि इच्छितं, यं आकङ्खितं, यं अधिप्पेतं, यं अभिपत्थितं,* दी॰ नि॰ 1.105; दी॰ नि॰ 2.173; *इच्छितं पत्थितं तुय्हं, खिप्पमेव समिज्झतु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.115; – **तं**[2] नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मनसा इच्छितं लभन्तीति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.229; *एतं मम कामं मया इच्छितं मम वचनं करस्सु,* जा॰ अट्ठ॰ 5.336; – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपि चेत्थ द्विधा चापि सङ्खेपा सन्धि इच्छितो,* सद्द॰ 3.610; *अम्हाकं पन मते "गुण आमन्तणे"ति धातुवसेन निप्फन्नत्ता गोसद्दस्स गोणादेसो न इच्छितो,* सद्द॰ 3.645; – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं आपसद्दस्स एकन्तेन इत्थिलिङ्गता बहुवचनता च आचरियेहि इच्छिता,* सद्द॰ 1.107; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अनि॰, अभि॰, मनो॰, यथि॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **कम्म** नपुं॰, कर्म॰ स॰ [इच्छितकर्म], ईप्सित कर्म, अभीष्ट कर्म, चाहा हुआ कर्म – **म्मं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्छितकम्मं नाम,* सद्द॰ 3.692; *इच्छितकम्मं, नेविच्छितनानिच्छितकम्मं,* सद्द॰ 3.692; विलो॰, *अनिच्छितकम्मं नाम,* सद्द॰ 3.692; – **कारी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, अभीष्ट कर्म को करने वाला – *लद्धयसधनभोगो आदेय्यवचनो बलविच्छितकारी,* मि॰ प॰ 119; – **काल** पु॰, [–काल], अभीष्ट समय, इष्टकाल – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इच्छितकाले गण्हिस्सामी"ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.42; – **ट्ठान** नपुं॰, अभीष्ट स्थान – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मनुस्सा उदकसद्देन वुट्ठाय ... गोणेपि पायेत्वा सोत्थिना इच्छितट्ठानं अगमंसु,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.185; *न सक्का तं पटिपज्जित्वा इच्छितट्ठानं गन्तुं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.103; – **पट्टन** नपुं॰, वह पत्तन या बन्दरगाह जहां पहुंचना अभिप्रेत हो, अभीप्सित बन्दरगाह – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तञ्च नावं अत्तनो इद्धानुभावेन तेहि इच्छितपट्टनं तं दिवसमेव उपनेसि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 46; – **पति** पु॰, [पति], परमप्रिय पति, प्रियतम – **तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो मे इच्छितं पतिं वराकिया,* जा॰ अट्ठ॰ 4.254; *वन्दे ते अयिरब्रह्मे, यो मे इच्छितं पतिं वराकिया, अमतेन अभिसिञ्चि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.257; – **मग्ग** पु॰, कर्म॰ स॰ [इच्छितमार्ग], अभीष्ट पथ, चाहा गया रास्ता, मनपसन्द रास्ता – **ग्गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यदि अत्तना इच्छितमग्गंयेव गन्तुकामत्थाति अधिप्पायो,* उदा॰ अट्ठ॰ 344; – **ताकार** पु॰, कर्म॰ स॰ [इच्छिताकार], मनपसन्द संकेत या इशारा – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कोकालिकस्स इच्छिताकारं दस्सेत्वा ....,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.173; पाठा॰ इङ्गिताकार.

इच्छितत्थ पु॰, कर्म॰ स॰ [इच्छितार्थ], अभीप्सित तात्पर्य, चाहा गया प्रयोजन – **त्थो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपदिसीयाति वा इच्छितत्थो अनेनाति अपदेसो,* दी॰ नि॰ अभि॰ टी॰ 1.303.

इच्छितत्थकसावन नपुं., तत्पु. स., इच्छित अर्थ को सुनाया जाना – **नं** प्र. वि., ए. व. – *अपरे पन भणन्ति "तिरच्छानगतं मनुस्सं वा आविसित्वा, इच्छितत्थकसावनं नाम महामन्तविज्जावसेन होति,* म. नि. टी. (उप.प.) 3.156.

इच्छितत्थनिप्फत्ति स्त्री., तत्पु. स. [इच्छितार्थनिष्पत्ति], चाहे गए प्रयोजन या अभिप्राय की पूर्णता, इच्छित वस्तु की प्राप्ति या कार्यान्वयन, प्र. वि., ए. व. – *अनुत्रासी याव इच्छितत्थनिप्फत्ति,* चरिया. अट्ठ. 260; – **कारणता** स्त्री., भाव., इच्छित अर्थ के कार्यान्वयन में कारणभूत होना, प्र. वि., ए. व. – *रञ्ञो इच्छितत्थनिप्फत्तिकारणताति एवमादीहि दिब्बसदिसेहि आनुभावेहि समन्नागतत्ता,* दी. नि. टी. (लीन.) 2.176.

इच्छितत्थनिब्बत्तन नपुं., तत्पु. स. [इच्छितार्थनिवर्तन], इच्छित वस्तु या इच्छित अभिप्राय की निष्पत्ति अथवा कार्यान्वयन, स. प. के रूप में, – *इच्छितत्थनिब्बत्तनत्थं अपदिसितब्बो, अपदिसीयति वा इच्छितत्थो अनेनाति अपदेसो,* दी. नि. अभि. टी. 1.303.

इच्छितत्थविसेस पु., कर्म. स., इच्छित अर्थ का विशिष्ट-स्वरूप, विशिष्ट प्रकार का इच्छित अर्थ – **तो** प. वि., ए. व. – *अत्थसामञ्ञतो संवण्णेत्वा इच्छितत्थविसेसतोपि संवण्णेतुं "यं वा"ति आदिमाह,* दी. नि. अभि. टी. 1.303.

इच्छितत्थसहित त्रि., तत्पु. स. [इच्छितार्थसहित], अभीप्सित अर्थ से युक्त – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *ननु सब्बेसम्पि वचनं अत्तना इच्छितत्थसहितंयेव,* दी. नि. अभि. टी. 1.303.

इच्छितप्पदेस पु., कर्म. स. [इच्छितप्रदेश], मनोवाञ्छित क्षेत्र, मनचाहा प्रदेश – **सं** द्वि. वि., ए. व. – *इच्छितप्पदेसं अपापुणन्तो अन्तरामग्गेयेव सीहब्यग्घादीहि अनयब्यसनं पापुणाति,* खु. पा. अट्ठ. 54.

इच्छितब्ब त्रि., √इच्छ का सं. कृ. [इच्छितव्य], चाहे जाने योग्य, इच्छा किए जाने योग्य, वाञ्छनीय – **ब्बो** पु., प्र. वि., ए. व. – *न तत्थ अञ्ञो कोचि ततियो इच्छितब्बो,* मि. प. 102; *तेन हि निब्बानस्स उप्पादायपि हेतु इच्छितब्बो,* मि. प. 250; *यदि निब्बानं अत्थि, तस्स निब्बानस्स उट्ठानोकासोपि इच्छितब्बो,* मि. प. 297; *तेन कारणेन पितुनोपि पिता इच्छितब्बो,* मि. प. 250; *आचरियस्सपि आचरियो इच्छितब्बो,* मि. प. 250-51; – **ब्बा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *"अम्म, रञ्ञो पच्छिमासने रक्खा नाम इच्छितब्बा"ति,* जा. अट्ठ. 5.278; *दिट्ठिपि इच्छितब्बा,* महानि. 138; *आतुरस्स सप्पायकिरिया इच्छितब्बा होति,* मि. प. 203; – **ब्बं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *सवनम्पि इच्छितब्बं ..., ञाणम्पि इच्छितब्बं ..., सीलम्पि इच्छितब्बं,* महानि. 138; – **ब्बे** नपुं., सप्त. वि., ए. व. – *इच्छितब्बे अ, इच्छितब्बत्थे अपच्चयो होति,* सद्द. 3.791; – **ब्बानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *सत्त सप्पायानि इच्छितब्बानि,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.119; *आलपनेकवचनानि अवस्स मिच्छतब्बानि,* सद्द. 1.147; – **ब्बानं** ष. वि., ब. व. – *बह्वक्खरेसु इच्छितब्बानं अक्खरानं गहणं होति,* सद्द. 3.876; – **त्थ** पु., तत्पु. स. [इच्छितव्यार्थ], वाञ्छनीय होने का अर्थ – **त्थे** सप्त. वि., ए. व. – *इच्छितब्बत्थे अप्पच्चयो होति,* सद्द. 3.791; – **क** त्रि., इष्ट, अभीष्ट, वाञ्छनीय – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *एवं भवे विज्जमाने, विभवोपि इच्छितब्बको,* बु. वं. 2.10; – **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *एवं तिविधग्गि विज्जन्ते, निब्बानं इच्छितब्बकं,* बु. वं. 2.11; – **के** पु., सप्त. वि., ए. व. – *आगन्तुकानमुस्सुक्कं अकासि इच्छितब्बके,* महाव. 452; – **तर** त्रि., तुल. विशे., दूसरे की तुलना में अत्यधिक प्रशंसनीय, अतिशय संस्तुत्य – **रं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *इच्छितब्बतरं यस्मा, धम्मसेनापतीरितं,* सद्द. 1.253.

इच्छितभण्डग्गहण नपुं., तत्पु. स. [इच्छितभाण्डग्रहण], मनचाहे माल-असबाब को छीन लेना, अभीप्सित सामग्री को ग्रहण कर लेना – **णं** प्र. वि., ए. व. – *गेहं पविसित्वा मनुस्सानं उरे सत्थं ठपेत्वा इच्छितभण्डग्गहणं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).112.

इच्छितलाभ पु., तत्पु. स. [इच्छितलाभ], मनचाही वस्तु को पा लेना, इच्छित पदार्थ या व्यक्ति की प्राप्ति, स. प. के रूप में – *असन्तुट्ठानं इच्छितलाभादिना यो विघातो चित्तस्स होति, सो तत्थ सन्तुट्ठस्स न होतीति,* इतिवु. अट्ठ. 284.

इच्छितवत्थु नपुं., कर्म. स. [इच्छितवस्तु], मनचाही वस्तु, वाञ्छित वस्तु – **स्स** ष. वि., ए. व. – *इच्छितवत्थुस्स समीपे कथनं सामन्तजप्पा,* विसुद्धि. महाटी. 1.51.

इच्छितविहार पु., कर्म. स. [इच्छितविहार], अभीप्सित विहार, मन की इच्छित स्थिति, अभीप्सित मानसिक स्थिति – **रेन** तृ. वि., ए. व. – *पटिकूलादीसु वत्थूसु इच्छितविहारेन विहरितुं समत्थता अरियानं एव,* स. नि. टी. 2(2).152.

इच्छिताकारकुसलता स्त्री., भाव., मनचाहे आकार को निर्मित कर लेने की कुशलता – **य** तृ. वि., ए. व. – *ततो पन भगवतो गन्धकुटिया कवाटं सुबद्धं परिसत्वा इच्छिताकारकुसलताय इद्धिया गन्त्वा कुटिं पविसित्वा आरोचेसि,* वजिर. टी. 434.

इच्छितारम्मण नपुं., कर्म. स. [इच्छितालम्बन], मनोवाञ्छित आलम्बन – **णे** सप्त. वि., ए. व. – *यत्थकामनिपातितोति यत्थ कत्थचि इच्छितारम्मणे निपातिभावतो,* विसुद्धि. महाटी. 2.172.

इच्छितालाभ पु., तत्पु. स. [इच्छितालाभ], जिसके पाने की इच्छा की गई है उसकी अप्राप्ति – **भो** प्र. वि., ए. व. – *इच्छितालाभो नाम यस्स कस्सचि अत्तना इच्छितस्स वत्थुनो अलाभो, "यम्पिच्छं न लभती"ति हि वुत्तं,* विसुद्धि. महाटी. 2.190; – **भं** द्वि. वि., ए. व. – *मत्थकप्पत्तं पन इच्छितालाभं दस्सेतुं पाळियं, "जातिधम्मानं सत्तान"न्तिआदिना निद्दिट्ठन्ति,* विसुद्धि. महाटी. 2.190.

इच्छितालाभदुक्ख नपुं., तत्पु. स., चाही गई वस्तु अथवा व्यक्ति के न मिल पाने के कारण उत्पन्न दुख – **क्खं** प्र. वि., ए. व. – *अमोहेन इच्छितालाभदुक्खं न होति,* ध. स. अट्ठ. 172.

इच्छितालाभहेतु अ., क्रि. वि., मनचाही वस्तु का लाभ न होने का कारण – *तस्मा कामयोगादिवसेन इच्छितालाभहेतु सत्ता विहञ्ञन्ति,* उदा. अट्ठ. 128.

इच्छितिच्छित त्रि., चाही गई कोई भी स्थिति या वस्तु, इच्छा का विषयीभूत कोई भी व्यक्ति, कोई भी इच्छित अथवा वाञ्छित व्यक्ति, चाही गई कोई भी चीज़, जो चाहे सो वस्तु या स्थिति – **तं**[1] स्त्री., द्वि. वि., ए. व. – ... *अहं इच्छितिच्छितं समापत्तिं समापज्जितुं लभामी'ति,* स. नि. अट्ठ. 1.106; *यथा इच्छितिच्छितं दिसं पवत्तेन्तो धावति,* स. नि. अट्ठ. 3.167-168; – **तं**[2] नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *न सक्का होति इच्छितिच्छितं बुद्धवचनं वा गण्हितुं,* स. नि. अट्ठ. 1.38; ... *इच्छितिच्छितं भुञ्जति,* ध. स. अट्ठ. 156; – **खण** पु., इच्छित क्षण, मनचाहा समय – **णे** सप्त. वि., ए. व. – *इच्छितिच्छितक्खणे समापत्तिं वा समापज्जितुं ...,* स. नि. अट्ठ. 1.38; *न मयं, राजपुत्त, इच्छितिच्छितक्खणे सत्थारं दट्ठुं लभामाति,* अ. नि. अट्ठ. 1.220; स. नि. अट्ठ. 2.80; – **ट्ठान** नपुं., [–स्थान], अभीष्ट या वाञ्छित स्थान – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *इच्छितिच्छितट्ठानं सत्थारं गहेत्वा गन्तुं सक्कोति,* स. नि. अट्ठ. 2.158; – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *मातङ्गनागो इच्छितिच्छितट्ठाने सुखं चरति,* ध. प. अट्ठ. 2.298; – **दायक** त्रि., अभीष्ट वस्तु को देने वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *कामददोति इच्छितिच्छितदायको,* पे. व. अट्ठ. 99; – **रूप** नपुं., इच्छित रूप या आकार – **पं** द्वि. वि., ए. व. – *मयं मनापकायिका नाम मनसा इच्छितिच्छितरूपं भावेमा ति,* स. नि. अट्ठ. 1.258; – **लाभी** त्रि., [–लाभिन्], अभीष्ट वस्तु को प्राप्त करने वाला – **भी** पु., प्र. वि., ए. व. – *न निकामलाभीतिआदीसु न इच्छितिच्छितलाभी,* अ. नि. अट्ठ. 3.40.

इच्छितिच्छितधम्मभावना स्त्री., तत्पु. स., पुनः पुनः इच्छा किए गए धर्मों की भावना, प्र. वि., ए. व. – *विपस्सनाकाले इच्छितिच्छितधम्मभावना नत्थि,* सारत्थ. टी. 3.207.

इच्छितिच्छितधारा स्त्री., पुनः पुनः इच्छित वस्तुओं की धारा – **य** ष. वि., ए. व. – *सिङ्घाटकं विय इच्छितिच्छितधाराय पतिट्ठाति,* विभ. अट्ठ. 321.

इच्छितिच्छितप्पकार त्रि., ब. स., मनचाहे प्रकार या आकार वाला – **रा** पु., प्र. वि., ब. व. – *अधिट्ठानचित्तेन सद्धिं इच्छितिच्छितप्पकारायेव होन्तीति,* विसुद्धि. 2.17.

इजन नपुं., क्रि. ना. √इज से व्यु. [एजन, बौ. सं. इञ्जन], प्रकम्पन, गति, चाल – *इजनं एजा,* सद्द. 3.862.

इज्जति / इज्जते √यज का कर्म. वा., वर्त., प्र. पु., ए. व. [इज्यते], पूजित अथवा सम्मानित होता है, सत्कृत होता है – *देवमनुस्सेहि भगवा यजीयति, इज्जति,* सद्द. 2.348; *इज्जते मया बुद्धो,* क. व्या. 505; तुल. यजीयति.

इज्जा स्त्री., **1.** √इज (गत्यर्थक) से व्यु. [एजा], उपरिवत् – *इजनं एजा,* सद्द. 3.862; **2.** √यज से व्यु., [इज्या], यज्ञ, उपहार, दान, यज्ञकर्म, प्र. वि., ए. व. – *इज्जा यजनं,* रू. सि. 292(सिंहली).

इज्झति √इध का वर्त., प्र. पु., ए. व. [ऋध्यति], संपन्न या समृद्ध होता है, फलता-फूलता है, बढ़ता है, सफल होता है, विकसित होता है, सन्तुष्ट अथवा तृप्त कर देता है – *"कथञ्हि यजमानस्स कथं इज्झति दक्खिणा"ति,* स. नि. 1(1).204; *इज्झतीति समिज्झति महप्फलो होति,* स. नि. अट्ठ. 1.228; *इज्झतीति इद्धि, समिज्झति निप्फज्जतीति अत्थो,* उदा. अट्ठ. 248; – **न्ति** ब. व. – *पूजेथ अन्नपानेन, एवं इज्झन्ति दक्खिणा,* सु. नि. 489; *पयोजयन्ति कम्मानि, तानि इज्झन्ति वा न वा,* जा. अट्ठ. 6.44; *इज्झन्ति वा एताय सत्ता इद्धा वुद्धा उक्कंसगता होन्तीति इद्धि,* उदा.

अट्ठ. 248; – **तु** अनु., प्र. पु., ए. व. – *सो ते इज्झतु सङ्कप्पो, लभस्सु विपुलं सुखं,* अप. 2.47; – **न्तु** ब. व. – *ते ते इज्झन्तु सङ्कप्पा, लभ चक्खूनि ब्राह्मण,* जा. अट्ठ. 4.362; – **स्सति** भवि., प्र. पु., ए. व. – *महन्तं कुलपुत्तस्स चित्तं, इज्झिस्सति नु खो, नो'ति,* स. नि. अट्ठ. 2.81; – **ज्झे** विधि., प्र. पु., ए. व. – *अद्धा हि तस्स हुतमिज्झे,* सु. नि. 463; – **ज्झि** अद्य., प्र. पु., ए. व. – *आसिंसना इज्झि यथा हि मय्हं,* जि. च. 217; – **ज्झिंसु** ब. व. – *ते मे इज्झिंसु सङ्कप्पा, यदत्थो पाविसिं कुटिं,* थेरगा. 60; ... *ते सब्बेव इदानि मय्हं इज्झिंसु समिज्झिंसु, निप्फन्नकुसलसङ्कप्पो परिपुण्णमनोरथो जातोति अत्थो,* थेरगा. अट्ठ. 1.148.

इज्झते √इध का वर्त., प्र. पु., ए. व., आत्मने., उपरिवत् – *"यत्थ हुतं इज्झते ब्रूहि मे तं,* सु. नि. 465.

इज्झन नपुं., क्रि. ना., √इध से व्यु., फलदायी होना, वृद्धि या विकास करना, समुन्नति, समृद्धि – **नं** प्र. वि., ए. व. – *इज्झनं, समिज्झनं, इद्धो,* सद्द. 2.484; – **नट्ठ** पु., तत्पु. स., समृद्धि अथवा प्रतिलाभ का अर्थ, विकास का अर्थ, सफल सम्पादन अथवा सफल कार्यान्वयन का आशय – **ट्ठो** प्र. वि., ए. व. – *इद्धिपादानं इज्झनट्ठो अभिञ्ञेय्यो,* पटि. म. 16; *वीरियस्स इज्झनट्ठो अभिञ्ञेय्यो,* पटि. म. 17; *इज्झनट्ठोति निप्फज्जनट्ठो पतिट्ठानट्ठो वा,* पटि. म. अट्ठ. 1.85; – **ट्ठं** द्वि. वि., ए. व. – *वीमंसाय इज्झनट्ठं बुज्झन्तीति बोज्झङ्गा,* पटि. म. 298; – **ट्ठेन** तृ. वि., ए. व. – *इज्झनट्ठेन इद्धिपादा तदा समुदागता,* पटि. म. 68; *इज्झनट्ठेन इद्धिपादं समोधानेति,* पटि. म. 173; *इद्धिविधे ञाणन्ति इज्झनट्ठेन, इद्धि, निप्फत्तिअत्थेन पटिलाभट्ठेन चाति वुत्तं होति,* पटि. म. अट्ठ. 1.43; – **ट्ठे** सप्त. वि., ए. व. – *अधिट्ठानवसेन इज्झनट्ठे पञ्ञा इद्धिविधे ञाणं,* पटि. म. 3; – **भाव** पु., तत्पु. स., सफल निष्पादन की अवस्था, सफल कार्यान्वयन अथवा सफल निष्पत्ति की दशा – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *तेसं पत्थनाय समिज्झनभावं ञत्वा,* ध. प. अट्ठ. 2.317; पाठा. समिज्झनभावं; – **सभाव** पु., सफल कार्यान्वयन का स्वभाव, सफल निष्पत्ति की प्रकृति – **वे** सप्त. वि., ए. व. – *इज्झनट्ठे पञ्ञाति इज्झनसभावे पञ्ञा,* पटि. म. अट्ठ. 1.43; – **ना** स्त्री., √इध से व्यु., क्रि. ना., समृद्धि, सफलता, पूर्णता, विकास, सफल कार्यान्वयन, प्र. वि., ए. व. – ... *या तेसं धम्मानं इद्धि समिद्धि इज्झना समिज्झना लाभो पटिलाभो,* विभ. 244; – **नाकार** पु., तत्पु. स., सफल कार्यान्वयन का ही एक रूप अथवा एक प्रकार – **रो** प्र. वि., ए. व. – *इज्झनाकारो इज्झना,* विभ. अट्ठ. 288.

इज्झनइद्धि स्त्री., कर्म. स., सफलतापूर्ण ऋद्धि, सफलता से परिपूर्ण ऋद्धि, प्र. वि., ए. व. – *तत्थ अधिप्पायइद्धीति अधिप्पायइद्धि, यथाधिप्पायं इज्झनइद्धीति अत्थो,* प. प. अट्ठ. 275.

इज्झनक त्रि., समृद्धि, परिपूर्णता अथवा सफलता को लाने वाला, समृद्धिकारी – **स्स** ष. वि., ए. व. – *सीलन्ति कामञ्चेतं सह कम्मवाचापरियोसानेन इज्झनकस्स पातिमोक्खस्सेव वेवचनं,* सारत्थ. टी. 3.32.

इज्झनककोट्ठास पु., कर्म. स., चित्त में वशिता आदि शक्तियां उत्पन्न करने अथवा उसे समुन्नत एवं समृद्ध बनाने वाला खण्ड या भाग (ऋद्धिपाद) – **सा** प्र. वि., ब. व. – *इद्धिपादाति इज्झनककोट्ठासा,* स. नि. अट्ठ. 1.159-160; *इज्झनककोट्ठासाति चेतोवसिभावादिकस्स साधनककोट्ठासा,* स. नि. टी. 1.187.

इज्झनकपयोग पु., तत्पु. स., समृद्ध एवं समुन्नत बनाने हेतु व्यावहारिक प्रयोग – **गो** प्र. वि., ए. व. – *परकारो च नाम परस्स वाहसा इज्झनकपयोगो,* दी. नि. अभि. टी. 2.34.

इज्झनकरणूपायभाव पु., समृद्ध करने का उपायभूत होना – **तो** प. वि., ए. व. – *सक्का, पादस्स इज्झमानकोट्ठास इज्झनकरणूपायभावतो,* नेत्ति. टी. 49; *दुतियेनत्थेन इतरसमासेनेव योजना युज्जति पादस्स इज्झनकरणूपायभावतो,* विभ. अनुटी. 162.

इज्झनकविसेस पु., समृद्धि या समुत्थान लाने वाली विशेष प्रकार की ऋद्धि – *सङ्खेपेन पन परिपाकगते पुञ्ञसम्भारे इज्झनकविसेसो पुञ्ञवतो इद्धि,* पटि. म. अट्ठ. 2.276.

इज्झनकिरिया स्त्री., तत्पु. स., समृद्ध या समुन्नत बनाने की क्रिया – **य** तृ. वि., ए. व. – *इज्झनकिरियाय करणभूतेन अत्थेन साधेतब्बा च इद्धि पज्जितब्बाति योजना,* विभ. अनुटी. 162.

इज्झनत्थ पु., तत्पु. स., समृद्धि अथवा सम्पूर्णता का अर्थ या अभिप्राय – **त्थं** द्वि. वि., ए. व., क्रि. वि. – *कायम्पि चित्ते समोदहतीतिआदि इद्धिकरणकाले यथासुखं चित्तचारस्स इज्झनत्थं योगविधानं दस्सेतुं वुत्तं,* पटि. म. अट्ठ. 1.277; – **त्थो** प्र. वि., ए. व. – *इज्झनत्थो पन सब्बेसं समानन्ति,* स. नि. टी. 2(3).212.

इज्झनपज्जनकिरियाकरण नपुं., तत्पु. स., इज्झन (समृद्ध करना) एवं 'पज्जन' (प्राप्त करना), इन दोनों क्रियाओं का

करण – **नं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *द्विन्नं करणानन्ति इज्झनपज्जन-किरियाकरणानं इद्धिपादत्थानं*, विभ॰ अनुटी॰ 162.

इज्झनलक्खण नपुं॰, समृद्धि अथवा समुन्नति का लक्षण – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिपादानं इज्झनलक्खणं*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.60.

इज्झन्त त्रि॰, √इज्झ का वर्त॰ कृ॰, समृद्धि या वृद्धि को प्राप्त कर रहा – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इज्झन्तञ्च सहेव इज्झति*, म॰ नि॰ टी॰ (मू॰प॰) 1(1).209.

इज्झमान त्रि॰, √इध का वर्त॰ कृ॰, वृद्धि अथवा समृद्धि को प्राप्त हो रहा, बढ़ रहा, विकसित हो रहा, फल-फूल रहा – **ने** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सम्पयुत्तधम्मेसु हि एकस्मिं इज्झमाने सेसापि इज्झन्तियेव*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.285.

इज्झमानकोट्ठास पु॰, कर्म॰ स॰, वृद्धि को प्राप्त कर रहा भाग या खण्ड, स॰ प॰ के अन्त॰, – *पादस्स इज्झमानकोट्ठासइज्झनकरणूपायभावतो*, विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.17; *सक्का पादस्स इज्झमानकोट्ठास-इज्झनकरणूपायभावतो*, नेत्ति॰ टी॰ 49.

इज्झमानविसेस पु॰, कर्म॰ स॰, विशेष प्रकार का समृद्धिलाभी, समृद्धि प्राप्त करने वाले का विशिष्ट स्वरूप – *इमाय इद्धिया इज्झमानविसेसं दस्सेन्तो सन्तिकेपीति आदिमाह*, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.251.

इज्झितब्बभावना स्त्री॰, कर्म॰ स॰, संवर्धित करने योग्य भावना, सुदृढ़ किए जाने योग्य भावना – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समीपे वल्लिआदीनं हरणं विय कम्मट्ठाने खलनपक्खलनच्छेदनं इज्झितब्बभावनाय विबन्धापनयनतो*, म॰ नि॰ टी॰ (मू॰प॰) 1(2).249.

इञ्ज त्रि॰, √इञ्ज से व्यु॰, अनियमित स्वरूप का विशे॰, कम्पनयुक्त, स्खलनशील, अध्रुव, अस्थिर – **ञ्जं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न इञ्जं अनेञ्जं, अनेञ्जं भवं अभिसङ्खरोतीति आनेञ्जाभिसङ्खारो*, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.222.

इञ्जति √इञ्ज (गति या कांपना, हिलना-डुलना) का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [वैदिक, ऋञ्जते, बौ॰ सं॰, इञ्जते / इञ्जति], **शा॰ अ॰,** हिलता है, कांपता है, प्रकम्पित होता है, चलता है – *वातेन न समीरति न इञ्जति न चलति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.330-31; *गच्छतो खो पन तस्स भोतो गोतमस्स अधरकायोव इञ्जति, न च कायबलेन गच्छति*, म॰ नि॰ 2.346; **ला॰ अ॰,** (व्यक्ति, शरीर या मन) हिल-डुल जाता है, उद्विग्न हो जाता है, अस्त-व्यस्त हो जाता है, उद्विग्न या बैचेन हो जाता है, बाधित हो जाता है – *सद्धापरिग्गहितञ्हि चित्तं अस्सद्धियेन न इञ्जति*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.117; *अनोणतं चित्तं कोसज्जे न इञ्जतीति आनेञ्जं*, उदा॰ अट्ठ॰ 150; *सो लाभेपि न इञ्जति, अलाभेपि न इञ्जति ... न चलति न वेधति नप्पवेधति न सम्पवेधतीति*, महानि॰ 260; – **न्ति** ब॰ व॰ – *न इञ्जन्तीति एसिकत्थम्भो विय ठितत्ता न चलन्ति*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.302; ... *यस्मा इमेहि किलेसेहि सत्ता इञ्जन्ति चेव फन्दन्ति च पपञ्चिता च होन्ति पमत्ताकारपत्ता* ..., स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.111.

इञ्जन नपुं॰, √इञ्ज से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [बौ॰ सं॰, इञ्जन], गति, चाल, हिलना-डुलना, प्रकम्पन, स्पन्दन – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इञ्जितस्मिं वदामीति इञ्जनं चलनं फन्दनन्ति वदामि*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.122; – **नानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बेसं इञ्जनानं अभावतो वसीभावप्पत्तियाव ठितं* ..., उदा॰ अट्ठ॰ 200; स॰ उ॰ प॰ के रूप में किलेसि॰ के अन्त॰, द्रष्ट॰.

इञ्जनक त्रि॰, स्पन्दनशील, चलनशील, चञ्चल स्वभाव का – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इञ्जितातिं इञ्जनका चलनका, तथा फन्दिता*, सारत्थ॰ टी॰ 2.189; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रूपतण्हासङ्खातस्स इञ्जनकस्स कारणत्ता वा*, विभ॰ मू॰ टी॰ 94.

इञ्जनकरनीवरण नपुं॰, कर्म॰ स॰, स्पन्दन एवं विक्षोभ उत्पन्न करने वाला नीवरण, स॰ प॰ के अन्त॰, – *रूपमेव सफन्दनत्ता "सइञ्जन"न्ति वुत्तं इञ्जनकरनीवरणादीनं अविक्खम्भनतो*, विभ॰ मू॰ टी॰ 94.

इञ्जना स्त्री॰, √इञ्ज से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, लिङ्गव्यत्यय [बौ॰ सं॰, इञ्जना], शरीर की गति या चाल-ढाल, मन की चञ्चलता, शारीरिक चेष्टा, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समिञ्जेति पसारेति, एसा कायस्स इञ्जना*, सु॰ नि॰ 195; *एसा कायस्स इञ्जनाति सब्बापेसा इमस्सेव सविञ्ञाणकस्स कायस्स इञ्जना चलना फन्दना*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.207; *या कायस्स आनमना विनमना सन्नमना पणमना इञ्जना फन्दना चलना पकम्पना* ..., पटि॰ म॰ 177.

इञ्जमान त्रि॰, √इञ्ज का वर्त॰ कृ॰, केवल निषेधार्थक रूप में ही प्राप्त, **अनिञ्ज॰**- स्थिर, नहीं हिल-डुल रहा – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनिञ्जमानेन ठितेन वग्गुना*, स॰ नि॰ 1(1).210; – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनिञ्जमानो कायेन, अभासमानो वाचं*, म॰ नि॰ 1.131.

इञ्जयति √इञ्ज के प्रेर॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, गतिशील कराता है, चलाता है, हिला देता है – **युं** अद्य॰, प्र॰ पु॰,

ब॰ व॰ – *नेसं लोमापि इञ्जयुन्ति तेसं वीतरागानं लोमानिपि न चालयिंसु,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.257.

इञ्जित 1. त्रि॰, √इञ्ज का भू॰ क॰ कृ॰ [बौ॰ सं॰ इञ्जित], हिल डुल रहा, अस्थिर, कांप रहा, स्पन्दित, फड़क रहा – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इञ्जितोति कम्पितो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.68; – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कायोपि चित्तम्पि सारद्धा च होन्ति इञ्जिता च फन्दिता च,* पटि॰ म॰ 160; *ततो मन्दतरेन इञ्जिता कम्पिता,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.68; **2. क.** नपुं॰, गति, मन का विक्षोभ, मन का स्पन्दन, संवेग, व्याकुलता – **तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इञ्जितन्ति चलितं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.295; *नत्थि बुद्धानमिञ्जितं,* ध॰ प॰ 255; **2.ख.** राग, दोस, मोह, मान, दिट्ठि, किलेस एवं दुच्चरित नामक सात अकुशल चित्तवृत्तियां, जो मन में विक्षोभ अथवा व्याकुलता उत्पन्न करती हैं – **तानि / ता** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इञ्जितन्ति रागिञ्जितं दोसमोहमानदिट्ठिकिलेसदुच्चरितिञ्जितन्ति इमानि सत्त इञ्जितानि चलितानि फन्दितानि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.102; **2. ग.** कहीं-कहीं चित्त की नौ प्रकार की व्यग्रताएं भी नौ इञ्जितों के नाम से परिगणित – *तत्थ कतमानि नव इञ्जितानि ? "अस्मी"ति इञ्जितमेतं, "अहमस्मी"ति इञ्जितमेतं, "अयमहमस्मी"ति इञ्जितमेतं "भविस्स"न्ति इञ्जितमेतं, "रूपी भविस्स"न्ति इञ्जितमेतं, "अरूपी भविस्स"न्ति इञ्जितमेतं, "सञ्ञी भविस्स"न्ति इञ्जितमेतं, "असञ्ञी भविस्स"न्ति इञ्जितमेतं "नेवसञ्ञीनासञ्ञी भविस्स"न्ति, इञ्जितमेतं इमानि नव इञ्जितानि,* विभ॰ 457-58; **2.घ.** केवल कुछ ही स्थलों में तण्हा-विप्फन्दित एवं दिट्ठिविप्फन्दित का उल्लेख दो इञ्जितों के रूप में – *इञ्जितानि तण्हादिट्ठिविप्फन्दितानि,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.278; – **स्मिं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदं खो अहं, उदायि, इञ्जितस्मिं वदामि,* म॰ नि॰ 2.126; – **तानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इञ्जितानं निरोधेन, नत्थि दुक्खस्स सम्भवो,* सु॰ नि॰ 755; – **पच्चय** त्रि॰, गति अथवा मन के विक्षोभ के कारण उत्पन्न – **या** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति, सब्बं इञ्जितपच्चया,* सु॰ नि॰ 755; स॰ उ॰ प॰ के रूप में किलेसि॰, दिट्ठि॰, दुच्चरिति॰, दोसि॰, मानि॰, मोहि॰, रागि॰ के अन्त॰, द्रष्ट॰.

इञ्जितकारण नपुं॰, तत्पु॰ स॰, चञ्चलता का कारण, विक्षोभ का कारण – **णानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चित्तस्स इञ्जितकारणानं ब्यापादादीनं सुप्पहीनत्ता पच्चयुप्पन्निञ्जनाय च,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.76.

इञ्जितत्त नपुं॰, इञ्जित का भाव॰, गतिमयता, अस्थिरता, व्यग्रता, प्रकम्पनता, बौखलाहट, स्पन्दनशीलता – **त्तं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समाधिस्स भावितत्ता बहुलीकतत्ता नेव कायस्स इञ्जितत्तं वा होति फन्दितत्तं वा, न चित्तस्स इञ्जितत्तं वा होति फन्दितत्तं वा,* स॰ नि॰ 3(2).386; – **त्तं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पस्सथ नो तुम्हे ... कायस्स इञ्जितत्तं वा फन्दितत्तं वा ति ?,* स॰ नि॰ 3(2).386; *सत्तमे इञ्जितत्तं वा फन्दितत्तं वाति उभयेनपि चलनमेव कथितं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.295.

इञ्जेति / इञ्जयति / इञ्जते √इञ्ज का प्रेर॰ प्रयोग, प्रायः इञ्जति के साथ व्यामिश्रित, प्रायः "लोमम्पि" के साथ ही प्रयुक्त [बौ॰ सं॰ इञ्जयति], **शा॰ अ॰,** कंपाता है, हिलाता है, गतिशील करता है, **ला॰ अ॰,** बाल बांका करता है कुछ कुछ प्रभावित कर देता है – **ञ्जामि** वर्त॰, उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *लोमं न इञ्जामि न सन्तसामि,* स॰ नि॰ 1(1).156; (रोएं को नहीं हिलाता हूं, नहीं डरता हूं); – **ञ्जे** विधि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ – *लोमं न इञ्जे न सम्पवेधे,* अप॰ 2.225; (रोएं को भी खड़ा न करें, प्रकम्पित न करें) – *लोमं न इञ्जे नपि सम्पवेधे,* थेरीगा॰ 231; – **ञ्जयुं** अद्य॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *वीतरागेहि पक्कामुं, नेसं लोमापि इञ्जयुं,* दी॰ नि॰ 2.193; (वीतराग आर्यजनों से बहुत दूर के क्षेत्र से ही मार की सेनाएं भाग गईं, उनके बाल भी बांका न कर सकीं) – *नेसं लोमापि इञ्जयुन्ति तेसं वीतरागानं लोमानिपि न चालयिंसु,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.257.

इट्टिय / इट्ठिय / इत्तिय / इद्धिय पु॰, व्य॰ सं॰, महिन्द के साथ श्रीलङ्का-द्वीप जाने वाले अनेक भिक्षुओं में से एक, प्रायः उत्तिय, सम्बल एवं भद्दसाल के साथ उल्लिखित – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततो महिन्दो इट्टियो, उत्तियो सम्बलो तथा भद्दनामो च पण्डितो,* परि॰ 3; – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महामहिन्दत्थेरं तं थेरं इट्ठियमुत्तियं,* म॰ वं॰ 12.7.

इट्टियत्थेर पु॰, इट्ठिय नामक स्थविर – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इट्टियत्थेरेन उत्तियत्थेरेन भद्दसालत्थेरेन सम्बलत्थेरेन च सद्धिं तम्बपण्णिदीपं गन्त्वा एत्थ सासनं पतिट्ठापेथाति,* थू॰ वं॰ 192; पारा॰ अट्ठ॰ 1.46.

इट्ठ[1] त्रि॰, √यज का भू॰ क॰ कृ॰ [इष्ट], पूज्य, आदरणीय, याज्ञिक अनुष्ठान द्वारा पूजित – **ट्ठं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यजस्स यस्स टि यि होन्ति कानुबन्धे त्वे, इट्ठं, यिट्ठं ...,* मो॰ व्या॰ 5.113.

इट्ठ[2] **1.** त्रि॰, √इच्छ का भू॰ क॰ कृ॰ [इष्ट], कामना किया गया, जिसे चाहा गया, वह, जिसकी इच्छा की गई हो, मन

के लिए अनुकूल, मनोवाञ्छित, प्रिय, अनुकूल, प्यारा. 2. नपुं., अनुकूल अथवा सुखद स्थिति, आनन्द, हर्षोल्लास – *इट्ठं तु सुभगं हज्जं, दयितं वल्लभं पियं,* अभि. प. 697; *तत्थ दुक्खन्ति न सुखं, अनाराधितचित्तताय न इट्ठन्ति अत्थो,* उदा. अट्ठ. 201; – **ट्ठो** पु., प्र. वि., ए. व. – *ठानञ्च खो, एतं, भिक्खवे, विज्जति यं कायसुचरितस्स इट्ठो कन्तो मनापो विपाको निब्बत्तेय्य,* अ. नि. 1(1).41; *पुग्गलो पुग्गलस्स इट्ठो होति कन्तो मनापो,* अ. नि. 1(2).242; *अयं पठमो धम्मो इट्ठो कन्तो मनापो दुल्लभो लोकस्मिं,* अ. नि. 1(2).76; – **ट्ठं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *अभिजानामि ... इट्ठं कन्तं मनापं विपाकं पच्चनुभूतं,* अ. नि. 2(2).227; इतिवु. 12; – **ट्ठा** पु., प्र. वि., ब. व. – *इट्ठा धम्मा अनिट्ठा च, न पवेधेन्ति तादिनो,* महाव. 257; थेरगा. 644; – **ट्ठं**[1] नपुं., प्र. वि., ए. व. – *ब्रह्मचरियं इट्ठं कन्तं मनापं दुल्लभं लोकस्मिं,* अ. नि. 3(2).112; *इट्ठं वत्थु दुप्पमुञ्चं,* महानि. 22; *इट्ठं कन्तं पियं लोके, जलजं पुप्फमुत्तमं,* अप. 1.84; – **ट्ठं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *यदेसमाना विचरन्ति लोके, इट्ठञ्च कन्तञ्च बहूनमेतं,* जा. अट्ठ. 4.278; *इट्ठं वत्थुं अच्छेदसङ्किनोपि कोधो जायति,* महानि. 195; – **ट्ठाय** नपुं., च. वि., ए. व. – ... *सब्बे ते धम्मा इट्ठाय कन्ताय मनापाय हिताय सुखाय संवत्तन्ति,* अ. नि. 1(1).45; – **स्मा** नपुं., प. वि., ए. व. – *इट्ठस्मा वत्थुस्मा दुम्मोचया,* महानि. 22; – **स्स** नपुं., ष. वि., ए. व. – *सुखस्सेतं भिक्खवे अधिवचनं इट्ठस्स कन्तस्स पियस्स मनापस्स यदिदं पुञ्ञानि,* इतिवु. 12; – **ट्ठे** नपुं., सप्त. वि., ए. व. – *कच्चि इट्ठे अनिट्ठे च, सङ्कप्पस्स वसीकता,* सु. नि. 154; *इट्ठे अनिट्ठे चाति एवरूपे आरम्मणे,* सु. नि. अट्ठ. 1.174; – **ट्ठा** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *चक्खुविञ्ञेय्या रूपा इट्ठा कन्ता मनापा पियरूपा कामूपसंहिता रजनीया,* म. नि. 1.119; – **ट्ठानि** नपुं., द्वि. वि., ब. व. – ... *सो यथावुत्तपुग्गलो इधलोके च परलोके च इट्ठानि न पस्सति, न विन्दति, न लभतीति अत्थो,* पे. व. अट्ठ. 102; – **ट्ठेहि** नपुं., तृ. वि., ब. व. – *चक्खुविञ्ञेय्येहि रूपेहि इट्ठेहि कन्तेहि मनापेहि पियरूपेहि ...,* म. नि. 1.337; – **ट्ठानं** नपुं., ष. वि., ब. व. – *चक्खुविञ्ञेय्यानं रूपानं इट्ठानं कन्तानं मनापानं मनोरमानं ...,* म. नि. 3.265; स. उ. प. के रूप में अति., अनि. के अन्त., द्रष्ट..

इट्ठं अ., क्रि. वि. [इष्टं], स्वेच्छापूर्वक, अपनी मर्जी के अनुसार – *कामं त्विट्ठं निकामञ्च परियत्तं यथिच्छितं,* अभि. प. 469.

इट्ठककञ्चुक पु., तत्पु. स., खपड़ों से बनाई हुई छत, ईंटों की दोहरी चिनाई से बनी छत – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *गलम्बतित्थे थूपम्हि कारेसिट्ठककञ्चुकं,* म. वं. 35.85.

इट्ठककपाल पु., तत्पु. स., ईंटों से निर्मित पात्र (कड़ाही), ईंटों के ऊपर रखा गया पात्र (कड़ाही), ईंटों का ढेर या ईंटों का ठीकरा, स. प. के अन्त. – *इट्ठककपालादीसुपि एसेव नयो,* पाचि. अट्ठ. 21.

इट्ठककम्म नपुं., तत्पु. स. [इष्टिकाकर्म], ईंट का काम, स. प. में प्रयुक्त – *अचिरकारितं होतीति इट्ठककम्मसुधाकम्मचित्तकम्मादिवसेन सुसज्जितं देवविमानं विय अधुना निट्ठापितं,* स. नि. अट्ठ. 3.85.

इट्ठककुट्टिक स्त्री., तत्पु. स. [इष्टिकाकुड्यक], ईंटों की दीवार – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *एवं कतं पन दारुकुट्टिकं वा इट्ठककुट्टिकं वा सिलाकुट्टिकं वा ...,* पारा. अट्ठ. 2.142; – **काय** ष. वि., ए. व. – *इट्ठककुट्टिकाय इट्ठकाहियेव वातपाने च धूमनेत्तानि च करोति ...,* पारा. अट्ठ. 2.143.

इट्ठकगोपानसिचय पु., ईंटों की कड़ियों या शहतीरों का ढेर, स. प. के रूप में – *यथा इट्ठकगोपानसिचयादीसु न उपरिमा इट्ठकादयो जानन्ति,* खु. पा. अट्ठ. 38.

इट्ठकचय / इट्ठकाचय पु., तत्पु. स. [इष्टिकाचय], ईंटों का ठीकरा, ईंटों का ढेर – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *तयो चये इट्ठकाचयं, सिलाचयं दारुचयन्ति,* चूळव. 235; – **येन** तृ. वि., ए. व. – *को पन वादो इट्ठकचयेन सम्पन्ने वेदिकापरिक्खित्ते,* विन. स. अट्ठ. 360.

इट्ठकचयनसम्पन्न त्रि., तत्पु. स. [इष्टिकाप्रचयसम्पन्न], बहुत सारे ईंटों वाला, ईंटों के ढेर से भरा हुआ – **न्ने** पु., सप्त. वि., ए. व. – *उच्चे चङ्कमे चङ्कमतीति इट्ठकचयनसम्पन्ने वेदिकापरिक्खित्ते उच्चे चङ्कमे चङ्कमति,* महानि. अट्ठ. 269.

इट्ठकचित नपुं., ईंटों की चुनाई, नींव – **ताय** च. वि., ए. व. – *इट्ठकचिताय याव मङ्गलिट्ठका ताव कुट्टा अपचिनितब्बा,* पारा. अट्ठ. 2.143.

इट्ठकचुण्ण नपुं., तत्पु. स. [इष्टिकाचूर्ण], ईंटों का चूरा या बुकनी – **ण्णं** द्वि. वि., ए. व. – *लग्गेत्वा सीसे इट्ठकचुण्णं ओकिरित्वा ...,* जा. अट्ठ. 3.50; – **ण्णेन** तृ. वि., ए. व. – *यथा च वासिया एवं अञ्जनिया वा ... इट्ठकचुण्णेन ... , अग्घो भस्सति,* पारा. अट्ठ. 1.246; *पञ्च चूळा गाहापेत्वा इट्ठकचुण्णेन ओकिरापेत्वा ...,* जा. अट्ठ. 6.234.

इट्ठकचुण्णमक्खितसीस त्रि., ब. स. [इष्टिकाचूर्णमृष्टशीर्ष], ईंटों की धूल से लिपे हुए शिर वाला – **सं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *इट्ठकचुण्णमक्खितसीसं वज्झपहटभेरिदेसितमग्गं*

रथिकाय रथिकं... आघातनाभिमुखं नेति, पे. व. अट्ठ. 5.

इट्ठकच्छदन / इट्ठिकाछदन 1. त्रि., ब. स. [इष्टिकाछदन], ईंट द्वारा छायी हुई छत वाला – **ने** पु., सप्त. वि., ए. व. – *इट्ठिकाछदने तस्मिं सङ्घारामे अलङ्कते,* चू. वं. 100.87; *परियेसितब्बन्ति तिणच्छदने वा इट्ठकच्छदने वा गेहे पलुज्जन्ते* ..., स. नि. अट्ठ. 3.144; 2. नपुं., तत्पु. स., ईंटों द्वारा तैयार की गयी छत, पक्की छत, स. प. में; – *इट्ठकच्छदनसदिसञ्च खरसम्फस्सं चम्मं,* सु. नि. अट्ठ. 2.34.

इट्ठकपण्णाकार पु., तत्पु. स., ईंटों का उपहार या दान, ईंटों की भेंट – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *पातोव आगन्त्वा अत्तनादिट्ठं इट्ठकपण्णाकारं रञ्ञो निवेदेसि,* थू. वं. 219(रो.).

इट्ठकप्पमाण नपुं., तत्पु. स. [इष्टिकाप्रमाण], ईंटों का आकार, ईंटों की लम्बाई-चौड़ाई – **णं** द्वि. वि., ए. व. – *इट्ठकप्पमाणं जानित्वा,* थू. वं. 229(रो.).

इट्ठकपाकार / इट्ठकापाकार पु., तत्पु. स. [इष्टिकाप्राकार], ईंटों से बनाया गया घेरा, ईंटों से बना हुआ परकोटा अथवा घेराबन्दी करने वाली दीवाल – **रो** प्र. वि., ए. व. – *सचे इट्ठकपाकारो होति,* पाचि. अट्ठ. 20; – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *परिक्खित्तो नाम इट्ठकपाकारं आदिं कत्वा अन्तमसो कण्टकसाखाहिपि परिक्खित्तो,* पारा. अट्ठ. 1.238; *"अनुजानामि, भिक्खवे, परिक्खिपितुं तयो पाकारे – इट्ठकापाकारं, सिलापाकारं, दारुपाकार"न्ति,* चूळव. 239.

इट्ठकवड्ढकी पु., तत्पु. स., ईंटों की चिनाई करने वाला राजमिस्त्री, ईंटों से घर बनाने वाला मिस्त्री, प्र. वि., ए. व. – *पाकारं चिनाति ... इट्ठकवड्ढकी,* सद्द. 2.495; *अथ अञ्ञो पण्डितो इट्ठकवड्ढकी अहं,* थू. वं. 227; – **किं** द्वि. वि., ए. व. – *पोक्खरणिं खणापेत्वा, इट्ठकवड्ढकिं पक्कोसापेत्वा सयं विचारेत्वा सहस्सवङ्कं सततित्थं पोक्खरणिं कारेसि,* जा. अट्ठ. 6.159; *वसभेन भयासङ्की अप्पेसिट्ठकवड्ढकिं,* म. वं. 35, 101; – **किस्स** ष. वि., ए. व. – *तस्सिट्ठिकावड्ढकिस्स ञातको इध आगतो,* म. वं. 30.30; पाठा. इट्ठिकावड्ढकिस्स.– **की**[1] प्र. वि., ब. व. – *अपिच पाकारं इट्ठकवड्ढकी विय पवत्तं आचिनन्ता गच्छन्तीति आचयगामिनो,* ध. स. अट्ठ. 91; – **की**[2] द्वि. वि., ब. व. – *सब्बे इट्ठकवड्ढकी सन्निपातेसि,* थू. वं. 75(रो.); – **नं** ष. वि., ब. व. – ... *इट्ठकवड्ढकीनं छदनत्थाय* ..., पारा. अट्ठ. 2.135; – **गाम** पु., तत्पु. स., ईंटों की चिनाई का काम करने वाले कारीगरों का गांव – **मे** सप्त. वि., ए. व. – *इट्ठकवड्ढकीगामे इत्थिलक्खणकोविदा,* म. वं. 35.109.

इट्ठकसाला स्त्री., तत्पु. स. [इष्टिकाशाला], ईंटों से बना हुआ मकान, ईंटों से निर्मित सभागार, प्र. वि., ए. व. – *वच्चकुटि इट्ठकसाला वड्ढकिसाला द्वारकोट्ठको पानीयमाळो मग्गो पोक्खरणीति एतानि हि असेनासनानि,* चूळव. अट्ठ. 70.

इट्ठका / इट्ठिका स्त्री., [इष्टिका], ईंट, खपड़ा, सपरा – *गिञ्जका तु व इट्ठका,* अभि. प. 220; प्र. वि., ए. व. – *उपरिमेन भिक्खुना दुग्गहिता इट्ठका हेट्ठिमस्स भिक्खुनो मत्थके अवत्थासि,* पारा. 97; *एका इट्ठका सोवण्णमया, एका रूपियमया एका वेळुरियमया, एका फलिकमया,* दी. नि. 2.133; *थूपकरणत्थं इट्ठका कातुं आरभिंसु,* थू. वं. 199; – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *"इमं इट्ठकं एत्थ ठपेथा"ति,* अ. नि. अट्ठ. 1.135; *भिक्खुनो मत्थके इट्ठकं मुञ्चि,* पारा. 97; – **य** ष. वि., ए. व. – *एकेन अय्येन दिन्नं इट्ठका अम्हाकं इट्ठकाय सदिसाति कम्मे उपनेसिन्ति आह,* थू. वं. 229; – **का** प्र. वि., ब. व. – ... *बाहिरन्ते इट्ठका रत्तसुवण्णमया एकग्घना सतसहस्सग्घनिका होन्तु,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).27; – **यो** द्वि. वि., ब. व. – ... *चिक्खल्लं मद्दित्वा इट्ठकायो चिनित्वा कुट्टं उट्ठापेसि,* चूळव. 288; – **हि** तृ. वि., ब. व. – *पोक्खरणियो चतुन्नं वण्णानं इट्ठकाहि चिता अहेसुं,* दी. नि. 2.133; *नगरं रेणुवती नाम, इट्ठकाहि सुमापितं,* अप. 1.58; *बोधिरुक्खस्स इट्ठकाहि वेदिकं चिनित्वा सुधापरिकम्मं कारेसि,* थेरगा. अट्ठ. 1.211; – **नं** ष. वि., ब. व. – *पाकारसन्धिन्ति द्विन्नं इट्ठकानं अपगतट्ठानं,* स. नि. अट्ठ. 3.241; – **कत्थं** द्वि. वि., ए. व., ईंटों के लिए – *"इट्ठकत्थं चेतियस्स राजा चिन्तेसि गामणी,* म. वं. 28.7; – **कत्थाय** च. वि., ए. व. – *एतेनेवुपायेन पासाददारूनं अत्थाय वड्ढकीनं सन्तिकं इट्ठकत्थाय इट्ठकवड्ढकीनं छदनत्थाय गेहच्छादकानं चित्तकम्मत्थाय चित्तकारान"न्ति येन येन अत्थो होति,* पारा. अट्ठ. 2.135; – **कब्भन्तर** नपुं., तत्पु. स., ईंटों का अन्तराल अथवा मध्यवर्ती भाग – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *उत्तरद्वारे इट्ठकब्भन्तरे ठपितोति* ..., जा. अट्ठ. 3.394; – **करण** नपुं., तत्पु. स. [इष्टिकाकरण], ईंट पाथना, ईंट बनाना – **णे** सप्त. वि., ए. व. – *बहू मनुस्से योजेत्वा इट्ठिकाकरणे लहुं,* म. वं. 17.38; – **कोटि** स्त्री., तत्पु. स. [इष्टिकाकोटि], एक करोड़ की संख्या में ईंटें – **टीहि**

तृ. वि., ब. व. – *दसपुप्फाधानानि दसहि इट्ठकाकोटीहि निट्ठनं गमिंसु,* थू. वं. 231; – **खण्ड** पु., तत्पु. स. [इष्टिकाखण्ड], ईंट का टुकड़ा, रोड़ा – **ण्डं** द्वि. वि., ए. व. – *अञ्ञम्पि यंकिञ्चि दारुखण्डं वा इट्ठकाखण्डं वा हत्थेन वा यन्तेन वा पविज्झितुं न वट्टति,* पारा. अट्ठ. 2.58; – **गुहा** स्त्री., तत्पु. स. [इष्टिकागुहा], ईंटों से निर्मित गुफा, ईंट से बनी खोह – **हं** द्वि. वि., ए. व. – *गुहम्पि इट्ठकागुहं वा सिलागुहं वा दारुगुहं वा भूमिगुहं वा महन्तम्पि करोन्तस्स अनापत्ति,* पारा. अट्ठ. 2.144; – **गोपक** पु., तत्पु. स. [इष्टिकागोपक], ईंटों का रखवाला – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *तं येव इट्ठकागोपकं कारेसि,* थू. वं. 219; – **चय** पु., तत्पु. स. [इष्टिकाचय], ईंटों का ढेर, ईंटों का पुञ्ज – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *चिनितुं तयो चये, इट्ठकाचयं, सिलाचयं, दारुचयन्ति,* चूळव. 278; – **कादि** त्रि., ईंट इत्यादि – **दीनि** नपुं., द्वि. वि., ब. व. – *इट्ठकादीनि एतानि महापुञ्ञो महीपति,* म. वं. 28.42; – **पन्ति** स्त्री., तत्पु. स. [इष्टिकापंक्ति], ईंटों की पंक्ति, ईंटों की कतार, प्र. वि., ए. व. – *तस्मिञ्च खणे एका इट्ठकापन्ति परिक्खिपित्वा आगच्छमाना घटनिट्ठकाय ऊना होति,* अ. नि. अट्ठ. 1.135; – **मय** त्रि., ईंटों से बना हुआ, ईंटों से निर्मित – **ये** पु., सप्त. वि., ए. व. – *गिञ्जकावसथेति इट्ठकामये आवसथे,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).135; – **मूल** नपुं., तत्पु. स., ईंटों वाली नींव, ईंटों से बनाई गई बुनियाद – **लं** प्र. वि., ए. व. – *असुकगेहस्स इट्ठकामूलं ठितसण्ठानेनेव ठितं,* स. नि. अट्ठ. 3.80; – **वती** स्त्री., व्य. सं., दीघराजी के नाम के साथ उल्लिखित मगध जनपद के एक प्राचीन गांव का नाम, प्र. वि., ए. व. – *मगधरट्ठे किर इट्ठकवती च दीघराजि चाति द्वे गामका अहेसुं,* पे. व. अट्ठ. 57; – **नामक** त्रि., इट्ठकवती नाम वाला – **के** सप्त. वि., ए. व. – *मगधरट्ठे इट्ठकवतीनामके गामे,* पे. व. अट्ठ. 57; – **सन्थर** पु., तत्पु. स. [इष्टिकासंस्तर], ईंटों का फर्श, ईंटों की ज़मीन – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *"अनुजानामि, भिक्खवे, सन्थरितुं तयो सन्थरे इट्ठकासन्थरं, सिलासन्थरं, दारुसन्थर"न्ति,* चूळव. 239; – **सालपरिवेण** पु., तत्पु. स., ईंटों से निर्मित भवन में स्थित परिवेण या कक्ष – **णे** सप्त. वि., ए. व. – *थेरो इट्ठकासालपरिवेणे वसति,* थू. वं. 78(रो.); – **सोपान** पु., तत्पु. स. [इष्टिकासोपान], ईंटों से बनी हुई सीढ़ी – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *"अनुजानामि, भिक्खवे, तयो सोपाने – इट्ठकासोपानं, सिलासोपानं, दारुसोपान"न्ति,* चूळव. 278; – **कोलोकनत्थ** पु., तत्पु. स. [इष्टिकावलोकनार्थ], ईंटों के अवलोकन अथवा निरीक्षण का प्रयोजन – **त्थाय** च. वि., ए. व. – *इट्ठिकोलोकनत्थाय अहं गच्छामि,* थू. वं. 219; स. उ. प. के रूप में अमूलकि., घटनि., चयनि., छदनि., तम्बलोहि., थूपि., पमाणि., पाकारि., मङ्गलि., रत्तसुवण्णि., लोहि., सदिसि., सुवण्णि., सोवण्णछदनि. के अन्त., द्रष्ट..

इट्ठगन्ध पु., कर्म. स. [इष्टगन्ध], सुगन्ध, अनुकूल गन्ध, मन को प्रिय लगने वाली गन्ध – **न्धो** प्र. वि., ए. व. – *इट्ठगन्धो च सुरभि, सुगन्धो च सुगन्धि च,* अभि. प. 146; *सुगन्धोति इट्ठगन्धो,* ध. स. अट्ठ. 352.

इट्ठग्गाह पु., तत्पु. स. [इष्टग्राह], इच्छित का ग्रहण, जिसे ग्रहण किए जाने की इच्छा है उसका ग्रहण – **हो** प्र. वि., ए. व. – *बक्कक्खरेसु सञ्ञिच्छायं इट्ठग्गाहो,* सद्द. 3.876.

इट्ठत्थ पु., कर्म. स. [इष्टार्थ], अभीप्सित प्रयोजन – *इट्ठत्थे उय्युतो चाथ,* अभि. प. 727.

इट्ठधम्मसुत्त नपुं., अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 3(2).112-113.

इट्ठफल त्रि., ब. स. [इष्टफल], अभीप्सित फल देने वाला – **ला** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *कुसला वेदना सफला सविपाका इट्ठफला कन्तफला मनुञ्ञफला,* कथा. 39; – **लं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *कुसलं विञ्ञाणं सफलं सविपाकं इट्ठफलं कन्तफलं मनुञ्ञफलं असेचनकफलं,* कथा. 40; *ननु दानं इट्ठफलं कन्तफलं मनुञ्ञफलं,* कथा. 179.

इट्ठमङ्गलिक त्रि., ब. स. [इष्टमाङ्गलिक], कुशलमङ्गल की इच्छा करने वाला – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *गिही, भिक्खवे, मङ्गलिका,* जा. अट्ठ. 2.13; पाठा. इट्ठमङ्गलिका (रो.).

इट्ठरस त्रि., ब. स. [इष्टरस], मन को अच्छा लगने वाले रस से युक्त, अभीष्ट रस वाला, सुस्वादु – **सो** पु., प्र. वि., ए. व. – *सादूति इट्ठरसो, असादूति अनिट्ठरसो,* ध. स. अट्ठ. 353.

इट्ठरूप नपुं., कर्म. स. [इष्टरूप], अनुकूल स्वरूप या आकार, मन को अच्छा लगने वाला वर्ण एवं आकार – **पं** द्वि. वि., ए. व. – *तत्थ यं किञ्चि चक्खुना रूपं पस्सति अनिट्ठरूपंयेव पस्सति, नो इट्ठरूपं,* स. नि. 2(2).129-130; *अनिट्ठरूपञ्ञेव पस्सति नो इट्ठरूपं,* स. नि. 3(2).511.

इट्ठवड्ढकी पु., तत्पु. स. [बौ. सं. इष्टावर्धकिन्], ईंटों से मकान बनाने वाला मिस्त्री या कारीगर, ईंट बनाने वाला कारीगर, अभीप्सित या इच्छित कारीगर, प्र. वि., ए. व. – *वसभेन हते तस्मिं तं आदाय इट्ठवड्ढकी, धीतुट्ठाने ठपेत्वान वड्ढेसि अत्तनो घरे,* म. वं. 35.102-103; तुल., इट्ठकवड्ढकी.

इट्ठविपाक पु., कर्म. स. [इष्टविपाक], प्रिय अथवा मन के लिए अनुकूल लगने वाला परिणाम, अनुकूल अथवा इच्छानुरूप विपाक – **के** सप्त. वि., ए. व. – *आरोग्ये कुसलं इट्ठविपाके कुसलो तथा,* अभि. प. 803.

इट्ठवियोग पु., तत्पु. स. [इष्टवियोग], चाही गई वस्तु से विछोह, प्रिय से बिलगाव या विछोह, स. प. में – *तादिसस्स खीणासवमुनिनो अब्भन्तरे इट्ठवियोगादिवत्थुका सोका चित्तसन्तापा न होन्ति,* उदा. अट्ठ. 207.

इट्ठसम्मत त्रि., [इष्टसम्मत], चाहने योग्य अथवा वाञ्छनीय के रूप में माना गया – **तं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *इट्ठसम्मतं गन्धायतनं आलम्बित्वा,* रूपा. वि. 153 (रो.); – **तेसु** नपुं., सप्त. वि., ब. व. – *इट्ठसम्मतेसु छसु आरम्मणेसु* रूपा. वि. 153(रो.).

इट्ठसुत्त नपुं., व्य. सं., अ. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, अ. नि. 2(1).43.

इट्ठानिट्ठ त्रि., द्व. स. [इष्टानिष्ट], इच्छित एवं अनिच्छित, मन के लिए अनुकूल एवं प्रतिकूल, वाञ्छनीय एवं अवाञ्छनीय – **ट्ठा** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *निपतन्ति, महाराज, इमस्मिं चातुमहाभूतिके काये इट्ठानिट्ठा सुभासुभवेदना,* मि. प. 139; – **ट्ठं**[1] नपुं., प्र. वि., ए. व. – *जयपराजयो होति ... इट्ठानिट्ठं होति,* महानि. 123; – **ट्ठं**[2] नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *इट्ठानिट्ठं निस्साय अनुनयपटिघं निस्साय, छन्दो पहोति,* महानि. 194; – **ट्ठे** सप्त. वि., ए. व. – *तादीति अरहा पञ्चहाकारेहि तादी इट्ठानिट्ठे तादी,* महानि. 82; स. प. के अन्त., – **ट्ठादि** त्रि., इष्ट एवं अनिष्ट आदि – **दीसु** सप्त. वि., ब. व. – *इमं तस्स इट्ठानिट्ठादीसु तादिभावदीपकं उदानं उदानेसि,* उदा. अट्ठ. 59; – **भाव** पु., [इष्टानिष्टभाव], वाञ्छनीयता एवं अवाञ्छनीयता – **वो** प्र. वि., ए. व. – *इट्ठानिट्ठभावो च पुग्गलवसेन च द्वारवसेन च गहेतब्बो,* उदा. अट्ठ. 163; – **विपरीतानुभवनलक्खण** त्रि., ब. स., अनुकूल एवं प्रतिकूल, इन दोनों से विपरीत अनुभव के लक्षण वाला/वाली – **णा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *सा इट्ठानिट्ठविपरीतानुभवनलक्खणा, मज्झत्तरसा ... वेदितब्बा,* विसुद्धि. 1.161; – **अनुभवनलक्खण** त्रि., ब. स. [इष्टानिष्टानुभवनलक्षण], इष्ट (प्रिय) एवं अनिष्ट (अप्रिय) अनुभव के लक्षणों से युक्त – **णा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *इट्ठानिट्ठअनुभवनलक्खणा वेदना,* नेत्ति. 25.

इट्ठाभिमत त्रि., [इष्टाभिमत], प्रिय अथवा वाञ्छनीय माना गया – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *एकच्चस्स हि इट्ठाभिमतो एकच्चस्स अनिट्ठो होति,* उदा. अट्ठ. 163.

इट्ठारम्मण नपुं., कर्म. स. [इष्टालम्बन], मन द्वारा चाहा गया आलम्बन, मनोनुकूल विषय, वाञ्छित अथवा प्रिय आलम्बन (मन/इन्द्रियों द्वारा ग्राह्य बाह्य पदार्थ) – **णं** द्वि. वि., ए. व. – *चक्खुद्वारे इट्ठारम्मणं अनुभवितुकामेन हि चित्तकारपोत्थकाररूपकारादयो पक्कोसापेत्वा ...,* स. नि. अट्ठ. 1.39; – **णे** सप्त. वि., ए. व. – *चक्खुद्वारे पन इट्ठारम्मणे आपाथगते भवङ्गं आवट्टेत्वा ... कुसलमेव उप्पादेति,* स. नि. अट्ठ. 3.94-95; *इट्ठारम्मणे अरज्जन्तस्स ...,* ध. प. अट्ठ. 2.330; – **णानि** प्र. वि., ब. व. – *चतुत्थे कमनीयानीति रूपादीनि इट्ठारम्मणानि,* स. नि. अट्ठ. 1.57; – **पटिलाभ** पु., तत्पु. स. [इष्टालम्बनप्रतिलाभ], अनुकूल अथवा प्रिय आलम्बन का लाभ, मनोनुकूल आलम्बन को पा लेना – **भं** द्वि. वि., ए. व. – *एवञ्च पञ्चद्वारिकइट्ठारम्मणप्पटिलाभं कित्तेत्वा इदानि मनोद्वारिकइट्ठारम्मणप्पटिलाभं दस्सेतुं,* उदा. अट्ठ. 164; – **ट्ठारम्मणसमायोग** पु., तत्पु. स., अनुकूल अथवा प्रिय आलम्बनों का एक जुट हो जाना – **तो** प. वि., ए. व. – *इट्ठारम्मणसमायोगतो उप्पन्नेसु सुखेसु,* उदा. अट्ठ. 144.

इट्ठि स्त्री., √यज से व्यु. [इष्टि], यज्ञ – *इट्ठि, सिट्ठि, भित्ति, भत्ति ...,* मो. व्या. 5.49.

इडगलिस्सर पु., व्य. सं., दक्षिण भारत के एक प्राचीन गांव का नाम, प्रायः एरुक्काट नामक एक अन्य गांव के साथ प्रयुक्त – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *एरुक्काट्टव्हये चेव गामे इडगलिस्सरे,* चू. वं. 76.149.

√**इण**/√**इणु** गत्यर्थक धातु – *इण-फेण द्वयं गते,* धा. मं. 29; *इणु गतियं, इणोति, इणं इणायिको,* सद्द. 2.507.

इण नपुं., √इणु से व्यु. [ऋण], **शा. अ.**, कर्ज़ा, उधार, **ला. अ.**, दायित्व, कर्तव्य – **णं**[1] प्र. वि., ए. व. – *उद्धारो तु इणं वुत्तं,* अभि. प. 471; *पेत्तिकं वा इणं होति, यं वा होति सयंकतं,* जा. अट्ठ. 7.38; – **णं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *भिक्खु यथा इणं यथा रोगं ... इमे पञ्च नीवरणे*

अप्पहीने अत्तनि समनुपस्सति, म॰ नि॰ 1.348; *तस्मा तेसं इणं ददे,* जा॰ अट्ठ॰ 4.249; – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एको पन बहुं इणं खादित्वा तेन इणेन अट्टो पीळितो तम्हा गामा पलायति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.129; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इणतो सइणे भिक्खू मोचेसि सासनप्पियो,* म॰ वं॰ 36. 39; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इणस्स वा पमोक्खाय, दुब्भिक्खे आपदासु वा,* खु॰ पा॰ 9; *इणस्स अकतभावेन तुट्ठो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.248; – **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वन्धनत्थप्पयोगे बन्धनहेतुम्हि इणे,* सद्द॰ 3.707; **मुहावरों के रूप में कतिपय प्रयोग, क.** ऋणदाता के सन्दर्भ में प्रयुक्त होने पर, **1.** √दा के क्रि॰ रू॰ के साथ, उधार देता है – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न पण्डिता तस्मिं इणं ददन्ति, न हि आगमो होति तथाविधम्हा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.135; **2.** √कर के क्रि॰ रू॰ के साथ, ऋण स्वीकृत करता है – *ब्राह्मणो ... मय्हं इणं करिस्सति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.247; ... *अस्से च रथञ्च पसाधनभण्डञ्च तस्स इणं कत्वा दस्सेन्तो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.21; **3.** 'पयोजेति' के साथ, ब्याज कमाने हेतु उधार लगा देता है – *इणं चोदायाति भिक्खाचरियाय धनं संहरित्वा वड्ढिया इणं पयोजेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.165; **ख.** ऋण लेने वाले के सन्दर्भ में प्रयुक्त होने पर 'इणं' का प्रयोग प्रायः निम्नरूप में प्राप्त; **1.** निय्यादेति / निय्यातेति के क्रि॰ रू॰ के साथ, ब्याज के साथ ऋण चुका देता है – *"इदं इणं नाम पलिबोधमूल"न्ति चिन्तेत्वा सवड्ढिकं इणं निय्यातेत्वा पण्णं फालापेय्य,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).215; **2.** 'आदीयति' अथवा 'आदाय' अथवा √गह के क्रि॰ रू॰ के साथ प्रयुक्त रहने पर, कर्ज़ लेता है, ऋण लेता है – *सो तेसं अच्चयेन ... नानाब्यसनमुखेहि इणं आदाय तं दातुं असक्कोन्तो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.228; *यो हवे इणमादाय, चुज्जमानो पलायति,* सु॰ नि॰ 120; *इणमादायाति ... इणं गहेत्वा,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.142-43; ... *मनुस्सानं हत्थतो बहुं इणं गहेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.144; **3.** वि + √गाह के क्रि॰ रू॰ के साथ प्रयुक्त होने पर, कर्ज़ में डूब जाता है – *उदकमिव इणं विगाहति,* दी॰ नि॰ 3.140; **4.** 'सोधेति' के साथ प्रयुक्त होने पर, कर्ज़ अदा कर देता है, ब्याज सहित ऋण को चुका देता है – *"उपड्ढं मया गहितं इणं सोधेत्वा सुखेन जीवतूति मय्हं धीताय देथा"ति आह,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 241; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अण॰ / अणि॰, अधम॰, उत्तम॰, कामछन्द॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

इणग्गहण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऋणग्रहण], कर्ज़ लेना, ऋण को स्वीकार करना – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इणादानस्मिं वदामीति इणग्गहणं वदामि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.118.

इणगाहक पु॰, [ऋणग्राहिन्], ऋण लेने वाला, कर्ज़खोर, उधार लेने वाला – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इणग्गाहकस्स एकं अङ्गं गहेतब्बं,* मि॰ प॰ 330.

इणघात त्रि॰, [ऋणघातक], कर्ज़ मारने वाला, ऋण लेकर उसे नहीं लौटाने वाला – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इणघातसूचकाति वसलसुत्ते वुत्तनयेन इणं गहेत्वा तस्स अप्पदानेन इणघाता,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.265; – **सूचक** त्रि॰, द्व॰ स॰, कर्ज़ मारने वाला एवं इधर की बात उधर करने वाला अथवा चुगली करने वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ये पापसीला इणघातसूचका,* सु॰ नि॰ 249; *इणघातसूचकाति वसलसुत्ते वुत्तनयेन इणं गहेत्वा तस्स अप्पदानेन इणघाता पेसुञ्ञेन सूचका च,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.265.

इणट्ट त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ऋणार्त], ऋणग्रस्त, कर्ज़ का मारा हुआ, ऋण के कारण विपत्तिग्रस्त – **ट्टो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एको पन बहुं इणं खादित्वा तेन इणेन अट्टो पीळितो तम्हा गामा पलायति ... अयं इणट्टो नाम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.129; *कदा इणट्टोव दलिद्दको निधिं आराधयित्वा धनिकेहि पीळितो,* थेरगा॰ 1109; *"किं त्वं इणट्टो वा भयट्टो वा जीवितुं असक्कोन्तो पब्बजितो"ति ?,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.212; – **ट्टा** ब॰ व॰ – *ये पन इणं गहेत्वा पटिदातुं असक्कोन्ता पलायित्वा पब्बजन्ति, ते इणट्टा नाम, इणपीळिताति अत्थो,* – *इणट्ठातिपि पाठो, इणे ठिताति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.267; *न इणट्टा अगारस्मा अनगारियं पब्बजिता,* म॰ नि॰ 2.136; *केचि इणट्टा पब्बजन्ति,* मि॰ प॰ 28.

इणट्ठ त्रि॰, [ऋणस्थ], ऋण में स्थित, कर्ज़ में डूबा हुआ – **ट्ठा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इणट्ठातिपि पाठो, इणे ठिताति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.267.

इणट्ठान नपुं॰, तत्पु॰ स॰, ऋण का स्थान, कर्ज़ का स्थान – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मया पन रञ्ञो सन्तकं निवापपानभोजनं भुत्तं, तं मे इणट्ठाने ठितं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.239.

इणदान नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऋणदान], **1.** आजीविका के पवित्र साधन के रूप में कर्ज़ देना या उधार देना, साहूकारी – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कसिवाणिज्जा इणदानं,*

जा॰ अट्ठ॰ 4.380; *यानि तानि कसिवाणिज्जानि इणदानं उञ्छाचरियाति आजीवमुखानि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.381; *कीदिसं ते इणदानं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.249; **2.** ऋण देकर जुटाया गया धन, ऋण देने में लगाया गया धन – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निधिञ्च इणदानञ्च, न करे परपत्तिया,* जा॰ अट्ठ॰ 5.111; *इणदानन्ति इणवसेन संयोजितधनं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.198.

इणदायक त्रि॰, [ऋणदायिन्], महाजन, ऋण देने वाला साहूकार – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ञाति सालोहितो किन्नु उदाहु इणदायको,* रस॰ 1.44(रो॰).

इणपण्ण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऋणपर्ण], ऋणपत्र, रुक्का, वचनपत्र, कर्ज़ को दर्ज करने वाला पत्र – **ण्णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदं तुम्हाकं इणपण्णं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.225; – **ण्णानि** ब॰ व॰ – *सो इणायिके आह – तुम्हाकं इणपण्णानि गहेत्वा आगच्छथ,* जा॰ अट्ठ॰ 4.228.

इणपरिभोग पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऋणपरिभोग], **शा॰ अ॰,** ऋण के रूप में प्रयोग, ऋण का उपभोग, **ला॰ अ॰,** चार प्रकार के परिभोगों में से एक, प्रत्यवेक्षण अथवा देशकाल का विचार किए बिना ही चीवर, पिण्डपात, निवासस्थान एवं औषधि का उपभोग – **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *थेय्यपरिभोगो, इणपरिभोगो, दायज्जपरिभोगो, सामिपरिभोगोति... सीलवतो अप्पच्चवेक्खितपरिभोगो "इणपरिभोगो"नाम,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.247; *सीलवतो पन अपच्चवेक्खणपरिभोगो इणपरिभोगो नाम,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.244; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो इणपरिभोगस्स पच्चनीकत्ता आणण्यपरिभोगो वा होति,* विसुद्धि॰ 1.41; – **ट्ठान** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऋणपरिभोगस्थान], ऋण के समान परिक्खारों का उपभोग करने वाले की जगह, ऋण-उपभोक्ता का स्थान – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचस्स अपच्चवेक्खतोव अरुणं उग्गच्छति, इणपरिभोगट्ठाने तिट्ठति,* विसुद्धि॰ 1.40.

इणपलिबोध पु॰, तत्पु॰ स॰, ऋणग्रस्त होने के फलस्वरूप उत्पन्न बाधा, संकट अथवा विपत्ति – **धो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इणपलिबोधो, महाराजाति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.213; – **धेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'सहेतुको सत्तो इणपलिबोधेन न पब्बजती'ति,* महाव॰ अट्ठ॰ 267.

इणपीळित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ऋणपीड़ित], ऋणग्रस्त होने के कारण पीड़ित अथवा कष्ट में पड़ा हुआ – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ते इणट्टा नाम, इणपीळिताति अत्थो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.267.

इणमुत्त त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ऋणमुक्त], ऋण से मुक्त – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इणमुत्तस्स पुरिसस्स इणस्सामिके दिस्वा नेव भयं न छम्भितत्तं होति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.174.

इणमूल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऋणमूल], उधार के रूप में प्राप्त पूंजी, ऋण के रूप में गृहीत मूलधन, ऋण, – **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ताव मातापितूपट्ठानेन पोराणं इणमूलं विसोधयमाना, पुत्तदारसङ्गहेन नवं इणमूलं पयोजयमाना ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 125; – **लानि** ब॰ व॰ – *सो यानि च पोराणानि इणमूलानि, तानि च ब्यन्तिं करेय्य ...,* दी॰ नि॰ 1.63.

इणमोक्ख पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऋणमोक्ष], ऋण से मुक्ति, ऋण की अदायगी – **क्खो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कीदिसं ते इणदानं, इणमोक्खो च कीदिसो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.249; *'एवं मे इणमोक्खो भविस्सती'ति पलायित्वा गङ्गायं पति,* चरिया॰ अट्ठ॰ 136.

इणवड्डि स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [ऋणवृद्धि], ऋण पर देय सूद अथवा ब्याज, ऋण के मूलधन में वृद्धि – **या** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वड्डियाति इणवड्डिया,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 294.

इणवसेन तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰, ऋण के कारण, ऋण के रूप में – *धारयतेति इणवसेन गण्हाति,* सद्द॰ 3.695.

इणसदिस त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ऋणसदृश], ऋण जैसा, ऋण के समान – **सं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा इणन्तिआदीसु इणसदिसं बन्धनसदिसं धनजानिसदिसं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.342.

इणसाधक पु॰, [ऋणसाधक], ऋण को वसूल करने वाला, ऋण-समाहर्ता – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इणसाधकस्स तीणि अङ्गानि गहेतब्बानि,* मि॰ प॰ 331.

इणसामिक पु॰, ऋणदाता, महाजन, उत्तमर्ण – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इणसामिको च तं परियेसन्तो तत्थ गच्छति,* महाव॰ अट्ठ॰ 267; – **का** ब॰ व॰ – *इणसामिका सुत्वा पलातट्ठानेपि नो न मुञ्चिस्सति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.129; – **के** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सो इणसामिके दिस्वापि सचे इच्छति, आसना उट्ठहति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.174; – **कानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पस्सन्तेन पन आनेत्वा इणसामिकानं दस्सेतब्बो,* महाव॰ अट्ठ॰ 267.

इणसुत्त नपुं॰, अ॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, अ॰ नि॰ 2(2).65-68.

इणसोधन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऋणशोधन], ऋण का भुगतान, कर्ज़ की अदायगी, स॰ प॰ के अन्त॰, – *लद्धमूलं मय्हं इणसोधनमत्तमेव जातं,* जा॰ अट्ठ॰ 1.308.

इणादान नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऋणादान], ऋण लेना, ऋण का ग्रहण – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इणादानम्पि दुक्खं लोकस्मिं कामभोगिनो,* अ॰ नि॰ 2(2).66; – **स्मिं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इणादानस्मिं वदामीति इणग्गहणं वदामि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.118.

इणापगम पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऋणापगम], ऋण से छुटकारा, ऋण का अपनयन – **मेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कामच्छन्दादिइणापगमेन अणणा,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 270.

इणायिक त्रि॰, इण + इक के योग से व्यु॰ [ऋण्वन्/ऋणिन्/ऋणिक], 1. ऋण लेने वाला, कर्जदार, ऋण लेने अथवा देने की प्रक्रिया के साथ जुड़ा हुआ, अधमर्ण – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इणोति, इणं इणायिको,* सद्द॰ 2.507; *अधमण्णो तु इणायिको,* अभि॰ प॰ 470; *एत्थ इणायिको नाम यस्स पितिपितामहेहि वा इणं गहितं होति, सयं वा इणं गहितं होति, यं वा आथपेत्वा मातापितूहि किञ्चि गहितं होति, सो तं इणं परेसं धारेतीति इणायिको,* महाव॰ अट्ठ॰ 267; *यं पन अञ्ञे ञातका आथपेत्वा किञ्चि गण्हन्ति, सो न इणायिको, न हि ते तं आथपेतुं इस्सरा, तस्मा तं पब्बाजेतुं वट्टति इतरं न वट्टति,* तदे॰; *अञ्ञतरो पुरिसो इणायिको पलायित्वा भिक्खूसु पब्बजितो होति,* महाव॰ 95; *अयं सो अम्हाकं इणायिको,* तदे॰; – **का** ब॰ व॰ – *यथा इणायिका आनण्यं पत्थेन्ति पिहयन्ति,* महानि॰ 117; *सत्ता तस्स चतुरोघतिण्णस्स पिहयन्ति इणायिका,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.229; – **कं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कथञ्हि नाम ... इणायिकं पब्बाजेस्सन्ती'ति,* महाव॰ 95; 2. कर्ज़ देने वाला महाजन, उत्तमर्ण, ऋणदाता – **केन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इणायिकेन "देहि मे इण"न्ति चोदियमानो ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.143; – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इणायिका देथ देथाति चोदेन्ति,* स॰ नि॰ 1(1).199; *इदानि इणायिका आगन्त्वा गेहं परिवारेस्सन्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.211-212; – **के** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इणायिके आह, तुम्हाकं इणपण्णानि गहेत्वा आगच्छथ,* चरिया॰ अट्ठ॰ 136; *मरणं मे सेय्यो ति चिन्तेत्वा इणायिके आह,* चरिया॰ अट्ठ॰ 136; – **केहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इणायिकेहि उपद्दुता सुखं वसितुं असक्कोन्ता,* जा॰ अट्ठ॰ 4.144; *इणायिकेहि चोदियमानो चिन्तेसि "किं मय्हं जीवितेन ... मतं मे सेय्यो"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.228; – **कानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इणायिकानं पुरिसानं अधिपतनबहुले बहूहि इणायिकेहि अभिभवितब्बे,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 294; विलो॰, – *उत्तमण्णो च धनिको,* अभि॰ प॰ 470; – **पीळा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, ऋणदाता की ओर से पड़ने वाला दबाव, कर्ज़ देने वाले व्यक्ति द्वारा दी जा रही पीड़ा या व्यथा, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमस्मिं गङ्गासोते पतितो जीवामि वा मरामि वा, जीवितं वा मे एत्थ होतु मरणं वा, उभयथापि इणायिकपीळा न होतीति अधिप्पायो,* चरिया॰ अट्ठ॰ 136.

इणोति √इणु का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, गतिशील रहता है – *इणु गतियं, इणोति, इणं, इणायिको,* सद्द॰ 2.507.

इत त्रि॰, √इ का भू॰ क॰ कृ॰ [इत], जा चुका, बीत चुका – *इतो उदितो,* सद्द॰ 2.315; *इतो,* क॰ व्या॰ 645; अपेत, उदित, दुरित आदि के रूप में सोपसर्ग प्रयोगों में ही मुख्य रूप से प्राप्त.

इतर त्रि॰, [इतर], अन्य, दूसरा, भिन्न, सामान्य – *इतरसद्दो वुत्तपटियोगिवचनो अञ्ञसद्दो अधिगतापरवचनो,* सद्द॰ 1.266; *इतरो अञ्ञतरा एको अञ्ञो,* अभि॰ प॰ 717; **1.क.** ए॰ व॰ में प्रयुक्त होने पर, दूसरा, अन्य, निर्दिष्ट दो में से बचा हुआ एक – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयञ्हि राजा हंसानं, अयं सेनापतीतरो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.341; *अथेसो इतरो पक्खी, सुवो लुद्दानि, भासति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.393; – **रं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथेकं इतरं अम्बं, नीलोभासं मनोरमं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.74; *तेन पविसित्वा थूलसाटके गहिते इतरस्स इतरं गण्हतो उद्धारे पाराजिकं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.283; – **राय** स्त्री॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असिस्स "इमाय धाराय मारेही"ति वुत्तो इतराय वा धाराय ... मारेति विसङ्केतो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.43; – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा पण्डितजातियो सुणेय्य इतरस्सपि, उभिन्नं वचनं सुत्वा यथा धम्मो तथा करे,* जा॰ अट्ठ॰ 3.90; – **स्मिं** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चोरा ततो निक्खमित्वा इतरस्मिं मग्गे अट्ठंसु,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.13; – **मग्ग** पु॰, कर्म॰ स॰ [इतरमार्ग], दूसरे प्रकार का मार्ग, भिन्न प्रकृति वाला मार्ग – **ग्गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथस्स पुरतो तिरियं ठत्वा भुस्सित्वा इतरमग्गमेव नं आरोपेति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.100; **1.ख.** यदा कदा ब॰ व॰ में प्रयुक्त होने पर, दो परस्पर-विपरीत समूहों अथवा वर्गों में से कोई एक – **रा/रे** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यानके ठपेत्वा यानकं पाजेन्तो यानकस्स पुरतो अहोसि, इतरा पच्छतो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.100; *निगण्ठा चेलका चेति इतरा परिब्बाजका, इतरा ब्राह्मणा ति च अञ्ञे च पुथुलद्धिका,* दी॰ वं॰ 6.27; *रती हि तेसं दुखिनो पनीतरे,* जा॰ अट्ठ॰ 5.261; – **रेसं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तेसं सन्तिकं गन्त्वा*

उक्खेपकानं उक्खेपने, इतरेसञ्च असञ्चिच्च आपत्तिया अदस्सने आदीनवं वत्वा ..., जा॰ अट्ठ॰ 3.429; **1.ग.** ब॰ व॰ के अधिकतर प्रयोगों में, दूसरे, अन्य, शेष, बचे हुए – **रे** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इतरेपि द्वे एवमेव आहंसु*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.294; *इतरे द्वे सहायकत्थेरा जनपदचारिकं चरन्ता अञ्ञतरस्मिं आवासे समागन्त्वा ...*, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 12; *इतरे तयो सक्कायदिट्ठिया बलवत्ता अत्तनो पटिपक्खभूतं सत्तं अपस्सन्ता न भायन्तीति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.28-29; *"स्वे उपोसथदिवसो"ति वत्वा इतरे तयो आह ...*, जा॰ अट्ठ॰ 3.44; – **रा** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तं सुत्वा सकुणो इतरा द्वे गाथा अभासि*, जा॰ अट्ठ॰ 3.23; – **रेसु** पु॰, सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इतरेसु पन तीसु कायसञ्चेतना कायसङ्खारो ...*, विसुद्धि॰ 2.160; – **रेसं** नपुं॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पथवीकसिणे पन पठमं झानं समापज्जित्वा तत्थेव इतरेसम्पि समापज्जनं अङ्गसङ्कन्तिकं नाम*, विसुद्धि॰ 2.3; *इतरेसन्ति अवसिट्ठरूपावचरज्झानानं, न हि अरूपज्झानेसु असङ्गसङ्कन्ति अत्थि, नापि तानि पथवीकसिणे पवत्तन्ति*, विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.3-4; – **रानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सद्धिन्द्रियं बलवं होति इतरानि मन्दानि, ततो वीरियिन्द्रियं पग्गहकिच्चं ...*, विसुद्धि॰ 1.126; *कसिणकम्मट्ठानिको कसिणं कत्वा यथासुखं भावेति, एवं इतरानि कम्मट्ठानानि सुलभानि*, विसुद्धि॰ 1.180-81; **1.घ.** यदा कदा ए॰ व॰ में प्रयुक्त होने पर भी समाहार अथवा बहुत्व का द्योतक – **रं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नाञ्ञं सुचरितं राज ... तायते मरणकाले एवमेवितरं धनं*, जा॰ अट्ठ॰ 3.185; **2.** 'जन' अथवा 'पजा' शब्दों के साथ अन्वित रहने पर, सामान्य, साधारण, नासमझ, गंवार, तुच्छ, नीच – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तमहं सारथिं ब्रूमि, रस्मिग्गाहो इतरो जनो*, ध॰ प॰ 222; – **रा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अप्पका ते मनुस्सेसु, ये जना पारगामिनो, अथायं इतरा पजा, तीरमेवानुधावति*, ध॰ प॰ 85; *"अत्थायं इतरा पजा, पुञ्ञभागाति मे मनो, सङ्खातुं नोपि सक्कोमि, मुसावादस्स ओत्तप"न्ति*, स॰ नि॰ 1(1).182; *अत्ता हवे जितं सेय्यो, या चायं इतरा पजा, अत्तदन्तस्स पोसस्स, निच्चं सञ्ञतचारिनो*, ध॰ प॰ 104; *सो सचे धम्मं चरति, पगेव इतरा पजा*, जा॰ अट्ठ॰ 5.231; **3.** अगला, अनुवर्ती, आगे आने वाला, परवर्ती, द्वितीय, दूसरा – **रं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथस्स वचनं सुत्वा पुरोहितो इतरं गाथमाह*, जा॰ अट्ठ॰ 5.97; *सा तस्स आगमनूपायं आचिक्खन्ती इतरं गाथमाह*, जा॰ अट्ठ॰ 5.191; – **रस्स / रस्सा** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्था पुन दिवसे इतरस्स इतरस्साति पटिपाटिया सब्बेसं घरानि अगमासि*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.288; – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वासिफरसुको जेट्ठभातिकस्स अग्गिं करोति, इतरेन भेरितले पहटे हत्थी पलायन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 2.84; स॰ उ॰ प॰ के रूप में इतरी॰, उत्तरी॰, उत्तरे॰, दुद्दसे॰, वामे॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

इतरत्र अ॰, सप्त॰ वि॰, प्रतिरू॰ प्रकार-बोधक अथवा स्थानसूचक निपा॰ [इतरत्र], अन्यथा, उससे भिन्न रूप में, अन्यत्र, दूसरे स्थलों में – *एस नयो इतरत्रापि*, सद्द॰ 3.704; 756; 781.

इतरथत्त नपुं॰, इतरथा से व्यु॰, भाव॰ [इतरथात्व], अन्य रीति से अथवा दूसरी तरह से होने की अवस्था – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बनामेहि था–तथा पकारवचने ... इतरथा उभयथा, तेन पकारेन ततत्था ... तयुगपच्चयो पसिद्धो तं यथा, तथा भावो तत्थत्तं, एवं अञ्ञत्थत्तं ... इच्चादि एत्थ च*, सद्द॰ 3.805; *थत्ताप्पच्चयो च होति – सो विय पकारो तथत्ता, एवं यथत्ता, अञ्ञथत्ता, इतरथत्ता, सब्बथत्ता*, क॰ व्या॰ 400.

इतरथा अ॰, निपा॰, इतर + था के योग से व्यु॰ प्रकारबोधक क्रि॰ वि॰ [इतरथा], **1.** अन्य रीति से, दूसरी तरह से, और तरीके से – *इतरथा वत्तुं न देमाति आह*, विसुद्धि॰ 1.94; *"पटिपत्तिया च पूजियमानो पूजितो होति न इतरथा"ति*, विसुद्धि॰ 1.128; *'अहमेतं लाभग्गयसग्गप्पत्तं करोन्तो पब्बजित्वाव कातुं सक्खिस्सामि, न इतरथा'ति*, जा॰ अट्ठ॰ 4.339; *कथिता येव सोभति न इतरथा*, सद्द॰ 1.144; **2.** नहीं तो, अन्यथा, विपरीत रूप में, दूसरी ओर – *इतरथा एवं कातुं न सक्खिस्सन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 6.257; *इतरथा न पुब्बेन वा परं, न परेन वा पुब्बं युज्जति*, बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 38; *इतरथा हि पुब्बे वुत्तदोसप्पसङ्गो एव सिया, तस्मा यथानुसिट्ठमेव गहेतब्बं*, खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 10.

इतरीतर त्रि॰, [इतरेतर], **1.** पारस्परिक, अन्योन्य, एक दूसरा, एक एक, प्रत्येक – **रस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञमञ्ञस्स भोजका, इतरीतरस्स भोजका*, मो॰ व्या॰ 1.56; **2.** भिन्न-भिन्न प्रकृति एवं स्वरूप वाला, छोटा से छोटा, हर प्रकार का – **रा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मही यथा जगति समानरत्ता, वसुन्धरा इतरीतरापतिट्ठा*, जा॰ अट्ठ॰ 5.420; *वच्छदन्तमुखा सेता, तिक्खग्गा अट्ठिवेधिनो, पणुन्ना धनुवेगेन, सम्पतन्तुतरीतरा*, जा॰ अट्ठ॰ 6.277; *सम्पतन्तुतरीतराति एवरूपा सरा इतरीतरा सम्पतन्तु*

समागच्छन्तु, जा॰ अट्ठ॰ 6.279; – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा कथं इतरितरेन चापि, सुभासितं तञ्च सुणाथ सब्बे,* वि॰ व॰ 1228; *इतरितरेन चापीति इतरीतरञ्चापि, इदं यथापि इमिना योजेतब्बं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 283; *इतरीतरेन तुस्सेय्य,* थेरगा॰ 230; *"इतरीतरेन तुस्सेया"ति येन केनचि हीनेन वा पणीतेन वा यथालद्धेन पच्चयेन सन्तोसं आपज्जेय्याति अत्थो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.379; *सन्तुस्समानो इतरीतरेन,* सु॰ नि॰ 42; *इतरीतरेनाति उच्चावचेन पच्चयेन,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.69; *इतरीतरेन पिण्डपातेन इतरीतरपिण्डपातसन्तुट्ठिया च वण्णवादी ... इतरीतरेन सेनासनेन इतरीतरसेनासनसन्तुट्ठिया च वण्णवादी ....,* दी॰ नि॰ 3.179-180; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असम्पदानेनितरीतरस्स, बालस्स मित्तानि कलीभवन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.446; *इतरीतरस्साति यस्स कस्सचि लामकालामकस्स,* जा॰ अट्ठ॰ 1.447; – **चीवरपिण्डपातसेनासनगिलानपच्चयभेसज्जपरिक्खार** पु॰, तत्पु॰ स॰, चीवर, भिक्षा से प्राप्त भोजन, निवास स्थान एवं औषधि के मूलभूत साधारण आवश्यक उपकरण – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इतरीतरचीवरपिण्डपातसेनासनगिलानप्पच्चयभेसज्ज परिक्खारेन पापिकं इच्छं पणिदहति,* अ॰ नि॰ 1(2).165; – **पच्चयसन्तोस** पु॰, तत्पु॰ स॰, मामूली से मामूली भोग-साधनों से प्राप्त सन्तुष्टि, सामान्य उपकरणों से मिलने वाला सन्तोष का भाव – **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सन्तुट्ठोति इतरीतरपच्चयसन्तोसेन समन्नागतो, सो पनेस सन्तोसो द्वादसविधो होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प) 1(2).46; – **पिण्डपातसन्तुट्ठि** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, साधारण प्रकार के भोजन से प्राप्त सन्तोषभाव – **या** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खु सन्तुट्ठो होति इतरीतरेन पिण्डपातेन, इतरीतरपिण्डपातसन्तुट्ठिया च वण्णवादी,* दी॰ नि॰ 3.179; – **योग** पु॰, व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में प्रयुक्त [इतरेतरयोग], द्व॰ स॰ का एक प्रभेद, द्वन्द्व समास का वह प्रभेद जिसमें समास के विभिन्न घटक एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हों अथवा जिसके प्रत्येक अंग पृथक्-भाव को सूचित करें – **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इतरीतरयोगो समाहारो च समुच्चयस्सेव भेदो, सो एव हि अञ्ञमञ्ञसापेक्खानं अवयवभेदानुगतो इतरीतरयोगो यथा, देवदत्त यञ्ञदत्तेहि इदं कारियं कत्तब्बन्ति,* पद॰ 259(सिंहली); पाठा॰ इतरेतर; – **सन्तोस** पु॰, साधारण से साधारण साधनों या सामग्रियों से सन्तुष्टि – **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इतरीतरसन्तोसेन सन्तुट्ठस्स आरद्धवीरियस्सेव समणसाधुताति अधिप्पायो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.246; *इतरीतरसन्तोसेन सन्तुट्ठो अनवज्जाय जीविकाय जीवतियेव,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.129; – **सेनासनसन्तुट्ठि** स्त्री॰, साधारण से साधारण वासस्थान से सन्तुष्टि – **या** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खु सन्तुट्ठो होति इतरीतरेन सेनासनेन इतरीतरसेनासनसन्तुट्ठिया च वण्णवादी,* दी॰ नि॰ 3.180.

इति[1] अ॰, √इ + ति के योग से व्यु॰ [इति], प्रायः किसी के द्वारा कहे गए वचनों को वैसा का वैसा ही रख देने हेतु प्रयुक्त अव्यय, यह कथित वचन निम्न रूपों में हो सकता है, **1.क.** शब्दस्वरूपद्योतक, शब्द के स्वरूप को दर्शाने हेतु प्रयुक्त – *"सब्बो चन्ति" सब्बो ति इच्चेसो सद्दो सरे परे क्वचि चकारं पप्पोति, इति + एतं = इच्चेतं ... इतिस्स मुहुत्तम्पि,* क॰ व्या॰ 19; *"अति–पत–इतीनं ति चं ... क्वची"ति किं ... "इतिस्स मुहुत्तम्पि",* सद्द॰ 3.616; *इतायं कोधरूपेन, मच्चुपासो गुहासयो,* अ॰ नि॰ 2(2).235; *इतायन्ति इति अयं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.179; **1.ख.** प्रातिपदिकार्थद्योतक अर्थात् अपने अर्थों को संकेतित करने हेतु प्रयुक्त प्रातिपदिक का संकेतक – *मरणन्ति या तेसं तेसं सत्तानं तम्हा तम्हा सत्तनिकाया चुति चवनता भेदो ...,* महानि॰ 89; **1.ग.** वाक्यार्थद्योतक अर्थात् समूचे वाक्य का संकेतक – *नागारमावसेति सब्बं घरावासपलिबोधं छिन्दित्वा ... एको चरेय्य ...,* महानि॰ 89; **2.क.** पालि अट्ठ॰ में इसे मुख्यतया पदपूरणार्थक अथवा निदर्शनार्थक निपा॰ कहा गया है – *इतीति पदसन्धि पदसंसग्गो पदपारिपूरी अक्खरसमवायो ब्यञ्जनसिलिट्ठता पदानुपुब्बतापेतं,* महानि॰ 89; *निदस्सने इति–त्थं च एवं,* अभि॰ प॰ 1158; **2.ख.** क्रि॰ वि॰ के रूप में अत्यल्प प्रयोगों में, इस प्रकार से, इस रूप में, ऐसे – *इतिहन्ति सीलेसु अकत्थमानो,* सु॰ नि॰ 789; *यो भिक्खु अनभिजानं उत्तरिमनुस्सधम्मं अत्तुपनायिकं अलमरियञाणदस्सनं समुदाचरेय्य – 'इति जानामि इति पस्सामी'ति,* पारा॰ 111; *तस्मा हि धम्मेसु करेय्य छन्दं, इतिमोदमानो सुगतेन तादिना,* थेरगा॰ 305; *न इतिवादप्पमोक्खानिसंसत्थं, न 'इति मं जनो जानातू'ति,* अ॰ नि॰ 1(2).31; *जोतितानीति अत्थो, इति इमस्मिं सुत्ते चतूसुपि ठानेसु खीणासवस्स वचीसच्चमेव कथितन्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.358; **2.ग.** इति / ति + कथन, चिन्तन, अनुभव करने, सुनने एवं जानने आदि के अर्थों वाला क्रि॰

रू॰ + उद्धरण के रूप में (अत्यल्प प्रयोग), प्रायः उद्धरण-चिह्न के स्थान पर प्रयुक्त अथवा यदा कदा, ऐसे, इस प्रकार के अर्थों का सूचक – *इति फन्दनरुक्खोपि, तावदे अज्झभासथ, ... "–",* जा॰ अट्ठ॰ 4.187-88; *इति पटिसञ्चिक्खितब्बं – "–",* पारा॰ अट्ठ॰ 2.26; *महाराजा वस्सो अन्तिमके ठितो इति चिन्तयि, "–",* म॰ वं॰ 8.1; **2.** घ. उद्धरण + इति + उक्तार्थक क्रि॰ रू॰ का प्रयोग (अधिक सामान्य) – *जातिया ब्राह्मणो होति, भारद्वाजो इति भासति,* सु॰ नि॰ 601; *राजा "नेतं तथा, भन्ते!" इति वत्वान तं वदि,* म॰ वं॰ 32.67; *इति राजा विचिन्तेसि चिन्तितं तं तथा अहु,* म॰ वं॰ 17.26; *इति चिन्तयि पञ्जवा,* म॰ वं॰ 5.162; **2.ङ.** क्रि॰ रू॰ + उद्धरण + इति के रूप में भी प्राप्त – *राजारोचेसि थेरानं "कम्मं मे निट्ठितं" इति,* म॰ वं॰ 3.23; *अपुच्छि धम्मिके भिक्खू "किंवादी सुगतो ?" इति,* म॰ वं॰ 5.271; *आरोचेसि कुमारस्स "वळवेत्थेदिसी" इति,* म॰ वं॰ 10.54; **2.च.** उद्धरण + क्रि॰ रू॰ रहित इति – *सम्बुद्धो पटिजानासि, (इति सेलो ब्राह्मणो) धम्मराजा अनुत्तरो,* थेरगा॰ 825; *"रज्जो मुखम्हि पातेमि" इति कण्डं च सो खिपि,* म॰ वं॰ 25.89; *"न युज्झिस्साम दमिळेहि इति भुञ्जथिमं–इति,* म॰ वं॰ 22.82; **2.छ.** एकल नामों अथवा नामपदों के पश्चात् उद्धरणचिह्न " " के स्थान पर प्रयुक्त – *यथा हि अङ्गसम्भारा, होति सद्दो रथो इति,* स॰ नि॰ 1(1).160; *एको यक्खो इधागम्म रत्तक्खी इति विस्सुतो,* म॰ वं॰ 36. 82; *कच्चायनो माणवकोस्मि राज, अनूननामो इति मव्हयन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.165; **2.ज.** समुच्चय के रूप में परिगणित धर्म + इति + अन्य निपात – *तत्थ वुत्ताभिधम्मत्था, चतुधा परमत्थतो, चित्तं चेतसिकं रूपं निब्बानमिति सब्बथा,* अभि॰ ध॰ स॰ 1; *"एवंसीला ते भगवन्तो अहेसुं इतिपि एवंधम्मा ते भगवन्तो अहेसुं इतिपि, एवंपञ्ञा ते भगवन्तो अहेसुं इतिपि, एवंविहारी ते भगवन्तो अहेसुं इतिपि, एवंविमुत्ता ते भगवन्तो अहेसुं इतिपी"ति ?,* दी॰ नि॰ 3.73; *इति पेतं अभूतं, यं तुम्हेहि वुत्तं, तं इमिनापि कारणेन अभूतं ...,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.50.

इति[2] √इ (जाना) का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [एति], जाता है – *तस्स इमानि रूपानि भवन्ति – इति एति उदेति,* सद्द॰ 2.315; *'इति इति क्रियासद्दो सुत्तन्तेसु न दिस्सति',* सद्द॰ 2. 316; *आगमने च होतीति धीमा लक्खेय्य, तं यथा,* सद्द॰ 2. 317; *इति इन्ति, इसि इथ, इमि इम अपरिपुण्णो वत्तमानानयो,* सद्द॰ 2.319.

इतिकत्तब्ब नपुं॰, [इतिकर्तव्य], इस प्रकार से करने योग्य, कर्तव्य, आचरणीय, उत्तम आचरण – **ब्बानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *किंकरणीयानीति इतिकत्तब्बानि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3. 39; – **ब्बेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *किंकरणीयेसूति इतिकत्तब्बेसु,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.40; – **ता** स्त्री॰, इतिकत्तब्ब का भाव॰, सदाचार-परायणता, उत्तम आचरण के पालन की स्थिति – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"तत्थ इतिकत्तब्बताय तुम्हाकं दस्सनाय आगन्तुं ओकासं न लभि"न्ति आह,* जा॰ अट्ठ॰ 2.149; – **सु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इतिकत्तब्बतासु परमेन वेय्यत्तियेन समन्नागतो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.209; *तासु तासु इतिकत्तब्बतासु विञ्ञुतं विजाननभावं पत्तोस्मि,* चरिया॰ अट्ठ॰ 216; *सत्तानं इतिकत्तब्बतासु दक्खो अनलसो सहायभावं उपगच्छति,* चरिया॰ अट्ठ॰ 282.

इतिकातब्बकम्म नपुं॰, कर्म॰ स॰, भिन्न भिन्न प्रकार के करने योग्य कर्म, भिक्षुओं द्वारा किये जाने योग्य ऊंचे या छोटे-मोटे कर्म – **म्मं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इति कातब्बकम्मन्ति तं तं भिक्खूनं कातब्बं उच्चावचकम्मं चीवरविचारणादि,* दी॰ नि॰ टी॰ (लीन॰) 2.113.

इतिकार पु॰, 'इति' शब्द – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इतिकारो कारणत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).60; *इतिकारो निगमनत्थो,* म॰ वं॰ टी॰ 593(ना॰).

इतिकिरा स्त्री॰, इति + किर से व्यु॰, **शा॰ अ॰,** इस प्रकार से कहा गया, इस प्रकार से था, इस रूप में प्रतिवेदित किया गया, **ला॰ अ॰,** परम्परा, अनुश्रुति, जनश्रुति, किंवदन्ती – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मा अनुस्सवेन, मा परम्पराय, मा इतिकिराय, मा पिटकसम्पदानेन,* अ॰ नि॰ 1(1).217; *मा इतिकिरायाति एवं किर एतन्ति मा गण्हित्थ,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.176; *मा इतिकिराय,* सद्द॰ 3.738; *न इतिहितिहं, न इतिकिराय, न परम्पराय, न पिटकसम्पदाय, न तक्कहेतु, न नयहेतु,* महानि॰ 265; *न इतिकिरायाति "एवं किर एत"न्ति न होति,* महानि॰ अट्ठ॰ 314.

इतिचित्तमन / इतिचित्तसंकप्प त्रि॰, ब॰ स॰, **शा॰ अ॰1.** इस प्रकार के मन वाला, इस प्रकार के चित्त-संकल्प वाला, **2.** इस प्रकार के चित्र-विचित्र संकल्पों वाला, **ला॰ अ॰,** प्राणिवध या मरण-हेतु प्रेरक मनोवृत्ति वाला – **प्पो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चित्तसङ्कप्पोति इमस्मिं पदे अधिकारवसेन इतिसद्दो आहरितब्बो, इदञ्हि "इतिचित्तसङ्कप्पो"ति एवं अवुत्तम्पि अधिकारतो वुत्तमेव होतीति वेदितब्बं,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.39; *तस्मा चित्तो नानप्पकारको सङ्कप्पो अस्साति*

चित्तसङ्कप्पोति एवमत्थो दट्ठब्बो, तदे.; – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *अम्भो पुरिस, किं तुय्हिमिना पापकेन दुज्जीवितेन, मतं ते जीविता सेय्यो'ति इतिचित्तमनो चित्तसङ्कप्पो अनेकपरियायेन ...,* पारा. 86; *इतिचित्तमनोति इति चित्तो इति मनो ... एत्थ च "मनो" तिइदं चित्तस्स अत्थदीपनत्थं वुत्तं, तेनेवस्स पदभाजने" यं चित्तं तं मनो'ति,* कङ्खा. अट्ठ. 125; *इतिचित्तमनो चित्तसङ्कप्पो अनेक परियायेन मरणवण्णं वा संवण्णेय्य, मरणाय वा समादपेय्य ...,* पारा. 86; *इतिचित्तमनोति यं चित्तं तं मनो, यं मनो तं चित्तं, चित्तसङ्कप्पोति मरणसञ्जी मरणचेतनो मरणाधिप्पायो,* पारा. 87.

इतिभवाभव पु., इति + भव + अभव अथवा इति + भव + आभव के योग से व्यु., 1. लाभ एवं हानि, 2. विभिन्न प्रकार की योनियों में पुनर्जन्म – **कथा** स्त्री., तत्पु. स., 1. वृद्धि (लाभ) एवं हानि से सम्बन्धित बातचीत, 2. विविध योनियों में जन्म ग्रहण करने के विषय में बातचीत, सत्ताइस प्रकार की तिरच्छानकथाओं की सूची में अन्तिम – **थं** द्वि. वि., ए. व. – *अनेकविहितं तिरच्छानकथं कथेन्तिया, सेय्यथिदं – राजकथं चोरकथं ... समुद्दक्खायिकं इतिभवाभवकथं इति वा,* म. नि. 2.191; – **था** प्र. वि., ए. व. – *भवोति वुड्ढि अभवोति हानि, इति भवो, इति अभवोति यं वा तं वा निरत्थककारणं वत्वा पवत्तितकथा इतिभवाभवकथा,* दी. नि. अट्ठ. 1.81; – **हेतु** अ., क्रि. वि., भिन्न-भिन्न प्रकार के जन्मों को पाने के निमित्त, विविध (सुखद) गतियों में जन्म पाने के लिए – *इतिभवाभवहेतु वा समणो गोतमो धम्मं देसेति,* म. नि. 3.25; *इतिभवाभवहेतूति एवं इमं देसनामयं पुञ्ञकिरियवत्थुं निस्साय तस्मिं तस्मिं भवे सुखं वेदिस्सामीति धम्मं देसेतीति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.18; *इतिभवाभवहेतूति एत्थ इतीति निदस्सनत्थे निपातो, यथा चीवरादिहेतु, एवं भवाभवहेतूपीति अत्थो,* दी. नि. अट्ठ. 3.186; – **ता** स्त्री., भाव., सम्पत्ति-विपत्ति, लाभ-हानि, शाश्वतवाद-उच्छेदवाद एवं पाप-पुण्य के विषय में दुविधाभरी मनोदशा – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *यस्सन्तरतो न सन्ति कोपा, इति भवाभवतञ्च वीतिवत्तो,* चूळव. 320; *इतिभवाभवतञ्च वीतिवत्तोति एत्थ या एसा सम्पत्तिविपत्तिवुड्ढिहानिसस्सतुच्छेदपुञ्ञपापवसेन इति अनेकप्पकारा भवाभवता वुच्चति, चतूहिपि मग्गेहि यथा सम्भवं तेन तेन नयेन तं इतिभवाभवतञ्च वीतिवत्तोति एवमत्थो दट्ठब्बो,* चूळव. अट्ठ. 109.

इतिलोप पु., तत्पु. स., व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में ही प्रयुक्त [इतिलोप], 'इति' शब्द का लोप – **पे** सप्त. वि., ए. व. – *इतिलोपे पठमा पठमाय, इतिसद्दस्स लोपट्ठाने पठमाविभत्तियन्तं पदं पठमाविभत्तियन्तेन समसीयति ...,* सद्द. 3.758.

इतिवत्तब्बता स्त्री., इति + वत्तब्ब (ऐसे कहा जाना चाहिए) का भाव., उचित रूप में कहे जाने की स्थिति – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *अनत्थे निमितं नाम परिवत्तन्ति सब्बथा, इतिवत्तब्बं नेव यातं लङ्कातलं तदा,* चू. वं. 61.72; *"आरम्मणं अलभित्वा तण्हाय अपवत्तं पत्तो"ति वत्तब्बतं नापज्जति,* ध. प. अट्ठ. 2.304.

इतिवाद पु., इति + वाद के योग से व्यु., इस या उस रूप में कहा जाना, वार्तालाप, गपशप, निरर्थक बातचीत – **पमोक्खानिसंस** 1. पु., निरर्थक वार्तालाप से मुक्त हो जाने का लाभ – *नयिदं भिक्खवे, ब्रह्मचरियं वुस्सति जनकुहनत्थं जनलपनत्थं, न लाभसक्कारसिलोकानिसंसत्थं न इतिवादप्पमोक्खा निसंसत्थं,* अ. नि. 1(2).31; *न इतिवादप्पमोक्खानिसंसनत्थन्ति न तेन तेन कारणेन कतवादानिसंसत्थं, न वादस्स पमोक्खानिसंसत्थं,* अ. नि. अट्ठ. 2.267; 2. त्रि., ब. स., निरर्थक वार्तालाप से मुक्ति को अपने लिए महान लाभ-सत्कार मानने वाला – **सा** पु., प्र. वि., ब. व. – *ते उपारम्भानिसंसा चेव धम्मं परियापुणन्ति इतिवादप्पमोक्खानिसंसा च यस्स चत्थाय धम्मं परियापुणन्ति तञ्चस्स अत्थं नानुभोन्ति,* म. नि. 1.187; *इतिवादप्पमोक्खानिसंसा चाति एवं वादप्पमोक्खानिसंसा, परेहि सकवादे दोसे आरोपिते तं दोसं एवं मोचेस्सामाति इमिनाव कारणेन परियापुणन्तीति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).13.

इतिवुत्त[1] नपुं., [इतिवृत्त], घटना, पुण्यमय कृत्य – *खण्डने त्वपदानं च इतिवुत्ते च कम्मनि,* अभि. प. 943.

इतिवुत्त[2] नपुं., खुद्दकनिकाय का चौथा स्वतन्त्र संग्रह, बुद्धशासन के नौ अङ्गों में छठा अंग, स. प. के अन्त. – *इतिवुत्तोदान – चरियापिटक थेर–थेरी–विमानवत्थु–पेतवत्थु–नेतिट्ठकथायो आचरियधम्मपालत्थेरो अकासि,* सा. वं. 31.

इतिवुत्तक नपुं., [बौ. सं. इतिवृत्तक], **शा. अ.**, इस प्रकार से कहा गया, ऐसे कहा गया, **ला. अ.**, नवांगबुद्धशासन का छठा अंग, खुद्दक-निकाय नामक निकाय का चौथा ऐसा संग्रह जो चार निपातों में विभक्त है। इसके एक सौ बारह

सुत्तों में प्रत्येक गद्यबद्ध सुत्त का आरम्भ 'वुत्तं हेतं भगवता' (भगवान द्वारा यह कहा गया) शब्दों से होता है तथा पद्यांश का प्रारम्भ "तत्थेतं इति वुच्चति" से होता है – **कं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"वुत्तञ्हेतं भगवता"ति आदिनयप्पवत्ता दसुत्तरसतसुत्तन्ता इतिवुत्तकन्ति वेदितब्बं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.22; स॰ प॰ के अन्त॰ – *ब्रह्मजालादि ... खुद्दकपाठ–धम्मपद–उदान–इतिवुत्तक –सुत्तनिपात– विमानवत्थु – पेतवत्थु – थेरगाथा – थेरीगाथा – जातक – निद्देस – पटिसम्भिदा – अपदान–बुद्धवंस–चरियापिटकवसेन पन्नरसप्पभेदो खुद्दकनिकायोति इदं सुत्तन्तपिटकं नाम,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.14; – **अट्ठकथा** स्त्री॰, इतिवु॰ पर आचार्य धम्मपाल द्वारा लिखी गई परमत्थदीपिनी नामक अट्ठकथा अथवा व्याख्या, स॰ प॰ के अन्त॰ – *इतिवुत्तोदान चरियापिटक – थेर – थेरी – विमानवत्थु – पेतवत्थु–नेत्तिट्ठकथायो आचरियधम्मपालथेरो अकासि,* सा॰ वं॰ 31; – **वण्णना** स्त्री॰, आचार्य धम्मपाल द्वारा रचित इतिवु॰ की परमत्थदीपनी नामक व्याख्या – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्थयोजना च इतिवुत्तकवण्णनाय अम्हेहि पकासितायेवाति तत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बोति,* उदा॰ अट्ठ॰ 38; – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं परमत्थदीपनियं इतिवुत्तकवण्णनायं वुत्तनयेन वेदितब्बं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.166.

इतिसच्चपरामास पु॰, "यही सत्य है, दूसरा विचार असत्य है", इस रूप में सत्य का मिथ्या रूप में ग्रहण – *इतिसच्चपरामासो दिट्ठिट्ठाना समुस्सया,* अ॰ नि॰ 1(2).47; *"इतिसच्चं इतिसच्च"न्ति गहणपरामासो च ... समुस्सितत्ता उग्गन्त्वा ठितत्ता समुस्सयाति वुच्चन्ति, ते सब्बेपि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.292; *इति एवं सच्चन्ति परामासो इतिसच्चपरामासो, इदमेव सच्चं, मोघमञ्ञन्ति दिट्ठिया पवत्तिआकारं दस्सेति,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 173.

इतिसद्द पु॰, व्याकरणों में प्रयुक्त शब्द [इतिशब्द], 'इति' शब्द – **द्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आख्यातवसेन गमने इतिसद्दो दिस्सति,* सद्द॰ 2.317; *इमस्मिं पदे अधिकारवसेन इतिसद्दो आहरितब्बो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.39; *इतिसद्दो चतूहिपि योगेहि सद्धिं योजेतब्बो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.249; *इतिसद्दो आदिअत्थो पकारत्थो वा,* उदा॰ अट्ठ॰ 174; – **लोप** पु॰, तत्पु॰ स॰, व्याकरणों में ही प्रयुक्त [इतिशब्दलोप], 'इति' शब्द का लोप, स॰ प॰ के अन्त॰ – *इतिसद्दलोपयोजनावसेन अञ्ञो सद्दसन्निवेसो तेनेव अञ्ञो अत्थपटिवेधो च भवति,* सद्द॰ 1.263.

इतिहपरिविज्जित त्रि॰, तत्पु॰ स॰, **शा॰ अ॰**, इतिहास से रहित, अनैतिहासिक, **ला॰ अ॰**, पारम्परिक शिक्षा में अप्राप्त, स्वयं विचिन्तित, आत्मप्रत्यक्ष का विषय – **तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनीतिहन्ति इतिहपरिविज्जितं, अपरपत्तियन्ति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.267.

इतिहा स्त्री॰, इतिकिरा के अनुकरण पर इति + ह का विपरिवर्तित रूप, परम्परा से प्राप्त शिक्षा या विद्या, मौखिक परम्परा, परम्परा से चला आ रहा उपदेश – *पारम्परियमेतिह्यमुपदेसो तथेतिहा,* अभि॰ प॰ 412.

इतिहास पु॰, इति + ह + आस के योग से व्यु॰ [इतिहास], **शा॰ अ॰**, ऐसा निश्चित रूप से घटित हुआ था, **ला॰ अ॰**, इतिहास, परम्परा में चले आ रहे ऐसे आख्यान जिनमें पूर्वकाल में घटित घटनाचक्रों एवं उनसे सम्बद्ध व्यक्तियों का कालक्रमानुगत वर्णन हो, कथानकों के रूप में पूर्ववृत्त, वीरगाथा रूप में उपनिबद्ध ऐतिहासिक उपाख्यान, पौराणिक शैली में कहे गए प्राचीन घटनाक्रम एवं चरित्र – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लक्खणे इतिहासे च, सनिघण्डुसकेटुभे, पञ्चसतानि वाचेति, सधम्मे पारमिं गतो,* सु॰ नि॰ 1026; *लक्खणे इतिहासे च, सनिघण्टुसकेटुभे,* अप॰ 1.14; *इतिह आस, इतिह आसाति ईदिसवचनपटिसंयुत्ते पुराणसङ्खाते गन्थविसेसे,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 80; – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इरुवेदं यजुवेदं सामवेदं, अथब्बणवेदं लक्खणं इतिहासं पुराणं निघण्डु केटुभं अक्खरप्पभेदं पदं वेय्याकरणं,* मि॰ प॰ 173-174; – **कथा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [इतिहासकथा], परम्परा में चली आ रही प्राचीन घटनाओं अथवा व्यक्तियों की पौराणिक शैली की कथा – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इतिहासकथायं च देवासुररणे पुरा दुस्सन्तादिमहीपेहि कतं च चरितभूतं,* चू॰ वं॰ 64.44; – **पञ्चम** त्रि॰, **ब॰ व॰** [इतिहासपञ्चम], पांचवें के रूप में इतिहास-सहित (चारो वेद) – **मानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तिण्णं वेदानं पारगू सनिघण्डुकेटुभानं साक्खरप्पभेदानं इतिहासपञ्चमानं पदको वेय्याकरणो,* दी॰ नि॰ 1.76-77; म॰ नि॰ 2.341; *आथब्बणवेदं चतुत्थं कत्वा इतिह आस, इतिह आसाति ईदिसवचनपटिसंयुत्तो पुराणकथासङ्खातो इतिहासो पञ्चमो एतेसन्ति इतिहासपञ्चमा, तेसं इतिहासपञ्चमानं वेदानं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.200; – **पुराणादिनेकागमकथाविदू** त्रि॰, इतिहास एवं पुराण आदि अनेक आगमों में प्राप्त कथाओं का ज्ञाता, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इतिहासपुराणादिनेकागमकथाविदू,* चू॰ वं॰ 66.143.

इतिहीतिह नपुं., इतिह + इतिह के योग से व्यु., जनश्रुति, सुनी सुनाई बात, अफवाह, किंवदन्ती – **हं** प्र. वि., ए. व. – *इदञ्हि जातु मे दिट्ठं नयिदं इतिहीतिहं,* स. नि. 1(1).181; *न यिदं इतिहीतिहन्ति इदं इतिह इतिहाति न तक्कहेतु वा नयहेतु वा पिटकसम्पदानेन वा अहं वदामि,* स. नि. अट्ठ. 1.194; *न इतिहितिहं, न इतिकिराय, न परम्पराय,* महानि. 265; *न इतिहितिहन्ति "एवं किर आसि, एवं किर आसी"ति न होति,* महानि. अट्ठ. 314; – **हेन** तृ. वि., ए. व. – *"इति आह इति आहा"ति एवं इतिहीतिहेन गहेतब्बं न होति,* जा. अट्ठ. 1.431; – **परम्परा** स्त्री., परम्परा में प्रचलित या परम्परा पर आधारित जनश्रुति अथवा किंवदन्ती, अविच्छिन्न रूप से पूर्वकाल से चली आ रही परम्परा में विद्यमान जनश्रुति – **य** तृ. वि., ए. व. – *सो अनुस्सवेन इतिहितिहपरम्पराय पिटकसम्पदाय धम्मं देसेति,* म. नि. 2.199; *ब्राह्मणानं पोराणं मन्तपदं इतिहितिहपरम्पराय पिटकसम्पदाय,* म. नि. 2.387; *इतिहितिह परम्परायाति एवं किर एवं किराति परम्परभावेन आगतन्ति दीपेति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.298.

इतो अ., प. वि., प्रतिरू. स्थानसङ्केतक निपा., 'इम' सर्वनाम से व्यु. [इतः], **1.** यहां से, इधर से, इससे – *सब्बस्सेव इमसद्दस्स इकारो होति थं–दानि–ह–तो–ध इच्चेतेसु, इत्थं, इदानि, इह, इतो, इध,* क. व्या. 234; *क्वचि तोप्पच्चयो होति पञ्चम्यत्थे, सब्बतो, यतो, ततो, कुतो, अतो, इतो,* क. व्या. 250; **क.** किसी भी नाम के साथ उसके विशे. के रूप में प्रयुक्त, इस ... से – *अहं तं इतो अरञ्ञतो नीहरित्वा बाराणसिमग्गे ठपेस्सामि,* जा. अट्ठ. 4.229; *अयञ्च तं अनुमोदति, एवमेतिस्सा इतो दुक्खतो मुत्ति भविस्सतीति,* पे. व. अट्ठ. 39; **ख.** प. वि. में अन्त होने वाले किसी भी नामपद के बिना स्वतन्त्र प्रयोग, इससे – *स्वायं गहीतो न हि मोक्खितो मे,* जा. अट्ठ. 4.435; *संसारवट्टे सति न हि मोक्खो इतो अकुसलफलतो मम अत्थि,* जा. अट्ठ. 4.436; *"इतो रञ्ञो सुङ्कं न दस्सामी"ति थेय्यचित्तं उप्पादेत्वा तं भण्डं आमसति,* पारा. अट्ठ. 1.287; **ग.** 'तर' प्रत्यय के योग से व्यु., 'उत्तरिं' जैसे तुलनात्मक विशे. के साथ अन्वित, इसकी तुलना में, इसकी अपेक्षा, इससे (कम या अधिक) – *"इतो बहुतरा भोगा ..." तत्थ इतो बहुतराति इमेसु चतूसु पासादेसु भोगेहि अतिरेकतरा भविस्सन्ति,* जा. अट्ठ. 3.180; *द्वे तयो सङ्गामे कत्वा "इतो उत्तरि मयं न सक्कोमा"ति रञ्ञो पण्णं पेसेसुं,* जा. अट्ठ. 1.419; *"अत्थि नु खो, तात, इमस्मिं ब्राह्मणकुले इतो उत्तरिम्पि सिक्खितब्बानि, उदाहु एत्तकानेवा"ति,* मि. प. 9; **घ.** 'अञ्ञ' (दूसरा, भिन्न) के साथ अन्वित, इससे भिन्न, इससे अलग कुछ और – *इतो अञ्ञं पन मनसिकरोन्तस्स पाकटं होति,* पारा. अट्ठ. 2.26; ... *इतो अञ्ञासु जातीसु, अञ्ञेसु अत्तभावेसु,* थेरगा. अट्ठ. 1.190; **ङ.** 'बहिद्धा' (बाहर) के साथ अन्वित, इस बुद्धशासन से – *आयस्स धम्मस्स पदेसवत्ती, इतो बहिद्धा समणोपि नत्थि,* दी. नि. 2.114; *इतो बहिद्धाति मम सासनतो बहिद्धा,* दी. नि. अट्ठ. 2.162; *इतो बहिद्धा पुथुअञ्ञवादिनन्ति आयस्मतो नागितत्थेरस्स गाथा, का उप्पत्ति ?,* थेरगा. अट्ठ. 1.197; **2.** स्थानसूचक क्रि. वि. के रूप में प्रयुक्त, इस स्थान से, इस लोक से, वर्तमान भव या जन्म से, यहां, इधर, **2.क.** यहां से, इस स्थान से – *इतो गच्छाम सीवकाति वुत्ताकारदस्सनं, सिवक, इतो गामन्ततो अरञ्ञट्ठानमेव एहि गच्छाम,* थेरगा. अट्ठ. 1.62; *रागो च दोसो च इतोनिदाना, अरती रती लोमहंसो इतोजा, इतो समुट्ठाय मनोवितक्का, कुमारका धङ्कमिवोस्सजन्ति,* सु. नि. 274; *इतो किर सुवण्णभूमि सत्तमत्तानि योजनसतानि होति, एकेन वातेन गच्छन्ती नावा सत्तहि अहोरत्तेहि गच्छति,* अ. नि. अट्ठ. 1.364; **2.ख.** इस लोक से, इस भव से अथवा वर्तमान भव से – *इतो गतो हिंसेय्य मच्चुराजं, सो हिंसितो आनेय्य पुन इधा"ति,* जा. अट्ठ. 2.203; *इतो भो सुगतिं गच्छ, मनुस्सानं सहब्यतं,* इतिवु. 56; **2.ग.** यहां, इधर – *इतोपि ते ब्रह्मे ददन्तु वित्तं ... इतोपि ते ब्रह्मेति ब्राह्मण, इतो मम पादमूलतोपि तुय्हं धनं ददन्तु,* जा. अट्ठ. 3.308; *इतो सुत्वा अमुत्र अक्खाता इमेसं भेदाय,* म. नि. 1.360; *"इतो हि खो अहं, भो, आगच्छामि समणस्स गोतमस्स सन्तिका"ति,* म. नि. 1.236; **3.** कालसूचक क्रि. वि. के रूप में, इस काल से (लेकर), **क.** अतीतकाल के सन्दर्भ से, अब से ... पूर्वकाल में, आज से ... दिन/वर्षों पूर्व – *"इतो खो सो, वच्छ, एकनवुतो कप्पो यमहं अनुस्सरामि,* म. नि. 2.159; *यं तं सरणमागम्ह, इतो अट्ठमि चक्खुम,* सु. नि. 575; *पठमं इदं दस्सनं जानतो मे, न ताभिजानामि इतो पुरत्था,* जा. अट्ठ. 4.88; **ख.** भविष्यकाल के सन्दर्भ से, आज से ... उपरान्त, अब से ... उपरान्त, अब से लेकर – *इतो पट्ठाय न सोचिस्सामि,* पे. व. अट्ठ. 35; *"इतो तिण्णं मासानं अच्चयेन तथागतो परिनिब्बायिस्सती"ति,* स. नि. 3(2).336; *मा निक्खम, इतो ते सत्तमे दिवसे चक्करतनं पातुभविस्सति,* जा. अट्ठ. 1.73; *"मारिसा इतो*

वस्ससतसहस्सस्स अच्चयेन कप्पुट्ठानं भविस्सति, जा॰ अट्ठ॰ 1.58; – **ज** त्रि॰, इसमें उत्पन्न, इससे उद्भूत – **जो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अलुत्तविभत्तिकेन पदेन सह पदानं समासो होति ... मनसिकारो, कण्ठेकालो, कुटोजो, ततोजो, इतोजो ...,* सद्द॰ 3.743; – **जा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *रागो च दोसो च इतोनिदाना, अरती रती लोमहंसो इतोजा,* सु॰ नि॰ 274; *इतोजाति इतो अत्तभावतो जाता,* महानि॰ अट्ठ॰ 53; – **निदान** त्रि॰, ब॰ स॰, इसके कारण से उत्पन्न, इसे (पूर्व में निर्दिष्ट को) हेतु एवं प्रत्यय बना कर उत्पन्न – **ना**[1] पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *रागो च दोसो च इतोनिदाना ...,* सु॰ नि॰ 274; *इतोनिदानाति अयं अत्तभावो निदानं पच्चयो एतेसन्ति इतोनिदाना,* महानि॰ अट्ठ॰ 53; – **ना**[2] स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसा च निट्ठा च इतोनिदाना,* सु॰ नि॰ 871; *इतोनिदानाति छन्दनिदाना एवाति वुत्तं होति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.244; – **नं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विभवं भवञ्चापि यमेतमत्थं, एतं ते पब्रूमि इतोनिदानं,* सु॰ नि॰ 876; *"भवदिट्ठिपि फस्सनिदाना, विभवदिट्ठिपि फस्स निदाना"ति निद्देसे वुत्तं इतोनिदानन्ति फस्सनिदानं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.245; *इतोनिदानञ्च खो, मोघपुरिस, कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं,* पारा॰ 22; – **समुट्ठान** त्रि॰, ब॰ स॰, इस (सद्यःनिर्दिष्ट) में से उत्पन्न होने वाला – **ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इतोसमुट्ठाना कुसला सङ्कप्पा, तमहं, थपति, वेदितब्बन्ति वदामि,* म॰ नि॰ 2.227; *इतो, सरागादिचित्ततो समुट्ठानं उप्पत्ति एतेसन्ति इतोसमुट्ठाना,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.189.

इतोततो अ॰, निपा॰ [इतस्ततः], इधर-उधर – *इतो ततो भमन्तीहं, अद्दसं नरसारथिं,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 127.

इत्त नपुं॰, इ का भाव॰ [इत्त्व], इकार वर्ण अथवा 'इ' स्वर की स्थिति – **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकवचनस्स–सासु तासद्दस्स आ इत्तं वा याति,* बाला॰ 2.1.13(पृ॰105).

इत्तर त्रि॰, √इ (जाना) से व्यु॰ [इत्त्वर, √इण् + क्वरप्], **शा॰ अ॰,** जा रहा, चल रहा, गतिशील, **ला॰ अ॰,** क्षणभङ्गुर, चञ्चल, अस्थिर, अनित्य, हीन, निकृष्ट, तुच्छ, निन्दनीय, अत्यन्त अल्प, बहुत कम – *निहीन हीन लामका पतिकिट्ठं निकिट्ठं च इत्तरावज्ज कुच्छिता अधमोमकगारय्हा,* अभि॰ प॰ 699-700; – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्तरो च वासो भविस्सति,* महाव॰ 100; – **रं**[1] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तञ्हि तस्स मुसा होति, मोसधम्मञ्हि इत्तरं,* सु॰ नि॰ 762; *मोसधम्मञ्हि इत्तरं, यस्मा यं इत्तरं परित्तपच्चुपट्ठानं, तं मोसधम्मं नस्सनधम्मं होति ...,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.205; *इध मनुस्सलोके सत्तानं जीवितम्पि इत्तरं परित्तं अप्पकं,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 51; – **रं**[2] नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न तम्हि सुखं लब्भति इत्तरम्पि ... तत्थ इत्तरम्पीति परित्तकम्पि, विधावन्तन्ति विविधा धावन्तं,* जा॰ अट्ठ॰ 7.137; – **रं**[3] पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ते "दीघा" इत्तरमद्धानं निक्खमन्ता च पविसन्ता च "रस्सा"ति वेदितब्बा,* विसुद्धि॰ 1.260; – **रानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चित्तानि ... अञ्ञमञ्ञं न पस्सन्तीति, इत्तरानि तावकालिकानि होन्ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰1.159; – **रा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा च माया इत्तरा लहुपच्चुपट्ठाना, एवं विञ्ञाणं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.284; – **रे** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इमेसं सत्तानं आयुसङ्खारे इत्तरे दुब्बले कत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.189; – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तञ्च खो दीघेन अद्धुना न इत्तरन्ति तञ्च सीलं दीघेन कालेन वेदितब्बं, न इत्तरेन, द्वीहतीहञ्हि संयताकारो च संवुतिन्द्रियाकारो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.131.

इत्तरकाल त्रि॰, ब॰ स॰, अल्पकालीन, अल्प कालावधि वाला, क्षणिक – **लं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *परित्तञ्च न बहुकं इत्तरकालं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.101; *किञ्च भिय्यो निब्बानस्स इत्तरकालादिप्पत्तिदोसतो एवञ्हि सति निब्बानं इत्तरकालं सङ्खतलक्खणं ... आपज्जति,* विसुद्धि॰ 2.138; – **लोभासन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, अत्यन्त अल्प समयावधि के लिए प्रकाशित करना – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्तरकालोभासनेन विज्जुसदिसचित्तो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.93; – **ट्ठितिकत्त** नपुं॰, भाव॰, बहुत कम समय ही स्थित रहने की प्रकृति, क्षण-भङ्गुरता – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लोलोति सद्धादीनं इत्तरकालट्ठितिकत्ता अस्सद्धियादीहि लुलितभावेन लोलो,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 93.

इत्तरजच्च त्रि॰, [इत्वरजात्य / इतरजात्य], अत्यन्त निचली जाति में उत्पन्न, नीच कुल में जन्म लेने वाला, अकुलीन, अपने से असमान कुल में उत्पन्न – **च्चो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यत्र हि नामायं घटिकारो कुम्भकारो इत्तरजच्चो समानो,* म॰ नि॰ 2.249; *इत्तरजच्चोति अञ्ञजातिको, मया सद्धिं असमानजातिको, लामकजातिकोति अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.200.

इत्तरजीवित त्रि॰, ब॰ स॰, बहुत कम जीवनावधि वाला, अल्पायु – **ते** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपिच त्वं मया ... उपेत्वा एवं इत्तरजीविते लोकसन्निवासे अप्पमत्तो हुत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.195; स॰ उ॰ प॰ में, **अति-** अत्यन्त कम आयु

वाला – **त्ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *यत्तकं परित्तायुका, अतिइत्तरजीविताति अत्थो,* उदा. अट्ठ. 225.

इत्तरतर त्रि., इत्तर से व्यु., तुल. विशे. [इत्वरतर], अधिक चञ्चल, अधिक अस्थिर, अधिक तुच्छ या निकृष्ट – **रं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *तञ्हि ततोपि इत्तरतरञ्चेव लहुपचुपट्ठानतरञ्च,* स. नि. अट्ठ. 2.284.

इत्तरता स्त्री., इत्तर का भाव. [इत्वरत्व], अस्थिरता, चञ्चलता, अविश्वसनीयता, बेईमानी – **य** तृ. वि., ए. व. – *इत्थी पञ्ञाय इत्तरताय मन्तितं गुय्हं विवरति न धारेति,* मि. प. 104.

इत्तरदस्सन नपुं., तत्पु. स., सरसरी तौर पर देखना, विहङ्गम दृष्टि से देखना, जल्दबाजी में देखना, ऊपरी तौर पर देखना, बिना किसी गम्भीरता के देखना, हलके-फुलके तौर पर देखना – **नेन** तृ. वि., ए. व. – *मा ब्राह्मण इत्तरदस्सनेन विस्सासमापज्जि चतुप्पदस्स,* जा. अट्ठ. 3.71; *न वण्णरूपेन नरो सुजानो, न विस्ससे इत्तरदस्सनेन,* स. नि. 1(1).96; इत्तरदस्सनेनाति लहुकदस्सनेन, स. नि. अट्ठ. 1.132.

इत्तरपच्चुपट्ठान त्रि., ब. स. [इत्त्वरप्रत्युपस्थान], क्षणिक प्रकृति के स्वभाव वाला, क्षणभङ्गुर, क्षणिक आविर्भाव वाला, क्षणिक आभास वाला – **नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *एवं इत्तरपच्चुपट्ठानं अवस्सं पहातब्बं,* जा. अट्ठ. 5.104; – **नट्ठ** पु., क्षणभङ्गुर होने का अर्थ – **ट्ठेन** तृ. वि., ए. व. – *"सुपिनकूपमा कामा इत्तरपच्चुपट्ठानट्ठेना"ति,* महानि. 5; *इत्तरपच्चुपट्ठानट्ठेनाति अप्पत्वा, न उपगन्त्वा तिट्ठनट्ठेन,* महानि. अट्ठ. 25; स. उ. प. के रूप में, **खणिक ...** – पु., क्षणभङ्गुर एवं अस्थिर प्रकृति से युक्त होने का तात्पर्य – **ट्ठेन** तृ. वि., ए. व. – *एवमेव खणिकइत्तरपच्चुपट्ठानट्ठेन अयं कायोपि मरीचि धम्मोति,* ध. प. अट्ठ. 1.191.

इत्तरपञ्ञ त्रि., ब. स. [इत्त्वरप्रज्ञ], निकृष्ट या अधम प्रज्ञा वाला, साधारण प्रज्ञा वाला – **ञ्ञेन** पु., तृ. वि., ए. व. – *"नेसो अञ्ञेन इत्तरपञ्ञेन सक्का विसज्जेतुं अञ्ञत्र तवादिसेन बुद्धिमता"ति,* मि. प. 121.

इत्तरपुरिस पु., कर्म. स., सामान्य जन, पृथग्जन, अज्ञानी जन – **सेन** तृ. वि., ए. व. – *अद्धा इदं मन्तपदं अञ्ञेन इत्तरपुरिसेन सुदुद्दसं,* जा. अट्ठ. 6.241; पाठा. इतर.

इत्तरपेम त्रि., ब. स., अस्थिर रूप में प्रेम करने वाला, वह, जिसका प्रेम डांवाडोल रहता है, असुदृढ़ प्रेम वाला – **मो** पु., प्र. वि., ए. व. – *एकच्चो पुग्गलो इत्तरसद्धो होति इत्तरभत्ती इत्तरपेमो इत्तरप्पसादो,* अ. नि. 2(1).155.

इत्तरप्पसाद त्रि., ब. स. [इत्त्वरप्रसाद], अस्थिर अथवा डांवाडोल श्रद्धाभाव से युक्त – **दो** पु., प्र. वि., ए. व. – *एकच्चो पुग्गलो इत्तरसद्धो होति इत्तरभत्ती इत्तरपेमो इत्तरप्पसादो,* अ. नि. 2(1).155.

इत्तरभत्ति त्रि., ब. स. [इत्त्वरभक्ति], अस्थिर अथवा डांवाडोल रूप में भक्ति-भाव रखने वाला – **त्ती** पु., प्र. वि., ए. व. – *एकच्चो पुग्गलो इत्तरसद्धो होति इत्तरभत्ती ...,* अ. नि. 2(1).155.

इत्तरभाव पु., [इत्त्वरभाव], क्षणभङ्गुरता, अस्थिर स्वभाव, चञ्चल प्रकृति – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *इत्तरभावं दस्सेत्वा ...,* जा. अट्ठ. 4.189; *ये ते मनुस्सा मनुस्सानं भोगानं जीवितस्स च इत्तरभावं याथावतो जानन्ति,* पे. व. अट्ठ. 51.

इत्तरवास पु., कर्म. स. [इत्त्वरवास], अल्पकालिक निवास, क्षणमात्र के लिए स्थिति, कुछ ही समय के लिए निवास – **सो** प्र. वि., ए. व. – *इत्तरवासोति जानियान, उदये मा पमाद चरस्सु धम्म'न्ति,* जा. अट्ठ. 4.100; *इत्तरवासोति या एसा इमस्मिं संसारे मनुस्सभूता सुग्गति च तिरच्छानभूता दुग्गति च, एतं उभयम्पि "इत्तरवासो"ति ... चरस्सु धम्मं,* जा. अट्ठ. 4.101.

इत्तरसञ्ञात त्रि., तत्पु. स., अत्यन्त अस्थिर अथवा अत्यन्त संक्षिप्त काल के रूप में माना गया, अल्पावधिक काल के रूप में ज्ञात – **ते** सप्त. वि., ए. व. – *रस्सं अस्सासं इत्तरसञ्ञाते अस्ससति,* पटि. म. 174; *"रस्सं अस्सासं इत्तरसञ्ञाते अस्ससती"ति,* विसुद्धि. 1.261.

इत्तरसत्त पु., कर्म. स. [इतरसत्त्व], साधारण जीव, सामान्य प्राणी, अधम अथवा नीच प्राणी – **त्तो** प्र. वि., ए. व. – *न खो पनेस इत्तरसत्तो, बुद्धङ्कुरो एस,* जा. अट्ठ. 4.331; *सचे अयं इत्तरसत्तो अभविस्स, न अम्हाकं आचरियो एवरूपं उपमं आहरेय्य ...,* अ. नि. अट्ठ. 1.121; – **त्ता** ब. व. – *पब्बजित्वा च पन इत्तरसत्ता विय पतितसिङ्गा न होन्ति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.200.

इत्तरसद्ध त्रि., ब. स. [इत्त्वरश्रद्ध], डगमग अथवा अस्थिर श्रद्धा वाला, अपरिपूर्ण श्रद्धाभाव से युक्त, अत्यन्त दुर्बल श्रद्धाभाव वाला – **द्धो** पु., प्र. वि., ए. व. – *इत्तरसद्धोति परित्तकसद्धो,* अ. नि. अट्ठ. 3.52; *इत्तरसद्धोति परित्तसद्धो, अपरिपुण्णसद्धो,* प. प. अट्ठ. 93.

इत्तरसमापन्न त्रि., कुछ समय पूर्व ही (किसी स्थिति विशेष) प्राप्त किया हुआ, कल या परसों ही प्राप्त किया हुआ – **न्नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *दीघरत्तं समापन्नो अयमायस्मा इमं कुसलं धम्मं, उदाहु इत्तरसमापन्नो'ति,* म. नि. 1.400; ... *उदाहु इत्तरसमापन्नो हिय्यो वा परे वा परसुवे वा दिवसे समापन्नो'ति एवं गवेसतूति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).276.

इत्तरसम्पयुत्त त्रि., तत्पु. स., निम्न श्रेणी के लोगों के साथ जुड़ा हुआ, निम्न प्रकृति के व्यक्तियों द्वारा प्रयोग में उतारा गया – **त्ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *अनित्तरा इत्तरसम्पयुत्ता, यञ्ञा च वेदा च सुभोग लोके,* जा. अट्ठ. 7.46; *तत्थ अनित्तराति सुभोग इमस्मिं लोके यञ्ञा च वेदा च अनित्तरा न लामका महानुभावा, ते इत्तरेहि ब्राह्मणेहि सम्पयुत्ता ...,* जा. अट्ठ. 7.47.

इत्तरानुपस्सना स्त्री., तत्पु. स., अनित्यता अथवा क्षणभङ्गुरता की अनुपश्यना अथवा तद्विषयक ज्ञान-दर्शन – **ना** प्र. वि., ब. व. – *अनिच्चानुपस्सनाय सिद्धाय इत्तरानुपस्सना सुखेनेव सिज्झन्तीति,* थेरगा. अट्ठ. 1.240.

इत्थं / इत्थ अ., प्रकारवाचक निपा., 'इम' सर्वनाम से व्यु. [इत्थम्], **क.** ऐसे, इस रीति से, इस प्रकार से – *इति–त्थं च एवं किच्छे कथञ्चि च,* अभि. प. 1158; *इत्थं, इदानि, इह, इतो, इध,* क. व्या. 234; *इत्थं सुदन्ति एत्थ इत्थन्ति निदस्सनत्थे निपातो, इमिना पकारेनाति अत्थो,* अप. अट्ठ. 1.245; *"एवम्पि ते मनो, इत्थम्पि ते मनो, इतिपि ते चित्त"न्ति,* दी. नि. 1.197; **ख.** किसी अनुच्छेद (पैरा) के प्रारम्भ में प्रयुक्त होने पर पूर्व अनुच्छेदों में कथित विषयों का संकेतक – *"इत्थं खो मे, भन्ते, सञ्चयो वेलट्ठपुत्तो सन्दिट्ठिकं सामञ्ञफलं पुट्ठो समानो विक्खेपं ब्याकासि,* दी. नि. 1.52.

इत्थंगोत्त त्रि., ब. स., इस इस गोत्र वाला, अमुक गोत्र का, अमुक कुलपरम्परा से सम्बद्ध – **त्ते** स्त्री., संबो., ए. व. – *इत्थिं वा कुमारिं वा एवमाह इत्थंनामे इत्थंगोत्ते किं अत्थि ?,* महानि. 168.

इत्थत्त[1] नपुं., इत्थं अथवा इत्थ का भाव. [बौ. सं.,, इत्थत्व], ऐसा ऐसा होना, इस प्रकार की अवस्था, विद्यमान स्थिति, वर्तमान जीवन, सामने दिखलाई दे रहा यह लोक, यह संसार – **त्तं**[1] प्र. वि., ए. व. – *ग्यायं "इत्थत्तं दिट्ठधम्मो इधलोको"ति च लद्धवोहारो खन्धादिलोको,* उदा. अट्ठ. 318; – **त्तं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *देवा आगन्तारो इत्थत्तं, यदि वा अन्तागन्तारो इत्थत्तं,* म. नि. 2.338; – **त्ताय** च. वि., ए. व. – *इत्थत्तायाति इत्थभावाय एवं परिपुण्णपञ्चखन्धभावायाति अत्थो,* दी. नि. अट्ठ. 2.82; *नापरं इत्थत्तायाति इदानि पुन इत्थभावाय एवं सोळसकिच्चभावाय किलेसक्खयाय वा मग्गभावनाकिच्चं मे नत्थीति अब्भञ्ञासिं,* पारा. अट्ठ. 1.127; *इत्थत्तायाति इमे पकारा इत्थं, तब्भावो इत्थत्तं, तदत्थाय,* वि. वि. टी. 1.75.

इत्थत्त[2] / **इत्थित्त** नपुं., इत्थी का भाव. [स्त्रीत्व], नारीत्व, स्त्री की अवस्था में रहना, नारीपन, स्त्री का स्वभाव – **त्तं**[1] प्र. वि., ए. व. – *इत्थिया भावो इत्थत्तं, पुरिसस्स भावो पुरिसत्तं, तत्थ इत्थिलिङ्ग निमित्तकुत्ताकप्पहेतुभावलक्खणं ... पुरिसत्तं,* अभि. ध. वि. टी. 175; *इत्थत्तं इत्थिभावोति उभयम्पि एकत्थं, इत्थिसभावोति अत्थो,* ध. स. अट्ठ. 354; *इत्थत्ते भिक्खवे, अभिरता सत्ता पुरिसेसु संयोगं गता, एवं खो भिक्खवे, इत्थी इत्थत्तं नातिवत्तति,* अ. नि. 2(2).203; – **तं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *सा इत्थित्तं विराजेत्वा पुरिसत्तं भावेत्वा कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपन्ना,* दी. नि. 2.199; – **ते** सप्त. वि., ए. व. – *इत्थित्तं नाम अलं, न हि इत्थित्ते ठत्वाचक्कवत्तिसिरिं ...,* दी. नि. अट्ठ. 2.268.

इत्थन्तर त्रि., नारी-सारथी से युक्त – **रेन** नपुं., तृ. वि., ए. व. – *छब्बग्गिया भिक्खुनियो यानेन यायन्ति – इत्थियुत्तेनपि पुरिसन्तरेन, पुरिसयुत्तेनपि इत्थन्तरेन,* चूळव. 442; *इत्थियुत्तेनाति धेनुयुत्तेन पुरिसन्तरेनाति पुरिससारथिना, पुरिसयुत्तेनाति गोणयुत्तेन, इत्थन्तरेनाति इत्थिसारथिना,* महाव. अट्ठ. 347.

इत्थन्नाम त्रि., ब. स., अमुक नाम वाला, इस नाम का, इस इस नाम वाला – **मो** पु., प्र. वि., ए. व. – *इत्थं च नाम, नामसद्दे परे समासे वत्तमानस्स इदसद्दस्स इत्थमिच्चादेसो होति, इदं नाम एतस्सा ति इत्थन्नामो एवं नामो ति अत्थो,* सद्द. 3.686; *इत्थन्नामो किर भिक्खु आसवानं खया ... विहरति,* अ. नि. 1(2).168; *यंनूनाहं कोसिनारके मल्ले कुलपरिवत्तसो ठपेत्वा भगवन्तं वन्दापेय्यं – "इत्थन्नामो, भन्ते, मल्लो सपुत्तो सभरियो सपरिसो सामच्चो भगवतो पादे सिरसा वन्दती"ति,* दी. नि. 2.112; – **मा** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *भिक्खुनी सुणाति, 'इत्थन्नामा भिक्खुनी कालङ्कता',* म. नि. 2.138; *इत्थन्नामा, भन्ते भिक्खुनी आबाधिकिनी दुक्खिता बाळहगिलाना,* अ. नि. 1(2).166; – **मे** स्त्री., संबो., ए. व. – *इत्थंनामे इत्थंगोत्ते किं अत्थि? यागु अत्थि, भत्तं अत्थि, खादनीयं अत्थि,* महानि. 168; –

स्स पु., च. वि., ए. व. – *"इत्थन्नामस्स दाने दीयमाने सकिं वा द्विक्खत्तुं वा तिक्खत्तुं वा महापथवी कम्पिता"ति,* मि. प. 123; *सङ्घो इमं कथिनदुस्सं इत्थन्नामस्स भिक्खुनो देति कथिनं अत्थरितुं,* महाव. 331; – **मं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *सङ्घो इत्थन्नामं उपसम्पादेति इत्थन्नामेन उपज्झायेन,* महाव. 63; – **माय** स्त्री., प. वि., ए. व. – *इत्थन्नामा इत्थन्नामाय अय्याय उपसम्पदापेक्खा,* चूळव. 437.

इत्थभाव / इत्थम्भाव पु., इत्थं / इत्थ (= एत्थ) + भाव के योग से व्यु., **शा. अ.,1.** इस इस प्रकार की स्थिति अथवा अवस्था, **2.** यहीं की स्थिति या जीवन, **ला. अ.,** इसी लोक का जीवन, ऐहलौकिक अस्तित्व, मानव आदि के इसी रूप की अवस्था – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *इत्थत्तन्ति इत्थभावञ्च पत्थयमाना, मनुस्सादिभावं इच्छन्तीति वुत्तं होति,* सु. नि. अट्ठ. 2.279; *जानन्तो एव च नेसं इत्थभावं मनुस्सभावं ततो अञ्ञथाभावं अञ्ञथातिरच्छानभावञ्च उपपत्तितो पुरेतरमेव जानामि,* थेरगा. अट्ठ. 2.294; – **वाय** च. वि., ए. व. – *नापरं इत्थत्तायाति इदानि पुन इत्थभावाय एवं सोळसकिच्चभावाय किलेसक्खयाय वा मग्गभावनाकिच्चं मे नत्थीति अब्भञ्ञासिं,* पारा. अट्ठ. 1.127; *इदानि पुन इत्थभावाय,* स. नि. अट्ठ. 1.181; – **वञ्ञथाभाव** पु., इस प्रकार का अथवा दूसरे प्रकार की अवस्था या अस्तित्व, इस स्वरूप में अथवा दूसरे रूप में जीवन – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *"इत्थभावञ्ञथाभावं, सत्तानं आगतिं गति"न्ति,* म. नि. 1.412; *इत्थंभावञ्ञथाभावन्ति इत्थंभावोति इदं चक्कवाळं,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).301; *इत्थभावञ्ञथाभावं, झाने पञ्चङ्गिके ठितो,* थेरगा. 917; *जातिमरणसंसारं, ये वजन्ति पुनप्पुनं इत्थभावञ्ञथाभावं, अविज्जायेव सा गति,* सु. नि. 734.

इत्थम्भूत त्रि., **शा. अ.,1.** इस प्रकार का, इस इस चिह्न अथवा लक्षणों वाला, ऐसी ऐसी स्थिति को प्राप्त, **2.** व्याकरण में, उप. अनु के अनेक अर्थों में से "विशिष्ट लक्षण वाला" अर्थ का द्योतक – *लक्खणवीच्छेत्थम्भूतभागादिके अनु,* अभि. प. 1174; *लक्खणित्थम्भूत वीच्छास्वाभिना,* मो. व्या. 2.10; – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *इत्थम्भूतो ति इमं पकारं भूतो पत्तो,* सद्द. 2.555; – **ता** पु., प्र. वि., ब. व. – *इत्थम्भूता बुद्धा,* अप. अट्ठ. 1.111; – **तक्खान / ताख्यान** नपुं., व्याकरणों का पारिभाषिक शब्द [इत्थंभूताख्यान], किसी व्यक्ति या वस्तु के विशिष्ट लक्षणों से युक्त होने का कथन, विशिष्ट लक्षणों का प्रकाशन – **नं** प्र. वि., ए. व. – *एत्थ च तं खो पन भवन्तं गोतमं एवं कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुगतोति पदसमुदायो इत्थम्भूतक्खानं,* क. व्या. 301; – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *तेन युत्तत्ता इत्थम्भूतक्खाने भवन्तं गोतमं ति पदे साम्यत्थे दुतिया,* क. व्या. 301; – **नत्थ** पु., [इत्थम्भूताख्यानार्थ], विशिष्ट लक्षणों के कथन का तात्पर्य – **त्थे** सप्त. वि., ए. व. – *तं खो पनाति इत्थम्भूताख्यानत्थे उपयोगवचनं, तस्स खो पन भोतो गोतमस्साति अत्थो,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(2).224; – **लक्खण** नपुं., [इत्थम्भूतलक्षण], मानक चिह्न, मानक लक्षण – **णे** सप्त. वि., ए. व. – *इत्थम्भूतलक्खणे करणवचनं,* थेरगा. अट्ठ. 2.60; *इत्थम्भूतलक्खणे करणवचनं दट्ठब्बं,* थेरगा. अट्ठ. 2.93; *पासादिकेन वत्तेनाति वा इत्थम्भूतलक्खणे करणवचनं,* थेरगा. अट्ठ. 2.95.

इत्थाकप्प पु., तत्पु. स., स्त्रियों का सजना संवरना, नारियों की साज सज्जा अथवा पहनना ओढ़ना, स्त्रियों का हावभाव या चाल ढाल – **प्पं** द्वि. वि., ए. व. – *इत्थी, भिक्खवे, अज्झत्तं इत्थिन्द्रियं मनसि करोति – इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पं ... इत्थिस्सरं इत्थालङ्कारं,* अ. नि. 2(2).203; *इत्थाकप्पन्ति निवासनपारुपनादिइत्थिआकप्पं,* अ. नि. अट्ठ. 3.169; – **प्पो** प्र. वि., ए. व. – *यं इत्थिया इत्थिलिङ्गं इत्थिनिमित्तं इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पो इत्थत्तं इत्थिभावो – इदं तं रूपं इत्थिन्द्रियं,* ध. स. 632, 714; *आकप्पोति गमनादिआकारो इत्थियो हि गच्छमाना अविसदा गच्छन्ति ...,* ध. स. अट्ठ. 353; *इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पोति इमानि लिङ्गादीनि इत्थिन्द्रियस्स फलत्ता वुत्तानि,* ध. स. अट्ठ. 403.

इत्थाकर पु., तत्पु. स., स्त्रीरूपी रत्न का उत्पत्तिस्थान – **रो** प्र. वि., ए. व. – *इत्थाकरोति इत्थिरतनस्स उप्पत्तिट्ठानं,* स. नि. टी. 2(1).146.

इत्थागार नपुं., तत्पु. स. [स्त्र्यागार], नारीसमूह, मातृग्राम, अन्तःपुर का स्त्रीसमूह, अन्तःपुर, अवरोध, जनानखाना, रनिवास – *इत्थागारं तु ओरोधो सुद्धन्तोन्तेपुरं पि च,* अभि. प. 215; *इत्थागारन्तु ओरोधो उब्बरीति पि वुच्चति,* सद्द. 2.347; – **रं¹** प्र. वि., ए. व. – *राजा च मे मागधो सेनियो बिम्बिसारो उपट्ठातब्बो इत्थागारञ्च बुद्धप्पमुखो च भिक्खुसङ्घो,* महाव. 91; *इत्थागारं सुभद्दाय देविया पटिस्सुत्वा सीसानि न्हायित्वा पीतानि वत्थानि पारुपित्वा येन सुभद्दा देवी तेनुपसङ्कमि,* दी. नि. 2.141; – **रं²** द्वि. वि., ए. व. – *विपरीतं इत्थागारं दिस्वा विप्पटिसारी अहोसि,* मि. प. 264; – **स्स** ष. / च. वि., ए. व. – *घरसामिको विय इत्थागारस्स*

मज्झे निसिन्नोसि, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.284; *तत्थ इत्थागारस्स दानं दीयित्थ, मम दानं पटिक्कमि,* स॰ नि॰ 1(1).72; – **रेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यहिमनुविचरि राजा, परिकिण्णो इत्थागारेहि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.180; *अनेकेहि च इत्थागारेहि इत्थियो केसमस्सुं ओहारेत्वा,* दी॰ नि॰ 2.183; *इत्थागारेहीति दासियो उपादाय इत्थियो इत्थागारा नाम ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.181; – **रेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इत्थागारेसु सेसेसु विना समकुलङ्गना गब्भो जातु महीपालं तं पटिच्च न संठाहि,* चू॰ वं॰ 59.33; – **सहस्स** नपुं॰, हजारों अन्तःपुर-निवासी नारियां – **स्सानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चतुरासीतिया इत्थागारसहस्सानं अमच्चपारिसज्जादीनञ्च,* चरिया॰ अट्ठ॰ 43; – **जन** पु॰, अन्तःपुर के लोग (नारियां) – **ने** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अलङ्कतपटियत्ते इत्थागारजने उपगन्त्वा ...,* अप॰ अट्ठ॰ 2.19.

इत्थाधिप्पाय त्रि॰, ब॰ स॰, स्त्रियों की इच्छा करने वाला, नारी के प्रति स्पृहालु – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुरिसो, भिक्खवे, इत्थाधिप्पायो अप्पं रत्तिया सुपति,* अ॰ नि॰ 2(1).147.

इत्थाधिमुत्त त्रि॰, तत्पु॰ स॰, स्त्रियों के प्रति मानसिक रुझान रखने वाला – **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *... केचि इत्थाधिमुत्ता, केचि पुरिसाधिमुत्ता ...,* नेत्ति॰ 80.

इत्थाधिवचनकुसल त्रि॰, व्याकरणों में प्रयुक्त, स्त्रीलिङ्ग के प्रयोग में कुशल – **लो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थाधिवचनकुसलो,* नेत्ति॰ 29.

इत्थालङ्कार पु॰, तत्पु॰ स॰, स्त्रियों के आभूषण या गहने, नारियों की अलङ्करण-सामग्री या सजने संवरने के उपकरण – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थालङ्कारो नाम सीसूपगो गीवूपगो हत्थूपगो पादूपगो कटूपगो,* पाचि॰ 472; – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थालङ्कारं धारेन्तिया पाचित्तियं कत्थ पञ्ञत्तन्ति,* परि॰ 134; *इत्थालङ्कारं धारेन्ती द्वे आपत्तियो आपज्जति,* परि॰ 153; *इत्थालङ्कारन्ति इत्थिया पसाधनभण्डं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.169.

इत्थि द्रष्ट॰ इत्थी के अन्त॰.

इत्थिअङ्ग पु॰, तत्पु॰ स॰, स्त्रीभाव, नारीत्व, स्त्री-शरीर, स्त्रीलिङ्ग – **ङ्गे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *साकियम्हि कुले जाता, इत्थिअङ्गे पतिट्ठिता,* अप॰ 2.254.

इत्थिउभतोव्यञ्जनक पु॰, उभयलिङ्गी नारी, पुरुष तथा नारी दोनों के लैंगिक लक्षणों से युक्त (नारी) – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा इत्थिउभतोब्यञ्जनको सयम्पि गब्भं गण्हाति, परम्पि गण्हापेति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 355.

इत्थिकथा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीकथा], नारियों के विषय में बातचीत, स्त्रियों से सम्बन्धित कथा या कथन – **था** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिकथापि वण्णसण्ठानादीनि पटिच्च अस्सादवसेन न वट्टति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.80; – **थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनेकविहितं तिरच्छानकथं कथेन्ता, सेय्यथिदं – राजकथं चोरकथं, ... नगरकथं, जनपदकथं, इत्थिकथं, सूरकथं ...,* महाव॰ 261.

इत्थिका स्त्री॰, इत्थी से अल्पार्थक अथवा अपकर्षार्थ 'क' प्रत्यय जोड़कर व्यु॰ [बौ॰ सं॰ इस्त्रिका / इष्टिका], साधारण स्त्री, सामान्य श्रेणी की नारी, अनुत्तम स्थिति वाली स्त्री, निम्न स्तर की स्त्री – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अञ्ञा इत्थिका निसिन्ना वा निपन्ना वा विजायन्ति,* दी॰ नि॰ 2.11; *यथा अञ्ञा इत्थिका नव वा दस वा मासे गब्भं कुच्छिना परिहरित्वा विजायन्ति,* तदे॰; – **हि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इत्थिकाहि आतपे पत्थटानं वीहिआदीनं तेमनभयेन अन्तोपवेसितकाले ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.322; – **नं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इत्थिकानञ्च पब्बज्जं, हं तं याचि पुनप्पुनं,* अप॰ 2.202; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अकालवस्सं सुत्वा तं विस्सज्जेत्वा तमित्थिकं,* म॰ वं॰ 21.28; – **य** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मातु मत्तिकं, इत्थिकाय इत्थिधनं, पञ्ञं पेत्तिकं अञ्ञं पितामहं,* पारा॰ 17; *इत्थिकाय नाम इत्थिपरिभोगानंयेव न्हानचुण्णादीनं अत्थाय लद्धं धनं कित्तकं भवेय्य,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.162; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अपत्थिति॰, अप्पि॰, बहुत्थि॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

इत्थिकाम पु॰, तत्पु॰ स॰, नारी-विषयक कामना, स्त्रियों के साथ विषय-भोगों का आनन्द, स्त्री के साथ भोग-विलास – **मेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इत्थिकामेहि राजा मञ्ञे परिचारेन्तो,* स॰ नि॰ 2(2).323; *इत्थिकामेहीति इत्थीहि सद्धिं कामा इत्थिकामा, तेहि इत्थिकामेहि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.146.

इत्थिकारण नपुं॰, स्त्री के कारण, कारण के रूप में स्त्री – **णा** प॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰, स्त्रियों के कारण से – *"न इत्थिकारणा राज, पुत्तं घातेतुमरहसी"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.171; *न इत्थिकारणाति पापं लामकं मातुगामं निस्साय ...,* तदे॰.

इत्थिकिच्च नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीकृत्य], स्त्री के लिए काम, स्त्री-सेवा, नारी का कामकाज – **च्चं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *करिस्सं इत्थिकिच्चं च किच्चं चाञ्ञं यथिच्छितं,* म॰ वं॰ 7.22.

इत्थिकुत्त नपुं॰, तत्पु॰ स॰, स्त्री का नाज़-नखरा भरा व्यवहार, नारी की मोहक अदा, मन को खींच लेने वाले

स्त्री के अनोखे हावभाव, नारी का छलबल अथवा दांवपेंच – **त्तं¹** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थी, भिक्खवे, अज्झत्तं इत्थिन्द्रियं मनसि करोति इत्थिकुत्तं,* अ॰ नि॰ 2(2).203; *इत्थिकुत्तन्ति इत्थिकिरियं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.169; – **त्तं²** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा हि इत्थिलिङ्गं इत्थिनिमित्तं इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पो इत्थत्तं इत्थाकप्पो'ति इमानि लिङ्गादीनि इत्थिन्द्रियस्स फलत्ता वुत्तानि,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 403; – **त्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यक्खिनियो इत्थिकुत्तेन एकं ... पलोभेत्वा अत्तनो वसे कत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 2.105; *इत्थिकुत्तेन पलोभेत्वा झाना चावेत्वा ब्रह्मचरियमस्स अन्तरधापेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.273; – **त्तादि** त्रि॰, नारी के छल-कपट भरे व्यवहार आदि की चेष्टा – **दीनि** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एकदिवसं दिवाविहारट्ठानं गन्त्वा इत्थिकुत्तादीनि दस्सेतुं आरभि,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.51; – **दीहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इत्थिकुत्तादीहि पलोभेतुकामा अहोसि,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.102; *"इत्थिकुत्तादीहि नं पलोभेत्वा उप्पब्बाजेस्सामी"ति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.22; – **दस्सन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, स्त्री के सम्मोहक व्यवहार को दिखलाना, नारी की मोहक चालढाल का प्रयोग – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरञ्ञकं कुञ्जरं इत्थिकुत्तदस्सनेन पलोभेत्वा बन्धित्वा आनयन्ति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.165; – **हावभावविलास** पु॰, द्व॰ स॰, स्त्री का मोहक व्यवहार एवं उसके सम्मोहक हावभाव या अदा – **सेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *वाणिजे इत्थिकुत्तहावभावविलासेहि पलोभेत्वा ... मनुस्सा अत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.105; – **लीला** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, स्त्री के सम्मोहक व्यवहार की लीला – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदानि नं अत्तनो इत्थिकुत्तलीलाय ओलोकापेस्सामी'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.415; – **विलास** पु॰, द्व॰ स॰, स्त्री की मोहक अदा एवं साज-शृंगार – **सेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इत्थिकुत्तविलासेहि च पुरिसे पलोभेत्वा अत्तनो . ..,* जा॰ अट्ठ॰ 2.105; *सा ततो पट्ठाय मण्डितपसाधिता इत्थिकुत्तविलासेहि तं पलोभेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.196; – **हासविलास** पु॰, द्व॰ स॰, स्त्री का मनमोहक व्यवहार एवं आकर्षक हंसी – **से** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यथाबलं इत्थिकुत्तहासविलासे दस्सेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.65.

इत्थिकुमारिका स्त्री॰, द्व॰ स॰, विवाहित स्त्री एवं कुमारी – **कपटिग्गहण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, विवाहित नारी एवं कुमारी को दान के रूप में ग्रहण करना अथवा उनका स्पर्श करना – **णा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिकुमारिकपटिग्गहणा पटिविरतो समणो गोतमो,* दी॰ नि॰ 1.5; *इत्थिकुमारिकपटिग्गहणा पटिविरतो होति,* म॰ नि॰ 1.241; *एत्थ इत्थीति पुरिसन्तरगता, इतरा कुमारिका नाम, तासं पटिग्गहणम्पि आमसनम्पि अकप्पियमेव,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.72.

इत्थिख्य त्रि॰, ब॰ स॰, व्याकरणों में प्रयुक्त [स्त्र्याख्य], स्त्री-लिङ्ग का, स्त्री-लिङ्ग वाला – **ख्या** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ते इवण्णुवण्णा यदा इत्थिख्या तदा प-सञ्ञा होन्ति,* क॰ व्या॰ 59; *"ते इत्थिख्या पो"इति इत्थियमिवण्णुवण्णानं प-सञ्ञा,* बाला॰ 96.

इत्थिगन्ध पु॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीगन्ध], स्त्री की गन्ध, स्त्री के शरीर की सुगन्ध, स्त्री के शरीर पर लगाए गए चन्दनादि के लेपों की सुगन्ध – **धो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिगन्धो, भिक्खवे, पुरिसस्स चित्तं परियादाय तिट्ठति,* अ॰ नि॰ 1(1).2; *इत्थिया सरीरे आरुळ्हो आगन्तुको अनुलिम्पनादिगन्धो "इत्थिगन्धो"ति वेदितब्बो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.236; – **न्धेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इत्थिगन्धेसु सारत्तो विविधं विन्दते दुखं,* थेरगा॰ 738; *इत्थिगन्धेसूति इत्थिया चतुसमुट्ठानिकगन्धायतनेसु,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.236.

इत्थिगब्भ पु॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीगर्भ], गर्भ में आया हुआ नारी शिशु, मां की कोख में आया हुआ नारी भ्रूण – **ब्भो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुच्छिम्हि गब्भो पतिट्ठितो, सो च खो पुरिसगब्भो, न इत्थिगब्भो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.61.

इत्थिगुम्ब पु॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीगुल्म], स्त्रियों का झुण्ड, नारियों का समूह – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिगुम्बस्स पवरा, अच्चन्तं पियभाणिनी,* जा॰ अट्ठ॰ 6.304; *तदा तस्स महेसीहं, इत्थिगुम्बस्स उत्तमा,* अप॰ 2.250.

इत्थिघटा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीघटा], स्त्रियों का समूह, नारी-वर्ग – **य** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न मय्हं इत्थिघटाय अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.282; *न सक्का मुसावादं कातुं, न मय्हं इत्थिघटाय अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.283.

इत्थिघातक पु॰, [स्त्रीघातक], स्त्री की हत्या करने वाला, नारीघातक – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *थीघातकाति इत्थिघातका,* जा॰ अट्ठ॰ 5.394; *थीघातका ये चिमे पारदारिका,* जा॰ अट्ठ॰ 5.393.

इत्थिचित्त नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीचित्त], स्त्री-विषयक चित्त या चिन्तन, नारीविषयक मानसिक अभिरुचि, स्त्री-विषयक अभिरति – **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिचित्तं विराजेत्वा ब्रह्मलोकूपगा अहूति,* पे॰ व॰ 386; *इत्थिचित्तं विराजेत्वाति इत्थिभावे चित्तं अज्झासयं अभिरुचिं विराजेत्वा इत्थिभावे विरत्तचित्ता हुत्वा,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 146.

इत्थिछन्द पु., तत्पु. स., स्त्री की मानसिक प्रवृत्ति, नारी के मन की रुझान, नारी का मानसिक अभिप्राय – **न्दं** द्वि. वि., ए. व. – *इत्थि अज्झत्तं इत्थिन्द्रियं मनसि करोति ... इत्थिछन्दं ... इत्थालङ्कारं ...,* अ. नि. 2(2).203; *इत्थिछन्दन्ति इत्थिया अज्झासयच्छन्दं,* अ. नि. अट्ठ. 3.169.

इत्थिजन पु., [स्त्रीजन], नारी समूह – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *अलङ्कतपटियत्ते इत्थिजने असुभसञ्ञं उप्पादेत्वा,* अ. नि. अट्ठ. 1.200.

इत्थित्त नपुं., इत्थी का भाव. [स्त्रीत्व], नारीत्व, स्त्री का हावभाव एवं मानसिकता – **त्तं**[1] प्र. वि., ए. व. – *इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पो इत्थत्तं इत्थिभावो,* विभ. 138; – **त्तं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *सा इत्थित्तं विराजेत्वा पुरिसत्तं भावेत्वा कायस्स ... सग्गं लोकं उपपन्ना,* दी. नि. 2.199.

इत्थिदान नपुं., तत्पु. स. [स्त्रीदान], नारियों का दान, दान के रूप में स्त्री को दे देना – **नं** प्र. वि., ए. व. – *पञ्च दानानि अपुञ्ञानि पुञ्ञसम्मतानि लोकस्मिं मज्जदानं, समज्जदानं, इत्थिदानं, उसभदानं, चित्तकम्मदानं,* परि. 254.

इत्थिधन नपुं., तत्पु. स. [स्त्रीधन], स्त्री की निजी सम्पत्ति, पत्नी का अपना धन, यौतुक या दहेज के रूप में प्राप्त नारी का निजी धन – **नं** प्र. वि., ए. व. – *मातु मत्तिकं इत्थिकाय इत्थिधनं,* पारा. 17; *इत्थिकाय इत्थिधनन्ति हीळेन्तो आह, इत्थिकाय नाम इत्थिपरिभोगानंयेव न्हानचुण्णादीनं अत्थाय लद्धं धनं कित्तकं भवेय्य,* पारा. अट्ठ. 1.162.

इत्थिधुत्त पु., तत्पु. स., स्त्रियों में बुरी तरह आसक्त, नारी के प्रति दृढ़ मानसिक लगाव रखने वाला लम्पट पुरुष, स्त्रियों में धुत – **त्तो** प्र. वि., ए. व. – *इत्थिधुत्तो सुराधुत्तो, अक्खधुत्तो च यो नरो,* सु. नि. 106; *इत्थिधुत्तोति इत्थीसु सारत्तो यं किञ्चि अत्थि, तं सब्बम्पि दत्वा अपरापरं इत्थिं सङ्गण्हाति,* सु. नि. अट्ठ. 1.136; *पापमित्तसंसग्गेन पन इत्थिधुत्तो सुराधुत्तो,* पे. व. अट्ठ. 6; – **त्ता** ब. व. – *इत्थिधुत्तसुराधुत्तादयो वा, धुत्ता एवं पच्चत्थिका धुत्तपच्चत्थिका,* पारा. अट्ठ. 1.214; *यदा एवरूपा इत्थिधुत्ता "इमा अम्हे न जहिस्सन्ती"ति,* जा. अट्ठ. 4.165.

इत्थिनिमित्त नपुं., तत्पु. स. [स्त्रीनिमित्त], **क.** स्त्री का विशिष्ट चिह्न, स्त्री-इन्द्रिय, योनि – **त्ते** सप्त. वि., ए. व. – *एत्थ च इत्थिनिमित्ते चत्तारि पस्सानि,* पारा. अट्ठ. 1.205; – **त्तेन** तृ. वि., ए. व. – *इत्थिनिमित्तेन च पुरिसनिमित्तेन चाति उभोहि ब्यञ्जनेहि समन्नागता,* पारा. अट्ठ. 2.122; **ख.** स्त्री के लैङ्गिक लक्षण – **त्तं** प्र. वि., ए. व. – *थनमंसाविसदता, निम्मस्सुदाठिता, केसबन्धनं, वत्थग्गहणञ्च "इत्थी"ति सञ्जाननस्स पच्चयभावतो इत्थिनिमित्तं,* विसुद्धि. महाटी. 2.89; *अपरो नयो इत्थिनं मुत्तकरणं इत्थिलिङ्गं, सराधिप्पाया इत्थिनिमित्तं,* विसुद्धि. महाटी. 2.89; *यं इत्थिया इत्थिलिङ्गं इत्थिनिमित्तं इत्थिकुत्तं ... इदं तं रूपं इत्थिन्द्रियं,* ध. स. 632(मा.).

इत्थिन्द्रिय नपुं., तत्पु. स. [स्त्रीन्द्रिय], व्यक्ति को स्त्री की पहचान दिलाने वाली आत्मभाव में विद्यमान आधिपत्य की शक्ति, स्त्री-भावसूचक इन्द्रिय, स्त्रीत्व, स्त्री को पुरुष से विभाजित करने वाले विशिष्ट लक्षणों को सूचित करने वाली इन्द्रिय, बाईस, पन्द्रह, दस अथवा तीन इन्द्रियों में से एक – **यं**[1] प्र. वि., ए. व. – *बावीसतिन्द्रियानि ... इत्थिन्द्रियं, पुरिसिन्द्रियं ...,* विभ. 137; *इत्थिभावे इन्दट्ठं कारेतीति इत्थिन्द्रियं,* विभ. अट्ठ. 117; *इत्थिया इत्थिलिङ्गं इत्थिनिमित्तं इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पो इत्थत्तं इत्थिभावो – इदं वुच्चति "इत्थिन्द्रियं",* विभ. 138; – **यं**[2] द्वि. वि., ए. व. – *इत्थी, अज्झत्तं इत्थिन्द्रियं मनसि करोति–इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पं इत्थिविधं इत्थिच्छन्दं इत्थिस्सरं इत्थालङ्कारं,* अ. नि. 2(2).203; *अज्झत्तं इत्थिन्द्रियन्ति नियकज्झत्ते इत्थिभावं,* अ. नि. अट्ठ. 3.169; *सो पनत्तभावो यं धम्मं उपादाय इत्थीति वा पुरिसोति वा सङ्खं गच्छति, अयं सोति निदस्सनत्थं ततो इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियञ्च,* विभ. अट्ठ. 118-119; – **निद्देस** पु., स्त्रीलिङ्ग अथवा स्त्रीभाव की निर्धारक इन्द्रिय का विवेचनपरक व्याख्यान – **से** सप्त. वि., ए. व. – *इत्थिन्द्रियनिद्देसे यन्ति करणवचनं,* ध. स. अट्ठ. 353; – **पुरिसिन्द्रिय** नपुं., द्व. स. [स्त्रीन्द्रियपुरुषेन्द्रिय], स्त्री-इन्द्रिय एवं पुरुषेन्द्रिय, स्त्रीत्त्व एवं पुरुषत्व की निर्धारक इन्द्रियां, स्त्रीभाव एवं पुरुषभाव – **यानं** ष. वि., ब. व. – *इत्थिन्द्रियपुरिसिन्द्रियानं इत्थिपुरिसलिङ्गनिमित्तकुत्ता–कप्पाकारानुविधानं,* विसुद्धि. 2.120; तुल., विभ. अट्ठ. 119; – **यानि** द्वि. वि., ब. व. – *तेसु इत्थिन्द्रियपुरिसिन्द्रियानि वज्जेत्वा वीसतिन्द्रियानि होन्ति,* अभि. अव. 176.

इत्थिपण्डका / इत्थिपण्डिका स्त्री., कर्म. स., स्त्रीत्त्व के विशिष्ट लक्षणों से रहित स्त्री, हिजड़ा स्त्री, प्र. वि., ए. व. – *नसि इत्थिपण्डका,* चूळव. 435; *इत्थिपण्डकाति अनिमित्ताव वुच्चति,* पारा. अट्ठ. 2.122; *अक्कोसति नाम अनिमित्तासि, निमित्तमत्तासि ... सिखरणीसि, इत्थिपण्डकासि,* पारा. 190.

इत्थिपरिग्गह पु., तत्पु. स. [स्त्रीपरिग्रह], स्त्री के रूप में निजी सम्पत्ति, स्वामित्व या अधीनता में रहने वाली स्त्री, अन्तःपुर की नारी – **हो** प्र. वि., ए. व. – *बहु तत्थ इत्थिपरिग्गहो,* म. नि. 2.268; *थियोति इत्थिपरिग्गहो वुच्चति,* महानि. 8; *इत्थीति थियति एतिस्सं गब्भोति इत्थी, परिग्गहोति सहायी सस्सामिका,* महानि. अट्ठ. 42.

इत्थिपुम द्व. स., स्त्री एवं पुरुष **क.** नपुं., समाहार द्व. स., स्त्रियों एवं पुरुषों का समूह – **मं** प्र. वि., ए. व. – *आदिग्गहणं किमत्थं? दासिदासं, इत्थिपुमं ... दीघमज्झिमं इच्चेवमादि,* क. व्या. 324; **ख.** पु., इतरेतर द्व. स., स्त्री एवं पुरुष – **मा** प्र. वि., ब. व. – *न इत्थिपुमा पञ्ञायन्ति,* दी. नि. 3.63; *इत्थी पुमा कुमारा च, बहू चेव कुमारिका,* अप. 2.270; – **मानं** ष. वि., ब. व. – *यो सब्बलोकस्स निवातवुत्ति इत्थीपुमानं सहदारकानं,* जा. अट्ठ. 4.68; – **नपुंसकसंख्य** त्रि., द्व. स., स्त्रीलिङ्ग, पुल्लिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग को कहने वाला – **ख्यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *इत्थिपुमनपुंसकसंख्यं,* क. व्या. 131.

इत्थिपुम्भावलक्खण त्रि., ब. स., स्त्रीत्त्व एवं पुरुषत्व के लक्षणों से युक्त (स्त्री-इन्द्रिय एवं पुरुषेन्द्रिय) – **णं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *वसे वत्तेति लिङ्गान–मित्थिपुम्भावलक्खणं, इत्थीति च पुरिसोति, पकासनरसं तथा,* ना. रू. प. 519.

इत्थिपुरिस पु., द्व. स. [स्त्रीपुरुष], स्त्री एवं पुरुष – **सा** प्र. वि., ब. व. – *इत्थिपुरिसा दासिदासा,* मि. प. 148; *इत्थिपुरिसा अविज्जमाना, रूपं विज्जमानं,* प. प. अट्ठ. 27; – **सानं** ष. वि., ब. व. – *इञ्चि अरहा इत्थिपुरिसानं नामगोत्तं न जानेय्य,* कथा. 154; स. प. के अन्त., – *इत्थिपुरिसादिपरिकप्पवसेन निच्चादिवसेन अत्तत्तनियगाहवसेन च अभिरता ...,* उदा. अट्ठ. 173; – **निमित्त** नपुं., तत्पु. स. [स्त्रीपुरुषनिमित्त], स्त्रीत्व एवं पुरुषत्व का द्योतक विशिष्ट चिह्न, स्त्री एवं पुरुष के लैङ्गिक चिह्न – **त्तं** द्वि. वि., ए. व. – *इत्थिपुरिसनिमित्तं वा सुभनिमित्तादिकं वा ... निमित्तं न गण्हाति,* विसुद्धि. 1.20; – **निस्सित / सरीरनिस्सित** त्रि., [स्त्रीपुरुषनिःश्रित], स्त्री तथा पुरुष के शरीर के साथ जुड़ा हुआ, स्त्री एवं पुरुष के शरीर पर आश्रित – **तं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *खुदापरेता भुञ्जामि, इत्थिपुरिसनिस्सितं,* पे. व. 131; *इत्थिपुरिससरीरनिस्सितं यथावुत्तं अञ्ञञ्च चम्ममंसन्हारुपुब्बादिकं परिभुञ्जामीति,* पे. व. अट्ठ. 68; – **भाव** पु., [स्त्रीपुरुषभाव], स्त्रीभाव एवं पुरुषभाव – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *न केवलं इत्थिपुरिसभावमेव ... यथावुत्तं एतं इत्थिभावं पुरिसभावं,* पे. व. अट्ठ. 144; – **सन्निपात** पु., तत्पु. स. [स्त्रीपुरुषसन्निपात], स्त्रियों एवं पुरुषों का जमघट या समूह – **तेन** तृ. वि., ए. व. – *सुञ्ञो इत्थिपुरिससन्निपातेन अत्थि चेविदं ... पटिच्च एकत्तं,* म. नि. 3.148; – **सानुपस्सी** त्रि., स्त्रियों एवं पुरुषों की अनुपश्यना करने वाला, स. उ. प. के रूप में – *नापि केसलोमादिविनिमुत्तइत्थिपुरिसानुपस्सी,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).252.

इत्थिफोट्ठब्ब पु. / नपुं., तत्पु. स., स्त्री के स्पर्श की (सुखद) अनुभूति, स्त्री का स्पर्श – **ब्बो** पु. प्र. वि., ए. व. – *पुरिसस्स चित्तं परियादाय तिट्ठति यथयिदं, भिक्खवे, इत्थिफोट्ठब्बो,* अ. नि. 1(1).2; *इत्थिया कायसम्फस्सो, इत्थिसरीरारुळ्हानं वत्थालङ्कारमालादीनम्पि फस्सो इत्थिफोट्ठब्बोत्वेव वेदितब्बो,* अ. नि. अट्ठ. 1.21; – **ब्बं** प्र. वि., ए. व. – *नाहं भिक्खवे ... एकफोट्ठब्बम्पि समनुपस्सामि एवं रजनीयं एवं कमनीयं ... यथयिदं, भिक्खवे, इत्थिफोट्ठब्बं,* अ. नि. 2(1).63; – **ब्बे** सप्त. वि., ए. व. – *इत्थिफोट्ठब्बे, भिक्खवे, सत्ता रत्ता गिद्धा गधिता मुच्छिता अज्झोपन्ना, ते दीघरत्तं सोचन्ति इत्थिफोट्ठब्बवसानुगा,* अ. नि. 2(1).63.

इत्थिबल नपुं., तत्पु. स. [स्त्रीबल], स्त्री की शक्ति, नारी की शक्ति – **लं** प्र. वि., ए. व. – *सब्बबलेहि इत्थिबलमेव महन्तन्ति अत्थो,* जा. अट्ठ. 3.456.

इत्थिभण्ड पु., तत्पु. स. [स्त्रीभाण्ड], स्त्री का अपना सामान, स्त्री के अपने स्वामित्व में रहने वाले गहने आदि – **ण्डेन** तृ. वि., ए. व. – *इत्थिभण्डे न गूहाम तुय्हत्थाय महामुने,* अप. 2.263.

इत्थिभाव पु., तत्पु. स. [स्त्रीभाव], **क.** स्त्रीत्व, नारी-भाव, स्त्रीवर्ग, नारी-समूह, स्त्री-इन्द्रिय के निर्वचनक्रम में प्रयुक्त, – **वो** प्र. वि., ए. व. – *इत्थिभावो पुम्भावो इत्थिन्द्रियन्ति च वुच्चति,* सद्द. 1.67; *यं इत्थिया इत्थिलिङ्गं इत्थिनिमित्तं इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पो इत्थत्तं इत्थिभावो – इदं तं रूपं इत्थिन्द्रियं,* ध. स. 632(मा.); *इत्थिन्द्रियन्तिआदीसु इत्थिभावे इन्दट्ठं करोतीति इत्थिन्द्रियं,* स. नि. अट्ठ. 3.265; – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *"अहं तं आनेस्सामि, पस्स ताव मम इत्थिभाव"न्ति वत्वा,* थेरगा. अट्ठ. 2.106; **ख.** पापकर्मों के विपाक के रूप में प्राप्त स्त्री के रूप में पुनर्जन्म या पुनर्भव, स्त्री के रूप में हीन पुनर्भव – **वो** प्र. वि., ए. व. – *दुक्खो इत्थिभावो, अक्खातो पुरिसदम्मसारथिना,* थेरीगा. 216;

इत्थिभावो किं कयिरा, चित्तम्हि सुसमाहिते, स॰ नि॰ 1(1).152; – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वे गाथा अञ्ञतराय यक्खिनिया इत्थिभावं गरहन्तिया भासिता,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 200; *लिक्खापयन्ता पिटकस्समक्खरं, न पापुणन्तेव च इत्थिभावं,* सद्धम्म॰ 46; *पुरिसा हि परस्स दारेसु अतिचरित्वा ... निरये पच्चित्वा मनुस्सजातिं आगच्छन्ता अत्तभावसते इत्थिभावं आपज्जन्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.186; – **वे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिचित्तं विराजेत्वाति इत्थिभावे चित्तं अज्झासयं अभिरुचिं विराजेत्वा इत्थिभावे विरतचित्ता हुत्वा,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 146; – **पटिलाभ** पु॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीभावप्रतिलाभ], स्त्री के रूप में पुनर्जन्म की प्राप्ति – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिभावप्पटिलाभस्स वा नपुंसकभावप्पटिलाभस्स ... वा अभब्बता ...,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 24; – **लक्खण** त्रि॰, ब॰ स॰ [स्त्रीभावलक्षण], स्त्रीत्व या नारीत्व के लक्षणों से युक्त – **णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिभावलक्खणं इत्थिन्द्रियं,* विसुद्धि॰ 2.74.

इत्थिभूत त्रि॰, [स्त्रीभूत], स्त्री-भाव को प्राप्त, स्त्रीरूप में पुनर्जन्म ले चुका – **ताय** स्त्री॰, च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'आतुमे इत्थिभूताय, दीघरत्ताय मारिस यस्सा मे इत्थिभूताय, संसारे बहुभाससी'ति,* पे॰ व॰ 378; *इत्थिभूतायाति इत्थिभावं उपगताय,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 144.

इत्थिमति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीमति], स्त्री की मति, स्त्री की इच्छा, स्त्री का मानसिक अभिप्राय, स्त्री का इरादा – **तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिया वा पुरिसमतिं पुरिसस्स वा इत्थिमतिं,* पारा॰ 204; *पुरिसस्स वा इत्थिमतिन्ति इत्थिया मतिं पुरिसस्स आरोचेति,* पारा॰ 205.

इत्थिमाया स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीमाया], स्त्री की धूर्तता या चालाकी, स्त्री का छल-कपट या छलबल – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *थीनं भावो दुराजानोति इत्थीनं भावो नाम इत्थिमायाय पटिच्छन्नत्ता दुराजानो,* जा॰ अट्ठ॰ 1.288; – **हि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अनन्ताहि इत्थिमायाहि समन्नागतत्ता महामाया नाम,* जा॰ अट्ठ॰ 2.274; – **सु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सोपि सुवपोतको इत्थिमायासु कुसलो, तेन तं वीमंसन्तो पुन गाथमाह,* जा॰ अट्ठ॰ 6.250; – **कुसलता** स्त्री॰, छल-कपट करने की नारी की कुशलता – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा इत्थिमायाकुसलताय तापसं अनुपसङ्कमित्वा आगतमग्गाभिमुखी पायासि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.152.

इत्थियुत्त त्रि॰, तत्पु॰ स॰, गायों से जुता हुआ, धेनुयुक्त – **त्तेन** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *छब्बग्गिया भिक्खू यानेन यायन्ति इत्थियुत्तेनपि पुरिसन्तरेन, पुरिसयुत्तेनपि इत्थन्तरेन,* महाव॰ 264; *इत्थियुत्तेनाति धेनुयुत्तेन,* महाव॰ अट्ठ॰ 347; *इत्थियुत्तेनाति इत्थीहि गावीआदीहि धुरट्ठाने युत्तेन,* वजिर॰ टी॰ 490; – **त्तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"इत्थियुत्तं नु खो, पुरिसयुत्तं नु खो"ति ? ... "अनुजानामि, भिक्खवे, इत्थियुत्तं पुरिसयुत्तं हत्थवट्टक"न्ति,* चूळव॰ 442.

इत्थिरतन नपुं॰, [स्त्रीरत्न], **क.** भा॰ अ॰ नारीरत्न, स्त्रीरत्न, चक्रवर्ती के सात रत्नों में से पांचवां रत्न – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चक्करतनं, हत्थिरतनं, अस्सरतनं, मणिरतनं, इत्थिरतनं, गहपतिरतनं, परिणायकरतनं, ... राजा महासुदस्सनो इमेहि सत्तहि रतनेहि समन्नागतो अहोसि,* दी॰ नि॰ 2.129-132; *इत्थिरतनं पातुरहोसि ... पासादिका परमाय,* दी॰ नि॰ 2.131; *छब्बिधदोसविवज्जितं मनापचारि इत्थिरतनं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.31; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"इत्थिरतनस्स पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं ... इमेसं पञ्चन्नं रतनानं पातुभावो दुल्लभो लोकस्मिं",* अ॰ नि॰ 2(1).158; **ख ला॰ अ॰**, सर्वश्रेष्ठ रत्न जैसी उत्तम नारी, सर्वोत्तम स्त्री – **नं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"सामि, अम्हेहि तुम्हाकं एकं इत्थिरतनं आनीत"न्ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.185; – **नं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *" ... पब्बतपादे अच्छरियं इत्थिरतनं दिस्वा आगतोम्ही"ति सब्बं पवत्तिं कथेसि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.260; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **दिब्बि॰**- नपुं॰, कर्म॰ स॰ [दिव्यस्त्रीरत्न], अत्यन्त भव्य श्रेष्ट नारी – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एतादिसं चे रतनन्ति दिब्बित्थिरतनं सन्धाय भणति, नारिन्ति अत्तनो धीतरं सन्धाय,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.236; स॰ पू॰ प॰ के रूप में – **भाव** पु॰, श्रेष्ठ स्त्रीत्त्व, नारीत्त्व की उत्तमता – **वेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निगमवासिजनो इत्थिरतनभावेन अनग्घम्पि समानं ... मं ठपेसि,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 34-35; *इत्थिरतनभावेन सब्बेहि ... सब्बङ्गसोभना,* चरिया॰ अट्ठ॰ 84.

इत्थिरस पु॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीरस], स्त्री से प्राप्त आनन्द, स्त्री का रसीलापन – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिरसो पुरिसस्स चित्तं परियादाय तिट्ठति,* अ॰ नि॰ 1(1).2; *इत्थिरसोति इत्थिया चतुसमुट्ठानिकं रसायतनं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.21.

इत्थिरूप नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीरूप], **1.** नारी का स्वरूप, नारी का सौन्दर्य, नारी की काया – **पं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिरूपं भिक्खवे, पुरिसस्स चित्तं परियादाय तिट्ठति,* अ॰ नि॰ 1(1).1; *अन्तरायकरं अनुत्तरस्स योगक्खेमस्स अधिगमाय यथयिदं, भिक्खवे, इत्थिरूपं,* अ॰ नि॰ 2(1).63;

— **पे / स्मिं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिरूपे, भिक्खवे, सत्ता रत्ता गिद्धा गथिता मुच्छिता अज्झोपन्ना,* अ॰ नि॰ 2(1).63; *इत्थिरूपे इत्थिसरे फोट्ठब्बेपि च इत्थिया, इत्थिगन्धेसु सारत्तो, विविधं विन्दते दुखं,* थेरगा॰ 738; *पञ्च कामगुणा एते, इत्थिरूपस्मिं दिस्सरे, रूपा सद्दा रसा गन्धा, फोट्ठब्बा च मनोरमा,* अ॰ नि॰ 2(1).64; — **पेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पक्कमिस्सञ्च नाळातो, कोध नाळाय वच्छति बन्धन्ती इत्थिरूपेन, समणे धम्मजीविनो,* थेरीगा॰ 295; **2.** स्त्री का भित्तिचित्र, स्त्री की प्रतिमा — **पं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथापि, भिक्खवे, रजको वा, चित्तकारको वा सति रजनाय व लाखाय वा हलिद्दिया वा नीलिया वा मञ्जिट्ठाय वा सुपरिमट्ठे वा फलके भित्तिया वा दुस्सपट्टे वा इत्थिरूपं वा पुरिसरूपं वा अभिनिम्मिनेय्य,* स॰ नि॰ 1(2).90; *सुवण्णकारे ... अतिविय पासादिकं घनकोट्टिमं इत्थिरूपं कारेत्वा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.164; *रत्तजम्बुनदमयं इत्थिरूपं कारेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.94; **3.** स्त्री का मायानिर्मित छायारूप, अलौकिक शक्ति द्वारा निर्मित नारी का अवास्तविक रूप — **पं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्था ... इद्धिया एकं इत्थिरूपं निम्मिनित्वा तालवण्टं गहेत्वा बीजमानं विय अकासि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.271; *सत्था पठमयोब्बने ठितं रमणीयं इत्थिरूपं अभिनिम्मिनित्वा,* अप॰ अट्ठ॰ 2.282; *तम्पिस्स इत्थिरूपं पिट्ठिपस्से ठितं राजा अद्दस,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.32.

इत्थिरूपक नपुं॰, तत्पु॰ स॰, स्त्री का तैलचित्र अथवा भित्तिचित्र, स्त्री की धातु-निर्मित प्रतिमा — **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *छब्बग्गिया भिक्खू विहारे पटिभानचित्तं कारापेन्ति इत्थिरूपकं पुरिसरूपकं,* चूळव॰ 278; *सुवण्णं दत्वा "एकं इत्थिरूपकं करोही"ति उय्योजेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.274; *सुवण्णकारेहि इत्थिरूपकं कारेत्वा,* अप॰ अट्ठ॰ 1.268.

इत्थिलक्खण नपुं॰, तत्पु॰ स॰, स्त्री के शुभ अथवा अशुभ लक्षण, स्त्री से सम्बद्ध अच्छे या बुरे लक्षण — **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समणब्राह्मणा सद्धादेय्यानि भोजनानि भुञ्जित्वा ते एवरूपाय तिरच्छानविज्जाय मिच्छाजीवेन जीवितं कप्पेन्ति, सेय्यथिदं मणिलक्खणं ... इत्थिलक्खणं ...,* दी॰ नि॰ 1.8; — **णादीनि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इत्थिलक्खणादीनिपि यम्हि कुले ते इत्थिपुरिसादयो वसन्ति, तस्स वुड्ढिहानिवसेनेव वेदितब्बानि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.83; — **कोविद** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीलक्षणकोविद], स्त्री के शुभ अथवा अशुभ लक्षणों की पहचान में कुशल — **दा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इङ्कवङ्कीगामे इत्थिलक्खणकोविदा,* म॰ वं॰ 35.109.

इत्थिलिङ्ग[1] नपुं॰, [स्त्रीलिङ्ग], **1.** स्त्री की विशिष्ट पहचान कराने वाला लिङ्ग या चिह्न, स्त्री के शरीर के स्तन, केश एवं गुप्तेन्द्रिय आदि ऐसे चिह्न, जो स्त्रीत्व के निर्धारक हैं — **ङ्गं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिया चाति या पुब्बे मनुस्सकाले इत्थी, तस्स इत्थिलिङ्गं पातुभवति, पुब्बे पुरिसस्स पुरिसलिङ्गं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.47; *अञ्ञतरस्स भिक्खुनो इत्थिलिङ्गं पातुभूतं होति,* पारा॰ 40; *इत्थिलिङ्गं पातुभूतन्ति रत्तिभागे निद्दं ओक्कन्तस्स पुरिससण्ठानं मस्सुदाठिकादि सब्बं अन्तरहितं इत्थिसण्ठानं उप्पन्नं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.219; — **ङ्गे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा इत्थिलिङ्गे ठितस्स मनुस्सजातिकस्सापि पत्थना न समिज्झति,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 105; **2.** व्याकरण के सन्दर्भ में, नामपद का स्त्रीलिङ्ग — **ङ्गं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुमस्सेति किमत्थं ? इत्थिलिङ्गं नपुंसकलिङ्गं,* क॰ व्या॰ 222; *तक्कारियाति इत्थिलिङ्गं नामं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.222; — **दस्सन** नपुं॰, शब्द में स्त्रीलिङ्ग का देखा जाना — **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अट्ठिवाचकत्ता नपुंसकनिद्देसोति अट्ठिवाचकत्तेपि धातुयोति इत्थिलिङ्गदस्सनतो ...,* सद्द॰ 1.2; — **निद्देस** पु॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीलिङ्गनिर्देश], स्त्री-लिङ्ग का निर्देश, स्त्री-लिङ्ग का संकेत — **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिलिङ्गनिद्देसो परिमत्तभावसिद्धं इत्थिभावं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.146; — **ङ्गानुकूल** त्रि॰, स्त्री-लिङ्ग के अनुकूल — **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिलिङ्गानुकूलो दिस्सति,* सद्द॰ 1.97.

इत्थिलिङ्ग[2] त्रि॰, ब॰ स॰ [स्त्रीलिङ्गक], **1.** स्त्रीत्व या नारीत्व के सूचक चिह्नों से युक्त — **ङ्गं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिलिङ्गं वा पुरिसलिङ्गं वाति अववत्थपेत्वा ...,* विसुद्धि॰ 1.176; **2.** व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में, स्त्रीलिङ्ग वाला नाम — **ङ्गो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आणादिवाचको इत्थिलिङ्गोयेव सिया सदा,* सद्द॰ 1.253; *स्यादिवाचको पुल्लिङ्गो चेव इत्थिलिङ्गो च विभत्तिस्स,* सद्द॰ 1.253; — **वसेन**, क्रि॰ वि॰ स्त्रीलिङ्ग के होने से — *लिङ्गविपल्लासं कत्वा इत्थिलिङ्गवसेन बाराणसीति वुच्चति,* अप॰ अट्ठ॰ 2.239; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, आकारान्ति॰, ईकारान्ति॰, ऊकारान्ति, ओकारान्ति॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; सद्द॰ 1.200-225; — **ट्ठान** नपुं॰, व्याकरणों में प्रयुक्त, स्त्रीलिङ्ग-विवेचक व्याकरण-स्थल — **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गवेनाति आदीनि इत्थिलिङ्गट्ठाने न वुत्तानि,* सद्द॰ 1.212; — **ता** स्त्री॰, भाव॰, स्त्रीलिङ्ग से सम्बद्धता, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ननु च भो सम्मोहविनोदनि ... इत्थिलिङ्गता पाकटा,* सद्द॰ 1.95; — **भावविगम** पु॰, तत्पु॰ स॰, स्त्रीलिङ्ग से असम्बद्धता, स्त्रीलिङ्ग

में अन्तर्भूत न होना – **मो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमिना पन आपसद्दस्स इत्थिलिङ्गभावविगमो सिद्धो इत्थिलिङ्गे,* सद्द॰ 1.114; – **वोहार** पु॰, स्त्रीलिङ्ग में व्यवहार – **वसेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰ स्त्री लिङ्ग, में व्यवहार होने से – *पिलोतिकं परिब्बाजकन्ति ... इत्थिलिङ्गवोहारवसेन लद्धनामं परिब्बाजकं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).97.

इत्थिलिङ्गक त्रि॰, ब॰ स॰ [स्त्रीलिङ्गक], स्त्रीलिङ्ग वाला, शब्द (नामपद) – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बोधिसद्दो ... बोधिपादपवचनो पुमित्थिलिङ्गको भवे,* सद्द॰ 1.253.

इत्थिलिङ्गत्त नपुं॰, भाव॰ [स्त्रीलिङ्गत्त्व], स्त्री-लिङ्ग का होना – **त्तं** प्र॰/द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सद्दं अपेक्खित्वा ओरोधसद्दस्स इत्थिलिङ्गत्तमिच्छथ,* सद्द॰ 1.96; *एवं सन्तेपि एतस्स इत्थिलिङ्गत्तमेव तु,* सद्द॰ 1.253.

इत्थिलिङ्गत्तन नपुं॰, स्त्रीलिङ्गत्व – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धातुसद्दो जिनमते इत्थिलिङ्गत्तने मतो,* सद्द॰ 1.2.

इत्थिलीला स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीलीला], नारी का हावभाव भरा व्यवहार, नारी की गरिमा, नारी-सौन्दर्य, स्त्री का हास-विलास – **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं आगतं इत्थिकुत्तं इत्थिलीलं दस्सेत्वा तस्स पुरतो ठिता,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.397; *इत्थिलीलं दस्सेन्ती पहट्ठाकारेन अग्गदन्ते विवरित्वा हसितं अकासि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.415.

इत्थिलुद्ध त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीलुब्ध], स्त्रियों का लालची, स्त्रियों के प्रति लोभवृत्ति रखने वाला – **द्धा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इमे खो ब्राह्मणा नाम इत्थिलुद्धा,* दी॰ नि॰ 2.180.

इत्थिलोल त्रि॰, तत्पु॰ स॰, उपरिवत् – **लो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिलोलो ब्राह्मणो किञ्चिकारणं अजानन्तो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 1.281.

इत्थिवग्ग पु॰, जा॰ अट्ठ॰ के एक भागविशेष का शीर्षक, जा॰ अट्ठ॰ 1.275-302.

इत्थिवण्ण त्रि॰, ब॰ स॰ [स्त्रीवर्ण], नारी जैसे स्वरूप वाला, स्त्री जैसा दिख रहा, स॰ प॰ के रूप में – *मज्झिमित्थिवण्णसतं अभिनिम्मिनेय्यामाति,* स॰ नि॰ 1(1).147.

इत्थिविग्गह पु॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीविग्रह], नारी का शरीर – **हं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *एकं इत्थिविग्गहं मापेथाति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).193; – **हा** ब॰ व॰ – *अनेका इत्थिविग्गहा पुरिसविग्गहा ... च पञ्ञायन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.166.

इत्थिविधा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, स्त्री के दर्प अथवा अभिमान का एक रूप या प्रकार – **धं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थी, अज्झत्तं इत्थिन्द्रियं मनसि करोति ... इत्थिविधं,* अ॰ नि॰ 2(2).203; *इत्थिविधन्ति इत्थिया मानविधं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.169.

इत्थिविमान नपुं॰, वि॰ व॰ के एक खण्ड का शीर्षक, वि॰ व॰ 1-15; – **वण्णना** स्त्री॰, वि॰ व॰ अट्ठ॰ के एक भाग का शीर्षक, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 5–182.

इत्थिविलास पु॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीविलास], नारी की मनोहर चेष्टा, स्त्री का हास-विलास, स्त्री के मनोहारी हावभाव, नारीसौन्दर्य – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं इत्थिविलासं कुरुमाना सोभति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.139; *एवं पवेल्लमाना इत्थिविलासं दस्सयमाना कुमारिका पलोभयन्तीव नरेसु गच्छति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.349; *इत्थिविलासं दस्सेन्ती तस्स पुरतो अट्ठासि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.149; – **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *परमेन इत्थिविलासेन चङ्कमन्तिया तव पादा मम चित्तं हरन्तियेव,* जा॰ अट्ठ॰ 5.151.

इत्थिव्यञ्जन नपुं॰, [स्त्रीव्यञ्जन], स्त्रीत्व को सूचित करने वाला चिह्न, स्त्री की योनि अथवा गुप्ताङ्ग – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिब्यञ्जनं पुरिसब्यञ्जनन्ति,* सद्द॰ 1.254; *इत्थिब्यञ्जनं पटिच्छन्नं गुळ्हं होति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 355.

इत्थिसंसग्ग पु॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीसंसर्ग], स्त्रियों के साथ सम्पर्क, नारियों के साथ संगति – **ग्गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अननुयुत्तमेतं समणस्स यदिदं अदिन्नपरिभोगो इत्थिसंसग्गो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.284.

इत्थिसञ्ञा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीसंज्ञा], किसी व्यक्ति को स्त्री मानना, स्त्रीरूप में संधारणा, किसी के विषय में स्त्री की संज्ञा – **ञ्ञं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थीसु इत्थिसञ्ञं अकत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.440; – **य**[1] सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिया इत्थिसञ्ञाय सति इत्थिं आमसन्तस्स सङ्घादिसेसो,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.114; – **य**[2] ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा एत्थ इत्थिसञ्ञाय अभावतो सङ्घादिसेसो न दिस्सति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.113.

इत्थिसञ्ञिका स्त्री॰, ब॰ स॰, स्त्री की संज्ञा वाली, स्त्री कही जाने वाली, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिसञ्ञिका थियो,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.208.

इत्थिसञ्ञी त्रि॰, [स्त्रीसंज्ञिन्], स्त्री की संज्ञा करने वाला, स्त्री मान लेने वाला, स्त्री के विषय में सोचते रहने वाला, कोई स्त्री स्त्री है, इस रूप में सोचने वाला – **ञ्ञी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थी च होति इत्थिसञ्ञी सारत्तो च भिक्खु च,* पारा॰ 175; *सो सारत्तो च इत्थिसञ्ञी च भिक्खु अत्तनो कायेन,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.110; – **ञ्ञिता** स्त्री॰, भाव॰,

स्त्री को स्त्री के रूप में मन में लाने की मनःस्थिति, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिसञ्ञिता,* कङ्खा॰ अट्ठ॰ 132.

इत्थिसण्ठान नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीसंस्थान], नारी का आकार-प्रकार, स्त्री की आकृति, नारी की सूरत-शक्ल – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिसण्ठानेन कतं कट्ठरूपम्पि दन्तरूपम्पि ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.117.

इत्थिसद्द 1. पु॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीशब्द], स्त्री की आवाज़, नारी द्वारा उच्चारित ध्वनि या शब्द, नारी का स्वर – **द्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञं एकसद्दम्पि समनुपस्सामि यं एवं पुरिसस्स चित्तं परियादाय तिट्ठति यथयिदं, भिक्खवे, इत्थिसद्दो,* अ॰ नि॰ 1(1).1-2; *तेसु इत्थिसद्दोति इत्थिया चित्तसमुट्ठानो कथितगीतवादितसद्दो ... वीणासङ्खपणवादिसद्दोपि इत्थिसद्दोत्वेव वेदितब्बो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.18; स॰ प॰ के अन्त॰, – *पुरिसानं इत्थिसद्दमधुरगन्धब्बसद्दादयो चित्तस्सादकरा मनापसद्दा,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.53; – **स्सवन** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीशब्दश्रवण], स्त्री के शब्द को सुनना – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सह इत्थिसद्दस्सवनेन गहणं सिथिलमकासि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.19; **2.** त्रि॰, ब॰ स॰, नारी के समान स्वर वाला, स्त्री के समान बोलने वाला – **द्दो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिसद्दो छळाभिञ्ञो, राजपुत्तो तु भासिता,* ना॰ रू॰ प॰ 867.

इत्थिसब्बङ्गसम्पन्न त्रि॰, नारी की सभी विशेषताओं अथवा उत्तम लक्षणों से युक्त – **न्ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिसब्बङ्गसम्पन्ना, अभिजाता जुतिन्धरा,* अप॰ 2.272.

इत्थिसर/इत्थिस्सर पु॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीस्वर], स्त्री का स्वर, नारी की आवाज़, स्त्री की वाणी – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिस्सरन्ति इत्थिसद्दं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.169; – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थिरूपे इत्थिसरे, फोट्ठब्बेपि च इत्थिया ... सारत्तो,* थेरगा॰ 738; *इत्थिसरेति इत्थिया गीतलपितहसितरुदितसद्दे,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.236.

इत्थिसरीर नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [स्त्रीशरीर], नारी का शरीर, स्त्री की काया – **रं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुरिसस्स हि इत्थिसरीरं ... विसभागं,* विसुद्धि॰ 1.173; *पुरिसस्स पन इत्थिसरीरं इत्थिया वा पुरिससरीरं न वट्टति,* विसुद्धि॰ 1.177; – **रं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहं पन अज्ज पट्ठाय इत्थिसरीरं फुसितुं आहारे च लोलभावं कातुं अनरहो,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 16; स॰ प॰ के रूप में, *इत्थिसरीरारुळ्हानं वत्थालङ्कारमालादीनं फस्सो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.236.

इत्थिसहस्स नपुं॰, एक हजार स्त्रियों का एक समूह, एक हजार के झुण्ड में स्त्रियां – **स्सानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इत्थिसहस्सानन्ति वचनमट्ठताय वुत्तं, सोळसन्नं इत्थिसहस्सानं अग्गट्ठाने ठपेतूति अत्थो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.277.

इत्थिसोण्ड पु॰, तत्पु॰ स॰, स्त्रियों के प्रति गहरे लोभ, लालच से भरा हुआ, नारी-लम्पट, स्त्रियों में धुत्त, स्त्री के साथ सम्भोग करने के लिए सदा बेचैन रहने वाला – **ण्डा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सोण्डाति इत्थिसोण्डा भत्तसोण्डा पूवसोण्डा मूलकसोण्डा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.117; *इत्थिसोण्डाति इत्थीसु सोण्डा, इत्थिसम्भोगनिमित्तं आतप्पनका,* लीनत्थ॰ (दी॰ नि॰ टी॰) 3.120; स॰ प॰ के रूप में, – *... ददमानो इत्थिसोण्डसुरासोण्डमंससोण्डादिभावं आपज्जित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 2.356.

इत्थिसोत नपुं॰, तत्पु॰ स॰, स्त्रियों से निकलने वाला (रूपसौन्दर्य का) झरना, स्त्री-विषयिणी तृष्णा के स्रोत के रूप में नारी की सुन्दरता – **तानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इत्थिसोतानि सब्बानि, सन्दन्ति पञ्च पञ्चसु,* थेरगा॰ 739; *इत्थिसोतानि सब्बानीति इत्थिया रूपादिआरम्मणानि, सब्बानि अनवसेसानि पञ्चतण्हासोतानि सन्दन्ति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.236.

इत्थी स्त्री॰, थी के रूप में भी प्राप्त, गाथाओं में अत्यल्प रूप में प्रयुक्त [स्त्री], **1.** स्त्रीत्त्व के विशिष्ट लक्षणों से युक्त मानव जाति का प्राणी, नारी, महिला, पत्नी, **2.** किसी भी जानवर की मादा, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थी, सीमन्तिनी नारी थी वधू वनिताङ्गना, पमदा सुन्दरी कन्ता रमणी दयिताबला, मातुगामो च महिला,* अभि॰ प॰ 230-31; *इत्थी थी ... रमणी पमदा दयिता ललना महिलाङ्गना,* सद्द॰ 2.363; *सेय्यथापि नाम इत्थी वा पुरिसो वा दहरो युवा मण्डनकजातिको सीसंन्हातो अहिकुणपेन,* पारा॰ 81; *आकारेहि इत्थी पुरिसं बन्धति,* अ॰ नि॰ 3(1).38; – **त्थिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं पुरिसो इत्थिं वा पुरिसं वा जीविता वोरोपेसि,* अ॰ नि॰ 2(1).194; – **त्थिया** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो च भत्ता इत्थिया हितो कतगुणं जानाति, उभोपेते सुदुल्लभा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.92; *राजा रट्ठस्स पञ्ञाणं, भत्ता पञ्ञाणमित्थिया,* जा॰ अट्ठ॰ 7.265; – **त्थियो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दस इत्थियो – मातुरक्खिता, पितुरक्खिता, मातापितुरक्खिता, भातुरक्खिता भगिनिरक्खिता, ञातिरक्खिता, गोत्तरक्खिता धम्मरक्खिता सारक्खा सपरिदण्डा,* पारा॰ 205; *इमिना कारणेन "इत्थियो नाम असाता लामिका पच्छिमिका"ति जानेय्यासी ति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.277; – **नं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तव माता 'असातमन्तं उग्गण्हा'ति मम सन्तिकं पेसयमाना इत्थीनं दोसं जाननत्थं*

पेसेसि, जा॰ अट्ठ॰ 1.277; *तथा इत्थीनम्पि रूपसद्दगन्धरसफोट्ठब्बानि पञ्चावुधानि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.428; – **सु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *वज्झित्थियो नत्थि इत्थीसु सच्चं ... इत्थीसु सच्चन्ति एतासु सभावो नामेको नत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.99; **2.** द्रष्ट॰ इत्थियुत्तेन; **3.** व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में, स्त्रीलिङ्ग – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्सा इत्थियं वत्तमानाय आकारस्स इकारो होति वा संसासु एकवचनेसु विभत्तादेसेसु,* क॰ व्या॰ 64; *इत्थियमतो आप्पच्चयो–इत्थियं वत्तमानाय अकारन्ततो आप्पच्चयो होति,* क॰ व्या॰ 237; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अधि॰, अनाचारि॰, अनि॰, अमनुस्सि॰, अलङ्कति॰, आरक्खि॰, उच्छिट्ठि॰, उत्तमि॰, उपट्ठाकि॰, कपणि॰, कामि॰, काळि॰, कुलि॰, चतुरि॰, चतुरि–विमान॰ जनपदि॰, तरुणि॰, तिरच्छानगति॰, दहरि॰, दुग्गति॰, दुट्ठि॰, नच्चि॰, नागरकि॰, नाटकि॰, नानि॰, पण्डकि॰, पर-परिग्गहिति॰, पापि॰, पुमि॰, भुजिस्सि॰, मज्झिमि॰, मति॰, मनुस्सि॰, महल्लकि॰, महि॰, राजि॰, वञ्झि॰, वरि॰, वल्लभि॰, सब्बि॰, सभत्तु॰, स–सामिकि॰, सस्सामिकि॰, सुत्ति॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

इत्वा / इत्वान √इ (जाना) का पू॰ का॰ कृ॰ [इत्वा], जाकर – *पटिमुखं इत्वा, इत्वान ... उपेतून अञ्ञानिपि बुद्धवचनानुरूपतो,* सद्द॰ 2.315.

इत्वेव / इच्चेव अ॰, इति + एव के योग से व्यु॰ [इत्येव], ऐसा ही, इस तरह से ही, यही – *इत्वेव चोरो असिमावुधञ्च,* म॰ नि॰ 2.310; *इत्वेवाति एवं वत्वायेव,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.238; *इच्चेव चोरो असिमावुधञ्च, सोब्भे पपाते नरके अन्वकासि,* थेरगा॰ 869; *तत्थ इच्चेवाति इति एव एवं वत्वा अनन्तरमेव,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.279.

इद 1. निपा॰ इध का (धकार के स्थान पर दकारादेश कर देने से निर्मित) विपरिवर्तित रूप [इध], यहां, **2.** इम, सर्व॰ का नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ 'इदं' का विपरिवर्तित रूप, यह – *एकमिदाहं, समयं येन पूरणो कस्सपो तेनुपसङ्कमिं,* दी॰ नि॰ 1.46; *एकमिदाहं, समयं राजगहे विहरामि गिरिब्बजे,* म॰ नि॰ 1.39; *एकमिदाहन्ति एत्थ इदन्ति निपातमत्तं एकं अहन्ति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.207; *एकमिदाहन्ति एत्थ इदाति निपातमत्तं, एकस्मिं समये अहन्ति वुत्तं होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).160; – **प्पच्चय** त्रि॰, कारणसापेक्ष, इसकी कारणता वाला – **या** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमेसं पच्चया इदप्पच्चया,* सद्द॰ 1.277; *सचेपि चवति इदप्पच्चया मे चवति,* पटि॰ म॰ 302; – **पच्चयता** स्त्री॰, भाव॰, कारणसापेक्षता – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदप्पच्चयता च सा पटिच्चसमुप्पादो चाति,* महाव॰ अट्ठ॰ 233; *इदप्पच्चयता पटिच्चसमुप्पन्नेसु धम्मेसुअञ्ञाणं,* ध॰ स॰ 1063(मा॰).

इदमत्थी त्रि॰, केवल इसी विशिष्ट (धर्म) को प्रयोजन बनाने वाला अथवा उसे पाने की इच्छा करने वाला – **त्थिता** स्त्री॰, इदमत्थी का भाव॰, केवल इसी (विशेष धर्म) को पाने की इच्छा – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निस्साय इदमत्थितञ्ञेव निस्साय आरञ्ञिको होति,* परि॰ 256; *तं इदमत्थितंयेव निस्साय न अञ्ञं किञ्चि लोकामिसन्ति अत्थो,* परि॰ अट्ठ॰ 177; – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इदमत्थिताति इमे धुतङ्गचेतनाय परिवारका पञ्च धम्मा,* विसुद्धि॰ 1.80.

इदानि अ॰, समयसूचक निपा॰, क्रि॰ वि॰ के रूप में वाक्यों में प्रयुक्त [इदानीम्], इस समय में, अब, आजकल, अभी कुछ ही समय पूर्व में – *कदा कुदा सदाधुनेदानि,* मो॰ व्या॰ 4.106; *नाहं इदानियेव ऊरुवेलकस्सपं दमेमि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.92; *इमं इदानि इह इतो इध,* सद्द॰ 3.676; **क.** वर्त॰ के क्रि॰ प॰ के साथ प्रयुक्त, अभी ही, तुरन्त ही – *इदानेव खो मयं आयस्मतो सारिपुत्तस्स भासितं एवं आजानाम,* म॰ नि॰ 1.375; *इदानिपि आगन्तुको निद्दायति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.280; **ख.** भवि॰ के क्रि॰ प॰ के साथ प्रयुक्त, अब इसके आगे, अब से – *इदानि पन मयं यं इच्छिस्साम, तं करिस्साम,* दी॰ नि॰ 2.122; *सचे इदानि एकं अजिकं पादे गहेस्सामि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.235; **ग.** भू॰ क॰ कृ॰, पू॰ का॰ कृ॰ अथवा अद्य॰ के क्रि॰ प॰ के साथ प्रयुक्त, वर्तमान समय में, अभी अभी, कुछ ही समय पूर्व – *इदानेव खो, आनन्द, अज्ज चापाले चेतिये मारो पापिमा येनाहं तेनुपसङ्कमि,* दी॰ नि॰ 2.88; *"न, भिक्खवे, इदानेव, पुब्बेपेस अम्बगोपको हुत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.117; *ते इदानि अतिसायन्हो, मेघो च उट्ठितो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.12; *सत्तेसु मेत्ताभावनं दस्सेत्वा इदानि अहितदुक्खानागमपत्थनावसेनापि तं दस्सेन्तो,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 200.

इद्ध त्रि॰, √इध का भू॰ क॰ कृ॰, प्रायः फीत के साथ प्रयुक्त [ऋद्ध], समृद्ध, सम्पन्न, धनी, भौतिक सम्पदाओं से परिपूर्ण, सकल वैभवों से सम्पन्न, सौभाग्यशाली, खुशहाल – **द्धा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इज्झन्ति वा सत्ता एताय इद्धा वुद्धा उक्कंसगता होन्तीति इद्धि,* सद्द॰ 2.484; **क.** नगरों, जनपदों, देशों आदि के विशे॰ के रूप में प्रयुक्त, धन-धान्य आदि से परिपूर्ण – **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं जम्बुदीपो इद्धो चेव भविस्सति फीतो च,* दी॰ नि॰ 3.55; स॰ प॰ के रूप में, *इद्धो फीतो महाजनपदो सजनो समुच्छिन्नो,* मि॰ प॰

133; – **द्धा** ब॰ व॰ – ... *एवं जनपदा इद्धा होन्ति*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.227; – **द्धं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ततियस्स पठमे इद्धन्ति तेलमधुफाणितादीहि समिद्धं*, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.316; *इद्धं फीतञ्चिदं रट्ठं, इद्धो जनपदो महा*, जा॰ अट्ठ॰ 7.276; *इद्धं फीतं सुवित्थारं* ..., दी॰ वं॰ 9.37; **ख.** कुलों के विशे॰ के रूप में, समृद्ध कुल – **द्धे** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कोसम्बियं सेट्ठिकुले, इद्धे फीते महद्धने*, जा॰ अट्ठ॰ 7.124; *इद्धे सेनापतीकुले*, जा॰ अट्ठ॰ 7.111; – **द्धानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इद्धानि फीतानि कुलानि अस्सु अनेकसाहस्सधनानि लोके*, जा॰ अट्ठ॰ 5.16; – **द्धेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *हत्थि गवास्सा मणिकुण्डला च, थियो च इद्धेसु कुलेसु जाता सब्बाव ता उपभोगा भवन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 6.189; **ग.** मनुष्यों के विशे॰ के रूप में, समृद्ध मनुष्य – **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धो च फीतो च सुवड्ढितो च अमच्चो च ते अञ्ञतरो जनिन्द*, जा॰ अट्ठ॰ 5.202; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बाव ता उपभोगा भवन्ति, इद्धस्स पोसस्स अनिद्धिमन्तो*, जा॰ अट्ठ॰ 6.189; **घ.** आहार, पेय आदि के विशे॰ के रूप में, पौष्टिक आहार – *"कच्चि, सारिपुत्त, भत्तं इद्धं अहोसी"ति ? इद्धं खो, भन्ते, भत्तं अहोसि, अपिच मं भिक्खू एककं ओहाय पक्कन्ता"ति ?*, चूळव॰ 355; *इद्धं अहोसीति सम्पन्नं अहोसि*, चूळव॰ अट्ठ॰ 117; **ङ.** ब्रह्मचर्य अथवा भिक्षुजीवन के विशे॰ के रूप में – परिपूर्ण (ब्रह्मचर्य) – **द्धं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धन्ति समिद्धं झानस्सादवसेन*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.130; *इद्धन्ति समिद्धं झानुप्पादवसेन*, उदा॰ अट्ठ॰ 267; **च.** बुद्धसासन के विशे॰ के रूप में, पुष्पित एवं पल्लवित हो रहा (बुद्धशासन) – **द्धं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वित्थारिकं बाहुजञ्ञं, इद्धं फीतं अहु तदा, दीपङ्करस्स भगवतो, सासनं सुविसोधितं*, जा॰ अट्ठ॰ 1.39; **छ.** बुद्ध की अववाद-देशना के विशे॰ के रूप में, अर्थ-भरा, गम्भीर – **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"कच्चि, भिक्खुनियो, ओवादो इद्धो अहोसी"ति ? कुतो भन्ते, ओवादो इद्धो भविस्सति*, पाचि॰ 73; *इद्धोति समिद्धो सहितत्थो गम्भीरो बहुरसो लक्खणपटिवेधसंयुत्तो*, पाचि॰ अट्ठ॰ 47; *"कच्चि ओवादो इद्धो अहोसी"ति ? ... कुत्तो ओवादो इद्धो भविस्सती"ति ?*, पाचि॰ 427; **ज.** इच्छा आदि मनोभावों के विशे॰ के रूप में, सफल, पूर्ण – **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"कच्चिन्नु चित्तस्सापि एवमेवं, इद्धो मनो तस्स यथापि मय्ह"न्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 4.353; – **गुण** त्रि॰, ब॰ स॰, अत्यन्त उत्तम गुणों से युक्त – **णं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सिद्ध मिद्धगुणं साधु नमस्सित्वा तथागतं*, मो॰ व्या॰ 1(पृ॰).

इद्धानुभाव पु॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ ऋद्ध्यनुभाव], ऋद्धियों (अलौकिक मानसिक बलों) का प्रभाव या शक्ति, ऋद्धियों की महत्ता या प्रभावमयता – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निस्संसयं खो महासमणस्स इद्धानुभावो*, महाव॰ 36; *को नु खो अयं सत्तो यस्सायं एवरूपो इद्धानुभावो*, उदा॰ 101; – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"पस्सन्ति नो भोन्तो देवा तावतिंसा ममपिमं एवरूपं इद्धानुभाव"न्ति*, दी॰ नि॰ 2.157; *अथ थेरो भगवता एतदग्गे ठपितभावानुरूपं अत्तनो इद्धानुभावं पकासेन्तो "एकाहं, भन्ते"ति आदिमाह*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.139; *ब्रह्मुनो ओवादे ठितानं इद्धानुभावं दस्सेति*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).299; – **वा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समणब्राह्मणा न परिमुच्चिंसु मारस्स इद्धानुभावा सेय्यथापि ते, भिक्खवे, पठमा मिगजाता तथूपमे अहं इमे पठमे समणब्राह्मणे वदामि*, म॰ नि॰ 1.213; – **वे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अञ्ञेसञ्च देवानं यथासकं इद्धानुभावे "देविद्धि" वेदितब्बा*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.38; – **वेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खू इद्धानुभावेन समं कत्वा महीतलं*, दी॰ वं॰ 7.2; *तञ्च नावं अत्तनो इद्धानुभावेन तेहि इच्छितपट्टनं तं दिवसमेव उपनेसि*, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 46; – **त्त** नपुं॰, इद्धानुभाव का भाव॰ [ऋद्ध्यनुभावत्व], ऋद्धि की प्रभावमयता, ऋद्धियों का सामर्थ्य या प्रभविष्णुता – **त्ता** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्थु वत्तं दस्सेत्वा सासनस्स, निय्यानिक–भाव–दस्सनत्थं मय्हं इद्धानुभावत्ता आकासे निसीदित्वा ...*, उदा॰ अट्ठ॰ 431.11(रो॰); – **महन्ततापकासनापदेस** पु॰, तत्पु॰ स॰, ऋद्धि के प्रभाव अथवा सामर्थ्य की महानता को प्रकाशित करने का बहाना – **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिना इद्धानुभावमहन्ततापकासनापदेसेन अत्तनो ...*, उदा॰ अट्ठ॰ 200; – **सिरी** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, ऋद्धि के प्रभाव की भव्यता अथवा आभा – **रिया** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं इद्धानुभावसिरिया देवमनुस्सानं पीतिं जनयन्तो*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.60.

इद्धाभिसङ्खार पु॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ ऋद्ध्यभिसंस्कार], ऋद्धियों का व्यवहार में प्रयोग, ऋद्धि-सिद्धियों का प्रदर्शन – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ खो भगवा तथारूपं इद्धाभिसङ्खारं अभिसङ्खासि*, दी॰ नि॰ 1.92; *तथारूपं इद्धाभिसङ्खारं अभिसङ्खरेय्यं*, महाव॰ 20; *आयस्मा महामोग्गल्लानो तथारूपं इद्धाभिसङ्खारं अभिसङ्खासि*, म॰ नि॰ 1.322; *इद्धाभिसङ्खारं अभिसङ्खासीति इद्धिमकासि*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).199.

इद्धि स्त्री॰, [ऋद्धि], **शा॰ अ॰**, समृद्धि, प्रभावमयता, महिमा, उच्च स्थिति, ऊंची सफलता, **विशेष अर्थ**, चमत्कारपूर्ण दिव्य शक्तियां, अलौकिक शक्तियां, **क**. परम्परागत विशिष्ट अर्थ – बुद्धों की उपायसम्पत्ति के रूप में प्रयुक्त दिव्य शक्तियां, प्राणियों का उत्थान कराने वाली दिव्य शक्तियां – **द्धि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इज्झनट्ठेन इद्धि*, पटि॰ म॰ 376; *इज्झनट्ठेन इद्धि निप्फत्तिअत्थेन पटिलाभट्ठेन चाति ... अपरो नयो इज्झनट्ठेन इद्धि उपायसम्पदायेतमधिवचनं ... अपरो नयो, एताय सत्ता इज्झन्तीति इद्धि, इज्झन्तीति इद्धा बुद्धा उक्कंसगता होन्तीति वुत्तं होति*, विसुद्धि॰ 2.6-7; *इद्धीति, या तेसं धम्मानं इद्धि समिद्धि इज्झना समिज्झना लाभो पटिलाभो पत्ति सम्पत्ति फुसना सच्छिकिरिया उपसम्पदा*, विभ॰ 244; **ख**. राजा आदि उच्चपदस्थ मनुष्यों की विशिष्ट शक्तियां, प्रभाव या सामर्थ्य, उच्च स्थिति या दैवी संपदा, – **द्धी** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *त्वं नोसिस्सरियं दाता, मनुस्सेसु महन्ततं, तयामा लब्भिता इद्धी एत्थ मे नत्थि संसयो*, जा॰ अट्ठ॰ 4.37; – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"तायिद्धिया दक्खसि मं पुनापी"ति ... ताय इद्धिया मं पुनपि त्वं पस्सिस्ससीति*, जा॰ अट्ठ॰ 6.202-203; – **द्धिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं तादिसं पच्चनुभोस्सतिद्धिं*, पे॰ व॰ 459; *इद्धिन्ति देविद्धिं, दिब्बसम्पत्तिन्ति वुत्तं होति*, पे॰ व॰ अट्ठ॰ 172; – **द्धीहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *राजा, आनन्द, महासुदस्सनो चतूहि इद्धीहि समन्नागतो अहोसि*, दी॰ नि॰ 2.132; *चतूहि राजिद्धीहि समन्नागतो अहोसि, उपरिचरो आकासगामी, चत्तारो नं देवपुत्ता चतूसु दिसासु खग्गहत्था रक्खन्ति, कायतो चन्दनगन्धो वायति, मुखतो उप्पलगन्धो*, जा॰ अट्ठ॰ 3.401; – **द्धियो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अभिसेकानुभावेन चस्स इमा राजिद्धियो आगता*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.31; **ग**. नागों, यक्षों एवं देवों जैसे दैवी प्राणियों की दिव्य शक्तियां, देवों आदि की दिव्य विभूति – **द्धी** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इद्धी हि त्यायं विपुला, सक्कस्सेव जुतीमतो"ति*, जा॰ अट्ठ॰ 7.16; *असस्सतं सस्सतं नु तवयिदं, इद्धी जुती बलवीरियूपपत्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 7.213; – **द्धिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिं पस्स यसञ्च मे*, वि॰ व॰ 859; *इद्धिन्ति समिद्धिं, दिब्बविभूतिन्ति अत्थो*, वि॰ व॰ अट्ठ॰ 185; – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिया यससा जलं*, स॰ नि॰ 1(1).142; *दिब्बसंपत्तिसमिद्धिया च परिवारसङ्खातेन यससा च*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.254; *हंसादिच्चपथे यन्ति, आकासे यन्ति इद्धिया*, ध॰ प॰ 175; *याय जम्बुया अयं जम्बुदीपो पञ्ञायति, इद्धिया तं जम्बुं उपसङ्कमित्वा ततो फलं आहरित्वा ...*, बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 258; **घ**. बुद्ध, अर्हतों, शैक्ष्य भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों को प्राप्त दिव्य शक्तियां – **द्धि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धीपि मे सच्छिकता, पत्तो मे आसवक्खयो*, थेरीगा॰ 71; – **द्धिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"कथं त्वं, आवुसो, इद्धिं वळञ्जेसी"ति पुट्ठो तमत्थं आचिक्खन्तो ...*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.228; – **या**[1] ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहं विकुब्बनासु कुसलो, वसीभूतोम्हि इद्धिया*, थेरगा॰ 1192; – **या**[2] सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यादिसो महामोग्गलानत्थेरो इद्धिया, अहम्पि तादिसो होमि*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.59; – **द्धीसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इद्धीसु च वसी होमि, दिब्बाय सोतधातुया*, अप॰ 2.228; – **नं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इद्धिलाभायाति अत्तनो सन्ताने पातुभाववसेन इद्धीनं लाभाय*, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.245; **ङ**. पांच अथवा छ प्रकार के अभिज्ञा-बलों में प्रथम, तीन प्रकार के ऋद्धिप्रातिहार्यों में प्रथम, आकाश में उड़ने, जल पर चलने, स्थल पर डूबने उतराने जैसी आठ दिव्यशक्तियां अथवा इद्धिविधाएं, दस ऋद्धियों की उत्तरकालीन सूची में प्रथम प्रभेद के उपभेदों के रूप में अन्तर्भूत, चार इद्धिभूमियों (चरणों), आठ इद्धिपदों एवं सोलह इद्धिमूलों के विवरणों के साथ भी निर्दिष्ट, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अधिट्ठाना इद्धि, विकुब्बना इद्धि, मनोमया इद्धि, ञाणविप्फारा इद्धि, समाधिविप्फारा इद्धि, अरिया इद्धि, कम्मविपाकजा इद्धि, पुञ्ञवतो इद्धि, विज्जामया इद्धि तत्थ तत्थ सम्मा पयोगपच्चया इज्झनट्ठेन इद्धि*, पटि॰ म॰ 376; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अतिरेकि॰, अधिट्ठानि॰, अभिञ्ञापादकि॰, अरियि॰, आमिसि॰, उप्पत्ति॰, कम्मविपाकजि॰, चेतोपरियायि॰, दिब्बि॰, देवि॰, धम्मि॰, नागि॰, पादकि॰, पुञ्ञमयि॰, पुञ्ञि॰, भावनामयि॰, मनोमयि॰, यक्खि॰, राजि॰, विकुब्बनि॰, विपाकि॰, समाधि॰, सुपण्णि॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

इद्धिआदेसनानुसासनी स्त्री॰, द्व॰ स॰, श्रोताओं की मनोदशा को जानकर तदनुरूप उन्हें उपदेश देने की बुद्धों की दिव्य शक्ति, बुद्ध के तीन प्रातिहार्यों में से एक – **नी** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिआदेसानुसासनीसमुदाये भवं एकेकं पाटिहारियन्ति वुच्चति*, उदा॰ अट्ठ॰ 9; – **हि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *... इद्धिआदेसनानुसासनीहि हरिता अपनीता होन्ति*, उदा॰ अट्ठ॰ 9; – **नियो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इद्धिआदेसनानुसासनियो विगतूपक्किलेसेन कतकिच्चेन सत्तहितत्थं पुन पवत्तेतब्बा ... भवन्ति*, उदा॰ अट्ठ॰ 9.

इद्धिक त्रि॰, केवल स॰ उ॰ प॰ के रूप में प्राप्त, ऋद्धियों अथवा दिव्य शक्तियों से युक्त अनि॰, तेजि॰, महि॰ के

अन्त॰ द्रष्ट॰; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, ऋद्धि-सम्पन्नता – *अच्छरियं वत, भो, अब्भुतं वत, भो, समणस्स महिद्धिकता महानुभावता,* दी॰ नि॰ 1.196; – **भाव** पु॰, उपरिवत् – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो विञ्ञुतं पत्तो महामोग्गल्लानत्थेरस्स महिद्धिकभावं सुत्वा,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.228.

इद्धिकथा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिकथा], **क.** पटि॰ म॰ एवं कथा॰ के एक खण्डविशेष का शीर्षक, पटि॰ म॰ 376-383; कथा॰ 488-489; **ख.** विसुद्धि॰ के एक खण्डविशेष का शीर्षक, इद्धिविधनिद्देस के स्थान पर प्रयुक्त वैकल्पिक शीर्षक, विसुद्धि॰ 2.1-34; – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वत्थु विसुद्धिमग्गे इद्धिकथाय वित्थारितं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).316; – **वण्णना** स्त्री॰, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ तथा कथा॰ के एक व्याख्यान-खण्ड का शीर्षक जिसमें ऋद्धियों का विवेचन है, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.244-276; प॰ प॰ अट्ठ॰ (कथा॰) 275.

इद्धिकरण नपुं॰, [ऋद्धिकरण], ऋद्धियों का प्रयोग, दिव्य शक्तियों का प्रदर्शन – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *'मा अम्हाकं इद्धिकरणं भारो'ति चिन्तयित्थ,* जा॰ अट्ठ॰ 4.235; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिकरणतो पुब्बे पकतिया एकोपि,* विसुद्धि॰ 2.12; – **काल** पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिकरणकाल], ऋद्धियों के प्रयोग अथवा प्रदर्शन का काल – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिकरणकाले यथासुखं चित्तचारस्स इज्झनत्थं योगविधानं दस्सेतुं वुत्तं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.277.

इद्धिकारण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिकारण], समृद्धि का कारण, सफलता का कारण – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मङ्गलन्ति इद्धिकारणं वुद्धिकारणं सब्बसम्पत्तिकारणं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 98.

इद्धिकोट्ठास पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिकोष्ठांश], ऋद्धि के घटक तत्त्व, ऋद्धि के अङ्ग, ऋद्धि में अन्तर्निहित प्रमुख घटक – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धि एव विधं इद्धिविधं, इद्धिकोट्ठासो, इद्धिविकप्पोति अत्थो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.43; *इद्धि एव पादो इद्धिपादो इद्धिकोट्ठासोति अत्थो,* उदा॰ अट्ठ॰ 248; – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिविधन्ति इद्धिकोट्ठासं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.110.

इद्धिकोविद त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिकोविद], ऋद्धियों के प्रयोग या प्रदर्शन में दक्ष – **दा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *खीणासवा वसिप्पत्ता तेविज्जा इद्धिकोविदा,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.71.

इद्धिगुण पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिगुण], ऋद्धि का गुण, दिव्यशक्ति की सम्पदा – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चविधेन इद्धिगुणेन समन्नागता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.132; – **णे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वसी इद्धिगुणे चुतूपपाते,* थेरगा॰ 909; *एवं इद्धिगुणे इद्धिसम्पदाय चुतूपपाते च वसीभावप्पत्तो ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.293.

इद्धिगुणूपपन्न त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिगुणोपपन्न], ऋद्धि (लोकोत्तर मानसिक शक्ति) के गुणों से युक्त, ऋद्धिमान् – **न्ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इद्धिगुणूपपन्नाति पञ्चविधेन इद्धिगुणेन समन्नागता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.132.

इद्धिचित्त नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिचित्त], ऋद्धि-विषयक चेतना, ऋद्धियों से सम्बद्ध चित्त, ऋद्धिबलों से परिपूर्ण चित्त – **त्तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... पादकज्झानारम्मणेन इद्धिचित्तेन सहजातं सुखसञ्ञञ्च ...,* विसुद्धि॰ 2.32; – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिचित्तमेव परस्स चित्तं जानाति, न इतरानि,* विसुद्धि॰ 2.60; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिचित्ततो वुट्ठहित्वा भवङ्गचित्तेन परिनिब्बायि,* उदा॰ अट्ठ॰ 350.

इद्धिज त्रि॰, [ऋद्धिज], ऋद्धियों की दिव्य शक्ति से उत्पन्न, ऋद्धिबल से उत्पन्न – **जं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिजं देवदिन्नञ्च, तस्स तस्सानुलोमिकं,* खु॰ सि॰ 6; *इद्धिजं एहिभिक्खूनं पुञ्ञिद्धिया निब्बत्तचीवरं, तं खोमादीनं ... अनुलोमं,* सारत्थ॰ टी॰ 2.340-341.

इद्धिधम्म पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिधर्म], ऋद्धि, अलौकिक दिव्य शक्ति – **म्मेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *असमो इद्धिधम्मेसु, अलभिं ईदिसं सुखं,* बु॰ वं॰ 2.80; *पञ्चसु इद्धिधम्मेसूति अत्थो,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 114.

इद्धिनिम्मित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिनिर्मित], ऋद्धियों द्वारा निर्मित, अलौकिक दिव्य शक्तियों द्वारा बनाया गया – **तं** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बरतनमयंपीठं निम्मिनित्वान तावदे, पियदस्सिस्स मुनिनो, अदासिं इद्धिनिम्मितं,* अप॰ 1.387.

इद्धिपटिलाभ पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिप्रतिलाभ], ऋद्धियों के बल की पुनः प्राप्ति, अलौकिक दिव्य शक्तियों को फिर से पा लेना – **भाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मग्गो या पटिपदा इद्धिलाभाय इद्धिपटिलाभाय संवत्तति,* स॰ नि॰ 3(2).348; *इद्धिया इमा चतस्सो भूमियो इद्धिलाभाय इद्धिपटिलाभाय इद्धिविकुब्बनताय ... संवत्तन्तीति,* पटि॰ म॰ 376; *इद्धिपटिलाभायाति परिहीनानं वा इद्धीनं वीरियारम्भवसेन पुन लाभाय,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.245.

इद्धिपत्त त्रि॰, ब॰ स॰ [ऋद्धिप्राप्त], ऋद्धिबल को प्राप्त, ऋद्धिविध ज्ञान को प्राप्त – **त्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ –

तेविज्जा इद्धिपत्ता च, चेतोपरियायकोविदा, स॰ नि॰ 1(1).173; *इद्धिपत्ताति इद्धिविधञाणं पत्ता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.188.

इद्धिपदेस पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिप्रदेश], ऋद्धि का एक भाग या एक क्षेत्र, स्रोतापत्तिमार्ग, सकृदागामी-मार्ग, अनागामी-मार्ग इन तीन मार्गों तथा स्रोतापत्ति-फल, सकृदागामीफल तथा अनागामी-फल, इन तीनों फलों वाला ऋद्धि का एक प्रदेश – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... इद्धिपदेसं अभिनिप्फादेसुं,* स॰ नि॰ 3(2).330; *पञ्चमे इद्धिपदेसन्ति तयो च मग्गे तीणि च फलानि,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.280; *इद्धिपदेसन्ति इद्धिया एकदेसं, को पन सोति आह – "तयो च मग्गे तीणि च फलानी"ति,* लीन॰ (स॰नि॰टी॰) 2(2).205.

इद्धिपलिबोध पु॰, तत्पु॰ स॰, विपस्सना के दस प्रकार के अन्तरायों में से एक, ऋद्धि की प्राप्ति के रूप में आध्यात्मिक साधना की एक बाधा – **धो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा विपस्सनत्थिकेन इद्धिपलिबोधो उपच्छिन्दितब्बो ...,* विसुद्धि॰ 1.95; स॰ प॰ के अन्त॰, – *पठमं तावस्स आवासकुललाभगणकम्मद्धानञाति गन्थरोगइद्धिपलिबोधेन,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 29.

इद्धिपहुता स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिप्रभुता], ऋद्धियों पर प्रभुत्व, ऋद्धियों का प्रभुत्व, ऋद्धियों की प्रचुरता – **य** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भगवता जानता ... इद्धिपादा पञ्ञत्ता इद्धिपहुताय इद्धिविसविताय,* दी॰ नि॰ 2.157; *इद्धिपहुतायाति इद्धिपहोनकताय,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.210.

इद्धिपाटिहारिय नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰, ऋद्धि-प्रातिहार्य], धर्मदेशना के क्रम में बुद्ध द्वारा प्रदर्शित तीन प्रकार के चमत्कारों में प्रथम, ऋद्धियों का चमत्कार, दिव्य अलौकिक शक्तियों का चमत्कारमय प्रदर्शन – **यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कतमानि तीणि ? इद्धिपाटिहारियं, आदेसनापाटिहारियं, अनुसासनीपाटिहारियं,* दी॰ नि॰ 1.196; – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ इद्धिपाटिहारियेन अनुसासनीपाटिहारियं ... आदेसनापाटिहारियेन ... धम्मसेनापतिस्स,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.292; *इद्धिपाटिहारियेन अनुसासनीपाटिहारियेन च सत्तानं अनुग्गहं करोन्तो विहरति,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.228; – **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमं खो अहं, केवट्ट, इद्धिपाटिहारिये आदीनवं ... जिगुच्छामि,* दी॰ नि॰ 1.197; – **करण** नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰, ऋद्धिप्रातिहार्यकरण], ऋद्धिचमत्कारों का प्रदर्शन, अलौकिक दिव्य शक्तियों का प्रदर्शन – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सत्था भिक्खूनं इद्धिपाटिहारियकरणं पटिक्खिपि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.235; *ननु भगवता इद्धिपाटिहारियकरणं पटिक्खित्तन्ति,* उदा॰ अट्ठ॰ 350; – **यानुसासनी** स्त्री॰, ऋद्धिचमत्कार-विषयिणी शिक्षा या उपदेश – **निया** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयस्मा महमोग्गल्लानो इद्धिपाटिहारियानुसासनिया ... अनुसासि,* चूळव॰ 340.

इद्धिपाटिहीर नपुं॰, कर्म॰ स॰ [बौ॰ सं॰, ऋद्धिप्रातिहार्य], ऋद्धिबल का आश्चर्यजनक प्रदर्शन, अद्भुत ऋद्धि-चमत्कार – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिपाटिहीरेन अङ्गुलियो अदीपेत्वा यं सब्बेसं धम्मानं ...,* पेटको॰ 223.

इद्धिपाद पु॰/नपुं॰, [बौ॰ सं॰, ऋद्धिपाद], **1.** ऋद्धि अथवा अलौकिक दिव्य शक्ति के चार घटक, ऋद्धि के चार आधारभूत तत्त्व, छन्द, चित्त, विरिय एवं वीमंस नामक ऋद्धि के चार आधार या घटक, **2.** ऋद्धि नाम से लोक-व्यवहार में प्रसिद्ध अभिज्ञा चित्तों के साथ जुड़े हुए छन्दसमाधि एवं सम्यक् प्रधान के आधारभूत शेष चित्त एवं चैतसिक, ऋद्धि के लाभ अथवा प्रतिलाभ के लिए आधारभूत मार्ग – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिया पादो इद्धिपादो छन्दादीनमेतं अधिवचनं,* विसुद्धि॰ 2.13; *कतमो चानन्द, इद्धिपादो ? यो आनन्द, मग्गो या पटिपदा इद्धिलाभाय इद्धिपटिलाभाय संवत्तति अयं वुच्चतानन्द इद्धिपादो,* स॰ नि॰ 3(2).356; *पुब्बे वुत्तेन इज्झनट्ठेन इद्धि तस्सा सम्पयुत्ताय पुब्बङ्गमट्ठेन फलभूताय पुब्बभागकारणट्ठेन च इद्धिया पादोति इद्धिपादो,* विसुद्धि॰ 2.317; – **दं**[1] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिपादन्ति निप्फत्तिपरियायेन इज्झनट्ठेन वा, इज्झन्ति एताय सत्ता ... इमिना वा परियायेन इद्धीति सङ्ख्यं गतानं अभिञ्ञाचित्तसम्पयुत्तानं छन्दसमाधिपधानसङ्खारानं अधिट्ठानट्ठेन पादभूतो सेसचित्तचेतसिकरासी ति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.210; विसुद्धि॰ 2.13; *इद्धिया पादं, इद्धिभूतं वा पादन्ति इद्धिपादं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.374; – **दा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *"चत्तारो इद्धिपादा छन्दिद्धिपादो चित्तिद्धिपादो विरियिद्धिपादो वीमंसिद्धिपादो"ति,* विसुद्धि॰ 2.317; *इद्धिपादाति एत्थ इज्झनट्ठेन इद्धि, पतिट्ठानट्ठेन पादाति वेदितब्बा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.210; *चत्तारो सतिपट्ठाना चत्तारोसम्मप्पधाना चत्तारो इद्धिपादा पञ्चिन्द्रियानि पञ्च बलानि सत्त बोज्झङ्गा अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो,* दी॰ नि॰ 2.92; – **दं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खु छन्दसमाधि ... सङ्खारसमन्नागतं इद्धिपादं भावेति,* स॰ नि॰ 3(2).355; – **देसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इद्धिपादेसु छन्दं निस्साय पवत्तो समाधि छन्दसमाधि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.374; – **दानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सो इमेसं*

चतुन्नं इद्धिपादानं भावितत्ता बहुलीकतत्ता आकङ्खमानो कप्पं वा तिट्ठेय्य कप्पावसेसं वा, दी॰ नि॰ 3.57; *धातूनं सुञ्ञतालक्खणं ... इद्धिपादानं इज्झनलक्खणं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.88; – **दानि** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *भावेय्य च बोज्झङ्गे, इद्धिपादानि इन्द्रियानि बलानि,* थेरगा॰ 595; स॰ उ॰ प॰ के रूप में चिति॰, छन्दि॰, विरियि॰, वीमंसि॰, पधानसङ्खारि॰, समाधि॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **कथा** स्त्री॰, दस कथावत्थुओं में एक – **थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... इद्धिपादकथं इन्द्रियकथं ... निब्बानकथं कथेति,* महानि॰ 356; – **कुसल** त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰, ऋद्धिपादकुशल], ऋद्धियों के आधारों या अधिष्ठानों के विषय में कुशल – **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *खन्धकुसला धातुकुसला आयतनकुसला पटिच्चसमुप्पादकुसला सतिपट्ठानकुसला सम्मप्पधानकुसला इद्धिपादकुसला इन्द्रियकुसला बलकुसला बोज्झङ्गकुसला मग्गकुसला फलकुसला निब्बानकुसला, ते कुसला एवमाहंसु,* महानि॰ 49; – **गोचर** त्रि॰, ब॰ स॰, ऋद्धि के आधारों को अपना कार्यक्षेत्र बनाने वाला – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इमे पञ्च धम्मा पञ्च अत्था छन्दवत्थुका इद्धिपादवत्थुका इद्धिपादरम्मणा इद्धिपादगोचरा,* पटि॰ म॰ 339; – **ता** स्त्री॰, भाव॰ [ऋद्धिपादत्व, नपुं॰], ऋद्धियों की आधारभूतता या अधिष्ठानभाव – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपिच तेसं तेसं धम्मानं पुब्बभागवसेनापि एतेसं इद्धिपादता वेदितब्बा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.285; *एतेसं इद्धिपादता वेदितब्बा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.285; – **धीर** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, ऋद्धि के आधारों या घटकों के विषय में बुद्धिमान् – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अपि च खन्धधीरा धातुधीरा ... इद्धिपादधीरा इन्द्रियधीरा ..., ते धीरा एवमाहंसु,* महानि॰ 32; – **पादुका** स्त्री॰, [ऋद्धिपादुका], **शा॰ अ॰,** ऋद्धि की खड़ाऊं, **ला॰ अ॰,** आकाश में उड़ने की दिव्य शक्ति – **का** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इद्धिपादपादुका आरुय्ह निब्बाननगरं पविसित्वा धम्मपासादं आरुय्ह ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.73; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पादुके सुगते दत्वा, सङ्घे गणवरुत्तमे, इद्धिपादुकमारुय्ह, विहरामि यदिच्छकं,* अप॰ 1.343; – **पुच्छा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिपादपृच्छा], ऋद्धिपादों के विषय में पूछताछ या प्रश्न – **च्छा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अपरापि तिस्सो पुच्छा सतिपट्ठानपुच्छा सम्मप्पधानपुच्छा, इद्धिपादपुच्छा,* महानि॰ 251; – **भावना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिपादभावना], ऋद्धि के आधारों या अधिष्ठानों का विकास, वृद्धि या सुदृढ़ीकरण – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिं वो, भिक्खवे, देसेस्सामि इद्धिपादञ्च इद्धिपादभावनञ्च इद्धिपादभावनागामिनिञ्च पटिपदं,* स॰ नि॰ 3(2).347; – **य** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"को नु खो हेतु, को पच्चयो इद्धिपादभावनाया"ति,* स॰ नि॰ 3(2).337; – **वग्ग** पु॰, अ॰ नि॰ का ऋद्धिपादों का अनुशीलन करने वाला एक खण्डविशेष, अ॰ नि॰ 3(1).269-270; – **वण्णना** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, ऋद्धिपादों का वर्णन, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.280-291; – **वत्थुक** त्रि॰, ब॰ स॰, ऋद्धिपादों पर प्रतिष्ठित या आधारित – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इमे पञ्च धम्मा पञ्च अत्था छन्दवत्थुका इद्धिपादवत्थुका इद्धिपादारम्मणा इद्धिपादगोचरा ...,* पटि॰ म॰ 339; – **विभङ्ग** पु॰, विभङ्ग का इद्धिपाद-विषयक एक भाग, विभ॰ 243-255; विभ॰ अट्ठ॰ 287-292; – **संयुत्त** नपुं॰, स॰ नि॰ का इद्धिपाद-विवेचक एक स्थल-विशेष, स॰ नि॰ 3.328-364; – **सुत्त** नपुं॰, स॰ नि॰ के दो सुत्तों एवं अ॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, स॰ नि॰ 2(2).335; 2(2).339; अ॰ नि॰ 2(1).76; – **दारम्मण** त्रि॰, ब॰ स॰, ऋद्धि के आधारों को अपना आलम्बन बनाने वाला – **णा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इमे पञ्च धम्मा पञ्च अत्था छन्दवत्थुका इद्धिपादवत्थुका इद्धिपादारम्मणा इद्धिपादगोचरा ...,* पटि॰ म॰ 339; – **दाभिसमय** पु॰, तत्पु॰ स॰, ऋद्धिपादों का ज्ञान – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इज्झनट्ठेन इद्धिपादाभिसमयो,* पटि॰ म॰ 386.

इद्धिप्पत्त त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिप्राप्त], 1. ऋद्धि के बल को प्राप्त किया हुआ व्यक्ति – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेविज्जो इद्धिपत्तोम्हि चेतोपरियायकोविदो,* स॰ नि॰ 1(1).227; – **त्ता** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इद्धिपत्ताति इद्धिविधञाणं पत्ता,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.188; 2. धनसम्पदा, को प्राप्त, ऊंचे पद को प्राप्त – **त्ताय** स्त्री॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *होन्ति हेते, महाराज, इद्धिप्पत्ताय नारिया,* जा॰ अट्ठ॰ 3.19.

इद्धिबल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिबल], ऋद्धि का बल या सामर्थ्य – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिबलं पञ्ञाबलञ्च कीदिसं, बुद्धबलं लोकहितस्स कीदिसं,* बु॰ वं॰ 1.3; *इद्धिबलं पञ्ञाबलञ्च एदिसं, बुद्धबलं लोकहितस्स एदिसं,* बु॰ वं॰ 1.4; – **लेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिबलेनुपत्थद्धो संवेजेसि च देवता,* म॰ नि॰ 1.422; *सद्धिं इद्धिबलेन जेतवने ... पातुरहोसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.281; – **कथा** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, कथा॰ के एक खण्डविशेष का शीर्षक, कथा॰ 368; प॰ प॰ अट्ठ॰ 223; – **प्पत्त** त्रि॰, ऋद्धिबल को पाया हुआ – **त्तेहि** पु॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *बलप्पत्तेहीति इद्धिबलप्पत्तेहि,* बु॰ वं॰

अट्ठ॰ 231; – **लाभाव** पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिबलाभाव], ऋद्धिबल का अभाव – **वा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *खीणासवापि समाना इद्धिबलाभावा परकुलानि पिण्डाय उपसङ्कमिस्सन्ति*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.139.

इद्धिमद पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिमद], ऋद्धियों से युक्त होने का दर्प, ऋद्धिमान होने का अहंभाव – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिमदो यसमदो सीलमदो ...*, विभ॰ 395; *तं तं इज्झती'ति वा मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो इद्धिमदो*, नाम॰ विभ॰ अट्ठ॰ 442.

इद्धिमन्तु त्रि॰, इद्धि + मन्तु प्रत्यय के योग से निष्पन्न [ऋद्धिमत्], ऋद्धियों का स्वामी, अलौकिक दिव्य शक्तियों से सम्पन्न, अद्भुत शक्ति एवं ऐश्वर्य से युक्त, इद्धिविध-नामक ज्ञान से युक्त – **मा / मन्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चण्डेत्थ नागराजा इद्धिमा आसिविसो घोरविसो*, महाव॰ 29; *नागोहमस्मि इद्धिमा तेजस्सी दुरतिक्कमो*, जा॰ अट्ठ॰ 7.14; *इद्धिमाति अधिट्ठानिद्धिविकुब्बनिद्धिआदीहि इद्धीहि इद्धिमा, इद्धिविधञाणलाभीति अत्थो*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.73; *इद्धिमा चेतोवसिप्पत्तोति इद्धिसम्पन्नो चित्तस्स वसिभावपत्तो खीणासवो*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.362; *इद्धिमन्तो महापञ्ञो कालदेवलतापसो*, जिन॰ 119; – **न्तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खू तादिसं इद्धिमन्तं सब्रह्मचारिं कुतो लभिस्सन्ति?*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.139; – **मतो / न्तस्स / मस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिमतो पन ठिता अनेकवण्णा अच्चियो होन्ति*, महाव॰ 30; *'अनापत्ति, भिक्खवे, इद्धिमस्स इद्धिविसये'ति*, पारा॰ 80; – **न्तो / न्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यक्खा ... इद्धिमन्तो जुतिमन्तो वण्णवन्तो यसस्सिनो*, दी॰ नि॰ 2.187; *येसु बुद्धा खीणासवा च पच्चेकबुद्धा च इद्धिमन्ता च इसयो न्हायन्ति*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.218; *इद्धिमन्तोति दिब्बइद्धियुत्ता*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.249; – **न्ते** पु॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अञ्ञे भिक्खू इद्धिमन्ते दिस्वा ...*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.380; – **न्तेहि** पु॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *भगवा कथाहं इद्धिमन्तेहि गन्तब्बट्ठानं गमिस्सामीति*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.239; – **मतं / मन्तानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यो नामिद्धिमतं सेट्ठो, दुतियो अग्गसावको*, विसुद्धि॰ 1.225; *"एतदग्गं, भिक्खवे, ... इद्धिमन्तानं यदिदं महामोग्गल्लानो"*, अ॰ नि॰ 1(1).31; – **मती / मन्तिनी** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, ऋद्धियों से सम्पन्न नारी – *सतिमती चक्खुमती, इद्धिमती पत्तिमती'ति च*, सद्द॰ 1.180; – **न्तिनियो** ब॰ व॰ – *देवतापि खो सन्ति इद्धिमन्तिनियो दिब्बचक्खुका परचित्तविदुनियो*, अ॰ नि॰ 1(1).173; – **मतीनं / मन्तानं** स्त्री॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अग्गा इद्धिमतीनन्ति*, थेरीगा॰ अट्ठ॰ 218; *"एतदग्गं, भिक्खवे ... इद्धिमन्तीनं यदिदं उप्पलवण्णा"*, अ॰ नि॰ 1(1).35; स॰ उ॰ प॰ के रूप में अनि॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **न्तता** स्त्री॰, इद्धिमन्तु का भाव॰ [ऋद्धिमत्त्व, नपुं॰], ऋद्धियों से समन्वित होना – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं ... यदिदं महामोग्गल्लानो"ति इद्धिमन्तताय एतदग्गे ठपेसि*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.406-7.

इद्धिमय त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिसम्पन्न], 1. ऋद्धिबल से परिपूर्ण, अलौकिक शक्तियों से सम्पन्न, ऋद्धियों से युक्त, 2. तेईस प्रकार के पंसुकूलचीवरों में बाईसवें के रूप में उल्लिखित चीवर, 'एहि भिक्खु' (आ जाओ भिक्षु) कहते ही अद्भुत रूप से प्राप्त श्रेष्ठ चीवर – **यो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कम्मविपाकजाय इद्धिया पयोजनं इद्धिमयो पयोगो*, पारा॰ अट्ठ॰ 2.37; – **यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, (चीवर) – *इद्धिमयन्ति एहिभिक्खुचीवरं*, विसुद्धि॰ 1.61; – **पत्तचीवर** नपुं॰, कर्म॰ स॰, चमत्कारमय रूप से प्राप्त पात्र एवं चीवर – **रं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्विन्नं अग्गसावकानम्पि इद्धिमयपत्तचीवरं आगतं*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.128; *तेनस्स इद्धिमयपत्तचीवरं न उप्पज्जिस्सति*, उदा॰ अट्ठ॰ 75; – **पत्तचीवरधर** त्रि॰, "एहि भिक्खु" कहने से प्राप्त पात्र एवं चीवर को धारण करने वाला – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बे अन्तरहितकेसमस्सू इद्धिमयपत्तचीवरधरा वस्ससट्ठिकत्थेरसदिसा अहेसुं*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.158.

इद्धिमयिक त्रि॰, इद्धिमय + इक के योग से व्यु॰, ऋद्धियों से निर्मित, ऋद्धियों से परिपूर्ण, अलौकिक दिव्य शक्तियों से युक्त – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिमयिको सो आयूतिआदिमाह*, प॰ प॰ अट्ठ॰ 224; – **का** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... इद्धिमयिका सा गति, इद्धिमयिको सो अत्तभावप्पटिलाभो*, कथा॰ 368; – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धम्मसङ्गाहकत्थेरेहि तेसं अनुलोमानि दुकूलं ... इद्धिमयिकं ... अनुञ्ञातानि*, महाव॰ अट्ठ॰ 363.

इद्धिमहत्त नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिमहत्व], ऋद्धियों की महत्ता अथवा श्रेष्ठता – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिमहत्ततो अनुस्सरितब्बं*, विसुद्धि॰ 1.225; ... *यसमहत्ततो पुञ्ञमहत्ततो ... इद्धिमहत्ततो ... सम्मासम्बुद्धतोति*, विसुद्धि॰ 1.223.

इद्धिय / इट्टिय पु॰, व्य॰ सं॰, एक स्थविर का नाम – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इट्टियो उत्तियो थेरो, भद्दसालो च सम्बलो,*

पारा॰ अट्ठ॰ 1.50; *ततो महिन्दो इद्धियो उत्तियो सम्बलो तथा,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 33.

इद्धियान नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धियान], ऋद्धियों वाला वाहन, ऋद्धिरूपी वाहन या सवारी, ऋद्धियों की सवारी – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"तेनेव कम्माभिसन्देन इद्धियानं अभिरुय्ह पत्थितं निब्बाननगरं पापुणेय्या"ति,* मि॰ प॰ 257.

इद्धिलाभ पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिलाभ], ऋद्धियों की प्राप्ति – **भाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... मग्गो या पटिपदा इद्धिलाभाय इद्धिपटिलाभाय संवत्तति–अयं वुच्चति भिक्खवे इद्धिपादो,* स॰ नि॰ 3(2).348; *इद्धिया इमे चत्तारो पादा इद्धिलाभाय इद्धिपटिलाभाय ... इद्धिवेसारज्जाय संवत्तन्तीति,* पटि॰ म॰ 376; *इद्धिलाभायाति अत्तनो सन्ताने पातुभाववसेन इद्धीनं लाभाय,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.245.

इद्धिवड्ढननामधेय्य त्रि॰, ब॰ स॰, ऋद्धिवर्धन नाम वाला (एक राजप्रासाद), स॰ प॰ के अन्त॰, – *वुद्धिप्पत्तो सिरिवड्ढनसोमवड्ढनइद्धिवड्ढननामधेय्येसु तीसु पासादेसु ...,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 175.

इद्धिवसीभाव पु॰, तत्पु॰ स॰, ऋद्धियों को अपने वश में कर लेना, ऋद्धियों पर आधिपत्य या प्रभुत्व – **वाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिवसीभावायाति इद्धिया इस्सरभावाय,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.245.

इद्धिविकुब्बन नपुं॰, [बौ॰ सं॰ ऋद्धिविकुर्वण], ऋद्धि का विविध रूप से प्रदर्शन – **नं**[1] प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किमेतं अच्छरियं लोके, यं मे इद्धिविकुब्बनं,* बु॰ वं॰ (पृ॰) 292; – **नं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... आकासं उप्पतित्वा इद्धिविकुब्बनं दस्सेत्वा ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.228; – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरहत्तफलेन सद्धिंयेव च इद्धिविकुब्बने चिण्णवसी अहोसि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.265; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, ऋद्धियों के प्रदर्शन की अवस्था या शक्ति, ऋद्धियों का विविध रूप से प्रदर्शन करना – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिविकुब्बनतायाति इद्धिया विविधकरणभावाय,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.245.

इद्धिविधञाण नपुं॰, तत्पु॰ स॰, ऋद्धि-विषयक ज्ञान, ऋद्धि के रूप में अथवा ऋद्धि-शीर्षक में प्राप्त ज्ञान – **णाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिविधञाणाय चित्तं अभिनीहरति अभिनिन्नामेति,* पटि॰ म॰ 102; *इद्धिविधञाणायाति इद्धिकोट्ठासे, इद्धिविकप्पे वा ञाणत्थाय,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.278.

इद्धिविधा स्त्री॰/नपुं॰, [ऋद्धिविधा], ऋद्धियों के भेद, ऋद्धियों के प्रकार, ऋद्धियों के खण्ड या भाग, ऋद्धि की विविधता – **धं**[1] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धि येव विधं इद्धिविधं, इद्धिकोट्ठासो इद्धिविकप्पोति अत्थो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.43; *इद्धीति इद्धिविधं इद्धिपाटिहारियं नाम,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 44; – **धं**[2] द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो अनेकविहितं इद्धिविधं पच्चनुभोति, एकोपि हुत्वा बहुधा होति,* दी॰ नि॰ 1.69; – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिविधायाति इद्धिकोट्ठासाय इद्धिविकप्पाय वा,* विसुद्धि॰ 2.12; – **धस्स** नपुं॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिविधस्स ... लाभीम्ही'ति वदतोपि पाराजिकं नत्थी'ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.78; – **धे** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इज्झनट्ठे पञ्ञा इद्धिविधे ञाणं,* पटि॰ म॰ 3; स॰ प॰ के रूप में, – *चतुत्थज्झानसमाधिस्मिं ... इद्धिविधादिधम्मा इज्झन्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.115; – **ञाण** नपुं॰, कर्म॰ स॰, ऋद्धि के विविध प्रभेदों का ज्ञान, भिन्न भिन्न ऋद्धियों का ज्ञान – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुपरिकम्मकतमत्तिकादयो विय इद्धिविधञाणं दट्ठब्बं,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.180; – **णाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो तथाभावितेन चित्तेन ... इद्धिविधञाणाय चित्तं अभिनीहरति,* पटि॰ म॰ 102; *इद्धिविधञाणायाति इद्धिकोट्ठासे, इद्धिविकप्पे वा ञाणत्थाय,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.278; – **निद्देस** पु॰, विसुद्धि॰ के बारहवें अध्याय का शीर्षक, जिसमें बुद्धघोषाचार्य ने ऋद्धियों का विवेचन किया है, विसुद्धि॰ 2.1-56.

इद्धिविलास पु॰, तत्पु॰ स॰, ऋद्धियों का ललित अथवा मनोहर रूप में प्रदर्शन, ऋद्धि का शानदार या भव्य प्रदर्शन – **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिविलासेन विलासेन्तो,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 58.

इद्धिविसय पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धि-विषय], ऋद्धि का क्षेत्र – **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"अनापत्ति भिक्खवे इद्धिमस्स इद्धिविसये"ति,* पारा॰ 80; *इद्धिविसयेति ईदिसाय अधिट्ठानिद्धिया अनापत्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.315; – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिमतो इद्धिविसयो नाम अचिन्तेय्यो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.61; – **या** ब॰ व॰ – *न पन सक्कते मरणस्स ... इद्धिमन्तानं इद्धिविसया,* नेत्ति॰ 21.

इद्धिविसविता स्त्री॰, [ऋद्धिविषयिता], 1. ऋद्धियों पर स्वामित्व अथवा प्रभुत्व, ऋद्धियों को अपने विषयक्षेत्र में ले आना, 2. ऋद्धियों की विविध रूप में प्रवृत्ति – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चत्तारो इद्धिपादा पञ्ञत्ता इद्धिपहुताय इद्धिविसविताय इद्धिविकुब्बनताय,* दी॰ नि॰ 2.157; *इद्धिविसवितायाति इद्धिविपज्जनभावाय पुनप्पुनं आसेवनवसेन चिण्णवसितायाति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.210; *इद्धिविसवितायाति*

विविधं विसेसं सवति जनेति पवत्तेतीति विसवी, ... तस्स भावो विसविता, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.245.

इद्धिवेसारज्ज नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऋद्धिवैशारद्य], ऋद्धि के विषय में निपुणता या वैशारद्य – **ज्जाय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इद्धिया इमे चत्तारो पादा इद्धिलाभाय ... इद्धिवेसारज्जाय संवत्तन्तीति,* पटि॰ म॰ 376.

इध[1] निपा॰, [इह], यहां, इधर, इधर-उधर, यहां पृथ्वी पर, इस लोक या संसार में, इस बुद्धधर्म में – *(देसापदेसो निपातो), इध, तथागतो लोके उप्पज्जति,* दी॰ नि॰ 1.55; दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.142; *इधेव तिट्ठमानस्स, देवभूतस्स मे सतो,* दी॰ नि॰ 2.211; *इध हिस्सामि जीवितं,* जा॰ अट्ठ॰ 4.372; – **पञ्ञा** स्त्री॰, इस बुद्धधर्मदेसना के विषय में अन्तर्दृष्टि – *इमस्मिं सासने पञ्ञा इधपञ्ञा नाम, सासनचरिताय अरियपञ्ञाय ठितस्स अरियसावकस्साति अत्थो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.339; – **सद्द** पु॰, इध शब्द – **द्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयञ्हेत्थ इधसद्दो ...,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.10.

इध[2] पु॰, ईंधन, समिधा – **धो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समिधा इध्मं चेधो,* अभि॰ प॰ 36; *एधयतीति इधो,* अभि॰ प॰ टी॰ 36.

इधट्ठ त्रि॰, इस लोक में स्थित – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इधट्ठस्साति इमस्मिं लोके ठितस्स,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.248; – **क** त्रि॰, इसी लोक में अथवा इसी कामभव में स्थित – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इध कामभवे ठितो इधट्ठको,* नेत्ति॰ टी॰ 139.

इधत्थ[1] त्रि॰, ब॰ स॰, इसी लोक के कामसुखों को अपना प्राप्तव्य मानने वाला (व्यक्ति) – **त्थं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तिट्ठन्तमेनं जानातीति भगवा इधत्थञ्ञेव जानाति,* चूळनि॰ 153.

इधत्थ[2] पु॰, कर्म॰ स॰, इसी दिखलाई दे रहे लोक का प्रयोजन, इसी लोक का हित – **त्थो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इधत्थोति दिट्ठधम्महितं,* लीन॰ (दी॰ नि॰ टी॰) 1.165.

इधलोकत्थ पु॰, तत्पु॰ स॰, इसी लोक का निर्माण करने वाला पञ्च-स्कन्ध-नामक अर्थ या सारतत्त्व, पांच स्कन्धों के रूप में यह लोक – **त्थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इधलोकत्थन्ति इधलोकभूतं खन्धपञ्चकसङ्खातमत्थं,* लीन॰ (दी॰ नि॰ टी॰) 2.63.

इधलोकनिस्सित त्रि॰, तत्पु॰ स॰, इसी लोक पर आधारित – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न च मे इधलोकनिस्सितं विञ्ञाणं भविस्सति,* म॰ नि॰ 3.313.

इधलोकभावी त्रि॰, इसी लोक में घटित होने वाला, सामने स्वयं देखा जा सकने वाला – **विनी** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सन्दिट्ठिकाति सामं पस्सितब्बा, इधलोकभाविनी,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.116.

इधलोकविजय पु॰, इस लोक पर विजय – **याय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नवमे इधलोकविजयायाति इधलोकविजिननत्थाय अभिभवत्थाय,* अ॰ नि॰ टी॰ 3.223.

इधलोकिकसुत्त नपुं॰, व्य॰ सं॰, अ॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, अ॰ नि॰ 3(1).98-102.

इधुम नपुं॰, [इंधन], अग्निकाष्ठ, इन्धन, यज्ञ में काम आने वाली समिधा, जलाऊ लकड़ी – **मं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समिधा इधुमं चेधो उपादानं तथेन्धनं,* अभि॰ प॰ 36; *एधयतीति इधुमं,* अभि॰ प॰ टी॰ 36.

इनन्दपद पु॰, व्य॰ सं॰, दक्षिण भारत के उच्चङ्कुट्ठ नामक एक क्षेत्र के तमिलप्रधान का नाम – *इनन्दपदनामं च तोण्डमानं अथापरं,* चू॰ वं॰ 77.74.

इनप्पच्चय पु॰, व्याकरण में ही प्रयुक्त, इन प्रत्यय (जिन तथा सुपिन शब्दों में दृष्टिगत) – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जि इच्चेताय धातुया इनप्पच्चयो होति सब्बकाले कत्तरि,* क॰ व्या॰ 560; *सुप इच्चेताय धातुया इनप्पच्चयो होति कत्तरि भावे च,* क॰ व्या॰ 561.

इन्द पु॰, [इन्द्र], **1. शा॰ अ॰,** देवों के राजा का नाम, तावतिंस स्वर्ग का शासक, ब्रह्मा को छोड़कर देवों के बीच सर्वाधिक प्रसिद्ध देव, दूसरा प्रसिद्ध नाम शक्र, अट्ठारह अन्य नाम भी उल्लिखित – *सक्को पुरिन्ददो देवराजा वजिरपाणि च, सुजम्पति सहस्सक्खो महिन्दो वजिरावुधो वासवो च दससतनयनो तिदिवाधिभू सुरनाथो च वजिरहत्थो च भूतपत्यपि मघवा केसियो इन्दो वत्रभू पाकसासनो विडोजा,* अभि॰ प॰ 18-20; – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दोति सक्को देवराजा,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.193; *अपि च इन्दोति सक्को,* सद्द॰ 2.378; *सचे च मं रक्खति देवराजा, देवानमिन्दो मघवा सुजम्पति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.126; **2. ला॰ अ॰,** अपने समूह में प्रथम अथवा श्रेष्ठ, अधिपति, राजा, परम-ऐश्वर्य-सम्पन्न व्यक्ति – *इन्दोधिपतिसक्केसु,* अभि॰ प॰ 1132; *एत्थ इन्दोति अधिपतिभूतो यो कोचि सो हि इन्दति परेसु इस्सरियं पापुणातीति इन्दो ति वुच्चति अपि च इन्दो ति सक्को,* सद्द॰ 2.377-78; *अपिच इन्दो भगवा धम्मिस्सरो परमेन चित्तिस्सरियेन समन्नागतो,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 183; *सहस्सनेत्तो तिदसानमिन्दो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.404; *सक्कोहमस्मी*

तिदसानमिन्दो'ति, जा॰ अट्ठ॰ 3.266; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अमरि॰, असुरि॰ उरगि॰, कवि॰, कुजि॰, गजि॰, जिन॰, तिदसि॰, दिजि॰, दिपदि॰, दुमि॰, देवि॰, नागि॰, पन्नगि॰, भुजगि॰, भूमि॰, भोगि॰, मनुजि॰, मनुस्सि॰, महि॰, मिगि॰, मुनि॰, रवि॰, लङ्कि॰, वानरि॰, समणि॰, सीहलि॰, सुगति॰, सुरासुरि॰, सुरि॰, सेनि॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰, **3**. व्य॰ सं॰, **क.** चार लोकपालों में से प्रत्येक के इक्यानवे पुत्रों का नाम – **नामा** त्रि॰, ब॰ स॰, पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, इन्द्र नाम वाले – *"पुत्तापि तस्स बहवो इन्दनामा महब्बला,* दी॰ नि॰ 2.188; ... *इन्दनामा महब्बलाति ... सक्कस्स देवरञ्ञो नामधारका,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.250; *इन्दनामाति इन्दोति एवंनामा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.132; **3.ख.** पूर्वकल्प के तीन चक्रवर्तियों का नाम – **मा** पु॰, ब॰ स॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *"तेसत्ततिम्हितो कप्पे, इन्दनामा तयो जना,* अप॰ 1.52; *इन्दनामा तयो जनाति इन्दनामका तयो चक्कवत्तिराजानो एकस्मिं कप्पे तीसु जातीसु इन्दो नाम चक्कवत्ती राजा अहोसिन्ति अत्थो,* अप॰ अट्ठ॰ 2.3.

इन्दक[1] त्रि॰, इन्द से व्यु॰, स॰ उ॰ प॰ में ही प्राप्त – **स॰ ... का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, इन्द्रसहित – *भिक्खुं सइन्दकादेवा ... नमस्सन्ति,* स॰ नि॰ 2(1).84; – **सहि॰-का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तावतिंसा सहिन्दका,* दी॰ नि॰ 2.163; – **के** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बेपि सइन्दके सब्रह्मके च देवे दस्सेन्तो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.270.

इन्दक[2] पु॰, व्य॰ सं॰, **क.** एक यक्ष का नाम, इन्द्रकूट-निवासी एक यक्ष – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दकस्स यक्खस्स भवने,* स॰ नि॰ 1(1).238; *इन्दकस्साति इन्दकूटनिवासिनो यक्खस्स,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.263; **ख.** त्रायस्त्रिंस (स्वर्ग) में दुबारा उत्पन्न एक माणव का नाम – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दको अतिरोचति,* पे॰ व॰ 315; *अयं सो इन्दको यक्खो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.126.

इन्दकसुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, स॰ नि॰ 1(1).238.

इन्दकूट पु॰, व्य॰ सं॰ [इन्द्रकूट], राजगृह के समीप में स्थित एक पर्वत का नाम – **टे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भगवा राजगहे विहरति इन्दकूटे पब्बते,* स॰ नि॰ 1(1).238; – **निवासी** पु॰, [इन्द्रकूटनिवासी], इन्द्रकूट पर्वत पर निवास करने वाला – **नो** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दकस्साति इन्दकूटनिवासिनो यक्खस्स,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.263.

इन्दकेतु पु॰, [इन्द्रकेतु], **शा॰ अ॰**, इन्द्र का ध्वज, इन्द्र की पताका, **ला॰ अ॰**, इन्द्रधनुष – **तु** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उच्चत्तनेन सो बुद्धो, असीतिहत्थमुग्गतो, ओभासेति दिसा सब्बा, इन्दकेतुव उग्गतो,* बु॰ वं॰ 7.24.

इन्दखिलुपम त्रि॰, ब॰ स॰, **शा॰ अ॰**, प्रवेशद्वार या देहली पर गाड़े गए खूंटे या स्तम्भ के समान (अडिग, अविचल), **ला॰ अ॰**, किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया से रहित, समभाव में स्थित – **मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दखिलुपमो तादि सुब्बतो,* ध॰ प॰ 95; ... *अथ खो पथविसमो च इन्दखिलुपमो एव च होति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.349; पाठा॰ इन्दखीलुपम(बर्मी॰).

इन्दखील पु॰, [बौ॰ सं॰, इन्द्रकील], **शा॰ अ॰**, नगरद्वार पर गाड़ा गया इन्द्र का खूंटा अथवा प्रस्तर-खण्ड, **ला॰ अ॰ 1**. नगरद्वार की सुरक्षा के लिए देहली के मध्य में पृथ्वी के नीचे आठ या दस हाथ खोदकर गाड़ा हुआ लकड़ी या लोहे का अकम्प्य स्तम्भ या खूंटा – **लो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एसिका इन्दखीलो च,* अभि॰ प॰ 204; *इन्दखीलोति नगरद्वारविनिवारणत्थं उम्मारब्भन्तरे अट्ठ वा दस वा हत्थे पथविं खणित्वा आकोटितस्स सारदारुमय थम्भस्सेतं अधिवचनं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 147; *इन्दखीलो वा अयोखीलो ... असम्पवेधी,* दी॰ नि॰ 3.99; – **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा नाम नगरद्वारे निखातं इन्दखीलं दारकादयो ओमुत्तेन्तिपि ऊहदन्तिपि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.349; – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दखीले ठितस्साति यस्स गामस्स ... इन्दखीला ... तस्स ... इन्दखीले ठितस्स,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.239; – **ला** प॰ वि॰, ब॰ व॰ – *निक्खमित्वा बहि इन्दखीला सब्बमेतं अरञ्ञं,* पटि॰ म॰ 168; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दखीलस्स द्वे अङ्गानि गहेतब्बानि,* मि॰ प॰ 330; **ला॰ अ॰ 2.** देहली, प्रवेश-द्वार – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गामूपचारो नाम परिक्खित्तस्स गामस्स इन्दखीले ठितस्स मज्झिमस्स पुरिसस्स लेड्डुपातो,* पारा॰ 52; *इन्दखीले ठितस्साति यस्स गामस्स अनुराधपुरस्सेव द्वे इन्दखीला, तस्स अब्भन्तरिमे इन्दखीले ठितस्स,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.239; – **ला**[1] प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इन्दखीलाति उम्मारा,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.91; – **ला**[2] प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"अरञ्ञ"न्ति निक्खमित्वा बहि इन्दखीला सब्बमेतं अरञ्ञं,* विभ॰ 281.

इन्दखीलक पु॰, नगर या ग्राम का प्रवेशद्वार – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दखीलकतो अन्तो, गच्छंतो होति दुक्कटं,* विन॰ वि॰ 1884; *इन्दखीलकतो अन्तोति गामद्वारिन्दखीलतो अन्तो, घरेति वुत्तं होति,* विन॰ वि॰ टी॰ 2.10.

इन्दखीलसुत्त नपुं., व्य. सं., स. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, स. नि. 3(2).505.

इन्दगज्जित नपुं., [इन्द्रगर्जित], इन्द्र का गर्जन, इन्द्र की दहाड़ – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *गज्जन्तो इन्दगज्जितं,* मि. प. 18.

इन्दगु/हिन्दगू/इन्दगू पु., [इन्द्रगू ?], सत्त्व, नर, मनुष्य, इन्द्रिय एवं कर्म के द्वारा गमन करने वाला – **गु** प्र. वि., ए. व. – *मच्चोति सत्तो नरो मानवो पोसो पुग्गलो जीवो जागु, जन्तु इन्दगु, मनुजो,* महानि. 3; *इन्द्रियेन गच्छतीति इन्दगु,* महानि. अट्ठ. 21; *इन्द्रियेन गच्छतीति इन्दगू अथ वा इन्दभूतेन कम्मुना गच्छतीति इन्दगू, इन्दगू ति पि पाळी, तत्थ हिन्दन्ति मरणं, तं मरणं गच्छतीति हिन्दगू,* सद्द. 2.466.

इन्दगुत्त पु., व्य. सं., **1.** अशोक-कालीन एक स्थविर (थेर) का नाम – **स्स** ष. वि., ए. व. – *थेरस्स इन्दगुत्तस्स कम्माधिट्ठायकस्स तु,* म. वं. 5.174; **2.** दुट्ठगामनि के समय के राजगृह का एक स्थविर – **त्तो** प्र. वि., ए. व. – *राजगहस्स सामन्ता इन्दगुत्तो महागणी,* म. वं. 29.30; **3.** दुट्ठगामनि के ही समय का एक सिंहली भिक्षु – *इन्दगुत्तो महाथेरो छळभिञ्ञो महामति,* म. वं. 30.98; – **थेर** पु., कर्म. स., स्थविर इन्दगुत्त – **रो** प्र. वि., ए. व. – *सो इन्दगुत्तथेरो तु मारस्स पटिबाहनं,* म. वं. 31.85; – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *इन्दगुत्तत्थेरं नाम महिद्धिकं महानुभावं ... अदासि,* पारा. अट्ठ. 1.35.

इन्दगोपक पु., [इन्द्रगोपक], **1.** एक प्रकार का बरसाती कीड़ा जो लाल रंग का होता है, लाल मखमल के समान रंग-रूप वाला बरसाती कीड़ा, गिंजाई, ग्वालिन, बीर-बहूटी या इन्द्रवधू नामक एक बरसाती कीड़ा – **को** प्र. वि., ए. व. – *कुटिका अभिरूपा ... सेय्यथापि इन्दगोपको,* पारा. 48; – **का** प्र. वि., ब. व. – *नववुट्ठाय भूमिया बहू इन्दगोपका उट्ठहिंसु,* ध. प. अट्ठ. 1.12; – **पिट्ठिसदिसवण्ण** त्रि., ब. स., इन्द्रगोप की पीठ के समान लाल वर्ण वाला – **ण्णेहि** नपुं., तृ. वि., ब. व. – *इन्दगोपकपिट्ठिसदिसवण्णेहि नीचतिण्णेहि समन्नागता,* जा. अट्ठ. 5.162; – **वण्ण 1.** पु., तत्पु. स., बीरबहूटी का रंग या वर्ण – **ण्णो** प्र. वि., ए. व. – *लोहितको च वण्णोति इन्दगोपकवण्णो,* महानि. अट्ठ. 305; **2.** त्रि., ब. स., बीरबधूटी के वर्ण के समान लाल रंग वाला – **ण्णं** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *इन्दगोपकवण्णं पटं पारुपित्वा,* जा. अट्ठ. 4.167; – **वण्णाभ** त्रि., ब. स., इन्द्रगोपक के वर्ण की आभा वाला – **भो** पु., प्र. वि., ए. व. – *इन्दगोपकवण्णाभो, यस्स लोहितको सिरो,* जा. अट्ठ. 7.28; – **भा** प्र. वि., ब. व. – *इन्दगोपकवण्णाभा ताव दिस्सन्ति तिंसति,* जा. अट्ठ. 7.172; – **सञ्छन्न** त्रि., तत्पु. स., वर्षाकाल में उत्पन्न मूंगा के रंग के समान रक्तवर्णकीट इन्द्रगोपकों से ढका हुआ या आवृत्त, लाल रंग की घास द्वारा ढका हुआ – **न्ना** पु., प्र. वि., ब. व. – *इन्दगोपकसञ्छन्ना, ते सेला रमयन्ति मन्ति,* थेरगा. 13; *इन्दगोपकसञ्छन्नाति ... इन्दगोपकनामकेहि पवाळवण्णेहि रत्तकिमीहि सञ्छादिता ...,* थेरगा. अट्ठ. 1.61; *तत्थ इन्दगोपकसञ्छन्नाति इन्दगोपकवण्णाय रत्ताय सुखसम्फस्साय तिणजातिया सञ्छन्ना,* जा. अट्ठ. 4.230; – **न्नं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *इन्दगोपकसञ्छन्नं न रज्जस्स सरिस्ससि,* जा. अट्ठ. 7.249; – **सम/समान** त्रि., इन्द्रगोपक नाम वाले रक्तिम कीट के समान (लाल) – **नानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *अक्खिकूटानि भगवतो लोहितकानि होन्ति सुलोहितकानि पासादिकानि दस्सनेय्यानि इन्दगोपकसमानानि,* महानि. 261; **2.** लालरंग की घास अथवा कण्डीर वृक्ष – *केचि पन "इन्दगोपकनामानि रत्ततिणानी"ति वदन्ति, अपरे "कणिकाररुक्खा"ति,* थेरगा. अट्ठ. 1.61;.

इन्दग्गि पु., [इन्द्राग्नि], **शा. अ.,** इन्द्र की अग्नि, **ला. अ.,** आकाशीय विद्युत्, बिजली, वज्रपात – **ग्गि** प्र. वि., ए. व. – *सङ्खारग्गि इन्दग्गि अग्गिसन्तापो सूरियसन्तापो,* विभ. 93; *इन्दग्गीति असनिअग्गि,* विभ. अट्ठ. 65; – **नो** ष. वि., ब. व. – *गच्छन्तस्स इन्दग्गिनो गतमग्गो विय होति,* अ. नि. अट्ठ. 2.73; – **ना** तृ. वि., ए. व. – *झापिताति इन्दग्गिना विय रुक्खगच्छादयो अरियमग्गञाणग्गिना समूलं दड्ढा,* थेरगा. अट्ठ. 1.162.

इन्दचाप पु., तत्पु. स., इन्द्र-धनुष – **पेहि** तृ. वि., ब. व. – *इन्दचापेहि विज्जुलताहि च परिक्खित्तं,* सारत्थ. टी. 1.112; – **कलाप** पु., इन्द्रधनुषों का समुच्चय, अनेक इन्द्रधनुष – **पेन** तृ. वि., ए. व. – *इन्दचापकलापेन सोभेन्तो गगनङ्गणं,* चू. वं. 74.228.

इन्दजाल पु., [इन्द्रजाल], जादू-टोना, माया, सम्मोहन-विमोहन, छल-वञ्चना – **लेन** तृ. वि., ए. व. ... *एकच्चे पन इन्दजालेन अड्ढिधोवनं,* दी. नि. अट्ठ. 1.77; *इन्दजालेनाति*

अट्ठिधोवनमन्तं परिजप्पित्वा ... पस्सन्ति, दी॰ नि॰ टी॰ 1. 113.

इन्दजालिक पु॰, [इन्द्रजालिक], जादूगर, बाजीगर, ऐन्द्रजालिक, मायाकारी, इन्द्रजाली, छली, धोखेबाज – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मायाकारो तु इन्द्रजालिको,* अभि॰ प॰ 512; – **का** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *नच्चका लङ्घका इन्दजालिका वेतालिका मल्ला,* मि॰ प॰ 301.

इन्दजुट्ठट्ठ त्रि॰, केवल 'इन्द्रिय' शब्द के निर्वचनक्रम में ही प्रयुक्त [इन्द्रजुष्ट], अधिपति, भावना के द्वारा भावित या सेवित – **ट्ठो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दजुट्ठट्ठो इन्द्रियट्ठो,* विसुद्धि॰ 2.118; विभ॰ अट्ठ॰ 118; – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *कानिचि भावनासेवनाय सेवितानीति इन्दजुट्ठट्ठेनापि इन्द्रियानि,* विसुद्धि॰ 2.119; विभ॰ अट्ठ॰ 118.

इन्दजेट्ठक त्रि॰, ब॰ स॰ [इन्द्रज्येष्ठक], इन्द्र की प्रधानता में रहने वाला, इन्द्र की अधीनता में रहने वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इन्दजेट्ठका तावतिंसापि देवा ते दानं अनुमोदन्तीति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.345.

इन्दट्ठ पु॰, तत्पु॰ स॰, 'इन्द्रिय' शब्द के निर्वचन-क्रम में प्रयुक्त [इन्द्रार्थ], आधिपत्य का अर्थ, आधिपत्य का प्रयोग, अधिपति के रूप में कार्य – **ट्ठं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चक्खुद्वारे इन्दट्ठं कारेतीति चक्खुन्द्रियं ..., इत्थिभावे इन्दट्ठं कारेतीति इत्थिन्द्रियं,* विभ॰ अट्ठ॰ 117; *इन्दट्ठं करोतीति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.265.

इन्दट्ठकरण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रार्थकरण], आधिपत्य स्थापित करना – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *समाधि पन झानक्खणे सम्पयुत्तधम्मानं अविक्खेपलक्खणे इन्दट्ठकरणेन सातिसयं पच्चयो होति,* सारत्थ॰ टी॰ 1.320; विसुद्धि॰ टी॰ 1.170.

इन्दति √इन्द का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [√इन्द, इन्दति, √इदि परमैश्वर्ये], अधिपति के रूप में शासन करता है, दूसरों पर परमैश्वर्य प्राप्त करता है, परम ऐश्वर्य से युक्त है – *इन्दति परेसु इस्सरियं पापुणातीति इन्दोति वुच्चति,* सद्द॰ 2.377-78; *इन्दतीति इन्दो,* ध॰ स॰ अनु॰ टी॰ 31; *इन्दति परमिस्सरियं करोतीति इन्दो,* अभि॰ प॰ सूची 47(रो॰); – **न्ति** प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *इमस्मिं च अत्थे इन्दन्ति परिमिस्सरियं करोन्तिच्चेव इन्द्रियानि,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.174.

इन्दत्त नपुं॰, इन्द का भाव॰ [इन्द्रत्व], इन्द्र का भाव, आधिपत्यभाव, महाधिपतित्व – **त्ताय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महाराजत्ताय वा इन्दत्ताय वा ब्रह्मत्ताय वा देवत्ताय वा,* महानि॰ 52; *इन्दत्ताय वाति सक्कभावाय,* महानि॰ अट्ठ॰ 159.

इन्दत्तन नपुं॰, उपरिवत् – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वलं रज्जं इन्दत्तनं भोगो बुद्धरूपादिका पि च,* सद्धम्मो॰ 234.

इन्ददिट्ठ त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रदृष्ट], इन्द्र के द्वारा देखा गया, अधिपति द्वारा देखा गया, बुद्ध द्वारा साक्षात्कृत – **ट्ठ** पु॰, इन्द्र या अधिपति द्वारा देखे जाने का अर्थ – **ट्ठो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्ददिट्ठट्ठो इन्द्रियट्ठो,* विसुद्धि॰ 2.118; – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिसम्बुद्धानि चाति इन्ददेसितट्ठेन इन्ददिट्ठट्ठेन च इन्द्रियानि,* विभ॰ अट्ठ॰ 118; *सब्बानेव पनेतानि भगवता यथाभूततो पकासितानि अभिसम्बुद्धानि चाति इन्ददेसितट्ठेन इन्ददिट्ठट्ठेन च इन्द्रियानि,* विसुद्धि॰ 2.119.

इन्ददेसित त्रि॰, तत्पु॰ स॰, इन्द्र अर्थात् बुद्ध के द्वारा उपदिष्ट, अधिपति (बुद्ध) के द्वारा व्याकृत या प्रतिपादित – **तट्ठो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्ददेसितट्ठो इन्द्रियट्ठो,* विसुद्धि॰ 2.118; विभ॰ अट्ठ॰ 118.

इन्दद्वार नपुं॰, श्रीलंका के पुलत्थिपुर (वर्तमान पोलन्नरुव) के एक द्वार का नाम – **रं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हत्थिद्वारं विसालं च इन्दद्वारं पुनापरं,* चू॰ वं॰ 73.160.

इन्दधज पु॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रध्वज], इन्द्रध्वज, इन्द्र की ध्वजा या पताका – **जो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दधजो समुस्सयट्ठेन दस्सनीयट्ठेन च तुवं धजो वियाति धजोति,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 49.

इन्दधनु नपुं॰, [इन्द्रधनुष्], इन्द्रधनुष – **नु** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दावुधं इन्दधनु,* अभि॰ प॰ 49; स॰ प॰ के अन्त॰, – *इन्दधनुपरिवुतमिव दिवसकरं मुनिदिवसकरं,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 291; *चन्दोभाससूरियोभाससञ्झारागइन्दधनुतारकरूपानं पभासवण्णा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.113.

इन्दन नपुं॰, √इन्द से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, अधिपति के रूप में कार्य करना – *√इदि परमिस्सरिये, इन्दति, इन्दनं इन्दो,* सद्द॰ 2.377.

इन्दनगरीतुल्य त्रि॰, [इन्द्रनगरीतुल्य], इन्द्र की नगरी जैसा, इन्द्रपुरी के समान – **यं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चम्पापुरिं कारापेसि तथा तं इन्दनगरीतुल्यं,* चू॰ वं॰ 88.121.

इन्दनाम त्रि॰, ब॰ स॰ [इन्द्रनाम], इन्द्र के नाम वाला – **मा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इन्दनामा महब्बलाति ... ते सब्बे सक्कस्स देवरञ्ञो नामधारका,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.250.

इन्दनील पु./नपुं., [इन्द्रनील], इन्द्रनीलमणि, बहुमूल्य मणि, उदान उट्ठकथा में वर्णित चौबीस बहुमूल्य मणियों में से एक – **लो** पु., प्र. वि., ए. व. – *वजिरो, महानीलो, इन्दनीलो, मरकतो,* उदा. अट्ठ. 81; *बहुविधा मणयो होन्ति सेय्यथीदं, इन्दनीलो महानीलो जोतिरसो वेलुरियो उम्मापुप्फो,* मि. प. 124; – **लं** द्वि. वि., ए. व. – *इन्दनीलं महानीलं, अथो जोतिरसं मणिं एकतो सन्निपातेत्वा बुद्धथूपं अछादयुं,* अप. 1.68; – **लद्दि-कूट** नपुं., तत्पु. स. [अद्रिकूट], इन्द्रनील-नामक पर्वत का शिखर, इन्द्रनील पर्वत की चोटी – **टं** द्वि. वि., ए. व. – *राजायतनपादपं इन्दनीलद्दिकूटं व गहेत्वा गहेत्वा दट्ठमानसो,* दा. वं. 2.13(रो.); – **इट्ठका** स्त्री., [इन्द्रनीलेष्टिका], इन्द्रनील मणि की ईट या खपड़ा – **हि** तृ. वि., ब. व. – *इन्दनीलइट्ठकाहि छदनं,* दी. नि. अट्ठ. 2.216; – **थूप** पु., [इन्द्रनीलस्तूप], इन्द्रनील मणि से निर्मित स्तूप – **पेन** तृ. वि., ए. व. – *सो इन्दनीलथूपेन पिदहेसि नमस्सि च,* म. वं. 1.36; – **मय** त्रि., इन्द्रनीलमणि से निर्मित या बनाया हुआ – **या**[1] स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *सा इन्दनीलमया होति,* दी. नि. अट्ठ. 2.187; – **या**[2] पु., प्र. वि., ब. व. – *तस्सा इन्दनीलमया तयो कूपका,* जा. अट्ठ. 4.19.

इन्दनीलमणि पु., [इन्द्रनीलमणि], नीलम, नीलमणि, इन्द्रनीलमणि – **णि** प्र. वि., ए. व. – *काकगीवा विय इन्दनीलमणि ... समन्नागतत्ता,* दी. नि. अट्ठ. 2.194; – **णयो** ब. व. – *ततो अधिकवण्णता महामणि इन्दनीलमणयो ... जोतिरसमणिजातिरङ्गमणयो,* अप. अट्ठ. 2.291; – **तल** नपुं., नीलमणि के द्वारा विनिर्मित या बनाया हुआ तल या गच, इन्द्रनीलमणि से बना कुट्टिम या फर्श – **ले** सप्त. वि., ए. व. – *चक्कवत्तिपरिसा नाम ... गच्छमाना इन्दनीलमणितले ... होति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.161; – **प्पभा** स्त्री., [इन्द्रनीलमणिप्रभा], नीलम या नीलमणि की कान्ति या दीप्ति, देदीप्यमान नीलवर्ण – **जालं** त्रि., द्वि. वि., ए. व., नीलमणि की कान्ति जैसी प्रभा से देदीप्यमान – *सो नागराजा राजहंसो विय इन्दनीलमणिप्पभाजालं नीलगगनतलं अभिलङ्घति,* दी. नि. अट्ठ. 2.194; – **भूमि** स्त्री., [भूमि], नीलम से बनाया हुआ फर्श या गच – **यं** सप्त. वि., ए. व. – *सो इन्दनीलमणिभूमियं पतिट्ठितो,* थू. वं. 232(रो.); – **वण्ण** त्रि., ब. स. [इन्द्रनीलमणिवर्ण], नीलम के रंग वाला, नीलमणि के रंग वाला – **ण्णो** पु., प्र. वि., ए. व. – *एवंरूपोतिआदीसु काळोपि समानो इन्दनीलमणिवण्णो अहोसिन्ति ... अहोसिं,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.177; – **ण्णं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *इन्दनीलमणिवण्णं सेलमयं पत्तं इत्थद्वयमज्झं आगच्छति,* सु. नि. अट्ठ. 1.110; – **सङ्कास** त्रि., ब. स. [इन्द्रनीलमणिसङ्काश], नीलम के समान, नीलमणि के सदृश – **से** सप्त. वि., ए. व. – *इन्दनीलमणिसङ्कासे आकासे नानप्पकारा,* थू. वं. 150(रो.); – **सदिस** त्रि., [इन्द्रनीलमणिसदृक्], इन्द्रनीलमणि के समान या सदृश – **सं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *इन्दनीलमणिसदिसं आकासे नानप्पकारा,* बु. वं. अट्ठ. 100.

इन्दपटिमा स्त्री., तत्पु. स. [इन्द्रप्रतिमा], इन्द्र की प्रतिमा या मूर्त्ति – **मा / यो** द्वि. वि., ब. व. – *परिवारेत्वा ठिता इन्दपटिमा दस्सेसि,* जा. अट्ठ. 6.151; *देवनगरद्वारेसु वजिरहत्था इन्दपटिमा ठपेसि,* ध. प. अट्ठ. 1.158; *इन्दपटिमायो दिस्वा निवत्तित्वा असुरपुरमेव गच्छन्ति,* अ. नि. अट्ठ. 3.279; – **नं** ष. वि., ब. व. – *तासञ्च पन इन्दपटिमानं आरक्खणत्थाय ठपितभावो,* जा. अट्ठ. 6.151.

इन्दपत्त / इन्दपत्थ नपुं., व्य. सं. [इन्द्रप्रस्थ], **क.** इन्द्रप्रस्थ नाम का नगर, प्राचीन भारत का एक नगर, कुरुराष्ट्र का एक सुप्रसिद्ध नगर, कुरुवंशी राजा धनंजय की राजधानी – **त्तं / त्थं** प्र. वि., ए. व. – *साकेतं, इन्दपत्तं, चोक्कट्ठा पाटलिपुत्तकं,* अभि. प. 201; *सो आगमा नगरमिन्दपत्थं ... कुरूनं,* जा. अट्ठ. 7.164; – **ते** सप्त. वि., ए. व. – *उत्तरपञ्चाले इन्दपत्ते,* जा. अट्ठ. 2.179; – **नगर** नपुं., इन्द्रप्रस्थ नाम का नगर – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *कुरुरट्ठे इन्दपत्थनगरे धनञ्चयकोरब्यो नाम राजा रज्जं कारेसि,* जा. अट्ठ. 7.146; *कुरुरट्ठे इन्दपत्थनगरे युधिट्ठिलगोत्तो कोरब्यो नाम राजा रज्जं कारेसि,* जा. अट्ठ. 4.323; *सत्तयोजनिके इन्दपत्थनगरे रज्जं दातुं पहोमि,* जा. अट्ठ. 5.479; – **नगरवासी** पु., [इन्द्रप्रस्थनगरवासिन्], इन्द्रप्रस्थ-नामक नगर में वास करने वाला या बसने वाला – **हि** तृ. वि., ब. व. – *महासत्तोपि नगरं पत्वा इन्दपत्थनगरवासीहि देवनगरं विय,* जा. अट्ठ. 5.502; – **नं** ष. वि., ब. व. – *इन्दपत्थनगरवासीनं अस्सुमुखानि हासेन्तो,* जा. अट्ठ. 7.209; **ख.** महासम्मत-वंस के सत्रह क्षत्रिय राजाओं की राजधानी – **म्हि** सप्त. वि., ए. व. – *नगरे इन्दपत्तम्हि रज्जं कारेसुं ते तदा,* दी. वं. 3. 23; – **पुर** पु., इन्द्रप्रस्थ नामक वह स्थान, जहां पर बुद्ध का उस्तुरा एवं सुई का

डिब्बा रखा गया था – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वासि सूचिघरञ्चापि, इन्दपत्थपुरे तदा,* बु॰ वं॰ 29.16.

इन्दपुर नपुं॰, व्य॰ सं॰ [इन्द्रपुर], इन्द्रपुर, इन्द्र का नगर – **रं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वीणामुरजसम्मताळघुट्ठं इद्धं इन्दपुरं यथा तवेदं,* वि॰ व॰ 648; *इन्दपुरं यथाति सुदस्सननगरं विय,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 133.

इन्दपुरोहित त्रि॰, ब॰ स॰ [इन्द्रपुरोहित], इन्द्र की प्रमुखता वाला, इन्द्रपुरस्सृत, इन्द्र के प्राधान्य वाला, वह, जिसका प्रधान इन्द्र है – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यत्थ देवा तावतिंसा, सब्बे इन्दं पुरोहिता,* जा॰ अट्ठ॰ 6.152; *इन्दपुरोहितातिं इन्दं पुरोहितं पुरेचारिकं कत्वा परिवारेत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.152.

इन्दफली पु॰, [इन्द्रफलिन्], एक प्रकार का मत्स्य, एक प्रकार की मछली – **ली** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमरा खलिसो चन्दकुलो कन्दफली, इन्दफली इन्दवलो कुलिसो वामी कुङ्कतलो, कण्टिको सकुलो मङ्गुरो सिङ्गी सतवङ्को रोहितो, पाठीनो काणो सवङ्को पावुसो,* सद्द॰ 2.500.

इन्दभवन नपुं॰, [इन्द्रभवन], इन्द्र का प्रासाद, इन्द्र का भवन, इन्द्र का राजभवन – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नागभवने च ... महाराजभवने च ... इन्दभवने ... ततो च भिय्योति,* महानि॰ 337; – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राजभवनञ्च इन्दभवनं विय अलङ्करिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.448.

इन्दयव पु॰, [इन्द्रयव], इन्द्रयव, गेहूं के समान एक विशेष अन्न, कुटज नामक वृक्ष का बीज – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दयवो थले तस्सा,* अभि॰ प॰ 574.

इन्दलट्ठि स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰ इन्द्रयष्टि], **शा॰ अ॰,** इन्द्र की लाठी, **ला॰ अ॰,** इन्द्रधनुष, आकाशीय विद्युत की लकीर – **ट्ठि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकासे इन्दलट्ठीव इन्दधनु इव च चतुद्दिसा चतूसु दिसासु ओभासति ...,* अप॰ अट्ठ॰ 1.274; *इन्दलट्ठीव आकासे, ओभासेति चतुद्दिसा,* अप॰ 1.31; *तत्थापि भवनं मय्हं, इन्दलट्ठीव उग्गतं,* अप॰ 1.32; ... *मय्हं भवनं मम पासादं इन्दलट्ठीव उग्गतं आकासे ठितविज्जोतमाना विज्जुल्लता इव उग्गतं ...,* अप॰ अट्ठ॰ 1.275.

इन्दलिङ्ग नपुं॰, [इन्द्रलिङ्ग], **शा॰ अ॰,** इन्द्र का चिह्न, **ला॰ अ॰,** आधिपत्य का चिह्न या संकेत – **ङ्गं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दस्स लिङ्गं इन्दलिङ्गं, इन्दलिङ्गस्स अत्थो तंसभावो इन्दलिङ्गट्ठो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.174.

इन्दलिङ्गट्ठ पु॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रलिङ्गार्थ], आधिपत्य अथवा प्रभुत्व के संसूचन का अर्थ, कुशल एवं अकुशल कर्मों को संकेतित करने का अर्थ – **ट्ठो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लिङ्गेति गमेति आपेतीति लिङ्गं ... इन्दस्स लिङ्गं इन्दलिङ्गं, इन्दलिङ्गस्स अत्थो तं सभावो इन्दलिङ्गट्ठो, इन्दलिङ्गमेव वा इन्द्रियसद्दस्स अत्थोति इन्दलिङ्गट्ठो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.174; *इन्दलिङ्गट्ठो इन्द्रियट्ठो,* विसुद्धि॰ 2.118; – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बानिपेतानि यथायोगं इन्दलिङ्गट्ठेन ... च इन्द्रियानि,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.76.

इन्दवंसा स्त्री॰, [इन्द्रवंशा], एक विशेष प्रकार के छन्द का नाम, इस छन्द में चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण तथा एक रगण होता है– **सा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा इन्दवंसा खलु यत्थ ता जरा,* वुत्तो॰ 73 (पृ॰167).

इन्दवजिर नपुं॰, [इन्द्रवज्र], **शा॰ अ॰,** इन्द्र का वज्र, इन्द्र का अस्त्र, एक विशेष प्रकार का शस्त्र, जिसका प्रयोग इन्द्र के द्वारा किया जाता है – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमिना इन्दवजिरेन ते सीसं छिन्दित्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.338; – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो आवज्जमानो ... इन्दवजिरं आदाय ... अट्ठासि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.125; **ला॰ अ॰,** इन्द्रवज्र के समान तीक्ष्ण, तीव्र, द्रुत एवं सटीक (इन्द्रवज्र के साथ विविध धर्मों की उपमाओं वाले स्थलों में) – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तयेव ञाणं इन्दवजिरं विय ... अनावरणञाणं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.32; *सा हिस्स तं तं ठानं आवज्जन्तस्स विस्सट्ठइन्दवजिरमिव ... तिखिणा हुत्वा वहति,* विसुद्धि॰ 2.271; – **रूपम** त्रि॰, ब॰ स॰ [इन्द्रवज्रोपम], इन्द्र के वज्र के समान, वज्र के सदृश, वज्रोपम – **मं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो तं पञ्ञासङ्खातं इन्दवजिरूपमं वीमंसं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).335.

इन्दवजिरा स्त्री॰, [इन्द्रवज्रा], एक छन्द-विशेष का नाम, जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण (दो तगण, एक जगण तथा दो गुरु वर्ण) होते हैं – *इन्दादिका ता वजिरा ज गा गो,* वुत्तो॰ 62(पृ॰166).

इन्दवण्ण नपुं॰, [इन्द्रवर्ण], इन्द्र की आकृति या आकार-प्रकार, इन्द्र का रूप-रंग – **ण्णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दवण्णं वा दस्सेति,* पटि॰ म॰ 380; *इन्दवण्णन्ति सक्कसण्ठानं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.255.

इन्दवत नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रव्रत], इन्द्र का व्रत, एक विशिष्ट तापसी चर्या का उपाधिनाम – **तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चन्दवतं वा सूरियवतं वा इन्दवतं वा ब्रह्मवतं वा,* महानि॰ 228.

इन्दवतिक त्रि॰, इन्द्रव्रत-नामक तापसी चर्या का अनुपालन करने वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ –

इन्दवतिका वा होन्ति, ब्रह्मवतिका वा होन्ति, महानि॰ 64.

इन्दवल पु॰, एक प्रकार का मत्स्य या मीन, एक प्रकार की मछली – **लो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अमरा खलिसो चन्दकुलो ... इन्दवलो कुलिसो वामी,* सद्द॰ 2.500.

इन्दवारुणि स्त्री॰, मादकतत्त्व युक्त एक प्रकार का कद्दू या ककड़ी, गोरक्ष ककड़ी – **णि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दवारुणि विसाला,* अभि॰ प॰ 597.

इन्दवारुणिकरुक्ख / इन्दवारुणीरुक्ख पु॰, एक वृक्ष का नाम – **क्खं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकं इन्दवारुणीरुक्खं गोचरगामं ... विहासि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.8.

इन्दविस्सट्ठ त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रविसृष्ट], इन्द्र द्वारा छोड़ा गया, इन्द्र द्वारा प्रयुक्त – **ट्ठं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दविसट्ठं वजिरं विय अविरज्झनको,* महानि॰ अट्ठ॰ 368.

इन्दसगोत्त त्रि॰, ब॰ स॰ [इन्द्रसगोत्र], **शा॰ अ॰,** इन्द्र के गोत्र का, इन्द्र के गोत्र वाला, **ला॰ अ॰,** कौशिकनामधारी इन्द्र के ही गोत्रवाला (कौशिक नाम वाला), **क.** कोसिय नामक तापस तथा थेर कातियान के सन्दर्भ में प्रयुक्त, **ख.** हास्य के सन्दर्भ में उल्लू के लिए भी प्रयुक्त – **त्त** सम्बो॰, ए॰ व॰ – *इन्दो च तं इन्दसगोत्त कङ्खति, अज्जेव त्वं इन्दसहब्यतं वजा'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.407; – *कोसियगोत्तताय, इन्दसगोत्त इन्दसमानगोत्तं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.88; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यास्सु इन्दसगोत्तस्स उलूकस्स पवस्सतो ...,* जा॰ अट्ठ॰ 7.253.

इन्दसदिस त्रि॰, [इन्द्रसदृक्], इन्द्र के समान, इन्द्र जैसा – **सेहि** पु॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आकिण्णं इन्दसदिसेहि ब्यग्घेहेव सुरक्खितं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.151; *यथा नाम ब्यग्घेहि ... महावनं एवं इन्दसदिसेहेव सुरक्खितं,* जा॰ अट्ठ॰ 6.151.

इन्दसद्द पु॰, कर्म॰ स॰ [इन्द्रशब्द], 'इन्द्र' शब्द – **द्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *येन लिङ्गेन पवत्तिनिमित्तेन तावतिंसाधिपतिम्हि इन्दसद्दो पवत्तो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.232.

इन्दसभ नपुं॰, इन्द्र की सभा – **भं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *क्वचेकतञ्च छट्ठिया ... देवसभं, इन्दसभं, यक्खसभं,* मो॰ व्या॰ 3.22.

इन्दसम त्रि॰, [इन्द्रसम], इन्द्र के समान, इन्द्र जैसा – **मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अस्स इन्दसमो राज, अच्चन्तं अजरामरो,* जा॰ अट्ठ॰ 3.454; *राजा इन्दसमो अहु* अप॰ 1.186.

इन्दसमानगोत्त त्रि॰, ब॰ स॰ [इन्द्रसमानगोत्र], इन्द्र के समान (कौशिक) गोत्र वाला, इन्द्र का समगोत्रीय – **त्तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कोसियगोत्तताय, इन्दसगोत्त, इन्दसमानगोत्तं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.88; *चिरानुवुत्थोपि करोति पापं, गजो यथा इन्दसमानगोत्तं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.34; *सो गजो इन्दसमानगोत्तं मारेन्तो पापं अकासीति अत्थो,* तदे॰; – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तापसेसु इन्दसमान गोत्तो नामेको तापसो अनोवादको,* जा॰ अट्ठ॰ 2.33; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दसमानगोत्तस्स सरीरकिच्चं कारेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 2.33.

इन्दसमानगोत्तजातक नपुं॰, व्य॰ सं॰, जा॰ सं॰ 161 का शीर्षक, जा॰ अट्ठ॰ 2.33 34.

इन्दसमानभोग त्रि॰, ब॰ स॰ [इन्द्रसमानभोग], इन्द्र के समान भोग-साधनों से सम्पन्न, इन्द्र जैसी प्रचुर धन-सम्पदा का स्वामी – **गा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *"किञ्चापि ते इन्दसमानभोगा, ते वे पराधीनसुखा वराका"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.120.

इन्दसहब्यता स्त्री॰, इन्द्र की संगति, इन्द्र की सहचारिता, इन्द्र का साहचर्य, इन्द्र से भाईचारा – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अज्जेव त्वं इन्दसहब्यतं वजा ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.407; *सब्बेव ते इन्दसहब्यतं गता ति,* तदे॰; *सब्बेपि तं दानं अनुमोदित्वा चित्तं पसादेत्वा इन्दसहब्यतं गताति,* तदे॰.

इन्दसार पु॰, व्य॰ सं॰, एक श्रामणेर का नाम – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खुना इन्दसारेन नाम सामणेरेन ... अमरपुरं नाम नगरं सम्पत्तो,* सा॰ वं॰ 135.

इन्दसालगुहा स्त्री॰, [बौ॰ सं॰, इन्द्रशैलगुहा], उत्तर भारत की एक गुफा का नाम, राजगृह के पास अम्बसण्डा (वर्तमान अपसड़) के उत्तर में वेदियक पर्वत (वर्तमान पार्वती पहाड़ी) में इन्दसालगुहा है, भरहुत अभिलेख में पालि के अनुसार इन्दसालगुहा नाम प्रयुक्त – **हा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दसालरुक्खो चस्सा द्वारे, तस्मा 'इन्दसालगुहा'ति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.260; – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राजगहस्स अम्बसण्डा नाम ब्राह्मणगामो, तस्सुत्तरतो वेदियके पब्बते इन्दसालगुहायं ...,* दी॰ नि॰ 2.194; *पुन इन्दसालगुहायं असीति देवताकोटियो,* मि॰ प॰ 317.

इन्दसालरुक्ख पु॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रसालवृक्ष], इन्द्रसालद्रुम, एक वृक्ष का नाम, सल्लकी या कुटज जैसे अनेक वृक्षों के लिए प्रयुक्त – **क्खेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *कुटजेहि इन्दसालरुक्खेहि सल्लकीहि इन्दसालरुक्खेहि समन्नागतेन ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.247; – **क्खा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इन्दसालरुक्खा च कुटजरुक्खा च,* जा॰ अट्ठ॰ 4.82;

अथापि इन्द्रसाला च सल्लकी खारका सिया, अभि॰ प॰ 568.

इन्दसिद्ध त्रि॰, "इन्द्रिय" शब्द के निर्वचनक्रम में ही प्रयुक्त [इन्द्रसृष्ट], **शा॰ अ॰,** इन्द्र के द्वारा सर्जित, शक्र के द्वारा उत्पादित, **ला॰ अ॰,** परम ऐश्वर्य या आधिपत्य के द्वारा सर्जित – **द्धं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सज्जितं उप्पादितन्ति सिद्धं, इन्देन सिद्धं इन्दसिद्धं,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.174.

इन्दसिद्धट्ठ पु॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रसृष्टार्थ], आधिपत्य के द्वारा सर्जित किए जाने का अर्थ या आशय – **ट्ठो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दसिद्धट्ठो इन्द्रियट्ठो,* विभ॰ अट्ठ॰ 118; विसुद्धि॰ 2.118; – **ट्ठेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन च सिद्धानीति इन्दलिङ्गट्ठेन इन्दसिद्धट्ठेन च इन्द्रियानि,* विभ॰ अट्ठ॰ 118.

इन्दहेति पु॰, इन्द्र का वज्र – *रतने वजिरो नित्थी मणिवेधिन्दहेतिसु,* अभि॰ प॰ 866.

इन्दा पु॰, **ब॰** व॰ में ही प्राप्त, देवों के एक वर्ग का नाम – **न्दा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इन्दा पुच्छन्ति,* महानि॰ 250; – **नं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अग्गिप्पमुखा देवाति इन्दानं देवानं ... अग्गिञ्च,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 98; *सुचिण्णस्स फलं पस्स, सइन्दा देवा सब्रह्मका,* जा॰ अट्ठ॰ 5.269.

इन्दावरी स्त्री॰, व्य॰ सं॰, नारद बुद्ध की दो अग्रश्राविकाओं में से एक – **री** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दावरी च वण्डी च, अहेसुं अग्गुपट्ठिका,* बु॰ वं॰ 11.25.

इन्दावुध / इन्दायुध नपुं॰, [इन्द्रायुध], इन्द्र का शस्त्र, इन्द्र का आयुध, इन्द्रधनु, इन्द्रचाप – *इन्दावुधं इन्दधनु,* अभि॰ प॰ 49.

इन्दासनि स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्राशनि, स्त्री॰ / पु॰], इन्द्र का वज्र, बिजली की चमक, भूमि पर गिरने वाली बिजली / आग – **नि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथस्स आरद्धमत्ते कम्मट्ठानमनसिकारे इन्दासनि विय पब्बते किलेसपब्बते चुण्णयमानंयेव ञाणं पवत्तति,* महाव॰ अट्ठ॰ 239.

इन्दिखग्गधर त्रि॰, चमकते हुए या देदीप्यमान खड्ग (तलवार) को धारण करने वाला – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तमनुयायिंसु बहवो, इन्दिखग्गधरा बली,* जा॰ अट्ठ॰ 7.105.

इन्दीवर नपुं॰, [इन्दीवर], 1. नील कमल, नीली कमलिनी, 2. लसोढ़े का पुष्प – **रं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दीवरं मतं नीलुप्पले उद्दाल पादपे,* अभि॰ प॰ 1003; – **रानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इन्दीवरानं हत्थकन्ति उद्दालकपुप्फहत्थं वातघातकपुप्फकलापं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 165; – **रेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इन्दीवरेहि सञ्छन्नं, वनं तं उपसोभति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.303; – **कलाप** पु॰, [कलाप], इन्दीवर-नामक फूलों का गुच्छा, नीले कमलों का गुच्छा – **पं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तासु एका अञ्ञतरं ... इन्दीवरकलापं अदासि,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 163; – **दलप्पभ** त्रि॰, ब॰ स॰ [इन्दीवरदलप्रभ], नीली कमलिनी के पत्तों के समान प्रभा वाला – **भं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपतित्थं समापन्नं इन्दिवरदलप्पभं,* अप॰ 2.14; – **पुप्फ** नपुं॰, इन्दीवर का फूल, इन्दीवरपुष्प, नीलोत्पल का फूल, नीलकमल का कुसुम – **प्फं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जलितं जलमानं इन्दीवरपुप्फं इव,* अप॰ अट्ठ॰ 1.230; – **प्फादीनं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *गन्धो तेसन्ति तेसं इन्दीवरपुप्फादीनं गन्धो अड्ढमासं न छिज्जति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.304; – **पुप्फसाम** त्रि॰, इन्दीवर के पुष्पों के समान श्याम अथवा गहरे नीले रंग वाला – **मे** स्त्री॰, सम्बो॰, ए॰ व॰ – *'आमन्तय वम्मधरानि चेते, पुत्तानि इन्दीवरपुप्फसामे'ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.184; *इन्दीवरपुप्फसामेति तं आलपति,* जा॰ तदे॰.

इन्दीवरी स्त्री॰, इन्दीवर से व्यु॰, नीले रंग की कुमुदिनी (या उसका पुष्प) – **साम** त्रि॰, ब॰ स॰, नीले कमलिनी के पुष्प के समान (गहरे नीले रंग का), इन्दीवर के सदृश – **मं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वन्दे इन्दीवरीसामं, रत्तिं नक्खत्तमालिनिं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.87; *इन्दीवरीसामन्ति इन्दीवरीपुप्फसमानवण्णं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.88; *इन्दीवरीपुप्फसमानवण्णन्ति इन्दिया इन्दस्स भरियाय वरीतब्बताय पत्थितब्बताय इन्दीवरीतिलद्धनामस्स नीलुप्पलस्स पुप्फेन समानवण्णं,* जा॰ टी॰ (पालि बर्मी शब्दकोश 4.1.582).

इन्दु पु॰, [इन्दु], चन्द्र, चन्द्रमा – **न्दु** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दु चन्दो च नक्खत्तराजा सोमो निसाकरो,* अभि॰ प॰ 51; *चन्दो नक्खत्तराजा च इन्दु सोमो निसाकरो,* सद्द॰ 2.380.

इन्दूपम त्रि॰, ब॰ स॰ [इन्दूपम], चन्द्रमा के समान, चन्द्रमा जैसा – **मो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दूपमो देवपुरे रमामहं,* वि॰ व॰ 1045.

इन्दोभास पु॰, व्य॰ सं॰, एक स्थविर (थेर) का नाम, स॰ प॰ के अन्त॰ – *तस्स सिस्सो बोधोदधिगामवासिनो इन्दोभासकल्याणचक्क विमलाचारथेरा सहस्सोरोधगामवासिनो ...,* सा॰ वं॰ 148(ना॰).

इन्द्रिय नपुं॰, [इन्द्रिय], **शा॰ अ॰,** इन्द्र से सम्बद्ध बल, शक्ति या सामर्थ्य, पूर्ण आधिपत्य रखने की शक्ति या

क्षमता, नियन्त्रक धर्म, **ला॰ अ॰ क.** ज्ञान की प्रक्रिया में मन को आलम्बन तक पहुंचने वाले चक्षु, स्रोत, घ्राण, जिह्वा, काय एवं मन नामक छ आन्तरिक द्वार या ज्ञानेन्द्रियां – **यानि**[1] प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पञ्चिमानि, आवुसो, इन्द्रियानि नानाविसयानि नानागोचरानि, न अञ्ञमञ्ञस्स गोचरविसयं पच्चनुभोन्ति, सेय्यथिदं, चक्खुन्द्रियं सोतिन्द्रियं, घानिन्द्रियं, जिव्हिन्द्रियं, कायिन्द्रियं,* म॰ नि॰ 1.374-375; *अपि च आधिपच्चसङ्खातेन इस्सरियट्ठेनापि एतानि इन्द्रियानि,* विसुद्धि॰ 2.119; *तेन च सिट्ठानीति इन्द्रलिङ्गट्ठेन इन्दसिट्ठट्ठेन च इन्द्रियानि,* तदे॰; *पाकटवसेन चेत्थ पञ्चिन्द्रियानि वुत्तानि, लक्खणतो पन छट्ठम्पि वुत्तंयेव होतीति वेदितब्बं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.69; *बावीसतिन्द्रियाणि – चक्खुन्द्रियं सोतिन्द्रियं घानिन्द्रियं जिव्हिन्द्रियं कायिन्द्रियं इत्थिन्द्रियं पुरिसिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं मनिन्द्रियं सुखिन्द्रियं दुक्खिन्द्रियं सोमनस्सिन्द्रियं दोमनस्सिन्द्रियं उपेक्खिन्द्रियं सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं अञ्ञिन्द्रियं अञ्ञाताविन्द्रियं,* अभि॰ ध॰ स॰ 51; विभ॰ 137; 141; – **यानि**[2] द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इन्द्रियानि परिञ्ञाय, दुक्खस्सन्तं करिस्सतीति,* विसुद्धि॰ 2.120; **ला॰ अ॰ ख.** रूपधर्मों में स्त्रीत्व और पुरुषत्व की विशिष्ट अवस्था को निर्धारित कराने वाले स्त्रीत्व तथा पुरुषत्व नाम के दो प्रकार के भावरूप तथा सभी रूपधर्मों की एक प्रकार की प्राणाधायक शक्ति जीवितेन्द्रिय – **यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं इत्थिया इत्थिलिङ्गं इत्थिनिमित्तं इत्थिकुत्तं इत्थाकप्पो इत्थत्तं इत्थिभावो – इदं वुच्चति "इत्थिन्द्रियं",* विभ॰ 138; *तत्थ कतमं पुरिसिन्द्रियं ? यं पुरिसस्स पुरिसलिङ्गं पुरिसनिमित्तं पुरिसकुत्तं पुरिसाकप्पो पुरिसत्तं पुरिसभावो – इदं वुच्चति पुरिसिन्द्रियं,* तदे॰; *तत्थ कतमं जीवितिन्द्रियं ? जीवितिन्द्रियं दुविधेन–अत्थि रूपजीवितिन्द्रियं, अत्थि अरूपजीवितिन्द्रियं,* तदे॰; **ला॰ अ॰ ग.** वेदनाओं के दुःख, सुख, दोमनस्स, सोमनस्स एवं उपेक्षा नामक पांच प्रभेद के रूप में पांच वेदना-इन्द्रियां – *तत्थ कतमं सुखिन्द्रियं ? यं कायिकं सातं कायिकं सुखं कायसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं कायसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं वुच्चति "सुखिन्द्रियं",* विभ॰ 139; *तत्थ कतमं सोमनस्सिन्द्रियं ? यं चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं वुच्चति "सोमनस्सिन्द्रियं",* विभ॰ 139; *तत्थ कतमं दोमनस्सिन्द्रियं ? यं चेतसिकं असातं चेतसिकं दुक्खं चेतोसम्फस्सजं असातं दुक्खं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा असाता दुक्खा वेदना – इदं वुच्चति "दोमनस्सिन्द्रियं",* विभ॰ 139; *तत्थ कतमं उपेक्खिन्द्रियं ? यं चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना–इदं वुच्चति "उपेक्खिन्द्रियं",* विभ॰ 139; **ला॰ अ॰ घ.** आध्यात्मिक अभ्युत्थान के मार्ग में चित्त की विशुद्धि में सहायक, श्रद्धा, स्मृति, वीर्य, समाधि एवं प्रज्ञा नामक पांच प्रकार के नैतिक बल – **यानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पञ्चिन्द्रियानि – सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं,* अभि॰ ध॰ स॰ 52; – **यं**, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ *तत्थ कतमं सद्धिन्द्रियं ? या सद्धा सद्दहना ओकप्पना अभिप्पसादो सद्धा सद्धिन्द्रियं सद्धाबलं – इदं वुच्चति "सद्धिन्द्रियं",* विभ॰ 139; *तत्थ कतमं वीरियिन्द्रियं ? यो चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो ठिति असिथिलपरक्कमता ... वीरियिन्द्रियं वीरियबलं – इदं वुच्चति "वीरियिन्द्रियं",* विभ॰ 139; *तत्थ कतमं सतिन्द्रियं ? या सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति – इदं वुच्चति "सतिन्द्रियं",* विभ॰ 140; *तत्थ कतमं समाधिन्द्रियं ? या चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो ... समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि–इदं वुच्चति "समाधिन्द्रियं",* तदे॰; **ला॰ अ॰ ङ.** आन्तरिक धर्मों के यथार्थरूप का ज्ञान कराने में आधिपत्य से युक्त आज्ञा, आज्ञातावी एवं अनाज्ञातं आज्ञास्यामि नामक तीन ज्ञानफल – *तत्थ कतमं अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं ? या तेसं धम्मानं अनञ्ञातानं अदिट्ठानं अप्पत्तानं अविदितानं असच्छिकतानं सच्छिकिरियाय पञ्ञा पजानना ... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं वुच्चति "अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं",* विभ॰ 140; *तत्थ कतमं अञ्ञिन्द्रियं ? या तेसं धम्मानं ञातानं दिट्ठानं पत्तानं विदितानं ... पञ्ञा पजानना ... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं–इदं वुच्चति "अञ्ञिन्द्रियं",* तदे॰; *तत्थ कतमं अञ्ञाताविन्द्रियं ? या तेसं धम्मानं अञ्ञातावीनं दिट्ठानं पत्तानं विदितानं ... पञ्ञा पजानना ... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं इदं वुच्चति "अञ्ञाताविन्द्रियं",* तदे॰; – **नं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *किच्चाति किं इन्द्रियानं किच्चन्ति,*

विसुद्धि॰ 2.120; *इन्द्रियानञ्च समतं पटिविज्झा,* वि॰ व॰ 3.269(बर्मी); अ॰ 3.331(बर्मी); *तं सद्धादीनं इन्द्रियानं समतं समभावं,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 3.369(बर्मी); – **सु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इन्द्रियेसु गुत्तद्वारोति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.149; अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.85; *इन्द्रियेसु असंवुतं,* ध॰ प॰ 7; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अञ्ञाताविं॰, अञ्ञि॰, अनञ्ञातञ्ञस्सामितिं॰, अनि॰, अनुद्धतिं॰, अपरिपक्कि॰, अरूपजीवितिं॰, अविकलि॰, असंयतिं॰, असंवुतिं॰, अहीनि॰, आहारि॰, इत्थि॰, उपहतिं॰, उपेक्खि॰, एकि॰, एकेकि॰, किरियि॰, किलन्ति॰, कुपितिं॰, गुत्ति॰, गोपितिं॰, घाट्टितिं॰, दरिय॰, जितिं॰, जिव्हि॰, जीवितिं॰, जीवि॰, ञाणि॰, तिक्खि॰, तुट्ठि॰, दुक्खि॰, दुट्ठि॰, दोमनस्सि॰, द्वारि॰, दवि॰, द्वि॰, निरि॰, पञ्चि॰, पञ्ञि॰, पमुदितिं॰, परिपक्कि॰, परिपाकि॰, गति॰, परिपुण्णि॰, परिमारितिं॰, पाकतिं॰, पिहितिं॰, पीणितिं॰, पीनि॰, पुथुनानि॰, पुरिसि॰, फीतिं॰, भावितिं॰, मज्झि॰, मनि॰, मदि॰, यतिं॰, रक्खितिं॰, रूप–जीवितिं॰, रूपि॰, लोकियि॰, लोकुत्तरि॰, वत्ति॰, विकलि॰, विजितिं॰, विदितिं॰, पस्सनि॰, विपाकि॰, विप्पसन्नमुखि॰, विरियि॰, विवटि॰, वसट्ठि॰, वसुद्धि॰, व्यथितिं॰, संवुतिं॰, सतिं॰, सद्धि॰, सन्तरभावि॰, सन्ति॰, भूतिं॰, समद्धि॰, समाहितिं॰, सुखि॰, सुसमाहितिं॰, सोतिं॰, सोमनस्सि॰, हदयि॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

इन्द्रिय-असंवर पु॰, तत्पु॰ स॰, इन्द्रियों की असुरक्षा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण का अभाव – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियअसंवरो परिपूरो तीणि दुच्चरितानि, परिपूरेति,* अ॰ नि॰ 3(2).94.

इन्द्रियकथा[1] स्त्री॰, [इन्द्रियकथा], दस प्रकार के उपदेशों में से एक, इन्द्रियों से सम्बद्ध उपदेश – **थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दस कथावत्थूनि कथेति, सेय्यथिदं अप्पिच्छकथं सन्तुट्ठिकथं ... इन्द्रियकथं ... कथेति,* महानि॰ 356; – **जीविन्द्रियकथा** स्त्री॰, कथा॰ की एक कथा का शीर्षक, कथा॰ 323-326.

इन्द्रियकथा[2] स्त्री॰, व्य॰ सं॰ [इन्द्रियकथा], 1. पटि॰ म॰ के एक स्थल का शीर्षक, पटि॰ म॰ 191-220; – **वण्णना** स्त्री॰, पटि॰ म॰ की अट्ठ॰ के एक व्याख्या-स्थल का शीर्षक, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 113-135; 2. कथा॰ के एक स्थल का शीर्षक, कथा॰ 475-476; – **वण्णना** स्त्री॰, [वर्णना], कथा॰ अट्ठ॰ की व्याख्या का शीर्षक – *इन्द्रियकथावण्णना,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 269.

इन्द्रियकिच्च नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रियकृत्य], इन्द्रियों का कार्य – **च्चं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अत्तनो अत्तनो इन्द्रियकिच्चं साधेन्ति,* विभ॰ मू॰ टी॰ 80; विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.175.

इन्द्रियकुसल त्रि॰, तत्पु॰ स॰, इन्द्रियों के विषय में प्रवीण, पांच इन्द्रियों के विषय में दक्ष या कुशल – **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इद्धिपादकुसला इन्द्रियकुसला, बलकुसला ... निब्बानकुसला,* महानि॰ 49.

इन्द्रियक्खन्ध पु॰, द्व॰ स॰, इन्द्रिय और स्कन्ध – **न्धा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यो च पटिच्चुप्पादो इन्द्रियखन्धा च धातु आयतना ...,* नेत्ति॰ 5; *तत्थ इन्द्रियक्खन्धाति इन्द्रियानि च खन्धा चाति इन्द्रियक्खन्धा,* नेत्ति॰ टी॰ 179.

इन्द्रियगुत्त त्रि॰, [इन्द्रियगुप्त], इन्द्रियों के विषय में सतर्क, इन्द्रियों की रक्षा करने वाला, इन्द्रियों का नियन्त्रण करने वाला – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियगुत्तो निपको सतीमा,* स॰ नि॰ 1(1).181.

इन्द्रियगुत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रियगुप्ति], इन्द्रियों के ऊपर चौकसी, इन्द्रियों पर सतर्कता, इन्द्रियों की सुरक्षा या नियन्त्रण – **त्ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियगुत्ति सन्तुट्ठि, पातिमोक्खे च संवरो,* ध॰ प॰ 375; *इन्द्रियगुत्तीति इन्द्रियसंवरो,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.346; – **यं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकच्चे पब्बाजेत्वा सीलसंवरे इन्द्रियगुत्तियं ... च यथारहं पतिट्ठापेसि,* चरिया॰ अट्ठ॰ 211.

इन्द्रियगोचरसुत्त नपुं॰, व्य॰ सं॰, ध॰ स॰ अट्ठ॰ में उल्लिखित एक सुत्त – **त्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं पन इन्द्रियगोचरसुत्ते ... वुत्तं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 342.

इन्द्रियग्गय्ह त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रियग्राह्य], चक्षु आदि इन्द्रियों के द्वारा ग्राह्य या ग्रहण करने योग्य, प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा ज्ञेय – **य्हं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पच्चक्खं इन्द्रियग्गय्हं अप्पच्चक्खं मनिन्द्रियं,* अभि॰ प॰ 716.

इन्द्रियचरिया स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रियचर्या], इन्द्रियों की सक्रियता या कार्यपरायणता – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सहजवनाय इन्द्रियचरियाय पटिपन्नस्स,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.128.

इन्द्रियजातक नपुं॰, व्य॰ सं॰, जा॰ अट्ठ॰ के एक कथानक का शीर्षक, जा॰ अट्ठ॰ 3.407.

इन्द्रियट्ठ पु॰, [इन्द्रियार्थ], इन्द्रिय का अर्थ या अभिप्राय, आधिपत्य का अर्थ, अपने क्षेत्र में पूर्ण ऐश्वर्ययुक्त होने का तात्पर्य – **ट्ठो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्दलिङ्गट्ठो इन्द्रियट्ठो, इन्ददेसितट्ठो इन्द्रियट्ठो, इन्ददिट्ठट्ठो, इन्द्रियट्ठो,* विसुद्धि॰ 2.118; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियट्ठतो बलस्स*

विसिट्ठत्ता इध इन्द्रियतो बलं पठमं वुत्तन्ति वेदितब्बं, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.197.

इन्द्रियट्ठक नपुं॰, [इन्द्रियाष्टक], आठ इन्द्रियां, इन्द्रियाष्टक, आठ के समुच्चय में अन्तर्भूत इन्द्रियां – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियट्ठके उपेक्खिन्द्रियं होतीति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 201.

इन्द्रियत्ता/इन्द्रियत्त स्त्री॰/नपुं॰, इन्द्रिय का भाव॰, आधिपत्य, ऐश्वर्यत्व, इन्द्रिय होने की स्थिति – **त्ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इध रूपजीवितिन्द्रियत्ता, यो तेसं रूपीनं धम्मानन्ति अयमेव विसेसो,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 355.

इन्द्रियदम पु॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रियदम], इन्द्रियों का दमन, इन्द्रियों को वश में रखना, इन्द्रियसंयम, इन्द्रिय-नियन्त्रण – **मेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दमसच्चेनाति इन्द्रियदमेन चेव परमत्थसच्चपक्खिकेन वचीसच्चेन च अपेतो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.311; *इन्द्रियदमेन उपोसथकम्मेन वा,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.133; *इन्द्रियदमेन चेव वचीसच्चेन च अपेतो अनुपगतो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.44.

इन्द्रियदमन नपुं॰, [इन्द्रियदमन], उपरिवत् – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दमोति इन्द्रियदमनं,* जा॰ अट्ठ॰ 2.45; – **ना** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ वा संयमाति इन्द्रियदमना,* जा॰ अट्ठ॰ 6.140.

इन्द्रियदेसना स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, इन्द्रियों के विषय में उपदेश – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *खन्धायतनदेसना सङ्खेपदेसना, इन्द्रियदेसना वित्थारदेसना,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.167.

इन्द्रियधम्म पु॰, कर्म॰ स॰, [इन्द्रियधर्म], एक धर्म के रूप में इन्द्रिय, इन्द्रियों का धर्म – **मा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ते एव अट्ठ इन्द्रियधम्मा,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.308; *सोळसिन्द्रियधम्मा च,* अभि॰ ध॰ स॰ 52.

इन्द्रियधीर त्रि॰, [इन्द्रियधीर], पांच इन्द्रियों के विषय में निपुण या कुशल – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इन्द्रियधीरा बलधीरा ... निब्बानधीरा,* महानि॰ 32.

इन्द्रियनानत्त/इन्द्रियनानत्तता नपुं॰/स्त्री॰, [इन्द्रियनानात्व], इन्द्रियों की भिन्नता (विविध व्यक्तियों में), इन्द्रियों की विविधता – **त्तं** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियवेमत्तं वदामीति इन्द्रियनानत्तं वदामि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.106; – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एत्थ हि इन्द्रियनानत्तता कारणं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.106.

इन्द्रियनियम पु॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रियनियम], इन्द्रिय का नियम, आधिपत्य का नियम – **मेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विपस्सनानियमेन इन्द्रियनियमेन च वुत्ता तयो पुग्गला,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.149.

इन्द्रियन्तर नपुं॰, [इन्द्रियान्तर], इन्द्रियों का विशिष्ट आन्तरिक धर्म, इन्द्रियों की विशिष्टता – **रं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धात्वन्तरं इन्द्रियन्तरं बलबोज्झङ्गकम्मविपाकन्तरं ... उप्पज्जति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 13.

इन्द्रियपकति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रियप्रकृति], इन्द्रियों की स्वाभाविक अवस्था, इन्द्रियों की प्रकृति – **ति** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियपकति हेसा यदिदं इट्ठानिट्ठविसयसमायोगो,* चरिया॰ अट्ठ॰ 271.

इन्द्रियपच्चय पु॰, [इन्द्रियप्रत्यय], चौबीस प्रकार के प्रत्ययों में से सोलहवां प्रत्यय, इन्द्रियप्रत्यय, स्त्री-इन्द्रिय एवं पुरुषेन्द्रिय को छोड़कर चक्षु-विज्ञान आदि की उत्पत्ति में अधिपति या उपकारक अन्य बीस इन्द्रियां, अधिपति-सहित चक्षु आदि पांच इन्द्रियां, जीवितिन्द्रिय तथा रूपरहित इन्द्रियां – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अधिपतियट्ठेन उपकारका इत्थिन्द्रियपुरिसिन्द्रियवज्जा वीसति इन्द्रिया इन्द्रियपच्चयो,* मो॰ वि॰ टी॰ 345; *अधिपतियट्ठेन उपकारका इत्थिन्द्रियपुरिसिन्द्रियवज्जा वीसति इन्द्रिया इन्द्रियपच्चयो,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 349; *सहजातानमिच्चेव–मिस्सरट्ठेन पच्चया इन्द्रियप्पच्चयोतेव, तिविधा समुदाहटो,* ना॰ रू॰ प॰ 842; *तेसु तेसु किच्चेसु पच्चयुप्पन्नधम्मेहि अत्तानं अनुवत्तापनसङ्खाताधिपतियट्ठेन पच्चयो इन्द्रियपच्चयो,* अभि॰ ध॰ वि॰ टी॰ 213; *पञ्च पसादा पञ्चन्नं विञ्ञाणानं, रूपजीवितिन्द्रियं उपादिन्नरूपानं, अरूपिनो इन्द्रिया सहजातानं नामरूपानन्ति च तिविधो होति इन्द्रियपच्चयो,* अभि॰ ध॰ स॰ 59; – **येन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरूपिनो इन्द्रिया सम्पयुत्तकानं धम्मानं तंसमुट्ठानानञ्च रूपानं इन्द्रियपच्चयेन पच्चयो"ति एवं निद्दिट्ठो,* मो॰ वि॰ टी॰ 345; – **ये** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... अयं इन्द्रियपच्चये नयो,* मो॰ वि॰ टी॰ 345; – **भाव पु॰**, इन्द्रिय-प्रत्यय नामक प्रत्यय होने की स्थिति, चक्षु-विज्ञान आदि का इन्द्रिय-प्रत्यय होना – **वेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियपच्चयभावेन साधेतब्बं अत्तनो तिक्खमन्दादिभावेन ...,* विम॰ अट्ठ॰ 111.

इन्द्रियपच्चयालाभ पु॰, तत्पु॰ स॰, इन्द्रियप्रत्यय का लाभ न होना – **भो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियपच्चयालाभो जीवितिन्द्रियं सन्धाय वुत्तो,* प॰ प॰ मू॰ टी॰ 224.

इन्द्रियपञ्चकवसेन तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰, पांच इन्द्रियों के समुच्चय के माध्यम से – *इन्द्रियसङ्गहितत्ता इन्द्रियपञ्चकवसेन,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.72.

इन्द्रियपञ्ञत्ति स्त्री., तत्पु. स. [इन्द्रियप्रज्ञप्ति], इन्द्रियों का बाह्यरूप में या वचनों द्वारा प्रकाशन, इन्द्रियों की संकल्पना या प्रज्ञप्ति, पु. प. में परिगणित छ प्रकार की प्रज्ञप्तियों में से एक – **त्ति** प्र. वि., ए. व. – *छ पञ्ञत्तियो–खन्धपञ्ञत्ति, आयतनपञ्ञत्ति, धातुपञ्ञत्ति, सच्चपञ्ञत्ति इन्द्रियपञ्ञत्ति, पुग्गलपञ्ञत्तीति*, पु. प. 103; कथा. 265; *कित्तावता इन्द्रियानं इन्द्रियपञ्ञत्ति ? यावता बावीसतिन्द्रियानि ... एत्तावता इन्द्रियानं इन्द्रियपञ्ञत्ति*, पु. प. 104.

इन्द्रियपरिपाक पु., [इन्द्रियपरिपाक], **शा. अ.**, इन्द्रियों की परिपक्वता, **ला. अ. 1.** इन्द्रियों की पूर्णता, इन्द्रियों की तीक्ष्णता, **ला. अ. 2.** जरा अवस्था के कारण इन्द्रियों का अपक्षय या इन्द्रियों का विषयों के ग्रहण में शिथिल हो जाना – **को** प्र. वि., ए. व. – *आयुनो संहानि इन्द्रियानं परिपाकोति इमेहि पन पदेहि कालातिक्कमेयेव अभिब्यत्तताय आयुक्खयचक्खादिइन्द्रियपरिपाकसञ्ञिताय पकतिया दीपिता*, म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).224; ... *इन्द्रियानं परिपाकोति इमेहि पन पदेहि ... आयुक्खयचक्खादिइन्द्रियपरिपाकसञ्ञिताय पकतिया दीपिता*, ध. स. अट्ठ. 360; – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *भगवा पनस्स इन्द्रियपरिपाकं आगमयमानो न ब्याकासि*, सु. नि. अट्ठ. 2.294; *इन्द्रियपरिपाकञ्च ञत्वा ... आसयानुसयचरितानि ओलोकेन्ति*, पटि. म. अट्ठ. 1.48.

इन्द्रियपरोपरिय नपुं., [इन्द्रियपरोवर्य], इन्द्रियों की उच्च तथा निम्न अवस्था – **ञाण** नपुं., तत्पु. स. [इन्द्रियपरोवर्यज्ञान], (दूसरों की) इन्द्रियों के तीक्ष्ण या मृदु होने का ज्ञान, चक्षु आदि इन्द्रियों की विषयों को ग्रहण करने वाली क्षमता की तीक्ष्णता एवं मन्दता का ज्ञान – **णं** प्र. वि., ए. व. – *पुरिसपुग्गलपरोपरियञाणं वुच्चति पुरिसपुग्गलानं तिक्खमुदुवसेन इन्द्रियपरोपरियञाणं*, अ. नि. अट्ठ. 3.116.

इन्द्रियपरोपरियत्त नपुं., इन्द्रियपरोपरिय का भाव., तत्पु. स. [इन्द्रियपरोवर्यत्व], इन्द्रियों की उच्च या निम्न अवस्था, इन्द्रियों की तीक्ष्णता अथवा मृदुता, दूसरे प्राणियों के आशयों, अनुशयों, अधिमुक्तियों की प्रकृति तथा इन्द्रियों की तीक्ष्णता एवं मृदुता – **त्तं** द्वि. वि., ए. व. – *तथागतो परसत्तानं परपुग्गलानं इन्द्रियपरोपरियत्तं यथाभूतं पजानाति*, म. नि. 1.102; पटि. म. 350; *इन्द्रियपरोपरियत्तं यथाभूतं ञाणं तथागतबलं सावकसाधारणन्ति?*, कथा. 193; *तत्थ कतमं तथागतस्स परसत्तानं परपुग्गलानं इन्द्रियपरोपरियत्तं यथाभूतं ञाणं ?* विभ. 389; – **त्ते** सप्त. वि., ए. व. – *इन्द्रियपरोपरियत्ते ञाणं*, पटि. म. 4; – **ञाण** नपुं., [ज्ञान], इन्द्रियों के तीक्ष्ण होने एवं मृदु होने का ज्ञान, इन्द्रियों की तीक्ष्णता या मृदुता का ज्ञान – **णं** प्र. वि., ए. व. – *इन्द्रियपरोपरियत्तस्स ञाणं इन्द्रियपरोपरियत्तञाणं, इन्द्रियानं उत्तमानुत्तमभावञाणन्ति अत्थो, ... वरानि च अवरियानि च वरोवरियानि, वरोवरियानं भावो वरोवरियत्तन्ति योजेतब्बं, अवरियानीति च न उत्तमानीति अत्थो ...*, पटि. म. अट्ठ. 1.48; चूळनि. अट्ठ. 46; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *"अहं एसो विय असाधारणस्स इन्द्रियपरोपरियत्तञाणस्स पटिवेधाय उपनिस्सयभूता दस पारमियो न पूरेसिं*, जा. अट्ठ. 1.87; – **ञाणनिद्देस** पु., तत्पु. स., इन्द्रियों की तीक्ष्णता एवं मन्दता के ज्ञान का व्याख्यान – **से** सप्त. वि., ए. व. – *इन्द्रियपरोपरियत्तञाणनिद्देसे तथागतस्साति वचने ...*, पटि. म. अट्ठ. 2.1; – **ञाणनिद्देसवण्णना** स्त्री., पटि. म. अट्ठ. के एक खण्ड का शीर्षक, पटि. म. अट्ठ. 2.1-4; – **वेमत्तताञाण** नपुं., इन्द्रियों की तीक्ष्णता एवं मन्दता की विविधता का ज्ञान, तथागत का एक बल – **णं** प्र. वि., ए. व. – *इदं वुच्चति परसत्तानं परपुग्गलानं इन्द्रियपरोपरियत्तवेमत्तताञाणं सत्तमं तथागतबलं*, नेत्ति. 82; *इन्द्रियपरोपरियत्तवेमत्तताञाणन्ति परभावो च अपरभावो च परोपरियत्तं ... तस्स वेमत्तता परोपरियत्तवेमत्तता, सद्धादीनं इन्द्रियानं परोपरियवेमत्ततायञाणं इन्द्रियपरोपरियत्तवे–मत्तताञाणन्ति पदविभागो वेदितब्बो*, नेत्ति. अट्ठ. 292.

इन्द्रियपरोपरियत्तसुत्त नपुं., स. नि. के एक सुत्त का शीर्षक, स. नि. 3(1).376.

इन्द्रियपरोपरियत्ति स्त्री., तत्पु. स., इन्द्रियों की (विषयग्रहण में) तीक्ष्णता अथवा मन्दता, इन्द्रियों की विविध प्रकार की क्षमताएं – **त्ति** प्र. वि., ए. व. – *अत्थि सावकस्स फलपरोपरियत्ति इन्द्रियपरोपरियत्ति पुग्गलपरोपरियत्तीति*, कथा. 264; – **ञाण** नपुं., **शा. अ.**, इन्द्रियों की तीक्ष्णता एवं मन्दता का ज्ञान, **ला. अ.**, बुद्ध-चक्षु, बुद्ध का विशेष ज्ञान, जिससे वे प्राणियों की इन्द्रियों की तीक्ष्णता आदि को जान लेते हैं – **णं** प्र. वि., ए. व. – *बुद्धचक्खु नाम आसयानुसयञाणञ्चेव इन्द्रियपरोपरियत्तञाणञ्च*, बु. वं. अट्ठ. 42.

इन्द्रियपाटव नपुं., तत्पु. स., इन्द्रियों की पटुता या सामर्थ्य – **वेन** तृ. वि., ए. व. – *तिक्खपञ्ञस्स*

इन्द्रियपाटवेन संखित्तरुचिभावतो, विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.405.

इन्द्रियपुच्छा स्त्री॰, [इन्द्रियपृच्छा], इन्द्रियों के बारे में प्रश्न या पूछताछ – **च्छा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तिस्सो पुच्छा–इन्द्रियपुच्छा, बलपुच्छा, बोज्झङ्गपुच्छा,* महानि॰ 251.

इन्द्रियप्पत्त त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रियप्राप्त], इन्द्रियों द्वारा प्राप्त, इन्द्रियों की पकड़ में आने वाला – **त्तानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *समाधिवीरियानि पन इन्द्रियप्पत्तानि न होन्ति,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 337.

इन्द्रियबद्ध त्रि॰, [इन्द्रियबद्ध], **शा॰ अ॰,** इन्द्रियों से बंधा हुआ, इन्द्रियों के साथ जुड़ा हुआ, **ला॰ अ॰,** अनुभवगम्य, इन्द्रिय–ग्राह्य, संवेदनशील, सजीव – **द्धं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *इन्द्रियबद्धञ्ञेव दुक्खन्ति,* कथा॰ 441-442; *तत्थ अविञ्ञाणकं सुवण्णरजतादि, सविञ्ञाणकं इन्द्रियबद्धं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.207; *यं वा पनञ्ञम्पि एवरूपं इन्द्रियबद्धं,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 141; – **द्धा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ततो बहिभूता इन्द्रियबद्धा वा अनिन्द्रियबद्धा वा रूपारूपपञ्ञत्तियो बहिद्धा नाम,* मो॰ वि॰ टी॰ 93; – **कथा** स्त्री॰, दुख "इन्द्रियों के अनुभवों का विषय है, सभी संस्कार नहीं" इस प्रकार का कथन, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियबद्धमेव दुक्खं, न सब्बे सङ्खाराति पवत्ता इन्द्रियबद्धकथा,* मो॰ वि॰ टी॰ 291; – **धम्म** पु॰, इन्द्रियग्राह्य धर्म, संवेदनशील धर्म, सजीव धर्म – **म्मा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तं अत्तानं अधिकिच्च उद्दिस्स पवत्ता अज्झत्ता, इन्द्रियबद्धधम्मा,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.99-100; – **रूप** नपुं॰, इन्द्रियों के साथ जुड़ा हुआ रूप, संवेदनशील या सजीव रूप – **पं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ सब्बानि चित्तचेतसिकानि इन्द्रियबद्धरूपं तिधा होन्ति,* मो॰ वि॰ टी॰ 93; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियबद्धरूपस्स हि मतरूपतो कम्मजस्स, तदनुबन्धभूतस्स च उतुसमुट्ठानादितो जीवितिन्द्रियकतो विसेसो,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.90.

इन्द्रियबल पु॰, द्व॰ स॰ [इन्द्रियबल], इन्द्रिय और बल – **वसेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, क्रि॰ वि॰, इन्द्रियों और बलों के आधार पर – *एको द्वेधाति सद्धा इन्द्रियबलवसेन द्वेधा ठिता,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.208; वि॰ वि॰ वि॰ के संस्करण में इन्द्रियबलवसेन के रूप में अप॰.

इन्द्रियबलबोज्झङ्गमग्गङ्गवसेन क्रि॰ वि॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰, इन्द्रियों, बलों, बोधि के अङ्गों और मार्ग के अंगों के आधार पर – *तत्थ समाधि एको इन्द्रियबलबोज्झङ्गमग्गङ्गवसेन चतुधा ठितो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.208.

इन्द्रियबलवेमत्तञाण नपुं॰, तत्पु॰ स॰, (भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में) इन्द्रियों एवं बलों की मात्रा की विविधता का ज्ञान – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स आयस्मतो नत्थि इन्द्रियबलवेमत्तञाणं,* पेटको॰ 223.

इन्द्रियभावना स्त्री॰, चक्षु आदि तथा श्रद्धा आदि इन्द्रियों का अर्जन एवं विकास, आधिपत्य अथवा ऐश्वर्य का संवर्धन, इन्द्रियत्व का विकास – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियस्स विनये अनुत्तरा इन्द्रियभावना होती'ति,* म॰ नि॰ 3.361; *अयं वुच्चतानन्द, अरियस्स विनये अनुत्तरा इन्द्रियभावना चक्खुविञ्ञेय्येसु रूपेसु,* म॰ नि॰ 3.362; *सा मे भविस्सति इन्द्रियभावना बलभावना बोज्झङ्गभावना,* महाव॰ 385; – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो पन अत्थङ्गमो इन्द्रियभावनं अननुयुत्तस्स अप्पटिलद्धा पटिलाभत्थङ्गमो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.123; *"एवं खो, भो गोतम, देसेति पारासिवियो ब्राह्मणो सावकानं इन्द्रियभावन"न्ति,* म॰ नि॰ 3.361; – **कथा** स्त्री॰, इन्द्रियों की भावना अथवा विकास के विषय में कथन – **थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हन्दाहं इमिस्सं परिसति भिक्खुसङ्घस्स इन्द्रियभावनाकथं कारेमी'ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.264; – **नानुयुत्त** त्रि॰, इन्द्रियों की भावना या संवर्धन में लगा हुआ, इन्द्रियों का अर्जन एवं परिष्करण कर चुका (साधक) – **स्स** पु॰, च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयञ्हि विमोक्खकथा इन्द्रियभावनानुयुत्तस्स विमोक्खसब्भावतो इन्द्रियकथानन्तरं कथिता,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.136.

इन्द्रियभावनासुत्त नपुं॰, व्य॰ सं॰, म॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, म॰ नि॰ 3.361-365.

इन्द्रियभूमि स्त्री॰, [इन्द्रियभूमि], विमुक्ति के परिपाचन में सहायक श्रद्धादि इन्द्रियों के सङ्गमस्थानभूत शमथ, विपश्यना, तीन कुशलमूल तथा चार स्मृति-प्रस्थान नामक नौ धर्म – **मि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियभूमीति सद्धादीनं विमुत्तिपरिपाचनिन्द्रियानं समोसरणट्ठानत्ता वुत्तं,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 151; *समथो च विपस्सना च, कुसलानि च यानि तीणि मूलानि, चतुरो सतिपट्ठाना इन्द्रियभूमी नव पदानि,* नेत्ति॰ 3; *इन्द्रियभूमि नवहि पदेहि निद्दिसितब्बा,* नेत्ति॰ 164.

इन्द्रियभेद पु॰, इन्द्रियों का प्रभेद, (भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में) आलम्बनों के ग्रहण की क्षमता में भेद – **देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथा इन्द्रियभेदेन तिक्खिन्द्रिया मज्झिमिन्द्रिया मुदिन्द्रिया,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.80.

इन्द्रियमुदुता स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, इन्द्रियों की मन्दता या शिथिलता – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न च इन्द्रियमुदुता अभब्बताकरो धम्मोति,* प॰ प॰ मू॰ टी॰ 104.

इन्द्रियमूलक त्रि॰, इन्द्रियों के द्वारा उत्पादित, इन्द्रियों पर आधारित – **के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियमूलके पुरेजाते एकन्ति ... अब्याकतं,* प॰ प॰ अट्ठ॰ 455.

इन्द्रिययमक नपुं॰, व्य॰ सं॰, इन्द्रियों का विवेचन करने वाले यम॰ के दसवें खण्डविशेष का शीर्षक, यम॰ 3.102-486; – **कं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तं मूलयमकं ... इन्द्रिययमकन्ति दसविधेन विभत्तं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 9-10.

इन्द्रिययोग पु॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रिययोग], (चित्त के साथ) इन्द्रियों का सम्बन्ध, इन्द्रियों के साथ सम्पर्क, इन्द्रियों के साथ संयोग – **गो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं इन्द्रिययोगोपि वेदितब्बो विभाविना,* अभि॰ अव॰ 119.

इन्द्रियरूप नपुं॰, रूप-नामक परमार्थ धर्म में अन्तर्भूत पांच प्रकार के प्रसाद रूप (चक्षु, स्रोत, घ्राण, जिह्वा, काय), स्त्री-इन्द्रिय, पुरुष-इन्द्रिय तथा जीवितिन्द्रिय नामक आठ धर्म, रूप में अन्तर्भूत आठ इन्द्रियां – **पं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पसादभावजीवितसङ्खातं अट्ठविधम्पि इन्द्रियरूपं नाम,* अभि॰ ध॰ स॰ 43; *अट्ठविधम्पि इन्द्रियरूपं पञ्चविञ्ञाणेसु लिङ्गादीसु सहजरूपपरिपालने च आधिपच्चयोगतो,* अभि॰ ध॰ स॰ 181; *चक्खादयो पञ्च पसादा, भावद्वयं, जीवितिन्द्रियन्ति अट्ठविधम्पि इन्द्रियरूपं नाम, इतरं अनिन्द्रियं,* मो॰ वि॰ टी॰ 69.

इन्द्रियलोक पु॰, [इन्द्रियलोक], **शा॰ अ॰**, इन्द्रियों का लोक, **ला॰ अ॰, क.** तीन प्रकार के लोकों में एक, विमुक्ति के परिपाक में सहायक श्रद्धा आदि इन्द्रियों से युक्त प्राणियों का लोक, **ख.** अरूपावचरभूमि के प्राणियों का लोक – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लोको तिविधो किलेसलोको भवलोको इन्द्रियलोको,* नेत्ति॰ 11; *तत्थ ये विमुत्तिपरिपाचकेहि इन्द्रियेहि समन्नागता सत्ता, सो इन्द्रियलोकोति वेदितब्बं,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 194; *सद्धिन्द्रियादिधम्मट्ठो आधिपच्चट्ठयोगवसेन इन्द्रियभूतो हुत्वा सद्धिन्द्रियादिपत्तनट्ठेन लोको चाति इन्द्रियलोको,* नेत्तिवि॰ 246; – **केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किं पनेत्थ अरियानम्पि इन्द्रियलोकेन सङ्गहो होतीति आह परियापन्नधम्मवसेनाति आदि,* नेत्ति॰ टी॰ 46.

इन्द्रियवग्ग पु॰, व्य॰ सं॰ [इन्द्रियवग्ग], अ॰ नि॰ के एक वग्ग का शीर्षक, अ॰ नि॰ 1(2).163-171.

इन्द्रियवरोवरियत्तञाण नपुं॰, (दूसरों की) इन्द्रियों की तीक्ष्ण और मन्द अवस्था या कोटियों का ज्ञान या बोध, इन्द्रियों की उत्तम या अवर कोटियों की अवस्था का ज्ञान – **णं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियवरोवरियत्तञाणन्तिपि पाठो, वरानि च अवरियानि च वरोवरियानि, वरोवरियानं भावो वरोवरियत्तन्ति योजेतब्बं, अवरियानीति च न उत्तमानीति अत्थो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.48.

इन्द्रियववत्थान नपुं॰, तत्पु॰ स॰, छ इन्द्रियों का निर्धारण, इन्द्रियों का विनिश्चय, चक्षु आदि छ इन्द्रियों का व्यवस्थित-भाव या विनिश्चय-भाव – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियववत्थानन्ति चक्खादीनं छन्नं इन्द्रियानं ववत्थितभावो,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 221; – **लक्खण** त्रि॰, ब॰ स॰, वह, जिसका लक्षण इन्द्रियों को व्यवस्थित भाव में लाना हो – **णं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियववत्थानलक्खणं छळायतनं, तं फस्सस्स पदट्ठानं,* नेत्ति॰ 25.

इन्द्रियवस पु॰, [इन्द्रियवश], इन्द्रिय का बल, इन्द्रिय का प्रभाव, इन्द्रिय का अधिकार – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियवसं गतो'ति ञत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 3.409; *किलेसकामवसेन छन्नं इन्द्रियानं वसं गच्छति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.409.

इन्द्रियवसिक त्रि॰, इन्द्रियों के वश या प्रभाव में रहने वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो वयप्पत्तो योब्बनमनुप्पत्तो इन्द्रियवसिको हुत्वा ...,* थेर॰ अट्ठ॰ 1.267.

इन्द्रियविकार पु॰, [इन्द्रियविकार], इन्द्रियों का परिवर्तन, इन्द्रियों का रूपान्तरण, इन्द्रिय-विकृति – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथस्स इन्द्रियविकारं दिस्वा सहायका भिक्खू ... पुच्छिंसु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.290; *सा तस्स इन्द्रियविकारं दिस्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 7.154; *कस्सिन्द्रियविकारं ओलोकेतीति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 1.284.

इन्द्रियविप्पकार पु॰, उपरिवत् – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्स इन्द्रियविप्पकारं दिस्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.459.

इन्द्रियविभङ्ग पु॰, व्य॰ सं॰, विभङ्ग के एक खण्ड का शीर्षक, विभ॰ 137-152; – **ङ्गे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियविभङ्गे पन इन्द्रियानं ... वेदितब्बं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.113; विसुद्धि॰ 1.159; – **वण्णना** स्त्री॰, विभ॰ अट्ठ॰ में इन्द्रियविभङ्ग की व्याख्या, विभ॰ अट्ठ॰ 117-121.

इन्द्रियविसय पु॰, तत्पु॰ स॰, इन्द्रियों का विषय – **यो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सोपि सुपाकटभावेन इन्द्रियविसयो विय होतीति,* म॰ नि॰ टी॰ (उप॰प॰) 3.9.

इन्द्रियवेकल्ल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [इन्द्रियवैकल्य], इन्द्रियों की अपूर्णता, इन्द्रियों की अक्षमता, इन्द्रियों का अधूरापन,

इन्द्रियों के बल का अपक्षय – **ल्लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियवेकल्लं न पापुणाति,* चरिया॰ अट्ठ॰ 281; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, इन्द्रियों की विकलाङ्गता या अक्षमता – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियवेकल्लतं बलपरिक्खयं वलिपलितादिभावञ्च पापुणाति,* विसुद्धि॰ 1.340-341.

इन्द्रियवेमत्त नपुं॰, भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में इन्द्रियों की विविधता, इन्द्रियों की विविधरूपता – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इति इन्द्रियवेत्तमेत्थ कारणन्ति वेदितब्बं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.106; – **ता** स्त्री॰, भाव॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, इन्द्रियों की विविधता – *इन्द्रियपरोपरियत्तं इन्द्रियवेमत्तता, तेनाह "इन्द्रियनानत्तं वदामी"ति,* म॰ नि॰ टी॰ (म॰प॰) 2.68; – **तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियवेमत्ततं वदामीति इन्द्रियनानत्तं वदामि,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.106.

इन्द्रियसंयुत्त नपुं॰, व्य॰ सं॰, सं॰ नि॰ के एक खण्ड का शीर्षक, स॰ नि॰ 3(2).269-317; – **वण्णना** स्त्री॰, स॰ नि॰ के इन्द्रियसंयुत्त की व्याख्या, स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.260-277.

इन्द्रियसंवर पु॰, [इन्द्रियसंवर], इन्द्रियों का संयमन, इन्द्रियों की रक्षा, इन्द्रियों का दमन या वशीकरण, इन्द्रियों के द्वारों का संरक्षण, तप, संयम – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अकुसलधम्मे चेव कायञ्च तपतीति तपो ... इध पन इन्द्रियसंवरो अधिप्पेतो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.221; *सीलं चतुब्बिधं पातिमोक्खो इन्द्रियसंवरो आजीवपारिसुद्धी च सीलं पच्चयनिस्सितं,* सद्धम्मो॰ 342; – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सीघं सीघं इन्द्रियसंवरं परिपूरेतीति – सीघपञ्ञा,* पटि॰ म॰ 370; *इन्द्रियसंवरन्ति चक्खादीनं छन्नं इन्द्रियानं रागपटिघप्पवेसं अकत्वा सतिकवाटेन वारणं, थकनं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.241; – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो इमिना अरियेन इन्द्रियसंवरेन समन्नागतो अज्झत्तं अब्यासेकसुखं पटिसंवेदेति,* दी॰ नि॰ 1.62; – **रा** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नाञ्ञत्र बोज्झा तपसा, नाञ्ञत्रिन्द्रियसंवरा ...,* स॰ नि॰ 1(1).65; – **राय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *भिक्खु इन्द्रियसंवराय पटिपन्नो होती'ति,* दी॰ नि॰ 2.207; *दुतियपुच्छायं इन्द्रियसंवरायाति इन्द्रियानं पिधानाय, गुत्तद्वारताय संवुतद्वारतायाति अत्थो,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.294; – **कथा** स्त्री॰, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ के एक भाग का शीर्षक, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.150; – **परियन्त** पु॰, इन्द्रियों के संयमन की सीमा, इन्द्रिय-द्वारों के संरक्षण की मर्यादा, चार प्रकार के परियन्तों (सीमाओं) में से दूसरा – **न्तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सपरियन्तचारीति चत्तारो परियन्ता सीलसंवरपरियन्तो, इन्द्रियसंवरपरियन्तो भोजने मत्तञ्ञुतापरियन्तो, जागरियानुयोगपरियन्तो,* महानि॰ 364; – **न्ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदित्तपरियायं पच्चवेक्खमानो अन्तो इन्द्रियसंवरपरियन्ते चरति, मरियादं न भिन्दति – अयं इन्द्रियसंवरपरियन्तो,* महानि॰ 365; – **भेद** पु॰, तत्पु॰ स॰, इन्द्रियों के संयम का अन्त, इन्द्रिय-संरक्षण या संयमन का विनाश या छेदन – **दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियसंवरभेदोति इन्द्रियसंवरविनासो,* दी॰ नि॰ टी॰ 3.161; – **विपन्न** त्रि॰, इन्द्रियसंवर या इन्द्रियों के रक्षण में असफल, इन्द्रियों के संयमन में असफल – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियसंवरे असति इन्द्रियसंवरविपन्नस्स हतूपनिसं होति सीलं,* अ॰ नि॰ 2(2).73; – **विरहित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, इन्द्रियों के संयमन से रहित – **तेहि** पु॰, तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यस्मा त्वं इमेहि नवेहि इन्द्रियसंवरविरहितेहि भोजने अमत्तञ्ञूहि सद्धिं विचरसि,* दी॰ नि॰ अभि॰ टी॰ 1.54; – **संवुत्त** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, इन्द्रियों के संयमन अथवा नियन्त्रण द्वारा संरक्षित – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इधसद्दो सब्बाकारतो इन्द्रियसंवरसंवुतस्स पुग्गलस्स सन्निस्सयभूतसासनपरिदीपनो,* म॰ नि॰ टी॰ (मू॰प॰) 1.147; अ॰ नि॰ टी॰ 3.117; – **समन्नागत** त्रि॰, इन्द्रियों के संवर या संयमन से युक्त, इन्द्रियद्वारों का रक्षण करने वाला – **ता** स्त्री॰; प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *संवुतिन्द्रियाति इन्द्रियेसु गुत्तद्वारा, इन्द्रियसंवरसमन्नागताति अत्थो,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 58; – **समनुग्गहित** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, इन्द्रियों के संयमन द्वारा भली-भांति उपकृत – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियसंवरसमनुग्गहिता सद्धा सद्धामूला च सीलादयो धम्मा विरुहन्ति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.115; – **सम्पन्न** त्रि॰, इन्द्रियों के संवर या संयमन से युक्त – **स्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इन्द्रियसंवरे, भिक्खवे, सति इन्द्रियसंवरसम्पन्नस्स उपनिससम्पन्नं होति सीलं,* अ॰ नि॰ 2(2).73.

इन्द्रियसंवरसिद्धि स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, इन्द्रियों के संयमन अथवा नियन्त्रण का पूरा हो जाना – **द्धि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उपसमाधिट्ठानपरिपूरणेन इन्द्रियसंवरसिद्धि,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 13.

इन्द्रियसंवरसील नपुं॰, कर्म॰ स॰, इन्द्रियसंवर-नामक शील-प्रभेद, इन्द्रियों के संयमन अथवा संरक्षण के रूप में शील – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं पन "सो चक्खुना रूपं दिस्वा ... मनिन्द्रिये संवरं आपज्जती"ति वुत्तं, इदं इन्द्रियसंवरसीलं,* विसुद्धि॰ 1.16.

इन्द्रियसंवरसुख नपुं., तत्पु. स., इन्द्रियों के नियन्त्रण से प्राप्त सुख, इन्द्रियद्वारों के संरक्षण का सुख – **खं** प्र. वि., ए. व. – *इन्द्रियसंवरसुखं हि दिट्ठादीसु दिट्ठमत्तादिवसेन पवत्तताय अविकिण्णं होति,* अ. नि. अट्ठ. 2.378.

इन्द्रियसंवरसुत्त नपुं., व्य. सं., अ. नि. के छक्कनिपात के धम्मिकवग्ग का इन्द्रियों के संयमन पर प्रकाश डालने वाला एक सुत्त, अ. नि. 2(2).73.

इन्द्रियसंवुत त्रि., [इन्द्रियसंवृत], इन्द्रियों के विषय में संयमित या नियन्त्रित, इन्द्रिय-द्वारों की सुरक्षा करने वाला – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *निस्सङ्गो रट्ठपालो व नन्दो विन्द्रियसंवुतो,* सद्धम्मो. 473.

इन्द्रियसच्चनिद्देस पु., विसुद्धि. का एक अध्याय, जिसमें इन्द्रियों का विवेचन है, विसुद्धि. 2.118-145.

इन्द्रियसन्निस्सय पु., तत्पु. स. [इन्द्रियसन्निश्रय], इन्द्रियों का आश्रय, इन्द्रियों का सहारा – **येन** तृ. वि., ए. व. – *सो च यथाभूतावबोधो विसेसतो इन्द्रियसन्निस्सयेनाति इन्द्रियविभङ्गदेसना,* विभ. अनुटी. 5.

इन्द्रियसमता स्त्री., तत्पु. स., इन्द्रियों की समानरूपता, श्रद्धा आदि इन्द्रियों का समभाव – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *इन्द्रियं समाकारेन वत्तेन्तो इन्द्रियसमतं पटिपादेन्तो नाम होति,* अ. नि. टी. 3.164; विसुद्धि. महाटी. 1.142.

इन्द्रियसमत्त नपुं., तत्पु. स. [इन्द्रियसमत्व], उपरिवत् – **त्ते** सप्त. वि., ए. व. – *सतिपि इन्द्रियसमत्ते वीरियसमताय च ... समाधिपि न सुट्ठु पाकटो,* सारत्थ. टी. 1.321; विसुद्धि. महाटी. 1.171; – **पटिपादन / ना** स्त्री. / नपुं., श्रद्धा, वीर्य, स्मृति, समाधि एवं प्रज्ञा, इन इन्द्रियों में समत्व या सन्तुलन बनाना, श्रद्धा आदि इन्द्रियों में समता को लाना – **ना** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *इन्द्रियसमत्तपटिपादना नाम सद्धादीनं इन्द्रियानं समभावकरणं,* विभ. अट्ठ. 262; दी. नि. अट्ठ. 2.339; म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).300; स. नि. अट्ठ. 3.192; *अपिच सत्त धम्मा धम्मविचयसम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय संवत्तन्ति परिपुच्छकता, वत्थुविसदकिरिया, इन्द्रियसमत्तपटिपादना ...,* विसुद्धि. 1.128.

इन्द्रियसमुट्ठित त्रि., [इन्द्रियसमुत्थित], सौमनस्य, दौर्मनस्य एवं उपेक्षा नामक इन्द्रियों से उत्पन्न, इन्द्रियों से समुद्भूत – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *इदं रूपं दोमनस्सिन्द्रियसमुट्ठितं,* पटि. म. 103.

इन्द्रियसमुदय पु., तत्पु. स., इन्द्रियों का उदय, इन्द्रियों की उत्पत्ति – *सुत्तन्तनिद्देसे पठमं इन्द्रियसमुदयादीनं पभेदगणनं पुच्छित्वा पुन पभेदगणना विस्सज्जिता,* पटि. म. अट्ठ. 2.122.

इन्द्रियसम्पन्न त्रि., [इन्द्रियसम्पन्न], **क.** चक्षु आदि इन्द्रियों के उदय एवं व्यय की अनुपश्यना करते हुए उनके प्रति निर्वेदभाव या समभाव से परिपूर्ण, छ आयतनों की प्रवृत्ति से युक्त, **ख.** चक्षु आदि इन्द्रियों से युक्त, इन्द्रियों की अविकलता से युक्त – **न्नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *"चक्खुन्द्रिये चे, भिक्खु, उदयब्बयानुपस्सी विहरन्तो चक्खुन्द्रिये निब्बिन्दति ... एत्तावता खो, भिक्खु, इन्द्रियसम्पन्नो होती"ति,* स. नि. 2(2).143; *इन्द्रियसम्पन्नोति परिपुण्णिन्द्रियो,* स. नि. अट्ठ. 3.47; *स वे इन्द्रियसम्पन्नो, सन्तो सन्तिपदे रतो, धारेति अन्तिमं देहं, जेत्वा मारं सवाहिनिन्ति,* इतिवु. 40; *सो इन्द्रियसम्पन्नो फुसति, वेदियति, तण्हीयति, उपादियति, घटियति,* विसुद्धि. 2.173; *इन्द्रियसम्पन्नोति चक्खादीहि इन्द्रियेहि समन्नागतो,* विसुद्धि. महाटी. 2.275.

इन्द्रियसम्पन्नसुत्त नपुं., स. नि. के सळायतनवग्ग का एक सुत्त, जिसमें इन्द्रियों की अनुपस्सना का विवेचन है, स. नि. 2(2).143; – **तादिवण्णना** स्त्री., स. नि. अट्ठ. में इन्द्रियसम्पन्नसुत्त की व्याख्या, स. नि. अट्ठ. 3.47.

इन्द्रियसहित त्रि., तत्पु. स. [इन्द्रियसहित], इन्द्रियों से युक्त – **ते** नपुं., सप्त. वि., ए. व. – *इन्द्रियसहिते सरीरे उप्पज्जमानानि ...,* ध. स. मू. टी. 145.

इन्द्रियसुत्त नपुं., व्य. सं., अ. नि. तथा स. नि. के सुत्तों का शीर्षक, अ. नि. 1(2).163; स. नि. 2(2).336.

इन्द्रियहेतुक त्रि., ब. स. [इन्द्रियहेतुक], इन्द्रियों को अपना हेतु बनाने वाला, इन्द्रियों को हेतु बनाकर उत्पन्न – **कानि** नपुं., प्र. वि., ब. व. – *इत्थिन्द्रियसहिते एव सन्ताने सब्भावा इतरत्थ च अभावा इन्द्रियहेतुकानि वुत्तानि,* ध. स. अनु. टी. 154.

इन्द्रियाधिकभाव पु., तत्पु. स., इन्द्रियों की अधिकता – **वेन** तृ. वि., ए. व. – *पुन इन्द्रियाधिकभावेन भिज्जमाना द्विसतुत्तरं सहस्सं होन्ति,* थेरगा. अट्ठ. 2.459.

इन्द्रियाधिट्ठान नपुं., [इन्द्रियाधिष्ठान], इन्द्रियों का साक्षात्कार, इन्द्रियों की प्रवृत्ति या सक्रियता – **नं** प्र. वि., ए. व. – *विक्कीळितं इन्द्रियाधिट्ठानं विक्कीळितं विपरियासानधिट्ठानञ्च,* नेत्ति. 102; *इन्द्रियाधिट्ठानन्ति इन्द्रियानं पवत्तनं भावना सच्छिकिरिया च,* नेत्ति. अट्ठ. 325.

इन्द्रियानुरक्खण नपुं., तत्पु. स. [इन्द्रियानुरक्षण], इन्द्रियों का अनुरक्षण, इन्द्रियों को नियन्त्रण में रखना – **णं** प्र. वि., ए. व. – *पातिमोक्खसंवरो इन्द्रियानुरक्खणं,* सद्धम्मो. 449.

इन्द्रियाभिसमय पु., इन्द्रियभूत अभिसमय, इन्द्रियों द्वारा अर्थ का यथार्थ बोध – **यो** प्र. वि., ए. व. – *आधिपतेय्यट्ठेन इन्द्रियाभिसमयो,* पटि. म. 385.

इन्द्रियारक्खा स्त्री., इन्द्रियों की रक्षा, इन्द्रियों पर नियन्त्रण – **क्खा** प्र. वि., ए. व. – *इन्द्रियारक्खा अत्तहितपटिपत्तियाव मूलन्ति,* थेरगा. अट्ठ. 2.234.

इन्द्रियूपसम पु., तत्पु. स. [इन्द्रियोपशम], इन्द्रियों की शान्ति, इन्द्रियों का उपशमन – **मे** सप्त. वि., ए. व. – *दुस्समादहं वापि समादहन्ति (कामदाति भगवा) इन्द्रियूपसमे रता,* नेत्ति. 125; स. नि. 1(1).57; ... *ये रत्तिन्दिवं इन्द्रियूपसमे रता,* स. नि. अट्ठ. 1.95.

इन्धन नपुं., [इन्धन], लकड़ी, ईंधन, जलावन, समिधा – **नं** प्र. वि., ए. व. – *समिधा इधुमं चेधो उपादानं तथेन्धनं,* अभि. प. 36; *निप्पञ्ञो वा गोचरो आहारो इन्धनं एतस्साति दुम्मेधगोचरो,* चरिया. अट्ठ. 130; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *गतमग्गे इन्धनस्स भस्मभावावहनतो,* चरिया. अट्ठ. 212; – **नानं** ष. वि., ब. व. – *पब्बतकूटसदिसानं इन्धनानं वसेन महतियो ... महासिखी,* चरिया. अट्ठ. 212; – **क्खय** पु., [इन्धनक्षय], ईंधन की समाप्ति – **या** प. वि., ए. व. – *निब्बन्ति ते जोतिरिविन्धनक्खया,* नेत्ति. 157; *निब्बन्ति ते जोतिरिविन्धनक्खयाति यथा नाम अनुपादानो जातवेदो निब्बायति, एवमेवं अभिसङ्खारस्स विञ्ञाणस्स अनवसेसक्खया निब्बायति,* नेत्ति. अट्ठ. 377; – **भाव** पु., [इन्धनभाव], आग के जलावन या ईंधन की अवस्था, ईंधन जैसी स्थिति – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *सो तङ्खणञ्ञेव अवीचिजालानं इन्धनभावं अगमासि,* पारा. अट्ठ. 1.218; – **सङ्खय** पु., [इन्धनसंक्षय], ईंधन का पूर्ण विनाश, ईंधन की समाप्ति – **या** प. वि., ए. व. – *उपादानसङ्खयाति इन्धनक्खया,* बु. वं. अट्ठ. 189; – **नुपादान** त्रि., ब. स. [इन्धनोपादानक], ईंधन पर आश्रित, ईंधन पर पूरी तरह से टिका हुआ – **नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *इन्धनुपादानो अग्गि विय ... लद्धिवसेन वदति,* प. प. मू. टी. 59.

इब्भ त्रि., उत्पत्ति सन्दिग्ध [इभ्य], **शा. अ., क.** भृत्य वर्ग का, **ख.** अनेक नौकर रखने वाला धनी व्यक्ति, **ला. अ., क.** ब्राह्मण तथा क्षत्रिय-कुल से निम्नवर्ण के व्यक्ति के लिए उपाधि के रूप में प्रयुक्त, गृहस्थ, वणिक्, कृषक या खेतिहर के लिए प्रयुक्त, – **ब्भो** पु., प्र. वि., ए. व. – *इब्भो त्वड्ढो तथा धनी,* अभि. प. 725; **ला. अ., ख.** अवैदिक-परम्परा के श्रमणों अथवा ब्राह्मणों के प्रभाव में रहने वाले कृषकों, वैश्यों, शूद्रों आदि के लिए प्रयुक्त, – **ब्भा** पु., प्र. वि., ब. व. – *मुण्डका समणका इब्भा कण्हा बन्धुपादापच्चा,* दी. नि. 1.79; *इब्भाति गहपतिका,* दी. नि. अट्ठ. 1.205; *यथा इभो हत्थिवाहनभूतो परस्स वसेन वत्तति, न अत्तनो, एवं एतेपि ब्राह्मणानं सुस्सूसका सुद्दा परस्स वसेन वत्तन्ति, न अत्तनो, तस्मा इभसदिसपयोगताय इब्भाति,* दी. नि. टी. (लीनत्थ.) 1.263; **ला. अ., ग.** धनलोलुप तथा विषयभोगों में अनुरक्त व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त – **ब्भा** प्र. पु., ब. व. – *यथापि इब्भा धनधञ्ञहेतु, कम्मानि करोन्ति पुथू पथब्या,* जा. अट्ठ. 7.58; – **ब्भेहि** तृ. वि., ब. व. – *इब्भेहि ये ते समका भवन्ति, निच्चुस्सुका कामगुणेसु युत्ता,* जा. अट्ठ. 7.59; – **कुल** नपुं., [इभ्यकुल], गृहस्थ का परिवार – **ले** सप्त. वि., ए. व. – *मगधरट्ठे इब्भकुले निब्बत्तो गोसालो नाम नामेन,* थेरगा. अट्ठ. 1.82; – **वाद** पु., [इभ्यवाद], नीच या अधम कह कर गाली देना, नीच या अधम कहना – **दं** द्वि. वि., ए. व. – *इतिह अम्बट्ठो माणवो इदं पठमं सक्येसु इब्भवादं निपातेसि,* दी. नि. 1.79; तुल. अशोकप्राकृत इभ., जैन. मा. इब्भ..

इभ पु., [इभ], हाथी – **भो** प्र. वि., ए. व. – *कुञ्जरो वारणो हत्थी मातङ्गो द्विरदो गजो, नागो द्विपो इभो दन्ती,* अभि. प. 360; *हत्थी नागो गजो दन्ती कुञ्जरो वारणो करी मातङ्गो द्विरदो सट्ठिहायनो नेकपो इभो,* सद्द. 2.345; स. प. के अन्त., मत्तेभ तथा सेतिभिन्द. के अन्त. द्रष्ट..

इभपिप्फली स्त्री., [इभकणा, हस्तिकणा, करिपिप्पली, गजपिप्पली], पिपरामूल या पहाड़ी पीपल – **ली** प्र. वि., ए. व. – *कोलवल्लीभपिप्फली,* अभि. प. 583.

इम[1] त्रि., निश्चयवाचक सर्वनाम का प्रातिपदिक, अत्यन्त निकटता का बोधक, एक सर्वनाम का अविभक्तिक रूप – **सद्द** पु., इम शब्द – **द्दो** प्र. वि., ए. व. – *इमसद्दो अच्चन्तसमीपवचनो,* सद्द. 1.267; 'इम' के विभक्ति रूप –

अयं पु., प्र. वि., ए. व. – *अनपुंसकस्सायं सिम्हि, इमसद्दस्स सब्बस्सेव अनपुंसकस्स अयं – आदेसो होति सिम्हि विभत्तिम्हि, अयं पुरिसो,* क. व्या. 172; – **अनेन** पु., तृ. वि., ए. व. – *अनिमि नाम्हि च, इमसद्दस्स सब्बस्सेव अन–इमि–आदेसा होन्ति नाम्हि विभत्तिम्हि, अनेन धम्मदानेन सुखिता होतु सा पजा, इमिना बुद्धपूजेन पत्वान अमतं पदं,* क. व्या. 171; – **एसु, इमेसु** पु., सप्त. वि., ब. व. – *"सब्बस्सिमस्से वा", सब्बस्स इमसद्दस्स एकारो होति वा सु–नं–हि इच्चेतेसु, एसु, इमेसु,* क. व्या. 170; *इमेसु च सत्तसु अपरिहानियेसु धम्मेसु,* दी. नि. 2.59; अ. नि. 2(2).169; – **दं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *इदं पीठं ... इदं सङ्घस्स कतिकसण्ठानं,* पारा. 251; *इदं दुक्खं,* महाव. 14; – **मानि**[1] नपुं., प्र. वि., ब. व. – *इमानीति अभिमुखीकरणं,* इतिवु. अट्ठ. 158; – **मानि**[2] द्वि. वि., ब. व. – *इमानि पञ्च ठानानि देती"ति,* अ. नि. 2.(1).37; – **मिना** नपुं., तृ. वि., ए. व. – *इमिना चक्खुना,* महानि. 334; *इमिना च कारणेन,* कङ्खा. अट्ठ. 126; – **मेहि** तृ. वि., ब. व. – *इमेहि तीहि ठानेहि,* अ. नि. 1(1).177; – **मेसु** सप्त. वि., ब. व. – *इमेसु चतूसु अरियसच्चेसु,* महाव. 15; – **अयं** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *अयं ... कथा,* दी. नि. 1.3; *अयं तथागतस्स पच्छिमा वाचा,* दी. नि. 2.116; *अयमन्तिमा जाति,* म. नि. 1.226; – **मा / मायो** स्त्री., प्र. वि., ब. व. – *इमा च मे सञ्ञा निरुज्झेय्युं,* दी. नि. 1.164; *उद्धं अधो दस दिसा इमायो,* सु. नि. 1128; – **मं** स्त्री., द्वि. वि., ए. व. – *इमं गाथं अभासि,* स. नि. 1(1).3; *सिञ्च भिक्खु इमं नावं,* ध. प. 369; – **माहि** स्त्री., तृ. वि., ब. व. – *इमाहि चतूहि इद्धीहि समन्नागतो,* दी. नि. 2.133; – **माय** स्त्री. सप्त. वि., ए. व. – *इमाय खो पन वेलाय,* दी. नि. अट्ठ. 1.123; – **मिस्सा** स्त्री., ष. वि., ए. व. – *इमिस्सा दिट्ठिया, इमिस्सा खन्तिया, इमिस्सा रुचिया,* पटि. म. 168; – **मासु** स्त्री., सप्त. वि., ब. व. – *इमासु वीणासु,* वि. व. 1034.

इम्बर पु., **क.** एक वृक्ष का नाम – **सञ्जित** त्रि., इम्बर नाम वाला – **ते** पु., सप्त. वि., ए. व. – *सो गन्त्वा तङ्खणंयेव रुक्खे इम्बरसञ्जिते,* म. वं. 23.52; **ख.** गोठक नामक योद्धा का दूसरा नाम – **रो** प्र. वि., ए. व. – *नन्धिमत्तो सूरनिमिलो महासोणो गोठइम्बरो,* म. वं. 23.2.

इरन्धती स्त्री., व्य. सं., नागराज वरुण की पुत्री, एक नागकन्या – **ती** प्र. वि., ए. व. – *लभा अम्हं इरन्धती,* जा. अट्ठ. 7.158; *अम्हं इरन्धतीति अम्हाकं धीता इरन्धती,* तदे..

इरिण / इरीण नपुं., [इरिण / इरण], मरुभूमि, उजाड़ भूमि, ऊसर भूमि, नमकीन ज़मीन, निहाली जमीन – **णं** प्र. वि., ए. व. – *अनिस्सयमहीभागे त्विरीणमूसरे सिया,* अभि. प. 886; – **णे** सप्त. वि., ए. व. – *अरञ्ञे इरीणे विवने,* जा. अट्ठ. 5.64; *इरिणेति निरोजे,* जा. अट्ठ. 7.336; *अरञ्ञे इरीणे वने,* अप. 1.274; *अरञ्ञे इरीणे विवने,* जा. अट्ठ. 5.64.

इरियति / इरिय्यति / इरीयति √ईर का वर्त., प्र. पु., ए. व. [ईरयते / ईरते, बौ. सं., ईरयति], **1.** गति करता है, चलता है, इधर उधर घूमता है, चक्कर काटता है, मड़राता रहता है – *घासेसनं इरियति सीतिभूतो,* स. नि. 1(1).167; – **यामि** उ. पु., ए. व. – *उभो पादे उभो पक्खे च भूमियं आकासे च गमनसज्जे करोन्तो पसारेमि इरियामि वायमामि,* चरिया. अट्ठ. 212; – **मानं** पु., वर्त. कृ., द्वि. वि., ए. व. – *पस्सामहं देवमनुस्सलोके, अकिञ्चनं ब्राह्मणमिरियमानं,* सु. नि. 1069; – **रीयतो** पु., वर्त. कृ., ष. वि., ए. व. – *भोगे संहरमानस्स, भमरस्सेव इरीयतो,* दी. नि. 3.143; **2.** विहार करता है, ब्रह्मचर्य जीवन (तपस्वी जीवन) में वास करता है – *तथायं पुग्गलो पटिपन्नो तथा च इरियति तञ्च मग्गं समारूळ्हो ...,* म. नि. 1.107; *पासादिकं खो अयं कुलपुत्तो इरियति,* म. नि. 3.287; *पासादिकेन इरियापथेन इरियति,* म. नि. अट्ठ. (उप.प.) 3.216; – **य्यसि** वर्त., म. पु., ए. व. – *कच्चि सुद्धो इरिय्यसी'ति ... कच्चि त्वं सुद्धो इरिय्यसि विहरसीति,* जा. अट्ठ. 3.440; – **न्ति** वर्त., प्र. पु., ब. व. – *यदा च अविजानन्ता, इरियन्त्यमरा विय,* थेरगा. 276; – **रियानो** पु., वर्त. कृ., प्र. वि., ए. व. – *सम्मा सो लोके इरियानो, न पिहेतीध कस्सचि,* सु. नि. 953; – **मानं** पु., वर्त. कृ ., द्वि. वि., ए. व. – *इरियमानं ब्रह्मपथे, चित्तस्सूपसमे रतं,* अ. नि. 2(2).60; – **येथ** विधि., प्र. पु., ए. व. – *सतो हुत्वा भिक्खु परिब्बजे इरियेथ वत्तेथाति,* जा. अट्ठ. 4.316; **3.** पू. का. क्रि. के साथ अन्वित रहने पर, विहार करता है, विद्यमान रहता है, स्थित है – *जम्बुदीपमभिभुय्य इरियति,* दी. नि. 3.116; *गुणेहि लोकं अभिभुय्यिरीयति,* उदा. अट्ठ. 123; *भगवा हि कामे अभिभुय्य इरियति,* सु. नि. 1103; *कथंविधो दुक्खमतिच्च इरियति ... तथाविधो दुक्खमतिच्च इरियति,* स. नि. 1(1).64.

इरियन / इरीयना / इरियना नपुं॰ / स्त्री॰, √ईर से व्यु॰, क्रि॰ ना॰, जीवन-स्थिति, जीवित-इन्द्रिय, जीवन का स्पन्दन, आयु, चेष्टा – **ना** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जीवितन्ति आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं,* महानि॰ 30; *दुहितिकोति एत्थ इहितीति इरियना ... तस्मिं इरियना दुक्खा होति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.103; – **नं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईहा इरियनं पवत्तनं जीवितन्तिआदीनि पदानि एकत्थानि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.132; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरियाति आरकत्ता किलेसेहि, अनये न इरियनतो, अये इरियनतो,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.221.

इरिया स्त्री॰, √ईर से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [बौ॰ सं॰ ईर्या], **शा॰ अ॰,** शारीरिक चेष्टा, शारीरिक क्रिया, **ला॰ अ॰,** शालीन अथवा उत्तम हावभाव, भिक्षु अथवा तापस का उचित एवं धर्मानुमोदित व्यवहार, ऊंची जीवनवृत्ति, उत्तम आचरण – **यं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ये च सङ्खातधम्मासे, ये च सेखा पुथू इध, तेसं मे निपको इरियं, पुट्ठो पब्रूहि मारिस,* सु॰ नि॰ 1044; *इरियन्ति वुत्तिं आचारं गोचरं विहारं पटिपत्तिं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.53; *इरियं पुट्ठो पब्रूहीति तेसं मे सेखासेखानं निपको पण्डितो त्वं पुट्ठो पटिपत्तिं ब्रूहीति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.277; – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तायपि खो अहं, सारिपुत्त, इरियाय ताय पटिपदाय ताय दुक्करकारिकाय नाज्झगमं उत्तरिं मनुस्सधम्मा अलमरियञाणदस्सनविसेसं,* म॰ नि॰ 1.115; *'इमायाहं इरियाय न किञ्चि ब्याबाधेमि तसं वा थावरं वा'ति,* इतिवु॰ 24; *सन्ताय इरियायस्मिं पसीदि च महीपति,* म॰ वं॰ 5.48; – **या** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईहितं नाम इरिया द्विधा पवत्ता – चित्तइरिया चित्तईहा,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.132; *वेदो पण्डितियञ्चेव चिकिच्छामिरिया पि च,* सद्द॰ 1.82.

इरियापथ पु॰, तत्पु॰ स॰ [बौ॰ सं॰, ईर्यापथ], **शा॰ अ॰,** शारीरिक चेष्टा, चाल ढाल, हाव भाव – **थो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... इरियापथोति सत्तेते, असप्पाये विवज्जये,* विसुद्धि॰ 1.123; *एवं तेसं आकप्पसम्पन्नानं इरियापथो अच्छिद्दो सण्हो मट्ठो दस्सनीयो पासादिको अहोसि,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.298; – **थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इरियापथं पब्बजितानुलोमिकं, सेवेथ नं अत्थदसो मुतीमा,* सु॰ नि॰ 387; *इरियापथन्ति गमनादिचतुब्बिधं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.94; *"यंनूनाहं समणं गोतमं अनुबन्धेय्यं, इरियापथमस्स पस्सेय्य"न्ति,* म॰ नि॰ 2.343; *तत्थ कतमो गोत्तमदो? गोत्तं पटिच्च ... इरियापथं पटिच्च ...,* विभ॰ 400; *दस्सनेय्यं सब्बजनं, विहारं इरियापथं,* बु॰ वं॰ 23.29; – **थेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अञ्ञतित्थियाति दस्सनेनपि ... आचारेनपि विहारेनपि इरियापथेनपि अञ्ञे तित्थियाति अञ्ञतित्थिया,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.16; *ओक्खित्तचक्खु मितभाणी सुसण्ठितेन इरियापथेन अविक्खित्तेन चित्तेन,* मि॰ प॰ 102; *वस्ससट्ठिकत्थेरो विय पासादिकेन इरियापथेन राजगहं पत्वा तत्थ पिण्डाय चरित्वा,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.116; – **थे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ इरियापथे पसन्नमनुस्सेहि पण्णसालं कत्वा उपट्ठियमानो वस्सं उपगन्त्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.119; *राजा इसिगणं दिस्वा इरियापथे पसन्नो अलङ्कतमहातले निसीदापेत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.402; – **थेसु** ब॰ व॰ – *इरियापथेसुपि कस्सचि चङ्कमो सप्पायो होति, कस्सचि सयनट्ठाननिसज्जानं अञ्ञतरो,* विसुद्धि॰ 1.124; **ला॰ अ॰ 1.,** चलने, खड़े होने, बैठने एवं लेटने की चार प्रकार की शारीरिक क्रियाएं, शरीर की चार प्रकार की क्रिया – **थो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पल्लङ्कं आभुजित्वा निसीदनं, एवं निसिन्नस्स हि इरियापथो उपसन्तो होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.276; *यथा इरियतो इरियापथो पासादिको होति, एवं इरियतीति अयमेत्थ अत्थो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.216; *वत्थु कालो च ओकासो, आवुधं इरियापथो, किरियाविसेसोति इमे, छ आणत्तिनियामका,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.42; – **थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथापि, भिक्खवे, पुरिसो सीघं गच्छेय्य ... सणिकं गच्छेय्य ... तिट्ठेय्य ... निसीदेय्य ... एवञ्हि सो भिक्खवे, पुरिसो ओळारिकं ओळारिकं इरियापथं अभिनिवज्जेत्वा सुखुमं सुखुमं इरियापथं कप्पेय्य,* म॰ नि॰ 1.171; *"अट्ठिसङ्घातघटितो, न्हारुसुत्तनिबन्धनो नेकेसं संगतीभावा, कप्पेति इरियापथं,* थेरगा॰ 570; – **थेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सम्भावनाधिप्पायकतेन इरियापथेन विम्हापनं इरियापथसन्निस्सितं कुहनवत्थूति वेदितब्बं,* विसुद्धि॰ 1.25; *कायं पग्गहेत्वाति निच्चलं कत्वा उजुकेन कायेन समेन इरियापथेन गन्तब्बञ्चेव निसीदितब्बञ्च,* पाचि॰ अट्ठ॰ 152; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *या एवरूपा इरियापथस्स ठपना आठपना सण्ठपना भाकुटिका भाकुटियं कुहना कुहायना कुहितत्तं – इदं इरियापथसङ्खातं कुहनवत्थु,* महानि॰ 164; *तत्थ कतमा कुहना ? ... इच्छापकतस्स पच्चयप्पटिसेवनसङ्खातेन वा सामन्तजप्पितेन वा इरियापथस्स वा अठपना'ति आदि,* उदा॰ अट्ठ॰ 184; *इरियापथस्स वाति चतुइरियापथस्स,* विसुद्धि॰ 1.26; – **थे'** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *लक्खणपरियेसनत्थं आगतं दिस्वा बुद्धा उट्ठायासना*

तिट्ठन्ति वा चङ्कमं वा अधिट्ठहन्ति, इति लक्खणदस्सनानुरूपे इरियापथे वत्तमानस्स अद्दस, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.261-262; – **थे**² द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सेय्यथापि, भिक्खवे, ये केचि पाणा चत्तारो इरियापथे कप्पेन्ति – कालेन गमनं, कालेन ठानं, कालेन निसज्जं, कालेन सेय्यं,* स॰ नि॰ 3(1).95; *चित्तस्सादं पटिलभित्वा सुखेन चत्तारो इरियापथे कप्पेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.254; – **थेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *"आवुसो, इमं तेमासं कतिहि इरियापथेहि वीतिनामेस्सथा"ति ? "चतूहि, भन्ते"ति ... "अहं तीहि इरियापथेहि वीतिनामेस्सामि, पिट्ठिं न पसारेस्सामि आवुसो"ति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.6; *दुक्खलक्खणं अभिण्हसम्पटिपीळनस्स अमनसिकारा इरियापथेहि पटिच्छन्नत्ता न उपट्ठाति,* विसुद्धि॰ 2.274; – **थानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इरियापथानं सन्तत्ता ... भिक्खुभावानुरूपेन सन्तेन इरियापथेन सम्पन्ना,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.127; *इरियापथचरियाति इरियापथानं चरिया पवत्तनन्ति अत्थो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.127; – **थेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *चतूसु हि इरियापथेसु तयो इरियापथा न सोभन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.216; *सीतुण्हेसु च उतूसु ठानादीसु च इरियापथेसु सप्पायउतुञ्च इरियापथञ्च सेवन्तस्सापि पस्सद्धि उप्पज्जति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.387; **ला॰ अ॰ 2.** चक्र, रथ का चक्का – **थे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रथङ्गे लक्खणे धम्मोरचक्केस्विरियापथे, चक्कं सम्पत्तियं चक्करतने मण्डले बले,* अभि॰ प॰ 781; *सम्पत्तियं लक्खणे च, रथङ्गे इरियापथे, दाने रतनधम्मूर, चक्कादीसु च दिस्सति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.215; *"चतुचक्कं नवद्वार"न्ति एत्थ इरियापथे,* तदे॰; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अकम्पिति॰, अद्धानि॰, अविनीति॰, एकि॰, कल्याणि॰, चङ्कमनि॰, चतु॰, चतुरि॰, छिन्नि॰, झानानुरूपि॰, ठानचङ्कमि॰, ट्ठाननिसज्जादि॰, ठानि॰, योगानुरूपि॰, रूपि॰, सब्बि॰, सम्पन्नि॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

इरियापथकप्पन नपुं॰, तत्पु॰ स॰, चलने, खड़े होने, बैठने एवं लेटने की चार प्रकार की शारीरिक क्रियाओं को प्रकट करना अथवा उत्पन्न करना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अतिसुखुमो अत्तभावो, न तेन इरियापथकप्पनं होति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.15; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *जरसिङ्गालो इच्छितिच्छितट्ठाने इरियापथकप्पनेन सीतवातूपवायनेन च अन्तरन्तरा ... दस्सेति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.204.

इरियापथकोपन नपुं॰, शरीर की चार प्रकार की क्रियाओं का परित्याग या परिवर्तन – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथस्स अरहत्तप्पत्ति च इरियापथकोपनञ्च एकप्पहारेनेव होति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.162.

इरियापथक्खम त्रि॰, ईर्यापथ में सक्षम, शारीरिक चेष्टाओं या क्रियाओं को ठीक से करने में सक्षम, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, – *यो पन महापुरिसजातिको सब्बउतुइरियापथक्खमोव होति, न तं सन्धायेतं वुत्तं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).307.

इरियापथगमन नपुं॰, शारीरिक गमन, काया से गमन – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कायगमनं नाम इरियापथगमनं,* सद्द॰ 2.315; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इरियापथगमनेन गच्छतीति पि अत्थो भवति,* सद्द॰ 2.315.

इरियापथगुत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, ईर्यापथ अथवा शरीर की गमनादि क्रियाओं की संरक्षा – **या** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इरियापथानं सन्तत्ता इरियापथगुत्तिया सम्पन्ना अकम्पितइरियापथा भिक्खुभावानुरूपेन सन्तेन इरियापथेन सम्पन्ना,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.127.

इरियापथचक्क नपुं॰, कर्म॰ स॰, ईर्यापथ-रूपी चक्र, शरीर की उत्तम चेष्टाओं के रूप में चक्र, गमनादि शारीरिक क्रियाओं का चक्र – **क्कानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *परहिताय च इरियापथचक्कानं वत्तो एतस्मिं अत्थीति चक्कवत्ती,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.202; – **क्के** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"चक्कसमारुळ्हा जानपदा परियायन्ती"ति एत्थ इरियापथचक्के,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.97; – **क्केन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हत्थाहारिक–अग्गीव हत्थसम्परिवत्ततो, इरियापथचक्केन भरणीयं सुदुक्खतो,* सद्धम्मो॰ 604.

इरियापथचरिया स्त्री॰, तत्पु॰ स॰, शरीर की गमनादि चार क्रियाओं से युक्त जीवन-व्यवहार, आठ चर्याओं में एक, ईर्यापथों का अभ्यास, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अट्ठचरियायो – इरियापथचरिया, आयतनचरिया, सतिचरिया, समाधिचरिया, ञाणचरिया, मग्गचरिया, पत्तिचरिया, लोकत्थचरियाति,* पटि॰ म॰ 207; *इरियापथचरियाति चतूसु इरियापथेसु ... इरियापथचरिया च पणिधिसम्पन्नानं,* पटि॰ म॰ 207; *इरियापथचरियाति इरियापथानं चरिया, पवत्तनन्ति अत्थो,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.127; *पणिधिसम्पन्नानं चतूसु इरियापथेसु इरियापथचरिया,* चरिया॰ अट्ठ॰ 16.

इरियापथज त्रि॰, चार प्रकार के ईर्यापथों (गमनादि शारीरिक क्रियाओं) से उत्पन्न – **जं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चेतोसुखं कायसुखं, इरियापथजं सुखं, इमे गुणे पटिलभे, तस्स निस्सन्दतो अहं,* अप॰ 1.341.

इरियापथत्त नपुं., भाव., गमनादि चार शारीरिक क्रियाओं के होने की स्थिति – **त्ता** प. वि., ए. व. – *चतुत्थज्झानसेय्या पन तथागतसेय्याति वुच्चति, तासु इध सीहसेय्या आगता, अयञ्हि तेजुस्सदइरियापथत्ता उत्तमसेय्या नाम,* स. नि. अट्ठ. 3.71.

इरियापथदिब्बब्रह्मअरियविहार पु., शरीर की गमनादि क्रियाओं की दिव्य एवं उत्तम स्थिति – **रेसु** सप्त. वि., ब. व. – *अविसेसेन इरियापथदिब्बब्रह्मअरियविहारेसु ...,* पटि. म. अट्ठ. 2.117; खु. पा. अट्ठ. 90.

इरियापथनियम पु., तत्पु. स., चार शारीरिक क्रियाओं पर नियन्त्रण – **मं** द्वि. वि., ए. व. – *इरियापथनियमं अकत्वा यथासुखं अञ्ञतरञ्ञतरइरियापथबाधनविनोदनं करोन्तो,* खु. पा. अट्ठ. 202.

इरियापथनिस्सित त्रि., तत्पु. स., ईर्यापथों पर आश्रित, शरीर की चार क्रियाओं पर आधारित – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *इरियापथियं पसादनियन्ति परेसं पसादावहं आकप्पसम्पत्तिनिमित्तं इरियापथनिस्सितं सम्पजञ्ञं,* थेरगा. अट्ठ. 2.179.

इरियापथपब्ब नपुं., तत्पु. स., ईर्यापथों वाला खण्ड, कायगता स्मृति के कर्मस्थानों के रूप में निर्दिष्ट चौदह पर्वों में द्वितीय – **ब्बं** प्र. वि., ए. व. – *आनापानपब्बं, इरियापथपब्बं, चतुसम्पजञ्ञपब्बं, पटिक्कूलमनसिकारपब्बं, धातुमनसिकारपब्बं, नवसिवथिकपब्बानीति इमेसं चुद्दसन्नं पब्बानं वसेन कायगतासतिकम्मट्ठानं निद्दिट्ठं,* विसुद्धि. 1.231; *यस्मा इरियापथपब्बं चतुसम्पजञ्ञपब्बं धातुमनसिकारपब्बन्ति इमानि तीणि विपस्सनावसेन वुत्तानि,* तदे..

इरियापथपरिवत्तन नपुं., तत्पु. स., ईर्यापथों (गमनादि क्रियाओं) में परिवर्तन – *चतुइरियापथपरिवत्तने सात्थकतादिपच्चवेक्खणवसेन सम्पज्जञ्ञञ्च सोधेति,* खु. पा. अट्ठ. 192.

इरियापथबाधन नपुं., तत्पु. स., ईर्यापथों के प्रयोग में उपस्थित बाधा या कष्ट – **नं** द्वि. वि., ए. व. – *एकं इरियापथबाधनं अपरेन इरियापथेन विच्छिन्दित्वा,* खु. पा. अट्ठ. 90.

इरियापथभञ्जनक त्रि., ईर्यापथों का भञ्जन करने वाला, ईर्यापथों के अभ्यास में बाधा खड़ी करने वाला – **केन** पु., तृ. वि., ए. व. – *आबाधिकोति इरियापथभञ्जनकेन विसभागाबाधेन आबाधिको,* अ. नि. अट्ठ. 3.59.

इरियापथमद पु., तत्पु. स., "मेरी गमनादि क्रियाएं भव्य या प्रासादिक हैं, दूसरों की नहीं, इस प्रकार के विचार से उत्पन्न घमण्ड – **दो** प्र. वि., ए. व. – *इरियापथमदो,* विभ. 395; *'अवसेसानं इरियापथो अपासादिको, मय्हं पन पासादिको'ति मज्जनवसेन उप्पन्नो मानो इरियापथमदो नाम,* विभ. अट्ठ. 442.

इरियापथरूप नपुं., तत्पु. स., ईर्यापथों (गमन आदि शारीरिक गतिविधियों) का स्वरूप – **पानि** द्वि. वि., ब. व. – *अप्पनाजवनं सब्बं, महग्गतमनुत्तरं, इरियापथरूपानि, जनेतीति समीरितं,* ना. रू. प. 321.

इरियापथवाचक त्रि., ईर्यापथ का सूचक, गमन आदि चार शारीरिक क्रियाओं का अर्थ कहने वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *एतिसद्दो यत्थ वे इरियापथवाचको, तत्थ आगमनं येव जोतेति न गमनं,* सद्द. 2.319.

इरियापथविकोपन नपुं., तत्पु. स., ईर्यापथ की क्रियाशीलता में अवरोध, ईर्यापथ की सक्रियता का अन्त – **नं** प्र. वि., ए. व. – *न मे इदं भूतपुब्बं, इरियापथविकोपनं,* अप. 2.9.

इरियापथविहार पु., [बौ. सं., ईर्यापथविहार], चार उत्तर विहारों (जीवनस्थितियों) में से एक, उत्तम शारीरिक चेष्टाओं से युक्त जीवनवृत्ति – **रो** प्र. वि., ए. व. – *इमिना पदेन मेत्तं आसेवन्तस्स भिक्खुनो इरियापथविहारो कथितो,* अ. नि. अट्ठ. 1.55; *सद्धाय विहरतीतिआदीसु सद्धादिसमङ्गिस्स इरियापथविहारो दट्ठब्बो,* पटि. म. अट्ठ. 2.128; – **रेन** तृ. वि., ए. व. – *दिब्बब्रह्मअरियआनेञ्जविहारेहि समुप्पादितसुखविसेसेन इरियापथविहारेन सरीरदुक्खं विच्छिन्दित्वा हरामि अत्तभावं पवत्तेमि,* चरिया. अट्ठ. 20; *इरियापथविहारेन इतिवुत्तप्पकारझानसमङ्गी हुत्वा अत्तभावस्स ... अभिनिप्फादेति,* विसुद्धि. 1.140-141; पारा. अट्ठ. 1.108; *इरियापथविहारेन विहरति इरीयति वत्तति,* उदा. अट्ठ. 182.

इरियापथसङ्खात त्रि., ईर्यापथ नाम वाली, (ठगविद्या), तीन प्रकार की ठगी में से एक – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *अकुहकोति तीणि कुहनवत्थूनि – "पच्चयपटिसेवनसङ्खातं कुहनवत्थु, इरियापथसङ्खातं कुहनवत्थु, सामन्तजप्पनसङ्खातं कुहनवत्थु",* महानि. 163; *पापिच्छस्सेव पन सतो सम्भावनाधिप्पायेन कतेन इरियापथेन विम्हापनं इरियापथसङ्खातं कुहनवत्थूति वेदितब्बं,* महानि. अट्ठ. 268.

इरियापथसण्ठपनसङ्खात त्रि., ब. स., गमन आदि ईर्यापथों के सम्यक् रूप से (कलात्मक रूप से) प्रयोग या प्रदर्शन

नाम से प्रसिद्ध – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *इरियापथसङ्खातन्ति इरियापथसण्ठपनसङ्खातं,* विसुद्धि. महाटी. 1.50.

इरियापथसन्तता स्त्री., ईर्यापथ (गमन आदि शारीरिक क्रियाओं) में विद्यमान शान्तिभाव, शान्त शारीरिक क्रियाकलाप – **तं** द्वि. वि., ए. व. – *इरियापथसन्ततं पन दिस्वा अनुमानेन वदति,* म. नि. अट्ठ. (म.प.) 2.278.

इरियापथसन्निस्सित त्रि., तत्पु. स., ईर्यापथ (शारीरिक क्रियाओं) के प्रदर्शन पर आधारित – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *पापिच्छस्सेव पन सतो सम्भावनाधिप्पायकतेन इरियापथेन विम्हापनं इरियापथसन्निस्सितं कुहनवत्थूति वेदितब्बं,* विसुद्धि. 1.25.

इरियापथसमङ्गिता स्त्री., भाव., किसी भी एक ईर्यापथ से युक्त होने की स्थिति, स. उ. प. के रूप में, ठानसङ्खात ... खड़ा होने के रूप में प्रसिद्ध ईर्यापथ से युक्त रहना – **य** तृ. वि., ए. व. – *ठानसङ्खातइरियापथसमङ्गिताय, गतिनिवत्तिअत्थताय ... सेसइरियापथसमङ्गिताय बोधको,* विसुद्धि. महाटी. 1.401.

इरियापथसमसीसी त्रि., गमन आदि जिस किसी भी एक ईर्यापथ (शारीरिक क्रिया) के साथ विपश्यना आरम्भ करता है, उसी ईर्यापथ में निर्वाण अथवा अर्हत्व का लाभ प्राप्त करने वाला, एक ही ईर्यापथ में रहते हुए अर्हत् अवस्था प्राप्त करने वाला – **सी** पु., प्र. वि., ए. व. – *ठानादीसु इरियापथेसु येनेव इरियापथेन समन्नागतो हुत्वा विपस्सनं आरभति, तेनेव इरियापथेन अरहत्तं पत्वा परिनिब्बायति, अयं इरियापथसमसीसी नाम,* नेत्ति. अट्ठ. 386; *निसिन्नोव विपस्सनं पट्ठपेत्वा अरहत्तं पत्वा निसिन्नोव परिनिब्बाति, निपन्नोव विपस्सनं पट्ठपेत्वा अरहत्तं पत्वा निपन्नोव परिनिब्बाति – अयं इरियापथसमसीसी नाम,* प. प. अट्ठ. 37; *अरहत्तप्पत्ति च इरियापथकोपनञ्च एकप्पहारेनेव होति, अयं इरियापथसमसीसी नाम,* स. नि. अट्ठ. 1.162; *समसीसी नाम तिविधो होति इरियापथसमसीसी, रोगसमसीसी, जीवितसमसीसीति,* स. नि. अट्ठ. 1.162.

इरियापथसमायोग पु., तत्पु. स., किसी भी एक ईर्यापथ (शारीरिक क्रिया) के साथ सम्बन्ध – **परिदीपन** त्रि., ईर्यापथ के साथ सम्बन्ध का सूचक, स. उ. प. के रूप में, – *"यथाठितत्ताव यथापणिहित"न्ति, ठितन्ति वा कायस्स ठानसङ्खातइरियापथसमायोगपरिदीपनं, पणिहितन्ति तदञ्ञइरियापथसमायोगपरिदीपनं,* विसुद्धि. महाटी. 1.401; *इध पन ठानगमनासनसयनप्पभेदेसु इरियापथेसु अञ्ञतरइरियापथसमायोगपरिदीपनं,* पटि. म. अट्ठ. 2.117; पारा. अट्ठ. 1.76; खु. पा. अट्ठ. 90.

इरियापथसम्पन्न त्रि., तत्पु. स., भव्य अथवा उत्तम शारीरिक चाल-ढाल से युक्त, उदात्त एवं सुन्दर गमन, आदि ईर्यापथों से परिपूर्ण – **न्नो** पु., प्र. वि., ए. व. – *इरियापथसम्पन्नोति ताय पासादिकअभिकन्तादिताय सम्पन्नइरियापथो,* पारा. अट्ठ. 2.186; *इरियापथसम्पन्नोति सम्पन्नइरियापथो,* विसुद्धि. महाटी. 1.41; – **न्नं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *अस्सजिं राजगहे पिण्डाय चरन्तं पासादिकेन अभिक्कन्तेन पटिक्कन्तेन ... ओक्खित्तचक्खुं इरियापथसम्पन्नं,* महाव. 45; स. उ. प. के रूप में, – *एकच्चे इसयो ठानिरियापथचङ्कमनिरियापथसम्पन्ना, एकच्चे इसयो नेसज्जिका निसज्जिरियापथसम्पन्ना,* अप. अट्ठ. 1.229.

इरियापथसम्परिवत्तना / इरियापथसम्परिवत्तनता स्त्री. भाव., किसी एक ईर्यापथ (शारीरिक क्रिया) का अभ्यास – **ता** प्र. वि., ए. व. – *छ धम्मा थिनमिद्धस्स पहानाय संवत्तन्ति, अतिभोजने निमित्तग्गाहो इरियापथसम्परिवत्तनता आलोकसञ्ञामनसिकारो अब्भोकासवासो कल्याणमित्तता सप्पायकथाति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).294; दी. नि. अट्ठ. 2.333.

इरियापथसुखसेवनता स्त्री., भाव., ईर्यापथों का सुखपूर्वक सेवन करने की स्थिति, सुख के साथ ईर्यापथों का अभ्यास – **ता** प्र. वि., ए. व. – *सत्त धम्मा पस्सद्धिसम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय संवत्तन्ति पणीतभोजनसेवनता उतुसुखसेवनता इरियापथसुखसेवनता ... तदधिमुत्तताति,* म. नि. अट्ठ. (मू.प.) 1(1).307; विसुद्धि. 1.130.

इरियापथिकचित्त नपुं., कर्म. स., ईर्यापथों का अभ्यास कर रहे साधक का चित्त – **त्तं** प्र. वि., ए. व. – *इरियापथिकचित्तञ्हि इरियापथं सन्धारेतुं असक्कोन्तं रुक्खे वग्गुलि विय, खीले लग्गितफाणितवारको विय च, ओलियति,* ध. स. अट्ठ. 402.

इरियापथिय त्रि., ईर्यापथ के अभ्यास से उदित (सम्पजन्य), भव्य शारीरिक चेष्टाओं से सङ्गति रखने वाला – **यं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *चारित्तं अथ वारित्तं, इरियापथियं पसादनियं,* थेरगा. 591; *इरियापथियं पसादनियन्ति परेसं पसादावहं आकप्पसम्पत्तिनिमित्तं इरियापथनिस्सितं सम्पजञ्ञं,* थेरगा. अट्ठ. 2.179.

इरु स्त्री., [ऋक्], ऋग्वेद, तीन वेदों में प्रथम वेद – *इरु नारि यजुस्सामामिति वेदा तयो सियुं,* अभि. प. 108.

इरुब्बेद / इरुवेद पु., [ऋग्वेद], प्रथम वेद का नाम – **दं** द्वि. वि., ए. व. – *ब्राह्मणमाणवकानं इरुवेदं यजुवेदं सामवेदं अथब्बणवेदं लक्खणं इतिहासं पुराणं ... पूजा करणीया,* मि. प. 173-174; – *पुच्छामि समणं पञ्हं इमे पञ्हे वियाकर, इरुवेदं यजुवेदं सामवेदं निघण्टु पिटु, इतिहासं पञ्चमं वेदं उग्गण्हि सो विसारदो,* दी. वं. 5.7; स. प. के अन्त., – *तिण्णं वेदानन्ति इरुवेदयजुवेदसामवेदानं,* दी. नि. अट्ठ. 1.200; *सो पन इरुब्बेद–यजुब्बेद– सामवेदवसेन तिविधो आथब्बनवेदं पन पणीतज्झासया न सिक्खन्ति,* सद्द. 2.390.

√**इल**[1] कम्पन अर्थ वाली एक धातु – *इल–अल–मह–सि–कि इच्चेवमादीहि धातूहि ... इस इच्चेते पच्चया होन्ति,* क. व्या. 675; *इल कम्पने – इलति, एलं एला,* सद्द. 2.438.

√**इल**[2] गति अर्थ वाली एक धातु – *इल गतियं – इलति,* सद्द. 2.439.

इलङ्किय पु., एक तमिल शासक का नाम – *इलङ्कियरायरो च तथाञ्चुकोट्टरायरो,* चू. वं. 76.98; – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *तथा इलङ्कियं चेव अञ्चुकोट्टं च रायरं,* चू. वं. 76.191; *इलङ्किरायरस्साथ दत्वा नामं अभिच्छितं,* चू. वं. 76.192.

इलति[1] √इल का वर्त., प्र. पु., ए. व. [इलति], कांपता है – *इल कम्पने, इलति, एलं एला,* सद्द. 2.438.

इलति[2] √इल (गत्यर्थक) का वर्त., प्र. पु., ए. व. [इलति], जाता है, गतिशील होता है – *इल गतियं, इलति,* सद्द. 2.439.

इलनाग / इळनाग पु., व्य. सं., श्रीलङ्का के एक शासक का नाम – **गो** प्र. वि., ए. व. – *इलनागो ति नामेन रज्जं अकारयि पुरे,* दी. वं. 21-40, 41; *इळनागो ति नामेन, छत्तं उस्सापयी पुरे,* म. वं. 35-15, 45, 46.

इल-पच्चय पु., व्याकरण के सन्दर्भ में प्रयुक्त, राज आदि नामों में लगाया जाने वाला तद्धित-प्रत्यय 'इल' – **या** प्र. वि., ब. व. – *चसद्दग्गहणेन इय–इलप्पच्चया होन्ति – रञ्ञो इदं ठानं राजियं, एवं राजिलं,* क. व्या. 358.

इलयति / इलेति √इल (प्रेरणार्थक) का वर्त., प्र. पु., ए. व. [इलयति], प्रेरित करता है – *इल पेरणे – इलेति इलयति,* सद्द. 2.564.

इलिस पु., [इलीष / इल्लिश / इल्लीस], एक प्रकार का मत्स्य मछली की एक प्रजाति, हिल्सा मछली – *सुरियो, सिरीसो, इल्लिसो, अलसो, महिसो,* क. व्या. 675; *सिरीसो, इलिसो, अलसो, महिसो,* सद्द. 3.873.

इलोप पु., तत्पु. स., केवल व्याकरण के सन्दर्भ में प्रयुक्त [इलोप], 'इ' स्वर का लोप – **पो** प्र. वि., ए. व. – *सरलोपादिना इलोपो,* बालाव. 124.

इल्लिया स्त्री., [ईलिका / ईली], छोटी तलवार, खुखरी – **वुध** नपुं., द्व. स., तलवार एवं आयुध (शस्त्र) – **धं** द्वि. वि., ए. व. – *इल्लिया चापधारिभीति इल्लियावुधञ्च ... धारेन्तेहि,* जा. अट्ठ. 5.251-252; – **चापधारी** त्रि., तलवार एवं धनुष को धारण करने वाला – **रिभि** पु., तृ. वि., ब. व. – *आरुळ्हा गामणीयेभि, इल्लियाचापधारिभि,* जा. अट्ठ. 5.249.

इल्लिस पु., व्य. सं., राजगृह के एक श्रेष्ठी (व्यापारी) का नाम – **सो** प्र. वि., ए. व. – *तस्मिं खणे सक्को "नाहं, महाराज इल्लिसो, सक्कोहमस्मी"ति ...,* जा. अट्ठ. 1.337; *नाहं पस्सामीति अहं "इमेसु अयं नाम इल्लिसो"ति न पस्सामि,* तदे.; – **सं** द्वि. वि., ए. व. – *उभिन्नं पिळका जाता, नाहं पस्सामि इल्लिस"न्ति,* जा. अट्ठ. 1.337; ध. प. अट्ठ. 1.211; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *इल्लिसस्स मुखं पुञ्छित्वा उदकेन सिञ्चिंसु,* जा. अट्ठ. 1.337; – **सेट्ठी** पु., इल्लिस नामक सेठ – **ट्ठिं** द्वि. वि., ए. व. – *राजा तं पक्कोसापेत्वा "इल्लिससेट्ठिं जानासी"ति पुच्छि,* जा. अट्ठ. 1.337; – **भाव** पु., इल्लिस नामक सेठ होने की दशा – **वं** द्वि. वि., ए. व. – *एकस्सापि इल्लिसभावं न जानामीति अवोच,* जा. अट्ठ. 1.337; – **जातक** नपुं., जातक संख्या 78, जिसमें इल्लिस सेट्ठ का कथानक है – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *इमं इल्लिसजातकं कथेसीति,* ध. प. अट्ठ. 1.211; – **जातकवण्णना** स्त्री., जा. अट्ठ. के उस कथानक का शीर्षक, जिसमें राजगृह के सेठ इल्लिस की कहानी वर्णित है, जा. अट्ठ. 1.330-338.

इल्ली स्त्री., [ईली], एक तरफ धार वाली छोटी तलवार, गुप्ती, प्र. वि., ए. व. – *खेटकं फलकं चम्मं, इल्ली तु करपालिका,* अभि. प. 392; *वण्टानिहारस्साखग्गाकति हत्थकुण्डादि इल्ली, इलीपि, इल गतियं, नदादि,* अभि. प. टी. 392; तुल., *स्यादीली करवालिका,* अमर. 2-8-91.

इव / व 1. औपम्यसूचक निपा., किन्ही दो की समानता सूचित करने के लिए प्रयुक्त [इव], के समान, की तरह, के जैसा, जैसे कि, मानों कि – *इवाति ओपम्मवचनं, इ-कार लोपं कत्वा व-इच्चेव वुत्तं,* सु. नि. अट्ठ. 1.12; *चक्कंव*

वहतो पदं, ध॰ प॰ 1; *छायाव अनपायिनी*, ध॰ प॰ 2; *यो ओगहणे थम्भोरिवाभिजायति*, सु॰ नि॰ 216; *महोदधिं हंसोरिव अज्झपत्तो*, सु॰ नि॰ 1140; *समेति वुट्ठीव रजं समूहतं*, इतिवु॰ 60; *वारि पोक्खरपत्तेव, आरग्गेरिव सासपो*, ध॰ प॰ 401; **2.** विशे॰ एवं क्रि॰ वि॰ के उपरान्त 'एव' के ही समान पुष्टि-सूचक निपा॰, ही, केवल, कुछ, थोड़ा सा, कदाचित् – *पोराणमेतं अतुल, नेतं अज्जतनामिव*, ध॰ प॰ 227; *नेतं अज्जतनामिवाति इदं निन्दनं वा पसंसनं वा अज्जतनं अधुना उप्पन्नं विय न होति*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.190; *भन्ते भगवा, भातिरिव भगवतो मुखवण्णो विप्पसन्नत्ता इन्द्रियानं*, दी॰ नि॰ 2.151; *भातिरिवाति, अतिविय भाति, अतिविय विरोचति*, दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.207; *मिगीव भन्ता सरचापधारिना, विराधिता मन्दमिव उदिक्खसि*, जा॰ अट्ठ॰ 5.396; *न वा ति कस्मा ? यथा एव, तथा एव*, क॰ व्या॰ 22; *भुसामि वेति इव सद्दो एवत्थो*, मो॰ व्या॰ 1.32; *"यथरिव वसुधातलञ्च सब्बं तथरिव गुणवा सुपूजनीयो" न वा ति कस्मा – यथा एव, तथा एव*, सद्द॰ 3.618; *यथा एव – 'यथरिव', एवं 'तथरिव', 'भुसामिव'*, सद्द॰ 3.636; *तूलमिव एरितं मालुतेन, पिलवतीव मे कायो"ति*, थेरगा॰ 104; *अकामं परिकड्ढन्ति, उलूकञ्ञेव वायसा*, जा॰ अट्ठ॰ 7.265; *तत्थापि भवनं मय्हं, इन्दलट्ठीव अग्गतं*, अप॰ 1.32; *आकिण्णं इन्दसदिसेहि, ब्यग्घेहेव सुरक्खितं*, जा॰ अट्ठ॰ 6.151; *उपगच्छसि अन्ध रित्तकं, जनमज्झेरिव रूपरूपकं*, थेरीगा॰ 396; – **सद्द** पु॰, इव शब्द – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इवसद्दतो पुब्बस्स आकारस्स लोपो च न होति*, सद्द॰ 3.614.

इवण्ण पु॰, व्याकरणों में प्रयुक्त [इवर्ण], 'इ' एवं 'ई' स्वर – **ण्णो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुब्बो इवण्णो सरे परे यकारं पप्पोति न वा*, क॰ व्या॰ 21; *इ ई इवण्णो*, सद्द॰ 3.606; सद्द॰ 3.617-18; *अब्भासन्तस्स इवण्णो होति वा अकारो च*, सद्द॰ 3.826; – **ण्णुवण्ण** पु॰, इ, ई, एवं उ, ऊ स्वर – **ण्णा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इवण्णुवण्णा इच्चेते झलसञ्ञा होन्ति यथासङ्ख्यं*, क॰ व्या॰ 58; *ते इवण्णुवण्णा यदा इत्थिख्या, तदा प–सञ्ञा होन्ति*, क॰ व्या॰ 59; *तस्स अन्ते वत्तमाना इवण्णुवण्णा झल सञ्ञा होन्ति यथाक्कमं*, मो॰ व्या॰ 1.9; – **ण्णागम** पु॰, तत्पु॰ स॰ [इवर्णागम], इवर्ण (इ, ई) का आगम – **मो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सब्बेहि धातूहि यम्हि पच्चये, परे इवण्णागमो होति वा*, क॰ व्या॰ 444; *तस्मिं यपच्चये परे सब्बेहि धातूहि इवण्णागमो होति वा*, सद्द॰ 3.824.

इवा इव निपा॰ का अनियमित प॰ वि॰, ए॰ व॰, इव निपा॰ से – *इवा पुब्बाकारस्स लोपो चिस्से च, इवसद्दतो पुब्बस्स आकारस्स लोपो च न होति*, सद्द॰ 3.614.

इस/इस्स पु॰, [ऋश्य], अर्थ अनिश्चित, संभवतः एक प्रकार का वन्य पशु, श्वेत वर्ण के पैरों वाला कृष्णमृग या भालू, अट्ठ॰ के व्याख्यानों में तृणभक्षक, काला सिंह – *इस सिस–इच्छायं, सिवं इच्छतीति इसि–तपस्सी*, मो॰ वु॰ 7.9; *कालसीहो काळगाविसदिसो तिणभक्खोयेव*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.283; *अच्छो इक्को च इस्सो तु, काळसीहो इसोप्यथ*, अभि॰ प॰ 612; *तत्थ इस्सोति त्वम्पि एको काळसीहो वनानि चरसि*, जा॰ अट्ठ॰ 4.186.

इसति √इस (गत्यर्थक) का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [इष्यति], जाता है, गति को प्राप्त करता है – *इसि गतियं, इसति*, सद्द॰ 2.453; *इस गतियं, इसति चित्तं पविसतीति उसभो, अभो, इस्सु च*, अभि॰ प॰ टी॰ 132; *असुरो ति देवो विय न सुरति न ईसति न विरोचति चा ति असुरो*, सद्द॰ 2.429; – **न्ति** ब॰ व॰ – *पकतिदेवा विय न सुरन्ति न इसन्ति न विरोचन्तीति असुरा*, उदा॰ अट्ठ॰ 243.

इसफन्दन/इस्सफन्दन पु॰, द्व॰ स॰, जातक संख्या 475 (फन्दन जातक) के नायक कृष्णमृग तथा फन्दन-नामक वृक्ष – **ना** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *मयूरनच्चं नच्चन्ति, यथा ते इस्सफन्दना*, जा॰ अट्ठ॰ 4.188.

इसि पु॰, [ऋषि], **क. सामान्य अर्थ**, तपस्वी, साधक, गाथाओं में शुद्ध आचार वाले व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त सामान्य उपाधि, मुनि, बुद्ध, अर्हत्, गद्य-भाग में 'तापस' शब्द इसका स्थानापन्न – **सि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तापसो तु इसीरितो*, अभि॰ प॰ 433; *इसेति इसि एसितगुणो*, जा॰ अट्ठ॰ 7.105; *एसति इसि, एत्थ पन सीलादयो गुणे एसन्तीति इसयो बुद्धादयो अरिया तापसपब्बज्जाय च पब्बजिता नरा, इसि तापसो जटिलो जटी जटाधरोति एते तापसपरियाया*, सद्द॰ 2.442; *इसि गहेत्वा पुप्फानि, आगच्छन्तं महायसं पूजेसि जनसंमज्झे, बोधत्थाय महाइसि*, अप॰ 2.257; *इसीति तापसो*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.304; *इसीति एसति गवेसति कुसले धम्मेति इसि*, बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 61; – **सिनो** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इसिनोति अधिसीलसिक्खादीनं एसनट्ठेन इसिनो, अधिमुत्तत्थेरस्स*, थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.230; – **सिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कण्हदीपायनासज्ज, इसिं अन्धकवेण्डयो*, जा॰ अट्ठ॰ 5.259; – **सि/से** सम्बो॰, ए॰ व॰ – *तस्मा त्वं इसि मा रोदि*, जा॰ अट्ठ॰ 3.187; *सुणोहि वचनं मय्हं इसिपण्डरसव्हय*,

थेरगा॰ 951; *इसि–मुनिसद्दानं पनालपनट्ठाने इसे मुने ति रूपन्तरम्पि गहेतब्बं – "पुत्तो उप्पज्जतं इसे,* सद्द॰ 1.184; सद्द॰ 3.652; *तं ब्याकरोहि भगवा, कङ्खं विनय नो इसे,* सु॰ नि॰ 1031; – **सीहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तस्मा एतं न सेवामि, धम्मं इसीहि सेवित"न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 3.25; *सम्बरो असुरिन्दो तेहि इसीहि सीलवन्तेहि कल्याणधम्मेहि ... उब्बिज्जी"ति,* स॰ नि॰ 1(1).263; *"अनणस्स हि पब्बज्जा, एतं इसीहि वण्णित"न्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.21; *एवं इसीहि सपथे कते सक्को भायित्वा ... अन्तरधापेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.278; – **सिनं / सीनं** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... आयस्मन्तानं इसीनं एकरत्तम्पि इमस्मिं अरञ्ञे वसितं सुवसितमेव,* जा॰ अट्ठ॰ 4.280; *संकिच्चायं अनुप्पत्तो, इसीनं साधुसम्मतो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.255; *आचारं इसिनं ब्रूहि,* स॰ नि॰ 1(1).273; *सिद्धत्थं इसिनं सेट्ठं,* अप॰ 1.136; **ख. विशिष्ट अर्थ, 1.** वेदों के मन्त्रद्रष्टा ऋषि – **सि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... येन त्वं इसि भवेय्यासि, एतं कारणं न विज्जति,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.221; – **सयो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *येपि खो ते ब्राह्मणानं पुब्बका इसयो मन्तानं कत्तारो मन्तानं पवत्तारो ... वासेट्ठो कस्सपो भगु,* महाव॰ 322; – **सीनं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यथा तेसं पुब्बकानं इसीनं तानि महायञ्ञानि अहेसुं ...,* अ॰ नि॰ 2(2).205; **2.** देवों एवं लोकोत्तर प्राणियों के साथ जुड़े हुए प्राचीन तापस या तपस्वी – **सयो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ये चापि इसयो लोके, सञ्ञतत्ता तपस्सिनो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.6; *येसु बुद्धा खीणासवा च पच्चेकबुद्धा च इद्धिमन्ता च इसयो न्हायन्ति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.218; – **नो** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इसिनो देहनिक्खेपकतठानं हि तस्स तं,* म॰ वं॰ 20.47; *परक्कमं तं सफलं, अद्दसं इसिनो तदा,* अप॰ 2.257; *इसिनोति तव महेसिनो सन्तकानि भिसानि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.279; – **सयो / सी** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सम्बहुला इसयो सीलवन्तो कल्याणधम्मा अरञ्ञायतने पण्णकुटीसु सम्मन्ति,* स॰ नि॰ 1(1).261; *इसयोति यमनियमादीनं पटिकूलसञ्ञादीनञ्च एसनट्ठेन इसयो,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 86; *इसयो पुब्बका आसुं,* सु॰ नि॰ 286; *तथेव इसयो हिंसं, सञ्ञते ब्रह्मचारिनो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.232; *संयोजनबन्धनच्छिदा, अनीघा खीणपुनब्भवा इसी,* थेरगा॰ 1243; – **सीभि / हि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तेहानुचिण्णं इसीभि, मग्गं दस्सनपत्तिया,* थेरीगा॰ 206; **3.** पूर्वजन्मों में तापस के रूप में विद्यमान विभिन्न स्थविर, प्रत्येकबुद्ध, पूर्वबुद्ध एवं बोधिसत्त्व अथवा बोधिसत्त्वों का श्रद्धालु अनुयायी – **सि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इसीपि अच्चुतो तत्थ,* जा॰ अट्ठ॰ 7.297; *अच्चुतोति एवंनामको इसि तत्थ वसति,* तदे॰; – **सी** ब॰ व॰ – *इमे इसीति इमे पच्चेकबुद्धइसी,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.91; *तत्थ बोधिसत्तो सब्बञ्ञुतं पत्तो, जेट्ठन्तेवासिको सारिपुत्तत्थेरो जातो, सेसा इसयो बुद्धपरिसा जाताति ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.105; **4.** सीमित तात्पर्य में, **क.** गाथाओं में बौद्ध भिक्षु का समानान्तरवर्ती बौद्धेतर ऋषि या तापस, **ख.** गद्य-खण्डों में प्रत्येकबुद्ध का प्रतिद्वन्द्वी तापस – **सी / सयो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *"इसी मूलफले गिद्धा, विप्पमुत्ता च भिक्खवो"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 4.336; *द्वत्तिंस महापुरिसस्स महापुरिसलक्खणानि बाहिरकापि इसयो धारेन्ति,* दी॰ नि॰ 3.107-108; *बाहिरका इसयो कामेसु वीतरागा, तेसम्पि असुचि न मुच्चति,* कथा॰ 147; **5.** वर्तमान बुद्ध के साथ घनिष्ठ रूप में जुड़े हुए तापस, **क.** असित एवं बुद्ध से उपसम्पदा-प्राप्त अनेक अन्य भिक्षु – **सि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *असितो इसि अद्दस दिवाविहारे,* सु॰ नि॰ 684; *दिस्वा जटी कण्हसिरिव्हयो इसि,* सु॰ नि॰ 694; *मोघराजा च मेधावी, पिङ्गियो च महाइसि,* सु॰ नि॰ 1014; **ख.** बुद्ध के सक्षम शिष्य, अर्हत् शिष्य – **सी / सयो** ब॰ व॰ – *संयोजनबन्धनच्छिदा, अनीघा खीणपुनब्भवा इसी,* स॰ नि॰ 1(1).222; स॰ प॰ के रूप में, *आकासो इसितापसभूतदिजगणानुसञ्चरितो,* मि॰ प॰ 356; – **सत** नपुं॰, एक सौ ऋषियों का समूह – **तानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सो पञ्चन्नं इसिसतानं ओवादाचरियो हुत्वा झानकीळं कीळन्तो हिमवन्ते वसति,* जा॰ अट्ठ॰ 1.414; – **नो** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरञ्ञिकस्स इसिनो, चिररत्तं तपस्सिनो,* जा॰ अट्ठ॰ 4.333; – **नं / सीनं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *... परामसन्तो, कासावमद्दक्खि धजं इसीनं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.43; *"... गन्धो इसीनं असुचि देवराजा"ति,* स॰ नि॰ 1(1).262; *"भासये जोतये धम्मं, पग्गण्हे इसिनं धजं सुभासितधजा इसयो, धम्मो हि इसिनं धजो"ति,* स॰ नि॰ 1(2).254; *कदा नु पञ्ञामयमुग्गतेजं, सत्थं इसीनं सहसादियित्वा,* थेरगा॰ 1098; **ग.** धर्मदूत एवं आचार्य आदि के रूप में ख्याति-प्राप्त भिक्षु – **सि / सी** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गन्त्वा कस्मीरगन्धारं, इसि मज्झन्तिको तदा,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.47; *रञ्ञो सत्तरसे वस्से, द्वासत्ततिसमो इसि,* म॰ वं॰ 5. 280; *महारट्ठं इसी गन्त्वा, सो महाधम्मरक्खितो,* म॰ वं॰ 12. 37; **6.** बुद्ध के लिए प्रयुक्त उपाधि – **सयो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इसयोति बुद्धादयो अरिया,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.298; – **सीहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *तत्थ एतन्ति एतं पब्बज्जाकरणं*

बुद्धादीहि इसीहि वण्णितं पसत्थं थोमितं, जा॰ अट्ठ॰ 6.21; – **सिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दिस्वा इसिं पविट्ठं, अहिनागो ... पावकोव पज्जलि,* महाव॰ 30; *एते बुद्धं उपागच्छुं सम्पन्नचरणं इसिं,* सु॰ नि॰ 1132; **7.** सत्पुरुषों या उत्तम जनों के लिए सामान्य रूप से प्रयुक्त, सम्मान-सूचक शब्द – **सयो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ये इमस्मिं अस्समे विचरणका इसयो, ते अरञ्ञं उञ्छाय गता,* जा॰ अट्ठ॰ 4.393; – **नं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अहञ्च इसिनं इध,* जा॰ अट्ठ॰ 4.393; स॰ उ॰ प॰ के रूप में गन्धारि॰, देवि॰, ब्राह्मणि॰, महा॰, महे॰, मातङ्ग॰, राजी॰, वेदेहि॰ के अन्त॰, द्रष्ट॰.

इसिगण पु॰, [ऋषिगण], ऋषियों का झुण्ड, ऋषियों का समूह – **णो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हिमवन्तप्पदेसे सब्बो इसिगणो सन्निपतित्वा तं ओवादाचरियं कत्वा परिवारेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 1.414; *तं सुत्वा इसिगणो "मारिस, मा एवं कथेथ, अतिभारियो ते सपथो"ति कण्णे पिदहि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.274; – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *महता इसिगणेन परिवुतो अरञ्ञे वसन्तो बुद्धुप्पादं सुत्वा ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.320; – **णा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अनेकसहस्सा इसिगणा किसवच्छस्स तापसस्स चन्दनचितकं कत्वा सरीरं झापेसुं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.130; – **णं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एवं इसिगणं सञ्ञापेत्वा बोधिसत्तो ब्रह्मलोकमेव गतो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.105; *अथ महासत्तो सक्कस्स देवरञ्ञो खमित्वा सयं इसिगणं खमापेन्तो इतरं गाथमाह–सुवासितं इसिनं एकरत्तं ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.280; – **मज्झ** पु॰, [ऋषिगणमध्य], ऋषिसमूह के बीच – **ज्झे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो इसिगणमज्झे ठत्वा "सच्चे ते मया भिसानि खादितानि ...,* जा॰ अट्ठ॰ 4.274.

इसिगिलि पु॰, व्य॰ सं॰, राजगृह के पांच पर्वतों में से एक पर्वत का नाम, (सम्भवतः आधुनिक रत्नगिरि, जिस पर शान्तिस्तूप बना है); प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गिज्झकूटो च वेभारो वेपुल्लोसिगिली नगा विंझो पण्डववंकादि,* अभि॰ प॰ 606; *'अयं पब्बतो इमे इसी गिलती'ति, इसिगिलि इसिगिलि'त्वेव समञ्ञा उदपादि,* म॰ नि॰ 3.114; स॰ प॰ के अन्त॰ – *तञ्हि पण्डवगिज्झकूटवेभारइसिगिलि वेपुल्लनामकानं पञ्चन्नं गिरीनं मज्झे वजो विय ठितं,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.101; *तत्थ नगन्तेति इसिगिलिवेपुल्लवेभारपण्डवगिज्झकूटसङ्खातानं पञ्चन्नं पब्बतानं अन्तरे वेमज्झे,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 65; – **लिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पस्सथ नो तुम्हे, भिक्खवे, इमं इसिगिलिं पब्बतं,* म॰ नि॰ 3.114; – **स्मिं** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरिट्ठो नाम, भिक्खवे, पच्चेकसम्बुद्धो इमस्मिं इसिगिलिस्मिं पब्बते चिरनिवासी अहोसि,* म॰ नि॰ 3.115; – **पब्बत** पु॰, कर्म॰ स॰, इसिगिलि-नामक पर्वत – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ नगस्स पस्सेति इसिगिलिपब्बतस्स पस्से काळसिलायं,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.446; – **ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... अकासेन आगन्त्वा इसिगिलिपब्बते ओतरित्वा ...,* उदा॰ अट्ठ॰ 237.

इसिगिलिपरित्त नपुं॰, तत्पु॰ स॰, इसिगिलि-सुत्त के मन्त्र की सुरक्षा या परित्राण, इसिगिलिपर्वत पर निवास करने वाले प्रत्येकबुद्धों के नामों के पाठ द्वारा प्राप्त सुरक्षा, स॰ प॰ के रूप में, – *... आटानाटियपरित्तइसिगिलिपरित्तध-जग्गपरित्तबोज्झङ्ग परित्तखन्धपरित्तमोरपरित्तमेत्त-परित्तरतनपरित्तानं ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.203.

इसिगिलिपस्स नपुं॰, तत्पु॰ स॰, राजगृह के इसिगिलि पर्वत का वह पार्श्वभाग या ढालू भाग, जहां बुद्ध तथा अनेक अन्य तापसों का अत्यन्त प्रिय कालसिला-विहार अवस्थित था – **स्से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... सम्भत्ता भिक्खू इसिगिलिपस्से तिणकुटियो करित्वा वस्सं उपगच्छिंसु,* पारा॰ 47; *इसिगिलिपस्से काळसिलायं सेनासनं पञ्ञपेहि,* चूळव॰ 178; *... तत्थेव राजगहे विहरामि इसिगिलिपस्से काळसिलायं ...,* दी॰ नि॰ 2.89; *... सम्बहुला निगण्ठा इसिगिलिपस्से काळसिलायं उब्भट्ठका होन्ति आसनपटिक्खित्ता,* म॰ नि॰ 1.129; – **स्सं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰, – *अथ खो भगवा सम्बहुलेहि भिक्खूहि सद्धिं येन इसिगिलिपस्सं काळसिला तेनुपसङ्कमि,* स॰ नि॰ 1(1).143; *येन इसिगिलिपस्सं कालसिला तेनुपसङ्कमि,* स॰ नि॰ 2(1).112.

इसिगिलिसुत्त नपुं॰, व्य॰ सं॰, म॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, म॰ नि॰ 3.113-117.

इसिण्ड पु॰, √इसिण्डि से व्यु॰, दूसरों को कष्ट देने वाली एक जनजाति – **ण्डो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इसिण्डति परेसं मद्दतीति इसिण्डो,* क॰ व्या॰ 663 पर क॰ वु॰; – **ण्डा** ब॰ व॰ – *इसिण्डा मक्कला चेव, आगच्छन्ति ममं घरं,* अप॰ 1.394.

इसित्थ संभवतः इसित्त के स्थान पर अप॰, नपुं॰, भाव॰ [ऋषित्व], ऋषि-भाव, ऋषि-अवस्था – **त्ताय** च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तावता त्वं भविस्ससि इसि वा इसित्थाय वा पटिपन्नोति नेतं ठानं विज्जति,* दी॰ नि॰ 1.91.

इसिदत्त[1] पु॰, व्य॰ सं॰, एक स्थविर, जो उपसम्पदा ग्रहण करने से पहले अवन्ति-निवासी कुलपुत्र था, थेरगा॰ की गाथाओं का रचयिता तथा चित्तगहपति के प्रश्नों का उत्तर

देने वाला थेर – **त्तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किमिलो वज्जिपुत्तो च, इसिदत्तो महायसोति,* थेरगा॰ (पृ॰) 187; – **त्थेर** पु॰, इसिदत्त नामक स्थविर – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथेकदिवसं इसिदत्तत्थेरो तत्थ गन्त्वा विहरन्तो ...,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.287; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चक्खन्धा परिञ्ञाताति आयस्मतो इसिदत्तत्थेरस्स गाथा,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.258.

इसिदत्त[2] पु॰, व्य॰ सं॰, एक गहपति का नाम, सदा पुराण/पूरण के नाम के साथ ही प्रयुक्त – **त्तो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पेत्तेय्योपि मे, भन्ते, इसिदत्तो अब्रह्मचारी अहोसि सदारसन्तुट्ठो,* अ॰ नि॰ 2(2).63; *पञ्ञाय इसिदत्तो समन्नागतो अहोसि तथारूपाय पञ्ञाय पुराणो समन्नागतो अभविस्स,* अ॰ नि॰ 3(2).119; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पूरणस्स सीलं इसिदत्तस्स पञ्ञाठाने ठितं, इसिदत्तस्स पञ्ञा पूरणस्स सीलट्ठाने ठिताति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.117.

इसिदत्त[3] पु॰, व्य॰ सं॰, सोरेय्य का एक शासक, जिसने अनोमदस्सी बुद्ध का धर्मोपदेश सुनते ही अर्हत्त्व प्राप्त कर लिया था – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ सोरेय्यनगरे इसिदत्तस्स रञ्ञो धम्मे देसियमाने ...,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 199.

इसिदत्त[4] पु॰, व्य॰ सं॰, श्रीलङ्का के शासक वट्टगामणी के समय के श्रीलङ्का के संघनायक थेरों में एक – **त्त** संबो॰, ए॰ व॰ – *अथ चूळसीवत्थेरो इसिदत्तत्थेरं आह – "आवुसो इसिदत्त, अनागते महासोणत्थेरं निस्साय सासनपवेणी ठस्सति,* विभ॰ अट्ठ॰ 421.

इसिदत्तपुराण पु॰, द्व॰ स॰, व्य॰ सं॰, कोशल के राजा प्रसेनजित के इसिदत्त एवं पुराण नामक दो अश्वपाल, जो बुद्ध के प्रति अत्यधिक श्रद्धावान थे – **णा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इमे इसिदत्तपुराणा थपतयो ममभत्ता ममयाना,* म॰ नि॰ 2.333; *इसिदत्तपुराणाति इसिदत्तो च पुराणो च,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.252; *तेन खो पन समयेन इसिदत्तपुराणा थपतयो साधुके पटिवसन्ति केनचिदेव करणीयेन,* स॰ नि॰ 3(2).415; *एकमन्तं निसिन्ना खो इसिदत्तपुराणा थपतयो भगवन्तं एतदवोचुं,* नेत्ति॰ 112.

इसिदास पु॰, व्य॰ सं॰, इसिभट का भाई तथा कठिन-चीवर नियमों का दृढ़तापूर्वक पालन करने वाला एक स्थविर – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आयस्मा च इसिदासो आयस्मा च इसिभटो,* महाव॰ 391.

इसिदासिका स्त्री॰, एक थेरी का नाम, दूसरा नाम संभवतः इसिदासी – **का** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पटाचारा धम्मदिन्ना सोभिता इसिदासिका,* दी॰ वं॰ 18.10.

इसिदासी स्त्री॰, एक थेरी का नाम, थेरीगा॰ की एक कविता की रचयित्री थेरी, थेरीगा॰ 402-449; थेरीगा॰ अट्ठ॰ 283.

इसिदिन्न पु॰, व्य॰ सं॰, 1. थेरगा॰ के एक कवितासंग्रह का रचयिता एक कवि-थेर, थेरगा॰ 186-187; थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.340-341; स॰ प॰ के अन्त॰, *इच्चेवं सच्चबन्ध – इसिदिन्न – महापुण्णादयो पटिच्च अम्हाकं मरम्ममण्डले सासनं पतिट्ठासि,* सा॰ वं॰ 52; 2. एक व्यापारी का नाम, स॰ प॰ के अन्त॰ – *वाणिजगामे च इसिदिन्नसेट्ठिआदीनं पि धम्मरसं पायेसि,* सा॰ वं॰ 52.

इसिद्धज पु॰/नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऋषिध्वज], ऋषि का (काषाय वस्त्र आदि के रूप में) विशिष्ट पहचान-चिह्न, ऋषि का वेश, चीवर – **जं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सिरसिं अञ्जलिं कत्वा, वन्दितब्बं इसिद्धजं,* अप॰ 1.45; ... *वन्दितब्बं इसिद्धजं अरहत्तद्धजं बुद्धपच्चेकबुद्धसावकदीपकं चीवरं नमस्सितब्बं ...,* अप॰ अट्ठ॰ 1.303; *इसिद्धजं अरियानं धजं परिक्खारं,* तदे॰.

इसिनाम त्रि॰, ब॰ स॰, किसी ऋषि के नाम वाला – **मे** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इसिनामे मिगारञ्ञे, अमतभेरिमाहनि,* अप॰ 1.46; थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.214.

इसिनामक त्रि॰, ब॰ स॰ [ऋषिनामक], ऋषि नाम वाला, ऋषि-नामधारी – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इसयोति इसिनामका ये केचि इसिपब्बजं पब्बजिता आजीवका निगण्ठा जटिला तापसा,* चूळनि॰ 43.

इसिनिसभ पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऋषि-नृषभ], सर्वश्रेष्ठ ऋषि (बुद्ध), ऋषियों में सर्वोत्तम ऋषि, बुद्ध की एक उपाधि – **भो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *बुद्धो च मे इसिनिसभो विनायको,* वि॰ व॰ 143; *इसीसु निसभो, इसीनं वा निसभो, इसि च सो निसभो चाति वा इसिनिसभो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 66; – **भं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुत्वान घोसं जिनवरचक्कवत्तने, गन्त्वान दिस्वा इसिनिसभं पसन्नो,* सु॰ नि॰ 703; – **भा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इसिनिसभाति इसीसु निसभ अजानीयसदिस,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 220.

इसिपतन नपुं॰, तत्पु॰ स॰, व्य॰ सं॰ [ऋषिपतन/ऋषिपत्तन/ऋषिपट्टन], **शा॰ अ॰,** ऋषियों (बुद्धों, प्रत्येकबुद्धों) के एकजुट होने (सन्निपात) का स्थान, वह स्थान जहां ऋषि लोग आकर उतरते हैं, एक दूसरे से मिलते हैं तथा पुनः उत्पतित हो जाते हैं – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पञ्चमे इसिपतनेति बुद्धपच्चेकबुद्धसङ्खातानं इसीनं धम्मचक्कप्पवत्तनत्थाय चेव उपोसथकरणत्थाय च*

आगन्त्वा पतने, सन्निपातट्ठानेति अत्थो, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.81-82; – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *इमिना इसीनं पतनुप्पतनवसेन तं "इसिपतन"न्ति वुच्चति,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.198; **ला॰ अ॰,** बौद्धों के चार परम पावन स्थलों में दूसरा स्थल, जहां पर सारे बुद्ध धर्मचक्रप्रवर्तन करते हैं, बुद्धों द्वारा धर्मचक्रप्रवर्तन किए जाने का स्थान – **ने** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *धम्मचक्कप्पवत्तनट्ठानं इसिपतने मिगदाये अविजहितमेव होति,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 149; *चत्तारि हि अचलचेतियट्ठानानि नाम महाबोधिपल्लङ्कट्ठानं इसिपतने धम्मचक्कप्पवत्तनट्ठानं ... मञ्चपादट्ठानन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(2).70; *कस्सपो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो बाराणसियं विहरति इसिपतने मिगदाये,* म॰ नि॰ 2.250; *सो सुदं भगवा वीसति भिक्खुसहस्सपरिवुतो तत्थेव इसिपतने वसति,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.260; *परियोसानं जानाती'ति पुच्छित्वा "इमे, तात, इसयो इसिपतने विहरन्ति",* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.254; ... *पच्चेकबुद्धे नन्दमूलकपब्भारतो इसिपतने ओतरित्वा, नगरे पिण्डाय चरित्वा इसिपतनमेव गन्त्वा,* थेरीगा॰ अट्ठ॰ 155; *तदा बोधिसत्तो बाराणसियं कुलघरे निब्बत्तित्वा वयप्पत्तो इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा इसिगणपरिवुतो इसिपतने वासं कप्पेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.294; – **नं¹** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ खो भगवा अनुपुब्बेन चारिकं चरमानो येन वाराणसी इसिपतनं मिगदायो,* महाव॰ 12; ... *येन बाराणसी इसिपतनं मिगदायो येन पञ्चवग्गिया भिक्खू तेनुपसङ्कमिं,* म॰ नि॰ 1.231; – **नं²** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेसं धम्मं देसेतुकामो बाराणसियं इसिपतनं गन्त्वा धम्मचक्कं पवत्तेसीति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.178; – **विहार** पु॰, वाराणसी के इसिपत्तन में निर्मित एक विहार – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – " ... *पवत्तमानाय एही"ति वत्वा इसिपतनविहारस्स पिट्ठिपस्सेन थोकं गन्त्वा अट्ठासि,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 47.

इसिपतन² नपुं॰, वाराणसी के इसिपतन के ही नाम वाला श्रीलङ्का के शासक परक्कमबाहु प्रथम द्वारा पुलत्थि नगर के समीप निर्माण कराया गया श्रीलङ्का का एक विहार, आधुनिक पोलन्नरुव के समीप निर्मित एक विहार – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथेसिपतनं साखानगरे यतिनन्दनं,* चू॰ वं॰ 78.79; स॰ प॰ के अन्त॰, – *वेलुवनेसिपतनकुसिनारव्हयेन च,* चू॰ वं॰ 73-152.

इसिपब्बज्जा / इसिपब्बजा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [ऋषिप्रव्रज्या], ऋषियों की प्रव्रज्या, बौद्धेतर तापसों या ऋषियों के रूप में गृहत्यागी जीवन में प्रवेश, आजीवक, निर्ग्रन्थ, जटिल आदि श्रमणों के रूप में दीक्षा या प्रव्रजित होना – **ज्जं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इसयोति इसिनामका ये केचि इसिपब्बज्जं पब्बजिता आजीवका निगण्ठा जटिला तापसा,* चूळ॰ नि॰ 43; प्रायः पू॰ का॰ क्रि॰ के साथ प्रयुक्त – *इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा तत्थेव अरञ्ञे वसिस्सामी'ति आह,* जा॰ अट्ठ॰ 1.286; *इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा उञ्छाचरियाय वनमूलफलाफलेहि यापेन्तो वासं कप्पेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.343; ... *उग्गहितसिप्पो इसिपब्बज्जं पब्बिजित्वा झानाभिञ्ञा निब्बत्तेत्वा हिमवन्तपदेसे वासं कप्पेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.184; *सत्तसतकमहादानं दत्वा इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा पञ्च अभिञ्ञा अट्ठ समापत्तियो निब्बत्तेति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.98; *पब्बतपादं पविसित्वा इसिपब्बज्जं पब्बजि,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.61; ... *पब्बतपादे इसिपब्बज्जं पब्बजित्वा अट्ठसमापत्तियो पञ्च च अभिञ्ञायो निब्बत्तेसि,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 1.16; यदा कदा भू॰ क॰ कृ॰ आदि के साथ भी प्रयुक्त – *अतीते पञ्च जातिसतानि इसिपब्बज्जं पब्बजितोपि,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.108; – **य** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ येन अतीतभवेपि सासने वा इसिपब्बज्जाय वा पब्बजित्वा पथवीकसिणे ...,* विसुद्धि॰ 1.120; *बुद्धादयो अरिया तापसपब्बज्जाय च पब्बजिता नरा,* सद्द॰ 2.442.

इसिपरिक्खार पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऋषिपरिष्कार], ऋषि की सामग्री या उपकरण – **रे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दिस्वा इसिपरिक्खारे पण्णसालघरे तहिं,* जिन॰ 32.

इसिपलोभिका स्त्री॰, [ऋषिप्रलोभिका], ऋषि को पथभ्रष्ट करने वाली नारी, ऋषि को मोहित कर तपोभ्रष्ट करने वाली स्त्री – **का** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"निसिप्पलोभिका गच्छे, एतं सक्क वरं वरे"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 5.156; – **य** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पुन इसिपलोभिकाय न गच्छेय्यं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.156.

इसिपूग नपुं॰, तत्पु॰ स॰, ऋषि-गण, ऋषि-समूह – **समञ्ञात** त्रि॰, ऋषि-गणों द्वारा अनुमोदित – **ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इसिपूगसमञ्ञातेति इसिगणेन सुट्ठ अञ्ञाते इसीनं सम्मते,* जा॰ अट्ठ॰ 5.8.

इसिप्पयात स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [ऋषिप्रयात], ऋषियों द्वारा अनुसृत, ऋषि द्वारा पकड़ा हुआ – **तम्हि** पु॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इसिप्पयातम्हि पथे वजन्तं, ओवस्सते तं नु कदा भविस्सति,* थेरगा॰ 1105; *इसिप्पयातम्हि पथे वजन्तन्ति बुद्धादीहि महेसीहि सम्मदेव ...,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.395.

इसिप्पवेदित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ऋषिप्रवेदित], ऋषि द्वारा उपदिष्ट, ऋषि द्वारा बतलाया गया – **तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰

व॰ – *एते तयो कम्मपथे विसोधये, आराधये मग्गमिसिप्पवेदितं,* ध॰ प॰ 281.

इसिभट्ट पु॰, व्य॰ सं॰, एक स्थविर जो इसिदास नामक दूसरे स्थविर का भाई था – **ट्टो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन खो पन समयेन द्वे भातिका थेरा, आयस्मा च इसिदासो आयस्मा च इसिभट्टो,* महाव॰ 391.

इसिभण्ड नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऋषिभाण्ड], ऋषि का उपकरण, ऋषि का साजो-सामान, ऋषि की खास चीजें – **ण्डं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *पण्णसालं पविसित्वा इसिभण्डं ओमुञ्चित्वा पटिसामेत्वा सङ्खवण्णसाटकं निवासेत्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 7.373.

इसिभत्तिक त्रि॰, ब॰ स॰, केवल स॰ उ॰ प॰ में प्रयुक्त [ऋषिभक्तिक], **शा॰ अ॰,** ऋषियों के प्रति भक्ति रखने वाला, **ला॰ अ॰,** भिक्षुओं की चिकित्सा करने वाला चिकित्सक या भिक्षुओं का परिचारक – **सभावको,** स्वभाव से ही ऋषियों का भक्त पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सभावइसिभत्तिको सुतमन्तपदधरो अतक्किको रोगुप्पत्तिकुसलो* ..., मि॰ प॰ 233.

इसिभाव पु॰, [ऋषिभाव], ऋषि होने की अवस्था, ऋषित्व – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्मा पटिञ्ञं अगहेत्वाव तं इसिभावं पटिक्खिपि,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.221.

इसिभासित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ऋषिभाषित], ऋषियों द्वारा कहा गया, ऋषियों द्वारा उपदिष्ट – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धम्मो नाम बुद्धभासितो, सावकभासितो, इसिभासितो* ... *धम्मूपसञ्हितो,* पाचि॰ 26; *इसिभासितोति बाहिरपरिब्बाजकेहि भासितो सकलो परिब्बाजकवग्गो,* पाचि॰ अट्ठ॰ 8.

इसिभूमङ्गन/ण नपुं॰, व्य॰ सं॰, श्रीलङ्का में अनुराधपुर का वह स्थान, जहां महेन्द्रथेर के शरीरावशेषों का आधा भाग राजा उत्तिय द्वारा रखा गया था – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इसिनो देहनिक्खेप ... वुच्चते बहुमानेन, इसिभूमङ्गणं इति,* म॰ वं॰ 20.46; *तस्मा तं तस्स इसिनो ... इसिभूमङ्गणं इति वुच्चती ति,* म॰ वं॰ टी॰ 380(ना॰).

इसिभूमि स्त्री॰, उपरिवत् – **मि** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कतं सरीरनिक्खेपं महिन्दस्स तदा यहिं इसिभूमी'ति तस्सायं समञ्ञा पठमं अहू,* दी॰ वं॰ 17.113.

इसिमिग/इस्समिग पु॰, एक प्रकार का मृग, सफेद पैरों वाली नीलगाय, गवय, बड़ा हिरन जो गाय के बराबर होता है – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *विपरिवत्तायोति यथा इस्समिगस्स सिङ्गं परिवत्तित्वा ठितं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.428.

इसिमुग्ग 1. पु॰, [ऋषिमुद्ग], एक पौधा, जिसके फलों की दाल बनती है, मूंग की दाल का पौधा – **ग्गा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *आळका इसिमुग्गा च, कदलिमातुलुङ्गियो,* अप॰ 1.13; अप॰ 1.381; **2.** नपुं॰, मूंग के पौधे का पुष्प – **ग्गानि** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इसिमुग्गानि पिसित्वा मधुखुद्दे अनीळके,* अप॰ 1.199.

इसिमुग्गदायक पु॰, व्य॰ सं॰, एक स्थविर – **को** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इत्थं सुदं आयस्मा इसिमुग्गदायको थेरो इमा गाथायो अभासित्थाति,* अप॰ 1.199.

इसिलिङ्ग नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऋषिलिङ्ग], ऋषि के वेशभूषा आदि विशिष्ट पहचान-चिह्न, ऋषि का चिह्न या वेशभूषा – **ङ्गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमं इसिलिङ्गं, हारेत्वा राजवेसं गण्ह ताताति इमिना किर नं अधिप्पायेनेवमाह,* जा॰ अट्ठ॰ 7.373.

इसिवर पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऋषिवर], **शा॰ अ॰,** ऋषियों में श्रेष्ठ या उत्तम, **ला॰ अ॰,** नारद का गुणसूचक विशेषण या उपाधि – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथागमा इसिवरो सब्बलोकगू, सुपुप्फितं दुमवरसाख मादिय,* जा॰ अट्ठ॰ 5.388.

इसिवातपटिवात त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ऋषिवातप्रतिवात], विरुद्ध दिशा की ओर भी बहने में समर्थ ऋषियों के गुणों या उत्तम आचरण की वायु से भरा हुआ – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *जेतवनं आगते सकलविहारो कासावपज्जोतो इसिवातप्पटिवातो होति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.55; – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *गेहं निच्चकालं भिक्खुसङ्घस्स ओपानभूतं कासावपज्जोतं इसिवातपटिवातं,* जा॰ अट्ठ॰ 3.121; – **तानि** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यानि वा पन तानि ... ओपानभूतानि कासावपज्जोतानि इसिवातपटिवातानि अत्थकामानि* ..., विभ॰ 277; विसुद्धि॰ 1.18; *गेहं पविसन्तानं निक्खमन्तानञ्च भिक्खुभिक्खुनीसङ्घानं इसीनं चीवरवातेन चेव समिञ्जनपसारणादिजनितसरीरवातेन च पटिवातानि पवायितानि विनिद्धुतकिब्बिसानि वा,* विभ॰ अट्ठ॰ 324; – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ततो पभुति च कस्मीरगन्धारा* ... *इसिवातपटिवाता,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.47.

इसिवेस पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऋषिवेश], ऋषि का पहनावा, ऋषि की वेशभूषा – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *किमत्थं दूसयिस्सामि इसिवेसं दुरासदं,* सद्धम्मो॰ 384; ... *जटामण्डलं बन्धित्वा इसिवेसं गहेत्वा कत्तरदण्डं आदाय* ..., जा॰ अट्ठ॰ 7.280; चरिया॰ अट्ठ॰ 86; – **सेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *काजकमण्डलुं आदाय इसिवेसेनागन्त्वा पण्णसालद्वारे अग्गिस्स कारणा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 2.225.

इसिव्हय त्रि., ब. स. [ऋष्याह्वय], ऋषि नाम वाला – **ये** सप्त. वि., ए. व. – *वत्तेस्साति चक्कमिसिव्हये वने,* सु. नि. 689; *इसिव्हयं गमित्वान, विनेत्वा पञ्चवग्गिये,* अप. 2.153.

इसिसङ्घ पु., तत्पु. स. [ऋषिसङ्घ], ऋषिमण्डली, ऋषिसमूह – **ङ्घे** सप्त. वि., ए. व. – *इसिसङ्घे अहं पुब्बे, आसिं मातङ्गवारणो,* अप. 1.266; *अहं पुब्बे बोधिसम्भारपूरणकाले इसिसङ्घे पच्चेकबुद्धइसिसमूहे ...,* अप. अट्ठ. 2.191; *एकतिंसतिमे वग्गे पठमापदाने इसिसङ्घे अहं पुब्बेति ...,* अप. अट्ठ. 2.191; – **निसेवित** त्रि., तत्पु. स. [ऋषिसङ्घनिसेवित], ऋषियों के समूह द्वारा उपयोग किया जा रहा, ऋषि-समूह द्वारा सेवा किया जा रहा – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *इदञ्हि तं जेतवनं, इसिसङ्घनिसेवितं,* म. नि. 3.314; – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *ताणो पञ्ञावुधो सत्था, इसिसङ्घनिसेवितो,* थेरगा. 763; *इसिसङ्घेन अग्गसावकादिअरियपुग्गलसमूहेन निसेवितो पयिरुपासितो इसिसङ्घनिसेवितो,* थेरगा. अट्ठ. 2.244.

इसिसत्तम पु., तत्पु. स. [ऋषिसत्तम/ऋषिसप्तम], 1. ऋषियों में श्रेष्ठ (बुद्ध), 2. ऋषियों के बीच (बुद्धों के बीच) सातवां (गौतम बुद्ध), विपस्सी, सिखी, वेस्सभू, ककुसन्ध, कोणागमन तथा कस्सप, इन छ बुद्धों सहित सातवें के रूप में गौतम बुद्ध – **मो** प्र. वि., ए. व. – *नागनामोसि भगवा, इसीनं इसिसत्तमो,* स. नि. 1(1).223; *इसीनं इसिसत्तमोति विपस्सितो पट्ठाय इसीनं सत्तमको इसि,* स. नि. अट्ठ. 1.245; *इसीनं इसिसत्तमोति सावकपच्चेकबुद्धइसीनं उत्तमो इसि, विपस्सीसम्मासम्बुद्धतो पट्ठाय इसीनं वा सत्तमको इसि,* थेरगा. अट्ठ. 2.444-445; – **म** सम्बो., ए. व. – *एस सुत्वा पसीदामि, वचो ते इसिसत्तम,* सु. नि. 358; *तत्थ पठमगाथाय इसिसत्तमाति भगवा इसि च सत्तमो ... पातुभूतोतिपि इसिसत्तमो,* सु. नि. अट्ठ. 2.76; ... *छ इसयो अत्तना सह सत्त करोन्तो पातुभूतोतिपि इसिसत्तमो, तं आलपन्तो आह,* सु. नि. अट्ठ. 2.76; – **मं** द्वि. वि., ए. व. – *तदाहं सन्थविं वीरं, गाथाहि, इसिसत्तमं,* अप. 2.149.

इसिसामञ्ञ नपुं., तत्पु. स. [ऋषिश्रामण्य], ऋषि का श्रमणभाव, भिक्षु का श्रमणभाव, स. प. के अन्त., – *इसिसामञ्ञभण्डुलिङ्गधारणतोपि दक्खिणं विसोधेति,* मि. प. 240.

इसिसिङ्ग पु., [ऋष्यशृङ्ग/ऋश्यशृङ्ग, बौ. सं., ऋषिशृङ्ग], एक ऋषि, मृग के दो शृङ्गों जैसे मस्तक पर उठे हुए दो चूलों (केशों) के कारण इसिसिङ्ग नाम को प्राप्त एक ऋषि, बोधिसत्त तथा एक मृगी के सम्पर्क के फलस्वरूप उत्पन्न एक ऋशि – **ङ्गं** द्वि. वि., ए. व. – *इसिप्पलोभने गच्छ इसिसिङ्गं अलम्बुसे,* जा. अट्ठ. 5.147; *इसिसिङ्गन्ति तस्स किर मत्थके मिगसिङ्गाकारेन द्वे चूळा उट्ठहिंसु तस्मा एवं वुच्चति,* जा. अट्ठ. 5.147; – **ङ्गो** प्र. वि., ए. व. – *महासत्तो तं पुत्तसिनेहेन पटिजग्गि, "इसिसिङ्गो" तिस्स नामं अकासि,* जा. अट्ठ. 5.146; द्रष्ट., *अम्बुसाजातकवण्णना,* जा. अट्ठ. 5.145-156; *तेन पस्सावसम्भवेन संकिच्चो च कुमारो इसिसिङ्गो च तापसो,* मि. प. 129; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *कुमारस्स इसिसिङ्गस्स च तापसस्स थेरस्स च ...,* मि. प. 130.

इसीका/ईसिका/इसिका स्त्री., [इषीका, इशीका], नरकट, नरकुल, सरकण्डा, सींक, नड – **का** प्र. वि., ए. व. – *"सेय्यथापि, महाराज, पुरिसो मुञ्जम्हा ईसिकं पवाहेय्य ... मुञ्जम्हा त्वेव ईसिका पवाळ्हा"ति,* दी. नि. 1.67; म. नि. 2.219; *मुञ्जम्हा ईसकन्तिआदि उपमात्तयम्पि हि सदिसभावदस्सनत्थमेव वुत्तं, ... अन्तो ईसिका होति,* दी. नि. अट्ठ. 1.179; – **कं** द्वि. वि., ए. व. – *सो ततो ईसिकं लुञ्चित्वा "पस्ससि सीवलि, अयं इध पुन घटेतुं न सक्का,* जा. अट्ठ. 6.81; – **ट्ठायिट्ठित** त्रि., मूंज के अन्दर सरकण्डे के समान स्थित – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *केचि पन ईसिकट्ठायिट्ठितोति पाळिं वत्वा मुञ्जे ईसिका विय ठितोति वदन्ति,* दी. नि. अट्ठ. 1.91; *"सो एवमाह – "सस्सतो अत्ता च लोको च वञ्झो कूटट्ठो एसिकट्ठायिट्ठितो,* दी. नि. 1.12.

इसु पु., [इषु], वाण – *इसु, उसु,* सद्द. 5.1254.

√इस्स ईर्ष्या अर्थ वाली एक धातु – *इस्स इस्सायं, इस्सति, "देवा न इस्सन्ति पुरिसपरक्कमस्स, इस्सा इस्सायना",* सद्द. 2.441; ... *कुध–दुह–इस्स इच्चेतेसं धातूनं पयोगे, ... तं कारकं सम्पदानसञ्ञं होति,* क. व्या. 279.

इस्स पु., [ऋष्य/ऋश्य], एक प्रकार का वन्य पशु, संभवतः भालू अथवा कृष्णमृग ? – **स्सो** प्र. वि., ए. व. – *अच्छो इक्को च इस्सो तु,* अभि. प. 612; *"इस्सा"ति वुत्ते 'एवंनामिका धम्मजाती'ति विञ्ञायति, "इस्सो"ति वुत्ते पन 'अच्छमिगो'ति विञ्ञायति,* सद्द. 1.129; – **स्सं** द्वि. वि., ए. व. – ... *इस्सति उपदुस्सति इस्सं बन्धति,* म. नि. 3.252.

इस्सति[1] √इस्स (ईर्ष्या करना) का वर्त., प्र. पु., ए. व. [ईर्ष्यति], ईर्ष्या करता है, डाह करता है – *इस्स इस्सायं, इस्सति,* सद्द. 2.441; *वत्तमानवसेन ताव इस्सति इस्सन्ति,*

इस्ससि इस्सथाति सब्बं योजेतब्बं, सद्द॰ 2.320; *परलाभसक्कारगरुकारमाननवन्दनपूजनासु इस्सति उपदुस्सति इस्सं बन्धति,* म॰ नि॰ 3.252; अ॰ नि॰ 1(2).233; *एवं मक्खी पळासी तस्स लाभसक्कारादीसु किं इमस्स इमिनाति इस्सति पदुस्सति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(1).114; – **न्ति** ब॰ व॰ – *"देवा न इस्सन्ति पुरिसपरक्कमस्स",* सद्द॰ 3.695; सद्द॰ 2.320.

इस्सति² √इ (गत्यर्थक) के भवि॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [एष्यति], जाएगा – *इस्सति इस्सन्ति, इस्ससि ...,* सद्द॰ 2.319.

इस्सते √इस (इच्छार्थक) के कर्म॰ वा॰ का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [इष्यते], चाहा जाता है, इच्छा की जाती है – *इस्सते इस्सन्ते,* सद्द॰ 2.319; *सो इच्छीयति, एसीयति, इस्सते, इस्सति, यकारस्स पुब्बरूपत्तं,* प॰ रू॰ सि॰ 476.

इस्सत्त / इस्सत्थ¹ पु॰ / नपुं॰, [इष्वरत्व], वाणशिल्प, वाण-विद्या, शस्त्र-व्यवसाय – **त्तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सत्तन्ति उसुसिप्पं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.146; *इस्सत्तं बलवीरियञ्च, यस्मिं विज्जेथ माणवे,* स॰ नि॰ 1(1).118; *उसूनं असनकम्मं इस्सत्तं,* म॰ नि॰ टी॰ (मू.प.) 1(2).38; – **त्थं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो हि कोचि मनुस्सेसु इस्सत्थं उपजीवति,* सु॰ नि॰ 622; *इस्सत्थन्ति आवुधजीविकं, उसुञ्च सत्तिं चाति वुत्तं होति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म.प.) 2.306; सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.169; – **त्थो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सत्थो वुच्चति आवुधं गहेत्वा उपट्ठानकम्मं,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू.प.) 1(1).369; – **त्थेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यदि कसिया यदि वणिज्जाय यदि गोरक्खेन यदि इस्सत्थेन यदि राजपोरिसेन यदि सिप्पञ्ञतरेन,* म॰ नि॰ 1.120; – **त्थे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सत्थे चस्मि कुसलो, दळ्हधम्मोति विस्सुतो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.91.

इस्सत्तसुत्त नपुं॰, स॰ नि॰ के एक सुत्त का शीर्षक, स॰ नि॰ 1(1).117-118.

इस्सफन्दना पु॰, द्व॰ स॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, **शा॰ अ॰**,**1.** कृष्णमृग एवं फन्दन वृक्ष, **2.** ईर्ष्या या द्वेष से स्पन्दित या प्रकम्पित होना, **ला॰ अ॰**, सांप-नेवले के समान स्वाभाविक शत्रुता, पारस्परिक द्वेषभाव, परछिद्रान्वेषणता – *सम्मोदथ मा विवदथ, मा होथ इस्सफन्दना,* जा॰ अट्ठ॰ 4.188; *मयूरनच्चं नच्चन्ति, यथा ते इस्सफन्दना,* तदे॰; *यथा ते इस्सफन्दना अञ्ञमञ्ञस्स रन्धं पकासेन्ता नच्चिंसु नाम,* तदे॰; – **सदिस** त्रि॰, **1.** कृष्णमृग एवं फन्द न वृक्ष के समान एक दूसरे की कमी निकालने वाला, **2.** सांप-नेवले के समान स्वाभाविक बैरी – **सा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यावन्तेत्थाति यावन्तो एत्थ इस्सफन्दनसदिसा मा अहुवत्थ,* जा॰ अट्ठ॰ 4.188.

इस्समान / इस्सामान नपुं॰, ईर्ष्या एवं अभिमान – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न तावाहं पणिपतिं, इस्सामानेन वञ्चितो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.72; थेरगा॰ 375; *इमस्स मयि सावकत्तं उपगते मम लाभसक्कारो परिहायिस्सति, इमस्स एवं ... परसम्पत्तिअसहनलक्खणाय इस्साय चेव "अहं गणपामोक्खो बहुजनसम्मतो"ति एवं अब्भुन्नतिलक्खणेन मानेन च वञ्चितो,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.72.

इस्समिग पु॰, [ऋष्यमृग], एक वन्य पशु, सफेद पैरों वाला कृष्णमृग – **गा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इस्समिगाति काळसीहा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.413; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *विपरिवत्तायोति यथा इस्समिगस्स सिङ्गं परिवत्तित्वा ठितं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.428; स॰ प॰ के अन्त॰, – *"एवमक्खायति ... इस्समिगसाखमिगसरभमिगएणी मिगवातमिगपसदमिगपुरि- सालुकिम्पुरिसयक्खरक्ख सनिसेविते ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.411.

इस्सयति इस्सा के ना॰ धा॰ से व्यु॰, वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, ईर्ष्या करता है, डाह जैसा करता है – **न्ति** ब॰ व॰ – *तित्थिया इस्सयन्ति समणानं,* सद्द॰ 3.695.

इस्सायितत्ता नपुं॰, भाव॰, ईर्ष्यालुता, डाहपन – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यं एवरूपं निट्ठुरियं निट्ठुरियकम्मं इस्सा इस्सायना इस्सियतत्तं उसूया उसूयना उसूयितत्तं,* महानि॰ 330.

इस्सर पु॰, [ईश्वर], **क.** स्वामी, प्रभु, ज्येष्ठ, उच्च पदासीन अधिकारी, शासक, राजा, समर्थ, शक्तिशाली – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चक्कवत्ती अहुं राजा, जम्बुमण्डस्स इस्सरो,* अ॰ नि॰ 2(2).228; *इस्सरो पणये दण्डं,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.103; *इस्सरो धनधञ्ञस्स सुपहूतस्स मारिस,* पे॰ व॰ 510; *चातुरन्तो विजितावी, जम्बुसण्डस्स इस्सरो,* सु॰ नि॰ 557; *इद्धिमा यसवा होति, जम्बुमण्डस्स इस्सरो,* अ॰ नि॰ 2(2).228; – **रा** ब॰ व॰ – *कते इस्सरा होन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म.प.) 2.133; *तंनिबन्धा अकतं सेनासनं करोन्ति, जिण्णं पटिसङ्खरोन्ति, कते इस्सरा होन्ति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म.प.) 2.133; – **रं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *चतुन्नमपि दीपानं, इस्सरं योध कारये,* वि॰ व॰ 194; – **र** सम्बो॰, ए॰ व॰ – *वरं चे मे अदो सक्क, सब्बभूतानमिस्सर,* जा॰ अट्ठ॰ 7.351; – **रानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अयञ्हि अम्हाकं वचनं अकत्वा कीळाहंसे नो कत्वा इस्सरानं देन्तो बहुं धनं लभेय्य,* जा॰ अट्ठ॰ 5.339; **ख.** महाब्रह्मा, सृष्टिकर्ता देव ब्रह्मा, लोकेश्वर

ब्रह्मा – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *महाब्रह्मा अभिभू अनभिभूतो अञ्ञदत्थुदसो वसवत्ती इस्सरो कत्ता ...*, दी॰ नि॰ 1.16; *ब्रह्मा महाब्रह्मा अभिभू ... इस्सरो ... पिता भूतभब्यानं*, दी॰ नि॰ 3.21; – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निगण्ठा पापकेन इस्सरेन निम्मिता यं एतरहि एवरूपा दुक्खा तिब्बा कटुका वेदना वेदियन्ति*, म॰ नि॰ 3.8; **ग.** त्रि॰, अधिकृत, अनुमोदित – **रा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *भिक्खू – "गोपेतुं इमे इस्सरा, नयिमे दातु"न्ति, कुक्कुच्चायन्ता न पटिग्गण्हन्ति*, पारा॰ 77; – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *निज्झापेतुं महाराजं, राजापि तत्थ निस्सरो*, जा॰ अट्ठ॰ 7.276; **घ.** त्रि॰, सक्षम, समर्थ, सशक्त, समृद्ध, धनाढ्य – **रानि** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एवं महाकुलानि दुग्गतानि भविस्सन्ति, लामककुलानि इस्सरानि*, जा॰ अट्ठ॰ 1.323; – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अड्ढोति इस्सरो*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.293; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अग्गि॰, अति॰–भेसज्ज, अधिकि॰–वचन, अनि॰, अवनि॰, असुरि॰, गरुडि॰, चित्ति॰, तम्बपण्णिकुलि॰, धतरट्ठमहि॰, धम्मि॰, नारि॰, पठवि॰, पदेसि॰, बोज्झङ्गरतनि॰, मण्डलि॰, महि॰, मेण्डि॰, यति॰, लङ्कि॰, सब्बदेसि॰, सब्बलोकि॰, समणि॰, सालि॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

इस्सरकत त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ईश्वरकृत], ईश्वर द्वारा रचित, ईश्वर द्वारा निर्मित – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सरेन कतं इस्सरकतं*, क॰ व्या॰ 329; ... *विञ्ञुप्पसत्थो, इस्सरकतं, सयंकतं ...*, प॰ रू॰ सि॰ 351; *इस्सरकतं, सल्लविद्धो, गुळेन संसट्ठो ओदनो गुळोदनो*, सद्द॰ 3.755; – **वाद** पु॰, संसार को ईश्वरनिर्मित प्रतिपादित करने वाला सिद्धान्त – ... – **वादी** त्रि॰, संसार को ईश्वरनिर्मित प्रतिपादित करने वाला – **दी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेसु एको अहेतुकवादी, एको इस्सरकतवादी ...*, जा॰ अट्ठ॰ 5.217; – **दिं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सरकरणेनेव इस्सरकतवादं भिन्दित्वा पुब्बेकतवादिं ...*, जा॰ अट्ठ॰ 5.226; *महासत्तोपि तस्स वादं भिन्दित्वा इस्सरकतवादिं आमन्तेत्वा त्वं*, जा॰ अट्ठ॰ 5.226.

इस्सरकरण नपुं॰, [ईश्वरकरण], ईश्वर की क्रिया, दैवी-क्रिया – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *अम्बं पातेन्तो विय इस्सरकरणेनेव इस्सरकतवादं भिन्दित्वा पुब्बेकतवादिं आमन्तेत्वा"त्वं*, जा॰ अट्ठ॰ 5.226.

इस्सरकारणी त्रि॰, ईश्वर को संसार का कारण प्रतिपादित करने वाला, ईश्वरकारणवादी – **णिनो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इस्सरो लोकं पवत्तेति सज्जेति निवत्तेति संहरतीति इस्सरकारणिनो वदन्ति*, विसुद्धि॰ महाटी॰ 2.204.

इस्सरकाल पु॰, तत्पु॰ स॰, धन-सम्पत्ति आदि की प्रचुरता का समय, समृद्धि एवं सौभाग्य का काल – **ले** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"तथा गहपतिं परिभिन्दिस्सामी"ति तं वत्तुकामापि इस्सरकाले किञ्चि वत्तुं नासक्खि*, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.7; *अम्हाकं सेट्ठि अत्तनो इस्सरकाले तुम्हे न किञ्चि आह*, जा॰ अट्ठ॰ 1.225.

इस्सरकुत्त नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ईश्वरक्लृप्त], ईश्वरकृत रचना, ईश्वर-कर्तृत्त्व, सृष्टिकर्ता ईश्वर का सृजन – **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एके समणब्राह्मणा इस्सरकुत्तं ब्रह्मकुत्तं आचरियकं अग्गञ्ञं पञ्ञपेन्ति*, दी॰ नि॰ 3.20.

इस्सरकुत्तिक त्रि॰, संसार को ईश्वर-कृत या ईश्वर द्वारा रचित मानने वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अहेतुवादो पुरिसो, यो च इस्सरकुत्तिको*, जा॰ अट्ठ॰ 5.229.

इस्सरजन पु॰, कर्म॰ स॰ [ईश्वरजन], समर्थ जन, सक्षम व्यक्ति, अधिकार एवं धन से सम्पन्न व्यक्ति, महाधनी एवं शक्तिसम्पन्न व्यक्ति – **नानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सद्देति तथेव इस्सरजनानं गेहं पविट्ठो तेसं पयुत्ते गीतवादितसद्दे सोतुं*, उदा॰ अट्ठ॰ 163; *किं उप्पटिपाटिया इस्सरजनानं घरानि अगमंसु*, जा॰ अट्ठ॰ 1.97; – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *तत्थ जातकेहि पुप्फफलेहि नगरे इस्सरजनं सङ्गण्हित्वा पुन "किं करोमी"ति पुच्छि*, जा॰ अट्ठ॰ 4.120.

इस्सरजातिक त्रि॰, [ईश्वरजातिक], सक्षम एवं समर्थ, धनाढ्यों के वर्ग वाला, अधिकारसम्पन्न एवं धनी वर्ग का – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचे पन कोचि इस्सरजातिको धनं अदत्वाव "भिक्खूनं भागं मा गण्हथा"ति वारेति*, पारा॰ अट्ठ॰ 1.275; – **का** ब॰ व॰ – *तस्मिञ्च पदेसे नदीकीळं कीळन्ता इस्सरजातिका तिखिणभेसज्जपरिभावितं खीरं पिवन्ति*, जा॰ अट्ठ॰ 1.438.

इस्सरनिम्मान/ण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ईश्वरनिर्माण], सृष्टिकर्ता ईश्वर द्वारा की गई सृष्टि या रचना – **नादि** त्रि॰, ईश्वर-रचित रचना आदि – **दिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *केचि पन इस्सरनिम्मानादिं निस्साय केन नु खो कारणेन अहोसिन्ति हेतुतो कङ्खतीति वदन्ति*, म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).75.

इस्सरनिम्मानवादी त्रि॰, "संसार ईश्वर द्वारा सृजित है" इस सिद्धान्त का प्रतिपादक, ईश्वर-कारणवादी – **दी** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अम्हाकं आचरियपाचरियो इस्सरनिम्मानवादी*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.153.

इस्सरनिम्मानविहार पु., व्य. सं., एक विहार जिसका अधिक प्रचलित नाम इस्सरसमणविहार था – **रे** सप्त. वि., ए. व. – *एकं थूपारामे, एकं इस्सरनिम्मानविहारे, एकं पठमचेतियट्ठाने,* पारा. अट्ठ. 1.69.

इस्सरनिम्मानहेतु त्रि., ब. स., ईश्वर द्वारा उत्पन्न किया गया, ईश्वर की रचना से समुद्भूत, ईश्वर के कारण से – **तु** नपुं., द्वि. वि., ए. व. – *सत्ता इस्सरनिम्मानहेतु सुखदुक्खं पटिसंवेदेन्ति,* म. नि. 3.8; ... *तेनहायस्मन्तो पाणातिपातिनो भविस्सन्ति इस्सरनिम्मानहेतु,* अ. नि. 1(1).203; *इस्सरनिम्मानहेतूति दुतियं,* मो. वि. 230.

इस्सरपुरिस पु., कर्म. स. [ईश्वरपुरुष], शक्तिशाली अथवा सक्षम पुरुष, धनाढ्य व्यक्ति – **सो** प्र. वि., ए. व. – ... *अल्लकोसो अल्लवत्थो इस्सरपुरिसो विय तस्मिं ...,* जा. अट्ठ. 1.108.

इस्सरभत्तिगण पु., तत्पु. स. [ईश्वरभक्तिगण], ईश्वर या महेश्वर की भक्ति करने वालों (शिव भक्तों) का समूह – **णानं** ष. वि., ब. व. – *इस्सरभत्तिगणानं गावीसु कतं सूललक्खणं,* अ. नि. टी. 3.340.

इस्सरभाव पु., [ईश्वरभाव], ईश्वरत्व, अधिपतित्व, ऐश्वर्य, शानशौकत – **वो** प्र. वि., ए. व. – *इस्सरभावो इस्सरियं,* खु. पा. अट्ठ. 184; सद्द. 2.451.

इस्सरभेरी स्त्री., तत्पु. स. [ईश्वरभेरी], **शा. अ.,** धनाढ्य अथवा महत्वपूर्ण व्यक्ति का ढोल या नगाड़ा, **ला. अ.,** राजा या अधिपति जैसे महत्वपूर्ण व्यक्ति द्वारा जारी कराई जा रही उद्घोषणा – **री** प्र. वि., ए. व. – *चोरा पठमञ्ञेव भेरिसद्दं सुत्वा "इस्सरभेरी भविस्सती"ति ...,* जा. अट्ठ. 1.273.

इस्सरमद / इस्सरियमद पु., तत्पु. स. [ऐश्वर्यमद], ऐश्वर्य का मद, ऐश्वर्य का अहङ्कार – **दं** द्वि. वि., ए. व. – *पहाय इस्सरमदं, भवे सग्गगतो नरो,* पे. व. 752; – **सम्भव** त्रि., ब. स., ऐश्वर्य के अहङ्कार के कारण उत्पन्न – **वं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *एतमादीनवं ञत्वा, इस्सरमदसम्भवं,* पे. व. 752.

इस्सरवचन नपुं., तत्पु. स., व्याकरणों में प्रयुक्त, (किसी के बीच) प्रधान या प्रमुख होने का अर्थ, प्रधान होने का कथन – **ने** सप्त. वि., ए. व. – *यस्मा उप अधि इच्चेते अधिकिस्सरवचने वत्तन्ति,* सद्द. 3.729; ... *अधिकवचने च इस्सरवचने च सत्तमी विभत्ति होति,* सद्द. 3.729.

इस्सरवता स्त्री., भाव. [ईश्वरवत्ता], अधिपति या समर्थ व्यक्ति होने का अत्यधिक घमण्ड-भाव, हेकड़ी, औद्धत्य – **य** तृ. वि., ए. व. – *सेनासनत्थाय नियमितं कुलसङ्गहणत्थाय ददतो दुक्कटं, इस्सरवताय थुल्लच्चयं, थेय्यचित्तेन पाराजिकं,* पारा. अट्ठ. 1.307; *इस्सरवतायाति "मयि देन्ते को निवारेस्सति, अहमेवेत्थ पमाण"न्ति एवं अत्तनो इस्सरियभावेन,* वि. वि. टी. 1.176; *योपिस्सरवतायेव, देन्तो थुल्लच्चयं फुसे,* विन. वि. 441.

इस्सरसमणक पु., व्य. सं., श्रीलङ्का के राजा देवानंपिय तिस्स द्वारा 247-207 ई. पू. में अनुराधपुर में निर्माण कराया गया एक विहार या आराम, इस्सरसमणविहार नाम से भी विख्यात इस विहार का निर्माण महेन्द्र से उपसम्पदा प्राप्त अरिट्ठ आदि पांच सौ भिक्षुओं के विहार करने के स्थान पर कराया गया था – **को** प्र. वि., ए. व. – *पञ्चसतेहिस्सरेहि, महाथेरस्स सन्तिके, पब्बजा वसितट्ठाने इस्सरसमणको अहु,* म. वं. 20.14; – **के** सप्त. वि., ए. व. – *सो येवुपोसथागारं, इस्सरसमणके इध,* म. वं. 35.87; *इस्सरसमणके इधा ति इध अनुराधपुरसन्तिके पुब्बवोहारेन पाकटभूते इस्सरसमणसङ्खाते कच्छपगिरिविहारे सो वसभो येव उपोसथागारं कारेसी ति अत्थो,* म. वं. टी. 608 (ना.).

इस्सरसमणविहार पु., उपरिवत् – **रं** द्वि. वि., ए. व. – *अथेकदिवसं पातो येव इस्सरसमणविहारं गन्त्वा ... सीलं आवज्जेन्तो निसीदि,* म. वं. टी. 561(ना.).

इस्सरसमणव्ह त्रि., ब. स., इस्सर-समण नाम वाला (विहार) – **स्स** पु., ष. वि., ए. व. – *इस्सरसमणव्हस्स, विहारस्स अदासि सो,* म. वं. 35.47; – **म्हि** सप्त. वि., ए. व. – *इस्सरसमणव्हम्हि, तिस्सव्हे नागदीपके,* म. वं. 36.36.

इस्सरसमणाराम पु., कर्म. स., इस्सरसमण नामक आराम – **मे** सप्त. वि., ए. व. – *इस्सरसमणारामे, पठमे, चेतियङ्गणे,* म. वं. 19.61; – **मं** द्वि. वि., ए. व. – *इस्सरसमणारामं, कारेत्वा पुब्बवत्थुतो,* चू. वं. 39.10.

इस्सरा स्त्री., [ईश्वरा], अधिपतिनी, घर की मालकिन, सर्वशक्तिसम्पन्ना गृहस्वामिनी – **रा** प्र. वि., ए. व. – *विजायिस्सति सब्बस्स कुटुम्बस्स इस्सरा भविस्सति,* पारा. 101; *सा दानि सब्बस्स कुलस्स इस्सरा,* जा. अट्ठ. 3.377; *ताय सकलाय पथविया साव इस्सरा होति,* जा. अट्ठ. 7.266.

इस्सराधिपच्च त्रि./नपुं., कर्म. स. [ईश्वराधिपत्य/ऐश्वर्याधिपत्य], **क.** नपुं., ऐश्वर्यमय आधिपत्य, सम्पूर्ण रूप से प्रभुत्व, चक्रवर्ती राजा के रूप में शासन, **ख.** त्रि.,

एकछत्र प्रभुत्व से युक्त, सम्पूर्ण आधिपत्य वाला – **च्चं** पु., द्वि. वि., ए. व. – *इमस्मिं राजकुले खत्तियकञ्ञापि ब्राह्मणकञ्ञापि गहपतिकञ्ञापि, तासाहं इस्सराधिपच्चं कारेमि,* अ. नि. 1(2).235; – **च्चे** पु., सप्त. वि., ए. व. – *महापथविया पहूतरत्तरतनाय मातापितरो इस्सराधिपच्चे रज्जे पतिट्ठापेय्य,* अ. नि. 1(1).78; *इस्सराधिपच्चे रज्जेति चक्कवत्तिरज्जं सन्धायेवमाह,* अ. नि. अट्ठ. 2.28.

इस्सराधिपति पु., [ईश्वराधिपति], चक्रवर्ती राजा, सम्पूर्ण रूप से आधिपत्य रखने वाला – **ति** प्र. वि., ए. व. – ... *अनेकेसं हत्थिसहस्सानं इस्सराधिपति महानुभावो यूथपति* ..., चरिया. अट्ठ. 111.

इस्सरापराधिक त्रि., [ईश्वरापराधिक], अपने स्वामी के साथ अपराध करने वाला – **को** पु., प्र. वि., ए. व. – *पुरिसो इस्सरापराधिको बद्धो सङ्खलिकबन्धनेन गब्भे पक्खित्तो परिमुच्चितुकामो अस्स,* मि. प. 150; – **स्स** ष. वि., ए. व. – *तस्स इस्सरापराधिकस्स पुरिसस्स परिमुच्चितुकामास्सापि इस्सरभया सन्तासो उप्पज्जति,* मि. प. 150.

इस्सरायतन नपुं., तत्पु. स. [ईश्वरायतन], ईश्वर (आराध्य देव महेश्वर, शिव) का निवासस्थान (मन्दिर) – **नं** प्र. वि., ए. व. – *तथा हि लोके 'इस्सरायतनं वासुदेवायतनन्तिआदीसु निवासट्ठानं आयतनन्ति वुच्चति,* ध. स. अट्ठ. 186; *तथा हि लोके "इस्सरायतनं, वासुदेवायतन"न्ति आदिसु* ..., सद्द. 2.361; सद्द. 2.577.

इस्सरिय[1] 1. नपुं., भाव. [ऐश्वर्य, बौ. सं. ईश्वरीय], घर की मालिकी, गृह आदि का स्वामित्व या अधिपतित्व, अत्यन्त उच्च एवं प्रभावमयी स्थिति, उच्च पद पर आसीन होने की आनन्दमयी अवस्था, धनाढ्यता, रईसी, शान-शौकत – **यं** प्र. वि., ए. व. – *सचे तुम्हे इमस्मिं गेहे सब्बं इस्सरियं मय्हं देथ,* जा. अट्ठ. 1.159; *आवासेसु च इस्सरियं, पूजा परकुलेसु च,* ध. प. 73; *किसुं इस्सरियं लोके, किसुं भण्डानमुत्तमं,* स. नि. 1(1).51; *सब्बं इस्सरियं सुखन्ति दुविधं इस्सरियं लोकियं लोकुत्तरञ्च,* उदा. अट्ठ. 127; – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *मातुरक्खिता नाम माता रक्खति गोपेति इस्सरियं कारेति वसं वत्तेति,* पारा. 205; *"मनापकायिकानाम देवता इमेसु तीसु ठानेसु इस्सरियं कारेम, वसं वत्तेमा"ति,* अ. नि. 3(1).92; *महन्तं ठानं विपुलं इस्सरियं पत्तोति यसेन अनुद्धतो नीचवुत्ति पण्डितानं ओवादकरो होति,* जा. अट्ठ. 3.231; – **स्मिं / ये** सप्त. वि., ए. व. – ... *पत्तो"ति आदिसु हि इस्सरिये दिस्सति,* सद्द. 2.354; *इस्सरियस्मिं ठपेति, तं पराभवतो मुखं,* सु. नि. 112; *तं यो इस्सरियस्मिं ठपेति, लञ्छनमुद्दिकादीनि दत्वा घरावासे कम्मन्ते वा वणिज्जादिवोहारेसु वा तदेव वावटं कारेति,* सु. नि. अट्ठ. 1.137; *सब्बं पिस्सरिये दानं, न मे हासेति मानसं,* म. वं. 32.46; *रट्ठे सके इस्सरिये ठितेन,* जा. अट्ठ. 5.474; – **येन** तृ. वि., ए. व. – *आधिपच्चेनाति इस्सरियेन,* पे. व. अट्ठ. 119; *तङ्खणञ्ञेव उप्पन्नसंवेगा सामिकं याचित्वा महन्तेन इस्सरियेन पञ्चबलकत्थेरीनं* ..., ध. प. अट्ठ. 2.308; 2. त्रि., ऐश्वर्य से परिपूर्ण, महत्वपूर्ण, भव्य – **ये** नपुं., सप्त. वि., ए. व. – ... *अनुरक्खा लद्धयसा विस्सासिका ठपिता महति इस्सरिये ठाने,* मि. प. 147; ... *कुजातिको महन्ते इस्सरिये ठाने अत्तानं ठपेसि,* मि. प. 323; स. उ. प. के रूप में अन., चातुद्दीप, छ–कामसग्ग., देव., ब्रह्म., भोग., मनुस्स., सक्क., सब्बत्थ., सब्ब. के अन्त. द्रष्ट..

इस्सरिय[2] पु., व्य. सं., एक तमिल-शासक का नाम जिसे श्रीलङ्का के राजा दुट्ठगामणी ने हालकोल में पराजित किया – **यं** द्वि. वि., ए. व. – *हालकोले इस्सरियं, नाळिसोब्भम्हि नाळिकं,* म. वं. 25.11.

इस्सरियकम्म नपुं., तत्पु. स. [ईश्वरीयकर्म], आधिपत्य या प्रभुत्व का काम, शासन-कार्य – **म्मं** प्र. वि., ए. व. – *नापि तेरससु सम्मुतीसु एकसम्मुतिवसेनापि इस्सरियकम्मं कातब्बं,* चूळव. अट्ठ. 9.

इस्सरियकामकारिकादिकथा स्त्री., व्य. सं., कथा. के एक खण्ड का शीर्षक, कथा. 502-504.

इस्सरियग्गहण नपुं., तत्पु. स., 1. ऐश्वर्यमय का ग्रहण, 2. आधिपत्यपूर्ण ग्रहण – **णेन** तृ. वि., ए. व. – *तस्मा इस्सरियग्गहणेन महानुभावे देवमनुस्से सङ्गण्हाति,* पे. व. अट्ठ. 103.

इस्सरियट्ठान नपुं., तत्पु. स. [ऐश्वर्यस्थान], प्रभावक्षेत्र, स्वामित्व या प्रभुत्व का क्षेत्र – **नं** प्र. वि., ए. व. – *फलसमापत्ति हि बुद्धानं इस्सरियट्ठानं नाम,* उदा. अट्ठ. 304.

इस्सरियत्त नपुं., इस्सरिय का भाव., केवल स. उ. प. के रूप में प्राप्त, ऐश्वर्यभाव, ऐश्वर्यमयी स्थिति, सर्वोत्तम अवस्था, स. उ. प. के रूप में, **झानि.-त्त** नपुं., [ध्यानैश्वर्यत्व], ध्यान के पूर्ण आधिपत्य की अवस्था – **त्तं**

द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *झानिस्सरियतम्पत्तो यो हि ब्रह्मा सहम्पति,* सद्धम्मो॰ 422.

इस्सरियपरियोसान त्रि॰, ब॰ स॰ [ऐश्वर्यपर्यवसान], ऐश्वर्य या प्रभुत्व को अपना अन्तिम लक्ष्य मानने वाला, राज्यपद को अन्तिम लक्ष्य बनाने वाला – **ना** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *"खत्तिया खो, ब्राह्मण, भोगाधिप्पाया पञ्ञूपविचारा बलाधिट्ठाना पथवीभिनिवेसा इस्सरियपरियोसाना"ति,* अ॰ नि॰ 2(2).75; *इस्सरियपरियोसानाति रज्जाभिसेकपरियोसाना,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.121.

इस्सरियपरिवार पु॰, तत्पु॰ स॰, आधिपत्य या प्रभुत्व की प्रचुरता, भव्य यश का आधिक्य – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *पज्जलतीति इस्सरियपरिवारेन पज्जलति,* जा॰ अट्ठ॰ 6.17.

इस्सरियपरिहार पु॰, कर्म॰ स॰, ऐश्वर्यमयी सामग्री, भव्य उपकरण, शाही साजो-सामान – **रेन** तृ प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... तस्स महन्तेन इस्सरियपरिहारेन न्हायन्तस्स न्हानपरियोसानं आगमेत्वा ...,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.199.

इस्सरियप्पमाण नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऐश्वर्यप्रमाण], ऐश्वर्य एवं धन की मात्रा – **णेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सरियमत्तायाति इस्सरियप्पमाणेन ...,* दी॰ नि॰ टी॰(लीन॰) 2.123.

इस्सरियबल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऐश्वर्य-बल], ऐश्वर्य या प्रभुत्व का बल, उच्च अधिकार का बल, कुशलकर्मों की प्रचुरता का बल – **लेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सरियबलेन अभिभूतं मातुगामं नेव रूपबलं तायति,* स॰ नि॰ 2(2).241; *अधिप्पायो पनेत्थ – नाहं बुद्धोति इस्सरियबलेन वदामि,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 134; – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"अपि च, अट्ठसट्ठि बलानि – सद्धाबलं ... इस्सरियबलं ... दसतथागतबलानि",* पटि॰ म॰ 343; *कतमं इस्सरियबलं ? ... कामच्छन्दं पजहन्तो नेक्खम्मवसेन चित्तं वसं वत्तेतीति – इस्सरियबलं,* पटि॰ म॰ 346; *कुसलेसु बहुभावो इस्सरियबलं,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.211; **ख.** त्रि॰, ब॰ स॰, ऐश्वर्य या प्रभुता के बल से सम्पन्न – **ला** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *रुण्णबला, भिक्खवे, दारका ... इस्सरियबला राजानो,* अ॰ नि॰ 3(1).58.

इस्सरियभाव पु॰, [ऐश्वर्यभाव], अहंकार, दर्प, घमण्ड – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इमिना अत्तनो इस्सरियभावं दीपेति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.231; *अथ वा कन्तभावं इस्सरियभावं निप्फन्नभावं पत्तो,* महानि॰ अट्ठ॰ 65; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **सब्बलोकि॰-** पु॰, समस्त लोकों पर प्रभुत्व की अवस्था – **वं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अभिसेको विय रञ्ञो सब्बलोकिस्सरियभावं,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.102.

इस्सरियमत्ता स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [ऐश्वर्यमात्रा], ऐश्वर्य की मात्रा, प्रभुत्व का प्रमाण, ऐश्वर्य – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मगधरट्ठे वा महामत्ता महतिया इस्सरियमत्ताय समन्नागताति मगधमहामत्ता,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.116; *इस्सरियमत्तायाति इस्सरियप्पमाणेन, इस्सरियेन चेव वित्तूपकरणेन चाति एवं वा अत्थो दट्ठब्बो,* दी॰ नि॰ टी॰ (लीन॰) 2.123.

इस्सरियमद पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऐश्वर्यमद], आधिपत्य का घमण्ड, अधिकारसम्पन्न होने का नशा – **देन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *राजा पन खत्तियमानेन इस्सरियमदेन मत्तो हुत्वा ...,* जा॰ अट्ठ॰ 6.224.

इस्सरियमदमत्त त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ऐश्वर्यमदमत्त], ऐश्वर्य के अहंकार से ग्रस्त, शक्ति या अधिकार के मद से उन्मत्त – **त्तानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *रञ्ञं खत्तियानं मुद्धावसित्तानं इस्सरियमदमत्तानं कामगेधपरियुट्ठितानं ...,* स॰ नि॰ 1(1).119; – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकस्मिञ्हि काले राजा इस्सरियमदमत्तो किलेससुखनिस्सितो विनिच्छयम्पि न पट्ठपेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.157.

इस्सरियलुद्ध त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ऐश्वर्यलुब्ध], ऐश्वर्य पाने के प्रति लालच रखने वाला, प्रभुत्व के प्रति लोलुप – **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न नं इस्सरियलुद्धो पुरोहितो परित्ताणं कातुं सक्खि,* जा॰ अट्ठ॰ 3.139.

इस्सरियवोसग्ग पु॰, तत्पु॰ स॰ [ऐश्वर्यव्यवसर्ग], ऐश्वर्य या प्रभुत्व का परित्याग – **ग्गेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... सम्माननाय अनवमाननाय अनतिचरियाय इस्सरियवोस्सग्गेन अलङ्कारानुप्पदानेन ...,* दी॰ नि॰ 3.144; स॰ प॰ के अन्त॰, – *... सम्मा परिहरन्तो भरियं इस्सरियवोस्सग्गअलङ्कारदानसम्माननादीहि ...,* जा॰ अट्ठ॰ 5.234.

इस्सरियसंवत्तनिय त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ऐश्वर्यसंवर्तनिक], ऐश्वर्य या प्रभुत्व को देने वाला, ऐश्वर्य में परिणत होने वाला – **यं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ननु अत्थि इस्सरियसंवत्तनियं कम्मं अधिपच्चसंवत्तनियं कम्मन्ति?,* कथा॰ 294.

इस्सरियसम्पत्ति स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [ऐश्वर्यसम्पत्ति], ऐश्वर्य की सम्पदा, प्रभुत्व या अधिकार का सुख, ऐश्वर्य से प्राप्त सुखों की प्रचुरता, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, – **देवराजभोगसम्पत्तिसदिस ... त्तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰,

देवराज इन्द्र की सम्पदाओं के समान प्रभुत्व या अधिकार का सुख – *सो तत्थ नागरज्जं कारेन्तो देवराजभोगसम्पत्तिसदिसइस्सरियसम्पत्तिं अनुभवन्तो ...,* चरिया॰ अट्ठ॰ 120.

इस्सरियसुख नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऐश्वर्यसुख], आधिपत्य का सुख, ऐश्वर्य का सुख – **खं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *यानसुखं, सयनसुखं, इस्सरियसुखं, आधिपच्चसुखं, गिहिसुखं* ..., कथा॰ 177.

इस्सरियाधिपच्च नपुं॰/त्रि॰, [ऐश्वर्याधिपत्य], **1.** एकछत्र आधिपत्य वाला, पूर्ण रूप से अपने ही प्रभुत्व वाला, **2.** चक्रवर्ती के रूप में आधिपत्य, प्रधान राजा या ईश्वर के रूप में राजपद – **च्चं**[1] पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *राजा पसेनदि कोसलो इस्सरियाधिपच्चं रज्जं कारेति,* म॰ नि॰ 2.338; ... *उपजीवमानो देवानं तावतिंसानं इस्सरियाधिपच्चं रज्जं कारेन्तो* ..., स॰ नि॰ 1(1).251; *राजा चक्कवत्ती चतुन्नं दीपानं इस्सरियाधिपच्चं रज्जं कारेत्वा* ..., उदा॰ अट्ठ॰ 85; – **च्चं**[2] नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सरियाधिपच्चन्ति इस्सरभावेन वा इस्सरियमेव वा आधिपच्चं, न एत्थ साहसिककम्मन्तिपि इस्सरियाधिपच्चं,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.192; – **च्चे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सराधिपच्चे रज्जेति चक्कवत्तिरज्जं सन्धायेवमाह,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.28.

इस्सरियाधिपच्चकारक त्रि॰, [ऐश्वर्याधिपत्यकारक], एकछत्र राज्य करने वाला चक्रवर्ती, ईश्वरभाव से अथवा सम्पूर्ण स्वामित्व के रूप में आधिपत्य-युक्त – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एत्थ चतुन्नं महादीपानं द्विसहस्सानं परित्तदीपानञ्च इस्सरियाधिपच्चकारका चक्कवत्ती उप्पज्जन्ति,* खु॰ पा॰ अट्ठ॰ 106.

इस्सरियानुप्पदानसमत्थ त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ऐश्वर्यानुप्रदानसमर्थ], एकछत्र राज्य या पूर्ण आधिपत्य को प्रदान करने में सक्षम – **त्थो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यो चायं चक्करतनस्स द्विसहस्सदीपपरिवारेसु चतूसु महादीपेसु इस्सरियानुप्पदानसमत्थो महानुभावो,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.87.

इस्सरियानुभाव त्रि॰, ब॰ स॰ [ऐश्वर्यानुभाव], आधिपत्य के प्रभाव से युक्त, राजा के प्रभाव से युक्त, राजकीय शान-शौकत वाला – **वो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तस्सिस्सरियानुभावो "भूतपुब्बं, आनन्द, राजा महासुदस्सनो नाम अहोसि* ..., चरिया॰ अट्ठ॰ 40.

इस्सरियासा स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [ऐश्वर्याशा], आधिपत्य या राजपद पाने की आशा – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आसं पुरक्खत्वाति इस्सरियासं पुरतो कत्वा* ..., जा॰ अट्ठ॰ 5.397.

इस्ससिङ्ग नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ऋष्यशृङ्ग], कृष्णमृग का वक्र सींग – **ङ्गं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *वाणिजो विय वाचासन्थुतियो इस्ससिङ्गमिव विपरिवत्तायो उरगमिव दुजिव्हायो,* जा॰ अट्ठ॰ 5.421.

इस्सा स्त्री॰, [ईर्ष्या], ईर्ष्या, डाह, दूसरों को आनन्दित एवं समृद्ध देखकर मन में उत्पन्न दाह – **सा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सा इस्सायं,* सद्द॰ 2.441; *इस्सा उसूया मच्छेरं, तु मच्छरिय मच्छरं,* अभि॰ प॰ 168; *या परलाभसक्कारगरुकारमाननवन्दनपूजनासु इस्सा इस्सायना इस्सायितत्तं उसूया उसूयना उसूयितत्तं – अयं वुच्चति "इस्सा",* विभ॰ 413; *यं एवरूपं निट्ठुरियं निट्ठुरियकम्मं इस्सा इस्सायना इस्सायितत्तं* ..., महानि॰ 330; *इस्सायना इस्सा, सा परसम्पत्तीनं उसूयनलक्खणा,* विसुद्धि॰ 2.97; *परसम्पत्तिउसूयनलक्खणा इस्सा,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.78; – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *परलाभसक्कारगरुकारमाननवन्दनपूजनासु इस्सति उपदुस्सति इस्सं बन्धति,* अ॰ नि॰ 1(2).233; *मय्हं उपासिका'ति मानं वा इस्सं वा कातुं न वट्टति,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.292; *इस्सं करिंसु तस्सञ्ञे, राजपुत्तस्स सेवका,* म॰ वं॰ 23.36; – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सचे कोचि इस्साय उद्दिस्स कतं उपक्खटं परिभोगं अन्तरायं करेय्य,* मि॰ प॰ 155; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **महि॰**- अत्यन्त प्रबल ईर्ष्या – **स्सया** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *दिन्नं महापसादं तं असहन्तो महिस्सया,* चू॰ वं॰ 72.76.

इस्साकार पु॰, [ईर्ष्याकार], ईर्ष्या का स्वरूप, ईर्ष्या का प्रकार – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्साकारो इस्सायना,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 398.

इस्साचार पु॰, [ईर्ष्याचार], ईर्ष्या से भरा आचरण, ईर्ष्यामय व्यवहार – **रेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न चापि सोत्थि भत्तारं, इस्साचारेन रोसये,* अ॰ नि॰ 2(1).33; *"न चा पि सोत्थि भत्तारं इस्साचारेन मञ्ञती"ति,* सद्द॰ 3.633.

इस्साजर त्रि॰, ब॰ स॰, ईर्ष्या के ज्वर से पीड़ित – **रो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कन्दं इस्साजरो मन्दो विरियं न करोति सो,* चू॰ वं॰ 72.77.

इस्साधम्म पु॰, तत्पु॰ स॰ [ईर्ष्याधर्म], एक (चैतसिक) धर्म के रूप में ईर्ष्या, ईर्ष्या का लक्षण – **म्मो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ –

तस्स कामरसं अत्वा, इस्साधम्मो अजायथ, जा॰ अट्ठ॰ 4. 427.

इस्सानिद्देस पु॰, ईर्ष्या की व्याख्या – **से** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सानिद्देसे या परलाभसक्कारगरुकारमाननवन्दनपूजनासु इस्साति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 398.

इस्सापकत त्रि॰, 1. स्वभाव से ही ईर्ष्यालु, ईर्ष्याभरी प्रकृति वाला, 2. ईर्ष्या से अभिभूत – **ता**[1] स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सा इस्सापकता सपतिं अङ्गारकटाहेन ओकिरि ...* पे॰ ..., पारा॰ 143; स॰ नि॰ 1(2).236; – **ता**[2] पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इस्सापकताति इस्साय अपकता; अभिभूताति अत्थो,* पाचि॰ अट्ठ॰ 199; – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो चन्दिमसूरिये विरोचमाने दिस्वा इस्सापकतो तेसं गमनवीथिं ओतरित्वा मुखं विवरित्वा तिट्ठति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.97-98; *इस्सापकतो मारो पापिमा पञ्चसालके ब्राह्मणगहपतिके अन्वाविसि,* मि॰ प॰ 154.

इस्सापकतिइत्थिवत्थु नपुं॰, ध॰ प॰ अट्ठ॰ के एक कथानक का शीर्षक, ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.277.

इस्सापरियुट्ठान नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ईर्ष्यापर्युत्थान], ईर्ष्या का उभाड़, ईर्ष्या का दृढ़ता से ऊपर उठना – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सापरियुट्ठानं खो पन तथागतप्पवेदिते धम्मविनये परिहानमेतं,* अ॰ नि॰ 3(2).131.

इस्सापरियुट्ठित त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ईर्ष्यापर्युत्थित], ईर्ष्या से पूरी तरह से ग्रस्त, ईर्ष्या से भरा हुआ – **तेन** नपुं॰, तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मज्झन्हिकसमयं इस्सापरियुट्ठितेन चेतसा अगारं अज्झावसति,* स॰ नि॰ 2(2).234; *इस्सापरियुट्ठितेन चेतसा बहुलं विहरति,* अ॰ नि॰ 3(2).131.

इस्सापिसाच पु॰, [ईर्ष्यापिशाच], ईर्ष्या के रूप में पिशाच या प्रेत, डाह का प्रेत – **चो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सापिसाचो विहतो अस्सासो परमो कतो,* सद्धम्मो॰ 313.

इस्साभिभूत त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ईर्ष्याभिभूत], ईर्ष्या से बुरी तरह से ग्रस्त, डाह से पीड़ित – **तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न इस्सुकी होति न इस्साभिभूतो,* परि॰ 365.

इस्सामच्छरिय नपुं॰, द्व॰ स॰ [ईर्ष्यामात्सर्य], ईर्ष्या एवं आत्मगुण-निगूहन की मनोवृत्ति, ईर्ष्या एवं स्वार्थमयी मनोदशा – **यं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"इस्सामच्छरियं पन, मारिस, किंनिदानं किंसमुदयं किंजातिकं किंपभवं,* दी॰ नि॰ 2.204; *इति सो इस्सामच्छरियं कुलेसु उप्पादेता होति ...,* दी॰ नि॰ 3.34.

इस्सामच्छरियफल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ईर्ष्यामात्सर्यफल], ईर्ष्या करने एवं स्वार्थपरता का फल, ईर्ष्या एवं मात्सर्य का परिणाम – **लं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तिरोकुट्टादीसु ठिते इस्सामच्छरियफलं अनुभवन्ते ...,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 21.

इस्सामनक त्रि॰, ब॰ स॰, ईर्ष्या-ग्रस्त मन वाला, ईर्ष्यालु मन से युक्त – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एकच्चो इत्थी वा पुरिसो वा इस्सामनको होति,* म॰ नि॰ 3.252; *नरोति एत्तकेनेव कारणेन परलाभादीसु इस्सामनको पञ्चविधेन ...,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 2.224; – **निका** स्त्री॰, ईर्ष्यालु नारी, ईर्ष्या-ग्रस्त मन वाली स्त्री – **का** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सामनिका खो पन होति,* अ॰ नि॰ 1(2).233.

इस्सामल नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ईर्ष्यामल], ईर्ष्या की अपवित्रता, ईर्ष्या का मैल – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सामलञ्चस्स अप्पहीनं होति,* अ॰ नि॰ 1(1).128; *इस्सुकी च होति, इस्सामलञ्चस्स अप्पहीनं होति,* तदे॰; स॰ प॰ के अन्त॰ – *इस्सामलमच्छेरमलेसुपि एसेव नयो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.75.

इस्सामान नपुं॰, द्व॰ स॰ [ईर्ष्यामान], ईर्ष्या एवं अहंकार – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न तावाहं पणिपतिं, इस्सामानेन वञ्चितो,* थेरगा॰ 375.

इस्सायना स्त्री॰, इस्सा के ना॰ धा॰ से व्यु॰, ईर्ष्यालुता, डाह की मनोदशा, ईर्ष्या भरी मानसिक स्थिति – **ना** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *परलाभसक्कारगरुकारमाननवन्दनपूजनासु इस्सा इस्सायना इस्सायितत्तं उसूया उसूयना उसूयितत्तं इदं वुच्चति इस्सा,* ध॰ स॰ 1126; विभ॰ 412.

इस्सायितत्त नपुं॰, इस्सा के ना॰ धा॰ के भू॰ क॰ कृ॰ इस्सायित का भाव॰ [ईर्ष्यायितत्त्व], उपरिवत् – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... इस्सा इस्सायना इस्सायितत्तं उसूया उसूयना उसूयितत्तं – इदं वुच्चति इस्सा,* ध॰ स॰ 1126; विभ॰ 413; महानि॰ 38.

इस्सायितभाव पु॰, ईर्ष्याभाव – **वो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सायितभावो इस्सायितत्तं,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 398.

इस्सालुक त्रि॰, इस्सालु + क के योग से व्यु॰ [ईर्ष्यालु, बौ॰ सं॰, ईर्ष्यालुक], ईर्ष्यालु, अत्यधिक ईर्ष्यावृत्ति से ग्रस्त मन वाला – **का** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इस्सालुका मच्छरिनो ते पेतेसूपजायरे,* सद्धम्मो॰ 97.

इस्सावतिण्ण त्रि॰, तत्पु॰ स॰ [ईर्ष्यावतीर्ण], ईर्ष्यालु, ईर्ष्या-ग्रस्त – **ण्णा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सचे तुवं विपुले लद्धभोगे, इस्सावतिण्णा मरणं उपेसि,* जा॰ अट्ठ॰ 5.92.

इस्सास पु॰, 1. धनुष – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सासो धनु कोदण्डं, चापो नित्थी सरासनं,* अभि॰ प॰ 388; *चापेत्विस्सासमुसुनो, इस्सासो खेपकम्हि च,* अभि॰ प॰ 922;

2. त्रि॰, धनुर्धरों का आचार्य, धनुष धारण करने वाला – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तेन खो पन समयेन आयस्मा उदायी इस्सासो होति,* पाचि॰ 167; *सप्पाणकवग्गस्स पठमसिक्खापदे – इस्सासो होतीति गिहिकाले धनुग्गहाचारियो होति,* पाचि॰ अट्ठ॰ 120; *धनुग्गहोति इस्सासो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.279; *इस्सासो वा इस्सासन्तेवासी वा तिणपुरिसरूपके वा मत्तिकापुञ्जे वा योग्गं करित्वा,* अ॰ नि॰ 3(1).230; *तञ्हि इस्सासो तेजं करोति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (म॰प॰) 2.243; *इस्सासो वा इस्सासन्तेवासी वा बहुके दिवसे ...,* मि॰ प॰ 218; – **सा** ब॰ व॰ – *इस्सासिनोति इस्सासा धनुग्गहा,* जा॰ अट्ठ॰ 4. 450; – **से** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दुवे तीणि सहस्सानि इस्सासेक्खणवेधिनो,* चू॰ वं॰ 72.245; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, **महि॰-सा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰, महान् धनुर्धर, महान् शूरवीर – *'उग्गपुत्ता महिस्सासा, सिक्खिता दळ्हधम्मिनो,* थेरगा॰ 1219; *ते चिन्तयिंसु–मयं सुसिक्खिता कतहत्था कतूपासना महिस्सासा,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.201-202.

इस्सासंयोजन नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [ईर्ष्यासंयोजन], ईर्ष्या का बन्धन, ईर्ष्या की बेड़ी या शृंखला – **नं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कतमानि सत्त ? अनुनयसंयोजनं ... इस्सासंयोजनं, मच्छरियसंयोजनं,* अ॰ नि॰ 2(2).160; *कतमानि दस संयोजनानि ? कामरागसंयोजनं, ... इस्सासंयोजनं ... दससंयोजनानि,* पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.29; *इस्सा इस्सायना . .. इदं वुच्चति इस्सासंयोजनं,* ध॰ स॰ 1126; – **नेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अविज्जासंयोजनं इस्सासंयोजनेन संयोजनञ्चेव संयोजनसम्पयुत्तञ्च,* ध॰ स॰ 1136; *"अहो वत एतं रूपारम्मणं अञ्ञे न लभेय्यु"न्ति उसूयतो इस्सासंयोजनं उप्पज्जति,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (मू॰प॰) 1(1).298.

इस्सासन्तेवासी पु॰, तत्पु॰ स॰ [इष्वासान्तेवासिन्], कुशल धनुर्धर आचार्य का शिष्य या सहायक – **सी** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सासो वा इस्सासन्तेवासी वा तिणपुरिसरूपके वा मत्तिकापुञ्जे वा योग्गं करित्वा,* अ॰ नि॰ 3(1).230; *इस्सासो वा इस्सासन्तेवासी वा बहुके दिवसे सङ्गामत्थाय ...,* मि॰ प॰ 218.

इस्साससिप्प नपुं॰, तत्पु॰ स॰ [इष्वासशिल्प], धनुर्विद्या का शिल्प, धनुर्वेध-शिल्प, धनुष-बाण चलाने में दक्षता सिखलाने वाला शिल्प – **प्पं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धनुसिप्पन्ति इस्साससिप्पं यो धनुब्बेधोति वुच्चति,* उदा॰ अट्ठ॰ 165; – **प्पे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *... तेसु इस्साससिप्पे असदिसो हुत्वा बाराणसिं पच्चागमि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.72.

इस्साचरिय पु॰, तत्पु॰ स॰ [इष्वासाचार्य], धुनर्विद्या का आचार्य, धनुर्विद्या का शिक्षक – **यानं** ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *धनुसत्तिसूलादीति एत्थ इस्सासाचरियानं गावीसु कतं धनुलक्खणं,* अ॰ नि॰ टी॰ 3.340.

इस्सासी पु॰, [इष्वासिन], धनुर्धारी, धनुर्ग्रह, धनुष को धारण करने वाला या उसके प्रयोग में कुशल योद्धा – **नो** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *इस्सासिनो कतहत्थापि वीरा, दूरेपाती अक्खणवेधिनोपि,* जा॰ अट्ठ॰ 4.447; *इस्सासिनोति इस्सासा धनुग्गहा,* जा॰ अट्ठ॰ 4.450.

इस्सित त्रि॰, [ईर्ष्यित], **क.** दूसरों द्वारा की गई ईर्ष्या का विषय, **ख.** ईर्ष्या से भरा हुआ – **ता** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"सा इस्सिता दुक्खिता चस्मि लुद्द, उद्धञ्च सुस्सामि अनुस्सरन्ती,* जा॰ अट्ठ॰ 5.39.

इस्सुकिता स्त्री॰, इस्सुकी का भाव॰ [ईर्ष्युकता], ईर्ष्यालुता – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सुकिताय परसम्पत्तिं न सहति,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.314.

इस्सुकी त्रि॰, [सं॰ ईर्ष्यक, बौ॰ सं॰, ईर्षुक], ईर्ष्यालु, ईर्ष्या से पीड़ित – **की** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तपस्सी मक्खी होति पळासी ... पे॰ ... इस्सुकी होति मच्छरी,* दी॰ नि॰ 3.32; *यम्पावुसो, भिक्खु अनिस्सुकी होति अमच्छरी,* म॰ नि॰ 1.136; *इस्सुकीति परस्स सक्कारादीनि इस्सायनलक्खणाय इस्साय समन्नागतो,* अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.110; *मक्खी थम्भी पळासी च, इस्सुकी मच्छरी सठो,* अ॰ नि॰ 3(1).19; ध॰ प॰ 262; – **किस्स** पु॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इस्सुकिस्स पुरिसपुग्गलस्स अनिस्सुकिता होति परिक्कमनाय,* म॰ नि॰ 1.56.

इह अ॰, स्थानबोधक निपा॰, क्रि॰ वि॰ [इह], यहां, इस स्थान पर, इस सन्दर्भ में, इस विषय में – *इहेधात्र तु एत्थात्थ, अथ सब्बत्र सब्बधि,* अभि॰ प॰ 1161; *इत्थं इदानि इह इतो इध,* सद्द॰ 3.676; *इह इध–इमस्मिं वा,* सद्द॰ 3.682; *इध, भन्ते नागसेन, आचरियेन अन्तेवासिम्हि सततं समितं आरक्खा उपट्ठपेतब्बा,* मि॰ प॰ 105.

इहलोकिक त्रि॰, इस लोक से सम्बन्धित, प्रत्यक्ष दिखलाई देने वाला – **कं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सुचरित मथो दिट्ठधम्मिकं चेहलोकिकं,* अभि॰ प॰ 85.

ई

ई देवनागरी लिपि में पालि वर्णमाला का चौथा अक्षर, इवर्ण का दीर्घीकृत रूप, ईकाररूप में भी व्याकरण-ग्रन्थों में

उल्लिखित – *ते च खो अक्खरा पि अकारादयो एकचत्तालीसं सुत्तन्तेसु सोपकारा होन्ति, तं यथा – अ आ इ ई ...*, क॰ व्या॰ 2; अञ्ञे दीघा – *तत्थ अट्ठसु सरेसु रस्सोहि अञ्ञे पञ्च सरा दीघा नाम होन्ति, तं यथा – आ ई ऊ ए ओ इति दीघा नाम*, क॰ व्या॰ 5; *एकचत्तालीससद्दा वण्णा नाम भवन्ति, सेय्यथीदं, अ आ, इ ई ...*, सद्द॰ 3.604.

ईकार पु॰, [ईकार], वर्णमाला का चतुर्थ अक्षर या वर्ण, तालुस्थानीय इवर्ण का दीर्घ मात्रा वाला 'ई' स्वर – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईकारो चेत्थ उपरि वुच्चमाननिरोधपादकताय सातिसयाय ञाणसञ्ञाय अत्थिभावजोतको दट्ठब्बो*, दी॰ नि॰ अभि॰ टी॰ 2.334; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सो एव नीकारगतस्स ईकारस्स रस्सत्तं यकारस्स च द्वित्तं कत्वा*, सद्द॰ 3.84; ... *ईकारस्स रस्सत्तं य–कारस्स च क–कारं कत्वा निय्यानिका*, म॰ नि॰ टी॰ (म॰प॰) 108; – **रे** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *न्तुस्स तमीकारे, सब्बस्सेव न्तुप्पच्चयस्स तकारो होति वा ईकारे परे, गुणवती, गुणवन्ती, कुलवती कुलवन्ती*, क॰ व्या॰ 241; – **ऊकार** पु॰, [ईकारोकार], ईकार एवं ऊकार (वर्ण) – **रा** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अतिदेसरहिते विसये कपच्चये परे ईकार-ऊकारा रस्सं पप्पोन्ति सुखुच्चारणत्थं*, सद्द॰ 3.775; – **त्त** नपुं॰, भाव॰ [ईकारत्त्व], ईकार होने की स्थिति, ईकार का स्वरूप – **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *इच्चेवमादीनं धातूनं अन्तो सरो ईकारत्तमापज्जति ...*, सद्द॰ 3.833-34; – **न्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [ईकारान्त], ईकार में अन्त होने वाला – **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *घुसी कन्तिकरणे, ईकारन्तोयं, तेन इतो न निग्गहीतागमो, घुसति*, सद्द॰ 2.449; – **न्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *"खि जि नि इच्चादयो एकस्सरा इकारन्तापि", इच्चादयो एकस्सरा ईकारन्ता"*, सद्द॰ 2.572; *"चक्खी" इच्चादयो अनेकस्सरा ईकारन्ता*, सद्द 2.572; स॰ प॰ के रूप में, – *पतिभिक्खुराजीकारन्तेहि इत्थियं वत्तमानेहि लिङ्गेहि इनीप्पच्चयो होति, गहपतानी, भिक्खुनी, राजिनी*, क॰ व्या॰ 240; *ईकारन्तवसेन वुत्तत्ता अस्मा धातुतो ... एस नयो अञ्ञेसु पि आदिसेसु अनेसु*, सद्द॰ 2.360; – **लोप** पु॰, [ईकारलोप], ई स्वर का लोप – **पो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अयं अकारादिसु परेसु ईकारलोपो*, सद्द॰ 3.612; – **रागम** पु॰, [ईकारागम], ईकार (ई स्वर) का आगम – **मो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईकारागमो यथा सम्मुखीभूतो, कद्दमीभूतं, एकोदकीभूतं, सरणीभूतं, भस्मीकतं*, सद्द॰ 3.875; *ब्रू इच्चेताय धातुया ईकारागमो होति तिम्हि विभत्तिम्हि, ब्रवीति*, क॰ व्या॰ 522; – **रादेस** पु॰, [ईकारादेश], ईकार (ई स्वर) का आदेश – **सो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *धात्वन्तस्स सरस्स ईकारादेसो च दट्ठब्बो*, सद्द॰ 2.421.

ईघ पु॰/नपुं॰, [इघ], दुख, राग, द्वेष आदि क्लेश – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *यो भिक्खु कामच्छन्दादीनि पञ्च नीवरणानि समन्तभद्दके वुत्तनयेन सामञ्ञतो विसेसतो च नीवरणेसु आदीनवं दिस्वा तेन तेन मग्गेन पहाय तेसञ्च पहीनत्ता एव किलेसदुक्खसङ्खातस्स ईघस्साभावेन अनीघो*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.21; – **विरहित** त्रि॰, राग आदि क्लेशों से मुक्त, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, – **रागादि ... तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनीघोति रागादिईघविरहितो*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 2.279-280; – **सञ्जित** त्रि॰, ईघ (दुख, क्लेश) संज्ञा वाला, दुख के रूप में ज्ञात – **ताय** स्त्री॰, ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – ... *विसेसतो ब्यापादविरहतो ईघसञ्जिताय ईतिया अभावतो*, विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.332; – **सद्द** पु॰, कर्म॰ स॰, ईघ शब्द – **द्दो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईघ–सद्दो दुक्खपरियायोति आह "निद्दुक्खस्सा"ति*, म॰ नि॰ टी॰ (म॰प॰) 2.38.

ईज √गत्यर्थक धातु [ईज्], – *ईज गतियं, ईजति*, सद्द॰ 2.346.

ईति/ईती स्त्री॰, [ईति], अकस्मात् आई हुई अतिवृष्टि, अनावृष्टि जैसी विपत्ति, संकट, दुख, संक्रामक रोगों से जनित विपदा, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईति त्वित्थि अजञ्ञं च उपसग्गो उपद्दवो*, अभि॰ प॰ 401; *ईती च गण्डो च उपद्दवो च, रोगो च सल्लञ्च भयञ्च मेतं*, सु॰ नि॰ 51; *तत्थ एतीति ईति, आगन्तुकानं अकुसलभागियानं ब्यसनहेतूनं एतं अधिवचनं*, सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.79; – **यो** प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *गाथासु अनीतिहन्ति ईतियो वुच्चन्ति उपद्दवा–दिट्ठधम्मिका च सम्परायिका च, ईतियो हनति विनासेति पजहतीति ईतिहं ...*, इतिवु॰ अट्ठ॰ 97; *सब्बीतियोति एन्तीति ईतियो, सब्बा ईतियो सब्बीतियो, उपद्दवा*, बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 134; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ते तं अमतं असित्वा अरोगा दीघायुका सब्बीतितो परिमुच्चेय्युं*, मि॰ प॰ 164; *पञ्चक्खन्धे अनिच्चतो ... ईतितो ... संकिलेसिकधम्मतो*, पटि॰ म॰ 406; *अनेकब्यसनावहनताय ईतितो*, पटि॰ म॰ अट्ठ॰ 2.292; *योगिना योगावचरेन इमस्मिं काये उपासितब्बं, अनिच्चतो उपासितब्बं ... ईतितो ...*, मि॰ प॰ 392; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, – **या** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कीटकिमिआदिपाणकईतिया अभावो एका सम्पदा होति*, अ॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.228; – **तिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईतिन्ति पीळं, उपद्दवन्ति ततो अधिकतरं पीळं*, वि॰ वि॰

टी॰ 1.195; – **तीहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अथ वा ईतीहि अनत्थेहि सद्धिं हनन्ति गच्छन्ति पवत्तन्तीति ईतिहा, तण्हादिउपक्किलेसा,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 97; – **गाथावण्णना** स्त्री॰, सु॰ नि॰ के खग्गविसाणसुत्त की एक गाथा पर लिखी गई अट्ठकथा या व्याख्या – *ईतिगाथावण्णना समत्ता,* सु॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.80; – **जात** पु॰, रोग, संकट या दुख की उत्पत्ति – **ते** सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईतिजातेति रोगुप्पन्ने,* चूळनि॰ अट्ठ॰ 71; – **निपात** पु॰, तत्पु॰ स॰, आकस्मिक संकट अथवा विपत्ति का आ पड़ना, संकट का आक्रमण – **तेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईतीनिपातेन अवुट्ठिताय वा, न किञ्चि विन्दन्ति ततो फलागमं,* जा॰ अट्ठ॰ 5.396; *ईतीनिपातेनातिविसमवातमूसिकसलभसुकपाणकसेतट्ठिकरोगादीनं सस्सुपद्दवानं अञ्ञतरनिपातेन वा,* जा॰ अट्ठ॰ 5.396; – **पहान / पटिनिस्सग्ग / पटिप्पसद्धि** स्त्री॰, तत्पु॰ स॰ [ईतिप्रतिप्रश्रब्धि], दुख या आकस्मिक आ पड़ी विपदा का उपशमन, संकट का उपशमन – **द्धिं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनीतिकन्ति ईति वुच्चन्ति किलेसा च खन्धा च अभिसङ्खारा च, ईतिप्पहानं ईतिवूपसमं ईतिपटिनिस्सग्गं ईतिपटिप्पस्सद्धिं अमतं निब्बानन्ति – तण्हक्खयमनीतिकं,* चूळनि॰ 195; – **विरहित** त्रि॰, क्लेश आदि के संकटों से रहित, स॰ उ॰ प॰ के रूप में, – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनीतिकन्ति किलेसादिईतिविरहितं,* चूळनि॰ अट्ठ॰ 79; – **वूपसम** त्रि॰, ब॰ स॰, विपत्ति या दुख के उपशमन से युक्त – **मं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अनीतिकन्ति ... ईतिवूपसमं ... तण्हक्खयमनीतिकं,* चूळनि॰ 195.

ईतिह त्रि॰, ईति (गत्यर्थक) एवं √हन (हननार्थक) के योग से व्यु॰, **1.** लौकिक एवं पारलौकिक सभी उपद्रवों को नष्ट कर देने वाला या उन्हें त्याग चुका (शासनब्रह्मचर्य एवं मार्गब्रह्मचर्य) – **हं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईतियो वुच्चन्ति उपद्दवा, दिट्ठधम्मिका च सम्परायिका च, ईतियो हनति विनासेति पजहतीति ईतिहं,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 97; **2.** ईति + गत्यर्थक √हन के योग से व्यु॰, अनर्थों या पाप-धर्मों के साथ गमन करने वाला उपक्लेश (तृष्णा आदि) अथवा बौद्धेतर धार्मिक मत – **हा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *अथ वा ईतीहि अनत्थेहि सद्धिं हनन्ति गच्छन्ति पवत्तन्तीति ईतिहा, तण्हादिउपक्किलेसा ... ईतिहा वा यथावुत्तेनट्ठेन तित्थियसमया,* इतिवु॰ अट्ठ॰ 97.

ईदिक्ख त्रि॰, [ईदृक्ष], ऐसा, इस प्रकार का, इस पहलू का, ऐसे गुणों से युक्त, इस प्रकार से दिखने वाला – **क्खो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईदिक्खो, यादिक्खो, तादिक्खो, मादिक्खो, कीदिक्खो, एदिक्खो, सादिक्खो,* क॰ व्या॰ 644; *ईदिक्खो यादिक्खो तादिक्खो मादिक्खो कीदिक्खो एदिक्खो सादिक्खो,* सद्द॰ 3.866.

ईदिस त्रि॰, [ईदृश], उपरिवत् – **सो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *इममिव नं पस्सतीति ईदिसो,* क॰ व्या॰ 644; *ईदिसो निरयो आसि, यत्थ दूसी अपच्चथ,* म॰ नि॰ 1.421; *"निब्बुता नून सा नारी, यस्सायं ईदिसो पती"ति,* बु॰ वं॰ अट्ठ॰ 323; *अच्छरियं वत अब्भुतं वत, अञ्जलिकम्मस्स अयमीदिसो विपाको,* ध॰ प॰ अट्ठ॰ 1.21; – **सं¹** स्त्री॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कस्स त्वं धम्ममञ्ञाय, वाचं भाससि ईदिसन्ति,* स॰ नि॰ 1(1).41; – **सं²** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"ईदिसं दानं उपपरिक्खित्वा युत्तट्ठाने दातुं वट्टती"ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.32; – **सं³** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"वेदेसु ईदिसं आगतं भविस्सतीति एवं, भन्ते"ति,* म॰ नि॰ टी॰ (म॰प॰) 2.29; *तत्थ या अयं "ईदिसं ईदिसञ्च सुखुमतमविसयग्गहणसमत्थं चक्खु होतू"ति,* अभि॰ अव॰ अभि॰ टी॰ 2.91; – **से** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईदिसे विपिने रम्मे, ठितोयं नवयोब्बने,* अप॰ 2.216; *तथापि ईदिसे ठाने पमाणं दस्सेन्तेन याथावतोव नियमेत्वा दस्सेतब्बन्ति,* सारत्थ॰ टी॰ 1.91; – **सानि** नपुं॰, द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *'अहो वत रे छेका आचरिया, ईदिसानिपि नाम सिप्पानि करिस्सन्ती'ति,* ध॰ स॰ अट्ठ॰ 251; *तिपट्टादीनञ्च बहुपट्टचीवरानं अन्तरे ईदिसानि असारुप्पवण्णानि पटपिलोतिकानि कातब्बानीति दस्सेति,* विनया॰ टी॰ 2.278; *ईदिसानीति पच्चक्खतो अनुभूतपुब्बपरिकप्पितरूपादिआरम्मणानि चेव रागादिसम्पयुत्तानि च,* सारत्थ॰ टी॰ 2.277; *ईदिसानीति पच्चक्खतो अनुभूतपुब्बपरिकप्पितागन्तु– कपच्चुप्पन्नरूपनिमित्तादि– आरम्मणानि रागादिसम्पयुत्तानि चाति अत्थो,* वजिर॰ टी॰ 158; – **सेसु** सप्त॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सब्बत्थाति ईदिसेसु सब्बट्ठानेसु,* सारत्थ॰ टी॰ 2.140; *अक्खरचिन्तका हि ईदिसेसु ठानेसु कम्मद्वयं इच्छन्ति,* पे॰ व॰ अट्ठ॰ 106; – **सेहि** तृ॰ वि॰, ब॰ व॰ – *एवं–सद्दो इदमत्थो, तेन एवं पकारेहीति, इदंपकारेहि, ईदिसेहीति अत्थो,* विभ॰ अनुटी॰ 66; – **सा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *न मनुस्सेसु ईदिसा, यादिसा नो घरा इध,* पे॰ व॰ 429; *ईदिसा ते महानागा, अतुला च महायसा,* अप॰ 2.65; – **सी** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आरोचेसि कुमारस्स "वळवेत्थेदिसी" इति,* म॰ वं॰ 10.54; – **करण** नपुं॰, इस इस प्रकार से करना,

ऐसे करना – **णं** प्र. वि., ए. व. – *वट्टतीति सज्झायाति ईदिसकरणं सङ्घस्स भेदाय न होतीति सज्झाय ...*, म. नि. टी. (उप.प.) 3.80; – **रूप** त्रि., ब. स., इस प्रकार के रूप से युक्त – **पो** पु., प्र. वि., ए. व. – *एवंरूपोति ईदिसरूपो*, स. नि. टी. 2.187; – **वचनपटिसंयुत्त** त्रि., इस प्रकार के वचनों से युक्त – **त्तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *ईदिसवचनपटिसंयुत्तो पुराणकथासङ्खातो इतिहासो पञ्चमो एतेसन्ति इतिहासपञ्चमा*, दी. नि. अट्ठ. 1.200; अ. नि. अट्ठ. 2.143.

ईदिसक त्रि., [ईदृशक, बौ. सं. ईदृशिक], ऐसा, इस प्रकार का, ऐसा दिखने वाला – **का** पु., प्र. वि., ब. व. – *"सन्ति ईदिसका अञ्ञे जम्बुदीपे यती?" इति*, म. वं. 14.13; – **कं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *चेलुक्खेपं पवत्तिंसु, नत्थि ईदिसकं पुरे*, दी. वं. 13.38.

√ईदी[1] संदीपन अर्थ वाली एक धातु – *ईदी सन्दीपने, ईदेति, ईदयति*, सद्द. 2.544.

ईदी[2]**/ईदि** त्रि., [ईदृश्], इस तरह का, इस प्रकार का, ऐसा – *ईदी, यादी, तादी, मादी, कीदी, एदी, सादी*, क. व्या. 644; *ईदी यादी तादी मादी कीदी एदी सादी*, सद्द. 3.866; *ईदि उदि एकोदि पण्डितो*, सद्द. 2.315.

ईध अ., निपा., इध का सन्धि के कारण विपरिवर्तित रूप [इध], यहां पर – *सद्धीध वित्तं पुरिसस्स सेट्ठं*, सु. नि. 184; *बुद्धानुस्सति "सद्धीध"*, सद्द. 3.614.

√ईर गति, कम्पन एवं फेंकने अर्थ वाली धातु – *ईर वचने, गति कम्पनेसु च, ईरति, ईरितं एरितं*, सद्द. 2.428; *ईर खेपणे, ईरेति ईरयति*, सद्द. 2.560.

ईरण नपुं., √ईर से व्यु., क्रि. ना. [ईरण], प्रकम्पन, कंपा देना, हिला देना, स. उ. प. के रूप में, – **समी–णो** पु., प्र. वि., ए. व., हिला देने वाला पवन – *तत्थ समीरणोति वातो, सो हि समीरति वायति समीरेति च ...*, सद्द. 2.428.

ईरिण नपुं., [ईरिण], मरुस्थल, विविक्त स्थल, बंजर भूमि, द्रष्ट. इरिण के अन्त..

ईरित त्रि., √ईर से व्यु., पू. का. कृ. [ईरित], **1. व्या. एवं अट्ठ. में** प्रचालित, चलाया गया, हिलाया डुलाया गया, कंपाया गया, फेंका गया – *नुण्णो नुत्तात्तखित्ता चेरिताविद्धा*, अभि. प. 744; – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *ईर वचने, गति कम्पनेसु च, ईरति, ईरितं एरितं समीरणो*, सद्द. 2.428; *वातेरितं सालवनं, आधुतं दिजसेवितं*, वि. व. अट्ठ. 147; **2.** उद्घोषित, उच्चारित, कथित, उद्बोधित – **तो** पु., प्र. वि., ए. व. – *तापसो तु इसीरितो*, अभि. प. 433; *पटिवाक्योत्तराङ्गे सूत्तरं उत्तरो तिसु, सेट्ठे दिसादिभेदे च परस्मिमुपरीरितो*, अभि. प. 830; *परं न व्याकरिस्सं, सो सासने ईरितो न हि*, सद्द. 2.341; – **तं** नपुं., प्र. वि., ए. व. – *सम्भावने च गरहापेक्खासु च समुच्चये, पञ्हे सञ्चरणे चेव आसंसत्थे अपीरितं*, अभि. प. 1183; *मनोधातुत्तयं तत्थ, पञ्चारम्मणमीरितं*, अभि. अव. 137; *कामावचरपाकानं, छत्तं रासीनमीरितं*, अभि. अव. 347; – **ता** स्त्री., प्र. वि., ए. व. – *आनापानसतिच्चेवं, दसधानुस्सतीरिता*, ना. रू. प. 391; स. उ. प. के रूप में, जिने., अनिले., मालुते., हदये., वाते. के अन्त., द्रष्ट..

ईरियति इरियति के अन्त. पाठा. के रूप में द्रष्ट..

ईरियन नपुं., √ईर से व्यु., क्रि. ना., चेष्टा करना, चैतन्य या जागरुक होना, हिला डुला दिया जाना – **नं** प्र. वि., ए. व. – *आयूहनं चेतयनं ईरियनं*, विसुद्धि. महाटी. 2.132.

ईरेति √ईर का प्रेर., वर्त., प्र. पु., ए. व. [ईरयति], **1.** हिला देता है, फेंक देता है, भेज देता है, प्रवर्तित करता है या सक्रिय करता है – *ईर खेपणे, ईरेति ईरयति*, सद्द. 2.560; – **रयितब्बं** नपुं., सं. कृ., प्र. वि., ए. व. – *विधिना ईरयितब्बं पवत्तेतब्बन्ति वा वीरियं*, उदा. अट्ठ. 188; – **यितब्बतो** सं. कृ., प. वि., ए. व. – *वीरभावतो, विधिना ईरयितब्बतो च वीरियं*, अ. नि. अट्ठ. 1.377; **2.** उद्घोषित करता है, वर्णन करता है, आह्वान करता है, बतलाता है – **न्ति** वर्त., प्र. पु., ब. व. – *कसिणानि दसीरेन्ति, आदिकम्मिकयोगिनो*, ना. रू. प. 388.

ईळ स्तुति अर्थ वाली एक धातु [√ईड स्तुतौ], – *ईळ थुतियं, ईळति*, सद्द. 2.460; *ईळ थवने, ईळेति ईळयति*, सद्द. 2.569.

ईस[1] ऐश्वर्य अथवा स्वामित्व अर्थ वाली एक धातु [√ईश ऐश्वर्ये], – *ईस इस्सरिये, इस्सरियं इस्सरभावो, ईसति, वङ्गीसो जनपदेसो मनुजेसो*, सद्द. 2.451.

ईस[2] हिंसा, गति एवं दर्शन अर्थ वाली एक धातु [√ईष् गतिहिंसादर्शनेषु], – *ईस हिंसा–गति–दस्सनेसु, ईसति, ईसो*, सद्द. 2.446.

ईस[3] पु., [ईश], स्वामी, प्रभु, ईश्वर, प्रमुख, प्रधान, समर्थ – **सो** प्र. वि., ए. व. – *तत्र वङ्गीसो ति वाचाय ईसो इस्सरो ति वङ्गीसो*, सद्द. 2.451; *वागीसो वादिसूदनोति वादीनं पण्डितजनानं ईसो पधानो "वादीसो"ति वत्तब्बे द–कारस्स*

ग–कारं कत्वा एवं वुत्तन्ति दट्ठब्बं, अप॰ अट्ठ॰ 2.251; *सब्बवेदविदू जातो, वागीसो वादिसूदनो,* अप॰ 2.147; *सुवण्णपीळकाकिण्णं, मणिदण्डविचित्तकं, को सो परिसमोगय्ह, ईसं खग्गं पमुञ्चति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.64; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, अरियदेसी॰, ओसधी॰, जनपदे॰, नक्खत्ते॰, मनुजे॰, लङ्के॰, लोके॰, वङ्गी॰, वागी॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰.

ईसं अ॰, निपा॰, क्रि॰ वि॰ [ईषत्], **1.** आसानी से, बिना किसी प्रयास के, सरलतापूर्वक – *ईस–दु–सु–सद्दादीहि सब्बधातूहि खपच्चयो होति भावकम्मेसु, ईसं सयनं ईसस्सयो, दुट्ठुसयनं दुस्सयो, ... ईसं कम्मं करीयतीति इस्सक्करं,* क॰ व्या॰ 562; **2.** थोड़ा सा, ज़रा सा, अपूर्ण रूप में, हल्के-फुल्के ढङ्ग से – *ईसं किञ्चि मनं अप्पे,* अभि॰ प॰ 1148; *आतो गमु ईसमधिवासने, आगमेति ...,* सद्द॰ 2.558; *म्हि ईसंहसने, म्हयते उम्हयते विम्हयते,* सद्द॰ 2.454; *ईसं कालं वसन्ता ते मिच्छादिट्ठिकपापिका,* चू॰ वं॰ 96.24.

ईसकं अ॰, निपा॰, क्रि॰ वि॰ [ईषत्क], जरा सा, थोड़ा सा, कुछ सीमा तक, कुछ मात्रा में, आंशिक रूप में, अपूर्ण रूप में – *वङ्कं वा उजुकं अतिउजुकं वा ईसकं पोणं करोति, उभोपि न मुच्चन्ति,* पारा॰ अट्ठ॰ 2.51; *यस्स पन किञ्चि किञ्चि अङ्गपच्चङ्गं ईसकं वङ्कं, तं पब्बाजेतुं वट्टति,* महाव॰ अट्ठ॰ 293; *ईसकं पन खञ्जत्ता खञ्जदेवो ति तं विदुं,* म॰ वं॰ 23.78; *पल्लङ्कतो ईसकं पाचीननिन्निस्सिते उत्तरदिसाभागे ठत्वा,* जा॰ अट्ठ॰ 1.86; *काक–कुलल–सोण–सिङ्गालादीहि मुखतुण्डकेन वा दाठाय वा ईसकं फालितमत्तेनापि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.302; *एत्थ क्वसद्देन ईसकं समानसुतिको सत्तमियन्तो को सद्दो दिस्सति,* सद्द॰ 1.128; *करण्डमुखं ईसकं विवरित्वा पहारं वा दत्वा,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.291; *अच्चाधायाति अतिआधाय, ईसकं अतिक्कम्म ठपेत्वा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.71-72; *द्वारबाहं फुसित्वा पिहितमत्तेपि वट्टति, ईसकं अफुसितेपि वट्टति,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.225; *तानि पन अत्तनो गमनट्ठानं ईसकम्पि न विजहन्ति,* सद्द॰ 2.359; *अनोलग्गोति लोभवसेन ईसकम्पि अलग्गो,* चरिया॰ अट्ठ॰ 23; *अनुग्घातीति न उग्घाति, अत्तनो उपरि निसिन्नानं ईसकम्पि खोभं अकरोन्तोति अत्थो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 27; *सीलखण्डनभयेन ईसकम्पि चित्तस्स विकाराभावो, धनं लभापेमीति,* चरिया॰ अट्ठ॰ 119; – **फुट्ठत्त** नपुं॰, भाव॰, केवल व्याकरणों में प्रयुक्त [ईषत्स्पृष्टत्व], अपूर्ण या अल्प स्पर्श वाला (य, र, ल, व के रूप में चार अन्तःस्थ वर्ण) – **त्तं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सद्दसत्थविदुनो वग्गानं फुट्ठतं य–र–ल वानं ईसकंफुट्ठत्तं वदन्ति,* सद्द॰ 3.607; – **कग्गपवेल्लित** त्रि॰, किनारों पर कुछ कुछ घुंघराला (केश) – **ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *दीघस्सा केसा असिता, ईसकग्गपवेल्लिता,* जा॰ अट्ठ॰ 6.287; *ईसकग्गपवेल्लितताति ईसकं अग्गेसु ओनता, ईसकग्गपवेल्लिता वा नेत्तिंसाय अग्गं विय विनता,* जा॰ अट्ठ॰ 6.287; – **कत्थवाचक** त्रि॰, अपूर्णता या अल्पता के अर्थ को कहने वाला – **को** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *आदिसु सकिंसद्दो ईसकत्थवाचको अप्पमत्तकत्थवाचको ...,* सद्द॰ 3.868; – **पोण** त्रि॰, कुछ कुछ उन्नत, थोड़ा सा ऊपर की ओर उठा हुआ – **णे** नपुं॰, सप्त॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सेय्यथापि, आनन्द, ईसकंपोणे पदुमपलासे उदकफुसितानि पवत्तन्ति,* म॰ नि॰ 3.362; *ईसकंपोणेति रथीसा विय उट्ठहित्वा ठिते,* म॰ नि॰ अट्ठ॰ (उप॰प॰) 3.264; – **कायतगीव** त्रि॰, ब॰ स॰, कुछ कुछ लम्बी गर्दन वाला, थोड़ी सी लम्बी गर्दन वाला – **वो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"ईसकायतगीवोति च, सब्बेव अतिरोचती"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 2.125; *ईसकायतगीवो रथीसा विय आयतगीवो,* जा॰ अट्ठ॰ 2.125-126.

ईसति[1] √ईस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [ईष्टे], आधिपत्य, स्वामित्व या प्रभुत्व स्थापित करता है, ईश्वरभाव दरसाता है, अभिभूत या वशीभूत करता है, दूसरे का अतिक्रमण कर लेता है – *ईस इस्सरिये, इस्सरियं इस्सरभावो, ईसति वङ्गीसो जनपदेसो मनुजेसो,* सद्द॰ 2.451; *सब्बसत्ते वा गुणेहि ईसति अभिभवतीति परमिस्सरो भगवा नाथो ति वुच्चती"ति,* सद्द॰ 2.365; *तत्र सुरो ति सुरति ईसति देविस्सरियं पापुणाति विरोचति चाति सुरो,* सद्द॰ 2.429.

ईसति[2] √ईस का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰, हिंसा करता है, गति करता है – *ईस हिंसा–गति–दस्सनेसु, ईसति, ईसो,* सद्द॰ 2.446.

ईसत्त नपुं॰, भाव॰ [ईशत्त्व], आधिपत्य, स्वामित्व – **त्तं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईसत्तं नाम सयंवसिता,* वजिर॰ टी॰ 38.

ईसधर पु॰, व्य॰ सं॰ [बौ॰ सं॰, ईसाधार], सिनेरु (सुमेरु) पर्वत के चारों ओर विद्यमान सात पर्वतों में से एक – **रो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *युगन्धरो ईसधरो करवीको सुदस्सनो, नेमिन्धरो विनतको अस्सकण्णो कुलाचला,* अभि॰ प॰ 26-27; *सुदुस्सनो करवीको, ईसधरो युगन्धरो, नेमिन्धरो विनतको, अस्सकण्णो गिरी ब्रह्म,* जा॰ अट्ठ॰ 6.150; – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईसधरस्स अनन्तरे युगन्धरो नाम, सो ईसधरतो उच्चतरो,* जा॰ अट्ठ॰ 6.150.

ईससक्खरपासाण त्रि॰, ब॰ स॰, थोड़े से कंकड़-पत्थरों से युक्त – **णा** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *ईससक्खरपासाणा अट्ठ अट्ठलिका सिला, एतानि भूमिकम्मानि कारापेत्वान खत्तियो,* दी॰ वं॰ 19.3.

ईसा स्त्री॰, [ईषा], रथ-दण्ड, हल का दण्ड, हलश, हरीस, गाड़ी की फड़ – **सा** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईसा नङ्गलदण्डके,* अभि॰ प॰ 449; *हिरी ईसाति अत्तना सद्धिं अधिविट्ठेन बहिद्धासमुट्ठानेन ओत्तप्पेन सद्धिं अज्झत्तसमुट्ठाना हिरी यस्स मग्गरथस्स ईसा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.158; *ईसाति युगन्धारिका दारुयुगळा,* स॰ नि॰ टी॰ 2.106; – **सं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईसञ्च पटिच्च अक्खञ्च पटिच्च ...,* मि॰ प॰ 24; – **य** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ खो अम्बपाली गणिका दहरानं दहरानं लिच्छवीनं ईसाय ईसं युगेन युगं चक्केन चक्कं अक्खेन अक्खं पटिवट्टेसि,* महाव॰ 307; स॰ प॰ के अन्त॰, – *अक्खचक्कईसादिअवयवधातूहि ...,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 138; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, – **हिरिईसे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰, लज्जा-रूपी हरीसों को – *तथा मया हिरिईसे पञ्ञायुगनङ्गले मनोयोत्तेन एकाबद्धे कते वीरियबलीबद्दे योजेत्वा,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.221; स॰ उ॰ प॰ के रूप में, जम्बोनदी॰, नङ्गली॰, रथी॰, हिरि॰ के अन्त॰ द्रष्ट॰; – **दन्त** त्रि॰, ब॰ स॰ [ईषादन्त], गाड़ी की फड़ जैसे दांतों वाला – **न्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हत्थिराजा तदा आसिं, ईसादन्तो उरूळ्हवा,* अप॰ 2.22; *वरनागो मया दिन्नो, ईसादन्तो उरूळ्हवा,* थेरगा॰ अट्ठ॰ 2.246; *सेय्यथापि, राहुल, रञ्ञो नागो ईसादन्तो ऊरूळ्हवा अभिजातो सङ्गामावचरो ... कम्मं करोति,* म॰ नि॰ 2.85; – **न्तं** पु॰, द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *रतनं देव याचाम, सिवीनं रट्ठवड्ढन, ददाहि पवरं नागं, ईसादन्तं उरूळ्हवन्ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.236; – **न्ता** पु॰, प्र॰ वि॰, ब॰ व॰ – *सतं हेमवता नागा, ईसादन्ता उरूळ्हवा,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 82; *ईसादन्ताति रथीसासदिसदन्ता, थोकंयेव अवनतदन्ताति अत्थो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 83; *ईसादन्ताति रथीसासदिसदन्ता,* अप॰ अट्ठ॰ 1.322; *ईसादन्ताति रथीसाय समानदन्ता,* जा॰ अट्ठ॰ 5.38; – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *एतं नागस्स नागेन ईसादन्तस्स हत्थिनो,* महाव॰ 475; *ईसादन्तस्साति रथईसासदिसदन्तस्स,* महाव॰ अट्ठ॰ 409; – **नेमिरथ** पु॰, तत्पु॰ स॰, हलश एवं पहिए के घेरे से युक्त रथ – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अरानं चक्कनाभीनं ईसानेमिरथस्स च,* जा॰ अट्ठ॰ 4.187; – **पटिबद्धयुगनङ्गल** नपुं॰, हलश (हरीस) के साथ बंधा हुआ जुआ एवं हल – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा च ईसापटिबद्धयुगनङ्गलं किच्चकरं होति अचलं असिथिलं, एवं हिरिपटिबद्धा ...,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.222; – **बद्ध** त्रि॰, तत्पु॰ स॰, हलश के साथ जुड़ा हुआ या बंधा हुआ – **द्धं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा युगं ईसाय उपनिस्सयं होति, पुरतो च ईसाबद्धं होति ... हिरिप्पमुखानं धम्मानं उपनिस्सया होति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.222; – **द्धा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईसाबद्धा होतीति हिरिसङ्खातईसाय बद्धा होति, पञ्ञाय कदाचि अप्पयोगतो मनोसीसेन समाधि इध वुत्तोति आह ...,* स॰ नि॰ टी॰ 1.237; – **द्धो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *हिरिविप्पयोगेन अनुप्पत्तितो पन ईसाबद्धो होति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.222; – **मुख** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, रथदण्ड या हलश का ऊपर वाला अग्रभाग – **खं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *यथा कुलावके ईसामुखं न सञ्चुण्णेति, एवं इमिना ईसामुखेन ते परिवज्जय,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.300; – **खेन** तृ॰ वि॰, ए॰ व॰ – *कुलावका मातलि सिम्बलिस्मिं, ईसामुखेन परिवज्जयस्सु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.201; *ईसामुखेन परिवज्जयस्सूति एते एतस्स रथस्स ईसामुखेन यथा न हञ्ञन्ति, एवं ते परिवज्जयस्सु,* जा॰ अट्ठ॰ 1.201; *ईसामुखेनाति रथस्स ईसामुखेन,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.300; – **मूल** नपुं॰, तत्पु॰ स॰, रथदण्ड या गाड़ी की फड़ का आधारभूत (निचला) भाग – **लं** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उरस्साति उरो अस्स, रथस्स उरोति च ईसामूलं वदति,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 226; – **युगबलीवद्द** पु॰, द्व॰ स॰, हरीस, जुआ एवं बैल – **द्दे** द्वि॰ वि॰, ब॰ व॰ – *यथा ब्राह्मणस्स योत्तं ईसायुगबलीबद्दे एकाबद्धे कत्वा सककिच्चे पटिपादेति,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.222.

ईसान पु॰, [ईशान], **1.** दी॰ नि॰ के तेविज्जसुत्त में इन्द्र, सोम, वरुण एवं पजापति के साथ उल्लिखित एक वैदिक देवता का नाम – **नो** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तथा वरुणो ईसानो च, वरुणो पन ततियं आसनं लभति, ईसानो चतुत्थं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.298; – **नं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ये धम्मा अब्राह्मणकारका ते धम्मे समादाय वत्तमाना एवमाहंसु – इन्दमव्हयाम ... ईसानमव्हयाम ... ति,* दी॰ नि॰ 1.222; *सो तं परमत्थब्राह्मणं अव्हयेय्य, ... ईसानमव्हयाम, यामव्हयामाति इदं पन अव्हानं निरत्थकं,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.207; **2.** यदा कदा देवराज (इन्द्र) के आशय में भी प्रयुक्त, – **स्स** ष॰ वि॰, ए॰ व॰ – *अथ ईसानस्स देवराजस्स धजग्गं उल्लोकेय्याथ, ईसानस्स हि वो देवराजस्स धजग्गं उल्लोकयतं यं भविस्सति ...,* स॰ नि॰ 1(1).253.

ईसिका स्त्री॰, [ईशिका / ईषिका], सरकण्डा, नरकुल, नरकट – **का** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईसिकाति कळीरो,* दी॰ नि॰ अभि॰

टी॰ 1.347; *"पवाहेय्या"ति वचनतो अन्तो ठिता एव ईसिका अधिप्पेताति दस्सेति "अन्तो ईसिका होती"ति इमिना,* दी॰ नि॰ अभि॰ टी॰ 2.129; *"तस्स एवमस्स अयं मुञ्जो अयं ईसिका, अञ्ञो मुञ्जो अञ्ञा ईसिका, मुञ्जम्हात्वेव ईसिका पवाळ्हा"ति आदि,* विसुद्धि॰ 2.34; *एत्थ च यथा ईसिकादयो मुञ्जादीहि सदिसा होन्ति, एवं मनोमयरूपं इद्धिमतासदिसमेव होतीति,* तदे॰; – **कं** द्वि॰ वि॰, ए॰ व॰ – *"सेय्यथापि, महाराज, पुरिसो मुञ्जम्हा ईसिकं पवाहेय्य,* दी॰ नि॰ 1.68.

ईसिता/ईसत्त स्त्री॰/नपुं॰, भाव॰ [ईशिता/ ईशित्व], योगी की आठ प्रकार की दिव्य शक्तियों में से एक, ऐश्वर्य, प्राकृतिक शक्तियों को अपने वश में रखने की अलौकिक शक्ति, पूर्ण स्वामित्व या आधिपत्य, अणिमा, महिमा आदि आठ प्रकार की अलौकिक शक्तियों में अन्यतम – **ता** प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *सयंवसिता इस्सरभावो ईसिता,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.241; वि॰ वि॰ टी॰ 1.53; *अणिमालघिमादिकन्ति आदि-सद्देन महिमा पत्ति पाकम्मं ईसिता वसिता यत्थकामावसायिताति इमे छपि सङ्गहिता,* विसुद्धि॰ महाटी॰ 1.241; – **त्तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *ईसत्तं नाम सयंवसिता,* वजिर॰ टी॰ 38.

√ईह चेष्टा अर्थ वाली एक धातु [ईह चेष्टायाम्], – *ईह चेतायं, ईहति, ईहा, ईहा वुच्चति विरियं,* सद्द॰ 2.457.

ईहति/इहति √ईह का वर्त॰, प्र॰ पु॰, ए॰ व॰ [ईहते], कोशिश करता है, चेष्टा करता है, प्रयास करता है, स्वयं को सक्रिय करता है, जीवन धारण करता है, इच्छा करता है, जाता है, गतिशील होता है, वीर्यवान् होकर विहार करता है – *आकासम्हि समीहतीति आकासे अन्तलिक्खे सम्मा ईहति, आरुळ्हानं खोभं अकरोन्तो चरति गच्छतीति अत्थो,* वि॰ व॰ अट्ठ॰ 27; *वेदेन ईहति घटति वायमतीति वेदेही,* दी॰ नि॰ अट्ठ॰ 1.117; *दुक्खा ईहिति एत्थ न सक्का कोचि पयोगो सुखेन कातुन्ति दुहितिका,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.143; *दुहितिकोति एत्थ इहितीति इरियना, दुक्खा इहिति एत्थाति, दुहितिको,* स॰ नि॰ अट्ठ॰ 3.103; – **हामि** उ॰ पु॰, ए॰ व॰ – *वेहासगमनयोग्गे कातुं ईहामीति अत्थो, "पतीहामी"तिपि पठन्ति, तस्सत्थो – पादे पक्खे च पति विसुं ईहामि, गमनत्थं वायमामि,* चरिया॰ अट्ठ॰ 213; *अथ वा न ईहामि न समीहामि न उस्सहामि न वायमामि ... न वीरियं करोमि न छन्दं जनेमि न सञ्जनेमि ...,* चूळनि॰ 84; – **न्ति** वर्त॰, प्र॰ पु॰, ब॰ व॰ – *न च तानि विञ्ञाणुप्पादनत्थं द्वारभावेन वत्थुभावेन आरम्मणभावेन वा ईहन्ति, न ब्यापारमापज्जन्ति,* विभ॰ अट्ठ॰ 45; – **मान** त्रि॰, वर्त॰ कृ॰, आत्मने॰, कोशिश कर रहा – **नानं** पु॰, ष॰ वि॰, ब॰ व॰ – *पच्चयपच्चयुप्पन्ने, यथावत्थुववत्थिते, पहातुमीहमानानं, निय्यानपटिपत्तितो,* ना॰ रू॰ परि॰ 1533; निषे॰, – **अनीहमान** त्रि॰, प्रयास नहीं कर रहा – **स्स** पु॰, च॰ वि॰, ए॰ व॰ – *तत्थ घरा नानीहमानस्साति निच्चकालं कसिगोरक्खादिकरणेन अनीहमानस्स अवायमन्तस्स घरा नाम नत्थि,* जा॰ अट्ठ॰ 2.195; – **थ** अनु॰, म॰ पु॰, ब॰ व॰ – *"पण्णसालं अमापेत्वा, उञ्छाचरियाय ईहथा"ति,* जा॰ अट्ठ॰ 7.279; *उञ्छाचरियाय ईहथाति अथ तुम्हे, देव, उञ्छाचरियाय यापेन्ता अप्पमत्ता ईहथ, आरद्धवीरिया हुत्वा विहरेय्याथाति अत्थो,* तदे॰.

ईहन/ईहा नपुं॰/स्त्री॰, √ईह से व्यु॰, क्रि॰ ना॰ [ईहा], प्रयत्न, प्रयास, चेष्टा, सक्रियता, अध्यवसाय, कार्य, कृत्य, वीर्य, जीवित, जीवनवृत्ति – **हा** स्त्री॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *नासा जुण्हा गुहा ईहा लसिका परिसा दुसा,* सद्द॰ 1.198; *वायम ईहायं, वायमति वायामो,* सद्द॰ 2.413; *ईह चेतायं, ईहति, ईहा, ईहा वुच्चति विरियं,* सद्द॰ 2.457; *दुज्जीविका, ईहितं ईहा इरियनं पवत्तनं जीवितन्तिआदीनि पदानि एकत्थानि,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.132; *ईहितं नाम इरिया द्विधा पवत्ता–चित्तइरिया, चित्तईहा,* तदे॰; स॰ प॰ के अन्त॰, – *अनत्तासस्सतन्ता च, ईहाभोगविवज्जिता,* ना॰ रू॰ परि॰ 1564; – **भाव** पु॰, जीवित रहने की स्थिति, चेष्टायुक्त होना, प्रयास करते रहने की दशा – **तो** प॰ वि॰, ए॰ व॰ – *मननलक्खणे सम्पयुत्तेसु आधिपच्चकरणतो पुब्बङ्गमो ईहाभावतो निस्सत्तनिज्जीवट्ठेन धम्मा,* नेत्ति॰ अट्ठ॰ 303; – **युत्त** त्रि॰, प्रयास या चेष्टा से युक्त, सक्रिय – **त्तो** पु॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *उस्सक्को–ईहायुत्तो, मण्डिते उस्सक्के च ततिया सत्तमी च होति,* बाला॰ 214(पृ॰); बौद्धभारती.

ईहित त्रि॰, √ईह का भू॰ क॰ कृ॰, चेष्टा, जीवनवृत्ति, कार्य, कृत्य, चित्त की क्रियाशीलता, प्रयत्न, प्रयास – **तं** नपुं॰, प्र॰ वि॰, ए॰ व॰ – *द्वीहितिकाति द्विधा पवत्तईहितिका, ईहितं नाम इरिया द्विधा पवत्ता चित्त–इरिया, चित्तईहा,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.132; *द्वीहितिकाति दुज्जीविका, ईहितं ईहा इरियनं पवत्तनं जीवितन्तिआदीनि पदानि एकत्थानि, तस्मा दुक्खेन ईहितं एत्थ पवत्ततीति द्वीहितिकाति अयमेत्थ पदत्थो,* पारा॰ अट्ठ॰ 1.132; *द्विधा पवत्तं ईहितं एत्थाति द्वीहितिकाति मज्झपदलोपीबाहिरत्थसमासोयमीति दस्सेन्तो आह "द्विधा पवत्तईहितिका"ति, ईहनं ईहितन्ति ईहितसद्दोयं भावसाधनोति आह "ईहितं ना इरिया"ति, दुक्खं वा ईहितं एत्थ न सक्का कोचि पयोगो सुखेन कातुन्ति दुहितिका, दुक्करजीवितप्पयोगाति अत्थो,* सारत्थ॰ टी॰ 1.372.




Serving JinShasan
140354
gyanmandir@kobatirth.org